तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (6)

(पारा 26 से 30 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर
''अ़ल्लामा इब्ने कसीर'' रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी विज्ञानवी (एम.ए. अलीग.)

M. E. Ashraf

http://salfibooks.blogspot.com

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

इस्लामी दुनिया की निहायत मोतबर क़ुरआनी तफ़सीर। मुस्लिम उलेमा इस पर एकमत हैं कि इसके बाद की तमाम क़ुरआनी तफ़सीरों में इससे मदद ली गयी है।

Mehtab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (6)

(पारा 26 से 30 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर

"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

रीडर अ़ल्लामा इकबाल यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुज़फ़्फ़र नगर (उ.प्र.)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

http://salfibooks.blogspot.com

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

तफ़सीर इब्ने कसीर - जिल्द (6)

(पारा 26 से 30 तक)

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम.ए. (अलीग.)

ISBN 81-7231-986-X

प्रथम संस्करण - 2011

पुनः प्रकाशन - 2015

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)

फोन : +91-11-23244556, 23253514, 23269050, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, **Sharjah (U.A.E.)**
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarata (Indonesia)**
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**

Printed in India

Maktab E Ashraf

समर्पित

❁ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के कलाम क़ुरआन मजीद के प्रथम व्याख्यापक, हादी-ए-आ़लम, आख़िरी पैग़म्बर, तमाम नबियों में अफ़ज़ल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नाम, जिनका एक-एक क़ौल व अ़मल कलामे रब्बानी और मन्शा-ए-इलाही की अ़मली तफ़सीर था।

❁ दारुल-उलूम देवबन्द के नाम, जो क़ुरआन मजीद और उसकी तफ़सीर (हदीसे पाक) की अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमत और दीनी रहनुमाई के सबब पूरी इस्लामी दुनिया में एक मिसाली संस्था है। जिसके इल्मी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद (लाभान्वित) होने के सबब इस नाचीज़ को इल्मी समझ और क़ुरआन मजीद की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

❁ वालिदे मोहतरम जनाब मुहम्मद दीन त्यागी मरहूम के नाम, जिनकी जिद्दोजहद, मेहनत भरी ज़िन्दगी और बहाया हुआ पसीना मेरी रग व जाँ में ख़ून के क़तरे बनकर दौड़ रहा है, जो मेरी जिस्मानी और इल्मी ऊर्जा का ज़ाहिरी सबब है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

दिल की गहराईयों से शुक्रिया

❁ मोहतरम जनाब अ़ब्दुस्समी साहिब (मालिक समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) का, जिनकी मुहब्बतों, इनायतों, क़द्रदानियों और मुझे अपने इदारे से जोड़े रखने के सबब क़ुरआन मजीद की यह अहम ख़िदमत अन्जाम पा सकी।

❁ मोहरतम जनाब हाजी मुहम्मद शाहिद अख़्लाक़ साहिब (पूर्व मेयर/सांसद लोक सभा, मेरठ शहर) का, जिनकी नवाज़िशों, मुहब्बत व इनायत, ख़ास तवज्जोह, हौसला-अफ़ज़ाई, दुआओं, उलेमा नवाज़ी और हर तरह की मदद ने शौक़ व जज़्बात में नई उमंगें पैदा कीं, जिससे इस काम के पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

❁ जनाब मौलाना मुफ़्ती निसार अहमद शमसुल-हुसैनी साहिब का, जिन्होंने मेरी इस कोशिश को आंशिक रूप से मुलाहिज़ा फ़रमाकर मेरी और इसका प्रकाशन करने वाले इदारे की सराहना की।

अल्लाह तआ़ला इन सब हज़रात और इनके अ़लावा मेरे दूसरे सहयोगियों, सलाह मश्विरा देने वालों, शुभ-चिन्तकों और हौसला बढ़ाने वाले हज़रात को भी अपनी तरफ़ से ख़ास जज़ा और बदला इनायत फ़रमाये जो क़दम-क़दम पर मेरी हिम्मत बढ़ाते और मेरी मामूली कोशिशों को सराहते हैं। आमीन या रब्बल्-अ़लमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन का बेहद करम व एहसान है कि उसने मुझे और मेरे इदारे (समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) को इस्लामी किताबों के प्रकाशन के ज़रिये अपने दीन की अदना ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा।

माशा-अल्लाह हमारे इदारे से क़ुरआन पाक, हदीस मुबारक और दीनी विषयों पर अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बल्कि मुझे कहना चाहिये कि ख़िदमत का एक मैदान ऐसा है जिसको पूरा करने में इस्लामिक बुक सर्विस के हिस्से में जो दीनी ख़िदमत आई है देहली की दूसरी प्रकाशन-संस्थाओं को वह मक़ाम नहीं मिल सका। मेरी मुराद अंग्रेज़ी भाषा में इस्लामिक किताबों का मेयारी प्रकाशन और अमेरिकी व यूरोपीय देशों में इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत तलब करने वालों तक इस्लामिक लिट्रेचर का पहुँचाना है। अल्लाह का करम व फ़ज़्ल है कि इस्लामिक बुक सर्विस के द्वारा प्रकाशित क़ुरआन पाक के अ़रबी और इंग्लिश तर्जुमे पूरी दुनिया में फैले हुए और मक़बूल हैं।

सन् 2003 में हमने हिन्दी भाषा में अनुवादित क़ुरआन करीम प्रकाशित किया। यह **हकीमुल-उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह.** के तर्जुमे (यानी 81 नम्बर क़ुरआन पाक) का हिन्दी संस्करण था। जिसको इस्लामिक बुक सर्विस की दरख़्वास्त पर एक मुआ़हदे के तहत जनाब **मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी साहिब** ने हिन्दी ज़बान में तर्जुमा किया था। अल्लाह का शुक्र है कि इस तर्जुमे को उर्दू की तरह हिन्दी भाषा में भी बहुत ज़्यादा मक़बूलियत हासिल हुई और हिन्दी में क़ुरआन पाक का तर्जुमा पढ़ने वालों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

बहुत दिनों से मेरे दिल में यह बात खटकती थी कि हिन्दी भाषा में क़ुरआन पाक की कोई ऐसी तफ़सीर नहीं है जो हर तब्क़े के लिये क़ाबिले क़ुबूल हो। मैंने इसका ज़िक्र **मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** से किया। उन्होंने बताया कि मेरा इरादा "तफ़सीर इब्ने कसीर" पर काम करने का है, और इस बारे में वह काम का एक ख़ाका भी तैयार कर चुके हैं। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। और उनसे समी पब्लिकेशंस नई दिल्ली के लिये इस तफ़सीर को हिन्दी में तैयार करने का आग्रह किया। उन्होंने इसको मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह मौजूदा ज़माने की एक अहम ज़रूरत की तकमील का सामान मुहैया हो गया।

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी की हिन्दी और उर्दू में दर्जनों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह लेखक भी हैं और अनुवादक भी। उनकी लिखी और अनुवाद की हुई पचास से ज़ायद किताबें मार्केट में मौजूद हैं। वह अपने तर्जुमे में न तो अ़रबी और फ़ारसी के अलफ़ाज़ को ज्यों का त्यों बाक़ी रहने देते हैं और न ही मुश्किल और कठिन हिन्दी शब्दों को इस्तेमाल करते हैं। एक आ़म हिन्दुस्तानी ज़बान, जो ख़ास तौर पर मुस्लिमों में बोली और समझी जाती है, उसका इस्तेमाल करते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी ख़िदमत की हिन्दी ज़बान में यह अहम कड़ी आपके सामने है। उम्मीद है कि आपको पसन्द आयेगी और क़ुरआन पाक के पैग़ाम को समझने और उसको आ़म करने में एक अहम रोल अदा करेगी।

हमने इस तफ़सीर को पाँच-पाँच पारों पर तक़सीम किया है। इस तरह मुकम्मल तफ़सीर छह जिल्दों में है। जो चार हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों पर मुश्तमिल है।

मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ होने पर सरे नियाज़ झुकाता हूँ और उस पाक ज़ात का बेहद शुक्र अदा करता हूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक की इस ख़िदमत को आक़ा-ए-नामदार नबी-ए-रहमत, हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये, आपकी आले पाक और अहले-बैत के लिये, आपके सहाबा किराम के लिये, तमाम बुज़ुर्गाने दीन और उलेमा-ए-किराम के लिये, मेरे और मेरे माँ-बाप, अहले ख़ानदान, अहल व अ़याल और मेरे इदारे से जुड़े तमाम हज़रात के लिये मग़फ़िरत व रहमत और ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाये। आमीन

अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार

अ़ब्दुस्समी

चेयरमैन

सभी पब्लिकेशंस/ इस्लामिक बुक सर्विस, नई दिल्ली

Maktab E Ashraf

फ़ेहरिस्ते उनवानात

पारा नम्बर 26-30

उनवान	पेज
समर्पित	3
दिल की गहराईयों से शुक्रिया	4
प्रकाशक की ओर से	5
पारा नम्बर छब्बीस	
सूरः अहक़ाफ़	
यह सब बेकार खेल नहीं	15
बेहूदा बकवास की एक अ़जीब व ग़रीब मिसाल	17
ख़ुराफ़ात का पुलिन्दा	20
बेहतरीन अख़्लाक़ के कुछ सुनहरे उसूल	23
नाफ़रमान व नालायक़ औलाद	27
'अहक़ाफ़' की वादियों में हक़ की दावत	30
जिन्नात में इस्लाम की दावत	35
नाफ़रमानों और बुरों पर ख़ुदा की लानत	48
सूरः मुहम्मद	
वे नाफ़रमान और बदकार जिन पर अल्लाह की लानत होगी	50
बदकारों और बेईमानों की हलाकत और असबाब की इस दुनिया में उसका इन्तिज़ार	51
काफ़िरों का मुकम्मल ख़ात्मा	55
जन्नतुल-फ़िरदौस की बेहतरीन नेमतें	57
मुनाफ़िक़ों की बहाने बाज़ियाँ	59
दिलों के रोगी	62
दीन इस्लाम से फिर जाना और उसकी इबरत-नाक सज़ा	64
आज़माईश और इम्तिहान	66
रसूलुल्लाह सल्ल. से मुख़ालफ़त का सबक़ लेने वाला अन्जाम	67
दुनिया की फ़ानी ज़िन्दगी	69
सूरः फ़तह	
स्पष्ट और खुली फ़तह	70
अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इत्मीनान व तसल्ली	73
हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाही देने वाले और ख़ुशख़बरी देने वाले हैं	74
बहाने बाज़ियाँ	80
बेकार के मुतालबे	81
एक और इम्तिहान	82
अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी और ख़ुश हुआ	83
अल्लाह का एक वायदा	85
काफ़िरों की हरकतें	88
उन हदीसों का बयान जिनमें हुदैबिया का क़िस्सा और सुलह का वाक़िआ है	90
आपका एक सच्चा ख़्वाब	99

Maktab-E-Ashraf

उनवान	पेज
● अल्लाह के रसूल का मक़ाम और आपके सहाबा की एक शान	104
सूरः हुजुरात	
● नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में आदाब की तालीम	106
● यह भी मुनासिब नहीं	110
● एक और मुनासिब हिदायत	111
● अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो........	115
● एक ज़रूरी तंबीह	117
● बदगुमानी, खोज लगाने और ग़ीबत करने से बचो	118
● तक़्वा और उसकी मक़्बूलियत	123
● देहातियों और ग्रामीणों को एक तालीम	126
सूरः क़ॉफ़	
● क़सम है क़ुरआन मजीद की	130
● ज़रा ग़ौर तो करो	132
● क़ौमे नूह	133
● गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब	135
● फ़रिश्तों का बयान	139
● जहन्नम से ख़िताब	141
● क़ौमों और मिल्लतों की हलाकत	144
● क़ियामत का दिन	146
सूरः ज़ारियात	
● क़सम है इन तमाम चीज़ों की	149
● नेक और परहेज़गार लोगों का बयान	151
● हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के मेहमान	155
पारा नम्बर सत्ताईस	
● आसमानी अ़ज़ाब	157
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न	159
● ज़मीन व आसमान की पैदाईश	160
● जिन्नात और इनसानों की पैदाईश का मक़सद	161
सूरः तूर	
● तफ़सीर सूरः तूर मक्किया	163
● बेशक वह दिन आने वाला है	164
● जन्नत और ऐश के सामान	167
● ईमान की बरकतें	168
● तब्लीग़ और निरन्तर मेहनत व कोशिश	171
● खुली और स्पष्ट दलील	172
● एक के ऊपर एक बादल	174
सूरः नज्म	
● तफ़सीर सूरः नज्म मक्किया	177
● क़सम है सितारे की	177
● एक सम्मानित फ़रिश्ता	179
● लात व उज़्ज़ा	187
● बेहक़ीक़त नाम	190
● ये ज़मीन व आसमान	191
● इन लोगों का अन्जाम अच्छा नहीं	194
● सब को अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटना है	197

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
✿ क़ियामत	199
सूरः क़मर	
✿ तफ़सीर सूरः क़मर	201
✿ चाँद का फटना	201
✿ बड़ा भारी और सख़्त दिन	204
✿ तूफ़ाने नूह	205
✿ सख़्त ठंडी हवाओं के झक्कड़	207
✿ ऐटमी धमाके	208
✿ विशेष प्रकार के बम	210
✿ फ़िरऔन और उसकी क़ौम	211
✿ अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का मालिक व क़ादिर है	212
सूरः रहमान	
✿ तफ़सीर सूरः रहमान	216
✿ क़ुरआन की तालीम	218
✿ इनसान की पैदाईश	221
✿ तमाम मख़्लूक़ात फ़ना हो जाने वाली हैं	223
✿ हिसाब व किताब	225
✿ क़ियामत के हौलनाक मन्ज़र	226
✿ अल्लाह का डर और ख़ौफ़	229
✿ जन्नतुल-फ़िरदौस और उसकी नेमतें	231
✿ दो दूसरी जन्नतें	234
सूरः वाक़िआ	
✿ तफ़सीर सूरः वाक़िआ	237
✿ क़ियामत, हिसाब व किताब, अल्लाह के ख़ास बन्दों की जमाअ़त और जन्नतुल-फ़िरदौस	238

उनवान	पेज
✿ एक बड़ी जमाअ़त	241
✿ दाहिने वाले	248
✿ बायें वाले	255
✿ कायनात को पैदा करने वाला	257
✿ ये लहलहाती हुई खेतियाँ	258
✿ सितारों की टूट-फूट	260
✿ मौत की सख़्तियाँ और इनसान की लाचारी	262
✿ राहतें और चैन व सुकून	263
सूरः हदीद	
✿ तफ़सीर सूरः हदीद	266
✿ हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह बयान कर रही है	266
✿ सिर्फ़ छह दिन में	269
✿ ईमान की दावत	272
✿ क़ियामत के दिन का कुछ हाल	277
✿ क्या अभी तक वह वक़्त नहीं आया?	280
✿ बहुत बड़ा और पसन्दीदा अज्र	283
✿ दुनिया की यह ज़िन्दगी	285
✿ मुसीबतें और परेशानियाँ	287
✿ कारामद लोहा	288
✿ अम्बिया और रसूलों का भेजा जाना	290
✿ तक़्वा और अल्लाह का नूर	294
पारा नम्बर अट्ठाईस	
सूरः मुजादला	
✿ एक घरेलू झगड़ा	296
✿ ज़िहार और उसके अहकाम	298
✿ अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त	303

Maktaba-e-Ashraf

उनवान	पेज
● अल्लाह तआला का एक हुक्म	305
● एक अख़्लाक़ी फ़रीज़ा	307
● एक हिक्मत भरी बात	311
● मुनाफ़िक़ों की बुरी हरकतें और उन पर सख़्त चेतावनी	313
● अल्लाह और रसूल के मुख़ालिफ़ीन	314
सूरः हश्र	
● यह दुनिया सबक़ लेने की जगह है	317
● माले ग़नीमत और उसका हक़्दार	323
● ग़नीमत का माल कहाँ ख़र्च हो और किसे दिया जाये?	327
● मुनाफ़िक़ों की बुरी हरकतें और मक्कारियाँ	333
● अपने आमाल को जाँचते रहो	336
● क़ुरआने पाक की बड़ाई का बयान	339
सूरः मुम्तहिना	
● काफ़िरों से दिली दोस्ती न करो	344
● हज़रत इब्राहीम की हिम्मत और दीनी पुख़्तगी	349
● यह भी हो सकता है	351
● मोमिन औरतों से मुताल्लिक़ एक हुक्म	354
● औरतों की बैअ़त	357
● ये आख़िरत में मेहरूम हैं	362
सूरः सफ़्फ़	
● तफ़सीर सूरः सफ़्फ़	363
● क़ौल और अ़मल में फ़र्क़ होना	364
● हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम से एक ख़िताब	367
● यह तो बहुत बड़ा ज़ुल्म है	371
● एक बहुत ही नफ़े का सौदा	372
● हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक	373
सूरः जुमा	
● नबी-ए-उम्मी	376
● बेअ़मल लोग जानवरों की तरह हैं	378
● जुमा की नमाज़	380
● यह हरकत अच्छी नहीं	383
सूरः मुनाफ़िक़ून	
● मुनाफ़िक़ों की चालबाज़ियाँ	385
● मुनाफ़िक़ों को सही रास्ते की दावत और उनका मुँह मोड़ना	387
● अल्लाह के ज़िक्र का एहतिमाम	393
सूरः तग़ाबुन	
● आ़लम का पैदा करने और बनाने वाला	394
● पहलों की सबक़ लेने वाली तारीख़	395
● बातिल और बेबुनियाद ख़्याल	396
● मुसीबतों का फ़ल्सफ़ा	398
● माल व औलाद का फ़ितना	400
सूरः तलाक़	
● बाज़ मसाईल का बयान	402
● इद्दत का समापन और आगे की बातें	405
● बड़ी उम्र की औ़रतों के बाज़ मसाईल	409
● अच्छा बर्ताव और उम्दा व्यवहार	411
● नेक आमाल करो और बुरे अन्जाम से डरते रहो	414

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
● अल्लाह तआ़ला की क़ुदरतों पर निगाह डालो	416
सूरः तहरीम	
● आपको इसका इख़्तियार नहीं	418
● जहन्नम और उसकी सख़्तियाँ	425
● जिहाद का हुक्म	429
● फ़िरऔ़न की बीवी का वाक़िआ़	430
पारा नम्बर उन्तीस	
सूरः मुल्क	
● फ़ज़ाईल सूरः मुल्क	433
● अल्लाह की ज़ात बड़ी बरकत वाली है	435
● काफ़िरों के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है	437
● अल्लाह से डरते रहो	438
● यह कैसा ग़लत और बेबुनियाद ख़्याल है	439
● फिर कौन मददगार हो	441
● ईमान और उसकी बरकतें, कुफ़्र और उसकी नहूसतें	443
सूरः क़लम	
● नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बड़े अ़क़्लमन्द हैं	444
● ऐसे लोगों से आप कोई वास्ता न रखिये	449
● एक सबक़ लेने वाली दास्तान	452
● परहेज़गारी और नेकी की बरकतें	454
● पिण्डली की तजल्ली के द्वारा इम्तिहान	455
● सब्र करने की तलक़ीन	458

उनवान	पेज
सूरः हाक़्क़ह	
● एक यक़ीनी और लाज़िमी चीज़	462
● क़ियामत के सूर का फूँका जाना	465
● कामयाब जमाअ़त	467
● गुनाहगार और क़िस्मत के मारों का हाल	469
● यह अ़ज़ीम आसमानी किताब	471
● अगर 'वही' में कुछ उलट-फेर किया जाये तो........	473
सूरः मआ़रिज	
● अ़ज़ाब की तलब में जल्दी न करो	474
● क़ियामत की दहशत व घबराहट का कुछ हाल	478
● इनसान की जल्द-बाज़ी	480
● हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत में है	482
सूरः नूह	
● हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम का ज़िक्र	486
● लगातार एक हज़ार साल तक तब्लीग़	487
● क़ौम की नाफ़रमानी और ख़ुदा के पैग़म्बर की शिकायत	490
● क़ौमे नूह की उनके बुरे आमाल की वजह से हलाकत	492
सूरः जिन्न	
● नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तब्लीग़ी कोशिशें और जिन्नात का इस्लाम क़बूल करना	495

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
जिन्नात पर पाबन्दियाँ	497
विभिन्न और अनेक फ़िर्क़े	499
मस्जिदें और उनकी तामीर से मक़ासिद	501
क़ियामत के आने का निर्धारित वक़्त कोई नहीं बता सकता	503
सूरः मुज़्ज़म्मिल	
अल्लाह तआ़ला का प्यार भरा ख़िताब	506
सब्र व संयम और मज़बूती से दीन पर जमे रहने का हुक्म	512
यह एक नसीहत है	514
सूरः मुद्दस्सिर	
अल्लाह के रसूल सल्ल. को तब्लीग़ का हुक्म	516
एक ख़ास ऐलान	520
यह एक आज़माईश और इम्तिहान है	523
इनसान और उससे पूछताछ	528
सूरः क़ियामत	
इनसान को दोबारा ज़िन्दा होकर उठना है	530
आप परेशान न हों	533
मौत और उसकी बेचैनियाँ	537
सूरः दह्र	
इनसान की शुरूआ़त	540
अ़ज़ाबों में घिरे काफ़िरों का हाल	542
आख़िरत की नेमतें	546
आप हिम्मत व सब्र से काम लीजिये	549
सूरः मुर्सलात	
क़ियामत का आना यक़ीनी है	552
इन चीज़ों से सबक़ लो	554
लो अब ये चीज़ें अपनी आँखों से देख लो	555
नेक आमाल वाले और उन पर अल्लाह की रहमतें	557
पारा नम्बर तीस	
सूरः नबा	
ये कैसे सवालात हैं?	560
फ़ैसले का दिन	562
परहेज़गार लोग और अल्लाह तआ़ला की नेमतें	565
अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और बुज़ुर्गी	566
सूरः नाज़िआ़त	
जिस दिन क़ियामत आयेगी	569
वादी-ए-तुवा	571
मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर कुछ दलीलें	573
हंगामे का दिन	575
सूरः अ़-ब-स	
एक अ़जीब वाक़िआ़	577
इनसान कैसा नाशुक्रा है	579
क़ियामत के दिन की अफ़रा-तफ़री का कुछ हाल	582
सूरः तक्वीर	
जब यह सूरज, चाँद और तारे सब बेनूर हो जायेंगे	584

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
✿ यह क़ुरआन अल्लाह का कलाम है	589
सूरः इन्फ़ितार	
✿ यह तमाम कायनात उलट-पुलट हो जायेगी	593
✿ बदले का दिन जानते हो क्या है?	595
सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन	
✿ नाप-तौल में कमी करने वालों का अन्जाम	596
✿ सिज्जीन क्या है?	599
✿ अ़िल्लिय्यीन क्या है?	601
✿ मोमिनों का मज़ाक़ और हंसी उड़ाना	603
सूरः इन्शिक़ाक़	
✿ क़ियामत के दिन के कुछ मनाज़िर	605
✿ आख़िरत का सामना ज़रूर करना है	607
सूरः बुरूज	
✿ यह बुर्जों वाला आसमान	611
✿ अल्लाह तआ़ला की पकड़ बड़ी सख़्त है	619
सूरः तारिक़	
✿ वह रोशन सितारा	622
✿ बारिश वाला आसमान	623
सूरः अअ़्ला	
✿ पवित्र नाम	625
✿ कामयाबी पाने वाले ये होंगे	627
सूरः ग़ाशिया	
✿ क़ियामत की ख़बर	629

उनवान	पेज
✿ तरोताज़ा और चमकते चेहरे	630
✿ इन चीज़ों से सबक़ लो और नसीहत पकड़ो	631
सूरः फ़ज्र	
✿ पहले गुज़री इन क़ौमों के हाल पर ण निगाह डालिये	635
✿ इनसान के मिज़ाज में ठहराव नहीं	640
✿ अब क्या फ़ायदा	641
सूरः बलद्	
✿ मक्का शहर की क़सम	644
✿ एक घाटी	646
सूरः शम्स	
✿ यह सूरज और इसकी गर्मी व तपिश	649
✿ क़ौमे समूद की सरकशी व नाफ़रमानी	653
सूरः लैल	
✿ क़सम है अन्धेरी रात की	655
✿ जो जैसा करेगा वैसा भरेगा	658
सूरः ज़ुहा	
✿ क़सम है दिन के उजाले की	661
सूरः अलम् नश्रह	
✿ अल्लाह तआ़ला के इन एहसानात को देखिये	664
सूरः वत्तीन	
✿ इस अमन वाले शहर की क़सम	669

उनवान	पेज
सूरः अ़लक़्	
● पढ़िये अपने रब के नाम से	671
● इनसान की सरकशी और नाफ़रमानी	673
सूरः क़द्र	
● शबे-क़द्र	676
सूरः बय्यिनह्	
● पाकीज़ा सहीफ़े	689
● मख़्लूक़ में सब से बुरे	690
सूरः ज़िलज़ाल	
● ये ज़लज़ले	692
सूरः आ़दियात	
● मुजाहिदीन के तेज़-रफ़्तार घोड़ों की क़सम	696
सूरः क़ारिआ़	
● क़ियामत का दिन बड़ा हौलनाक होगा	698
सूरः तकासुर	
● दुनिया की मुहब्बत आख़िरत से ग़ाफ़िल करने वाली चीज़ है	700
सूरः अ़स्र	
● क़सम है ज़माने की	705
सूरः हु-मज़ह्	
● ये ग़ीबत करने के रोगी	706
सूरः फ़ील	
● हाथी वालों का वाक़िआ़	708
सूरः क़ुरैश	
● रिज़्क़ की ज़्यादती और अमन-चैन की दौलत	714
सूरः माऊ़न	
● ये लोग अपनी करतूत की सज़ा पायेंगे	716
सूरः कौसर	
● कौसर का अ़ता किया जाना	719
सूरः काफ़िरून	
● कान खोलकर सुन लो	724
सूरः नस्र	
● जब अल्लाह की मदद आ जाये	726
सूरः लहब्	
● अबू लहब और उसकी बीवी के लिये तबाही है	730
सूरः इख़्लास	
● इस सूरत के नाज़िल होने का सबब और फ़ज़ीलत का बयान	732
● अल्लाह तआ़ला का एक परिचय	736
सूरः फ़लक़्	
● सब से ज़्यादा क़ुदरत वाले की पनाह	741
सूरः नास	
● आदमियों के रब की पनाह	744

Maktab e Ashraf

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर छब्बीस

सूरः अहक़ाफ़

सूरः अहक़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई, इसमें 35 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

حٰمٓ ○ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ○ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ○ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ○ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ○

हा-मीम (1) यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाले की तरफ़ से भेजी गई है। (2) हमने आसमान और ज़मीन को और जो उनके दरमियान में हैं उनको हिक्मत के साथ एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिए पैदा किया है। और जो लोग काफ़िर हैं उनको जिस चीज़ से डराया जाता है वे उससे बेरुख़ी करते हैं। (3) आप कहिए कि यह तो बतलाओ कि जिन चीज़ों की तुम अल्लाह तआ़ला को छोड़कर इबादत करते हो, मुझको यह दिखलाओ कि उन्होंने कौनसी ज़मीन पैदा की है या उनका आसमान में कुछ साझा है? मेरे पास कोई किताब जो इससे पहले की हो या कोई और मज़मून नक़ल-शुदा लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (4) और उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह तआ़ला को छोड़कर ऐसे माबूद को पुकारे जो क़ियामत तक भी उसका कहना न करे, और उनको उनके पुकारने की भी ख़बर न हो। (5) और जब सब आदमी जमा किए जाएँ तो वे उनके दुश्मन हो जाएँ और उनकी इबादत ही का इनकार कर बैठें। (6)

यह सब बेकार खेल नहीं

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि इस क़ुरआने करीम को उसने अपने बन्दे और अपने सच्चे रसूल

हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर नाज़िल फ़रमाया है और बयान फ़रमाता है कि ख़ुदा तआ़ला ऐसी बड़ी इज़्ज़त वाला है जो कभी ज़ायल (ख़त्म) नहीं होगी और ऐसी ज़बरदस्त हिक्मत वाला है जिसका कोई क़ौल कोई फ़ेल हिक्मत से ख़ाली नहीं।

फिर इरशाद होता है कि आसमान व ज़मीन वग़ैरह तमाम चीज़ें उसने बेकार और बिना वजह नहीं पैदा कीं, बल्कि सरासर हक़ के साथ और बेहतरीन तदबीर के साथ बनाई हैं, और उन सबके लिये वक़्त मुक़र्रर है जो न घटेगा न बढ़ेगा। इस रसूल से, इस किताब से और ख़ुदा के ख़ौफ़ की दूसरी निशानियों से जो बुरी फ़ितरत के लोग बेपरवाही करते हैं उन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि उन्होंने किस क़द्र ख़ुद अपना ही नुक़सान किया। फिर फ़रमाता है कि ज़रा इन मुश्रिकों से पूछो कि ख़ुदा के सिवा जिनके नाम तुम जपते हो, जिन्हें तुम पुकारते हो और जिनकी इबादत करते हो, ज़रा मुझे भी तो उनकी ताक़त और क़ुदरत दिखाओ, बतलाओ तो ज़मीन के किस टुकड़े को ख़ुद उन्होंने बनाया है? या साबित तो करो कि आसमानों में उनकी शिर्कत (साझेदारी) कितनी है और कहाँ है? हक़ीक़त यह है कि आसमान हों या ज़मीनें या और चीज़ें उन सब का पैदा करने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है, सिवाय उसके किसी को एक ज़र्रे का भी इख़्तियार नहीं। तमाम मुल्क का मालिक वही है, हर चीज़ का उलट-फेर करने वाला और क़ब्ज़े में रखने वाला वही है। तुम उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यों करते हो? क्यों उसके सिवा दूसरों को अपनी मुसीबतों में पुकारते हो? तुम्हें यह तालीम किसने दी? किसने यह शिर्क तुम्हें सिखाया? दर असल किसी भले और समझदार शख़्स की यह तालीम नहीं हो सकती। न ख़ुदा ने यह तालीम दी है। अगर तुम ख़ुदा के सिवा औरों की पूजा पर कोई आसमानी दलील रखते हो तो अच्छा इस किताब को तो जाने दो और कोई आसमानी सहीफ़ा (छोटी से छोटी किताब) ही पेश कर दो। अच्छा यह सही कि अपनी बात और दीन पर कोई और इल्मी दलील ही क़ायम करो, लेकिन यह तो जब हो सकता है कि तुम्हारा यह फ़ेल सही भी हो, इस बातिल फ़ेल (ग़लत और ग़ैर-हक़ काम) पर तो न तो तुम कोई नक़ली (किताबी) दलील पेश कर सकते हो न अ़क़्ली।

एक क़िराअत में "औ अ-सरतिम् मिन् अ़क़्लिही" है। यानी कोई सही इल्म की नक़ल अगलों से ही पेश करो। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि किसी को पेश करो जो इल्म की नक़ल करे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस बात की कोई भी दलील ले आओ। मुस्नद अहमद में है कि इससे मुराद इल्मी तहरीर है। रावी कहते हैं कि मेरा तो ख़्याल है कि यह हदीस मरफ़ूअ़ है। हज़रत अबू बक्र बिन अ़य्याश रह. फ़रमाते हैं कि मुराद बक़िया इल्म है। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि किसी पोशीदा और छुपी दलील को ही पेश कर दो। और इन बुज़ुर्गों से यह भी मन्क़ूल है कि मुराद इससे अगली (पहले ज़मानों की) तहरीरें हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि कोई ख़ास इल्म, और ये सब अक़वाल क़रीब-क़रीब एक ही मायने रखते हैं। मुराद वही है जो हमने शुरू में बयान कर दी। इमाम इब्ने जरीर रह. ने भी इसी को इख़्तियार किया है।

फिर फ़रमाता है कि उससे बढ़कर कोई राह से हटा हुआ (यानी गुमराह) नहीं जो ख़ुदा को छोड़कर बुतों को पुकारे और उनसे हाजतें तलब करे, जिन हाजतों के पूरा करने की उनमें ताक़त ही नहीं, बल्कि वे तो इससे भी बेख़बर हैं कि कोई उन्हें पुकार रहा है। क़ियामत तक ये पुकारते रहें लेकिन वे ग़ाफ़िल ही हैं। न वे सुनते हैं न देखते हैं, बिल्कुल बेख़बर हैं। न किसी चीज़ को ले दे सकते हैं, इसलिये कि वे तो पत्थर हैं, बेजान चीज़ों में से हैं।

Maktab E Ashraf

क़ियामत के दिन जब सब लोग इकट्ठे किये जायेंगे तो ये झूठे माबूद अपने आ़बिदों (पूजा करने वालों) के दुश्मन बन जायेंगे और इस बात से कि ये लोग उनकी पूजा करते थे, साफ़ इनकार कर जायेंगे जैसे अल्लाह तआ़ला का एक और जगह इरशाद है:

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً ....الخ.

यानी उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और (दूसरे) माबूद बना रखे हैं ताकि वे उनकी इ़ज़्ज़त का ज़रिया और सबब बनें। वास्तव में तो ऐसा नहीं, बल्कि वे तो उनकी इबादत का इनकार कर जायेंगे और उनके पूरे मुख़ालिफ़ हो जायेंगे। यानी जिस वक़्त ये उनके पूरे मोहताज होंगे उस वक़्त वे इनसे मुँह फेर लेंगे। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत से फ़रमाया था:

اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ......الخ.

यानी तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों से जो ताल्लुक़ात दुनिया में क़ायम कर लिये हैं इसका नतीजा क़ियामत के दिन देख लोगे, जबकि तुम एक दूसरे से इनकार कर जाओगे और तुम्हारी जगह जहन्नम मुक़र्रर और मुतैयन हो जायेगी, और तुम अपना मददगार किसी को न पाओगे।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝	और जब हमारी ख़ुली-ख़ुली आयतें उन लोगों के सामने पढ़ी जाती हैं तो ये मुन्किर लोग उस सच्ची बात के मुताल्लिक़ जबकि वह उन तक पहुँचती है, यूँ कहते हैं कि यह ख़ुला जादू है। (7) क्या ये लोग यह कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया है? आप कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ़ से बनाया होगा तो फिर तुम लोग मुझको ख़ुदा से ज़रा भी नहीं बचा सकते। वह ख़ूब जानता है, तुम क़ुरआन में जो-जो बातें बना रहे हो। मेरे और तुम्हारे दरमियान में वह काफ़ी गवाह है, और वह बड़ी मग़फ़िरत वाला, रहमत वाला है। (8) आप कह दीजिए कि कोई मैं अनोखा रसूल तो हूँ नहीं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा, और न (यह मालूम कि) तुम्हारे साथ (क्या किया जाएगा), मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वही के ज़रिये आता है, और मैं तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (9)

बेहूदा बकवास की एक अ़जीब व ग़रीब मिसाल

मुश्रिकों की सरकशी और उनका कुफ़्र बयान हो रहा है कि जब उन्हें ख़ुदा की ज़ाहिर व स्पष्ट हिदायतें

और साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो यह कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है। झुठलाना, बोहतान बाज़ी, गुमराही और कुफ़्र गोया उनका शेवा (तरीक़ा और चलन) हो गया है। जादू कहकर ही बस नहीं करते बल्कि यूँ भी कहते हैं कि इसे तो ख़ुद मुहम्मद ने गढ़ लिया है। पस नबी की ज़बानी ख़ुदा ख़ूब जवाब दिलवाता है कि अगर मैंने ही इस क़ुरआन को बना लिया है और मैं उसका सच्चा नबी नहीं, तो यक़ीनन वह मेरे इस झूठ और बोहतान पर बहुत सख़्त अ़ज़ाब करेगा और फिर तुम तो क्या सारे जहाँ में कोई ऐसा नहीं जो मुझे उसके अ़ज़ाब से छुड़ा सके। जैसे एक और जगह है:

قُلْ اِنِّیْ لَنْ یُّجِیْرَنِیْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ......... الخ.

यानी तू कह दे कि मुझे अल्लाह के हाथ से कोई नहीं बचा सकता और न उसके सिवा कोई और मुझे पनाह की जगह मिल सकेगी। लेकिन मैं ख़ुदा की तब्लीग़ और उसकी रिसालत को बजा लाता हूँ। एक और जगह इरशाद है:

وَلَوْتَقَوَّلَ عَلَیْنَابَعْضَ الْاَقَاوِیْلِ......... الخ.

यानी अगर यह हम पर कोई बात बना लेता तो हम इसका दाहिना हाथ पकड़कर इसकी गर्दन की रग काट डालते और तुम में से कोई भी इसे न बचा सकता।

फिर काफ़िरों को धमकाया जा रहा है कि तुम्हारी गुफ़्तगू का पूरा इल्म उस सब कुछ जानने वाले ख़ुदा को है, वही मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा। इस धमकी के बाद उन्हें तौबा और अल्लाह की तरफ़ झुकने की रग़बत दिलाई जा रही है और फ़रमाता है कि वह ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) व रहीम (रहम करने वाला) है। अगर तुम उसकी तरफ़ रुजू करो, अपने करतूत से बाज़ आ जाओ तो वह भी तुम्हें बख़्श देगा और तुम पर रहम करेगा। सूरः फ़ुरक़ान में भी इसी मज़मून की आयत है। फ़रमान है:

وَقَالُوْٓا اَسَاطِیْرُالْاَوَّلِیْنَ اکْتَتَبَهَا......... الخ.

यानी ये कहते हैं कि ये अगलों (पहले लोगों) की कहानियाँ हैं जिन्हें इसने लिख ली हैं और सुबह व शाम लिखाई जा रही हैं। तू कह दे कि इसे उस ख़ुदा ने उतारा है जो हर पोशीदगी (छुपी हुई बात और चीज़) को जानता है, चाहे आसमानों में हो चाहे ज़मीन में, और वह ग़फ़ूर व रहीम है।

फिर इरशाद होता है कि दुनिया में मैं कोई पहला नबी तो नहीं, मुझसे पहले भी तो दुनिया में लोगों की तरफ़ रसूल आते रहे। फिर मेरे आने से तुम्हें इस क़द्र अचंभा क्यों हुआ? मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा (यानी मैं ग़ैब का इल्म नहीं रखता)। बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत के बाद यह आयतः

لِیَغْفِرَلَكَ اللّٰهُ.........الخ.

(यानी सूरः फ़तह की आयत नम्बर 2) उतरी है। इसी तरह हज़रत इक्रिमा, हज़रत हसन, हज़रत क़तादा रह. भी इसे मन्सूख़ बतलाते हैं। यह भी मन्क़ूल है कि जब बख़्शिश वाली आयत (यानी सूरः फ़तह की आयत 2) उतरी जिसमें फ़रमाया गया "ताकि अल्लाह तेरे अगले पिछले गुनाह बख़्शे" तो एक सहाबी ने कहा हुज़ूर! यह तो अल्लाह ने बयान फ़रमा दिया है कि वह आपके साथ क्या करने वाला है, पस वह हमारे साथ क्या करने वाला है? इस पर यह आयत नाज़िल हुई:

Maktab E Ashraf

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ.

यानी ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसी जन्नत में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं। सही हदीस में भी यह तो साबित है कि मोमिनों ने कहा या रसूलल्लाह! आपको मुबारक हो, फ़रमाईये हमारे लिये क्या है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। हज़रत ज़ह्हाक रह. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि मुझे नहीं मालूम कि मेरे बारे में ख़ुदा तआ़ला का क्या हुक्म है और किस चीज़ से रोक दिया जाऊँ। इमाम हसन बसरी रह. का क़ौल है कि इस आयत से मुराद यह है कि आख़िर का अन्जाम तो मुझे निश्चित तौर पर मालूम है कि मैं जन्नत में जाऊँगा, हाँ दुनियावी हाल मालूम नहीं कि पहले बाज़ अम्बिया की तरह क़त्ल किया जाऊँ या अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे करके ख़ुदा के यहाँ जाऊँ। और इसी तरह मैं नहीं कह सकता कि तुम्हें धंसा दिया जाये या तुम पर पत्थर बरसाये जायें। इमाम इब्ने जरीर इसी को मोतबर कहते हैं और वास्तव में है भी यह ठीक। आप यक़ीन के साथ जानते थे कि आप और आपके पैरोकार जन्नत में ही जायेंगे, और दुनिया की हालत के अन्जाम से बेख़बर थे कि अन्जाम कार आपका और आपके मुख़ालिफ़ों (यानी क़ुरैश) का क्या हाल होगा? आया वे ईमान लायेंगे या कुफ़्र पर ही रहेंगे और अ़ज़ाब किये जायेंगे, या बिल्कुल ही हलाक कर दिये जायेंगे। लेकिन जो हदीस मुस्नद अहमद में है हज़रत उम्मुल-अ़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं, जिन्होंने हुज़ूरे पाक से बैअ़त की थी, कि जिस वक़्त मुहाजिर सहाबा क़ुर्आ अन्दाज़ी के ज़रिये अन्सारी सहाबा में तक़सीम हो रहे थे उस वक़्त हमारे हिस्से में हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अ़न्हु आये। आप हमारे यहाँ बीमार हुए और इन्तिक़ाल भी कर गये। जब हम आपको कफ़न पहना चुके और हुज़ूरे पाक भी तशरीफ़ ला चुके तो मेरे मुँह से निकल गया ऐ अबुस्साईब! अल्लाह तुझ पर रहम करे, मेरी तो तुझ पर गवाही है कि अल्लाह तआ़ला यक़ीनन तेरा इकराम (सम्मान) ही करेगा। इस पर जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया तुम्हें कैसे मालूम हो गया कि अल्लाह तआ़ला यक़ीनन इसका इकराम ही करेगा? मैंने कहा हुज़ूर पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों, मुझे कुछ मालूम नहीं। पस आपने फ़रमाया सुनो! इनके पास तो इनके रब की तरफ़ का यक़ीन आ पहुँचा और मुझे इनके लिये भलाई और ख़ैर की उम्मीद है। क़सम है अल्लाह की, बावजूद रसूलुल्लाह होने के मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जायेगा। इस पर मैंने कहा ख़ुदा की क़सम अब इसके बाद मैं किसी की बराअत नहीं करूँगी (यानी किसी के बारे में यक़ीन और निश्चित अन्दाज़ में नहीं कहूँगी कि वह बरी है) और मुझे इसका बड़ा सदमा हुआ, लेकिन मैंने ख़्वाब देखा कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. की एक नहर बह रही है, मैंने आकर हुज़ूर सल्ल. से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया ये उनके आमाल हैं।

यह हदीस बुख़ारी में है, मुस्लिम में नहीं, और इसकी एक सनद में है कि मैं नहीं जानता इसके बावजूद कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि उनके साथ क्या किया जायेगा। दिल को तो कुछ ऐसी लगती है कि यही अलफ़ाज़ मौक़े के लिहाज़ से ठीक हैं, क्योंकि इसके बाद ही यह जुमला है कि मुझे इस बात से बड़ा सदमा हुआ। ग़र्ज़ कि यह हदीस और इसी की जैसे मायनों वाली और हदीसें दलालत (इशारा) हैं इस बात पर कि किसी ख़ास और विशेष शख़्स के जन्नती होने का क़तई इल्म किसी को नहीं, न किसी को ऐसी बात ज़बान से कहनी चाहिये (यानी अच्छा गुमान रखते हुए नेक अन्जाम और नेक आदमी के जन्नती होने की उम्मीद और गुमान तो रख सकते हैं, लेकिन यह कहना कि लाज़िमी तौर पर वह जन्नती है, यह हद से आगे बढ़ना है, इससे एहतियात रखनी चाहिये) सिवाय उन सहाबा हज़रात के जिनके नाम लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन्हें जन्नती कहा है, जैसे अ़शरा-ए-मुबश्शरा और हज़रत इब्ने सलाम और अ़मीसा और

Maktab E Ashraf

बिलाल और सुराक़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर जो हज़रत जाबिर के वालिद हैं, और वे सत्तर क़ारी जो बीरे मऊना की जंग में शहीद किये गये और ज़ैद बिन हारिसा और जाफ़र और इब्ने रवाहा और इन जैसे और हज़रात, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ़ उस वही (अल्लाह की तरफ़ से आये हुक्म और पैग़ाम) का फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हूँ जो ख़ुदा की जनाब से मेरी जानिब आये और मैं तो सिर्फ़ डराने वाला हूँ कि स्पष्ट तौर पर हर शख़्स को आगाह कर रहा हूँ। हर अ़क़्लमन्द मेरे मन्सब (हैसियत और ओ़हदे यानी नबी होने) से बा-ख़बर है। वल्लाहु आलम।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ۭ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

आप यह कह दीजिए कि तुम मुझको यह बताओ कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और तुम इसके मुन्किर हो, और बनी इस्राईल में से कोई गवाह इस जैसी किताब पर गवाही देकर ईमान ले आए और तुम तकब्बुर ही में रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला बेइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (10)

और ये काफ़िर लोग ईमान वालों के बारे में यूँ कहते हैं कि अगर यह क़ुरआन कोई अच्छी चीज़ होता तो ये लोग इसकी तरफ़ हम से आगे न बढ़ते, और जब उन लोगों को क़ुरआन से हिदायत नसीब न हुई तो यह कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (11) और इससे पहले मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की किताब जो राह दिखाने वाली और रहमत थी, और यह एक किताब है जो उसको सच्चा करती है, अ़रबी ज़बान में, ज़ालिमों के डराने के लिए और नेक लोगों को ख़ुशख़बरी देने के लिए। (12) जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर जमे रहे, उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। (13) ये लोग जन्नती हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन कामों के बदले में जो कि वे करते थे। (14)

ख़ुराफ़ात का पुलिन्दा

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़रमाता है कि उन काफ़िर मुश्रिकों से

Maktab E Ashraf

कहो कि अगर यह क़ुरआन हक़ीक़त में ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से है और फिर भी तुम इसका इनकार कर रहे हो तो बतलाओ तो तुम्हारा क्या हाल होगा? और ख़ुदा जिसने मुझे हक़ के साथ तुम्हारी तरफ़ यह पाक किताब देकर भेजा है वह तुम्हें कैसी कुछ सज़ायें करेगा? तुम इसका इनकार करते हो, इसे झूठा बतलाते हो हालाँकि इसकी सच्चाई और सेहत (सही और हक़ होने) की शहादत (गवाही) वे किताबें भी दे रही हैं जो इससे पहले वक़्त-वक़्त पर पहले अम्बिया पर नाज़िल होती रहीं, और बनी इस्राईल के जिस शख़्स ने इसकी सच्चाई की गवाही दी उसने हक़ीक़त को पहचान कर इसे माना, इस पर ईमान लाया। लेकिन तुमने इसकी इत्तिबा से जी चुराया और तकब्बुर किया। यह मतलब भी बयान किया गया है कि शाहिद (गवाही देने वाले) ने अपने नबी और उसकी किताब पर यक़ीन कर लिया, लेकिन तुमने अपने नबी और अपनी किताब के साथ कुफ़्र किया। अल्लाह तआ़ला ज़ालिम गिरोह को हिदायत नहीं करता। "शाहिदुन" का लफ़्ज़ इस्मे जिन्स है और यह अपने आ़म मायने के लिहाज़ से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. वग़ैरह सब को शामिल है। यह याद रहे कि यह आयत मक्की है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. के इस्लाम से पहले की है, ऐसी आयत यह भी है:

وَاِذَا تُتْلٰی عَلَيْهِمْ قَالُوْآ اٰمَنَّا بِهٖ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَا اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ.

यानी जब उन पर तिलावत की जाती (यानी क़ुरआन पढ़ा जाता) है तो इक़रार करते हैं कि यह हमारे रब की तरफ़ से सरासर बरहक़ है, हम तो इससे पहले ही मुसलमान हैं। एक और फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖ........ الخ.

यानी जिन लोगों को इससे पहले इल्म अ़ता फ़रमाया गया है उन पर जब तिलावत की जाती है तो वे बिना किसी असमंजस के सज्दे में गिर पड़ते हैं और ज़बान से कहते हैं कि हमारा रब पाक है, उसके वायदे यक़ीनन सच्चे और होकर रहने वाले हैं। मसरूक़ रह. और शाबी रह. फ़रमाते हैं कि यहाँ इस आयत से मुराद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. नहीं, इसलिये कि आयत मक्का में नाज़िल हुई है और आप मदीना की हिजरत के बाद इस्लाम क़बूल करते हैं। हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स के बारे में जो ज़िन्दा हो और ज़मीन पर चल फिर रहा हो मैंने हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी उसका जन्नती होना नहीं सुना (यह इनकी अपनी मालूमात की बात हो रही है वरना अनेक ऐसे सहाबा हैं जिनको इस दुनिया ही में अल्लाह के रसूल ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दी है) सिवाय हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के। उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुई:

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِیْ اِسْرَآئِيْلَ.........الخ.

यानी यही आयत नम्बर 10 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह)

हज़रत अ़ब्दुलाह बिन अ़ब्बास रज़ि. और हज़रत मुजाहिद, ज़ह्हाक, क़तादा, इक्रिमा, यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हिलाल बिन बश्शार, सुद्दी, सौरी और मालिक बिन अनस बिन ज़ैद रहिमहुमुल्लाह का क़ौल है कि इससे मुराद हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम हैं।

ये काफ़िर कहा करते हैं कि अगर क़ुरआन बेहतरी की चीज़ होती तो हम जैसे शरीफ़ इनसान जो अल्लाह के मक़बूल बन्दे हैं उन पर भला ये नीचे दर्जे के लोग जैसे बिलाल, अ़म्मार, सुहैब, ख़ब्बाब (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और इन्हीं जैसे और गिरे पड़े बाँदी-ग़ुलाम कैसे आगे बढ़ जाते? फिर तो अल्लाह सब

से पहले हमें ही नवाज़ता। हालाँकि यह क़ौल सख़्त बातिल है। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है:

وَكَذَالِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ....الخ.

यानी हमने इसी तरह बाज़ को बाज़ के साथ फ़ितने (आज़माईश) में डाला ताकि कहें कि क्या यही लोग हैं कि हम सब में से इन्हीं पर ख़ुदा ने अपना एहसान किया?

यानी उन्हें ताज्जुब मालूम होता है कि ये लोग कैसे हिदायत पा गये? अगर यह चीज़ भली होती तो हम इसकी तरफ़ लपक कर जाते। पस उनकी यह सोच तो ग़लत थी लेकिन इतनी बात यक़ीनी है कि नेक समझ वाले, सही राह पर चलने वाले हमेशा भलाई की तरफ़ सबक़त करते (दौड़ते और आगे बढ़ते) हैं। इसी लिये अहले सुन्नत वल-जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि जो क़ौल व फ़ेल रसूले पाक के सहाबा से साबित न हो वह बिदअ़त है। इसलिये कि अगर उसमें बेहतरी होती तो वह पाक जमाअ़त जो किसी चीज़ में पीछे रहने वाली न थी वह उसे न छोड़ती। चूँकि अपनी बदनसीबी के सबब यह गिरोह क़ुरआन पर ईमान नहीं लाया इसलिये यह अपनी शर्मिन्दगी मिटाने को क़ुरआन ही पर नाम धरता है और कहता है कि यह तो पुराने लोगों की पुरानी ग़लत बाते हैं, यह कहकर वे क़ुरआन और क़ुरआन वालों को ताना देते हैं, यही वह तकब्बुर है जिसके बारे में हदीस में है कि तकब्बुर नाम है हक़ को हटा देने और लोगों को हक़ीर (कम-दर्जा) समझने का। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि इससे पहले हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई किताब तौरात इमाम व रहमत थी और यह किताब यानी क़ुरआन मजीद अपने से पहले की तमाम किताबों को अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई और सच्ची किताबें मानता है। यह भाषायिक तौर पर अ़रबी की बेहतरीन निहायत वाज़ेह किताब है। इसमें काफ़िरों के लिये वईद (सज़ा की धमकी) है और ईमान वालों के लिये ख़ुशख़बरी है। इसके बाद की आयत की पूरी तफ़सीर सूरः हा-मीम अस्सज्दा में गुज़र चुकी है। उन पर ख़ौफ़ न होगा, यानी आगे चलकर, और ये ग़म न खायेंगे यानी छोड़ी हुई चीज़ों का। ये हमेशा जन्नत में रहने वाले जन्नती हैं। इनके पाकीज़ा आमाल थे ही ऐसे कि रहीम की रहमत और करीम के करम की बदलियाँ इन पर झूम-झूमकर मूसलाधार बारिश बरसायें। वल्लाहु आलम।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ

और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। उसकी माँ ने उसको बड़ी मशक़्क़त के साथ पेट में रखा और बड़ी मशक़्क़त के साथ उसको जन्म दिया और उसको पेट में रखना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने (में पूरा होता) है, यहाँ तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँच जाता है और चालीस साल को पहुँचता है तो कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इस पर हमेशगी दीजिए कि मैं आपकी उन नेमतों का शुक्र किया करूँ जो आपने मुझको और मेरे माँ-बाप को अ़ता फ़रमाई हैं। और मैं नेक काम

اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ٥ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِىْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ٥	करूँ जिससे आप ख़ुश हों, और मेरी औलाद में भी मेरे लिए सलाहियत पैदा कर दीजिए, मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूँ और मैं फ़रमाँबरदार हूँ। (15) ये वे लोग हैं कि हम उन के कामों को क़बूल कर लेंगे और उनके गुनाहों से दरगुज़र करेंगे, इस तौर पर कि ये जन्नत वालों में से होंगे, उस सच्चे वायदे की वजह से जिसका उनसे वायदा किया जाता है। (16)

बेहतरीन अख़्लाक़ के कुछ सुनहरे उसूल

इससे पहले चूँकि ख़ुदा तआ़ला की तौहीद का, उसकी इबादत के इख़्लास का और उस पर जमे रहने का हुक्म हुआ था इसलिये यहाँ माँ-बाप के हुक़ूक़ के पूरा करने का हुक्म हो रहा है। इसी मज़मून की और बहुत सी आयतें क़ुरआन पाक में मौजूद हैं। जैसे फ़रमायाः

وَقَضٰى رَبُّكَ اَنْ لَّاتَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا.

यानी तेरा रब यह फ़ैसला कर चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप के साथ एहसान करो। एक और आयत में हैः

اَنِ اشْكُرْلِىْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ.

मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन (माँ-बाप) का, लौटना तो मेरी ही तरफ़ है।

और भी इस मज़मून की बहुत सी आयतें हैं। पस यहाँ इरशाद होता है कि हमने इनसान को हुक्म किया है कि माँ-बाप के साथ एहसान करो, उनसे तवाज़ो से (यानी आ़जिज़ी और विनम्रता के साथ) पेश आओ। अबू दाऊद तयालिसी में हदीस है कि हज़रत सअ़द रज़ि. की वालिदा ने आप से कहा कि क्या माँ-बाप की इताअ़त (आज्ञा के पालन करने) का अल्लाह का हुक्म नहीं? सुन मैं न खाना खाऊँगी न पानी पियूँगी जब तक कि तू अल्लाह के साथ कुफ़्र न करे। हज़रत सअ़द रज़ि. के इनकार पर उसने यही किया कि खाना पीना छोड़ दिया, यहाँ तक कि लकड़ी से उसका मुँह खोलकर जबरन पानी वग़ैरह छुआ देते थे, इस पर यह आयत उतरी (लेकिन हज़रत सअ़द ने इस्लाम को नहीं छोड़ा, अल्लाह की नाफ़रमानी में किसी और की फ़रमाँबरदारी जायज़ नहीं)।

यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरह में भी है। माँ ने हमल (गर्भ) की हालत में कैसी तकलीफ़ें बरदाश्त की हैं, इसी तरह बच्चा होने के वक़्त कैसी-कैसी मुसीबतों का वह शिकार बनी है, हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने इस आयत से और इसके साथ सूरः लुक़मान की आयतः

وَفِصَالُهٗ فِىْ عَامَيْنِ.

और अल्लाह तआ़ला के फ़रमानः

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ.

यानी मायें अपने बच्चों को दो साल कामिल दूध पिलायें, उनके लिये जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहें, मिलाकर इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है कि हमल (गर्भ) की कम से कम मुद्दत छह महीने है। यह इस्तिदलाल बहुत मज़बूत और बिल्कुल सही है। हज़रत उस्मान रज़ि. और सहाबा की एक जमाअ़त ने भी इसी की ताईद की है। हज़रत मामर बिन अ़ब्दुल्लाह जोहनी फ़रमाते हैं कि हमारे क़बीले के एक शख़्स ने जुहैना क़बीले की एक औ़रत से निकाह किया, छह महीने पूरे होते ही उसे बच्चा पैदा हुआ, उसके शौहर ने हज़रत उस्मान रज़ि. से ज़िक्र किया, आपने उस औ़रत के पास आदमी भेजा, वह तैयार होकर आने लगी तो उनकी बहन ने रोना-पीटना शुरू कर दिया। उस औ़रत ने अपनी बहन को तसल्ली दी और फ़रमाया- क्यों रोती हो? ख़ुदा की क़सम! मख़्लूके ख़ुदा में से किसी से मैं नहीं मिली, मैंने कोई बुरा फ़ेल नहीं किया, देखो कि ख़ुदा का फ़ैसला मेरे बारे में क्या होता है? जब हज़रत उस्मान रज़ि. के पास आयीं तो आपने उन्हें रजम करने (यानी पत्थरों से मार-मारकर हलाक करने) का हुक्म दिया। जब हज़रत अ़ली रज़ि. को यह बात मालूम हुई तो आपने हज़रत उस्मान से मालूम किया कि यह आप क्या कर रहे हैं? आपने जवाब दिया कि इस औ़रत को निकाह के छह महीने बाद बच्चा हुआ है जो नामुम्किन है। यह सुनकर अ़ली मुर्तज़ा रज़ि. ने फ़रमाया- क्या आपने क़ुरआन नहीं पढ़ा? फ़रमाया हाँ पढ़ा है। फ़रमाया क्या यह आयत नहीं पढ़ी?

وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا.

(यानी यही आयत नम्बर 15 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) और साथ ही यह आयत भीः

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ.

पस गर्भ की मुद्दत और दूध पिलाई की मुद्दत दोनों के मिलकर तीस महीने हैं, और इसमें से जब दूध पिलाई की कामिल मुद्दत दो साल के चौबीस महीने निकाल दिये जायें तो बाक़ी छह महीने रह जाते हैं। तो क़ुरआने करीम से मालूम हुआ कि हमल (गर्भ) की कम से कम मुद्दत छह माह है, और उस बीबी को भी इतनी ही मुद्दत में बच्चा पैदा हुआ। फिर उस पर ज़िना का इल्ज़ाम कैसे क़ायम कर रहे हो? हज़रत उस्मान रज़ि. ने फ़रमाया- वल्लाह यह बात बहुत ठीक है, अफ़सोस मेरा ख़्याल ही इस तरफ़ नहीं गया, जाओ उस औ़रत को ले आओ। पस लोगों ने उस औ़रत को इस हाल पर पाया कि उससे फ़राग़त हो चुकी थी (यानी लोग उसे रजम कर चुके थे)। यह हज़रत उस्मान की इज्तिहादी ख़ता कही जा सकती है, जिस पर ख़ुदा के यहाँ पकड़ नहीं।

हज़रत मामर रह. फ़रमाते हैं- अल्लाह की क़सम! एक कौआ दूसरे कौए से और एक अण्डा दूसरे अण्डे से भी इतना मुशाबा (हमशक्ल) नहीं होता जितना उस औ़रत का बच्चा अपने बाप से मुशाबा (शक्ल व सूरत में मिलता-जुलता) था। ख़ुद उसके वालिद ने भी उसे देखकर कहा ख़ुदा की क़सम इस बच्चे के बारे में मुझे अब कोई शक नहीं रहा और उसे अल्लाह तआ़ला ने एक नासूर (रिस्ते ज़ख़्म) के साथ मुब्तला किया जो उसके चेहरे पर था। वही उसे घुलाता रहा यहाँ तक कि वह मर गया। (इब्ने अबी हातिम) यह रिवायत दूसरी सनद से आयत 'फ़-अ-न अव्वलुल् आ़बिदीन' की तफ़सीर में हमने ज़िक्र की है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब किसी औ़रत को नौ महीने में बच्चा पैदा हो तो उसकी दूध पिलाई की मुद्दत इक्कीस माह काफ़ी हैं, और जब सात महीने में हो तो दूध-पिलाई की मुद्दत तेईस माह और जब छह माह में बच्चा हो जाये तो दूध-पिलाई की मुद्दत पूरे दो साल, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि हमल (गर्भ) और दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने है। जब वह अपनी पूरी क़ुव्वत के

Maktab E Ashraf

ज़माने को पहुँचा यानी जवानी की उम्र में पहुँच गया और पूरा मर्द शुमार होने लगा और चालीस साल का हुआ, अ़क़्ल पूरी आयी, मुकम्मल समझ को पहुँचा, हिल्म और बुर्दबारी आ गयी। कहा जाता है कि चालीस साल की उम्र में जो हालत उसकी होती है उमूमन फिर बाक़ी उम्र वही हालत रहती है। हज़रत मसरूक़ रह. से पूछा गया कि इनसान कब अपने गुनाहों पर पकड़ा जाता है? फ़रमाया जब तू चालीस साल का हो जाये तो अपने बचाव ढूँढ ले। अबू यअ़ला मूसली में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान बन्दा चालीस साल का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके हिसाब में तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर देता है और जब साठ साल का हो जाता है तो आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं और जब अस्सी साल का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नेकियाँ साबित रखता है और उसकी बुराईयाँ मिटा देता है और जब नब्बे साल का होता है तो अल्लाह तआ़ला उसके अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमाता है और उसके घराने के आदमियों के बारे में उसे शफ़ाअ़त करने वाला बनाता है और आसमानों में लिख दिया जाता है कि यह ख़ुदा की ज़मीन में उसका क़ैदी है।

यह हदीस दूसरी सनद से मुस्नद अहमद में भी है। बनू उमैया के दमिश्क़ के गवर्नर हज्जाज बिन अ़ब्दुल्लाह हलीमी फ़रमाते हैं कि चालीस साल की उम्र में तो मैंने नाफ़रमानियों और गुनाहों को लोगों की शर्म व हया से छोड़ा था, उसके बाद गुनाहों को छोड़ने के सबब ख़ुद अल्लाह की ज़ात से हया थी। अ़रब शायर कहता है कि बचपने में नासमझी की हालत में जो कुछ हो गया हो गया, लेकिन जिस वक़्त बुढ़ापे ने मुँह दिखाया तो सर की सफ़ेदी ने ख़ुद ही बुराईयों से कह दिया कि अब तुम कूच कर जाओ (यानी मेरे पास से निकल लो)।

फिर उसकी दुआ़ का बयान हो रहा है कि उसने कहा- ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर इनाम फ़रमाई। और मैं वे आमाल करूँ जिनसे तू आने वाली ज़िन्दगी में ख़ुश हो जाये और मेरी औलाद में मेरे लिये इस्लाह कर दे, यानी मेरी नस्ल और मेरे बाद वालों में। मैं तेरी तरफ़ रुजू करता हूँ और मेरा इक़रार है कि मैं फ़रमाँबरदारों में हूँ।

इसमें इरशाद है कि चालीस साल की उम्र को पहुँचकर इनसान को सच्चे दिल से अल्लाह की तरफ़ तौबा करनी चाहिये और नये सिरे से ख़ुदा की तरफ़ रुजू व तवज्जोह करके उस पर जम जाना चाहिये। अबू दाऊद में है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अत्तहिय्यात में पढ़ने के लिये इस दुआ़ की तालीम किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَاهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَجَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَاظَهَرَمِنْهَا وَمَابَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِىْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا وَتُبْ عَلَيْنَا. اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ. وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا عَلَيْكَ قَابِلِيْهَا وَاَتِمْهَا عَلَيْنَا.

यानी ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में उल्फ़त डाल दे और हमारे आपस में इस्लाह (सुधार) कर दे और हमें सलामती की राहें दिखा और हमें अन्धेरों से बचाकर नूर की तरफ़ निजात दे और हमें हर बुराई से बचा ले चाहे वह ज़ाहिर हो चाहे छुपी हुई हो, और हमें हमारे कानों में और दिलों और आँखों में और बीवी बच्चों में बरकत दे और हम पर रुजू फ़रमा, यक़ीनन तू रुजू फ़रमाने वाला मेहरबान है। ऐ अल्लाह! हमें अपनी

नेमतों का शुक्रगुज़ार और उनके सबब अपना प्रशंसक (तारीफ़ व शुक्र करने वाला) और नेमतों का इक़रारी बना, और अपनी भरपूर नेमतें हमें अ़ता फ़रमा।

फिर फ़रमाता है कि यह जिनका बयान गुज़रा जो ख़ुदा की तरफ़ तौबा करने वाले और जो नेकियाँ छूट जायें उन्हें इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी चाहने) की अधिकता से पा लेने वाले हैं, वे वही हैं जिनकी अक्सर ख़तायें और गुनाह हम माफ़ फ़रमा देते हैं और उनके थोड़े आमाल के बदले हम उन्हें जन्नती बना देते हैं। उनका यही हुक्म है जैसे कि वायदा किया और फ़रमाया, यह वह सच्चा वायदा है जो उनसे किया जाता है।

इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. रूहुल-अमीन (हज़रत जिब्राईल) अ़लैहिस्सलाम की रिवायत से फ़रमाते हैं कि इनसान की नेकियाँ और बदियाँ लाई जायेंगी और एक को एक के बदले में किया जायेगा, पस अगर एक नेकी भी बच रही तो अल्लाह तआ़ला उसी के बदले उसे जन्नत में पहुँचा देगा। हदीस के रावी (बयान करने वाले) ने अपने उस्ताद से पूछा- अगर तमाम नेकियाँ ही बुराईयों के बदले चली जायें तो? आपने फ़रमाया- उनकी बुराईयों से अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त दरगुज़र फ़रमा देता है। दूसरी सनद में यह अल्लाह तआ़ला के फ़रमान से मरवी है, यह हदीस ग़रीब है और इसकी सनद बहुत पुख़्ता है।

हज़रत यूसुफ़ बिन सअ़द रह. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अ़ली रज़ि. बसरा वालों पर ग़ालिब आ गये उस वक़्त मेरे पास हज़रत मुहम्मद बिन हातिब रह. आये। एक दिन मुझसे फ़रमाने लगे- मैं हज़रत अ़ली के पास था और उस वक़्त हज़रत अ़म्मार हज़रत सअ़सआ़ हज़रत उश्तर, हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र भी थे। बाज़ लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ि. का ज़िक्र निकाला और कुछ गुस्ताख़ी की। हज़रत अ़ली रज़ि. उस वक़्त तख़्त पर बैठे हुए थे, हाथ में छड़ी थी, मज्लिस में मौजूद लोगों में से किसी ने कहा कि आपके सामने तो आपकी इस बहस का सही फ़ैसला करने वाले मौजूद ही हैं, चुनाँचे सब लोगों ने हज़रत अ़ली रज़ि. से सवाल किया, इस पर आपने फ़रमाया हज़रत उस्मान उन लोगों में से थे जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ...... الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 16 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) क़सम ख़ुदा की ये लोग जिनका ज़िक्र इस आयत में है हज़रत उस्मान रज़ि. हैं और उनके साथी। तीन मर्तबा यही फ़रमाया। रिवायत बयान करने वाले यूसुफ़ कहते हैं कि मैंने मुहम्मद बिन हातिब से पूछा- सच कहो तुम्हें ख़ुदा की क़सम तुमने ख़ुद हज़रत अ़ली की ज़बान से यह सुना है? फ़रमाया हाँ ख़ुदा की क़सम मैंने ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि. से यह सुना है।

और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि तुफ़ "यानी लानत" है तुम पर। क्या तुम मुझको यह वायदा (यानी ख़बर) देते हो कि मैं (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होकर) क़ब्र से निकाला जाऊँगा? हालाँकि मुझसे पहले बहुत-सी उम्मतें गुज़र गईं। और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं कि अरे तेरा नास हो ईमान ले आ, बेशक अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है, तो यह कहता है कि ये बे-सनद बातें अगलों से नक़ल होती चली	وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ

عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا
خٰسِرِيْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ
وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ
اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا
وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ
الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۝

आ रही हैं। (17) ये वे लोग हैं कि उनके हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का क़ौल पूरा होकर रहा जो उनसे पहले जिन्न और इनसान गुज़र चुके हैं, बेशक ये घाटे में रहे। (18) और हर एक के लिए उनके आमाल की वजह से अलग-अलग दर्जे मिलेंगे, और ताकि अल्लाह तआ़ला सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर ज़ुल्म न होगा। (19) और जिस दिन काफ़िर लोग आग के सामने लाए जाएँगे कि तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके, सो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर किया करते थे। और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानियाँ किया करते थे। (20)

Maktaba Ashraf

नाफ़रमान व नालायक़ औलाद

चूँकि ऊपर उन लोगों का हाल बयान हुआ था जो अपने माँ-बाप के हक़ में नेक दुआयें करते हैं और उनकी ख़िदमतें करते रहते हैं और साथ ही उनके आख़िरत के दरजात का और वहाँ निजात पाने और अपने रब की नेमतों से मालामाल होने का ज़िक्र हुआ था। इसलिये उसके बाद उन बदबख़्तों का बयान हो रहा है जो अपने माँ-बाप के नाफ़रमान हैं, उन्हें बातें सुनाते हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के बेटे हज़रत अ़ब्दुर्रहमान के हक़ में नाज़िल हुई है जैसे कि औ़फ़ी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत से बयान करते हैं, जिसके सही होने में भी कलाम है और जो क़ौल निहायत कमज़ोर है। इसलिये कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ि. तो मुसलमान हो गये थे और बहुत अच्छे इस्लाम वालों में से थे, बल्कि अपने ज़माने के बेहतरीन लोगों में से थे। बाज़ मुफ़स्सिरीन का भी यह क़ौल है लेकिन ठीक यही है कि यह आयत आ़म है।

इब्ने अबी हातिम में है कि मरवान ने अपने ख़ुतबे में कहा कि अल्लाह तआ़ला ने अमीरुल-मोमिनीन को यज़ीद के बारे में एक अच्छी राय समझाई है, अगर उन्हें अपने बाद बतौर ख़लीफ़ा के नामित कर जायें तो हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर ने भी तो अपने बाद ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया ही है। इस पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ि. बोल उठे कि क्या हिरक़्ल के दस्तूर पर और ईसाईयों के क़ानून पर अ़मल करना चाहते हो? क़सम है ख़ुदा की न तो पहले ख़लीफ़ा ने अपनी औलाद में से किसी को ख़िलाफ़त के लिये चुना न अपने कुनबे क़बीले वालों में से किसी को नामित किया, और हज़रत मुआ़विया ने जो उसे किया वह सिर्फ़ उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई और उनके बच्चों पर रहम खाकर। यह सुनकर मरवान कहने लगा

क्या तू वही नहीं जिसने अपने वालिदैन (माँ-बाप) को उफ़ कहा था? तो अ़ब्दुर्रहमान रज़ि. ने फ़रमाया क्या तू एक मलऊन शख़्स की औलाद में से नहीं? तेरे बाप पर रसूलुल्लाह सल्ल. ने लानत की थी। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. ने सुनकर मरवान से कहा तूने अ़ब्दुर्रहमान से जो कहा वह बिल्कुल झूठ है, वह आयत उनके बारे में नहीं बल्कि वह फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ के बारे में नाज़िल हुई है। फिर मरवान जल्दी ही मिम्बर से उतर कर आपके हुजरे के दरवाज़े पर आया और कुछ बातें करके लौट गया। बुख़ारी में यह हदीस दूसरी सनद से और अलफ़ाज़ के साथ है। उसमें यह भी है कि हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि. की तरफ़ से मरवान हिजाज़ का अमीर (हाकिम) बनाया गया था। उसमें यह भी है कि मरवान ने हज़रत अ़ब्दुर्रहमान को गिरफ़्तार कर लेने का हुक्म अपने सिपाहियों को दिया। लेकिन यह दौड़कर अपनी बहन साहिबा उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हुजरे में चले गये। इस वजह से उन्हें कोई पकड़ न सका, और उसमें यह भी है कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पर्दे में से ही फ़रमाया कि हमारे बारे में सिवाय मेरी पाकदामनी की आयतों के और कोई आयत नहीं उतरी।

नसाई की रिवायत में है कि इस ख़ुतबे से मक़सूद यज़ीद की तरफ़ से बैअ़त हासिल करना था। हज़रत आ़यशा रज़ि. के फ़रमान में यह भी है कि मरवान अपने इस क़ौल में झूठा है जिसके बारे में यह आयत उतरी है मुझे बख़ूबी उसका नाम मालूम है, लेकिन मैं इस वक़्त उसे ज़ाहिर नहीं करना चाहती, लेकिन हाँ रसूलुल्लाह सल्ल. ने मरवान के बाप को मलऊन कहा है और मरवान उसकी पुश्त में था। पस यह उस ख़ुदाई लानत का बक़िया (अंश और हिस्सा) है। यह जहाँ अपने माँ-बाप की बेअदबी करता है वहीं ख़ुदा तआ़ला की बेअदबी से भी नहीं चूकता। मरने के बाद की ज़िन्दगी को झुठलाता है और अपने माँ-बाप से कहता है कि तुम मुझे उस ज़िन्दगी से क्या डराते हो मुझसे पहले सैंकड़ों ज़माने गुज़र गये, लाखों करोड़ों इनसान मरे, मैंने तो किसी को दोबारा ज़िन्दा होते नहीं देखा। उनमें से एक भी तो लौटकर ख़बर देने नहीं आया। माँ-बाप बेचारे उससे तंग आकर अल्लाह की बारगाह में उसकी हिदायत के लिये दुआ़ करते हैं, उस बारगाह में अपनी फ़रियाद पहुँचाते हैं और फिर उससे कहते हैं कि बदनसीब अभी कुछ नहीं बिगड़ा, अब भी मुसलमान हो जा, लेकिन यह मग़रूर फिर जवाब देता है कि जिसे तुम मानने को कहते हो मैं तो उसे एक पुराने क़िस्से से ज़्यादा वक़अ़त की नज़र से नहीं देख सकता।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ये लोग अपने जैसे पहले गुज़रे जिन्नात और इनसानों के गिरोह और जमाअ़त में दाख़िल हो गये, जिन्होंने अपना नुक़सान भी किया और अपने वालों को भी बरबाद किया। अल्लाह तआ़ला के फ़रमान में यहाँ लफ़्ज़ "उलाइ-क" (यानी वे लोग) है, हालाँकि इससे पहले लफ़्ज़ "वल्लज़ी" (जिसने) है, इससे भी हमारी तफ़सीर की पूरी ताईद होती है कि मुराद इससे आ़म है, जो भी ऐसा हो, यानी माँ-बाप का बेअदब और क़ियामत का मुन्किर (इनकारी) हो उसके लिये यही हुक्म है। चुनाँचे हज़रत हसन और हज़रत क़तादा रह. भी यही फ़रमाते हैं कि इससे मुराद काफ़िर फ़ाजिर (बदकार) माँ-बाप का नाफ़रमान और मरने के बाद ज़िन्दा होने का मुन्किर है। इब्ने अ़साकिर की एक ग़रीब हदीस में है कि चार शख़्सों पर अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़र्श पर से लानत की है और उस पर फ़रिश्तों ने आमीन कही है।

1. जो किसी मिस्कीन को बहकाये, कहे कि आ मैं तुझे कुछ दूँगा और जब वह आये तो कह दे कि मेरे पास तो कुछ नहीं।

2. जो नाबीना से कहे कि जानवर से बच, हालाँकि उसके आगे कुछ न हो।

3. वे लोग जो किसी को उसके इस सवाल के जवाब में कि फ़ुलाँ का मकान कौनसा है? किसी दूसरे का मकान बता दें।

4. वह जो अपने माँ-बाप को मारे यहाँ तक कि वे तंग आ जायें और चीख़-पुकार करने लगें।

फिर फ़रमाता है कि हर एक के लिये उसकी बुराई के मुताबिक़ सज़ा है। ख़ुदा तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर बल्कि इससे भी कम किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि जहन्नम के दर्जे नीचे हैं और जन्नत के दर्जे ऊँचे हैं। फिर फ़रमाता है कि जब जहन्नमी जहन्नम पर लाकर खड़े किये जायेंगे तो उन्हें बतौर डाँट-डपट के कहा जायेगा कि तुम अपनी नेकियाँ दुनिया ही में वसूल कर चुके, उनसे फ़ायदा वहीं उठा लिया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने बहुत ज़्यादा पसन्दीदा और मज़ेदार ग़िज़ा से इसी आयत को पेशे नज़र रखकर परहेज़ कर लिया था और फ़रमाते थे- मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं मैं उन लोगों में से न हो जाऊँ जिन्हें अल्लाह तआ़ला डाँट-डपट के साथ यह फ़रमायेगा। हज़रत अबू जाफ़र रह. फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो दुनिया में की हुई अपनी नेकियाँ क़ियामत के दिन गुम पायेंगे और उनसे यही कहा जायेगा। फिर फ़रमाता है कि आज उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाबों की सज़ा दी जायेगी उनके तकब्बुर और उनके फ़िस्क़ (बुरे अ़मल) की वजह से, जैसा अ़मल था वैसा ही बदला मिला। दुनिया में यह नाज़ व नेमत से अपनी जानों को पालने वाले और तकब्बुर व बड़ाई से हक़ की इत्तिबा को छोड़ने वाले और बुराईयों और नाफ़रमानियों में पूरी तरह मश्ग़ूल रहने वाले थे, तो आज क़ियामत के दिन उन्हें अपमान और रुस्वाई वाले अ़ज़ाब और सख़्त दर्दनाक सज़ायें और हाय-वाय और अफ़सोस व हसरत के साथ जहन्नम के नीचे के तबक़ों में जगह मिलेगी। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला हमें इन सब बातों से महफ़ूज़ रखे।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ○ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ○ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا	और आप क़ौमे आ़द के भाई (हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र कीजिए जबकि उन्होंने अपनी क़ौम को जो कि ऐसे मक़ाम पर रहते थे कि वहाँ रैग के लम्बे झुके हुए तूदे थे, इस पर डराया कि तुम ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत मत करो। और उनसे पहले और उनसे पीछे बहुत-से डराने वाले (पैग़म्बर अब तक) गुज़र चुके हैं, मुझको तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (21) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस इरादे से आए हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो? अगर तुम सच्चे हो तो जिसका तुम हमसे वायदा करते हो उसको हम पर ला दो। (22) उन्होंने फ़रमाया कि पूरा इल्म तो ख़ुदा ही को है, और मुझको तो जो पैग़ाम देकर भेजा गया है मैं तुमको पहुँचा देता हूँ, लेकिन मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग ख़ालिस जहालत की बातें करते हो। (23) सो उन लोगों

Maktaba-E-Ashraf

هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ ۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝	ने जब उस बादल को अपनी वादियों के मुक़ाबिल आता देखा तो कहने लगे कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा, नहीं-नहीं बल्कि यह वही है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे। एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है। (24) वह हर चीज़ को अपने परवर्दिगार के हुक्म से हलाक कर देगी। चुनाँचे वे ऐसे हो गए कि सिवाय उनके मकानों के और कुछ न दिखाई देता था। हम मुजरिमों को यूँ ही सज़ा दिया करते हैं। (25)

'अहक़ाफ़' की वादियों में हक़ की दावत

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल. की तसल्ली के लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि अगर आपकी क़ौम आपको झुठलाये तो आप पहले अम्बिया के वाक़िआ़त याद कर लीजिये कि उनकी क़ौम ने भी उनको झुठलाया। क़ौमे आ़द वालों के भाई से मुराद हज़रत हूद पैग़म्बर हैं। उन्हें अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आ़दे ऊला की तरफ़ भेजा था जो अहक़ाफ़ में रहते थे।

"अहक़ाफ़" जमा (बहुवचन) है "हक़्फ़" की, और हक़्फ़ कहते हैं रेत के पहाड़ को। मुतलक़ पहाड़, ग़ार और हज़्रे-मौत की वादी जिसका नाम बरमूत है, जहाँ काफ़िरों की रूहें डाली जाती हैं। यह मतलब भी अहक़ाफ़ का बयान किया गया है। क़तादा रह. का क़ौल है कि यमन में समन्दर के किनारे रेत के टीलों में एक जगह थी जिसका नाम "शहर" था, यहाँ ये लोग आबाद थे। इमाम इब्ने माजा रह. ने बाब बाँधा है कि जब दुआ़ माँगे तो अपने नफ़्स से शुरू करे, इसमें एक हदीस लाये हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला हम पर रहम करे।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला ने उनके इर्द-गिर्द के शहरों में भी अपने रसूल भेजे थे। जैसे एक दूसरी आयत में है:

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا..........الخ

फिर हमने इसको एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ़ बना दिया उन लोगों के लिये जो उनके ज़माने में थे और उनके लिये जो उनके बाद में आते रहे, और नसीहत का सबब बना दिया अल्लाह से डरने वालों के लिये। (सूरः ब-क़रह आयत 66) और जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू का एक और फ़रमान है:

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً....... الخ.

फिर अगर तौहीद की दलीलें सुनकर भी ये लोग तौहीद (अल्लाह को एक मानने) से मुँह फेरतें तो आप कह दीजिये कि मैं तुमको ऐसी आफ़त से डराता हूँ जैसी आफ़त आ़द व समूद पर आई थी.............।

(सूरः हा-मीम सज्दा आयत 13,14)

फिर फ़रमाता है कि हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम तौहीद वाले मोमिन

Maktab-E-Ashraf

बन जाओ वरना तुम्हें उस बड़े भारी दिन में अ़ज़ाब होगा। इस पर क़ौम ने कहा- क्या तू हमें हमारे माबूदों से रोक रहा है? जा जिस अ़ज़ाब से तू हमें डरा रहा है वह ले आ। ये तो अपने ज़ेहन में उसे मुहाल (असंभव) जानते थे, तो जुर्रत करके जल्दी तलब किया। जैसे कि एक और आयत में है:

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا.

यानी ईमान न लाने वाले हमारे अ़ज़ाब के जल्द आने की इच्छा करते हैं।

इसके जवाब में उनके पैग़म्बर ने कहा कि अल्लाह ही को बेहतर इल्म है, अगर वह तुम्हें इसी लायक़ जानेगा तो तुम पर अ़ज़ाब भेज देगा। मेरी ज़िम्मेदारी तो सिर्फ़ इतनी ही है कि मैं अपने रब की रिसालत तुम्हें पहुँचा दूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम बिल्कुल बेअ़क़्ल और बेवक़ूफ़ लोग हो। अब अ़ज़ाबे ख़ुदा आ गया, उन्होंने देखा कि एक काला बादल उनकी तरफ़ बढ़ता चला आ रहा है, चूँकि ख़ुश्क-साली थी (यानी सूखा पड़ा था) गर्मी सख़्त थी। ये ख़ुशियाँ मनाने लगे कि अच्छा हुआ बादल चढ़ा है और इसी तरफ़ रुख़ है, अब बारिश बरसेगी। दर असल बादल की सूरत में यह अल्लाह का वह क़हर था जिसके आने की वे जल्दी मचा रहे थे। उसमें वह अ़ज़ाब था जिसे ये हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम से तलब कर रहे थे। वह अ़ज़ाब उनकी बस्तियों की उन तमाम चीज़ों को जिनकी बरबादी होने वाली थी तहस-नहस करता हुआ आया और इसी का उसे अल्लाह का हुक्म था। जैसे एक दूसरी आयत में है:

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ.

यानी जिस चीज़ पर वह गुज़र जाती थी उसे चूरा-चूरा (तबाह) कर देती थी। पस सब के सब हलाक व तबाह हो गये, एक भी बच न सका।

फिर फ़रमाता है कि हम इसी तरह उनका फ़ैसला करते हैं जो हमारे रसूलों को झुठलायें और हमारे अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी (उल्लंघन) करें। एक बहुत ही ग़रीब हदीस में उनका जो क़िस्सा आया है वह भी सुन लीजिए। हज़रत हारिस ब-करी कहते हैं कि मैं अ़ला बिन हज़रमी की शिकायत लेकर रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में जा रहा था। रबज़ा में मुझे बनू तमीम की एक बुढ़िया मिली, जिसके पास सवारी वग़ैरह न थी। मुझसे कहने लगी ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरा एक काम अल्लाह के पैग़म्बर से है, क्या तू मुझे हुज़ूर तक पहुँचा देगा? मैंने इक़रार किया और उन्हें अपनी सवारी पर बैठा लिया और मदीना शरीफ़ पहुँचा। मैंने देखा कि मस्जिद शरीफ़ लोगों से खचाखच भरी हुई है, काले रंग का झण्डा लहरा रहा है और हज़रत बिलाल रज़ि. तलवार लटकाये हुज़ूरे पाक रसूले ख़ुदा सल्ल. के सामने खड़े हैं। मैंने मालूम किया कि क्या बात है? लोगों ने मुझसे कहा हुज़ूरे पाक हज़रत अ़मर बिन आ़स को किसी तरफ़ भेजना चाहते हैं। मैं एक तरफ़ बैठ गया, जब हुज़ूर सल्ल. अपनी मन्ज़िल (मकान) या अपने ख़ेमें में तशरीफ़ ले गये तो मैं भी गया, इजाज़त तलब की और इजाज़त मिलने पर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सलामु अ़लैक की तो आपने मुझसे मालूम फ़रमाया कि क्या तुम्हारे और बनू तमीम के बीच कुछ रंजिश (नाराज़गी और मुख़ालफ़त) थी? मैंने कहा हाँ! और हम उन पर ग़ालिब रहे और अब मेरे इस सफ़र में बनू तमीम की एक ग़रीब बुढ़िया रास्ते में मुझे मिली और यह इच्छा ज़ाहिर की कि मैं उसे अपने साथ आपकी ख़िदमत में पहुँचा दूँ। चुनाँचे मैं उसे अपने साथ लाया हूँ और वह दरवाज़े पर मुन्तज़िर है। आपने फ़रमाया उसे भी अन्दर बुला लो, चुनाँचे वह आ गयीं। मैंने कहा या रसूलल्लाह! अगर हम में और बनू तमीम में कोई रोक कर सकते हैं तो उसे कर दीजिए। इस पर बुढ़िया को अपने क़बीले की तरफ़दारी का जोश उठा और वह थर्राई हुई आवाज़ में बोल

Maktab_E_Ashraf

उठी कि फिर या रसूलल्लाह आपका बेक़रार कहाँ क़रार करेगा? मैंने कहा सुब्हानल्लाह! मेरी तो वही मिसाल हुई कि "अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारी" मुझे क्या ख़बर थी कि यह मेरी ही मुख़ालफ़त करेगी? वरना मैं इसे लाता ही क्यों? अल्लाह की पनाह! कहीं ऐसा न हो कि मैं भी क़ौमे आ़द वालों के क़ासिद की तरह हो जाऊँ। आपने मालूम फ़रमाया कि आ़दियों के क़ासिद का वाक़िआ़ क्या है? इसके बावजूद कि हुज़ूर सल्ल. उस वाक़िए से मेरे मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा वाक़िफ़ थे, लेकिन आपके फ़रमान पर मैंने वह क़िस्सा बयान किया कि आ़द वालों की बस्तियों में जब सख़्त क़हत-साली हुई (यानी सूखा पड़ा) तो उन्होंने अपना एक नया क़ासिद क़ैल नाम का रवाना किया। यह रास्ते में मुआ़विया बिन बक्र के यहाँ आकर ठहरा और शराब पीने और उसकी दोनों बाँदियों का गाना सुनने में जिनका नाम जरादा था, इस क़द्र मशग़ूल हुआ कि महीने भर तक यहीं पड़ा रहा। फिर चला और महरा पहाड़ में जाकर उसने दुआ़ की कि ख़ुदाया तू ख़ूब जानता है मैं किसी मरीज़ की दवा के लिये या किसी क़ैदी का फ़िदया अदा करने के लिये तो आया ही नहीं, इलाही आ़द वालों को वह पिला जो तू उन्हें पिलाने वाला है।

चुनाँचे चन्द काले रंग के बादल उठे और उनमें से एक आवाज़ आयी कि इनमें से जिसे तू चाहे पसन्द कर ले। चुनाँचे उसने सख़्त काले बादल को पसन्द कर लिया। उसी वक़्त उसमें आवाज़ उठी कि इसे राख और ख़ाक बनाने वाला कर, ताकि क़ौमे आ़द वालों में से कोई बाक़ी न रहे। कहा और मुझे जहाँ तक इल्म हुआ है यही है कि हवाओं के मख़्ज़न (निकलने की जगह, स्रोत) में से सिर्फ़ इतने ही सुराख़ से हवा छोड़ी गयी थी, जैसे मेरी इस अंगूठी का हल्क़ा (छल्ला), उसी से सब हलाक हो गये। अबू वाईल कहते हैं कि यह बिल्कुल ठीक नक़ल है।

अ़रब में दस्तूर था कि जब किसी क़ासिद को भेजते तो कह देते कि आ़द वालों के क़ासिद की तरह न करना। यह रिवायत तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा में भी है। जैसे कि सूरः आराफ़ की तफ़सीर में गुज़रा। मुस्नद अहमद में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को कभी खिलखिला कर इस तरह हंसते हुए नहीं देखा कि आपके मसूढ़े तक नज़र आयें। आप तबस्सुम फ़रमाया करते (यानी मुस्कुराते) थे, और जब बादल उठता और आँधी चलती तो आपके चेहरे से फ़िक्र के आसार ज़ाहिर हो जाते। चुनाँचे एक रोज़ मैंने आप से कहा कि या रसूलल्लाह! लोग तो बादल को देखकर ख़ुश होते हैं कि अब बारिश बरसेगी, लेकिन आपकी इसके बिल्कुल विपरीत हालत हो जाती है। आपने फ़रमाया आ़यशा! मैं इस बात से कि कहीं इसमें अ़ज़ाब हो कैसे मुत्मईन हो जाऊँ? एक क़ौम हवा ही से हलाक की गयी, एक क़ौम ने अ़ज़ाब के बादल को देखकर कहा था कि यह बादल है जो हम पर बारिश बरसायेगा। सही बुख़ारी व मुस्लिम में भी यह रिवायत दूसरी सनद से मौजूद है।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब कभी आसमान के किनारे से बादल उठता हुआ देखते तो अपने तमाम काम छोड़ देते अगरचे नमाज़ में हों और यह दुआ़ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَافِيْهِ.

ख़ुदाया! मैं तुझसे उस बुराई से पनाह चाहता हूँ जो इसमें है।

पस अगर खुल जाता तो अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करते और अगर बरस जाता तो यह दुआ़ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَاۤ اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا
وَشَرِّ مَاۤ اُرْسِلَتْ بِهٖ.

या अल्लाह! मैं तुझसे इसकी और इसमें जो है उसकी और जिसको यह साथ लेकर आयी है उसकी भलाई तलब करता हूँ और तुझसे इसकी और इसमें जो है उसकी और जिस चीज़ के साथ यह भेजी गयी है उसकी बुराई से पनाह चाहता हूँ।

और जब बादल उठता तो आपका रंग बदल जाता। कभी अन्दर कभी बाहर आते-जाते। जब बारिश हो जाती तो आपकी यह फ़िक्रमन्दी (चिंता) दूर हो जाती। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इसे समझ लिया और आप से एक बार सवाल किया तो आपने जवाब दिया कि आयशा! ख़ौफ़ इस बात का होता है कि कहीं यह इसी तरह न हो जिस तरह क़ौमे हूद ने अपनी तरफ़ बादल बढ़ता हुआ देखकर ख़ुशी से कहा था कि यह बादल हमें सैराब करेगा। सूरः आराफ़ में क़ौमे आद वालों की हलाकत का और हज़रत हूद का पूरा वाक़िआ गुज़र चुका है, इसलिये हम उसे यहाँ नहीं दोहराते।

तबरानी की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि क़ौमे आद वालों पर इतनी ही हवा खोली गयी थी जितना अंगूठी का हल्क़ा (छल्ला) होता है। यह हवा पहले देहात वालों और जंगल में रहने वालों पर आयी, वहाँ से शहरी लोगों पर आयी, जिसे देखकर ये कहने लगे कि यह बादल जो हमारी तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है, यह ज़रूर हम पर बारिश बरसायेगा। लेकिन इसमें जंगल के रहने वाले लोग थे जो उन शहरियों पर गिरा दिये गये और सब हलाक हो गये। हवा के ख़ज़ानचियों पर हवा की तेज़ी उस वक़्त इतनी थी कि दरवाज़ों के सुराख़ों से वह निकली जा रही थी। वल्लाहु तआ़ला आलम।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ ز
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ
وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا
يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا ع ٣ ٣
حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ
ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ۝

और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी कि तुमको उन बातों में क़ुदरत नहीं दी, और हमने उनको कान और आँख और दिल दिए थे, सो चूँकि वे लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों का इनकार करते थे इसलिए न उनके कान उनके ज़रा काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल, और जिसकी वे हंसी किया करते थे उसी ने उनको आ घेरा। (26)

और हमने तुम्हारे आस-पास की और बस्तियाँ भी ग़ारत की हैं, और हमने बार-बार अपनी निशानियाँ बतला दी थीं ताकि वे बाज़ आएँ। (27) सो अल्लाह तआ़ला के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने को अपना माबूद बना रखा है, उन्होंने उनकी मदद क्यों न की? बल्कि वे सब उनसे ग़ायब हो गए और वह महज़ उनकी तराशी हुई और गढ़ी हुई बात है। (28)

Maktab E Ashraf

इरशाद होता है कि पहली उम्मतों को जो दुनियावी असबाब, संसाधन, माल और औलाद वग़ैरह हमारी तरफ़ से दिये गये थे वैसे तो तुम्हें अब तक मुहैया भी नहीं। उनके भी कान, आँखें और दिल थे, लेकिन जिस वक़्त उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और हमारे अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया तो आख़िरकार उनके ज़ाहिरी असबाब उन्हें कुछ काम न आये और वे सज़ायें उन पर बरस पड़ीं जिनकी वे हमेशा हंसी उड़ाते थे। पस तुम्हें उनकी तरह न होना चाहिये, ऐसा न हो कि उन जैसे अ़ज़ाब तुम पर भी आ जायें और तुम भी उनकी तरह जड़ से काट दिये जाओ।

फिर इरशाद होता है कि ऐ मक्का वालो! तुम अपने आस-पास ही एक नज़र डालो और देखो कि किस क़द्र क़ौमें नेस्त व नाबूद कर दी गयी हैं और किस तरह उन्होंने अपने बुरे आमाल के बदले पाये हैं। "अहक़ाफ़" जो यमन के पास ही हज़्रमौत के इलाक़े में है, यहाँ के बसने वाले क़ौमे आ़द वालों के अन्जाम पर नज़र डालो, तुम्हारे और शाम (मुल्क सीरिया) के बीच क़ौमे समूद वालों का जो हश्र हुआ उसे देखो। यमन वालों, मद्यन वालों और क़ौमे सबा के अन्जाम पर ग़ौर करो, तुम तो अक्सर लड़ाईयों और तिजारत वग़ैरह के लिये वहाँ से आते-जाते रहते हो। क़ौमे लूत के बुहैरा से इबरत हासिल करो, वह भी तुम्हारे रास्ते में ही पड़ता है।

फिर फ़रमाता है कि हमने अपनी निशानियों और आयतों को ख़ूब वाज़ेह (स्पष्ट) और ज़ाहिर कर दिया है ताकि लोग बुराईयों से भलाईयों की तरफ़ लौट आयें। फिर फ़रमाता है कि उन लोगों ने ख़ुदा तआ़ला के सिवा जिन-जिन झूठे माबूदों की पूजा शुरू कर रखी थी अगरचे इसमें उनका अपना ख़्याल यह था कि उनकी वजह से हम अल्लाह तआ़ला की निकटता हासिल कर लेंगे, लेकिन क्या हमारे अ़ज़ाबों के वक़्त जबकि उनको उनकी मदद की पूरी ज़रूरत थी, उन्होंने उनकी किसी तरह मदद की? हरगिज़ नहीं! बल्कि उनकी ज़रूरत और मुसीबत के वक़्त वे तो गुम हो गये, उनसे भाग गये, उनका पता भी न चला। ग़र्ज़ कि उनका पूजना खुली ग़लती थी, महज़ झूठ था और साफ़ तोहमत व फ़ज़ूल बोहतान था कि ये उन्हें माबूद समझ रहे थे। पस उनकी इबादत करने में और उन पर भरोसा करने में ये धोखे और नुक़सान ही में रहे। (वल्लाहु आलम)

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ
يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ج فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا
اَنْصِتُوْا ج فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ
مُّنْذِرِيْنَ ○ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا
اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ○ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ

और जबकि हम जिन्नात की एक जमाअ़त को आपकी तरफ़ ले आए जो क़ुरआन सुनने लगे थे। ग़र्ज़ कि जब वे क़ुरआन के पास आ पहुँचे, कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग अपनी क़ौम के पास ख़बर पहुँचाने के वास्ते वापस गये। (29) कहने लगे कि ऐ भाईयो! हम एक किताब सुनकर आए हैं जो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के बाद नाज़िल की गई है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है, हक़ और सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। (30)

وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْلَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ٥ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِى الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ٥	ऐ भाईयो! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना मानो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। (31) और जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना न मानेगा तो वह ज़मीन में हरा नहीं सकता, और ख़ुदा के सिवा उसका कोई मददगार भी न होगा। ऐसे लोग खुली गुमराही में हैं। (32)

जिन्नात में इस्लाम की दावत

मुस्नद अहमद में हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इस आयत की तफ़सीर में मन्क़ूल है कि यह वाक़िआ़ नख़्ला का है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस वक़्त नमाज़े इशा अदा कर रहे थे। ये सब जिन्नात सिमट कर आपके इर्द-गिर्द भीड़ की शक्ल में खड़े हो गये। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत में है कि ये जिन्नात नसीबीन के थे, तायदाद में सात थे। किताब 'दलाईलुन्नुबुव्वत' में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत से है कि न तो हुज़ूर सल्ल. ने जिन्नात को सुनाने की ग़र्ज़ से क़ुरआन पढ़ा था, न आपने उन्हें देखा। आप तो अपने सहाबा के साथ उकाज़ के बाज़ार जा रहे थे। उधर यह हुआ कि शैतानों और आसमान की ख़बरों के बीच रुकावट हो गयी थी और उन पर शोले बरसने शुरू हो गये थे। शैतानों ने आकर अपनी क़ौम को यह ख़बर दी तो उन्होंने कहा कोई न कोई नई बात हुई है, जाओ तलाश करो। पस ये निकल खड़े हुए। उनमें की जो जमाअ़त अ़रब की तरफ़ मुतवज्जह हुई थी वह जब यहाँ पहुँची तब रसूलुल्लाह सल्ल. उकाज़ बाज़ार की तरफ़ जाते हुए नख़्ला में अपने सहाबा को सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। उनके कानों में जब आपकी तिलावत की आवाज़ पहुँची तो ये ठहर गये और कान लगाकर ग़ौर से सुनने लगे। उसके बाद उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि बस यही वह चीज़ है जिसकी वजह से तुम्हारा आसमानों तक पहुँचना बन्द कर दिया गया है। यहाँ से ये फ़ौरन ही वापस लौटकर अपनी क़ौम के पास पहुँचे और उनसे कहने लगे- हमने अ़जीब क़ुरआन सुना जो नेकी का रहबर है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और इक़रार करते हैं कि अब नामुम्किन है कि ख़ुदा के साथ हम किसी और को शरीक करें।

इस वाक़िए की ख़बर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को सूरः जिन्न में दी। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में भी है। मुस्नद में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिन्नात अल्लाह की 'वही' सुना करते थे। एक कलिमा जब उनके कान में पड़ जाता तो वे उसमें दस और मिला लिया करते। पस वह एक तो हक़ (सही और सच्चा) निकलता बाक़ी सब ग़लत निकलते, और इससे पहले उन पर तारे नहीं फेंके जाते थे। पस जब हुज़ूर सल्ल. मबऊस हुए (यानी नबी बनकर तशरीफ़ लाये) तो उन पर अंगारे बरसने लगे। ये अपने बैठने की जगह पहुँचते और इन पर शोला (अंगारा) गिरता और ये ठहर न सकते। उन्होंने आकर इब्लीस (शैतान) से यह शिकायत की तो उसने कहा कि कोई नई बात ज़रूर हुई है, चुनाँचे उसने अपने लश्करों को उसकी तहक़ीक़ात के लिये हर तरफ़ फैला दिया। उन्होंने नबी सल्ल. को नख़्ला की दोनों

पहाड़ियों के दरमियान नमाज़ पढ़ते हुए पाया और जाकर उसे ख़बर दी, उसने कहा बस यही वजह है जो आसमान महफ़ूज़ (सुरक्षित) कर दिया गया और तुम्हारा जाना बन्द हुआ।

यह रिवायत तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। हसन बसरी रह. का क़ौल यही है कि इस वाक़िए की ख़बर तक रसूलुल्लाह सल्ल. को न थी। जब आप पर 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) आयी तब आपको यह मालूम हुआ। सीरत इब्ने इस्हाक़ में मुहम्मद बिन कअ़ब का एक लम्बा बयान मन्क़ूल है जिसमें हुज़ूर सल्ल. का ताईफ़ जाना, उन्हें इस्लाम की दावत देना, उनका इनकार करना वग़ैरह पूरा वाक़िआ़ बयान है। हज़रत हसन ने उस दुआ़ का भी ज़िक्र किया है जो आपने उस तंगी के वक़्त की थी, वह यह है:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِىْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِىْ وَهَوَانِىْ عَلَى النَّاسِ يَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَاَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّىْٓ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِىْ اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِىْ اَمْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِىْٓ اِنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ غَضَبٌ عَلَىَّ فَلَآ اُبَالِىْ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَكَ اَوْسَعُ لِىْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ يَّنْزِلَ رَبِّىْ غَضَبُكَ اَوْيَحِلَّ بِىْ سَخَطُكَ لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ.

यानी अपनी कमज़ोरी, बेसाधन और असहाय होने की शिकायत सिर्फ़ तेरे सामने करता हूँ। ऐ अर्रहमुर्राहिमीन! तू दर असल सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है और कमज़ोरों का रब तू ही है। मेरा पालनहार भी तू ही है, तू मुझे किसको सौंप रहा है। किसी दूरी वाले दुश्मन को जो मुझे आ़जिज़ कर दे। या किसी नज़दीक वाले दोस्त को जिसे तूने मेरे मामले का इख़्तियार दे रखा हो। अगर तेरी कोई नाराज़गी मुझ पर न हो तो मुझे इस दर्द-दुख की कोई परवाह नहीं, लेकिन फिर भी अगर तू मुझे आ़फ़ियत के साथ ही रखे तो वह मेरे लिये बहुत ही राहत देने वाली चीज़ है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर के ज़रिये जिसकी वजह से तमाम अंधेरियाँ जगमगा उठी हैं और दीन व दुनिया के तमाम मामलात की इस्लाह (बेहतरी और सुधार) का मदार उसी पर है, तुझसे इस बात की पनाह तलब करता हूँ कि मुझ पर तेरा इताब और तेरा गुस्सा नाज़िल हो, या तेरी नाराज़गी मुझ पर आ जाये। मुझे तेरी ही रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी दरकार है और नेकी करने और बदी से बचने की ताक़त तेरी ही मदद से है।

इसी सफ़र की वापसी में आपने नख़्ला में रात गुज़ारी और उसी रात क़ुरआन की तिलावत करते हुए नसीबीन के जिन्नात ने आपको सुना। यह है तो सही लेकिन इसमें यह क़ौल विचारनीय है इसलिये कि जिन्नात का कलामुल्लाह शरीफ़ सुनने का वाक़िआ़ 'वही' शुरू होने के ज़माने का है, जैसे कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की ऊपर बयान की हुई हदीस से साबित हो रहा है। और आपका ताईफ़ जाना अपने चचा अबू तालिब के इन्तिक़ाल के बाद हुआ है, जो हिजरत के एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो साल पहले का वाक़िआ़ है जैसा कि सीरत इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह में है। वल्लाहु आलम।

इब्ने अबी शैबा में उन जिन्नात की गिनती नौ है जिनमें से एक का नाम ज़ूबआ़ है। उन्हीं के बारे में ये आयतें नाज़िल हुई हैं। पस यह रिवायत और इससे पहले की हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत से यही समझ में आता है कि उस मर्तबा जो जिन्न आये थे उनकी मौजूदगी का हुज़ूरे पाक को इल्म न था, यह तो आपकी बेख़बरी में ही आपकी ज़बानी क़ुरआन सुनकर वापस लौट गये, उसके बाद बतौर वफ़्द फ़ौजें

की फ़ौजें और उनके जत्थे के जत्थे हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जैसा कि इस बारे में हदीसें और बुज़ुर्गों के अक़्वाल अपनी जगह आ रहे हैं। इन्शा-अल्लाह।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान रह. ने हज़रत मसरूक़ से पूछा कि जिस रात जिन्नात ने हुज़ूर सल्ल. से क़ुरआन सुना था, उस रात को किसने हुज़ूर सल्ल. से उनका ज़िक्र किया था? तो फ़रमाया मुझसे तेरे वालिद हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने कहा है, उनकी इत्तिला हुज़ूरे पाक को एक दरख़्त (पेड़) ने दी थी, तो मुम्किन है कि यह ख़बर पहली दफ़ा की हो। और यह भी हो सकता है कि जब वे सुन रहे थे आपको तो कोई ख़बर न थी, यहाँ तक कि उस पेड़ ने आपको उनके इज्तिमा की ख़बर दी। वल्लाहु आलम। और यह भी हो सकता है कि यह वाक़िआ उसके बाद वाले कई वाक़िआत में से एक हो। वल्लाहु आलम। इमाम हाफ़िज़ बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं कि पहली मर्तबा तो न रसूलुल्लाह सल्ल. ने जिन्नात को देखा न ख़ास उनके सुनाने के लिये क़ुरआन पढ़ा, हाँ अलबत्ता उसके बाद जिन्नात आपके पास आये और आपने उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाया जैसा कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से मन्क़ूल है। इसकी रिवायतें सुनिये।

हज़रत अ़ल्क़मा रह. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से पूछते हैं कि क्या तुम में से कोई उस रात हुज़ूर सल्ल. के साथ मौजूद था? तो आपने जवाब दिया कि कोई न था, आप रात भर हम से ग़ायब रहे और हमें रह-रहकर बराबर यही ख़्याल गुज़र रहा था कि शायद किसी दुश्मन ने आपको धोखा दे दिया (क्योंकि यह वह वक़्त था जब मक्का के काफ़िर हर तरह से आपको सताने पर लगे हुए थे)। ख़ुदा न करे आपके साथ कोई ऐसा ही बुरा वाक़िआ पेश आया हो। वह रात हमारी बड़ी बुरी तरह कटी, सुबह सादिक़ से कुछ ही पहले हमने देखा कि आप ग़ारे हिरा से वापस आ रहे हैं। पस हमने रात की अपनी सारी कैफ़ियत बयान कर दी। आपने फ़रमाया- मेरे पास जिन्नात का क़ासिद आया था जिसके साथ जाकर मैंने उन्हें क़ुरआन सुनाया, चुनाँचे आप हमें लेकर गये और उनके निशानात और उनकी आग के निशानात हमें दिखाये।

इमाम शाबी कहते हैं कि उन्होंने आप से तोशा (रास्ते के लिये खाना) तलब किया था। आ़मिर कहते हैं यानी मक्के में, और ये जिन्न जज़ीरे (द्वीप) के थे तो आपने फ़रमाया- हर वह हड्डी जिस पर अल्लाह का नाम ज़िक्र किया गया हो वह तुम्हारे हाथों में पहले से ज़्यादा गोश्त वाली होकर पड़ेगी, और लीद और गोबर तुम्हारे जानवरों का चारा बनेगा। पस ऐ मुसलमानो! इन दोनों चीज़ों से इस्तिन्जा न करो, ये तुम्हारे जिन्न भाईयों की ख़ुराक हैं।

दूसरी रिवायत में है कि उस रात हुज़ूर सल्ल. को न पाकर हम बहुत ही घबराये थे और तमाम वादियों और घाटियों में तलाश कर आये थे। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- आज रात मैं जिन्नात को क़ुरआन सुनाता रहा और जिन्नात ही में इसी शग़ल में रात गुज़ारी। इब्ने जरीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की रिवायत है कि आपने फ़रमाया- तुममें से जो चाहे आज की रात जिन्नात के मामले में मेरे साथ रहे। पस मैं मौजूद हो गया। आप मुझे लेकर चले, जब मक्का शरीफ़ के ऊँचे हिस्से में पहुँचे तो आपने अपने पाँव से एक ख़त (लकीर) खींच दिया और मुझसे फ़रमाया बस यहीं बैठे रहो। फिर जब आप चले और एक जगह खड़े होकर आपने क़िराअत (क़ुरआन पढ़ना) शुरू की, फिर तो इस क़द्र जमाअ़त (भीड़) आपके इर्द-गिर्द भीड़ लगाकर खड़ी हो गयी कि मैं तो आपकी क़िराअत सुनने से भी रह गया। फिर मैंने देखा कि जिस तरह बादल के टुकड़े फटते हैं उस तरह वे इधर-उधर जाने लगे यहाँ तक कि अब बहुत थोड़े बाक़ी रह गये। पस हुज़ूर सल्ल. सुबह के वक़्त फ़ारिग़ हुए और आप वहाँ से दूर निकल गये

Maktab E Ashraf

और हाजत (पेशाब-पाख़ाने की ज़रूरत) से फ़ारिग़ होकर मेरे पास तशरीफ़ लाये और पूछने लगे वे बाक़ी कहाँ हैं? मैंने कहा वे ये हैं। पस आपने उन्हें हड्डी और लीद दी। फिर आपने मुसलमानों को इन दोनों चीज़ों से इस्तिन्जा करने से मना फ़रमा दिया।

इस रिवायत की दूसरी सनद में है कि जहाँ हुज़ूर सल्ल. ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. को बैठाया था वहाँ बैठाकर फ़रमा दिया था कि ख़बरदार! यहाँ से निकलना नहीं वरना हलाक हो जाओगे। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने सुबह के वक़्त आकर उनसे मालूम किया कि क्या तुम सो गये थे? आपने फ़रमाया नहीं नहीं! ख़ुदा की क़सम मैंने तो कई मर्तबा चाहा कि लोगों से फ़रियाद करूँ लेकिन मैंने सुन लिया कि आप उन्हें अपनी लकड़ी से धमका रहे थे और फ़रमाते जाते थे कि बैठ जाओ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अगर तुम यहाँ से बाहर निकलते तो मुझे तो ख़ौफ़ था कि उनमें के बाज़ तुम्हें उचक न ले जायें। फिर आपने दरियाफ़्त फ़रमाया कि अच्छा तुमने कुछ देखा भी? मैंने कहा हाँ लोग थे काले अन्जान ख़ौफ़नाक सफ़ेद कपड़े पहने हुए। आपने फ़रमाया- ये नसीबीन के जिन्न थे। उन्होंने मुझसे तोशा (रास्ते के लिये खाना) तलब किया था, पस मैंने हड्डी और लीद गोबर दिया। मैंने पूछा हुज़ूर! इससे क्या फ़ायदा? आपने फ़रमाया हर हड्डी उनके हाथ लगते ही ऐसी हो जायेगी जैसे उस वक़्त थी जब खाई गयी थी यानी गोश्त वाली होकर उन्हें मिलेगी, और लीद में भी वही दाने पायेंगे जो उस रोज़ थे जब वह दाने खाये गये थे। पस हममें से कोई शख़्स बैतुल-ख़ला (शौचालय) से निकल कर हड्डी लीद और गोबर से इस्तिन्जा न करे। इस रिवायत की दूसरी सनद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- पन्द्रह जिन्नात जो आपस में चचाज़ाद भाई हैं आज रात मुझसे क़ुरआन सुनने के लिये आने वाले हैं, इसमें हड्डी और लीद के साथ कोयले का लफ़्ज़ भी है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि दिन निकले मैं उसी जगह गया तो देखा कि कोई साठ ऊँट बैठने की जगह है।

एक और रिवायत में है कि जब जिन्नात का मजमा बहुत हो गया तो उनके सरदार वरदान ने कहा या रसूलल्लाह! इन्हें इधर-उधर करके आपको इस तकलीफ़ से बचा लेता हूँ तो आपने फ़रमाया- अल्लाह से ज़्यादा मुझे कोई बचाने वाला नहीं। आप फ़रमाते हैं कि जिन्नात वाली रात में मुझसे हुज़ूर सल्ल. ने मालूम फ़रमाया- क्या तुम्हारे पास पानी है? मैंने कहा हुज़ूर पानी तो नहीं अलबत्ता एक डोलची में नबीज़ (खजूर का रस) है, तो हुज़ूर सल्ल ने फ़रमाया- उम्दा खजूरें और पाकीज़ा पानी। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

मुस्नद अहमद की इस हदीस में है कि आपने फ़रमाया- मुझे इससे वुज़ू कराओ, चुनाँचे आपने वुज़ू किया और फ़रमाया यह तो मेरे पास मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर आयी है। यही हदीस थोड़ी ज़्यादती के साथ हाफ़िज़ अबू नुऐम की किताब दलाईलुन्नुबुव्वत में भी है। उसमें है कि मैंने यह सुनकर कहा फिर या रसूलल्लाह! अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा नामित कर जाईये। आपने कहा किसको? मैंने कहा अबू बक्र को। इस पर आप ख़ामोश हो गये। चलते चलते फिर कुछ देर बाद यही हालत तारी हुई। मैंने वही सवाल किया, आपने वही जवाब दिया। मैंने ख़लीफ़ा बनाने को कहा, आपने पूछा किसे? मैंने कहा उमर को, इस पर आप फिर ख़ामोश हो गये। कुछ दूर चलने के बाद फिर यही हालत और यही सवाल व जवाब हुए अब की मर्तबा मैंने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब का नाम पेश किया तो आप फ़रमाने लगे- उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान महफ़ूज़ है, अगर लोग उनकी इताअ़त करें तो सब जन्नत में चले जायें। लेकिन यह हदीस बिल्कुल ही ग़रीब है, और बहुत मुम्किन है कि यह महफ़ूज़ न हो, और अगर सेहत (यानी इसका सही होना) तस्लीम कर ली जाये तो इस वाक़िए को मदीने का वाक़िआ मानना पड़ेगा। वहाँ भी आपके पास

Maktab E Ashraf

जिन्नों की जमाअ़तें आयी थीं जैसा कि हम अभी आगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला बयान करेंगे। इसलिये कि आपका आख़िरी वक़्त फ़त्हे-मक्का के बाद था, जबकि अल्लाह के दीन में इनसानों और जिन्नों की फ़ौजें की फ़ौजें दाख़िल हो गयीं और सूरः नस्र (इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि.......) उतर चुकी, जिसमें आपको इन्तिक़ाल की ख़बर दी गयी थी, जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है, और अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. की इस पर मुवाफ़क़त व ताईद है। जो हदीसें हम इसी सूरत की तफ़सीर में लायेंगे। इन्शा-अल्लाह। वल्लाहु आलम।

ऊपर बयान हुई हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है, लेकिन उसकी सनद भी ग़रीब और मज़मून भी ग़रीब है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि ये जिन्नात जज़ीरा-ए-मूसल के थे, उनकी तायदाद बारह हज़ार की थी। इब्ने मसऊद रज़ि. उस लकीर खींची हुई जगह में बैठे हुए थे लेकिन जिन्नात के खजूरों के दरख़्तों के बराबर के क़द व क़ामत वग़ैरह देखकर डर गये और भाग जाना चाहा, लेकिन फ़रमाने रसूल याद आ गया कि इस हद (सीमा और दायरे) से बाहर न निकलना। जब हुज़ूर सल्ल. से यह ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया अगर तुम उस हद से बाहर आ जाते तो क़ियामत तक हमारी तुम्हारी मुलाक़ात न हो सकती। एक और रिवायत में है कि जिन्नात की यह जमाअ़त जिनका ज़िक्र इस आयत (यानी आयत नम्बर 29 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) में है नेनवा की थी, आपने फ़रमाया था कि मुझे हुक्म दिया गया कि उन्हें क़ुरआन सुना दूँ। तुममें से मेरे साथ कौन चलेगा? इस पर सब ख़ामोश हो गये। दोबारा पूछा फिर ख़ामोशी रही, तीसरी मर्तबा मालूम किया तो क़बीला-ए-हुज़ैल के शख़्स हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. तैयार हुए। हुज़ूर सल्ल. उन्हें साथ लेकर हजून की घाटी में गये। लकीर खींचकर उन्हें यहाँ बैठा दिया और आप आगे बढ़ गये। यह देखने लगे कि गिद्धों की तरह के ज़मीन से बिल्कुल उड़ते हुए कुछ जानवर से आ रहे हैं। थोड़ी देर बाद बड़ा शोर-शराबा सुनाई देने लगा यहाँ तक कि मुझे हुज़ूर के बारे में डर लगने लगा। जब हुज़ूरे पाक सल्ल. आये तो मैंने कहा कि हुज़ूर! यह शोर व गुल क्या था? आपने फ़रमाया उनके मक़्तूल का क़िस्सा था जिसमें उनका इख़्तिलाफ़ (विवाद और झगड़ा) था, उनके दरमियान सही फ़ैसला कर दिया गया।

इन वाक़िआ़त से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्ल. ने जान-बूझकर जाकर जिन्नात को क़ुरआन सुनाया, उन्हें इस्लाम की दावत दी और जिन मसाईल की उस वक़्त उन्हें ज़रूरत थी वे सब बता दिये। हाँ पहली मर्तबा जब जिन्नात ने आपकी ज़बान से क़ुरआन सुना उस वक़्त आपको न मालूम था, न आपने उन्हें सुनाने की ग़र्ज़ से क़ुरआन पढ़ा था। जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं। उसके बाद वे जमाअ़तों की सूरत में आये और हुज़ूर जानते हुए तशरीफ़ ले गये और उन्हें क़ुरआन सुनाया। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ उस वक़्त न थे जबकि आपने उनसे बातचीत की, उन्हें इस्लाम की दावत दी, अलबत्ता कुछ फ़ासले पर दूर बैठ हुए थे। आपके साथ इस वाक़िए में सिवाय हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के और कोई न था। और दूसरी ततबीक़ (मुवाफ़क़त) उन रिवायात में जिनमें है कि आपके साथ इब्ने मसऊद थे और जिनमें है कि न थे, यह भी हो सकती है कि पहली दफ़ा न थे दूसरी मर्तबा थे। वल्लाहु आलम। यह भी मन्क़ूल है कि नख़्ला में जिन जिन्नात ने आप से मुलाक़ात की थी वे नेनवा के थे और मक्का शरीफ़ में जो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए थे वे नसीबीन के थे, और यह जो रिवायतों में आया है कि हमने वह रात बुरी तरह बसर की, इससे मुराद इब्ने मसऊद रज़ि. के अ़लावा और दूसरे सहाबा हैं, जिन्हें इस बात का इल्म न था कि हुज़ूर जिन्नात को क़ुरआन सुनाने गये हैं। लेकिन इस तावील को दिल क़बूल नहीं करता। वल्लाहु आलम।

बैहक़ी में है कि हुज़ूर सल्ल. की हाजत (इस्तिन्जे) और वुज़ू के लिये आपके साथ-साथ हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. पानी की डोलची लिये हुए जाया करते थे। एक दिन यह पीछे-पीछे पहुँचे, आपने पूछा कौन है? जवाब दिया कि मैं अबू हुरैरह हूँ। फ़रमाया मेरे इस्तिन्जे के लिये पत्थर लाओ, लेकिन हड्डी और लीद न लाना। मैं अपनी झोली में पत्थर भर लाया और आपके पास रख दिये। जब आप फ़ारिग़ हो चुके और चलने लगे मैं भी आपके पीछे चला और पूछा- हुज़ूर! क्या वजह है जो आपने हड्डी और लीद से मना फ़रमा दिया? आपने जवाब दिया- मेरे पास नसीबीन के जिन्नों का वफ़्द (जमाअ़त) आया था और उन्होंने मुझसे तोशा (रास्ते का खाना) तलब किया था तो मैंने अल्लाह तबारक व तआ़ला से दुआ़ की कि वे जिस लीद और हड्डी पर गुज़रें उसे तआ़म (खाना) पायें। सही बुख़ारी में भी इसी के क़रीब-क़रीब रिवायतें हैं। पस यह हदीस और इससे पहले की हदीसें दलालत करती हैं कि जिन्नात का वफ़्द आपके पास उसके बाद भी आया था। अब हम उन हदीसों को बयान करते हैं जो दलालत (इशारा) करती हैं कि जिन्नात आपके पास कई दफ़ा हाज़िर हुए।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से जो रिवायत इससे पहले बयान हो चुकी है उसके अ़लावा भी आप से दूसरी सनद से मन्क़ूल है। इब्ने जरीर में है, आप फ़रमाते हैं कि ये सात जिन्न थे नसीबीन के रहने वाले, उन्हें ख़ुदा के रसूल ने अपनी तरफ़ से क़ासिद बनाकर जिन्नात की तरफ़ भेजा था। मुजाहिद रह. कहते हैं कि ये जिन्नात तायदाद में सात थे नबीसीन के थे, उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल. ने तीन को हर्रान वालों से कहा और चार नसीबीन वालों से, उनके नाम ये हैं। हुय्यि, हसी, मसी, शासिर, नासिर, अर्द और अहक़म। अबू हमज़ा शिमाली रह. फ़रमाते हैं कि उन्हें बनू शीसबान कहते हैं, यह क़बीला जिन्नात के दूसरे क़बीलों से तायदाद में बहुत ज़्यादा था और ये उनमें नसब (नस्ल और ख़ानदान) के भी शरीफ़ माने जाते थे, और उमूमन ये इब्लीस के लश्करों में से थे। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये नौ थे, उनमें से एक का नाम ज़ूबआ़ था। असल नख़्ला से आये थे। बाज़ हज़रात से मरवी है कि ये पन्द्रह थे और एक रिवायत में है कि साठ ऊँटों पर आये थे और उनके सरदार का नाम वरदान था। यह भी कहा गया है कि तीन सौ थे और यह भी मरवी है कि बारह हज़ार थे। इन सब में ततबीक़ (मुवाफ़क़त) यह है कि चूँकि जिन्नात की जमाअ़तें कई बार आयी थीं मुम्किन है कि किसी में छह सात नौ ही हों, किसी में ज़्यादा किसी में इससे भी ज़्यादा। इस पर दलील सही बुख़ारी शरीफ़ की यह रिवायत भी है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. जिस चीज़ के बारे में जब कभी कहते कि मेरे ख़्याल में यह इस तरह होगी तो वह उमूमन उसी तरह निकलती। एक मर्तबा आप बैठे हुए थे कि एक हसीन शख़्स गुज़रा, आपने उसे देखकर फ़रमाया- अगर मेरा गुमान ग़लत न हो तो यह शख़्स अपने जाहिलीयत के ज़माने में उन लोगों का काहिन (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला) था, जाना ज़रा उसे ले आना। जब वह आ गया तो आपने अपना यह ख़्याल उस पर ज़ाहिर फ़रमाया। वह कहने लगा मुसलमानों में इस ज़हानत व समझ का कोई शख़्स आज तक मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- अब मैं तुझसे कहता हूँ कि तू अपनी कोई सही और सच्ची ख़बर सुना, उसने कहा बहुत अच्छा सुनिये! मैं जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के ज़माने में उनका काहिन था, मेरे पास मेरा जिन्न जो सबसे ज़्यादा ताज्जुब में डालने वाली ख़बर लाया वह सुनिये।

मैं एक मर्तबा बाज़ार में जा रहा था कि वह आ गया और सख़्त घबराहट में था। कहने लगा क्या तूने जिन्नों की बरबादी, मायूसी और उनका फैलने के बाद सिमट जाना और उनकी दुर्गत नहीं देखी? हज़रत उमर फ़रमाने लगे यह सच्चा है। मैं एक मर्तबा उनके बुतों के पास सोया हुआ था, एक शख़्स ने वहाँ एक

बछड़ा चढ़ाया कि अचानक एक सख़्त ज़ोरदार आवाज़ आयी, ऐसी कि इतनी बुलन्द और सख़्त आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी। उसने कहा ऐ जलीह! निजात देने वाला मामला आ चुका। एक शख़्स है जो अपनी वाज़ेह और बेहतरीन ज़बान से "ला इला-ह इल्लल्लाहु" की मुनादी कर रहा है। सब लोग तो मारे डर के भाग गये लेकिन मैं वहीं बैठा रहा कि देखूँ आख़िर यह है क्या? दोबारा फिर इसी तरह वही आवाज़ सुनाई दी और उसने यही कहा। बस कुछ ही दिन गुज़रे थे कि नबी सल्ल. की नुबुव्वत की आवाज़ें हमारे कानों में पड़ने लगीं। इस रिवायत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से तो यह मालूम होता है कि ख़ुद हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने यह आवाज़ उस ज़िबह हुए बछड़े से सुनी, और एक ज़ईफ़ रिवायत में स्पष्ट तौर पर आ भी गया है, लेकिन बाक़ी और रिवायतें बतला रही हैं कि उसी काहिन ने अपने देखने सुनने का एक वाक़िआ यह भी बयान किया। वल्लाहु आलम।

इमाम बैहक़ी रह. ने यही कहा है और यही कुछ अच्छा मालूम होता है। उस शख़्स का नाम सवाद बिन क़ारिब था। जो शख़्स इस वाक़िए की पूरी तफ़सील देखना चाहता हो वह मेरी किताब "सियरे उमर" देख ले। इमाम बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं- मुम्किन है कि यही वह काहिन हो जिसका ज़िक्र बग़ैर नाम के सही हदीस में है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. मिम्बरे नबवी पर एक मर्तबा ख़ुतबा सुना रहे थे, उसी में पूछा गया कि सवाद बिन क़ारिब यहाँ मौजूद हैं? लेकिन उस पूरे साल तक किसी ने हाँ नहीं कही। अगले साल आपने फिर पूछा तो हज़रत बरा बिन आज़िब ने कहा सवाद बिन क़ारिब कौन है? इससे क्या मतलब है? आपने फ़रमाया उसके इस्लाम लाने का क़िस्सा अ़जीब व ग़रीब है। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु आ गये। हज़रत उमर रज़ि. ने उनसे कहा सवाद! अपने इस्लाम का इब्तिदाई क़िस्सा कह सुनाओ। आपने फ़रमाया हाँ सुनिये! मैं हिन्द गया हुआ था, मेरा साथी जिन्न एक रात मेरे पास आया, मैं उस वक़्त सोया हुआ था, मुझे उसने जगा दिया और कहने लगा उठ और अगर कुछ अ़क़्ल व होश है तो सुन ले, समझ ले और सोच ले। क़बीला लुई बिन ग़ालिब में से ख़ुदा के रसूल मबऊस हो चुके हैं। मैं जिन्नात की हिस और उनके बोरिया बिस्तर बाँधने पर ताज्जुब कर रहा हूँ। अगर तू हिदायत और सही रास्ते का इच्छुक है तो फ़ौरन मक्का की तरफ़ कूच कर, समझ ले कि अच्छे और बुरे जिन्न बराबर नहीं। जा जल्दी जा और बनू हाशिम के उस दुलारे के नूरानी मुखड़े पर नज़रें तो डाल ले।

मुझे फिर ग़नूदगी (नींद) सी आ गयी तो उसने दोबारा जगाया और कहने लगा ऐ सवाद बिन क़ारिब! अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल भेज दिया है, तुम उनकी ख़िदमत में पहुँचो और हिदायत व भलाई समेट लो। दूसरी रात फिर आया और मुझे जगाकर कहने लगा- मुझे जिन्नात के जुस्तजू करने और जल्दी-जल्दी पालान और झूलें कसने पर ताज्जुब मालूम होता है। अगर तू भी हिदायत का तालिब है तो मक्के का इरादा कर, समझ ले कि उसके दोनों क़दम उसकी दुमों की तरह नहीं, तू उठ और जल्दी-जल्दी बनू हाशिम के उस पसन्दीदा शख़्स की ख़िदमत में पहुँच और अपनी आँखें उसके दीदार से रोशन कर।

तीसरी रात फिर आया और कहने लगा- मुझे जिन्नात के ख़बरदार हो जाने और उनके क़ाफ़िलों के फ़ौरन तैयार हो जाने पर ताज्जुब आ रहा है, वे सब हिदायत की तलब के लिये मक्का की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं। उनमें के बुरे भलों की बराबरी नहीं कर सकते। तू भी उठ और उस बनू हाशिम के चुने हुए शख़्स की तरफ़ चल खड़ा हो। मोमिन जिन्नात काफ़िरों की तरह नहीं। तीन रातों तक बराबर यही सुनते रहने के बाद मेरे दिल में भी एक दम से इस्लाम का जोश उठा और हुज़ूरे पाक की बड़ाई और मुहब्बत से दिल पुर हो गया। मैंने अपनी सांडनी पर कजावा कसा और बग़ैर किसी और जगह क़ियाम किये सीधा रसूले ख़ुदा

सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त शहर मक्का में थे और लोग आपके आस-पास ऐसे थे जैसे घोड़े पर अयाल (यानी उसकी गर्दन के लम्बे बाल)। मुझे देखते ही फ़ौरन अल्लाह के पैग़म्बर सल्ल. ने फ़रमाया- सवाद बिन क़ारिब को मर्हबा, आओ हमें मालूम है कि कैसे और किस लिये और किसके कहने सुनने से आ रहे हो। मैंने कहा हुज़ूर! मैंने कुछ अश्आर कहे हैं अगर इजाज़त हो तो पेश करूँ? आपने फ़रमाया सवाद शौक़ से कहो। हज़रत सवाद रज़ि. ने वे अश्आर पढ़े जिनका मज़मून यह है कि मेरे पास मेरा जिन्न मेरे सो जाने के बाद रात को आया और उसने मुझे एक सच्ची ख़बर पहुँचाई। तीन रातें बराबर वह मेरे पास आता रहा और हर रात कहता रहा कि लुई बिन ग़ालिब में अल्लाह के रसूल मबऊस हो चुके हैं। मैंने भी सफ़र की तैयारी कर ली और जल्दी-जल्दी रास्ता तय करता हुआ यहाँ पहुँच भी गया। अब मेरी गवाही है कि अल्लाह के सिवा और कोई रब नहीं और आप अल्लाह के अमानतदार रसूल हैं। आप से शफ़ाअ़त का आसरा सबसे ज़्यादा है। ऐ बेहतरीन बुज़ुर्गों और पाक लोगों की औलाद! ऐ तमाम रसूलों से बेहतर रसूल! जो हुक्म आसमानी आप हमें पहुँचायेंगे वह कितना ही मुश्किल और तबीयत के ख़िलाफ़ क्यों न हो, नामुम्किन है कि हम उसे टाल दें। आप क़ियामत के दिन ज़रूर मेरे सिफ़ारिशी बनना क्योंकि वहाँ आपके सिवा सवाद बिन क़ारिब का सिफ़ारशी और कौन होगा? इस पर हुज़ूर सल्ल. बहुत हंसे और फ़रमाने लगे- सवाद तुम ने फ़लाह (कामयाबी) पा ली।

हज़रत उमर रज़ि. ने यह वाक़िआ सुनकर पूछा क्या वह जिन्न अब भी तुम्हारे पास आता है? उसने कहा जब से मैंने क़ुरआन पढ़ा वह नहीं आता है और अल्लाह का बड़ा शुक्र है उसके बदले मैंने रब की पाक किताब पायी। और अब जिस हदीस को हम हाफ़िज़ अबू नुऐम की किताब दलाईलुन्नुबुव्वत से नक़ल करते हैं उसमें भी इसका बयान है कि मदीना शरीफ़ में भी जिन्नात का वफ़्द हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था।

हज़रत अ़मर बिन ग़ीलान सक़फ़ी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास जाकर उनसे मालूम करते हैं कि मुझे यह मालूम हुआ है कि जिस रात जिन्नात का वफ़्द (जमाअ़त और गिरोह) हुज़ूरे पाक के पास हाज़िर हुआ था उस रात हुज़ूर के साथ आप भी थे? जवाब दिया कि हाँ ठीक है। मैंने कहा ज़रा वाक़िआ तो सुनाईये। फ़रमाया "सुफ़्फ़ा" वाले ग़रीब सहाबा को लोग अपने-अपने साथ शाम को खाना खिलाने के लिये ले गये और मैं यूँ ही रह गया। मेरे पास से हुज़ूर सल्ल. का गुज़र हुआ, पूछा कौन है? मैंने कहा इब्ने मसऊद। फ़रमाया तुम्हें कोई ले नहीं गया? फ़रमाया अच्छा मेरे साथ चलो, शायद कुछ मिल जाये तो दे दूँगा। मैं साथ हो लिया। आप हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हुजरे में गये, मैं बाहर ही ठेहर गया। थोड़ी देर में अन्दर से एक बाँदी आयी और कहने लगी- हुज़ूर फ़रमाते हैं कि हमने अपने घर में कोई चीज़ नहीं पाई, तुम अपनी सोने की जगह पर चले जाओ। मैं वापस मस्जिद आ गया और मस्जिद में कंकरियों का एक छोटा सा ढेर लगाकर उस पर सर रखकर अपना कपड़ा लपेटकर सो गया। थोड़ी ही देर गुज़री होगी कि वही बाँदी फिर आयी और कहा रसूले ख़ुदा आपको याद फ़रमा रहे हैं। मैं साथ हो लिया और मुझे उम्मीद पैदा हो गयी कि अब तो खाना ज़रूर मिलेगा। जब मैं अपनी जगह पहुँचा तो हुज़ूर घर से बाहर तशरीफ़ लाये। आपके हाथ में खजूर के पेड़ की एक तर छड़ी थी जिसे मेरे सीने पर रखकर फ़रमाने लगे जहाँ मैं जा रहा हूँ क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे? मैंने कहा इन्शा-अल्लाह ज़रूर चलूँगा। तीन मर्तबा यही सवाल जवाब हुए। फिर आप चले और मैं भी आपके साथ चलने लगा। थोड़ी देर में बक़ीअ़ क़ब्रिस्तान जा पहुँचे। फिर क़रीब-क़रीब वही बयान है जो ऊपर की रिवायतों में गुज़र चुका है। इसकी सनद ग़रीब है

और इसकी सनद में एक मुब्हम (ग़ैर-स्पष्ट) रावी है, जिसका नाम ज़िक्र नहीं किया गया।

किताब दलाईलुन्नुबुव्वत में हाफ़िज़ अबू नुऐम रह. रिवायत बयान करते हैं कि मदीना की मस्जिद में रसूले मक़बूल सल्ल. ने सुबह की नमाज़ अदा की और लौटकर लोगों से कहा आज रात को जिन्नात के वफ़्द (जमाअ़त) की तरफ़ तुममें से कौन मेरे साथ चलेगा? किसी ने जवाब न दिया। तीन मर्तबा के फ़रमान पर भी कोई न बोला। हुज़ूर सल्ल. मेरे पास से गुज़रे और मेरा हाथ थामकर अपने साथ ले चले। मदीना के पहाड़ों से बहुत आगे निकल कर साफ़ चटियल मैदान में पहुँच गये। अब नेज़ों के बराबर लम्बे-लम्बे क़द के आदमी नीचे-नीचे कपड़े पहने हुए आने शुरू हुए। मैं तो उन्हें देखकर मारे डर के काँपने लगा। फिर बाक़ी का वाक़िआ हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस के मुताबिक़ बयान किया। यह हदीस भी ग़रीब है। वल्लाहु आलम।

इसी किताब में एक ग़रीब हदीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह के साथी हज को जा रहे थे, रास्ते में हमने देखा कि एक सफ़ेद रंग का साँप रास्ते में लौट रहा है और उससे मुश्क की ख़ुशबू उड़ रही है। इब्राहीम रह. कहते हैं कि मैंने अपने साथियों से कहा तुम सब जाओ मैं यहाँ ठहर जाता हूँ। देखूँ तो इस साँप का क्या होता है? चुनाँचे वे चल दिये और मैं ठहर गया। थोड़ी ही देर गुज़री होगी कि वह साँप मर गया। मैंने एक सफ़ेद कपड़ा लेकर उसमें लपेट कर रास्ते के एक तरफ़ उसको दफ़न कर दिया और रात के खाने के वक़्त अपने क़ाफ़िले में पहुँच गया। ख़ुदा की क़सम मैं बैठा हुआ था कि चार औ़रतें मग़रिब (पश्चिम) की तरफ़ से आयीं, उनमें से एक ने पूछा उमर को किसने दफ़न किया? हमने कहा कौन उमर? उसने कहा तुममें से किसी ने एक साँप को दफ़न किया है? मैंने कहा हाँ मैंने दफ़न किया है। कहने लगी क़सम है ख़ुदा की तुमने बड़े रोज़ेदार, बड़े पुख़्ता नमाज़ी को दफ़न किया है, जो तुम्हारे नबी को मानता था और जिसने आपके नबी होने से चार सौ साल पहले आसमान से आपकी सिफ़त सुनी थी। इब्राहीम कहते हैं कि इस पर हमने अल्लाह तबारक व तआ़ला की तारीफ़ व सना की। फिर हज से फ़ारिग़ होकर जब हम हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. की ख़िदमत में पहुँचे और मैंने आपको यह सारा वाक़िआ़ सुनाया तो आपने फ़रमाया- उस औ़रत ने सच कहा। मैंने जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. से सुना है कि मुझ पर ईमान लाया था मेरी नुबुव्वत के चार सौ साल पहले। यह हदीस भी ग़रीब है। वल्लाहु आलम।

एक रिवायत में है कि कफ़न-दफ़न करने वाले हज़रत सफ़वान बिन मुअ़त्तल रज़ि. थे। कहते हैं कि यह साहिब जो दफ़न किये गये थे यह उन नौ जिन्नात में से एक थे जो हुज़ूर सल्ल. के पास क़ुरआन सुनने के लिये जमाअ़त बनकर आये थे। उनका इन्तिक़ाल उन सबसे अख़ीर में हुआ। अबू नुऐम में एक रिवायत है कि एक शख़्स हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि. की ख़िदमत में आये और कहने लगे- ऐ अमीरुल-मोमिनीन! मैं एक जंगल में था। मैंने देखा कि दो साँप आपस में ख़ूब लड़ रहे हैं, यहाँ तक कि एक ने दूसरे को मार डाला। अब मैं उन्हें छोड़कर जहाँ लड़ाई हुई थी वहाँ गया तो देखा कि बहुत से साँप क़त्ल किये हुए पड़े हैं और बाज़ों से इस्लाम की ख़ुशबू आ रही है। पस मैंने एक-एक को सूँघना शुरू किया यहाँ तक कि एक पीले रंग के दुबले पतले साँप में से मुझे इस्लाम की ख़ुशबू आने लगी। मैंने अपनी पगड़ी में लपेटकर उसे दफ़ना दिया। अब मैं चला जा रहा था कि मैंने एक आवाज़ सुनी कि ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझे ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत दी गयी। ये दोनों साँप जिन्नात के क़बीले बनू अश्ओ़बान और बनू अक़ीस में से थे। इन दोनों में जंग हुई और फिर जिस क़द्र क़त्ल हुए वे तुमने ख़ुद देख लिये। इन्हीं में एक शहीद जिन्हें तुमने दफ़न किया वह थे जिन्होंने रसूले ख़ुदा सल्ल. की ज़बान से अल्लाह की 'वही' सुनी थी। हज़रत उस्मान

रज़ि. इस क़िस्से को सुनकर फ़रमाने लगे ऐ शख़्स! अगर तू सच्चा है तो इसमें शक नहीं कि तूने अ़जीब वाक़िआ देखा, और अगर तू झूठा है तो झूठ का बोझ तुझ पर है।

अब आयत की तफ़सीर सुनिये। इरशाद है कि जब हम आपकी तरफ़ जिन्नात की एक जमाअ़त को ले आये जो क़ुरआन सुन रहे थे। जब वे हाज़िर हो गये और तिलावत शुरू होने को थी तो उन्होंने आपस में एक दूसरे को यह अदब सिखाया कि ख़ामोशी से सुनो। उनका एक और अदब भी हदीस में आया है, तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के सामने सूरः रहमान की तिलावत की, फिर फ़रमाया क्या बात है कि तुम सब ख़ामोश ही रहे? तुमसे तो बहुत अच्छे जवाब देने वाले जिन्नात साबित हुए। जब भी मेरे मुँह से उन्होंने यह आयतः

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبَانِ.

(कि ऐ जिन्नात और इनसानो! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे) सुनी तो उन्होंने जवाब में कहाः

وَلَابِشَیْءٍ مِّنْ اٰلَآئِكَ اَوْنِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ.

(ऐ रब! हम आपकी किसी नेमत और मेहरबानी का इनकार नहीं करते हैं, बस तमाम तारीफ़ आप ही के लिये है)

फिर फ़रमाता है कि जब फ़राग़त हासिल की गयी और वे अपनी क़ौम को धमकाने और उन्हें आगाह करने के लिये वापस उनकी तरफ़ चले। जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू का फ़रमान हैः

لِيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ......... الخ.

यानी वे दीन की समझ हासिल करें और जब वापस अपनी क़ौम में पहुँचें तो उन्हें भी होशियार कर दें, बहुत मुम्किन है कि वे बचाव इख़्तियार कर लें।

इस आयत से इस्तिदलाल किया गया (यानी दलील पकड़ी गयी) है कि जिन्नात में भी ख़ुदा की बातों के पहुँचाने वाले और डर सुनाने वाले हैं, लेकिन उनमें से रसूल नहीं बनाये गये। यह बात बिला शक साबित है कि जिन्नों में पैग़म्बर नहीं। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْ........الخ.

यानी हमने तुझसे पहले भी जितने रसूल भेजे वे सब बस्तियों के रहने वाले इनसान ही थे, जिनकी तरफ़ हम अपनी 'वही' भेजा करते थे। एक और आयत में हैः

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ.

यानी तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे वे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन में हैः

وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ.

यानी हमने उनकी औलाद में नुबुव्वत और किताब रख दी। पस आपके बाद जितने भी नबी आये वे आप ही के ख़ानदान और आप ही की नस्ल में से हुए हैं। लेकिन सूरः अन्आ़म की आयतः

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ.

Maktab E Ashraf

यानी ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये थे?

इसका मतलब और इससे मुराद ये दोनों जिन्स हैं। पस इसका मिस्दाक़ सिर्फ़ एक जिन्स ही हो सकती है और इनसान के ताबे करके ही जिन्नात का ज़िक्र किया गया है। जैसे फ़रमान है:

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ.

यानी उन दोनों समुद्रों में से मोती और मूँगा निकलता है।

हालाँकि दर असल मोती और मूँगा एक में से ही निकलता है।

अब बयान हो रहा है जिन्नात के उस वअ़ज़ (बयान और नसीहत) का जो उन्होंने अपनी क़ौम में किया। फ़रमाया कि हमने उस किताब को सुना है जो हज़रत मूसा के बाद नाज़िल हुई है। हज़रत ईसा की किताब इन्जील का ज़िक्र इसलिये छोड़ दिया कि वह दर असल तौरात का तकमिला (पूरक) थी। उसमें ज़्यादातर वअ़ज़ (नसीहत और उपदेश) के और दिल को नर्म करने के बयानात थे। हराम हलाल के मसाईल बहुत कम थे। पस असल चीज़ तौरात ही रही, इसी लिये इन मुस्लिम जिन्नात ने उसी का ज़िक्र किया और इसी बात को पेशे नज़र रखकर हज़रत वरक़ा बिन नौफ़ल ने जिस वक़्त हुज़ूर की ज़बानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के पहली दफ़ा आने का हाल सुना तो कहा था वाह-वाह! यही तो वह मुबारक वजूद ख़ुदा के भेदी का है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आया करते थे, काश कि मैं कुछ और ज़माना ज़िन्दा रहता.........। फिर क़ुरआन की दूसरी सिफ़तें बयान करते हैं कि वह अपने से पहले की तमाम आसमानी किताबों को सच्चा बतलाता है, वह एतिक़ादी मसाईल और वाक़िआ़त व क़िस्सों में हक़ की जानिब रहबरी करता है और आमाल में सही रास्ता दिखाता है। क़ुरआन में दो चीज़ें हैं 'ख़बर' या 'तलब'। पस इसकी ख़बर सच्ची और इसकी तलब अ़दल वाली। जैसे फ़रमान है:

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا.

यानी तेरे रब का कलिमा सचाई और अ़दल (इन्साफ़ व दरमियानी राह) के लिहाज़ से बिल्कुल पूरा ही है। एक और आयत में अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमाता है:

هُوَ الَّذِىٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ.

वह ख़ुदा जिसने अपने रसूल को हिदायत और हक़ दीन के साथ भेजा है।

पस हिदायत नफ़ा देने वाला इल्म है और दीने हक़ नेक अ़मल है, यही मक़सद जिन्नात का था। फिर कहते हैं कि ऐ हमारी क़ौम! ख़ुदा के दाओ़ी (दावत देने वाले) की दावत पर लब्बैक कहो। इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि रसूलुल्लाह सल्ल. जिन्नात व इनसान दोनों जमाअ़तों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गये हैं। इसलिये कि आपने जिन्नात को ख़ुदा की तरफ़ दावत दी और उनके सामने क़ुरआने करीम की वह सूरत पढ़ी जिसमें इन दोनों जमाअ़तों को मुख़ातब किया गया है, और इनके नाम अहकाम जारी फ़रमाये हैं, और वायदा-वईद बयान किया है। यानी सूरः रहमान।

फिर फ़रमाते हैं कि ऐसा करने से वह तुम्हारे बाज़ गुनाह बख़्श देगा। लेकिन यह उस सूरत में हो सकता है जब लफ़्ज़ 'मिन' को ज़ायद न मानें। चुनाँचे एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है। और क़ायदे के मुताबिक़ जब किसी बात को साबित करना हो तो उस मौक़े पर लफ़्ज़ 'मिन' बहुत ही कम ज़ायद आता है। और अगर ज़ायद मान लिया जाये तो मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़

फ़रमायेगा और तुम्हें अपने दर्दनाक अ़ज़ाबों से छुटकारा देगा। इस आयत से बाज़ उलेमा ने दलील पकड़ी है कि ईमान वाले जिन्नों को भी जन्नत नहीं मिलेगी, हाँ अ़ज़ाब से वे छुटकारा पा लेंगे, यही उनके नेक आमालों का बदला है। और अगर इससे ज़्यादा मर्तबा भी उन्हें मिलने वाला होता तो इस मक़ाम पर ये मोमिन जिन्न उसे ज़रूर बयान कर देते। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि मोमिन जिन्न जन्नत में नहीं जायेंगे इसलिये कि वे इब्लीस की औलाद में से हैं और इब्लीस (शैतान) की औलाद जन्नत में नहीं जायेगी। लेकिन हक़ (सही बात) यह है कि मोमिन जिन्न ईमान वाले इनसानों की तरह हैं और वे जन्नत में जगह पायेंगे जैसा कि बुज़ुर्गों और पहले उलेमा की एक जमाअ़त का मज़हब है। बाज़ लोगों ने इस पर इस आयत से इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है:

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ.

यानी जन्नत की हूरों को जन्नत वालों से पहले न किसी इनसान का हाथ लगा न किसी जिन्न का।

लेकिन यह दलील हासिल करना विचारनीय है। इससे बहुत बेहतर इस्तिदलाल तो अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान से है:

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ. فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ.

यानी जो कोई अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया उसके लिये दो जन्नते हैं। फिर ऐ जिन्नो और इनसानो! तुम अपने परवर्दिगार की कौन-कौनसी नेमत को झुठलाते हो?

इस आयत में अल्लाह तआ़ला इनसानों और जिन्नों पर अपना एहसान जताता है कि उनके नेक कामों का बदला जन्नत है। और इस आयत को सुनकर मुसलमान इनसानों से बहुत ज़्यादा शुक्रिया मुसलमान जिन्नों ने अदा किया और इसे सुनते ही कहा कि ख़ुदाया! हम तेरी नेमतों में से किसी के मुन्किर (इनकार करने वाले) नहीं। हम तेरे बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हैं। ऐसा तो नहीं हो सकता कि उनके सामने उन पर वह एहसान जताया जाये जो वास्तव में उन्हें मिलने वाला ही न हो। हमारी एक और दलील भी सुनिये! जब काफ़िर जिन्न को जहन्नम में डाला जायेगा जो इन्साफ़ का मक़ाम है तो मोमिन जिन्नात को जन्नत में क्यों न ले जाया जाये? जो फ़ज़्ल व मेहरबानी का मक़ाम है, बल्कि यह चीज़ तो बहुत ज़्यादा लायक़ और बतौरे औला होने के क़ाबिल है, और इस पर वे आयतें भी दलील हैं जिनमें आ़म तौर पर ईमान वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गयी है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا.

यानी ईमान वालों का मेहमान-ख़ाना यक़ीनन जन्नतुल-फ़िरदौस है।

और सुनिये! जन्नत का तो यह हाल है कि ईमान वालों के दाख़िल हो जाने के बाद भी बेहद व हिसाब जगह बची रहेगी, और फिर एक नई मख़्लूक़ पैदा करके उन्हें उसमें आबाद किया जायेगा। फिर कोई वजह नहीं कि ईमान वाले और नेक अ़मल वाले जिन्नात जन्नत में न भेजे जायें। और सुनिये! यहाँ दो बातें बयान की गयी हैं, गुनाहों की बख़्शिश और अ़ज़ाबों से रिहाई, और जब ये दोनों चीज़ें हैं तो यक़ीनन यह लाज़िमी बनाती हैं जन्नत में दाख़िले को, इसलिये कि आख़िर में या तो जन्नत है या जहन्नम। पस जो शख़्स जहन्नम से बचा लिया गया वह निश्चित तौर पर जन्नत में जाना चाहिये, और कोई शरई स्पष्ट दलील और हुक्म इस बात के बयान में नहीं आया कि मोमिन जिन्नात बावजूद दोज़ख़ से बच जाने के

Maktab E Ashraf

जन्नत में नहीं जायेंगे। अगर कोई इस क़िस्म की साफ़ दलील हो तो बेशक हम उसके मानने के लिये तैयार हैं। वल्लाहु आलम।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को देखिये, अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तुम्हारे गुनाहों को (ईमान लाने की वजह से) बख़्श देगा और एक निर्धारित वक़्त तक तुम्हें मोहलत देगा। तो यहाँ भी जन्नत में दाख़िल होने का ज़िक्र न होने से यह लाज़िम नहीं आता कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के मुसलमान जन्नत में नहीं जायेंगे, बल्कि बिल-इत्तिफ़ाक़ वे सब जन्नती हैं। पस इसी तरह यहाँ भी समझ लीजिए। अब चन्द और अक़वाल भी इस मसले में सुन लीजिए। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. से मन्क़ूल है कि बीच जन्नत में तो पहुँचेंगे नहीं अलबत्ता किनारों पर और इधर-उधर रहेंगे। बाज़ लोग कहते हैं कि जन्नत में तो वे होंगे लेकिन दुनिया के विपरीत इनसान इन्हें देखेंगे और ये इनसानों को नहीं देख सकेंगे। बाज़ लोगों का क़ौल है कि वे जन्नत में खायेंगे पियेंगे नहीं सिर्फ़ अल्लाह की पाकी व बड़ाई और उसकी तारीफ़ बयान करना ही उनका खाना होगा, जैसे फ़रिश्ते। इसलिये कि ये भी उन्हीं की जिन्स (क़िस्म) में से हैं। लेकिन इन तमाम अक़वाल में नज़र (सोचने का मक़ाम) है और सब बेदलील हैं।

फिर नसीहत करने वाले मोमिन फ़रमाते हैं कि जो ख़ुदा के दाओ़ (पैग़म्बर) की दावत को क़बूल न करेगा वह ज़मीन में ख़ुदा को हरा नहीं सकता। बल्कि अल्लाह की क़ुदरत उस पर शामिल और उसे घेरे हुए है। उसके अ़ज़ाब से उन्हें कोई नहीं बचा सकता। यह खुले बहकावे (गुमराही) में हैं। ख़्याल फ़रमाईये कि तब्लीग़ का यह तरीक़ा कितना प्यारा और किस क़द्र असरदार है। शौक़ भी दिलाया और धमकाया भी, इसलिये उनमें के अक्सर ठीक हो गये और क़ाफ़िले के क़ाफ़िले और फ़ौजें की फ़ौजें बनकर कई-कई बार अल्लाह के रसूल सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया, जैसा कि पहले तफ़सील से हमने बयान कर दिया है। जिस पर हम अल्लाह तआ़ला के एहसान के शुक्रगुज़ार हैं। वल्लाहु आलम।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْىَِۧ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا	क्या उन लोगों ने यह न जाना कि जिस ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में ज़रा नहीं थका, वह इस पर क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों न हो बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (33) और जिस दिन वे काफ़िर लोग दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे (उनसे पूछा जाएगा), क्या ये दोज़ख़ एक हक़ीक़त नहीं है? वे कहेंगे कि हमको अपने परवर्दिगार की क़सम! ज़रूर एक हक़ीक़त है। इरशाद होगा, तो अपने कुफ़्र के बदले इसका अ़ज़ाब चखो। (34) तो आप सब्र कीजिए जैसे और हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया था, और उन लोगों के लिए (अल्लाह के) इन्तिक़ाम की जल्दी न कीजिए। जिस दिन ये

तस्तअ्जिल् लहुम्, क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यू-अदू-न लम् यल्बसू इल्ला सा-अतम् मिन् नहारिन्, बलागुन् फ़-हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुल्-फ़ासिक़ून ०	लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका इनसे वायदा किया जाता है तो गोया ये लोग दिन भर में एक घड़ी रहे हैं, यह पहुँचा देना है। सो वही बरबाद होंगे जो नाफ़रमानी करेंगे। (35)

Maktab E Ashraf

नाफ़रमानों और बुरों पर ख़ुदा की लानत

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि क्या उन लोगों ने जो मरने के बाद जीने के मुन्किर (इनकारी) हैं और क़ियामत के दिन जिस्मों समेत जी उठने को मुहाल (असंभव) जानते हैं, यह नहीं देखा कि अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने तमाम आसमानों को और तमाम ज़मीनों को पैदा किया और उनकी पैदाईश (बनाने) ने उसे कुछ न थकाया (ईसाई कहते थे कि अल्लाह ने कायनात को छह दिन में पैदा किया और फिर थक गया, यहाँ इसी का रद्द हो रहा है)। बल्कि सिर्फ़ कलिमा "कुन" (हो जा) के कहने से ही हो गये। कोई था जो उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करता? मुख़ालफ़त करता? हुक्म मानने से इनकार करता? राज़ी ख़ुशी डरते दबते सब मौजूद हो गये। क्या इतनी कामिल क़ुदरत व क़ुव्वत वाला मुर्दों को ज़िन्दा कर देने की ताक़त नहीं रखता? चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ.

यानी इनसानों की पैदाईश से तो मुश्किल और अहम पैदाईश आसमान व ज़मीन की है, लेकिन अक्सर लोग बेसमझ हैं।

जब ज़मीन व आसमान को उसने पैदा कर दिया तो इनसान को पैदा कर देना चाहे शुरू में हो चाहे दोबारा में हो, उसके लिये क्या मुश्किल है? इसी लिये यहाँ भी फ़रमाया कि हाँ वह हर चीज़ पर क़ादिर है और उन्हीं में से मौत के बाद ज़िन्दा करता है कि इस पर भी वह यक़ीनी तौर पर क़ादिर है।

फिर ख़ुदा तआ़ला काफ़िरों को धमकाता है कि क़ियामत वाले दिन इससे पहले कि उन्हें जहन्नम में डाला जाये उन्हें जहन्नम के किनारे पर खड़ा करके एक मर्तबा और लाजवाब और बेइज़्ज़त किया जायेगा। कहा जायेगा- क्यों जी! हमारे वायदे और ये दोज़ख़ के अ़ज़ाब तो सही निकले या अब भी शक व शुब्हा और इनकार व तकज़ीब है? यह जादू तो नहीं? तुम्हारी आँखें तो अन्धी नहीं हो गयीं? जो देख रहे हो सही देख रहे हो या वास्तव में सही नहीं? अब सिवाय इक़रार के कुछ न बन पड़ेगा। जवाब देंगे कि हाँ-हाँ! सब हक़ है, जो कहा गया था वही निकला। क़सम ख़ुदा की अब हमें रत्ती बराबर भी शक नहीं। अल्लाह फ़रमायेगा अब दो घड़ी पहले के कुफ़्र का मज़ा चखो।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को तसल्ली दे रहा है कि आपकी क़ौम ने अगर आपको झुठलाया, आपकी क़द्र न की, आपकी मुख़ालफ़त की, आपको तकलीफ़ पहुँचाने के पीछे पड़े तो यह कोई नई बात नहीं, पहले बुलन्द-रुतबा पैग़म्बरों को याद करो कि उन्होंने कैसी-कैसी ईज़ायें और मुसीबतें सहीं और किन-किन ज़बरदस्त मुख़ालिफ़ों की मुख़ालफ़त को सब्र से बरदाश्त किया। उन रसूलों के नाम ये हैं। हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और ख़ातिमुल-अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा

Maktab E Ashraf

अ़लैहिमुस्सलाम। अम्बिया के बयान उनके नाम की ख़ुसूसियत के साथ सूरः अहज़ाब और सूरः शूरा में मज़कूर हैं। और यह भी हो सकता है कि बड़े रुतबे वाले रसूलों से मुराद सब पैग़म्बर हों। वल्लाहु आलम।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने रोज़ा रखा, फिर भूखे ही रहे, फिर रोज़ा रखा, फिर भूखे ही रहे और फिर रोज़ा रखा, फिर फ़रमाने लगे ऐ आ़यशा! मुहम्मद और आले मुहम्मद के लायक़ तो दुनिया है ही नहीं। ऐ आ़यशा! दुनिया की बलाओं और मुसीबतों पर सब्र करने और दुनिया की ख़्वाहिश की चीज़ों से ख़ुद को बचाये रखने का हुक्म बड़े रुतबे वाले और हिम्मत वाले रसूलों को दिया गया है और वही तकलीफ़ मुझे भी दी गयी है जो उन बुलन्द हिम्मत वाले रसूलों को दी गयी थी। क़सम ख़ुदा की मैं भी उन्हीं की तरह अपनी ताक़त भर सब्र व बरदाश्त से ही काम लूँगा। अल्लाह की क़ुव्वत के भरोसे पर यह बात ज़बान से निकाल रहा हूँ।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! ये लोग अ़ज़ाब में मुब्तला किये जायें इसकी जल्दी न करो। जैसे एक और आयत में है:

فَذَرْنِىْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ ....الخ.

मुझे और इन झुठलाने वाले पेट भरे मालदारों को छोड़ दे और इन्हें कुछ मोहलत दे।

एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ............الخ

यानी काफ़िरों को मोहलत दो और उन्हें थोड़ी देर छोड़ दो।

फिर फ़रमाता है कि जिस दिन ये उन चीज़ों को देख लेंगे जिनके वायदे आज दिये जाते हैं उस दिन इन्हें यह मालूम होने लगेगा कि दुनिया में सिर्फ़ दिन का कुछ ही हिस्सा गुज़ारा है। एक और आयत में है:

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْآ اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰهَا.

यानी जिस दिन ये क़ियामत को देख लेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि गोया दुनिया में सिर्फ़ एक सुबह या एक शाम ही गुज़ारी थी। एक जगह फ़रमाया:

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْآ اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ.

यानी जिस दिन हम उन्हें जमा करेंगे तो यह महसूस करने लगेंगे कि गोया दिन की एक साअ़त (घड़ी) ही दुनिया में रहे थे।

फिर फ़रमाया कि पहुँचा देना है। इसके दो मायने हो सकते हैं, एक तो यह कि दुनिया का ठहरना सिर्फ़ हमारी तरफ़ से हमारी बातों के पहुँचा देने के लिये था। दूसरे यह कि यह क़ुरआन सिर्फ़ पहुँचा देने के लिये है। यह खुली तब्लीग़ है। फिर फ़रमाता है कि सिवाय फ़ासिक़ों (बेईमानों और बदकारों) के और कोई तबाह होने वाला नहीं। यह अल्लाह तआ़ला का अ़दल (इन्साफ़) है कि जो ख़ुद हलाक हुआ उसे ही वह हलाक करता है, अ़ज़ाब उसी को होते हैं जो ख़ुद अपने हाथों अपने लिये अ़ज़ाब मुहैया करे और ख़ुद को अ़ज़ाब का हक़दार बना ले। वल्लाहु आलम।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः अहक़ाफ़ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः मुहम्मद

सूरः मुहम्मद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 38 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَالْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ○ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ○	जो लोग काफ़िर हुए और अल्लाह के रास्ते से रोका, ख़ुदा ने उनके आमाल ज़ाया कर दिए। (1) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और वे उस सब पर ईमान लाए जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नाज़िल किया गया है और वह उनके रब के पास से वाक़ई चीज़ है, अल्लाह तआ़ला उनके गुनाह उन पर से उतार देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा। (2) यह इस वजह से है कि काफ़िर तो ग़लत रास्ते पर चले और ईमान वाले सही रास्ते पर चले जो उनके रब की तरफ़ से है। अल्लाह तआ़ला इसी तरह लोगों के लिए उनके हालात बयान फ़रमाते हैं। (3)

वे नाफ़रमान और बदकार जिन पर अल्लाह की लानत होगी

इरशाद होता है कि जिन लोगों ने ख़ुद भी अल्लाह की आयतों का इनकार किया और दूसरों को भी अल्लाह की राह से रोका, अल्लाह तआ़ला ने उनके आमाल ज़ाया कर दिये, उनकी नेकियाँ बेकार हो गयीं। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि हमने उनके आमाल पहले से ही ग़ारत व बरबाद कर दिये हैं। और जो लोग ईमान लाये दिल से और मुताबिक़े शरीअ़त आमाल किये बदन से, यानी ज़ाहिर बातिन दोनों ख़ुदा की तरफ़ झुका दिये और इस अल्लाह की 'वही' को भी मान लिया जो मौजूदा आख़िरुज़्ज़माँ पैग़म्बर सल्ल. पर उतारी गयी है, और जो वास्तव में रब की तरफ़ से ही है, और जो सरासर हक़ व सच्चाई ही है। उनकी बुराईयाँ बरबाद हैं (यानी माफ़ कर दी जायेंगी) और उनके हाल की इस्लाह (सुधार) का ज़िम्मेदार ख़ुद ख़ुदा है। इससे मालूम हुआ कि हुज़ूरे पाक के नबी हो चुकने बाद ईमान की शर्त आप पर और क़ुरआन पर ईमान लाना भी है। हदीस में हुक्म है कि जिसकी छींक पर हम्द करने का जवाब दिया गया हो (यानी अल्हम्दु लिल्लाह कहा गया हो) उसे चाहिये कि "यहदीकुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम" कहे (यानी ख़ुदा तुम्हें हिदायत दे

Maktab E Ashraf

और तुम्हारी हालत संवारे)।

फिर फ़रमाता है कि काफ़िरों के आमाल ग़ारत कर देने की और मोमिनों की बुराईयाँ माफ़ फ़रमा देने और उनकी हालत संवार देने की वजह यह है कि काफ़िर तो ग़ैर-हक़ को इख़्तियार करते हैं, हक़ को छोड़कर, और मोमिन ग़ैर-हक़ को दूर फेंक कर हक़ की पाबन्दी करते हैं। इसी तरह अल्लाह तआ़ला लोगों के अन्जाम को बयान फ़रमाता है और अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ख़ूब.जानने वाला है।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ
الرِّقَابِ ط حَتّٰىٓ اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا
الْوَثَاقَ ق لا فَاِمَّا مَنًّام بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى
تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ج ذٰلِكَ ط وَلَوْ
يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ لا وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ط وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ○
سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ○ وَيُدْخِلُهُمُ
الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ
اَقْدَامَكُمْ ○ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ
وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ○ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ○

सो जब तुम्हारा काफ़िरों से मुक़ाबला हो जाए तो उनकी गर्दनें मारो, यहाँ तक कि जब तुम उनका ख़ूब ख़ून बहा चुको तो ख़ूब मज़बूत बाँध लो। फिर उसके बाद या तो मुआ़वज़े के बग़ैर छोड़ देना और या मुआ़वज़ा लेकर छोड़ देना, जब तक कि लड़ने वाले अपने हथियार न रख दें, यह (जिहाद का) हुक्म (जो ज़िक्र किया गया) इस पर अ़मल करना। और अगर अल्लाह चाहता तो उनसे इन्तिक़ाम ले लेता, लेकिन ताकि तुममें एक का दूसरे के ज़रिये से इम्तिहान करे। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़ ज़ाया नहीं करेगा। (4) अल्लाह उनको मक़सूद तक पहुँचा देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा। (5) और उनको जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसकी उनको पहचान करा देगा। (6) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा। (7) और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए तबाही है, और उनके आमाल को ख़ुदा तआ़ला बेकार कर देगा। (8) यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने अल्लाह के उतारे हुए अहकाम को नापसन्द किया, सो अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। (9)

बदकारों और बेईमानों की हलाकत

और असबाब की इस दुनिया में उसका इन्तिज़ार

यहाँ ईमान वालों को जंगी अहकाम दिये जाते हैं कि जब काफ़िरों से मुठभेड़ हो जाये और आमने-

Maktaba Ashraf

सामने की लड़ाई शुरू हो जाये तो उनकी गर्दनें उड़ाओ, तलवार चलाकर गर्दन धड़ से उड़ा दो। फिर जब देखो कि दुश्मन हारा उसके आदमी कट चुके तो बाक़ी बचों को मज़बूत क़ैद व बन्द के साथ बन्धक बना लो। जब लड़ाई ख़त्म हो चुके तो फिर तुम्हें (सिर्फ़ दो बातों का) इख़्तियार है, या तो क़ैदियों को बतौर एहसान बग़ैर कुछ लिये ही छोड़ दो या उनसे जंग का तावान (जुर्माना) वसूल करके छोड़ दो। बज़ाहिर मालूम होता है कि बदर के ग़ज़वे (लड़ाई) के बाद यह आयत उतरी है, क्योंकि बदर की लड़ाई में ज़्यादातर मुख़ालिफ़ों को क़ैद करने और क़ैद करने की कमी करने में मुसलमानों पर इताब (अल्लाह की नाराज़गी का इज़हार) किया गया और फ़रमाया गया थाः

مَاكَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ اَسْرٰى........ الخ.

नबी को यह लायक़ न था कि उसके पास क़ैदी हों जब तक कि एक मर्तबा जी खोलकर मुख़ालिफ़ों में मौत की गर्म-बाज़ारी न हो ले। क्या तुम दुनियावी असबाब (सामान और रुपये-पैसे) की तमन्ना में हो? अल्लाह का इरादा तो आख़िरत का है और अल्लाह ग़ालिब व हकीम है। अगर पहले ही से ख़ुदा का लिखा हुआ न होता तो जो तुम ने लिया उसके बारे में तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब होता। बाज़ उलेमा का क़ौल है कि यह इख़्तियार मन्सूख़ (रद्द और निरस्त) है और यह आयत नासिख़ (रद्द करने वाली) हैः

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ........ الخ.

यानी हुर्मत वाले (सम्मानित) महीने जब गुज़र जायें तो मुश्रिकों को जहाँ पाओ वहीं क़त्ल करो....।

लेकिन अक्सर उलेमा का फ़रमान है कि मन्सूख़ नहीं। अब बाज़ तो कहते हैं कि इमाम (मुसलमानों के हाकिम) को दो बातों में से एक का इख़्तियार है, यानी या तो एहसान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर छोड़ दो। लेकिन बाज़ कहते हैं कि क़त्ल कर डालने का भी इख़्तियार है। इसकी दलील यह है कि बदर के क़ैदियों में से नज़र बिन हारिस और उक़्बा बिन अबी मुईत को रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़त्ल करा दिया था। और यह भी इसकी दलील है कि समामा बिन असाल रज़ि. ने जबकि वह क़ैदी होने की हालत में थे और रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनसे पूछा था कि कहो समामा क्या ख़्याल है? तो उन्होंने कहा अगर आप क़त्ल करेंगे तो एक ख़ून वाले को क़त्ल करेंगे और अगर आप एहसान रखेंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर एहसान रखेंगे, और अगर माल तलब करते हैं तो आप जो माँगेंगे मिल जायेगा। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. एक चौथी बात का भी इख़्तियार बतलाते हैं, यानी क़त्ल का, बदले का और गुलाम बनाकर रख लेने का। इस मसले की तफ़सील फ़ुरूअ़ी मसाईल की किताबों में मिलेगी। और हमने भी ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से किताबुल-अहकाम में इसके दलाईल बयान कर दिये हैं।

फिर फ़रमाता है- यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे। यानी बक़ौल मुजाहिद रह. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम नाज़िल हो जायें। मुम्किन है हज़रत मुजाहिद की नज़र उस हदीस पर हो जिसमें है कि मेरी उम्मत हमेशा हक़ के साथ ज़ाहिर रहेगी यहाँ तक कि उनका आख़िरी शख़्स दज्जाल से लड़ेगा। मुस्नद अहमद और नसाई में है कि हज़रत सलमा बिन नुफ़ैल रज़ि. ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे कि मैंने घोड़ों को छोड़ दिया, हथियार अलग कर दिये, लड़ाई से अपने हथियार रख दिये और मैंने कह दिया कि अब लड़ाई है ही नहीं। हुज़ूर ने उन्हें फ़रमाया अब लड़ाई आ गयी, मेरी उम्मत में से एक जमाअ़त हमेशा लोगों पर ज़ाहिर रहेगी, जिन लोगों के दिल टेढ़े हो जायेंगे ये उनसे लड़ेंगे और अल्लाह तआ़ला उनसे रोज़ियाँ देगा यहाँ तक कि ख़ुदा का हुक्म आ जायेगा और वे उसी हालत पर होंगे मोमिनों की ज़मीन शाम

(मुल्क सीरिया) में है। घोड़ों की अयाल (गर्दनों के बालों) में क़ियामत तक के लिये ख़ैर रख दी है। यह हदीस इमाम बग़वी रह. ने भी ज़िक्र की है और हाफ़िज़ अबू यअ़्ला मूसली ने भी, इससे भी इसकी ताईद होती है कि जो लोग इस आयत को मन्सूख़ नहीं बतलाते गोया कि यह हुक्म मशरूअ़ (शरीअ़त का) है जब तक कि लड़ाई बाक़ी रहेगी। यह आयत इस आयत के जैसी हैः

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ........ الخ.

यानी उनसे लड़ते रहो जब तक कि फ़ितना बाक़ी है और जब तक कि दीन अल्लाह ही के लिये न हो जाये।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि लड़ाई में हथियार रख देने से मुराद शिर्क का बाक़ी न रहना है। और बाज़ से मन्क़ूल है कि मुराद यह है कि मुश्रिकीन अपने शिर्क से तौबा कर लें। और यह भी कहा गया है कि वे अपनी कोशिशें ख़ुदा की इताअ़त (नेकी और फ़रमाँबरदारी करने) में ख़र्च करने लग जायें। फिर फ़रमाता है कि अगर ख़ुदा चाहता तो ख़ुद ही काफ़िरों को बरबाद कर देता, अपने पास से उन पर अ़ज़ाब भेज देता, लेकिन वह तो यह चाहता है कि तुम्हें आज़माये, इसी लिये जिहाद के अहकाम जारी फ़रमाये हैं। सूरः आले इमरान और सूरः बराअत में भी इस मज़मून को बयान किया है। सूरः आले इमरान में हैः

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ.......... الخ.

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि बग़ैर इस बात के कि ख़ुदा जान ले कि तुम में से मुजाहिद कौन हैं और तुममें से सब्र करने वाले कौन हैं, तुम जन्नत में चले जाओगे? सूरः बराअत (सूरः तौबा) में हैः

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ........ الخ.

उनसे जिहाद करो अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अ़ज़ाब करेगा और तुम्हें उन पर मदद और फ़तह अ़ता फ़रमायेगा और ईमान वालों के सीने शिफ़ा वाले कर देगा, और अपने दिलों के अरमान और जोश निकालने का उन्हें मौक़ा देगा, और जिसकी चाहेगा तौबा क़बूल फ़रमायेगा, अल्लाह बड़ा अ़लीम व हकीम है।

अब चूँकि यह भी था कि जिहाद में मोमिन भी शहीद हों, इसलिये फ़रमाता है कि शहीदों के आमाल बरबाद और ज़ाया नहीं जायेंगे बल्कि बहुत बढ़ा-चढ़ाकर सवाब उन्हें दिये जायेंगे। बाज़ को तो क़ियामत तक के सवाब मिलेंगे। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि शहीद को छह इनामात हासिल होते हैं- उसके ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। उसे उसका जन्नत का मकान दिखलाया जाता है। निहायत ख़ूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से उसका निकाह करा दिया जाता है। वह बड़ी घबराहट से अमन में रहता है। वह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाता है। उसे ईमान के ज़ेवर से सजाया जाता है। एक और हदीस में यह भी है कि उसके सर पर वक़ार का ताज रखा जाता है जो क़ीमती मोतियों से जड़ा हुआ होता है, जिसमें एक याक़ूत तमाम दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से क़ीमती है, उसे बहत्तर (72) हूरें मिलती हैं। और अपने ख़ानदान के सत्तर शख़्सों के बारे में उसकी शफ़ाअ़त क़बूल की जाती है। यह हदीस तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि सिवाय क़र्ज़ के शहीदों के सब गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। शहीद के फ़ज़ाईल की हदीसें और भी बहुत हैं।

फिर फ़रमाता है कि उन्हें ख़ुदा जन्नत की राह सुझा देगा और जैसे यह आयत हैः

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ........ الخ.

Maktab E Ashraf

यानी जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक काम किये उनके ईमान के सबब उनका रब उन्हें जन्नतों की तरफ़ रहबरी करेगा जो नेमतों से पुर (भरी) हैं और जिनके चप्पे-चप्पे में चश्मे बह रहे हैं। अल्लाह उनके हाल और उनके काम संवार देगा। और जिन जन्नतों को पहले ही वह पहचनवा चुका है और जिनकी तरफ़ उनकी रहबरी कर चुका है, आख़िरकार उन्हीं में उन्हें पहुँचायेगा। यानी हर शख़्स अपने मकान और अपनी जगह को जन्नत में इस तरह पहचान लेगा जैसे दुनिया में पहचान लिया करता था, उन्हें किसी से पूछने की ज़रूरत न पड़ेगी। यह मालूम होगा गोया शुरू पैदाईश से यहीं रहते हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि जिस इनसान के साथ उसके आमाल का मुहाफ़िज़ (लिखने वाला) जो फ़रिश्ता था वही उसके आगे-आगे चलेगा, जब यह अपनी जगह पहुँचेगा तो खुद ही पहचान लेगा कि मेरी जगह यही है, यूँ ही फिर अपनी ज़मीन में सैर करता हुआ जब सब देख चुकेगा तब फ़रिश्ता हट जायेगा और यह अपनी लज़्ज़तों में मशग़ूल हो जायेगा। सही बुख़ारी की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि जब मोमिन आग से छूट जायेंगे तो जन्नत दोज़ख़ के दरमियान एक पुल पर रोक लिये जायेंगे और आपस में एक दूसरे पर जो मज़ालिम (ज़्यादतियाँ और ज़ुल्म व सितम) थे उनके बदले उतार लिये जायेंगे। जब बिल्कुल पाक-साफ़ हो जायेंगे तो जन्नत में जाने की इजाज़त मिल जायेगी। क़सम खुदा की जिस तरह तुम में से हर एक शख़्स अपने दुनियावी घर की राह जानता है और घर को पहचानता है, इससे बहुत ज़्यादा अच्छी तरह वे लोग अपनी मन्ज़िल और अपनी जगह से वाक़िफ़ होंगे। फिर फ़रमाता है कि ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे क़दम मज़बूत कर देगा। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ........ الخ.

अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। इसलिये कि जैसा अ़मल होता है उसी तरह का बदला होता है, और वह तुम्हारे क़दम भी मज़बूत कर देगा।

हदीस में है कि जो शख़्स किसी इख़्तियार वाले के सामने एक ऐसे हाजत-मन्द की हाजत पहुँचायेगा जो खुद वहाँ न पहुँच सकता हो तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला पुलसिरात पर उसके क़दम मज़बूती से जमा देगा। फिर फ़रमाता है कि काफ़िरों का हाल बिल्कुल इसके विपरीत है। ये क़दम-क़दम पर ठोकरें खायेंगे। हदीस में है कि दीनार व दिरहम और कपड़े लत्ते का बन्दा ठोकर खा गया, वह बरबाद हुआ और हलाक हुआ। वह अगर बीमार पड़ जाये तो खुदा करे कि उसे शिफ़ा भी न हो, ऐसों के नेक आमाल भी अकारत (बरबाद) हैं, इसलिये कि ये क़ुरआन व हदीस से नाख़ुश हैं, न उसकी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत उनके दिल में, न उनका मानने का इरादा। पस उनके जो कुछ अच्छे काम थे अल्लाह ने उन्हें भी ग़ारत कर दिया।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ	क्या ये लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, और इन्होंने देखा नहीं कि जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ कि अल्लाह ने उन पर कैसी तबाही डाली, और उन काफ़िरों के लिए भी इसी क़िस्म के मामलात होने को हैं। (10) यह इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों का कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

Maktab E Ashraf

ع ۱۱ ۵

الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ
الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ
قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो लोग काफ़िर हैं वे ऐश कर रहे हैं और इस तरह खाते-पीते हैं जिस तरह चौपाए खाते-पीते हैं, और जहन्नम उन लोगों का ठिकाना है। (12) और बहुत-सी बस्तियाँ ऐसी थीं जो क़ुव्वत में आपकी उस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आपको घर से बेघर कर दिया, हमने उनको हलाक कर दिया। सो उनका कोई मददगार न हुआ। (13)

काफ़िरों का मुकम्मल ख़ात्मा

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उन लोगों ने जो ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं और उसके रसूल को झुठलाते हैं, ज़मीन की सैर नहीं की? जो यह मालूम कर लेते और अपनी आँखों से देख लेते कि उनसे पहले जो उन जैसे थे उनके अन्जाम क्या हुए? किस तरह वे तबाह व बरबाद कर दिये गये। और उनमें से सिर्फ़ इस्लाम व ईमान वाले ही निजात पा सके। काफ़िरों के लिये इसी तरह के अ़ज़ाब आया करते हैं। फिर बयान फ़रमाता है कि मुसलमानों का वाली ख़ुद अल्लाह है और काफ़िर बेवली हैं (यानी उनका कोई यार व मददगार नहीं)। इसी लिये उहुद वाले दिन मुश्रिकों के सरदार अबू सुफ़ियान सख़र बिन हरब ने फ़ख़्र के साथ जब नबी सल्ल. और आपके दोनों ख़लीफ़ाओं के बारे में सवाल किया और कोई जवाब न पाया तो कहने लगा कि ये सब मारे गये। फिर उसे फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने जवाब दिया और फ़रमाया जिनकी ज़िन्दगी तुझे ख़ार (काँटे) की तरह खटकती है, अल्लाह ने उन सब को अपने फ़ज़्ल से ज़िन्दा ही रखा है। अबू सुफ़ियान कहने लगा- सुनो यह दिन बदले का दिन है और लड़ाई तो डोल की तरह है, कभी ऊपर तो कभी नीचे, तुम अपने मक़्तूलीन (जंग में क़त्ल हुए लोगों) में बाज़ ऐसे पाओगे जिनके नाक कान वग़ैरह उनके मरने के बाद काट लिये गये हैं। मैंने ऐसा हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझे कुछ बुरा भी नहीं लगा। फिर उसने फ़ख़्र के तौर पर अश्आ़र पढ़ने शुरू किये। कहने लगाः

اُعْلُ هُبَلْ اُعْلُ هُبَلْ.

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया तुम उसे जवाब क्यों नहीं देते? सहाबा रज़ि. ने पूछा हुज़ूर क्या जवाब दें? फ़रमाया कहोः

اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ.

यानी वह कहता था "हुबल बुत का बोल बाला हुआ" जिसके जवाब में कहा गया सबसे ज़्यादा बुलन्दी वाला और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व करम वाला अल्लाह ही है। अबू सुफ़ियान ने फिर कहाः

Maktab E Ashraf

لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ.

हमारा उज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारा नहीं। इसके जवाब में हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान के मुताबिक़ कहा गयाः

اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَا لَكُمْ.

अल्लाह हमारा मौला है और तुम्हारा मौला कोई नहीं।

फिर अल्लाह तआ़ला ख़बर देते हैं कि ईमान वाले क़ियामत के दिन जन्नत में जायेंगे और कुफ़्र करने वाले दुनिया में अगरचे नफ़ा (फ़ायदा और लाभ) उठायेंगे लेकिन उनका असली ठिकाना जहन्नम है। दुनिया में उनकी ज़िन्दगी का मक़सद सिर्फ़ खाना पीना और पेट भरना है, उसे ये लोग एक जानवर की तरह पूरा कर रहे हैं। जिस तरह वे इधर-उधर मुँह मारकर गीला सूखा पेट में भरने का ही इरादा रखता है इसी तरह यह है कि हलाल व हराम की इसे कुछ तमीज़ नहीं, पेट भरना मक़सूद है। हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन एक आँत में खाता है और काफ़िर सात आँतों में। जज़ा (बदले) वाले दिन अपने इस कुफ़्र की सज़ा में उनके लिये जहन्नम की तरह-तरह की सज़ायें हैं।

फिर मक्का के काफ़िरों को धमकाता और अपने अ़ज़ाब से डराता है कि देखो जो लोग तुमसे बहुत ज़्यादा ताक़त वाले थे, हमने अपने नबियों को झुठलाने और अहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने के सबब उनको तहस-नहस कर दिया तो तुम जो उनसे कमज़ोर और कम ताक़त वाले हो, इस रसूल को झुठलाते और तकलीफ़ें पहुँचाते हो जो ख़ातिमुल-अम्बिया और तमाम रसूलों के सरदार हैं, समझो कि तुम्हारा अन्जाम क्या होगा? माना कि इस नबी-ए-रहमत के मुबारक वजूद की वजह से अगर दुनिया का अ़ज़ाब तुम पर न भी आये तो आख़िरत के ज़बरदस्त अ़ज़ाब तो तुम से दूर नहीं हो सकते।

जब मक्का वालों ने रसूले करीम सल्ल. को निकाला और आप ग़ार (पहाड़ की गुफा) में छुप गये, उस वक़्त मक्का की तरफ़ तवज्जोह की और फ़रमाने लगे ऐ मक्का! तू तमाम शहरों से ज़्यादा ख़ुदा को प्यारा है, और इसी तरह मुझे भी तमाम शहरों से ज़्यादा प्यारा तू है, अगर मुश्रिक लोग मुझे तुझ में से न निकालते तो मैं हरगिज़ न निकलता, पस तमाम हद से गुज़रने वालों में सबसे बड़ा हद से गुज़र जाने वाला वह है जो अल्लाह तआ़ला की हदों से आगे निकल जाये हरमे ख़ुदा में, या अपने क़ातिल के सिवा किसी और को क़त्ल करे, या जाहिलीयत की तरफ़दारी व तास्सुब की बिना पर क़त्ल करे। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. पर यह आयत उतारी।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ○ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ	तो जो लोग अपने रब के वाज़ेह रास्ते पर हों, क्या वे उन शख़्सों की तरह हो सकते हैं जिनकी बदअ़मली उनको अच्छी मालूम होती हो और जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हों? (14) जिस जन्नत का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिसमें ज़रा भी बदलाव न होगा, और बहुत-सी नहरें दूध

Maktab E Ashraf

يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ○	की हैं जिनका ज़ायक़ा ज़रा बदला हुआ न होगा, और बहुत-सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों को बहुत मज़ेदार मालूम होगी, और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहाँ हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी। क्या ऐसे लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और खोलता हुआ पानी उनको पीने को दिया जाएगा, सो वह उनकी अंतड़ियों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (15)

जन्नतुल-फ़िरदौस की बेहतरीन नेमतें

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो शख़्स दीने ख़ुदा में यक़ीन के दर्जे तक पहुँच चुका हो, जिसे दीनी समझ हासिल हो चुकी हो, सही फ़ितरत के साथ ही हिदायत व इल्म भी हो, वह और वह शख़्स जो बुरे आमाल को नेक काम समझ रहा है, जो अपने नफ़्स की इच्छा के पीछे पड़ा हुआ हो, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। जैसे फ़रमान हैः

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى.

यानी यह नहीं हो सकता कि ख़ुदा की 'वही' को हक़ मानने वाला और एक अन्धा बराबर हो जाये। एक और जगह इरशाद हैः

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ. اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ.

यानी जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं हो सकते, जन्नती कामयाब और मुराद को पहुँचे हुए हैं।

फिर जन्नत की सिफ़तें और ख़ूबियाँ बयान फ़रमाता है कि उसमें पानी के चश्मे हैं, ऐसा पानी जो कभी ख़राब नहीं होता, जिसका रंग नहीं बदलता, जो सड़ता नहीं, न बदबू पैदा होती है। बहुत साफ़ मोती जैसा है। कोई गदलापन नहीं, कूड़ा करकट नहीं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नती नहरें मुश्क के पहाड़ों से निकलती हैं। उसमें पानी के अ़लावा दूध की नहरें भी हैं, जिसका मज़ा कभी नहीं बदलता। बहुत सफ़ेद बहुत मीठा और निहायत साफ़-सुथरा और मज़ेदार ज़ायक़ेदार। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि यह दूध के जानवरों के थन से निकला हुआ नहीं बल्कि क़ुदरती है। और नहरें होंगी साफ़ शराब की जो पीने वाले का दिल ख़ुश कर दे, दिमाग़ को खोल दे। जो शराब न तो बदबूदार है न कड़वाहट वाली, न बेज़ायक़ा है। बल्कि देखने में बहुत अच्छी, पीने में बहुत लज़ीज़, निहायत ख़ुशबूदार, जिससे न अ़क़्ल में फ़ुतूर आये न दिमाग़ में चक्कर आयें, न बहकें न भटकें न नशा चढ़े, न अ़क़्ल जाये। हदीस में है कि यह शराब भी किसी के हाथों से तैयार की हुई नहीं बल्कि ख़ुदा के हुक्म से तैयार हुई है। बेहतरीन ज़ायक़े वाली और अच्छे रंग वाली है। जन्नत में शहद की नहरें भी हैं, जो बहुत साफ़ और ख़ुशबूदार है और ज़ायक़ा तो कहना ही क्या। हदीस शरीफ़ में है कि यह शहद भी मक्खियों के पेट से नहीं।

मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि जन्नत में दूध, पानी, शहद और शराब के समन्दर हैं जिनमें से उनकी नहरें और चश्मे जारी होते हैं। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही फ़रमाते हैं। इब्ने मर्दूया की हदीस में है कि ये नहरें जन्नते अ़दन से निकलती हैं। फिर एक हौज़ में आती हैं, वहाँ से दूसरी नहरों के ज़रिये तमाम जन्नतों में जाती हैं। एक और हदीस में है कि जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो जन्नतुल-फ़िरदौस तलब करो, वह सब से बेहतर और सबसे आला जन्नत है, उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं और उसके ऊपर रहमान का अ़र्श है। तबरानी में है कि हज़रत लक़ीत बिन आ़मिर जब वफ़्द में आये थे तो रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया कि जन्नत में क्या कुछ है? आपने फ़रमाया साफ़ शहद की नहरें और बग़ैर नशे की सरदर्द न करने वाली शराब की नहरें और ख़राब न होने वाले दूध की नहरें और ख़राब न होने वाले साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी की नहरें, और तरह-तरह के मेवे अ़जीब व ग़रीब बेमिस्ल और बिल्कुल ताज़ा, और पाक साफ़ बीवियाँ जो नेक लोगों को मिलेंगी और वे ख़ुद भी नेक होंगी। दुनिया की लज़्ज़तों की तरह उनसे लज़्ज़त उठायेंगे। हाँ वहाँ बाल-बच्चे न होंगे। हज़रत अनस फ़रमाते हैं- यह ख़्याल न करना कि जन्नत की नहरें भी दुनिया की नहरों की तरह खुदी हुई ज़मीन में और गड्ढों में बहती हैं, नहीं नहीं क़सम ख़ुदा की वे साफ़ ज़मीन पर बराबर जारी हैं। उनके किनारे किनारे लुअ्लुअ् और मोमियों के ख़ेमे हैं, उनकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है।

फिर फ़रमाता है कि वहाँ उनके लिये हर तरह के मेवे और फल फूल हैं। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद फ़रमायाः

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ.

यानी वहाँ निहायत अमन व अमान के साथ वे हर क़िस्म के मेवे मंगवायेंगे और खायेंगे। एक और आयत में हैः

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ.

दोनों जन्नतों में हर-हर क़िस्म के मेवों के जोड़े हैं।

इन तमाम नेमतों के साथ यह बड़ी नेमत है कि रब ख़ुश है वह अपनी मग़फ़िरत उनके लिये हलाल कर चुका है। उन्हें नवाज़ चुका है और उनसे राज़ी हो चुका है। अब कोई खटका ही नहीं।

जन्नतों की धूम-धाम और नेमतों के बयान के बाद फ़रमाता है कि दूसरी जानिब जहन्नमियों की यह हालत है कि वे जहन्नम के दर्जों और तबक़ों में जल-भुन रहे हैं और वहाँ से छुटकारे की कोई सबील नहीं, और सख़्त प्यास के मौक़े पर वह खोलता हुआ गर्म पानी जो दर असल आग ही है, लेकिन पानी की शक्ल में है, उन्हें पीने के लिये मिलता है, जिसका एक घूँट अन्दर जाते ही आँतें कट जाती हैं। अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे। फिर भला इन दोनों में क्या जोड़? कहाँ जन्नती कहाँ जहन्नमी, कहाँ नेमत कहा ज़हमत, कहाँ और कैसे दोनों बराबर हो सकते हैं?

और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि वे आपकी तरफ़ कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे लोग आपके पास से बाहर जाते हैं तो दूसरे जानने वालों से कहते हैं कि हज़रत ने अभी क्या बात	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ج حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا قف اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ○
وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰهُمْ
تَقْوٰهُمْ ○ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ
تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ج فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ج فَاَنّٰى
لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰهُمْ ○ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ○ ع ٨

फ़रमाई थी? ये वे लोग हैं कि हक़ तआ़ला ने उनके दिलों पर मुहर कर दी है और ये अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। (16) और जो लोग राह पर हैं अल्लाह तआ़ला उनको और ज़्यादा हिदायत देता है, और उनको उनके तक़्वे की तौफ़ीक़ देता है। (17) सो ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े, सो उसकी निशानियाँ तो आ चुकी हैं, तो जब क़ियामत उनके सामने आ खड़ी हुई उस वक़्त उनको समझना कहाँ मयस्सर होगा। (18) तो आप इसका यक़ीन रखिए कि अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, और आप अपनी ख़ता की माफ़ी माँगते रहिए और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औ़रतों के लिए भी। और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे चलने-फिरने और रहने-सहने की ख़बर रखता है। (19)

मुनाफ़िक़ों की बहाने बाज़ियाँ

मुनाफ़िक़ों की बेइल्मी, नासमझी और बेवक़ूफ़ी का बयान हो रहा है कि बावजूद मज्लिस में शरीक होने के, रसूल का कलाम सुन लेने के, पास बैठे हुए होने के उनकी समझ में कुछ नहीं आता। मज्लिस के समापन के बाद इल्म रखने वाले सहाबा से पूछते हैं कि इस वक़्त क्या-क्या कहा? ये हैं जिनके दिलों पर अल्लाह की मुहर लग चुकी है और अपने नफ़्स की ख़्वाहिश (इच्छा) के पीछे पड़ गये हैं। सही समझ और इरादा है ही नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो लोग हिदायत का तसव्वुर करते हैं उन्हें ख़ुद ख़ुदा भी तौफ़ीक़ देता है और हिदायत नसीब फ़रमाता है। फिर उस पर जम जाने की हिम्मत भी अ़ता फ़रमाता है और उनकी हिदायत बढ़ाता रहता है, और हिदायत को उनके दिलों में डालता रहता है।

फिर फ़रमाता है कि ये तो इसी इन्तिज़ार में हैं कि अचानक क़ियामत क़ायम हो जाये, तो ये मालूम कर लें कि उसके क़रीब होने के निशानात तो ज़ाहिर हो चुके हैं। जैसे एक और मौक़े पर इरशाद हुआ हैः

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى........ الخ.

यह डराने वाला है पहले डराने वालों में से, क़रीब आने वाली क़रीब आ चुकी है। एक जगह इरशाद होता हैः

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ.

क़ियामत क़रीब हो गयी और चाँद फट गया। एक और जगह फ़रमायाः

Maktab_e_Ashraf

Maktaba Ashraf

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ.

लोगों का हिसाब क़रीब आ गया फिर भी वे ग़फ़लत में मुँह मोड़े हुए ही हैं।

पस हुज़ूर सल्ल. का नबी होकर दुनिया में आना क़ियामत की निशनियों में से एक निशानी है, इसलिये कि आप रसूलों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं, आपके साथ अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन को कामिल (पूरा) किया और अपनी हुज्जत अपनी मख़्लूक़ पर पूरी की, और हुज़ूर सल्ल. ने क़ियामत की निशानियाँ और उसकी अ़लामतें इस तरह बयान फ़रमा दीं कि आप से पहले के किसी नबी ने इस क़द्र वज़ाहत नहीं की थी। जैसे कि अपनी जगह वो सब बयान हुई हैं। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. का आना क़ियामत की निशानियों में से है, चुनाँचे ख़ुद आपके नाम हदीस में यह आये हैं- नबिय्युत्तौबा, नबिय्युल्-मुल्हिमा, 'हाशिर' जिसके क़दमों पर लोग जमा किये जायें, 'आ़क़िब' जिसके बाद कोई नबी न हो। बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि काफ़िरों को क़ियामत क़ायम हो जाने के बाद नसीहत व इबरत क्या फ़ायदेमन्द होगी? जैसे एक जगह इरशाद है:

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى.

उस दिन नसीहत हासिल कर लेगा, लेकिन उसके लिये नसीहत है कहाँ? यानी आज के दिन की इबरत (सबक़ लेना) बेफ़ायदा है। एक और आयत में है:

وَقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ.

यानी उस वक़्त कहेंगे कि हम क़ुरआन पर ईमान लाये, हालाँकि अब उन्हें दूर मकान पर पहुँच कहाँ हासिल हो सकती है? यानी उनका ईमान उस वक़्त बेफ़ायदा है। फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! जान लो कि अल्लाह ही सच्चा और बरहक़ माबूद है, कोई और नहीं। यह दर असल ख़बर देना है अपने एक तन्हा माबूद होने की, यह तो हो नहीं सकता कि अल्लाह तआ़ला उसके इल्म का हुक्म देता हो। इसी लिये उस पर जोड़ लगाते हुए फ़रमाया- अपने गुनाहों का, और मोमिन मर्द व औ़रत के गुनाहों का इस्तिग़फ़ार करो।

नोटः हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने फ़रमाया है कि अगर नबी इस्तिग़फ़ार करे, अल्लाह से अपनी ख़ताओं की माफ़ी माँगे तो उससे पहले गुनाह होना ज़रूरी नहीं। बात असल में यह है कि ख़ुदा तआ़ला की 'ग़फ़्फ़ारी' (माफ़ करने वाली) की सिफ़त का ज़हूर अम्बिया पर सब से ज़्यादा है और इन सिफ़ात के ज़ाहिर होने से पहले कुछ शुरूआ़ती सामान ज़रूरी हैं जैसे आग जलाने से पहले लकड़ी वग़ैरह, पस अम्बिया ख़ुद को अल्लाह तआ़ला की इस आ़म रहमत यानी 'ग़फ़्फ़ारी' के ज़ाहिर होने का मक़ाम बनाने के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं, हालाँकि उनसे गुनाह नहीं होते। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

एक सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ خَطِيْئَتِيْ وَجَهْلِيْ وَاِسْرَافِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ هَزْلِيْ وَجِدِّيْ وَخَطَئِيْ وَعَمَدِيْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ.

यानी ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताओं को और मेरी जहालत को और मेरे कामों में मुझसे जो ज़्यादती हो गयी हो उसको और हर उस चीज़ को जिसे तू मुझसे बहुत ज़्यादा जानने वाला है, बख़्श। ऐ अल्लाह! मेरे बेइरादा गुनाहों को और मेरे इरादे से किये हुए गुनाहों को और मेरी ख़ताओं को और जो कुछ है मेरे पास है। एक सही हदीस में है कि आप अपनी नमाज़ के आख़िर में यह फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَاقَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ وَمَآ اَسْرَفْتُ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ. اَنْتَ اِلٰهِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ.

यानी ऐ अल्लाह! मैंने जो कुछ गुनाह पहले किये हैं और जो कुछ पीछे किये हैं, और जो छुपाकर किये हैं और जो ज़ाहिर करके किये हैं और जो ज़्यादती की है और जिन्हें तू मुझसे ज़्यादा जानता है, बख़्श दे। तू ही मेरा अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

एक और सही हदीस में है कि आपने फ़रमाया- ऐ लोगो! अपने रब की तरफ़ तौबा करो, पस तहक़ीक़ कि मैं अपने रब की तरफ़ इस्तिग़फ़ार करता हूँ और उसकी तरफ़ तौबा करता हूँ हर-हर दिन सत्तर बार से भी ज़्यादा। मुस्नद अहमद में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और मैंने आपके साथ आपके खाने में से खाना खाया, फिर मैंने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह आपको बख़्शे, आपने फ़रमाया और तुझे भी। तो मैंने कहा क्या मैं आपके लिये इस्तिग़फ़ार (यानी अल्लाह से माफ़ी की तलब) करूँ? आपने फ़रमाया हाँ अपने लिये भी। फिर आपने यह आयत पढ़ी कि अपने गुनाहों और मोमिन मर्दों और ईमान वाली औ़रतों के गुनाहों की बख़्शिश तलब कर। फिर मैंने आपकी दायीं या बायीं हथेली को देखा वहाँ कुछ जगह उभरी हुई थी जिस पर गोया तिल थे। इसे मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसाई वग़ैरह ने भी रिवायत किया है। अबू यअ़ला में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तुम ला इला-ह इल्लल्लाहु का और अस्तग़फ़िरुल्लाह का कहना लाज़िम पकड़ो और इन्हें ख़ूब ज़्यादा कहा करो, इसलिये कि इब्लीस कहता है कि मैंने उनको गुनाहों से हलाक किया और उन्होंने मुझे इन दोनों कलिमों से हलाक किया। मैंने जब यह देखा तो उन्हें इच्छाओं के पीछे लगा दिया, पस वे समझते हैं कि हम हिदायत पर हैं। एक और क़ौल में है कि इब्लीस ने कहा- ख़ुदाया! मुझे तेरी इज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम, जब तक किसी शख़्स की रूह उसके जिस्म में है मैं उसे बहकाता रहूँगा। पस अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- मुझे भी क़सम है अपनी बुज़ुर्गी और बड़ाई की कि मैं भी उन्हें बख़्शता ही रहूँगा जब तक वे मुझसे इस्तिग़फ़ार करते रहें। इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत में और भी बहुत सी हदीसें हैं।

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि तुम्हारा दिन में हेर-फेर और तसर्रुफ़ करना और तुम्हारा रात को जगह पकड़ना अल्लाह तआ़ला जानता है। जैसे एक जगह फ़रमान है:

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰـكُمْ بِالَّیْلِ وَیَعْلَمُ مَاجَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ.

यानी अल्लाह वह है जो तुम्हें रात को फ़ौत कर देता (यानी एक तरह की मौत दे देता) है और दिन को जो कुछ करते हो वह जानता है। एक और आयत में अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला का फ़रमान है:

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ....... الخ.

यानी ज़मीन पर जितने भी चलने वाले हैं उन सब की रोज़ी अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है और वह उनके रहने की जगह और दफ़न होने का मक़ाम जानता है। ये सब बातें स्पष्ट किताब में लिखी हुई हैं। इब्ने जुरैज रह. का यही क़ौल है और इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द करते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि मुराद आख़िरत का ठिकाना है। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि तुम्हारा दुनिया में चलना-फिरना और तुम्हारी क़ब्रों की जगह उसे मालूम है। लेकिन पहला क़ौल ही साफ़ और ज़्यादा वाज़ेह है। वल्लाहु आलम।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝	और जो लोग ईमान वाले हैं वे कहते रहते हैं कि कोई (नई) सूरः क्यों न नाज़िल हुई, सो जिस वक़्त कोई साफ़-साफ़ (मज़मून की) सूरः नाज़िल होती है और (इत्तिफ़ाक़ से) उसमें जिहाद का भी ज़िक्र होता है तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) रोग है आप उन लोगों को देखते हैं कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो। सो (असल यह है कि) जल्द ही उनकी कमबख़्ती आने वाली है। (20) उनकी फ़रमाँबरदारी और बातचीत मालूम है, पस जब सारा काम तैयार ही हो जाता है तो अगर ये लोग अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत ही बेहतर होता। (21) सो अगर तुम किनारा करने वाले रहो तो आया तुमको यह अन्देशा भी है कि तुम दुनिया में फ़साद मचा दो, और आपस में ताल्लुक़ तोड़ दो। (22) ये वे लोग हैं जिनको ख़ुदा ने अपनी रहमत से दूर कर दिया, फिर उनको बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया। (23)

दिलों के रोगी

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि मोमिन तो जिहाद के हुक्म की तमन्ना करते हैं, फिर जब अल्लाह तआ़ला जिहाद को फ़र्ज़ कर देता है और उसका हुक्म नाज़िल फ़रमा देता है तो उससे अक्सर लोग हट जाते हैं। जैसे एक दूसरी आयत में हैः

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ......... الخ.

यानी क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिनसे कहा गया कि तुम अपने हाथों को रोक लो और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात अदा करते रहो, फिर जो उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उनमें से एक फ़रीक़ लोगों से इस तरह डरने लगा जैसे अल्लाह का डर हो, बल्कि उससे भी ज़्यादा, और कहने लगे ऐ हमारे रब! हम पर तूने जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया। तूने हमको क़रीब की मुद्दत तक ढील क्यों न दी? आप (सल्ल.) उनसे कहिये कि दुनिया की दौलत और फ़ायदा बहुत ही कम है और परहेज़गारों के लिये आख़िरत ही बहुत बेहतर है, और तुम पर ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जायेगा। पस यहाँ भी फ़रमाता है कि ईमान वाले तो जिहाद के हुक्मों की आयत के नाज़िल होने की तमन्ना करते हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ लोग जब इन आयतों को सुनते हैं तो अपनी घबराहट, बोखलाहट और नामर्दी के सबब आँखें फाड़-फाड़कर इस तरह आपको देखने लगते हैं

जैसे मौत की बेहोशी वाला।

फिर उन्हें मर्दे मैदान (बहादुर व हिम्मत वाला) बनने की रग़बत दिलाते हुए फ़रमाता है कि उनके हक़ में बेहतर तो यह होता कि ये सुनते, मानते और जब मौक़ा आ जाता, लड़ाई का बाज़ार गर्म होता तो नेक-नीयती के साथ जिहाद करके अपने ख़ुलूस का सुबूत देते। फिर फ़रमाया कि ऐसों पर ख़ुदा की फटकार है और ये रब की तरफ़ से बहरे और अन्धे हैं। इसमें ज़मीन में फ़साद करने (ख़राबी और बिगाड़ फैलाने) की उमूमन और रिश्ते तोड़ने की ख़ुसूसन मनाही है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में इस्लाह (सुधार) और सिला-रहमी करने (रिश्ते जोड़ने) की हिदायत की है और इनका हुक्म फ़रमाया है। सिला-रहमी के मायने हैं रिश्तेदारों के साथ मामलात में अच्छा सुलूक व एहसान करना और उनकी माली मुश्किलों में उनके काम आना। इस बारे में बहुत सी सही और हसन हदीसें मौजूद हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो रहम खड़ा हुआ और रहमान से चिमट गया। उससे पूछा क्या बात है? उसने कहा यह मक़ाम है टूटने से तेरी पनाह में आने का, इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया क्या तू इससे राज़ी नहीं कि तेरे मिलाने वाले को मैं मिला दूँ और तेरे काटने वाले को मैं काट दूँ? उसने कहा हाँ इस पर मैं बहुत ख़ुश हूँ। इस हदीस को बयान फ़रमाकर फिर हदीस के रावी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लोः

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ.........الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 22 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) एक और सनद से है कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह में है कि कोई गुनाह इतना बड़ा इतना बुरा नहीं जिसकी बहुत जल्दी सज़ा दुनिया में और फिर उसकी बुराई आख़िरत में बहुत बड़ी पहुँचती हो, सरकशी, बग़ावत और रिश्ता काटने के मुक़ाबले में। मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स चाहे कि उसकी उम्र बड़ी हो और रोज़ी बढ़े वह सिला-रहमी करे। एक और हदीस में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा- मेरे रिश्तेदार मुझसे ताल्लुक़ात तोड़ते रहते हैं और मैं उन्हें माफ़ करता रहता हूँ। वे मुझ पर ज़ुल्म करते हैं और मैं उनके साथ भलाई करता हूँ और वे मेरे साथ बुराईयाँ करते रहते हैं तो क्या मैं उनसे बदला न लूँ? आपने फ़रमाया- नहीं! अगर ऐसा करोगे तो तुम सब के सब छोड़ दिये जाओगे, तुम सिला-रहमी पर ही रहो और याद रखो कि जब तक तुम इस पर बाक़ी रहोगे अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे साथ हर वक़्त मदद करने वाला रहेगा। बुख़ारी वग़ैरह में है, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि सिला-रहमी (रिश्ता जोड़ना और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) अ़र्श के साथ लटकी हुई है। वास्तव में सिला-रहमी करने वाला वह नहीं जो किसी एहसान के बदले एहसान करे, बल्कि सही मायने में रिश्ते नाते मिलाने वाला वह है कि अगरचे तू उसे काटता जाये वह तुझसे मिलाता जाये। मुस्नद अहमद में है कि सिला-रहमी क़ियामत के दिन रखी जायेगी, उसकी रानें होंगी हिरन की रानों की तरह, वह बहुत साफ़ और तेज़ ज़बान से बोलेगी। पस वह काट दिया जायेगा जो उसे काटता था, और वह मिलाया जायेगा जो उसे मिलाता था (इसकी असल कैफ़ियत अल्लाह तआ़ला ही जानता है, हम पर ईमान लाना लाज़िम है)।

मुस्नद की एक और हदीस में है कि रहम करने वालों पर ख़ुदा भी रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। रहम रहमान की तरफ़ से है। उसके मिलाने वालों को ख़ुदा मिलाता है और उसके तोड़ने वाले को ख़ुद ख़ुदा तोड़ देता है। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम

Maktab E Ashraf

तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि. की बीमारी का हाल पूछने के लिये लोग गये तो आप फ़रमाने लगे- तुमने सिला-रहमी की है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है- मैं रहमान हूँ और रहम का नाम मैंने अपने नाम पर रखा है, इसे जोड़ने वाले को मैं जोड़ूँगा और इसके तोड़ने वाले को मैं तोड़ दूँगा। एक और हदीस में है, आप फ़रमाते हैं कि रूहें मिली-जुली हैं, जो पहले दिन में मेल कर चुकी हैं वे यहाँ मिलकर रहती हैं और जिनमें वहाँ नफ़रत रही है यहाँ भी उनमें दूरी रहती है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब ज़बानी दावे बढ़ जायें, अ़मल घट जायें, ज़बानी मेल-जोल हो, दिली बुग़्ज़ व दुश्मनी हो, रिश्तेदार रिश्तेदार से बदसुलूकी करे उस वक़्त ऐसे लोगों पर अल्लाह की लानत नाज़िल होती है और उनके कान बहरे और आँखें अन्धी कर दी जाती हैं। इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं। वल्लाहु आलम।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ
اَقْفَالُهَا ○ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى
اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى
الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۭ وَاَمْلٰى لَهُمْ ○ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ
سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِسْرَارَهُمْ ○ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ○ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ
وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ○

तो क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते? या दिलों पर ताले लग रहे हैं? (24) जो लोग पीठ फेरकर हट गए इसके बाद कि सीधा रास्ता उनको साफ़ मालूम हो गया, शैतान ने उनको चकमा दिया है और उनको दूर-दूर की सुझाई है। (25) यह इस सबब से हुआ कि उन लोगों ने ऐसे लोगों से जो कि ख़ुदा के उतारे हुए अहकाम को नापसन्द करते हैं, यह कहा कि बाज़ी बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे, और अल्लाह तआ़ला उनके ख़ुफ़िया बातें करने को ख़ूब जानता है। (26) सो उनका क्या हाल होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ करते होंगे और उनके मुँहों पर और पीठों पर मारते जाते होंगे। (27) यह इस सबब से कि जो तरीक़ा ख़ुदा की नाराज़ी को वाजिब करने वाला था ये उसी पर चले और उसकी रिज़ा से नफ़रत करते रहे, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनके सब आमाल ज़ाया और बरबाद कर दिए। (28)

दीन इस्लाम से फिर जाना और उसकी इबरत-नाक सज़ा

अल्लाह तआ़ला अपने पाक कलाम में ग़ौर व फ़िक्र करने, सोचने समझने की हिदायत फ़रमाता है और इससे बेपरवाही व मुँह मोड़ने से रोकता है। इरशाद है कि ग़ौर व फ़िक्र (यानी इसमें सोचना और इसमें ध्यान लगाना) तो कहाँ उनके दिलों पर तो ताले पड़े हुए हैं, कोई कलाम उनमें असर ही नहीं करता, असर तो तब करे जब उनमें जाये, और जाये कहाँ से जबकि जाने का रास्ता ही न पाये। इब्ने जरीर में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. इस आयत की तिलावत फ़रमा रहे थे, एक यमन के नौजवान ने कहा कि बल्कि उन पर

उनके ताले हैं जब तक ख़ुदा न खोले और अलग न करे। पस हज़रत उमर रज़ि. के दिल में यह बात रही यहाँ तक कि अपनी ख़िलाफ़त के बारे में उससे मदद लेते रहे (यानी उस यमनी नौजवान से मश्विरा वग़ैरह करते रहे)।

फिर फ़रमाता है कि जो लोग हिदायत ज़ाहिर कर चुकने के बाद ईमान से अलग हो गये और कुफ़्र की तरफ़ लौट गये, दर असल शैतान ने इस बुरे काम को उनकी निगाहों में अच्छा बना दिया है और उन्हें धोखे में डाल रखा है। दर असल उनका यह कुफ़्र सज़ा है उनके उस निफ़ाक़ (दोगले पन) की जो उनके दिल में था। जिसकी वजह से वे ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपना बातिन रखते थे। काफ़िरों से मिल-जुलकर उन्हें अपना करने के लिये उनसे बातिन में बातिल (ग़ैर-हक़) पर मुवाफ़क़त करके कहते थे कि घबराओ नहीं, अभी अभी हम भी कुछ चीज़ों में तुम्हारा साथ देंगे। लेकिन ये बातें उस ख़ुदा से तो छुप नहीं सकतीं जो ज़ाहिरी व बातिनी हालात से ख़ूब वाक़िफ़ हो। जो रातों के वक़्त की पोशीदा और राज़ की बातें भी सुनता हो। जिसके इल्म की इन्तिहा न हो।

फिर फ़रमाता है- उनका क्या हाल होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करने को आयेंगे और उनकी रूहें जिस्मों में छुपती फिरेंगी और फ़रिश्ते जबरन व ग़ुस्से से, डाँट-डपट और मार-पीट से उन्हें बाहर निकालेंगे। जैसा कि अल्लाह का इरशाद है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ..... الخ.

यानी काश कि तू देखता जबकि उन काफ़िरों की रूहें फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हुए उनके मुँह पर तमाँचे और उनकी पीठ पर मुक्के मारते हैं.......। एक और आयत में है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ........ الخ.

यानी काश कि तू देखता जबकि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होते हैं और फ़रिश्ते अपने हाथ उनकी तरफ़ मारने के लिये फैलाये हुए होते हैं और कहते हैं कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब दिये जायेंगे, इसलिये कि तुम ख़ुदा के ज़िम्मे नाहक़ कहा करते थे और उसकी आयतों के पीछे लगे हुए थे जिनसे ख़ुदा नाख़ुश हो, और ख़ुदा की रज़ा से कराहियत करते थे। पस उनके आमाल अकारत (बरबाद) हो गये।

जिन लोगों के दिल में रोग है क्या ये लोग यह ख़्याल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला कभी उनकी दिली दुश्मनियों को ज़ाहिर न करेगा? (29) और हम अगर चाहते तो आपको उनका पूरा पता बता देते, सो आप उनको हुलिये से पहचान लेते, और आप उनको बात करने के अन्दाज़ से ज़रूर पहचान लेंगे। और अल्लाह तआ़ला तुम सबके आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम सब के आमाल की आज़माईश करेंगे, ताकि हम उन लोगों को	اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ○ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ○ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ

मालूम कर लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और जो साबित-क़दम "यानी अडिग" रहने वाले हैं। (31) और ताकि तुम्हारी हालतों की जाँच कर लें।	الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَاْ اَخْبَارَكُمْ ۝

Maktab E Ashraf

आज़माईश और इम्तिहान

यानी क्या मुनाफ़िक़ों का ख़्याल है कि उनकी मक्कारी और अय्यारी का इज़हार अल्लाह तआ़ला मुसलमानों पर करेगा ही नहीं? यह बिल्कुल ग़लत ख़्याल है। अल्लाह तआ़ला उनका फ़रेब और मक्कारी इस तरह वाज़ेह कर देगा कि हर अ़क़्लमन्द उन्हें पहचान ले और उनके अन्दर की बुराई से बच सके। उनके बहुत कुछ हालात सूरः बराअत (सूरः तौबा) में बयान किये गये और उनके निफ़ाक़ की बहुत सी ख़स्लतों का ज़िक्र वहाँ किया गया, यहाँ तक कि इस सूरत का दूसरा नाम ही 'फ़ाज़िहा' रख दिया गया यानी मुनाफ़िक़ों को फ़ज़ीहत करने वाली। 'अज़ग़ान' बहुवचन है 'ज़ग़न' का, ज़ग़न कहते हैं दिली हसद व बुग़ज़ को। इसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी! अगर हम चाहें तो उनके वजूद तुम्हें दिखा दें, पस तुम उन्हें खुल्लम-खुल्ला जान जाओ। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ऐसा नहीं किया, उन तमाम मुनाफ़िक़ों को बतला नहीं दिया, ताकि उसकी मख़्लूक़ पर पर्दा पड़ा रहे, उनके ऐब छुपे रहें, हर एक निगाह में उनकी ज़िल्लत न हो। इस्लामी मामलात ज़ाहिरी हालात पर रहें और बातिनी हिसाब उसी ज़ाहिर व बातिन को जानने वाले (यानी अल्लाह) के हाथ में रहे। लेकिन हाँ तुम तो उनकी बातचीत के तर्ज़ और कलाम के ढंग से ही साफ़ पहचान लोगे।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी बात और छुपाने की चीज़ को छुपाता है अल्लाह तआ़ला उसे उसके चेहरे और उसकी ज़बान पर ज़ाहिर कर देता है। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स किसी राज़ को पर्दे में रखता है अल्लाह तआ़ला उसे उस पर ज़ाहिर कर देता है, वह अच्छा है तो और बुरा है तो।

हमने शरह सही बुख़ारी के शुरू में अ़मली और एतिक़ादी निफ़ाक़ का बयान पूरी तरह कर दिया है जिसके दोहराने की यहाँ ज़रूरत नहीं। हदीस में मुनाफ़िक़ों की एक जमाअ़त की निशानदेही आ चुकी है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने एक ख़ुतबे में अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना के बाद फ़रमाया- तुममें बाज़ लोग मुनाफ़िक़ हैं, पस जिसका मैं नाम लूँ वह खड़ा हो जाये। फिर फ़रमाया ऐ फ़ुलाँ! खड़ा हो जा, ऐ फ़ुलाँ खड़ा हो जा, यहाँ तक कि छत्तीस लोगों के नाम लिये। फिर फ़रमाया- तुम में या तुम में से मुनाफ़िक़ हैं। पस अल्लाह से डरो, उसके बाद उन लोगों में से एक के सामने से हज़रत उमर रज़ि. गुज़रे, वह उस वक़्त कपड़े से अपना मुँह लपेटे हुए थे। आप उसे ख़ूब जानते थे, पूछा कि क्या है? उसने हुज़ूर सल्ल. की ऊपर वाली हदीस बयान की तो आपने फ़रमाया ख़ुदा तुझे ग़ारत करे।

फिर फ़रमाता है कि हम हुक्म अहकाम देकर, रोक-टोक करके तुम्हें ख़ूब आज़मा कर मालूम कर लेंगे कि तुम में से मुजाहिद कौन हैं और सब्र करने वाले कौन हैं? और हम तुम्हारे अहवाल आज़मायेंगे। यह तो हर मुसलमान जानता है कि ज़ाहिर होने से पहले ही उस अ़ल्लामुल-ग़ुयूब (तमाम छुपी और ग़ायब चीज़ों के जानने वाले यानी अल्लाह तआ़ला) को हर चीज़ और हर शख़्स और उसके आमाल मालूम हैं।

यहाँ मतलब यह है कि दुनिया के सामने खोल दे और उस हाल को देख ले और दिखा दे। इसी लिये हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस जैसे मौक़े पर "लि-नअ़्ल-म" के मायने करते थे "लि-नरा", यानी ताकि हम देख लें।

Maktaba Ashraf

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ۗ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ○ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ○	बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, इसके बाद कि उनको रास्ता नज़र आ चुका था, ये लोग अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुँचा सकेंगे, और अल्लाह उनकी कोशिशों को मिटा देगा। (32) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो, और (काफ़िरों की तरह अल्लाह और रसूल की मुख़ालफ़त करके) अपने आमाल को बरबाद मत करो। (33) बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वे काफ़िर ही रहकर मर गए, ख़ुदा तआ़ला उनको कभी न बख़्शेगा। (34) सो तुम हिम्मत मत हारो और सुलह की तरफ़ मत बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे साथ है और तुम्हारे आमाल में हरगिज़ कमी न करेगा। (35)

रसूलुल्लाह सल्ल. से मुख़ालफ़त का सबक़ लेने वाला अन्जाम

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ख़बर देता है कि कुफ़्र करने वाले ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह होते थे और रसूल की मुख़ालफ़त करने वाले हिदायत के होते हुए गुमराह होने वाले ख़ुदा का तो कुछ नहीं बिगाड़ते बल्कि अपना ही कुछ खोते हैं। कल क़ियामत के दिन ये ख़ाली हाथ होंगे, एक नेकी भी इनके पास न होगी। जिस तरह नेकियाँ गुनाहों को मिटा देती हैं इसी तरह उनके बदतरीन जुर्म व गुनाह ने नेकियाँ बरबाद कर दीं। इमाम मुहम्मद बिन नसर मरूज़ी रह. अपनी "किताबुस्सलात" में हदीस लाये हैं कि सहाबा रज़ि. का ख़्याल था कि ला इला-ह इल्लल्लाहु के साथ कोई गुनाह नुक़सान नहीं देता जैसा कि शिर्क के साथ कोई नेकी नफ़ा नहीं देती, इस पर यह आयत नाज़िल हुईः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ....... الخ.

(यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) अब सहाबा किराम डरने लगे कि गुनाह नेकियों को बातिल न कर दें। दूसरी सनद से रिवायत है कि सहाबा किराम का ख़्याल था कि हर नेकी यक़ीनन मक़बूल है, यहाँ तक कि यह आयत उतरी तो कहने लगे कि हमारे आमाल को बरबाद करने वाली चीज़ गुनाहे

Maktab E Ashraf

कबीरा और बुराईयाँ हैं। फिर उसके बाद यह आयत नाज़िल हुईः

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ...... الخ.

(यानी सूरः निसा की आयत 48, जिसमें कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला शिर्क करने वाले को तो न बख़्शेगा, उसके अ़लावा जिसे चाहेगा माफ़ फ़रमा देगा)

अब इस बारे में कोई बात कहने से रुक गये और कबीरा (बड़े) गुनाह और बदकारियाँ करने वाले पर उन्हें ख़ौफ़ रहता था और उनसे बचने वाले के लिये उम्मीद रहती थी। उसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने ईमान वाले बन्दों को अपनी और अपने नबी की इताअ़त का हुक्म देता है, जो उनके लिये दुनिया और आख़िरत की भलाई और नेकबख़्ती की चीज़ है, और मुर्तद होने (इस्लाम से फिर जाने) से रोक रहा है जो आमाल को ग़ारत करने वाली चीज़ है।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह से कुफ़्र करने वाले, अल्लाह की राह से रोकने वाले और कुफ़्र में मरने वाले अल्लाह तआ़ला की बख़्शिश से मेहरूम हैं। जैसे फ़रमान है कि ख़ुदा शिर्क को नहीं बख़्शता। उसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ मेरे मोमिन बन्दो तुम दुश्मनों के मुक़ाबले से आ़जिज़ी का इज़हार न करो और उनसे दबकर सुलह की दावत न दो, हालाँकि क़ुव्वत व ताक़त में, ज़ोर व ग़लबे में, आदमियों की संख्या और असबाब में तुम क़वी (मज़बूत और ताक़तवर) हो। हाँ जबकि काफ़िर क़ुव्वत में, संख्या में, असबाब (सामान और हथियारों) में तुमसे ज़्यादा हों और मुसलमानों का इमाम बेहतराई और मस्लेहत सुलह ही में देखे तो ऐसे वक़्त बेशक सुलह की तरफ़ झुकना जायज़ है, जैसे कि ख़ुद रसूले करीम सल्ल. ने हुदैबिया के मौक़े पर किया, जबकि मक्का के मुश्रिकों ने आपको मक्का जाने से रोका तो आपने दस साल तक लड़ाई बन्द रखने और सुलह क़याम रखने पर समझौता कर लिया।

फिर ईमान वालों को बहुत बड़ी बशारत व ख़ुशख़बरी सुनाता है कि अल्लाह तुम्हारे साथ है इस वजह से नुसरत व फ़तह तुम्हारी ही है। तुम यक़ीन मानो कि तुम्हारी छोटी से छोटी नेकी भी वह ज़ाया न करेगा बल्कि उसका पूरा-पूरा अज्र व सवाब तुम्हें इनायत फ़रमायेगा। वल्लाहु आलम।

إِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَإِنْ
تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ أُجُوْرَكُمْ وَلَا
يَسْئَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ○ إِنْ يَّسْئَلْكُمُوْهَا
فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ○
هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ
يَّبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ وَاللّٰهُ

दुनियावी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ एक खेल-तमाशा है, और अगर तुम ईमान और तक़्वा इख़्तियार करो तो अल्लाह तुम को तुम्हारे अज्र अ़ता करेगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर तुम से तुम्हारे माल तलब करे फिर इन्तिहाई दर्जे तक तुम से तलब करता रहे तो तुम कन्जूसी करने लगो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारी नागवारी ज़ाहिर कर दे। (37) हाँ! तुम लोग ऐसे हो कि तुम को अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, सो बाज़े तुम में से वे हैं जो कन्जूसी करते हैं। और जो शख़्स कन्जूसी करता है तो वह ख़ुद

الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا
يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا
اَمْثَالَكُمْ ۝ ع ٨

अपने से कन्जूसी करता है। और अल्लाह तो किसी का मोहताज नहीं, और तुम सब मोहताज हो। और अगर तुम नाफ़रमानी करोगे तो ख़ुदा तआ़ला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम पैदा कर देगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (38)

दुनिया की फ़ानी ज़िन्दगी

दुनिया की बेहैसियती और ज़िल्लत (पस्ती) बयान हो रही है कि इससे सिवाय खेल-तमाशे और कुछ हासिल नहीं। हाँ जो काम ख़ुदा के लिये किये जायें वे बाक़ी रह जाते हैं। फिर फरमाता है कि ख़ुदा की ज़ात बेपरवाह है, तुम्हारे अच्छे काम तुम्हारे ही नफ़े के लिये हैं। वह तुम्हारे मालों का भूखा नहीं, उसने तुम्हें जो ख़ैर-ख़ैरात का हुक्म दिया है वह सिर्फ़ इसलिये कि तुम्हारे ही ग़रीबों व फ़क़ीरों की परवरिश हो और फिर तुम आख़िरत में सवाब के हक़दार बनो।

फिर इनसान के बुख़्ल (कन्जूसी) और बुख़्ल के बाद दिली कीने के ज़ाहिर होने का हाल बयान फ़रमाया। माल के निकालने में यह तो होता ही है कि माल इनसान को महबूब होता है और उसका निकालना उस पर भारी गुज़रता है। फिर बख़ीलों की बख़ीली के वबाल का ज़िक्र हो रहा है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से माल को रोकना दर असल अपना ही नुक़सान करना है, क्योंकि बख़ीली (कन्जूसी) का वबाल उस पर पड़ेगा, सदक़े की फ़ज़ीलत और उसके अज्र से मेहरूम भी रहेगा। अल्लाह सबसे ग़नी है और सब उसके दर के भिखारी हैं। ग़िना (यानी सब से बेपरवाही) ख़ुदा तआ़ला की एक लाज़िमी सिफ़त है जो उससे कभी जुदा नहीं होती, और एहतियाज (ज़रूरत मन्द होना) मख़्लूक़ की एक लाज़िमी सिफ़त है, यानी कोई भी मख़्लूक़ हो उसकी बहुत सारी ज़रूरतें हैं। न ये कभी उससे अलग हों न वे इससे।

फिर फ़रमाता है कि अगर तुम उसकी इताअ़त से मुँह फेरने वाले हो गये (यानी उसके नाफ़रमान बन गये), उसकी शरीअ़त की ताबेदारी छोड़ दी तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे अ़लावा और दूसरी क़ौम पैदा कर देगा, जो तुम जैसी न होगी, बल्कि वे सुनने और मानने वाले, हुक्म का पालन करने वाले होंगे। इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा रज़ि. ने पूछा- हुज़ूर! ये कौन लोग हैं जो हमारे बदले लाये जाते और हम जैसे न होते? आपने अपना हाथ हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के कन्धे पर रखकर फ़रमाया- यह और इनकी क़ौम। अगर दीन सुरैया (आसमान में एक सितारा) के पास भी होता तो उसे फ़ारस के लोग (यानी अ़रब से बाहर के, या ख़ास तौर पर ईरान व अफ़ग़ानिस्तान का वह हिस्सा जो उस वक़्त फ़ारस की हुकूमत में दाख़िल था मुराद हो सकता है) ले आते। इसके एक रावी मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़न्जी के बारे में हदीस के बाज़ इमामों ने कुछ कलाम किया है। वल्लाहु आलम।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मुहम्मद की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

सूरः फ़तह

सूरः फ़तह मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

बुख़ारी, मुस्लिम और मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुफ़ज़्ज़ल रज़ि. से रिवायत है कि फ़त्हे मक्का वाले साल सफ़र के दौरान में राह चलते रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी ऊँटनी पर ही सूरः फ़तह की तिलावत की, आप बार-बार उम्दा आवाज़ से पढ़ रहे थे। अगर मुझे लोगों के जमा हो जाने का डर न होता तो मैं आपकी तिलावत की तरह ही तिलावत करके तुम्हें सुना देता।

बेशक हमने आपको एक खुल्लम-खुल्ला फ़तह दी (1) ताकि अल्लाह तआ़ला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ माफ़ फ़रमा दे, और आप पर अपने एहसानों को पूरा कर दे, और आपको सीधे रास्ते पर ले चले। (2) और अल्लाह आपको ऐसा ग़लबा दे जिसमें इज़्ज़त ही इज़्ज़त हो। (3)	اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًاOلِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًاOلا وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًاO

स्पष्ट और खुली फ़तह

ज़ीक़ादा (इस्लामी साल का ग्यारहवाँ महीना) सन् 2 हिजरी में रसूलुल्लाह सल्ल. उमरा अदा करने के इरादे से मदीना से मक्का को चले, लेकिन रास्ते में मक्का के मुश्रिकों ने रोक दिया और मस्जिदे हराम (काबे की मस्जिद) की ज़ियारत से बाधा और रुकावट हुए। फिर वे लोग सुलह की तरफ़ माईल हुए और हुज़ूर सल्ल. ने भी इस बात पर कि आप अगले साल उमरा अदा करेंगे उनसे सुलह कर ली, जिसे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की एक बड़ी जमाअ़त पसन्द न करती थी, जिसमें क़ाबिले ज़िक्र उमर फ़ारूक़ का इख़्तिलाफ़ है, आपने वहीं अपनी क़ुरबानियाँ कीं और लौट गये, जिसका पूरा वाक़िआ़ अभी इसी सूरत की तफ़सीर में आ रहा है। इन्शा-अल्लाह

वापस लौटते हुए रास्ते में यह मुबारक सूरत आप पर नाज़िल हुई जिसमें इस वाक़िए का ज़िक्र है और इस सुलह को नतीजे और परिणाम के एतिबार से फ़तह कहा गया। हज़रत इब्ने मसऊद वग़ैरह से मरवी है कि तुम तो फ़तह फ़त्हे-मक्का को कहते हो लेकिन हम सुलह हुदैबिया को फ़तह जानते थे। हज़रत जाबिर रज़ि. से भी यही मरवी है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत बरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि तुम फ़त्हे-मक्का को फ़तह शुमार करते हो और हम बैअ़ते-रिज़्वान के वाक़िए हुदैबिया को फ़तह गिनते हैं। हम चौदह सौ आदमी रसूले ख़ुदा सल्ल. के साथ उस मौक़े पर थे। हुदैबिया नाम का एक कुआँ था, हमने उसमें से पानी

Mahtab E Ashraf

अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ लेना शुरू किया, थोड़ी देर में पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया, एक क़तरा भी न बचा, आख़िर पानी के न होने की शिकायत हुज़ूर सल्ल. के कानों तक पहुँची, आप उस कुएँ के पास आये उसके किनारे पर बैठ गये, पानी का बरतन मंगवाकर वुज़ू किया, जिसमें कुल्ली भी की, फिर दुआ की और वह पानी उस कुएँ में डाल दिया। थोड़ी देर बाद जो हमने देखा तो वह पानी से ऊपर तक भरा हुआ था। हमने भी पिया, जानवरों ने भी पिया, अपनी हाजतें पूरी कीं और सारे बरतन भर लिये।

मुस्नद अहमद में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से मन्क़ूल है कि एक सफ़र में मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ था, तीन मर्तबा मैंने आप से कुछ पूछा, आपने कोई जवाब न दिया। अब तो मुझे इस बात पर सख़्त शर्मिन्दगी और अफ़सोस हुआ कि मैंने हुज़ूर सल्ल. को तकलीफ़ दी, आप जवाब देना नहीं चाहते और मैं ख़्वाह-मख़्वाह सर होता रहा। फिर मुझे डर लगने लगा कि मेरी इस बेअदबी पर मेरे बारे में कोई आसमानी वही न नाज़िल हो। चुनाँचे मैंने अपनी सवारी को तेज़ किया और आगे निकल गया। थोड़ी देर गुज़री थी कि मैंने सुना, एक आवाज़ देने वाला मेरे नाम की आवाज़ लगा रहा है, मैंने जवाब दिया तो उसने कहा चलो तुम्हें हुज़ूर याद फ़रमाते हैं। अब तो मैं सन्नाटे में आ गया कि ज़रूर कोई 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम और हुक्म) नाज़िल हुई और मैं हलाक हुआ। जल्दी-जल्दी हाज़िरे हुज़ूर हुआ तो आपने फ़रमाया- पिछली रात मुझ पर एक सूरत उतरी है जो मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब (प्यारी) है। फिर आपने "इन्ना फ़तह्ना........" (यानी सूरः फ़तह) की तिलावत की। यह हदीस बुख़ारी, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुदैबिया से लौटते हुए "लि-यग़फ़ि-र लकल्लाहु...." (यानी सूरः फ़तह की नम्बर दो आयत) नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने फ़रमाया मुझ पर एक आयत उतारी गयी है जो मुझे रू-ए-ज़मीन से ज़्यादा महबूब है। फिर आपने यह आयत पढ़ी। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आपको मुबारकबाद देने लगे और कहा हुज़ूर! यह तो हुई आपके लिये, हमारे लिये क्या है? इस पर यह आयतः

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ............الخ

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 5) नाज़िल हुई। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत मजमा बिन हारिसा अन्सारी रज़ि. जो क़ुरआन के क़ारी थे, फ़रमाते हैं कि हुदैबिया से हम वापस आ रहे थे जो मैंने देखा कि लोग ऊँटों को भगाये लिये जा रहे हैं। पूछा क्या बात है? मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल. पर कोई वही नाज़िल हुई है। हम लोग भी अपने ऊँटों को दौड़ाते हुए सबके साथ पहुँचे, आप उस वक़्त कुराउल-ग़मीम (एक स्थान का नाम) में थे। जब सब जमा हो गये तो आपने यह सूरत तिलावत करके सुनाई। एक सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह! क्या यह फ़तह है? आपने फ़रमाया हाँ क़सम उसकी जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, यह फ़तह है। ख़ैबर की तक़सीम सिर्फ़ उन्हीं पर की गयी जो हुदैबिया में मौजूद थे, अट्ठारह हिस्से बनाये गये, तमाम लश्कर पन्द्रह सौ का था, जिसमें तीन सौ घोड़े सवार थे, पस सवार को दोहरा हिस्सा मिला और पैदल को एक। (अबू दाऊद वग़ैरह)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुदैबिया से आते हुए एक जगह रात गुज़ारने के लिये हम उतरे और सो गये तो ऐसे सोये कि सूरज निकलने के बाद जागे, देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. भी सोये हुए हैं। हमने कहा आपको जगाना चाहिये, इतने में आप ख़ुद जाग गये और फ़रमाने लगे- जो कुछ किया करते थे करो, और इसी तरह करे जो सो जाये या भूल जाये। इसी सफ़र में हुज़ूर सल्ल. की ऊँटनी

Maktab E Ashraf

कहीं गुम हो गयी, हम ढूँढने को निकले तो देखा कि एक पेड़ में नकील अटक गयी है और वह रुकी खड़ी है। उसे पकड़ कर हुज़ूर के पास लाये, आप सवार हुए और हमने कूच किया। अचानक रास्ते में ही आप पर वही आने लगी- वही के वक़्त आप पर दिक़्क़त होती थी, जब वही हट गयी तो आपने हमें बतलाया कि आप पर सूरः फ़तह उतरी है। (अबू दाऊद, नसाई व मुस्नद वग़ैरह)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तहज्जुद की नफ़िलों वग़ैरह में इस क़द्र वक़्त लगाते कि पैरों पर वरम चढ़ जाता। आप से कहा गया कि क्या अल्लाह तआ़ला ने आपके अगले पिछले गुनाह माफ़ नहीं फ़रमा दिये? (यानी फिर आप इस क़द्र मशक़्क़त और तकलीफ़ क्यों उठाते हैं?) आपने जवाब दिया क्या फिर मैं ख़ुदा का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक और रिवायत में है कि यह पूछने वाली हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं। (मुस्लिम) पस 'मुबीन' से मुराद खुली स्पष्ट साफ़ ज़ाहिर है, और 'फ़तह' से मुराद सुलह हुदैबिया है, जिसकी वजह से बड़ी ख़ैर व बरकत हासिल हुई। लोगों में अमन व अमान हुआ, मोमिनों और काफ़िरों में बोल-चाल शुरू हो गयी, इल्म और ईमान के फैलाने का मौक़ा मिला। आपके अगले पिछले गुनाहों की माफ़ी यह आपका इम्तियाज़ (ख़ुसूसियत) है, जिसमें कोई और आपका शरीक नहीं। हाँ बाज़ आ़माल के सवाब में ये अलफ़ाज़ औरों के लिये भी आये हैं। इसमें हुज़ूर सल्ल. की बहुत बड़ी शराफ़त व अ़ज़्मत (सम्मान व बड़ाई) है, आप अपने तमाम कामों में भलाई, दीन पर जमाव और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी पर क़ायम थे, ऐसे कि अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई भी ऐसा न था। आप तमाम इनसानों में सबसे ज़्यादा कामिल इनसान और दुनिया व आख़िरत में तमाम औलादे आदम के सरदार और रहबर हैं। और चूँकि हुज़ूरे पाक सबसे ज़्यादा ख़ुदा के फ़रमाँबरदार और सबसे ज़्यादा ख़ुदा के अहकाम का लिहाज़ करने वाले थे, इसी लिये जब आपकी ऊँटनी आपको लेकर बैठ गयी तो आपने फ़रमाया- इसे हाथियों के रोकने वाले ने रोक लिया है, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, आज ये काफ़िर मुझसे जो माँगेंगे दूँगा बशर्ते कि ख़ुदा के किसी हुक्म की बेक़द्री न हो। पस जब आपने ख़ुदा की मान ली, सुलह को क़बूल कर लिया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़तह की सूरत उतारी और दुनिया और आख़िरत में अपनी नेमतें आप पर पूरी कीं, और अपनी शरीअ़त और मक़बूल दीन की तरफ़ आपकी रहबरी की और आपके ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (अल्लाह के सामने झुकने और इन्किसारी) की वजह से अल्लाह ने आपको बुलन्द व बाला किया, आपकी तवाज़ो, विनम्रता, आ़जिज़ी और इन्किसारी के बदले आपको इज़्ज़त व मर्तबा और शान व शौकत से नवाज़ा। आपके दुश्मनों पर आपको ग़लबा दिया। चुनाँचे ख़ुद आपका फ़रमान है कि बन्दा दरगुज़र (माफ़) करने से इज़्ज़त में बढ़ जाता है और आ़जिज़ी और विनम्रता करने से बुलन्दी और ऊँचा रुतबा हासिल कर लेता है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि तू किसी को जिसने तेरे बारे में अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी की हो ऐसी सज़ा नहीं दे सकता कि तू उसके बारे में अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करे (यानी इनसान अगर सज़ा देने और बदला लेने पर उतर आता है तो अपनी तरफ़ से ज़्यादती कर बैठता है, इसलिये माफ़ कर देना ही बेहतर है)।

هُوَ الَّذِىٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِىْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ط	वह ख़ुदा ऐसा है जिसने मुसलमानों के दिलों में बरदाश्त पैदा की है, ताकि उनके पहले ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝

और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआ़ला (मस्लेहतों का) बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (4) ताकि अल्लाह तआ़ला मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें हमेशा को रहेंगे, और ताकि उनके गुनाह दूर कर दे, और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है। (5) और ताकि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे जो कि अल्लाह के साथ बुरे-बुरे गुमान रखते हैं। उन पर बुरा वक़्त पड़ने वाला है, और (आख़िरत में) अल्लाह तआ़ला उन पर ग़ज़बनाक होगा और उनको रहमत से दूर कर देगा, और उनके लिए उसने दोज़ख़ तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (6) और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (7)

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इत्मीनान व तसल्ली

'सकीना' के मायने इत्मीनान, रहमत और वक़ार के हैं। फ़रमान है कि हुदैबिया वाले दिन जिन सहाबा ने अल्लाह और उसके रसूल की बात मान ली, अल्लाह ने उनके दिलों को मुत्मईन कर दिया और उनके ईमान और बढ़ गये। इससे हज़रत इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह इमामों ने दलील पकड़ी है कि दिलों में ईमान बढ़ता है और इसी तरह घटता भी है।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदाई लश्करों की कमी नहीं, वह अगर चाहता तो ख़ुद ही काफ़िरों को हलाक कर देता। एक फ़रिश्ते को भेज देता तो वह उन सबको बरबाद और बेनिशान कर देने के लिये काफ़ी था, लेकिन उसने अपनी हिक्मत से ईमान वालों को जिहाद का हुक्म दिया, जिसमें उसकी हुज्जत भी पूरी हो जाये और दलील भी सामने आ जाये। उसका कोई काम इल्म व हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। इसमें एक मस्लेहत यह भी है कि ईमान वालों को अपनी बेहतरीन नेमतें इस बहाने अ़ता फ़रमाये। पहले यह रिवायत गुज़र चुकी है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने जब हुज़ूर सल्ल. को मुबारकबाद दी और पूछा कि हुज़ूर! हमारे लिये क्या है? तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि मोमिन मर्द औ़रतें जन्नतों में जायेंगे, जहाँ क़दम-क़दम पर नहरें जारी हैं और जहाँ वे हमेशा-हमेशा तक रहेंगे, और इसलिये भी कि ख़ुदा तआ़ला उनके

Maktab E Ashraf

गुनाह और उनकी बुराईयाँ दूर और दफ़ा कर दे, उन्हें उनकी बुराईयों की सज़ा न दे, बल्कि माफ़ फ़रमा दे, दरगुज़र करे, बख़्श दे, पर्दा डाल दे, रहम करे और उनकी क़द्रदानी करे। दर असल यही असल कामयाबी है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ.

यानी जो जहन्नम से दूर कर दिया गया और जन्नत में पहुँचा दिया गया वह मुराद को पहुँच गया।

फिर एक और वजह और सबब बयान किया जाता है कि इसलिये भी कि निफ़ाक़ और शिर्क करने वाले मर्द व औ़रत, जो अल्लाह तआ़ला के अहकाम में बदगुमानी करते हैं, रसूलुल्लाह और सहाबा किराम के साथ बुरे ख़्याल रखते हैं कि ये हैं ही कितने? आज नहीं तो कल इनका नाम व निशान मिटा दिया जायेगा, इस जंग में बच गये तो और किसी लड़ाई में तबाह हो जायेंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि दर असल इस बुराई का दायरा उन्हीं पर है। उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है, वे रहमते ख़ुदा से दूर हैं, उनकी जगह जहन्नम है और वह बदतरीन ठिकाना है। दोबारा अपनी क़ुव्वत, क़ुदरत और अपने बन्दों के दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेने की ताक़त को ज़ाहिर फ़रमाता है कि आसमानों और ज़मीनों के लश्कर सब ख़ुदा ही के हैं, और अल्लाह तआ़ला ग़ालिब व हकीम है।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ
لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ
وَتُوَقِّرُوْهُ ۚ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ۝
إِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۚ
يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ أَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَإِنَّمَا
يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ أَوْفٰى بِمَا
عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا ۝ ع

हमने आपको गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला करके भेजा है। (8) ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी क़द्र व इ़ज़्ज़त करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह में लगे रहो। (9) जो लोग आप से बैअ़त कर रहे हैं, तो वे (हक़ीक़त में) अल्लाह तआ़ला से बैअ़त कर रहे हैं, ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर है। फिर (बैअ़त के बाद) जो शख़्स अ़हद तोड़ेगा सो उसके अ़हद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख़्स उस बात को पूरा करेगा जिस पर (बैअ़त में) ख़ुदा से अ़हद किया है, सो जल्द ही ख़ुदा उसको बड़ा अज्र देगा। (10)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाही देने वाले और ख़ुशख़बरी देने वाले हैं

अल्लाह तआ़ला अपने पाक नबी से फ़रमाता है कि हमने तुम्हें अपनी मख़्लूक़ पर शाहिद (गवाह) बनाकर मोमिनों को ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला बनाकर और काफ़िरों को डराने वाला बनाकर भेजा है। इस आयत की पूरी तफ़सीर सूरः अहज़ाब में गुज़र चुकी है, ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके नबी पर

ईमान लाओ और उनकी अज़मत व एहतिराम करो, बुज़ुर्गी और पाकीज़गी को तस्लीम करो और इसलिये ताकि तुम अल्लाह तआ़ला की सुबह व शाम तस्बीह करो।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने नबी की ताज़ीम व तकरीम (बुलन्द रुतबा) बयान फ़रमाता है कि जो लोग तुझसे बैअ़त करते हैं वे दर असल ख़ुद अल्लाह तआ़ला से ही बैअ़त करते हैं। एक जगह इरशाद है:

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ......الخ

यानी जिसने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की इताअ़त की उसने ख़ुदा का कहा माना। अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है, यानी वह उनके साथ है, उनकी बातें सुनता है, उनका मकान देखता है उनके ज़ाहिर व बातिन को जानता है। पस दर असल रसूल के वास्ते से उनसे बैअ़त लेने वाला अल्लाह तआ़ला ही है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ........ الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों से उनकी जानें और उनके माल ख़रीद लिये हैं और उनके बदले में जन्नत उन्हें दे दी है। वे राहे ख़ुदा में जिहाद करते हैं, मरते हैं और मारते हैं, ख़ुदा का यह सच्चा वायदा तौरात व इन्जील में भी मौजूद है और इस क़ुरआन में भी, समझ लो कि ख़ुदा से ज़्यादा सच्चे वायदे वाला कौन होगा? पस तुम्हें इस ख़रीद व फ़रोख़्त (यानी अल्लाह से हुए इस सौदे) पर ख़ुश हो जाना चाहिये। दर असल सच्ची कामयाबी यही है।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिसने राहे ख़ुदा में तलवार तौल ली उसने अल्लाह से बैअ़त कर ली। एक और हदीस में है कि हजरे-अस्वद के बारे में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन खड़ा करेगा, इसकी दो आँखें होंगी जिनसे देखेगा और ज़बान होगी जिससे बोलेगा और जिसने इसे हक़ के साथ बोसा दिया है उसकी गवाही देगा, इसे बोसा देने वाला दर असल अल्लाह तआ़ला से बैअ़त करने वाला है। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।

फिर फ़रमाता है कि जो बैअ़त के बाद अ़हद तोड़ दे उसका वबाल ख़ुद उसी पर होगा, अल्लाह का वह कुछ न बिगाड़ेगा। और जो अपनी बैअ़त को निभा जाये वह बड़ा सवाब पायेगा। यहाँ जिस बैअ़त का ज़िक्र है वह बैअ़ते-रिज़वान है जो एक बबूल (कीकर) के पेड़ के नीचे हुदैबिया के मैदान में हुई थी। उस दिन बैअ़त करने वाले सहाबा की तायदाद तेरह सौ चौदह सौ या पन्द्रह सौ थी। ठीक यह है कि चौदह सौ थी। इस वाक़िए की हदीसें मुलाहिज़ा हों।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हम उस दिन चौदह सौ थे। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि आपने उस पानी में हाथ रखा, पस आपकी उंगलियों के बीच से पानी की सोतीं उबलने लगीं। यह हदीस मुख़्तसर है उस हदीस से जिसमें है कि सहाबा सख़्त प्यासे हुए, पानी था नहीं, हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें अपने तरकश में से एक तीर निकाल कर दिया उन्होंने जाकर हुदैबिया के कुएँ में उसे गाड़ दिया, फ़ौरन पानी जोश के साथ उबलने लगा, यहाँ तक कि सब को काफ़ी हो गया। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा गया कि उस रोज़ तुम कितने थे? फ़रमाया चौदह सौ। लेकिन अगर एक लाख भी होते तो पानी इस क़द्र था कि सब को काफ़ी हो जाता। बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि पन्द्रह सौ थे। हज़रत जाबिर रज़ि. से एक रिवायत में पन्द्रह सौ भी मरवी हैं। इमाम बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं हक़ीक़त में थे तो पन्द्रह सौ और यही हज़रत जाबिर रज़ि. का पहला क़ौल था, फिर आपको कुछ वहम सा हो गया और चौदह सौ फ़रमाने लगे। इब्ने अ़ब्बास

Maktab E Ashraf

रज़ि. से मरवी है कि सवा पन्द्रह सौ थे। एक रिवायत में है कि पेड़ वाले सहाबा चौदह सौ थे और उस दिन आठवाँ हिस्सा मुहाजिरीन का मुसलमान हुआ। सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि हुदैबिया वाले साल रसूले मक़बूल सल्ल. अपने साथ सात सौ सहाबा को लेकर ज़ियारते बैतुल्लाह के इरादे से मदीना से चले। क़ुरबानी के सत्तर ऊँट भी आपके साथ थे, हर दस आदमियों की तरफ़ से एक ऊँट। हाँ हज़रत जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि आपके साथी उस दिन चौदह सौ थे। इब्ने इस्हाक़ इसी तरह कहते हैं और यह उनके गुमान व ख़्याल में शुमार है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में जो नक़ल है वह यह कि एक हज़ार कई सौ थे, जैसे अभी आगे आ रहा है। इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

इस बैअ़त का सबब सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि फिर रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत उमर रज़ि. को बुलवाया कि आपको मक्का भेजकर क़ुरैश के सरदारों से कहलवायें कि हुज़ूर लड़ाई के इरादे से नहीं आये बल्कि आप बैतुल्लाह शरीफ़ के उमरे के लिये आये हैं। लेकिन हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! मेरे ख़्याल में तो इस काम के लिये आप हज़रत उस्मान को भेजें, क्योंकि मक्का में मेरे ख़ानदान में से कोई नहीं, यानी बनू अ़दी बिन कअ़ब का क़बीला नहीं जो मेरी हिमायत करे। आप जानते हैं कि क़ुरैश से मैंने कितनी कुछ और क्या कुछ दुश्मनी की है और मुझसे वे किस क़द्र ख़ार खाये हुए हैं। मुझे तो वे ज़िन्दा भी नहीं छोड़ेंगे। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने इस राय को पसन्द फ़रमाकर हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि. को अबू सुफ़ियान और क़ुरैश के सरदारों के पास भेजा। आप जा ही रहे थे कि रास्ते में या मक्का में दाख़िल होते ही अबान बिन सईद बिन आ़स मिल गये। उन्होंने आपको अपने आगे अपनी सवारी पर बैठा लिया और अपनी अमान में अपने साथ मक्का में ले गये।

आप क़ुरैश के सरदारों के पास गये और हुज़ूर सल्ल. का प्याम पहुँचाया। उन्होंने कहा कि आप अगर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करना चाहें तो कर लीजिए। आपने जवाब दिया कि यह नामुम्किन है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से पहले मैं तवाफ़ कर लूँ। अब उन लोगों ने हज़रत उस्मान को रोक लिया। उधर लश्करे इस्लाम में यह ख़बर मशहूर हो गयी कि हज़रत उस्मान को शहीद कर डाला गया। इस परेशान कर देने वाली ख़बर ने मुसलमानों को और ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल. को बड़ा सदमा पहुँचाया और आपने फ़रमाया कि अब तो हम बग़ैर फ़ैसला किये यहाँ से नहीं हटेंगे। चुनाँचे आपने सहाबा को बुलवाया और उनसे बैअ़त (अ़हद व इक़रार) ली। एक पेड़ के नीचे यह बैअ़ते-रिज़्वान हुई। लोग कहते हैं कि यह बैअ़त मौत पर ली थी, यानी लड़ते-लड़ते मर जायेंगे। लेकिन हज़रत जाबिर रज़ि. का बयान है कि मौत पर बैअ़त नहीं ली थी बल्कि इस क़रार पर ली थी कि हम लड़ाई से भागेंगे नहीं। जितने मुसलमान सहाबा उस मैदान में थे सबने दिल की रज़ामन्दी से आप से बैअ़त की सिवाय जद बिन क़ैस के, जो क़बीला बनू सलमा का एक शख़्स था। यह अपनी ऊँटनी की आड़ में छुप गया। फिर हुज़ूर सल्ल. और सहाबा को मालूम हो गया कि हज़रत उस्मान की शहादत की अफ़वाह ग़लत थी। उसके बाद क़ुरैश ने सुहैल बिन अ़मर, हुवैतब बिन अ़ब्दुल-उ़ज़्ज़ा और मुकरिज़ बिन हफ़्स को आपके पास भेजा। ये लोग अभी यहीं थे कि बाज़ मुसलमानों और बाज़ मुश्रिकों में कुछ तेज़-कलामी (वाक्य युद्ध) शुरू हो गयी। नौबत यहाँ तक पहुँची कि पथराव और तीरों की बारिश भी हुई और दोनों तरफ़ के लोग तन गये। उधर उन लोगों ने हज़रत उस्मान वग़ैरह को रोक लिया और इधर ये लोग रुक गये और रसूले ख़ुदा सल्ल. ने ऐलान करा दिया कि रूहुल-क़ुदुस (यानी हज़रत जिब्राईल) अल्लाह के रसूल के पास आये और बैअ़त का हुक्म दे गये। आओ अल्लाह का नाम लेकर बैअ़त कर जाओ। अब क्या था, मुसलमान जोश के साथ दौड़े हुए हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

Maktab E Ashraf

आप उस वक़्त पेड़ के नीचे थे। सब ने इस बात पर बैअ़त की कि वे हरगिज़-हरगिज़ किसी सूरत में मैदान से मुँह मोड़ने का नाम न लेंगे। इससे मुश्रिक लोग काँप उठे और जितने मुसलमान उनके पास थे सब को छोड़ दिया और सुलह की दरख़्वास्त करने लगे।

बैहक़ी में है कि बैअ़त के वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ुदाया उस्मान तेरे रसूल के काम को गये हुए हैं, पस आपने ख़ुद अपना एक हाथ अपने दूसरे हाथ पर रखा, गोया हज़रत उस्मान की तरफ़ से बैअ़त की। पस हज़रत उस्मान के लिये रसूलुल्लाह सल्ल. का हाथ उनके अपने हाथ से बहुत अफ़ज़ल था। इस बैअ़त में सब से पहल करने वाले हज़रत अबू सनान असदी थे। उन्होंने सब से आगे बढ़कर फ़रमाया- हुज़ूर! हाथ फैलाईये ताकि मैं बैअ़त कर लूँ। आपने फ़रमाया- किस बात पर बैअ़त करते हो? जवाब दिया जो आपके दिल में हो उस पर। आपके वालिद का नाम वहब था। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत नाफ़े से मरवी है कि लोग कहते हैं कि हज़रत उमर के लड़के अ़ब्दुल्लाह ने अपने वालिद से पहले इस्लाम क़बूल किया, दर असल हक़ीक़त यूँ नहीं। बात यह है कि हुदैबिया वाले साल हज़रत उमर रज़ि. ने अपने बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. को एक अन्सारी के पास भेजा कि जाकर अपना घोड़ा ले आओ, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. लोगों से बैअ़त ले रहे थे। हज़रत उमर रज़ि. को इसका इल्म न था। यह अपने तौर पर चुपके से लड़ाई की तैयारियाँ कर रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने देखा कि हुज़ूर सल्ल. के हाथ पर बैअ़त हो रही है तो यह तो बैअ़त से सम्मानित हुए। फिर घोड़ा लेने गये और घोड़ा लाकर हज़रत उमर के पास आये और कहा कि हुज़ूर सल्ल. बैअ़त ले रहे हैं। अब हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि. आये और हुज़ूर के हाथ पर बैअ़त की। इस बिना पर लोग कहते हैं कि बेटे का इस्लाम बाप से पहले का है। बुख़ारी की दूसरी रिवायत में है कि लोग अलग-अलग पेड़ों के नीचे आराम कर रहे थे, हज़रत उमर रज़ि. ने देखा कि हर एक की निगाहें हुज़ूर सल्ल. पर हैं और लोग आपको घेरे हुए हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह से फ़रमाया कि जाओ ज़रा देखो तो क्या हो रहा है? यह आये, देखा कि बैअ़त हो रही है तो बैअ़त कर ली, फिर जाकर हज़रत उमर रज़ि. को ख़बर दी। चुनाँचे आप भी फ़ौरन आये और बैअ़त से मुशर्रफ़ हुए (यानी गौरव प्राप्त किया)।

हज़रत जाबिर रज़ि. का बयान है कि जब हमने बैअ़त की उस वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. आपका हाथ थामे हुए थे। आप एक बबूल (कीकर) के पेड़ के नीचे थे.......। हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि. का बयान है कि उस मौक़े पर पेड़ की एक झुकी हुई टहनी को आपके सर से ऊपर को उठाकर मैं थामे हुए था। हमने आप से मौत पर बैअ़त नहीं की बल्कि यह बैअ़त मैदाने जंग से न भागने पर थी। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हमने मरने पर बैअ़त की थी। आप फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा बैअ़त करके मैं हटकर एक तरफ़ को खड़ा हो गया तो आपने मुझसे फ़रमाया सलमा! तुम बैअ़त नहीं करते? मैंने कहा हुज़ूर! मैंने तो बैअ़त कर ली। आपने फ़रमाया ख़ैर आओ बैअ़त कर लो। चुनाँचे मैंने क़रीब जाकर फिर बैअ़त की। हुदैबिया का वह कुआँ जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा सिर्फ़ इतने पानी का था कि पचास बकरियाँ भी उससे तृप्त न हो सकें। आप फ़रमाते हैं कि क़रीब जाकर फिर बैअ़त कर लेने के बाद आपने जो देखा तो मालूम हुआ कि मैं बिना ढाल के हूँ तो आपने मुझे एक ढाल इनायत फ़रमाई। फिर लोगों से बैअ़त लेनी शुरू कर दी। फिर आख़िरी मर्तबा मेरी तरफ़ देखकर फ़रमाया- सलमा! तुम बैअ़त नहीं करते? मैंने कहा या रसूलल्लाह! पहली मर्तबा जिन लोगों ने बैअ़त की मैंने उनके साथ ही बैअ़त की थी, फिर बीच में दोबारा बैअ़त कर चुका हूँ। आपने फ़रमाया अच्छा फिर सही, चुनाँचे उस आख़िरी जमाअ़त के साथ भी मैंने बैअ़त की। आपने फिर मेरी तरफ़ देखकर फ़रमाया जो तुम्हें ढाल दी थी वह क्या हुई? मैंने कहा या रसूलल्लाह!

हज़रत आ़मिर से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैंने देखा कि उनके पास दुश्मन का वार रोकने को कोई चीज़ नहीं मैंने वह ढाल उन्हें दे दी। आप हंसे और फ़रमाया- तुम भी उस शख़्स की तरह हो जिसने अल्लाह से दुआ़ की कि ख़ुदाया! मेरे पास किसी ऐसे को भेज दे जो मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो।

फिर मक्का वालों ने सुलह की पेशकश की, आना-जाना हुआ और सुलह हो गयी। मैं हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि. का ख़ादिम था। उनके घोड़े की और उनकी ख़िदमत किया करता था। वह मुझे खाने को दे देते थे। मैं अपना घर-बार बाल-बच्चे माल व दौलत सब राहे ख़ुदा में छोड़कर हिजरत करके चला आया था। जब सुलह हो चुकी, उधर के इधर आने लगे तो मैं एक पेड़ के नीचे जाकर काँटे वग़ैरह हटाकर उसकी जड़ से लगकर सो गया। अचानक मक्का के मुश्रिकों में से चार शख़्स वहीं आये और हुज़ूर की शान में कुछ गुस्ताख़ी के कलिमात से आपस में बातें करने लगे। मुझे बड़ा बुरा मालूम हुआ, मैं वहाँ से उठकर दूसरे पेड़ के नीचे चला गया। उन लोगों ने अपने हथियार उतारे, पेड़ पर लटका कर वहाँ लेट गये। थोड़ी देर गुज़री होगी, मैंने सुना कि वादी के नीचे के हिस्से से कोई आवाज़ देने वाला ऐलान कर रहा है कि ऐ मुजाहिद भाईयो! हज़रत इब्ने ज़ुनैम क़त्ल कर दिये गये। मैंने झट से तलवार तान ली और उसी पेड़ के नीचे गया जहाँ वे चारों सोये हुए थे। जाते ही पहले तो उनके हथियार कब्ज़े में किये और अपने एक हाथ में उन्हें दबाकर दूसरे हाथ से तलवार तौल कर उनसे कहा सुनो! उस ख़ुदा की क़सम जिसने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इज़्ज़त दी है, तुममें से जिसने भी सर उठाया मैं उसका सर क़लम कर दूँगा। जब वे इसे मान चुके, मैंने कहा उठो और मेरे आगे-आगे चलो। चुनाँचे उन चारों को लेकर मैं रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मेरे चचा हज़रत आ़मिर भी मुकरिज़ नाम के अ़बलात के एक मुश्रिक को गिरफ़्तार करके लाये, और भी इसी तरह के सत्तर मुश्रिक हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किये गये थे। आपने उनकी तरफ़ देखा और फ़रमाया- इन्हें छोड़ दो, बुराई की शुरूआ़त भी इन्हीं के सर रहे और फिर बुराई को बार-बार करने के ज़िम्मेदार भी यही रहें। चुनाँचे सब को रिहा कर दिया गया। इसी का बयान इस आयत शरीफ़ में है:

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ........ الخ.

(यानी सूरः फ़तह की आयत नम्बर 24 में)

हज़रत सईद बिन मुसैयब के वालिद भी उस मौक़े पर हुज़ूर सल्ल. के साथ थे। आपका बयान है कि अगले साल जब हम हज को गये तो उस पेड़ की जगह हम पर पोशीदा रही, हम मालूम न कर सके कि किस जगह हुज़ूर के हाथ पर हमने बैअ़त की थी। अब अगर तुमको यह राज़ मालूम हो गया हो तो तुम जानो। एक रिवायत में हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी है कि उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- आज ज़मीन पर जितने हैं उन सब में अफ़ज़ल तुम लोग हो। आप फ़रमाते हैं कि अगर मेरी आँखें होतीं तो मैं तुम्हें उस पेड़ की जगह दिखा देता। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं कि उस जगह की निशानदेही में बड़ा इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि जिन लोगों ने इस बैअ़त में शिर्कत की है उनमें से कोई भी जहन्नम में नहीं जायेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जिन लोगों ने उस पेड़ के नीचे मेरे हाथ पर बैअ़त की है, सब जन्नत में जायेंगे, मगर सुर्ख़ ऊँट वाला। हम जल्दी से दौड़े, देखा तो एक शख़्स अपने खोये हुए ऊँट की तलाश में था। हमने कहा चल बैअ़त कर। उसने जवाब दिया कि बैअ़त से ज़्यादा नफ़ा तो इसमें है कि मैं अपना गुमशुदा ऊँट पा लूँ। मुस्नद अहमद में है, आपने फ़रमाया- कौन है जो सनीयतुल-

मिरार पर चढ़ जाये उससे वह दूर हो जायेगा जो बनी इस्राईल से दूर हुआ। पस सबसे पहले क़बीला बनू ख़ज़रज के एक सहाबी उस पर चढ़ गये। फिर तो और लोग भी पहुँच गये। फिर आपने फ़रमाया- तुम सब बख़्शे जाओगे मगर सुर्ख़ ऊँट वाला। हम उसके पास आये और उससे कहा कि आ ताकि तेरे लिये रसूलुल्लाह सल्ल. इस्तिग़फ़ार तलब करें। उसने जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम मुझे मेरा ऊँट मिल जाये तो मैं ज़्यादा ख़ुश हो जाऊँगा इसके मुक़ाबले में कि तुम्हारे साहिब मेरे लिये इस्तिग़फ़ार करें। यह शख़्स अपना गुमशुदा (खोया हुआ) ऊँट ढूँढ रहा था। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी यह सुना कि इस बैअ़त वाले दोज़ख़ में दाख़िल नहीं होंगे तो कहा हाँ होंगे, आपने उन्हें रोक दिया तो उम्मुल-मोमिनीन साहिबा ने यह आयत पढ़ीः

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا.

यानी तुम में से हर शख़्स को उस पर वारिद होना (आना) है।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इसके बाद ही अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا........ الخ.

यानी फिर हम तक़्वा वालों (नेक लोगों) को निजात देंगे और ज़ालिमों को घुटनों के बल उसमें गिरा देंगे। (मुस्लिम)

हज़रत हातिब बिन अबू बल्तआ़ रज़ि. के गुलाम हज़रत हातिब की शिकायत लेकर हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहने लगे या रसूलल्लाह! हातिब ज़रूर जहन्नम में जायेंगे। आपने फ़रमाया तू झूठा है, वह जहन्नमी नहीं, वह बदरी हैं और हुदैबिया में मौजूद रहे हैं।

आगे इन बुज़ुर्गों की तारीफ़ बयान हो रही है कि ये अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं, इनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है। इस बैअ़त को तोड़ने वाला अपना ही नुक़सान करने वाला है और इसे पूरा करने वाला बड़े अज्र का मुस्तहिक़ (पात्र) है। जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ......... الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला ईमान वालों से राज़ी हो गया जबकि उन्होंने पेड़ के नीचे तुझसे बैअ़त की। उनके दिली इरादों को उसने जान लिया। फिर उन पर दिल की तसल्ली और सुकून नाज़िल फ़रमाया और क़रीब की फ़तह से उन्हें कामयाब फ़रमाया।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ	जो देहाती पीछे रह गए वे जल्द ही आप से यह कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने फ़ुर्सत न लेने दी, सो हमारे लिए (इस कोताही की) माफ़ी की दुआ़ माँगिए। ये लोग अपनी ज़बान से वे बातें कहते हैं जो उनके दिल में नहीं हैं। आप कह दीजिए कि सो वह कौन है जो ख़ुदा के सामने तुम्हारे लिए किसी चीज़ का (कुछ भी) इख़्तियार रखता हो? अगर

Maktab E Ashraf

كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ٥ بَلْ ظَنَنْتُمْ
اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى
اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ
بُوْرًا ٥ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ ۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ٥ وَلِلّٰهِ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ٥

अल्लाह तआ़ला तुम को कोई नुक़सान या कोई नफ़ा पहुँचाना चाहे, बल्कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल पर बाख़बर है। (11) बल्कि तुमने यूँ समझा कि रसूल और (उनके साथी) मोमिनीन अपने घर वालों में कभी लौटकर न आएँगे। और यह बात तुम्हारे दिलों में अच्छी भी मालूम हुई थी और तुमने बुरे-बुरे गुमान किए, और तुम बरबाद होने वाले लोग हो गए। (12) और जो शख़्स अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा सो हमने काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (13) और तमाम आसमान व ज़मीन की हुकूमत अल्लाह ही की है, वह जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे सज़ा दे, और अल्लाह तआ़ला बड़ा माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (14)

बहाने बाज़ियाँ

जो देहात के लोग जिहाद से जी चुराकर रसूले ख़ुदा का साथ छोड़कर मौत के डर के मारे घर से न निकले थे और समझते थे कि कुफ़्र की ज़बरदस्त ताक़त हमें चकनाचूर कर देगी और जो इतनी बड़ी जमाअ़त से टक्कर लेने गये हैं वे तबाह हो जायेंगे, बाल-बच्चों से तरस जायेंगे, वहीं काट डाले जायेंगे। जब उन्होंने देखा कि अल्लाह के रसूल मय अपनी पाकबाज़ मुजाहिदीन की जमाअ़त के शान से कामयाबी के साथ वापस आ रहे हैं तो अपने दिल में प्लान बनाने लगे कि अपनी बात भी बनी रहे। यहाँ अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को पहले ही से ख़बरदार कर दिया कि कुछ बुरी फ़ितरत के लोग आकर अपने ज़मीर (अन्तरात्मा) के ख़िलाफ़ अपनी ज़बान को हरकत देंगे और उज़्र पेश करेंगे कि हुज़ूर! बाल बच्चों और काम काज से निकलना न हो सका, वरना हम तो हर तरह आपके हुक्म के ताबेदार हैं। हमारी जान तक हाज़िर है। अपनी मज़ीद ईमानदारी के इज़हार के लिये यह भी कह देंगे कि हज़रत आप हमारे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिए। आप उन्हें जवाब दे देना कि तुम्हारा मामला अल्लाह के सुपुर्द है, वह दिलों के भेद से वाक़िफ़ है। अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुँचाये तो कौन है जो उसे दूर कर सके? और अगर वह तुम्हें नफ़ा देना चाहे तो कौन है जो उसे रोक सके। बनावट और झूठे दावों से तुम्हारी ईमानदारी (ईमान वाला होना) और निफ़ाक़ से वह बख़ूबी आगाह है। एक-एक अ़मल से बाख़बर है। उस पर कोई चीज़ छुपी नहीं। दर असल तुम्हारा पीछे रह जाना किसी उज़्र (मजबूरी) के कारण न था बल्कि बतौर नाफ़रमानी के ही था। साफ़ तौर पर तुम्हारा निफ़ाक़ उसका कारण था। तुम्हारे दिल ईमान से ख़ाली हैं, ख़ुदा पर भरोसा नहीं, रसूल की इताअ़त में भलाई का यक़ीन नहीं, इस वजह से तुम्हारी जानें तुम पर भारी हैं। तुम अपने बारे में तो क्या बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल. और आपके सहाबा के बारे में भी यही ख़्याल करते थे कि ये क़त्ल कर दिये जायेंगे, उनमें

से एक भी न बच सकेगा जो उनकी ख़बर तो लाकर दे। इन बुरे ख़्यालों ने तुम्हें नामर्द बना रखा था, तुम दर असल बरबाद और शरीर लोग हो। जो शख़्स अपना अ़मल ख़ालिस न करे, अपना अ़क़ीदा मज़बूत न बना ले, उसे अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ की आग में अ़ज़ाब करेगा, चाहे वह दुनिया में अपने बातिन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर करता रहे (यानी बज़ाहिर मुसलमान बना रहे)।

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मुल्क अपनी शहनशाही और अपने इख़्तियारात का बयान फ़रमाता है कि मालिक व मुतसर्रिफ़ (हर चीज़ में उलट-फेर करने वाला) वही है, बख़्शिश और अ़ज़ाब पर क़ादिर वही है, लेकिन है ग़फ़ूर और रहीम। जो भी उसकी तरफ़ झुके वह उसकी तरफ़ माईल हो जाता है और जो उसका दर खटखटाये वह उसके लिये अपना दरवाज़ा खोल देता है, चाहे कितने ही गुनाह किये हों जब तौबा करे अल्लाह क़बूल फ़रमा लेता है और गुनाह बख़्श देता है, बल्कि रहम और मेहरबानी से पेश आता है।

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ○	जो लोग पीछे रह गए थे वे जल्दी ही जब तुम (ख़ैबर की) ग़नीमतें "यानी जंग में फ़तह के बाद हासिल होने वाले माल" लेने चलोगे तो कहेंगे कि हमको भी इजाज़त दो कि हम तुम्हारे साथ चलें। वे लोग यूँ चाहते हैं कि ख़ुदा के हुक्म को बदल डालें। आप कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते, ख़ुदा तआ़ला ने पहले से यूँ ही फ़रमा दिया है। तो वे लोग कहेंगे कि बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो, बल्कि ख़ुद ये लोग बहुत कम बात समझते हैं। (15)

बेकार के मुतालबे

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि जिन देहाती लोगों ने हुदैबिया में अल्लाह के रसूल का और सहाबा का साथ न दिया वे जब हुज़ूर को और उन सहाबा को ख़ैबर की फ़तह के मौक़े पर माले ग़नीमत समेटने के लिये जाते हुए देखेंगे तो आरज़ू करेंगे कि हमें भी अपने साथ ले लो। मुसीबत को देखकर तो पीछे हट गये, राहत को देखकर शामिल होना चाहते हैं। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि उन्हें हरगिज़ साथ न लेना। जब ये जंग से जी चुरायें तो फिर ग़नीमत में हिस्सा क्यों लें? अल्लाह तआ़ला ने ख़ैबर की ग़नीमतों का वायदा हुदैबिया वालों से किया है न कि उनसे जो कठिन वक़्त में फ़रार हो जायें और आराम के वक़्त मिल जायें। उनकी तमन्ना है कि कलामे ख़ुदा को बदल दें, यानी ख़ुदा तआ़ला ने तो सिर्फ़ हुदैबिया की हाज़िरी वालों से वायदा किया तो ये चाहते हैं कि बावजूद अपनी ग़ैर-हाज़िरी के ख़ुदा के इस वायदे में मिल जायें ताकि वह भी बदला हुआ साबित हो जाये। इब्ने ज़ैद रह. कहते हैं कि मुराद इससे अल्लाह तआ़ला का यह हुक्म है:

فَإِن رَّجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ......... الخ.

यानी ऐ नबी! अगर तुम्हें अल्लाह तआ़ला उनमें से किसी गिरोह की तरफ़ वापस ले जाये और वे तुमसे जिहाद के लिये निकलने की इजाज़त माँगें तो तुम उनसे कह देना कि तुम मेरे साथ हरगिज़ न निकलो और मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से न लड़ो, तुम वही हो कि पहली मर्तबा हमसे पीछे रह जाने में ही ख़ुश रहे। पस अब हमेशा बैठे रहने वालों के साथ ही बैठे रहो। लेकिन यह क़ौल विचारनीय है, इसलिये कि यह आयत सूरः तौबा की है जो ग़ज़वा-ए-तबूक के बारे में नाज़िल हुई है, और ग़ज़वा-ए-तबूक हुदैबिया की लड़ाई के बहुत बाद का है। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि मुराद इनसे उन मुनाफ़िक़ों का मुसलमानों को भी अपने साथ मिलाकर जिहाद से रोक रखना है। फ़रमाता है कि उन्हें उनकी इस आरज़ू का जवाब दो कि तुम हमारे साथ चलना चाहो इससे पहले ख़ुदा यह वायदा हुदैबिया वालों से कर चुका है, इसलिये तुम हमारे साथ नहीं चल सकते। अब वे ताना देंगे कि अच्छा हमें मालूम हो गया, तुम हमसे जलते हो, नहीं चाहते कि ग़नीमत का हिस्सा तुम्हारे सिवा किसी और को मिले। अल्लाह फ़रमाता है कि दर असल यह उनकी नासमझी है और इसी एक बात पर क्या मौक़ूफ़ है ये लोग तो पूरी तरह ही बेसमझ हैं।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ○ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ○ ع

आप उन पीछे रहने वाले देहातियों से (यह भी) कह दीजिए कि जल्द ही तुम लोग ऐसे लोगों (से लड़ने) की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बहुत सख़्त लड़ने वाले होंगे, कि या तो उनसे लड़ते रहो या वे (इस्लाम के) फ़रमाँबरदार हो जाएँ। सो अगर तुम इताअ़त करोगे तो तुमको अल्लाह तआ़ला नेक बदला (यानी जन्नत) देगा, और अगर तुम (उस वक़्त भी) मुँह मोड़ोगे जैसा कि इससे पहले मुँह मोड़ चुके हो तो वह दर्दनाक अ़ज़ाब की सज़ा देगा। (16) न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है, और जो शख़्स अल्लाह व रसूल का कहना मानेगा उसको वह ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख़्स (हुक्म से) मुँह मोड़ेगा उसको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा। (17)

एक और इम्तिहान

वह सख़्त लड़ाका क़ौम जिनसे लड़ने की तरफ़ ये बुलाये जायेंगे कौनसी क़ौम है? इसमें कई अक़्वाल हैं। एक तो यह कि इससे मुराद हवाज़न क़बीला है, दूसरे यह कि इससे मुराद सक़ीफ़ क़बीला है, तीसरे यह कि इससे मुराद बनू हनीफ़ा का क़बीला है, चौथे यह कि इससे मुराद फ़ारस वाले हैं, पाँचवे यह कि इससे मुराद रोम वाले हैं, छठे यह कि इससे मुराद बुत-परस्त हैं।

बाज़ फ़रमाते हैं कि इससे मुराद कोई ख़ास क़बीला या गिरोह नहीं, बल्कि मुतलक़ जंगजू (लड़ाका) क़ौम मुराद है जो अभी तक मुक़ाबले में नहीं आयी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद कुर्द लोग हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि तुम एक ऐसी क़ौम से न लड़ो जिनकी आँखें छोटी-छोटी होंगी और नाक बैठी हुई होगी। उनके मुँह तह-ब-तह ढालों की तरह होंगे। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद तुर्क हैं। एक और हदीस में है कि तुम्हें एक क़ौम से जिहाद करना पड़ेगा जिनकी जूतियाँ बालोंदार होंगी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद कुर्द लोग हैं।

फिर फ़रमाता है कि उनसे जिहाद व क़िताल (लड़ाई) तुम पर मशरूअ़ (लाज़िम और वाजिब) कर दिया गया है और यह हुक्म ही रहेगा। ख़ुदा तआ़ला उन पर तुम्हारी मदद करेगा या यह कि वे ख़ुद-बख़ुद बग़ैर लड़े-भिड़े दीने इस्लाम क़बूल कर लेंगे। फिर इरशाद होता है कि अगर तुम मान लोगे और जिहाद के लिये उठ खड़े हो जाओगे, और हुक्म का पालन करोगे तो तुम्हें बहुत सारी नेकियाँ मिलेंगी, और अगर तुमने वही किया जो हुदैबिया के मौक़े पर किया था, यानी बुज़दिली से बैठ रहे, जिहाद में शिर्कत न की, अहकाम की तामील से जी चुराया, तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

फिर जिहाद को छोड़ देने के जो सही उज़्र हैं उनका बयान हो रहा है। पस दो उज़्र (मजबूरी) तो वे बयान फ़रमाये जो लाज़िमी हैं, यानी अन्धापन और लंगड़ापन, और एक उज़्र वह बयान फ़रमाया जो आ़रज़ी (वक़्ती और अस्थायी) है, जैसे बीमारी, कि चन्द दिन रही फिर चली गयी। पस ये भी अपनी बीमारी के ज़माने में माज़ूर हैं। हाँ तन्दुरुस्त होने के बाद ये माज़ूर नहीं। फिर जिहाद की तरग़ीब देते हुए फ़रमाता है कि ख़ुदा व रसूल का फ़रमाँबरदार जन्नती है और जो जिहाद से बेतवज्जोही करे और दुनिया की तरफ़ सरासर मुतवज्जह हो जाये, माल कमाने के पीछे आख़िरत को भूल जाये, उसकी सज़ा दुनिया में ज़िल्लत और आख़िरत में दुख की मार है।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۙ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝	तहक़ीक़ी बात है कि अल्लाह तआ़ला उन मुसलमानों से ख़ुश हुआ जबकि ये लोग आप से (बबूल के) पेड़ के नीचे बैअ़त कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ था अल्लाह तआ़ला को वह भी मालूम था। पस अल्लाह तआ़ला ने उनमें इत्मीनान पैदा कर दिया और उनको लगे हाथ एक फ़तह दे दी। (18) और (उस फ़तह में) बहुत-सी ग़नीमतें भी (दीं) जिनको ये लोग ले रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त, बड़ा हिक्मत वाला है। (19)

अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी और ख़ुश हुआ

पहले बयान हो चुका है कि यह बैअ़त करने वाले चौदह सौ की तायदाद में थे और यह पेड़ बबूल (कीकर) का था, जो हुदैबिया के मैदान में था। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान जब हज को

गये तो देखा कि कुछ लोग एक जगह नमाज़ अदा कर रहे हैं। पूछा क्या बात है? तो जवाब मिला कि यह वही पेड़ है जहाँ रसूलुल्लाह सल्ल. की बैअ़ते-रिज़वान हुई थी। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान ने वापस आकर यह किस्सा हज़रत सईद बिन मुसैयब से बयान किया तो आपने फ़रमाया- मेरे वालिद साहब भी उन बैअ़त करने वालों में थे, उनका बयान था कि बैअ़त के दूसरे साल हम वहाँ गये लेकिन हम सब को भुला दिया गया, वह पेड़ हमें न मिला। फिर हज़रत सईद फ़रमाने लगे- ताज्जुब है कि रसूले पाक के सहाबा ख़ुद बैअ़त करने वाले तो उस जगह को न पा सकें, उन्हें मालूम न हो लेकिन तुम लोग जान लो, गोया तुम रसूले पाक के सहाबा से भी ज़्यादा जानने वाले हो?

फिर फ़रमाता है कि उनकी दिली सच्चाई, वफ़ा की नीयत और उनकी आ़दत को ख़ुदा ने मालूम कर लिया। पस उनके दिलों में इत्मीनान डाल दिया और क़रीब की फ़तह इनायत फ़रमाई। यह फ़तह वह सुलह है जो हुदैबिया के मैदान में हुई, जिससे आ़म भलाई हासिल हुई और जिसके फ़ौरन बाद ही ख़ैबर फ़तह हुआ। फिर थोड़े ही ज़माने के बाद मक्का भी फ़तह हो गया। फिर और क़िले और इलाक़े भी फ़तह होते चले गये, और वह इ़ज़्ज़त व मदद, फ़तह व कामयाबी, बुलन्दी व रुतबा हासिल हुआ कि दुनिया हैरान रह गयी। इसलिये फ़रमाया कि बहुत सी ग़नीमतें अ़ता फ़रमायेगा, सच्चे ग़लबे वाला और कामिल हिक्मत वाला अल्लाह तआ़ला ही है। इब्ने अबी हातिम में है कि हम हुदैबिया के मैदान में दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्ल. के मुनादी ने ऐलान किया कि लोगो! बैअ़त के लिये आगे बढ़ो, रूहुल-क़ुदुस (जिब्राईल अमीन) आ चुके हैं। हम भागे दौड़े हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आप उस वक़्त बबूल के पेड़ के नीचे थे, हमने आपके हाथ पर बैअ़त की, जिसका ज़िक्र आयत 'ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़न्हुम्.......' में है। हज़रत उस्मान रज़ि. की तरफ़ से आपने अपना एक हाथ दूसरे पर रखकर ख़ुद ही बैअ़त कर ली, तो हमने कहा- उस्मान बड़े ख़ुशनसीब रहे कि हम तो यहाँ पड़े हुए हैं और वह बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे होंगे। यह सुनकर जनाब रसूले मक़बूल सल्ल. ने फ़रमाया- बिल्कुल नामुम्किन है कि उस्मान मुझसे पहले तवाफ़ कर लेगा, चाहे कई साल तक वहाँ रहे।

अल्लाह तआ़ला ने तुम से (और भी) बहुत-सी ग़नीमतों का वायदा कर रखा है जिन को तुम लोगे। सो फ़िलहाल तुमको यह दे दी है और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि यह (वाक़िआ़) ईमान वालों के लिए एक नमूना हो जाए, और ताकि तुम को एक सीधी सड़क पर डाल दे। (20) और एक फ़तह और भी है जो तुम्हारे क़ाबू में नहीं आई। ख़ुदा तआ़ला उसको घेरे में लिए हुए है, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है। (21) और अगर तुम से ये काफ़िर लड़ते तो ज़रूर पीठ फेरकर भागते, फिर न उनको कोई यार मिलता और न मददगार। (22) अल्लाह तआ़ला ने	وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ

Maktab E Ashraf

(काफ़िरों के लिए) यही दस्तूर कर रखा है जो पहले से चला आता है, और आप ख़ुदा के दस्तूर में रद्दोबदल न पाएँगे। (23) और वह ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुम से (यानी तुम को क़त्ल करने से) और तुम्हारे हाथ उन (के क़त्ल) से ऐन मक्का (के निकट) में रोक दिए, इसके बाद कि तुम को उन पर क़ाबू दे दिया था, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देख रहा था। (24)	لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ○ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ○ وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ○

अल्लाह का एक वायदा

इन बहुत सी ग़नीमतों (जंग में दुश्मन से हासिल होने वाले माल व असबाब) से मुराद आपके ज़माने और बाद की सब ग़नीमतें हैं। फ़ौरन हासिल होने वाली ग़नीमत से मुराद ख़ैबर की ग़नीमत और हुदैबिया की सुलह है। उस ख़ुदा का एक एहसान यह भी है कि काफ़िरों के बुरे इरादों को उसने पूरा न होने दिया, न मक्के के काफ़िरों के, न उन मुनाफ़िक़ों के जो तुम्हारे पीछे मदीने में रहते थे, न ये तुम पर हमलावर हो सके न वे तुम्हारे बाल बच्चों को कुछ सता सके। यह इसलिये कि मुसलमान इससे इबरत हासिल करें और जान लें कि असल हाफ़िज़ व नासिर (हिफ़ाज़त करने वाला और मददगार) अल्लाह ही है। पस दुश्मनों की अधिकता और अपनी क़िल्लत से हिम्मत न हार दें। और यह भी यक़ीन कर लें कि हर काम के अन्जाम का इल्म अल्लाह ही को है, बन्दों के हक़ में बेहतर यही है कि वे उसके फ़रमान पर आ़मिल रहें और इसी में अपनी ख़ैर समझें, अगरचे वह फ़रमान बज़ाहिर अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ हो। बहुत मुम्किन है कि तुम जिसे नापसन्द रखते हो वही तुम्हारे हक़ में बेहतर हो। वह तुम्हें तुम्हारे हुक्म बजा लाने, रसूल की पैरवी और सच्ची जाँनिसारी के बदले सही रास्ता दिखायेगा और ग़नीमतें और कामयाबी व फ़तह भी अ़ता फ़रमायेगा, जिनका हासिल करना तुम्हारे बस की बात नहीं है, लेकिन अल्लाह ख़ुद तुम्हारी मदद करेगा और उन मुश्किलों को तुम पर आसान कर देगा। सब चीज़ें अल्लाह के बस में हैं, वह अल्लाह तआ़ला से डरने वाले बन्दों को ऐसी जगह से रोज़ियाँ पहुँचाता है जो किसी के ख़्याल में तो क्या ख़ुद उनके अपने ख़्याल में भी न हो। इस ग़नीमत से मुराद ख़ैबर की ग़नीमत है जिसका वायदा सुलह हुदैबिया में छुपा था, या मक्का की फ़तह है, या फ़ारस व रोम के माल हैं, या वे तमाम फ़ुतूहात हैं जो क़ियामत तक मुसलमानों को हासिल होंगी। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुनाता है कि वे काफ़िरों से मरऊब और भयभीत न हों। काफ़िर मुक़ाबले पर आये तो अल्लाह अपने रसूल और मुसलमानों की मदद करेगा और उन बेईमानों को खुली शिकस्त देगा। ये पीठ दिखायेंगे, मुँह फेर लेंगे और कोई वाली और मददगार भी उन्हें न मिलेगा, इसलिये कि वे ख़ुदा और उसके रसूल से लड़ने के लिये आये हैं और उसके ईमान वाले बन्दों के पीछे पड़े हुए हैं।

फिर फ़रमाता है कि यही अल्लाह तआ़ला की सुन्नत (तरीक़ा और आ़दत) है कि जब कुफ़्र व ईमान

का मुक़ाबला हो तो वह ईमान को कुफ़्र पर ग़ालिब करता है और हक़ को ज़ाहिर करके बातिल को दबा देता है, जैसा कि बदर वाले दिन बहुत से काफ़िरों को जो सामान के साथ थे, चन्द मुसलमानों के मुक़ाबले में जो बिना सामान व हथियार के थे खुली शिकस्त दी। फिर अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे इस एहसान को भी न भूलो कि मैंने मुश्रिकों के हाथ तुम तक न पहुँचने दिये और तुम्हें भी मस्जिदे हराम के पास लड़ने से रोक दिया, और तुम में और उनमें सुलह करा दी, जो दर असल तुम्हारे हक़ में सरासर बेहतर है, दुनिया के एतिबार से भी और आख़िरत के एतिबार से भी। वह हदीस याद होगी जो इसी सूरत की तफ़सीर में हज़रत सलमा बिन अक्वा रज़ि. की रिवायत से गुज़र चुकी है कि जब सत्तर काफ़िरों को बाँधकर सहाबा रज़ि. ने आँ हज़रत सल्ल. की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया तो आपने फ़रमाया- इन्हें जाने दो, इनकी तरफ़ से ही शुरूआत हुई और इन्हीं की तरफ़ से दोबारा शुरू हो। इसी सिलसिले में यह आयत उतरी। मुस्नद अहमद में है कि अस्सी काफ़िर हथियारों से लैस जबले-तनईम की तरफ़ से चुप चुपाते मौक़ा पाकर उतर आये, लेकिन हुज़ूर सल्ल. ग़ाफ़िल न थे, आपने फ़ौरन लोगों को आगाह कर दिया, सब गिरफ़्तार कर लिये गये और हुज़ूरे पाक के सामने पेश किये गये। आपने मेहरबानी के तौर पर उनकी ख़ता माफ़ फ़रमा दी और सब को छोड़ दिया। इसी का बयान इस आयत में है। यह हदीस मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मदनी रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिस पेड़ का ज़िक्र क़ुरआन में है उसी के नीचे नबी सल्ल. थे, हम लोग भी आपके इद-गिर्द (चारों तरफ़) थे। उसी पेड़ की शाख़ें हुज़ूर सल्ल. की कमर से लग रही थीं। हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब और सुहैल बिन उमर आपके सामने थे। हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली से फ़रमाया- बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखो। इस पर सुहैल ने हुज़ूरे पाक का हाथ थाम लिया और कहा हम रहमान और रहीम को नहीं जानते, हमारे इस सुलह नामे में हमारे अ़क़ीदे के मुताबिक़ लिखवाईये। पस आपने फ़रमाया- बि-इस्मिकल्लाहुम्-म लिख लो। फिर लिखा, यह वह है जिस पर अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने मक्का वालों से सुलह की। इस पर फिर सुहैल ने कहा- लिखो यह वह है जिस पर मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने मक्का वालों से सुलह की। इतने में तीस नौजवान काफ़िर हथियार बन्द आ गये, आपने उनके हक़ में बददुआ़ की, अल्लाह ने उन्हें बहरा बना दिया। हम उठे और उनको आपके सामने पेश कर दिया। आपने उनसे दरियाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम्हें किसी ने अमान दी है? तुम किसी की ज़िम्मेदारी पर आये हो? उन्होंने इनकार किया, लेकिन बावजूद इसके आपने उनसे दरगुज़र फ़रमाया और उन्हें छोड़ दिया। इस पर यह आयतः

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ.........الخ.

नाज़िल हुई। (नसाई) (यानी यही आयत नम्बर 17 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

इब्ने जरीर में है कि जब हुज़ूर सल्ल. क़ुरबानी के जानवर लेकर चले और ज़ुल-हुलैफ़ा तक पहुँच गये तो हज़रत उमर रज़ि. ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी! आप एक ऐसी क़ौम की बस्ती में जा रहे हैं जो हमसे लड़ने पर आमादा हैं और आपके पास न तो हथियार न सामान। हुज़ूर सल्ल. ने यह सुनकर आदमी भेज कर मदीना से हथियार और तमाम सामान मंगवा लिया। जब आप मक्का के क़रीब पहुँच गये तो मुश्रिकों ने आपको रोका कि आप मक्का में न आयें, आपने सफ़र जारी रखा और मिना में जाकर क़ियाम किया। आपके जासूस ने आकर आपको ख़बर दी कि इक्रिमा बिन अबू जहल पाँच सौ का लश्कर लेकर आप पर

चढ़ाई करने आ रहा है। आपने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. से फ़रमाया- ऐ ख़ालिद! तेरा चचाज़ाद भाई लश्कर लेकर आ रहा है। हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने फ़रमाया- फिर क्या हुआ? मैं ख़ुदा की तलवार हूँ और उसके रसूल की। उसी दिन से आपका लक़ब सैफ़ुल्लाह हुआ। मुझे आप जहाँ चाहें और जिसके मुक़ाबले में चाहें भेजें। चुनाँचे इक्रिमा के मुक़ाबले के लिये आप रवाना हुए। घाटी में दोनों की मुठभेड़ हुई। हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने ऐसा सख़्त हमला किया कि इक्रिमा के पाँव न जमे, उसको मक्का की गलियों तक पहुँचा कर हज़रत ख़ालिद रज़ि. वापस आ गये, लेकिन वह फिर दोबारा ताज़ा दम होकर मुक़ाबले पर आया, अब की मर्तबा भी शिकस्त खाकर मक्का की गलियों तक पहुँच गया। वह फिर तीसरी मर्तबा निकला, इस मर्तबा भी यही हश्र हुआ। इसी का बयान इस आयत में है:

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ..........الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 17 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

पस अल्लाह तआ़ला ने बावजूद हुज़ूरे पाक सल्ल. की कामयाबी व फ़तह के काफ़िरों को भी बचा लिया ताकि जो मुसलमान कमज़ोर और ज़ईफ़ मक्के में थे उन्हें इस्लामी लश्कर के हाथों कोई तकलीफ़ व नुक़सान न पहुँचे। लेकिन इस रिवायत में बहुत कुछ विचारनीय है। नामुम्किन है कि यह हुदैबिया वाले वाक़िए का बयान हो, इसलिये कि उस वक़्त तक तो हज़रत ख़ालिद मुसलमान ही न हुए थे, बल्कि मुश्रिकों के एक फ़ौजी दस्ते के यह उस दिन सरदार थे जैसा कि सही हदीस में मौजूद है। और यह भी नहीं हो सकता कि यह वाक़िआ़ उमरा-ए-क़ज़ा का हो, इसलिये कि हुदैबिया के सुलह नामे की शर्तों के मुताबिक़ यह तयशुदा बात थी कि अगले साल हुज़ूर आयें, उमरा अदा करें और तीन दिन तक मक्का में ठहरें। चुनाँचे इसी समझौते के मुताबिक़ जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो काफ़िरों ने आपको रोका नहीं, न आपसे लड़ाई झगड़ा किया। इसी तरह यह भी नहीं हो सकता कि यह वाक़िआ़ फ़त्हे-मक्का का हो, इसलिये कि फ़त्हे मक्का वाले साल आप अपने साथ क़ुरबानियाँ लेकर नहीं गये थे। उस वक़्त तो जंगी हैसियत से आप गये थे, लड़ने और जिहाद करने की नीयत से तशरीफ़ ले गये थे। पस इस रिवायत में बहुत कुछ ख़लल और इसमें ज़रूर क़बाहत हुई है। ख़ूब सोच लेना चाहिये। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के मौला हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि क़ुरैश ने अपने चालीस या पचास आदमी भेजे कि वे हुज़ूर के लश्कर के इर्द-गिर्द (आस-पास) घूमते रहें और मौक़ा पाकर कुछ नुक़सान पहुँचायें, या किसी को गिरफ़्तार करके ले आयें। यहाँ ये सारे के सारे पकड़ लिये गये। लेकिन फिर हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें माफ़ फ़रमा दिया और सब को छोड़ दिया। उन्होंने आपके लश्कर पर कुछ पत्थर भी फेंके थे और कुछ तीर भी चलाये थे। यह भी मरवी है कि एक सहाबी जिन्हें इब्ने ज़ुनैम कहा जाता था हुदैबिया के एक टीले पर चढ़े थे, मुश्रिकों ने तीर बरसाकर आपको शहीद कर दिया, हुज़ूर ने कुछ सवार उनका पीछा करने के लिये रवाना किये, वे उन सब को जो तायदाद में बारह सवार थे गिरफ़्तार करके ले आये। आपने उनसे पूछा कि तुम्हारे पास मेरी जानिब से कोई अमान है? उन्होंने कहा नहीं, पूछा कोई अ़हद व पैमान है? कहा नहीं, लेकिन फिर भी हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें छोड़ दिया और इसी बारे में यह आयत नाज़िल हुई:

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ..........الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 17 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ مَعْكُوفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ۝ ع ٣

ये वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम को मस्जिदे हराम से रोका, और (यह कि) क़ुरबानी के जानवर को, जो रुका हुआ रह गया उसके मौक़े में पहुँचने से रोका। और अगर (मक्का में उस वक़्त) बहुत-से मुसलमान मर्द और बहुत-सी मुसलमान औरतें न होतीं जिनकी तुम को ख़बर भी न थी, यानी उनके पिस जाने का अन्देशा न होता, जिस पर उनकी वजह से तुम को भी बेख़बरी से नुक़सान पहुँचता, तो सब क़िस्सा तय कर दिया जाता। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं किया गया ताकि अल्लाह अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल कर दे। अगर यह टल गए होते तो उनमें जो काफ़िर थे हम उनको दर्दनाक सज़ा देते। (25) जबकि उन काफ़िरों ने अपने दिलों में आ़र "और ग़ैरत" को जगह दी, और आ़र भी जाहिलीयत की। सो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल और मोमिनों को अपनी तरफ़ से तहम्मुल "संयम" अ़ता किया और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को तक़्वे की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज़्यादा हक़दार और उसके अहल हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (26)

काफ़िरों की हरकतें

अ़रब के मुश्रिक जो क़ुरैशी थे और जो उनके साथ इस अ़हद पर थे कि वह रसूलुल्लाह सल्ल. से जंग करेंगे, उनके बारे में क़ुरआन ख़बर देता है कि दर असल ये लोग कुफ़्र पर हैं। उन्होंने ही तुम्हें मस्जिदे हराम बैतुल्लाह शरीफ़ से रोका है, हालाँकि असली हक़दार और ज़्यादा लायक़ अल्लाह के घर के तुम ही लोग थे। फिर उनकी सरकशी और मुख़ालफ़त ने उन्हें यहाँ तक अन्धा कर दिया कि ख़ुदा की राह की क़ुरबानियों को भी क़ुरबानी के मक़ाम तक न जाने दिया। ये क़ुरबानियाँ तायदाद में सत्तर थीं जैसा कि आगे इसका बयान आ रहा है। इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

फिर फ़रमाता है कि फ़िलहाल तुम्हें लड़ाई की इजाज़त न देने में राज़ यह था कि अभी चन्द कमज़ोर मुसलमान मक्के में ऐसे हैं जो उन ज़ालिमों की वजह से न अपने ईमान को ज़ाहिर कर सके हैं न हिजरत करके तुम में मिल सके हैं, और न तुम उन्हें जानते हो। तो यूँ अगर फ़ौरन तुम्हें इजाज़त दे दी जाती और तुम मक्का वालों पर छापा मारते तो वे मुसलमान भी तुम्हारे हाथों शहीद हो जाते और बेइल्मी में ही तुम

गुनाह और दियत के मुस्तहिक़ बन जाते। पस उन काफ़िरों की सज़ा को ख़ुदा ने कुछ और पीछे हटा दिया ताकि उन कमज़ोर मुसलमानों को छुटकारा मिल जाये, और भी जिनकी क़िस्मत में ईमान है वे ईमान ला चुकें, वरना इन काफ़िरों पर अभी इसी वक़्त ग़लबा दे देते और इनका बिल्कुल ख़ात्मा कर देते। हज़रत जुनैद बिन सबीअ़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि सुबह को मैं काफ़िरों के साथ मिलकर रसूलुल्लाह सल्ल. से लड़ रहा था, लेकिन उसी शाम को अल्लाह तआ़ला ने मेरा दिल फेर दिया, मैं मुसलमान हो गया और अब हुज़ूर के साथ होकर काफ़िरों से लड़ रहा था। हमारे ही बारे में यह आयतः

لَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ........الخ.

(यानी इस सूरत की आयत नम्बर 25) नाज़िल हुई है। हम कुल नौ शख़्स थे, सात मर्द दो औरतें। (तबरानी) एक और रिवायत में है कि हम तीन मर्द थे और नौ औरतें थीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर ये मोमिन उन काफ़िरों में मिले-जुले (यानी फंसे हुए) न होते तो अल्लाह तआ़ला उसी वक़्त मुसलमानों के हाथों उन काफ़िरों को सख़्त सज़ा देता। ये क़त्ल कर दिये जाते।

फिर फ़रमाता है- जबकि ये काफ़िर अपने दिलों में जाहिलीयत के ज़माने की ग़ैरत व हमीयत जमा चुके थे, सुलह नामे में "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" लिखने से इनकार कर दिया, हुज़ूर के नाम के साथ लफ़्ज़ रसूलुल्लाह लिखवाने पर इनकार किया, पस अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त अपने नबी और मोमिनों के दिल खोल दिये, उन पर अपनी रहमत व तसल्ली नाज़िल फ़रमाकर उन्हें मज़बूत कर दिया और तक़्वे के कलिमे पर उन्हें जमा दिया, यानी ला इला-ह इल्लल्लाहु पर, जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है और जैसे कि मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में मौजूद है।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे हुक्म किया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करता रहूँ जब तक वे "ला इला-ह इल्लल्लाहु" न कह लें। जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कह लिया उसने मुझसे अपने माल को और अपनी जान को बचा लिया, हाँ मगर किसी इस्लामी क़ानून की वजह से (यानी अगर शरीअ़त के क़ानून में ही किसी का क़त्ल करना वाजिब हो तो वह और बात है)। और उसका हिसाब अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है। अल्लाह तआ़ला ने उसे अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाया। एक क़ौम की मज़म्मत (बुराई) बयान करते हुए फ़रमायाः

اِنَّهُمْ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّااللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ.

यानी जब इनसे कहा जाता था कि सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के लायक़ नहीं तो ये तकब्बुर करते थे।

अल्लाह तआ़ला जल्ल शानुहू ने यहाँ इनकी तारीफ़ बयान करते हुए यह भी फ़रमाया- यही (यानी मुसलमान) इसके ज़्यादा हक़दार और यही इसके क़ाबिल भी थे। यह कलिमा "ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है। उन्होंने इससे तकब्बुर किया और क़ुरैश के मुश्रिकों ने इसी से हुदैबिया वाले दिन तकब्बुर किया, फिर भी रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनसे एक निर्धारित समय तक के लिये सुलह नामा मुकम्मल कर लिया। इब्ने जरीर में भी यह हदीस इन ही ज़्यादतियों के साथ मरवी है, लेकिन बाज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह आख़िरी जुमले रावी के अपने हैं, यानी हज़रत ज़ोहरी रह. का अपना क़ौल है जो इस तरह बयान किया गया है कि गोया हदीस में ही है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद इख़्लास है, अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि वह कलिमा यह हैः

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर" मुराद है। यही क़ौल हज़रत इब्ने उमर रज़ि. का है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद ख़ुदा की वह्दानियत (एक होने) की शहादत (गवाही) है, जो तमाम तक़वे की जड़ है। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद "ला इला-ह इल्लल्लाहु" भी है और अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी है। हज़रत अ़ता ख़ुरासानी रह. फ़रमाते हैं कि 'कलिमा-ए-तक़वा' "ला इला-ह इल्ललललाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है। हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" मुराद है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मुराद "ला इला-ह इल्लल्लाहु" है। फिर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को बख़ूबी जानने वाला है, उसे मालूम है कि ख़ैर और भलाई का मुस्तहिक़ कौन है? और बुराई का मुस्तहिक़ कौन है? हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. की क़िराअत इस तरह है:

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَلَوْ حَمِيْتُمْ كَمَا حَمُوْا لَفَسَدَ الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ.

यानी काफ़िरों ने जिस वक़्त अपने दिल में जाहिलाना ज़िद पैदा कर ली, अगर उस वक़्त तुम भी उनकी तरह ज़िद पर आ जाते तो नतीजा यह होता कि मस्जिदे हराम में फ़साद बरपा हो जाता।

जब हज़रत उमर रज़ि. को आपकी इस क़िराअत की ख़बर पहुँची तो बहुत गुस्सा हुए लेकिन हज़रत उबई रज़ि. ने फ़रमाया- यह तो आपको भी मालूम होगा कि मैं हुज़ूर सल्ल. के पास आता-जाता रहता था और जो कुछ अल्लाह तआ़ला आपको सिखाता था आप उसमें से मुझे भी सिखाते थे। इस पर जनाब उमर फ़ारूक़ ने फ़रमाया- आप इल्म वाले और क़ुरआन के जानने वाले हैं, आपको जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने और उसके रसूल ने सिखाया वह पढ़िये और सिखाईये। (नसाई)

उन हदीसों का बयान जिनमें हुदैबिया का क़िस्सा और सुलह का वाक़िआ़ है

मुस्नद अहमद में है, हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा और हज़रत मरवान बिन हकम रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. बैतुल्लाह की ज़ियारत के इरादे से चले, आपका इरादा जंग का न था, सत्तर ऊँट क़ुरबानी के आपके साथ थे, कुल साथी आपके सात सौ थे। एक-एक ऊँट दस-दस आदमियों की तरफ़ से था, आप जब असफ़ान पहुँचे तो बशर बिन सुफ़ियान काबी रज़ि. ने आपको ख़बर दी कि या रसूलल्लाह! क़ुरैशियों ने आपके आने की ख़बर पाकर मुक़ाबले की तैयारियाँ कर ली हैं। उन्होंने ऊँटों के छोटे-छोटे बच्चे भी अपने साथ ले लिये हैं और चीते की खालें पहन ली हैं, और अ़हद व पैमान कर लिये हैं कि वे आपको इस तरह मक्का में नहीं आने देंगे। ख़ालिद बिन वलीद को उन्होंने छोटा सा लश्कर देकर कुराउल-ग़मीम तक पहुँचा दिया है। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया- अफ़सोस क़ुरैशियों को लड़ाईयों ने खा लिया, कितनी अच्छी बात होती कि वे मुझे और लोगों को छोड़ देते, अगर वे मुझ पर ग़ालिब आ जाते तो उनका मक़सूद पूरा हो जाता और अगर अल्लाह तआ़ला मुझे और लोगों पर ग़ालिब कर देता तो फिर ये लोग दीन इस्लाम को क़बूल कर लेते, और अगर उस वक़्त भी इस दीन में न आना चाहते तो मुझसे लड़ते और उस वक़्त उनकी ताक़त भी पूरी होती। क़ुरैशियों ने क्या समझ रखा है? क़सम ख़ुदा की इस दीन पर मैं उनसे

जिहाद करता रहूँगा यहाँ तक कि या तो ख़ुदा मुझे उन पर ख़ुल्लम-ख़ुल्ला ग़लबा अ़ता फ़रमा दे या मेरी गर्दन कट जाये। फिर आपने अपने लश्कर को हुक्म दिया कि दायीं तरफ़ हिमस के पीछे से उस रास्ते पर चलें जो सनीयतुल-मिरार को जाता है और हुदैबिया मक्का के नीचे के हिस्से में है। ख़ालिद वाले लश्कर ने जब देखा कि हुज़ूर सल्ल. ने रास्ता बदल दिया तो ये दौड़े हुए क़ुरैशियों के पास गये और उन्हें इसकी ख़बर दी। उधर हुज़ूरे पाक जब सनीयतुल-मिरार में पहुँचे तो आपकी ऊँटनी बैठ गयी, लोग कहने लगे ऊँटनी थक गयी, हुज़ूर ने फ़रमाया न यह थकी न इसको बैठ जाने की आ़दत है, इसे उस ख़ुदा ने रोक लिया है जिसने मक्का से हाथियों को रोक लिया था। सुनो! क़ुरैश आज मुझसे जो चीज़ माँगेंगे जिसमें सिला-रहमी हो मैं उन्हें दूँगा। फिर आपने लश्करियों को हुक्म दिया कि वे पड़ाव करें, उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! इस पूरी वादी में पानी नहीं, आपने तरकश में से एक तीर निकाल कर एक सहाबी को दिया और फ़रमाया इसे यहाँ के किसी कुएँ में गाड़ दो, उसके गाड़ते ही पानी जोश मारता हुआ उबल पड़ा। तमाम लश्कर ने पानी ले लिया और वह बराबर बढ़ता चला जा रहा था।

जब पड़ाव हो गया और इत्मीनान से बैठ गये, इतने में बुदैल बिन वरक़ा अपने साथ क़बीला ख़ुज़ाआ़ के चन्द लोगों के लेकर आया, आपने उससे भी वही फ़रमाया जो बशर बिन सुफ़ियान से फ़रमाया था। चुनाँचे यह लोग गये और जाकर क़ुरैश से कहा कि तुम लोगों ने हुज़ूर सल्ल. के बारे में बड़ी जल्दबाज़ी की, हुज़ूर तुमसे लड़ने नहीं आये, आप तो सिर्फ़ बैतुल्लाह की ज़ियारत करने को आये हैं। तुम अपने फ़ैसले पर दोबारा नज़र डालो। दर असल क़बीला-ए-ख़ुज़ाआ़ के मुस्लिम व काफ़िर रसूलुल्लाह सल्ल. के तरफ़दार थे, मक्का की ख़बरें उन्हीं लोगों से आपको पहुँचा करती थीं। क़ुरैशियों ने जवाब दिया कि अगरचे आप इसी इरादे से आये हों लेकिन यूँ अचानक तो हम उन्हें यहाँ आने नहीं देंगे, वरना लोगों में तो यही बातें होंगी कि आप मक्का में गये और कोई आपको रोक न सका। उन्होंने फिर मिक्रज़ बिन हफ़्स को भेजा, यह बनू आ़मिर बिन लुई के क़बीले में से था, उसे देखकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- यह अ़हद तोड़ने वाला शख़्स है और इससे भी आपने वही फ़रमाया जो उससे पहले आने वाले दोनों शख़्सों से फ़रमाया था। यह भी लौट गया और जाकर क़ुरैशियों से सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया। क़ुरैशियों ने फिर हुलैस बिन अ़ल्क़मा किनानी को भेजा, यह इधर उधर के लोगों का सरदार था उसे देखकर हुज़ूर ने फ़रमाया यह उस क़ौम से है जो ख़ुदाई कामों की अ़ज़्मत (इज़्ज़त व अदब) करती है। अपनी क़ुरबानी के जानवरों को खड़ा कर दो, उसने जो देखा कि हर तरफ़ से क़ुरबानी के निशान लगे हुए जानवर आ रहे हैं और रुक जाने के सबब उनके बाल उड़े हुए हैं तो यह वहीं से बग़ैर हुज़ूर सल्ल. के पास आये लौट गया और जाकर क़ुरैश से कहा कि ख़ुदा जानता है तुम्हें हलाल नहीं कि तुम उन्हें बैतुल्लाह से रोको, ख़ुदा के नाम के जानवर क़ुरबानी के मक़ाम से रुके खड़े हैं, यह सख़्त ज़ुल्म है। इतने दिन रुके रहने से उनके बाल तक उड़ गये हैं, मैं अपनी आँखों से देखकर आ रहा हूँ। क़ुरैश ने कहा तू तो एक दम गंवार है, ख़ामोश होकर बैठ जा।

अब उन्होंने मश्विरा करके उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी को भेजा। उरवा ने अपने जाने से पहले कहा कि ऐ क़ुरैशियो! जिनको तुमने वहाँ भेजा वे जब वापस आये तो उनसे तुमने क्या सुलूक किया, यह मैं देख रहा हूँ। तुमने उन्हें बुरा कहा, उनकी बेइज़्ज़ती की, उन पर तोहमत रखी, उनसे बदगुमानी की, मेरा हाल तुम्हें मालूम है कि में तुम्हें बाप की जगह समझता हूँ। तुम ख़ूब जानते हो कि जब तुमने हाय-वाय की मैंने अपनी तमाम क़ौम को इकट्ठा किया और जिसने मेरी बात मानी मैंने उसे अपने साथ लिया और तुम्हारी मदद के लिये अपनी जान माल और अपनी क़ौम को लेकर आ पहुँचा। सब ने कहा बेशक आप सच्चे हैं,

आप से किसी क़िस्म की बदगुमानी नहीं, आप जाईये।

अब यह चला और हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में पहुँचकर आपके सामने बैठकर कहने लगा कि आपने इधर-उधर के कुछ लोगों को जमा कर लिया है और आये हैं अपनी क़ौम की शान व शौकत को आप ही तोड़ने के लिये, सुनिये ये क़ुरैशी पक्का इरादा कर चुके हैं और छोटे-छोटे बच्चे भी उनके साथ हैं जो चीतों की खालें पहने हुए हैं, वे ख़ुदा को बीच में रखकर अ़हद व पैमान कर चुके हैं कि हरगिज़ आपको इस तरह अचानक ज़बरदस्ती मक्का में नहीं आने देंगे। ख़ुदा की क़सम मुझे तो ऐसा नज़र आता है कि ये लोग जो इस वक़्त भीड़ लगाये आपके इर्द-गिर्द खड़े हुए हैं ये लड़ाई के वक़्त ढूँढे भी न मिलेंगे। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से न रहा गया, आप उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. के पीछे बैठे हुए थे, आपने इब्ने मसऊद को उनके इस अन्दाज़े गुफ़्तगू पर तंबीह की, फ़रमाया- हम और रसूलुल्लाह सल्ल. को छोड़कर भाग खड़े हों? उरवा ने हुज़ूर से पूछा कि यह कौन है? आपने फ़रमाया अबू क़हाफ़ा के बेटे। कहने लगा अगर मुझ पर तेरा एहसान पहले का न होता तो मैं ज़रूर तुझे इसका मज़ा चखाता। उसके बाद उरवा ने फिर कुछ कहने के लिये रसूलुल्लाह सल्ल. की दाढ़ी में हाथ डाला, उसकी इस बेअदबी को हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. बरदाश्त न कर सके, यह हुज़ूर के पास ही खड़े हुए थे, लोहा उनके हाथ में था, वही उसके हाथ पर मारकर फ़रमाया- अपना हाथ दूर रख, तू हुज़ूर सल्ल. के जिस्म को छू नहीं सकता। यह कहने लगा तू बड़ा ही बदज़बान और टेढ़ा आदमी है। हुज़ूरे पाक ने इस पर तबस्सुम फ़रमाया, उसने पूछा यह कौन है? आपने फ़रमाया यह तेरा भतीजा मुग़ीरा बिन शोबा है। कहने लगा ग़द्दार तू तो कल तक तहारत (पाकी) भी न जानता था (यानी छोटा सा था)।

ग़र्ज़ कि इसे भी हुज़ूर सल्ल. ने वही जवाब दिया जो इससे पहले वालों को दिया था और यक़ीन दिला दिया कि हम लड़ने के लिये नहीं आये। यह वापस चला और इसने यहाँ का नक़्शा देखा था कि रसूले पाक के सहाबा किस तरह हुज़ूर के परवाने बने हुए हैं। आपके वुज़ू का पानी वे हाथों हाथ लेते हैं, आपके थूक को अपने हाथों में लेने के लिये वे एक दूसरे से आगे बढ़ते हैं, आपका कोई बाल गिर पड़े तो हर शख़्स लपकता है कि वह उसे ले ले। जब यह क़ुरैशियों के पास पहुँचा तो कहने लगा ऐ क़ुरैश की जमाअ़त के लोगो! मैं किसरा (ईरान के बादशाह) के यहाँ उसके दरबार में और नजाशी के यहाँ उसके दरबार में हो आया हूँ ख़ुदा की क़सम मैंने उन बादशाहों की भी वह अ़ज़मत और वह एहतिराम नहीं देखा जो मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का देखा है। आपके सहाबा तो आपकी वह इज़्ज़त करते हैं कि उससे ज़्यादा नामुम्किन है। अब तो सोच लो और इस बात को याद कर लो कि उनके सहाबा ऐसे नहीं कि अपने नबी को तुम्हारे हाथों में दे दें।

अब आपने हज़रत उमर रज़ि. को बुलाया और उन्हें मक्का वालों के पास भेजना चाहा, लेकिन इससे पहले यह वाक़िआ हो चुका था कि आपने एक मर्तबा हज़रत ख़राश बिन उमैया ख़ुज़ाई रज़ि. को अपने ऊँट पर जिसका नाम सालब था, सवार कराकर मक्का भेजा था, क़ुरैश ने उस ऊँट की कोचें काट दी थीं और ख़ुद क़ासिद को भी क़त्ल कर डालते लेकिन अहाबीशे क़ौम ने उन्हें बचा लिया (शायद इस बिना पर) हज़रत उमर रज़ि. ने जवाब में कहा- या रसूलल्लाह! मुझे तो डर है कि कहीं ये लोग मुझे क़त्ल न कर दें, क्योंकि वहाँ मेरे क़बीले बनू अ़दी का कोई शख़्स नहीं जो मुझे उन क़ुरैशियों से बचाने की कोशिश करे, इसलिये क्या अच्छा हो कि आप उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान को भेजें, जो उनकी निगाहों में मुझसे बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व सम्मान वाले हैं। चुनाँचे आपने हज़रत उस्मान को बुलाकर उन्हें मक्का में भेजा कि जाकर क़ुरैश से कह दें

कि हम लड़ने के लिये नहीं आये, बल्कि सिर्फ़ बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और उसकी अ़ज़्मत बढ़ाने को आये हैं। हज़रत उस्मान रज़ि. ने शहर में क़दम रखा ही था कि अबान बिन सईद बिन आ़स उनको मिल गया और अपनी सवारी से उतरकर हज़रत उस्मान को आगे बैठाया और ख़ुद पीछे बैठा और अपनी ज़िम्मेदारी पर आपको ले चला कि आप पैग़ामे रसूल अहले मक्का को पहुँचा दें। चुनाँचे आप वहाँ गये और क़ुरैश को यह पैग़ाम पहुँचा दिया। उन्होंने कहा कि आप तो आ ही गये हैं अगर चाहें तो बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर लें लेकिन हज़रत उस्मान ने जवाब दिया कि जब तक हुज़ूर सल्ल. तवाफ़ न कर लें नामुम्किन है कि मैं तवाफ़ करूँ। क़ुरैशियों ने हज़रत उस्मान को रोक लिया और उन्हें वापस न जाने दिया। उधर लश्करे इस्लाम में यह ख़बर पहुँची कि हज़रत उस्मान को शहीद कर दिया गया है।

इमाम ज़ोहरी रह. की रिवायत में है कि फिर क़ुरैशियों ने सुहैल बिन अ़मर को आपके पास भेजा कि जाकर सुलह कर लो, लेकिन यह ज़रूरी है कि इस साल आप मक्का में नहीं आ सकते ताकि अ़रब के लोग हमें यह ताना न दे सकें कि वे आये और तुम रोक न सके। चुनाँचे सुहैल यह पैग़ाम लेकर चला, जब हुज़ूर सल्ल. ने उसे देखा तो फ़रमाया- मालूम होता है कि क़ुरैशियों का इरादा अब सुलह का हो गया जो इसे भेजा है। उसने हुज़ूर सल्ल. से बातें शुरू कीं और देर तक सवाल व जवाब और बातचीत होती रही, सुलह की शर्तें तय हो गयीं, सिर्फ़ लिखना बाक़ी रहा। हज़रत उमर रज़ि. दौड़े हुए हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के पास गये और फ़रमाने लगे- क्या हम मुसलमान नहीं हैं? क्या ये लोग मुश्रिक नहीं हैं? आपने जवाब दिया कि हाँ। कहा फिर क्या सबब है कि हम दीनी मामलात में इतनी कमज़ोरी दिखायें। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने फ़रमाया- उमर अल्लाह के रसूल की रकाब थामे रहो। आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। हज़रत उमर रज़ि. से फिर भी सब्र न हो सका, ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसी तरह कहा। आपने जवाब में फ़रमाया सुनो मैं ख़ुदा का रसूल हूँ और उसका ग़ुलाम हूँ मैं उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं कर सकता और मुझे यक़ीन है कि वह मुझे ज़ाया न करेगा।

हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि कहने को तो मैं उस वक़्त जोश में हुज़ूरे पाक से यह सब कुछ कह गया लेकिन फिर मुझे बड़ी शर्मिन्दगी हुई। मैंने इसके बदले बहुत से रोज़े रखे, बहुत सी नमाज़ें पढ़ीं और बहुत से ग़ुलाम आज़ाद किये इससे डरकर कि मुझे इस गुस्ताख़ी की कोई सज़ा ख़ुदा की तरफ़ से न हो। रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. को सुलह-नामा लिखने के लिये बुलवाया और फ़रमाया लिखो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"। इस पर सुहैल ने कहा मैं इसे नहीं जानता हूँ, लिखिये- "बिस्मिकल्लाहुम्-म" आपने फ़रमाया अच्छा यूँही लिखो। फिर फ़रमाया लिखो यह वह सुलह-नामा है जो मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और सुहैल बिन अ़मर ने किया, इस बात पर कि दस साल तक हम में कोई लड़ाई न होगी, लोग अमन व अमान से रहेंगे, एक दूसरे से बचा हुआ रहेगा और यह कि जो शख़्स मुहम्मद के पास अपने वली की इजाज़त के बग़ैर चला जायेगा आप उसे वापस लौटा देंगे और जो उनका सहाबी क़ुरैशियों के पास चला जायेगा वे उसे नहीं लौटायेंगे। हम में आप में लड़ाईयाँ बन्द रहेंगी, सुलह क़ायम रहेगी, कोई तौक़ व ज़न्जीर, क़ैद और बन्दिश भी न होगी। इसी में एक शर्त यह भी है कि जो शख़्स मुहम्मद की जमाअ़त और आपके अ़हद व पैमान में आना चाहे वह भी आ सकता है। इस पर बनू ख़ुज़ाआ़ जल्दी से बोल उठे कि हम रसूलुल्लाह सल्ल. के अ़हद व पैमान में आये हैं और बनू बक्र ने कहा कि हम क़ुरैशियों के साथ उनके ज़िम्मे में हैं।

सुलह नामे में यह भी था कि इस साल आप वापस लौट जायें, मक्का में न आयें। अगले साल आयें

उस वक़्त हम बाहर निकल जायेंगे और अपने सहाबा समेत आयें, तीन दिन मक्का में ठहरें, हथियार उतने ही हों जितने एक सवारी के पास होते हैं, तलवारें म्यान में हों। अभी सुलह नामा लिखा जा रहा था कि सुहैल के लड़के हज़रत अबू जन्दल रज़ि. लोहे की भारी ज़न्जीरों में जकड़े हुए गिरते पड़ते मक्का से भागकर रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हो गये। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मदीने से निकलते हुए ही फ़तह का यक़ीन किये हुए थे, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल. ख़्वाब में देख चुके थे इसलिये उन्हें फ़तह होने में ज़रा सा भी शक न था। यहाँ आकर उन्होंने जो यह रंग देखा कि सुलह हो रही है और बग़ैर तवाफ़ के बग़ैर ज़ियारते बैतुल्लाह के यहीं से वापस होना पड़ेगा, बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल. अपने नफ़्स पर मशक़्क़त उठाकर सुलह कर रहे हैं तो इससे वे बहुत ही मायूस और ग़मगीन थे।

यह सब कुछ तो था ही इस पर अतिरिक्त यह कि जब हज़रत अबू जन्दल रज़ि. जो मुसलमान थे और जिन्हें मुश्रिकों ने क़ैद कर रखा था, और जिन पर तरह-तरह के ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ रहे थे, यह सुनकर कि हुज़ूर आये हुए हैं किसी न किसी तरह मौक़ा पाकर भाग आते हैं और तौक़ व ज़न्जीर में जकड़े हुए हाज़िर होते हैं तो सुहैल उठकर उन्हें तमाँचे मारने शुरू कर देता है और कहता है ऐ मुहम्मद! मेरे और आपके बीच समझौता हो चुका है, यह उसके बाद आया है लिहाज़ा इस शर्त के मुताबिक़ मैं इसे वापस ले जाऊँगा। आप जवाब देते हैं कि हाँ ठीक है। सुहैल खड़ा होता है और हज़रत अबू जन्दल रज़ि. के गिरेबान में हाथ डालकर घसीटता हुआ उन्हें लेकर चलता है। हज़रत अबू जन्दल रज़ि. बुलन्द आवाज़ से कहते हैं ऐ मुसलमानो! मुझे मुश्रिकों की तरफ़ लौटा रहे हो? हाय ये मेरा दीन मुझसे छीनना चाहते हैं।

इस वाक़िए ने सहाबा को और उत्तेजित कर दिया। रसूलुल्लाह सल्ल. ने अबू जन्दल रज़ि. से फ़रमाया- अबू जन्दल! सब्र कर, नेक नीयत रह और सवाब की तलब में रह, न सिर्फ़ तेरे लिये ही बल्कि तुझ जैसे जितने कमज़ोर मुसलमान हैं उन सबके लिये अल्लाह तआ़ला रास्ता निकालने वाला है, और तुम सबको इस दर्द व ग़म, रंज व दुख, ज़ुल्म व सितम से छुटकारा देने वाला है। हम चूँकि सुलह कर चुके हैं, शर्तें तय हो चुकी हैं, इस बिना पर हमने तुम्हें फ़िलहाल वापस कर दिया है, हम शराईत के ख़िलाफ़ करना, अ़हद तोड़ना नहीं चाहते। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. हज़रत अबू जन्दल रज़ि. के साथ-साथ जाने लगे और कहते जाते थे कि अबू जन्दल सब्र करो, इनमें रखा ही क्या है? ये मुश्रिक लोग हैं इनका ख़ून कुत्ते के ख़ून जैसा है। हज़रत उमर रज़ि. साथ ही साथ अपनी तलवार की मूठ हज़रत अबू जन्दल की तरफ़ करते जा रहे थे कि वह तलवार खींच लें और एक ही वार में बाप का काम तमाम करें। लेकिन हज़रत अबू जन्दल का हाथ बाप पर न उठा, सुलह नामा मुकम्मल हो गया, फ़ैसला पूरा हो गया, रसूलुल्लाह सल्ल. हरम में नमाज़ पढ़ने और हलाल जगह में बेबस थे। फिर हुज़ूर सल्ल. ने लोगों से फ़रमाया- उठो अपनी-अपनी क़ुरबानियाँ कर लो और सर मुण्डवा लो, लेकिन एक भी खड़ा न हुआ, तीन मर्तबा ऐसा ही हुआ (यानी यह नाफ़रमानी नहीं थी, बल्कि ग़म व मायूसी में सहाबा के जैसे होश ही ठिकाने न थे, सोच रहे थे यह क्या हो गया)।

आप सल्ल. लौटकर उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा (अपनी पाक बीवी) के पास गये और फ़रमाने लगे लोगों को यह क्या हो गया? उन्होंने जवाब दिया या रसूलल्लाह! इस वक़्त जिस क़द्र सदमे में ये हैं आपको अच्छी तरह मालूम है। आप उनसे कुछ न कहिये, सीधे अपनी क़ुरबानी के जानवर के पास जाईये और उसे जहाँ वह हो वहीं क़ुरबान कर दीजिए और ख़ुद सर मुण्डवा लीजिए फिर तो मुम्किन है कि और लोग भी करें। आपने यही किया, अब क्या था, हर-हर शख़्स उठ खड़ा हुआ, क़ुरबानी को क़ुरबान किया और सर मुण्डवा लिया। अब आप यहाँ से वापस चले, आधा रास्ता तय किया होगा कि सूरः फ़तह नाज़िल हुई। यह

रिवायत सही बुख़ारी शरीफ़ में भी है, इसमें है कि आपके सामने एक हज़ार कई सौ सहाबा थे, जुल-हुलैफ़ा पहुँचकर आपने क़ुरबानी के ऊँटों को निशान लगाया, उमरे का एहराम बाँधा और अपने एक जासूस को जो क़बीला-ए-ख़ुज़ाआ में से था तफ़्तीश के लिये रवाना किया। ग़दीरे अशतात में आकर उसने ख़बर दी कि क़ुरैश ने पूरा मजमा तैयार कर लिया है, इधर उधर के मुख़्तलिफ़ लोगों को भी उन्होंने जमा कर लिया है और उनका इरादा लड़ाई का और आपको बैतुल्लाह से रोकने का है। आपने अपने सहाबा से फ़रमाया- अब बतलाओ क्या हम उनके अहल व अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) पर हमला कर दें? अगर वे हमारे पास आयेंगे तो या तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी गर्दन काट दी होगी, वरना हम उन्हें ग़मगीन छोड़कर जायेंगे। अगर बैठ रहेंगे तो इस ग़म व रंज में रहेंगे। और अगर उन्होंने निजात पा ली तो ये गर्दनें होंगी जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने काट दी होंगी। देखो तो भला कितना ज़ुल्म है कि हम न किसी से लड़ने को आये न किसी और इरादे से आये, सिर्फ़ ख़ुदा के घर की ज़ियारत के लिये जा रहे हैं और वे हमें रोक रहे हैं। बतलाओ उनसे हम क्यों न लड़ें? इस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! आप बैतुल्लाह की ज़ियारत को निकले हैं, आप चले चलिये, हमारा इरादा लड़ाई-झगड़े का नहीं, लेकिन जो हमें ख़ुदा के घर से रोकेगा हम उससे ज़रूर लड़ेंगे चाहे कोई हो। आपने फ़रमाया बस अब अल्लाह का नाम लो और चल खड़े होओ।

कुछ और आगे चलकर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ालिद बिन वलीद लश्कर लेकर आ रहा है पस तुम दायीं तरफ़ को हो लो, ख़ालिद को इसकी ख़बर भी न हुई और हुज़ूर मय सहाबा के उनके किल्ले (ठिकाने) पर पहुँच गये। अब ख़ालिद दौड़ा हुआ क़ुरैशियों में पहुँचा और उन्हें इससे अवगत कराया, ऊँटनी का नाम इस रिवायत में क़सवा बयान हुआ है, इसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने जब यह फ़रमाया कि जो कुछ वह मुझ से तलब करेंगे मैं दूँगा बशर्ते कि अल्लाह की शान में कोई बेअदबी न हो, फिर जो आपने ऊँटनी को ललकारा तो वह फ़ौरन खड़ी हो गयी, बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई रसूले ख़ुदा सल्ल. के पास से जाकर क़ुरैशियों को जब जवाब पहुँचाता है तो उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी खड़े होकर अपना परिचय करा कर जो पहले बयान हो चुका, यह भी कहता है कि देखो उस शख़्स ने निहायत माक़ूल और मुनासिब बात कही है, उसे क़बूल कर लो, और जब यह ख़ुद आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर आपका यही जवाब आपके मुँह से सुनता है तो आप से कहता है कि सुनिये जनाब! दो ही बातें हैं- या तो आप ग़ालिब वे मग़लूब या वे ग़ालिब आप मग़लूब, अगर पहली बात ही हुई तो भी क्या हुआ, आप ही की क़ौम है, आपने किसी को ऐसा सुना भी है कि जिसने अपनी क़ौम का सत्यानास किया हो? और अगर दूसरी बात हो गयी तो ये जितने आपके पास हैं मैं तो देखता हूँ कि सारे ही आपको छोड़कर भाग जायेंगे। इस पर हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने वह जवाब दिया जो पहले गुज़र चुका।

हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले बयान में यह भी है कि उनके हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ुद (लोहे का टोप) था, उनके मारने पर उरवा ने कहा- ग़द्दार! मैंने तो तेरी ग़द्दारी में तेरा साथ दिया था। बात यह है कि पहले यह जाहिलीयत के ज़माने में काफ़िरों के एक गिरोह के साथ थे, मौक़ा पाकर उन्हें क़त्ल कर डाला और उनका माल लेकर हुज़ूरे पाक के पास हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया तुम्हारा इस्लाम तो मैं मन्ज़ूर करता हूँ लेकिन इस माल से मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं। उरवा ने यहाँ यह मन्ज़र भी ख़ुद अपनी आँख से देखा कि आप थूकते हैं तो कोई न कोई सहाबी लपक कर उसे अपने हाथों में ले लेता है और अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता है। आपके होंठों से कोई बात निकलती है तो फ़रमाँबरदारी के लिये

Maktab-E-Ashraf

एक से एक आगे बढ़ता है। जब आप वुज़ू करते हैं तो आपके बदन के हिस्सों से गिरे हुए पानी पर तो क़रीब होता है कि सहाबा लड़ पड़ें। जब आप बात करते हैं तो बिल्कुल सन्नाटा हो जाता है, अदब व सम्मान का यह हाल है कि सहाबा आँख भरकर आपके चेहरा-ए-अनवर की तरफ़ तकते ही नहीं बल्कि नीची निगाहों से हर वक़्त अदब के साथ रहते हैं।

उसने फिर वापस आकर यही हाल क़ुरैश वालों को सुनाया और कहा कि मुहम्मद जो इन्साफ़ व अ़दल की बात पेश कर रहे हैं उसे मान लो। बनू किनाना के जिस शख़्स को उसके बाद क़ुरैश ने भेजा उसे देखकर हुज़ूरे अकरम सल्ल. ने फ़रमाया- ये लोग क़ुरबानी के जानवरों की बड़ी ताज़ीम करते हैं इसलिये क़ुरबानी के जानवरों को खड़ा कर दो और उसकी तरफ़ हाँक दो। उसने जो यह मन्ज़र देखा, उधर सहाबा की ज़बान से लब्बैक की आवाज़ें सुनीं तो कह उठा कि इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना बहुत ही बेहूदा हरकत है। उसमें यह भी है कि मिक्रज़ को देखकर आपने फ़रमाया- यह एक ताजिर शख़्स है, अभी यह बैठा बातें कर ही रहा था कि सुहैल आ गया। उसे देखकर हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा से फ़रमाया लो अब काम सहल (आसान) हो गया। उसने जब "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" लिखने पर एतिराज़ किया तो आपने फ़रमाया- वल्लाह मैं रसूलुल्लाह ही हूँ अगरचे तुम न मानो। यह इस वजह से कि जब आपकी ऊँटनी बैठ गयी तो आपने कह दिया था कि यह अल्लाह की यादगारों और निशानियों व अहकाम की इ़ज़्ज़त रखते हुए मुझसे जो कहेंगे मैं मन्ज़ूर कर लूँगा।

आपने सुलह नामा लिखवाते हुए फ़रमाया- इस साल हमें ये बैतुल्लाह की ज़ियारत कर लेने देंगे लेकिन सुहैल ने कहा यह हमें मन्ज़ूर नहीं, वरना लोग कहेंगे कि हम दब गये और कुछ न कर सके। जब यह शर्त हो रही थी कि जो काफ़िर उनमें से मुसलमान होकर हुज़ूर के पास चला जाये आप उसे वापस दे देंगे, इस पर मुसलमानों ने कहा- सुब्हानल्लाह यह कैसे हो सकता है कि वह मुसलमान होकर आये और हम उसे काफ़िरों को सौंप दें? ये बातें हो रही थीं कि हज़रत अबू जन्दल रज़ि. अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए आ गये। सुहैल ने कहा- इसे वापस कीजिए। आपने फ़रमाया अभी तक सुलह नामा मुकम्मल नहीं हुआ, मैं इसे कैसे वापस कर दूँ? उसने कहा फिर तो ख़ुदा की क़सम मैं किसी तरह और किसी भी शर्त पर सुलह करने को रज़ामन्द नहीं हूँ। आपने फ़रमाया तुम ख़ुद मुझे ख़ास इस बारे में इजाज़त दे दो, उसने कहा मैं इसकी इजाज़त भी आपको नहीं दूँगा। आपने दोबारा फ़रमाया लेकिन उसने फिर भी इनकार कर दिया, अगरचे मिक्रज़ ने कहा हाँ हम आपको इसकी इजाज़त देते हैं। उस वक़्त हज़रत अबू जन्दल रज़ि. ने मुसलमानों से फ़रियाद की, उन बेचारों को मुश्रिक लोग बड़ी सख़्त संगीन सज़ायें दे रहे थे, इस पर हज़रत उमर रज़ि. हाज़िरे ख़िदमत हुए और वह कहा जो पहले गुज़र चुका। फिर पूछा क्या आपने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह में जायेंगे और उसका तवाफ़ भी करेंगे? आपने फ़रमाया हाँ यह तो मैंने कहा था लेकिन यह तो नहीं कहा था कि यह इसी साल होगा। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा कि हाँ यह तो आपने नहीं फ़रमाया था। आपने फ़रमाया बस तो तुम वहाँ जाओगे ज़रूर और बैतुल्लाह का तवाफ़ करोगे ज़रूर।

हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पास आया और वही कहा जिसका बयान ऊपर गुज़रा। उसमें इतना और है कि क्या हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा के रसूल नहीं? इसके जवाब में हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया हाँ। फिर मैंने हुज़ूर की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) का इसी तरह ज़िक्र किया और वही जवाब मिला जो ज़िक्र हुआ। जवाब ख़ुद रसूले करीम सल्ल. ने दिया था। इस रिवायत में यह भी है कि जब हुज़ूर ने अपने हाथ से अपने ऊँट को ज़िबह किया और नाई को बुलवाकर सर मुण्डवा लिया

फिर तो सब सहाबा एक साथ खड़े हो गये और क़ुरबानियों से फ़ारिग़ होकर एक दूसरे का सर ख़ुद मूँडने लगे और मारे ग़म और भीड़ के क़रीब था कि आपस में लड़ पड़ें। उसके बाद ईमान वाली औरतें हुज़ूर सल्ल. के पास आयीं जिनके बारे में यह आयत नाज़िल हुईः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ......... الخ.

(यानी सूरः मुम्तहिना की आयत नम्बर 10)

और हज़रत उमर रज़ि. ने इस हुक्म के मातहत अपनी दो मुशरिक बीवियों को उसी दिन तलाक़ दे दी जिनमें से एक ने मुआविया बिन सुफ़ियान से निकाह कर लिया और दूसरी ने सफ़वान बिन उमैया से निकाह कर लिया। हुज़ूर सल्ल. यहीं से वापस लौटकर मदीना शरीफ़ गये। अबू बसीर नाम के एक क़ुरैशी जो मुसलमान थे मौक़ा पाकर मक्का से निकल कर रसूलुल्लाह सल्ल. के पास मदीना शरीफ़ पहुँचे, उनके पीछे ही दो काफ़िर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि अ़हद नामे की बिना पर इस शख़्स को आप वापस कीजिए, हम क़ुरैशियों के भेजे हुए क़ासिद हैं और अबू बसीर को वापस लेने के लिये आये हैं। आपने फ़रमाया अच्छी बात है, मैं इसे वापस कर देता हूँ। चुनाँचे आपने हज़रत अबू बसीर को उन्हें सौंप दिया। ये उन्हें लेकर चले। जब ज़ुल-हुलैफ़ा पहुँचे और बेफ़िक्री से वहाँ खजूरें खाने लगे तो हज़रत अबू बसीर रज़ि. ने उनमें से एक शख़्स से कहा वल्लाह मैं देख रहा हूँ कि आपकी तलवार निहायत ही उम्दा है। उसने कहा हाँ बेशक बहुत ही अच्छे लोहे की है। मैंने बहुत बार इसका तजुर्बा कर लिया है, इसकी काट का क्या पूछना है। यूँ कहते हुए उसने तलवार म्यान से निकाल ली। हज़रत अबू बसीर रज़ि. ने हाथ बढ़ाकर कहा ज़रा मुझे दिखाना, उसने दे दी, आपने हाथ में लेते ही तौलकर एक ही हाथ में एक काफ़िर का तो काम तमाम किया, दूसरा इस मन्ज़र को देखते ही मुट्ठियाँ बन्द करके ऐसा बेतहाशा भागा कि सीधा मदीना पहुँचकर दम लिया। उसे देखते ही हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया यह बड़ी घबराहट में है, कोई ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख चुका है। इतने में यह क़रीब पहुँच गया और दुहाईयाँ देने लगा कि ऐ मुहम्मद! मेरा साथी तो मार डाला गया और मैं भी अब थोड़ी देर का ही मेहमान हूँ। देखिये वह आया। इतने में हज़रत अबू बसीर रज़ि. पहुँच गये और अ़र्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आपके ज़िम्मे को पूरा कर दिया, आपने अपने वायदे के मुताबिक़ मुझे इनके हवाले कर दिया, अब यह अल्लाह तआ़ला की करीमी है कि उसने मुझे इनसे रिहाई दिलवाई। आपने फ़रमाया अफ़सोस यह कैसा शख़्स है? यह तो लड़ाई की आग को भड़काने वाला है, काश कि कोई इसे समझा देता। यह सुनते ही हज़रत अबू बसीर चौंक गये कि मालूम होता है आप शायद मुझे दोबारा मुश्रिकों के हवाले कर देंगे। यह सोचते ही हुज़ूर के पास से चले गये। मदीने को अलविदा कहा और लम्बे क़दमों समन्दर के किनारे की तरफ़ चल दिये और वहीं रहना-सहना इख़्तियार कर लिया।

यह वाक़िआ मशहूर हो गया। उधर से अबू जन्दल बिन सुहैल रज़ि. जिन्हें हुदैबिया में इसी तरह रसूले ख़ुदा सल्ल. ने वापस किया था, वह भी मौक़ा पाकर फिर मक्का से भाग खड़े हुए और डायरेक्ट हज़रत अबू बसीर रज़ि. के पास चले आये। अब यह हुआ कि मक्का के मुश्रिकों में से जो भी ईमान क़बूल करता सीधा हज़रत अबू बसीर रज़ि. के पास आ जाता और यहीं रहता-सहता, यहाँ तक कि एक अच्छी-ख़ासी माक़ूल जमाअ़त ऐसे ही लोगों की यहाँ जमा हो गयी और उन्होंने यह करना शुरू किया कि क़ुरैशियों का जो क़ाफ़िला शाम की तरफ़ जाने के लिये निकलता ये उससे जंग करते, जिसमें क़ुरैशी काफ़िर क़त्ल भी हुए

Maktab E Ashraf

और उनके माल भी इन मुहाजिर मुसलमानों के हाथ लगे। यहाँ तक कि क़ुरैशी तंग आ गये, आख़िरकार उन्होंने पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में आदमी भेजा कि हुज़ूर! ख़ुदा के वास्ते हम पर रहम फ़रमाकर उन लोगों को वहाँ से अपने पास बुलवा लीजिए हम उन सबसे हाथ उठाते हैं, उनमें से जो भी आपके पास आ जाये वह अमन में है, हम आपको अपनी रिश्तेदारियाँ याद दिलाते हैं और ख़ुदा का वास्ता देते हैं कि उन्हें अपने पास बुलवा लीजिये। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने इस दरख़्वास्त को मन्ज़ूर फ़रमा लिया और आदमी भेजकर उन सब हज़रात को अपने पास बुलवा लिया और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईः

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ........الخ.

(यानी सूरः फ़तह की आयत नम्बर 24)

उन काफ़िरों की जाहिलीयत की आ़र और ग़ैरत यह थी कि उन्होंने "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" न लिखने दी। आपके नाम के साथ "रसूलुल्लाह" न लिखने दिया। आपको बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत न करने दी। सही बुख़ारी शरीफ़ की किताबुत्तफ़सीर में है, हबीब बिन अबू साबित रह. कहते हैं कि मैं अबू वाईल के पास गया ताकि उनसे पूछूँ। उन्होंने कहा कि हम सिफ़्फ़ीन में थे, एक शख़्स ने कहा क्या तूने उन्हें नहीं देखा कि वे किताबुल्लाह की तरफ़ बुलाये जाते हैं। पस हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब रज़ि. ने फ़रमाया हाँ। पस सहल बिन हुनैफ़ ने कहा- अपनी जानों पर तोहमत रखो, हमने अपने आपको हुदैबिया वाले दिन देखा, यानी उस सुलह के मौक़े पर जो नबी सल्ल. और मुश्रिकों के बीच हुई थी, अगर हमारी राय लड़ने की होती तो हम यक़ीनन लड़ते। हज़रत उमर ने आकर कहा कि क्या हम हक़ पर और वे बातिल पर नहीं? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ। कहा फिर हम क्यों अपने दीन में झुक जायें और लौट जायें हालाँकि अब तक ख़ुदा तआ़ला ने हममें और उनमें फ़ैसला करने वाली कार्रवाई नहीं की। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया ऐ इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूँ वह मुझे कभी भी ज़ाया न करेगा। यह जवाब सुनकर हज़रत उमर रज़ि. लौट आये, लेकिन बहुत ग़ुस्से में थे। वहाँ से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के पास आये और यही सवाल व जवाब यहाँ भी हुए और सूरः फ़तह नाज़िल हुई।

बाज़ रिवायतों में हज़रत सहल बिन हुनैफ़ के ये अलफ़ाज़ भी हैं कि मैंने ख़ुद अबू जन्दल वाले दिन देखा कि अगर मुझ में रसूलुल्लाह सल्ल. के हुक्म को लौटाने की क़ुदरत होती तो मैं यक़ीनन लौटा देता। उसमें यह भी है कि जब सूरः फ़तह उतरी तो हुज़ूर ने हज़रत उमर रज़ि. को बुलाकर यह सूरत उन्हें सुनाई। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि जिस वक़्त यह शर्त तय हुई कि उनका आदमी उन्हें वापस किया जाये और हमारा आदमी वापस न करें तो हुज़ूर से कहा गया कि क्या हम यह भी मान लें और लिख दें? आपने फ़रमाया हाँ, इसलिये कि हममें से जो उनमें जाये ख़ुदा उसे हम से दूर ही रखे। (मुस्लिम)

मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब ख़ारजी निकल खड़े हुए और उन्होंने अलगाव इख़्तियार किया तो मैंने उनसे कहा- रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुदैबिया वाले दिन जब मुश्रिकों से सुलह की तो हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया ऐ अ़ली! लिख ये वे सुलह की शर्तें हैं जिन पर अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने सुलह की, तो मुश्रिकों ने कहा अगर हम आपको रसूलुल्लाह मानते तो आप से हरगिज़ न लड़ते। आपने फ़रमाया ऐ अ़ली! इसे मिटा दो, ख़ुदाया तू ख़ूब जानता है कि मैं तेरा रसूल हूँ। ऐ अ़ली! इसे काट दो और लिखो यह है जिस पर सुलह की मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने। ख़ुदा की क़सम रसूलुल्लाह हज़रत अ़ली से बहुत बेहतर थे, फिर भी आपने उस लिखे हुए को कटवा दिया। इससे कुछ आप

Maktab E Ashraf

नुबुव्वत से नहीं निकल गये। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुदैबिया वाले दिन सत्तर ऊँट क़ुरबान किये जिनमें एक ऊँट अबू जहल का भी था, जब ये ऊँट बैतुल्लाह से रोक दिये गये तो इस तरह रोते और आँसू बहाते थे जैसे किसी से उसका दूध पीता बच्चा अलग हो गया हो।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝

बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखलाया जो हक़ीक़त के मुताबिक़ है कि तुम लोग मस्जिदे हराम (यानी मक्का) में इन्शा-अल्लाह ज़रूर जाओगे, अमन व शान्ति के साथ, कि तुम में कोई सर मुंडाता होगा और कोई बाल कतरवाता होगा, तुमको किसी तरह का अन्देशा न होगा। सो अल्लाह तआ़ला को वे बातें मालूम हैं जो तुम को मालूम नहीं, फिर उससे पहले एक फ़तह दे दी। (27) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत दी और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर (दुनिया में) भेजा है, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब करे और अल्लाह काफ़ी गवाह है। (28)

आपका एक सच्चा ख़्वाब

रसूलुल्लाह सल्ल. ने ख़्वाब (सपना) देखा था कि आप मक्का में गये और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया। आपने इसका ज़िक्र अपने सहाबा से मदीना शरीफ़ में ही कर दिया था। हुदैबिया वाले साल जब आप उमरे के इरादे से चले तो इस ख़्वाब की बिना पर सहाबा रज़ि. को पूरा यक़ीन था कि इस सफ़र में हम कामयाबी के साथ उस ख़्वाब का ज़ुहूर देख लेंगे। वहाँ जाकर जो रंगत बदली हुई देखी यहाँ तक कि सुलह नामा लिखकर बैतुल्लाह की ज़ियारत के बग़ैर वापस होना पड़ा तो उन सहाबा पर निहायत भारी और नागवार गुज़रा। चुनाँचे हज़रत उमर रज़ि. ने तो ख़ुद हुज़ूर सल्ल. से यह कहा भी कि आपने तो हम से फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जायेंगे और तवाफ़ से मुशर्रफ़ होंगे, आपने फ़रमाया यह सही है, लेकिन यह तो मैंने नहीं कहा था कि इसी साल ऐसा होगा। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया हाँ यह तो नहीं फ़रमाया था। आपने फ़रमाया फिर जल्दी क्या है? तुम बैतुल्लाह में जाओगे ज़रूर और तवाफ़ भी यक़ीनन करोगे। फिर हज़रत उमर ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से यही कहा और ठीक यही जवाब पाया।

इस आयत में "इन्शा-अल्लाह" है, यह बयान किये गये हुक्म से अलग करने के लिये नहीं बल्कि तहक़ीक़ और ताकीद के लिये है। सहाबा किराम ने इस मुबारक ख़्वाब को सच होते देख लिया और पूरे अमन व इत्मीनान के साथ मक्का में गये और वहाँ जाकर एहराम खोलते हुए बाज़ ने अपना सर मुण्डवाया और बाज़ ने बाल कतरवाये। सही हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला सर मुंडवाने वालों पर रहम करे, लोगों ने कहा हज़रत और कतरवाने वालों पर भी, आपने दोबारा यही फ़रमाया, फिर

लोगों ने वही कहा, आख़िर तीसरी या चौथी दफ़ा में आपने कतरवाने वालों के लिये भी रहम की दुआ की।

फिर फ़रमाया "बेख़ौफ़ होकर" यानी मक्का में जाते वक़्त भी अमन व अमान से होंगे और मक्का का क़ियाम (रहना) भी बेख़ौफ़ी का होगा। चुनाँचे उमरा-ए-क़ज़ा में यही हुआ। यह उमरा ज़ी-क़अ़दा सन् 7 हिजरी में हुआ था। हुदैबिया से आप 'ज़ीक़ादा' (इस्लामिक साल का ग्यारहवाँ महीना) के महीने में लौटे, 'ज़िलहिज्जा' (इस्लामिक साल का बारहवाँ महीना) और 'मुहर्रम' (इस्लामिक साल का पहला महीना) तो मदीना शरीफ़ में क़ियाम रहा, 'सफ़र' (इस्लामिक साल का दूसरा महीने) में ख़ैबर की तरफ़ गये। उसका कुछ हिस्सा तो जंग के ज़रिये फ़तह हुआ और कुछ हिस्सा सुलह के तौर पर क़ब्ज़े में आया। यह बहुत बड़ा इलाक़ा था, इसमें खजूरों के बाग़ात और खेतियाँ ख़ूब ज़्यादा थीं, यहीं के यहूदियों को आपने बतौर ख़ादिम यहाँ रखकर उनसे यह मामला तय किया कि वे बाग़ात और खेतियों की हिफ़ाज़त और ख़िदमत करें और पैदावार का आधा हिस्सा दिया करें। ख़ैबर की तक़सीम रसूले ख़ुदा सल्ल. ने सिर्फ़ उन्हीं सहाबा में की जो हुदैबिया में मौजूद थे, उनके अ़लावा किसी और को उस जंग में आपने हिस्सेदार नहीं बनाया, सिवाय उन लोगों के जो हब्शा की हिजरत से वापस आये थे। हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ि. और उनके साथी हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. और उनके साथी और जंगे हुदैबिया में जो हज़रात हुज़ूर के साथ थे वे सब इस फ़त्हे-ख़ैबर में भी साथ थे, सिवाय हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि. के, जैसा कि इसकी तफ़सील गुज़र चुकी। यहाँ से आप सही-सालिम और कामयाब वापस तशरीफ़ लाये और 'ज़ीक़ादा' सन् 7 हिजरी में मक्का की तरफ़ उमरे के इरादे से हुदैबिया वालों को साथ लेकर आप रवाना हुए। ज़ुल-हुलैफ़ा से एहराम बाँधा, क़ुरबानी के लिये साठ ऊँट लिये और लब्बैक पुकारते हुए ज़ोहरान के क़रीब पहुँचकर हज़रत मुहम्मद बन सलमा रज़ि. को कुछ घोड़े सवारों के साथ हथियारबन्द आगे-आगे रवाना किया। इससे मुश्रिकों के होश उड़ गये, उन्हें ख़्याल गुज़रा कि ये तो पूरी तैयारी और कामिल साज़ व सामान के साथ आये हैं, तो ज़रूर लड़ाई के इरादे से ही आये हैं। उन्होंने शर्त तोड़ दी कि दस साल तक कोई लड़ाई न होगी। चुनाँचे ये लोग दौड़े हुए मक्का में गये और मक्का वालों को इसकी इत्तिला दी। हुज़ूर सल्ल. जब मर्रे ज़ोहरान में पहुँचे जहाँ से काबा के बुत दिखाई देते थे तो आपने तमाम नेज़े भाले तीर कमान बतन याजज में भेज दिये। शर्त के मुताबिक़ सिर्फ़ तलवारें पास रख लीं और वो भी म्यान में थीं। अभी आप रास्ते में ही थे कि क़ुरैश का भेजा हुआ आदमी मिक्रज़ बिन हफ़्स आया और कहने लगा- हुज़ूर! आपकी आ़दत तो अ़हद तोड़ने की नहीं। हुज़ूर सल्ल. ने पूछा क्या बात है? वह कहने लगा कि आप तीर और नेज़े लेकर आ रहे हैं। आपने फ़रमाया नहीं, हमने तो वे सब याजज भेज दिये। उसने कहा हमें आपकी ज़ात से यही उम्मीद थी। आप हमेशा से भलाई, नेकी और वफ़ादारी करने वाले हैं।

काफ़िरों के सरदार तो ग़ुस्से व नाराज़गी और रंज व ग़म के सबब शहर से बाहर चले गये, क्योंकि वे आपको और आपके सहाबा को देखना भी नहीं चाहते थे, और लोग जो मक्का में रह गये थे वे सब मर्द औरत बच्चे तमाम रास्तों, कोठों और छतों पर खड़े हो गये और एक आश्चर्य की नज़र से इस मुख़्लिस गिरोह को, इस पाक लश्कर को, इस ख़ुदाई फ़ौज को देख रहे थे। आपने क़ुरबानी के जानवर 'ज़ी तुवा' में भेज दिये थे, ख़ुद आप अपनी मशहूर व मारूफ़ ऊँटनी क़सवा पर सवार थे। आगे-आगे आपके सहाबा थे जो बराबर लब्बैक पुकार रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा अन्सारी रज़ि. आपकी ऊँटनी की नकेल थामे हुए थे और ये अश्आ़र पढ़ रहे थे :

Maktab E Ashraf

بِاسْمِ الَّذِىْ لَادِيْنَ اِلَّا دِيْنُهٗ ☆☆☆ بِسْمِ الَّذِىْ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُهٗ

خَلُّوْا بَنِى الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيْلِهٖ ☆☆☆ اَلْيَوْمَ نَضْرِبُكُمْ عَلٰى تَاْوِيْلِهٖ

كَمَا ضَرَبْنَاكُمْ عَلٰى تَنْزِيْلِهٖ ☆☆☆ ضَرْبًا يُّزِيْلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيْلِهٖ

وَيُذْهِلُ الْخَلِيْلَ عَنْ خَلِيْلِهٖ ☆☆☆ قَدْ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ فِىْ تَنْزِيْلِهٖ

فِىْ صُحُفٍ تُتْلٰى عَلٰى رَسُوْلِهٖ ☆☆☆ بِاَنَّ خَيْرَ الْقَتْلِ فِىْ سَبِيْلِهٖ

يَارَبِّ اِنِّىْ مُؤْمِنٌ بِقِيْلِهٖ

यानी उस ख़ुदा के नाम से जिसके दीन के सिवा और कोई दीन क़ाबिले क़बूल नहीं। उस अल्लाह के नाम से जिसके रसूल हज़रत मुहम्मद हैं। ऐ काफ़िरों के बच्चो! हुज़ूर के रास्ते से हट जाओ, आज हम तुम्हें आपके लौटने पर भी वैसा ही मारेंगे जैसे आपके आने पर मारा था। वह मार जो दिमाग़ को उसके ठिकाने से हटा दे और दोस्त को दोस्त से भुला दे। अल्लाह तआ़ला रहम वाले ने अपनी वही में नाज़िल फ़रमाया है जो उन सहीफ़ों (किताबों) में महफ़ूज़ है जो उसके रसूल के सामने तिलावत किये जाते हैं, कि सबसे बेहतर मौत शहादत की मौत है जो उसकी राह में हो। ऐ मेरे परवर्दिगार मैं इस बात पर ईमान ला चुका हूँ।

बाज़ रिवायतों में अलफ़ाज़ में कुछ भिन्नता भी है। मुस्नद अहमद में है कि इस उमरे के सफ़र में जब हुज़ूरे पाक मर्रे ज़ोहरान में पहुँचे तो सहाबा रज़ि. ने सुना कि मक्का वाले कहते हैं- ये लोग कमज़ोरी और दुबले होने के सबब उठ-बैठ नहीं सकते। यह सुनकर सहाबा हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहा अगर आप इजाज़त दें तो हम अपनी सवारियों के चन्द जानवर ज़िबह कर लें, उनका गोश्त खायें, शोरबा पियें और ताज़ा-दम होकर मक्का में जायें। आपने फ़रमाया नहीं! ऐसा न करो, तुम्हारे पास जो खाना हो उसे जमा करो। चुनाँचे जमा किया, दस्तरख़्वान बिछाया और खाने बैठे तो हुज़ूर सल्ल. की दुआ़ की वजह से खाने में इतनी बरकत हुई कि सब ने खा-पी लिया और तोशेदान भर लिये। आप मक्का शरीफ़ में आये, सीधे बैतुल्लाह गये, क़ुरैशी लोग हतीम की तरफ़ बैठे हुए थे, आपने चादर के पल्ले दायीं बग़ल के नीचे से निकाल कर बायें कन्धे पर डाल लिये और सहाबा से फ़रमाया ये लोग तुममें सुस्ती और कमज़ोरी महसूस न करें।

अब आपने रुक्न को बोसा देकर दौड़ने की सी चाल से तवाफ़ शुरू किया। जब रुक्ने यमानी के पास पहुँचे जहाँ क़ुरैश की नज़रें नहीं पड़ती थीं तो वहाँ से आहिस्ता-आहिस्ता चलकर हजरे-अस्वद तक पहुँचे। क़ुरैश कहने लगे- तुम लोग तो हिरनों की तरह चौकड़ियाँ भर रहे हो, गोया चलना तुम्हें पसन्द ही नहीं। तीन मर्तबा तो आप इसी तरह हल्की दौड़ की सी चाल हजरे-अस्वद से रुक्ने यमानी तक चलते रहे, तीन फेरे इसी तरह किये। चुनाँचे यही सुन्नत तरीक़ा है।

एक रिवायत में है कि आपने हज्जतुल-विदा (आख़िरी हज) में भी इसी तरह तवाफ़ में तीन फेरों में 'रमल' किया, यानी बदन तानकर चले। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूले पाक के सहाबा के लिये मदीने की आब व हवा शुरू में कुछ नामुवाफ़िक़ पड़ी थी और बुख़ार की वजह से ये कुछ कमज़ोर हो गये थे। जब आप मक्का पहुँचे तो मक्का के मुश्रिकों ने कहा- ये लोग जो आ रहे हैं इन्हें मदीना के बुख़ार ने कमज़ोर और सुस्त कर दिया है। अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकों के इस कलाम की ख़बर अपने रसूल को कर दी। मुश्रिक लोग हतीम के पास बैठे हुए थे, आपने अपने सहाबा को हुक्म दिया कि वे हजरे-अस्वद से लेकर

रुक्ने यमानी तक तवाफ़ के तीन पहले फेरों में दलकी चाल (यानी बदन अकड़ाकर) चलें और रुक्ने यमानी से हजरे-अस्वद तक जहाँ के बाद मुश्रिकों की निगाहें नहीं पड़ती थीं वहाँ अपनी साधारण चाल चलें। पूरे सातों फेरों में 'रमल' करने को न कहना यह सिर्फ़ बतौर रहम के था। मुश्रिकों ने जब देखा कि सब के सब कूदकर फुर्ती और चुस्ती से तवाफ़ कर रहे हैं तो आपस में कहने लगे क्यों जी! इन्हीं के बारे में उड़ा रखा था कि मदीना के बुख़ार ने उन्हें सुस्त व कमज़ोर कर दिया है? ये लोग तो फ़ुलाँ-फ़ुलाँ से भी ज़्यादा चुस्त व चालाक हैं। एक रिवायत में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ज़ीक़ादा की चौथी तारीख़ को मक्का शरीफ़ पहुँच गये थे। एक और रिवायत में है कि मुश्रिक लोग उस वक़्त क़ओ़क़ान की तरफ़ थे। हुज़ूर सल्ल. का सफ़ा मरवा की तरफ़ सअ़ी करना भी मुश्रिकों को अपनी क़ुव्वत दिखाने के लिये था।

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि उस दिन हम आपको हल्क़े (घेरे) में लिये हुए थे ताकि कोई मुश्रिक या कोई नासमझ आपको कोई तकलीफ़ न पहुँचा सके। बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. उमरे के लिये निकले लेकिन क़ुरैश के काफ़िरों ने रास्ता रोक लिया और आपको बैतुल्लाह शरीफ़ तक जाने न दिया। आपने वहीं क़ुरबानियाँ कीं और वहीं यानी हुदैबिया में सर मुंडवा लिया और उनसे सुलह कर ली, जिसमें यह तय हुआ कि आप अगले साल उमरा करेंगे, सिवाय तलवारों के और कोई हथियार अपने साथ लेकर मक्का मुअ़ज़्ज़मा में नहीं आयेंगे और वहाँ इतनी ही मुद्दत ठहरेंगे जितनी मक्का वाले चाहें। पस अगले साल आप इसी तरह आये, तीन दिन तक ठहरे, फिर मुश्रिकों ने कहा अब आप चले जायें। चुनाँचे आप वहाँ से वापस हुए।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हम आपको अल्लाह का रसूल जानते तो हरगिज़ न रोकते, बल्कि आप मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिखिये। आपने फ़रमाया मैं अल्लाह का रसूल हूँ। फिर आपने अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. से फ़रमाया- लफ़्ज़ 'रसूलुल्लाह' को मिटा दो। हज़रत अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया नहीं नहीं! क़सम ख़ुदा की मैं इसे हरगिज़ न मिटाऊँगा। चुनाँचे आपने सुलह नामे को अपने हाथ में लेकर बावजूद अच्छी तरह लिखना न जानने के लिखा कि यह वह है जिस पर मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने सुलह की, यह कि मक्का में हथियार लेकर दाख़िल न होंगे सिर्फ़ तलवार होगी और वह भी म्यान में और यह कि अहले मक्का में से जो आपके साथ जाना चाहेगा उसे आप अपने साथ नहीं ले जायेंगे, और यह कि आपके साथियों में से जो मक्का में रहने के इरादे से ठहरना चाहेगा आप रोकेंगे नहीं। पस जब आप आये और निर्धारित वक़्त गुज़र चुका तो मुश्रिक लोग हज़रत अ़ली रज़ि. के पास आये और कहा आप हुज़ूर से कहिये कि अब वक़्त गुज़र चुका, तशरीफ़ ले जायें। चुनाँचे आपने कूच कर दिया। हज़रत हमज़ा रज़ि. की बेटी चचा-चचा कहकर आपके पीछे हो लीं, हज़रत अ़ली ने उन्हें ले लिया और उंगली थामकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास ले गये और फ़रमाया- अपने चचा की लड़की को अच्छी तरह रखो। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बड़ी ख़ुशी से बच्ची को अपने पास बैठा लिया। अब हज़रत अ़ली, हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र रज़ि. में झगड़ा होने लगा। हज़रत अ़ली रज़ि. तो फ़रमाते थे कि इन्हें मैं लाया हूँ और यह मेरे चचा की बेटी हैं। हज़रत जाफ़र रज़ि. फ़रमाते थे कि मेरी चचाज़ाद बहन है और इनकी ख़ाला मेरे घर में हैं। हज़रत ज़ैद रज़ि. फ़रमाते थे कि मेरे भाई की लड़की है। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने इस झगड़े का फ़ैसला यूँ किया कि लड़की को तो उनकी ख़ाला को सौंपा और फ़रमाया- ख़ाला माँ के बराबर है। हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ। हज़रत जाफ़र रज़ि. से फ़रमाया तू जिस्मानी और अख़्लाक़ी तौर पर मुझसे पूरी

Maktab E Ashraf

मुशाबहत रखता (यानी मेरे जैसा) है। हज़रत ज़ैद से फ़रमाया तू हमारा भाई और हमारा मौला (आज़ाद किया हुआ) है। हज़रत अ़ली रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! आप हमज़ा की लड़की से निकाह क्यों न कर लें? आपने फ़रमाया वह मेरे दूध शरीक भाई की लड़की हैं।

फिर फ़रमाता है अल्लाह तआ़ला जिस भलाई और मस्लेहत को जानता था और जिसे तुम नहीं जानते थे, उसकी बिना पर तुम्हें इस साल मक्का में न जाने दिया और अगले साल जाने दिया। और उस जाने से पहले ही जिसका वायदा ख़्वाब की शक्ल में रसूलुल्लाह सल्ल. से हुआ था तुम्हें क़रीब की फ़तह इनायत फ़रमाई। यह फ़तह सुलह है जो तुम्हारे और तुम्हारे दुश्मनों के बीच हुई। उसके बाद अल्लाह तआ़ला मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाता है कि वे अपने रसूल को उन दुश्मनों और तमाम दुश्मनों पर फ़तह देगा, उसने आपको नफ़ा देने वाला इल्म और नेक अ़मल के साथ भेजा है। शरीअ़त में दो ही चीज़ें होती हैं 'इल्म' और 'अ़मल'। पस इल्मे शरई सही इल्म है और अ़मले शरई मक़बूलियत वाला अ़मल है। उसके (अल्लाह के) अख़बार (ख़बरें) सच्चे और उसके अहकाम सरासर इन्साफ़ व हक़ वाले हैं। अल्लाह की मशीयत यह है कि रू-ए-ज़मीन पर जितने दीन (धर्म) हैं, अ़रब वालों में ग़ैर-अ़रब वालों में, मुस्लिमों में मुश्रिकों में, उन सब पर इस अपने दीन को ग़ालिब और ज़ाहिर व नुमायाँ करे। अल्लाह काफ़ी गवाह है इस बात पर कि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह ही आपका मददगार है। वल्लाहु आलम।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ
اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ
رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ
اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۖۚ
وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ
شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى
سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ
الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۠ ع ۱۲

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग आपकी सोहबत पाए हुए हैं वे काफ़िरों के मुक़ाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान हैं। ऐ मुख़ातब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ़ कर रहे हैं, कभी सज्दा कर रहे हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल और रज़ामन्दी की तलाश में लगे हैं, उनके आसार सज्दे की तासीर की वजह से उनके चेहरों पर नुमायाँ हैं। ये उनकी सिफ़तें तौरात में हैं और इन्जील में उनका यह वस्फ़ है कि जैसे खेती कि उसने अपनी सूई निकाली, फिर उसने उसको मज़बूत किया, फिर वह और मोटी हुई, फिर अपने तने पर सीधे खड़ी हो गई, कि किसानों को भली मालूम होने लगी, ताकि उनसे काफ़िरों को जलाए। अल्लाह तआ़ला ने उन हज़रात से जो कि ईमान लाए हैं और नेक काम कर रहे हैं, मग़फ़िरत और बड़े अज्र का वायदा कर रखा है। (29)

Maktab E Ashraf

अल्लाह के रसूल का मक़ाम और आपके सहाबा की एक शान

इन आयतों में पहले नबी सल्ल. की सिफ़त व तारीफ़ बयान हुई कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। फिर आपके सहाबा की सिफ़त व तारीफ़ बयान हो रही है कि वे मुख़ालिफ़ों पर सख़्ती करने वाले और मुसलमानों पर नर्मी करने वाले हैं। जैसे एक और आयत में हैः

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِيْنَ.

कि मोमिनों के सामने नर्म, काफ़िरों के मुक़ाबले में गर्म।

हर मोमिन की यही शान होनी चाहिये कि वह मोमिनों से अच्छे बर्ताव वाला और इन्किसारी व विनम्रता वाला रहे और काफ़िरों पर सख़्ती करने वाला और कुफ़्र से नाख़ुश रहे। क़ुरआने हकीम फ़रमाता हैः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً.

ईमान वालो! अपने पास के काफ़िरों से जिहाद करो, वे तुममें सख़्ती महसूस करें।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि आपस की मुहब्बत और नर्म-दिली में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म की तरह है कि अगर किसी एक अंग में दर्द हो तो सारा जिस्म बेक़रार हो जाता है। कभी बुख़ार चढ़ आता है, कभी नींद उचाट हो जाती है। आप फ़रमाते हैं कि मोमिन मोमिन के लिये एक दीवार की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूती पहुँचाता है। फिर आपने अपने दोनों हाथों की उंगलियाँ एक दूसरी में मिलाकर बतलायीं। फिर उनका एक और वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) बयान फ़रमाया कि नेकियाँ ख़ूब ज़्यादा करते हैं, ख़ुसूसन नमाज़ जो तमाम नेकियों से अफ़ज़ल व आला है। फिर उनकी नेकियों मे चार चाँद लगाने वाली चीज़ का बयान किया, यानी उनके ख़ुलूस और ख़ुदा को चाहने का, कि ये ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी रज़ा के इच्छुक हैं। ये अपने आमाल का बदला अल्लाह तआ़ला से चाहते हैं जो जन्नत और ख़ुदा के फ़ज़्ल से उन्हें मिलेगा और अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामन्दी भी उन्हें अ़ता फ़रमायेगा जो बहुत बड़ी चीज़ है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि चेहरों पर सज्दे के असर से निशानी होने से मुराद अच्छे अख़्लाक़ हैं। मुजाहिद रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि ख़ुशूअ़ और तवाज़ो (यानी आ़जिज़ी, विनम्रता और झुकाव) है। हज़रत मन्सूर हज़रत मुजाहिद रह. से कहते हैं कि मेरा तो यह ख़्याल था कि इससे मुराद नमाज़ का निशान है जो माथे पर पड़ जाता है। आपने फ़रमाया यह तो उनकी पेशानियों पर भी होता है जिनके दिल फ़िरऔ़न से भी ज़्यादा सख़्त होते हैं। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि नमाज़ उनके चेहरे अच्छे कर देती है। बाज़ बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है कि जो रात को ख़ूब ज़्यादा नमाज़ पढ़ेगा उसका चेहरा ख़ूबसूरत होगा। हज़रत जाबिर रज़ि. की रिवायत से इब्ने माजा की एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही मज़मून है, लेकिन सही यह है कि यह मौक़ूफ़ है। बाज़ बुज़ुर्गों का कहना है कि नेकी की वजह से दिल में नूर होता है, चेहरे पर रोशनी आती है, रोज़ी में कुशादगी (फैलाव और बढ़ोतरी) होती है, लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा होती है।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि. का फ़रमान है कि जो शख़्स अपने हालात के इस्लाह (सुधार) करे और छुपकर नेकियाँ करे अल्लाह तआ़ला उसके चेहरे की सलवटों पर और उसकी ज़बान के किनारों पर उन नेकियों को ज़ाहिर कर देता है। ग़र्ज़ कि दिल का आईना चेहरा है, जो उसमें होता है वो चेहरे पर होता

है। पस मोमिन जब अपने दिल को दुरुस्त कर लेता है, अपना बातिन संवार लेता है तो अल्लाह तआ़ला उसके ज़ाहिर को भी लोगों की निगाह में संवार देता है। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने बातिन (अन्दर की हालत) की इस्लाह (सुधार) कर लेता है अल्लाह तआ़ला उसके ज़ाहिर को भी संवार देता है। तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स जैसी बात छुपाकर रखता है अल्लाह तआ़ला उसे उसी की चादर उढ़ा देता है। अगर वह छुपी हुई हालत भली है तो भलाई की, और अगर बुरी है तो बुराई की। लेकिन इसका एक रावी इराक़ी मतरूक है।

मुस्नद अहमद में आपका फ़रमान है कि अगर तुममें से कोई शख़्स किसी ठोस चट्टान में घुसकर जिसका न कोई दरवाज़ा हो न उसमें कोई सुराख़ हो, कोई अ़मल करेगा तो अल्लाह उसे भी लोगों के सामने रख देगा। बुराई हो तो और भलाई हो तो। मुस्नद की एक और हदीस में है कि नेक तरीक़ा, अच्छा अख़्लाक़ और दरमियानी रास्ता नुबुव्वत के पच्चीसवें हिस्से से एक हिस्सा है।

ग़र्ज़ कि सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की नीयतें ख़ालिस थीं, आमाल अच्छे थे, पस जिसकी निगाह उनके पाक चेहरों पर पड़ती थी उसे उनकी पाकबाज़ी जच जाती थी और वह उनके चाल चलन, उनके अख़्लाक़ और उनके काम के तरीक़े पर ख़ुश होता था। हज़रत इमाम मालिक रह. का फ़रमान है कि जिन सहाबा ने शाम का मुल्क फ़तह किया जब वहाँ के ईसाई उनके चेहरे देखते तो बेसाख़्ता पुकार उठते- ख़ुदा की क़सम ये हज़रत ईसा के हवारियों (साथियों और मददगारों) से बहुत ही बेहतर व अफ़ज़ल हैं। वास्तव में उनका यह क़ौल सच्चा है, पहली किताबों में इस उम्मत की फ़ज़ीलत व अ़ज़्मत मौजूद है और इस उम्मत की सफ़े अव्वल (पहली क़तार यानी सहाबा हज़रात) उनके बेहतर व बुज़ुर्ग रसूले पाक के सहाबा हैं और ख़ुद उनका ज़िक्र भी आसमानी किताबों में और पहले के वाक़िआ़त में मौजूद है। पस फ़रमाया यही मिसाल उनकी तौरात में है।

फिर फ़रमाता है, और उनकी मिसाल इन्जील में खेती की तरह बयान की गयी है जो अपना सब्ज़ा (हरियाली और पेड़ पौधे) निकालती है, फिर उसे मज़बूत और क़वी करती है, फिर वह ताक़तवर और मोटा हो जाता है और अपनी बाल पर सीधा खड़ा हो जाता है। अब खेती वाले की ख़ुशी का क्या पूछना है? इसी तरह रसूले पाक के सहाबा हैं कि उन्होंने आपकी ताईद व मदद की, पस वे आपके साथ वही ताल्लुक़ रखते हैं जो पट्ठे और सब्ज़े को खेती से था। यह इसलिये कि काफ़िर शर्मिन्दा हों। हज़रत इमाम मालिक रह. ने इस आयत से राफ़ज़ियों के कुफ़्र पर दलील पकड़ी है, क्योंकि वे सहाबा से चिड़ते हैं और उनसे बुग़ज़ व दुश्मनी रखने वाला काफ़िर है। उलेमा की एक जमाअ़त भी इस मसले में इमाम साहिब के साथ है।

सहाबा किराम के फ़ज़ाईल में और उनकी लग़ज़िशों (भूल-चूक) से चश्म-पोशी करने में बहुत सी हदीसें आयी हैं। ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने उनकी तारीफ़ें बयान कीं और उनसे अपनी रज़ामन्दी का इज़हार किया है, यह उनकी अ़ज़्मत (बड़ाई) की सबसे बड़ी दलील है।

फिर फ़रमाता है कि उन ईमान वालों और नेक आमाल वालों से ख़ुदा का वायदा है कि उनके गुनाह माफ़ फ़रमायेगा, उनको बड़ा अज्र अ़ता फ़रमायेगा, बरकतों वाला और हलाल रिज़्क़ अ़ता फ़रमायेगा और बड़ा बदला इनायत फ़रमायेगा। अल्लाह का यह सच्चा और अटल वायदा है जो न बदलेगा न ख़िलाफ़ होगा। उनके क़दम से क़दम मिलाकर चलने वालों, उनके तरीक़े पर कारबन्द होने वालों से भी ख़ुदा का यह वायदा साबित है, लेकिन फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी और कमाल जो उन्हें हासिल है उम्मत में से किसी को नहीं। अल्लाह उनसे ख़ुश वे अल्लाह से राज़ी। वे जन्नती हो चुके और बदले पा लिये। सही मुस्लिम शरीफ़ में है,

Maktab E Ashraf

हुज़ूरे पाक सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरे सहाबा को बुरा न कहो, उनकी बेअदबी और गुस्ताख़ी न करो, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो उनके तीन पाव अनाज बल्कि डेढ़ पाव अनाज के अज्र को भी नहीं पा सकता।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः फ़तह की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः हुजुरात

सूरः हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ۝	ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल (की इजाज़त) से पहले तुम आगे मत बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला (तुम्हारी सब बातों को) सुनने वाला, और (तुम्हारे सब कामों को) जानने वाला है। (1) ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची मत किया करो। और न उनसे ऐसे खुलकर बोला करो जैसे तुम आपस में एक-दूसरे से खुलकर बोला करते हो, कहीं तुम्हारे आमाल बरबाद हो जाएँ और तुमको ख़बर भी न हो। (2) बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह के सामने पस्त रखते हैं, ये लोग वे हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने तक़्वे के लिए ख़ास कर दिया है, उन लोगों के लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है। (3)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में आदाब की तालीम

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला उम्मतियों को अपने नबी के आदाब सिखाता है कि तुम्हें अपने नबी

का अदब व एहतिराम और इज़्ज़त करनी चाहिये। तमाम कामों में ख़ुदा और रसूल के पीछे रहना चाहिये। इत्तिबा और ताबेदारी की आदत डालनी चाहिये। हज़रत मुआज़ रज़ि. को जब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने यमन की तरफ़ भेजा तो दरियाफ़्त फ़रमाया- किस चीज़ के साथ हुक्म करोगे? जवाब दिया किताबुल्लाह के साथ। फ़रमाया अगर न पाओ? जवाब दिया रसूलुल्लाह की सुन्नतों के साथ। फ़रमाया अगर न पाओ? जवाब दिया इज्तिहाद करूँगा (यानी क़ुरआन व हदीस को सामने रखकर विचार करूँगा), तो आपने उनके सीने पर हाथ रखकर फ़रमाया- ख़ुदा का शुक्र है जिसने अपने रसूल के क़ासिद को ऐसी तौफ़ीक़ दी जिससे ख़ुदा का रसूल ख़ुश हो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

यहाँ इस हदीस के ज़िक्र करने से हमारा मक़सद यह है कि हज़रत मुआज़ रज़ि. ने अपनी राय, नज़र और इज्तिहाद को किताब व सुन्नत के बाद रखा। पस किताब व सुन्नत पर राय को मुक़द्दम करना यह है ख़ुदा और उसके रसूल से आगे बढ़ना। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ न कहो। हज़रत औ़फ़ी रह. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. के कलाम के सामने बोलने से मना कर दिये गये। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जब तक किसी बात और हुक्म के बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल. कुछ न फ़रमायें तुम ख़ामोश रहो। हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि दीन के और शरई अहकाम में सिवाय ख़ुदा के कलाम के और उसके रसूल सल्ल. की हदीस के तुम किसी और चीज़ से फ़ैसला न करो। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. का इरशाद है कि किसी क़ौल व फ़ेल में अल्लाह और उसके रसूल पर सबक़त न करो (यानी आगे न बढ़ो)। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं- मुराद यह है कि इमाम से पहले दुआ़ न करो। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि लोग कहते थे अगर फ़ुलाँ-फ़ुलाँ में हुक्म उतरे तो इस तरह रखना चाहिये, इसे अल्लाह ने नापसन्द फ़रमाया।

फिर इरशाद होता है कि अल्लाह के हुक्म के पालन में अल्लाह का लिहाज़ रखो। अल्लाह तुम्हारी बातें सुन रहा है और तुम्हारे इरादे जान रहा है।

फिर दूसरा अदब सिखाता है कि वे नबी की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द न करें। यह आयत हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अबी मुलैका रह. से मरवी है कि क़रीब था कि दो बेहतरीन हस्तियाँ हलाक हो जायें, यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा, इन दोनों की आवाज़ें हुज़ूरे पाक के सामने बुलन्द हो गयीं जबकि बनू तमीम का वफ़्द (जमाअ़त) हाज़िर हुआ था। एक तो अक़रा बिन हाबिस रज़ि. के बारे में कहते थे जो बनू मुजाशे में से थे और दूसरे दूसरे शख़्स के बारे में कहते थे। इस पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने फ़रमाया- तुम तो मेरी मुख़ालफ़त ही किया करते हो। फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने जवाब दिया नहीं नहीं! आप यह ख़्याल भी न फ़रमाईये। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके बाद तो हज़रत उमर रज़ि. इस तरह हुज़ूर सल्ल. से नर्म कलामी करते थे कि आपको दोबारा पूछना पड़ता था। एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. फ़रमाते थे- क़अ़क़ा बिन मअ़बद को इस वफ़्द का अमीर बनाईये और हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते थे नहीं बल्कि अक़रा बिन हाबिस को, इस इख़्तिलाफ़ (मतभेद) में आवाज़ें कुछ बुलन्द हो गयीं जिस पर आयतः

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا.

(यानी इस सूरत की यही शुरू की आयतें, जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है) नाज़िल हुई। साथ ही

Maktab E Ashraf

इसी सूरत की आयत नम्बर 5 भी उतरी।

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि आयतः

لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ...... الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 2) के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! क़सम ख़ुदा की अब तो मैं आपसे इस तरह बातें करूँगा जिस तरह कोई सरगोशी (यानी कान में बात) करता है। सही बुख़ारी में है कि हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि. कई दिन तक हुज़ूर की मज्लिस में नज़र न आये, इस पर एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! मैं उसके बारे में आपको बतला दूँगा। चुनाँचे वह हज़रत साबित रज़ि. के मकान पर आये, देखा कि वह सर झुकाये बैठे हुए हैं। पूछा क्या हाल है? जवाब मिला कि बुरा हाल है, मैं हज़रत की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द करता था मेरे आमाल बरबाद हो गये और मैं जहन्नमी बन गया। यह शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये और सारा वाक़िआ आपसे कह सुनाया। फिर तो हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान से एक ज़बरदस्त बशारत (ख़ुशख़बरी) लेकर दोबारा हज़रत साबित रज़ि. के यहाँ गये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तुम जाओ और उनसे कहो तू जहन्नमी नहीं बल्कि जन्नती है। मुस्नद अहमद में भी यह वाक़िआ है। उसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने पूछा था कि साबित कहाँ हैं, नज़र नहीं आते? उसके आख़िर में है कि हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं- हम उन्हें ज़िन्दा चलता फिरता देखते थे और जानते थे कि वह जन्नत वालों में से हैं।

यमामा की जंग में जबकि मुसलमान थोड़े से मायूस हो गये तो हमने देखा कि हज़रत साबित रज़ि. ख़ुशबू मला हुआ कफ़न पहने हुए दुश्मन की तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं और फ़रमा रहे हैं- मुसलमानो! तुम लोग अपने बाद वालों के लिये बुरा नमूना न छोड़ जाओ, यह कहकर दुश्मनों में घुस गये और बहादुराना लड़ते रहे, यहाँ तक कि शहीद हो गये। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि आपने जब उन्हें न देखा और हज़रत सअ़द रज़ि. से जो उनके पड़ोसी थे मालूम फ़रमाया कि क्या साबित बीमार है? (आगे वाक़िए की फिर वही तफ़सील है जो बयान हुई)। लेकिन इस हदीस की दूसरी सनदों में हज़रत सअ़द रज़ि. का ज़िक्र नहीं, इससे साबित होता है कि इस रिवायत में तालील (कमज़ोरी और इल्लत) है और यही बात सही भी है, इसलिये कि हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. उस वक़्त ज़िन्दा ही न थे, बल्कि आपका इन्तिक़ाल बनू क़ुरैज़ा की जंग के बाद थोड़े ही दिनों में हो गया था और बनू क़ुरैज़ा की जंग सन् 5 हिजरी में हुई थी और यह आयत बनू तमीम के वफ़्द की आमद के वक़्त उतरी है और वफ़्दों (जमाअ़तों और प्रतिनिधि मंडलों) का लगातार आने का वाक़िआ सन् 9 हिजरी का है। वल्लाहु आलम।

इब्ने जरीर में है कि जब यह आयत उतरी तो हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि. रास्ते में बैठ गये और रोने लगे। हज़रत आ़सिम बिन अ़दी रज़ि. जब वहाँ से गुज़रे और उन्हें रोते देखा तो सबब मालूम किया। जवाब मिला कि मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं यह आयत मेरे ही बारे में नाज़िल न हुई हो। मेरी आवाज़ बुलन्द (ऊँची) है। हज़रत आ़सिम रज़ि. यह सुनकर चले गये, इधर हज़रत साबित रज़ि. की हिचकी बंध गयी, दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे। घर गये और अपनी बीवी साहिबा हज़रत जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल से कहा मैं अपने घोड़े के तवीले (अस्तबल) में जा रहा हूँ तुम उसका दरवाज़ा बाहर से बन्द करके लोहे की कील से उसे जड़ दो, ख़ुदा की क़सम मैं उसमें से न निकलूँगा यहाँ तक कि या तो मर जाऊँगा या अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को मुझसे रज़ामन्द कर दे।

यहाँ तो यह हुआ वहाँ जब हज़रत आ़सिम रज़ि. ने दरबारे रिसालत में हज़रत साबित रज़ि. की हालत बयान की तो हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म दिया कि तुम जाओ और साबित को मेरे पास बुला लाओ। लेकिन जब आ़सिम रज़ि. उस जगह आये तो देखा कि हज़रत साबित वहाँ नहीं, मकान पर गये तो मालूम हुआ कि वह तो घोड़े के तवीले (अस्तबल) में हैं। यहाँ आकर कहा कि साबित चलो तुमको रसूलुल्लाह याद फ़रमा रहे हैं। हज़रत साबित रज़ि. ने कहा बहुत ख़ूब, कील निकाल डालो और दरवाज़ा खोल दो। फिर बाहर निकल कर सरकार के दरबार में हाज़िर हुए तो आपने रोने की वजह पूछी, जिसका सच्चा जवाब हज़रत साबित रज़ि. से सुनकर आपने फ़रमाया- क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं कि तुम क़ाबिले तारीफ़ ज़िन्दगी जियो, शहीद होकर मरो और जन्नत में जाओ? इस पर हज़रत साबित रज़ि. का सारा रंज और ग़म दूर हो गया, बाँछें खिल गयीं और फ़रमाने लगे- या रसूलल्लाह! मैं अल्लाह तआ़ला की और आपकी इस ख़ुशख़बरी पर बहुत ख़ुश हूँ और आईन्दा कभी अपनी आवाज़ आपकी आवाज़ से ऊँची न करूँगा। इस पर उसके बाद की आयतः

إِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ........الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 3) नाज़िल हुई। यह क़िस्सा इसी तरह कई एक ताबिईन से भी नक़ल किया गया है। ग़र्ज़ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्ल. के सामने आवाज़ें बुलन्द करने से मना फ़रमा दिया। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने दो शख़्सों की कुछ बुलन्द आवाज़ें मस्जिदे नबवी में सुनकर वहाँ आकर उनसे फ़रमाया- तुम्हें मालूम भी है कि तुम कहाँ हो? फिर उनसे पूछा कि तुम कहाँ के रहने वाले हो? उन्होंने कहा कि तायफ़ के। आपने फ़रमाया अगर तुम मदीने के होते तो मैं तुम्हें पूरी सज़ा देता। उलेमा-ए-किराम का फ़रमान है कि रसूलुल्लाह सल्ल. की क़ब्र शरीफ़ के पास भी बुलन्द आवाज़ से बोलना मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) है जैसा कि आपकी ज़िन्दगी में आपके सामने मक्रूह था। इसलिये कि हुज़ूरे पाक जिस तरह अपनी ज़िन्दगी में क़ाबिले एहतिराम व इज़्ज़त थे अब और हमेशा तक आप अपनी क़ब्र शरीफ़ में इज़्ज़त वाले और क़ाबिले एहतिराम ही हैं। फिर आपके सामने आप से बातें करते हुए जिस तरह आ़म लोगों से बातें करते हैं बातें करनी मना फ़रमाईं। बल्कि आप से सुकून व वक़ार, इज़्ज़त व अदब और सम्मान का लिहाज़ रखते हुए बातें करनी चाहियें। जैसे एक और जगह हैः

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا.

ऐ मुसलमानो! रसूल को इस तरह न पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो।

फिर फ़रमाता है कि हमने तुम्हें इस आवाज़ के बुलन्द करने से इसलिये रोका है कि ऐसा न हो किसी वक़्त हुज़ूर नाराज़ हो जायें और आपकी नाराज़गी की वजह से अल्लाह नाराज़ हो जाये और तुम्हारे तमाम आमाल बरबाद हो जायें और तुम्हें इसका पता भी न चले। चुनाँचे सही हदीस में है कि एक शख़्स अल्लाह की रज़ामन्दी का कोई कलिमा ऐसा कह गुज़रता है कि उसके नज़दीक तो उस कलिमे की कोई अहमियत नहीं होती लेकिन ख़ुदा को वह इतना पसन्द आता है कि उसकी वजह से वह जन्नती हो जाता है। इसी तरह इनसान ख़ुदा की नाराज़गी का कोई ऐसा कलिमा कह जाता है कि उसके नज़दीक तो उसकी कोई वक़्अ़त (अहमियत) नहीं होती लेकिन ख़ुदा तआ़ला उसे उस कलिमे की वजह से जहन्नम के इस क़द्र नीचे तबक़े में पहुँचा देता है कि जो गड्ढा ज़मीन व आसमान से ज़्यादा गहरा है।

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला आपके सामने आवाज़ पस्त करने की रग़बत दिलाता और फ़रमाता है कि जो लोग अल्लाह के नबी सल्ल. के सामने अपनी आवाज़ें धीमी करते हैं उन्हें अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने

तक़्वा (परहेज़गारी) के लिये ख़ालिस कर लिया है, परहेज़गार और परहेज़गारी का महल यही लोग हैं। ये ख़ुदा की मग़फ़िरत के मुस्तहिक़ और बड़े बदले के लायक़ हैं। इमाम अहमद रह. ने किताबुज़्ज़ोहद में एक रिवायत नक़्ल की है कि हज़रत उमर रज़ि. से एक लिखित फ़तवा लिया गया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! वह शख़्स जिसे नाफ़रमानी की ख़्वाहिश ही न हो और न कोई नाफ़रमानी उसने की हो, वह और वह शख़्स जिसे नाफ़रमानी की ख़्वाहिश है लेकिन वह बुरा काम नहीं करता, तो इनमें बेहतर कौन है? आपने जवाब में लिखा जिन्हें मासियत (नाफ़रमानी और बुरा काम करने) की ख़्वाहिश होती है फिर नाफ़रमानियों से बचते हैं यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने परहेज़गारी के लिये आज़मा लिया है, उनके लिये मग़फ़िरत और बहुत बड़ा अज्र व सवाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ○ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ○	जो लोग हुजरों के बाहर से आपको पुकारते हैं, उनमें अक्सरों को अ़क़्ल नहीं है। (4) और अगर ये लोग (ज़रा) सब्र (और इन्तिज़ार) करते, यहाँ तक कि आप ख़ुद बाहर उनके पास आ जाते तो यह उन लोगों के लिए बेहतर होता, (क्योंकि यह अदब की बात थी)। और अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5)

यह भी मुनासिब नहीं

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला उन लोगों की मज़म्मत (बुराई) करता है जो आपके मकानों के पीछे से आपको आवाज़ें देते और पुकारते हैं, जिस तरह देहातियों में दस्तूर था। तो फ़रमाया उनमें से अक्सर बेअ़क़्ल हैं। फिर इसके बारे में अदब सिखाते हुए फ़रमाता है- उन्हें चाहिये था कि आपके इन्तिज़ार में ठहर जाते और जब आप मकान से बाहर निकलते तो आप से जो कहना होता कहते, न कि आवाज़ें देकर बाहर से पुकारते। दुनिया और दीन की मस्लेहत और बेहतरी इसी में थी। फिर गोया हुक्म देता है कि ऐसे लोगों को तौबा व इस्तिग़फ़ार करना चाहिये, क्योंकि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।

यह आयत हज़रत अक़रा बिन हाबिस तमीमी रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई है। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक को आपका नाम लेकर पुकारा या मुहम्मद! या मुहम्मद! आपने उसे कोई जवाब न दिया तो उसने कहा या रसूलल्लाह! मेरा तारीफ़ करना सबब है बड़ाई का, और मेरा मज़म्मत (बुराई) करना सबब है ज़िल्लत का। आपने फ़रमाया ऐसी ज़ात सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ही है। बशर बिन ग़ालिब ने हज्जाज के सामने बशर बिन उतारिद वग़ैरह से कहा कि तेरी क़ौम बनू तमीम के बारे में यह आयत उतरी है। हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि. से इसका ज़िक्र हुआ तो आपने फ़रमाया अगर वह आ़लिम होते तो इसके बाद की आयतः

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا.

(यानी इसी सूरत की आयत 16) पढ़ देते। वह कहते थे कि हम इस्लाम लाये और बनू असद ने आप से कुछ देर नहीं की। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. फ़रमाते हैं कि कुछ अ़रब (अ़रबी आदमी) जमा हुए

Maktab E Ashraf

और कहने लगे- हमें उस शख़्स के पास ले चलो अगर वह सच्चा नबी है तो सबसे ज़्यादा उससे सआ़दत हासिल करने के मुस्तहिक़ हम हैं, अगर वह बादशाह है तो हम उसकी छत्रछाया में पल जायेंगे। मैंने आकर हुज़ूर सल्ल. से यह वाकिआ़ बयान किया, फिर वे लोग आये और हुजरे के पीछे से आपका नाम लेकर आपको पुकारने लगे, इस पर यह आयत उतरी। हुज़ूरे पाक ने मेरा कान पकड़ कर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने तेरी बात सच्ची कर दी। अल्लाह तआ़ला ने तेरी बात सच्ची कर दी। (इब्ने जरीर)

يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

ऐ ईमान वालो! अगर कोई शरीर आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो, कभी किसी क़ौम को नादानी से कोई नुक़सान पहुँचा दो, फिर अपने किए पर पछताना पड़े। (6) और जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल हैं। बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं कि अगर वह उसमें तुम्हारा कहना माना करें तो तुमको बड़ा नुक़सान पहुँचे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने तुमको ईमान की मुहब्बत दी, और उसको तुम्हारे दिलों में पसन्दीदा कर दिया, और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी से तुमको नफ़रत दी, ऐसे लोग सही रास्ते पर हैं (7) अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और इनाम "की वजह" से। और अल्लाह तआ़ला जानने वाला और हिक्मत वाला है। (8)

एक और मुनासिब हिदायत

अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है कि फ़ासिक़ (ग़ैर-मोतबर) की ख़बर का एतिमाद न करो, जब तक पूरी तहक़ीक़ व तफ़तीश से असल वाक़िआ़ साफ़ तौर पर मालूम न हो जाये कोई हरकत न करो। मुम्किन है किसी फ़ासिक़ (बुरे और शरीर) शख़्स ने कोई झूठी बात कह दी हो या ख़ुद उससे ग़लती हुई हो और तुम उसकी ख़बर के मुताबिक़ कोई काम कर गुज़रो, तो दर असल उसकी पैरवी होगी, और फ़सादी व बिगाड़ फैलाने वाले लोगों की पैरवी हराम है। इसी आयत को दलील बनाकर बाज़ मुहद्दिसीने किराम ने उस शख़्स की रिवायत को भी ग़ैर-मोतबर बतलाया है जिसका हाल मालूम न हो, इसलिये कि बहुत मुम्किन है यह शख़्स वास्तव में फ़ासिक़ हो, अगरचे बाज़ लोगों ने ऐसे नामालूम रावियों (जिनका हाल मालूम न हो) की रिवायत ली भी है और उन्होंने कहा है कि हमें फ़ासिक़ की ख़बर क़बूल करने से मना किया गया है और जिसका हाल मालूम नहीं उसका फ़ासिक़ होना हम पर ज़ाहिर नहीं। हमने इस मसले को पूरी वज़ाहत से सही बुख़ारी शरीफ़ की शरह में किताबुल-इल्म में बयान कर दिया है।

Maktab-E-Ashraf

अक्सर मुफ़स्सिरीन हज़रात ने फ़रमाया है कि यह आयत वलीद बिन उक़्बा बिन अबू मुईत के बारे में नाज़िल हुई है जबकि रसूलुल्लाह सल्ल. ने उन्हें क़बीला बनू मुस्तलिक़ से ज़कात लेने के लिये भेजा था। चुनाँचे मुस्नद अहमद में है, हज़रत हारिस बिन ज़िरार ख़ुज़ाई रज़ि. जो उम्मुल-मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ि. के वालिद हैं, फ़रमाते हैं- मैं रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आपने मुझे इस्लाम की दावत दी जो मैंने मन्ज़ूर कर ली और मुसलमान हो गया। फिर आपने ज़कात की फ़र्ज़ियत सुनाई मैंने उसका भी इक़रार किया और कहा मैं वापस अपनी क़ौम के पास जाता हूँ और उनमें से जो ईमान लायें और ज़कात अदा करें मैं उनकी ज़कात जमा करता हूँ। इतने इतने दिनों के बाद आप मेरी तरफ़ किसी आदमी को भेज दीजिए मैं उसके हाथ जमा हुआ ज़कात का माल आपकी ख़िदमत में भिजवा दूँगा। हज़रत हारिस रज़ि. ने वापस आकर यही किया, ज़कात का माल जमा किया। जब निर्धारित वक़्त गुज़र चुका और हुज़ूर सल्ल. की तरफ़ से कोई क़ासिद न आया तो आपने अपनी क़ौम के सरदारों को जमा किया और उनसे कहा यह तो नामुम्किन है कि अल्लाह के रसूल अपने वायदे के मुताबिक़ अपना कोई आदमी न भेजें, मुझे तो डर है कि कहीं किसी वजह से रसूले ख़ुदा सल्ल. हमसे नाराज़ न हो गये हों? और इस बिना पर आपने अपना कोई क़ासिद माले ज़कात के ले जाने के लिये न भेजा हो। अगर आप लोग मुत्तफ़िक़ हों तो हम इस माल को लेकर ख़ुद ही मदीना शरीफ़ चलें और हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में पेश कर दें। यह तजवीज़ तय हो गयी और ये हज़रात अपना ज़कात का माल लेकर चल खड़े हुए।

इधर से रसूलुल्लाह सल्ल. वलीद बिन उक़्बा को अपना क़ासिद बनाकर भेज चुके थे लेकिन यह रास्ते ही में से डर के मारे लौट आये और यहाँ आकर कह दिया कि हारिस ने ज़कात भी रोक ली और मुझे क़त्ल करना चाहता है। इस पर हुज़ूर सल्ल. नाराज़ हुए और कुछ आदमी हारिस की डाँट-डपट के लिये रवाना फ़रमाये। मदीने के क़रीब रास्ते ही में इस मुख़्तसर से लश्कर ने हज़रत हारिस को पा लिया। हज़रत हारिस ने पूछा आख़िर क्या बात है? तुम कहाँ और किसके पास जा रहे हो? उन्होंने कहा हम तेरी तरफ़ भेजे गये हैं। पूछा क्यों? कहा इसलिये कि तूने हुज़ूर सल्ल. के क़ासिद वलीद को ज़कात न दी, बल्कि उन्हें क़त्ल करना चाहा। हज़रत हारिस ने कहा क़सम है उस ख़ुदा की जिसने मुहम्मद सल्ल. को सच्चा रसूल बनाकर भेजा है, न मैंने उसे देखा न वह मेरे पास आया। चलो मैं तो ख़ुद हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हो रहा हूँ। यहाँ जो आये तो हुज़ूर सल्ल. ने इनसे मालूम फ़रमाया कि तूने ज़कात भी रोक ली और मेरे आदमी को क़त्ल करना चाहा? आपने जवाब दिया हरगिज़ नहीं या रसूलल्लाह! क़सम है ख़ुदा की जिसने आपको सच्चा रसूल बनाकर भेजा है, न मैंने उन्हें देखा न वह मेरे पास आये। बल्कि क़ासिद को न देखकर इस डर के मारे कि कहीं अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल मुझसे नाराज़ न हो गये हों और इसी वजह से क़ासिद न भेजा हो मैं ख़ुद ही हाज़िरे ख़िदमत हुआ। इस पर ये तीन आयतें (आयत नम्बर 6,7,8) नाज़िल हुईं।

तबरानी में यह भी है कि जब हुज़ूर सल्ल. का क़ासिद हज़रत हारिस रज़ि. की बस्ती के पास पहुँचा तो लोग ख़ुश होकर उसके स्वागत के लिये ख़ास तैयारी करके निकले, इधर इनके दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि ये लोग मुझसे लड़ने के लिये आ रहे हैं तो यह लौटकर वापस चले आये। उन्होंने जब यह देखा कि आपके क़ासिद वापस चले गये तो ख़ुद ही हाज़िर हुए और ज़ोहर की नमाज़ के बाद क़तार बनाकर खड़े होकर अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! आपने ज़कात वसूल करने के लिये अपने आदमी को भेजा, हमारी आँखें ठण्डी हुईं, हम बेहद ख़ुश हुए लेकिन ख़ुदा जाने क्या हुआ कि वह रास्ते में से ही लौट गये। तो इस ख़ौफ़ से कि कहीं ख़ुदा हम से नाराज़ न हो गया हो हम हाज़िर हुए हैं।

Maktab-E-Ashraf

इसी तरह वे उज़्र-माज़िरत करते रहे। अ़सर की अज़ान जब हज़रत बिलाल रज़ि. ने दी उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई। एक और रिवायत में है कि हज़रत वलीद की इस ख़बर पर अभी हुज़ूर सोच ही रहे थे कि कुछ आदमी उनकी तरफ़ भेजें कि उनका वफ़्द (जमाअ़त) आ गया और उन्होंने कहा कि आपका क़ासिद आधे रास्ते से ही लौट गया तो हमने ख़्याल किया कि आपने किसी नाराज़गी की बिना पर उन्हें वापसी का हुक्म दे दिया होगा, इसी लिये हम हाज़िर हुए हैं। हम अल्लाह के गुस्से से और आपकी नाराज़गी से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। पस अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी और उनका उज़्र सच्चा बताया।

एक और रिवायत में है कि क़ासिद ने यह भी कहा था कि उन लोगों ने तो आपसे लड़ने के लिये लश्कर जमा कर लिया है और इस्लाम से मुर्तद हो गये (यानी फिर बेदीन हो गये) हैं, चुनाँचे हुज़ूरे पाक ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की अगुवाई में एक फ़ौजी दस्ते को भेज दिया, लेकिन उन्हें फ़रमा दिया था कि पहले तहक़ीक़ व तफ़तीश अच्छी तरह कर लेना, जल्दी से हमला न कर देना। उसी के मुताबिक़ हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने वहाँ पहुँचकर अपने जासूस शहर में भेज दिये, वे ख़बर लाये कि वे लोग दीन इस्लाम पर क़ायम हैं, मस्जिद में अज़ानें हुईं जिन्हें हमने खुद सुना और लोगों को नमाज़ पढ़ते हुए खुद देखा। सुबह होते ही हज़रत ख़ालिद खुद गये और वहाँ के इस्लामी मन्ज़र से ख़ुश हुए। वापस आकर सरकारे नबवी में सारी ख़बर दी। इस पर यह आयत उतरी।

हज़रत क़तादा रह. जो इस वाक़िए को बयान करते हैं, कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि तहक़ीक़ व तलाश, बुर्दबारी और दूरदर्शिता ख़ुदा की तरफ़ से है और जल्द-बाज़ी शैतान की तरफ़ से है। पहले बुज़ुर्गों में से हज़रत क़तादा रह. के अ़लावा और भी बहुत से हज़रात ने यही ज़िक्र किया है, जैसे इब्ने अबी लैला, यज़ीद बिन रोमान, ज़ह्हाक, मुक़ातिल बिन हय्यान वग़ैरह। इन सब का बयान है कि यह आयत वलीद बिन उक़्बा के बारे में नाज़िल हुई है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है- जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, उनकी ताज़ीम व सम्मान करना, इज़्ज़त व अदब करना, उनके अहकाम को सर आँखों से बजा लाना तुम्हारा फ़र्ज़ है। वह तुम्हारी मस्लेहतों से बहुत आगाह हैं, उन्हें तुमसे मुहब्बत है, वह तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहते, तुम अपनी भलाई के इतने इच्छुक और इतने वाक़िफ़ नहीं हो जितने हुज़ूर हैं। चुनाँचे एक और जगह इरशाद हैः

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ.

यानी नबी ज़्यादा लायक़ हैं मुसलमानों के कामों में उनकी अपनी जानों के मुक़ाबले में।

फिर बयान फ़रमाया कि लोगो तुम्हारी अ़क़्लें तुम्हारी जिन मस्लेहतों और भलाईयों को नहीं पा सकतीं उन्हें नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पा रहे हैं, पस अगर वह तुम्हारी हर पसन्दीदा बात को मानते रहें तो इसमें तुम्हारा ही हर्ज और नुक़सान होगा। जैसे एक और आयत में हैः

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِیْهِنَّ بَلْ اَتَیْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ.

यानी अगर सच्चा रब उनकी ख़ुशी पर चले तो आसमान व ज़मीन और उनके बीच की हर चीज़ ख़राब हो जाये। यह नहीं बल्कि हमने उन्हें उनकी नसीहत पहुँचा दी है लेकिन ये अपनी नसीहत पर ध्यान ही नहीं धरते।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा ने ईमान को तुम्हारे नफ़्सों में महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसकी उम्दगी (अच्छा होना) बैठा दी है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इस्लाम ज़ाहिर में है और ईमान दिल में है। फिर आप अपने सीने की तरफ़ तीन बार इशारा करते और फ़रमाते तक़्वा यहाँ है, परहेज़गारी की जगह यह है। उसने तुम्हारे दिलों में कुफ़्र की और बड़े गुनाहों की तमाम नाफ़रमानियों की अ़दावत (दुश्मनी) डाल दी है। और इस तरह धीरे-धीरे तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी हैं। फिर इरशाद होता है कि जिनमें ये पाक ख़ूबियाँ और गुण हैं उन्हें ख़ुदा ने नेकी, हिदायत और भलाई दे रखी है। मुस्नद अहमद में है कि उहुद के दिन जब मुश्रिकीन टूट पड़े तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- दुरुस्तगी के साथ ठीक-ठाक हो जाओ तो मैं अपने रब तआ़ला की तारीफ़ बयान करूँ। पस लोग आपके पीछे सफ़ें बाँधकर खड़े हो गये और आपने यह दुआ़ पढ़ीः

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ. اَللّٰهُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَّ وَلَا بَاسِطَ لِمَا قَبَضْتَ وَلَا هَادِيَ لِمَنْ اَضْلَلْتَ وَلَا مُضِلَّ لِمَنْ هَدَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَامُقَرِّبَ لِمَابَاعَدْتَّ وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ. اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ النَّعِيْمَ الْمُقِيْمَ الَّذِيْ لَايَحُوْلُ وَلَا يَزُوْلُ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ النَّعِيْمَ يَوْمَ الْعَيْلَةِ وَالْاَمْنَ يَوْمَ الْخَوْفِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَآئِذٌ بِكَ مِنْ شَرِّمَآ اَعْطَيْتَنَا وَمِنْ شَرِّمَامَنَعْتَنَا. اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْاِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا وَكَرِّهْ اِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ. اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَحْيِنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَابِالصَّالِحِيْنَ غَيْرَخَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ. اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ وَعَذَابَكَ. اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ اِلٰهَ الْحَقِّ.

यानी ऐ अल्लाह! तमाम की तमाम तारीफ़ें तेरे ही लिये हैं तू जिसे कुशादगी दे उसे कोई तंग नहीं कर सकता, जिसे तू तंगी में मुब्तला कर दे उसे कोई कुशादगी नहीं दे सकता। तू जिसे गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जिसे तू हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता, जिससे तू रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता और जिसे तू दे उसे कोई रोक नहीं सकता, जिसे तू दूर करे उसे क़रीब करने वाला कोई नहीं और जिसे तू क़रीब करे उसे दूर करने वाला कोई नहीं। ऐ अल्लाह! हम पर अपनी बरकतें, रहमतें, फ़ज़्ल और रिज़्क़ फैला दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे वो हमेशगी की नेमतें चाहता हूँ जो न इधर-उधर हों न ख़त्म हों। ख़ुदाया! फ़क़ीरी और ज़रूरत वाले दिन मुझे अपनी नेमतें अ़ता फ़रमा और ख़ौफ़ वाले दिन मुझे अमन अ़ता फ़रमा। परवर्दिगार जो तूने मुझे दे रखा है और जो नहीं दिया उन सब की बुराई से मैं तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ मेरे माबूद! हमारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दे और उसे हमारी नज़रों में अच्छा बना और संवार दे, और कुफ़्र, बदकारी और नाफ़रमानी से हमारे दिलों में नफ़रत पैदा कर दे और हमें हिदायत पाने वाले लोगों में कर दे। ऐ हमारे रब हमें इस्लाम की हालत में मौत दे और इस्लाम पर ही ज़िन्दा रख, और नेक लोगों से मिला दे, हम रुस्वा न हों, हम फ़ितने में न डाले जायें। ख़ुदाया! उन काफ़िरों का सत्यानास कर जो तेरे रसूलों को झुठलायें और तेरी राह से रोकें, तू उन पर अपनी सज़ा और अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। इलाही! अहले किताब (यहूद व ईसाईयों) के काफ़िरों को भी तबाह कर ऐ सच्चे

Mahtab Ashraf

माबूद। (यह हदीस इमाम नसाई भी अपनी किताब "अ़मलुल-यौमि वल्लैलतु" में लाये हैं)

एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि जिस शख़्स को अपनी नेकी अच्छी लगे और बुराई उसे नाराज़ करे वह मोमिन है। फिर फ़रमाता है कि यह बख़्शिश जो तुम्हें अ़ता हुई है यह तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी नेमत है। कौन हिदायत का हक़दार है और किसको गुमराही मिलनी चाहिये इसको अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानता है, वह अपने अक़वाल (बातों और अहकाम) व अफ़आ़ल (कामों) में हिक्मत वाला है।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝	और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके दरमियान इस्लाह कर दो। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है, यहाँ तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रुजू हो जाए। फिर अगर रुजू हो जाए तो उन दोनों के दरमियान इन्साफ़ के साथ इस्लाह कर दो, और इन्साफ़ का ख़्याल रखो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ वालों को पसन्द करता है। (9) मुसलमान तो सब भाई हैं। सो अपने दो भाईयों के दरमियान सुलह करा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम पर रहमत की जाए। (10)

ع ۱۳

अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो........

यहाँ हुक्म हो रहा है कि अगर मुसलमानों की कोई दो जमाअ़तें लड़ने लग जायें तो दूसरे मुसलमानों को चाहिये कि उनमें सुलह करा दें। आपस में दो लड़ने वाली जमाअ़तों को मोमिन कहना, इससे हज़रत इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह ने इस्तिदलाल किया है कि नाफ़रमानी अगरचे कितनी ही बड़ी हो इनसान को ईमान से अलग नहीं करती। ख़ारजियों का और उनके मुवाफ़िक़ मोतज़िला का मज़हब इस बारे में ख़िलाफ़े हक़ है। इस आयत की ताईद उस हदीस से भी होती है जो सही बुख़ारी वग़ैरह में मरवी है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. मिम्बर पर ख़ुतबा दे रहे थे, आपके साथ मिम्बर पर हज़रत हसन बिन अ़ली रज़ि. भी थे, आप कभी उनकी तरफ़ देखते कभी लोगों की तरफ़ और फ़रमाते- मेरा यह बच्चा सय्यद है और इसकी वजह से अल्लाह तआ़ला मुसलमानों की दो बड़ी जमाअ़तों में सुलह कर देगा। आपकी यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) सच्ची निकली और शाम व इराक़ वालों में बड़ी लम्बी लड़ाईयों और बड़े नापसन्दीदा वाक़िआ़त के बाद आपकी वजह से सुलह हो गयी।

फिर इरशाद होता है कि अगर एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़्यादती करे तो ज़्यादती करने वाले से लड़ाई की जाये, ताकि वह फिर ठिकाने आ जाये, हक़ को सुने और मान ले। सही हदीस में है कि अपने भाई की मदद करो, ज़ालिम हो तो और मज़लूम हो तो। हज़रत अनस रज़ि. ने पूछा कि मज़लूम होने की

हालत में तो ज़ाहिर है लेकिन ज़ालिम होने की हालत में कैसे मदद करूँ? हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया- उसे ज़ुल्म से रोक दो यही उसकी उस वक़्त की मदद है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. से एक मर्तबा कहा गया कि अच्छा होता अगर आप अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के यहाँ चले चलते, चुनाँचे आप सवार हुए और सहाबा आपके साथ हो लिये। ज़मीन नमकीली थी जब हुज़ूर वहाँ पहुँचे तो यह कहने लगा मुझसे अलग रहिये ख़ुदा की क़सम आपकी सवारी की बदबू ने मेरा दिमाग़ परेशान कर दिया। इस पर एक अन्सारी सहाबी ने कहा अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह सल्ल. की सवारी की ख़ुशबू तेरी बू (गंध) से बहुत ही अच्छी है। इस पर इधर से उधर से कुछ लोग बोल पड़े और मामला बढ़ने लगा बल्कि कुछ हाथा-पाई हो भी गयी। उनके बारे में यह आयत उतरी है।

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि औस और ख़ज़रज क़बीलों में कुछ तनातनी हो गयी थी, उनमें सुलह करा देने का इस आयत में हुक्म हो रहा है। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि इमरान नाम के एक अन्सारी थे उनकी बीवी साहिबा का नाम उम्मे ज़ैद था। उसने अपने मैके जाना चाहा, शौहर ने रोका और मना कर दिया कि मैके का कोई शख़्स यहाँ भी न आये। औरत ने यह ख़बर अपने मैके कहलवा दी, वे लोग आये और उसे बालाख़ने (चौबारे) से उतार लाये और ले जाना चाहा, उनके शौहर घर पर न थे, उन्हें उनके रिश्तेदारों ने उसके चचाज़ाद भाईयों को इत्तिला देकर उन्हें बुला लिया और नतीजा यह हुआ कि तल्ख़ी पैदा हो गयी। उनके बारे में यह आयत उतरी। रसूले ख़ुदा सल्ल. ने दोनों तरफ़ के लोगों को बुलाकर बीच में बैठकर सुलह करा दी और सब लोग मिल गये।

फिर हुक्म होता है कि दोनों पार्टियों में अ़दल (इन्साफ़) करो, अल्लाह आ़दिलों (इन्साफ़ करने वालों) को पसन्द फ़रमाता है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया में जो अ़दल व इन्साफ़ करेगा ये लोग उन मिम्बरों पर ख़ुदा की दायीं तरफ़ होंगे, ये अपने हुक्म में और अपने बाल-बच्चों में और जो कुछ उनके क़ब्ज़े में था उसमें अ़दल (इन्साफ़ और बराबरी) से काम लिया करते थे।

फिर फ़रमाया तमाम मोमिन दीनी भाई हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुसलमान मुसलमान का भाई है, उसे उस पर ज़ुल्म व सितम न करना चाहिये। सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहे। एक और सही हदीस में है कि जब कोई मुसलमान अपने ग़ैर-हाज़िर भाई मुसलमान के लिये उसकी पीठ पीछे दुआ़ करता है तो फ़रिश्ता कहता है कि आमीन, और तुझे भी ख़ुदा ऐसा ही दे। इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं। सही हदीस में है कि मुसलमान सारे के सारे अपनी मुहब्बत, रहम-दिली और मेल-जोल में एक जिस्म की तरह हैं, जब किसी अंग को तकलीफ़ हो तो सारा जिस्म तड़प उठता है। कभी बुख़ार चढ़ आता है, कभी रातों को जागने की तकलीफ़ होती है। एक और सही हदीस में है कि मोमिन मोमिन के लिये एक दीवार की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को ताक़त पहुँचाता और मज़बूत करता है। फिर आपने अपनी एक हाथ की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालकर बताया। मुस्नद अहमद में है कि मोमिन का ताल्लुक़ ईमान वालों से ऐसा है जैसे सर का ताल्लुक़ जिस्म से है, मोमिन ईमान वालों के लिये वही दर्दमन्दी करता है जो दर्दमन्दी जिस्म को सर के साथ है।

फिर फ़रमाता है कि दोनों लड़ने वाली जमाअ़तों और दोनों तरफ़ के मुसलमान भाईयों में सुलह करा दो, अपने तमाम कामों में ख़ुदा का डर रखो। यही वे गुण हैं जिनकी वजह से अल्लाह की रहमत तुम पर नाज़िल होगी। परहेज़गारों के साथ ही रब का रहम रहता है।

يَـٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○	ऐ ईमान वालो! न तो मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए क्या अजब है कि (जिन पर हंसते हैं) वे उन (हंसने वालों) से (ख़ुदा के नज़दीक) बेहतर हों। और न औरतों को औरतों पर हंसना चाहिए, क्या अजब है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक-दूसरे को ताना दो, और न एक-दूसरे को बुरे लक़ब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना (ही) बुरा है। और जो लोग (इन हरकतों से) बाज़ न आएँगे तो वे ज़ुल्म करने वाले हैं। (11)

एक ज़रूरी तंबीह

अल्लाह तबारक व तआ़ला लोगों को अपमानित करने और उनका मज़ाक़ उड़ाने से रोक रहा है। हदीस शरीफ़ में है कि तकब्बुर नाम है हक़ से मुँह मोड़ लेने और लोगों को ज़लील व ख़्वार समझने का। इसकी वजह क़ुरआने करीम ने यह बयान फ़रमाई कि जिसको तुम ज़लील कर रहे हो, जिसका तुम मज़ाक़ उड़ा रहे हो, मुम्किन है ख़ुदा के नज़दीक वह तुम से ज़्यादा इज़्ज़त वाला हो। मर्दों को मना करके फिर औरतों को भी इससे रोका। फिर दूसरों के ऐब तलाशने और नुक्ताचीनी (आलोचना) करने से रोका और इस बुरी ख़स्लत को हराम क़रार दिया। चुनाँचे क़ुरआने करीम का इरशाद है:

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ.

यानी हर ताना देने वाले या ऐब ढूँढ़ने वाले के लिये ख़राबी है। एक और आयत में है:

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ.

यानी वह जो लोगों को हक़ीर गिनता हो, उन पर चढ़ा चला जा रहा हो और लगाने बुझाने वाला हो।

ग़र्ज़ कि इन तमाम कामों को हमारी शरीअ़त ने हराम क़रार दिया। यहाँ लफ़्ज़ तो ये हैं कि ख़ुद पर ऐब न लगाओ, मतलब यह है कि आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओ। जैसे एक जगह फ़रमाया है:

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ.

यानी एक दूसरे को क़त्ल न करो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., इमाम मुजाहिद, सईद बिन क़तादा और मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं- इसका मतलब यह है कि एक दूसरे को ताने न दे। फिर फ़रमाया कि किसी की कोई चिड़ न निकालो, जिस लक़ब (उपनाम) से वह नाराज़ होता हो उस लक़ब से न पुकारो, न नाम रखो। मुस्नद अहमद में है कि यह हुक्म बनू सलमा के बारे में नाज़िल हुआ है। जब हुज़ूरे पाक मदीना में आये तो यहाँ पर एक-एक शख़्स के दो-दो तीन-तीन नाम थे, हुज़ूर सल्ल. उनमें से किसी को किसी नाम से पुकारते तो लोग कहते या रसूलल्लाह! यह इससे चिड़ता है। इस पर यह आयत उतरी। (अबू दाऊद)

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमान है कि ईमान की हालत में फ़ासिक़ाना अलक़ाब (गुनाह भरे बुरे नामों) से आपस में एक दूसरे को नामज़द करना निहायत बुरी बात है। अब तुम्हें इससे तौबा करनी चाहिये वरना ज़ालिम गिने जाओगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝

ऐ ईमान वालो! बहुत-से गुमानों से बचा करो, क्योंकि बाज़े गुमान गुनाह होते हैं। और सुराग़ मत लगाया करो। और कोई किसी की ग़ीबत भी न किया करे। क्या तुममें से कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? इसको तो तुम नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला, मेहरबान है। (12)

बदगुमानी, खोज लगाने और ग़ीबत करने से बचो

अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को बदगुमानियों (दूसरों के बारे में बुरा ख़्याल रखने), तोहमत धरने और अपने व ग़ैरों को ख़ौफ़ज़दा करने से और ख़्वाह-मख़्वाह की दहशत दिल में रखने से रोकता है, और फ़रमाता है कि कई बार इस किस्म के गुमान बिल्कुल गुनाह होते हैं। पस तुम्हें इसमें पूरी एहतियात चाहिये। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया- तेरे मुसलमान भाई की ज़बान से जो कलिमा निकला हो, जहाँ तक तुझसे हो सके उसे भलाई और अच्छाई पर महमूल कर (यानी उसका सही और अच्छा मतलब ले)। इब्ने माजा में है कि नबी सल्ल. ने काबा शरीफ़ का तवाफ़ करते हुए फ़रमाया- तू कितना पाक घर है, तू कैसी अच्छी ख़ुशबू वाला है, तू किस क़द्र बड़ाई वाला है और कैसी बड़ी हुर्मत (सम्मान) वाला है, उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है कि मोमिन की हुर्मत (आबरू व सम्मान) उसके माल और उसकी जान की हुर्मत और उसके साथ नेक गुमान करने की अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तेरी हुर्मत से बहुत बड़ी है। यह हदीस सिर्फ़ इब्ने माजा में ही है, सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि बदगुमानी से बचो, गुमान सबसे बड़ी झूठी बात है। भेद न टटोलो (यानी किसी के राज़ तलाश न करो) एक दूसरे की नेमतें हासिल करने की कोशिश में न लग जाया करो। हसद, बुग़ज़ और एक दूसरे से मुँह फुलाने से बचो, सब मिलकर ख़ुदा के बन्दे और आपस में भाई-भाई बनकर रहो सहो। मुस्लिम वग़ैरह में है कि एक दूसरे से रूठकर न बैठ जाया करो। एक दूसरे से मेल-जोल न छोड़ दो। एक दूसरे से हसद व बुग़ज़ (जलना और बैर रखना) न किया करो, बल्कि सब मिलकर ख़ुदा के बन्दे आपस में एक दूसरे के भाई-बन्द होकर ज़िन्दगी गुज़ारो, किसी मुसलमान को हलाल नहीं कि अपने दूसरे मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोल-चाल और मेल-जोल छोड़ दे। तबरानी में है कि तीन ख़स्लतें मेरी उम्मत में रह जायेंगी- फ़ाल लेना, हसद करना और बदगुमानी करना। एक शख़्स ने पूछा- हुज़ूर! फिर उनकी तलाफ़ी क्या है? फ़रमाया जब हसद करे तो इस्तिग़फ़ार कर ले, जब गुमान पैदा हो तो उसे दिल से निकाल

दे और यक़ीन न करे और जब शगुन ले चाहे नेक निकले चाहे बुरा, अपने काम से न रुके, उसे पूरा करे।

अबू दाऊद में है कि एक शख़्स को हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के पास लाया गया और कहा गया कि इसकी दाढ़ी से शराब के क़तरे गिर रहे हैं। आपने फ़रमाया- हमें भेद टटोलने से मना फ़रमाया गया है। अगर हमारे सामने कोई चीज़ ज़ाहिर हो गयी तो हम उस पर पकड़ कर सकते हैं। मुस्नद अहमद में है कि उक़्बा कातिबे-वही के पास हज़रत अबुल-हैसम गये और उनसे कहा कि मेरे पड़ोस में कुछ लोग शराबी हैं, मेरा इरादा है कि मैं दारोग़ा को बुलाकर उन्हें गिरफ़्तार करा दूँ। आपने फ़रमाया ऐसा न करना, बल्कि उन्हें समझाओ बुझाओ, डाँट-डपट कर दो। फिर कुछ दिनों के बाद आये और कहा वे बाज़ नहीं रहते, अब तो मैं ज़रूर दारोग़ा को बुलाऊँगा। आपने फ़रमाया अफ़सोस अफ़सोस तुम हरगिज़ हरगिज़ ऐसा न करो, सुनो मैंने रसूले ख़ुदा सल्ल. से सुना है, आपने फ़रमाया- जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दादारी करे (यानी उसका ऐब छुपाये) उसे इतना सवाब मिलेगा जैसे किसी ने ज़िन्दा दफ़न की गयी लड़की को बचाया। अबू दाऊद में है, हज़रत मुआ़विया रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है- अगर तू लोगों की पोशीदगियाँ (छुपी बातें) और उनके राज़ टटोलने के पीछे लगेगा तो तू उन्हें बिगाड़ देगा। फ़रमाया मुम्किन है तू उन्हें ख़राब कर दे। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस हदीस से अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुआ़विया रज़ि. को बहुत फ़ायदा पहुँचाया। अबू दाऊद की एक और हदीस में है कि अमीर और बादशाह जब अपने मातहतों और प्रजा की बुराईयाँ टटोलने लग जाता है और गहराई में उतरना शुरू कर देता है तो उन्हें बिगाड़ देता है।

फिर फ़रमाया कि 'तजस्सुस' न करो, यानी बुराईयाँ मालूम करने की कोशिश न करो, ताक-झाँक न किया करो। इसी से जासूस निकला है। 'तजस्सुस' का इतलाक़ उमूमन बुराई पर होता है और 'तहस्सुस' का इतलाक़ भलाई के ढूँढने पर जैसा कि हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने बेटों से फ़रमाते हैं:

فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ....... الخ.

बच्चो! तुम जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई को ढूँढो और ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न होओ।

और कभी-कभी इन दोनों का इस्तेमाल शर और बुराई में होता है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि न 'तजस्सुस' करो, न 'तहस्सुस' करो, न हसद व बुग़ज़ करो, न मुँह मोड़ो बल्कि सब मिलकर अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बन जाओ। इमाम औज़ाई रह. फ़रमाते हैं- 'तजस्सुस' कहते हैं किसी चीज़ में कुरेदने को और 'तहस्सुस' कहते हैं उन लोगों की चुपके-चुपके बातें करने पर कान लगाने को जो किसी को अपनी बातें सुनाना न चाहते हों, और 'तदाबुर' कहते हैं एक दूसरे से रुक कर दुखी होकर ताल्लुक़ात ख़त्म करने को।

फिर ग़ीबत से मना फ़रमाता है। अबू दाऊद में है कि लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह- 'ग़ीबत' क्या है? फ़रमाया यह कि तू अपने मुसलमान भाई की किसी ऐसी बात का ज़िक्र करे जो उसे बुरी मालूम हो। कहा गया अगर वह बात उसमें हो तब भी? फ़रमाया हाँ ग़ीबत तो यही है वरना बोहतान और तोहमत है। अबू दाऊद में है कि एक मर्तबा हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि सफ़िया (हुज़ूरे पाक की एक बीवी साहिबा) तो ऐसी-ऐसी हैं, हदीस के रावी कहते हैं यानी छोटे क़द की, तो हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया तूने ऐसी बात कही है कि अगर समन्दर के पानी में मिला दी जाये तो उसे भी ख़राब कर दे। और एक मर्तबा आपके सामने किसी शख़्स की कुछ ऐसी ही बातें बयान की गयीं तो आपने फ़रमाया- मैं इसे पसन्द नहीं करता चाहे मुझे कोई बहुत बड़ा नफ़ा (फ़ायदा और लाभ) भी मिल जाये।

Maktab E Ashraf

Maktab-E-Ashraf

इब्ने जरीर में है कि एक सहाबी औरत हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहाँ आयीं, जब वह जाने लगीं तो हज़रत आयशा ने हुज़ूर सल्ल. को इशारे से कहा कि यह बहुत छोटे क़द की है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तुमने उनकी ग़ीबत की। ग़र्ज़ कि ग़ीबत हराम है और इसकी हुर्मत पर मुसलमानों का इजमा (सब की एक राय) है। लेकिन हाँ शरई मस्लेहत की बिना पर किसी की ऐसी बात का ज़िक्र करना ग़ीबत में दाख़िल नहीं जिससे किसी की भलाई और नसीहत मक़सूद हो या जैसे किसी मामले का फ़ैसला उससे करना हो। जैसा कि नबी सल्ल. ने एक बुरे शख़्स के बारे में फ़रमाया था- यह बहुत बुरा आदमी है और जैसे कि हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया था- मुआ़विया मुफ़लिस (ग़रीब) शख़्स है और अबुल-जोहम बड़ा मारने पीटने वाला आदमी है। यह आपने उस वक़्त फ़रमाया था जब इन दोनों हज़रात ने हज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह का इरादा किया था। और भी जो बातें इस तरह की हों उनकी तो इजाज़त है, बाक़ी और ग़ीबत हराम और कबीरा गुनाह है। इसी लिये यहाँ फ़रमाया कि जिस तरह तुम अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से घिन करते हो इससे बहुत ज़्यादा नफ़रत तुम्हें ग़ीबत से करनी चाहिये। जैसे हदीस में है कि अपने दिये हुए हिबा को वापस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता जो क़ै करके चाट लेता है। और फ़रमाया बुरी मिसाल हमारे लिये लायक़ नहीं। हज्जतुल-विदा के ख़ुतबे में है कि तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल, तुम्हारी आबरू तुम पर ऐसे ही हराम हैं जैसी हुर्मत तुम्हारे इस दिन की तुम्हारे इस महीने में और तुम्हारे इस शहर में है। अबू दाऊद में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि मुसलमान का माल, उसकी इज़्ज़त और उसका ख़ून मुसलमान पर हराम है। इनसान को इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वह अपने दूसरे मुसलमान भाई का अपमान और बेइज़्ज़ती करे। एक और हदीस में है- ऐ वे लोगो! जिनकी ज़बानें तो ईमान ला चुकी हैं लेकिन दिल ईमान वाले नहीं हुए, तुम मुसलमानों की ग़ीबतें करनी छोड़ दो और उनके ऐबों की कुरेद न किया करो, याद रखो अगर तुमने उनके ऐब टटोले तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी छुपी हुई बातों और राज़ों को ज़ाहिर कर देगा, यहाँ तक कि तुम अपने घराने वालों में भी बदनाम और रुस्वा हो जाओगे। मुस्नद अबू यअ़ला में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमें एक ख़ुतबा सुनाया जिसमें आपने पर्दा नशीन औरतों के कानों में भी अपनी आवाज़ पहुँचाई और उस ख़ुतबे में ऊपर वाली हदीस बयान फ़रमाई।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने एक मर्तबा काबा शरीफ़ की तरफ़ देखा और फ़रमाया- तेरी हुर्मत व बड़ाई का क्या ही कहना है, लेकिन तुझसे भी बहुत ज़्यादा हुर्मत (आबरू व सम्मान) एक ईमान वाले शख़्स की ख़ुदा के नज़दीक है। अबू दाऊद में है कि जिसने किसी मुसलमान की बुराई करके एक निवाला हासिल किया उसे जहन्नम की उतनी ही गिज़ायें खिलाई जायेंगी। इसी तरह जिसने मुसलमान की बुराई करने पर पोशाक हासिल की उसे उसी जैसी पोशाक जहन्नम की पहनाई जायेगी, और जो शख़्स किसी दूसरे की बड़ाई दिखाने सुनाने को खड़ा हुआ उसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन दिखावे सुनावे के मक़ाम पर खड़ा कर देगा।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेराज वाली रात मैंने देखा कि कुछ लोगों के नाख़ुन ताँबे के हैं जिनसे वे अपने चेहरे और सीने नोच रहे हैं। मैंने पूछा- जिब्रील ये कौन हैं? अ़र्ज़ किया ये वे हैं जो लोगों के गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़तें लूटते थे। (अबू दाऊद) एक और रिवायत में है कि लोगों के सवाल के जवाब में आपने फ़रमाया- मेराज वाली रात मैंने बहुत से लोगों को देखा जिनमें मर्द और औरत दोनों थे, कि फ़रिश्ते उनकी करवटों से गोश्त काटते हैं और फिर उन्हें उसके खाने पर मजबूर कर रहे हैं और वे उसे चबा रहे हैं। मेरे सवाल पर कहा गया कि ये वे लोग हैं जो ताना मारने वाले, ग़ीबत करने वाले, चुग़लख़ोर थे,

इन्हें जबरन आज ख़ुद इनका गोश्त खिलाया जा रहा है। (इब्ने अबी हातिम) यह हदीस बहुत लम्बी है और हमने पूरी हदीस सूरः बनी इस्राईल की तफ़सीर में बयान भी कर दी है।

मुस्नद अबू दाऊद तयालिसी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने लोगों को रोज़े का हुक्म दिया और फ़रमाया- जब तक मैं न कहूँ कोई इफ़्तार न करे। शाम को लोग आने लगे और आपसे मालूम करने लगे, आप उन्हें इजाज़त देते और वे इफ़्तार करते। इतने में एक साहिब आये और कहा हुज़ूर! दो औरतों ने रोज़ा रखा था जो आप ही के मुताल्लिक़ीन में से हैं, उन्हें भी आप इजाज़त दीजिए कि रोज़ा खोल लें। आपने उससे मुँह फेर लिया। उसने दोबारा अ़र्ज़ किया तो आपने फ़रमाया वे रोज़े से नहीं हैं। क्या वह भी रोज़ेदार हो सकता है जो इनसानी गोश्त खाता रहे? जाओ उन्हें कहो कि अगर वे रोज़े से हैं तो क़ै करें। चुनाँचे उन्होंने क़ै की जिसमें जमे हुए ख़ून के लौथड़े निकले। उसने आकर हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी, आपने फ़रमाया अगर ये इसी हालत में मर जातीं तो आग का लुक़्मा बनतीं। इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और मतन भी ग़रीब है। एक दूसरी रिवायत में है कि उस शख़्स ने कहा था हुज़ूर! उन दोनों औरतों का बुरा हाल है, मारे प्यास के मर रही हैं और यह दोपहर का वक़्त था। हुज़ूरे पाक की ख़ामोशी पर उसने दोबारा कहा कि या रसूलल्लाह! वे तो मर गयी होंगी या थोड़ी देर में मर जायेंगी। आपने फ़रमाया जाओ उन्हें बुला लाओ। वे आयीं तो आपने दूध का बरतन एक के सामने रखकर फ़रमाया इसमें क़ै कर, तो उसमें पीप, जमा हुआ ख़ून वग़ैरह निकला, जिससे आधा बरतन भर गया। फिर दूसरी से क़ै कराई उसमें भी यही चीज़ें और गोश्त के लौथड़े वग़ैरह निकले और बरतन भर गया। उस वक़्त आपने फ़रमाया- इन्हें देखो हलाल से तो रोज़ा रखे हुए थीं और हराम खा रही थीं। दोनों बैठकर लोगों के गोश्त खाने लगी (यानी ग़ीबत कर रही) थीं।

(मुस्नद अहमद)

मुस्नद हाफ़िज़ अबू यअ़ला में है कि हज़रत माअ़िज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु रसूले ख़ुदा सल्ल. के पास आये और कहा या रसूलल्लाह! मैंने ज़िना किया है। आपने मुँह फेर लिया, यहाँ तक कि वह चार मर्तबा कह चुके फिर पाँचवीं दफ़ा आपने कहा तूने ज़िना किया है? जवाब दिया हाँ। फ़रमाया जानता है ज़िना किसे कहते हैं? जवाब दिया हाँ, जिस तरह इनसान अपनी हलाल औ़रत के पास जाता है इसी तरह मैंने हराम औ़रत से किया। आपने फ़रमाया अब तेरा मक़सद क्या है? कहा यह कि आप मुझे इस गुनाह से पाक करें। आपने फ़रमाया क्या तूने इसी तरह दख़ूल किया था जिस तरह सलाई सुर्मे दानी में और लकड़ी कुएँ में? कहा हाँ या रसूलल्लाह। अब आपने उन्हें रजम करने का (यानी पथराव करने का) हुक्म दिया। चुनाँचे यह रजम कर दिये गये। उसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने दो शख़्सों को यह कहते हुए सुना कि उसे देखो अल्लाह ने उसकी पर्दा पोशी की थी लेकिन उसने ख़ुद को न छोड़ा, यहाँ तक कि कुत्ते की तरह पथराव किया गया। आप यह सुनते हुए चलते रहे, थोड़ी देर बाद आपने देखा कि रास्ते में एक मुर्दा गधा पड़ा हुआ है, फ़रमाया फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शख़्स कहाँ हैं? वे सवारी से उतरें और इस गधे का गोश्त खायें। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला आपको बख़्शे, क्या यह खाने के क़ाबिल है? आपने फ़रमाया अभी जो तुमने अपने भाई की ग़ीबत की थी वह इससे भी ज़्यादा बुरी चीज़ थी। उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वह शख़्स जिसे तुमने बुरा कहा था वह तो अब इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है। इसकी सनद सही है। मुस्नद अहमद में है कि हम नबी सल्ल. के साथ थे कि निहायत सड़ी हुई मुर्दार बू वाली हवा चली। आपने फ़रमाया जानते हो यह बू किस चीज़ की है? यह बदबू उनकी है जो लोगों की ग़ीबत करते हैं। एक और रिवायत में है कि मुनाफ़िक़ों के एक गिरोह ने मुसलमानों की ग़ीबत की है, यह बदबूदार हवा

वह है। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत सलमान रज़ि. एक सफ़र में दो शख़्सों के साथ थे जिनकी यह ख़िदमत करते थे और वे उन्हें खाना खिलाते थे। एक मर्तबा हज़रत सलमान रज़ि. सो गये और क़ाफ़िला आगे चल पड़ा, पड़ाव पर पहुँचकर दोनों ने देखा कि हज़रत सलमान रज़ि. नहीं आये तो अपने हाथों से उन्हें ख़ेमा खड़ा करना पड़ा और गुस्से से कहा सलमान तू बस इतने ही काम का है कि पकी पकायी खा ले और तैयार ख़ेमे में आराम कर ले। थोड़ी देर में हज़रत सलमान रज़ि. पहुँचे। उन दोनों के पास सालन न था तो कहा जाओ तुम रसूलुल्लाह सल्ल. से हमारे लिये सालन ले आओ। यह गये और हुज़ूर से कहा या रसूलल्लाह! मुझे मेरे दोनों साथियों ने भेजा है कि अगर आपके पास सालन हो तो दे दीजिए आपने फ़रमाया वे सालन क्या करेंगे? उन्होंने तो सालन पा लिया। हज़रत सलमान रज़ि. वापस गये और जाकर उनसे यह बात कही। वे उठे और ख़ुद हाज़िरे ख़िदमत हुए और कहा हुज़ूर! हमारे पास तो सालन नहीं, न आपने भेजा। आपने फ़रमाया तुमने सलमान के गोश्त का सालन खा लिया जबकि तुमने उन्हें यूँ-यूँ कहा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। "मैतन" (मुर्दा) इसलिये कि वह सोये हुए थे और ये उनकी ग़ीबत कर रहे थे।

हाफ़िज़ ज़िया मक़्दसी ने अपनी किताब "मुख़्तारा" में तक़रीबन ऐसा ही एक वाक़िआ हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान किया है। उसमें भी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया- उस ख़ादिम का गोश्त तुम्हारे दाँतों में अटका हुआ देख रहा हूँ और उनका अपने ग़ुलाम से जबकि वह सोया हुआ था और उनका खाना तैयार नहीं किया था सिर्फ़ इतना कहना बयान किया गया है कि यह तो बड़ा ही सोने वाला है। उन दोनों हज़रात ने हुज़ूर से कहा- आप हमारे लिये इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत की दुआ) कीजिए आपने फ़रमाया जाओ उसी से कहो वह तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करे। अबू यअ़ला में है कि जिसने दुनिया में अपने भाई का गोश्त खाया (यानी उसकी ग़ीबत की) क़ियामत के दिन उसके सामने वह गोश्त लाया जायेगा और कहा जायेगा कि जैसे इसकी ज़िन्दगी में तूने इसका गोश्त खाया था अब मुर्दे का गोश्त भी खा। अब यह चीख़ेगा चिल्लायेगा, हाय वाय करेगा और इसे जबरन वह मुर्दा गोश्त खाना पड़ेगा। यह रिवायत बहुत ग़रीब है।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह का लिहाज़ करो, उसके अहकाम का पालन करो, उसकी मना की हुई चीज़ों से रुक जाओ और उससे डरते रहा करो। जो उसकी तरफ़ झुके वह उसकी तरफ़ माईल हो जाता है, तौबा करने वाले की तौबा क़बूल फ़रमाता है। और जो उस पर भरोसा करे उसकी तरफ़ रुजू करे वह उस पर रहमत और मेहरबानी फ़रमाता है।

जमहूर उलेमा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि ग़ीबत करने वाले की तौबा का तरीक़ा यह है कि वह इस ख़स्लत (आ़दत) को छोड़ दे और फिर से इस गुनाह को न करे। पहले जो कर चुका है उस पर नादिम (शर्मिन्दा) होना भी शर्त है या नहीं? इसमें उलेमा का मतभेद है, और जिसकी ग़ीबत की है उससे माफ़ी हासिल कर ले। बाज़ कहते हैं कि यह भी शर्त नहीं, इसलिये कि मुम्किन है उसे ख़बर न हो और माफ़ी माँगने को जब जायेगा तो उसे और रंज होगा। पस इसका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि जिन मज्लिसों में उसकी बुराई बयान की थी उनमें अब उसकी भलाई बयान करे और उस बुराई को अपनी ताक़त के मुताबिक़ दूर कर दे तो यह उसका बदला हो जायेगा।

मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स उस वक़्त किसी मोमिन की हिमायत करे जबकि कोई मुनाफ़िक़ उसकी मज़म्मत (निंदा और बुराई) बयान कर रहा हो, अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को मुक़र्रर कर देता है

Maktab E Ashraf

जो क़ियामत वाले दिन उसके गोश्त को जहन्नम की आग से बचायेगा। और जो शख़्स किसी मोमिन पर कोई ऐसी बात कहेगा जिससे उसका इरादा उसको ताना देने का हो, उसे अल्लाह तआ़ला पुलसिरात पर रोक लेगा, यहाँ तक कि बदला हो जाये। यह हदीस अबू दाऊद में भी है।

अबू दाऊद शरीफ़ की एक और हदीस में है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की बेइज़्ज़ती ऐसी जगह में करे जहाँ उसकी आबरू जाती और तौहीन होती हो तो उसे अल्लाह तआ़ला ऐसी जगह रुस्वा करेगा जहाँ वह अपनी मदद का तालिब हो। और जो मुसलमान ऐसी जगह अपने भाई की हिमायत करे अल्लाह तआ़ला भी ऐसी जगह उसकी मदद करेगा। (अबू दाऊद)

ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया है, और तुमको मुख़्तलिफ़ क़ौमें और मुख़्तलिफ़ ख़ानदान बनाया ताकि एक-दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नज़दीक तुम सब में बड़ा शरीफ़ वही है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। अल्लाह ख़ूब जानने वाला, पूरा ख़बर रखने वाला है। (13)	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ○

तक़वा और उसकी मक़बूलियत

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि उसने तमाम इनसानों को एक ही नफ़्स से पैदा किया है यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से। उन ही से उनकी बीवी हज़रत हव्वा को पैदा किया था और फिर उन दोनों से इनसानी नस्ल फैली। 'शुऊब' 'क़बाईल' से आ़म है। मिसाल के तौर पर अ़रब तो शुऊब में दाख़िल है फिर क़ुरैश ग़ैर-क़ुरैश, फिर उनकी तक़सीम, ये सब क़बाईल में दाख़िल है। बाज़ कहते हैं कि शुऊब (क़ौमों) से मुराद अजमी (ग़ैर-अ़रबी) लोग और क़बाईल से मुराद अ़रब जमाअ़तें हैं, जैसे कि बनी इस्राईल को 'अस्बात' कहा गया है।

मक़सद इस आयते मुबारका का यह है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जो मिट्टी से पैदा हुए थे उनकी तरफ़ की निस्बत करने में तो दुनिया के तमाम आदमी बराबर और एक मर्तबे के हैं। अब जो कुछ फ़ज़ीलत जिस किसी को हासिल होगी वह दीनी मामले, अल्लाह की इताअ़त और नबी करीम की पैरवी की वजह से होगी। यही राज़ है कि इस आयत को ग़ीबत की मनाही और एक दूसरे की तौहीन व अपमान से रोकने के बाद ज़िक्र किया गया, कि सब लोग अपने पैदाईशी ताल्लुक़ के एतिबार से बिल्कुल बराबर हैं। कुनबे-क़बीले, बिरादरियाँ और जमाअ़तें सिर्फ़ पहचान के लिये हैं ताकि आपसी मेल-जोल, एकता और हमदर्दी क़ायम रहे। फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ क़बीले वाला कहा जा सके, और इस तरह एक दूसरे की पहचान आसान हो जाये, वरना इनसान होने के एतिबार से सब क़ौमें एक जैसी और बराबर हैं। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि क़बीला हिम्यर अपने हलीफ़ों (दोस्तों) की तरफ़ मन्सूब होता था और हिजाज़ के अ़रब अपने क़बीलों की तरफ़ अपनी निस्बत करते थे। तिर्मिज़ी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि नसब का इल्म हासिल करो ताकि सिला-रहमी कर सको। सिला-रहमी से लोग तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे। तुम्हारे माल और तुम्हारी ज़िन्दगी में ख़ुदा बरकत देगा। यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

फिर फ़रमाया कि हसब नसब (ख़ानदान व क़बीला) ख़ुदा के यहाँ नहीं चलता, वहाँ तो फ़ज़ीलत तक़्वा और परहेज़गारी से मिलती है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया गया कि सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन है? आपने फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। लोगों ने कहा हम यह आम बात नहीं पूछते, फ़रमाया फिर सब से ज़्यादा इज़्ज़त व सम्मान वाले हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम हैं जो ख़ुद नबी थे, नबी के बेटे थे, दादा भी नबी थे, परदादा तो ख़लीलुल्लाह थे। उन्होंने कहा हम यह भी नहीं पूछते, फ़रमाया फिर अ़रब के बारे में पूछते हो? सुनो उनके जो लोग जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) के दौर में नुमायाँ और सम्मानित थे वही अब इस्लाम में भी पसन्दीदा हैं जबकि वे दीनी इल्म की समझ हासिल कर लें (यानी इस्लाम की दौलत से मालामाल हों, बिना इस्लाम के कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं)।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि अल्लाह तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और अ़मलों को देखता है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबूज़र से फ़रमाया- ख़्याल रख कि तू किसी सुर्ख़ व सियाह पर कोई फ़ज़ीलत नहीं रखता, हाँ तक़्वा में बढ़ जाये तो फ़ज़ीलत वाला है। तबरानी में है कि मुसलमान सब आपस में भाई-भाई हैं, किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं, मगर तक़्वा (परहेज़गारी) के साथ। मुस्नद बज़्ज़ार में है कि तुम सब आदम की औलाद हो और ख़ुद हज़रत आदम मिट्टी से पैदा किये गये हैं। लोगो! अपने बाप दादों के नाम पर फ़ख़्र करने से बाज़ आओ वरना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक रेत के तूदों और पानी के परिन्दों से भी ज़्यादा हल्के हो जाओगे।

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़त्हे-मक्का वाले दिन अपनी ऊँटनी क़सवा पर सवार होकर तवाफ़ किया और अरकान को आप अपनी छतरी से छू लेते थे। फिर चूँकि मस्जिद में उसके बैठाने की जगह न मिली तो लोगों ने आपको हाथों हाथ उतारा और ऊँटनी को मसील के बीच में लेकर बैठाया उसके बाद आपने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर लोगों को ख़ुतबा सुनाया, जिसमें अल्लाह तआ़ला की पूरी तारीफ़ व सना बयान करके फ़रमाया- लोगो! अल्लाह तआ़ला ने तुमसे जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के असबाब (वुजूहात और कारण) और जाहिलीयत के बाप-दादों पर फ़ख़्र करने की रस्म अब दूर कर दी है, पस इनसान दो ही क़िस्म के हैं या तो नेक काम करने वाल परहेज़गार जो ख़ुदा के नज़दीक बुलन्द मर्तबे वाले हैं, या बदकार ग़ैर-मुत्तक़ी जो ख़ुदा की निगाहों में ज़लील व ख़्वार हैं। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अल्लाह तआ़ला से अपने लिये और तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

मुस्नद अहमद में है कि तुम्हारे ये नसब नामे दर असल कोई काम देने वाले नहीं, तुम सब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद हो, किसी को किसी पर फ़ज़ीलत नहीं, हाँ फ़ज़ीलत दीन व तक़्वा से है। इनसान को यही बुराई काफ़ी है कि वह बद-गो (बुरी बात कहने वाला), बख़ील और गन्दा कलाम करने वाला हो। इब्ने जरीर की इस रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हसब-नसब (ख़ानदान और नस्ल) को क़ियामत के दिन न पूछेगा, तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले और सम्मानित ख़ुदा के नज़दीक वे हैं जो तुम सबसे ज़्यादा परहेज़गार हों। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. मिम्बर पर थे कि एक शख़्स ने सवाल किया- या रसूलल्लाह! सबसे बेहतर कौन है? आपने फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा मेहमान-नवाज़ सबसे ज़्यादा परहेज़गार सबसे ज़्यादा अच्छी बात का हुक्म देने वाला सबसे ज़्यादा बुरी बात से रोकने वाला सबसे ज़्यादा सिला-रहमी करने (रिश्तों को जोड़ने) वाला हो। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. को दुनिया की कोई चीज़ या कोई शख़्स कभी भला नहीं लगता था सिवाय तक़्वा वाले के, अल्लाह तुम्हें जानता है और तुम्हारे

कामों से ख़बरदार है। हिदायत के लायक़ जो हैं उन्हें सही राह दिखाता है और जो इस लायक़ नहीं वे बेराह हो रहे हैं। रहम और अ़ज़ाब उसकी मशीयत (मर्ज़ी और चाहत) पर मौक़ूफ़ हैं, फ़ज़ीलत उसके हाथ में है, जिसे चाहे अ़ता फ़रमाये। ये तमाम उमूर उसके इल्म और उसकी ख़बर पर मबनी हैं।

इस आयते करीमा और इन पाक हदीसों से इस्तिदलाल करके उलेमा ने फ़रमाया है कि निकाह में क़ौमियत और हसब-नसब की शर्त नहीं, सिवाय दीन के और कोई शर्त मोतबर नहीं। कुछ हज़रात ने कहा है कि नसल व ख़ानदान और क़ौमियत भी शर्त है और उनके दलाईल उनसे अलग हैं जो मसाईल की किताबों में बयान हुए हैं।

तबरानी में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान से मरवी है कि उन्होंने बनू हाशिम में से एक शख़्स को यह कहते हुए सुना कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. से दूसरे तमाम लोगों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा क़रीब हूँ। पस फ़रमाया तेरे मुक़ाबले में मैं हुज़ूर से ज़्यादा क़रीब हूँ, हाँ तुझे आप से नसबी ताल्लुक़ है।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ
لٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ
فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ
اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ
لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ
عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ

ये गंवार कहते हैं कि हम ईमान ले आए। आप फ़रमा दीजिए कि तुम ईमान तो नहीं लाए लेकिन यूँ कहो कि हम (मुख़ालफ़त छोड़कर) फ़रमाँबरदार हो गए, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल का कहना मान लो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल में से ज़रा भी कमी न करेगा, बेशक अल्लाह मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (14) पूरे मोमिन वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक नहीं किया और अपने माल और जान से ख़ुदा के रास्ते में जिहाद किया, ये लोग हैं सच्चे। (15) आप फ़रमा दीजिए कि क्या ख़ुदा तआ़ला को अपने दीन की ख़बर देते हो हालाँकि अल्लाह को तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों की ख़बर है, और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है। (16) ये लोग अपने इस्लाम लाने का आप पर एहसान रखते हैं, आप कह दीजिए कि मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुमको ईमान की हिदायत दी, बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (17)

बेशक अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है, और तुम्हारे सब आमाल को भी जानता है। (18)	صٰدِقِيْنَ٥ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ٥

Maktaba Ashraf

देहातियों और ग्रामीणों को एक तालीम

जो देहाती लोग इस्लाम में दाख़िल होते ही अपने ईमान बढ़ा-चढ़ाकर दावा करने लगते थे हालाँकि दर असल उनके दिल में अब तक ईमान की जड़ें मज़बूत नहीं हुई थीं, उनको अल्लाह तआला इस दावे से रोकता है। ये कहते थे- हम ईमान लाये। अल्लाह तआला अपने नबी को हुक्म देता है कि चूँकि अब तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ, तुम यूँ कहो कि हम मुसलमान हुए यानी इस्लाम के दायरे में आये, नबी की इताअ़त में आये। इस आयत ने यह फ़ायदा दिया कि ईमान इस्लाम से मख़्सूस (अलग और ख़ास) चीज़ है, जैसा कि अहले-सुन्नत वल-जमाअ़त का मज़हब है।

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम वाली हदीस भी इसी पर दलालत करती है जबकि उन्होंने इस्लाम के बारे में, फिर एहसान के बारे में, गोया कि आ़म से ख़ास की तरफ़ आये और फिर ख़ास से ज़्यादा ख़ास की तरफ़ आये। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने चन्द लोगों को अ़तीया और इनाम दिया और एक शख़्स को कुछ भी न दिया, इस पर हज़रत सअ़्द रज़ि. ने फ़रमाया- या रसूलल्लाह! आपने फ़ुलाँ-फ़ुलाँ को दिया और फ़ुलाँ-फ़ुलाँ को छोड़ दिया, हालाँकि वह मोमिन है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुसलमान। तीन मर्तबा एक के बाद एक हज़रत सअ़्द रज़ि. ने यही कहा और हुज़ूर ने भी यही जवाब दिया। फिर फ़रमाया ऐ सअ़्द! मैं लोगों को देता हूँ और जो उनमें से मुझे बहुत ज़्यादा महबूब होता है उसे नहीं देता हूँ। देता हूँ इस डर से कि कहीं वे औंधे मुँह आग में न गिर पड़ें (मतलब यह है कि जो ग़रीब नौमुस्लिम अपनी ग़ुर्बत की वजह से इस्लाम पर मज़बूती से क़ायम नहीं रह सकते, कहीं वे कुफ़्र अपनाकर हमेशा के लिये दोज़ख़ की आग में न चले जायें)।

यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। पस इस हदीस में भी हुज़ूर सल्ल. ने मोमिन व मुस्लिम में फ़र्क़ किया और मालूम हो गया कि ईमान ज़्यादा ख़ास है इस्लाम के मुक़ाबले में। इस हदीस में इस बात पर भी दलालत है कि यह शख़्स मुसलमान थे मुनाफ़िक़ न थे, इसलिये कि आपने उन्हीं को अ़तीया अ़ता नहीं फ़रमाया और उसे उसके इस्लाम के सुपुर्द कर दिया। पस मालूम हुआ कि ये देहाती जिनका ज़िक्र इस आयत में है मुनाफ़िक़ न थे, थे तो मुसलमान लेकिन अब तक उनके दिलों में ईमान सही तौर पर जम नहीं सका था और उन्होंने उस बुलन्द मक़ाम तक अपनी रसाई हो जाने का अभी से दावा कर दिया था, इसलिये उन्हें अदब सिखाया गया। यही मतलब है हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और इब्राहीम नख़ई और क़तादा रह. के क़ौल का, और इसी को इमाम इब्ने जरीर ने इख़्तियार किया है। हमें यह सब यूँ लिखना पड़ा कि हज़रत इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि ये लोग मुनाफ़िक़ थे-जो ईमान ज़ाहिर करते थे, लेकिन असल मोमिन न थे। हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि., हज़रत मुजाहिद और हज़रत इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि यह जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया बल्कि तुम "अस्लमना" कहो, इससे मुराद यह है कि हम क़त्ल से, क़ैद व बन्द से बचने के लिये आपके फ़रमान के ताबे हो गये हैं। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत बनू असद बिन ख़ुज़ैमा के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह उन लोगों के बारे में उतरी है जो

Maktab E Ashraf

अपने ईमान लाने का हुज़ूर सल्ल. पर एहसान जताते थे। लेकिन सही बात पहली ही है कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी है जो अपने ईमान का दावा करते थे हालाँकि अब तक वहाँ पहुँचे न थे। पस उन्हें अदब सिखाया गया और बतलाया गया कि ये अब तक ईमान तक नहीं पहुँचे, अगर ये मुनाफ़िक़ होते तो इन्हें डाँट-डपट की जाती और इनकी रुस्वाई की जाती, जैसा कि सूरः बराअत में मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र किया गया, लेकिन यहाँ तो उन्हें सिर्फ़ अदब सिखाया गया।

फिर फ़रमाता है कि अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की मानते रहोगे तो तुम्हारे किसी अ़मल का अज्र ज़ाया न होगा। जैसे एक जगह फ़रमाया:

مَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ۔

हमने उनके आमाल में से कुछ भी नहीं घटाया।

फिर फ़रमाया कि जो ख़ुदा की तरफ़ रुजू करे, बुराई से लौट आये, अल्लाह उसके गुनाह माफ़ फ़रमाने वाला और उसकी तरफ़ रहम भरी निगाहों से देखने वाला है। फिर फ़रमाता है कि कामिल ईमान वाले सिर्फ़ वे लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. पर दिल से यक़ीन रखते हैं। फिर न शक करते हैं न कभी उनके दिल में कोई बुरा ख़्याल पैदा होता है, बल्कि इसी ख़ालिस तस्दीक़ और कामिल यक़ीन पर जम जाते हैं और जमे ही रहते हैं, और अपने बेहतरीन और दिल को अच्छे लगने वाले मालों को बल्कि अपनी जानों को भी अल्लाह की राह के जिहाद में ख़र्च करते हैं। ये सच्चे लोग हैं, यानी ये हैं जो कह सकते हैं कि हम ईमान लाये। ये उन लेगों की तरह नहीं जो सिर्फ़ ज़बान से ही ईमान का दावा करके रह जाते हैं।

मुस्नद अहमद में है, नबी सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया में मोमिनों की तीन क़िस्में हैं:-

1. वे जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाये। शक व शुब्हा न किया और अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया।

2. वे जिनसे लोगों ने अमन पा लिया, न ये किसी का माल हड़पें न किसी की जान लें।

3. वे कि जब कोई लालच और हिर्स उनमें पैदा हो तो उसे अल्लाह के लिये छोड़ दें।

फिर फ़रमाता है कि क्या तुम अपने दिल का यक़ीन व दीन ख़ुदा को दिखाते हो? वह तो ऐसा है कि ज़मीन व आसमान का कोई ज़र्रा उससे छुपा नहीं, वह हर चीज़ का जानने वाला है। फिर फ़रमाया कि जो देहाती अपने इस्लाम लाने का एहसान और भार आप सल्ल. पर रखते हैं उनसे कह दो कि मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न जताओ, तुम जो इस्लाम क़ुबूल करोगे, जो मेरी मातहती क़ुबूल करोगे, मेरी मदद करोगे इसका नफ़ा तुम्हीं को मिलेगा, बल्कि दर असल ईमान की हिदायत तुम्हें देना यह ख़ुदा का तुम पर एहसान है। पस अल्लाह तआ़ला का तुम में से किसी को ईमान की राह दिखाना उस पर एहसान करना है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुनैन वाले दिन अन्सार सहाबा से फ़रमाया था कि क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में नहीं पाया था? फिर अल्लाह तआ़ला ने मेरी वजह से तुम्हें हिदायत दी। तुममें तफ़रीक़ (फूट और दुश्मनी) थी मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला ने तुम में आपसी मुहब्बत व उलफ़त पैदा फ़रमा दी। तुम ग़रीब और तंगदस्त थे तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने मेरी वजह से मालदार कर दिया। जब भी हुज़ूर सल्ल. कुछ फ़रमाते वे कहते बेशक अल्लाह और उसका रसूल इससे भी ज़्यादा एहसानों वाले हैं। मुस्नद बज़्ज़ार में है कि बनू असद रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये और कहने लगे या रसूलल्लाह! हम मुसलमान हुए, अ़रब आप से लड़ते रहे लेकिन हम आप से नहीं लड़े। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया उनमें समझ बहुत कम है, शैतान उनकी

Maktab E Ashraf

ज़बानों पर बोल रहा है और यह आयत नाज़िल हुईः

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا.......الخ.

(यानी यही आयत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) फिर दोबारा अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने अपने बेपनाह इल्म, अपनी सच्ची बाख़बरी और मख़्लूक़ के आमाल से आगाही को बयान फ़रमाया कि आसमान व ज़मीन के ग़ैब (छुपी चीज़ें और बातें) उस पर ज़ाहिर हैं और वह तुम्हारे आमाल से आगाह है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः हुजुरात की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः क़ॉफ़

सूरः क़ॉफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

जिन सूरतों को "मुफ़स्सल" की सूरतें कहा जाता है उनमें सबसे पहली सूरत यही है। अगरचे एक क़ौल यह भी है कि मुफ़स्सल की सूरतें सूरः हुजुरात से शुरू हो जाती हैं। अ़वाम में जो मशहूर है कि मुफ़स्सल की सूरतें सूरः नबा से शुरू होती हैं यह बिल्कुल बेअसल बात है। उलेमा में से कोई भी इसका क़ायल नहीं। मुफ़स्सल की सूरतों की पहली सूरत यही है। इसकी दलील अबू दाऊद की यह हदीस है जो बाब "तहज़ीबुल-क़ुरआन" (यानी क़ुरआन को तक़सीम करने और हिस्से मुतैयन करने) में है। हज़रत औस बिन हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि सक़ीफ़ के वफ़्द में हम रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए अहलाफ़ तो हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. के यहाँ ठहरे और बनू मालिक को रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने पास ठहराया। फ़रमाते हैं कि हर रात इशा के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. हमारे पास आते और खड़े-खड़े हमें अपनी बातें सुनाते, यहाँ तक कि आपको देर लग जाने की वजह से क़दमों को बदलने की ज़रूरत पड़ती। कभी इस क़दम पर खड़े होते कभी उस क़दम पर। उमूमन आप हम से वे वाक़िआत बयान करते जो आपको अपनी क़ौम क़ुरैश से सहने पड़े थे। फिर फ़रमाते- कोई हर्ज नहीं, हम मक्का में कमज़ोर थे, बेहैसियत थे, फिर हम मदीने में आ गये, अब हम में उनमें लड़ाई डोल की तरह है कभी हम उन पर ग़ालिब कभी वे। ग़र्ज़ कि हर रात सोहबत का यह लुत्फ़ बाक़ी रहा करता था। एक रात को वक़्त हो चुका और आप न आये, बहुत देर के बाद तशरीफ़ लाये, हमने कहा हुज़ूर! आज तो आपको बहुत देर लग गयी? आपने फ़रमाया हाँ क़ुरआन शरीफ़ का जो हिस्सा मैं रोज़ाना पढ़ा करता था आज इस वक़्त उसे पढ़ा और अधूरा छोड़कर आने को जी न चाहा।

हज़रत औस फ़रमाते हैं कि मैंने सहाबा से पूछा कि तुम क़ुरआन के हिस्से को किस तरह करते थे? उन्होंने कहा पहली तीन सूरतों की एक मन्ज़िल, फिर पाँच सूरतों की एक मन्ज़िल, फिर सात सूरतों की एक मन्ज़िल, फिर नौ सूरतों की एक मन्ज़िल, फिर ग्यारह सूरतों की एक मन्ज़िल, फिर तेरह सूरतों की एक

मन्ज़िल, और मुफ़स्सल की सूरतों की एक मन्ज़िल। यह हदीस इब्ने माजा में भी है। पस पहली छह मन्ज़िलों की कुल अड़तालीस सूरतें हुईं, फिर उनके बाद मुफ़स्सल की तमाम सूरतों की एक मन्ज़िल, तो उनचासवीं सूरत यही सूरः क़ाफ़ पड़ती है, बाक़ायदा गिनती सुनिये।

पहली मन्ज़िल की तीन सूरतें सूरः ब-क़रह, सूरः आले इमरान और सूरः निसा हुयीं। दूसरी मन्ज़िल की पाँच सूरतें मायदा, अन्आम, आराफ़, अनफ़ाल और बराअत। तीसरी मन्ज़िल की सात सूरतें यूनुस, हूद, यूसुफ़, रअ़द, इब्राहीम, हिज्र और नहल हुयीं। चौथी मन्ज़िल की नौ सूरतें बनी इस्राईल, कहफ़, मरियम, तॉ हा, अम्बिया, हज, मोमिनून, नूर और फ़ुरक़ान हुयीं। पाँचवी मन्ज़िल की ग्यारह सूरतें, शूरा, नमल, क़सस, अ़न्कबूत, रूम, लुक़मान, अलिफ़ लाम मीम सज्दा, अहज़ाब, सबा, फ़ातिर और यासीन हुयीं। छठी मन्ज़िल की तेरह सूरतें साफ़्फ़ात, सॉद, ज़ुमर, मोमिन, हामीम सज्दा, शूरा, ज़ुख़्रुफ़, दुख़ान, जासिया, अहक़ाफ़, मुहम्मद, फ़तह और हुजुरात। सातवीं मन्ज़िल की सूरतें बाक़ी रहीं जो हुजुरात के बाद की सूरत से शुरू होंगी और वह सूरः क़ाफ़ है और यही हमने कहा था। फ़ल्हम्दु लिल्लाह

मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने हज़रत अबू वाक़िद लैसी रज़ि. से पूछा कि ईद की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्ल. क्या पढ़ते थे? आपने फ़रमाया सूरः क़ॉफ़ और सूरः क़मर। मुस्लिम में है, हज़रत उम्मे हिशाम बिन्ते हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हमारा और रसूलुल्लाह सल्ल. का तन्दूर (चूल्हा) दो साल तक या एक साल कुछ महीनों तक एक ही रहा, मैंने सूरः क़ॉफ़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बानी सुन-सुनकर याद कर ली, इसलिये कि हर जुमे के दिन जब आप लोगों को ख़ुतबा सुनाने के लिये मिम्बर पर आते तो इस सूरत की तिलावत करते।

ग़र्ज़ कि बड़े बड़े मजमे के मौक़े पर जैसे ईद है जुमा है, अल्लाह के रसूल सल्ल. इस सूरत की तिलावत करते, क्योंकि इसमें पैदाईश की शुरूआत का, मरने के बाद जीने का, ख़ुदा के सामने खड़े होने का, हिसाब किताब का, जन्नत दोज़ख़ का, सवाब अ़ज़ाब का और शौक़ दिलाने व डराने का ज़िक्र है। वल्लाहु आलम।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ○ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ
جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا
شَيْءٌ عَجِيْبٌ ○ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ
ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ○ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ
الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ○
بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ
اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ○

क़ॉफ़। क़सम है क़ुरआन मजीद की। (1) बल्कि उनको इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं (की) जिन्स में से (कि इनसान हैं) एक डराने वाला (यानी पैग़म्बर) आ गया। सो काफ़िर लोग कहने लगे कि यह (एक) अ़जीब बात है। (2) जब हम मर गये और मिट्टी हो गये तो क्या दोबारा ज़िन्दा होंगे? यह दोबारा ज़िन्दा होना (संभावना से) बहुत ही दूर की बात है। (3) हम उनके उन हिस्सों को जानते हैं जिनको मिट्टी (खाती और) कम करती है। और हमारे पास (वह) किताब (यानी लौहे) महफ़ूज़ (मौजूद) है। (4) बल्कि सच्ची बात को जबकि वह उनको पहुँचती है तो झुठलाते हैं। ग़र्ज़ यह कि वे एक डाँवाडोल हालत में हैं। (5)

Maktab E Ashraf

क़सम है क़ुरआन मजीद की

'क़ॉफ़' हुरूफ़े मुक़त्तआ़त में से है जो सूरतों के शुरू में आते हैं, जैसे 'नून' 'सॉद' अलिफ़-लाम-मीम' 'हा-मीम' 'ता-सीन' वग़ैरह। हमने इनकी पूरी तशरीह सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में कर दी है।

बाज़ पहले उलेमा और बुज़ुर्गों का क़ौल है कि 'क़ॉफ़' एक पहाड़ है जो तमाम ज़मीन को घेरे हुए है। मैं तो जानता हूँ कि दर असल यह बनी इस्राईल की ख़ुराफ़ात में से है, जिन्हें बाज़ लोगों ने ले लिया, यह समझ कर कि उनसे रिवायत लेनी मुबाह हैं, अगरचे तस्दीक़ तकज़ीब नहीं कर सकते (यानी रिवायत की न पुष्टि कर सकते हैं न झुठला सकते हैं) लेकिन मेरा ख़्याल है कि यह और इस जैसी और रिवायतें तो बनी इस्राईल के बद-दीनों ने गढ़ी होंगी ताकि लोगों पर दीन को ख़ल्त-मल्त कर दें। आप ख़्याल कीजिए कि इस उम्मत में इसके बावजूद कि उलेमा-ए-किराम और दीन के ख़िदमतगारों की बहुत बड़ी दीनदार मुख़्लिस जमाअ़त हर ज़माने में मौजूद रही फिर भी बद-दीनों ने बहुत थोड़ी मुद्दत में बेबुनियाद और फ़र्ज़ी हदीसें तक गढ़ लीं। पस बनी इस्राईल जिन पर मुद्दतें गुज़र चुकीं जो हिफ़्ज़ से ख़ाली थे, जिनमें फ़न के परखने वाले मौजूद न थे, जो अल्लाह के कलाम को असलियत से हटा दिया करते थे, जो शराबों में मख़्मूर रहा करते थे, जो आयतों को बदल डाला करते थे, उनका क्या ठीक है। पस हदीस के उलेमा ने जिन रिवायतों को उनसे लेनी मुबाह (जायज़) रखी है, ये वे हैं जो कि अ़क़्ल व समझ में तो आ सकें, न कि वे जो खुली ख़िलाफ़े अ़क़्ल हों, सुनते ही उनके बातिल और ग़लत होने का फ़ैसला अ़क़्ल कर देती हो और उसका झूठ होना इतना वाज़ेह हो कि उस पर दलील लाने की ज़रूरत न पड़े। पस ऊपर बयान हुई रिवायत भी ऐसी ही है। वल्लाहु आलम

अफ़सोस कि बहुत से पहले उलेमा ने अहले किताब से इस क़िस्म की हिकायतें (क़िस्से और वाक़िआ़त) क़ुरआन मजीद की तफ़सीर में ज़िक्र कर दी हैं। दर असल क़ुरआन करीम ऐसी ख़ुराफ़ात का कुछ मोहताज नहीं, यहाँ तक कि इमाम अबू मुहम्मद अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू हातिम राज़ी रह. ने भी यहाँ एक अ़जीब व ग़रीब क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास की रिवायत से ज़िक्र कर दिया है। जो सनद के एतिबार से साबित नहीं। उसमें है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने एक समन्दर पैदा किया है जो इस सारी ज़मीन को घेरे हुए है और उस समन्दर के पीछे एक पहाड़ है जो उसे घेरे हुए है, उसका नाम क़ॉफ़ है। दुनिया वाला आसमान उसी पर उठा हुआ है। फिर अल्लाह तआ़ला ने उस पहाड़ के पीछे एक ज़मीन बनाई है जो उससे सात गुनी बड़ी है, फिर उसके पीछे एक समन्दर है जो उसे घेरे हुए है, फिर उसके पीछे पहाड़ है जो उसे घेरे हुए है, उसे क़ॉफ़ कहते हैं। दूसरा आसमान उसी पर उठाया हुआ है। इसी तरह सात ज़मीनें सात समन्दर सात पहाड़ और सात आसमान गिनवाये, फिर यह आयत पढ़ीः

وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ

(यानी सूरः लुक़मान की आयत 27)

इस क़ौल की सनद में इन्क़िता है। अ़ली बिन अबू तल्हा जो रिवायत हज़रत इब्ने अ़ब्बास से करते हैं उसमें है कि 'क़ॉफ़' अल्लाह के नामों में से एक नाम है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि 'क़ॉफ़' भी 'सॉद' 'नून' 'ता-सीन' और 'अलिफ़-लाम-मीम' वग़ैरह की तरह हुरूफ़े मुक़त्तआ़त में से है। पस इन रिवायतों से भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने वह बात इरशाद फ़रमाई। यह भी कहा गया है कि मुराद इससे

Maktab E Ashraf

यह है कि काम का फ़ैसला कर दिया गया, क़सम है अल्लाह की, और क़ॉफ़ कहकर बाक़ी जुमला छोड़ दिया गया कि यह दलील है उस लफ़्ज़ पर जो पोशीदा है, जैसे शायर कहता है:

قُلْتُ لَهَا قِفِيْ فَقَالَتْ قَافْ.

लेकिन यह कहना भी ठीक नहीं। इसलिये कि महज़ूफ़ (जो लफ़्ज़ और कलाम पोशीदा हो) पर दलालत करने वाला कलाम साफ़ होना चाहिये और यहाँ कौनसा कलाम है? जिससे इतने बड़े जुमले के महज़ूफ़ (पोशीदा) होने का पता चले। फिर इस करम और अ़ज़्मत वाले क़ुरआन की क़सम खाई जिसके आगे से या पीछे से बातिल आ नहीं सकता, जो हिक्मतों और तारीफ़ों वाले ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुआ है।

इस क़सम का जवाब क्या है? इसमें भी कई क़ौल हैं। इमाम इब्ने जरीर ने तो बाज़ नहवियों से नक़ल किया है कि इसका जवाब इसी सूरत की आयत नम्बर 4 है। लेकिन यह भी ग़ौर-तलब है, बल्कि जवाबे क़सम के बाद का मज़मूने कलाम है। यानी नुबुव्वत और दोबारा जी उठने का सुबूत और तहक़ीक़, अगरचे क़सम लफ़्ज़ों से इसको जवाब न बतलाती हो। ऐसा क़ुरआन की क़समों के जवाब में अक्सर है, जैसे कि सूरः सॉद की तफ़सीर के शुरू में गुज़र चुका है। इसी तरह यहाँ भी है।

फिर फ़रमाता है कि उन्होंने इस बात पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि उन्हीं में से एक इनसान कैसे रसूल बन गया? जैसे एक और आयत में है:

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ........ الخ.

यानी क्या लोगों को इस बात पर ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स की तरफ़ अपनी 'वही' भेजी कि तू लोगों को होशियार कर दे।

यानी दर असल यह कोई ताज्जुब की चीज़ न थी। अल्लाह जिसे चाहे, फ़रिश्तों में से अपनी रिसालत के लिये चुन लेता है और जिसे चाहे इनसानों में से चुन लेता है। इसी के साथ यह भी बयान हो रहा है कि उन्होंने मरने के बाद के जीने को भी ताज्जुब की नज़रों से देखा और कहा कि जब हम मर जायेंगे और हमारे जिस्म के हिस्से अलग-अलग होकर रेज़ा-रेज़ा होकर मिट्टी हो जायेंगे, उसके बाद इसी शक्ल व अन्दाज़ में हमारा दोबारा जीना बिल्कुल मुहाल है। उनके जवाब में फ़रमान सादिर हुआ कि ज़मीन उनके जिस्मों को जो खाती है उससे भी हम ग़ाफ़िल नहीं, हमें मालूम है कि उनके ज़र्रे कहाँ गये और किस हालत में कहाँ हैं। हमारे पास किताब है जो इसकी मुहाफ़िज़ (रिकार्ड रखने वाली) है। हमारा इल्म है जो इसको शामिल है और साथ ही किताब में महफ़ूज़ है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी उनके गोश्त चमड़े हड्डियाँ और बाल जो कुछ ज़मीन खाती है हमारे इल्म में है।

फिर परवर्दिगारे आ़लम उनके इसको मुहाल (नामुम्किन और मुश्किल) समझने की असल वजह बयान फ़रमा रहा है कि दर असल ये हक़ झुठलाने वाले लोग हैं और जो लोग अपने पास हक़ के आ जाने के बाद उसका इनकार कर दें उनसे क़ुदरती तौर पर समझ छिन जाती है। 'मरीज' के मायने हैं मुख़्तलिफ़, परेशान, मुन्किर और ख़ल्त-मल्त हो जाने के, जैसे एक जगह अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ، يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ.

यानी यक़ीनन तुम एक झगड़े की बात में पड़े हुए हो। क़ुरआन की पैरवी से वही रुकता है जो भलाई से फेर दिया गया है।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوٓا إِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ
بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ○ وَ
الْأَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ
أَنْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْجٍ ○ تَبْصِرَةً
وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ○ وَنَزَّلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ
وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ○ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا
طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ○ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهٖ
بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ○

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर की तरफ़ आसमान को नहीं देखा कि हमने उसको कैसा (ऊँचा और बड़ा) बनाया, और (सितारों से) उसको संवार दिया, और उसमें कोई रख़ना "यानी छेद, नुक़्स और फटन" तक नहीं। (6) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ों को जमाया, और उसमें हर क़िस्म की ख़ुशनुमा चीज़ें उगाईं (7) जो ज़रिया है देखने और समझने का हर रुजू होने वाले बन्दे के लिए। (8) और हमने आसमान से बरकत (यानी नफ़े) वाला पानी बरसाया, फिर उससे बहुत-से बाग़ उगाये और खेती का ग़ल्ला (9) और लम्बी-लम्बी खजूर के पेड़ जिनके गुच्छे ख़ूब गुंधे हुए होते हैं (10) बन्दों को रिज़्क़ देने के लिए। और हमने उस (बारिश) के ज़रिए मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया (पस) इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा। (11)

ज़रा ग़ौर तो करो

ये लोग जिस चीज़ को नामुम्किन ख़्याल करते थे परवर्दिगारे आलम उससे बहुत ज़्यादा बढ़े-चढ़े हुए अपनी क़ुदरत के नमूने सामने रख रहा है। फ़रमा रहा है कि आसमान को देखो, उसकी बनावट पर ग़ौर करो, उसके रोशन सितारों को देखो और देखो कि इतने बड़े आसमान में एक सुराख़ एक छेद एक शिगाफ़ एक दरार नहीं। चुनाँचे सूरः मुल्क में फ़रमायाः

اَلَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا......... الخ.

अल्लाह वह है जिसने सात आसमान ऊपर-नीचे पैदा किये, तू ख़ुदा की इस कारीगरी में कोई कमी न देखेगा। तू फिर निगाह डालकर देख ले, कहीं तुझको कोई ख़लल (कमी और ऐब) नज़र आता है? फिर बार बार ग़ौर करके देख तेरी निगाह नामुराद और आजिज़ होकर तेरी तरफ़ लौट आयेगी।

फिर फ़रमाया कि ज़मीन को हमने फैला दिया और तरह-तरह की चीज़ें उगा दीं। जैसे एक और जगह है कि हर चीज़ को हमने जोड़-जोड़कर पैदा किया ताकि तुम नसीहत व सबक़ हासिल करो। "बहीज" के मायने हैं ख़ुश-मन्ज़र, अच्छा दिखने वाला, रौनक़दार।

फिर फ़रमाया कि आसमान व ज़मीन और उनके अलावा क़ुदरत की और निशानियाँ समझ व अक़्ल का ज़रिया हैं हर उस शख़्स के लिये जो अल्लाह से डरने वाला, ख़ुदा की तरफ़ रग़बत (तवज्जोह) करने वाला हो। फिर फ़रमाता है कि हमने नफ़ा देने वाला पानी आसमान से बरसाकर उससे बाग़ात बनाये और वो खेतियाँ बनायीं जो काटी जाती हैं और जिनके अनाज खलियान किये जाते हैं, और ऊँचे-ऊँचे खजूर के

Maktaba E Ashraf

पेड़ उगा दिये जो ख़ूब मेवे (यानी फल) लाते हैं और लदे रहते हैं। ये मख़्लूक़ की रोज़ियाँ हैं। और इसी पानी से हमने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, वह लहलहाने लगी और ख़ुश्की के बाद तरोताज़ा हो गयी, और चटियल सूखे मैदान हरे-भरे हो गये। यह मिसाल है मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा होकर उठने की, और हलाकत के बाद आबाद होने की। ये निशानियाँ जिन्हें तुम रोज़-मर्रा देख रहे हो क्या तुम्हारी रहबरी इस बात की तरफ़ नहीं करतीं कि ख़ुदा मुर्दों को जिलाने पर क़ादिर है? चुनाँचे एक और आयत में है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ.

यानी आसमान व ज़मीन की पैदाईश इनसानों की पैदाईश से बहुत बड़ी है। एक और आयत में है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى. بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

यानी क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा कर दिया और उनकी पैदाईश से न थका, तो क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को जिला दे? बेशक व हर चीज़ पर क़ादिर है। एक और जगह अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमाता है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً........ الخ.

यानी तू देखता है कि ज़मीन बिल्कुल ख़ुश्क और बंजर होती है, हम आसमान से पानी बरसाते हैं जिससे वह लहलहाने और पैदावार उगाने लगती है। क्या मेरी क़ुदरत की निशानी यह नहीं बतलाती कि जिस ज़ात ने उसे ज़िन्दा कर दिया वह मुर्दों के जिलाने पर बिला शक व शुब्हा क़ादिर है? यक़ीनन वह तमाम चीज़ों पर क़ुदरत रखता है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ ع

इससे पहले क़ौमे नूह और रस्स वालों और समूद ने झुठलाया (12) और आ़द और फ़िरऔ़न और क़ौमे लूत ने भी झुठलाया (13) और ऐका वालों और क़ौमे तुब्बअ़ ने झुठलाया। (यानी) सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, सो मेरी वईद (उन पर) साबित हो गई। (14) क्या हम पहली बार पैदा करने में थक गए? बल्कि ये लोग नये सिरे से पैदा करने की तरफ़ से (महज़ बेदलील) शुब्हे में हैं। (15)

١ ع ١٥ ١٥

क़ौमे नूह

अल्लाह तआ़ला मक्का वालों को उन अ़ज़ाबों से डरा रहा है जो उन जैसे झुठलाने वालों पर उनसे पहले आ चुके हैं। जैसे कि नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम, जिन्हें अल्लाह तबारक व तआ़ला ने पानी में ग़र्क़ कर दिया और रस्स वाले जिनका पूरा क़िस्सा सूरः फ़ुरक़ान की तफ़सीर में गुज़र चुका है, और समूद और

Maktab E Ashraf

आद और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की उम्मत जिसे ज़मीन में धंसा दिया और उस ज़मीन को सड़ा हुआ दलदल बना दिया। यह सब क्या था? उनके कुफ़्र, उनकी सरकशी और हक़ की मुख़ालफ़त का नतीजा था। ऐका वालों से मुराद हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम है, और क़ौमे तुब्बअ़ से मुराद यमानी हैं। सूरः दुख़ान में इनका वाक़िआ़ भी गुज़र चुका है और वहीं इसकी पूरी तफ़सीर है, यहाँ उसको दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। इन तमाम उम्मतों ने अपने रसूलों को झुठलाया था और अल्लाह के अ़ज़ाब से हलाक कर दिये गये, अल्लाह तआ़ला की यही आ़दत जारी है। यह याद रहे कि एक रसूल का झुठलाने वाला तमाम रसूलों का मुन्किर है, जैसे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ نِ الْمُرْسَلِيْنَ.

क़ौमे नूह ने रसूलों का इनकार किया।

हालाँकि उनके पास सिर्फ़ हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ही आये थे। पस दर असल ये थे ऐसे कि अगर उनके पास तमाम रसूल आ जाते तो ये सब को झुठलाते। एक को भी न मानते, सब को झुठलाते, एक की भी तस्दीक़ न करते। उन सब पर ख़ुदा के अ़ज़ाब का वायदा उनके बुरे आमाल की वजह से साबित हो गया और सादिक़ आ गया। पस मक्का वालों और दूसरे मुख़ातब लोगों को भी इस बुरी ख़स्लत से परहेज़ करना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि अ़ज़ाब का कोड़ा उन पर भी बरस पड़े। क्या जब ये कुछ न थे इनका पैदा करना हम पर भारी पड़ा? जो ये अब दोबारा पैदा करने के मुन्किर हो रहे हैं। किसी चीज़ का दोबारा पैदा करना उसके पहली बार पैदा करने से तो बहुत ही आसान हुआ करता है। जैसे क़ुरआन में फ़रमान हैः

وَهُوَالَّذِیْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَاَهْوَنُ عَلَيْهِ.

यानी शुरू में और पहली बार उसी ने मख़्लूक़ पैदा की और दोबारा भी वही इसको लौटायेगा और यह उस पर बहुत आसान है। सूरः यासीन में अल्लाह का फ़रमान गुज़र चुका हैः

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا....... الخ.

यानी अपनी पैदाईश (बनाये जाने और पैदा किये जाने) को भूलकर हमारे सामने मिसालें बयान करने लगा और कहने लगा इन बोसीदा सड़ी गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? तो जवाब दिया कि वह जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया और जो तमाम मख़्लूक़ को जानता है।

सही हदीस में है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुझे इनसान तकलीफ़ देता है। कहता है कि ख़ुदा मुझे दोबारा पैदा नहीं कर सकता, हालाँकि पहली दफ़ा पैदा करना दोबारा पैदा करने से कुछ आसान नहीं।

(यानी किसी चीज़ का नमूना भी सामने न हो उस वक़्त बनाना आसान नहीं, जब अल्लाह पहली बार मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो अब तो आसानी से यह बात समझ में आ सकती है कि दोबारा किसी चीज़ का बनाना मुश्किल नहीं, अब तो एक नमूना भी सामने है, जबकि अल्लाह तआ़ला को किसी नमूने की ज़रूरत नहीं, वह पाक ज़ात हर तरह की कमी और किसी दूसरे की मदद से पाक है।)

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ٥ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ٥ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ٥ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ٥ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ٥ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ٥ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ٥

और हमने इनसान को पैदा किया है, और उसके जी में जो ख़्यालात आते हैं हम उनको जानते हैं, और हम इनसान के इस क़द्र क़रीब हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा। (16) जब दो लेने वाले फ़रिश्ते लेते रहते हैं, जो कि दाईं और बाईं तरफ़ बैठे रहते हैं। (17) वह कोई लफ़्ज़ मुँह से निकालने नहीं पाता मगर उसके पास ही एक ताक लगाने वाला तैयार है। (18) और मौत की सख़्ती (नज़दीक) आ पहुँची। यह (मौत) वह चीज़ है जिससे तू बिदकता था। (19) और (क़ियामत के दिन दोबारा) सूर फूँका जाएगा। यही दिन होगा वईद का। (20) और हर शख़्स (क़ियामत के मैदान में) इस तरह आएगा कि उसके साथ एक "और होगा जो" उसको अपने साथ लाएगा, और एक (उसके आमाल का) गवाह होगा। (21) तू इस दिन से बेख़बर था, सो अब हमने तेरे ऊपर से तेरा (ग़फ़लत का) पर्दा हटा दिया, सो आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है। (22)

गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहा है कि वही इनसान का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है और उसका इल्म तमाम चीज़ों का इहाता (घेराव) किये हुए है, यहाँ तक कि इनसान के दिल में जो भले बुरे ख़्यालात पैदा होते हैं उन्हें भी वह जानता है। सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के दिल में जो ख़्यालात आयें उनसे दरगुज़र फ़रमा लिया है जब तक कि वे ज़बान से न निकालें या अ़मल न करें, और हम उसकी जान की रग से भी ज़्यादा उसके नज़दीक हैं, यानी हमारे फ़रिश्ते। और बाज़ों ने कहा है कि हमारा इल्म है। उनकी ग़र्ज़ यह है कि कहीं हुलूल और इत्तिहाद न लाज़िम (यानी ख़ुदा का इनसानी रूप लेना या इनसान का ख़ुदा की ज़ात में लीन होना) आ जाये जो सबके नज़दीक उस रब की मुक़द्दस ज़ात से बईद है, और वह इससे बिल्कुल पाक है। लेकिन लफ़्ज़ का इक़्तिज़ा नहीं है इसलिये कि 'व अ-न' (और मैं) नहीं कहा बल्कि 'व नहनु' (और हम) कहा है यानी मैंने नहीं कहा बल्कि हमने कहा है। यही लफ़्ज़ उस शख़्स के बारे में कहे गये हैं जिसकी मौत क़रीब आ गयी हो और वह जान निकलने की हालत में हो। फ़रमान है:

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ......... الخ.

यानी तुम सबसे ज़्यादा हम उससे क़रीब हैं लेकिन तुम नहीं देखते। यहाँ भी मुराद फ़रिश्तों का इस क़द्र क़रीब होना है। जैसे फ़रमान है:

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ.

यानी इमने ही ज़िक्र को नाज़िल फ़रमाया और हम ही इसके मुहाफ़िज़ हैं।

फ़रिश्ते ही ज़िक्र (क़ुरआन करीम) को लेकर नाज़िल हुए हैं और यहाँ भी मुराद फ़रिश्तों की इतनी नज़दीकी है जिस पर अल्लाह ने उन्हें क़ुदरत बख़्श रखी है। पस इनसान पर एक चौंका (सचेत करना) फ़रिश्ते का होता है और एक शैतान का। शैतान भी इनसानी जिस्म में इसी तरह फिरता है जिस तरह ख़ून, जैसे कि सबसे बड़े सच्चे यानी अल्लाह के नबी सल्ल. ने फ़रमाया है, इसलिये उसके बाद ही फ़रमाया कि दो फ़रिश्ते जो दायें बायें बैठे हैं वे तुम्हारे आमाल लिख रहे हैं। आदमी के मुँह से जो कलिमा निकलता है उसे महफ़ूज़ रखने वाले और उसे न छोड़ने वाले और फ़ौरन लिख लेने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। जैसे फ़रमान है:

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِيْنَ.

और बेशक तुम पर मुहाफ़िज़ (निगरानी करने वाले) हैं बुज़ुर्ग फ़रिश्ते जो तुम्हारे हर फ़ेल से बाख़बर हैं और लिखने वाले हैं।

हज़रत हसन और हज़रत क़तादा रह. तो फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ते हर नेक व बद अ़मल को लिख लिया करते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के दो क़ौल हैं एक तो यही है, दूसरा क़ौल आपका यह है कि सवाब व अ़ज़ाब आपका लिख लिया करते हैं। लेकिन आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ पहले क़ौल की ही ताईद करते हैं, क्योंकि फ़रमान है कि जो लफ़्ज़ निकलता है उसके मुहाफ़िज़ तैयार हैं। मुस्नद अहमद में है कि इनसान एक कलिमा अल्लाह की रज़ामन्दी का कह गुज़रता है जिसे वह कोई बहुत बड़ा अज्र का कलिमा नहीं जानता, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से अपनी रज़ामन्दी उसके लिये क़ियामत तक लिख देता है। और कोई कलिमा बुराई का अल्लाह की नाराज़गी का कह गुज़रता है जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला अपनी नाराज़गी उस पर अपनी मुलाक़ात के दिन तक के लिख देता है। हज़रत अल्क़मा रह. फ़रमाते हैं कि इस हदीस ने मुझे बहुत सी बातों से बचा लिया। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन बतलाते हैं। अहनफ़ बिन क़ैस रह. फ़रमाते हैं कि दायीं तरफ़ वला नेकियाँ लिखता है और यह बायीं तरफ़ वाले पर अमीन (सरदार) है। जब बन्दे से कोई ख़ता हो जाती है तो यह कहता है ठहर जा, अगर उसने उसी वक़्त तौबा कर ली तो उसे लिखने नहीं देता, और अगर उसने तौबा न की तो वह लिख लेता है। (इब्ने अबी हातिम)

इमाम हसन बसरी रह. इस आयत की तिलावत करके फ़रमाते थे ऐ आदम की औलाद! ऐ आदम की औलाद! तेरे लिये सहीफ़ा (किताब) खोल दिया गया है, और दो सम्मानित फ़रिश्ते तुझ पर मुक़र्रर कर दिये गये हैं, एक तेरे दाहिने दूसरा बायें। दायीं तरफ़ वाला तो तेरी नेकियों की हिफ़ाज़त करता है और बायीं तरफ़ वाला बुराईयों को देखता रहता है। अब तू जो चाहे अ़मल कर या ज़्यादती कर। जब तू मरेगा तो यह दफ़्तर लपेट लिया जायेगा और तेरे साथ तेरी क़ब्र में रख दिया जायेगा, और क़ियामत के दिन जब तू अपनी क़ब्र से उठेगा तो यह तेरे सामने पेश कर दिया जायेगा। इसी को अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنٰهُ طَآئِرَهُ فِيْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتَابًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا.

हर इनसान की शामते आमाल हमने उसके गले लगा दी है और हम क़ियामत के दिन उसके सामने नामा-ए-आमाल की एक किताब डाल देंगे जिसे वह खुली हुई पायेगा। फिर उससे कहेंगे कि अपनी किताब

पढ़ ले, आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब लेने को काफ़ी है।

फिर हज़रत हसन रह. ने फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम उसने बड़ा ही अ़दल (इन्साफ़) किया जिसने ख़ुद तुझे ही तेरा मुहासिब (हिसाब लेने वाला) बना दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- जो कुछ तू भला बुरा कलिमा ज़ुबान से निकालता है वह सब लिखा जाता है, यहाँ तक कि तेरा यह कहना भी कि मैंने खाया मैंने पिया, मैं गया मैं आया मैंने देखा। फिर जुमेरात वाले दिन उसके अक़वाल व अफ़आ़ल पेश किये जाते हैं, ख़ैर व शर बाक़ी रख ली जाती है और सब कुछ हटा दिया जाता है। यही मायने हैं अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान के:

يَمْحُو اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتَابِ.

कि मिटा देता है अल्लाह तआ़ला जो चाहता है, और उसके पास बड़ी किताब है।

हज़रत इमाम अहमद रह. के बारे में मन्क़ूल है कि आप अपनी मौत की बीमारी में कराह रहे थे तो आपको मालूम हुआ कि हज़रत ताऊस रह. फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते इसे भी लिखते हैं, चुनाँचे आपने कराहना भी छोड़ दिया। अल्लाह आप पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये। अपनी मौत के वक़्त उफ़ भी न की।

फिर फ़रमाता है- ऐ इनसान! मौत की बेहोशी यक़ीनन आयेगी, उस वक़्त वह शक दूर हो जायेगा जिसमें आजकल तू मुब्तला है। उस वक़्त तुझसे कहा जायेगा कि यही है जिससे तू भागता था, अब वह आ गयी तू किसी तरह इससे निजात नहीं पा सकता, न बच सकता है, न इसे रोक सकता है न इसे दूर कर सकता है, न टाल सकता है न मुक़ाबला कर सकता है, न किसी की मदद व सिफ़ारिश कुछ काम आ सकती है। सही यही है कि यहाँ ख़िताब मतूलक़ इनसान से है अगरचे बाज़ों ने कहा है कि काफ़िर से है, और बाज़ों ने कुछ और भी कहा है। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं अपने वालिद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के आख़िरी वक़्त में उनके सिरहाने बैठी थी। आप पर ग़शी (बेहोशी) तारी हुई तो मैंने यह शे'र पढ़ा।

مَنْ لَّا يَزَالُ دَمْعُهٗ مُقْنِعًا ☆ فَاِنَّهٗ لَابُدَّ مَرَّةً مَدْفُوْقٌ

मतलब यह है कि जिसके आँसू ठहरे हुए हैं वह भी एक मर्तबा टपक पड़ेंगे।

तो आपने अपना सर उठाकर कहा प्यारी बच्ची यूँ नहीं बल्कि जिस तरह ख़ुदा ने फ़रमाया:

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ..... الخ.

और मौत की सख़्ती क़रीब आ पहुँची.........।

एक और रिवायत में शे'र का पढ़ना और सिद्दीक़े अकबर रज़ि. का यह फ़रमाना मरवी है कि यूँ नहीं बल्कि यह आयत पढ़ो। इस क़ौल की और भी बहुत सी सनदें हैं जिन्हें मैंने सीरतुस्सिद्दीक़ में आपकी वफ़ात के बयान में जमा कर दिया है। सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. पर जब मौत की ग़शी तारी होने लगी तो आप अपने चेहरे मुबारक से पसीना पौंछते जाते और फ़रमाते जाते- सुब्हानल्लाह मौत की बड़ी सख़्तियाँ हैं। इस आयत के पिछले जुमले की तफ़सीर दो तरह की गयी है, एक तो यह कि 'मा' मौसूला है यानी यह वही है जिसे तू बईद (दूर की चीज़) जानता है। दूसरा क़ौल यह है कि यहाँ 'मा' नाफ़िया है तो मायने यह होंगे कि यह वह चीज़ है जिसके अलग करने की, जिससे बचने की तुझे क़ुदरत नहीं, तू इससे हट नहीं सकता।

मोजम कबीर तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि उस शख़्स की मिसाल जो मौत से भागता

Maktaba Ashraf

Maktaba E Ashraf

है उस लोमड़ी जैसी है जिससे ज़मीन अपना क़र्ज़ा तलब करने लगी और यह उससे भागने लगी, भागते भागते जब थक गयी और बिल्कुल चूर-चूर हो गयी तो अपने भट में जा घुसी, ज़मीन चूँकि वहाँ भी मौजूद थी उसने लोमड़ी से कहा ला मेरा क़र्ज़ा, तो यह वहाँ से फिर भागी, साँस फूला हुआ था, हाल बुरा हो रहा था, आख़िर यूँही भागते भागते बेदम होकर मर गयी। ग़र्ज़ कि जिस तरह उस लोमड़ी के ज़मीन से भागने की राहें बन्द थीं इसी तरह इनसान के मौत से बचने के रास्ते बन्द हैं।

इसके बाद सूर फूँके जाने का ज़िक्र है जिसकी पूरी तफ़सीर ऊपर वाली हदीस में गुज़र चुकी है। एक और हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं किस तरह राहत व आराम हासिल कर सकता हूँ हालाँकि सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते ने सूर मुँह में ले लिया है और गर्दन झुकाये अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहा है, कि कब हुक्म मिले और कब वह फूँक दे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा फिर या रसूलल्लाह हम क्या कहें? आपने फ़रमाया कहो "हस्बुनल्लाहु व नेअ़्मल वकील"।

फिर फ़रमाता है कि हर शख़्स के साथ एक फ़रिश्ता तो मैदाने हश्र की तरफ़ लाने वाला होगा और एक फ़रिश्ता उसके आमाल की गवाही देने वाला होगा। ज़ाहिर आयत यही है और इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. ने इस आयत की तिलावत मिम्बर पर की और फ़रमाया- एक चलाने वाला जिसके साथ यह मैदाने मेहशर में आयेगा और एक गवाह होगा जो उसके आमाल की गवाही देगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि "साईक़" (चलाने वाले) से मुराद फ़रिश्ता है और "शहीद" (गवाह) से मुराद अ़मल है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि "साईक़" फ़रिश्तों में से होगा और "शहीद" से मुराद ख़ुद इनसान है जो अपने ऊपर आप गवाही देगा। फिर उसके बाद की आयत में जो ख़िताब है उसके बारे में तीन क़ौल हैं, एक तो यह कि यह ख़िताब काफ़िर से होगा, दूसरा यह कि इससे मुराद आ़म इनसान हैं नेक बद सब, तीसरा यह कि इससे मुराद रसूलुल्लाह सल्ल. हैं। दूसरे क़ौल की तौजीह यह है कि आख़िरत और दुनिया में वही ताल्लुक़ है जो जागने और सोने में है और तीसरे क़ौल का मतलब यह है कि तू इस क़ुरआन की 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से आने) से पहले ग़फ़लत में था हमने यह क़ुरआन नाज़िल फ़रमाकर तेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया और तेरी नज़र क़वी (मज़बूत और ताक़तवर) हो गयी। लेकिन क़ुरआन के अलफ़ाज़ से तो ज़ाहिर यही है कि इससे मुराद आ़म है, यानी हर शख़्स से कहा जायेगा कि तू इस दिन से ग़ाफ़िल था इसलिये कि क़ियामत के दिन हर शख़्स की आँखें ख़ूब खुल जायेंगी, यहाँ तक कि काफ़िर भी यक़ीन की पुख़्तगी पर आ जायेगा लेकिन यह जमना और पुख़्तगी उसे नफ़ा न देगी। जैसे कि अल्लाह का फ़रमान है:

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا.

यानी जिस रोज़ ये हमारे पास आयेंगे ख़ूब देखते सुनते होंगे। एक और आयत में है:

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ........ الخ.

यानी काश कि तू देखता जब गुनाहगार लोग अपने रब के सामने सर झुकाये पड़े होंगे और कह रहे होंगे ख़ुदाया! हमने देख लिया और सुन लिया, अब हमें लौटा दे तो हम नेक आमाल करेंगे और कामिल यक़ीन रखेंगे।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ۝ الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

और (उसके बाद) फ़रिश्ता जो उसके साथ रहता था, अर्ज़ करेगा कि यह वह (रोज़ का लेखा-जोखा है) जो मेरे पास तैयार है। (23) ऐसे शख़्स को जहन्नम में डाल दो जो कुफ़्र करने वाला हो (24) और (हक़ से) ज़िद रखता हो, और नेक काम से रोकता हो, और (बन्दगी की) हद से बाहर जाने वाला हो, (और दीन में) शुब्हा पैदा करने वाला हो। (25) जिसने ख़ुदा के साथ दूसरा माबूद तजवीज़ किया हो, सो ऐसे शख़्स को सख़्त अज़ाब में डाल दो। (26) वह शैतान जो उसके साथ रहता था, कहेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! मैंने इसको ज़बरदस्ती गुमराह नहीं किया था, लेकिन यह ख़ुद दूर-दराज़ की गुमराही में था। (27) इरशाद होगा, मेरे सामने झगड़े की बातें मत करो, (कि बेफ़ायदा हैं) और मैं तो पहले ही तुम्हारे पास वईद भेज चुका था। (28) मेरे यहाँ (वह) बात (ज़िक्र हुई वईद की) नहीं बदली जाएगी, और मैं (इस तजवीज़ में) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ। (29)

ع ٢ ١٢

फ़रिश्तों का बयान

अल्लाह तआ़ला का इरशाद हो रहा है कि जो फ़रिश्ता इनसान के आमाल पर मुक़र्रर है वह उसके आमाल की शहादत (गवाही) देगा और कहेगा कि यह है मेरे पास तैयार हाज़िर बिना किसी कमी ज़्यादती के। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह उस फ़रिश्ते का कलाम होगा जिसे "साईक़" (चलाने वाला) कहा गया है। जो उसे मेहशर में ले आया था। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक मुख़्तार क़ौल यह है कि यह शामिल है उस फ़रिश्ते को भी और गवाही देने वाले फ़रिश्ते को भी। अब अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले अ़दल व इन्साफ़ से करेगा।

बज़ाहिर यह भी मालूम होता है कि यह ख़िताब ऊपर वाले दोनों फ़रिश्तों से होगा, लाने वाले फ़रिश्ते ने उसे हिसाब के लिये पेश किया और गवाही देने वाले ने गवाही दे दी तो अल्लाह तआ़ला उन दोनों को हुक्म देगा कि इसे जहन्नम की आग में डाल दो जो बदतरीन जगह है। अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे।

फिर फ़रमाता है कि हर काफ़िर, हर हक़ के मुख़ालिफ़, हर हक़ के अदा न करने वाले, हर नेकी सिला-रहमी और भलाई से ख़ाली रहने वाले, हर हद से गुज़र जाने वाले चाहे वह माल के ख़र्च में फ़ुज़ूल ख़र्ची करता हो चाहे बोलने और चलने फिरने में ख़ुदा के अहकाम की परवाह न करता हो, हर शक करने वाले और हर ख़ुदा के साथ शिर्क करने वाले के लिये यही हुक्म है कि उसे पकड़ कर सख़्त अ़ज़ाब में डाल

Maktab E Ashraf

दो। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि जहन्नम कियामत के दिन लोगों के सामने अपनी गर्दन निकालेगी और बुलन्द आवाज़ से पुकारकर कहेगी जिसे तमाम मेहशर का मजमा सुनेगा कि मैं तीन क़िस्म के लोगों पर मुक़र्रर की गयी हूँ- हर सरकश हक़ के मुख़ालिफ़ के लिये, हर मुश्रिक के लिये और हर तस्वीर बनाने वाले के लिये। फिर वह इन सब से लिपट जायेगी।

मुस्नद की हदीस में तीसरी क़िस्म के लोग वे बतलाये हैं जो ज़ालिमाना क़त्ल करने वाले हों। फिर फ़रमाया कि उसका साथी कहेगा, इससे मुराद शैतान है जो उसके साथ मुवक्किल था, यह उस काफ़िर को देखकर अपनी बराअत (यान उससे बेताल्लुक़ी) करेगा और कहेगा कि मैंने इसे नहीं बहकाया बल्कि यह तो ख़ुद गुमराह था, बातिल को ख़ुद ही क़बूल कर लेता था, हक़ का अपने आप मुख़ालिफ़ था। जैसे एक दूसरी आयत में है कि शैतान जब देखेगा कि काम ख़त्म हुआ तो कहेगा अल्लाह ने तुमसे सच्चा वायदा किया था और मैं तो वायदा ख़िलाफ़ हूँ ही, मेरा कोई ज़ोर तो तुम पर था ही नहीं, मैंने तुमसे कहा तुमने फ़ौरन मान लिया, अब मुझे मलामत न करो बल्कि ख़ुद अपने को मलामत करो, न मैं तुम्हारे काम आ सकूँ न तुम मेरे काम आ सको, तुम जो मुझे शरीक बना रहे हो मैं तो पहले ही से इसका मुन्किर था, ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब हैं।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला इनसान से और उसके साथी शैतान से फ़रमायेगा कि मेरे सामने न झगड़ो, क्योंकि इनसान कह रहा होगा कि ख़ुदाया इसने मुझे जबकि मेरे पास नसीहत आ चुकी गुमराह कर दिया। और शैतान कहेगा ख़ुदाया मैंने इसे गुमराह नहीं किया, तो अल्लाह उन्हें तू तू मैं मैं से रोक देगा और फ़रमायेगा मैं तो अपनी हुज्जत ख़त्म कर चुका, रसूलों की ज़बानी यह सब मैं तुम्हें सुना चुका था, किताबें भेज दी थीं और हर हर तरीक़े से और हर तरह से तुम्हें समझा बुझा दिया था। सुनो जो फ़ैसला करना है वह मैं कर चुका, मेरी बातें बदलती नहीं, मैं ज़ालिम नहीं कि दूसरे के गुनाह पर किसी दूसरे को पकड़ूँ। हर शख़्स पर हुज्जत पूरी हो चुकी और हर शख़्स अपने गुनाहों का ख़ुद ज़िम्मेदार है।

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ ۝ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝

जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि तू भर भी गई? वह कहेगी कि कुछ और भी है? (30) और जन्नत मुत्तक़ियों के क़रीब लाई जाएगी, कि कुछ दूर न रहेगी। (31) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वायदा किया जाता था, कि वह हर ऐसे शख़्स के लिए है जो रुजू होने वाला, पाबन्दी करने वाला हो। (32) जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला से बेदेखे डरता हो और रुजू होने वाला दिल लेकर आएगा। (33) इस जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह दिन है हमेशा रहने का। (34) उनको जन्नत में सब कुछ मिलेगा जो-जो चाहेंगे, और हमारे पास और भी ज़्यादा (नेमत) है। (35)

Maktab E Ashraf

जहन्नम से ख़िताब

चूँकि अल्लाह तबारक व तआ़ला का जहन्नम से वायदा है कि वह उसे भर देगा इसलिये क़ियामत के दिन जो जिन्नात और इनसान उसके क़ाबिल होंगे उन्हें उसमें डाला जायेगा और अल्लाह तबारक व तआ़ला मालूम फ़रमायेगा कि अब तो तू भर गयी? और यह कहेगी कि अगर कुछ और गुनाहगार बाक़ी हों तो उन्हें भी मुझमें डाल दीजिये। सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में यह हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जहन्नम में गुनाहगार डाले जायेंगे और वह बराबर तलब करती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना क़दम उसमें रखेगा, तब वह कहेगी बस बस। मुस्नद अहमद की हदीस में यह भी है कि उस वक़्त यह सिमट जायेगी और कहेगी- तेरी इज़्ज़त व करम की क़सम बस बस। और जन्नत में जगह बच जायेगी यहाँ तक कि एक नई मख़्लूक़ को पैदा करके अल्लाह तआ़ला उस जगह को आबाद करेगा। सही बुख़ारी में है कि जन्नत और दोज़ख़ में एक मर्तबा गुफ़्तगू हुई, जहन्नम ने कहा कि मैं हर घमंडी और जाबिर व ज़ालिम के लिये मुक़र्रर की गयी हूँ। जन्नत ने कहा मेरा यह हाल है कि मुझमें कमज़ोर लोग और वे लोग जो दुनिया में इज़्ज़त वाले न समझे जाते थे वे दाख़िल होंगे। अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़रमाया तू मेरी रहमत है, अपने बन्दों में से जिसे चाहूँगा इस रहमत के साथ नवाज़ूँगा और जहन्नम से फ़रमाया तू मेरा अ़ज़ाब है, तेरे साथ जिसे मैं चाहूँगा अ़ज़ाब करूँगा। हाँ तुम दोनों बिल्कुल भर जाओगी। तो जहन्नम तो न भरेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना क़दम उसमें रखेगा, अब वह कहेगी बस बस। उस वक़्त वह भर जायेगी और उसके सब जोड़ आपस में सिमट जायेंगे और अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म न करेगा। हाँ जन्नत में जो जगह बच रहेगी उसके भरने के लिये अल्लाह तआ़ला दूसरी मख़्लूक़ पैदा करेगा। मुस्नद अहमद की हदीस में जहन्नम का क़ौल यह है कि मुझ में जबर करने वाले, तकब्बुर करने वाले बादशाह और शरीर लोग दाख़िल होंगे। मुस्नद अबू यअ़ला में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी ज़ात को क़ियामत के दिन पहचनवायेगा। मैं सज्दे में गिर पड़ूँगा, अल्लाह तआ़ला उससे ख़ुश होगा, फिर मैं ख़ुदा तआ़ला की ऐसी तारीफ़ें करूँगा कि उससे वह ख़ुश हो जायेगा। फिर मुझे शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जायेगी, फिर मेरी उम्मत जहन्नम के ऊपर पुल से गुज़रने लगेगी। बाज़ तो निगाह की सी तेज़ी के साथ गुज़र जायेंगे, बाज़ तीर की तरह पार हो जायेंगे, बाज़ तेज़ घोड़ों से ज़्यादा तेज़ी से पार हो जायेंगे, यहाँ तक कि एक शख़्स घुटनों के बल चलता हुआ निकल जायेगा और यह आमाल के मुताबिक़ होगा, और जहन्नम ज़्यादती तलब कर रही होगी यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना क़दम उसमें रखेगा, पस यह सिमट जायेगी और कहेगी बस बस, और मैं हौज़ पर हूँगा। लोगों ने कहा हौज़ क्या है? फ़रमाया ख़ुदा की क़सम उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा, बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डा और मुश्क से ज़्यादा ख़ुशबूदार है। उस पर बरतन आसमान के सितारों से ज़्यादा हैं। जिसे उसका पानी मिल गया वह कभी प्यासा न होगा और जो उससे मेहरूम रह गया उसे कहीं पानी नहीं मिलेगा कि सैराब हो सके।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- वह कहेगी क्या मुझमें कोई मकान है कि मुझमें ज़्यादती की जाये? हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं- वह कहेगी क्या मुझमें एक के भी आने की जगह है? मैं भर गयी। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- उसमें जहन्नमी डाले जायेंगे यहाँ तक कि वह कहेगी मैं भर गयी और कहेगी क्या मुझमें ज़्यादती की गुंजाईश है? इमाम इब्ने जरीर रह. पहले क़ौल को ही इख़्तियार करते हैं। इस दूसरे क़ौल का मतलब यह है कि गोया उन बुज़ुर्गों के नज़दीक यह सवाल उसके बाद होगा कि

Maktab E Ashraf

ख़ुदा तआ़ला अपना क़दम उसमें रखे, अब जो उससे पूछेगा कि क्या तू भर गयी? तो वह जवाब देगी कि क्या मुझमें कहीं भी कोई जगह बाक़ी रही है जिसमें कोई आ सके? यानी बाक़ी नहीं रही, भर गयी। हज़रत औफ़ी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया- यह उस वक़्त होगा जबकि उसमें सूई के नाके के बराबर भी जगह बाक़ी न रहेगी। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि जन्नत क़रीब की जायेगी यानी क़ियामत के दिन, जो दूर नहीं है, इसलिये कि जिसका आना यक़ीनी हो वह दूर नहीं समझा जाता। "अव्वाब" के मायने रुजू करने वाला, तौबा करने वाला, गुनाहों से रुक जाने वाला। "हफ़ीज़" के मायने वायदों का पाबन्द। हज़रत उबैद बिन उमैर रह. फ़रमाते हैं कि अव्वाब व हफ़ीज़ वह है जो किसी मज्लिस में बैठकर न उठे, जब तक कि इस्तिग़फ़ार न कर ले, जो रहमान से बिन देखे डरता है, यानी तन्हाई में भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखे। हदीस में है कि वह भी क़ियामत के दिन अल्लाह के अ़र्श का साया पायेगा जो तन्हाई में अल्लाह को याद करेगा और उसकी आँखें बह निकलें और क़ियामत के दिन अल्लाह के पास दिल सलामत लेकर जाये जो उसकी जानिब झुकने वाला हो।

इसमें यानी जन्नत में चले जाओ। ख़ुदा के तमाम अ़ज़ाबों से तुम्हें सलामती मिल गयी। और यह भी मतलब है कि फ़रिश्ते उन पर सलाम करेंगे। यह ख़ुलूद का दिन है, यानी जन्नत में हमेशा के लिये जा रहे हो, जहाँ कभी मौत नहीं, जहाँ कभी निकाल दिये जाने का ख़तरा नहीं, जहाँ से तब्दीली और हेर-फेर नहीं।

फिर फ़रमाया ये वहाँ जो चाहेंगे पायेंगे, बल्कि और ज़्यादा भी। कसीर बिन मुर्रा रह. फ़रमाते हैं कि 'मज़ीद' में यह भी है कि जन्नत वाले के पास से एक बादल गुज़रेगा जिसमें से आवाज़ आयेगी कि तुम क्या चाहते हो? जो तुम चाहो मैं बरसाऊँ। पस ये जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगे उससे बरसेगी। हज़रत कसीर रह. फ़रमाते हैं- मैं इस मर्तबे में पहुँचा और मुझसे सवाल हुआ तो मैं कहूँगा कि ख़ूबसूरत अच्छे लिबास वाली नौजवान कुंवारी लड़कियाँ बरसाई जायें। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- तुम्हारा दिल जिस परिन्द के खाने को चाहेगा वह उसी वक़्त भुना-भुनाया मौजूद हो जायेगा। मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अगर जन्नती औलाद चाहेगा तो एक ही घड़ी में हमल (गर्भ) और बच्चा और बच्चे की जवानी हो जायेगी। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब हसन बतलाते हैं और तिर्मिज़ी में यह भी है कि जिस तरह यह चाहेगा हो जायेगा। एक और आयत में है:

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ

जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (जन्नत) है, और उस पर और ज़्यादा यह (यानी ख़ुदा का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे।

सुहैब बिन सिनान रोमी फ़रमाते हैं कि इस ज़्यादती से मुराद अल्लाह करीम की ज़्यादा ज़ियारत है। हज़रत अनस बिन मालिक रह. फ़रमाते हैं- हर जुमे के दिन उन्हें अल्लाह तआ़ला का दीदार होगा, यही मतलब मज़ीद का है। मुस्नद शाफ़ई में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम एक सफ़ेद आईना लेकर रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये जिसके बीच में एक नुक़्ता (बिन्दू) था। हुज़ूर सल्ल. ने पूछा यह क्या है? फ़रमाया यह जुमे का दिन है जो ख़ास आपको और आपकी उम्मत को बतौर फ़ज़ीलत के अ़ता फ़रमाया गया है। सब लोग इसमें तुम्हारे पीछे हैं, यहूद भी और ईसाई भी। तुम्हारे लिये इसमें बहुत कुछ ख़ैर व बरकत है। इसमें एक ऐसी घड़ी है कि उस वक़्त अल्लाह तआ़ला से जो माँगा जायेगा मिल जाता है। हमारे

यहाँ इसका नाम यौमुल-मज़ीद है। हुज़ूर सल्ल. ने पूछा यह क्या है? फ़रमाया आपके रब ने जन्नतुल-फ़िरदौस में एक खुला मैदान बनाया है जिसमें मुश्क के टीले हैं, जुमे के दिन अल्लाह तआ़ला जिन-जिन फ़रिश्तों को चाहे उतारता है, उसके इर्द-गिर्द नूर के मिम्बर होते हैं जिन पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम तशरीफ़ रखते हैं, शहीद और सिद्दीक़ लोग उनके पीछे उन मुश्क के टीलों पर होंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा यह तो तुम्हें दे चुका मैं तुमसे राज़ी हो गया। इसके अ़लावा भी तुम जो चाहोगे पाओगे और मेरे पास और ज़्यादा है। पस ये लोग जुमे के चाहने वाले और इच्छुक होंगे, क्योंकि उन्हें बहुत सी नेमतें इसी दिन मिलती हैं, यही दिन है जिस दिन तुम्हारा रब अ़र्श पर मुस्तवी हुआ (यानी अपनी शायाने शान अ़र्श पर अपनी तवज्जोह क़ायम फ़रमायी), इसी दिन हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा किये गये और इसी दिन क़ियामत आयेगी।

इसी तरह हज़रत इमाम शाफ़ई रह. ने "किताबुल-उम्म" की किताबुल-जुमा में भी ज़िक्र किया है। इमाम इब्ने जरीर रह. ने इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर एक बहुत बड़ा असर नक़ल किया है, जिसमें बहुत सी बातें ग़रीब हैं। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नती सत्तर साल तक एक ही तरफ़ मुतवज्जह बैठा रहेगा फिर एक हूर आयेगी जो उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह करेगी, वह इतनी ख़ूबसूरत होगी कि उसके रुख़्सार (गाल) में उसे अपनी शक्ल इस तरह नज़र आयेगी जैसे आबदार आईने में, वह ज़ेवरात पहने हुए होगी उनमें का एक-एक अदना मोती ऐसा होगा कि उसकी रोशनी से सारी दुनिया मुनव्वर हो जाये। वह सलाम करेगी, यह जवाब देकर पूछेगा तुम कौन हो? वह कहेगी मैं वह हूँ जिसे क़ुरआन में मज़ीद कहा गया था। उस पर सत्तर जोड़े होंगे, लेकिन फिर भी उसकी ख़ूबसूरती, चमक-दमक और सफ़ाई की वजह से बाहर ही से उसकी पिंडली का गूदा नज़र आयेगा। उसके सर पर जड़ाऊ ताज होगा जिसका अदना मोती पूरब व पश्चिम को रोशन कर देने के लिये काफ़ी है।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ۗ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ٥ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ٥ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ٥ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا	और हम उन (मक्का वालों) से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जो क़ुव्वत में उनसे (कहीं) ज़्यादा थे, और तमाम शहरों को छानते फिरते थे (लेकिन जब हमारा अ़ज़ाब नाज़िल हुआ तो उनको) कहीं भागने की जगह न मिली। (36) इसमें उस शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जिसके पास (समझने वाला) दिल हो, या वह (कम-से-कम दिल से) मुतवज्जह होकर (बात की तरफ़) कान ही लगा देता हो। (37) और हमने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में है उस सबको छह दिन में पैदा किया, और हमको थकान ने छुआ तक नहीं। (38) सो उनकी बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते रहिए, (इसमें नमाज़ भी दाख़िल है) सूरज

Maktab-e-Ashraf

يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ٥ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ٥	निकलने से पहले (जैसे सुबह की नमाज़) और छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर और अ़सर) (39) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए, (इसमें मग़रिब और इशा आ गई) और (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद भी। (40)

क़ौमों और मिल्लतों की हलाकत

इरशाद होता है कि ये काफ़िर तो हैं क्या चीज़? इनसे बहुत ज़्यादा क़ुव्वत व ताक़त और असबाब व तायदाद के लोगों को इसी जुर्म पर हम तहस-नहस कर चुके हैं, जिन्होंने शहरों में अपनी यादगारें छोड़ी हैं। ज़मीन में ख़ूब फ़साद किया था, लम्बे लम्बे सफ़र करते थे, हमारे अ़ज़ाब देखकर बचने की जगह तलाश करने लगे मगर यह कोशिश बिल्कुल बेफ़ायदा थी। ख़ुदा के फ़ैसले व तक़दीर और उसकी पकड़-धकड़ से कौन बच सकता था? पस तुम भी याद रखो कि जिस वक़्त मेरा अ़ज़ाब आ गया, बग़लें झाँकते रह जाओगे और होश खो बैठोगे। हर अ़क़्लमन्द के लिये इसमें काफ़ी इबरत है, अगर कोई ऐसा भी हो जो समझदारी के साथ कान लगाये वह भी इसमें बहुत कुछ पा सकता है। यानी दिल को हाज़िर करके कानों से सुने।

फिर अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़रमाता है कि उसने आसमानों को ज़मीनों को और उनके दरमियान की चीज़ों को छह रोज़ में पैदा कर दिया और वह थका नहीं। इसमें भी मौत के बाद की ज़िन्दगी पर ख़ुदा के क़ादिर होने का सुबूत है कि जो ऐसी बड़ी मख़्लूक़ को पहली बार में पैदा कर चुका है उस पर मुर्दों को ज़िन्दा करना क्या भारी है? हज़रत क़तादा रह. का फ़रमान है कि मलऊन यहूद कहते थे कि छह दिन में मख़्लूक़ को बनाकर ख़ालिक़ ने सातवें रोज़ आराम किया और यह दिन हफ़्ते (शनिवार) का दिन था, इसका नाम ही उन्होंने यौमुर्राहत (आराम का दिन) रख छोड़ा था। पस अल्लाह तआ़ला ने उनके इस फ़ुज़ूल ख़्याल की तरदीद की कि हमें थकन ही न थी, आराम कैसा? जैसे एक और आयत में है:

وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ....... الخ.

यानी क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनकी पैदाईश ने उसको न थकाया, क्या वह मुर्दों के जिलाने पर क़ादिर नहीं? हाँ क्यों नहीं, वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है। एक और आयत में है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ....... الخ.

अलबत्ता आसमान व ज़मीन की पैदाईश लोगों की पैदाईश से बहुत बड़ी है। एक और आयत में है:

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰهَا.

क्या तुम्हारी पैदाईश ज़्यादा मुश्किल है या आसमान की? इसे ख़ुदा ने बनाया है।

फिर फ़रमान होता है कि ये झुठलाने और इनकार करने वाले जो सुनाते हैं उसे सब्र से सुनते रहो और उन्हें मोहलत दो, उनको छोड़ो और सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले और रात को पाकी और तारीफ़ किया करो। मेराज से पहले सुबह और अ़सर की नमाज़ फ़र्ज़ थी और रात की तहज्जुद, आप पर

और आपकी उम्मत पर एक साल तक वाजिब रही, उसके बाद आपकी उम्मत से इसका वजूब मन्सूख़ हो गया। उसके बाद मेराज वाली रात पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं जिनमें फ़जर और अ़सर की नमाज़ें ज्यों की त्यों रहीं। पस सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले से मुराद फ़जर और अ़सर की नमाज़ है।

मुस्नद अहमद में है कि हम हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में बैठे हुए थे, आपने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया- तुम अपने रब के सामने पेश किये जाओगे और उसे इस तरह देखोगे जैसे इस चाँद को देख रहे हो। जिसके देखने में कोई धक्का-मुक्की नहीं। पस अगर तुम से हो सके तो ख़बरदार सूरज निकलने से पहले की और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ में मग़लूब न हो जाया करो। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई:

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 39, जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)

यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। रात को भी उसकी तस्बीह बयान कर, यानी नमाज़ पढ़। जैसे फ़रमाया:

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ....... الخ.

यानी रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा कर, यह ज़्यादती ख़ास तेरे लिये ही है, तुझे तेरा रब मक़ामे महमूद में खड़ा करने वाला है। मस्जिदों के पीछे से मुराद बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. नमाज़ के बाद ख़ुदा की पाकी बयान करना है। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के पास मुफ़लिस (ग़रीब) मुहाजिर आये और कहा या रसूलल्लाह! मालदार लोग बुलन्द दर्जे और हमेशगी वाली नेमतें हासिल कर चुके। आपने फ़रमाया यह कैसे? जवाब दिया कि हमारी तरह नमाज़ रोज़ा तो वे भी करते हैं लेकिन वे सदक़ा देते हैं जो हम नहीं दे सकते, वे ग़ुलाम आज़ाद करते हैं जो हम नहीं कर सकते। आपने फ़रमाया आओ मैं तुम्हें एक ऐसा अ़मल बता दूँ कि जब तुम उसे करो तो सबसे आगे निकल जाओ और तुमसे अफ़ज़ल कोई न निकले, लेकिन जो इस अ़मल को करे। तुम हर नमाज़ के बाद तैंतीस बार सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो।

वे फिर आये और कहा या रसूलल्लाह! हमारे मालदार भाईयों ने भी आपकी इस हदीस को सुना और वे भी इस अ़मल को करने लगे। आपने फ़रमाया फिर यह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे। दूसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद मग़रिब के बाद की दो रक्अ़तें हैं। हज़रत उमर, हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का यही फ़रमान है और यही क़ौल है हज़रत मुजाहिद, हज़रत इक्रिमा, हज़रत शअ़बी, हज़रत नख़ई, हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अ़लैहिम वग़ैरह का। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रक्अ़तें पढ़ा करते थे सिवाय फ़जर और अ़सर की नमाज़ के। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि हर नमाज़ के बाद। इब्ने अबी हातिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह सल्ल. के यहाँ गुज़ारी, आपने फ़जर के फ़र्ज़ों से पहले दो हल्की रक्अ़तें अदा कीं, फिर घर से नमाज़ के लिये निकले और फ़रमाया ऐ इब्ने अ़ब्बास! फ़जर से पहले की दो रक्अ़तें 'इदबारन्नुजूम' हैं मग़रिब के बाद की दो रक्अ़तें 'अदबारस्सुजूद' हैं।

यह उसी रात का ज़िक्र है जिस रात हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने तहज्जुद की नमाज़ की तेरह रक्अ़तें आपकी इक़्तिदा में अदा की थीं और यह रात आपकी ख़ाला हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बारी थी, लेकिन

Maktab E Ashraf

ऊपर जो बयान हुआ यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब बतलाते हैं। हाँ असल हदीस तहज्जुद की तो बुख़ारी व मुस्लिम में है। मुम्किन है कि आख़िरी कलाम हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का हो। वल्लाहु आलम

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝	और सुन लो कि जिस दिन एक पुकारने वाला पास ही से पुकारेगा। (41) जिस दिन उस चीख़ने को यक़ीनन सब सुन लेंगे, यह दिन होगा (क़ब्रों से) निकलने का। (42) हम ही (अब भी) जिलाते हैं और हम ही मारते हैं, और हमारी ही तरफ़ फिर लौटकर आना है। (43) जिस दिन ज़मीन उन (मुर्दों) पर से खुल जाएगी, जबकि वे दौड़ते होंगे। यह हमारे नज़दीक एक आसान जमा कर लेना है। (44) जो-जो कुछ ये लोग कह रहे हैं हम ख़ूब जानते हैं, और आप उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। तो आप क़ुरआन के ज़रिये से ऐसे शख़्स को नसीहत करते रहिए जो मेरी वईद "सज़ा की धमकी" से डरता हो। (45)

ع ٣ ١٦ ١٧

क़ियामत का दिन

हज़रत कअ़बे अहबार रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को हुक्म देगा कि बैतुल-मुक़द्दस के पत्थर पर खड़े होकर आवाज़ लगाये कि ऐ सड़ी गली हड्डियो! और ऐ जिस्म के विभिन्न और बिखरे हुए अंगो! अल्लाह तुम्हें जमा हो जाने का हुक्म देता है, ताकि तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दे। पस मुराद इससे सूर है। यह हक़ उस शक व शुब्हे और झगड़े को मिटा देगा जो उससे पहले था। यह क़ब्रों से निकल खड़े होने का दिन होगा। पहली बार में पैदा करना, फिर लौटाना और तमाम मख़्लूक़ात को एक जगह लौटाना यह हमारे ही बस की बात है, उस वक़्त हर एक को उसके अ़मल का बदला हम देंगे। तमाम भलाई बुराई का बदला हर-हर शख़्स पा लेगा, ज़मीन फट जायेगी और सब जल्दी उठ खड़े होंगे। अल्लाह तआ़ला आसमान से बारिश बरसायेगा जिससे मख़्लूक़ात के बदन उगने लगेंगे, जिस तरह कीचड़ में पड़ा हुआ दाना बारिश से उग जाता है। जब जिस्म पूरी तरह तैयार हो जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को सूर फूँकने का हुक्म देगा। तमाम रूहें सूर के सुराख़ में होंगी, उनके सूर फूँकते ही रूहें आसमान व ज़मीन के दरमियान फिरने लग जायेंगी। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम है, हर रूह अपने-अपने जिस्म में चली जाये, जिसे उसने दुनिया में आबाद कर रखा था। पस हर रूह अपने-अपने असली जिस्म में मिलेगी और जिस तरह ज़हरीले जानवर का असर चौपाये के रग व ख़ून में बहुत जल्दी पहुँच जाता है, इसी तरह उस जिस्म के ख़ून व रग में फ़ौरन रूह दौड़ जायेगी और सारी मख़्लूक़ अल्लाह के फ़रमान के ताबे होकर दौड़ती हुई जल्द से जल्द मैदाने मेहशर में

Maktab E Ashraf

हाज़िर हो जायेगी। यह वक़्त होगा जो काफ़िरों पर बहुत ही सख़्त होगा। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ.......... الخ.

यानी जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी तारीफ़ें करते हुए जवाब दोगे और समझते होगे कि तुम बहुत ही कम ठहरे।

सही मुस्लिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे पहले मेरी क़ब्र की ज़मीन शक़ होगी (फटेगी)। फ़रमाता है कि यह दोबारा खड़ा करना हम पर बहुत ही सहल और बिल्कुल आसान है। जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू ने एक दूसरी जगह फ़रमाया:

وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ.

यानी हमारा हुक्म इस तरह अचानक से हो जायेगा जैसे आँख का झपकना। एक और आयत में है:

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ...... الخ.

यानी तुम सब का पैदा करना और फिर मारने के बाद ज़िन्दा कर देना ऐसा ही है जैसे एक शख़्स का, अल्लाह तआ़ला सुनने वाला देखने वाला है।

फिर अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि ऐ नबी! ये जो कुछ कह रहे हैं हमारे इल्म से बाहर नहीं, तू उसे अहमियत न दे, हम ख़ुद सुलट लेंगे। जैसे एक और जगह है:

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ.......... الخ.

वाक़ई हमें मालूम है कि ये लोग जो बातें बनाते हैं उससे आप तंगदिल (दुखी और परेशान) होते हैं सो इसका इलाज यह है कि आप अपने परवर्दिगार की पाकी और तारीफ़ करते रहिये और नमाज़ियों में रहिये और मौत आ जाने तक अपने रब की इबादत में लगे रहिये।

फिर फ़रमाता है कि तू उन्हें हिदायत पर जबरन नहीं ला सकता, न हमने तुझे इसकी ज़िम्मेदारी दी है। यह भी मायने हैं कि उन पर जबर (ज़ोर-ज़बरदस्ती) न करो। लेकिन पहला क़ौल बेहतर है, क्योंकि अलफ़ाज़ में यह नहीं कि तुम उन पर जबर न करो, बल्कि यह है कि तुम उन पर जब्बार नहीं हो, यानी आप मुबल्लिग़ हैं, तब्लीग़ करके अपने फ़रीज़े से बरी हो जाईये। आप नसीहत करते रहिये, जिसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा है, जो उसके अ़ज़ाब से डरता है और उसकी रहमतों का उम्मीदवार है वह ज़रूर इस तब्लीग़ से नफ़ा उठायेगा और सही रास्ते पर आ जायेगा। जैसे फ़रमाया है:

فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ.

यानी तुझ पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, हिसाब तो हमारे ज़िम्मे है। एक और आयत में है:

فَذَكِّرْ إِنَّمَآ أَنْتَ مُذَكِّرٌ. لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ.

तू नसीहत कर दे तू सिर्फ़ नसीहत करने वाला है, कुछ उन पर दारोग़ा नहीं।

एक और जगह है कि तुझ पर उनकी हिदायत नहीं बल्कि ख़ुदा जिसे चाहे हिदायत देता है। एक और जगह इरशाद है:

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ........ الخ.

Maktab E Ashraf

यानी तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं कर सकते बल्कि ख़ुदा जिसे चाहे सही राह पर ला खड़ा करता है। इसी तरह मज़मून को यहाँ भी बयान फ़रमाया है। हज़रत क़तादा इस आयत को सुनकर यह दुआ करते:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يَّخَافُ وَعِيْدَكَ وَيَرْجُوْ مَوْعِدَكَ يَابَارُّيَارَحِيْمُ.

यानी ऐ अल्लाह! तू हमें उनमें से कर जो तेरी सज़ाओं से डरते हैं और तेरी नेमतों की उम्मीद लगाये हुए हैं। ऐ बहुत ज़्यादा एहसान करने वाले और ऐ बहुत ज़्यादा रहम करने वाले।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि सूरः क़ाफ़ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः ज़ारियात

सूरः ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا○ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا○ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا○ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا○ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ○ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ○ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ○ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ○ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ○ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ○ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ○ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ○ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ○ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ○

क़सम है उन हवाओं की जो गुबार वग़ैरह को उड़ाती हों। (1) फिर उन बादलों की जो बोझ (यानी बारिश) को उठाते हैं। (2) फिर उन कश्तियों की जो नर्मी से चलती हैं। (3) फिर उन फ़रिश्तों की जो (हुक्म के मुवाफ़िक़) चीज़ें बाँटते हैं। (4) तुमसे जिस (यानी क़ियामत) का वायदा किया जाता है, वह बिल्कुल सच है। (5) और (आमाल की) जज़ा (और सज़ा) ज़रूर होने वाली है। (6) क़सम है आसमान की जिसमें (फ़रिश्तों के चलने के) रास्ते हैं (7) कि तुम (यानी सब) लोग (क़ियामत के बारे में) मुख़्तलिफ़ गुफ़्तगू में हो। (8) उससे वही फिरता है जिसको फिरना होता है। (9) ग़ारत हो जाएँ बे-सनद बातें करने वाले (10) जो कि जहालत में भूले हुए हैं। (11) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा? (12) जिस दिन वे लोग आग पर रखे जाएँगे (13) (और कहा जाएगा कि) अपनी उस सज़ा का मज़ा चखो, यही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे। (14)

Muktab E Ashraf

क़सम है इन तमाम चीज़ों की

मुसलमानों के ख़लीफ़ा हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू कूफ़ा के मिम्बर पर चढ़कर एक मर्तबा फ़रमाने लगे कि क़ुरआने करीम की जिस आयत के बारे में और जिस सुन्नते रसूल के बारे में तुम सवाल करना चाहते हो कर लो। इस पर इब्नुल-कव्वा ने खड़े होकर पूछा कि ज़ारियात से क्या मुराद है? फ़रमाया हवा, पूछा हामिलात से? फ़रमाया बादल, कहा जारियात से? फ़रमाया कश्तियाँ, कहा मुक़स्सिमात से? फ़रमाया फ़रिश्ते। इस बारे में एक मरफ़ूअ़ हदीस भी आयी है। बज़्ज़ार में है कि सबीग़ तमीमी अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. के पास आया और कहा बतलाओ ज़ारियात से क्या मुराद है? फ़रमाया हवा, और इसे मैंने अगर रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना हुआ न होता तो मैं कभी न कहता। पूछा मुक़स्सिमात से क्या मुराद है? फ़रमाया फ़रिश्ते, और इसे भी मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुन रखा है। पूछा जारियात से क्या मतलब है? फ़रमाया कश्तियाँ। यह भी अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से न सुना होता तो तुझसे न कहता। फिर हुक्म दिया कि इसे सौ कोड़े लगाये जायें। चुनाँचे उसे दुर्रे मारे गये और एक मकान में रखा गया। जब ज़ख़्म अच्छे हो गये तो बुलवाकर फिर सौ कोड़े लगवाये और सवार करा कर हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. को लिखकर भेजा कि यह किसी मज्लिस में न बैठने पाये। कुछ दिनों के बाद यह हज़रत अबू मूसा के पास आये और क़समें खाकर उन्हें यक़ीन दिलाया कि अब मेरे ख़्यालात की पूरी इस्लाह हो चुकी है, अब मेरे दिल में वह बुराई का माद्दा नहीं रहा, जो पहले था। चुनाँचे हज़रत अबू मूसा रज़ि. ने जनाब अमीरुल-मोमिनीन की ख़िदमत में इसकी इत्तिला दी और साथ ही यह भी लिखा कि मेरा ख़्याल है कि अब वह वाक़ई ठीक हो गया है। इसके जवाब में दरबारे ख़िलाफ़त से फ़रमान पहुँचा कि फिर उन्हें मज्लिस में बैठने की इजाज़त दे दी जाये।

इमाम अबू बक्र बज़्ज़ार रह. फ़रमाते हैं कि इसके दो रावियों में कलाम है। पस यह हदीस ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। ठीक बात यह मालूम होती है कि यह हदीस भी मौक़ूफ़ है, यानी हज़रत उमर रज़ि. का अपना फ़रमान है, मरफ़ूअ़ हदीस नहीं। अमीरुल-मोमिनीन ने उसे जो पिटवाया उसकी वजह यह थी कि उसका बुरे अ़क़ीदे वाला होना आप पर ज़ाहिर हो चुका था, और उसके ये सवालात इनकार और मुख़ालफ़त के अन्दाज़ पर थे। वल्लाहु आलम

सबीग़ के बाप का नाम अ़सल था और उसका यह क़िस्सा मशहूर है, जिसे पूरा का पूरा हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर रह. ने ज़िक्र किया है। यही तफ़सीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत मुजाहिद, हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत हसन, हज़रत क़तादा, हज़रत सुद्दी वग़ैरह से मन्क़ूल है। इमाम इब्ने जरीर और इमाम इब्ने अबी हातिम ने तो इन आयतों की तफ़सीर में और कोई क़ौल ज़िक्र नहीं किया। हामिलात से मुराद बादल होने का मुहावरा इस शे'र से भी पाया जाता है:

وَاَسْلَمْتُ نَفْسِىْ لِمَنْ اَسْلَمَتْ ☆ لَهُ الْمُزْنُ تَحْمِلُ عَذْبًا زُلَالًا

यानी मैं अपने आपको उस ख़ुदा के फ़रमान के ताबे करता हूँ जिसके हुक्म के ताबे वे बादल हैं जो साफ़-सुथरे, मीठे और हल्के पानी को उठाकर ले जाते हैं।

जारियात से मुराद बाज़ ने सितारे लिये हैं जो आसमान पर चलते रहते हैं। यह मायने लेने में अदना से आला (नीचे से ऊपर) की तरफ़ तरक़्क़ी होगी। सब से पहले हवा, फिर बादल, फिर सितारे, फिर फ़रिश्ते।

Maktab E Ashraf

जो कभी अल्लाह का हुक्म लेकर उतरते हैं, कभी कोई सुपुर्द किया हुआ काम पूरा करने के लिये तशरीफ़ लाते हैं। चूँकि ये सब कसमें इस बात पर हैं कि क़ियामत ज़रूर आनी है, और लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे, इसलिये इनके बाद ही फ़रमाया कि तुमसे जो वायदा किया जाता है वह सच्चा है और हिसाब किताब, जज़ा सज़ा ज़रूर वाक़े होने वाली है।

फिर आसमान की क़सम खाई जो ख़ूबसूरती, रौनक़, और बराबरी वाला है। बहुत से बुज़ुर्गों ने यही मायने 'हुबुक' के बयान किये हैं। हज़रत ज़ह्हाक वग़ैरह फ़रमाते हैं कि पानी की मौजें, रेत के ज़र्रे और खेतियों के पत्ते हवा के ज़ोर से जब लहराते हैं और बल खाते लहर दार हो जाते हैं और गोया उनमें रास्ते पड़ जाते हैं, उसी को 'हुबुक' कहते हैं। इब्ने जरीर की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- तुम्हारे पीछे कज़्ज़ाब (बहुत बड़ा झूठा) बहकाने वाला है, उसके सर के बाल पीछे की तरफ़ से हुबुक (लहर दार) हैं यानी घुंघरियाले हैं। अबू सालेह फ़रमाते हैं कि हुबुक से मुराद है शिद्दत व सख़्ती वाला। ख़सीफ़ कहते हैं कि मुराद अच्छा दिखने वाला है। हसन बिन अबू हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उसकी ख़ूबसूरती उसके सितारे हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सातों आसमान हैं। मुम्किन है आपका मतलब यह हो कि क़ायम रहने वाले सितारे इस आसमान में हैं। आसमानी चीज़ों का इल्म रखने वाले अक्सर उलेमा का बयान है कि ये आठवें आसमान में हैं जो सातवें के ऊपर है। वल्लाहु आलम

इन तमाम अक़्वाल का ख़ुलासा एक ही है यानी हुस्न व रौनक़ वाला आसमान, उसकी बुलन्दी, उसकी सफ़ाई, उसकी पाकीज़गी, उसकी बनावट की उम्दगी, उसकी मज़बूती, उसकी चौड़ाई और खुलापन, उसका सितारों से जगमगाना जिनमें से बाज़ चलते फिरते रहते हैं और बाज़ ठहरे हुए हैं, उसका सूरज और चाँद जैसे सय्यारों से सजा होना, ये सब उसकी ख़ूबसूरती और उम्दगी की चीज़ें हैं। फिर फ़रमाते हैं- ऐ मुश्रिको! तुम अपने अक़्वाल में अलग-अलग और बिखरे हुए हो, तुम किसी सही नतीजे पर अब तक ख़ुद अपने तौर पर कभी नहीं पहुँचे हो, किसी राय पर तुम्हारी सहमति नहीं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उनमें से बाज़ तो क़ुरआन को सच्चा जानते हैं, बाज़ उसको झुठलाते थे।

फिर फ़रमाता है- यह हालत उसी की होती है जो ख़ुद गुमराह हो, वह अपने ऐसे बातिल अक़्वाल की वजह से बहक और भटक जाता है, सही समझ और सच्चा इल्म उससे छूट जाता है। जैसे एक आयत में है:

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ. مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ. اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ.

यानी तुम लोग अपने झूठे माबूदों के साथ मिलकर सिवाय जहन्नमी लोगों के और किसी को बहका नहीं सकते।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि इससे गुमराह वही होता है जो ख़ुद बहका हुआ हो। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इससे दूर वही होता है जो भलाईयों से दूर डाल दिया गया है। हज़रत इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि क़ुरआन से वही हटता है जो इसे पहले ही से झुठलाने पर कमर कस ले। फिर फ़रमाता है कि बेसनद बातें कहने वाले हलाक हों, यानी झूठी बातें बनाने वाले जिन्हें यक़ीन न था, जो कहते थे कि हम उठाये नहीं जायेंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी शक करने वाले मलऊन हैं। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. भी अपने ख़ुतबे में यही फ़रमाते थे कि ये धोखे वाले और बदगुमान लोग हैं।

फिर फ़रमाया कि लोग अपने कुफ़्र व शक में ग़ाफ़िल और बेपरवाह हैं। ये लोग इनकार के तौर पर

Maktab E Ashraf

पूछते हैं कि बदले का दिन कब आयेगा? अल्लाह फ़रमाता है उस दिन तो ये आग में तपाये जायेंगे जिस तरह सोना तपाया जाता है। ये उसमें जलेंगे और इनसे कहा जायेगा कि जलने का मज़ा चखो अपने करतूत के बदले बरदाश्त करो। फिर उनकी और ज़्यादा हिकारत (ज़िल्लत व पस्ती ज़ाहिर करने) के लिये उनसे बतौर डाँट डपट के कहा जायेगा- यही है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे कि कब आयेगा। वल्लाहु आलम

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍۙ۝ اٰخِذِيْنَ
مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ
مُحْسِنِيْنَ ۝ؕ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا
يَهْجَعُوْنَ ۝ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ
يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَفِي الْاَرْضِ
اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝ۙ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا
تُبْصِرُوْنَ ۝ وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا
تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ع ع ۱ ۲۳ ۱۸

बेशक मुत्तक़ी लोग जन्नतों में और चश्मों में होंगे। (15) (और) उनके रब ने उनको जो (सवाब) अता किया होगा वह उसको (ख़ुशी-ख़ुशी) ले रहे होंगे। (और क्यों न हो) वे लोग इससे पहले (दुनिया में) नेक काम करने वाले थे। (16) वे लोग रात को बहुत कम सोते थे। (17) और रात के अख़ीर में इस्तिग़फ़ार किया करते थे। (18) और उनके माल में सवाली और ग़ैर-सवाली का हक़ था। (19) और यक़ीन लाने वालों के लिए ज़मीन में बहुत-सी निशानियाँ हैं (20) और ख़ुद तुम्हारी ज़ात में भी। और क्या तुमको दिखाई नहीं देता। (21) और तुम्हारा रिज़्क़ और जो तुमसे (क़ियामत के मुताल्लिक़) वायदा किया जाता है (22) (उन) सब का (मुतैयन वक़्त) आसमान में है, तो क़सम है आसमान और ज़मीन के परवर्दिगार की कि वह बरहक़ है जैसा कि तुम बातें कर रहे हो। (23)

नेक और परहेज़गार लोगों का बयान

परहेज़गार, ख़ुदा से डरने वाले लोगों का अन्जाम बयान हो रहा है कि क़ियामत के दिन जन्नतों में और नहरों में होंगे, बख़िलाफ़ उन बुरे किरदार वालों के जो अ़ज़ाब व सज़ा में, तौक़ व ज़न्जीर में, सख़्ती और मार-पीट में होंगे। जो अल्लाह के फ़राईज़ उनके पास आये थे ये उनके आ़मिल थे और उनसे पहले भी वे इख़्लास के काम करने वाले थे। लेकिन इस तफ़सीर में ज़रा विचार का मक़ाम है, दो वजह से, अव्वल तो यह कि यह तफ़सीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास की कही जाती है लेकिन सही सनद से उन तक नहीं पहुँचती बल्कि इसकी यह सनद बिल्कुल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। दूसरे यह कि "आख़िज़ीन" (लेने वाले) का लफ़्ज़ हाल है अगले जुमले से, तो यह मतलब हुआ कि मुत्तक़ी लोग जन्नत में ख़ुदा की दी हुई नेमतें हासिल कर रहे होंगे, इससे पहले वे भलाई के काम करने वाले थे, यानी दुनिया में। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इन आयतों में फ़रमायाः

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ.

Maktaba Ashraf

यानी दुनिया में तुमने जो नेकियाँ की थीं उनके बदले अब तो यहाँ शौक़ से उम्दा खाने खाते पीते रहो।

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला उनके अ़मल के इख़्लास यानी उनके एहसान की तफ़सील बयान फ़रमा रहा है कि ये रात को बहुत कम सोया करते थे। बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यहाँ 'मा' नाफ़िया (मना करने के लिये) है, तो बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह यह मतलब होगा कि उन पर कोई ऐसी रात न गुज़रती थी जिसका कुछ हिस्सा अल्लाह की याद में न गुज़ारते हों, चाहे शुरू में कुछ नवाफ़िल पढ़ लें चाहे बीच में, यानी कुछ न कुछ किसी न किसी वक़्त नमाज़ उमूमन हर रात पढ़ ही लिया करते थे। सारी रात सोते सोते नहीं गुज़ारते थे।

हज़रत अबुल्-आ़लिया रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं- ये लोग मग़रिब इशा के दरमियान कुछ नवाफ़िल पढ़ लिया करते थे। इमाम अबू जाफ़र बाक़िर रह. फ़रमाते हैं- मुराद यह है कि इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले नहीं सोते थे। बाज़ मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) का क़ौल है कि 'मा' यहाँ पर मौसूला है, यानी उनकी नींद रात की कम थी, कुछ सोते थे कुछ जागते थे, और अगर दिल लग गया तो सुबह हो जाती थी और फिर पिछली रात को अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ा कर तौबा इस्तिग़फ़ार करते थे। हज़रत अहनफ़ इब्ने क़ैस रह. इस आयत का यह मतलब बयान करके फिर फ़रमाते थे- अफ़सोस मुझमें यह बात नहीं। आपके शागिर्द ख़्वाजा हसन बसरी रह. का क़ौल है कि आप अक्सर फ़रमाया करते थे कि जन्नितयों के जो आमाल और जो सिफ़ात बयान हुए हैं, मैं जब कभी अपने आमाल व सिफ़ात को उनके मुक़ाबले में रखता हूँ तो बहुत कुछ दूरियाँ पाता हूँ लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह जहन्नमियों के अ़क़ीदों के मुक़ाबले में जब मैं अपने अ़क़ीदों को लाता हूँ तो मैं देखता हूँ कि वे लोग तो बिल्कुल ही ख़ैर से ख़ाली थे। वे किताबुल्लाह के मुन्किर, वे रसूलुल्लाह के मुन्किर, वे मौत के बाद की ज़िन्दगी के मुन्किर, पस हमारी हालत वही है जो ख़ुदा तआ़ला ने इस क़िस्म के लोगों की बयान फ़रमायी हैः

خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا.

यानी नेकियाँ बदियाँ मिली-जुली।

हज़रत ज़ैद बिन असलम रह. से क़बीला बनू तमीम के एक शख़्स ने कहा ऐ अबू सलमा! यह सिफ़त तो हममें नहीं पाई जाती कि हम रात को बहुत कम सोते हों, हम तो बहुत कम वक़्त इबादते ख़ुदा में गुज़ारते हैं। आपने फ़रमाया वह शख़्स भी बहुत ख़ुशनसीब है जो नींद आये तो सो जाये और जागे तो अल्लाह से डरता रहे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब शुरू-शुरू में रसूलुल्लाह सल्ल. मदीना तशरीफ़ लाये तो लोग आपकी ज़ियारत के लिये टूट पड़े, मैं उस मजमे में था, वल्लाह आपके मुबारक चेहरे पर निगाह पड़ते ही इतना तो मैंने यक़ीन कर लिया कि यह नूरानी चेहरा किसी झूठे इनसान का नहीं हो सकता। सब से पहली बात जो रसूले करीम सल्ल. की मेरे कान में पड़ी यह थी कि आपने फ़रमाया- ऐ लोगो! खाना खिलाते रहो और सिला-रहमी करते रहो और सलाम किया करो और रातों को जब लोग सोये हुए हों नमाज़ अदा करो, तो तुम सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (ऊपरी मन्ज़िल के मकानात) हैं जिनके अन्दर का हिस्सा बाहर से और बाहर का हिस्सा अन्दर से नज़र आता है। यह सुनकर हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. ने फ़रमाया- या रसूलल्लाह! यह किनके लिये हैं? फ़रमाया उनके लिये जो नर्मी के साथ कलाम करें और दूसरों को खिलाते-पिलाते रहें और जब लोग सोते हुए हों ये नमाज़ें पढ़ते रहें।

Maktab E Ashraf

हज़रत ज़ोहरी और हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत का मतलब यह है कि वे रात का अक्सर हिस्सा तहज्जुद में गुज़ारते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और हज़रत इब्राहीम नख़ई रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि रात का बहुत कम हिस्सा वे सोते हैं।

फिर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि सेहर के वक़्त वे इस्तिग़फ़ार करते हैं। मुजाहिद वग़ैरह फ़रमाते हैं- यानी नमाज़ पढ़ते हैं। कुछ दूसरे मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि रातों को क़ियाम करते हैं और सुबह होने के वक़्त अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करते हैं। जैसे एक और जगह फ़रमाने बारी है:

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ.

यानी सेहर के वक़्त ये लोग इस्तिग़फ़ार करने में लग जाते हैं।

अगर यह इस्तिग़फ़ार नमाज़ ही में हो तो भी बहुत अच्छा है। सिहाहे सित्ता (हदीस की छह बड़ी किताबों) वग़ैरह में सहाबा की एक जमाअ़त की कई रिवायतों से साबित है कि रसूले मक़बूल सल्ल. ने फ़रमाया- जब आख़िरी तिहाई रात बाक़ी रह जाती है उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला हर रात को दुनिया वाले आसमान की तरफ़ उतरता है और फ़रमाता है- कोई गुनाहगार है? जो तौबा करे और मैं उसकी तौबा क़बूल करूँ। कोई इस्तिग़फ़ार करने वाला है? जो इस्तिग़फ़ार करे और मैं उसे बख़्शूँ। कोई माँगने वाला है? जो माँगे और मैं उसे दूँ। फ़जर के तुलूअ़ होने (यानी सुबह सादिक़ होने) तक यही फ़रमाता है। अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपने लड़कों से जो यह फ़रमाया था किः

سَوْفَ اَسْتَغْفِرُلَكُمْ رَبِّىْ.

मैं अब जल्द ही तुम्हारे लिये अपने रब से इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दरख़्वास्त) करूँगा।

वह इसलिये था कि सेहर का वक़्त आ जाये, क्योंकि यह क़बूलियत का वक़्त है।

फिर उनका यह वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) बयान किया जाता है कि जहाँ ये नमाज़ी हैं और अल्लाह का हक़ अदा करते हैं वहाँ लोगों के हक़ भी नहीं भूलते, ज़कातें देते हैं, सुलूक व एहसान और सिला-रहमी करते हैं। उनके माल में एक निर्धारित हिस्सा माँगने वालों और उन हक़दारों का है जो सवाल से बचते हैं। अबू दाऊद वग़ैरह में है, रसूले करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि साईल (माँगने वाले) का हक़ है अगरचे वह घोड़े पर सवार हो। मेहरूम वह जिसका कोई हिस्सा बैतुल-माल में न हो, ख़ुद उसके पास कोई काम-काज न हो, हुनर मन्दी और कारीगरी उसके पास न हो जिससे रोज़ी कमा सके। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इससे मुराद वे लोग हैं कि कुछ सिलसिला कमाने का कर रखा है लेकिन इतना नहीं कमा पाते कि उन्हें काफ़ी हो जाये। हज़रत ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि वह शख़्स जो मालदार था लेकिन माल तबाह हो गया। चुनाँचे यमामा में जब सैलाब आया और एक शख़्स का तमाम माल व सामान बहा ले गया तो एक सहाबी ने फ़रमाया- यह मेहरूम है। बाज़ दूसरे बुजुर्ग मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि मेहरूम से मुराद वह शख़्स है जो बावजूद ज़रूरत के किसी से सवाल नहीं करता। एक हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- और जिन्हें एक दो लुक़मे या एक दो खजूरें तुम दे दिया करते हो बल्कि हक़ीक़त में वे लोग भी मिस्कीन हैं जो इतना नहीं पाते कि उन्हें ज़रूरत बाक़ी न रहे, न अपना हाल व ज़ाहिर ऐसा रखते हैं कि किसी पर उनकी ज़रूरत व तंगदस्ती ज़ाहिर हो और कोई उन्हें सदक़ा दे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. मक्का शरीफ़ जा रहे थे कि रास्ते में एक कुत्ता पास आकर खड़ा हो गया, आपने ज़िबह की हुई बकरी का एक शाना काटकर उसकी तरफ़ डाल दिया और फ़रमाया- लोग कहते हैं कि यह भी मेहरूम में से है। हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं- मैं तो आ़जिज़ आ गया लेकिन मेहरूम के मायने मालूम न कर सका। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- मेहरूम वह है जिसके पास माल न रहा हो, चाहे वजह कुछ भी हो, यानी हासिल ही न कर सकता हो, खाने कमाने का सलीक़ा ही न हो, या काम ही न चलता हो, या किसी आफ़त के कारण जमा किया हुआ माल ज़ाया हो गया हो।

एक मर्तबा अल्लाह के रसूल सल्ल. ने एक छोटा सा लश्कर काफ़िरों से लड़ाई के लिये रवाना फ़रमाया। ख़ुदा ने उन्हें ग़लबा दिया और माले ग़नीमत भी मिला। फिर कुछ लोग आपके पास वे भी आ गये जो ग़नीमत हासिल होने के वक़्त मौजूद न थे, तो यह आयत उतरी। इस रिवायत का तक़ाज़ा तो यह है कि यह आयत मदनी हो, लेकिन दर असल ऐसा नहीं, बल्कि यह आयत मक्की है।

फिर फ़रमाता है कि यक़ीन रखने वालों के लिये ज़मीन में भी अल्लाह की बहुत सी निशानियाँ मौजूद हैं, जो ख़ालिक़ की बड़ाई व इज़्ज़त, हैबत व शान पर दलालत करती हैं। देखो कि किस तरह उसमें हैवानात और नबातात (जानवरों और पेड़-पौधों) को फैला दिया है और किस तरह पहाड़ों और मैदानों समन्दरों और दरियाओं को जारी किया है। फिर इनसान पर नज़र डालो, उनकी ज़बानों के अलग-अलग होने को, उनके रंग-रूप के भिन्न होने को, उनके इरादों और क़ुव्वतों के अलग-अलग होने को, उनकी अ़क़्ल व समझ के अलग-अलग और भिन्न होने को, उनकी गतिविधियों को, उनकी नेकी बदी को देखो, उनकी बनावट पर ग़ौर करो कि हर अंग और हिस्सा कैसी मुनासिब जगह है। इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया- ख़ुद तुम्हारे वजूद में ही उसकी बहुत सी निशानियाँ हैं, क्या तुम देखते नहीं हो?

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- जो शख़्स अपनी पैदाईश में ग़ौर करेगा, अपने जिस्म की तरकीब पर नज़र डालेगा, वह यक़ीन करेगा कि बेशक उसे ख़ुदा ने ही पैदा किया है और अपनी इबादत के लिये ही बनाया है। फिर फ़रमाता है कि आसमान में तुम्हारी रोज़ी है, यानी बारिश और वह भी जिसका तुम से वायदा किया जाता है, यानी जन्नत। हज़रत वासिल अहदब रह. ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया- अफ़सोस मेरा रिज़्क़ तो आसमान में है और मैं उसे ज़मीन में तलाश कर रहा हूँ। यह कहकर बस्ती छोड़कर उजाड़ जंगल में चले गये। तीन दिन तक तो उन्हें कुछ भी न मिला, लेकिन तीसरे दिन देखते हैं कि तर खजूरों का एक ख़ोशा (गुच्छा) उनके पास रखा हुआ है। उनके भाई जो उनसे भी ज़्यादा मुख़्लिस और नेक-नीयत थे, यह भी उनके साथ ही थे। दोनों भाई आख़िरी दम तक इसी तरह जंगलों में ही रहे।

फिर अल्लाह करीम ख़ुद अपनी क़सम खाकर फ़रमाता है कि मेरे जो वायदे हैं जैसे क़ियामत के आने का, दोबारा ज़िन्दा किये जाने का, अच्छा बुरा बदला देने का ये यक़ीनन सच्चे और वाक़े होकर रहने वाले हैं। जैसे तुम्हें तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ में शक नहीं होता इसी तरह तुम्हें इनमें भी कोई शक हरगिज़ हरगिज़ न करना चाहिये। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. जब कोई बात कहते तो फ़रमाते- ख़ुदा उन्हें बरबाद करे जो ख़ुदा की क़सम को भी न मानें। यह हदीस मुर्सल है, यानी ताबिई हुज़ूर सल्ल. से रिवायत करते हैं, सहाबी का नाम नहीं लेते।

Maktaba E Ashraf

هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۘ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۘ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۙ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۡ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۘ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۘ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۘ

क्या इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के मुअ़ज़्ज़ज़ "यानी सम्मानित" मेहमानों की हिकायत आप तक पहुँची है? (24) (और यह क़िस्सा उस वक़्त में था) जबकि वे (मेहमान) उनके पास आये फिर उनको सलाम किया, इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने भी (जवाब में) कहा, सलाम (और कहने लगे कि) अन्जान लोग (मालूम होते) हैं। (25) फिर अपने घर की तरफ़ चले और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (तला हुआ) लाए। (26) और उसको उनके पास (यानी सामने लाकर) रखा। कहने लगे, आप लोग खाते क्यों नहीं? (27) तो उनसे दिल में डरे, उन्होंने कहा कि तुम डरो मत और उनको एक लड़के की ख़ुशख़बरी दी, जो बड़ा आ़लिम होगा। (28) इतने में उनकी बीवी बोलती हुई आईं, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगीं कि (पहले तो) बुढ़िया (फिर) बाँझ। (29) फ़रिश्ते कहने लगे कि तुम्हारे परवर्दिगार ने ऐसा ही फ़रमाया है, कुछ शक नहीं कि वह बड़ा हिक्मत वाला, जानने वाला है। (30)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के मेहमान

यह वाक़िआ़ सूरः हूद और सूरः हिज्र में भी गुज़र चुका है। ये मेहमान फ़रिश्ते थे जो इनसानों की शक्ल में आये थे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इ़ज़्ज़त व शराफ़त दे रखी है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. और दूसरे उलेमा-ए-किराम की एक जमाअ़त कहती है कि मेहमान की ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी और ख़ातिर दारी) करना वाजिब है। हदीस में आया है और क़ुरआने करीम के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ भी यही हैं। उन्होंने सलाम किया जिसका जवाब ख़लीलुल्लाह ने बढ़ाकर दिया। इसका सुबूत दूसरे "सलामुन" पर दो पेश का होना है, और यही फ़रमाने बारी तआ़ला है। फ़रमाता है:

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا.

यानी जब कोई तुम्हें सलाम करे तो तुम उससे बेहतर जवाब दो, या कम से कम उतना ही।

पस हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने अफ़ज़ल सूरत को इख़्तियार किया। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम चूँकि इससे नावाक़िफ़ थे कि ये दर असल फ़रिश्ते हैं, इसलिये कहा कि ये लोग अजनबी से मालूम होते हैं। ये फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल और हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिमुस्सलाम थे। जो ख़ूबसूरत

Maktaba E Ashraf

नौजवान इनसानों की शक्ल में आये थे। उनके चेहरों पर हैबत व जलाल था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अब उनके लिये खाने की तैयारी में मसरूफ़ हो गये, जल्दी से अपने घर वालों की तरफ़ गये और ज़रा सी देर में तैयार बछड़े का गोश्त भुना भुनाया हुआ ले आये और उनके सामने उनके क़रीब रख दिया और फ़रमाया- आप खाते क्यों नहीं? इससे मेहमान नवाज़ी के आदाब मालूम हुए कि मेहमान से पूछे बग़ैर ही उन पर शुरू से एहसान रखने के पहले ही आप उन्हें ख़बर किये बग़ैर ही चले गये और जल्दी से बेहतर से बेहतर जो चीज़ पाई उसे तैयार करके ले आये। तैयार फ़र्बा कम-उम्र बछड़े का भुना हुआ गोश्त ले आये और कहीं और रखकर मेहमान की खींच-तान न की बल्कि उनके सामने उनके पास ला रखा। फिर उन्हें यूँ नहीं कहते कि खाओ, क्योंकि इसमें भी एक हुक्म पाया जाता है, बल्कि निहायत तवाज़ो से फ़रमाते हैं कि आप खाना शुरू क्यों नहीं करते? जैसे कोई शख़्स किसी से कहे कि अगर फ़ज़्ल व करम और मेहरबानी करना चाहें तो कीजिए।

फिर इरशाद होता है कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अपने दिल में उनसे ख़ौफ़ज़दा हो गये (यानी डर गये) जैसे कि एक और आयत में है:

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَاتَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً...... الخ.

यानी आपने जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ बढ़ते नहीं तो घबराहट में आ गये और दिल में ख़ौफ़ खाने लगे। इस पर मेहमानों ने कहा डरो मत, हम ख़ुदा के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं जो क़ौमे लूत की हलाकत के लिये आये हैं। आपकी बीवी साहिबा जो खड़ी हुई सुन रही थीं, वह यह सुनकर हंस दीं तो फ़रिश्तों ने उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाई कि तुम्हारे यहाँ हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम पैदा होंगे और उनके यहाँ हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम। इस पर बीवी साहिबा को ताज्जुब हुआ और कहा- हाय अफ़सोस! अब मेरे यहाँ बच्चा कैसे होगा? मैं बुढ़िया फूस हो गयी हूँ और मेरे यह शौहर भी बिल्कुल बूढ़े हो गये हैं। यह सख़्त ताज्जुब की चीज़ है। फ़रिश्तों ने कहा क्या तुम ख़ुदा के कामों से ताज्जुब करती हो? ख़ुसूसन तुम जैसी ऐसे पाक घराने की औरत? तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों, जान लो कि अल्लाह तआ़ला तारीफ़ों के लायक़ और बड़ी अ़ज़मत और शान वाला है।

यहाँ यह फ़रमाया गया है कि बशारत (ख़ुशख़बरी) हज़रत इब्राहीम को दी, और इससे पहले की आयत में है कि बशारत आपकी बीवी साहिबा को दी। तो मतलब यह है कि दोनों को बशारत दी गयी, क्योंकि बच्चे का होना दोनों की ख़ुशी का सबब है।

फिर फ़रमाता है कि यह बशारत सुनकर आपकी बीवी साहिबा के मुँह से ज़ोर की आवाज़ निकल गयी और अपने आपको दोनों हाथों से मारकर ऐसी अ़जीब व ग़रीब ख़बर को सुनकर हैरत के साथ कहने लगीं कि जवानी में तो मैं बाँझ रही, अब मियाँ-बीवी दोनों पूरे बूढ़े हो गये तो मुझे हमल (गर्भ) ठहरेगा? इसके जवाब में फ़रिश्तों ने कहा कि यह ख़ुशख़बरी कुछ हम अपनी तरफ़ से नहीं दे रहे बल्कि ख़ुदा तआ़ला ने हमें फ़रमाया है कि हम तुम्हें यह ख़बर पहुँचा दें। वह हिक्मत वाला और इल्म वाला है। तुम जिस इ़ज़्ज़त व सम्मान के मुस्तहिक़ हो वह ख़ूब जानता है और उसका फ़रमान है कि तुम्हारे यहाँ इस उम्र में बच्चा होगा। उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं, न उसका कोई फ़रमान हिक्मत से ख़ाली है।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि पारा नम्बर 26 की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर सत्ताईस

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ○ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ○ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ○ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ○ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ○ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ○	इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) कहने लगे (कि) अच्छा तो (यह बतलाओ कि) तुमको बड़ी मुहिम क्या पेश आई है ऐ फ़रिश्तो? (31) फ़रिश्तों ने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम) की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उनपर धिंगर के पत्थर बरसाएँ। (33) जिन पर आपके रब के पास (यानी आ़लमे ग़ैब में) ख़ास निशानियाँ भी हैं हद से गुज़रने वालों के लिए। (34) और हमने जितने ईमान वाले थे उनको वहाँ से निकाल कर अलग कर दिया। (35) सो मुसलमानों के सिवाय एक घर के और कोई घर (मुसलमानों का) हमने नहीं पाया। (36) और हमने इस वाक़िए में (हमेशा के वास्ते) ऐसे लोगों के लिए इबरत रहने दी जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं। (37)

आसमानी अ़ज़ाब

पहले बयान हो चुका है कि जब इन नये आने वाले मेहमानों से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का परिचय हुआ और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दहशत (घबराहट) जाती रही, बल्कि उनकी ज़बानी एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी भी सुन चुके और अपनी बुर्दबारी, ख़ुदा-तरसी और दर्दमन्दी की वजह से ख़ुदा की जनाब में क़ौमे लूत की सिफ़ारिश भी कर चुके, और ख़ुदा तआ़ला के आख़िरी फ़ैसले का ऐलान भी सुन चुके, उसके बाद जो हुआ उसका बयान यहाँ हो रहा है कि हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने उन फ़रिश्तों से मालूम फ़रमाया कि आप लोग किस मक़सद से आये हैं? उन्होंने जवाब दिया कि क़ौमे लूत के गुनाहगारों को हलाक करने के लिये हमें भेजा गया है, हम उन पर संगबारी और पथराव करेंगे। उन पत्थरों को उन पर बरसायेंगे जिन पर ख़ुदा के हुक्म से पहले ही उनके नाम लिखे जा चुके हैं, और हर-हर गुनाहगार के लिये अलग-अलग पत्थर मुक़र्रर कर दिये गये हैं।

सूरः अन्कबूत में गुज़र चुका है कि यह सुनकर हज़रत ख़लीलुर्रहमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वहाँ तो हज़रत लूत हैं, फिर वह बस्ती की बस्ती कैसे ग़ारत कर दी जायेगी? फ़रिश्तों ने कहा इसका इल्म हमें भी है, हमें हुक्म मिल चुका है कि हम उन्हें और मोमिन लोगों तथा उनके घराने के तमाम ईमान वालों को बचा लें। हाँ उनकी बीवी नहीं बच सकती, वह भी मुजरिमों के साथ अपने जुर्म के बदले हलाक कर दी जायेगी। इसी तरह यहाँ भी इरशाद है कि उस बस्ती में जितने भी थे सब को बचा लिया गया, इससे भी मुराद हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और उनके घराने के लोग हैं, सिवाय उनकी बीवी के, जो ईमान नहीं लाई

थीं। चुनाँचे फ़रमा दिया कि वहाँ सिवाय एक घर के और कोई घर मुसलमान था ही नहीं, ये दोनों आयतें दलील हैं उन लोगों की जो कहते हैं कि ईमान व इस्लाम का मतलब एक ही है, इसलिये कि यहाँ उन्हीं लोगों को मोमिन कहा गया है और फिर उन्हीं को मुसलमान भी कहा गया है। मोतज़िला का मज़हब भी यही है कि एक चीज़ है जिसे ईमान भी कहा जाता है और इस्लाम भी, लेकिन यह इस्तिदलाल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है, इसलिये कि ये लोग मोमिन थे, और यह तो हम भी मानते हैं कि हर मोमिन मुसलमान होता है, लेकिन हर मुसलमान मोमिन नहीं होता। पस हाल की ख़ुसूसियत की वजह से उन्हें मोमिन व मुस्लिम कहा गया है। इससे आ़म तौर पर यह साबित नहीं होता कि हर मुस्लिम मोमिन है।

हज़रत इमाम बुख़ारी रह. और दूसरे मुहद्दिसीन का मज़हब है कि जब इस्लाम हक़ीक़ी और सच्चा इस्लाम हो तो वही इस्लाम ईमान है, और इस सूरत में ईमान इस्लाम एक ही चीज़ है। हाँ जब इस्लाम हक़ीक़ी तौर पर न हो तो बेशक इस्लाम ईमान में फ़र्क़ है। फिर फ़रमाता है कि उनकी आबाद बस्तियों को अ़ज़ाब से बरबाद करके उन्हें सड़े हुए बदबूदार खण्डर बना देने में मोमिनों के लिये इबरत (नसीहत व सबक़) के पूरे सामान हैं। जो अल्लाह के अ़ज़ाब का डर रखते हैं वे इस नमूने को देखकर इस ज़बरदस्त निशान को मुलाहिज़ा करके पूरी इबरत हासिल कर सकते हैं।

وَفِىْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ○ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ○ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ○ وَفِىْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ○ مَا تَذَرُ مِنْ شَىْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ○ وَفِىْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ○ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ○ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا

और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि हमने उनको फ़िरऔ़न के पास एक खुली हुई दलील (यानी मोजिज़ा) देकर भेजा। (38) सो उसने अपनी हुकूमत के कारिन्दों सहित सरकशी की और कहने लगा कि यह जादूगर है या मजनूँ। (39) सो हमने उसको और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया (यानी ग़र्क़ कर दिया) और उसने काम ही मलामत का किया था। (40) और आ़द के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि हमने उन पर नामुबारक आँधी भेजी। (41) जिस चीज़ पर गुज़रती थी (यानी उन चीज़ों में से कि जिनके हलाक करने का हुक्म था) उसको ऐसा कर छोड़ती थी जैसे कोई चीज़ गलकर रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। (42) और समूद के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि उनसे कहा गया, और थोड़े दिनों चैन-सुकून ले लो। (43) सो (इस डराने पर भी) उन लोगों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, सो उनको अ़ज़ाब ने आ पकड़ा और वे (उस अ़ज़ाब के आसार को) देख रहे

Maktab E Ashraf

थे। (44) सो न तो खड़े ही हो सके और न (हमसे) बदला ले सके। (45) और उनसे पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम का यही हाल हो चुका था। (यानी इस सबब से कि) वे बड़े नाफ़रमान लोग थे। (46)	مُنْتَصِرِيْنَ ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ ع

Maktab E Ashraf

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न

इरशाद होता है कि जिस तरह क़ौमे लूत के अन्जाम को देखकर लोग इबरत हासिल कर सकते हैं इसी क़िस्म का फ़िरऔ़नियों का वाक़िआ़ है। हमने उनकी तरफ़ अपने कलीम पैग़म्बर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को रोशन दलीलें और स्पष्ट हुज्जतें देकर भेजा, लेकिन उनके सरदार फ़िरऔ़न ने जो तकब्बुर का पुतला था, हक़ के मानने से इनकार किया और हमारे हुक्म को लापरवाही से टाल दिया। उस दुश्मने ख़ुदा ने अपनी ताक़त व क़ुव्वत के घमण्ड पर, अपने लश्कर के बल-बूते पर रब के फ़रमान की इज़्ज़त न की और फ़िरऔ़नियों को अपने साथ मिलाकर हज़रत मूसा को सताने और तकलीफ़ देने पर उतर आया। कहने लगा कि मूसा या तो जादूगार है या दीवाना है। पस उस काफ़िर फ़ाजिर और घमंडी शख़्स को हमने उसके लश्कर समेत दरिया में ग़र्क़ कर दिया। इसी तरह क़ौमे आ़द वालों के पूरी तरह इब्रतनाक वाक़िआ़त भी तुम्हें सुनाये जा चुके हैं, जिनके बुरे आमाल के वबाल में उन पर बेबरकत (मन्हूस) हवायें भेजी गयीं, जिन हवाओं ने सबके हुलिये बिगाड़ दिये, एक लपेट जिस चीज़ को लग गयी वह गली सड़ी हड्डी की तरह हो गयी। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हवा दूसरी ज़मीन में क़ैद है, जब अल्लाह तआ़ला ने आ़द वालों को हलाक करना चाहा तो हवा के दारोग़ा को हुक्म दिया कि उनकी तबाही के लिये हवायें चला दो। फ़रिश्ते ने कहा क्या हवाओं के ख़ज़ाने में इतना रोज़न (सुराख़) कर दूँ जितना बैल का नथुना होता है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया नहीं! अगर इतना रोज़न कर दिया तो ज़मीन और उसकी तमाम कायनात को उलट देगी, बल्कि इतना रोज़न (सुराख़) करो जितना अंगूठी का छल्ला होता है। ये थीं वे हवायें कि जहाँ-जहाँ से गुज़र गयीं तमाम चीज़ों को तबाह व बरबाद करती चली गयीं। इस हदीस का फ़रमाने रसूल होना तो मुन्कर है, समझ से ज़्यादा क़रीब बात यही है कि यह हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है। यरमूक की लड़ाई में उन्हें दो बोरे अहले किताब की किताबों के मिले थे, मुम्किन है उन्हीं में से यह बात आपने बयान फ़रमाई हो। वल्लाहु आलम

ये हवायें दक्षिणी थीं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरी मदद पुरवा हवाओं से की गयी है, और क़ौमे आ़द वाले पछवा हवाओं से हलाक हुए हैं। ठीक इसी तरह क़ौमे समूद वालों के हालात और उनके अन्जाम पर ग़ौर करो कि उनसे कह दिया गया कि एक निर्धारित वक़्त तक तो तुम फ़ायदा उठाओ। जैसे एक और जगह फ़रमाया है कि समूदियों को हमने हिदायत दी, लेकिन उन्होंने हिदायत पर गुमराही को पसन्द किया जिसके सबब ज़िल्लत के अ़ज़ाब की हौलनाक चीख़ ने उनको हलाक कर दिया और उनके कलेजे फाड़ दिये। यह सिर्फ़ उनकी सरकशी, नाफ़रमानी, हक़ से मुँह मोड़ने और बुरे आमाल का बदला था, उन पर उनके देखते हुए अ़ज़ाबे इलाही आ गया। तीन दिन तक तो ये इन्तिज़ार में रहे, अ़ज़ाब के आसार देखते रहे, आख़िर चौथे दिन सुबह ही सुबह रब का अ़ज़ाब अचानक आ पड़ा, घबराहट से होश खो बैठे, कोई तदबीर

न बन पड़ी, इतनी भी मोहलत न मिली कि खड़े होकर भागने की कोशिश तो करते या किसी और तरह अपने बचाव की कुछ तो फ़िक्र कर सकते। इसी तरह उनसे पहले क़ौमे नूह भी हमारे अ़ज़ाब चख चुकी है, अपनी बदकारी और खुली नाफ़रमानी का ख़मियाज़ा वह भी भुगत चुकी है। ये तमाम तफ़सीली वाक़िआ़त फ़िरऔ़नियों के, आ़दियों के, समूदियों के और क़ौमे नूह के इससे पहले कई सूरतों की तफ़सीर में कई बार बयान हो चुके हैं। वल्लाहु तआ़ला आलम।

Maktabah Ashraf

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰـهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ٥
وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰـهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ٥
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ٥ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ٥ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ
اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ٥

और हमने आसमानों को (अपनी) क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं। (47) और हमने ज़मीन को फ़र्श (के तौर पर) बनाया, सो हम (कैसे) अच्छे बिछाने वाले हैं। (48) और हमने हर चीज़ को दो-दो क़िस्म बनाया, ताकि तुम (उन बनाई हुई चीज़ों से तौहीद को) समझो। (49) तो तुम अल्लाह ही की (तौहीद की) तरफ़ दौड़ो, मैं तुम्हारे (समझाने के) वास्ते अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से खुला डराने वाला (होकर आया) हूँ। (50) और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद मत क़रार दो। मैं तुम्हारे वास्ते अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से खुला डराने वाला हूँ। (51)

ज़मीन व आसमान की पैदाईश

ज़मीन व आसमान की पैदाईश का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि हमने आसमान को अपनी क़ुव्वत से पैदा किया है। इसे महफ़ूज़ (सुरक्षित) और बुलन्द छत बना दिया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. मुजाहिद रह., क़तादा रह., सुफ़ियान सौरी रह., और भी बहुत से मुफ़स्सिरीन ने यही कहा है कि हमने आसमानों को अपनी क़ुव्वत से बनाया है, और हम कुशादगी वाले हैं। उसके किनारे हमने कुशादा (खुले और फैले हुए) किये हैं और बिना सुतून के उसे खड़ा कर दिया और क़ायम रखा है।

ज़मीन को हमने अपनी मख़्लूक़ात के लिये बिछौना बना दिया है, और बहुत ही अच्छा बिछौना है। तमाम मख़्लूक़ को हमने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है, जैसे आसमान व ज़मीन, दिन रात, सूरज चाँद, ख़ुश्की तरी, उजाला अन्धेरा, ईमान कुफ़्र, मौत ज़िन्दगी, बदी नेकी, जन्नत दोज़ख़, यहाँ तक कि हैवानात (जानवरों) और नबातात (पेड़-पौधों) के भी जोड़े हैं। यह इसलिये कि तुम्हें नसीहत हासिल हो, तुम जान लो कि इन सब का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) अल्लाह ही है, और उसका कोई शरीक नहीं, वह बेमिस्ल है। पस तुम उसकी तरफ़ दौड़ो, अपनी तवज्जोह का केन्द्र सिर्फ़ उसी को बनाओ, अपने सारे के सारे कामों में उसी की ज़ात पर भरोसा करो, मैं तो तुम सबको साफ़-साफ़ आगाह कर देने वाला हूँ। ख़बरदार! ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना, मेरे खुल्लम-खुल्ला ख़ौफ़ दिलाने का लिहाज़ रखना।

Maktab E Ashraf

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ
رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْمَجْنُوْنٌ ۝
اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝ وَّذَكِّرْ
فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا
خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝
مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ
يُّطْعِمُوْنِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ
الْمَتِيْنُ ۝ فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ
ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ۝
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ
يُوْعَدُوْنَ ۝ ع ٣ ١٤ ٢

इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं, उनके पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने जादूगर या मजनूँ न कहा हो। (52) क्या इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते चले आते हैं? बल्कि (इस एक ही बात पर जमा होने की वजह यह हुई कि) ये सब के सब सरकश लोग हैं। (53) सो आप उनकी तरफ़ तवज्जोह न कीजिए क्योंकि आप पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं। (54) और समझाते रहिए कि समझाना ईमान (लाने) वालों को (भी) नफ़ा देगा। (55) और मैंने जिन्न और इनसान को इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें। (56) मैं उनसे (मख़्लूक़ को) रिज़्क़ पहुँचाने की दरख़्वास्त नहीं करता। और न यह दरख़्वास्त करता हूँ कि वे मुझ को खिलाया करें। (57) अल्लाह ख़ुद ही सबको रिज़्क़ पहुँचाने वाला, ताक़त वाला, निहायत क़ुव्वत वाला है। (58) तो उन ज़ालिमों के लिए (अल्लाह के इल्म में सज़ा की) भी बारी मुक़र्रर है, जैसे (पहले गुज़र चुके) उन्हीं जैसे तरीक़े वाले लोगों की बारी (मुक़र्रर) थी, सो मुझसे (अ़ज़ाब) जल्दी तलब न करें। (59) ग़र्ज़ कि उन काफ़िरों के लिए उस दिन के आने से बड़ी ख़राबी होगी जिसका उनसे वायदा किया जाता है। (60)

जिन्नात और इनसानों की पैदाईश का मक़सद

अल्लाह तआ़ला अपने नबी अ़लैहिस्सलाम को तसल्ली देते हुए फ़रमाते हैं कि ये काफ़िर जो आपको कहते हैं वह कोई नई बात नहीं, इनसे पहले काफ़िरों ने भी अपने-अपने ज़माने के रसूलों से यही कहा है। काफ़िरों का यह क़ौल सिलसिला-ब-सिलसिला यूँ ही चला आया है, जैसे आपस में एक दूसरे को वसीयत करके जाते हों। सच तो यह है कि सरकशी और नाफ़रमानी में ये बराबर हैं। इसलिये जो बात पहलों के मुँह से निकली वही इनकी ज़बान से निकलती है, क्योंकि सख़्त-दिली में सब एक से हैं, पस आप इनकी तरफ़ से निगाह फेर लीजिए। ये मजनूँ कहें, जादूगर कहें आप सब्र व संयम से सुन लें, हाँ नसीहत की तब्लीग़ न छोड़िये, ख़ुदा की बातें पहुँचाते चले जाईये, जिनके दिलों में ईमान की क़बूलियत का माद्दा है वे एक न एक दिन सही राह पर लग जायेंगे।

Muftab E Ashraf

फिर अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि मैंने इनसानों और जिन्नात को किसी अपनी ज़रूरत के लिये नहीं पैदा किया, बल्कि सिर्फ़ इसलिये कि मैं उन्हें उनके नफ़े के लिये अपनी इबादत का हुक्म दूँ। वे दिल की रज़ामन्दी या नागवारी के साथ मेरे सच्चा माबूद होने का इक़रार करें, मुझे पहचानें। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि बाज़ इबादतें नफ़ा देती हैं और बाज़ इबादतें बिल्कुल नफ़ा नहीं पहुँचाती हैं। क़ुरआन में एक जगह है कि अगर तुम इन काफ़िरों से पूछो कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो ये जवाब देंगे कि अल्लाह तआ़ला ने, तो गोया यह भी इबादत है, मगर मुश्रिकों को काम न आयेगी।

ग़र्ज़ कि आ़बिद (इबादत करने वाले) सब हैं चाहे इबादत उनके लिये लाभदायक हो या न हो। और हज़रत ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मुसलमान इनसान और मोमिन जिन्नात हैं। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- मुझे रसूलुल्लाह सल्ल. ने यूँ पढ़ाया है:

اِنِّیْ اَنَا الرَّزَّاقُ ذُوالْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ.

कि बेशक मैं ही सब को रिज़्क़ पहुँचाने वाला हूँ, क़ुव्वत वाला हूँ और ताक़त वाला हूँ।

यह हदीस अबू दाऊद व तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बताते हैं। ग़र्ज़ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को इबादत के लिये पैदा किया है। अब जो उसकी इबादत इख़्लास के साथ बजा लायेगा किसी को उसका शरीक न करेगा तो वह मोमिन है, और अगर उसके साथ किसी और को शरीक करेगा तो वह बहुत बुरी और सख़्त सज़ायें भुगतेगा। अल्लाह किसी का मोहताज नहीं, बल्कि तमाम मख़्लूक़ हर हाल और हर वक़्त में उसकी पूरी मोहताज है, बल्कि बिल्कुल मजबूर, मोहताज और सरासर फ़क़ीर है। ख़ालिक़, राज़िक़ सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही है।

मुस्नद अहमद में हदीसे क़ुदसी है कि ऐ आदम के बेटे! मेरी इबादत के लिये फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना मालदारी और बेनियाज़ी (दूसरों से बेपरवाही) से भर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी रोक दूँगा। और अगर तूने ऐसा न किया तो मैं तेरे सीने को दुनियावी धंधों की मशग़ूलियत से भर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी को हरगिज़ बन्द न करूँगा। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी यह हदीस शरीफ़ है। इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन ग़रीब कहते हैं। ख़ालिद के दोनों लड़के हज़रत हब्बा और हज़रत सवा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उस वक़्त आप किसी काम में मशग़ूल थे या ग़ालिबन कोई दीवार तामीर फ़रमा रहे थे, या किसी चीज़ को दुरुस्त कर रहे थे। हम भी उसी काम में लग गये। जब काम ख़त्म हुआ तो आपने हमें दुआ़ दी और फ़रमाया- सर हिल जाने तक रोज़ी से मायूस न होना। देखो इनसान जब पैदा होता है तो एक सुर्ख़ बोटी होता है, बदन पर एक छिलका भी नहीं होता, फिर अल्लाह तआ़ला उसे सब कुछ देता है। (मुस्नद अहमद) बाज़ आसमानी किताबों में है कि ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझे अपनी इबादत के लिये पैदा किया है, पस तू इससे ग़फ़लत न कर, तेरे रिज़्क़ का मैं ज़ामिन (ज़िम्मेदार) हूँ। तू उसमें बेजा तकलीफ़ न कर, मुझे ढूँढ ताकि मुझे पा ले। जब तूने मुझे पा लिया तो यक़ीन जान कि तूने सब कुछ पा लिया, और अगर मैं तुझे न मिला तो समझ ले कि तमाम भलाईयाँ तू खो चुका। सुन तमाम चीज़ों से ज़्यादा मुहब्बत तेरे दिल में मेरी होनी चाहिये।

फिर फ़रमाता है कि ये काफ़िर मेरे अ़ज़ाब को जल्दी क्यों माँग रहे हैं? वह अ़ज़ाब तो इन्हें अपने वक़्त पर पहुँच कर ही रहेंगे, जैसे इनसे पहले काफ़िरों को पहुँचे। क़ियामत के दिन, जिस दिन का इनसे वायदा है, उस दिन इनके लिये बड़ी ख़राबी होगी।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि सूरः ज़ारियात की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः तूर

सूरः तूर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 49 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः तूर मक्किया

हज़रत जुबैर बिन मुतअ़िम रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्ल. को मग़रिब की नमाज़ में सूरः वत्तूर पढ़ते हुए सुना है। आपसे ज़्यादा अच्छी आवाज़ वाला और आप से ज़्याद अच्छी क़िराअत वाला मैंने तो किसी को नहीं सुना। (मुवत्ता इमाम मालिक)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं हज के ज़माने में बीमार थी, हुज़ूर सल्ल. से मैंने अपना हाल कहा तो आपने फ़रमाया तुम सवारी पर सवार होकर लोगों के पीछे-पीछे तवाफ़ कर लो, चुनाँचे मैंने सवारी पर बैठकर तवाफ़ किया, उस वक़्त हुज़ूरे पाक सल्ल. बैतुल्लाह के एक कोने में नमाज़ पढ़ रहे थे और "वत्तूरि व किताबिम् मस्तूरि" (यानी सूरः तूर) की तिलावत फ़रमा रहे थे। (बुख़ारी)

और क़सम है तूर (पहाड़) की (1) और उस किताब की जो लिखी है (2) खुले हुए काग़ज़ में (3) और (क़सम है) बैतुल-मअ़मूर की। (4) और (क़सम है) ऊँची छत की, (मुराद आसमान है)। (5) और (क़सम है) नमकीले पानी के दरिया की, जो (पानी से) भरा हुआ है। (6) कि बेशक आपके रब का अ़ज़ाब ज़रूर होकर रहेगा। (7) कोई उसको टाल नहीं सकता। (8) (और यह उस दिन ज़ाहिर होगा) जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा। (9) और पहाड़ (अपनी जगह से) हट जाएँगे। (10) तो जो लोग झुठलाने वाले हैं (और) जो (झूठ के) मश्ग़ले में बेहूदगी के साथ लग रहे हैं (11) उनकी उस दिन कमबख़्ती आएगी। (12) जिस दिन कि उनको दोज़ख़ की आग की तरफ़ धक्के देकर लाएँगे। (13) यह वही दोज़ख़ है जिसको तुम झुठलाया करते थे (14) तो क्या यह (भी)	وَالطُّوْرِ○ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ○ فِىْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ○ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ○ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ○ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ○ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ○ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ○ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا○ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا○ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ○ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ○ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا○ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِىْ كُنْتُمْ بِهَا

Maktab E Ashraf

जादू है (देखकर बतलाओ)? या यह कि तुमको (अब भी) नज़र नहीं आता। (15) उसमें दाख़िल हो, फिर चाहे (उसकी) सहार करना या सहार न करना, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं। जैसा तुम करते थे वैसा ही बदला तुमको दिया जाएगा। (16)	تُكَذِّبُوْنَ ○ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ○ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْلَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○

बेशक वह दिन आने वाला है

अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में से उन चीज़ों की क़सम खाकर जो उसकी अ़ज़ीमुश्शान क़ुदरत की निशानियाँ हैं, फ़रमाता है कि उसका अ़ज़ाब होकर ही रहेगा। जब वह आयेगा, किसी की मजाल न होगी कि उसे हटा सके। तूर उस पहाड़ को कहते हैं जिस पर दरख़्त (पेड़) हों, जैसे वह पहाड़ जिस पर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा से कलाम किया था, और जहाँ हज़रत ईसा को भेजा था, और जो ख़ुश्क पहाड़ हो उसे "जबल" कहा जाता है, तूर नहीं कहा जाता। 'किताबे मस्तूर' से मुराद या तो लौहे-महफ़ूज़ है या ख़ुदा की उतारी हुई लिखी हुई किताबें हैं, जो इनसानों के लिये नाज़िल की जाती हैं। इसी लिये साथ ही फ़रमा दिया कि खुले हुए पन्नों में। 'बैतुल-मामूर' के बारे में मेराज वाली हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- सातवें आसमान से आगे बढ़ने के बाद मुझे बैतुल-मामूर दिखलाया गया, उसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इबादते ख़ुदा के लिये जाते हैं, दूसरे दिन इतने ही और, लेकिन जो आज गये उनकी बारी फिर क़ियामत तक नहीं आती। जिस तरह ज़मीन पर काबा शरीफ़ का तवाफ़ होता है इसी तरह आसमानों के तवाफ़ की और इबादत की जगह वह है। इसी हदीस में है कि आपने उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को देखा कि बैतुल-मामूर से कमर लगाये बैठे हैं। इसमें एक बारीक नुक्ता यह है कि चूँकि हज़रत इब्राहीम बैतुल्लाह शरीफ़ के बानी (तामीर करने वाले) थे, जिनके हाथों ज़मीन में अल्लाह का घर काबा बना था, तो उन्हें वहाँ भी उस काबे से लगे हुए आपने देखा, तो गोया इस अ़मल की जज़ा (बदला) इसी जैसी परवर्दिगार ने अपने ख़लील को दी। यह बैतुल-मामूर ठीक ख़ाना काबा के ऊपर है सातवें आसमान पर। यूँ तो हर आसमान में एक ऐसा घर है जहाँ उस आसमान के फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की इबादत करते हैं, पहले आसमान पर जो ऐसी जगह है उसका नाम बैतुल-इज़्ज़त है। वल्लाहु आलम

इब्ने अबी हातिम में हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- आसमान में एक घर है जिसे मामूर कहते हैं, जो काबा की दिशा में है। चौथे आसमान में एक नहर है जिसका नाम नहरे हैवान है, हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हर रोज़ उसमें ग़ोता लगाते हैं और निकल कर बदन झाड़ते हैं, जिनसे सत्तर हज़ार क़तरे झड़ते हैं। एक एक क़तरे से अल्लाह तआ़ला एक एक फ़रिश्ता पैदा करता है, जिन्हें हुक्म होता है कि वे बैतुल-मामूर में जायें और नमाज़ अदा करें। फिर वे वहाँ से निकल आते हैं, अब उन्हें दोबारा जाने की नौबत नहीं आती। उनका एक सरदार होता है जिसे हुक्म दिया जाता है कि उन्हें लेकर किसी जगह खड़ा हो जाये, फिर वे अल्लाह की तस्बीह के बयान में लग जाते हैं, क़ियामत तक उनका यही शग़ल रहता है। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है, इसके रावी रूह बिन सबाह इसमें मुन्फ़रिद (अकेले) हैं। हदीस के उलेमा की एक

जमाअ़त ने उन पर इस हदीस का इनकार किया है, जैसे जोज़जानी, उक़ैली, हाकिम वग़ैरह। इमाम हाकिम अबू अ़ब्दुल्लाह नेशापूरी इसे बिल्कुल बेअसल बतलाते हैं।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से एक शख़्स ने पूछा कि बैतुल-मामूर क्या है? आपने फ़रमाया वह आसमान में है, उसे "अज़्ज़ुराह" कहा जाता है। काबा के ठीक ऊपर है, जिस तरह ज़मीन का काबा इज़्ज़त की जगह है इसी तरह वह आसमानों में इज़्ज़त व सम्मान वाला है। हर रोज़ उसमें सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ अदा करते हैं, लेकिन जो आज गये थे उनकी बारी क़ियामत तक दोबारा नहीं आती। क्योंकि फ़रिश्तों की तायदाद ही इस क़द्र है। एक रिवायत में है कि यह पूछने वाली इब्ने-कव्वा थे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि यह अ़र्श के बराबर में है.......। एक मरफ़ूअ़ रिवायत में है कि सहाबा को एक दिन हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- बैतुल-मामूर को जानते हो? उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल जानते हैं। फ़रमाया वह आसमानी काबा है, और ज़मीनी काबे के बिल्कुल ऊपर है, ऐसा कि अगर वह गिरे तो इसी पर गिरे। उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ अदा करते हैं, जिनकी बारी क़ियामत तक फिर नहीं आती। हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ते इब्लीस के क़बीले के में से हैं। वल्लाहु आलम।

'ऊँची छत' से मुराद आसमान है। जैसे कि एक और जगह है:

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا.

और बनाया हमने आसमान को एक महफ़ूज़ छत।

रबीअ़ बिन अनस रज़ि. फ़रमाते हैं- मुराद इससे अ़र्श है, इसलिये कि वह तमाम मख़्लूक़ की छत है। इस क़ौल की तौजीह इस तरह हो सकती है कि मुराद आ़म हो।

"बहरे मस्जूर" (नमकीले दरिया) से मुराद वह पानी है जो अ़र्श के नीचे है। जो बारिश की तरह बरसेगा। जिससे क़ियामत के दिन मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से जी उठेंगे। जमहूर कहते हैं कि यही आ़म दरिया मुराद हैं, इन्हें जो मसजूर कहा गया है, यह इसलिये कि क़ियामत के दिन इनमें आग लगा दी जायेगी। जैसे एक दूसरी जगह है:

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ.

जबकि दरिया भड़का दिये जायें और उनमें आग लग जाये जो फैलकर तमाम मेहशर वालों को घेर ले।

हज़रत अ़ला बिन बदर कहते हैं कि भड़कता हुआ दरिया इसलिये कहा गया कि न उसका पानी पीने के काम आये और न खेती को दिया जाये। यही हाल क़ियामत के दिन दरियाओं का होगा। यह मायने भी किये गये हैं कि दरिया बहता हुआ, और यह भी कहा गया है कि दरिया भरा हुआ, इधर उधर जारी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि "मसजूर" से मुराद फ़ारिग़ यानी ख़ाली है। कोई बाँदी पानी लेने को जाये फिर लौटकर कहे कि हौज़ मसजूर है, जिससे मुराद यही है कि ख़ाली है। यह भी कहा गया है कि मायने यह हैं कि उसे ज़मीन से रोक दिया गया है इससे कि डुबो दे। मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हर रात तीन मर्तबा अल्लाह से इजाज़त तलब करता है कि अगर हुक्म हो तो तमाम लोगों को डुबो दूँ लेकिन अल्लाह तआ़ला उसे रोक देता है।

एक दूसरी रिवायत में है कि एक बुज़ुर्ग मुजाहिद जो समन्दर की सरहद के लश्करों में थे, वह जिहाद की तैयारी में वहीं रहते थे, फ़रमाते हैं कि एक रात मैं चौकीदारी के लिये निकला, उस रात कोई और पहरे

Maktab E Ashraf

पर न था। मैं गश्त करता हुआ मैदान में पहुँचा और वहाँ से समन्दर पर नज़र डाली तो ऐसा मालूम हुआ गोया समन्दर पहाड़ की चोटियों से टकरा रहा है। बार-बार यही नज़ारा मैंने देखा। मैंने हज़रत अबू सालेह से यह वाक़िआ बयान किया, उन्होंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की रिवायत से ऊपर वाली हदीस मुझे सुनाई, लेकिन इसकी सनद में एक रावी मुब्हम (अस्पष्ट) है, जिसका नाम नहीं लिया गया।

इन क़समों के बाद अब जिस चीज़ पर क़सम खाई गयी थी उसका बयान हो रहा है कि काफ़िरों को जो अ़ज़ाबे ख़ुदा होने वाला है वह यक़ीनी तौर पर आने वाला है। जब वह आयेगा किसी के बस में उसका रोकना न होगा। इब्ने अबिद्दुन्या में है कि एक रात हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. शहर की देखभाल के लिये निकले तो एक मकान से किसी मुसलमान की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ कान में पड़ी, वह सूरः तूर पढ़ रहे थे। आपने सवारी रोक ली और खड़े होकर क़ुरआन सुनने लगे। जब वह इस आयत पर पहुँचे तो ज़बान से निकल गया कि रब्बे काबा की क़सम सच्ची है। फिर अपने गधे से उतर पड़े और दीवार से टेक लगाकर बैठ गये, चलने फिरने की ताक़त न रही, देर तक बैठे रहने के बाद जब होश व हवास ठिकाने आये तो अपने घर पहुँचे, लेकिन ख़ुदा के कलाम की इस पुर असर आयत से रिक्क़त व गिरया (रोने) की यह हालत थी कि महीने भर तक बीमार पड़े रहे और ऐसे कि लोग बीमारी का हाल पूछने आते थे। अगरचे किसी को मालूम न था कि बीमारी क्या है। अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो।

एक रिवायत में है कि आपकी तिलावत में एक मर्तबा यह आयत आयी, उसी वक़्त हिचकी बंध गयी और इस क़द्र दिल पर असर पड़ा कि बीमार हो गये। चुनाँचे बीस दिन तक आपकी बीमार पुर्सी की जाती रही। उस दिन आसमान थरथरायेगा, फट जायेगा, चक्कर खाने लगेगा, पहाड़ अपनी जगह से हिल जायेंगे, हट जायेंगे, इधर के उधर हो जायेंगे, काँप-काँप कर टुकड़े-टुकड़े होकर फिर रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे, आख़िर रूई के गालों की तरह इधर-उधर उड़ जायेंगे और बेनाम व निशान हो जायेंगे। उस दिन उन लोगों पर जो उस दिन को न मानते थे बरबादी व हसरत, ख़राबी व हलाकत होगी। ख़ुदा का अ़ज़ाब, फ़रिश्तों की मार, जहन्नम की आग उनके लिये होगी। जो दुनिया में मशग़ूल थे और दीन को एक खेल-तमाशा बना रखा था उस दिन उन्हें धक्के दे-देकर जहन्नम की आग की तरफ़ धकेला जायेगा और जहन्नम के दारोग़ा उनसे कहेंगे कि यह वह जहन्नम है जिसे तुम नहीं मानते थे। फिर और ज़्यादा डाँट-डपट के तौर पर कहेंगे अब बोलो क्या यह जादू है या तुम अन्धे हो? जाओ इसमें डूब जाओ, यह तुम्हें हर तरफ़ से घेरेगी। अब इसके अ़ज़ाब की तुम्हें ताक़त हो या न हो। हाय-वाय करो, चाहे ख़ामोश रहो, इसी में पड़े झुलसते रहोगे, कोई तरकीब फ़ायदा न देगी, किसी तरह छूट न सकोगे। यह ख़ुदा का ज़ुल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे बुरे आमाल का बदला है।

बेशक मुत्तक़ी लोग (जन्नत के) बाग़ों और ऐश के सामान में होंगे। (17) (और) उनको जो चीज़ें उनके परवर्दिगार ने दी होंगी उनसे दिल से ख़ुश होंगे, और उनका परवर्दिगार उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। (18) ख़ूब खाओ और पियो मज़े के साथ, अपने आमाल के बदले	اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّنَعِیْمٍ ۝ فٰكِهِیْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓـًٔۢا بِمَا

में। (19) तकिया लगाए हुए तख़्तों पर जो बराबर-बराबर बिछाए हुए हैं, और हम उनका गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वालियों (यानी हूरों) से विवाह कर देंगे। (20)	كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝

Mahtab E Ashraf

जन्नत और ऐश के सामान

अल्लाह तआ़ला नेकबख़्तों का अन्जाम बयान फ़रमा रहा है कि अ़ज़ाब व सज़ा से जो महफ़ूज़ करके जन्नतों में पहुँचा दिये गये, जहाँ की बेहतरीन नेमतों से फ़ायदा उठा रहे हैं, और हर तरह ख़ुशहाल व ख़ुशदिल हैं, तरह-तरह की खाने-पीने की चीज़ें, बेहतरीन लिबास, उम्दा सवारियाँ, बुलन्द व ऊँचे मकानात और हर तरह की नेमतें उन्हें मुहैया हैं। किसी तरह का डर ख़ौफ़ नहीं। ख़ुदा तआ़ला फ़रमा चुका है कि तुम्हें मेरे अ़ज़ाब से निजात मिल गयी। ग़र्ज़ कि दुख से दूर, सुख से मसरूर, राहत व लज़्ज़त में मस्त हैं, जो चीज़ सामने आती है वह ऐसी है जिसे न किसी आँख ने देखा हो न किसी कान ने सुना हो, न किसी दिल पर ख़्याल तक गुज़रा हो। फिर ख़ुदा की तरफ़ से बार-बार मेहमान नवाज़ी के तौर पर उनसे कहा जाता है कि खाते पीते रहो, ख़ुशगवार अच्छे ज़ायक़े वाली है, तकल्लुफ़ मज़ेदार मरग़ूब चीज़ें तुम्हारे लिये मुहैया हैं। फिर उनका दिल ख़ुश करने, हौसला बढ़ाने और तबीयत में उमंग पैदा करने के लिये साथ ही ऐलान होता है कि यह तो तुम्हारे आमाल का बदला है, जो तुम उस जहान में कर आये हो। सजे हुए और जड़ाऊ शाहाना तख़्त पर बड़ी बेफ़िक्री और इत्मीनान से तकिये लगाये बैठे होंगे। सत्तर-सत्तर साल गुज़र जायेंगे उन्हें ज़रूरत न होगी कि उठें या हिलें-जुलें। सलीक़े और अदब वाले बेशुमार ख़ादिम हर तरह की ख़िदमत के लिये तैयार, जिस चीज़ को जी चाहे आन की आन में मौजूद हो, आँखों का नूर दिल का सुरूर सब कुछ मौजूद, सामने ख़ुबसूरत ख़ूबसीरत गोरी-गोरी पिंडली वाली बड़ी-बड़ी रसीली आँखों वाली बहुत सी हूरें, पाक दिल, आबरू वाली, पाकबाज़, दिल बहलाने और ख़्वाहिश पूरी करने के लिये सामने खड़ी, हर हर नेमत व रहमत हर तरफ़ बिखरी हुई, फिर भला उन्हें किस चीज़ की कमी। सत्तर साल के बाद जब दूसरी जानिब माईल होते हैं तो देखते हैं कि वहाँ और ही मन्ज़र है, हर चीज़ नई है, हर नेमत पर शबाब है। इस तरफ़ की हूरों पर नज़र डालते हैं तो उनके नूर की चकाचौंद हैरत में डाल देती है, उनकी प्यारी-प्यारी भोली भाली शक्लें अछूतेपन और कुंवारपने की शर्मीली नज़रें और जवानी का बाँकपन दिल पर मक़नातीस की तरह असर डालता है। जन्नती उनसे कुछ कहें इससे पहले ही वह अपने मीठे कलाम से अ़जीब अन्दाज़ से कहती है- शुक्र है कि आपकी तवज्जोह हमारी तरफ़ भी हुई। ग़र्ज़ कि इसी तरह मनमानी नेमतों में मस्त हो रहे हैं।

फिर उन जन्नतियों के तख़्त बावजूद क़तार वार होने के इस तरह न होंगे कि किसी की तरफ़ किसी की पीठ हो, बल्कि आमने सामने होंगे। जैसे एक दूसरी जगह है:

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ.

तख़्तों पर होंगे और एक दूसरे के आमने सामने होंगे।

फिर फ़रमाता है कि हमने निकाह में हूरें दे रखी हैं जो कभी दिल मैला न करें, जब आँख पड़े जी ख़ुश हो जाये। ज़ाहिरी ख़ूबसूरती की तो किसी से तारीफ़ ही क्या हो सकती है, उनके औसाफ़ (ख़ूबी और गुणों) के बयान की हदीसें वग़ैरह कई मक़ामात पर गुज़र भी चुकी हैं, इसलिये उन्हें यहाँ फिर बयान करने की कुछ

Maktab E Ashraf

ज़रूरत नहीं।

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया, हम उनकी औलाद को भी (दर्जे में) उनके साथ शामिल कर देंगे, और उनके अ़मल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे। हर शख़्स अपने (कुफ़्रिया) आमाल में (दोज़ख़ में) क़ैद रहेगा। (21) और हम उनको मेवे और गोश्त जिस क़िस्म का उनको पसन्द हो दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाला देते रहेंगे। (22) (और) वहाँ आपस में (दिल्लगी के तौर पर) शराब के जाम में छीना-झपटी भी करेंगे, उसमें न बक-बक लगेगी (क्योंकि नशा न होगा) और न कोई बेहूदा बात होगी। (23) और उनके पास ऐसे लड़के आएँगे जो ख़ास उन्हीं के लिए होंगे, गोया कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं। (24) और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। (25) यह भी कहेंगे कि (भाई) हम तो इससे पहले अपने घर (यानी दुनिया में अपने अन्जाम से) बहुत डरा करते थे। (26) सो ख़ुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया और हम को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया। (27) हम इससे पहले (यानी दुनिया में) उससे दुआएँ माँगा करते थे, वाक़ई वह बड़ा एहसान करने वाला, मेहरबान है। (28)	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ○ وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ○ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ○ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ○ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ○ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ○ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ○ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ○ ع

ईमान की बरकतें

अल्लाह तआ़ला जल्ल शानुहू अपने फ़ज़्ल व करम और लुत्फ़ व रहम, अपने एहसान और इनाम का बयान फ़रमाता है कि जिन मोमिनों की औलाद भी ईमान में अपने बाप-दादों की राह पर लग जायेंगी लेकिन नेक आमाल में अपने बड़ों से कम हों, परवर्दिगार उनके नेक आमाल का बदला बढ़ा-चढ़ाकर उन्हें उनके बड़ों के दर्जे में पहुँचा देगा, ताकि बड़ों की आँखें छोटों को अपने पास देखकर ठंडी रहें और छोटे भी अपने बड़ों के पास ख़ुश व मुत्मईन रहें। उनके अ़मलों की बढ़ोतरी उनके बुज़ुर्गों के आमाल की कमी से न की जायेगी बल्कि मोहसिन व मेहरबान ख़ुदा उन्हें अपने मामूर ख़ज़ानों में से अ़ता फ़रमायेगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं, एक मरफ़ूअ़ हदीस भी इस मज़मून की मौजूद है।

एक और रिवायत में है कि जब जन्नती शख़्स जन्नत में जायेगा और अपने माँ-बाप और बीवी-बच्चों को न पायेगा तो मालूम करेगा कि वे कहाँ हैं? जवाब मिलेगा कि वे तुम्हारे मर्तबे तक नहीं पहुँचे। यह कहेगा बारी तआ़ला मैंने अपने लिये और उनके लिये नेक आमाल किये थे। चुनाँचे हुक्म दिया जायेगा और उन्हें भी उनके दर्जे में पहुँचा दिया जायेगा। यह भी रिवायत है कि जन्नतियों की जिन औलाद ने ईमान कबूल किया और नेक काम किये वे तो उनके साथ मिला दिये जायेंगे, लेकिन उनके जो छोटे बच्चे इन्तिक़ाल कर गये थे वे भी उनके पास पहुँचा दिये जायेंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., इमाम शअ़बी, सईद बिन जुबैर, इब्राहीम, क़तादा, अबू सालेह, रबीअ़ इब्ने अनस, ज़ह्हाक बिन ज़ैद रह. भी यही कहते हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अपने दो बच्चों के बारे में मालूम किया जो जाहिलीयत के ज़माने (इस्लाम से पहले ज़माने) में मरे थे, तो आपने फ़रमाया वे दोनों जहन्नम में हैं। फिर जब उम्मुल-मोमिनीन को ग़मगीन देखा तो फ़रमाया अगर तुम उनकी जगह देख लेतीं तो तुम्हारे दिल में उनका बुग़ज़ (नफ़रत) पैदा हो जाता। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा या रसूलल्लाह! फिर मेरा वह बच्चा जो आप से हुआ कहाँ है? आपने फ़रमाया वह जन्नत में है। मोमिन मय अपनी औलाद के जन्नत में हैं और काफ़िर अपनी औलाद समेत जहन्नम में हैं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की। यह हुई माँ-बाप के नेक आमाल की वजह से औलाद की रियायत, अब औलाद की दुआ़-ए-ख़ैर की वजह से माँ-बाप की बुज़ुर्गी मुलाहिज़ा हो।

मुस्नद अहमद में हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में अचानक बढ़ाता है। वह मालूम करता है कि ख़ुदाया मेरा यह दर्जा कैसे बढ़ गया? अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि तेरी औलाद ने तेरे लिये इस्तिग़फ़ार किया, इस बिना पर मैंने तेरा दर्जा बढ़ा दिया। इस हदीस की सनद बिल्कुल सही है, अगरचे बुख़ारी व मुस्लिम में इन लफ़्ज़ों से नहीं आयी, लेकिन इसी जैसी एक रिवायत सही मुस्लिम में इस तरह मौजूद है कि इनसान के मरते ही उसके आमाल मौक़ूफ़ हो जाते हैं (यानी बन्द हो जाते हैं) लेकिन तीन अ़मल मरने के बाद भी सवाब पहुँचाते रहते हैं।

1. सदक़ा-ए-जारिया (जारी रहने वाला सदक़ा)।
2. इल्मे दीन, जिससे नफ़ा पहुँचता रहे।
3. नेक औलाद, जो मरने वाले के लिये दुआ़-ए-ख़ैर करती रहे, चूँकि यहाँ बयान हुआ था कि मोमिनों की औलाद के दर्जे बिना अ़मल के बढ़ा दिये गये, तो साथ ही साथ अपने इस फ़ज़्ल के बाद अपने अ़दल (इन्साफ़) का बयान फ़रमाता है, कि किसी को किसी के आमाल में पकड़ा न जायेगा, बल्कि हर शख़्स अपने-अपने अ़मल में रहन होगा। बाप का बोझ बेटे पर और बेटे का बाप पर न होगा। जैसे एक और जगह इरशाद है:

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ.

हर शख़्स अपने किये हुए कामों में गिरफ़्तार है, मगर वे जिनके दायें हाथ में नामा-ए-आमाल पहुँचे हैं वे जन्नतों में बैठे हुए गुनाहगारों से मालूम करते हैं।

फिर इरशाद होता है कि उन जन्नतियों को तरह-तरह के मेवे और तरह-तरह के गोश्त दिये जाते हैं। जिस चीज़ को जी चाहे, जिस पर दिल आये वह एक दम मौजूद हो जाती है। पाक शराब के छलकते हुए

Maktab E Ashraf

जाम एक दूसरों को पिला रहे हैं जिसके पीने से सुरूर और कैफ़, लुत्फ़ और बहार हासिल होती है, लेकिन बद-ज़बानी, बेहूदा बकवास नहीं होती, बेकार की गुफ़्तगू नहीं करते, बेहोश नहीं होते, सुरूर के साथ और पूरी ख़ुशी हासिल, बक-झक से दूर, गुनाह से ग़ाफ़िल, बातिल व झूठ से दूर, ग़ीबत व गुनाह से नफ़रत करने वाले। दुनिया में शराबियों की हालत देखी होगी कि उनके सर में चक्कर, पेट में दर्द, अ़क्ल ख़त्म, बकवास बहुत, बदबू, चेहरे बेरौनक़, इसी तरह शराब बुरी ज़ायके वाली और बदबूदार। यहाँ जन्नत की शराब इन तमाम गन्दगियों से कोसों दूर है। यह रंग में सफ़ेद, पीने में अच्छे ज़ायके वाली, न उसके पीने से हवास ख़त्म हों न बक-झक हो, न बहकें न भटकें, न सरदर्द हो, न और किसी तरह नुक़सान पहुँचाये। हंसी ख़ुशी उस पाक शराब के जाम पी-पिला रहे होंगे। उनके ग़ुलाम, कमउम्र, नौजवान बच्चे जो हुस्न व ख़ूबसूरती में ऐसे हैं जैसे मरवारीद (क़ीमती मोती) हों, और वे डिब्बे में बन्द रखे गये हों। किसी का हाथ भी न लगा हो और अभी-अभी ताज़े-ताज़े निकाले हों। उनकी आबदारी, सफ़ाई, चमक-दमक, रूप-रंग का क्या पूछना, लेकिन उन जन्नती ख़ादिमों के हसीन चेहरे उन्हें भी फीका कर देते हैं। एक और जगह यह मज़मून इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है:

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ........ الخ.

यानी हमेशा नौउम्र और कमसिन रहने वाले छोटे-छोटे बच्चे आबख़ोरे, सुराही और ऐसी साफ़ शराब के जाम जिनके पीने से न दर्देसर हो और न बहकें, और जिस क़िस्म का मेवा ये पसन्द करें और जिस परिन्दे का गोश्त ये चाहें उनके पास बार-बार लाने के लिये हर तरफ़ तैयार चल-फिर रहे हैं। इस शराब के दौर के वक़्त आपस में घुल-मिलकर तरह-तरह की बातें करेंगे, दुनिया के अहवाल याद आयेंगे कहेंगे कि हम दुनिया में जब अपने रिश्तेदारों से मिलते तो अपने रब के आज के दिन के अ़ज़ाब से सख़्त डरते थे। अल्हम्दु लिल्लाह रब ने हम पर ख़ास एहसान किया और हमारे ख़ौफ़ की चीज़ से हमें अमन दिया। हम उसी से दुआ़यें और इल्तिजायें करते रहे। उसने हमारी दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और हमारा सवाल पूरा कर दिया, यक़ीनन वह बहुत ही नेक सुलूक और रहम वाला है।

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जन्नती अपने दोस्तों से मिलना चाहेगा तो उधर उस दोस्त के दिल में भी यही ख़्वाहिश पैदा होगी, उसका तख़्त उड़ेगा और रास्ते में दोनों मिल जायेंगे। अपने अपने तख़्तों पर आराम से बैठे हुए बातें करने लगेंगे, दुनिया के ज़िक्र छेड़ेंगे और कहेंगे- फ़ुलाँ दिन फ़ुलाँ जगह हमने अपनी बख़्शिश की दुआ़ माँगी थी, अल्लाह ने उसे क़ुबूल फ़रमाया। इस हदीस की सनद कमज़ोर है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जब इस आयत की तिलावत की तो यह दुआ़ पढ़ी कि या अल्लाह तूने हम पर एहसान किया, हमें दोज़ख़ से बचाया, बेशक आप एहसान करने वाले और रहम करने वाले हैं।

हज़रत आमश हदीस के बयान करने वाले से पूछा गया कि इस आयत को पढ़कर यह दुआ़ हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने नमाज़ के अन्दर माँगी थी? जवाब दिया कि हाँ।

Maktab E Ashraf

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ۝ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝	तो आप समझाते रहिए क्योंकि आप अल्लाह के फ़ज़्ल से न तो काहिन हैं और न मजनूँ हैं (जैसा कि ये मुश्रिक लोग कहते हैं)। (29) हाँ ये लोग यूँ (भी) कहते हैं कि यह शायर हैं (और) हम उनके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे हैं। (30) आप फ़रमा दीजिए कि (ठीक है) तुम मुन्तज़िर रहो, सो मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ। (31) क्या उनकी अ़क़्लें उनको इन बातों की तालीम करती हैं? या यह है कि ये बुरे लोग हैं। (32) हाँ, क्या यह (भी) कहते हैं कि उन्होंने इस (क़ुरआन) को ख़ुद गढ़ लिया है, बल्कि ये लोग तस्दीक़ नहीं करते। (33) तो ये लोग इस तरह का कोई कलाम (बनाकर) ले आएँ अगर ये (इस दावे में) सच्चे हैं। (34)

तब्लीग़ और निरन्तर मेहनत व कोशिश

अल्लाह तआ़ला अपने नबी को हुक्म देता है कि आप अल्लाह के अहकाम अल्लाह के बन्दों तक पहुँचाते रहें, साथ ही बदकारों ने जो बोहतान आप पर बाँध रखे थे, उनसे आपकी सफ़ाई करता है। काहिन उसे कहते हैं जिसके पास कभी-कभी कोई ख़बर जिन्न पहुँचा देता है। तो इरशाद हुआ कि दीने ख़ुदा की तब्लीग़ कीजिए। अल्हम्दु लिल्लाह आप न तो जिन्नात वाले हैं, न जुनूँ वाले। फिर काफ़िरों का क़ौल नक़ल फ़रमाता है कि ये कहते हैं कि हुज़ूरे पाक एक शायर हैं, उन्हें कहने दो जो कह रहे हैं, उनके इन्तिक़ाल के बाद उनकी-सी कौन कहेगा? उनका यह दीन उनके साथ ही फ़ना हो जायेगा। फिर अपने नबी को उसका जवाब देने को फ़रमाता है कि अच्छा उधर तुम इन्तिज़ार करते रहो इधर मैं भी मुन्तज़िर हूँ। दुनिया देख लेगी कि अन्जाम कार ग़लबा और कामयाबी किसे हासिल होती है।

दारुन्नदवा में क़ुरैश का मश्विरा हुआ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भी दूसरे शायरों की तरह एक शायर हैं, उन्हें क़ैद कर लो, यहीं यह हलाक हो जायेंगे जिस तरह ज़ुहैर और नाबिग़ा शायरों का हश्र हुआ। इस पर ये आयतें उतरीं!

फिर फ़रमाता है- क्या उनकी दानाई (अ़क़्ल व समझ) उन्हें यही समझाती है कि बावजूद जानने के फिर भी तेरे बारे में ग़लत अफ़वाहें उड़ायें और बोहतान बाज़ी करें। हक़ीक़त यह है कि ये बड़े नाफ़रमान, गुमराह और दुश्मनी रखने वाले लोग हैं। दुश्मनी में आकर वाक़िआ़त से चश्म-पोशी करके आपको बिना वजह बुरा-भला कहते हैं, क्या यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को मुहम्मद ने ख़ुद अपने-आप बना लिया है? वास्तव में ऐसा तो नहीं, लेकिन उनका कुफ़्र उनके मुँह से यह ग़लत और झूठ बात निकलवा रहा है। अगर सच्चे हैं तो फिर ये ख़ुद भी मिल-जुलकर ही एक ऐसी बात बनाकर दिखा तो दें, ये काफ़िर क़ुरैश तो क्या

Maktab E Ashraf

अगर उनके साथ रू-ए-ज़मीन के जिन्नात व इनसान मिल जायें तब भी इस क़ुरआन की नज़ीर लाने में सब आ़जिज़ रहेंगे, और क़ुरआन तो बड़ी चीज़ है इस जैसी दस सूरतें बल्कि एक सूरत भी क़ियामत तक बनाकर नहीं ला सकते।

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ
الْخَالِقُونَ ۝ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمْ
خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ۝ أَمْ
لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ
مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ
وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم
مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ
فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ
إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ۝

(आगे तौहीद के मुताल्लिक़ गुफ़्तगू है कि) क्या ये लोग बग़ैर किसी पैदा करने वाले के ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा हो गए हैं, या ये ख़ुद अपने पैदा करने वाले हैं? (35) या उन्होंने आसमान और ज़मीन को पैदा किया है? बल्कि ये लोग (अपनी जहालत की वजह से तौहीद का) यक़ीन नहीं लाते। (36) क्या इन लोगों के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं, या ये लोग (इस नुबुव्वत के महकमे के) हाकिम हैं? (37) क्या उनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर (चढ़कर आसमान की) बातें सुन लिया करते हैं? तो उनमें से जो (वहाँ की) बातें सुन आता हो वह (इस दावे पर) कोई साफ़ दलील पेश करे। (38) क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे (तजवीज़ हों)? (39) क्या आप उनसे (अहकाम के पहुँचाने का) कुछ बदला माँगते हैं कि वह तावान उन लोगों को भारी मालूम होता है? (40) क्या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये लिख लिया करते हैं? (41) क्या ये लोग कुछ बुराई करने का इरादा रखते हैं? सो ये काफ़िर ख़ुद ही (उस) बुराई में गिरफ़्तार होंगे। (42) क्या उनका अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से पाक है। (43)

खुली और स्पष्ट दलील

अल्लाह की तौहीद और उसके रब होने का सुबूत दिया जा रहा है। फ़रमाता है कि क्या ये बग़ैर मूजिद (किसी बनाने वाले) के मौजूद हो गये? या ये लोग अपने मूजिद आप ही हैं? दर असल दोनों बातें नहीं, बल्कि इनका ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) अल्लाह तआ़ला है। ये कुछ न थे, अल्लाह तआ़ला ने इन्हें पैदा किया। हज़रत जुबैर बिन मुतइ़म रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल. मग़रिब की नमाज़ में सूरः तूर की तिलावत कर रहे थे, मैं कान लगाये सुन रहा था, जब आप 'मुसैतिरून' (यानी आयत नम्बर 37) तक पहुँचे तो मेरी यह हालत हो गयी कि गोया मेरा दिल उड़ा जा रहा है। (बुख़ारी)

Maktab E Ashraf

बदर के क़ैदियों में यह हज़रत जुबैर रज़ि. भी आये थे। यह उस वक़्त का वाक़िआ है जब यह काफ़िर थे। क़ुरआन पाक की इन आयतों का सुनना इनके इस्लाम का ज़रिया बन गया। फिर फ़रमाता है कि क्या आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले ये हैं? यह भी नहीं, बल्कि यह जानते हुए कि ख़ुद उनका और तमाम मख़्लूक़ात का पैदा करने वाला अल्लाह तआ़ला ही है। फिर भी ये अपनी बेयक़ीनी से बाज़ नहीं आते।

फिर फ़रमाता है- क्या दुनिया में तसर्रुफ़ (क़ब्ज़ा व इख़्तियार और अ़मल-दख़ल) इनका है? हर चीज़ के ख़ज़ानों के मालिक क्या ये हैं? या मख़्लूक़ के मुहासिब (हिसाब लेने वाले) ये हैं? हक़ीक़त में ऐसा नहीं, बल्कि मालिक और तसर्रुफ़ करने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। वह क़ादिर है, जो चाहे कर गुज़रे।

फिर फ़रमाता है कि क्या ऊँचे आसमान तक चढ़ जाने का कोई ज़ीना उनके पास है? अगर यूँ है तो उनमें से जो वहाँ पहुँचकर कलाम सुन आता है? वह अपने अक़वाल व अफ़्आ़ल की कोई आसमानी दलील पेश करे, लेकिन न वह पेश कर सकता है, न वह किसी हक़्क़ानियत के पाबन्द हैं, यह भी उनकी बड़ी भारी ग़लती है, कहते हैं कि फ़रिश्ते अल्लाह की लड़कियाँ हैं। क्या हिमाक़त है कि अपने लिये तो लड़कियाँ नापसन्द करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिये साबित करें। उन्हें अगर मालूम हो जाये कि उनके यहाँ लड़की हुई तो ग़म के मारे चेहरा काला पड़ जाता है और अल्लाह तआ़ला के ख़ास और क़रीबी फ़रिश्तों को उसकी लड़कियाँ बतलायें। इतना ही नहीं बल्कि फिर उनकी पूजा करें, पस निहायत डाँट-डपट के साथ फ़रमाता है कि क्या ख़ुदा की लड़कियाँ हैं और तुम्हारे लड़के हैं?

फिर फ़रमाया- क्या तू अपनी तब्लीग़ पर उनसे कुछ मुआ़वज़ा तलब करता है? जो उन पर भारी पड़े। यानी अल्लाह का नबी अल्लाह के दीन के पहुँचाने पर किसी से कोई उजरत (बदला और मुआ़वज़ा) नहीं माँगता। फिर उन्हें यह पहुँचाना क्यों भारी पड़ता है? क्या ये लोग ग़ैब को जानने वाले हैं? नहीं, बल्कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ में से कोई ग़ैब की बातें नहीं जानता। क्या ये लोग अल्लाह के दीन और रसूलुल्लाह के बारे में बकवास करके ख़ुद रसूलुल्लाह को, मोमिनों को और आ़म लोगों को धोखा देना चाहते हैं? याद रखो यही धोखे में रह जायेंगे और आख़िरत का वबाल अपने सर लेंगे। फिर फ़रमाया- क्या अल्लाह के सिवा उनके और माबूद हैं? अल्लाह की इबादत में बन्दों को और दूसरी चीज़ों को ये क्यों शरीक करते हैं? अल्लाह तआ़ला तो शिर्कत से बरी और शरीक से पाक है, और मुश्रिकों की इस हरकत से सख़्त बेज़ार है।

और अगर वे आसमान के टुकड़े को देख लें कि गिरता हुआ आ रहा है तो यूँ कह दें कि यह तो तह-ब-तह जमा हुआ बादल है। (44) तो उनको रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसमें उनके होश उड़ जाएँगे। (45) जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ भी काम न आएँगी। और न (कहीं से) उनको मदद मिलेगी। (46) और उन ज़ालिमों के लिए इस (अज़ाब) से पहले भी अज़ाब होने वाला है (जैसे क़हत, और बदर की	وَإِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ○ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ○ يَوْمَ لَا يُغْنِىْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ○ وَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا

دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ○
وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا
وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ○ وَمِنَ
الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ○ ع ٢١

लड़ाई में क़त्ल होना) लेकिन उनमें अक्सर को मालूम नहीं। (47) और आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिए कि आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, और (मज्लिस से या सोने से) उठते वक़्त अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ बयान किया कीजिए। (48) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए (जैसे इशा की नमाज़) और सितारों से पीछे "यानी उनके छुपने के बाद" भी। (49)

Maktaba E Ashraf

एक के ऊपर एक बादल

मुश्रिकों और काफ़िरों के बैर और दुश्मनी का बयान हो रहा है कि ये अपनी सरकशी, ज़िद और हठधर्मी में इस क़द्र बढ़ गये हैं कि ख़ुदा के अ़ज़ाब को महसूस कर लेने के बाद भी इन्हें ईमान की तौफ़ीक़ न होगी। ये अगर देख लेंगे कि आसमान का कोई टुकड़ा ख़ुदा का अ़ज़ाब बनकर इनके सरों पर गुज़र रहा है तो भी इन्हें तस्दीक़ व यक़ीन न होगा बल्कि साफ़ कह देंगे कि यह तो एक गाढ़ा बादल है, जो पानी बरसाने को आ रहा है। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ.........الخ

कि अगर हम उनके लिये आसमान का कोई दरवाज़ा भी खोल दें और ये वहाँ चढ़ जायें तब भी ये तो यही कहेंगे कि हमारी नज़र-बन्दी कर दी गयी है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।

यानी जिन मोजिज़ों को ये तलब कर रहे हैं अगर इनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ ही वे दिखा दिये जायें बल्कि ख़ुद इन्हें आसमानों पर चढ़ा दिया जाये तब भी ये कोई बात बनाकर टाल देंगे और ईमान न लायेंगे। ऐ नबी! आप इन्हें छोड़ दीजिए, क़ियामत के दिन ख़ुद इन्हें मालूम हो जायेगा। उस दिन इनकी सारी फ़रेब कारियाँ रखी की रखी रह जायेंगी, कोई मक्कारी वहाँ काम न देगी। आज जिनको ये पुकारते हैं और अपना मददगार जानते हैं उस दिन सब के मुँह तकेंगे और कोई न होगा जो इनकी ज़रा सी भी मदद कर सके। बल्कि इनकी तरफ़ से कुछ उज़्र भी पेश कर सके। यही नहीं कि उन्हें सिर्फ़ क़ियामत के दिन ही अ़ज़ाब हो और यहाँ इत्मीनान व आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ार लें, बल्कि उन ना-इन्साफ़ों के लिये इससे पहले दुनिया में भी अ़ज़ाब तैयार हैं। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ.

यानी हम उन्हें आख़िरत के बड़े अ़ज़ाब के अ़लावा दुनिया में भी अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे, ताकि ये रुजू करें, लेकिन उनमें के अक्सर बेइल्म हैं, नहीं जानते कि ये दुनियावी मुसीबतों में भी मुब्तला होंगे और ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ रंग लायेंगी, यही बेइल्मी है, जो उन्हें इस बात पर आमादा करती है कि गुनाह पर गुनाह ज़ुल्म पर ज़ुल्म करते जायें। पकड़े जाते हैं, इबरत हासिल होती है, लेकिन जहाँ पकड़ हटी ये फिर वैसे सख़्त-दिल बदकार बन गये। बाज़ हदीसों में है कि मुनाफ़िक़ की मिसाल ऊँट की सी है, जिस तरह ऊँट

Maktab E Ashraf

नहीं जानता कि उसे क्यों बाँधा और क्यों खोला, इसी तरह मुनाफ़िक़ भी नहीं जानता कि क्यों बीमार डाला गया? और क्यों तन्दुरुस्त कर दिया गया? असरे इलाही में है कि मैं तेरी कितनी नाफ़रमानियाँ करूँगा और तू मुझे सज़ा न देगा? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- ऐ मेरे बन्दे कितनी मर्तबा मैंने तुझे आ़फ़ियत दी और तुझे इल्म भी न हुआ?

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! आप सब्र कीजिए, उनके तकलीफ़ देने से तंगदिल न होजिये, उनकी तरफ़ से कोई ख़तरा भी दिल में न लाईये। सुनिये! आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, आप हमारी आँखों के सामने हैं, आपकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हम हैं, तमाम दुश्मनों से आपको बचाना हमारे सुपुर्द है। फिर हुक्म देता है कि आप खड़े हों तो अल्लाह तआ़ला की पाकी और तारीफ़ बयान कीजिए। इसका एक मतलब तो यह बयान किया गया है कि जब नमाज़ के लिये खड़े हों। दूसरा मतलब यह बताया गया है कि जब रात को जागें। दोनों मतलब दुरुस्त हैं। चुनाँचे एक हदीस में है कि नमाज़ शुरू करते ही हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते थेः

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰـهَ غَيْرُكَ.

यानी ऐ अल्लह! तू पाक है, तमाम तारीफ़ों का मुस्तहिक़ है, तेरा नाम बरकतों वाला है, तेरी बुज़ुर्गी बहुत बुलन्द व बाला है, तेरे सिवा सच्चा माबूद और कोई नहीं। (सही मुस्लिम शरीफ़)

मुस्नद अहमद और सुनन में भी हुज़ूर सल्ल. का यह इरशाद महफ़ूज़ है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स रात को जागे और कहेः

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَعَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह।

फिर चाहे अपने लिये बख़्शिश की दुआ़ करे, जो चाहे तलब करे, अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ़ क़बूल फ़रमाता है। फिर अगर उसने पुख़्ता इरादा किया और वुज़ू करके नमाज़ भी अदा की तो वह नमाज़ क़बूल की जाती है। यह हदीस सही बुख़ारी शरीफ़ और सुनन में भी है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की तस्बीह और तारीफ़ के बयान करने का हुक्म हर मज्लिस से खड़े होने के वक़्त है, हज़रत अबुल-अहवस रह. का क़ौल भी यही है कि जब किसी मज्लिस से उठना चाहे तो यह पढ़ेः

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ.

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क।

हज़रत अ़ता बिन अबी रिबाह रह. भी यही फ़रमाते हैं। उनका फ़रमान है कि अगर उस मज्लिस में नेकी हुई है तो वह और बढ़ जाती है और अगर कुछ और हुआ है तो यह कलिमा उसका कफ़्फ़ारा हो जाता है। जामे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्ल. को तालीम दी कि जब कभी किसी मज्लिस से खड़े हों तो यह पढ़ लिया करेंः

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक।

इसके रावी हज़रत मामर रह. फ़रमाते हैं- मैंने यह भी सुना है कि यह क़ौल उस मज्लिस का कफ़्फ़ारा हो जाता है। यह हदीस तो मुर्सल है लेकिन मुस्तनद हदीसें भी इस बारे में बहुत सी हैं, जिनकी सनदें एक दूसरी को मज़बूती पहुँचाती हैं। एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी मज्लिस में बैठे, वहाँ कुछ बक-झक हो और खड़ा होने से पहले इन कलिमात को कह ले तो उस मज्लिस में जो कुछ हुआ है उसका कफ़्फ़ारा हो जाता है। (तिर्मिज़ी) इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी रह. हसन सही कहते हैं। इमाम हाकिम रह. इसे मुस्तद्रक में रिवायत करके फ़रमाते हैं कि इसकी सनद इमाम मुस्लिम की शर्त पर है, हाँ इमाम बुख़ारी रह. ने इसमें इल्लत (कमज़ोरी) निकाली है। मैं कहता हूँ कि इमाम अहमद, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू हातिम, इमाम अबू ज़ुरआ, इमाम दारे क़ुतनी रह. वग़ैरह ने भी इसे इल्लत वाली कहा है और वहम की निस्बत इब्ने जुरैज की तरफ़ की है, मगर यह रिवायत अबू दाऊद में जिस सनद से मन्क़ूल है उसमें इब्ने जुरैज हैं ही नहीं। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. अपनी आख़िरी उम्र में जिस मज्लिस से खड़े होते इन कलिमात को कहते, बल्कि एक शख़्स ने पूछा भी कि हुज़ूर! आप इससे पहले तो इसे नहीं कहते थे? आपने फ़रमाया मज्लिस में जो कुछ हुआ हो ये कलिमात उसका कफ़्फ़ारा हो जाते हैं। यह रिवायत मुर्सल सनद से भी हज़रत अबुल-आ़लिया रह. से मन्क़ूल है। वल्लाहु आलम

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये कलिमात ऐसे हैं कि जो इन्हें किसी मज्लिस में उठते वक़्त तीन मर्तबा कह ले, उसके लिये ये कफ़्फ़ारा हो जाते हैं। मज्लिसे ख़ैर और मज्लिसे ज़िक्र में इन्हें पढ़ने से यह एक मुहर की तरह हो जाते हैं। (अबू दाऊद वग़ैरह)

फिर इरशाद होता है कि रात के वक़्त उसकी याद, उसकी इबादत, तिलावत और नमाज़ के साथ करते रहो। जैसे फ़रमान है:

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ........ الخ.

रात के वक़्त तहज्जुद पढ़ा कर, यह तेरे लिये नफ़िल है, मुम्किन है तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद पर उठाये।

सितारों के डूबते वक़्त से मुराद सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ से पहले की दो रक्अ़तें हैं, कि वे दोनों सितारों के छुपने के लिये झुक जाने के वक़्त पढ़ी जाती हैं। चुनाँचे एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि इन सुन्नतों को न छोड़ो चाहे तुम्हें घोड़े कुचल डालें। इसी हदीस की अहमियत की वजह से इमाम अहमद रह. के बाज़ शागिर्दों ने तो इन्हें वाजिब कहा है, लेकिन यह ठीक नहीं, इसलिये कि हदीस में है कि दिन रात में पाँच नमाज़ें हैं। सुनने वाले ने कहा "क्या मुझ पर इसके अ़लावा और कुछ भी है?" आपने फ़रमाया नहीं, मगर यह कि तू नफ़िल अदा करे। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. नवाफ़िल में से किसी नफ़िल की सुबह की दो सुन्नतों से ज़्यादा पाबन्दी और निगरानी न करते थे। सही मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूले मक़बूल सल्ल. फ़रमाते हैं कि सुबह के फ़र्ज़ों से पहले की ये दो सुन्नतें सारी दुनिया से और जो कुछ इसमें है उससे बेहतर हैं।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है कि सूरः तूर की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः नज्म

सूरः नज्म मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 62 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः नज्म मक्किया

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि सबसे पहली सूरत जिसमें सज्दा था सूरः नज्म उतरी है। नबी करीम सल्ल. और आपके जितने सहाबा थे सबने सज्दा किया, लेकिन एक शख़्स को मैंने देखा कि उसने अपनी मुट्ठी में मिट्टी लेकर उसी पर सज्दा कर लिया। फिर मैंने देखा कि वह उसके बाद कुफ़्र की हालत में ही मारा गया, यह शख़्स उमैया बिन ख़लफ़ था। लेकिन इसमें एक इशकाल (शुब्हा) है, वह यह कि दूसरी रिवायत में है कि यह शख़्स उतबा बिन रबीआ़ था।

क़सम है (आ़म) सितारे की जब वह छुपने लगे (1) यह (हर वक़्त) तुम्हारे साथ रहने वाले न (हक़) राह से भटके और न ग़लत रास्ते पर गए (2) और न आप अपनी नफ़्सानी इच्छा से बातें बनाते हैं। (3) उनका इरशाद ख़ालिस वही है, जो उन पर भेजी जाती है। (4)	وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰىO مَاضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَاغَوٰىO وَمَايَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰىO اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰىO

क़सम है सितारे की

हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि ख़ालिक़ अपनी मख़्लूक़ में से जिसकी चाहे क़सम खा ले, लेकिन मख़्लूक़ सिवाय अपने ख़ालिक़ के किसी और की क़सम नहीं खा सकती। (इब्ने अबी हातिम)

सितारे के झुकने से मुराद फ़जर के वक़्त सुरैया सितारे का ग़ायब होना है। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद ज़ोहरा नाम का सितारा है। हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि मुराद उसका झड़कर शैतान की तरफ़ लपकना है। इस क़ौल की अच्छी तौजीह (मतलब) हो सकती है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इस जुमले की तफ़सीर यह है कि क़सम है क़ुरआन की जब वह उतरे। इस आयत ही की तरह यह आयत भी है:

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُوْمِ..... الخ.

(यानी सूरः वाक़िआ़ आयत 75-80)

फिर जिस बात पर क़सम खाई है उसका बयान है। हुज़ूरे पाक सल्ल. नेकी और हिदायत वाले और हक़ के ताबे हैं। वह बेइल्मी के साथ किसी ग़लत राह पर लगे हुए या बावजूद इल्म के टेढ़ा रास्ता इख़्तियार किये हुए नहीं हैं। गुमराही वाले ईसाईयों और जान-बूझकर ख़िलाफ़े हक़ करने वाले यहूदियों की तरह आप

Maktaba E Ashraf

नहीं, आपका इल्म कामिल, आपका अ़मल मुताबिके इल्म, आपका रास्ता सीधा, आप अ़ज़ीमुश्शान शरीअ़त वाले, आप एतिदाल वाले हक़ के रास्ते पर क़ायम हैं, और आपका कोई क़ौल कोई फ़रमान अपने नफ़्स की ख़्वाहिश और ज़ाती ग़र्ज़ से नहीं होता, बल्कि जिस चीज़ की तब्लीग़ का आपको हुक्म होता है आप उसे ही ज़बान से निकालते हैं, जो वहाँ से कहा जाये वह आपकी ज़बान से अदा होता है, कमी-बेशी ज़्यादती नुक़सान से आपका कलाम पाक होता है।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- एक शख़्स की शफ़ाअ़त से जो नबी नहीं हैं, दो क़बीलों के बराबर या दो में से एक क़बीले की गिनती के बराबर लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। क़बीला रबीआ़ और क़बीला मुज़र। इस पर एक शख़्स ने कहा- क्या रबीआ़ मुज़र में से नहीं हैं? आपने फ़रमाया मैं तो वही कहता हूँ जो मुझसे कहा जाता है। मुस्नद की एक और हदीस में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे पाक से जो कुछ सुनता था उसे हिफ़्ज़ करने के लिये लिख लिया करता था। पस बाज़ क़ुरैशियों ने मुझे इससे रोका और कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक इनसान हैं, कभी कभी गुस्से और ग़ज़ब में भी कुछ फ़रमा दिया करते हैं, चुनाँचे मैं लिखने से रुक गया। फिर मैंने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल. से किया तो आपने फ़रमाया- लिख लिया करो, ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मेरी ज़बान से सिवाय हक़ बात के और कोई कलिमा नहीं निकलता। यह हदीस अबू दाऊद और इब्ने अबी शैबा में भी है। बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैं तुम्हें जिस बात की ख़बर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दूँ उसमें कोई शक व शुब्हा नहीं होता। मुस्नद अहमद में है कि आपने फ़रमाया- मैं सिवाय हक़ के और कुछ नहीं कहता। इस पर कुछ सहाबा ने कहा हुज़ूर आप कभी कभी हमसे मज़ाक़ भी करते हैं, आपने फ़रमाया उस वक़्त भी मेरी ज़बान से नाहक़ (हक़ के अ़लावा) नहीं निकलता।

उनको एक फ़रिश्ता तालीम करता है जो बड़ा ताक़तवर है। (5) पैदाईशी ताक़तवर है। फिर वह फ़रिश्ता (अपनी) असली सूरत पर (आपके सामने) ज़ाहिर हुआ। (6) ऐसी हालत में कि वह (आसमान के) बुलन्द किनारे पर था। (7) फिर वह फ़रिश्ता (आपके) नज़दीक आया, फिर और आया (8) सो दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया बल्कि और भी कम। (9) फिर अल्लाह पाक ने अपने बन्दे पर वही नाज़िल फ़रमाई जो कुछ नाज़िल फ़रमाई थी। (10) दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की। (11) तो क्या उन (पैग़म्बर) से उनकी देखी हुई चीज़ में झगड़ा करते हैं? (12) और उन्होंने (यानी पैग़म्बर ने) उस फ़रिश्ते को एक बार और भी (असली सूरत में) देखा है। (13)	عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝ ذُوْمِرَّةٍ ۭ فَاسْتَوٰى ۝ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝

اِذْ یَغْشَی السِّدْرَةَ مَا یَغْشٰی ۝ مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی ۝ لَقَدْ رَاٰی مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِ الْکُبْرٰی ۝	सिद्रतुल-मुन्तहा के पास। (14) उसके क़रीब जन्नतुल-मअ्वा है। (15) जब उस सिद्रतुल् मुन्तहा को लिपट रही थीं जो चीज़ें लिपट रही थीं। (16) निगाह न तो हटी और न बढ़ी (17) उन्होंने अपने परवर्दिगार (की क़ुदरत) के बड़े-बड़े अ़जूबे देखे हैं। (18)

Maktab E Ashraf

एक सम्मानित फ़रिश्ता

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मुअ़ल्लिम (तालीम देने और सिखाने वाले) हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं। जैसे एक और जगह फ़रमाया है:

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ کَرِیْمٍ........ الخ.

यह क़ुरआन एक सम्मानित और ताक़तवर फ़रिश्ते का क़ौल है जो मालिके अ़र्श के यहाँ इज़्ज़त वाला, सब का माना हुआ, वहाँ मोतबर है। यहाँ भी फ़रमाया कि वह क़ुव्वत वाला है। "ज़ू मिर्रतिन्" की एक तफ़सीर तो यही है। दूसरी यह है कि वह ख़ूबसूरत है। हदीस में भी "मिर्रतिन" का लफ़्ज़ आया है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि सदक़ा लेना मालदार और क़ुव्वत वाले तन्दुरुस्त पर हराम है। फिर वह सीधे खड़े हो गये, यानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम, और वह बुलन्द आसमान के किनारों पर थे, जहाँ से सुबह चढ़ती है, जो सूरज के निकलने की जगह है। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- हुज़ूरे पाक सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को उनकी असल सूरत पर सिर्फ़ दो दफ़ा देखा है, एक मर्तबा आपकी तमन्ना और इच्छा पर हज़रत जिब्राईल अपनी सूरत में आपको दिखाई दिये, आसमानों के तमाम किनारे उनके जिस्म से ढक गये थे। दोबारा उस वक़्त जबकि आपको लेकर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ऊपर चढ़े थे। यह मतलब है "वह ऊँचे किनारे पर था" का।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने इस तफ़सीर में एक ऐसा क़ौल बयान किया है जो किसी ने नहीं कहा, उनके फ़रमान का हासिल यह है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम और हुज़ूर सल्ल. दोनों बुलन्द आसमानों के किनारे पर खड़े हुए थे और यह वाक़िआ़ मेराज की रात का है। इमाम इब्ने जरीर की इस तफ़सीर की ताईद किसी ने नहीं की, अगरचे इमाम साहिब ने अ़रबियत की हैसियत से इसे साबित किया है, और अ़रबी ग्रामर से यह हो भी सकता है। यह वाक़िए के ख़िलाफ़ इसलिये है कि यह देखना मेराज से पहले का है, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ज़मीन पर थे, आपकी तरफ़ जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम उतरे थे, और क़रीब हो गये थे, और अपनी असली सूरत पर थे। फिर उसके बाद दोबारा सिद्रतुल-मुन्तहा के पास मेराज वाली रात में देखा था, तो यह दोबारा का देखना था। लेकिन पहली बार का देखना तो नुबुव्वत के शुरू ज़माने का ज़िक्र है, पहली वही "इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी......" की चन्द आयतें आप पर नाज़िल हो चुकी थीं। फिर 'वही' बन्द हो गयी थी, जिसका हुज़ूरे पाक सल्ल. को बड़ा ख़्याल बल्कि बड़ा मलाल था, यहाँ तक कि कई दफ़ा आपका इरादा हुआ कि पहाड़ पर से गिर पडूँ लेकिन हर वक़्त आसमान की तरफ़ से हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की यह आवाज़ सुनाई दी कि ऐ मुहम्मद! आप ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं और मैं जिब्राईल हूँ। आपका ग़म दूर

हो जाता, दिल पर सुकून और तबीयत में क़रार हो जाता, वापस चले आते, लेकिन फिर कुछ दिनों के बाद शौक़ पैदा होता और अल्लाह की वही (पैग़ाम) की लज़्ज़त याद आती तो निकल खड़े होते और पहाड़ पर से ख़ुद को गिरा देना चाहते, और इसी तरह हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तस्कीन व तसल्ली कर दिया करते, यहाँ तक कि एक मर्तबा अब्तह में हज़रत जिब्राईल अपनी असली सूरत में ज़ाहिर हो गये। छह सौ पंख थे, बदन ने आसमान के तमाम किनारे ढक लिये थे, अब आपसे क़रीब आ गये, और अल्लाह तआ़ला की वही आपको पहुँचाई। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. को इस फ़रिश्ते की अ़ज़मत व जलालत (बड़ाई और शान) मालूम हुई और जान गये कि ख़ुदा के नज़दीक यह किस क़द्र बुलन्द मर्तबे वाला है।

मुस्नद बज़्ज़ार की एक रिवायत इमाम इब्ने जरीर रह. के क़ौल की ताईद में पेश हो सकती है, मगर उसके रावी सिर्फ़ हारिस बिन उबैद हैं जो बसरा के रहने वाले मशहूर शख़्स हैं। अबू क़ुदामा अयादी उनकी कुन्नियत है। मुस्लिम में उनसे रिवायतें आयी हैं, लेकिन इमाम इब्ने मईन रह. उन्हें ज़ईफ़ कहते हैं और फ़रमाते हैं कि यह कोई चीज़ नहीं। इमाम अहमद रह. फ़रमाते हैं कि इनकी हदीसों में इज़्तिराब है, इमाम अबू हातिम राज़ी का क़ौल है कि उनकी हदीसें लिख ली जाती हैं लेकिन उनसे दलील नहीं ली जा सकती, इब्ने हिब्बान रह. फ़रमाते हैं कि यह बड़े वहमी थे, इनसे दलील पकड़ना दुरुस्त नहीं। पस यह हदीस सिर्फ़ उन्हीं की रिवायत से है, तो अलावा ग़रीब होने के मुन्कर है, और अगर साबित हो भी जाये तो मुम्किन है कि यह वाक़िआ़ किसी ख़्वाब का हो। उसमें है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मैं बैठा हुआ था कि हज़रत जिब्राईल आये। मेरे दोनों कन्धों के बीच ज़ोर से हाथ रखा और मुझे खड़ा किया, मैंने देखा कि एक पेड़ है जिसमें परिन्दों के घौंसलों की तरह बैठने की जगहें बनी हुई हैं। एक में तो हज़रत जिब्राईल बैठ गये और दूसरे में मैं बैठ गया। फिर वह पेड़ बुलन्द होने (यानी ऊपर को उठने) लगा, यहाँ तक कि मैं आसमान से बिल्कुल क़रीब पहुँच गया। मैं दायें बायें करवटें बदलता था और अगर मैं चाहता तो हाथ बढ़ाकर आसमान को छू लेता। मैंने देखा कि हज़रत जिब्राईल उस वक़्त अल्लाह की हैबत और डर से बोरे की तरह बिछे जा रहे थे। उस वक़्त मैं समझ गया कि अल्लाह की बड़ाई और शान के इल्म में उन्हें मुझ पर फ़ज़ीलत है।

आसमान के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा मुझ पर खुल गया। मैंने बहुत बड़ा अ़ज़ीमुश्शान नूर देखा और पर्दे के पास याक़ूत के मोती को हिलते और हरकत करते हुए। फिर अल्लाह तआ़ला ने जो वही फ़रमानी चाही वह फ़रमाई। मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को अपनी असली सूरत में देखा है, उनके छह सौ पर (पंख) थे, हर एक ऐसा जिसने आसमान के किनारे भर दिये थे। उन पर से ज़ुमुर्रुद, मोती और मरवारीद झड़ रहे थे। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने जिब्राईल से ख़्वाहिश की कि मैं आपको आपकी असली सूरत में देखना चाहता हूँ। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए। आपने दुआ़ की तो पूरब की तरफ़ से आपको कोई चीज़ ऊँची उठती हुई फैलती हुई नज़र आयी, जिसे देखकर आप बेहोश हो गये। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम फ़ौरन आपको होश में लाये और आपकी बाँछों से थूक दूर किया। इब्ने अ़साकिर में है कि अबू लहब और उसका बेटा उतबा शाम के सफ़र की तैयारियाँ करने लगे, उसके बेटे ने कहा सफ़र में जाने से पहले एक मर्तबा ज़रा मुहम्मद के ख़ुदा को उनके सामने गालियाँ तो दे आऊँ, चुनाँचे यह आया और कहा ऐ मुहम्मद! फिर क़रीब हुआ और उतरा और दो कमानों के बराबर बल्कि इससे भी ज़्यादा नज़दीक आ गया। कहा- मैं तो उसका मुन्किर (इनकारी) हूँ। (चूँकि यह नालायक़ सख़्त बेअदब था और बार-बार गुस्ताख़ी से पेश आता था) हुज़ूर सल्ल. की ज़बान से इसके लिये बद्दुआ़ निकल गयी कि बारी तआ़ला! अपने कुत्तों में से एक कुत्ता इस

पर मुक़र्रर कर दे। यह जब लौटकर अपने बाप के पास आया और सारी बातें कह सुनायीं तो उसने कहा बेटा! अब मुझे तो तेरी जान का अन्देशा (चिंता और डर) हो गया, उसकी दुआ रद्द न जायेगी। उसके बाद यह क़ाफ़िला यहाँ से रवाना हुआ, शाम (मुल्क सीरिया) की सरज़मीन में एक राहिब (ईसाई आबिद) के इबादत ख़ाने के पास पड़ाव किया। राहिब ने उनसे कहा यहाँ तो भेड़िये इस तरह फिरते हैं जैसे बकरियों के रेवड़, तुम यहाँ क्यों आ गये? अबू लहब यह सुनकर खटक गया और तमाम क़ाफ़िले वालों को जमा करके कहा- देखो मेरे बुढ़ापे का हाल तुम्हें मालूम है और तुम जानते हो कि मेरे कैसे कुछ हुक़ूक़ तुम पर हैं, अब आज मैं तुमसे अ़र्ज़ करता हूँ कि तुम सब इसे क़बूल करोगे। बात यह है कि नुबुव्वत के दावेदार ने मेरे जिगर के टुकड़े के लिये बददुआ़ की है और मुझे इसकी जान का ख़तरा है, तुम अपना सब सामान इस इबादत ख़ाने के पास जमा करो और उस पर मेरे प्यारे बच्चे को सुलाओ, तुम सब उसके इर्द-गिर्द (चारों तरफ़) पहरा दो। लोगों ने इस बात को मन्ज़ूर कर लिया। ये अपने सब जतन करके होशियार रहे कि अचानक शेर आया और सबके मुँह सूँघने लगा। जब सब के मुँह सूँघ चुका और गोया जिसे तलाश कर रहा था उसे न पाया तो पिछले पैरों हटकर बहुत ज़ोर से छलाँग लगायी और उस मचान पर पहुँच गया, वहाँ जाकर उसका भी मुँह सूँघा और गोया वही उसका मतलूब था। फिर तो उसने उसके परख़चे उड़ा दिये, चीर-फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। उस वक़्त अबू लहब कहने लगा- इसका तो मुझे पहले ही से यक़ीन था कि मुहम्मद की बददुआ़ के बाद यह बच नहीं सकता।

फिर फ़रमाता है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हुज़ूरे पाक सल्ल. से क़रीब हुए और ज़मीन की तरफ़ उतरे, यहाँ क कि हुज़ूर सल्ल. और जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के बीच सिर्फ़ दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया, बल्कि इससे भी ज़्यादा नज़दीकी हो गयी। यह क़रीब आने वाले हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम थे जैसा कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबूज़र, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का फ़रमान है, और इस सिलसिले की हदीसें भी जल्द ही हम ज़िक्र करेंगे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला। सही मुस्लिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने दिल से अपने रब को दो दफ़ा देखा, जिनमें से एक दफ़ा का बयान इस आयत "सुम्-म दना" में है। और दूसरी बार का ज़िक्र हज़रत अनस रज़ि. वाली मेराज की हदीस में है। फिर अल्लाह तआ़ला क़रीब हुआ और नीचे आया, इसी लिये मुहद्दिसीन ने इसमें कलाम किया है और कई एक ग़राबतें साबित की हैं और अगर साबित हो जाये कि यह सही है तो भी दूसरे वक़्त और दूसरे वाक़िए पर महमूल होगी। इस आयत की तफ़सीर नहीं कही जा सकती। यह वाक़िआ़ तो उस वक़्त का है जबकि रसूलुल्लाह सल्ल. ज़मीन पर थे, न कि मेराज वाली रात का, क्योंकि इसके बयान के बाद ही फ़रमाया है कि हमारे नबी ने उसे एक मर्तबा और भी सिद्रतुल-मुन्तहा के पास देखा है। पस यह सिद्रतुल-मुन्तहा के पास का देखना तो मेराज के वाक़िए का ज़िक्र है, और पहली मर्तबा का देखना यह ज़मीन पर था।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने जिब्राईल को देखा उनके छह सौ पंख थे। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल. की नुबुव्वत के शुरू दौर में आपने ख़्वाब में हज़रत जिब्राईल को देखा। फिर अपनी ज़रूरी हाजत से फ़ारिग़ होने के लिये निकले तो सुना कि कोई आपका नाम लेकर आपको पुकार रहा है। दायें बायें अच्छी तरह देखा लेकिन कोई नज़र न आया। तीन मर्तबा ऐसा ही हुआ, तीसरी बार आपने ऊपर की तरफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम अपने दोनों पाँव में एक को दूसरे समेत मोड़े हुए आसमान के किनारों को रोके हुए

Maktaba E Ashraf

हैं। क़रीब था कि हुज़ूर सल्ल. दहशत में आ जायें कि फ़रिश्ते ने कहा मैं जिब्राईल हूँ डरो नहीं, लेकिन हुज़ूर सल्ल. से बरदाश्त न हो सका, भागकर लोगों में चले आये। अब जो नज़रें डालीं तो कुछ दिखाई न दिया, फिर वहाँ से निकलकर बाहर गये और आसमान की तरफ़ नज़र डाली तो फिर हज़रत जिब्राईल उसी तरह नज़र आये, आप फिर डरकर लोगों के मजमे में आ गये, तो यहाँ कुछ भी नहीं। बाहर निकल कर फिर जो देखा तो वही आसमान नज़र आया, पस इसी का ज़िक्र इन आयतों में है।

'क़ाब' आधी उंगली को भी कहते हैं और बाज़ कहते हैं कि सिर्फ़ दो हाथ का फ़ासला रह गया था। एक और रिवायत में है कि उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम पर दो रेशमी जोड़े थे। फिर फ़रमाया कि उसने 'वही' की। इससे मुराद या तो यह है कि हज़रत जिब्राईल ने अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल सल्ल. की तरफ़ वही की, या यह कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे की तरफ़ जिब्राईल के ज़रिये अपनी वही नाज़िल फ़रमाई, दोनों मायने सही हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि उस वक़्त की वही सूरः वज़्ज़ुहा और सूरः अलम् नश्रह की आयतें थीं।

दूसरे हज़रात से मरवी है कि उस वक़्त यह वही नाज़िल हुई थी कि दूसरे नबियों पर जन्नत हराम है जब तक कि आप उसमें न जायें, और दूसरी उम्मतों पर जन्नत हराम है जब तक कि पहले आपकी उम्मत उसमें दाख़िल न हो जाये। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि आप सल्ल. ने (अल्लाह तआ़ला को) अपने दिल से दो दफ़ा देखा है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने देखने को मुतलक़ (आ़म) रखा है, यानी चाहे दिल का देखना हो चाहे ज़ाहिरी आँखों का, यह मुम्किन है कि इस मुतलक़ को भी क़ैद के साथ महमूल करें, यानी आपने अपने दिल से देखा। जिन बाज़ हज़रात ने कहा है कि अपनी इन आँखों से देखा, उन्होंने एक ग़रीब क़ौल नक़ल किया है, इसलिये कि सहाबा से इस बारे में कोई चीज़ सेहत के साथ (यानी पूरे यक़ीन और दुरुस्तगी के साथ) मन्क़ूल नहीं। इमाम बग़वी रह. फ़रमाते हैं कि एक जमाअ़त इस तरफ़ गयी है कि हुज़ूर ने अपनी आँखों से देखा जैसे हज़रत अनस, हज़रत हसन और हज़रत इक्रिमा रज़ि., इनके इस क़ौल में ताम्मुल (विचारनीय बात) है। वल्लाहु आलम

तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने रब को देखा। हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं- मैंने यह सुनकर कहा फिर यह आयत कहाँ जायेगी, जिसमें फ़रमान हैः

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ.

कि उसे कोई निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को पा लेता है।

आपने जवाब दिया कि यह उस वक़्त है जबकि वह अपने नूर की पूरी तजल्ली करे, वरना आपने दो दफ़ा अपने रब को देखा है। यह हदीस हसन ग़रीब है। तिर्मिज़ी की एक और रिवायत में है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की मुलाक़ात हज़रत कअ़ब रज़ि. से हुई और उन्हें पहचान कर उनसे एक सवाल किया जो उन पर बहुत भारी गुज़रा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया- हमें बनू हाशिम ने यह ख़बर दी है तो हज़रत कअ़ब रज़ि. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने अपना दीदार और अपना कलाम हज़रत मुहम्मद सल्ल. और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के दरमियान तक़सीम कर दिया। हज़रत मूसा से दो मर्तबा बातें कीं और हुज़ूरे पाक सल्ल. को दो मर्तबा अपना दीदार कराया। एक मर्तबा हज़रत मसरूक़ रह. हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गये और पूछा कि क्या रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने रब को देखा है? आपने फ़रमाया तूने तो ऐसी बात कह दी जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मैंने कहा उम्मुल-मोमिनीन! क़ुरआन करीम फ़रमाता है कि

Maktab E Ashraf

आपने अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखीं। आपने फ़रमाया कहाँ जा रहे हो, सुनो! इससे मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का देखना है। जो तुमसे कहे कि मुहम्मद सल्ल. ने अपने रब को देखा या हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा के किसी फ़रमान को छुपा लिया, या आप इन पाँच बातों में से कोई बात जानते थे (यानी क़ियामत कब क़ायम होगी? बारिश कब और कितनी बरसेगी? मादा के पेट में नर है या मादा? कौन कल को क्या करेगा? कौन कहाँ मरेगा?) उसने बड़ी ग़लत बात कही और ख़ुदा पर बोहतान बाँधा। बात यह है कि आपने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को देखा था, दो मर्तबा ख़ुदा के इस अमीन को आपने उनकी असली सूरत में देखा है। एक मर्तबा तो सिद्‌रतुल-मुन्तहा के पास और एक मर्तबा अजयाद में, उनके छह सौ पर (पंख) थे और आसमान के तमाम किनारे उन्होंने भर रखे थे।

नसाई शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि क्या तुम्हें ताज्जुब मालूम होता है कि "ख़ुल्लत" (अल्लाह की दोस्ती) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के लिये थी, और कलाम हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये और दीदार हज़रत मुहम्मद सल्ल. के लिये। सही मुस्लिम में हज़रत अबूज़र से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा- क्या आपने अपने रब को देखा है? आपने फ़रमाया- वह सरासर नूर है, मैं उसे कैसे देख सकता हूँ? एक रिवायत में है कि मैंने नूर देखा। इब्ने अबी हातिम में है कि सहाबा के इस सवाल के जवाब में आपने फ़रमाया- मैंने अपने दिल से अपने रब को दो दफ़ा देखा, फिर आपने आयत "मा क-ज़बलु फ़ुआदु" पढ़ी। एक और रिवायत में है कि मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा, हाँ दिल से दो दफ़ा देखा है। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 8)

हज़रत इक्रिमा रज़ि. से "मा क-ज़बलु फ़ुआदु" के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया- हाँ आपने देखा और फिर देखा। साईल (पूछने वाले) ने फिर हज़रत हसन रज़ि. से भी सवाल किया तो आपने फ़रमाया उसके जलाल व अ़ज़मत और किब्रियाई की चादर को देखा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक दफ़ा यह जवाब देना भी मन्क़ूल है कि मैंने नहर देखी और नहर के पीछे पर्दा देखा और पर्दे के पीछे नूर देखा, इसके अ़लावा मैंने कुछ नहीं देखा। यह हदीस भी बहुत ग़रीब है। एक हदीस मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने अपने रब तआ़ला को देखा है। इसकी सनद सही की शर्त पर है, लेकिन यह हदीस ख़्वाब वाली हदीस का मुख़्तसर टुकड़ा है। चुनाँचे एक लम्बी हदीस में है कि मेरे पास मेरा रब बहुत अच्छी सूरत में आज की रात (रावी कहता है मेरे ख़्याल में) ख़्वाब में आया और फ़रमाया ऐ मुहम्मद! जानते हो बुलन्द मक़ाम वाले फ़रिश्ते किस मसले पर गुफ़्तगू कर रहे हैं? मैंने अ़र्ज़ किया- नहीं। पस अल्लाह तआ़ला ने अपना हाथ मेरे दो बाज़ुओं के दरमियान रखा, जिसकी ठंडक मुझे मेरे सीने में महसूस हुई। पस ज़मीन व आसमान की हर चीज़ मुझे मालूम हो गयी, फिर मुझसे वही सवाल किया मैंने कहा अब मुझे मालूम हो गया, वे उन नेकियों के बारे में जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और जो दर्जे बढ़ाती हैं, आपस में पूछगछ कर रहे हैं। मुझसे हक़ तआ़ला शानुहू ने पूछा अच्छा फिर तुम भी बतलाओ कफ़्फ़ारे की नेकियाँ क्या-क्या हैं? मैंने कहा नमाज़ों के बाद मस्जिदों में रुके रहना, जमाअ़त के लिये चलकर आना, जब वुज़ू नागवार गुज़रता हो तो अच्छी तरह मल-मलकर वुज़ू करना, जो ऐसा करेगा वह भलाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ैर के साथ इन्तिक़ाल होगा। और गुनाहों से इस तरह अलग हो जायेगा जैसे आज दुनिया में

Maktab E Ashraf

आया है। उस वक़्त अल्लाह तआला ने मुझसे फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! जब नमाज़ पढ़ो यह कहोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاِذَآ اَرَدْتَّ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً اَنْ تَقْبِضَنِىْ اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ.

यानी या अल्लाह! मैं तुझसे नेकियों के करने, बुराईयों के छोड़ने और मिस्कीनों से मुहब्बत रखने की तौफ़ीक़ तलब करता हूँ। तू जब अपने बन्दों को फ़ितने (आज़माईश और इम्तिहान) में डालना चाहे तो मुझे फ़ितने में पड़ने से पहले ही अपनी तरफ़ उठा लेना।

फ़रमाया और दर्जे बढ़ाने वाले आमाल ये हैं- खाना खिलाना, सलाम फैलाना, लोगों की नींद की वक़्त रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना। इसी के जैसी रिवायत सूरः "सॉद" की तफ़सीर के ख़ात्मे पर गुज़र चुकी है। इब्ने जरीर में यह रिवायत दूसरी सनद से है जिसमें गुर्बत वाली ज़्यादती और भी बहुत सी है। उसमें कफ़्फ़ारे के बयान में है कि जुमे की नमाज़ के लिये पैदल चलने के क़दम, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार। मैंने कहा या अल्लाह! तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया और हज़रत मूसा को अपना कलीम बनाया और यह-यह किया। पस अल्लाह तआला ने फ़रमाया- मैंने तेरा सीना खोल नहीं दिया? और तेरा बोझ हटा नहीं दिया? और फ़ुलाँ-फ़ुलाँ एहसान तेरे ऊपर नहीं किया? और दूसरे भी ऐसे एहसान बतलाये कि तुम्हारे सामने उनके बयान की मुझे इजाज़त नहीं। इसी का ज़िक्र इन आयतों में हैः

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى......... الخ.

(यानी यही आयतें जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है) पस अल्लाह तआला ने मेरी आँखों का नूर मेरे दिल में पैदा कर दिया और मैंने अल्लाह तआला को अपने दिल से देखा। इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। ऊपर अबू लहब के बेटे उतबा का यह कहना कि मैं इस क़रीब आने और नज़दीक होने वाले को नहीं मानता, और फिर हज़रत सल्ल. का उसके लिये बददुआ करना और शेर का उसे फाड़ खाना बयान हो चुका है। यह वाक़िआ ज़रक़ा या सरात में हुआ था और हुज़ूरे पाक सल्ल. ने भविष्यवाणी फ़रमा दी थी कि यह इस तरह हलाक होगा। फिर हुज़ूर सल्ल. का हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को दोबारा देखना बयान हो रहा है, जो मेराज वाली रात का वाक़िआ है। मेराज की हदीसें निहायत तफ़सील के साथ सूरः बनी इस्राईल की शुरू की आयतों की तफ़सीर में गुज़र चुकी हैं, जिनके दोबारा यहाँ ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। यह बयान भी गुज़र चुका है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. मेराज वाली रात दीदारे बारी तआला के होने के क़ायल हैं, पहले और बाद के उलेमा और बुज़ुर्गों की एक जमाअत का क़ौल भी यही है, और सहाबा रज़ि. की बहुत सी जमाअतें इसके ख़िलाफ़ हैं। इसी तरह ताबिईन और बाज़ दूसरे भी इसके ख़िलाफ़ हैं। हुज़ूर सल्ल. का जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनके परों (पंखों) समेत देखना वग़ैरह इस क़िस्म की रिवायतें ऊपर गुज़र चुकी हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत मसरूक़ का पूछना और आपका जवाब भी अभी बयान हुआ है। एक रिवायत में है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने इस जवाब के बाद यह आयत पढ़ीः

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ........الخ

कि उसे कोई निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को पा लेता है................।

Maktab E Ashraf

और यह आयत भी पढ़ीः

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا..........الخ

किसी इनसान से ख़ुदा का कलाम करना मुम्किन नहीं, हाँ 'वही' के ज़रिये या पर्दे के पीछे से हो तो और बात है।

फिर फ़रमाया जो तुमसे कहे कि हुज़ूरे पाक सल्ल. को कल की बात का इल्म था, उसने ग़लत और झूठ कहा। फिर यह पूरी आयत पढ़ीः

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ............الخ

(यानी सूरः लुक़मान की आयत नम्बर 24, जिसमें उन पाँच चीज़ों का ज़िक्र है जिनका इल्म अल्लाह के अ़लावा किसी को नहीं) और फ़रमाया- जो कहे कि हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा की किसी बात को छुपाया उसने भी झूठ कहा और तोहमत बाँधी। फिर यह आयत पढ़ीः

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ.

यानी ऐ रसूल! जो तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दो।

हाँ आपने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत पर दो मर्तबा देखा है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत मसरूक़ ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के सामने सूरः नज्म की आयत नम्बर 7 और 13 पढ़ी तो इसके जवाब में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- इस उम्मत में सबसे पहले इन आयतों के मुताल्लिक़ ख़ुद नबी सल्ल. से मैंने सवाल किया था। आपने फ़रमाया- इससे मुराद मेरा हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को देखना है। आपने सिर्फ़ दो दफ़ा अल्लाह के इस अमीन को उनकी असली सूरत में देखा है। एक मर्तबा आसमान से ज़मीन पर आते हुए उस वक़्त तमाम ख़ला (ख़ाली हिस्सा) उनके जिस्म से भरा हुआ था। यह हदीस सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में भी है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ रज़ि. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से कहा कि अगर मैं हुज़ूर सल्ल. को देखता तो एक बात ज़रूर पूछता। हज़रत अबूज़र रज़ि. ने कहा क्या पूछते? कहा यह कि आपने अपने रब तआ़ला को देखा है? हज़रत अबूज़र रज़ि. ने फ़रमाया- यह सवाल तो ख़ुद मैंने जनाब रसूले करीम सल्ल. से किया था। आपने मुझे जवाब दिया कि मैंने उसे नूर देखा, वह तो नूर है, मैं उसे कैसे देख सकता। सही मुस्लिम में भी यह हदीस दो सनदों से है, दोनों के अलफ़ाज़ में कुछ मामूली फ़र्क़ है। हज़रत इमाम अहमद फ़रमाते हैं- मैं नहीं समझ सका कि इस हदीस की क्या तौजीह (मतलब बयान) करूँ, दिल इस पर मुत्मईन नहीं।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अबूज़र रज़ि. से मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने दिल से दीदार किया है आँखों से नहीं। इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा रह. फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ रह. और हज़रत अबूज़र रज़ि. के दरमियान इन्क़िता है (यानी मुलाक़ात साबित नहीं) और इमाम इब्ने जौज़ी रह. फ़रमाते हैं कि मुम्किन है हज़रत अबूज़र रज़ि. का यह सवाल मेराज के वाक़िए से पहले का हो, और हुज़ूर सल्ल. ने उस वक़्त यह जवाब दिया हो। अगर यह सवाल मेराज के बाद आप से किया जाता तो ज़रूर आप उसके जवाब में हाँ फ़रमाते, इनकार न करते। लेकिन यह क़ौल पूरी तरह कमज़ोर है, इसलिये कि हज़रत आ़यशा रज़ि. का सवाल तो यक़ीनन मेराज के बाद का था, मगर आपका जवाब उस वक़्त भी इनकार में ही रहा। बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि उनसे ख़िताब उनकी अ़क़्ल के मुताबिक़ किया गया, या यह कि उनका ख़्याल ग़लत

Maktaba E Ashraf

है। चुनाँचे इब्ने ख़ुज़ैमा रह. ने किताबुत्तौहीद में यही लिखा है, तो दर असल यह महज़ ख़ता है और बिल्कुल ग़लती है। वल्लाहु आलम

हज़रत अनस और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह तआ़ला को दिल से तो देखा है लेकिन अपनी आँखों से नहीं देखा, हाँ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को अपनी आँखों से उनकी असली सूरत में दो मर्तबा देखा है, सिद्रतुल-मुन्तहा पर उस वक़्त फ़रिश्ते बहुत ज़्यादा थे और नूरे ख़ुदा उन पर जगमगा रहा था, और तरह-तरह के रंग जिन्हें सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई नहीं जान सकता। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेराज वाली रात हुज़ूरे पाक सल्ल. "सिद्रतुल-मुन्तहा" तक पहुँचे, जो सातवें आसमान पर है, ज़मीन से जो चीज़ें चढ़ती हैं वे यहीं तक चढ़ती हैं, फिर यहाँ से उठा ली जाती हैं। इसी तरह जो चीज़ें ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल होती हैं वे यहीं तक पहुँचती हैं, फिर यहाँ से पहुँचाई जाती हैं। उस वक़्त उस पेड़ पर सोने की टिड्डियाँ लदी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल. को वहाँ तीन चीज़ें अ़ता फ़रमाई गयीं।

1. पाँचों वक़्त की नमाज़ें।
2. सूरः ब-क़रह के आख़िर की आयतें।
3. आपकी उम्मत में से जो मुश्रिक न हो उसके गुनाहों की बख़्शिश। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से या किसी और सहाबी से रिवायत है कि जिस तरह कौए किसी पेड़ को घेर लेते हैं इसी तरह उस वक़्त सिद्रतुल-मुन्तहा पर फ़रिश्ते छा रहे थे। वहाँ जब हुज़ूर सल्ल. पहुँचे तो आप से कहा गया कि जो माँगना हो माँगो। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि उस पेड़ की शाख़ें मरवारीद याक़ूत और ज़बर्जद की थीं (ये सब क़ीमती मोतियों और जवाहरात के नाम हैं)। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने उसे देखा और अपने दिल की आँखों से ख़ुदा की भी ज़ियारत की। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि आपने सिद्रह पर क्या देखा? आपने फ़रमाया- उसे सोने की टिड्डियाँ ढाँके हुए थीं और हर हर पत्ते पर एक एक फ़रिश्ता खड़ा हुआ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह बयान कर रहा था, आपकी निगाहें दायें बायें हुईं, जिस चीज़ के देखने का हुक्म था वहीं टिकी रहीं, साबित-क़दमी और कामिल इताअ़त की यह पूरी दलील है कि जो हुक्म था वही बजा लाये, जो आपको दिया गया वही लेकर ख़ुश हुए। इसी को एक शायर ने इस तरह कहा है कि आपने ख़ुदा की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं। जैसे एक और जगह है:

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى.

ताकि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखायें। जो हमारी कामिल क़ुदरत और ज़बरदस्त अ़ज़्मत (बड़ाई) पर दलील बन जायें।

इन दोनों आयतों को दलील बनाकर अहले सुन्नत का मज़हब है कि हुज़ूर सल्ल. ने उस रात ख़ुदा का दीदार अपनी आँखों से नहीं किया, क्योंकि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि आपने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं। अगर ख़ुद ख़ुदा का दीदार हुआ होता तो उसी दीदार का ज़िक्र होता, और लोगों पर उसे ज़ाहिर किया जाता। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. का क़ौल गुज़र चुका कि एक मर्तबा आपकी इच्छा पर, दूसरी दफ़ा आसमान पर चढ़ते वक़्त जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को आपने उनकी असल सूरत में देखा। पस जब हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब तआ़ला को ख़बर दी, फिर अपनी असली सूरत में हो गये और सज्दा अदा किया। पस सिद्रतुल-मुन्तहा के पास दोबारा देखने से उन्हीं का देखना मुराद है। यह रिवायत

मुस्नद अहमद में है और ग़रीब है।

Maktab E Ashraf

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ○ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ
الْاُخْرٰى ○ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ○
تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ○ اِنْ هِيَ اِلَّآ
اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ
وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ
رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ○ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ○
فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ○ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ ع ١٥ ٥
فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيَرْضٰى ○

भला तुमने लात और उज़्ज़ा (19) और तीसरे मनात के हाल में ग़ौर भी किया है? (20) क्या तुम्हारे लिए तो बेटे (तजवीज़) हों और ख़ुदा के लिए बेटियाँ? (21) इस हालत में तो यह बहुत बेढंगी तक़सीम हुई। (22) यह (ज़िक्र हुए माबूद का) बस नाम-ही-नाम हैं, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुक़र्रर कर लिया है। ख़ुदा तआ़ला ने तो उन (के माबूद होने) की कोई दलील नहीं भेजी। (बल्कि) ये लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर और अपने नफ़्स की इच्छा पर चल रहे हैं, हालाँकि उनके पास (रसूल के वास्ते से) उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। (23) क्या इनसान को उसकी हर तमन्ना मिल जाती है? (24) सो ख़ुदा ही के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (25)

और बहुत-से फ़रिश्ते आसमानों में मौजूद हैं, उनकी सिफ़ारिश ज़रा भी काम नहीं आ सकती, मगर इसके बाद कि अल्लाह जिसके लिए चाहें इजाज़त दें और (उसके लिये सिफ़ारिश करने से) राज़ी हों। (26)

लात व उज़्ज़ा

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों को डाँट रहा है कि वे बुतों की (यानी लात व उज़्ज़ा की) और ख़ुदा के सिवा दूसरों की पूजा करते हैं, और जिस तरह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से ख़ाना काबा बनाया है, ये लोग अपने-अपने झूठे माबूदों के पूजा-स्थल बना रहे हैं। 'लात' एक सफ़ेद पत्थर नक़्श व निगार वाला था, जिस पर गुंबद बना हुआ था, ग़िलाफ़ चढ़ाये जाते थे। मुजाविर, मुहाफ़िज़ और साफ़ करने वाले मुक़र्रर थे। उसके आस-पास की जगह को हरम शरीफ़ की तरह इज़्ज़त व सम्मान वाला जानते थे। यह ताईफ़ वालों का बुतकदा (मूर्ति-घर) था। क़बीला सक़ीफ़ उसका पुजारी और मुतवल्ली था। क़ुरैश के अ़लावा और बाक़ी सब लोगों पर ये अपना फ़ख़्र जताया करते थे। इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि उन लोगों ने लफ़्ज़ 'अल्लाह' से लफ़्ज़ "लात" बनाया था, गोया उसका मुअन्नस बनाया था (यानी अल्लाह उनके नज़दीक पुरुष ख़ुदा तो लात स्त्री ख़ुदा था)। अल्लाह की ज़ात तमाम शरीकों से पाक है। एक किराअत में लफ़्ज़ "लात्त" ते की तशदीद के साथ है, यानी घोलने वाला। इसको लात इसलिये कहते थे कि एक नेक शख़्स हज के मौसम में हाजियों को सत्तू घोल-घोलकर पिलाता था, उसके इन्तिक़ाल के बाद

लोगों ने उसकी क़ब्र पर चक्कर लगाने शुरू कर दिये और रफ़्ता-रफ़्ता उसकी इबादत करने लगे। इसी तरह लफ़्ज़ "उज़्ज़ा" लफ़्ज़ अ़ज़ीज़ से लिया गया है, मक्का और ताईफ़ के दरमियान नख़्ला में यह एक पेड़ था, उस पर भी गुंबद बना हुआ था, चादरें चढ़ी होती थीं, क़ुरैश उसकी अ़ज़मत (अदब व सम्मान) करते थे। अबू सुफ़ियान ने उहुद वाले दिन भी कहा था "हमारा उज़्ज़ा है और तुम्हारा नहीं" जिसके जवाब में हुज़ूर सल्ल. ने कहलवाया था "अल्लाह हमारा वाली है तुम्हारा वाली कोई नहीं"। सही बुख़ारी में है कि जो शख़्स लात और उज़्ज़ा की क़सम खा बैठे उसे चाहिये कि फ़ौरन ला इला-ह इल्लल्लाहु कह ले, और जो अपने साथी से कह दे कि आओ जुआ खेलें, उसे सदक़ा करना चाहिये। मतलब यह है कि जाहिलीयत के ज़माने में चूँकि इसी की क़सम खाई जाती थी, तो अब इस्लाम के बाद भी अगर किसी की ज़बान से आ़दत के मुवाफ़िक़ ये अलफ़ाज़ निकल जायें तो उसे कलिमा पढ़ लेना चाहिये।

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. एक मर्तबा इसी तरह लात व उज़्ज़ा की क़सम खा बैठे, इस पर लोगों ने उन्हें टोका तो यह हुज़ूर सल्ल. के पास गये। आपने फ़रमायाः

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

"ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर" पढ़ लो और तीन बार "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" पढ़कर अपनी बायीं जानिब थूक दो और आईन्दा से ऐसा न करना। मक्का और मदीना के बीच क़ुदैद के पास मुशल्लल में "मनात" था। क़बीला "ख़ुज़ाआ़" और "औस" और "ख़ज़्रज" जाहिलीयत में उसकी बहुत इज़्ज़त व सम्मान करते थे, यहीं से एहराम बाँधकर वह काबा के हज के लिये जाते थे। इसी तरह इन तीन बुतों के अ़लावा और भी बहुत से बुत और थान थे, जिनकी अ़रब लोग पूजा करते थे, और बेहद ताज़ीम व तकरीम करते थे। लेकिन चूँकि इन तीन की शोहरत बहुत ज़्यादा थी इसलिये यहाँ सिर्फ़ इन तीन का ही बयान फ़रमाया। इन स्थानों के ये लोग तवाफ़ भी करते थे, क़ुरबानियों के जानवर वहाँ ले जाते थे और उसकी ख़ूब इज़्ज़त व सम्मान करते थे। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि क़ुरैश और बनू किनाना उज़्ज़ा के पुजारी थे जो नख़्ला में था, उसका मुहाफ़िज़ और मुतवल्ली क़बीला बनू शैबान था, जो क़बीला सुलैम की शाख़ था, और बनू हाशिम के साथ उनका भाईचारा (दोस्ती का ताल्लुक़) था। इस बुत के तोड़ने के लिये रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़त्हे-मक्का के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु को भेजा था जिन्होंने इसको टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कहते जाते थेः

يَاعُزّٰى كُفْرَانَكِ لَا سُبْحَانَكِ اِنِّىْ رَاَيْتُ اللّٰهَ قَدْ اَهَانَكِ.

यानी ऐ उज़्ज़ा मैं तेरा मुन्किर हूँ, तेरी पाकी बयान करने वाला नहीं हूँ। मेरा ईमान है कि तेरी इज़्ज़त को ख़ुदा तआ़ला ने ख़ाक में मिला दिया।

यह बबूल (कीकर) के तीन पेड़ों पर था। वे पेड़ काट डाले, फ़ितना ढहा दिया और वापस आकर हुज़ूर सल्ल. को इत्तिला दी। आपने फ़रमाया- तुमने कुछ नहीं किया, फिर दोबारा वापस जाओ। हज़रत ख़ालिद रज़ि. के दोबारा तशरीफ़ ले जाने पर वहाँ उसके निगरानों और सेवकों ने बड़े-बड़े मक्र व फ़रेब किये और ख़ूब शोर मचा-मचाकर 'या उज़्ज़ा या उज़्ज़ा' के नारे लगाये। हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने जो देखा तो मालूम हुआ कि एक नंगी औ़रत है जिसके बाल बिखरे हुए हैं और अपने सर पर मिट्टी डाल रही है। आपने तलवार के एक ही वार में उसका काम तमाम किया और वापस आकर हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी। आप

Maktab E Ashraf

सल्ल. ने फ़रमाया- उज़्ज़ा यही थी।

'लात' क़बीला सक़ीफ़ का बुत था, जो ताईफ़ में था। उसकी ज़िम्मेदारी और प्रबंधन बनू मुअ़त्तब में थी। यहाँ उसके ढहाने के लिये नबी सल्ल. ने हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा और हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि. को भेजा था, जिन्होंने उसे नष्ट करके उसकी जगह मस्जिद बना दी। "मनात" औस व ख़ज़रज और उनके हम-ख़्याल लोगों का बुत था। यह मुशल्लल की तरफ़ समन्दर के किनारे क़ुदैद में था, यहाँ भी हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि. को भेजा और आप उसके टुकड़े-टुकड़े कर गये। बाज़ हज़रात का क़ौल है कि हज़रत अ़ली रज़ि. के हाथों यह कुफ़्रिस्तान फ़ना हुआ। "ज़ुल-ख़लसा" नाम का बुतख़ाना लदोस, ख़स्अ़म और बजेला का था, और जो लोग उनके हम-वतन थे, यह तबाला में था और इसे ये लोग "यमानिया काबा" कहते थे और मक्का के काबे को "शामिया काबा" कहते थे। यह हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली रह. के हाथों रसूलुल्लाह सल्ल. के हुक्म से फ़ना हुआ। फ़लस नाम का बुतख़ाना क़बीला तै और उनके आस-पास के अ़रब वालों का था। यह तै पहाड़ में सलमा और अजा के बीच था। इसके तोड़ने को हज़रत अ़ली रज़ि. मामूर हुए थे, आपने उसे तोड़ दिया और यहाँ से दो तलवारें ले गये थे, एक रसूब दूसरी मख़्ज़म। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने ये दोनों तलवारें उन्हीं को दे दीं।

क़बीला हिमयर और यमन वालों ने अपना बुतख़ाना 'सनआ़' में "रय्याम" नाम का बना रखा था। बयान किया जाता है कि उसमें एक काला कुत्ता था और वे दो हिमयरी जो तुब्बअ़ के साथ निकले, उन्होंने उसे निकाल कर क़त्ल कर दिया और उस बुतख़ाने की ईंट से ईंट बजा दी। "रुज़ा" नाम का बुत ख़ाना बनू रबीआ़ सअ़द का था, उसको मुस्तौग़र बिन रबीआ़ बिन कअ़ब बिन सअ़द ने इस्लाम में ढहाया। इब्ने हिशाम फ़रमाते हैं कि उनकी उम्र तीन सौ तीस साल की हुई थी जिसका बयान ख़ुद उन्होंने अपने अश्आ़र में किया है। "ज़ुल-कअ़बात" नाम का बुत ख़ाना बक्र, तग़लब और इयाद क़बीले का सनदाद में था।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- क्या तुम्हारे लिये तो लड़के हों और ख़ुदा की लड़कियाँ हों? क्योंकि ये मुश्रिकीन फ़रिश्तों को ख़ुदा की लड़कियाँ समझते थे, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं अगर तुम आपस में तक़सीम करो और किसी को सिर्फ़ लड़कियाँ और किसी को सिर्फ़ लड़के दो तो वह भी राज़ी न होगा, और यह तक़सीम नाइन्साफ़ी समझी जायेगी, कहाँ यह कि तुम ख़ुदा के लिये लड़कियाँ साबित करो और ख़ुद अपने लिये लड़के पसन्द करो।

फिर फ़रमाता है कि तुम ने अपनी तरफ़ से बग़ैर किसी दलील के माबूद ठहरा कर जो चाहा नाम गढ़ लिया है, वरना दर असल न वे माबूद हैं न किसी और पाक नाम के हक़दार हैं। ख़ुद ये लोग भी उनकी पूजा-पाठ पर कोई दलील पेश नहीं कर सकते, सिर्फ़ अपने बड़ों की तक़लीद (अनुसरण और पैरवी) में जो उन्होंने किया था ये भी कर रहे हैं। मुसीबत तो यह है कि बावजूद दलील आ जाने के ख़ुदा की बातें वाज़ेह हो जाने के, फिर भी बाप-दादा की ग़लत राह को नहीं छोड़ते।

फिर फ़रमाता है कि क्या हर इनसान की हर तमन्ना ख़्वाह-मख़्वाह पूरी होती है, जो कहे मैं हक़ पर हूँ तो क्या वह हक़ पर ही होगा? तुम अगरचे दावे लम्बे-चौड़े करो लेकिन दावों से मुराद और मक़सद हासिल नहीं होता। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि किसी चीज़ की ख़्वाहिश करते वक़्त सोच लिया करो कि क्या ख़्वाहिश कर रहे हो? तुम्हें नहीं मालूम कि उस ख़्वाहिश पर तुम्हारे लिये क्या लिखा जायेगा। तमाम मामलात का मालिक अल्लाह तआ़ला है। दुनिया और आख़िरत में तसर्रुफ़ (इख़्तियार) उसी का है, जो उसने चाहा हो रहा है और जो चाहेगा होगा।

Maktab-E-Ashraf

फिर फ़रमाता है कि बग़ैर अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के कोई बड़े से बड़ा फ़रिश्ता भी किसी के लिये सिफ़ारिश का लफ़्ज़ भी नहीं निकाल सकता, जैसे फ़रमायाः

مَنْ ذَاالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَہٗ..........الخ

कौन है जो उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश पेश कर सके? उसके फ़रमान के बग़ैर किसी को किसी की सिफ़ारिश नफ़ा नहीं दे सकती।

पस जबकि बड़े-बड़े क़रीबी फ़रिश्तों का यह हाल है तो फिर ऐ नावाक़िफ़ो! तुम्हारे ये बुत और थान क्या नफ़ा पहुँचायेंगे? इनकी पूजा से ख़ुदा रोक रहा है, तमाम रसूल और तमाम आसमानी किताबें ख़ुदा के सिवा औरों की इबादत से रोकना अपना अ़ज़ीमुश्शान (सब से अहम) मक़सद बताती हैं। फिर भी तुम उनको अपना सिफ़ारिशी समझ रहे हो? किस क़द्र ग़लत रास्ता है।

اِنَّ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَۃِ لَیُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِکَۃَ تَسْمِیَۃَ الْاُنْثٰیO وَمَالَھُمْ بِہٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا یُغْنِیْ مِنَ الْحَقِّ شَیْئًاO فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰی ۙ عَنْ ذِکْرِنَا وَلَمْ یُرِدْ اِلَّا الْحَیٰوۃَ الدُّنْیَاO ذٰلِکَ مَبْلَغُھُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّکَ ھُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِہٖ ۙ وَھُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اھْتَدٰیO	जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे फ़रिश्तों को (ख़ुदा की) बेटी के नाम से नामज़द करते हैं। (27) हालाँकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर चल रहे हैं। और यक़ीनन बेअसल ख़्यालात हक़ बात (के साबित करने) में ज़रा भी फ़ायदेमन्द नहीं होते। (28) तो आप ऐसे शख़्स से अपना ख़्याल हटा लीजिए जो हमारी नसीहत का ख़्याल न करे और दुनियावी ज़िन्दगी के सिवा उसको कोई (आख़िरत का मतलब) मक़सूद न हो। (29) उन लोगों की समझ की रसाई यही (दुनियावी ज़िन्दगी) है, तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है, और वही उसको भी ख़ूब जानता है जो सही रास्ते पर है। (30)

बेहक़ीक़त नाम

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के इस क़ौल की तरदीद फ़रमाता है कि ख़ुदा तआ़ला के फ़रिश्ते उसकी लड़कियाँ हैं। जैसे एक और जगह हैः

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِکَۃَ اِنَاثًا.........الخ.

यानी ख़ुदा के मक़बूल बन्दों फ़रिश्तों को उन्होंने लड़कियाँ क़रार दी हैं, क्या उनकी पैदाईश के वक़्त ये मौजूद थे? उनकी गवाही लिखी जायेगी और उनसे पूछगछ की जायेगी।

यहाँ भी फ़रमाया कि ये लोग फ़रिश्तों के ज़नाने नाम रखते हैं (यानी उनको अल्लाह की लड़कियाँ बताते हैं) जो उनकी बेइल्मी (अज्ञानता) का नतीजा है। महज़ झूठ, खुला बोहतान बल्कि खुला शिर्क है। ये

Maktaba E Ashraf

सिर्फ़ उनके ख़्यालात हैं, और यह ज़ाहिर है कि गुमान व ख़्याल की बातें हक़ के बराबर नहीं हो सकतीं। हदीस शरीफ़ में है कि गुमान से बचो, गुमान बदतरीन झूठ है। फिर अल्लाह तआ़ला अपने नबी से फ़रमाता है कि हक़ से मुँह मोड़ने वालों से आप भी मुँह मोड़ लें, उनकी निगाह तो सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िन्दगी पर है, और जिसका मक़सद व तमन्ना यह कमीनी दुनिया हो उसका अन्जाम कभी नेक नहीं होता, उनके इल्म का मक़सद व ग़र्ज़ भी यही है कि दुनिया को कमाने और दुनिया की कोशिश में हर वक़्त लगे रहें। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में घर न हो, और दुनिया उसका माल है जो आख़िरत में कंगाल हो। इसे जमा करने की धुन में वह रहता है जो अ़क़्ल से ख़ाली हो। एक मन्क़ूल दुआ़ में हुज़ूर सल्ल. के ये अलफ़ाज़ भी आये हैं:

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَهَمِّنَا وَلَامَبْلَغَ عِلْمِنَا.

ऐ परवर्दिगार! तू हमारी सबसे बड़ी कोशिश, ज़िन्दगी का मक़सद और मालूमात का मक़सद सिर्फ़ दुनिया ही को न कर।

फिर फ़रमाता है कि तमाम मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। अपने बन्दों की मस्लेहतों से सही तौर पर वही वाक़िफ़ है। जिसे चाहे हिदायत दे जिसे चाहे गुमराह रहने दे, सब कुछ उसकी क़ुदरत, इल्म और हिक्मत से हो रहा है। वह आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है अपनी शरीअ़त (क़ानून) में और अन्दाज़ मुक़र्रर करने में, वह ज़ुल्म और बेइन्साफ़ी नहीं करता।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۚ○ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۚ○	और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह सब अल्लाह ही के इख़्तियार में है, अन्जाम-कार यह है कि बुरा काम करने वालों को उनके (बुरे) काम के बदले में (ख़ास अन्दाज़ की) जज़ा देगा, और नेक काम करने वालों को उनके नेक कामों के बदले में जज़ा देगा। (31) वे लोग ऐसे हैं कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से (ख़ास तौर से ज़्यादा) बचते हैं, मगर हल्के-हल्के गुनाह, बेशक आपके रब की मग़फ़िरत बहुत बड़ी है वह तुमको (और तुम्हारे हालात को उस वक़्त से) ख़ूब जानता है जब तुमको ज़मीन से पैदा किया था, और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे, तो तुम अपने को नेक और पारसा मत समझा करो। (बस) तक़्वे वालों को वही ख़ूब जानता है। (32)

ع ۲/۷

ये ज़मीन व आसमान

ज़मीन व आसमान का मालिक वह ग़नी-ए-मुतलक़, असली शहनशाह हक़ीक़ी आ़दिल व ख़ालिक़ अल्लाह तआ़ला ही है। हर किसी को उसके आमाल का बदला देने वाला, नेकी पर नेक बदला और बदी पर

Maktab E Ashraf

बुरी सज़ा वही देगा। उसके नज़दीक भले लोग वे हैं जो उसकी हराम की हुई चीज़ों और कामों से, गुनाहों और बदकारियों व नालायकियों से अलग रहें, उनसे इनसान होने की वजह से अगर कभी कोई छोटा-मोटा गुनाह हो भी जाये तो परवर्दिगार पर्दा-पोशी करता है और माफ़ फ़रमा देता है। जैसा कि एक दूसरी आयत में इरशाद है:

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَاتُنْهَوْنَ عَنْهُ........ الخ.

अगर तुम उन कबीरा (बड़े) गुनाहों से पाकदामन रहे जिनसे तुम्हें रोक दिया गया है, तो हम तुम्हारी बुराईयाँ माफ़ फ़रमा देंगे और तुम्हें इज़्ज़त वाली जगह यानी जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

यहाँ भी फ़रमाया कि छोटी-छोटी ख़तायें और इनसान की कमज़ोरियाँ माफ़ हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं "लमम्" की तफ़सीर मेरे ख़्याल में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की बयान की हुई इस हदीस से ज़्यादा अच्छी कोई नहीं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने इब्ने आदम पर उसका ज़िना का हिस्सा लिख दिया है, जिसे वह यक़ीनन पाकर ही रहेगा। आँखों का ज़िना देखना है, ज़बान का ज़िना बोलना है। दिल उमंग और आरज़ू करता है, अब शर्मगाह चाहे उसे सच्चा कर दिखाये या झूठा। (बुख़ारी व मुस्लिम) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि आँखों का ज़िना निगाह डालना है और होंठों का ज़िना बोसा लेना है और हाथों का ज़िना पकड़ना है और पैर का ज़िना चलना है, और शर्मगाह उसे सच्चा करती है या झूठा कर देती है। यानी अगर शर्मगाह को न रोक सका और बदकारी कर बैठा है तो सब अंगों का ज़िना साबित, और अगर अपने इस अंग को रोक लिया तो वह सब "लमम्" में दाख़िल है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरवी है कि "लमम्" बोसा लेना, छेड़ना, देखना और छूना है, और जब शर्मगाहें (पेशाब के अंग) मिल गयीं तो ग़ुस्ल वाजिब हो गया, और ज़िना का गुनाह साबित हो गया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस जुमले की तफ़सीर यही मन्क़ूल है जो ऊपर बयान हुई। इमाम मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि गुनाह में लिप्त हो जाये फिर छोड़ दे तो "लमम्" में दाख़िल है। एक शायर कहता है:

اِنْ تَغْفِرِ اللّٰهُمَّ تَغْفِرْ جَمًّا وَاَیُّ عَبْدٍ لَّكَ مَا اَلَمَّا

ऐ अल्लाह! जब तू माफ़ फ़रमाता है तो सब ही कुछ माफ़ फ़रमा दे, वरना यूँ गुनाहों में फंसा हुआ तो हर इनसान है।

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) के लोग अपने तवाफ़ में उमूमन इस शे'र को पढ़ा करते थे। इब्ने जरीर में हुज़ूर सल्ल. का इस शे'र को पढ़ना मन्क़ूल है, और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सही ग़रीब कहते हैं। इमाम बज़्ज़ार रह. फ़रमाते हैं कि हमें इसकी दूसरी सनद मालूम नहीं, सिर्फ़ इसी सनद से मरफ़ूअ़न् मन्क़ूल है। इब्ने अबी हातिम और इमाम बग़वी ने भी इसे नक़ल किया है। इमाम बग़वी ने इसे सूरः तनज़ील में रिवायत किया है, लेकिन इस मरफ़ूअ़ के सही होने में कलाम है। एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मुराद यह है कि ज़िना से नज़दीकी होने के बाद तौबा करे और फिर न लौटे, चोरी के क़रीब हो जाने के बाद चोरी न की और तौबा करके लौट आया, इसी तरह शराब पीने के क़रीब होकर शराब न पी और तौबा करके लौट गया, ये सब "इल्माम" (यानी हल्के-फुल्के गुनाह) हैं जो एक मोमिन को माफ़ हैं। हज़रत हसन रज़ि. से भी यही मन्क़ूल है। एक रिवायत में सहाबा से उमूमन इसका मरवी होना बयान किया गया है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद शिर्क के अ़लावा गुनाह हैं। हज़रत इब्ने

ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि दो हदों के दरमियान (ज़िना की हद और अ़ज़ाबे आख़िरत)। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि हर वह चीज़ जो दो हदों के दरमियान हो हद्दे दुनिया और हद्दे आख़िरत, नमाज़ें उसका कफ़्फ़ारा बन जाती हैं, और वह हर वाजिब कर देनी वाली से कम है। हद्दे दुनिया तो वह है जो किसी गुनाह पर ख़ुदा ने दुनियावी सज़ा मुक़र्रर कर दी है, और हद्दे आख़िरत वह है जिस चीज़ पर ख़ुदा ने जहन्नम वाजिब कर दी है और उसकी सज़ा दुनिया में मुक़र्रर नहीं की, तेरे रब की बख़्शिश बहुत वसीअ़ है, हर चीज़ को घेर लिया और तमाम गुनाहों पर उसका इहाता (घेराव) है। जैसे एक जगह अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

قُلْ يَاعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا............ الخ.

ऐ मेरे वे बन्दो! जिन्होंने अपनी जान पर ज़्यादती की है, अल्लाह तआ़ला की रहमत से ना-उम्मीद न होना, अल्लाह तआ़ला तमाम गुनाहों को बख़्श देता है और वह बड़ी बख़्शिश वाला और बड़े रहम वाला है।

फिर फ़रमाया कि वह तुम्हें देखने वाला, तुम्हारे हर हाल का इल्म रखने वाला, तुम्हारे हर कलाम को सुनने वाला और तुम्हारे तमाम आमाल से वाक़िफ़ है, जबकि उसने तुम्हारे बाप आदम को ज़मीन से पैदा किया और उनकी पीठ से उनकी औलाद को निकाला जो चींवटियों की तरह फैल गयी, फिर उनकी तक़सीम करके दो गिरोह बना दिये एक जन्नत के लिये और एक जहन्नम के लिये, और जबकि तुम अपनी माँ के पेट में बच्चे थे, उसके मुक़र्रर किये हुए फ़रिश्ते ने रोज़ी, उम्र, नेकी, बदी लिख ली। बहुत से बच्चे पेट से ही गिर जाते हैं, बहुत से दूध पीने की हालत में मर जाते हैं, बहुत से दूध छूटने के बाद बालिग़ होने से पहले ही चल बसते हैं, बहुत से ऐन जवानी में इस दुनिया को ख़ाली कर जाते हैं। अब जबकि हम इन तमाम मन्ज़िलों को तय कर चुके और बुढ़ापे में आ गये, जिसके बाद कोई मन्ज़िल मौत के सिवा नहीं, अब भी अगर हम न संभलें तो हमसे बढ़कर ग़ाफ़िल कौन है? ख़बरदार! तुम अपने नफ़्स की पाकी बयान न करो, अपने नेक आमाल की तारीफ़ें करने न बैठ जाओ, ख़ुद की तारीफ़ करने न लगो, जिसके दिल में रब का डर है उसको रब ही ख़ूब जानता है। एक और आयत में है:

اَلَمْ تَرَاِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا.

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने नफ़्स की पाकीज़गी आप बयान करते हैं, वे नहीं जानते कि ख़ुदा के हाथ में है जिसे वह चाहे बरतर आला और पाक व साफ़ कर दे, किसी पर यह भी ज़ुल्म न होगा।

मुहम्मद बिन अ़मर बिन अ़ता रह. फ़रमाते हैं- मैंने अपनी लड़की का नाम बर्रा (नेक लड़की) रखा तो मुझसे हज़रत ज़ैनब बिन्ते अबू सलमा ने फ़रमाया- रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस नाम से मना फ़रमाया है। ख़ुद मेरा नाम भी बर्रा था, जिस पर आपने फ़रमाया- तुम ख़ुद अपनी बरतरी और पाकी आप बयान न करो, तुम में से नेकी वालों का इल्म पूरे तौर पर ख़ुदा ही को है। लोगों ने कहा कि फिर हम इसका क्या नाम रखें? फ़रमाया ज़ैनब नाम रखो। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. के सामने किसी ने एक शख़्स की बहुत तारीफ़ें कीं, बहुत तारीफ़ें बयान कीं। आप सल्ल. ने फ़रमाया- अफ़सोस तूने उसकी गर्दन मार दी। कई मर्तबा यही फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी की तारीफ़ ही करनी हो तो यूँ कहो- मेरा गुमान फ़ुलाँ शख़्स के बारे में ऐसा है, असल इल्म तो अल्लाह ही को है। फिर अपनी मालूमात बयान करो, ख़ुद किसी की पाकीज़गियाँ बयान करने न बैठ जाओ। अबू दाऊद और मुस्लिम में है कि एक शख़्स ने हज़रत उस्मान

Maktab E Ashraf

रज़ि. के सामने उनकी तारीफ़ें बयान करना शुरू कर दीं, इस पर हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद रज़ि. उसके मुँह में मिट्टी भरने लगे और फ़रमाया हमें रसूलुल्लाह सल्ल. का हुक्म है कि हम तारीफ़ें करने वालों के मुँह में मिट्टी भर दें।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰى ۝ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ۝ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰى ۝ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۝ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝ ثُمَّ يُجْزٰهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝	तो भला आपने ऐसे शख़्स को भी देखा जिसने (दीने हक़ से) मुँह मोड़ लिया (33) और थोड़ा माल दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34) क्या उस शख़्स के पास (किसी सही ज़रिये से) ग़ैब का इल्म है कि उसको देख रहा है। (35) क्या उसको उस मज़मून की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों में है (36) और तथा इब्राहीम (अलैहि.) के, जिन्होंने अहकाम पर पूरी तरह अ़मल किया। (37) (और वह मज़मून) यह (है) कि कोई शख़्स किसी का गुनाह अपने ऊपर नहीं ले सकता। (38) और यह कि इनसान को (ईमान के बारे में) सिर्फ़ अपनी ही कमाई मिलेगी। (39) और यह कि इनसान की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी। (40) फिर उसको पूरा बदला दिया जाएगा। (41)

इन लोगों का अन्जाम अच्छा नहीं

अल्लाह तआ़ला उन लोगों की मज़म्मत (बुराई और निंदा बयान) कर रहा है जो ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी से मुँह मोड़ लें। सच्चाई इख़्तियार न करें, न नमाज़ें अदा करें बल्कि झुठलायें, मुँह मोड़ें, राहे ख़ुदा में बहुत ही कम दें, दिल को नसीहत क़ुबूल करने वाला न बनायें, फिर कुछ कहना मान लिया, फिर रस्सियाँ काटकर अलग हो गये। अ़रब "अक्दा" उस वक़्त कहते हैं मिसाल के तौर पर कुछ लोग कुआँ खोद रहे हों, बीच में कोई सख़्त चट्टान आ जाये और वे खोदना छोड़ दें। फ़रमाता है- क्या उसके पास इल्मे ग़ैब है जिससे उसने जान लिया कि अगर मैं राहे ख़ुदा में अपना माल व ज़र दूँगा तो ख़ाली हाथ रह जाऊँगा। यानी दर असल मामला यह नहीं बल्कि यह सदक़े से, नेकी से और भलाई से कन्जूसी, लालच, ख़ुदग़र्ज़ी, नामुरादी और बेदिली से रुक रहा है। हदीस में है ऐ बिलाल! ख़र्च कर और अ़र्श वाले से फ़क़ीर बना देने का डर न रख, ख़ुद क़ुरआन में है:

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ.

तुम जो कुछ ख़र्च करोगे अल्लाह तआ़ला तुम्हें उसका बदला देगा और वही बेहतरीन रज़्ज़ाक़ है।

"वफ़्फ़ा" के एक मायने तो यह किये गये हैं कि उन्हें जो हुक्म किया गया था वह सब उन्होंने पहुँचा दिया, दूसरे मायने यह बयान किये गये हैं कि जो हुक्म मिला उस पर अ़मल किया। ठीक यह है कि ये दोनों ही मायने हैं, जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

Maktab E Ashraf

وَاِذِابْتَلٰى اِبْرَاهِيْمَ رَبُّهٗ..........الخ

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जब कभी जिस किसी आज़माईश के साथ उसके रब ने आज़माया, आपने कामयाबी के साथ उनको पूरा किया।

यानी हर हुक्म का पालन किया, हर मना किये हुए काम से रुके रहे, रब की रिसालत पूरी तरह पहुँचा दी। पस खुदा ने उन्हें इमाम बनाकर दूसरों को उनका ताबेदार बना दिया। जैसा कि क़ुरआन में इरशाद हुआ है:

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا.وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

फिर हमने तेरी तरफ़ 'वही' की (यानी अपना पैग़ाम भेजा) कि हज़रत इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो, जो मुश्रिक न थे।

इब्ने जरीर की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया- हर रोज़ वह दिन निकलते ही चार रक्अ़त अदा किया करते थे, यही उनकी वफ़ादारी थी। तिर्मिज़ी में एक हदीस है कि ऐ आदम के बेटे! शुरू दिन में तू मेरे लिये चार रक्अ़त नमाज़ अदा कर, मैं आख़िर दिन तक तेरी किफ़ायत करूँगा। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- हज़रत इब्राहीम के लिये लफ़्ज़ "वफ़्फ़ा" इसलिये फ़रमाया कि वह हर सुबह शाम इन आयतों को पढ़ा करते थे:

سُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ.

'सुब्हानल्लाहि ही-न तुमसू-न व ही-न तुस्बिहून'। यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. ने आयत ख़त्म की।

फिर बयान हो रहा है कि इब्राहीम व मूसा अ़लैहिमस्सलाम के सहीफ़ों (अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई छोटी छोटी किताबों) में क्या था? उनमें यह था कि जिस किसी ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया जैसे शिर्क व कुफ़्र किया, या छोटे बड़े गुनाह किये तो उसका वबाल खुद उस पर है। उसका यह बोझ कोई और न उठायेगा। जैसे क़ुरआने करीम में है:

وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ.......الخ

अगर कोई बोझल अपने बोझ की तरफ़ किसी को बुलायेगा तो उसमें से कुछ न उठाया जायेगा अगरचे वह क़राबतदार (रिश्तेदार और अ़ज़ीज़) ही हो।

सहीफ़ों में यह भी था कि इनसान के लिये सिर्फ़ वही है जो उसने हासिल किया, यानी जिस तरह उस पर दूसरे का बोझ नहीं लादा जायेगा, दूसरों के बुरे आमाल में भी उसे नहीं पकड़ा जायेगा, और इसी तरह दूसरे की नेकी भी उसे कुछ फ़ायदा न देगी। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. और उनके पैरोकारों ने इस आयत से इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है कि क़ुरआन ख़्वानी का सवाब मुर्दों को पहुँचाया जाये तो नहीं पहुँचता (लेकिन बाक़ी तीनों इमामों और दूसरे उलेमा व इमामों के नज़दीक क़ुरआन पढ़ने का सवाब पहुँच जाता है)। इसलिये कि न तो यह उनका अ़मल है न कोशिश। यही वजह है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इसका न जवाज़ बयान किया, न अपनी उम्मत को इस पर रग़बत दिलाई (शौक़ दिलाया) न उन्हें इस पर आमादा किया, न तो किसी स्पष्ट फ़रमान के ज़रिये से न किसी इशारे किनाये से। ठीक इसी तरह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में से भी किसी एक से भी यह साबित नहीं कि उन्होंने क़ुरआन पढ़कर उसके सवाब का हदिया मय्यित के लिये भेजा हो। अगर यह नेकी होती और मुताबिक़े शरीअ़त अ़मल होता तो हमसे बहुत

ज़्यादा सबक़त नेकियों की तरफ़ करने वाले सहाबा किराम रज़ि. थे। साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिये कि नेकियों के काम क़ुरआन व हदीस के स्पष्ट फ़रमान से ही साबित होते हैं, किसी क़िस्म की राय क़्यास का उनमें कोई दख़ल नहीं। हाँ दुआ़ और सदक़े का सवाब मय्यित को पहुँचता है, इस पर इजमा (सब की सहमति) है, और नबी करीम अ़लैहिस्सलाम के अलफ़ाज़ से साबित है। जो हदीस सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरवी है कि "रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- इनसान के मरने पर उसके आमाल कट (यानी बन्द हो) जाते हैं, लेकिन तीन चीज़ें- एक वह औलाद जो उसके लिये दुआ़ करती रहे, या वह सदक़ा जो उसके इन्तिक़ाल के बाद भी जारी रहे, या वह इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाता रहे। इसका यह मतलब है कि दर हक़ीक़त ये तीनों चीज़ें भी ख़ुद मय्यित की सई, उसकी कोशिश और उसी का अ़मल हैं। यानी किसी और के अ़मल का अज्र उसे नहीं पहुँच रहा।

सुनिये! हदीस में है कि सबसे बेहतर इनसान का खाना (रोज़ी) वह है जो उसने अपने हाथों से हासिल किया हो, उसकी अपनी कमाई हो और इनसान की औलाद भी उसी की कमाई और उसी की हासिल की हुई चीज़ है। पस साबित हुआ कि नेक औलाद जो उसके मरने के बाद उसके लिये दुआ़ करती है वह दर असल उसी का अ़मल है। इसी तरह सदक़ा-ए-जारिया जैसे वक़्फ़ वग़ैरह, कि वह भी उसी के अ़मल का असर है, और उसी का किया हुआ वक़्फ़ है। ख़ुद क़ुरआन फ़रमाता है:

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ .... الخ.

यानी हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और लिखते हैं जो भेज चुके और जो निशान उनके पीछे रहे।

इससे साबित होता है कि उनके पीछे छोड़े हुए नेक निशानात का सवाब उन्हें पहुँचता रहता है। रहा वह इल्म जिसे उसने लोगों में फैलाया और उसके इन्तिक़ाल के बाद भी लोग उस पर आ़मिल और कारबन्द रहे, वह भी दर असल उसी की कोशिश और उसी का अ़मल है, जो उसके बाद बाक़ी रहा और उसको उसका सवाब पहुँचता रहा। चुनाँचे सही हदीस में है कि जो शख़्स हिदायत की तरफ़ बुलाये और जितने लोग उसकी ताबेदारी करें (यानी उसका कहा मान लें) उन सब के अज्र के बराबर उसे अज्र मिलता है, जबकि उनके अज्र नहीं घटते।

फिर फ़रमाता है कि उसकी कोशिश क़ियामत के दिन जाँची जायेगी, उस दिन उसका अ़मल देखा जायेगा। जैसे एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया:

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ .... الخ.

यानी कह दे कि तुम अ़मल किये जाओ, अल्लाह तुम्हारे आमाल देखेगा, और उसका रसूल और ईमान वाले, और जल्द ही छुपे-खुले के जानने वाले ख़ुदा की तरफ़ लौटाये जाओगे। फिर वह तुम्हें तुम्हारे आमाल से ख़बरदार करेगा, यानी हर नेकी का सवाब और हर बदी की सज़ा देगा।

यहाँ भी फ़रमाया कि फिर उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

और यह कि (सब को) आपके रब ही के पास पहुँचना है। (42) और यह कि वही हंसाता और रुलाता है। (43) और यह कि वही मारता और जिलाता है। (44) और यह कि वही दोनों क़िस्म	وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ

Maktab E Ashraf

Maktab e Ashraf

وَاَحْيَا ۙ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۙ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۪ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۙ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۙ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۙ وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ۨ الْاُوْلٰى ۙ وَثَمُوْدَا۟ فَمَاۤ اَبْقٰى ۙ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۙ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝

यानी नर और मादा को बनाता है (45) नुत्फ़े से, जब वह (गर्भ में) डाला जाता है। (46) और यह कि (वायदे के मुताबिक़) दोबारा पैदा करना उसके ज़िम्मे है। (47) और यह कि वही मालदार करता है और सरमाया (देकर महफ़ूज़ और) बाक़ी रखता है। (48) और यह कि वही मालिक है शिअ्रा (सितारे) का भी, (49) और यह कि उसने पुरानी क़ौम आद को (उसके कुफ़्र की वजह से) हलाक किया (50) और समूद को भी, कि (उनमें से) किसी को बाक़ी न छोड़ा। (51) और उनसे पहले नूह की क़ौम को (हलाक किया) बेशक वे सबसे बढ़कर ज़ालिम और शरीर थे। (52) और उल्टी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। (53) (और फिर उन बस्तियों को) घेर लिया, जिस चीज़ ने कि घेर लिया। (54) सो तू अपने रब की कौन-कौन सी नेमत में शक (और इनकार) करता रहेगा? (55)

सब को अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटना है

इरशाद है कि लौटना आख़िर ख़ुदा ही की तरफ़ है। क़ियामत के दिन सब को लौटकर उसी के सामने पेश होना है। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने क़बीला बनू अवद में ख़ुतबा पढ़ते हुए फ़रमाया- ऐ बनी अवद! मैं ख़ुदा के पैग़म्बर सल्ल. का क़ासिद बनकर तुम्हारी तरफ़ आया हूँ तुम यक़ीन करो कि तुम्हारा सब का लौटना ख़ुदा की तरफ़ है। फिर या तो जन्नत में पहुँचाये जाओगे या जहन्नम में धकेले जाओगे। तफ़सीरे बग़वी में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि "अल्लाह तआ़ला की ज़ात में विचार करना जायज़ नहीं" जैसे दूसरी हदीस में है कि मख़्लूक़ पर ग़ौर भरी नज़रें डालो लेकिन ज़ाते ख़ालिक़ में गहरे न उतरो, उसे अ़क्ल व समझ, फ़िक्र व ज़ेहन नहीं पा सकता। अगरचे इन लफ़्ज़ों से यह हदीस महफ़ूज़ नहीं है मगर सही हदीस में भी यह मज़मून मौजूद है। उसमें है कि शैतान किसी के पास आता है और कहता है- उसे किसने पैदा किया? और उसे किसने पैदा किया? यहाँ तक कि कहता है कि अल्लाह तआ़ला को किसने पैदा किया? जब तुममें से किसी के दिल में यह वस्वसा (बुरा ख़्याल) पैदा हो तो "अऊज़ु बिल्लाह..........." पढ़ ले और इस ख़्याल को दिल से निकाल दे।

सुनन की एक हदीस में है कि अल्लाह की मख़्लूक़ात (पैदा की हुई और बनाई हुई चीज़ों) में ग़ौर व फ़िक्र करो, लेकिन अल्लाह की ज़ात में ग़ौर व फ़िक्र न करो। सुनो! अल्लाह तआ़ला ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है जिसके कान की लौ से लेकर मोंढे तक तीन सौ साल का रास्ता है (या जैसे आपने फ़रमाया हो)।

फिर फ़रमाता है कि बन्दों में हंसने रोने का माद्दा और उनके असबाब भी उसी ने पैदा किये हैं, जो

बिल्कुल मुख़्तलिफ़ (भिन्न) हैं। वही मौत और ज़िन्दगी का ख़ालिक़ है। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

اَلَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوۃَ.

उसी ने मौत व हयात को पैदा किया, उसी ने नुत्फ़े (ख़ास पानी के क़तरे) से हर जानदार का जोड़ा बनाया। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान हैः

اَیَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ یُّتْرَکَ سُدًی........... الخ.

क्या इनसान समझता है कि वह बेकार छोड़ दिया जायेगा? क्या वह मनी (वीर्य) का क़तरा न था जो रहम (माँ के पेट अर्थात गर्भ) में टपकाया जाता है, फिर क्या वह जमा हुआ ख़ून न था? फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे पैदा किया और दुरुस्त (ठीक-ठाक) किया और उससे जोड़े यानी नर व मादा बनाये। क्या (ऐसी क़ुदरतों वाला) ख़ुदा इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दे को ज़िन्दा कर दे?

फिर फ़रमाता है कि वही दोबारा ज़िन्दा करेगा, जैसे उसने इब्तिदा में (यानी शुरू में पहली बार) पैदा किया है। इसी तरह मार डालने के बाद दोबारा की पैदाईश भी उसी के ज़िम्मे है। उसी ने अपने बन्दों को ग़नी बना दिया है, और माल उनके क़ब्ज़े में दे दिया है, जो उनके पास ही बतौर पूँजी के रहता है। अक्सर मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) के कलाम का ख़ुलासा इस मक़ाम पर यही है अगरचे बाज़ से मन्क़ूल है कि उसने माल दिया और ग़ुलाम दिये। उसने दिया और ख़ुश हुआ इसे ग़नी करके, और मख़्लूक़ को इसका मोहताज बना दिया, जिसे चाहा ग़नी किया, जिसे चाहा फ़क़ीर। लेकिन ये पिछले दोनों क़ौल अलफ़ाज़ से कुछ ज़्यादा मुताबक़त (तालमेल) नहीं रखते।

'शिअ़्रा' उस रोशन सितारे का नाम है जिसे 'मिर्ज़मुल-जौज़ा' भी कहते हैं। अ़रब के कुछ लोग उसकी पूजा करते थे। 'आ़दे ऊला'' यानी क़ौमे हूद को जिसे आ़द बिन इरम बिन साम बिन नूह कहा जाता है, उसी ने उनको सरकशी और नाफ़रमानी की बिना पर तबाह कर दिया। जैसे क़ुरआन में एक दूसरी जगह इरशाद फ़रमायाः

اَلَمْ تَرَ کَیْفَ فَعَلَ رَبُّکَ بِعَادٍ....... الخ.

यानी क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने आ़द के साथ क्या किया? यानी इरम के साथ जो बड़े क़द्दावर थे, जिनका जोड़ (यानी उन जैसा) शहरों में पैदा नहीं किया गया था।

यह क़ौम बड़ी ताक़तवर और बड़ी ज़ोरावर थी। साथ ही ख़ुदा की बड़ी नाफ़रमान और रसूल से बड़ी सरकशी करने वाली थी। उनमें से कोई बाक़ी न बचा, और उनसे पहले क़ौमे नूह तबाह हो चुकी है, जो बड़े नाइन्साफ़ और शरीर थे, और लूत की बस्तियाँ जिन्हें ख़ुदा तआ़ला ने तबाह व बरबाद कर दिया और आसमानी पत्थरों से सब बदकारों को हलाक कर दिया। उन्हें एक चीज़ ने ढाँप लिया यानी पत्थरों ने, जिनकी बारिश उन पर बरसी और बुरे हालों तबाह हुए। उन बस्तियों में चार लाख आदमी आबाद थे, आबादी की सारी ज़मीन आग, गन्धक और तेल बनकर उन पर भड़क उठी। हज़रत क़तादा रह. का यही क़ौल है जो बहुत ग़रीब सनद से इब्ने अबी हातिम में मौजूद है।

आगे फ़रमाया कि फिर तू ऐ इनसान! अपने रब की किस-किस नेमत में झगड़ेगा? बाज़ कहते हैं कि यह ख़िताब नबी सल्ल. से है, लेकिन ख़िताब को आ़म रखना बहुत बेहतर है। इमाम इब्ने जरीर रह. भी आ़म रखने को ही पसन्द फ़रमाते हैं (यानी हर शख़्स को यह ख़िताब है)।

Maktab E Ashraf

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۝ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝	यह (पैग़म्बर) भी पहले पैग़म्बरों की तरह एक पैग़म्बर हैं। (56) (इनको मान लो क्योंकि) वह जल्दी आने वाली चीज़ क़रीब आ पहुँची है। (57) अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई उसका हटाने वाला नहीं। (58) सो क्या (ऐसी ख़ौफ़ की बातें सुनकर भी) तुम लोग इस (अल्लाह के) कलाम से ताज्जुब करते हो (59) और हंसते हो? और (अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से) रोते नहीं हो? (60) और तुम तकब्बुर करते हो। (61) सो अल्लाह की इताअ़त करो और (किसी को उसका शरीक बनाए बग़ैर उसकी) इबादत करो। (62) ✿ (सज्दा)

✿ सज्दा नम्बर- 12

السجدة ۱۲ ع ۳

क़ियामत

यह ख़ौफ़ और डर से आगाह करने वाले हैं, यानी हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। आपकी रिसालत भी ऐसी ही है जैसी आप से पहले रिसालत थी। जैसा कि एक और आयत में है:

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ.

यानी मैं कोई नया रसूल तो हूँ नहीं, रिसालत मुझसे शुरू नहीं हुई बल्कि मुझसे पहले भी अल्लाह के बहुत से रसूल आ चुके हैं। क़रीब आने वाली का वक़्त आ लगा, यानी क़ियामत क़रीब आ गयी। न तो उसे कोई तय कर सके न उसके आने के सही निर्धारित वक़्त का किसी को इल्म है। "नज़ीर" अ़रबी में उसको कहते हैं जैसे एक जमाअ़त है जिसमें से एक शख़्स ने कोई डरावनी चीज़ देखी और अपनी क़ौम को उससे आगाह करता है, यानी डर और ख़ौफ़ की ख़बर सुनाने वाला। जैसे एक और आयत में है:

اِنِّيْ نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ.

मैं तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब से मुत्तला करने वाला हूँ।

हदीस में है कि मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला डराने वाला हूँ। यानी जिस तरह कोई शख़्स किसी बुराई को देख ले कि वह क़ौम के क़रीब पहुँच चुकी है और फिर जिस हालत में हो उसी में दौड़ा भागा आ जाये और क़ौम को एक दम से फ़ौरन सचेत कर दे कि देखो वह बला आ रही है, फ़ौरन अपना बचाव कर लो, इसी तरह क़ियामत के हौलनाक अ़ज़ाब भी लोगों की ग़फ़लत की हालत में उनसे बिल्कुल क़रीब हो गये हैं और हुज़ूरे पाक सल्ल. उन अ़ज़ाबों से होशियार कर रहे हैं। जैसे कि इसके बाद की सूरत में है:

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ.

क़ियामत क़रीब आ चुकी।

मुस्नद अहमद की हदीस में है- ऐ लोगो! गुनाहों को छोटा और हक़ीर जानने से बचो। सुनो छोटे-छोटे गुनाहों की मिसाल ऐसी है जैसे एक क़ाफ़िला किसी जगह उतरा, सब इधर-उधर चले गये और लकड़ियाँ

समेट कर थोड़ी-थोड़ी ले आये, तो अगर एक के पास लकड़ियाँ कम हैं लेकिन जब वह सब जमा कर ली जायें तो एक अंबार (ढेर) लग जाता है, जिससे देगें की देगें पक जायें। इसी तरह छोटे-छोटे गुनाह जमा होकर ढेर लग जाता है और अचानक उस गुनाहगार को पकड़ लिया जाता है, और वह हलाक हो जाता है। एक और हदीस में है कि मेरी और क़ियामत की मिसाल ऐसी है, फिर आपने अपनी शहादत और बीच की उंगली उठाकर उनका फ़ासला दिखाया। फ़रमाया- मेरी और क़ियामत की मिसाल दो घोड़ों की सी है। मेरी और आख़िरत के दिन की मिसाल ठीक इसी तरह है जिस तरह एक क़ौम ने किसी शख़्स को हालात की ख़बर लाने को किसी ऊँची जगह पर भेजा, उसने दुश्मन के लश्कर को बिल्कुल नज़दीक की कमीनगाह पर छापा मारने के लिये तैयार देखा, यहाँ तक कि उसे डर लगा कि मेरे पहुँचने से पहले ही कहीं ये न पहुँच जायें, तो वह एक टीले पर चढ़ गया और वहीं कपड़ा हिला-हिला कर उन्हें इशारे से बतला दिया कि ख़बरदार होशियार हो जाओ, दुश्मन सर पर मौजूद है। पस मैं ऐसा ही डराने वाला हूँ। इस हदीस की ताईद में और भी बहुत सी हसन और सही हदीसें मौजूद हैं।

फिर मुश्रिकों के इस फ़ेल पर इनकार (रद्द) फ़रमाया कि वह क़ुरआन सुनते हैं मगर मुँह फेर लेते हैं और बेपरवाही बरतते हैं, बल्कि उसकी रहमत से ताज्जुब के साथ इनकार कर बैठते हैं और उससे मज़ाक़ और हंसी करने लगते हैं। चाहिये तो यह था कि ईमान वालों की तरह उसे सुनकर रोते, इबरत हासिल करते, जैसे मोमिनों की हालत बयान फ़रमाई कि वे इस कलामुल्लाह शरीफ़ को सुनकर रोते धोते सज्दे में गिर पड़ते हैं और आजिज़ी और अल्लाह की तरफ़ झुकने में बढ़ जाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि "समद" गाने को कहते हैं, यह यमनी भाषा का लफ़्ज़ है। आप से "सामिदून" के मायने मुँह फेरने वाले और तकब्बुर करने वाले के भी मन्क़ूल हैं। हज़रत अ़ली और हसन रज़ि. फ़रमाते हैं कि ग़फ़लत करने वाले।

फिर अपने बन्दों को हुक्म देता है कि तौहीद व इख़्लास के पाबन्द रहो, अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले और उसको एक माबूद मानने वाले बन जाओ। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने और आपके साथ मुसलमानों और मुश्रिकों ने, जिन्नात व इनसानों ने सूरः नज्म के सज्दे के मौक़े पर सज्दा किया। मुस्नद अहमद में है कि मक्का में रसूलुल्लाह सल्ल. ने सूरः नज्म (यानी यही सूरत) पढ़ी, पस आपने सज्दा किया और उन लोगों ने भी जो आपके पास थे। हदीस के रावी मुत्तलिब बिन अबी वदाआ़ कहते हैं कि मैंने अपना सर उठाया और सज्दा न किया, यह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, इस्लाम के बाद जिस किसी की ज़बान से इस मुबारक सूरत की तिलावत सुनते सज्दा करते। यह हदीस नसाई शरीफ़ में भी है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः नज्म की तफ़सीर पूरी हुई। इस पर उसका बेहद शुक्र है।

Maktab E Ashraf

Mahtab E Ashraf

सूरः क़मर

सूरः क़मर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 55 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः क़मर

अबू वाकिद की रिवायत से पहले गुज़र चुका है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ईदुल-अज़हा (बक़र-ईद) और ईदुल-फ़ित्र की नमाज़ में सूरः क़ॉफ़ और सूरः क़मर पढ़ा करते थे। इसी तरह बड़ी-बड़ी महफ़िलों में भी आप इन दोनों की तिलावत फ़रमाया करते थे, क्योंकि इनमें नेकियों पर वायदा और गुनाहों पर सज़ा, पैदाईश की शुरूआ़त और दोबारा ज़िन्दा होने के साथ ही तौहीद (अल्लाह के एक होने) और रिसालत के साबित होने वग़ैरह अहम इस्लामी मक़ासिद (उद्देश्यों और मुद्दों) का ज़िक्र है।

क़ियामत नज़दीक आ पहुँची और चाँद फट गया। (1) और ये लोग अगर कोई मोजिज़ा देखते हैं तो टाल देते हैं और कहते हैं कि यह जादू है जो अभी ख़त्म हुआ जाता है। (2) उन लोगों ने झुठलाया और अपनी नफ़्सानी इच्छाओं की पैरवी की, और हर बात को क़रार आ जाता है। (3) और उन लोगों के पास (तो पहले गुज़री हुई उम्मतों की भी) ख़बरें इतनी पहुँच चुकी हैं कि उनमें (काफ़ी) इबरत (4) यानी आला दर्जे की समझ और अ़क्लमन्दी (हासिल हो सकती) है। सो (उनकी कैफ़ियत यह है कि) ख़ौफ़ दिलाने वाली चीज़ें उनको कुछ फ़ायदा ही नहीं देतीं। (5)	اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ○ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ○ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ○ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ○ حِكْمَةٌ ۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ○

चाँद का फटना

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के नज़दीक होने और दुनिया के ख़ात्मे की इत्तिला देता है। जैसे एक और आयत में है:

اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ.

Maktab E Ashraf

अल्लाह का अम्र (हुक्म) आ चुका, अब तो उसकी तलब की जल्दी छोड़ दो। एक और जगह फ़रमायाः

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ........ الخ.

लोगों के हिसाब का वक़्त आ पहुँचा और वे अब तक ग़फ़लत में हैं।

इस मज़मून की हदीसें भी बहुत सारी हैं। बज़्ज़ार में है, हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि सूरज के डूबने के वक़्त जबकि वह थोड़ा सा ही बाक़ी रह गया था, रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सहाबा को ख़ुतबा दिया, जिसमें फ़रमाया- उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि दुनिया के गुज़रे हुए हिस्से में और बाक़ी बचे हिस्से में वही निस्बत है जो इस दिन के गुज़रे हुए और बाक़ी बचे हुए हिस्से में है। इस हदीस के रावियों में हज़रत ख़ल्फ़ बिन मूसा को इब्ने हिब्बान मोतबर रावियों में गिनते तो हैं लेकिन फ़रमाते हैं कि कभी-कभी ख़ता (चूक) भी कर जाते थे। दूसरी रिवायत में जो इसकी मज़बूती बल्कि तफ़सीर भी करती है वह मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की रिवायत है, कि अ़सर के बाद जबकि सूरज बिल्कुल छुपने के क़रीब हो चुका था, रसूले करीम सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारी उम्रें पहले गुज़रे लोगों की उम्रों के मुक़ाबले में इतनी ही हैं जितना यह बाक़ी दिन गुज़रे हुए दिन के मुक़ाबले में है। मुस्नद की एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपनी कलिमे की और बीच की उंगली से इशारा करके फ़रमाया कि मैं और क़ियामत इस तरह मबऊस किये गये हैं। एक और रिवायत में इतनी ज़्यादती है कि क़रीब था कि वह मुझसे पहले आ जाये।

वलीद बिन अ़ब्दुल-मलिक के पास जब हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. पहुँचे तो उसने क़ियामत के बारे की हदीस का सवाल किया, जिस पर आपने फ़रमाया- मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि तुम और क़ियामत इन दो उंगलियों की तरह हो। इसकी शहादत इस हदीस से हो सकती है जिसमें आपके मुबारक नामों में से एक नाम हाशिर आया है, और हाशिर वह है जिसके क़दमों पर लोगों का हश्र हो (यानी उनको खड़ा किया जाये)। हज़रत बहज़ की रिवायत है कि हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ि. ने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया और कभी कहते कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमें ख़ुतबा सुनाते हुए अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया- दुनिया के ख़ात्मे का ऐलान हो चुका, यह पीठ फेरे भागी जा रही है और जिस तरह बरतन का खाना खा लिया जाये और किनारों में कुछ बाक़ी लगा लिपटा रह जाये, इसी तरह दुनिया की उम्र का तमाम हिस्सा निकल चुका, सिर्फ़ बराये नाम बाक़ी रह गया है। तुम यहाँ से ऐसे जहान की तरफ़ जाने वाले हो जिसे फ़ना नहीं। पस तुमसे जो हो सके भलाईयाँ अपने साथ लेकर जाओ। सुनो! हमसे ज़िक्र किया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जायेगा और जो बराबर सत्तर साल तक नीचे की तरफ़ जाता रहेगा, लेकिन नीचे तक न पहुँचेगा। ख़ुदा की क़सम जहन्नम का यह गहरा गड्ढा इनसानों से भरा जाने वाला है। तुम इस पर ताज्जुब न करो। हमने यह ज़िक्र भी सुना है कि जन्नत की चौखट की दो लकड़ियों के बीच चालीस साल का रास्ता है, और वह भी एक दिन इस क़द्र पुर होगी कि भरी नज़र आयेगी.....।

(मुस्लिम शरीफ़)

अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिद के साथ मदाइन गया और बस्ती से तीन मील के फ़ासले पर हम ठहरे, जुमा के लिये मैं भी अपने वालिद के साथ गया, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. ख़तीब थे, आपने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया- लोगो सुनो! अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि क़ियामत क़रीब आ गयी और चाँद दो टुकड़े हो गया। बेशक क़ियामत क़रीब आ चुकी है, बेशक चाँद फट गया है। आज का दिन

Maktaba Ashraf

कोशिश और तैयारी का है, कल तो दौड़ भाग करके आगे बढ़ जाने का दिन होगा। मैंने अपने बाप से मालूम किया कि क्या कल दौड़ भाग होगी? जिसमें आगे निकलना होगा? मेरे बाप ने मुझसे फ़रमाया तुम नादान हो, यहाँ मुराद नेक आमाल में एक दूसरे से आगे बढ़ना है। दूसरे जुमे को जब हम आये तो भी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. को यही फ़रमाते हुए सुना, उसके आख़िर में यह भी फ़रमाया कि मक़सद आग से बचना है और आगे बढ़ने वाला वह है जो जन्नत में पहले पहुँच गया।

चाँद का दो टुकड़े हो जाना यह हुज़ूरे पाक सल्ल. के ज़माने का ज़िक्र है, जैसा कि मुतवातिर (लगातार) हदीसों में सेहत के साथ है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये पाँचों चीज़ें रोम, धुआँ, लिज़ाम, बतशा और चाँद का फटना यह सब गुज़र चुका है। इस बारे की हदीसें सुनिये।

मुस्नद अहमद में है कि मक्का वालों ने नबी करीम सल्ल. से मोजिज़ा तलब किया, जिस पर दो मर्तबा चाँद शक़ हो गया (फट गया) जिसका ज़िक्र इन दोनों आयतों में है। बुख़ारी में है कि उन्हें चाँद के दो टुकड़े दिखा दिये, एक हिरा पहाड़ के इस तरफ़ एक उस तरफ़। मुस्नद में है कि एक टुकड़ा एक पहाड़ पर दूसरा दूसरे पहाड़ पर। इसे देखकर भी जिनकी क़िस्मत में ईमान न था, बोल पड़े कि मुहम्मद ने हमारी आँखों पर जादू कर दिया है (अल्लाह की पनाह), लेकिन समझदारों ने कहा कि अगर मान लिया जाये कि हम पर जादू कर दिया है तो तमाम दुनिया के लोगों पर तो नहीं कर सकते। एक और रिवायत में है कि यह वाक़िआ हिजरत से पहले का है। और रिवायतें भी बहुत सी हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है कि हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में चाँद ग्रहण हुआ, काफ़िर कहने लगे चाँद पर जादू हुआ है, इस पर ये शुरू की दो आयतें उतरीं। इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब चाँद फटा और उसके दो टुकड़े हुए, एक पहाड़ के पीछे और एक आगे, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ऐ अल्लाह! तू गवाह रह। मुस्लिम और तिर्मिज़ी वग़ैरह में यह हदीस है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि सब लोगों ने इसे अच्छी तरह देखा और आपने फ़रमाया देखो याद रखना और गवाह रहना। आप फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. और हम सब मिना में थे। एक और रिवायत में है कि मक्का में थे।

अबू दाऊद तयालिसी में है कि काफ़िरों ने यह देखकर कहा- यह इब्ने अबी कबशा (यानी रसूलुल्लाह सल्ल.) का जादू है। लेकिन समझदारों ने कहा मान लो हम पर जादू किया है, लेकिन सारी दुनिया पर तो नहीं कर सकता। अब जो लोग सफ़र से आयें उनसे मालूम करना कि क्या उन्होंने भी इस रात चाँद को दो टुकड़े देखा था? चुनाँचे जब वे आये उनसे पूछा, उन्होंने भी इसकी तस्दीक़ की कि हाँ फ़ुलाँ रात हमने चाँद को दो टुकड़े होते देखा था। काफ़िरों के मजमे ने यह तय किया था कि अगर बाहर के लोग आकर यही कहें तो मुहम्मद (हुज़ूर सल्ल.) की सच्चाई में कोई शक नहीं। अब जो बाहर से आया, जब कभी आया, जिस तरफ़ से आया, हर एक ने इसकी गवाही दी कि हाँ हमने अपनी आँखों से देखा है। इसी का बयान इस आयत में है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि पहाड़ चाँद के दो टुकड़ों के दरमियान दिखाई देता था। एक और रिवायत में है कि आपने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से फ़रमाया- ऐ अबू बक्र! तुम गवाह रहना, और मुश्रिकों ने इस ज़बरदस्त मोजिज़े को भी जादू कहकर टाल दिया। इसी का ज़िक्र इस आयत में है कि ये जब दलील हुज्जत और बुरहान देखते हैं तो आसानी से कह देते हैं कि यह जादू है और मानते नहीं, बल्कि हक़ को झुठलाकर अहकामे नबवी के ख़िलाफ़ अपनी नफ़्सानी इच्छा के पीछे पड़े रहते हैं, अपनी जहालत और कम-अ़क़्ली से बाज़ नहीं आते।

Maktab E Ashraf

हर अम्र मुस्तक़िर है (हर बात को क़रार आ जाता है) यानी ख़ैर ख़ैर वालों के साथ और बुराई बुराई वालों के साथ है। और यह भी मायने हैं कि क़ियामत के दिन हर मामला वाक़े होने वाला है। पहले लोगों के वे वाक़िआत जो दिल को हिला देने वाले और अपने अन्दर पूरी इबरत व नसीहत रखने वाले हैं। उनके पास आ चुके हैं, उनके झुठलाने के सिलसिले में उन पर जो बलायें उतरीं और उनके जो क़िस्से उन तक पहुँचे वे पूरी तरह इबरत व नसीहत के ख़ज़ाने हैं और वअ़ज़ व हिदायत से पुर हैं। अल्लाह तआ़ला जिसे चाहे हिदायत करे और जिसे चाहे गुमराह करे, इसमें भी उसकी हिक्मत मौजूद है। उन पर बदबख़्ती लिखी जा चुकी है, जिनके दिलों पर मोहर लग चुकी है, उन्हें कोई हिदायत पर नहीं ला सकता। जैसे फ़रमायाः

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ...... الخ.

अल्लाह तआ़ला की दलीलें हर तरह कामिल हैं, अगर वह चाहता तो सब को हिदायत पर ला खड़ा करता। एक और जगह हैः

فَمَا تُغْنِ الْاٰيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ.

बेईमानों को किसी मोजिज़े ने और किसी डर ने और डर सुनाने वाले ने कोई नफ़ा न पहुँचाया।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝

तो आप उनकी तरफ़ से कुछ ख़्याल न कीजिए। जिस दिन एक बुलाने वाला फ़रिश्ता (उनको) एक ना-पसन्दीदा चीज़ की तरफ़ बुलाएगा (6) उनकी आँखें (ज़िल्लत की वजह से) झुकी हुई होंगी (और) क़ब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे जैसे टिड्डियाँ फैल जाती हैं। (7) (और फिर निकलकर) बुलाने वाले की तरफ़ दौड़े चले जा रहे होंगे। काफ़िर कहते होंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। (8)

बड़ा भारी और सख़्त दिन

इरशाद होता है कि ऐ नबी! तुम उन काफ़िरों को जिनके लिये मोजिज़ा वग़ैरह भी मुफ़ीद नहीं, छोड़ दो। उनसे मुँह फेर लो और उन्हें क़ियामत के इन्तिज़ार में रहने दो। उस दिन उन्हें हिसाब की जगह ठहरने के लिये एक पुकारने वाला पुकारेगा, जो हौलनाक जगह होगी, जहाँ बलायें और आफ़तें होंगी। उनके चेहरों पर ज़िल्लत और ख़स्तगी बरस रही होगी। नदामत की वजह से आँखें नीचे को झुकी हुई होंगी और क़ब्रों से निकलेंगे, फिर जिस तरह टिड्डी दल चलता है उसी तरह ये भी बिखरे हुए तेज़ी के साथ मैदाने हिसाब की तरफ़ भागेंगे। पुकारने वाले की पुकार पर कान होंगे और तेज़-तेज़ चल रहे होंगे, न मुख़ालफ़त की ताब है न देर लगाने की ताक़त। उस सख़्त हौलनाक सख़्त दिन को देखकर काफ़िर चीख़ उठेंगे कि यह तो बड़ा भारी और बेहद सख़्त दिन है।

Maktab E Ashraf

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا
وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَّازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي
مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ
السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ
قَدْ قُدِرَ ۝ وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَّ
دُسُرٍ ۝ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا ۚ جَزَاءً لِّمَنْ كَانَ
كُفِرَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ
مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَ
لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَّكِرٍ ۝

उन लोगों से पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम ने झुठलाया, यानी हमारे (ख़ास) बन्दे (नूह अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया और कहा कि यह मजनूँ है, और नूह (अ़लैहिस्सलाम) को धमकी दी गई। (9) तो नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने रब से दुआ़ की कि मैं आ़जिज़ हूँ सो आप (इनसे) इन्तिक़ाम लीजिए। (10) पस हमने कसरत से बरसने वाले पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए (11) और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, फिर (आसमान और ज़मीन का) पानी उस काम के (पूरा होने के) लिए मिल गया जो (अल्लाह के इल्म में) तजवीज़ हो चुका था। (12) और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को (मोमिनों के साथ) सवार किया तख़्तों और मेख़ों वाली कश्ती पर (13) जो कि हमारी निगरानी में चल रही थी। यह सब कुछ उस शख़्स का बदला लेने के लिए किया जिसकी बेक़द्री की गई थी। (14) और हमने इस वाक़िए को इबरत के वास्ते रहने दिया, क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (15) फिर (देखो) मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ। (16) और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (17)

तूफ़ाने नूह

यानी ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आपकी इस उम्मत से पहले हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की उम्मत ने भी अपने नबी की जो हमारे बन्दे थे तकज़ीब की (यानी उनको झुठलाया), उसे मजनूँ कहा और हर तरह डाँटा-डपटा और धमकाया। साफ़ कह दिया था कि ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आये तो हम तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे। हमारे बन्दे और रसूल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने हमें पुकारा कि ऐ परवर्दिगार! मैं उनके मुक़ाबले में बिल्कुल कमज़ोर और ज़ईफ़ हूँ मैं किसी तरह न अपनी हस्ती को संभाल सकता हूँ न तेरे दीन की हिफ़ाज़त कर सकता हूँ। तू ही मेरी मदद फ़रमा, वरना मुझे ग़लबा दे। उनकी यह दुआ़ क़बूल हुई और उस काफ़िर क़ौम पर मशहूर तूफ़ाने नूह भेजा गया। मूसलाधार बारिश के दरवाज़े आसमान से और उबलते हुए पानी के चश्मे ज़मीन से खोल दिये गये, यहाँ तक कि जो पानी की जगह न थी, जैसे तन्दूर

Maktab E Ashraf

वग़ैरह वहाँ से भी ज़मीन पानी उगल रही थी। हर तरफ़ पानी भर गया था, न आसमान से बरसना बन्द हुआ न ज़मीन से उबलना, और इस तरह एक तयशुदा फ़ैसला होकर रहा। हमेशा पानी बादल से बरसता है लेकिन उस वक़्त आसमान से पानी के दरवाज़े खोल दिये गये थे, और अ़ज़ाबे ख़ुदा पानी की शक्ल में बरस रहा था। न उससे पहले कभी इतना पानी बरसा न उसके बाद कभी ऐसा बरसेगा। उधर आसमान की यह रंगत इधर ज़मीन को हुक्म कि पानी उगल दे।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आसमान के दहाने खोल दिये गये और उसमें से डायरेक्ट पानी बरसा। उस तूफ़ान से हमने अपने बन्दे को बचा लिया, उन्हें कश्ती पर सवार कर लिया जो तख़्तों में कीलें लगाकर बनाई गयी थी। "दुसुर" के मायने कश्ती की बायीं तरफ़ का हिस्सा और शुरू का हिस्सा जिस पर मौज (पानी की लहर) थपेड़े मारती है, और उसके जोड़ और उसकी असल के भी किये गये हैं। वह हमारे हुक्म से हमारी आँखों के सामने हमारी हिफ़ाज़त में चल रही थी, और सही व सालिम जा रही थी। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की मदद में काफ़िरों से यह इन्तिक़ाम था, हमने इस वाक़िए को बतौर इबरत व निशानी के इसी तरह छोड़ दिया, यानी उस कश्ती को बतौर इबरत के बाक़ी रखा।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इस उम्मत के शुरू के लोगों ने भी उसे देखा है, लेकिन ज़ाहिर मायने यह हैं कि उस कश्ती के नमूने पर और कश्तियाँ हमने बतौर निशानी के दुनिया में क़ायम रखीं। जैसे एक और आयत में है:

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ.

यानी उनके लिये निशानी है कि हमने आदम की नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार कराया और कश्ती के जैसी और भी ऐसी सवारियाँ दीं जिन पर वे सवार हों। एक और जगह इरशाद है:

اِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ......... الخ.

यानी जब पानी में जोश और उफान आया तो हमने तुम्हें कश्ती में ले लिया ताकि तुम्हारे लिये नसीहत व इबरत हो, और याद रखने वाले कान इसे महफ़ूज़ रख सकें। पस कोई है जो नसीहत व इबरत और सबक़ हासिल करे?

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल. ने "मुद्दकिर" पढ़ाया है, ख़ुद हुज़ूर सल्ल. से भी इस लफ़्ज़ की क़िराअत इसी तरह मन्क़ूल है। हज़रत अस्वद रह. से सवाल होता है कि यह लफ़्ज़ 'दाल' से है या 'ज़ाल' से? फ़रमाया मैंने अ़ब्दुल्लाह से दाल के साथ सुना है और वह फ़रमाते थे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से दाल के साथ सुना है।

फिर फ़रमाता है कि मेरा अ़ज़ाब मेरे साथ कुफ़्र करने, मेरे रसूलों को झूठा कहने और मेरी नसीहत से इबरत न हासिल करने वालों पर कैसा हुआ? मैंने किस तरह अपने रसूलों के दुश्मनों से बदला लिया? और किस तरह उन दीन और हक़ के दुश्मनों को तहस-नहस कर दिया। हमने क़ुरआने करीम के अलफ़ाज़ और मायने को हर उस शख़्स के लिये आसान कर दिया है जो इससे नसीहत हासिल करने का इरादा रखे। जैसे एक और मक़ाम पर फ़रमाया:

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ......... الخ.

हमने तेरी तरफ़ यह मुबारक किताब नाज़िल फ़रमाई है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और

Maktab E Ashraf

इसलिये कि अ़क्लमन्द लोग याद रख लें। एक और जगह इरशाद है:

فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ...... الخ.

यानी हमने इसे तेरी ज़बान पर इसलिये आसान किया है कि तू परहेज़गार लोगों को ख़ुशी सुना दे और झगड़ालू लोगों को डरा दे।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इसकी क़िराअत और तिलावत अल्लाह तआ़ला ने आसान कर दी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला इसमें आसानी न रख देता तो मख़्लूक़ की ताक़त न थी कि अल्लाह तआ़ला के कलाम को पढ़ सके। मैं कहता हूँ कि इन्हीं आसानियों में से एक असानी वह है जो पहले हदीस में गुज़र चुकी कि यह क़ुरआन सात क़िराअतों पर नाज़िल किया गया है। इस हदीस की तमाम सनदें और अलफ़ाज़ हमने पहले जमा कर दिये हैं, अब दोबारा यहाँ ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। पस इस क़ुरआन को बहुत ही आसान कर दिया है, अब है कोई तालिबे इल्म जो इस ख़ुदाई इल्म को हासिल करे? जो बिल्कुल आसान है।

नोटः क़ुरआन के आसान होने का क्या मतलब है, इसके बारे में हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. फ़रमाते हैं कि क़ुरआनी मज़ामीन से इबरत, नसीहत और पन्द हासिल करना बिल्कुल आसान है। इसके हक़ायक़ पर इत्तिला, इससे मसाईल निकालना, इसके भेदों की जानकारी, मज़ामीन की गहराईयों का आंकलन, बहुत गहन और अहम तरीन फ़न है। जिसके लिये ख़ास उलूम, लम्बे अध्ययन, नेक नीयती, तक़वा व इख़्लास जैसी शर्तें हैं। अब इसी आयत को देखकर नया तालीम याफ़्ता दो-चार अ़रबी के लफ़्ज़ सीखकर कहता है कि क़ुरआन हम भी समझ सकते हैं, क़ुरआन का समझना कोई उलेमा की मख़्सूस जागीर नहीं, और दलील में ऐसी ही आयतों को इस्तेमाल करते हैं। वे यह नहीं समझते कि क़ुरआन के आसान होने का क्या मतलव है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

आ़द ने (भी अपने पैग़म्बर को) झुठलाया। सो (उसका क़िस्सा सुनो कि) मेरा अ़ज़ाब और डराना कैसा हुआ। (18) हमने उन पर एक तेज़ हवा भेजी, एक हमेशा रहने वाले नहूसत के दिन में। (19) वह हवा लोगों को इस तरह उखाड़-उखाड़ फेंकती थी कि गोया वे उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं। (20) सो (देखो) मेरा अ़ज़ाब और डराना कैसा (हौलनाक) हुआ। (21) और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (22)	كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ٥ إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ٥ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ٥ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ٥ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ٥ ع ٢٢ ٨

सख़्त ठंडी हवाओं के झक्कड़

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि क़ौमे हूद ने भी अल्लाह के रसूलों को झूठा कहा और बिल्कुल क़ौमे नूह की तरह सरकशी पर उतर आये, तो उन पर सख़्त ठण्डी घातक हवा भेजी गयी। वह दिन उनके लिये

Maktab E Ashraf

सरासर मन्हूस (बदबख़्ती का) था। बराबर उन पर हवायें चलती रहीं और उन्हें तबाह व बरबाद करती रहीं। दुनिया और आख़िरत के अज़ाबों में गिरफ़्तार कर लिये गये। हवा का झोंका आता और उनमें से किसी को उठाकर ले जाता, यहाँ तक कि ज़मीन वालों की निगाहों से वह दूर चला जाता। फिर उसे ज़मीन पर औंधे मुँह फेंक देता। सर कुचल जाता, भेजा निकल पड़ता, सर अलग धड़ अलग, ऐसा मालूम होता गोया खजूर के पेड़ के बिना सर के ठुड हैं। देखो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? मैंने तो इस क़ुरआन को आसान कर दिया जो चाहे नसीहत हासिल करे।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا
وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ
وَّسُعُرٍ ۝ ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ
هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ
الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ۝ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً
لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ
الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ
مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى
فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ اِنَّآ
اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا
كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝

समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया (23) और कहने लगे, क्या हम ऐसे शख़्स की पैरवी करेंगे जो हमारी जिन्स का आदमी है और अकेला है, तो इस सूरत में हम बड़ी ग़लती और (बल्कि) पागलपन में पड़ जाएँ। (24) क्या हम सब में से (चुनकर) उस पर वही नाज़िल हुई है? (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि यह बड़ा झूठा और बड़ा शैख़ीबाज़ है। (25) उनको बहुत जल्दी (मरते ही) मालूम हो जाएगा कि झूठा (और) शैख़ीबाज़ कौन था? (26) हम ऊँटनी को निकालने वाले हैं उनकी आज़माईश के लिए, सो उनको देखते-भालते रहना और सब्र से बैठे रहना। (27) और उन लोगों को यह बतला देना कि (कुएँ का) पानी उनमें बाँट दिया गया है, हर एक बारी पर बारी वाला हाज़िर हुआ करेगा। (28) सो उन्होंने अपने साथी (क़ेदार) को बुलाया, सो उसने (ऊँटनी पर) वार किया और मार डाला। (29) सो (देखो) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ। (30) हमने उन पर (फ़रिश्ते की) एक ही चीख़ को मुसल्लत किया, सो वे (उससे) ऐसे हो गए जैसे काँटों की बाढ़ लगाने वाले (की बाढ़) का चूरा। (31) और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (32)

ऐटमी धमाके

क़ौमे समूद वालों ने रसूले ख़ुदा हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुठलाया और ताज्जुब के तौर पर

Maktab E Ashraf

मुहाल समझ कर कहने लगे कि ऐसा हो भी सकता है कि हम अपने ही में से एक शख़्स के ताबेदार बन जायें? आख़िर उसकी इतनी बड़ी फ़ज़ीलत की क्या वजह है? फिर इससे आगे बढ़े और कहने लगे हम नहीं मान सकते कि हम सब में से सिर्फ़ उसी एक पर ख़ुदा की बातें नाज़िल हुईं। फिर इससे भी क़दम आगे बढ़ाया और अल्लाह के नबी को खुले लफ़्ज़ों में झूठा कहा, बतौर डाँट के अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अब तो जो चाहो कह लो लेकिन कल खुल जायेगा कि दर असल झूठा और झूठ में हद से बढ़ जाने वाला कौन था? हमने नबी को मुत्तला (बाख़बर) किया कि उनकी आज़माईश के लिये इम्तिहान बनाकर हम एक ऊँटनी निकालेंगे।

एक सख़्त चट्टान में से एक चकले चौड़े अंगों वाली गयाभन ऊँटनी निकली और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी से फ़रमाया कि तुम अब देखते रहो कि उनका अन्जाम क्या होता है और उनकी मुसीबत पर सब्र करो, दुनिया और आख़िरत में अन्जाम कार ग़लबा आप ही का रहेगा। अब उनसे कह दीजिए कि पानी पर एक दिन तो उनका है और एक दिन उस ऊँटनी का। जैसे कि एक और आयत में है:

لَهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ.

हर बारी मौजूद की गयी है, यानी जब ऊँटनी न हो तो पानी मौजूद है और जब ऊँटनी हो तो उसका दूध हाज़िर है। उन्होंने मिल-जुलकर अपने साथी क़ेदार बिन सालिफ़ को आवाज़ दी, यह बड़ा ही बदबख़्त था। जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

وَاِذِانْبَعَثَ اَشْقٰهَا.

उनमें का सबसे बुरा आदमी उठा, उसने आकर उसे पकड़ा और ज़ख़्मी किया, फिर तो उनके कुफ़्र व झुठलाने का मैंने भी पूरा बदला लिया, और जिस तरह खेती के कटे हुए सूखे उड़-उड़ाकर ख़त्म हो जाते हैं उन्हें भी हमने बेनाम व निशान कर दिया। ख़ुश्क चारा जिस तरह जंगल में उड़ता फिरता है उसी तरह उन्हें भी बरबाद कर दिया। या यह मतलब है कि अ़रब में जैसा कि दस्तूर था कि ऊँटों को सूखे काँटोंदार बाड़े में रख लिया करते थे, जब उस बाढ़ को रौंध दिया जाये उस वक़्त उसकी जैसी हालत हो जाती है वही हालत उनकी हो गयी, कि एक भी न बच सका, जैसे मिट्टी दीवार से झड़ जाती है इसी तरह उनके भी पुर्ज़े उखड़ गये। ये सब अक़वाल मुफ़स्सिरीन के इस जुमले में हैं, लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा मज़बूत है। वल्लाहु आलम।

लूत की क़ौम ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। (33) हमने उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई, सिवाय लूत (अ़लैहि.) के मुताल्लिक़ीन के। (यानी मोमिनों के अ़लावा) कि उनको रात के आख़िरी हिस्से में बचा लिया गया (34) अपनी ओर से फ़ज़्ल करके। जो शुक्र करता है हम उसे ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (35) और (अ़ज़ाब आने से पहले) लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने उनको हमारी पकड़ से डराया था, उन्होंने उस	كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ ○ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ط نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ○ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ط كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ○ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ

Maktab E Ashraf

بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ
عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا
عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً
عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي
وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ ع ۱۸

डराने में झगड़े पैदा किए। (36) और उन लोगों ने लूत से उनके मेहमानों को बुरे इरादे से लेना चाहा, सो हमने उनकी आँखें चौपट कर दीं कि लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो। (37) (यह तो उस वक़्त वाक़िआ हुआ) और (फिर) सुबह सवेरे उन पर हमेशगी का अज़ाब आ पहुँचा। (38) (और इरशाद हुआ) कि लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो। (39) और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (40)

विशेष प्रकार के बम

क़ौमे लूत का वाक़िआ बयान हो रहा है कि किस तरह उन्होंने अपने रसूलों का इनकार किया और उनकी मुख़ालफ़त करके किस मक्रूह (बुरे) काम को किया, जिसे उनसे पहले किसी ने न किया था, यानी इग़लाम बाज़ी (लड़कों के साथ बदफ़ेली)। इसी लिये उनकी हलाकत की सूरत भी ऐसी ही नई इख़्तियार की गयी। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उनकी बस्तियों को उठाकर आसमान के क़रीब लेजाकर औंधी मार दीं, और उन पर आसमान से उनके नाम के पत्थर बरसाये। मगर हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के मानने वालों को सेहर के वक़्त यानी रात की आख़िरी घड़ी में बचा लिया, उन्हें हुक्म दिया गया कि तुम इस बस्ती से चले जाओ। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम पर उनकी क़ौम में से कोई भी ईमान न लाया था, यहाँ तक कि ख़ुद हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी भी काफ़िरा ही थी। क़ौम में से भी एक शख़्स को ईमान नसीब न हुआ। पस अल्लाह के अ़ज़ाब से भी कोई न बचा, आपकी बीवी भी क़ौम के साथ ही साथ हलाक हुई, सिर्फ़ आप और आपकी लड़कियाँ उस नहूसत से बचा लिये गये। शाकिरों (अल्लाह का शुक्र करने वालों) के अल्लाह इसी तरह बुरे और आड़े वक़्त में काम आता है, और उन्हें उनकी शुक्रगुज़ारी का फल देता है।

अ़ज़ाब के आने से पहले ही हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम उन्हें आगाह कर चुके थे, लेकिन उन्होंने तवज्जोह तक न की बल्कि शक व शुब्हा और झगड़ा किया, और उनके मेहमानों से उन्हें चकमा देना चाहा। हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल, हज़रत इस्राफ़ील वग़ैरह फ़रिश्ते इनसानी सूरतों में हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के घर मेहमान बनकर आये थे। निहायत ख़ूबसूरत चेहरे, प्यारी प्यारी शक्लें और नौजवानी की उम्र। इधर ये रात के वक़्त हज़रत लूत के घर उतरे उधर उनकी बीवी ने जो काफ़िर थी क़ौम को इत्तिला दी कि आज लूत के यहाँ मेहमान आये हैं। उन लोगों को लड़कों के साथ दुष्कर्म की बुरी आ़दत तो थी ही, दौड़-भागकर हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के मकान को घेर लिया। हज़रत लूत ने दरवाज़े बन्द कर लिये। उन्होंने तरकीबें शुरू कीं कि किसी तरह मेहमान हाथ लगें।

जिस वक़्त यह सब कुछ हो रहा था शाम का वक़्त था, हज़रत लूत उन्हें समझा रहे थे, उनसे कह रहे

Maktab E Ashraf

थे कि ये मेरी बेटियाँ यानी तुम्हारी बीवियाँ मौजूद हैं, तुम इस बदफ़ेली को छोड़ दो और हलाल चीज़ से फ़ायदा उठाओ। लेकिन उन नाफ़रमानों का जवाब था कि आपको मालूम है कि हमें औरतों की ख़्वाहिश नहीं, हमारा जो इरादा है वह आपसे छुपा नहीं। तुम हमें अपने मेहमान सौंप दो। जब इसी बहस व मुबाहसे में बहुत वक़्त गुज़र चुका और वे लोग मुक़ाबले पर तुल गये और हज़रत लूत बेहद तंग हो गये तब हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम बाहर निकले और अपना पर उनकी आँखों पर फेरा जिससे वे सब अंधे हो गये, आँखें बिल्कुल जाती रहीं। अब तो हज़रत लूत को बुरा कहते हुए और दीवारें टटोलते हुए सुबह का वायदा देकर पिछले पाँव वापस हुए लेकिन सुबह के वक़्त ही उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ गया, जिससे न भाग सके न उससे पीछा छुड़ा सके। अ़ज़ाब की धमकी और डराने की तरफ़ ध्यान न करने का वबाल उन्होंने चख लिया। यह क़ुरआन तो बहुत ही आसान है जो चाहे नसीहत हासिल कर सकता है। कोई है भी जो इससे नसीहत व वअ़ज़ हासिल कर ले?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ۚ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ۝ۚ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ۝

और (फ़िरऔ़न और) फ़िरऔ़न वालों के पास भी डराने की बहुत-सी चीज़ें पहुँचीं। (41) उन लोगों ने हमारी (उन) तमाम निशानियों को झुठलाया, सो हमने उनको ज़बरदस्त क़ुदरत का पकड़ना पकड़ा। (42) क्या तुममें जो काफ़िर हैं उनमें इन (ज़िक्र हुए) लोगों से कुछ फ़ज़ीलत है, या तुम्हारे लिए (आसमानी) किताबों में कोई माफ़ी है? (43) या ये लोग कहते हैं कि हमारी ऐसी जमाअ़त है जो ग़ालिब ही रहेंगे। (44) जल्द ही (उनकी) यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेंगे। (45) बल्कि क़ियामत उनका (असल) वायदा है, और क़ियामत बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है। (46)

फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम

फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम का क़िस्सा बयान हो रहा है कि उनके पास अल्लाह के रसूल हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम ख़ुशख़बरी और डरावा लेकर आते हैं, बड़े-बड़े मोजिज़े और ज़बरदस्त निशानियाँ अल्लाह की तरफ़ से उन्हें दी जाती हैं, जो उनकी नुबुव्वत की हक़्क़ानियत पर पूरी पूरी दलील होती है, लेकिन ये फ़िरऔ़नी उन सबको झुठलाते हैं जिसकी नहूसत में उन पर अल्लाह के अ़ज़ाब नाज़िल होते हैं और बिल्कुल ही भुस उड़ा दिया जाता है।

फिर फ़रमाता है कि ऐ क़ुरैश के मुश्रिको! अब बतलाओ तुम उनसे कुछ बेहतर हो? जब वह तुम से बड़ी जमाअ़त वाले, ज़्यादा क़ुव्वत वाले होकर हमारे अ़ज़ाब से न बच सके तो भला तुम क्या चीज़ हो? क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हारे लिये आसमानी किताबों में कोई छुटकारा लिखा हुआ है, कि उनके कुफ़्र पर उन्हें तो अ़ज़ाब किया जाये लेकिन तुम कुफ़्र किये जाओ और तुम्हें कोई सज़ा न दी जायेगी? इनकी

Maktab E Ashraf

जमाअत को बिखेर कर रख दिया जायेगा, इन्हें शिकस्त दी जायेगी और ये पीठ दिखाकर भागते फिरेंगे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि बदर की लड़ाई वाले दिन अपने डेरे में रसूलुल्लाह सल्ल. अपनी दुआ़ में फ़रमा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरा अ़हद व पैमान याद दिलाता हूँ। ऐ अल्लाह! अगर तेरी तक़्दीर यही है कि आज के दिन के बाद से तेरी इबादत तुझको एक मानने के साथ ज़मीन पर की ही न जाये, बस इतना ही कहा था कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने आपका हाथ पकड़ लिया और कहा या रसूलल्लाह! बस कीजिए, आपने बहुत फ़रियाद कर ली। अब आप अपने ख़ेमे से बाहर आये और ज़बान पर ये दोनों आयतें (यानी आयत नम्बर 45 और 46, जिनकी यह तफ़सीर बयान हो रही है) जारी थीं।

हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने के वक़्त मैं सोच रहा था कि उस वक़्त मुराद कौनसी जमाअ़त होगी? जब बदर वाले दिन मैंने हुज़ूर सल्ल. को देखा कि ज़िरह (लोहे का लिबास) पहने हुए अपने कैम्प से बाहर तशरीफ़ लाये और यह आयत पढ़ रहे थे, उस दिन मेरी समझ में इसकी तफ़सीर आ गयी। बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मेरी छोटी सी उम्र थी, अपनी हमजोलियों में खेलती फिरती थी, उस वक़्त यह आयत उतरी है:

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ.

(यानी यही आयत नम्बर 46) यह रिवायत बुख़ारी में फ़ज़ाईले-क़ुरआन के मौक़े पर विस्तार के साथ मौजूद है। मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस नहीं है।

ये मुजरिम लोग (यानी काफ़िर) बड़ी ग़लती और बेअ़क़्ली में हैं। (47) जिस दिन ये लोग अपने मुँहों के बल जहन्नम में घसीटे जाएँगे तो इनसे कहा जाएगा कि दोज़ख़ (की आग) के लगने का मज़ा चखो। (48) हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया। (49) और हमारा हुक्म एक ही बार में ऐसा हो जाएगा जैसे आँख का झपकाना। (50) और हम तुम्हारे ही तरीक़े वाले जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (51) और जो कुछ भी ये लोग करते हैं सब कुछ आमाल नामों में (भी लिखा हुआ) है। (52) और हर छोटी बड़ी बात (उसमें) लिखी हुई है। (53) परहेज़गार लोग बाग़ों और नहरों में होंगे। (54) एक उम्दा मक़ाम में क़ुदरत वाले बादशाह के पास। (55)	اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ۭ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ ۢ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

ع ٣ ٥ ١٠

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का मालिक व क़ादिर है

बदकार लोग गुमराह हो चुके हैं, हक़ रास्ते से भटक चुके हैं और शक व शुब्हे और बेचैनी में हैं। ये

बदकार लोग चाहे काफ़िर हों चाहे और फ़िर्क़ों के गुनाहगार हों, उनका यह फ़ेल उन्हें औंधे मुँह जहन्नम की तरफ़ घिसटवायेगा और जिस तरह यहाँ ग़ाफ़िल हैं वे तो उस वक़्त भी बेख़बर होंगे कि न मालूम किस तरफ़ लिये चले जाते हैं। उस वक़्त उन्हें डाँट-डपट के साथ कहा जायेगा कि अब दोज़ख़ की आग के लगने का मज़ा चखो, हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया है। जैसे एक और आयत में है कि हर चीज़ को हमने पैदा किया, फिर उसका अन्दाज़ा मुक़र्रर किया। एक और जगह फ़रमाया कि अपने रब की जो बुलन्द व बाला है, पाकी बयान कर, जिसने पैदा किया और दुरुस्त किया और अन्दाज़ा किया और राह दिखाई। यानी तक़दीर मुक़र्रर की, फिर उसकी तरफ़ रहनुमाई की।

अहले सुन्नत के इमामों ने इससे इस्तिदलाल किया है कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ का मुक़द्दर उनकी पैदाईश से पहले ही तय कर दिया है, और हर चीज़ अपने ज़हूर से पहले ख़ुदा के यहाँ लिखी जा चुकी है। क़द्रिया फ़िर्क़ा इसका मुन्किर है, ये लोग सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के आख़िर ज़माने ही में निकल पड़े थे, अहले सुन्नत उनके मस्लक (विचारधारा और ख़्याल) के ख़िलाफ़ इस क़िस्म की आयतों को पेश करते हैं और इस मज़मून की हदीसों को भी। इस मसले की मुफ़स्सल बहस हम सही बुख़ारी किताबुल-ईमान की शरह में लिख चुके हैं, यहाँ सिर्फ़ वे हदीसें लिखते हैं जो आयत के मज़मून से मुताल्लिक़ हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरैश के मुश्रिक लोग रसूलुल्लाह सल्ल. से तक़दीर के बारे में बहस करने लगे तो ये आयतें उतरीं। (मुस्नद अहमद, मुस्लिम वग़ैरह) हज़रत उमर बिन शुऐब से नक़ल है वह अपने बाप और दादा से रिवायत करते हैं कि ये आयतें तक़दीर का इनकार करने वालों की तरदीद ही में उतरी हैं। (बज़्ज़ार) इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यह आयत पढ़कर फ़रमाया- यह मेरी उम्मत के उन लोगों के हक़ में उतरी है जो आख़िर ज़माने में पैदा होंगे और तक़दीर को झुठलायेंगे। हज़रत अ़ता बिन अबू रिबाह रह. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास आया, आप उस वक़्त ज़मज़म के कुएँ से पानी निकाल रहे थे, आपके कपड़ों के दामन भीगे हुए थे। मैंने कहा तक़दीर के बारे में कलाम किया गया है, लोग इस मसले में मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ हो रहे हैं। आपने फ़रमाया- क्या लोगों ने ऐसा किया? मैंने कहा हाँ ऐसा हो रहा है। आपने फ़रमाया- अल्लाह की क़सम ये आयतें उन ही लोगों के बारे में नाज़िल हुई हैं:

ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ. اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ.

(यही आयतें जिनकी तफ़सीर बयान हो रही है) याद रखो ये लोग इस उम्मत के बदतरीन लोग हैं, इनके बीमारों की तीमारदारी न करो, इनके मुर्दों के जनाज़े न पढ़ो, इनमें का अगर कोई मुझे मिल जाये तो मैं अपनी इन उंगलियों से उसकी आँखें निकाल दूँ। एक रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के सामने ज़िक्र आया कि आज एक शख़्स आया है जो तक़दीर का इनकारी है, फ़रमाया अच्छा मुझे उसके पास ले चलो। लोगों ने कहा आप नाबीना (अंधे) हैं, आप उसके पास चलकर क्या करेंगे? फ़रमाया अल्लाह की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मेरा बस चला तो मैं उसकी नाक तोड़ दूँगा और अगर उसकी गर्दन मेरे हाथ में आ गयी तो मैं मरोड़ दूँगा। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है, आप फ़रमाते थे- गोया मैं देख रहा हूँ कि बनू फ़हर की औरतें ख़ज़रज के इर्द-गिर्द तवाफ़ करती फिरती हैं, उनके जिस्म हरकत करते हैं, वे मुश्रिक औरतें हैं। इस उम्मत का पहला शिर्क यही है, उस रब की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, उनकी टेढ़ी समझ यहाँ तक बढ़ेगी कि अल्लाह तआ़ला को भलाई का मुक़द्दर करने वाला भी न मानेंगे।

जिस तरह बुराई का मुक़द्दर करने वाला न माना। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का एक दोस्त शामी था जिससे आपकी ख़त व किताबत (पत्राचार) थी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने कहीं सुन लिया कि वह तक़दीर के बारे में कुछ उल्टी-सीधी बातें करता है, आपने फ़ौरन उसे ख़त लिखा कि मैंने सुना है कि तू तक़दीर के मसले में कुछ कलाम करता है, अगर यह सच है तो बस मुझसे ख़त व किताबत की उम्मीद न रखना, आज से बन्द समझना। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि मेरी उम्मत में तक़दीर को झुठलाने वाले लोग होंगे (अबू दाऊद) रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर उम्मत में मजूस (आग को पूजने वाले) होते हैं, मेरी उम्मत के मजूसी वे लोग हैं जो तक़दीर के मुन्किर हों। अगर वे बीमार पड़ें तो तुम उनकी इयादत (मिज़ाज पुर्सी) न करो, और अगर वे मर जायें तो तुम उनके जनाज़े न पढ़ो। (मुस्नद अहमद) इस उम्मत में 'मस्ख़' होगा यानी लोगों की सूरतें बदल दी जायेंगी। याद रखो यह उनमें होगा जो तक़दीर को झुठलायें और ज़िन्दीक़ियत अपनायें। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- हर चीज़ ख़ुदा के मुक़र्रर किये हुए अन्दाज़े से है, यहाँ तक कि नादानी और अ़क़्मन्दी भी। (मुस्लिम) सही हदीस में है, अल्लाह से मदद तलब कर और आ़जिज़ व बेवक़ूफ़ न बन। फिर अगर कोई नुक़सान पहुँच जाये तो कह दे कि यह अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ था और जो ख़ुदा ने चाहा किया। फिर यूँ न कह कि अगर यूँ करता तो यूँ होता, इसलिये कि इस तरह "अगर" कहने से शैतानी वस्वसों (बुरे ख़्यालात) का दरवाज़ा खुल जाता है। हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से फ़रमाया कि जान लो अगर तमाम उम्मत जमा होकर तुझे वह नफ़ा पहुँचाना चाहे जो अल्लाह ने तेरी क़िस्मत में नहीं लिखा तो नहीं पहुँचा सकती, और अगर सब इत्तिफ़ाक़ करके तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें और तेरी तक़दीर में वह न हो तो नहीं पहुँचा सकते। क़लमें ख़ुश्क हो चुकीं और दफ़्तर लपेट कर तह कर दिये गये। हज़रत वलीद बिन उबादा रह. ने अपने बाप हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. की बीमारी में जबकि उनकी हालत बिल्कुल ख़राब थी, अ़र्ज़ किया कि अब्बा जी! हमें कुछ वसीयत कर जायें। आपने फ़रमाया अच्छा मुझे बिठा दो। जब लोगों ने आपको बैठा दिया तो आपने फ़रमाया- ऐ मेरे प्यारे बच्चे! ईमान का लुत्फ़ तुझे हासिल नहीं हो सकता और अल्लाह तआ़ला के मुताल्लिक़ जो इल्म तुझे है उसकी तह तक तू नहीं पहुँच सकता, जब तक तेरा ईमान तक़दीर की भलाई बुराई पर न हो। मैंने पूछा अब्बा जी कैसे मालूम कर सकता हूँ कि मेरा ईमान ख़ैर व शर पर है? फ़रमाया इस तरह कि तुझे यक़ीन हो कि जो तुझे नहीं मिला वह मिलने वाला ही नहीं था, और जो नुक़सान तुझे पहुँचा वह टलने वाला ही न था।

मेरे बच्चे सुनो! मैंने रसूले ख़ुदा सल्ल. से सुना है कि अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया और उससे फ़रमाया- लिख, जो उसी वक़्त चल पड़ा और क़ियामत तक जो होने वाला था सब लिख डाला। ऐ बेटे! अगर तू इन्तिक़ाल के वक़्त तक इस अ़क़ीदे पर न रहे तो तू जहन्नम में दाख़िल होगा। तिर्मिज़ी में यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी रह. फ़रमाते हैं कि यह हसन सही ग़रीब है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुममें से कोई शख़्स ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि चार बातों पर उसका ईमान न हो। गवाही दे कि माबूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है, और मैं अल्लाह का रसूल हूँ जिसे उसने हक़ के साथ भेजा है। और मरने के बाद जीने पर ईमान रखे। और तक़दीर की भलाई बुराई अल्लाह की तरफ़ से होने को माने। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

सही मुस्लिम में है कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पचास हज़ार बरस पहले मख़्लूक़ात की तक़दीर लिखी, जबकि उसका अ़र्श पानी पर था। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही ग़रीब

Maktaba E Ashraf

कहते हैं। फिर परवर्दिगारे आलम अपनी तक़दीर और अहकाम के बिना रोक-टोक के जारी और पूरा होने को बयान फ़रमाता है, कि जिस तरह जो कुछ मैंने मुक़द्दर किया है वही होता है, ठीक इसी तरह जिस काम का मैं इरादा करूँ सिर्फ़ एक दफ़ा कह देना काफ़ी होता है, दोबारा ताकीद करने और हुक्म देने की ज़रूरत नहीं होती। एक आँख झपकने के बराबर में वह काम मेरी मन्शा के मुताबिक़ हो जाता है। अ़रब शायर ने क्या ही अच्छी बात कही है:

إِذَا مَاأَرَادَ اللّٰهُ اَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ قَوْلَةً فَيَكُوْنُ

यानी अल्लाह तआ़ला जब कभी जिस काम का इरादा करता है, सिर्फ़ फ़रमा देता है कि हो जा, वह उसी वक़्त हो जाता है।

हमने तुम जैसों को तुमसे पहले उनकी सरकशी के सबब फ़ना के घाट उतार दिया है, फिर तुम क्यों इबरत हासिल नहीं करते? उनके अ़ज़ाब और उनकी रुस्वाई के वाक़िआ़त में क्या तुम्हारे लिये नसीहत व सबक़ नहीं? जैसे एक और आयत में फ़रमायाः

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَايَشْتَهُوْنَ. كَمَافُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ.

यानी उनके और उनकी तमन्नाओं के बीच पर्दा डाल दिया गया जैसे कि उनसे पहलों के साथ किया गया था।

जो कुछ उन्होंने किया वह उनके नामा-ए-आमाल में लिखा हुआ है, जो ख़ुदा के अमीन फ़रिश्तों के हाथ में महफ़ूज़ है। उनका हर छोटा बड़ा अ़मल जमा शुदा और लिखा हुआ है। एक भी तो ऐसा नहीं रहा जो लिखने से रह गया हो। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि छोटे गुनाह को भी हल्का न समझो, ख़ुदा की तरफ़ से उसका भी जवाब तलब होने वाला है। (नसाई, इब्ने माजा वग़ैरह)

हज़रत सुलैमान बिन मुग़ीरा रह. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझसे एक गुनाह सर्ज़द हो गया, जिसे मैंने मामूली समझा, रात को ख़्वाब में देखता हूँ कि एक आने वाला आया और मुझसे कह रहा है- ऐ सुलैमान!

لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ صَغِيْرًا ☆ اِنَّ الصَّغِيْرَ غَدًا يَعُوْدُ كَبِيْرًا

اِنَّ الصَّغِيْرَ وَلَوْ تَقَادَمَ عَهْدُهُ ☆ عِنْدَ الْاِلٰهِ مُسَطَّرٌ تَسْطِيْرًا

فَازْجُرْ هَوَاكَ عِنْدَ الْبَطَالَةِ لَاتَكُنْ ☆ صَعْبَ الْقِيَادِ وَشَمِّرَنَّ تَشْمِيْرًا

اِنَّ الْمُحِبَّ اِذَا اَحَبَّ اِلٰهَهُ ☆ طَارَ الْفُؤَادُ وَاُلْهِمَ التَّفْكِيْرًا

فَاسْاَلْ هِدَايَتَكَ الْاِلٰهَ فَتَتَّئِدْ ☆ فَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا

यानी छोटे गुनाहों को भी हक़ीर और नाचीज़ न समझ, ये छोटे कल बड़े हो जायेंगे। चाहे गुनाह छोटे छोटे हों और उन्हें किये हुए भी अ़रसा गुज़र चुका हो, अल्लाह के पास वे साफ़ लिखे हुए मौजूद हैं। बदी से अपने नफ़्स को रोके रख और ऐसा न हो जा कि मुश्किल से नेकी की तरफ़ आये, बल्कि ऊँचा दामन करके भलाई की तरफ़ लपक। जब कोई शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह की मुहब्बत करता है तो उसका दिल उड़ने लगता है, और उसे ख़ुदा की जानिब से ग़ौर व फ़िक्र की आ़दत उसके दिल में डाली जाती है। अपने रब से हिदायत तलब कर और नर्मी और मुलायमत कर, हिदायत और मदद करने वाला रब तुझे काफ़ी होगा।

Maktab E Ashraf

फिर इरशाद होता है कि उन बदकारों के विपरीत नेक काम करने वाले लोगों की हालत होगी, वे तो गुमराही और तकलीफ़ में थे और औंधे मुँह जहन्नम की तरफ़ घसीटे गये और सख़्त डाँट-डपट हुई, लेकिन ये नेक काम करने वाले जन्नतों में होंगे, बहते हुए ख़ुशगवार साफ़-सुथरे चश्मों के मालिक होंगे, और इज़्ज़त व सम्मान, अल्लाह की रज़ामन्दी व फ़ज़ीलत, एहसान व फ़ज़्ल, नेमत व रहमत, राहत व आराम के मकान में ख़ुश-ख़ुश रहेंगे। बारी तआ़ला मालिक व क़ादिर का क़ुर्ब (निकटता) इन्हें नसीब होगा, जो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है, सब के अन्दाज़े मुक़र्रर करने वाला है, हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। वह इन परहेज़गार, ख़ुदा से डरने वाले लोगों की एक-एक ख़्वाहिश पूरी करेगा, एक-एक तमन्ना अ़ता फ़रमायेगा।

मुस्नद अहमद में है, रसूले मक़बूल सल्ल. फ़रमाते हैं कि अ़दल व इन्साफ़ करने वाले, नेक किरदार वाले लोग अल्लाह तआ़ला के पास नूर के मिम्बरों पर रहमान की दायीं तरफ़ होंगे। अल्लाह के दोनों हाथ दाहिने ही हैं। ये आ़दिल (इन्साफ़ करने वाले) लोग वे हैं जो अपने अहकाम में, अपने अहल व अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) में और जो चीज़ उनके क़ब्ज़े में हो उसमें ख़ुदाई फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं करते बल्कि अ़दल व इन्साफ़ से ही काम लेते हैं। यह हदीस सही मुस्लिम और नसाई में भी है।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसकी तौफ़ीक़ से सूरः क़मर की तफ़सीर भी पूरी हुई। अल्लाह तआ़ला हमें नेक तौफ़ीक़ दे और बुराईयों से बचाये। आमीन

सूरः रहमान

सूरः रहमान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः रहमान

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने कहा- क़ुरआन में जो लफ़्ज़ 'मिम्माइन् ग़ैरि आसिनिन्' है, यह 'आसिन' लफ़्ज़ है या 'उसुन'? तो आपने फ़रमाया गोया तूने बाक़ी का सारा क़ुरआन समझ लिया है? उसने कहा मैं मुफ़स्सल की तमाम सूरतों को एक रक्अ़त में पढ़ लिया करता हूँ। आपने फ़रमाया- फिर तो जैसे शे'र जल्दी-जल्दी पढ़े जाते हैं इसी तरह तू क़ुरआन को भी जल्दी-जल्दी पढ़ता होगा। अफ़सोस मुझे ख़ूब याद है कि मुफ़स्सल की शुरू की कौन-कौनसी दो बराबर वाली सूरतों को हुज़ूरे पाक सल्ल. मिलाया करते थे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में मुफ़स्सल की सबसे पहली सूरत यही सूरः रहमान है। (मुस्नद अहमद) हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल. अपने सहाबा के मजमे में एक रोज़ तशरीफ़ लाये और सूरः रहमान की शुरू से आख़िर तक तिलावत फ़रमाई। सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन ख़ामोशी से सुनते रहे। आपने फ़रमाया तुमसे तो जिन्नात ही जवाब देने में

Maktab E Ashraf

अच्छे रहे। मैंने जब उनके सामने इस सूरत की तिलावत की तो मैं जब कभीः

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ.

पढ़ता (कि ऐ इनसानो और जिन्नात! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के मुन्किर हो जाओगे) तो वे कहतेः

لا بشيء من نعمك ربنا نكذب فلك الحمد.

यानी ऐ हमारे परवर्दिगार हम तेरी नेमत को नहीं झुठलाते, तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें लायक़ हैं। (तिर्मिज़ी) यह हदीस ग़रीब है, और यही रिवायत इब्ने जरीर में भी मौजूद है। उसमें है कि या तो आपने यह सूरत पढ़ी या आपके सामने इसकी तिलावत की गयी। उस वक़्त सहाबा किराम की ख़ामोशी पर आपने यह फ़रमाया और जवाब के अलफ़ाज़ ये हैं:

لا بشي من نعم ربنا نكذب.

"ला बि-शैइन् मिन् नि-अ़मि रब्बिना नुकज़्ज़िबु" कि हम अपने रब की किसी नेमत का इनकार नहीं करते।

رहमान ने (1) क़ुरआन की तालीम दी। (2) उसने इनसान को पैदा किया। (3) (फिर) उसको बोलना सिखाया। (4) सूरज और चाँद हिसाब के साथ (चलते) हैं। (5) और बग़ैर तने के पेड़ और तनेदार पेड़ (अल्लाह के) फ़रमाँबरदार हैं। (6) और उसी ने आसमान को ऊँचा किया, और उसी ने (दुनिया में) तराज़ू रख दी (7) ताकि तुम तौलने में कमी-बेशी न करो (8) और इन्साफ़ (और हक़ पहुँचाने) के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल को घटाओ मत। (9) और उसी ने मख़्लूक़ के वास्ते ज़मीन को (उसकी जगह) रख दिया (10) कि उसमें मेवे हैं, और खजूर के पेड़ हैं जिन (के फल) पर गिलाफ़ होता है। (11) और (उसमें) ग़ल्ला है जिनमें भूसा (भी) होता है और (उसमें) गिज़ा की चीज़ (भी) है। (12) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (13)	اَلرَّحْمٰنُ ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۙ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَ الرَّيْحَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

Maktab E Ashraf

क़ुरआन की तालीम

अल्लाह तआ़ला अपनी कामिल रहमत का बयान फ़रमाता है कि उसने अपने बन्दों पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया और अपने फ़ज़्ल व करम से उसका हिफ़्ज़ करना बिल्कुल आसान कर दिया। उसी ने इनसान को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया। क़तादा रह. वग़ैरह कहते हैं कि बयान से मुराद ख़ैर व शर है, लेकिन बोलना ही मुराद लेना यहाँ मुनासिब है। हज़रत हसन का क़ौल भी यही है, और साथ ही क़ुरआन की तालीम का ज़िक्र है जिससे मुराद क़ुरआन का पढ़ना है और पढ़ना मौक़ूफ़ है बोलने की आसानी पर, हर हर्फ़ अपने मख़्रज (निकलने की जगह) से बेतकल्लुफ़ ज़बान अदा करती रहती है, चाहे हलक़ से निकलता हो चाहे दोनों होंठों के मिलाने से, विभिन्न मख़्रजों और विभिन्न क़िस्म के हुरूफ़ की अदायेगी अल्लाह तआ़ला ने इनसानों को सिखा दी। सूरज और चाँद एक दूसरे के पीछे अपने-अपने मुक़र्ररा हिसाब के मुताबिक़ गर्दिश में हैं, उनमें कोई अनियमितता नहीं, न यह आगे बढ़े न वह इस पर ग़ालिब आये, हर एक अपनी-अपनी जगह तैरता फिरता है। एक और जगह फ़रमाता है:

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا.

खुदा तआ़ला सुबह का निकालने वाला है, और उसी ने रात को तुम्हारे लिये आराम का वक़्त बनाया है, और सूरज-चाँद का एक अन्दाज़ा रखा है। यह मुक़र्ररा (निर्धारित) अन्दाज़ा है ग़ालिब और दाना खुदा तआ़ला का।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि तमाम इनसानों की, जिन्नात की, पशु-पक्षियों की आँखों की बसारत (देखने की सलाहियत और रोशनी) एक ही शख़्स की आँखों में कर दी जाये। फिर सूरज के सामने जो सत्तर पर्दों में है, उनमें से एक पर्दा हटा दिया जाये तो नामुम्किन है कि यह शख़्स भी उसकी तरफ़ देख सके, और जबकि सूरज का नूर कुर्सी के नूर का सत्तरवाँ हिस्सा है। पस ख़्याल कर लो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने जन्नती बन्दों के आँखों में किस क़द्र नूर दे रखा होगा कि वे अपने रब तआ़ला के चेहरे को खुल्लम-खुल्ला अपनी आँखों से बिना किसी पर्दे के देखेंगे। (इब्ने अबी हातिम)

इस पर तो मुफ़स्सिरीन का इत्तिफ़ाक़ है कि 'शजर' उस पेड़ को कहते हैं जो तने वाला हो। नज्म के कई मायने हैं, बाज़ तो कहते हैं कि अन्जुम से मुराद बेलें हैं जिनका तना नहीं होता और ज़मीन पर फैली हुई होती हैं। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद सितारे हैं जो आसमान में हैं, यही क़ौल ज़्यादा वाज़ेह है, अगरचे पहला क़ौल इमाम इब्ने जरीर रह. का इख़्तियार किया हुआ है। वल्लाहु आलम

क़ुरआने करीम की यह आयत भी इस दूसरे क़ौल की ताईद करती है। फ़रमान है:

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ....... الخ.

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह के लिये आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात और सूरज व चाँद सितारे पहाड़ दरख़्त चौपाये जानवर और अक्सर लोग सज्दा करते हैं........।

फिर फ़रमाता है कि आसमान को उसी ने ऊँचा किया है और उसी ने मीज़ान (तराज़ू) रखी है, यानी अ़दल (इन्साफ़)। जैसे एक और आयत में है:

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ.

Maktab_e_Ashraf

यानी यक़ीनन हमने अपने रसूलों को दलीलों के साथ और तराज़ू के साथ भेजा है ताकि लोग अ़दल (इन्साफ़) पर क़ायम हो जायें।

यहाँ भी इसके साथ ही फ़रमाया ताकि तुम तराज़ू में हद से न गुज़र जाओ, यानी उस ख़ुदा ने आसमान व ज़मीन को हक़ और अ़दल के साथ पैदा किया ताकि तमाम चीज़ें हक़ व अ़दल के साथ हो जायें। पस फ़रमाता है कि जब वज़न करो तो सीधी तराज़ू से इन्साफ़ व हक़ के साथ वज़न करो, कमी ज़्यादती न करो, कि लेते वक़्त ज़्यादा तौल लिया और देते वक़्त कम दे दिया। एक और जगह इरशाद है:

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ.

दुरुस्तगी के साथ (यानी सही तरीक़े पर) तौल लिया करो।

आसमान को तो उसने बुलन्द व ऊँचा किया और ज़मीन को उसने नीची और पस्त करके बिछा दी और उसमें मज़बूत पहाड़ मेख़ (कील) की तरह गाड़ दिये, ताकि वह हिले-जुले नहीं, और उस पर जो मख़्लूक़ बसी हुई है वह आराम से रहे। फिर ज़मीन की मख़्लूक़ को देखो उनकी विभिन्न क़िस्मों, विभिन्न शक्लों, विभिन्न रंगों, अलग-अलग भाषाओं, अलग-अलग आ़दतों और तौर-तरीक़ों पर नज़र डालकर ख़ुदा तआ़ला की कामिल क़ुदरत का अन्दाज़ा करो। साथ ही ज़मीन की पैदावार को देखो कि रंग-बिरंग के खट्टे मीठे, सलोने तरह-तरह की ख़ुशबुओं वाले मेवे फल फ़्रूट और ख़ुसूसन खजूर का दरख़्त जो नफ़ा देने वाला और लगने के वक़्त से ख़ुश्क हो जाने तक और उसके बाद भी खाने के काम में आने वाला आ़म मेवा है, उस पर ख़ोशे (गुच्छे) होते हैं, जिन्हें चीरकर यह बाहर आता है, फिर गद्‌दर हो जाता है, फिर तर हो जाता है, फिर पक कर ठीक हो जाता है, बहुत नाफ़ा है। साथ ही उसका दरख़्त (पेड़) बिल्कुल सीधा और बेज़रर (बिना नुक़सान देने वाला) होता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि क़ैसर (रोम के बादशाह) ने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को लिखा कि मेरे क़ासिद जो आपके पास से वापस आये हैं वे कहते हैं कि आपके यहाँ एक दरख़्त (पेड़) होता है जिसकी ख़ूबियाँ और फ़ायदे किसी और में नहीं। वह जानवर के कान की तरह ज़मीन से निकलता है, फिर खिलकर मोती की तरह हो जाता है। फिर सब्ज़ होकर ज़ुमुर्रुद की तरह हो जाता है। फिर सुर्ख़ होकर याक़ूत जैसा बन जाता है। फिर पकता है और तैयार होकर बेहतरीन फ़ालूदे के मज़े का हो जाता है। फिर सूखकर मुक़ीम लोगों के बचाव की और मुसाफ़िरों के तोशा बनने की चीज़ें बन जाता है। पस अगर मेरे क़ासिद की यह रिवायत सही है तो मेरे ख़्याल में तो यह दरख़्त (पेड़) जन्नत का दरख़्त है। इसके जवाब में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने लिखा कि यह ख़त है ख़ुदा के ग़ुलाम मुसलमानों के बादशाह उमर की तरफ़ से शाहे क़ैसर के नाम। आपके क़ासिद ने जो ख़बर आपको दी है वह सच है। इस क़िस्म के दरख़्त मुल्के अ़रब में बहुत ज़्यादा हैं, यही वह दरख़्त है जिसे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के पास उगाया था, जबकि उनके लड़के हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उनके पेट से पैदा हुए थे। पस ऐ बादशाह! अल्लाह से डर और हज़रत ईसा को ख़ुदा न समझ, अल्लाह एक ही है, हज़रत ईसा की मिसाल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हज़रत आदम जैसी है, कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी से पैदा किया, फिर फ़रमाया हो जा पस वह हो गये। ख़ुदा की तरफ़ से सच्ची और हक़ बात यही है, तुझे चाहिये कि शक व शुब्हा करने वालों में न रहे।

'अकमाम' के मायने लेफ़ के भी किये गये हैं जो खजूर के पेड़ की गर्दन पर पोस्त की तरह होता है।

Maktab E Ashraf

और उसने ज़मीन में भूसी और अनाज पैदा किया। 'अ़स्फ़' के मायने खेती के वो सब्ज़ पत्ते जो ऊपर से काट दिये गये हों फिर सुखा लिये गये हों। "रैहान" से मुराद पत्ते, या यही रैहान जो इसी नाम से मशहूर है, या खेती के सब्ज़ पत्ते। मतलब यह है कि गेहूँ जौ वग़ैरह के वे दाने जो बाल पर भूसी समेत होते हैं और जो पत्ते उनके दरख़्तों पर लिपटे हुए होते हैं। और यह भी कहा गया है कि खेती के पहले ही उगे हुए पत्तों को 'अ़स्फ़' कहते हैं, और जब दाने निकल आयें बालें पैदा हो जायें तो उन्हें रैहान कहते हैं, जैसा कि ज़ैद बिन अ़मर बिन नुफ़ैल रज़ि. के मशहूर क़सीदे में है।

फिर फ़रमाता है कि ऐ जिन्नो और इनसानो! तुम अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाओगे (यानी इनकार करोगे)? यानी तुम उसकी नेमतों में डूबे हुए हो और मालामाल हो रहे हो, नामुम्किन है कि वास्तविक तौर पर तुम किसी नेमत का इनकार कर सको और उसे झूठ बता सको। एक दो नेमतें हों तो ख़ैर, यहाँ तो सर से पैर तक उसकी नेमतों से तुम पुर हो रहे हो। इसी लिये मोमिन जिन्नों ने इसे सुनकर जवाब दियाः

اَللّٰهُمَّ وَلَا بِشَيْءٍ مِّنْ اٰلَائِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ.

यानी ऐ हमारे परवर्दिगार! हम तेरी नेमत को नहीं झुठलाते, तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें लायक़ हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसके जवाब में फ़रमाया करते थेः

لَا بِاَيِّهَا يَارَبِّ.

यानी ख़ुदाया हम इनमें से किसी नेमत का इनकार नहीं कर सकते।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. की बेटी हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नुबुव्वत के शुरू-शुरू के ज़माने में जबकि अभी इस्लामी अहकाम का पूरी तरह ऐलान न हुआ था, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को बैतुल्लाह में रुक्न की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हुए देखा, आप उस नमाज़ में इस सूरत (यानी सूरः रहमान) की तिलावत फ़रमा रहे थे, और मुश्रिक लोग भी सुन रहे थे।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ	उसी ने इनसान (की असल यानी आदम अ़लैहिस्सलाम) को ऐसी मिट्टी से पैदा किया जो ठीकरे की तरह बजती थी। (14) और जिन्नात को ख़ालिस आग से पैदा किया। (15) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (16) वह दोनों पूरब और दोनों पश्चिम का मालिक है। (17) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (18) उसी ने दो दरियाओं को (देखने में) मिलाया कि (ज़ाहिर में) आपस में मिले हुए हैं (19) (और हक़ीक़त में) उन दोनों के दरमियान में एक (क़ुदरती) पर्दा है कि

Maktaba Ashraf

रَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝	दोनों बढ़ नहीं सकते। (20) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (21) उन दोनों से मोती और मोंगा बरामद होता है। (22) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (23) उसी के (इख़्तियार और मिल्क में) हैं जहाज़ जो पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े (नज़र आते) हैं। (24) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (25)

इनसान की पैदाईश

यहाँ बयान हो रहा है कि इनसान की पैदाईश बजने वाली ठीकरी जैसी मिट्टी से हुई है, और जिन्नात की पैदाईश आग के शोले से हुई है, जो ख़ालिस और अहसन था। मुस्नद की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते नूर से, जिन्नात आग से और इनसान उस मिट्टी से जिसका ज़िक्र तुम्हारे सामने हो चुका है, पैदा किये गये हैं। फिर अपनी किसी नेमत के न झुठलाने की हिदायत करके फ़रमाता है कि जाड़े और गर्मी के सूरज के निकलने और डूबने की दो मुख़्तलिफ़ जगहें हैं, कि वहाँ से सूरज चढ़ता उतरता है, और मौसम के लिहाज़ से यह बदलती रहती है, हर दिन उलट-फेर होता रहता है। जैसे एक दूसरी आयत में है कि पूरब व पश्चिम का रब वही है, तू उसी को अपना वकील समझ। यहाँ पूरब व पश्चिम से मुराद सूरज के निकलने और छुपने की दो जगह हैं, और चूँकि निकलने और ग़ुरूब होने की जगह के अलग-अलग होने में इनसानी फ़ायदों और उसकी मस्लेहत को सामने रखा गया है इसलिये फिर फ़रमाया कि क्या अब भी तुम अपने रब की नेमतों के मुन्किर ही रहोगे?

उसकी क़ुदरत का नज़ारा देखो कि दो समन्दर बराबर चल रहे हैं। एक खारे पानी का है, दूसरा मीठे पानी का, लेकिन न उसका पानी इसमें मिलकर इसे खारा करता है और न इसका मीठा पानी उसमें मिलकर उसे मीठा कर सकता है, बल्कि दोनों अपनी रफ़्तार से चल रहे हैं, दोनों के बीच एक पर्दा आड़ है, न वह इसमें मिल सके न यह उसमें जा सके। यह अपनी हद में है वह अपनी हद में, और क़ुदरती फ़ासले उन्हें अलग अलग किये हुए हैं, हालाँकि दोनों पानी मिले हुए हैं। सूरः फ़ुरक़ान की आयतः

وَهُوَ الَّذِیْ مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ.

(यानी सूरः फ़ुरक़ान आयत नम्बर 53) की तफ़सीर में इसकी पूरी तशरीह गुज़र चुकी है। इमाम इब्ने जरीर रह. तो फ़रमाते हैं कि इससे मुराद आसमान का दरिया और ज़मीन का दरिया है। इमाम इब्ने जरीर रह. यह भी फ़रमाते हैं कि आसमान में जो पानी का क़तरा है और सदफ़ जो ज़मीन में के दरिया में है, इन दोनों से मिलकर लुअ्लुअ् (एक क़ीमती मोती) पैदा होता है। वाक़िआ तो यह ठीक है, लेकिन इस आयत

Maktab E Ashraf

की तफ़सीर इस तरह करनी कुछ मुनासिब मालूम नहीं होती, इसलिये कि आयत में उन दोनों के बीच बर्ज़ख़ यानी आड़ का होना बयान फ़रमाया गया है, जो इसको उससे और उसको इससे रोके हुए है। इससे मालूम होता है कि ये दोनों ज़मीन में ही हैं, बल्कि एक दूसरे से मिलकर चलते हैं। मगर क़ुदरत उन्हें जुदा रखती है। आसमान व ज़मीन के बीच जो फ़ासला है वह बर्ज़ख़ और आड़ नहीं कहा जाता, इसलिये सही क़ौल यही है कि यह ज़मीन के दो दरियाओं का ज़िक्र है, न कि आसमान और ज़मीन के दरिया का।

उन दोनों में से, यानी दोनों में से एक में से, जैसे कि एक दूसरी जगह जिन्नात और इनसानों को ख़िताब करके सवाल हुआ है कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये थे? ज़ाहिर है कि रसूल सिर्फ़ इनसानों में से ही हुए हैं, जिन्नात में कोई जिन्न रसूल नहीं आया, तो जैसे यहाँ यह हुक्म सही है हालाँकि ज़हूर एक में ही है, इसी तरह इस आयत में भी इतलाक़ (हुक्म) दोनों दरियाओं पर है जबकि यह स्थिति वाक़े एक में ही है। "लुअ्लुअ्" यानी मोती तो एक मशहूर व मारूफ़ चीज़ है, मरजान के बारे में कहा गया है कि छोटे मोते को कहते हैं, और यह भी कहा गया है कि बहुत बड़े मोती को कहते हैं, और यह भी कहा गया है कि बेहतरीन और उम्दा मोती को मरजान कहते हैं। बाज़ कहते हैं कि सुर्ख़ रंग के जवाहर को कहते हैं। बाज़ कहते हैं कि सुर्ख़ रंग के मोहरे का नाम है। एक दूसरी आयत में है:

وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا.

यानी तुम हर एक में से निकला हुआ गोश्त खाते हो जो ताज़ा होता है और पहनने के ज़ेवर निकालते हो तो ख़ैर मछली तो खारे और मीठे दोनों पानी से निकलती है और मोती मोंगे सिर्फ़ खारे पानी में से निकलते हैं, मीठे में से नहीं निकलते। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि आसमान का जो क़तरा समन्दर की सीप के मुँह में सीधा जाता है वह लुअ्लुअ् (मोती) बन जाता है और जो सदफ़ में नहीं जाता तो उसमें अंबर पैदा होता है। बारिश बरसने के वक़्त सीप अपना मुँह खोल देती है। पस इस नेमत को बयान फ़रमाकर फिर मालूम फ़रमाता है कि ऐसी ही बेशुमार नेमतें जिस रब की हैं भला किस-किस नेमत को तुम झुठलाओगे?

फिर इरशाद होता है कि समन्दर में चलने वाले बड़े-बड़े लंगरों वाले जहाज़ों जो दूर से बड़े नज़र आते और पहाड़ों की तरह खड़े दिखाई देते हैं, जो हज़ारों मन माल और सैंकड़ों इनसानों को इधर से उधर ले जाते ले आते हैं, ये भी तो उस ख़ुदा की मिल्कियत में हैं। इस आ़लीशान नेमत को याद दिलाकर फिर पूछता है कि अब बतलाओ इनकार करने से कैसे काम चलेगा? हज़रत उमैरा बिन सुवैद रह. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ि. के साथ फ़ुरात दरिया के किनार पर था, एक बुलन्द व बाला बड़ा जहाज़ आ रहा था, उसे देखकर आपने उसकी तरफ़ अपने हाथों से इशारा करके इस आयत की तिलावत की, फिर फ़रमाया- उस ख़ुदा की क़सम जिसने पहाड़ों जैसी इन कश्तियों को मौजें मारते समन्दर में जारी किया है, न मैंने उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को क़त्ल किया न उनके क़त्ल का इरादा किया, न क़ातिलों के साथ शरीक हुआ, न उनसे ख़ुश, न उन पर नर्म।

जितने (जानदार) रू-ए-ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जाएँगे। (26) और (सिर्फ़) आपके परवर्दिगार की ज़ात जो कि बड़ाई (वाली) और एहसान वाली है बाक़ी रह जाएगी। (27) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (28) उसी से (अपनी-अपनी ज़रूरतें) सब आसमान और ज़मीन वाले माँगते हैं, वह हर वक़्त किसी-न-किसी काम में रहता है। (29) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (30)	كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ٥ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٥ يَسْئَلُهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٥

तमाम मख़्लूक़ात फ़ना हो जाने वाली हैं

फ़रमाता है कि ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ फ़ना होने वाली है, एक दिन आयेगा इस पर कुछ न होगा, तमाम जानदार मख़्लूक़ को मौत आ जायेगी। इसी तरह तमाम आसमान वाले भी मौत का मज़ा चखेंगे, मगर जिसे अल्लाह चाहे। सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात बाक़ी रह जायेगी, जो हमेशा से है और हमेशा रहेगी, जो मौत व वफ़ात से पाक है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि सब से पहले तो दुनिया की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाया फिर इसके फ़ना होने का बयान किया। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक दुआ़ में यह भी मन्क़ूल है:

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ يَابَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ بِرَحْمَتِكَ نَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لَنَا شَاْنَنَا كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنَا اِلٰى اَنْفُسِنَا طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّلَآ اِلٰى اَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ.

यानी ऐ हमेशा जीने और हमेशा-हमेशा तक बाक़ी और क़ायम रहने वाले ख़ुदा! ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले रब! ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले परवर्दिगार! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, हम तेरी रहमत ही से फ़ायदा उठाते हैं, हमारे तमाम काम तू बना दे, और आँख झपकने के बराबर भी तू हमें हमारी तरफ़ न सौंप दे, और न अपनी मख़्लूक़ में से किसी की तरफ़।

हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि जब 'कुल्लु मन् अ़लैहा फ़ान' पढ़ा जाये तो ठहरना नहीं चाहिये बल्कि साथ ही 'व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल-जलालि वल-इकराम' पढ़ लिया जाये। इस आयत का मज़्मून एक दूसरी आयत में इन अलफ़ाज़ में है:

كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ.

कि सिवाय अल्लाह की ज़ात के हर चीज़ नापैद होने वाली है।

फिर अपने चेहरे की तारीफ़ में फ़रमाता है कि वह जलाल व बुज़ुर्गी वाला है, यानी इस क़ाबिल है कि उसकी इज़्ज़त की जाये, उसका जाह व जलाल माना जाये और उसके अहकाम की इताअ़त की जाये और

Maktab E Ashraf

उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ करने से रुका जाये। जैसे एक और जगह है:

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ....... الخ.

जो लोग सुबह शाम अपने परवर्दिगार को पुकारते रहते हैं और उसी की ज़ात के मुरीद हैं, तू उन्हीं के साथ अपने आपको रोके रख। एक और आयत में इरशाद है कि नेक लोग सदक़ा देते वक़्त समझते हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये खिलाते-पिलाते हैं, वह किब्रियाई बड़ाई अज़मत और जलाल वाला है। पस इस बात को बयान फ़रमाकर कि तमाम ज़मीन वाले एक दिन मरने वाले और फिर ख़ुदा के सामने क़ियामत के दिन पेश होने में बराबर हैं, और उस दिन वह बुज़ुर्गी वाला ख़ुदा उनके दरमियान अ़दल व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला फ़रमायेगा। साथ ही फ़रमाया कि अब तुम ऐ जिन्नात व इनसानो! अपने रब की कौन-कौनसी नेमत का इनकार करते हो? फिर फ़रमाता है कि वह सारी मख़्लूक़ से बेनियाज़ (बेपरवाह) है और तमाम मख़्लूक़ उसकी पूरी तरह मोहताज है, सब के सब साईल (उससे सवाल करने वाले) हैं, वह ग़नी है और सब फ़क़ीर हैं, वह सब के सवाल पूरे करने वाला है, हर मख़्लूक़ अपनी हालत और अपनी ज़बान से अपनी हाजतें उसकी सरकार में ले जाती है, और उनके पूरा होने का सवाल करती है। वह हर दिन नई शान में है। उसकी शान है कि हर पुकारने वाले को जवाब दे, माँगने वाले को अ़ता फ़रमाये, तंग-हालों को कुशादगी दे, मुसीबत व आफ़त वालों को रिहाई बख़्शे, बीमारों को तन्दुरुस्ती इनायत फ़रमाये।

ग़म वही दूर करे, बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ़ क़बूल फ़रमाकर उसे क़रार और आराम इनायत फ़रमाये, गुनाहगारों की फ़रियाद पर मुतवज्जह होकर ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमाये, गुनाहों को बख़्शे। ज़िन्दगी वह दे, मौत वह लाये, तमाम ज़मीन वाले तमाम आसमान वाले उसके आगे हाथ फैलाये हुए दामन फैलाये हुए हैं। छोटों को बड़ा वह करता है, क़ैदियों को रिहाई वह देता है, नेक लोगों की हाजतों को पूरा करने वाला, उनकी पुकार को सुनने वाला, उनके शिक्वे शिकायत का ठिकाना वही है। ग़ुलामों को आज़ादी, रग़बत वालों को अ़तीया वही अ़ता फ़रमाता है, यही उसकी शान है।

इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की तो सहाबा ने सवाल किया- हुज़ूर! वह शान क्या है? फ़रमाया गुनाहों को बख़्शना, दुख को दूर करना, लोगों को तरक़्क़ी और मन्ज़िल पर लाना। इब्ने अबी हातिम और इब्ने अ़साकिर में भी इसी के जैसे मायनों वाली एक हदीस है। सही बुख़ारी में यह रिवायत तालीक़ के साथ हज़रत अबू दर्दा रज़ि. के क़ौल से मौजूद है। बज़्ज़ार में भी कुछ अलफ़ाज़ की कमी के साथ मरफ़ूअ़न मरवी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने लौहे-महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया, उसके दोनों पट्ठे सुर्ख़ याक़ूत (मोती) के हैं, उसका क़लम नूर है, उसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है, हर रोज़ तीन सौ साठ मर्तबा उसे देखता है, हर निगाह पर जिलाता व मारता और इज़्ज़त व ज़िल्लत देता है, और जो चाहे करता है।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ○ فَبِاَيِّ الَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ	ऐ जिन्नात और इनसानो! हम जल्द ही तुम्हारे (हिसाब व किताब के) लिए ख़ाली हुए जाते हैं। (31) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (32) ऐ जिन्नात और इनसानों के गिरोह! अगर तुमको यह क़ुदरत है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ڏ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝	कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ तो (हम भी देखें) निकलो, मगर बग़ैर ज़ोर के नहीं निकल सकते, (और ज़ोर है नहीं, पस निकलने का सवाल ही पैदा नहीं होता)। (33) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (34) तुम दोनों पर (क़ियामत के दिन) आग का शोला और धुआँ छोड़ा जाएगा, फिर तुम (उसको) हटा न सकोगे। (35) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (36)

हिसाब व किताब

फ़ारिग़ होने के यह मायने नहीं कि अब वह किसी मशग़ूलियत (व्यस्तता) में है, बल्कि यह बतौर डाँट के फ़रमाया गया है कि सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ पूरी तवज्जोह फ़रमाने का ज़माना क़रीब आ गया है, अब खरे-खरे फ़ैसले हो जायेंगे। उसे कोई और चीज़ मशग़ूल न करेगी, बल्कि सिर्फ़ तुम्हारा हिसाब ही लेगा। अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ यह कलाम किया गया है, जैसे ग़ुस्से के वक़्त कोई किसी से कहता है कि अच्छा फ़ुर्सत में तुझसे निपट लूँगा, तो यह मायने नहीं कि इस वक़्त मशग़ूल हूँ, बल्कि यह मतलब है कि एक ख़ास वक़्त तुझसे निपटने का निकालूँगा और तेरी ग़फ़लत में तुझे पकड़ लूँगा।

'सक़लान' से मुराद इनसान और जिन्न हैं। जैसे एक हदीस में है कि उसे सिवाय सक़लैन के हर चीज़ सुनती है। एक दूसरी हदीस में है कि सिवाय इनसानों और जिन्नों के। और सूर वाली हदीस में साफ़ है कि सक़लैन यानी जिन्नात व इनसान, फिर तुम अपने रब की नेमतों में से किस-किस नेमत का इनकार कर सकते हो? ऐ जिन्नो और इनसानो! तुम अल्लाह तआ़ला के हुक्म और उसकी मुक़र्रर की हुई तक़दीर से भागकर बच नहीं सकते, बल्कि वह तुम सब को घेरे हुए है। उसका हर-हर हुक्म तुम पर बिना किसी रोक के जारी है, जहाँ जाओगे उसी की सल्तनत है। हक़ीक़त में यह वाक़े होगा मैदाने मेहशर में, कि मख़्लूक़ात को हर तरफ़ से फ़रिश्ते घेरे हुए होंगे, चारों तरफ़ उनकी सात सफ़ें (क़तारें) होंगी, कोई शख़्स बग़ैर दलील के इधर-उधर न हो सकेगा, और दलील सिवाय अल्लाह के हुक्म के और कुछ नहीं। इनसान उस दिन कहेगा कि भागने की जगह किधर है? लेकिन जवाब मिलेगा कि आज तो रब के सामने ही खड़ा होने की जगह है। एक और आयत में है:

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ .... الخ.

यानी बुरे आमाल करने वालों को उनकी बुराईयों के मुताबिक़ सज़ा मिलेगी, उन पर ज़िल्लत सवार होगी और अल्लाह की पकड़ से पनाह देने वाला कोई न होगा। उनके मुँह अन्धेरी रात के टुकड़ों की तरह होंगे, यह जहन्नमी गिरोह है जो हमेशा जहन्नम में ही रहेगा। 'शुवाज़' के मायने आग के शोलों के हैं जो धुआँ मिले हुए सब्ज़ रंग के झुलसा देने वाले हों। बाज़ कहते हैं कि बिना धुएँ के आग के ऊपर का शोला

(अंगारा) जो इस तरह लपकता है जैसे पानी की लहर हो। 'नुहास' कहते हैं धुएँ को।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से नक़ल है कि शुवाज़ से मुराद वह शोला है जिसमें धुआँ न हो, और आपने इसकी सनद में उमैया बिन अबू सलत का शे'र पढ़कर सुनाया, और नुहास के मायने आपने किये हैं केवल धुआँ, जिसमें शोला न हो, और इसकी ताईद में भी एक अ़रबी शे'र नाबिग़ा का पढ़कर सुनाया। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि नुहास से मुराद पीतल है जो पिघलाया जायेगा और उनके सरों पर बहाया जायेगा। बहरहाल मतलब यह है कि अगर तुम क़ियामत के दिन मेहशर से भागना चाहो तो मेरे फ़रिश्ते और जहन्नम के दारोग़ा तुम पर आग बरसाकर धुआँ छोड़कर तुम्हारे सर पर पिघला हुआ पीतल बहाकर तुम्हें वापस लौटा लायेंगे। तुम न उनका मुक़ाबला कर सकते हो न उन्हें दफ़ा कर सकते हो, न उनसे बदला ले सकते हो। पस रब की किसी नेमत से इनकार न करना चाहिये।

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ
اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ
فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ
يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ يَطُوْفُوْنَ
بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ ع ٢ ١٢

ग़र्ज़ कि जब (क़ियामत आएगी जिसमें) आसमान फट जाएगा और ऐसा सुर्ख़ हो जाएगा जैसे सुर्ख़ नरी (यानी चमड़ा) (37) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (38) तो उस दिन (अल्लाह के मालूम करने के लिए) किसी इनसान और जिन्न से उसके जुर्म के मुताल्लिक़ न पूछा जाएगा। (39) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (40) मुजरिम लोग अपने हुलिये से (कि चेहरे के काला होने और आँखों के नीला होने की वजह से) पहचाने जाएँगे सो (उनके) सर और पाँव पकड़ लिए जाएँगे। (41) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसको मुजरिम लोग झुठलाते थे। (43) वे लोग दोज़ख़ के इर्द-गिर्द खौलते हुए पानी के दरमियान घूमते होंगे। (44) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (45)

क़ियामत के हौलनाक मन्ज़र

आसमान का फट जाना दूसरी आयतों में भी बयान हुआ है। इरशाद है:

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ.

Maktab E Ashraf

(सूरः हाक़्क़ा आयत 16) एक और जगह हैः

يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ......... الخ.

(सूरः फ़ुरक़ान आयत 25) एक और जगह फ़रमायाः

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ.......... الخ.

(सूरः इन्शिक़ाक़ आयत 1,2) वग़ैरह वग़ैरह।

जिस तरह चाँदी वग़ैरह पिघलाई जाती है यही हालत आसमान की हो जायेगी, रंग पर रंग बदलेगा, क्योंकि क़ियामत की हौलनाकी, उसकी शिद्दत व दहशत है ही ऐसी। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि लोग क़ियामत के दिन उठाये जायेंगे और आसमान उन पर हल्की बारिश की तरह बरसता होगा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सुर्ख़ चमड़े की तरह हो जायेगा। एक और रिवायत में है कि गुलाबी रंग के घोड़े का रंग मौसमे बहार में तो ज़र्दी माईल नज़र आता है, और जाड़े में बदल कर सुर्ख़ मालूम होता है। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती है उसका रंग बदलता जाता है, इसी तरह आसमान भी रंग पर रंग बदलेगा, पिघले हुए ताँबे की तरह हो जायेगा, जैसे रोग़ने गुलाब का रंग होता है उस रंग का आसमान हो जायेगा। आज वह सब्ज़ रंग का है लेकिन उस दिन उसका रंग सुर्ख़ी लिये हुए होगा। ज़ैतून के तेल की तलछट जैसा हो जायेगा। जहन्नम की आग की तपिश उसे पिघलाकर तेल जैसा कर देगी। उस दिन किसी मुजरिम से उसका जुर्म न पूछा जायेगा, जैसा कि एक और आयत में हैः

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ........ الخ.

यह वह दिन है कि बात न करेंगे। न उन्हें इजाज़त दी जायेगी कि वे उज़्र-माज़िरत करें, हाँ एक और आयात में उनका बोलना, उज़्र करना, उनसे हिसाब लिया जाना वग़ैरह भी बयान हुआ है। फ़रमान हैः

فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ.

तेरे रब की क़सम हम सब से सवाल करेंगे और उनके तमाम कामों की पूछगछ करेंगे।

तो मतलब यह है कि एक मौक़े पर यह है, दूसरे मौक़े पर यह है। पूछताछ हुई, हिसाब-किताब हुआ, उज़्र-माज़िरत ख़त्म कर दी गयी, अब मुँह पर मोहर लग गयी, हाथ-पाँव और जिस्म के हिस्सों ने गवाही दी, फिर पूछगछ की ज़रूरत न रही, उज़्र-माज़िरत तोड़ दी गयी। और यह ततबीक़ भी है कि किसी से न पूछा जायेगा कि फ़ुलाँ अ़मल किया कि नहीं? क्योंकि ख़ुदा तआ़ला को ख़ूब मालूम है, हाँ जो सवाल होगा वह यह कि ऐसा क्यों किया? तीसरा क़ौल यह है कि फ़रिश्ते पूछेंगे नहीं, वे तो चेहरा देखते ही पहचान लेंगे और जहन्नमी ज़न्जीरों में बाँधकर औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में डाल देंगे। जैसे कि इसके बाद ही फ़रमाया कि ये गुनाहगार अपने चेहरों और अपनी ख़ास निशानियों से ही पहचान लिये जायेंगे। चेहरे काले होंगे, आँखें नीली होंगी।

ठीक इसी तरह मोमिनों के चेहरे भी अलग और मुमताज़ होंगे। उनके वुज़ू के हिस्से चाँद की तरह चमक रहे होंगे। गुनाहगारों को पेशानियों और क़दमों से पकड़ा जायेगा और जहन्नम में डाल दिया जायेगा, जिस तरह बड़ी लकड़ी को दो तरफ़ से पकड़कर तन्दूर में झोंक दिया जाता है। पीठ की तरफ़ से ज़न्जीर लाकर गर्दन और पाँव एक करके बाँध दिये जायेंगे, कमर तोड़ दी जायेगी, क़दम और पेशानी मिला दी जायेगी और जकड़ दिया जायेगा।

मुस्नद अहमद में है कि क़बीला बनू कन्दा का एक शख़्स हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया, पर्दे के पीछे बैठा और उम्मुल-मोमिनीन रज़ि. से सवाल किया कि क्या आपने रसूलुल्लाह सल्ल. से यह भी सुना है कि किसी वक़्त आपको किसी शख़्स की शफ़ाअ़त का इख़्तियार न होगा? उम्मुल-मोमिनीन ने जवाब दिया हाँ, एक मर्तबा एक ही कपड़े में हम दोनों थे कि मैंने हुज़ूरे पाक सल्ल. से यही सवाल किया तो आपने फ़रमाया- हाँ जबकि पुलसिरात रखा जायेगा, उस वक़्त मुझे किसी की शफ़ाअ़त या सिफ़ारिश का इख़्तियार न होगा, यहाँ तक कि मैं जान लूँ कि ख़ुद मुझे कहाँ ले जाते हैं? और जिस वक़्त कि चेहरे सियाह सफ़ेद होने शुरू होंगे, यहाँ तक कि मैं देख लूँ कि मुझ पर क्या वही भेजी जाती है। और जब जहन्नम पर पुल रखा जायेगा और उसे तेज़ और गर्म किया जायेगा, गर्मी की क्या हद है? मैंने पूछा या रसूलल्लाह! उसकी तेज़ी और गर्मी की क्या हद है? फ़रमाया- तलवार की धार जैसा तेज़ होगा और आग के अंगारे जैसा गर्म होगा। मोमिन तो बिना परेशानी के गुज़र जायेगा और मुनाफ़िक़ लटक जायेगा। जब बीच में पहुँचेगा तो उसके क़दम फंस जायेंगे। यह अपने हाथ अपने पैरों की तरफ़ झुकायेगा, जिस तरह कोई नंगे पैर चल रहा हो और उसे काँटा लग जाये और इस ज़ोर का लगे गोया कि उसने उसके पाँव को छेद दिया हो, तो किस तरह बेसब्री और जल्दी से वह सर और हाथ झुकाकर उसकी तरफ़ झुक पड़ता है। इसी तरह यह झुकेगा। इधर यह झुका, उधर जहन्नम के दारोग़ा इसकी पेशानी और क़दम जहन्नम की ज़न्जीरों से जकड़ लेंगे और जहन्नम की आग में गिरा देंगे, जिसमें तक़रीबन पचास साल तक वह गहरा उतरता जायेगा। मैंने पूछा हुज़ूर! यह जहन्नमी किस क़द्र बोझल होगा? आपने फ़रमाया दस गयाभन ऊँटनियों के बराबर। फिर आपने इस आयत की तिलावत की। यह हदीस ग़रीब है और इसके बाज़ फ़िक़रों (कलिमों और लफ़्ज़ों) का हुज़ूर सल्ल. के कलाम से होना मुन्कर है, और इसकी सनद में एक शख़्स हैं उनका नाम भी नीचे के रावी ने नहीं लिया। ऐसी दलीलें सेहत के क़ाबिल नहीं होतीं। वल्लाहु आलम

उन गुनाहगारों से कहा जायेगा कि लो जिस जहन्नम का तुम इनकार करते थे उसे अपनी आँखों से देख लो। यह उन्हें रुस्वा, ज़लील, शर्मिन्दा और नादिम करने और उनकी झेंप बढ़ाने के लिये कहा जायेगा। फिर उनकी यह हालत होगी कि कभी आग का अ़ज़ाब हो रहा है, कभी पानी का, कभी हमीम में जलाये जाते हैं और कभी हमीम (खौलता हुआ पानी) पिलाये जाते हैं। जो पिघले हुए ताँबे की तरह पूरी तरह आग है, जो आँतों को काट देती है। एक और जगह फ़रमान है:

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ........ الخ.

जबकि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और पाँव में बेड़ियाँ होंगी। वे हमीम (गर्म खौलते हुए पानी) से जहन्नम में घसीटे जायेंगे और बार-बार जलाये जायेंगे। यह गर्म पानी हद दर्जा गर्म होगा, बस यूँ कहना ठीक है कि वह जहन्नम की आग ही है जो पानी की सूरत में है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि आसमान व ज़मीन की पैदाईश के वक़्त से आज तक वह गर्म किया जा रहा है। मुहम्मद बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि बदकार शख़्स की पेशानी के बाल पकड़ कर उसे उस गर्म पानी में एक ग़ोता दिया जायेगा, तमाम गोश्त घुल जायेगा और हड्डियों को छोड़ देगा, बस वह आँखों और हड्डियों का ढाँचा रह जायेगा। इसी को फ़रमाया गया है:

فِی الْحَمِیْمِ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ.

'आन' के मायने हाज़िर किये के भी किये गये हैं। एक और आयत में है:

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ.

सख़्त गर्म मौजूद पानी की नहर से उन्हें पानी पिलाया जायेगा, जो हरगिज़ न पी सकेंगे, क्योंकि वह बेइन्तिहा गर्म बल्कि आग के जैसा है। क़ुरआने करीम में एक और जगह इरशाद है:

غَيْرَ نَاظِرِيْنَ اِنٰهُ.

वहाँ मुराद तैयारी और पक जाना है। चूँकि बदकारों की सज़ा और नेकोकारों की जज़ा भी उसका फ़ज़्ल व रहम और अ़दल व लुत्फ़ है। अपने इन अ़ज़ाबों का पहले से बयान कर दिया ताकि शिर्क व नाफ़रमानी करने वाले होशियार हो जायें, यह भी उसकी नेमत है। इसलिये फ़रमाया- फिर तुम ऐ जिन्नात व इनसानो! अपने रब की कौन-कौनसी नेमत का इनकार करोगे?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ۝ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۝ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۝ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝	और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से (हर वक़्त) डरता रहता है, उसके लिए (जन्नत में) दो बाग़ होंगे। (46) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (47) (और वे) दोनों बाग़ बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे। (48) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (49) उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे कि बहते चले जाएँगे। (50) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (51) उन दोनों बाग़ों में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी। (52) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (53)

अल्लाह का डर और ख़ौफ़

इब्ने शोज़ब और अ़ता ख़ुरासानी रह. फ़रमाते हैं कि 'व लिमन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान' (यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 46) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत अ़तीया बिन कैस रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई है जिसने कहा था कि मुझे आग में जला देना ताकि मैं अल्लाह तआ़ला से न मिलूँ। इस कलिमे के कहने के बाद एक रात एक दिन तौबा की, अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फ़रमा ली और उसे जन्नत में ले गया। लेकिन सही बात यह है कि यह आयत आ़म है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह का क़ौल भी यही है। मतलब यह है कि जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने रब के सामने खड़ा होने का डर अपने दिल में रखता है और ख़ुद को नफ़्स की इच्छाओं से

Maktab E Ashraf

बचाता है और सरकशी नहीं करता, दुनिया की ज़िन्दगानी के पीछे पड़कर आख़िरत से ग़फ़लत नहीं करता, बल्कि आख़िरत की फ़िक्र ज़्यादा करता है और उसे बेहतर और पायदार समझता है। फ़राईज़ अदा करता है, ख़ुराफ़ात से रुकता है, क़ियामत के दिन उसे एक छोड़ दो-दो जन्नतें मिलेंगी।

सही बुख़ारी में है, हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि दो जन्नतें चाँदी की होंगी और उनका तमाम सामान भी चाँदी का ही होगा, और दो जन्नतें सोने की होंगी, उनके बरतन और जो कुछ उनमें है सब सोने का होगा। उन जन्नतों में और अल्लाह के दीदार में कोई चीज़ रोक न होगी सिवाय उस किब्रियाई के पर्दे के जो अल्लाह तआ़ला के चेहरे पर है। ये जन्नते अ़दन में होंगे। यह हदीस हदीस की बड़ी किताबों में भी है सिवाय अबू दाऊद के। हम्माद रह. फ़रमाते हैं कि मेरे ख़्याल में तो यह हदीस मरफ़ूअ़ है और यह तफ़सीर है अल्लाह तआ़ला के फ़रमान 'व लिमन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान' और ' व मिन् दूनिहिमा जन्नतान' की। सोने की दो जन्नतें अल्लाह के ख़ास और क़रीबी बन्दों के लिये और दो जन्नतें दायें वालों के लिये। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक ने एक मर्तबा इस आयत की तिलावत की तो मैंने कहा अगरचे ज़िना और चोरी भी उससे हो गयी हो? आपने फिर इसी आयत की तिलावत की, मैंने फिर वही कहा, आपने फिर यही आयत पढ़ी, मैंने फिर यही सवाल किया तो आपने फ़रमाया- अगरचे अबू दर्दा की नाक ख़ाक में भर जाये। (नसाई शरीफ़)

बाज़ सनद से यह रिवायत मौक़ूफ़ भी है। और हज़रत अबू दर्दा रज़ि. से यह भी रिवायत है कि जिस दिल में ख़ुदा के सामने खड़े होने का ख़ौफ़ होगा वह ज़िना नहीं कर सकता न वह चोरी कर सकता है। यह आयत आ़म है, इनसानों और जिन्नात दोनों को शामिल है, और इस बात की बेहतरीन दलील है कि जिन्नों में से भी जो ईमान लायें और तक़्वा अपनायें वे जन्नत में जायेंगे, इसी लिये जिन्नात व इनसानों को इसके बाद ख़िताब करके फ़रमाता है कि अब तुम अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाओगे?

फिर उन दोनों जन्नतों की सिफ़तें और ख़ूबियाँ बयान फ़रमाता है कि ये बहुत ही हरी-भरी हैं, बेहतरीन आला क़िस्म के, अच्छे ज़ायक़े वाले, उम्दा और तैयार फल हर तरह के उनमें मौजूद हैं, तुम्हें न चाहिये कि तुम अपने परवर्दिगार की किसी नेमत का इनकार करो। 'अफ़नान' शाख़ों और डालियों को कहते हैं। ये अपनी अधिकता के सबब एक दूसरी से मिली-जुली हुई होंगी। ये सायेदार होंगी जिनका साया दीवारों पर भी चढ़ा हुआ होगा। हज़रत इक्रिमा रह. यही मायने बयान करते हैं, और अ़रबी के शे'र को दलील में पेश करते हैं। ये शाख़ें सीधी और फैली हुई होंगी, रंग बिरंग की होंगी।

यह मतलब भी बयान किया गया है कि उनमें तरह-तरह के मेवे होंगे। हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुललाह सल्ल. ने सिद्रतुल-मुन्तहा का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया- उसकी शाख़ों का साया इस क़द्र लम्बा है कि सवार सौ साल तक उसमें चलता रहेगा, और फ़रमाया कि सौ सवार उसके नीचे साया हासिल कर लें। सोने की टिड्डियाँ उस पर छाई हुई थीं, उसके फल बड़े-बड़े मटकों और बहुत बड़े गोल थे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फिर उनमें नहरें बह रही हैं ताकि उन दरख़्तों और शाख़ों को सैराब करती (यानी सींचती) रहें। और ख़ूब ज़्यादा और उम्दा फल लायें। अब तो तुम्हें अपने रब की नेमतों की क़द्र करनी चाहिये। एक नहर का नाम "तसनीम" है और दूसरी का "सल्सबील" है। ये दोनों नहरें पूरी रवानी के साथ बह रही हैं, एक सुथरे पानी की, दूसरी मज़ेदार बिना नशे की शराब की। उनमें हर तरह के फलों के जोड़े भी मौजूद हैं और फल भी वो जिनकी तुम शक्लें तो पहचानते हो लेकिन लज़्ज़त से वाक़िफ़ नहीं हो, क्योंकि वहाँ की नेमतें न

Maktab E Ashraf

किसी आँख ने देखी हैं न किसी कान ने सुनी हैं न किसी दिमाग़ में आ सकती हैं। तुम्हें अपने रब की नेमतों की नाशुक्री से रुक जाना चाहिये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि दुनिया में जितने भी कड़वे मीठे फल हैं वे सब जन्नत में होंगे, यहाँ तक कि "हन्ज़ल" यानी इन्द्राईन भी। वहाँ दुनिया की इन चीज़ों और जन्नत की उन चीज़ों के नाम तो मिलते-जुलते हैं, हक़ीक़त और लज़्ज़त बिल्कुल ही अलग है। यहाँ तो सिर्फ़ नाम हैं, असलियत तो जन्नत में है। इस फ़ज़ीलत का फ़र्क़ वहाँ जाने के बाद ही मालूम हो सकता है।

مُتَّكِـِٕيْـنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ
اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا
جَاۗنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ هَلْ جَزَاۗءُ
الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝

वे लोग तकिया लगाए ऐसे फ़र्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे, और उन दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा। (54) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (55) उनमें नीची निगाह वालियाँ (यानी हूरें) होंगी, कि उन (जन्नती) लोगों से पहले उन पर न तो किसी आदमी ने तुसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। (56) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (57) गोया वे याक़ूत और मरजान हैं। (58) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (59) भला हद दर्जा इताअ़त का बदला इनायत के अ़लावा और भी कुछ हो सकता है? (60)

जन्नतुल-फ़िरदौस और उसकी नेमतें

जन्नती लोग बेफ़िक्री से तकिये लगाये हुए होंगे, चाहे लेटे हुए हों चाहे आराम से बैठे हुए तकिये से लगे हुए हों। उनके बिछौने भी इतने अच्छे होंगे कि उनके अन्दर का अस्तर भी दबीज़ और ख़ालिस सोने व रेशम का होगा। फिर ज़रा सोचो कि ऊपर का अबरा कैसा कुछ होगा। मालिक बिन दीनार और सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि अस्तर का यह हाल है और अबरा तो बिल्कुल नूरानी होगा, जो पूरी तरह रहमत व नूर का इज़हार होगा। फिर उस पर बेहतरीन गुलकारियाँ हैं, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता, उन जन्नतों के फल जन्नतियों से बिल्कुल क़रीब हैं, जब चाहें जिस हाल में चाहें वहीं से ले लें। लेटे हों तो बैठने की और बैठे हों तो खड़ा होने की ज़रूरत नहीं, ख़ुद-बख़ुद शाख़ें झूम-झूमकर झुकती रहती हैं। जैसे फ़रमायाः

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ.

और फ़रमायाः

Mahtab E Ashraf

دَانِيَةٌ عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا...... الخ.

यानी बेहद क़रीब मेवे हैं, लेने वाले को कोई तकलीफ़ या तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं। ख़ुद शाख़ें झुक झुककर उन्हें मेवे दे रही हैं। पस तुम अपने रब की नेमतों के इनकार से बाज़ रहो।

चूँकि फ़र्श का बयान हुआ था तो साथ ही फ़रमाया कि उन फ़र्शों पर उनके साथ उनकी बीवियाँ होंगी जो आबरू वाली, पाकदामन, शर्मीली और नीची निगाहों वाली होंगी, कि अपने शौहरों के सिवा किसी पर नज़रें न डालेंगी और उनके शौहर भी उन पर सौ जान से निसार होंगे। ये भी जन्नत की किसी चीज़ को अपने उन मोमिन शौहरों से बेहतर न पायेंगी। यह भी नक़ल है कि ये हूरें अपने शौहरों से कहेंगे कि ख़ुदा की क़सम सारी जन्नत में मेरे लिये तुमसे बेहतर कोई चीज़ नहीं। ख़ुदा ख़ूब जानता है कि मेरे दिल में जन्नत की किसी चीज़ की ख़्वाहिश व मुहब्बत इतनी नहीं जितनी आपकी है। अल्लाह का शुक्र है कि उसने अपको मेरे हिस्से में कर दिया और मुझे आपकी ख़िदमत का शर्फ़ बख़्शा। ये हूरें कुंवारी नौउम्र होंगी, उन जन्नतियों से पहले उनको किसी इनसान व जिन्नात का हाथ भी नहीं लगा। यह आयत भी मोमिन जिन्नात के जन्नत में जाने की दलील है। हज़रत ज़मरा बिन हबीब से सवाल होता है कि क्या मोमिन जिन्नात भी जन्नत में जायेंगे? आपने फ़रमाया हाँ, और जिन्न औरतों से उनके निकाह होंगे जैसे इनसानों के इनसान औरतों से। फिर यही आयतें तिलावत कीं।

फिर उन हूरों की तारीफ़ बयान हो रही है कि वे अपनी सफ़ाई, ख़ूबी और हुस्न में ऐसी हैं जैसे याक़ूत व मरजान (यानी क़ीमती मौती), याक़ूत से सफ़ाई में तश्बीह दी और मरजान से सफ़ेद होने में। इसलिये मरजान से मुराद यहाँ लुअ्लुअ् है। नबी सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत वालों की बीवियों में से हर एक ऐसी है कि उनकी पिण्डली की सफ़ेदी सत्तर-सत्तर जोड़ों के पहनने के बाद भी नज़र आती है, यहाँ तक कि अन्दर का गूदा भी। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ.

(यानी गोया कि वे याक़ूत व मरजान हैं) और फ़रमाया देखो याक़ूत एक पत्थर है लेकिन क़ुदरत ने उसकी सफ़ाई और चमक ऐसी रखी है कि उसके बीच में धागा पिरो दो तो बाहर से नज़र आता है। (इब्ने अबी हातिम) यह रिवायत तिर्मिज़ी में भी मौक़ूफ़न हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद से मौजूद है, और इमाम तिर्मिज़ी इसी को ज़्यादा सही बतलाते हैं। मुस्नद अहमद में है, पैग़म्बरे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर जन्नती की दो बीवियाँ इस सिफ़त की होंगी कि सत्तर सत्तर जोड़े (लिबास) पहन लेने के बाद भी उनकी पिण्डलियों की झलक दिखाई देगी, बल्कि अन्दर का गूदा भी सफ़ाई के सबब दिखाई देगा। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि या तो फ़ख़्र के तौर पर या गुफ़्तगू में यह बहस छिड़ गयी कि जन्नत में औरतें ज़्यादा होंगी या मर्द? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- क्या अबुल-क़ासिम (हुज़ूरे पाक सल्ल.) ने यह नहीं फ़रमाया कि पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी वह चाँद जैसी सूरतों वाली होगी। उनके पीछे जो जमाअ़त जायेगी वह आसमान के बेहतरीन चमकते तारों जैसे चेहरों वाली होगी। उनमें से हर शख़्स की दो बीवियाँ ऐसी होंगी जिनकी पिण्डली का गूदा गोश्त के पीछे से नज़र आयेगा, और जन्नत में कोई बिना बीवी के न होगा। इस हदीस की असल बुख़ारी में भी है।

मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की राह की सुबह और उसकी राह की शाम सारी दुनिया और जो इसमें है सब से बेहतर है। जन्नत में जो जगह तुम्हें मिलेगी उसमें से एक कमान या एक

कोड़े के बराबर की जगह सारी दुनिया और उसकी सारी चीज़ों से अफ़ज़ल है। अगर जन्नत की औरतों में से एक औरत दुनिया में झाँक ले तो ज़मीन व आसमान को जगमगा दे और ख़ुशबू से तमाम आलम महक उठे। उनकी हल्की सी छोटी दुपटिया भी दुनिया और दुनिया की हर चीज़ से क़ीमती है। सही बुख़ारी में यह हदीस भी है। फिर इरशाद है कि दुनिया में जिसने नेकी की उसका बदला आख़िरत में सुलूक व एहसान के सिवा और कुछ नहीं। जैसे इरशाद है:

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ.

नेकी करने वाले के लिये नेकी है और ज़्यादती यानी जन्नत और अल्लाह तआ़ला का दीदार।

हुज़ूरे पाक सल्ल. ने यह आयत तिलावत करके अपने सहाबा से पूछा- जानते हो तुम्हारे रब ने क्या कहा? उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल को ही पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं जिस पर अपनी तौहीद (यानी ईमान) का इनाम दुनिया में करूँ उसका बदला आख़िरत में जन्नत है, और चूँकि यह भी एक अ़ज़ीमुश्शान नेमत है, जो दर असल किसी अ़मल के बदले नहीं बल्कि सिर्फ़ उसका एहसान और फ़ज़्ल व करम है, इसलिये उसके बाद ही फ़रमाया- अब तुम मेरी किस-किस नेमत से लापरवाही बरतोगे?

रब के मक़ाम से डरने वाले की ख़ुशख़बरी के मुताल्लिक़ तिर्मिज़ी शरीफ़ की यह हदीस भी ज़ेहन में रहे कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जो डरेगा वह रात के वक़्त ही कूच करेगा और जो अन्धेरी रात में चल पड़ा वह मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच जायेगा। ख़बरदार हो जाओ, ख़ुदा का सौदा बहुत महंगा है। याद रखो वह सौदा जन्नत है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को ग़रीब बतलाते हैं। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मैंने मिम्बर पर वअ़ज़ बयान फ़रमाते हुए सुना कि आपने आयत "व लिमन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान" पढ़ी तो मैंने कहा अगरचे चोरी की हो? बाक़ी तफ़सील ऊपर गुज़र चुकी।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ وَمِنْ
دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ مُدْهَآمَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ○ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ
وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (61) और उन दोनों बाग़ों से कम दर्जे में दो बाग़ और हैं। (62) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (63) वे दोनों बाग़ गहरे सब्ज़ होंगे। (64) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (65) उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो कि जोश मारते होंगे। (66) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (67) उन दोनों बाग़ों के अन्दर मेवे और खजूरें और अनार होंगे। (68) सो ऐ

Maktab E Ashraf

تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ
فِى الْخِيَامِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ
وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ
حِسَانٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ
وَالْاِكْرَامِ ۝ ع ٣ ١٣

जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (69) उनमें अच्छे गुण वाली ख़ूबसूरत औरतें होंगी (यानी हूरें)। (70) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (71) वे औरतें गोरी रंगत की होंगी (और) ख़ेमों में महफ़ूज़ होंगी। (72) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (73) (और) इन (जन्नती) लोगों से पहले उन पर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। (74) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (75) वे लोग हरे नक़्श वाले और अजीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्शों) पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (76) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (77) बड़ा बरकत वाला नाम है आपके रब का, जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है। (78)

दो दूसरी जन्नतें

ये दोनों जन्नतें जिनका ज़िक्र इन आयतों में है उन जन्नतों से कम मर्तबे वाली हैं जिनका ज़िक्र पहले गुज़रा, और वह हदीस भी बयान हो चुकी है जिसमें है कि दो जन्नतें सोने की और दो चाँदी की होंगी। पहली दो जन्नतें तो अल्लाह के ख़ास और क़रीबी बन्दों का ठिकाना हैं और ये दूसरी दो दायें वालों की। ग़र्ज़ कि दर्जे और फ़ज़ीलत में ये उन दो से कम हैं, जिसकी दलीलें बहुत सी हैं। एक यह कि उनका ज़िक्र और सिफ़त इनसे पहले बयान हुई और उनका पहले बयान करना भी दलील है उनकी फ़ज़ीलत की। फिर यहाँ "व मिन् दूनिहिमा जन्नतान" फ़रमाना साफ़ ज़ाहिर करता है कि ये उनसे कम मर्तबे वाली हैं। वहाँ उनकी तारीफ़ में "ज़वाता अफ़नान" कहा था यानी बहुत ज़्यादा विभिन्न ज़ायक़ों के मेवों वाली शाख़ों दार। यहाँ फ़रमाया "मुदहाम्मतान" यानी पानी की पूरी तरी से सियाह। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं सब्ज़। मुहम्मद बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि सब्ज़ी से पुर। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इस क़द्र फल पके हुए तैयार हैं कि वह सारी जन्नत सरसब्ज़ (हरी-भरी) मालूम हो रही है। ग़र्ज़ कि वहाँ शाख़ों की कसरत बयान हुई और यहाँ पेड़ों की अधिकता बयान फ़रमाई गयी, तो ज़ाहिर है कि उसमें और इसमें बहुत फ़र्क़ है। उनकी नहरों के बारे में लफ़्ज़ "तजरियान" है (कि वे जारी हैं) और यहाँ लफ़्ज़ "नज़्ज़ाख़तान" है यानी

उबलने वाली, और यह ज़ाहिर है कि "नज़ख़" से "जरी" यानी उबलने से बहना बहुत बरतरी वाला है।

हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं- यानी पुर हैं, पानी रुकता नहीं, और लीजिए वहाँ फ़रमाया था कि हर तरह के मेवों के जोड़े हैं और यहाँ फ़रमाया- उसमें मेवे, खजूरें और अनार हैं, तो ज़ाहिर है कि पहले के अलफ़ाज़ उमूमियत लिये हुए हैं, जो अफ़ज़लियत रखते हैं।

इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह की तहक़ीक़ भी यही है कि खजूर और अनार को ख़ुसूसन इसलिये ज़िक्र किया कि और मेवों पर उन्हें शर्फ़ और बरतरी हासिल है। मुस्नद अ़ब्द बिन हुमैद में से यहूदियों ने आकर रसूले ख़ुदा सल्ल. से दरियाफ़्त किया- क्या जन्नत में मेवे हैं? आपने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया हाँ हैं। उन्होंने पूछा क्या जन्नती दुनिया की तरह वहाँ भी खायेंगे-पियेंगे? आपने फ़रमाया हाँ बल्कि बहुत कुछ ज़्यादा और बहुत कुछ ज़्यादा। उन्होंने कहा क्या वहाँ फ़ुज़ला (पेशाब-पाख़ाना) भी निकलेगा? आपने फ़रमाया नहीं! बल्कि पसीना आकर सब हज़म हो जायेगा। इब्ने अबी हातिम की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि जन्नती खजूर के दरख़्तों के रेशों का जन्नतियों का लिबास बनेगा। ये सुर्ख़ रंग के सोने के होंगे, उसके तने सब्ज़ ज़ुमुर्रुद के होंगे। उसके फल शहद से ज़्यादा मीठे और मसके से ज़्यादा नर्म होंगे। गुठली बिल्कुल न होगी। एक और हदीस में है कि मैंने जन्नत के अनार देखे, इतने बड़े थे जैसे ऊँट मय होदज के (यानी बहुत बड़े)। 'ख़ैरात' के मायने है बहुत ज़्यादा, बहुत हसीन, बहुत नेक और अच्छे अख़्लाक़ वाला। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह मायने बयान किये गये हैं।

एक और हदीस में है कि हूरे ऐन जो गाना गायेंगी उनमें यह भी होगा कि हम अच्छे अख़्लाक़ वाली और ख़ूबसूरत हैं, जो इज़्ज़त व रुतबे वाले शौहरों के लिये पैदा की गयी हैं। यह पूरी हदीस सूरः वाक़िआ की तफ़सीर में भी आयेगी, इन्शा-अल्लाह तआ़ला। फिर सवाल होता है कि अब तुम अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाते हो? हूरें हैं जो ख़ेमों में रहती सहती हैं, यहाँ भी वही फ़र्क़ मुलाहिज़ा हो कि वहाँ तो फ़रमाया था कि ख़ुद वे हूरें अपनी निगाह नीची रखती हैं और यहाँ फ़रमाया कि उनकी निगाहें नीची की गयी हैं, पस अपने एक काम को करना और दूसरे से कराया जाना इन दोनों में किस क़द्र फ़र्क़ है, अगरचे पर्दा दोनों सूरतों में हासिल है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर मुसलमान के लिये ख़ैरा है यानी नेक और बेहतरीन नूरानी हूर, और हर ख़ैरा के लिये ख़ेमे के चार दरवाज़े हैं, जिनमें से हर रोज़ तोहफ़ा, हदिया और इनाम आता रहता है। न वहाँ कोई फ़साद है न सख़्ती है, न गन्दगी है न बदबू है। हूरों की सोहबत है जो अछूते साफ़ सफ़ेद चमकीले मोतियों जैसी हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक ख़ेमा है अन्दर से खोखले मोती का जिसकी चौड़ाई साठ मील की है, उसके हर हर कोने में जन्नती बीवियाँ हैं जो दूसरे कोने वालियों को नज़र नहीं आतीं। मोमिन उन सब के पास आता जाता रहेगा। दूसरी रिवायत में उनका तीस मील चौड़ा होना बयान किया गया है। यह हदीस सही मुस्लिम शरीफ़ में भी है। हज़रत अबू दर्दा रज़ि. फ़रमाते हैं कि ख़ेमा एक ही लुअ्लुअ् (मोती) का है जिसके चार हज़ार दरवाज़े और चौखटें सब की सब सोने की होंगी। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अदना दर्जे के जन्नती के अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी, और लुअ्लुअ् व ज़बर्जद (क़ीमती हीरों और जवाहरात) का महल होगा, जो 'जाबिया' से 'सनआ़' तक पहुँचे (ये दो मक़ामात हैं जिनमें बहुत फ़ासला है, मतलब लम्बी दूरी बयान करना है)।

फिर फ़रमाता है उन बेमिस्ल हसीनाओं की पिंडलियाँ अछूती हैं। किसी जिन्नात व इनसान का गुज़र उनके पास नहीं हुआ, पहले भी इस क़िस्म की आयत मय तफ़सीर के गुज़र चुकी है। हाँ पहली जन्नतों की

हूरों के औसाफ़ (सिफ़तों और गुणों) में इतना जुमला वहाँ था कि दो याक़ूत व मरजान जैसी हैं। यहाँ उनके लिये यह नहीं फ़रमाया गया। फिर सवाल हुआ कि तुम्हें रब की किस-किस नेमत का इनकार है? यानी किसी नेमत का इनकार न करना चाहिये। ये जन्नती सब्ज़ रंग के आला क़ीमती फ़र्शों ग़ालीचों और तकियों पर टेक लगाये बैठे हुए होंगे, तख़्त होंगे और तख़्तों पर पाकीज़ा आला फ़र्श होंगे, और बेहतरीन नक़्श व निगार वाले तकिये लगे हुए होंगे। ये तख़्त और ये फ़र्श होंगे, कोई सुर्ख़ रंग का होगा, कोई ज़र्द रंग का और कोई सब्ज़ रंग का। जन्नतियों के कपड़े भी ऐसे ही आला और शानदार होंगे। दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं जिससे उन्हें तश्बीह (मिसाल) दी जाये। ये मख़्मली बिस्तर होंगे, जो बहुत नर्म और बिल्कुल ख़ालिस होंगे। कई-कई रंग के मिले-जुले नक़्श (फूल-बूटे) उनमें बने हुए होंगे।

अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाते हैं, अ़बक़र एक जगह का नाम है जहाँ मुनक़्क़श (फूल-बूटों वाले) बेहतरीन कपड़े बुने जाते थे। ख़लील बिन अहमद रह. फ़रमाते हैं कि हर नफ़ीस और आला चीज़ को अ़रब अ़बक़री कहते हैं, चुनाँचे एक हदीस में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. के बारे में फ़रमाया- मैंने किसी अ़बक़री को नहीं देखा जो हज़रत उमर की तरह पानी के बड़े-बड़े डोल खींचता हो। यहाँ भी ख़्याल फ़रमाईये कि पहली दो जन्नतों के फ़र्श व फ़रूश और वहाँ के तकियों की जो सिफ़त बयान की गयी है वह उनसे आला है, वहाँ बयान फ़रमाया गया था कि उनके अस्तर यानी अन्दर का कपड़ा ख़ालिस उम्दा रेशम का होगा, फिर ऊपर के कपड़े का बयान नहीं हुआ था, क्योंकि जिसका अस्तर इतना आला है उसके अबरे यानी ऊपर के कपड़े का तो कहना ही किया है? फिर अगली दो जन्नतों की सिफ़तों के ख़ात्मे पर फ़रमाया था कि इताअ़त का सिला सिवाय इनायत के और क्या हो सकता है? तो उन जन्नत वालों की सिफ़तों में एहसान को बयान फ़रमाया जो आला मर्तबा और इन्तिहा है। जैसा कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम वाली हदीस में है कि उन्होंने इस्लाम का सवाल किया, फिर ईमान का, फिर एहसान का। पस ये कई-कई वुजूहात (कारण) हैं जिनसे साफ़ साबित है कि पहले की दो जन्नतों को इन दो जन्नतों पर बेहतरीन फ़ज़ीलत हासिल है। अल्लाह तआ़ला करीम व वह्हाब से हमारा सवाल है कि वह हमें भी उन जन्नतियों में करे जो इन दो जन्नतों में होंगे, जिनकी सिफ़ात व ख़ूबियाँ पहले बयान हुईं। आमीन

फिर फ़रमाता है कि तेरे जलाल व अ़ज़मत वाले रब का नाम बरकत वाला है। वह जलाल वाला है, यानी इस लायक़ है कि उसका जलाल (बड़ाई और अ़ज़मत वाला होना) माना जाये और उसकी बुज़ुर्गी का लिहाज़ करके उसकी नाफ़रमानी न की जाये, बल्कि पूरी इताअ़त के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी जाये और वह इस क़ाबिल है कि उसका इकराम किया जाये, यानी उसकी इबादत की जाये, उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न की जाये, उसका शुक्र किया जाये, उसका ज़िक्र किया जाये और उसे भुलाया न जाये। वह अ़ज़मत और बड़ाई वाला है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इकराम करो, उसकी अ़ज़मत मानो, वह तुम्हें बख़्श देगा। (मुस्नद अहमद) एक और हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत मानने में यह भी दाख़िल है कि बूढ़े मुसलमान की और बादशाह की और हामिले-क़ुरआन की जो क़ुरआन में कमी ज़्यादती न करता हो, यानी न उसमें हद से बढ़ता हो न कमी करता हो, इज़्ज़त की जाये। अबू यअ़्ला में है "या ज़ल-जलालि वल-इक्राम" के साथ चिमट जाओ। तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसकी सनद को ग़ैर-महफ़ूज़ और ग़रीब बतलाते हैं। मुस्नद अहमद में दूसरी सनद के साथ यह हदीस मौजूद है, उसमें "या" का लफ़्ज़ नहीं।

सही मुस्लिम और सुनने अरबआ में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. नमाज़ से सलाम फेरने के बाद सिर्फ़ इतनी ही देर बैठते कि यह कलिमा कह लें:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام.

अल्लाहुम्-म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्-त या ज़ल-जलालि वल-इक्राम।

अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसकी तौफ़ीक़ से सूरः रहमान की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः वाक़िआ

सूरः वाक़िआ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 96 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः वाक़िआ

एक मर्तबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा- या रसूलल्लाह! आप बूढ़े हो गये। आपने फ़रमाया हाँ मुझे सूरः हूद, सूरः वाक़िआ, सूरः मुर्सलात, सूरः नबा और सूरः तकवीर ने बूढ़ा कर दिया।

इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी रह. ने ज़िक्र किया है, कि जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बीमार हुए जिस बीमारी से आप बच न सके, उस बीमारी में हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. उनकी इयादत के लिये तशरीफ़ ले गये, पूछा- आपको क्या शिक्वा है? फ़रमाया अपने गुनाहों का। मालूम किया इच्छा क्या है? फ़रमाया अपने रब की रहमत की। पूछा किसी तबीब (इलाज करने वाले) को भेज दूँ? फ़रमाया- तबीब ने ही तो बीमार कर डाला है। पूछा कुछ माल भेज दूँ? फ़रमाया मुझे माल की कोई हाजत नहीं। कहा आपके बाद आपके बच्चों को काम आयेगा। फ़रमाया- मेरी बच्चियों के बारे में आपको ग़रीबी का डर है? सुनिये मैंने अपनी सब लड़कियों को कह दिया है कि वे हर रात सूरः वाक़िआ पढ़ लिया करें। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जो शख़्स सूरः वाक़िआ को हर रात पढ़ लिया करे उसे हरगिज़-हरगिज़ फ़ाक़ा न पहुँचेगा। इस वाक़िए के रावी हज़रत अबू ज़बया भी इस सूरत को बिला नाग़ा पढ़ा करते थे। मुस्नद अहमद में है, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. नमाज़ें इसी तरह पढ़ते थे जिस तरह तुम आज पढ़ते हो, लेकिन आपकी नमाज़ तख़्फ़ीफ़ वाली (यानी हल्की) होती थी। फ़जर की नमाज़ में आप सूरः वाक़िआ और इसी जैसी सूरतें तिलावत फ़रमाया करते थे।

Mahtab E Ashraf

Maktab E Ashraf

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۝ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا ۝ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝	जब क़ियामत क़ायम होगी। (1) जिसके क़ायम होने में कोई झूठ नहीं है। (2) तो वह (बाज़ को) पस्त कर देगी (और बाज़ को) बुलन्द कर देगी। (3) जबकि ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा (4) और पहाड़ बिल्कुल टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। (5) फिर वे मुन्तशिर (बिखरे हुआ) ग़ुबार हो जाएँगे। (6) और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे। (7) सो जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं। (8) और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं। (9) और जो आला दर्जे के हैं वे तो आला ही दर्जे के हैं। (10) (और) वे (अल्लाह के साथ) ख़ास निकटता रखने वाले हैं। (11) ये (निकटता रखने वाले) लोग आराम के बाग़ों में होंगे। (12)

क़ियामत, हिसाब व किताब, अल्लाह के ख़ास बन्दों की जमाअ़त और जन्नतुल-फ़िरदौस

"वाक़िआ़" क़ियामत का नाम है क्योंकि उसका होना यक़ीनी चीज़ है। जैसे एक और आयत में है:

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ.

उस दिन होने वाली होकर रहेगी।

इस घटना का होना निश्चित चीज़ है, न उसे कोई टाल सके न हटा सके, वह अपने मुक़र्रर वक़्त पर आकर रहेगी। जैसे एक और आयत में है:

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ.... الخ.

अपने परवर्दिगार की बातें मान लो, इससे पहले कि वह दिन आये जिसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं। एक और जगह फ़रमायाः

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ.

साईल का सवाल उस अ़ज़ाब से है जो यक़ीनन आने वाला है, जिसे कोई रोक नहीं सकता। एक और आयत में है:

يَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ...... الخ.

जिस दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा 'हो जा' तो वह हो जायेगी, उसी का क़ौल हक़ है, उसी का मुल्क है, जिस दिन सूर फूँका जायेगा। वह ग़ैब व ज़ाहिर का आ़लिम है, और वह हकीम व ख़बीर है, क़ियामत की इत्तिला ग़लत नहीं है, बल्कि वह बरहक़ है। ज़रूर होने वाली है। उस दिन न तो दोबारा आना है, न वहाँ से लौटना है, न वापस आना है। वह दिन पस्त करने वाला और तरक़्क़ी कर देने वाला है। बहुत से लोगों को नीचों का नीच करके जहन्नम में पहुँचा देगा जो दुनिया में बड़े इज़्ज़त व सम्मान वाले थे, और बहुत से लोगों को वह ऊँचा कर देगा, आला इल्लिय्यीन और जन्नते नईम तक पहुँचा देगा, अगरचे दुनिया में वे पस्त और बेक़द्र थे। अल्लाह के दुश्मन ज़लील होकर जहन्नमी बन जायेंगे और अल्लाह के वली अ़ज़ीज़ (सम्मानित) होकर जन्नती हो जायेंगे। घमण्डियों को वह ज़लील कर देगी और आ़जिज़ी व विनम्रता करने वालों को वह अ़ज़ीज़ (प्यारा और इज़्ज़त वाला) कर देगी। वह नज़दीक व दूर वालों को सुना देगी और हर एक को चौकन्ना कर देगी। वह नीचा करेगी और क़रीब वालों को सुनायेगी, फिर ऊँची होगी और दूर वालों को सुनायेगी। ज़मीन सारी की सारी लरज़ने लगेगी, चप्पा-चप्पा कपकपाने लगेगा, ज़मीन की लम्बाई व चौड़ाई में ज़लज़ला पड़ जायेगा और वह बुरी तरह हिलने लगेगी। यह हालत हो जायेगी कि गोया छलनी में कोई चीज़ है जिसे कोई हिला रहा है। एक और आयत में है:

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا.

कि जब ज़मीन ख़ूब सख़्ती के साथ हिला दी जायेगी। एक और जगह है:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ.

लोगो ख़ुदा से डरो जो तुम्हारा रब है, यक़ीन मानो कि क़ियामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी चीज़ है।

फिर फ़रमाया कि पहाड़ उस दिन रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे। एक और जगह ये अलफ़ाज़ हैं:

كَثِيْبًا مَّهِيْلًا.

पस वह एक ग़ुबार की तरह उड़ते फिरेंगे, जिसे हवा इधर-उधर बिखेर दे और कुछ न रहे। 'हबाअन्' उन शरारों को भी कहते हैं जो आग जलाते वक़्त पतंगों की तरह उड़ते हैं, नीचे गिरने पर वह कुछ नहीं रहते। "मुन्बस्सन्" उस चीज़ को कहते हैं जिसे हवा ऊपर कर दे और फैलाकर नेस्त व नाबूद कर दे, जैसे ख़ुश्क पत्तों के चूरे को हवा इधर-उधर कर देती है। इस क़िस्म की और आयतें भी बहुत हैं जिनसे साबित है कि पहाड़ अपनी जगह से टल जायेंगे, टुकड़े हो जायेंगे, फिर रेज़ा-रेज़ा होकर बेनाम व निशान हो जायेंगे। लोग उस दिन तीन क़िस्मों में बंट जायेंगे, एक जमाअ़त अ़र्श की दायीं तरफ़ होगी, और वे लोग वे होंगे जो हज़रत आदम की दाहिनी करवट से निकले थे, और नामा-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिये जायेंगे, और दायीं ओर चलाये जायेंगे, ये जन्नतियों का आ़म गिरोह है। दूसरी जमाअ़त अ़र्श की बायीं तरफ़ होगी, ये लोग वे होंगे जो हज़रत आदम की बायीं करवट से निकाले गये थे, उन्हें नामा-ए-आमाल बायें हाथ में दिये गये थे, और बायीं तरफ़ की राह पर लगाये गये थे, ये सब जहन्नमी हैं। अल्लाह तआ़ला हम सब को जहन्नम से महफ़ूज़ रखे। तीसरी जमाअ़त अल्लाह तआ़ला के सामने होगी, ये ख़ासुल-ख़ास लोग हैं। ये दाहिने वालों से भी ज़्यादा इज़्ज़त व सम्मान वाले और ख़ास निकटता के मालिक हैं, ये जन्नत वालों के सरदार हैं। इनमें रसूल हैं, अम्बिया हैं, सिद्दीक़ व शुहदा हैं। ये संख्या में दायें हाथ वालों के मुक़ाबले में कम हैं।

पस मेहशर में मौजूद तमाम लोगों की ये तीन क़िस्में हो जायेंगी। जैसा कि इस सूरत के आख़िर में भी

मुख़्तसर तौर पर इनकी यही तक़सीम की गयी है। इसी तरह सूरः फ़ातिर में फ़रमाया हैः

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ ۢ بِالْخَيْرَاتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ.

यानी फिर हमने अपनी किताब का वारिस अपने चुने हुए बन्दों को बनाया। पस उनमें से बाज़ तो अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले हैं और बाज़ दरमियानी चाल चलने वाले हैं और बाज़ अल्लाह के हुक्म से नेकियों की तरफ़ आगे बढ़ने वाले हैं।

पस यहाँ भी तीन क़िस्में हैं, यह उस वक़्त है जबकि "ज़ालिमुन् लि-नफ़्सिही" की वह तफ़सीर लें जो इसके मुताबिक़ है, वरना एक दूसरा क़ौल भी है जो इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर गुज़र चुका। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह भी यही फ़रमाते हैं, दो गिरोह तो जन्नती और एक जहन्नमी। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब लोगों के जोड़े मिलाये जायेंगे, फ़रमाया तरह-तरह के यानी हर अ़मल के आ़मिल की एक जमाअ़त, जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम तीन क़िस्म पर हो जाओगे, यानी दाहिनी तरफ़ वाले, बायीं तरफ़ वाले और साबिक़ीन (अल्लाह की ख़ास निकटता रखने वाले, औरों से आगे बढ़ने वाले)।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की और अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बन्द कर लीं और फ़रमाया- ये जन्नती हैं, मुझे कोई परवाह नहीं। ये सब जहन्नमी हैं और मुझे कोई परवाह नहीं। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जानते हो अल्लाह तआ़ला के साय की तरफ़ क़ियामत के दिन सबसे पहले कौन लोग जायेंगे? सहाबा ने कहा अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानते हैं। आपने फ़रमाया- वे लोग जिनको जब उनका हक़ दिया जाये तो वे क़बूल कर लें और जो हक़ उन पर हो जब माँगा जाये अदा कर दें। और लोगों के लिये भी वही हुक्म करें जो ख़ुद अपने लिये करते हैं (यानी सिर्फ़ दूसरों ही को नसीहत न करें बल्कि ख़ुद भी अ़मल करें)।

"अस्साबिक़ून" (आगे बढ़ने वाले) कौन लोग हैं? इसके बारे में बहुत से अक़वाल हैं। मिसाल के तौर पर- अम्बिया, इल्लिय्यीन वाले, हज़रत यूशा बिन नून जो हज़रत मूसा पर सबसे पहले ईमान लाये थे, वह मोमिन शख़्स जिनका ज़िक्र सूरः यासीन में है, जो हज़रत ईसा पर पहले ईमान लाये थे, हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब रज़ि. जो मुहम्मद सल्ल. की दावते ईमान क़बूल करने में सब पर सबक़त कर गये थे, वे लोग जिन्होंने दोनों क़िब्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी थी, हर उम्मत के वे लोग जो अपने अपने नबियों पर पहले पहल ईमान लाये थे, वे लोग जो मस्जिद में सबसे पहले जाते हैं, जो जिहाद में सबसे आगे निकलते हैं। ये सब अक़वाल दर असल सही हैं, यानी ये सब लोग साबिक़ून हैं। अल्लाह तआ़ला के फ़रमान को आगे बढ़कर दूसरों पर सबक़त करके (आगे बढ़कर) क़बूल करने वाले सब इसमें दाख़िल हैं। क़ुरआने करीम में एक दूसरी जगह हैः

سَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ...... الخ.

अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ जल्दी करो जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है। पस जिस शख़्स ने इस दुनिया में नेकियों की तरफ़ सबक़त की, वह आख़िरत में ख़ुदा की नेमतों की तरफ़ भी साबिक़ (आगे रहने वाला) ही रहेगा। हर अ़मल की जज़ा उसी के हिसाब से होती है, जैसा जो

Maktab E Ashraf

करता है वैसा ही पाता है। इसी लिये यहाँ उनके बारे में फ़रमाया गया कि ये अल्लाह के ख़ास और क़रीबी हैं। ये नेमतों वाली जन्नत में हैं।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. से रिवायत है कि फ़रिश्तों ने अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ की कि परवर्दिगार! तूने इनसान के लिये तो दुनिया बना दी है, और वे वहाँ खाते पीते और बीवी बच्चों से लुत्फ़ उठाते हैं, पस हमारे लिये आख़िरत को दे। जवाब मिला कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। उन्होंने तीन मर्तबा यही दुआ़ की, पस ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया- मैंने जिसे अपने हाथ से पैदा किया उसे उन जैसा हरगिज़ न करूँगा जिन्हें मैंने सिर्फ़ लफ़्ज़ 'कुन' (हो जा) से पैदा किया। हज़रत इमाम दारमी रह. ने भी इस क़ौल को अपनी किताब 'अर्रद्दु अ़लल् जहमिया' में ज़िक्र किया है। उसके अलफ़ाज़ यह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया है उसकी नेक औलाद को मैं उस जैसा न करूँगा जिसे मैंने कहा हो जा, तो वह हो गया।

Maktab E Ashraf

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۭ
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا
مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُوْنَ ۙ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ
مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا
يُنْزِفُوْنَ ۙ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۭ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا
وَّلَا تَاْثِيْمًا ۙ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝

उनका एक बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा। (13) और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे। (14) (वे लोग) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर (15) तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे। (16) उनके आस-पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे ये चीज़ें लेकर आना-जाना किया करेंगे- (17) आबख़ोरे और आफ़ताबे "यानी ढक्कनदार लोटे और डोंगे" और ऐसा शराब का जाम जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। (18) न उससे उनको सरदर्द होगा और न उससे अ़क्ल में फ़तूर आयेगा। (19) और मेवे जिनको वे चाहेंगे। (20) और परिन्दों का गोश्त जो उनको पसन्दीदा होगा (21) और (उनके लिए) गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वाली औ़रतें होंगी (यानी हूरें)। (22) जैसे (हिफ़ाज़त से) छुपाकर रखा हुआ मोती। (23) यह उनके आमाल के बदले में मिलेगा। (24) (और) वहाँ न बक-बक सुनेंगे और न कोई (और) बेहूदा बात। (25) बस (हर तरफ़ से) सलाम की आवाज़ आएगी। (26)

एक बड़ी जमाअ़त

इरशाद होता है कि अल्लाह के ख़ास और क़रीबी बन्दों में बहुत से पहलों में के हैं और कुछ पिछलों में से भी हैं। इन 'अव्वलीन' व 'आख़िरीन' (पहले के और बाद के) की तफ़सीर में कई क़ौल हैं। मिसाल के

Maktaba E Ashraf

तौर पर पहली उम्मतों में से और इस उम्मत में से। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी क़ौल को पसन्द करते हैं और इस हदीस को भी इस क़ौल के सही होने में पेश करते हैं कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- हम पिछले हैं और क़ियामत के दिन पहले हैं, और इस क़ौल की ताईद इब्ने अबी हातिम की इस रिवायत से भी हो सकती है कि जब यह आयत उतरी तो सहाबा किराम को कुछ मलाल और रंज हुआ, तो उसके बाद यह आयत उतरीः

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ.

(यानी इसी सूरत की आगे आ रही आयत नम्बर 39 और 40) तो हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया- मुझे उम्मीद है कि तमाम जन्नत वालों के चौथाई तुम हो, बल्कि तिहाई तुम हो, बल्कि आधे तुम हो, तुम आधी जन्नत के मालिक होओगे और बाक़ी आधी तमाम उम्मतों में तक़सीम होगी, जिनमें तुम भी शरीक हो। यह हदीस मुस्नद अहमद में भी है। इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत उमर ने इस आयत को सुनकर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! क्या पहली उम्मतों में से बहुत लोग साबिक़ीन में दाख़िल होंगे और हममें से कम लोग? इस सवाल के एक साल बाद यह आयत नाज़िल हुई कि पहलों में से भी बहुत और पिछलों में से भी बहुत। हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत उमर रज़ि. को बुलाकर कहा कि सुनो! हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर मुझ तक एक गिरोह है और सिर्फ़ मेरी उम्मत एक गिरोह है। हम अपने गिरोह (जमाअ़त) को पूरा करने के लिये उन हब्शियों को भी ले लेंगे जो ऊँटों के चरवाहे हैं (यानी दुनिया में अरगचे वे ग़रीब हैं) मगर अल्लाह तआ़ला के एक और ला-शरीक होने की गवाही देते हैं। लेकिन इस रिवायत की सनद में कुछ कमज़ोरी है, हाँ बहुत सी सनदों के साथ हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान साबित है कि मुझे उम्मीद है कि तुम जन्नत वालों की चौथाई हो और फिर बाक़ी मज़मून वही है जो दूसरी रिवायतों में आ चुका। पस अल्हम्दु लिल्लाह यह एक बेहतरीन ख़ुशख़बरी है।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने जिस क़ौल को पसन्द फ़रमाया है वह कमज़ोर है, क्योंकि क़ुरआन के अलफ़ाज़ से इस उम्मत का दूसरी तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल व आला होना साबित है, फिर यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह के मुक़र्रब दूसरी उम्मतों में से तो बहुत से हों और इस बेहतरीन उम्मत में से कम हों। हाँ यह तौजीह हो सकती है कि उन तमाम उम्मतों के मुक़र्रब (ख़ास और अल्लाह के क़रीबी बन्दे) मिलकर सिर्फ़ इस एक उम्मत के मुक़र्रब हज़रात की तायदाद से बढ़ जायें, लेकिन बाज़ाहिर तो यह मालूम होता है कि तमाम उम्मतों के मुक़र्रब लोगों से सिर्फ़ इस उम्मत के मुक़र्रब हज़रात की तायदाद ज़्यादा होगी, और असल वाक़िए का इल्म ख़ुदा तआ़ला ही को है।

दूसरा क़ौल इस जुमले की तफ़सीर में यह है कि इस उम्मत के शुरू ज़माने के लोगों में से मुक़र्रब हज़रात की तायदाद बहुत ज़्यादा है और बाद के लोगों में कम, यही क़ौल आ़म तौर पर मशहूर है। चुनाँचे हज़रत हसन से मन्क़ूल है कि आपने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया- साबिक़ीन तो गुज़र चुके, ऐ अल्लाह तू हमें दाहिने वालों में कर दे। एक और रिवायत में है कि आपने फ़रमाया- इस उम्मत में से जो गुज़र चुके उनमें मुक़र्रब हज़रात बहुत थे। इमाम इब्ने सीरीन रह. भी यही फ़रमाते हैं। कोई शक नहीं कि हर उम्मत में यही होता चला आया है कि शुरू में बहुत से मुक़र्रब हज़रात होते हैं और बाद वालों में यह तायदाद कम हो जाती है, तो यह भी मुम्किन है कि मुराद यूँ ही हो, यानी हर उम्मत के पहले लोग सबक़त करने वाले ज़्यादा होते हैं, हर उम्मत के पिछले लोगों के मुक़ाबले में। चुनाँचे हदीस की बड़ी और मुस्तनद

किताबों से साबित है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- सब ज़मानों में बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है, फिर उसके बाद वाला फिर उसके बाद वाला.....। हाँ एक हदीस में यह भी आया है कि मेरी उम्मत की मिसाल बारिश जैसी है, न मालूम कि शुरू ज़माने की बारिश बेहतर हो या आख़िर ज़माने की। तो यह हदीस जबकि इसकी सनद के सही होने का हुक्म दे दिया जाये महमूल है इस बात पर कि जिस तरह दीन को शुरू के लोगों की ज़रूरत थी जो उसकी तब्लीग़ अपने बाद वालों को करें, इसी तरह आख़िर में भी इसे क़ायम रखने वालों की ज़रूरत है, जो लोगों को सुन्नते रसूल पर जमायें, इसकी रिवायतें करें, इसे लोगों पर ज़ाहिर करें, लेकिन फ़ज़ीलत अव्वल वालों को ही रहेगी। ठीक उसी तरह जिस तरह खेत को शुरू बारिश की और आख़िरी बारिश की ज़रूरत होती है, लेकिन बड़ा फ़ायदा शुरू की बारिश से ही होता है, इसलिये कि अगर शुरू में बारिश न हो तो दाने उगें ही नहीं, न उनकी जड़ें जमेंगी, इसी लिये हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि एक जमाअ़त मेरी उम्मत में से हमेशा हक़ पर रहकर ग़ालिब रहेगी, उनके दुश्मन उन्हें ज़रर (नुक़सान) न पहुँचा सकेंगे, उनके मुख़ालिफ़ उन्हें ज़लील व पस्त न कर सकेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत क़ायम हो जाये और वे इसी तरह हों।

ग़र्ज़ कि यह उम्मत बाक़ी तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल व अशरफ़ (बेहतर और बड़े रुतबे वाली) है और इसमें अल्लाह के मुक़र्रबों (ख़ास और क़रीबी बन्दों) की संख्या दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है, और बहुत बड़े मर्तबे वाले। क्योंकि दीन के कामिल होने और नबी के बुलन्द मर्तबे वाला होने के लिहाज़ से ये सब से बेहतर हैं। तवातुर के साथ यह हदीस सुबूत को पहुँच चुकी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- इस उम्मत में से सत्तर हज़ार लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और होंगे। तबरानी में है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से एक बहुत बड़ी जमाअ़त क़ियामत के रोज़ खड़ी की जायेगी जो इस क़द्र बड़ी और गिनती में ज़्यादा होगी कि गोया रात आ गयी, ज़मीन के तमाम किनारों को घेर लेगी, फ़रिश्ते कहने लगेंगे कि सब नबियों के साथ जितने लोग आये हैं उनसे बहुत ही ज़्यादा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ हैं। मौक़े के मुनासिब है कि बहुत बड़ी जमाअ़त पहलों में से और बहुत ही बड़ी पिछलों में से वाली आयत की तफ़सीर के मौक़े पर यह हदीस ज़िक्र कर दी जाये जो हाफ़िज़ अबू बक्र बैहक़ी रह. ने दलाईलुन्नुबुव्वत में ज़िक्र की है, कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब सुबह की नमाज़ पढ़ते तो पाँव मोड़े हुए ही सत्तर मर्तबा यह पढ़तेः

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا.

सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही अस्तग़फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबा।

फिर फ़रमाते कि सत्तर के बदले सात सौ हैं, जिसके एक दिन के गुनाह सात सौ से भी बढ़ जायें वह बेख़बर है। फिर दो मर्तबा इसी को फ़रमाते, फिर लोगों की तरफ़ मुँह करके बैठते और चूँकि हुज़ूर सल्ल. को ख़्वाब अच्छा मालूम होता था इसलिये पूछते कि क्या तुममें से किसी ने कोई ख़्वाब (सपना) देखा है? फ़रमाया ख़ुदा ख़ैर से मिलाये शर से बचाये, हमारे लिये बेहतर बनाये और हमारे दुश्मनों के लिये बदतर बनाये। हर क़िस्म की तारीफ़ों का मुस्तहिक़ (पात्र) वह अल्लाह है जो तमाम जहानों का पालने वाला है। अपना ख़्वाब बयान करो। इब्ने ज़मल जोहनी रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने कहा- या रसूलल्लाह मैंने देखा कि एक रास्ता कुशादा (खुला हुआ, चौड़ा), आसान, नर्म और साफ़ है और बेशुमार लोग उस रास्ते पर चले जा रहे हैं। यह रास्ता जाते जाते एक सरसब्ज़ (हरे-भरे) बाग़ में निकलता है, मेरी आँखों ने ऐसा लहलहाता हुआ

हरा-भरा बाग़ कभी नहीं देखा। हर तरफ़ पानी जारी है, सब्ज़े से पटा पड़ा है, तरह-तरह के दरख़्त ख़ुशनुमा फले-फूले खड़े हैं। अब मैंने देखा कि पहली जमाअ़त जो आयी और उस बाग़ के पास पहुँची तो उन्होंने अपनी सवारियाँ तेज़ कर लीं, दायें बायें नहीं गये और तेज़-रफ़्तारी के साथ यहाँ से गुज़र गये। फिर दूसरी जमाअ़त आयी जो तायदाद में बहुत ज़्यादा थी, जब वे यहाँ पहुँचे तो बाज़ लोगों ने तो अपने जानवरों को चराना चुगाना शुरू किया और बाज़ों ने कुछ ले लिया और चल दिये। फिर तो बहुत सारे लोग आये, जब उनका गुज़र इस गुल व गुलज़ार (हरे-भरे बाग़) पर हुआ तो ये तो फूल गये और कहने लगे- यह सबसे अच्छी जगह है, गोया मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वे दायें-बायें झुक पड़े। मैंने देखा लेकिन मैं ख़ुद तो चलता ही रहा। जब दूर निकल गया तो मैंने देखा कि एक मिम्बर सात सीढ़ियों का बिछा हुआ है और आप उसके ऊँचे वाले दर्जे पर तशरीफ़ रखते हैं, और आपकी दायीं ओर एक साहिब हैं गन्दुमी रंग के, भरी उंगलियों वाले, लम्बे क़द वाले, जब वह कलाम करते हैं तो सब ख़ामोशी से सुनते हैं और लोग ऊँचे हो-होकर तवज्जोह से उनकी बातें सुनते हैं। और आपकी बायीं तरफ़ एक शख़्स हैं, भरे जिस्म के दरमियाना क़द के, जिनके चेहरे पर बहुत ज़्यादा तिल हैं, उनके बाल गोया पानी से तर हैं। जब वह बात करते हैं तो सब अदब व एहतिराम से उनकी बात सुनते हैं। और उनसे आगे एक बड़ी उम्र के बुज़ुर्ग शख़्स हैं जो तमाम लोगों के मुक़ाबले में चेहरे नक़्शे में बिल्कुल आप से मिलते-जुलते हैं। आप लोग सब उनकी तरफ़ पूरी तवज्जोह करते हैं और उनका इरादा रखते हैं। उनसे आगे एक दुबली पतली बुढ़िया ऊँटनी है, मैंने देखा कि गोया आप उसे उठा रहे हैं।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल. का रंग बदल गया। थोड़ी देर में आप सल्ल. की यह हालत हो गयी और आपने फ़रमाया- सीधे सच्चे और सही रास्ते से मुराद तो वह दीन है जिसे मैं लेकर ख़ुदा की तरफ़ से आया हूँ और जिस हिदायत पर तुम हो। हरा-भरा बाग़ जो तुमने देखा है वह दुनिया है, और उसके ऐश व आराम का दिल लुभाने वाला सामान हैं और मेरे सहाबा तो उससे गुज़र जायेंगे न हम उसमें मशग़ूल होंगे न वह हमें चिमटेगी, न हमारा ताल्लुक़ उससे होगा न उसका ताल्लुक़ हमसे, न हम उसकी तमन्ना करेंगे न वह हमें लिपटेगी। फिर हमारे बाद दूसरी जमाअ़त आयेगी जो हमसे तायदाद में बहुत ज़्यादा होगी, उनमें से बाज़ तो इस दुनिया में फंस जायेंगे और बाज़ ज़रूरत के मुताबिक़ ले लेंगे और निजात पा लेंगे। फिर उनके बाद एक ज़बरदस्त जमाअ़त आयेगी जो इस दुनिया में बिल्कुल डूब जायेगी और दायें-बायें बहक जायेगी, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।

अब रहे तुम, सो तुम अपनी सीधी राह पर चलते रहोगे, यहाँ तक कि मुझसे तुम्हारी मुलाक़ात हो जायेगी। जिस मिम्बर के आख़िरी सातवें दर्जे पर तुमने मुझे देखा उसकी ताबीर यह है कि दुनिया की उम्र सात हज़ार साल की है, मैं आख़िरी हज़ारवें साल में हूँ। मेरे दायें जिस गन्दुमी रंग के मोटी हथेली वाले इनसान को तुमने देखा वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं, जब वह कलाम करते हैं तो लोग ऊँचे हो जाते हैं इसलिये कि उन्हें अल्लाह तआ़ला से गुफ़्तगू और हम-कलामी का शर्फ़ (गौरव) हासिल हो चुका है, और जिन्हें तुमने मेरी बायीं तरफ़ देखा, जो दरमियानी क़द के भरे जिस्म के बहुत से तिलों वाले थे, जिनके बाल पानी से तर नज़र आते थे, वह हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम हैं। चूँकि उनका इकराम अल्लाह तआ़ला ने किया है, हम सब भी उनका एहतिराम करते हैं। और जिस शैख़ (बूढ़े और बुज़ुर्ग शख़्स) को तुमने बिल्कुल मुझसे मिलता-जुलता देखा वह हमारे बाप हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं, हम सब उनका क़स्द (इरादा) करते हैं और उनकी पैरवी व ताबेदारी करते हैं। और जिस ऊँटनी को तुमने देखा कि मैं उसे

Maktab E Ashraf

खड़ी कर रहा हूँ उससे मुराद क़ियामत है जो मेरी उम्मत पर क़ायम होगी, न मेरे बाद कोई नबी है न मेरी उम्मत के बाद कोई उम्मत है।

फ़रमाते हैं कि उसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल. ने यह पूछना छोड़ दिया कि किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? हाँ अगर कोई शख़्स अपने आप अपना ख़्वाब बयान कर देता तो हुज़ूर सल्ल. ताबीर दे दिया करते थे।

उनके (जन्नत वालों के) बैठने के तख़्त और आराम करने के पलंग सोने के तारों से बुने हुए होंगे। सबके मुँह आपस में एक दूसरे के सामने होंगे, कोई किसी की तरफ़ पुश्त किये हुए न बैठा होगा। जन्नती ख़ादिम उनकी ख़िदमत गुज़ारी में मशग़ूल होंगे, जो उम्र में वैसे ही छोटे रहेंगे, न बड़े होंगे न बूढ़े होंगे न उनमें बदलाव आयेगा। "अकवाब" कहते हैं उन प्यालों को जिनकी टोंटी और पकड़ने की चीज़ न हो और "अबारीक़" वे आफ़ताबे (लोटे और सुराही) जो टोंटी दार और पकड़े जाने के क़ाबिल हों। ये सब शराब की जारी नहर से छलकते हुए होंगे, जो शराब न ख़त्म हो न कम हो, क्योंकि उसके चश्मे बह रहे हैं, जाम छलकते हुए हर वक़्त अपने नाज़ुक हाथों में लिये हुए ये नाज़ुक बदन साक़ी इधर-उधर गश्त कर रहे होंगे। उस शराब से न उन्हें सर में दर्द होगा न उनकी अक़्ल में फ़ुतूर आयेगा, बल्कि बावजूद पूरे सुरूर और मस्ती के अक़्ल व हवास अपनी जगह क़ायम रहेंगे और पूरी लज़्ज़त हासिल होगी।

शराब में चार सिफ़तें हैं- नशा, सरदर्द, क़ै और पेशाब। पस परवर्दिगारे आ़लम ने जन्नत की शराब का ज़िक्र करके इन चारों ख़राबियों की नफ़ी कर दी कि वह शराब इन नुक़सानों से पाक है। फिर तरह-तरह के मेवे और तरह-तरह के परिन्दों के गोश्त उन्हें मिलेंगे। जिस मेवे को जी चाहे और जिस तरह के गोश्त की तरफ़ दिल की चाहत हो मौजूद हो जायेगा। ये तमाम चीज़ें लिये हुए उनके सलीक़े मन्द ख़ादिम हर वक़्त उनके इर्द-गिर्द घूमते रहेंगे, ताकि जिस चीज़ की जब कभी ख़्वाहिश हो ले लें। इस आयत में दलील है कि आदमी मेवे चुन-चुनकर अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ खा सकता है।

मुस्नद अबू यअ़ला मूसली में है, हज़रत अ़िकराश बिन ज़ुवैब रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं अपनी क़ौम के सदक़े के माल लेकर रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप मुहाजिरीन और अन्सार में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरे साथ ज़कात के बहुत से ऊँट थे। आपने फ़रमाया तुम कौन हो? मैंने कहा अ़िकराश बिन ज़ुवैब। फ़रमाया अपना नसब नामा दूर तक बयान कर दो, मैंने मुर्रा बिन उबैद तक कह सुनाया और साथ ही कहा कि यह ज़कात मुर्रा बिन उबैद की है। पस हुज़ूर सल्ल. मुस्कुराये और फ़रमाने लगे- यह मेरी क़ौम के ऊँट हैं, यह मेरी क़ौम के सदक़े का माल है। फिर हुक्म दिया कि सदक़े के ऊँटों के निशान उन पर कर दो और उनके साथ उन्हें भी मिला दो। फिर मेरा हाथ पकड़कर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- कुछ खाने को है? जवाब मिला कि हाँ। चुनाँचे एक बड़े बरतन में चूरी हुई रोटी आपने और मैंने खाना शुरू किया। मैं इधर-उधर से निवाले लेने लगा तो आपने अपने हाथ से मेरा हाथ थाम लिया और फ़रमाया- ऐ अ़िकराश! यह तो एक तरह का खाना है, एक ही जगह से खाओ। फिर एक थाली तर खजूरों की या ख़ुश्क खजूरों की आयी, मैंने सिर्फ़ सामने जो थीं उन्हें खाना शुरू किया, रसूलुल्लाह सल्ल. थाली के इधर-उधर से जहाँ से जो पसन्द आती थी ले लेते थे और मुझसे भी फ़रमाया ऐ अ़िकराश! इसमें हर तरह की खजूर हैं, जहाँ से चाहो खाओ, जिस तरह की ख़जूर चाहो ले लो। फिर पानी आया, पस हुज़ूर सल्ल. ने अपने हाथ धोये और वही तर हाथ अपने चेहरे, दोनों बाज़ुओं और सर पर तीन दफ़ा फेर लिये और फ़रमाया ऐ अ़िकराश! यह वुज़ू है उस चीज़ से जिसे आग ने बदल दिया हो (यानी पकाया हो)। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा) इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब बतलाते हैं।

Maktab E Ashraf

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. को ख़्वाब (सपना) पसन्द था, बहुत सी बार आप पूछ लिया करते थे कि किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? अगर कोई ज़िक्र करता और फिर हुज़ूर सल्ल. उस ख़्वाब से खुश होते तो उसे बहुत अच्छा मालूम होता। एक मर्तबा एक औरत आपके पास आयीं और कहा या रसूलल्लाह! मैंने आज एक ख़्वाब देखा है। जैसे मेरे पास कोई आया और मुझे मदीने से ले चला और जन्नत में पहुँचा दिया। फिर मैंने एक धमाका सुना जिससे जन्नत में हलचल मच गयी। मैंने जो नज़र उठाकर देखा तो फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ और फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ को देखा। बारह शख़्सों के नाम लिये, उन्हीं बारह शख़्सों का एक लश्कर बनाकर हुज़ूर पाक सल्ल. ने कई दिन हुए एक मुहिम पर रवाना कर रखा था, फ़रमाती हैं कि उन्हें लाया गया, ये लोग अत्लस के (रेशमीन) कपड़े पहने हुए थे, उनकी रगें फूली हुई थीं। हुक्म हुआ कि इन्हें नहर बेदख़ में ले जाओ या नहरे बेज़ख़ कहा। जब उन लोगों ने उस नहर में ग़ोता लगाया तो उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकने लगे। फिर एक सोने की थाली में गदरी खजूरें आयीं जो उन्होंने अपनी इच्छा के मुताबिक़ खायीं और साथ ही हर तरह के मेवे जो चारों तरफ़ चुने हुए थे, जिस मेवे को उनका जी चाहता था लेते थे और खाते थे। मैंने भी उनके साथ शिर्कत की और मेवे खाये। मुद्दत के बाद एक क़ासिद आया और कहा कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शख़्स जिन्हें आपने लश्कर में भेजा था शहीद हो गये। ठीक बारह शख़्सों के नाम लिये, और ये वही नाम थे जिन्हें उस औरत ने अपने ख़्वाब में देखा था। हुज़ूर सल्ल. ने उस नेकबख़्त सहाबी औरत को फिर बुलवाया और फ़रमाया- अब अपना ख़्वाब दोबारा बयान करो, उन्होंने फिर बयान किया और उन्हीं लोगों के नाम लिये जिनके नाम क़ासिद ने लिये थे।

तबरानी में है कि जन्नती जिस मेवे को दरख़्त से तोड़ेगा वहीं उस जैसा दूसरा फल लग जायेगा। मुस्नद अहमद में है कि जन्नती परिन्दे बुख़्ती ऊँट के बराबर (यानी बहुत बड़े-बड़े) हैं, जो जन्नत में चरते चुगते रहते हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने कहा कि या रसूलल्लाह! ये परिन्दे तो निहायत ही मज़े के होंगे। आपने फ़रमाया उनके खाने वाले उनसे भी ज़्यादा नाज़ व नेमत वाले होंगे। तीन मर्तबा यही जुमला इरशाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया- मुझे ख़ुदा से उम्मीद है कि ऐ अबू बक्र! तुम उनमें से हो जो उन परिन्दों का गोश्त खायेंगे। हाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह मिस्री की किताब "सिफ़तुल-जन्नत" में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के सामने तूबा का ज़िक्र हुआ, पस हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अबू बक्र रज़ि. से मालूम फ़रमाया कि जानते हो तूबा क्या है? आपने जवाब दिया अल्लाह और उसके रसूल को पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया- जन्नत का एक दरख़्त (पेड़) है, जिसकी लम्बाई का इल्म सिवाय ख़ुदा तआ़ला के और किसी को नहीं। उसकी एक-एक शाख़ के नीचे तेज़ रफ़्तार सवार सत्तर-सत्तर साल तक चलता रहे फिर भी उसका साया ख़त्म न हो। उसके पत्ते बड़े चौड़े चौड़े हैं, उन पर बुख़्ती ऊँट के बराबर (यानी बहुत बड़े-बड़े) परिन्दे आकर बैठते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने कहा फिर तो ये परिन्दे बड़ी ही नेमतों वाले होंगे? आपने फ़रमाया- उनसे ज़्यादा नेमतों वाले उनके खाने वाले होंगे, और इन्शा-अल्लाह तुम भी उन्हीं में से हो।

हज़रत क़तादा रह. से भी यह पिछला हिस्सा रिवायत है। इब्ने अबिद्दुन्या में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. से कौसर के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया- वह जन्नती नहर है जो मुझे अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाई है। दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा उसका पानी है। उसके किनारे बुख़्ती ऊँटों की गर्दनों जैसे परिन्दे हैं। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया वे परिन्दे तो बड़े मज़े में हैं, आपने फ़रमाया उनका खाने वाला उनसे ज़्यादा मज़े में है। (तिर्मिज़ी) इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन कहते हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जन्नत में एक परिन्दा (पक्षी) है जिसके सत्तर हज़ार पर (पंख) हैं,

जन्नती के दस्तरख़्वान पर वह आयेगा, हर पर से उसके एक क़िस्म निकलेगी, जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद और मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा मीठी होगी। फिर दूसरे पर से दूसरी क़िस्म निकलेगी, इसी तरह हर पर से एक दूसरे से अलग। फिर वह परिन्दा उड़ जायेगा। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है और इसके रावी वस्साफ़ी और उनके उस्ताद दोनों ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत कअ़ब से रिवायत है कि जन्नती परिन्दे बुख़्ती ऊँटों के जैसे हैं, जो जन्नत के फल खाते हैं और जन्नत की नहरों के पानी पीते हैं। जन्नतियों का दिल जिस परिन्दे के खाने को चाहेगा वह उसके सामने आ जायेगा। वह जितना चाहेगा जिस जगह का गोश्त पसन्द करेगा खायेगा, फिर वह परिन्दा उड़ जायेगा और जैसा था वैसा ही हो जायेगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत के जिस परिन्दे को तू चाहेगा वह भुना भुनाया तेरे सामने आ जायेगा।

जन्नत में हूरें भी होंगी, ये हूरें ऐसी होंगी जैसे तरोताज़ा सफ़ेद साफ़ मोती हों। जैसा कि सूरः साफ़्फ़ात में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ.

कि जैसे वे छुपाकर रखे हुए अण्डे हों।

सूरः रहमान में भी यह वस्फ़ (ख़ूबी) मय तफ़सीर के गुज़र चुका है। यह उनके नेक आमाल का सिला और बदला है। यानी ये तोहफ़े उनकी अच्छी कारगुज़ारी और नेक आमाल का इनाम है। ये जन्नत में बेहूदा, फ़ालतू की और ख़िलाफ़े तबीयत कोई बात या कलिमा भी न सुनेंगे। हिक़ारत और बुराई का एक लफ़्ज़ भी कान में न पड़ेगा। जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

لَاتَسْمَعُ فِيْهَالَاغِيَةً.

फ़ुज़ूल की बात से उनके कान महफ़ूज़ रहेंगे, न कोई बुरी बात कान में पड़ेगी, हाँ सिर्फ़ सलामती भरे सलाम के कलिमात एक दूसरों को कहेंगे। जैसे एक और जगह इरशाद फ़रमायाः

تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلَامٌ.

उनका तोहफ़ा आपस में एक दूसरे को सलाम करना होगा। उनकी बातचीत, बेहूदगी और गुनाह से पाक होगी।

وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِىْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّا

और जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं। (27) वे उन बाग़ों में होंगे जहाँ बग़ैर काँटों की बेरियाँ होंगी (28) और तह-ब-तह केले होंगे। (29) और लम्बा-लम्बा साया होगा। (30) और चलता हुआ पानी होगा। (31) और कसरत से मेवे होंगे। (32) जो न ख़त्म होंगे और न उनकी रोक-टोक होगी। (33) और ऊँचे-ऊँचे फ़र्श होंगे। (34) हमने (वहाँ की) उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। (35)

Maktab E Ashraf

यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियाँ हैं, (36) महबूबा हैं, हम-उम्र हैं। (37) ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिए हैं। (38) उन (दाहिने वालों) का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा। (39) और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा। (40)	اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ

Maktab E Ashraf

दाहिने वाले

साबिक़ीन (अल्लाह के ख़ास क़रीबी बन्दों और आगे बढ़ने वालों) का हाल बयान करके अल्लाह तआ़ला अब अबरार (नेक लोगों) का हाल बयान फ़रमाता है, जो साबिक़ीन से कम मर्तबे वाले हैं। उनका क्या हाल है और क्या अन्जाम है? इसे सुनो! ये उन जन्नतों में हैं जहाँ बेरी के दरख़्त हैं, लेकिन काँटोंदार नहीं, और फल बहुत ज़्यादा और बेहतरीन हैं। दुनिया में बेरी के दरख़्त ज़्यादा काँटों वाले और कम फलों वाले होते हैं, जन्नत के ये दरख़्त (पेड़) ज़्यादा फलों वाले और बिल्कुल बिना काँटों वाले होंगे, फलों के बोझ से दरख़्त के तने झुके जाते होंगे। हाफ़िज़ अबू बक्र अहमद बिन नज्जाद रह. ने एक रिवायत ज़िक्र की है कि सहाबा कहते हैं कि देहातियों का हुज़ूर सल्ल. के सामने आना और आप से मसाईल पूछना हमें बहुत नफ़ा देता था। एक मर्तबा एक देहाती ने आकर कहा या रसूलल्लाह! क़ुरआन में एक ऐसे दरख़्त का भी ज़िक्र है जो तकलीफ़ देता है। आपने पूछा वह कौनसा? उसने कहा! बेरी का दरख़्त। आपने फ़रमाया फिर तूने उसके साथ ही लफ़्ज़ 'मख़्ज़ूद' नहीं पढ़ा? उसके काँटे अल्लाह तआ़ला ने दूर कर दिये हैं, और उनके बदले फल पैदा कर दिये। हर हर बेरी में बहत्तर क़िस्म के ज़ायक़े होंगे, जिनका रंग व मज़ा मुख़्तलिफ़ होगा। यह रिवायत दूसरी किताबों में भी मौजूद है। उसमें लफ़्ज़ 'तल्हुन' है और सत्तर ज़ायक़ों का बयान है। 'तल्हुन' एक बड़ा दरख़्त है जो हिजाज़ की सरज़मीन में होता है। यह काँटोंदार दरख़्त है, इसमें काँटे बहुत ज़्यादा होते हैं। चुनाँचे इब्ने जरीर में अ़रबी के एक शे'र से ताईद भी बयान की है।

"मन्ज़ूद" के मायने हैं तह-ब-तह फल वाला, फलों से लदा हुआ। इन दोनों का ज़िक्र इसलिये हुआ कि अ़रब उन दरख़्तों की गहरी और मीठी छाँव को पसन्द करते थे। यह पेड़ बज़ाहिर दुनियावी पेड़ जैसा होगा लेकिन बजाय काँटों के उसमें मीठे फल होंगे। जोहरी फ़रमाते हैं कि 'तल्हुन' भी कहते हैं और 'तल्अुन' भी। हज़रत अ़ली रज़ि. से भी यह मन्क़ूल है, तो मुम्किन है कि यह भी बेरी की ही सिफ़त हो, यानी वे बेरियाँ बिना काँटों की और बहुत ज़्यादा फलदार हैं। वल्लाहु आलम। और हज़रात ने 'तल्हुन' से मुराद केले का दरख़्त कहा है, यमन वाले केले को 'तल्हुन' कहते हैं और हिजाज़ वाले मौज़ कहते हैं। लम्बे-लम्बे सायों में ये होंगे। सही बुख़ारी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत के दरख़्त के साये के नीचे तेज़ सवार सौ साल तक चलता रहेगा लेकिन साया ख़त्म न होगा। अगर तुम चाहो तो इस आयत को पढ़ो। मुस्लिम में भी यह रिवायत मौजूद है और मुस्नद अहमद में भी और मुस्नद अबू यअ़्ला में भी। मुस्नद की दूसरी हदीस में ज़रा रावी के शक के साथ है, यानी सत्तर या सौ, और यह भी है कि यह 'शजरतुल-ख़ुल्द' है। इब्ने जरीर और तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है। पस यह हदीस मुतवातिर और क़तई तौर पर सही है। उसकी सनद बहुत हैं और उसके रावी मोतबर हैं। इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में भी यह हदीस है।

Maktab E Ashraf

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने जब यह रिवायत बयान की और हज़रत कअ़ब रज़ि. के कानों तक पहुँची तो आपने फ़रमाया- उस ख़ुदा की क़सम जिसने तौरात हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर और क़ुरआन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल. पर उतारा, कि अगर कोई शख़्स नौजवान ऊँटनी पर सवार होकर उस वक़्त तक चलता रहे जब तक वह बूढ़ा होकर गिर जाये तो भी उसकी इन्तिहा (आख़िरी हद) को नहीं पहुँच सकता। अल्लाह तआ़ला ने उसे अपने हाथ से बोया है और ख़ुद आप उसमें अपने आप की रूह फूँकी है। उसकी शाख़ें जन्नत की दीवारों से बाहर निकली हुई हैं, जन्नत की तमाम नहरें उसी दरख़्त की जड़ से निकलती हैं। अबू हुसैन कहते हैं कि एक बस्ती में एक दरवाज़े पर हम थे, हमारे साथ अबू सालेह और शक़ीक़ जोहनी भी थे। अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. वाली ऊपर ज़िक्र हुई हदीस बयान की और कहा क्या तू अबू हुरैरह को झुठलाता है? उसने कहा नहीं, उनको तो नहीं तुझे, पस क़ारियों पर बहुत भारी गुज़रा। मैं कहता हूँ कि जो इस साबित, सही और मरफ़ूअ़ हदीस को झुठलाये वह ग़लती पर है। तिर्मिज़ी में है कि जन्नत के हर दरख़्त का तना सोने का है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत में एक दरख़्त है, जिसके हर तरफ़ सौ सौ साल के रास्ते तक साया फैला हुआ है, जन्नती लोग उसके नीचे आकर बैठते हैं और आपस में बातें करते हैं, किसी को दुनियावी खेल तमाशे और दिल बहलावे याद आते हैं तो उसी वक़्त एक जन्नती हवा चलती है और उस पेड़ में से तमाम राग रागनियाँ बाजे गाजे और खेल तमाशों की आवाज़ें आने लगती हैं।

यह क़ौल ग़रीब है और इसकी सनद मज़बूत है। हज़रत अ़मर बिन मैमून फ़रमाते हैं कि यह साया सत्तर हज़ार साल की लम्बाई में होगा, आप से पाँच सौ साल भी मरवी हैं। हसन रह. फ़रमाते हैं कि एक साल। आप से एक मरफ़ूअ़ हदीस में एक सौ साल मन्क़ूल है। यह साया कटता ही नहीं, न सूरज आये न गर्मी सताये, फ़जर के निकलने से पहले का समाँ हर वक़्त उसके नीचे रहता है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि जन्नत में हमेशा वह वक़्त रहेगा जो सुबह सादिक़ के बाद से लेकर सूरज निकलने के दरमियान दरमियान रहता है। साये के मज़मून की रिवायतें भी इससे पहले गुज़र चुकी हैं। कि हम उनको गहरे साये में दाख़िल करेंगे, उनका वहाँ खाना और वहाँ का साया हमेशा के लिये होगा, वे साये और चश्मों में होंगे, वग़ैरह। पानी होगा बहता हुआ मगर नहरों के गड्ढ़े और ख़ुदी हुई ज़मीन न होगी। इसकी पूरी तफ़सीर सूरः मुहम्मद की आयत 15 में गुज़र चुकी है। उनके बहुत ज़्यादा तरह-तरह के लज़ीज़ मेवे हैं जो न किसी आँख ने देखे न किसी कान ने सुने न किसी इनसानी दिल पर उनका वहम व ख़्याल गुज़रा। जैसे एक और आयत में है कि जब वहाँ फल दिये जायेंगे तो कहेंगे कि ये तो हमको अभी दिये गये थे, क्योंकि बिल्कुल हम-शक्ल होंगे, लेकिन जब खायेंगे तो ज़ायक़ा अलग ही पायेंगे।

बुख़ारी व मुस्लिम में सिद्रतुल-मुन्तहा के ज़िक्र में है कि उसके पत्ते हाथी के कानों के जैसे होंगे और फल हिज्र के बड़े-बड़े मटकों के जैसे होंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की उस हदीस में जिसमें आपने सूरज के ग्रहण होने का और हुज़ूर सल्ल. का सूरज ग्रहण की नमाज़ अदा करने का वाक़िआ़ तफ़सील से बयान किया है, यह भी है कि बाद फ़राग़त आपके साथ नमाज़ियों ने आपसे पूछा- हुज़ूर! हमने आपको इस जगह आगे बढ़ते और पीछे हटते देखा, क्या बात थी? आपने फ़रमाया मैंने जन्नत देखी, जन्नत के मेवे का ख़ोशा (गुच्छा) लेना चाहा, अगर मैं ले लेता तो रहती दुनिया तक वह रहता और तुम खाते रहते। अबू यअ़ला में है कि ज़ोहर की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ते हुए हुज़ूर सल्ल. आगे बढ़ गये और हम भी, फिर आपने गोया कोई चीज़ लेनी चाही, फिर पीछे हट आये। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. ने पूछा- हुज़ूर! आज

तो आपने ऐसी बात की जो इससे पहले कभी नहीं की थी। आपने फ़रमाया मेरे सामने जन्नत लाई गयी और जो उसमें तरोताज़गी और सब्ज़ी है, मैंने उसमें से एक अंगूर का ख़ोशा तोड़ना चाहा, ताकि लाकर तुम्हें दूँ। पस मेरे और उसके बीच पर्दा आड़ कर दिया गया, और अगर मैं उसे तुम्हारे बीच ले आता तो ज़मीन व आसमान के बीच की तमाम मख़्लूक़ उसे खाती रहती तब भी उसमें ज़रा सी भी कमी न आती। इसी के जैसी हज़रत जाबिर रज़ि. से सही मुस्लिम शरीफ़ में भी रिवायत है।

मुस्नद अहमद में है कि एक आराबी (देहाती) ने आकर हुज़ूरे पाक सल्ल. से हौज़े कौसर के बारे में सवाल किया और जन्नत का भी ज़िक्र किया, पूछा कि क्या उसमें मेवे भी हैं? आपने फ़रमाया हाँ वहाँ तूबा नाम का पेड़ भी है। उसके बाद कुछ और कहा जो मुझे याद नहीं। फिर पूछा वह पेड़ हमें ज़मीन के किस पेड़ से मुशाबहत रखता (यानी शक्ल व सूरत में उस जैसा) है? आपने फ़रमाया तेरे मुल्क की ज़मीन में कोई पेड़ उसका हम-शक्ल नहीं। क्या तू मुल्क शाम में गया है? उसने कहा नहीं। फ़रमाया शाम में एक पेड़ होता है जिसे जौज़ा कहते हैं, उसका एक ही तना होता है और ऊपर का हिस्सा फैला हुआ होता है, वह अलबत्ता उसके जैसा होता है। उसने पूछा जन्नती ख़ोशे (गुच्छे) कितने बड़े होते हैं? फ़रमाया- काला कौआ महीना भर तक उड़ता रहे, इतने बड़े। वह कहने लगा उस दरख़्त का तना किस क़द्र मोटा है? आपने फ़रमाया अगर तू अपनी ऊँटनी के बच्चे को छोड़ दे और वह चलता रहे यहाँ तक कि बूढ़ा होकर गिर पड़े तब भी उसके तने का चक्कर पूरा नहीं कर सकता। उसने कहा उसमें अंगूर भी लगते हैं? आपने फ़रमाया हाँ। पूछा कितने बड़े? आपने जवाब दिया- क्या कभी तेरे बाप ने अपने रेवड़ में से भी मोटा ताज़ा बकरा ज़िबह करके उसकी खाल खींचकर तेरी माँ को देकर कहा है कि इसका डोल बना लो? उसने कहा हाँ, फ़रमाया बस इतने ही बड़े-बड़े अंगूर के दाने होते हैं। उसने कहा फिर तो एक ही दाना मुझको और मेरे घर वालों को काफ़ी है? आपने फ़रमाया- बल्कि सारी बिरादरी को।

फिर ये मेवे भी हमेशगी वाले हैं। न कभी ख़त्म होंगे न कभी उनसे रोका जायेगा, यह नहीं कि जाड़े में हैं और गर्मियों में नहीं, या गर्मियों में हैं और जाड़ों में नहीं, बल्कि मेवे हमेशगी वाले और हमेशा-हमेशा रहने वाले हैं। जब तलब करें पा लें। ख़ुदा की क़ुदरत से हर वक़्त वे मौजूद रहेंगे, बल्कि किसी काँटे और किसी शाख़ की भी आड़ न होगी। न दूरी होगी न हासिल करने में तकलीफ़ और तकल्लुफ़ होगा, बल्कि इधर फल तोड़ा उधर उसके क़ायम-मक़ाम दूसरा फल लग गया, जैसा कि इससे पहले हदीस में गुज़र चुका। उनके फ़र्श बुलन्द व ऊँचे, नर्म और गदगदे, राहत व आराम देने वाले होंगे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि उनकी ऊँचाई इतनी होगी जितनी ज़मीन व आसमान की, यानी पाँच सौ साल की। (तिर्मिज़ी शरीफ़) यह हदीस ग़रीब है। हदीस के बाज़ उलेमा ने कहा है कि मतलब इस हदीस शरीफ़ का यह है कि फ़र्श की बुलन्दी दर्जे की ज़मीन और आसमान के बराबर है। यानी एक दर्जा दूसरे दर्जे से इस क़द्र बुलन्द है कि हर दर्जे में पाँच सौ साल की राह का फ़ासला है। फिर यह भी ख़्याल रहे कि यह रिवायत सिर्फ़ रुश्द बिन सअ़द से मरवी है, और वह ज़ईफ़ हैं। यह रिवायत इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में भी है।

हज़रत हसन रह. से मरवी है कि उनकी ऊँचाई अस्सी साल की है। यह उनके बिस्तर और फ़र्श का ज़िक्र है। जिस पर जन्नतियों की बीवियाँ होंगी। लेकिन हज़रत अबू उबैदा कहते हैं कि पहले मज़्कूर हो चुका है "व हूरुन् ईन" पस फ़रमाता है कि हमने उन बीवियों को नई पैदाईश में पैदा किया है, इसके बाद कि वे बिल्कुल बुढ़िया थीं, हमने उन्हें नौउम्र कुंवारियाँ करके एक ख़ास पैदाईश (नये अन्दाज़) में पैदा किया। वे अपनी ख़ूबसूरती, हुस्न व जमाल, अच्छे अख़्लाक़, उम्दा सीरत और जिस्म की बनावट के सबब

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

अपने शौहरों को बड़ी प्यारियाँ हैं। सुलैमान रह. कहते हैं 'उरुबन्' का मतलब है नाज़ व अन्दाज़ वालियों को। हदीस में है कि ये वे औरतें हैं जो दुनिया में बुढ़िया थीं और अब जन्नत में गयी हैं तो उन्हें नवउम्र वग़ैरह कर दिया गया है। एक और रिवायत में है कि चाहे ये औरतें कुंवारी थीं या शादी शुदा थीं, अल्लाह तआ़ला उन सब को ऐसी कर देगा।

एक बुढ़िया औरत रसूले मक़बूल सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहती हैं कि या रसूलल्लाह! मेरे लिये दुआ़ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। आपने फ़रमाया- ऐ फ़ुलाँ की माँ! जन्नत में कोई बुढ़िया नहीं जायेगी। वह रोती हुई वापस हुई तो आपने फ़रमाया- जाओ उन्हें समझा दो, मतलब यह है कि जब वह जन्नत में जायेंगी तो बुढ़िया नहीं जायेंगी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उन्हें नई पैदाईश में पैदा करेंगे। फिर कुंवारी कर देंगे। (शमाईले तिर्मिज़ी वग़ैरह)

तबरानी में है, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! 'हूरे ऐन' की ख़बर मुझे दीजिए। आपने फ़रमाया वे गोरे रंग की हैं, बड़ी बड़ी आँखों वाली हैं, बहुत ज़्यादा काले और बड़े बड़े बालों वाली हैं, जैसे कि गिध का पर। मैंने कहा "लुअ्लुअ् मकनून" के बारे में ख़बर दीजिए। आपने इरशाद फ़रमाया- उनकी सफ़ाई और चमक उस मोती के जैसी है जो सीप से अभी अभी निकला हो, जिसे किसी का हाथ भी न लगा हो। मैंने कहा "ख़ैरातुन हिसान" की क्या तफ़सीर है? फ़रमाया- अच्छे अख़्लाक़ वाली और ख़ूबसूरत। मैंने कहा 'बियज़ुम् मकनून' से क्या मुराद है? फ़रमाया उनकी नज़ाकत और नर्मी अण्डे की उस झिल्ली की तरह होगी जो अन्दर होती है। मैंने 'उरुबन् अतराबन्' के मायने मालूम किये, फ़रमाया इससे मुराद दुनिया की मुसलमान जन्नती औरतें हैं, जो बिल्कुल बुढ़िया थीं, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें नये सिरे से पैदा किया और कुंवारियाँ और शौहरों की चहेतियाँ और अपने शौहरों से इश्क़ करने वालियाँ और हम-उम्र बना दीं। मैंने पूछा या रसूलल्लाह! दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या हूरे ऐन? फ़रमाया दुनिया की औरतें हूरे ऐन से बहुत अफ़ज़ल हैं, जैसे अस्तर से अबरा बेहतर होता है। मैंने कहा इस फ़ज़ीलत की क्या वजह है? फ़रमाया नमाज़ें, रोज़े और अल्लाह तआ़ला की इबादतें। अल्लाह तआ़ला ने उनके चेहरे नूर से उनके जिस्म रेशम से संवार दिये हैं। सफ़ेद रेशम और सब्ज़ रेशम और ज़र्द सुनहरे रेशम और ज़र्द सुनहरे ज़ेवर से। बख़ूरदान मोती के, कंघियाँ सोने की। वे यह कहती रहेंगीः

نَحنُ الخَالِدَاتُ فَلاَ نَمُوتُ اَبَدًا ☆ وَنَحنُ النَّاعِمَاتُ فَلاَ نَباسُ اَبَدًا

وَنَحنُ المُقِيمَاتُ فَلاَ نَظعَنُ اَبَدًا ☆ وَنَحنُ الرَّاضِيَاتُ فَلاَ نَسخَطُ اَبَدًا

طُوبٰى لِمَن كُنَّا لَهٗ وَكَانَ لَنَا

यानी हम हमेशा रहने वाली हैं, कभी मरेंगी नहीं। हम नाज़ व नेमत वालियाँ हैं कभी मुफ़लिस और बेनेमत न होंगी। हम ठहरे रहने वालियाँ हैं कभी सफ़र में नहीं जायेंगी। हम अपने शौहरों से ख़ुश रहने वालियाँ हैं कभी रूठेंगी नहीं। ख़ुश नसीब हैं वे लोग जिनके लिये हम हैं और ख़ुश नसीब हैं हम कि हम उनके लिये हैं।

मैंने पूछा या रसूलल्लाह! औरतों के दो-दो तीन-तीन चार-चार शौहर हो जाते हैं, इसके बाद उसे मौत आती है। मरने के बाद अगर यह जन्नत में गयी और उनके सब शौहर भी गये तो यह किसे मिलेगी? आपने फ़रमाया उसे इख़्तियार दिया जायेगा कि जिसके साथ चाहे रहे। चुनाँचे यह उनमें से उसे पसन्द करेगी

Maktab E Ashraf

जो इसके साथ बेहतरीन बर्ताव की फ़िक्र कर रहा हो। अल्लाह तआ़ला से कहेगी कि ऐ परवर्दिगार! यह मुझसे बहुत अच्छा मामला रखता था, इसी के निकाह में मुझे दे। ऐ उम्मे सलमा! अच्छा अख़्लाक़ दुनिया और आख़िरत की भलाईयों को लिये हुए है।

'हूर' की मशहूर और लम्बी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. तमाम मुसलमानों को जन्नत में ले जाने की सिफ़ारिश करेंगे, जिस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- मैंने आपकी शफ़ाअ़त क़बूल की और आपको उन्हें जन्नत में पहुँचाने की इजाज़त दी। आप फ़रमाते हैं कि फिर मैं उन्हें जन्नत में ले जाऊँगा। ख़ुदा की क़सम तुम जिस क़द्र अपने घर-बार और अपनी बीवियों से वाक़िफ़ हो इससे बहुत ज़्यादा जन्नत वाले अपने घरों और बीवियों से वाक़िफ़ होंगे। पस एक-एक जन्नती की बहत्तर-बहत्तर बीवियाँ होंगी, जो ख़ुदा की बनाई हुई हैं और दो-दो बीवियाँ औ़रतों में से होंगी कि उन्हें अपनी इबादत की वजह से उन सब औ़रतों पर फ़ज़ीलत हासिल होगी। जन्नती उनमें से एक के पास जायेगा, यह उस बालाख़ाने (ऊपर के कमरे) में होगी जो याक़ूत (क़ीमती मोती) का बना हुआ होगा, उस पलंग पर होगी जो सोने के तारों से बुना हुआ होगा और जड़ाऊ क्या हुआ होगा। सत्तर जोड़े पहने हुए होगी, जो सब बारीक और सब्ज़ चमकीले ख़ालिस रेशम के होंगे। ये बीवी इस क़द्र नाज़ुक नूरानी होंगी कि उनकी कमर पर हाथ रखकर सीने की तरफ़ देख लेगा तो साफ़ नज़र आ जायेगा। कपड़े गोश्त हड्डी कोई चीज़ रुकावट न हो सकेगी। इस क़द्र उसकी पिण्डली साफ़ और आईने जैसी होगी, जिस तरह मरवारीद (एक क़ीमती मोती) में सुराख़ करके डोरा डाल दें और वह डोरा बाहर से नज़र आता है। इसी तरह उसकी पिण्डली का गूदा नज़र आयेगा। ऐसा ही नूरानी बदन उस जन्नती का भी होगा। ग़र्ज़ कि यह उसका आईना होगी और वह इसका। यह उसके साथ ऐश व मज़े में मशग़ूल होगा, न यह थके न वह, न इसका दिल भरे न उसका। जब भी उसके पास जायेगा तो कुंवारी पायेगा, न इसका अंग (पुरुष लिंग) सुस्त होगा न उसे नागवार गुज़रेगा, मगर ख़ास पानी (मनी, वीर्य) वहाँ न होगा, जिससे घिन आये। यह यूँही मशग़ूल होगा कि कान में आवाज़ आयेगी कि यह तो हमें ख़ूब मालूम है कि न आपका दिल इनसे भरेगा न इनका आपसे, मगर आपकी दूसरी बीवियाँ भी हैं।

अब यह यहाँ से बाहर आयेगा और एक-एक के पास जायेगा। इसे देखकर बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल जायेगा कि रब की क़सम तुझसे बेहतर जन्नत में कोई चीज़ नहीं, न मेरी मुहब्बत किसी पर तुझसे ज़्यादा है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछते हैं कि या रसूलल्लाह! क्या जन्नत में जन्नती लोग सोहबत (संभोग) भी करेंगे? आपने फ़रमाया हाँ, क़सम है उस ख़ुदा की जिसके हाथ में मेरी जान है, ख़ूब अच्छी तरह बेहतरीन तरीक़े पर। जब अलग होगा वह उसी वक़्त फिर पाक-साफ़ अछूती बाकिरा (कुंवारी) बन जायेगी। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन को जन्नत में इतनी-इतनी औ़रतों के पास जाने की क़ुव्वत अ़ता की जायेगी। हज़रत अनस रज़ि. ने पूछा हुज़ूर! क्या इतनी ताक़त रखेगा? आपने फ़रमाया एक सौ आदमियों के बराबर उसे क़ुव्वत मिलेगी। तबरानी की हदीस में है एक-एक सौ कुंवारियों के पास एक-एक दिन में हो आयेगा। हाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह मक़्दसी फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक यह हदीस सही की शर्त पर है। वल्लाहु आलम

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. 'उरुबन्' की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि ये अपने शौहरों की महबूबा होंगी, ये अपने शौहरों की आ़शिक़ और शौहर इनके आ़शिक़। हज़रत इक्रिमा रज़ि. से रिवायत है कि इसके मायने नाज़ व अदा वाली है। और एक सनद से मन्क़ूल है कि नज़ाकत वाली है। तमीम बिन ख़िज़्लम रह. कहते

हैं कि 'उरुबन्' उस औरत को कहते हैं जो अपने शौहर का दिल मुट्ठी में रखे। ज़ैद बिन असलम वग़ैरह से मरवी है कि मुराद अच्छी गुफ़्तगू करने वाली है, अपनी बातों से अपने शौहरों का दिल मोह लेती हैं। जब कुछ बोलें यह मालूम होता है कि फूल झड़ते और नूर बरसता है। इब्ने अबी हातिम में है कि उन्हें "उरुब" इसलिये कहा गया है कि उनकी बोलचाल अ़रबी ज़बान में होगी। "अतराब" के मायने हैं हम-उम्र यानी तैंतीस बरस की। और एक मायने ये हैं कि शौहर की और उनकी तबीयत, अख़्लाक़ बिल्कुल एक जैसा है, जिससे वे भी ख़ुश ये भी ख़ुश। जो इसे नापसन्द उसे भी नापसन्द। यह मायने भी बयान किये गये हैं कि आपस में उनके अन्दर बैर, बुग़्ज़, जलन और ईर्ष्या न होगा। ये सब आपस में भी हम-उम्र होंगी ताकि बेतकल्लुफ़ी से एक दूसरे से मिलें-जुलें और खेलें मज़े करें। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि ये जन्नती हूरें एक रूह-अफ़ज़ा (दिल और रूह को ख़ुश करने वाले) बाग़ में जमा होकर ऐसे मीठे अन्दाज़ में गाना गायेंगी कि ऐसी सुरीली आवाज़ मख़्लूक़ ने कभी न सुनी होगी। उनका गाना वही होगा जो ऊपर बयान हुआ। अबू यअ़ला में है कि उनके गाने में यह भी होगा।

نَحنُ خَیرَاتٌ حِسَانٌ ☆ خُبِئنَا لِأَزوَاجٍ كِرَامٍ

यानी हम पाक-साफ़ अच्छी शक्ल व सूरत वाली और ख़ूबसूरत औरतें हैं, जो बुज़ुर्ग और इज़्ज़त वाले शौहरों के लिये छुपाकर रखी गयी थीं। एक और रिवायत में "ख़ैरात" के बदले "हूर" का लफ़्ज़ आया है।

फिर फ़रमाया कि ये दाहिने वालों के लिये पैदा की गयी हैं, और उन्हीं के लिये महफ़ूज़ व सुरक्षित रखी गयी थीं, लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर यह है कि यह मुताल्लिक़ है 'इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न.........' के, यानी हमने उन्हें उनके लिये बनाया है। हज़रत अबू सुलैमान दारानी रह. से मन्क़ूल है कि मैंने एक रात तहज्जुद की नमाज़ के बाद दुआ़ माँगनी शुरू की, चूँकि सख़्त सर्दी थी, बड़े ज़ोर का पाला पड़ रहा था, हाथ नहीं उठाये जाते थे, इसलिये मैंने एक ही हाथ से दुआ़ माँगी और उसी हालत में दुआ़ माँगते-माँगते मुझे नींद आ गयी। ख़्वाब (सपने) में मैंने एक हूर को देखा कि उसकी तरह ख़ूबसूरत नूरानी शक्ल कभी मेरी निगाह से नहीं गुज़री। उसने मुझसे कहा- ऐ अबू सुलैमान! एक ही हाथ से दुआ़ माँगने लगे? यह ख़्याल नहीं कि पाँच सौ साल से अल्लाह तआ़ला मुझे तुम्हारे लिये अपनी ख़ास नेमतों में परवरिश कर रहा है। यह भी हो सकता है कि यह "दाहिने वालों के लिये" का ताल्लुक़ इससे पहले क़ौल (यानी उरुबन् अतराबन्) के साथ हो, यानी उनकी हम-उम्र होंगी जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी, उनके चेहरे चौदहवीं रात की तरह चमकते होंगे, उनके बाद वाली जमाअ़त के बहुत चमकदार सितारे जैसे रोशन चेहरे होंगे। ये पाख़ाने पेशाब थूक और रेंट से पाक होंगे, उनकी कंघियाँ सोने की होंगी, उनके पसीने मुश्क की ख़ुशबू की तरह होंगे, उनकी अंगूठियाँ लुअ्लुअ् मोती की होंगी, उनकी बीवियाँ 'हूरे ऐन' होंगी, उन सब की पैदाईश एक ही शख़्स के जैसी होगी, ये सब अपने बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की शक्ल पर साठ हाथ लम्बे क़द के होंगे।

तबरानी में है कि जन्नत वाले बिना बाल और बिना दाढ़ी के गोरे रंग वाले, उम्दा सूरत वाले और हसीन व जमील, सुर्मा लगी आँखों वाले, तैंतीस बरस की उम्र के, साठ हाथ लम्बे और सात हाथ चौड़े चकले मज़बूत बदन वाले होंगे। इसका कुछ हिस्सा तिर्मिज़ी में भी है। एक और हदीस में है कि चाहे किसी का किसी भी उम्र में इन्तिक़ाल हुआ हो, जन्नत में दाख़िले के वक़्त सब तैंतीस साल की उम्र के होंगे और इसी उम्र में हमेशा रहेंगे। इसी तरह जहन्नमी भी। (तिर्मिज़ी)

एक और रिवायत में है कि उनके क़द साठ हाथ फ़रिश्तों के हाथ के एतिबार से होंगे। क़द हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का, हुस्न यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का, उम्र ईसा अ़लैहिस्सलाम की यानी तैंतीस साल और ज़बान हज़रत मुहम्मद सल्ल. यानी अ़रबी होगी। बिना बाल के, सुर्मा लगी आँखों वाले। (इब्ने अबिद्दुन्या)

एक और रिवायत में है कि जन्नत में दाख़िल होने के साथ ही उन्हें जन्नत के एक दरख़्त के पास लाया जायेगा और उन्हें वहाँ कपड़े पहनाये जायेंगे। उनके कपड़े न तो बोसीदा होंगे, न पुराने पड़ेंगे, न मैले होंगे। इसी तरह उनकी जवानी न ढले, न फ़ना हो। दाहिने वाले पहलों में से भी बहुत हैं और पिछलों में से भी बहुत हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा से बयान फ़रमाया- मेरे सामने अम्बिया मय अपने ताबेदार उम्मतियों के पेश हुए। बाज़ नबी गुज़रते थे, और बाज़ नबी के साथ एक जमाअ़त होती थी, और बाज़ नबी के साथ सिर्फ़ तीन आदमी होते थे, और बाज़ के साथ एक भी न था। हदीस को बयान करने वाले हज़रत क़तादा रह. ने इतना बयान फ़रमाया कि यह आयत पढ़ीः

اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ.

क्या तुममें से एक भी हिदायत व समझ वाला नहीं?

यहाँ तक कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल की एक बहुत बड़ी तायदाद के साथ गुज़रे। मैंने मालूम किया कि यह कौन साहिब हैं? जवाब मिला कि तुम्हारे भाई मूसा बिन इमरान हैं और उनके साथ उनका इत्तिबा करने वाली उम्मत (यानी बनी इस्राईल) है। मैंने पूछा ख़ुदाया! फिर मेरी उम्मत कहाँ है? फ़रमाया अपनी दाहिनी तरफ़ नीचे की तरफ़ देखो। मैंने देखा तो बहुत बड़ी जमाअ़त नज़र आयी, लोगों की बड़ी संख्या के चेहरे दमक रहे थे। फिर मुझसे पूछा कहो अब तो ख़ुश हो? मैंने कहा हाँ ख़ुदाया ख़ुश हूँ। मुझसे फिर फ़रमाया- अपनी बायीं तरफ़ किनारों की तरफ़ देखो, मैंने देखा तो वहाँ भी बेशुमार लोग थे। फिर मुझसे पूछा अब तो राज़ी हो गये? मैंने कहा! हाँ मेरे रब मैं राज़ी हूँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया और सुनो! इनके साथ सत्तर हज़ार और लोग हैं जो बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। यह सुनकर हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अ़न्हु खड़े हो गये, यह क़बीला बनू असद से मिहसन के लड़के थे। यह बदर की लड़ाई में मौजूद थे। अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए कि मुझे भी उन्हीं में शामिल फ़रमा दे। आपने दुआ़ की। फिर एक और शख़्स खड़े हुए और कहा ऐ अल्लाह के नबी! मेरे लिये भी दुआ़ कीजिए। आपने फ़रमाया उकाशा तुझ पर सबक़त ले गये (यानी तुम पर पहल कर गये)।

फिर आपने फ़रमाया- लोगो! तुम पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों, अगर तुम से हो सके तो उन सत्तर हज़ार में से बनो जो बिना हिसाब के जन्नत में जायेंगे। वरना कम से कम दाहिनी तरफ़ वालों में से हो जाओ। अगर यह भी न हो सके तो किनारे वालों में से बन जाओ। मैंने अक्सर लोगों को देखा है कि अपने हाल में ही उलझ जाते हैं। फिर फ़रमाया- मुझे उम्मीद है कि तमाम जन्नत वालों की चौथाई तायदाद सिर्फ़ तुम्हारी ही होगी, पस हमने तकबीर कही, उसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने इसी आयत की तिलावत कीः

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ.

कि एक बड़ा गिरोह पहलों में से होगा और एक बड़ा गिरोह बाद वालों में से होगा।

अब हम में आपस में गुफ़्तगू हुई कि ये सत्तर हज़ार कौन लोग होंगे? फिर हमने कहा वे लोग जो इस्लाम में ही पैदा हुए और शिर्क किया ही नहीं होगा। पस हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- बल्कि ये वे लोग हैं जो दाग़ नहीं लगवाते और झाड़-फूँक नहीं करवाते, और फ़ाल नहीं लेते, और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

यह हदीस बहुत सी सनदों से सहाबा की रिवायतों से बहुत सी किताबों में सेहत के साथ मौजूद है। इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- इस आयत में पहलों पिछलों से मुराद मेरी उम्मत के पहले और पिछले ही हैं।

وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِیْ سَمُوْمٍ وَّحَمِیْمٍ ۝ وَّظِلٍّ مِّنْ یَّحْمُوْمٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِیْمٍ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِیْنَ ۝ وَكَانُوْا یُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِیْمِ ۝ وَكَانُوْا یَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ ۝ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَیُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۝ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۝ فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ فَشٰرِبُوْنَ عَلَیْهِ مِنَ الْحَمِیْمِ ۝ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِیْمِ ۝ هٰذَا نُزُلُهُمْ یَوْمَ الدِّیْنِ ۝

और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं। (41) वे लोग आग में होंगे और खौलते हुए पानी में (42) और काले धुएँ के साये में (43) जो न ठण्डा होगा और न ख़ुशी व राहत देने वाला होगा। (44) वे लोग उससे पहले (यानी दुनिया में) बड़ी ख़ुशहाली में रहते थे। (45) और बड़े भारी गुनाह (यानी शिर्क व कुफ़्र) पर इसरार किया करते थे। (46) और यूँ कहा करते थे कि जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ (होकर) रह गए, तो क्या (उसके बाद) हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे (47) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी (ज़िन्दा किए जाएँगे)? (48) आप कह दीजिए कि सब अगले और पिछले (49) जमा किए जाएँगे एक मुक़र्रर की हुई तारीख़ के वक़्त पर (50) फिर (जमा होने के बाद) तुमको ऐ गुमराहो, झुठलाने वालो! (51) ज़क़्क़ूम के पेड़ से खाना होगा। (52) फिर उससे पेट भरना होगा। (53) फिर उस पर खौलता हुआ पानी पीना होगा। (54) फिर पीना भी प्यासे ऊँटों के जैसा। (55) (ग़र्ज़) उन लोगों की क़ियामत के दिन यह दावत होगी। (56)

बायें वाले

दाहिने वालों का ज़िक्र करने के बाद अब बायें वालों का ज़िक्र हो रहा है। फ़रमाया जा रहा है कि उनका क्या हाल है? ये किस अ़ज़ाब में हैं? फिर उन अ़ज़ाबों का बयान फ़रमाता है कि ये गर्म हवा के थपेड़ों और खौलते हुए गर्म पानी में हैं और धुएँ के बहुत ज़्यादा काले साये हैं। जैसे एक और जगह है:

Maktab E Ashraf

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ............لِلْمُكَذِّبِيْنَ

यानी उस दोज़ख़ की तरफ़ चलो जिसे तुम झुठलाते थे, चलो तीन शाख़ों वाले साये की तरफ़ जो न घना है न आग के शोले से बचा सकता है। वह दोज़ख़ महल की ऊँचाई के बराबर चिंगारियाँ फेंकती है, ऐसा मालूम होता है कि गोया वे ज़र्द ऊँटनियाँ हैं, आज झुठलाने वालों की ख़राबी है। (सूरः मुर्सलात 29-34)

इसी की तरह यह भी फ़रमान है कि ये लोग जिनके बायें हाथ में आमाल नामा दिया गया है, यह सख़्त काले धुओं में होंगे, जो न जिस्म को अच्छा लगे न आँखों को भला मालूम हो। यह अ़रब का मुहावरा (कहावत) है कि जिस चीज़ की ज़्यादा बुराई बयान करनी हो वहाँ उसकी हर एक बुरी सिफ़्त बयान करके उसके बाद "व ला करीम" कह देते हैं। फिर अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि ये लोग इन सज़ाओं के हक़दार इसलिये हुए कि दुनिया में जो ख़ुदा की नेमतें मिली थीं उनमें ऐसे मस्त हो गये कि रसूलों की बातों की तरफ़ नज़र भी न उठाई, बदकारियों में पड़ गये और फिर तौबा की तरफ़ दिली तवज्जोह भी न रही।

"हिन्सिल-अ़ज़ीम" से मुराद बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कुफ़्र व शिर्क है। बाज़ कहते हैं कि झूठी क़सम है। फिर उनका एक और ऐब बयान हो रहा है कि क़ियामत का होना भी मुहाल जानते थे, इसको झुठलाते थे और अ़क़्ली दलीलें पेश करते थे कि मरने के बाद मिट्टी में मिलकर फिर भी कहीं कोई ज़िन्दा हो सकता है? उन्हें जवाब मिल रहा है कि तमाम औलादे आदम क़ियामत के दिन नई ज़िन्दगी में पैदा होकर एक मैदान में जमा होगी। एक वजूद ऐसा न होगा जो दुनिया में आया हो और यहाँ न हो। जैसे एक दूसरी जगह है कि उस दिन सब जमा कर दिये जायेंगे। यह हाज़िरी का दिन है, तुम्हें दुनिया में चन्द रोज़ मोहलत है, क़ियामत के दिन कौन है जो बिना अल्लाह की इजाज़त के लब भी हिला सके।

इनसान दो हिस्सों में बाँट दिये जायेंगे, नेक अलग और बद अलग। क़ियामत का वक़्त निर्धारित और मुक़र्रर है। कमी ज़्यादती, आगे पीछे होना उसमें बिल्कुल न होगा, फिर तुम ऐ गुमराहो और झुठलाने वालो! ज़क़्क़ूम (थोहर) के दरख़्त खिलवाये जाओगे, उन्हीं से पेट बोझल करोगे, क्योंकि जबरन वह तुम्हारे हलक़ में ठूँसा जायेगा। फिर उस पर खौलता हुआ गर्म पानी तुम्हें पीना पड़ेगा और वह भी इस तरह जैसे प्यासा ऊँट पी रहा हो। "हीम" बहुवचन है "अहीम" का, सख़्त प्यास वाले ऊँट को "अहीम" कहते हैं, जिसे प्यास की बीमारी होती है। पानी चूसता रहता है लेकिन सैराबी नहीं होती और न उस बीमारी से ऊँट बाहर निकल आता है। इसी तरह ये जहन्नमी जबरन सख़्त गर्म पानी पिलाये जायेंगे, जो ख़ुद एक बहुत बुरा अ़ज़ाब होगा, भला उससे प्यास क्या बुझती? हज़रत ख़ालिद बिन मादान फ़रमाते हैं कि एक ही साँस में पानी पीना यह भी प्यास वाले ऊँट की तरह पीना है, इसलिये मक्रूह है।

फिर फ़रमाया कि उन मुजरिमों की ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी) आज के दिन यही है जिस तरह मुत्तक़ी लोगों के बारे में एक जगह इरशाद है कि उनकी मेहमान नवाज़ी की जगह जन्नतुल-फ़िरदौस है।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ○ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ○ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ○ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ	हमने तुमको (पहली बार) पैदा किया है (जिसको तुम भी तस्लीम करते हो), फिर तुम तस्दीक़ क्यों नहीं करते? (57) अच्छा फिर यह बतलाओ तुम जो (औरतों के गर्भ में) वीर्य पहुँचाते हो। (58) उसको तुम आदमी बनाते हो

Maktab E Ashraf

الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝	या हम बनाने वाले हैं? (59) हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को (मुतैयन वक़्त पर) तय कर रखा है और हम इससे आ़जिज़ नहीं हैं (60) कि तुम्हारे जैसे और (आदमी) पैदा कर दें और तुमको ऐसी सूरत में बना दें जिनको तुम जानते ही नहीं। (61) और तुमको पहली पैदाईश का इल्म हासिल है फिर तुम क्यों नहीं समझते? (62)

कायनात को पैदा करने वाला

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के मुन्किरों (इनकार करने वालों) को लाजवाब करने के लिये क़ियामत के क़ायम होने की और लोगों के दोबारा जी उठने की दलील दे रहा है। फ़रमाता है कि जब हमने पहली मर्तबा जबकि तुम कुछ न थे, तुम्हें पैदा कर दिया, तो अब फ़ना होने के बाद जबकि कुछ न कुछ तो तुम रहोगे ही, तुम्हें दोबारा पैदा करना हम पर क्या भारी और मुश्किल होगा? जब शुरू की और पहली पैदाईश को मानते हो तो फिर दूसरी मर्तबा के पैदा होने से क्यों इनकार करते हो? देखो इनसान के ख़ास पानी (वीर्य) के क़तरे तो औ़रत के रहम में पहुँच जाते हैं, इतना काम तो तुम्हारा था, लेकिन अब उन क़तरों को इनसान की शक्ल में पैदा करना यह किसका काम है? ज़ाहिर है कि तुम्हारा इसमें कोई दख़ल नहीं, कोई हाथ नहीं, कोई क़ुदरत नहीं, कोई तदबीर नहीं। यह सिफ़त पैदा करना तो सिर्फ़ हर चीज़ के पैदा करने वाले अल्लाह रब्बुल् इ़ज़्ज़त की ही है। ठीक इसी तरह मार डालने पर भी वही क़ादिर है, तमाम आसमान व ज़मीन वालों की मौत का मुतसर्रिफ़ (इख़्तियार वाला) भी अल्लाह ही है। फिर भला इतनी बड़ी क़ुदरतों का मालिक क्या यह नहीं कर सकता कि क़ियामत के दिन तुम्हारी मौत को पैदाईश में तब्दील करके जिस सिफ़त और जिस हाल में चाहे तुम्हें फिर नये सिरे से पैदा कर दे? पस जबकि तुम जानते और मानते हो कि शुरू की पैदाईश उसी ने की है और अ़क़्ल यक़ीन करती है कि पहली-पहली पैदाईश (यानी शुरू में किसी चीज़ को बनाना) दूसरी पैदाईश से मुश्किल है, फिर दूसरी पैदाईश का इनकार क्यों करते हो? यही बात एक और जगह इन अलफ़ाज़ में बयान हुई हैः

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ.

अल्लाह ने ही पहली पहली मर्तबा पैदा किया है और वही दोबारा दोहरायेगा, और यह उस पर बहुत ही आसान है। सूरः यासीन में हैः

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ..................بِهِ عَلِيمٌ.

यानी हम इनसान को नुत्फ़े से पैदा करते हैं, फिर वह हुज्जत बाज़ियाँ करने लगता है कि इन बोसीदा गली सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ नबी तुम हमारी तरफ़ से जवाब दो कि इन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने इन्हें पहली बार में पैदा किया है, वह हर पैदाईश का इल्म रखने वाला है। सूरः क़ियामत में फ़रमायाः

أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى..................عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ.

यानी क्या इनसान यह समझ बैठा है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जायेगा? क्या यह एक ग़लीज़ (गाढ़े) पानी के नुत्फ़े की शक्ल में न था, फिर ख़ून के लोथड़े की सूरत में सामने था, फिर अल्लाह तआ़ला ने इसे पैदा किया, दुरुस्त किया, मर्द और औ़रत बनाये, क्या ऐसा ख़ुदा मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं?

Maktab E Ashruf

أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ
أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَـٰهُ
حُطَـٰمًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ۝
بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ
الَّذِى تَشْرَبُونَ ۝ ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ
الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ۝ لَوْ نَشَآءُ
جَعَلْنَـٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝
أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِى تُورُونَ ۝ ءَأَنتُمْ
أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ۝
نَحْنُ جَعَلْنَـٰهَا تَذْكِرَةً وَمَتَـٰعًا لِّلْمُقْوِينَ ۝
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ ع ٢ ١٥

अच्छा फिर यह बतलाओ कि तुम जो कुछ (बीज वग़ैरह) बोते हो, (63) उसको तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं? (64) अगर हम चाहें तो उस (पैदावार) को चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम हैरान होकर रह जाओगे। (65) कि (अब की बार तो) हम पर तावान ही पड़ गया। (66) बल्कि हम बिल्कुल ही मेहरूम रह गए (यानी सारा ही सरमाया चला गया)। (67) अच्छा फिर यह बतलाओ कि जिस पानी को तुम पीते हो (68) उसको बादल से तुम बरसाते हो या हम बरसाने वाले हैं? (69) अगर हम चाहें तो उसको कड़वा कर डालें, सो तुम शुक्र क्यों नहीं करते? (70) अच्छा फिर यह बतलाओ जिस आग को तुम सुलगाते हो (71) उसके पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं? (72) हमने उसको याद दिलाने की चीज़ और मुसाफ़िरों के फ़ायदे की चीज़ बनाया है। (73) सो आप बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (74)

ये लहलहाती हुई खेतियाँ

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि तुम खेतियाँ बोते हो, ज़मीन खोदकर बीज डालते हो, फिर उन बीजों को उगाना भी क्या तुम्हारे बस में है? नहीं नहीं! बल्कि उन्हें उगाना, उन्हें फल-फूल देना हमारा काम है। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- "ज़रअ़तु" न कहा करो बल्कि "हरसतु" कहा करो, यानी यूँ कहो कि मैंने बोया, यह न कहो कि मैंने उगाया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने यह हदीस सुनाकर फिर इसी आयत की तिलावत की। इमाम हुज्र मदरी रह. इन आयतों के ऐसे सवाल के मौक़ों को जब पढ़ते तो कहतेः

بل انت یاربی.

"हमने नहीं बल्कि ऐ हमारे परवर्दिगार तूने ही"

फिर फ़रमाता है कि पैदा करने के बाद भी हमारी मेहरबानी है कि हम उसे बढ़ायें और पकायें, वरना

हमें क़ुदरत है कि सुखा दें और मज़बूत न होने दें, बरबाद कर दें और बेनिशान बना दें, और तुम हाथ मलते ही रह जाओ कि हाय हम पर आफ़त आ गयी, हाय हमारी तो असल भी मारी गयी, बड़ा नुक़सान हो गया, नफ़ा एक तरफ़ पूँजी भी ग़ारत हो गयी। रंज व ग़म से न जाने क्या-क्या तरह तरह की बोलियाँ बोलने लग जाओ। कभी कहो काश कि अब की मर्तबा बोते ही नहीं, काश कि इस तरह करते या उस तरह करते। यह भी हो सकता है कि यह मतलब हो कि उस वक़्त तुम अपने गुनाहों पर नादिम हो जाओ। "तफ़क्कुह" का लफ़्ज़ अपने अन्दर दोनों मायने रखता है, नफ़े के और ग़म के। "मुज़्न" बादल को कहते हैं।

फिर अपनी पानी जैसी आला नेमत का ज़िक्र करता है कि देखो उसका बरसाना भी मेरे क़ब्ज़े में है। कोई है जो उसे बादल से उतार लाये? और जब उतर आया फिर भी उसमें मिठास और कड़वापन पैदा करने पर मुझे क़ुदरत है। यह मीठा पानी बैठे बिठाये मैं तुम्हें दूँ जिससे तुम नहाओ धोओ और कपड़े साफ़ करो, खेतियों और बाग़ों को सैराब करो (सींचो), जानवरों को पिलाओ, फिर क्या तुम्हें यही चाहिये कि मेरा शुक्र भी अदा न करो? जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. पानी पीकर फ़रमाया करतेः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ یَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا.

यानी अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने हमें मीठा और उम्दा पानी अपनी रहमत से पिलाया और हमारे गुनाहों के सबब उसे खारी और कड़वा न बना दिया।

अ़रब में दो दरख़्त (पेड़) होते हैं मुर्ख़ और अ़फ़ार, उनकी सब्ज़ टहनिया जब एक दूसरे से रगड़ जायें तो आग निकलती है। इस नेमत को याद दिलाकर फ़रमाता है कि यह आग जिससे तुम पकाते रेंधते हो और सैंकड़ों फ़ायदे हासिल कर रहे हो, बतलाओ उसकी असल यानी उस दरख़्त के पैदा करने वाले तुम हो या मैं हूँ? उस आग को हमने तज़किरा (याद करने की चीज़) बनाया है, यानी उसे देखकर जहन्नम की आग को याद करो और उससे बचने की फ़िक्र करो। हज़रत क़तादा की एक मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारी यह दुनिया की आग दोज़ख़ की आग का सत्तरवाँ हिस्सा है। लोगों ने कहा हुज़ूर! यही बहुत कुछ है। आपने फ़रमाया हाँ फिर यह सत्तरवाँ हिस्सा भी दो मर्तबा पानी से बुझाया गया है। अब यह इस क़ाबिल हुआ है कि तुम इससे नफ़ा (लाभ) उठा सको और इसके क़रीब जा सको। यह मुर्सल हदीस मुस्नद में है और बिल्कुल सही है।

"मुक़्वीन" से मुराद मुसाफ़िर हैं। बाज़ों ने कहा है कि जंगल में रहने बसने वाले लोग मुराद हैं। बाज़ों ने कहा है कि हर भूखा मुराद है, ग़र्ज़ यह कि हर वह शख़्स मुराद है जिसे आग की ज़रूरत हो और वह उससे फ़ायदा हासिल करने का मोहताज हो। हर अमीर फ़क़ीर, शहरी देहाती, मुसाफ़िर मुक़ीम को उसकी हाजत होती है। पकाने के लिये, तापने के लिये, रोशनी के लिये वग़ैरह वग़ैरह। फिर ख़ुदा तआ़ला की इस करीमी को देखिये कि दरख़्तों में लोहे में उसने इसको रख दिया ताकि मुसाफ़िर अपने साथ ले जा सके और ज़रूरत के वक़्त अपना काम निकाल सके।

नोटः आजकल तो माचिस की शक्ल में आग जलाना और भी आसान हो गया, किसी बड़ी मेहनत की ज़रूरत नहीं, बस तीली को रगड़ा और आग मौजूद। यह अल्लाह का कितना बड़ा इनाम है। वाक़ई उसने इनसानों की सहूलत के लिये अपनी नेमतों को किस क़द्र आ़म कर दिया है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

अबू दाऊद वग़ैरह में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- तीन चीज़ों में मुसलमानों का बराबर का हिस्सा है, आग, घास और पानी। इब्ने माजा में है कि ये तीनों चीज़ें रोकने का किसी को हक़ नहीं। एक

रिवायत में इनकी क़ीमत का ज़िक्र भी है लेकिन उसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि तुम सब को चाहिये कि इन बहुत बड़ी-बड़ी क़ुदरतों के मालिक ख़ुदा तआ़ला की हर वक़्त पाकीज़गी (तस्बीह) बयान करते रहो, जिसने आग जैसी जला देने वाली चीज़ को तुम्हारे लिये नफ़ा देने वाली बना दी, जिसने पानी को खारी और कड़वा न कर दिया कि तुम प्यास के मारे तकलीफ़ उठाओ, बल्कि उसे मीठा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और मज़ेदार बनाया कि दुनिया में रब की इन नेमतों से फ़ायदे उठाओ और उसका शुक्र बजा लाओ तो फिर आख़िरत में भी फ़ायदे ही फ़ायदे हैं। दुनिया में यह आग उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये बनाई है और साथ ही इसलिये भी कि आख़िरत की आग का तुम अन्दाज़ा कर सको और उससे बचने के लिये ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बन जाओ।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۝ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ۝	सो मैं क़सम खाता हूँ सितारों के छुपने की। (75) और अगर तुम ग़ौर करो तो यह एक बड़ी क़सम है। (76) कि यह एक क़ाबिले एहतिराम क़ुरआन है। (77) जो एक महफ़ूज़ किताब (यानी लौहे-महफ़ूज़) में दर्ज है (78) कि उसको पाक फ़रिश्तों के अ़लावा कोई हाथ नहीं लगाने पाता। (79) यह रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से भेजा हुआ है। (80) सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो (81) और झुठलाने को अपनी ग़िज़ा बना रहे हो? (82)

सितारों की टूट-फूट

हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की ये क़समें कलाम को शुरू करने के लिये हुआ करती हैं। लेकिन यह क़ौल ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। जमहूर फ़रमाते हैं कि ये क़समें हैं और इनमें उन चीज़ों की अ़ज़मत (बड़ाई) का इज़हार भी है। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहाँ पर "ला" ज़ायद है और "इन्नहू लक़ुरआनुन्........." क़सम का जवाब है। कुछ हज़रात कहते हैं कि "ला" को ज़ायद क़रार देने की कोई वजह नहीं, अ़रब वालों के कलाम के दस्तूर के मुताबिक़ वह क़सम के शुरू में आता है, जबकि किसी चीज़ पर क़सम खाई जाये, वह मन्फ़ी हो। जैसे हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के इस क़ौल में हैः

لا واللّٰه مامست يد رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم يد امرأة قط.

यानी ख़ुदा की क़सम हुज़ूर सल्ल. ने अपना हाथ किसी औ़रत के हाथ से लगाया नहीं।

यानी बैअ़त में औ़रतों से मुसाफ़ा नहीं किया। इसी तरह यहाँ भी "ला" क़सम के शुरू में ग्रामर के क़ायदे के मुताबिक़ है, न कि ज़ायद। तो कलाम का मक़सूद यह है कि तुम्हारे जो ख़्यालात क़ुरआने करीम के बारे में हैं कि यह जादू है, या कहानत है, ये ग़लत हैं। बल्कि यह पाक किताब "अल्लाह का कलाम" है। अ़रब के कुछ हज़रात कहते हैं कि "ला" से उनके कलाम का इनकार है, फिर असल मामले को अल्फ़ाज़ में साबित किया हैः

"मवाक़िअ़िन्नुजूम" से मुराद क़ुरआन का धीरे-धीरे (थोड़ा-थोड़ा) उतरना है। लौहे-महफ़ूज़ से तो शबे-क़द्र में एक साथ पहले आसमान पर उतर आया, फिर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा वक़्त बक़्त पर उतरता है, यहाँ तक कि कई बरसों में पूरा क़ुरआन नाज़िल हो गया। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सितारों के निलकने और ज़ाहिर होने की आसमान की जगह हैं। "मवाक़े" से मुराद मन्ज़िलें हैं। हसन रह. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन उनका बिखर जाना मुराद है। ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद वे सितारे हैं जिनके बारे में मुश्रिक लोग अ़क़ीदा रखते थे कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ तारे की वजह से हम पर बारिश बरसी।

फिर बयान होता है कि यह बहुत बड़ी क़सम है, इसलिये कि जिस चीज़ पर यह क़सम खाई जा रही है वह बहुत बड़ा मामला है। यानी यह क़ुरआन बड़ी अ़ज़मत वाली किताब है। इ़ज़्ज़त वाली, सुरक्षित और मज़बूत किताब में है, जिसे सिर्फ़ पाक हाथ ही लगते हैं, यानी फ़रिश्तों के हाथ। यह और बात है कि दुनिया में उसे सब के हाथ लगते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "मा यमस्सुहू" है और अबुल् आ़लिया कहते हैं कि यहाँ पाक से मुराद इनसान नहीं, इनसान तो गुनाहगार है, यह काफ़िरों का जवाब है वे कहते थे कि इस क़ुरआन को लेकर शैतान उतरते हैं। जैसे एक दूसरी जगह साफ़ फ़रमाया:

وَمَاتَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ............ الخ.

यानी इसे न तो शैतान लेकर उतरते हैं, न उनके यह लायक़, न उनकी यह मजाल, बल्कि वे तो इसके सुनने से भी अलग हैं।

यही क़ौल इस आयत की तफ़सीर में मुनासिब मालूम होता है, दूसरे अक़वाल भी इसके मुताबिक़ हो सकते हैं। इमाम फ़र्रा ने कहा है कि इसका ज़ायक़ा और इसका लुत्फ़ सिर्फ़ ईमान वाले लोगों को ही मयस्सर आता है। बाज़ कहते हैं कि मुराद 'जनाबत' और 'हदस' (छोटी बड़ी नापाकी) से पाक होना है। अगरचे यह ख़बर है लेकिन मुराद इससे इन्शा (हुक्म) है, क़ुरआन से मुराद यहाँ पर मुस्हफ़ है। मतलब यह है कि मुसलमान नापाकी की हालत में क़ुरआन को हाथ न लगाये। एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने क़ुरआन साथ लेकर हरबी काफ़िरों (यानी जो मुसलमानों से जंग कर रहे हों) के मुल्क में जाने से मना फ़रमाया है, ऐसा न हो कि उसे दुश्मन कुछ नुक़सान पहुँचाये। (मुस्लिम शरीफ़) नबी सल्ल. ने जो फ़रमान हज़रत अ़मर बिन हज़्म को लिखकर दिया था उसमें यह भी था कि क़ुरआन को सिर्फ़ पाक ही छुए। मुवत्ता इमाम मालिक और मरासीले अबू दाऊद में है, इमाम ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद इस किताब को देखा है और उसमें यह जुमला पढ़ा है। अरगचे इस रिवायत की बहुत सी सनदें हैं लेकिन हर एक क़ाबिले ग़ौर है। वल्लाहु आलम

फिर इरशाद होता है कि यह क़ुरआन शे'र-शायरी, जादू और फ़न नहीं, बल्कि ख़ुदा तआ़ला का कलाम है और उसी की जानिब से उतरा है। यह सरासर हक़ है, बल्कि सिर्फ़ यही हक़ है इसके अ़लावा जो इसके ख़िलाफ़ है वह बातिल और पूरी तरह मर्दूद (अस्वीकारीय) है। फिर तुम ऐसी पाक बात का क्यों इनकार करते हो? क्यों इससे हटना और अलग रहना चाहते हो? क्या इसका शुक्र यही है कि तुम इसे झुठलाओ? क़बीला अ़ज़्द के कलाम में रिज़्क़ शुक्र के मायने में आता है। मुस्नद की एक हदीस में भी रिज़्क़ के मायने शुक्र किये हैं। यानी तुम कहते हो कि फ़ुलाँ सितारे की वजह से हमें पानी मिला और फ़ुलाँ सितारे से फ़ुलाँ चीज़। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर बारिश के मौक़े पर बाज़ लोग कुफ़्रिया कलिमात बक देते हैं कि

Maktab e Ashraf

बारिश का कारण फ़ुलाँ सितारा है। मुवत्ता में है कि हम हुदैबिया के मैदान में थे, रात को बारिश हुई। सुबह की नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल. ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया- जानते हो आज रात तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? लोगों ने कहा ख़ुदा को मालूम है और उसके रसूल को, आपने फ़रमाया- सुनो! यह फ़रमाया कि आज मेरे बन्दों में से बहुत से काफ़िर हो गये और बहुत से ईमान वाले बन गये। जिसने कहा कि हम पर अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से पानी बरसा वह तो मेरी ज़ात पर ईमान रखने वाला और सितारों से कुफ़्र करने वाला हुआ, और जिसने कहा कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ सितारे से बारिश बरसी, उसने मेरे साथ कुफ़्र किया और उस सितारे पर ईमान लाया।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि आसमान से जो बरकत नाज़िल होती है वह बाज़ के ईमान का और बाज़ के कुफ़्र का ज़रिया बन जाती है.........। हाँ यह ख़्याल रहे कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि. ने हज़रत अ़ब्बास रज़ि. से पूछा था कि सुरैया सितारा कितना बाक़ी है, फिर कहा था कि इस इल्म वालों का ख़्याल है कि यह अपने गिर जाने (यानी छुप जाने) के हफ़्ते भर बाद आसमान पर ज़ाहिर होता है, चुनाँचे यही हुआ कि इस सवाल व जवाब और पूछ-ताछ को सात रोज़ गुज़रे थे कि पानी बरसा। यह वाक़िआ महमूल है आ़दत और तर्जुबे पर, न यह कि उस सितारे में ही और उस सितारे को ही बादल का बनाने वाला जानते हों। इस क़िस्म का अ़क़ीदा तो कुफ़्र है। हाँ तर्जुबे से कोई चीज़ मालूम कर लेना या कोई बात कह देना दूसरी चीज़ है। इस बारे में बहुत सी हदीसें सूरः फ़ातिर की आयत नम्बर 2 की तफ़सीर में गुज़र चुकी हैं।

एक शख़्स को हुज़ूर सल्ल. ने यह कहते हुए सुन लिया कि फ़ुलाँ सितारे के असर से बारिश हुई तो आपने फ़रमाया- तू झूठा है, यह तो अल्लाह की बरसाई हुई है। यह रिज़्क़ अल्लाह का है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि लोगों को न जाने क्या हो गया है, अगर सात साल क़हत-साली (सूखा) रहे और फिर अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से बारिश बरसाये तो भी ये फ़ौरन ज़बान से निकालने लगेंगे कि फ़ुलाँ तारे ने बरसाया। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अपनी रोज़ी झुठलाने ही को न बना लो। यानी यूँ न कहो कि फ़ुलाँ फ़राख़ी (आसानी और हालत के अच्छा होने) का सबब फ़ुलाँ चीज़ है, बल्कि यूँ कहो कि यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है। पस यह भी मतलब है और यह भी कि क़ुरआन में उनका हिस्सा कुछ नहीं, बल्कि उनका हिस्सा यही है कि ये इसे झूठा कहते हैं। इसी मतलब की ताईद इससे पहले की आयत में भी होती है।

सो जिस वक़्त रूह हलक़ तक आ पहुँचती है (83) और तुम उस वक़्त तका करते हो (84) और हम (उस वक़्त) उस (मरने वाले) शख़्स के तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम समझते नहीं हो। (85) तो (हक़ीक़त में) अगर तुम्हारा हिसाब-किताब होने वाला नहीं है (86) तो तुम उस रूह को (बदन की तरफ़) फिर क्यों नहीं लौटाते? अगर तुम सच्चे हो। (87)	فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ۝ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ۝ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ۝ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

मौत की सख़्तियाँ और इनसान की लाचारी

इस मज़मून की आयतें सूरः क़ियामत में भी हैं। फ़रमाता है कि एक शख़्स अपने आख़िरी वक़्त में है,

Maktab E Ashraf

रूह निकलने का आ़लम है, रूह परवाज़ कर रही है, तुम सब पास बैठे देख रहे हो, कोई कुछ नहीं कर सकता। हमारे फ़रिश्ते जिन्हें तुम देख नहीं सकते, तुम से भी ज़्यादा क़रीब उस मरने वाले से हैं। जैसे क़ुरआन पाक में एक और जगह है:

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً...... الخ.

ख़ुदा अपने बन्दों पर ग़ालिब है, वह तुम पर अपने पास से मुहाफ़िज़ भेजता है। जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए उसे पूरी तरह फ़ौत कर लेते हैं। फिर वे सब के सब अल्लाह तआ़ला मौला-ए-हक़ की तरफ़ लौटाये जायेंगे, जो हाकिम है और जल्द हिसाब लेने वाला है।

यहाँ फ़रमाता है कि अगर वाक़ई तुम लोग किसी के फ़रमान के ताबे नहीं हो, अगर यह सही है कि तुम दोबारा ज़िन्दा होने और मैदाने क़ियामत में हाज़िर होने के क़ायल नहीं हो और इस बात में तुम हक़ पर हो, अगर तुम्हें हश्र व नश्र का यक़ीन नहीं, अगर तुम पर अ़ज़ाब नहीं होगा वग़ैरह, तो हम कहते हैं कि उस रूह को जाने ही क्यों देते हो? अगर तुम्हारे बस में है तो हलक़ तक पहुँचती हुई रूह को वापस उसकी जगह पहुँचा दो। पस याद रखो कि जैसे इस रूह को उस जिस्म में डालने पर हम क़ादिर थे और इसे भी तुम ने अपनी आँखों से ख़ुद देख लिया, तो यक़ीन करो कि इसी तरह हम दोबारा इस रूह को उसी जिस्म में डालकर नई ज़िन्दगी बख़्शने पर भी क़ादिर हैं। तुम्हारा न अपनी पैदाईश में दख़ल है न मरने में, तो फिर दोबारा जी उठने में तुम्हारा दख़ल कहाँ से हो गया? जो तुम कहते फिरते हो कि हम मरने के बाद ज़िन्दा नहीं होंगे।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۙ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ
وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ
مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۙ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ
اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ﴿۹۱﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ
الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ۙ﴿۹۳﴾
وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ
الْيَقِيْنِ ۚ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۹۶﴾ ع ٣ ٢٢ ١٦

फिर (जब क़ियामत आएगी तो) जो शख़्स अल्लाह के क़रीबी लोगों में से होगा उसके लिए तो राहत है। (88) और (फ़रागत की) गिज़ाएँ हैं और आराम की जन्नत है। (89) और जो शख़्स दाहिने वालों में से होगा (90) तो उससे कहा जाएगा कि तेरे लिए अमन व अमान है कि तू दाहिने वालों में से है। (91) और जो शख़्स झुठलाने वालों (और) गुमराहों में से होगा (92) तो खौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी। (93) और दोज़ख़ में दाख़िल होना होगा। (94) बेशक यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) तहक़ीक़ी यक़ीनी बात है। (95) सो अपने (उस) बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (96)

राहतें और चैन व सुकून

यहाँ वे हालात बयान हो रहे हैं जो मौत की सख़्तियों के वक़्त दुनिया की आख़िरी घड़ी में इनसानों के होते हैं कि या तो वह आला दर्जे का अल्लाह का क़रीबी और ख़ास है या इससे कम दर्जे का है। जिनके

Maktab E Ashraf

दाहिने हाथ में नामा-ए-आमाल दिया जायेगा, या बिल्कुल बदनसीब है जो अल्लाह से जाहिल रहा और राहे हक़ से ग़ाफ़िल रहा, तो फ़रमाता है कि जो अल्लाह की बारगाह के क़रीबी और ख़ास हैं, जो अहकाम पर अ़मल करने वाले थे, नाफ़रमानियों से रुकने वाले थे, उन्हें तो फ़रिश्ते तरह-तरह की ख़ुशख़बरियाँ सुनाते हैं, जैसा कि पहले हज़रत बरा रज़ि. की हदीस गुज़री कि रहमत के फ़रिश्ते उससे कहते हैं ऐ पाक रूह! पाक जिस्म वाली रूह! चल राहत व आराम की तरफ़ चल, कभी नाराज़ न होने वाले रहमान की तरफ़।

"रौह" से मुराद राहत है और "रैहान" से मुराद आराम है। ग़र्ज़ कि दुनिया की मुसीबतों से राहत मिल जाती है। हमेशा की ख़ुशी और सच्ची ख़ुशी ख़ुदा के गुलाम को उसी वक़्त हासिल होती है, वह एक फ़राख़ी और वुस्अ़त देखता है। उसके सामने रिज़्क़ व रहमत होती है, वह जन्नते अ़दन की तरफ़ लपकता है। हज़रत अबुल्-आ़लिया रह. फ़रमाते हैं कि जन्नत की एक हरी-भरी शाख़ आती है और उस वक़्त अल्लाह के क़रीबी और मक़बूल बन्दे की रूह क़ब्ज़ की जाती है। मुहम्मद बिन कअ़ब रह. फ़रमाते हैं कि मरने से पहले ही मरने वाले को मालूम हो जाता है कि वह जन्नती है या जहन्नमी (या अल्लाह उस वक़्त तू हमारी मदद कर, हमें ईमान के साथ उठा और अपनी रज़ामन्दी की ख़ुशख़बरी सुनाकर सुकून व राहत के साथ यहाँ से ले जा, आमीन)।

अगरचे 'सकरात' के (दुनिया से आख़िरी) वक़्त की हदीसें हम सूरः इब्राहीम की आयत नम्बर 27 की तफ़सीर में ज़िक्र कर चुके हैं, लेकिन क्योंकि यह उनका बेहतरीन मौक़ा है इसलिये यहाँ एक टुकड़ा बयान करते हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला हज़रत मलकुल-मौत से फ़रमाता है- मेरे फ़ुलाँ बन्दे के पास जा और उसे मेरे दरबार में ले आ। मैंने से रंज व राहत, आराम व तकलीफ़, ख़ुशी व नाख़ुशी ग़र्ज़ कि हर आज़माईश में उसे आज़मा लिया और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ पाया, बस मैं उसे हमेशा की राहत देना चाहता हूँ। जा उसे मेरे ख़ास दरबार में पेश कर। मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) पाँच सौ रहमत के फ़रिश्ते, जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुशबूएँ साथ लेकर उसके पास आते हैं अगरचे "रैहान" एक ही होता है लेकिन सिरे पर बीस क़िस्में होती हैं, हर एक की अलग महक होती है। सफ़ेद रेशम साथ होता है, जिसमें मुश्क की लपटें आती हैं। मुस्नद में है कि हज़रत उम्मे हानी ने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा- क्या मरने के बाद हम आपस में एक दूसरे से मिलेंगे और एक दूसरे को देखेंगे? आपने फ़रमाया- रूह एक परिन्दा हो जायेगी, जो कि दरख़्तों के मेवे चुगेगी यहाँ तक कि क़ियामत क़ायम हो। उस वक़्त अपने जिस्म में चली जायेगी। इस हदीस में हर मोमिन के लिये बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी है। मुस्नद अहमद में भी इसकी ताईद में एक हदीस है, जिसकी सनद बहुत बेहतर है और मतन भी बहुत क़वी है। एक और सही रिवायत में है कि शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों के क़ालिब में हैं, सारी जन्नत में जहाँ चाहें खाती पीती फिरें, और अ़र्श के नीचे लटकी हुई क़िन्दीलों में आ बैठती हैं।

मुस्नद अहमद में है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रह. एक जनाज़े में गधे पर सवार होकर जा रहे थे, आपकी उम्र उस वक़्त बुढ़ापे की थी, सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे। इसी दौरान में आपने यह हदीस बयान फ़रमाई कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जो अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात को पसन्द करता है अल्लाह भी उससे मिलना चाहता है, और जो अल्लाह से मिलने को बुरा जानता है, अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात से कराहत करता है। सहाबा रज़ि. यह सुनकर सर झुकाकर रोने लगे। आपने फ़रमाया क्यों रोते हो? सहाबा रज़ि. ने कहा- हुज़ूर! भला मौत को कौन पसन्द करता है? फ़रमाया सुनो सुनो! मतलब सकरात के

(आख़िरी) वक़्त है। उस वक़्त अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दे को तो राहत व इनाम और आरामदेह जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है, जिस पर वह तड़प उठता है और चाहता है कि जहाँ तक मुम्किन हो जल्दी से अल्लाह तआ़ला से मिले, ताकि इन नेमतों से मालामाल हो जाये। पस अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात की तमन्ना करता है। और अगर बन्दा बुरे आमाल वाला है तो उसे मौत के वक़्त गर्म पानी और जहन्नम की मेहमानी की ख़बर दी जाती है, जिससे यह बेज़ार हो जाता है और उसकी रूह रोंगटे रोंगटे में छुपने और अटकने लगती है, और दिल यह चाहता है कि किसी तरह ख़ुदा के सामने हाज़िर न होऊँ। पस अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को नापसन्द करता है।

फिर फ़रमाता है कि अगर वह नेकबख़्तों में से है तो मौत के फ़रिश्ते उसे सलाम कहते हैं, कि तुझ पर सलामती हो, तू दाहिने वालों में से है, अल्लाह के अ़ज़ाब से तू सलामती पायेगा और ख़ुद फ़रिश्ते भी उसे सलाम करते हैं। जैसे एक और आयत में है:

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا.......... الخ.

यानी सच्चे पक्के तौहीद (ईमान) वालों के पास उनके इन्तिक़ाल के वक़्त रहमत के फ़रिश्ते आते हैं और उन्हें ख़ुशख़बरी देते हैं कि कुछ डर ख़ौफ़ नहीं, कुछ रंज व ग़म न कर, जन्नत तुम्हारे लिये वायदे के मुताबिक़ तैयार है, दुनिया और आख़िरत में हम तुम्हारी हिमायत के लिये मौजूद हैं, जो तुम्हारा जी चाहे तुम्हारे लिये मौजूद है, जो तमन्ना तुम करोगे पूरी होकर रहेगी। ग़फ़ूरुर्रहीम (माफ़ करने वाले रहम करने वाले) अल्लाह के नज़दीक तुम इ़ज़्ज़त वाले मेहमान हो। बुख़ारी शरीफ़ में है- यानी तेरे लिये तय है कि तू दाहिने वालों में से है। यह भी हो सकता है कि सलाम यहाँ दुआ के मायने में हो। वल्लाहु आलम

और अगर मरने वाला हक़ को झुठलाने वाला और हिदायत से खोया हुआ है तो उसकी ज़ियाफ़त (ख़ातिर तवाज़ो) उस गर्म खौलते हुए पानी से होगी जो आँतें और खाल तक झुलसा देगा। फिर चारों तरफ़ से जहन्नम की आग घेर लेगी, जिसमें जलता भुनता रहेगा। फिर फ़रमाया कि ये यक़ीनी बातें हैं, जिनके हक़ होने में कोई शुब्हा नहीं। पस अपने बड़े रब के नाम की तस्बीह करता रह। मुस्नद में है कि इस आयत के उतरने पर आपने फ़रमाया- इसे रुकूअ़ में रखो, और फिर 'सब्बिहिस्-म रब्बिकल् अअ्ला' नाज़िल होने पर फ़रमाया- इसे सज्दे में रखो। आप फ़रमाते हैं कि जिसने 'सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीमि व बि-हम्दिही' कहा उसके लिये जन्नत में पेड़ लगा दिया जाता है। इमाम बुख़ारी रह. ने अपनी सही बुख़ारी के आख़िर में यह रिवायत बयान की है कि फ़रमाया अल्लाह के रसूल सल्ल. ने कि दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत आसान और हल्के हैं मगर आमाल की तराज़ू में बहुत भारी हैं, अल्लाह तआ़ला को बहुत प्यारे हैं- "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम"। इसको मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल की रिवायत से दूसरे मुहद्दिसीन ने भी बयान किया है सिवाय इमाम अबू दाऊद के।

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसकी तौफ़ीक़ से सूरः वाक़िआ़ की तफ़सीर पूरी हुई।

Mahtab E Ashraf

सूरः हदीद

सूरः हदीद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः हदीद

अबू दाऊद वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. सोने से पहले उन सूरतों को पढ़ते थे जिनके शुरू में "सब्ब-ह" या "युसब्बिहु" है, और फ़रमाते थे कि इनमें एक आयत है जो एक हज़ार आयतों से अफ़ज़ल (बेहतर) है। जिस आयत की फ़ज़ीलत इस हदीस में बयान हुई है। ग़ालिबन वह आयत "हुवल् अव्वलु वल्-आख़िरु.......' (यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 3) है। वल्लाहु आलम। इसका तफ़सीली बयान अभी आगे आ रहा है, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ○	अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं। और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (1) उसी की बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वही ज़िन्दगी देता है और (वही) मौत देता है, और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। (2) (सब मख़्लूक़ से) वही पहले है और वही पीछे, और वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा है, और वह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (3)

हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह बयान कर रही है

तमाम हैवानात (पशु-पक्षी) सब नबातात (पेड़-पौधे घास, वनस्पति वग़ैरह) उसकी पाकी बयान करते हैं। सातों आसमान और ज़मीनें और उनकी मख़्लूक़ और हर-हर चीज़ उसकी तारीफ़ बयान करने में मशग़ूल है, अगरचे तुम उनकी तस्बीह न समझ सको। ख़ुदा हलीम व ग़फ़ूर है, उसके सामने हर कोई पस्त, आ़जिज़ और लाचार है। उसकी मुक़र्रर की हुई शरीअ़त और उसके अहकाम हिक्मत से पुर हैं। असली बादशाह जिसकी मिल्कियत में आसमान व ज़मीन हैं, वही है। मख़्लूक़ात में इख़्तियार वाला और उलट-फेर करने वाला वही है। ज़िन्दगी और मौत उसी के क़ब्ज़े में है, वही फ़ना करता है, वही पैदा करता है। जिसे जो

Maktaba E Ashraf

चाहे इनायत फ़रमाता है, हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, जो चाहता है हो जाता है, जो न चाहे नहीं हो सकता। इसके बाद की आयत 'हुवल् अव्वलु........' वह आयत है जिसके बारे में ऊपर की हदीस में गुज़रा कि एक हज़ार आयतों से अफ़ज़ल है। हज़रत अबू ज़ुमैल रह. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से कहते हैं कि मेरे दिल में एक शुब्हा है, लेकिन ज़बान पर लाने को जी नहीं चाहता। इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने मुस्कुराकर फ़रमाया- शायद कुछ शक होगा जिससे कोई नहीं बचा, यहाँ तक कि क़ुरआन में भी है:

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ..... الخ.

यानी अगर जो कुछ तेरी तरफ़ नाज़िल किया गया है उसमें शक हो तो तुझ से पहले जो किताब पढ़ते हैं उनसे पूछ ले.........।

फिर फ़रमाया- जब तेरे दिल में कोई शक हो तो इस आयत को पढ़ लिया कर:

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْاٰخِرُ......... الخ.

सब मख़्लूक़ात से पहले वही है और वही पीछे........... (यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 3)।

इस आयत की तफ़सीर में दस से ऊपर अक़्वाल हैं। इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि यहया का क़ौल है- ज़ाहिर व बातिन से मुराद इल्म के एतिबार से हर चीज़ पर ज़ाहिर और पोशीदा होना है, यह यहया ज़ियाद फ़र्रा के लड़के हैं। इनकी एक किताब है जिसका नाम 'मआ़नियुल-क़ुरआन' है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. सोने के वक़्त यह दुआ़ पढ़ा करते थे:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ مُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيْلِ خَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْبَاطِنُ لَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ.

ऐ अल्लाह तआ़ला! ऐ सातों आसमानों के और अ़र्शे अ़ज़ीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! ऐ तौरात व इन्जील के उतारने वाले! ऐ दानों और गुठलियों को उगाने वाले! तेरे सिवाय कोई लायक़े इबादत नहीं। मैं तेरी पनाह में आता हूँ और हर उस चीज़ की बुराई से कि उसकी चोटी तेरे हाथ है तू अव्वल है, तुझ से पहले कुछ न था। तू ही आख़िर है कि तेरे बाद कुछ नहीं। तू ज़ाहिर है कि तुझ से ऊँची कोई चीज़ नहीं। हमारे क़र्ज़ अदा करा दे और हमें फ़क़ीरी से निजात दे।

हज़रत अबू सालेह रह. अपने मुताल्लिक़ीन को यह दुआ़ सिखाते और फ़रमाते कि सोते वक़्त दाहिनी करवट पर लेटकर यह दुआ़ पढ़ लिया करो। अलफ़ाज़ में कुछ थोड़ा फ़र्क़ है, मुलाहिज़ा हो मुस्लिम शरीफ़। अबू यअ़ला में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल. के हुक्म से आपका बिस्तर क़िब्ला-रुख़ बिछाया जाता, आप अपने दाहिने हाथ पर तकिया लगाकर आराम फ़रमाते, फिर आहिस्ता आहिस्ता कुछ पढ़ते रहते, लेकिन रात के आख़िरी हिस्से में बुलन्द आवाज़ से यह दुआ़ पढ़ते जो ऊपर बयान हुई, अलफ़ाज़ में कुछ तब्दीली यहाँ भी है। इस आयत की तफ़सीर में जामे तिर्मिज़ी में है कि हुज़ूर सल्ल. अपने सहाबा के साथ तशरीफ़ रखते थे कि एक बादल सर पर आ गया, आपने फ़रमाया जानते हो यह क्या है? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अदब से जवाब दिया- अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानने

वाले हैं। फ़रमाया इन्हें अनान कहते हैं, यह ज़मीन को सैराब करने वाले हैं और लोगों पर भी यह बरसाये जाते हैं, जो न ख़ुदा के शुक्रगुज़ार हैं, न ख़ुदा के पुकारने वाले। फिर पूछा मालूम है तुम्हारे ऊपर क्या है? उन्होंने कहा अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा ख़बर रखते हैं। फ़रमाया बुलन्द महफ़ूज़ छत और लिपटी हुई मौज जानते हो? तुममें और उसमें किस क़द्र फ़ासला है? वही जवाब मिला। फ़रमाया पाँच सौ साल का रास्ता। फिर पूछा जानते हो उसके ऊपर क्या है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने फिर अपनी अज्ञानता उन्हीं अलफ़ाज़ में ज़ाहिर की तो आपने फ़रमाया- उसके ऊपर दूसरा आसमान है और उन दोनों आसमानों में भी पाँच सौ साल का फ़ासला है। इसी तरह आपने सात आसमान गिनवाये, और हर दो में इतनी ही दूरी बयान फ़रमाई। फिर सवाल किया और जवाब सुनकर फ़रमाया- सातवें आसमान के ऊपर इतने ही फ़ासले से अ़र्श है। फिर पूछा जानते हो तुम्हारे नीचे क्या है? और वही जवाब सुनकर फ़रमाया- दूसरी ज़मीन है। फिर सवाल व जवाब के बाद फ़रमाया- उसके नीचे दूसरी ज़मीन है और दोनों ज़मीनों के बीच भी पाँच सौ साल का फ़ासला है। इसी तरह सात ज़मीनें, इसी फ़ासले के साथ एक दूसरी के नीचे बतलायीं।

फिर फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर तुम कोई रस्सी सबसे नीचे की ज़मीन की तरफ़ लटकाओ तो वह भी अल्लाह के पास पहुँचेगी। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। लेकिन यह हदीस ग़रीब है, इसके रावी हसन रह. का इसे अपने उस्ताद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से सुनना साबित नहीं जैसा कि अय्यूब बिन यूनुस और अ़ली बिन ज़ैद मुहद्दिसीन का क़ौल है। बाज़ उलेमा ने इस हदीस की शरह में कहा है कि इससे मुराद रस्सी का अल्लाह तआ़ला के इल्म, क़ुदरत और ग़लबे तक पहुँचना है (न कि ज़ाते बारी तआ़ला तक), ख़ुदा तआ़ला का इल्म, उसका ग़लबा और सल्तनत बेशक हर जगह है, लेकिन वह अपनी ज़ात से अ़र्श पर है, जैसा कि उसने अपना यह वस्फ़ अपनी किताब में ख़ुद बयान फ़रमाया है। मुस्नद अहमद में भी यह हदीस है और उसमें दो-दो ज़मीनों के दरमियान का फ़ासला सात सौ साल का बयान हुआ है। इब्ने अबी हातिम और बज़्ज़ार में भी यह हदीस है, लेकिन इब्ने अबी हातिम में रस्सी लटकाने का जुमला नहीं, और हर दो ज़मीन के दरमियान की दूरी उसमें भी पाँच सौ साल की बयान हुई है। इमाम बज़्ज़ार रह. ने भी फ़रमाया है कि इस रिवायत का रावी हुज़ूरे पाक सल्ल. से सिवाय हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. के और कोई नहीं। इब्ने जरीर में यह हदीस मुर्सल तौर पर मौजूद है, यानी हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हमसे यूँ ज़िक्र किया गया है, फिर हदीस बयान करते हैं, सहाबी का नाम नहीं लेते। मुम्किन है यही ठीक हो। वल्लाहु आलम

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी से मुस्नद बज़्ज़ार और किताबुल-अस्मा वस्सिफ़ात बैहक़ी में यह हदीस बयान की गयी है। लेकिन इसकी सनद कमज़ोरी से ख़ाली नहीं बल्कि मतन में भी ग़राबत व नकारत है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलम। इमाम इब्ने जरीर रह. यह आयतः

وَمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ.

(यानी सूरः तलाक़ आयत 12) की तफ़सीर में हज़रत क़तादा रह. का क़ौल लाये हैं कि आसमान व ज़मीन के दरमियान चार फ़रिश्तों की मुलाक़ात हुई। आपस में पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो? एक ने कहा- सातवें आसमान से मुझे ख़ुदा तआ़ला ने भेजा है, और मैंने ख़ुदा तआ़ला को वहीं छोड़ा है। दूसरे ने कहा- सातवीं ज़मीन से मुझे ख़ुदा तआ़ला ने भेजा है और ख़ुदा वहीं था। तीसरे ने कहा मेरे रब ने मुझे पूरब से भेजा है जहाँ वह था। चौथे ने कहा मुझे पश्चिम से भेजा है और उसे वहीं छोड़कर आ रहा हूँ। लेकिन

Maktab E Ashraf

यह रिवायत भी ग़रीब है, बल्कि ऐसा मालूम होता है कि हज़रत क़तादा रह. वाली ऊपर की रिवायत जो मुर्सल तौर पर बयान हुई है, मुम्किन है वह भी हज़रत क़तादा रह. का अपना क़ौल हो, जैसे यह क़ौल ख़ुद क़तादा रह. का अपना है। वल्लाहु आलम

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ؕ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ○ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ○ یُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَیُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ؕ وَهُوَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○

वह ऐसा है कि उसने आसमानों और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा किया, फिर तख़्त पर क़ायम हुआ वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश) और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे और घास वग़ैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है और वह तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो, और वह तुम्हारे सब आमाल को भी देखता है। (4) उसी की हुकूमत है आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम मामलात लौट जाएँगे। (5) वही रात को दिन में दाख़िल करता है (जिससे दिन बड़ा हो जाता है) और वही दिन को रात में दाख़िल करता है (जिससे रात बड़ी हो जाती है) और वह दिल की बातों (तक) को जानता है। (6)

सिर्फ़ छह दिन में

अल्लाह तआला का ज़मीन व आसमान को छह दिन में पैदा करना और अ़र्श पर जलवा-अफ़रोज़ होना सूरः आराफ़ की तफ़सीर में पूरी तरह बयान हो चुका है। इसलिये यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। उसे अच्छी तरह इल्म है कि इस क़द्र बूँदें बारिश की ज़मीन में गयीं, कितने दाने ज़मीन में पड़े और क्या चारे पैदा हुए, किस क़द्र खेतियाँ हुईं और कितने फल पैदा हुए। जैसे एक और आयत में है:

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ........ الخ.

और ग़ैब की कुन्जियाँ उसी के पास हैं, जिन्हें सिवाय उसके और कोई जानता ही नहीं। वह ख़ुश्की और तरी की तमाम चीज़ों का आ़लिम (जानने वाला) है। किसी पत्ते का गिरना भी उसके इल्म से बाहर नहीं, ज़मीन की अंधेरियों में पोशीदा दाना और कोई तर व ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो खुली किताब में मौजूद न हो। इसी तरह आसमान से नाज़िल होने वाली बारिश, ओले, बर्फ़, तक़दीरें और अहकाम जो बुलन्द रुतबे वाले फ़रिश्तों के ज़रिये नाज़िल होते हैं, सब उसके इल्म में हैं।

सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में यह गुज़र चुका है कि ख़ुदा के मुक़र्रर किये हुए फ़रिश्ते बारिश के एक

Maktab_e_Ashraf

एक क़तरे को ख़ुदा की बतलाई हुई जगह में पहुँचा देते हैं। आसमान से उतरने वाले फ़रिश्ते और आमाल भी उसके विस्तृत इल्म में है। जैसे एक सही हदीस में है कि रात के आमाल दिन से पहले और दिन के आमाल रात से पहले उसकी बारगाह में पेश कर दिये जाते हैं, वह तुम्हारे साथ है। यानी तुम्हारा निगहबान है, तुम्हारे आमाल व अफ़आल को देख रहा है, जैसे भी हों जो भी हों और तुम भी चाहे ख़ुश्की में हो, चाहे तरी में हो, रातें हों या दिन हों, तुम घर में हो या जंगल में हो, हर हालत में उसके इल्म के लिये बराबर हर वक़्त उसकी निगाहें और उसका सुनना तुम्हारे साथ है। तुम्हारे तमाम कलिमात वह सुनता रहता है, तुम्हारा हाल वह देखता रहता है, तुम्हारे छुपे खुले का उसे इल्म है। जैसे फ़रमाता है कि उससे जो छुपना चाहे उसका वह फ़ेल फ़ुज़ूल है, भला ज़ाहिर व बातिन बल्कि दिलों के इरादे तक से वाक़फ़ियत रखने वाले से कोई कैसे छुप सकता है? एक और आयत में है कि पोशीदा बातें और ज़ाहिर बातें रातों को, दिन को जो भी हों, सब उस पर रोशन हैं। सच है वही रब है, वही माबूदे बर्हक़ है।

सही हदीस में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के सवाल पर हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया- एहसान यह है कि अल्लाह की इबादत इस तरह कर कि गोया तू ख़ुदा को देख रहा है। पस अगर तू उसे नहीं देख रहा है तो यह ख़्याल कर कि वह तुझे देख रहा है। एक शख़्स आकर रसूले ख़ुदा सल्ल. से अ़र्ज़ करता है कि या रसूलल्लाह! मुझे कोई ऐसा हिक्मत का तोहफ़ा दीजिए कि मेरी ज़िन्दगी संवर जाये। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का लिहाज़ कर और उससे इस तरह शर्मा जैसे कि तू अपने किसी नज़दीकी नेक रिश्तेदार से शर्माता हो, जो तुझसे कभी जुदा न होता हो। यह हदीस अबू बक्र इस्माईली ने रिवायत की है, सनद ग़रीब है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि जिसने तीन काम कर लिये उसने ईमान का मज़ा उठा लिया, एक अल्लाह की इबादत की, अपने माल की ज़कात हंसी-ख़ुशी दिल की रज़ामन्दी से अदा की, जानवर अगर ज़कात में देने हैं तो बूढ़े बेकार, दुबले पतले और बीमार न दे, बल्कि दरमियानी दर्जे के राहे ख़ुदा में दे, और अपने नफ़्स को पाक किया। इस पर एक शख़्स ने सवाल किया कि हुज़ूर! नफ़्स को पाक करने का क्या मतलब है? आपने फ़रमाया- इस बात को दिल में महसूस करे और यक़ीन व अ़क़ीदा रखे कि हर जगह ख़ुदा उसके साथ है। (अबू नुऐम) और एक हदीस में है कि अफ़ज़ल ईमान यह है कि तू जान ले कि तू जहाँ कहीं है अल्लाह तेरे साथ है। (नुऐम बिन हम्माद) इमाम अहमद रह. अक्सर इन दो शे'रों को पढ़ते थे:

اِذَا مَاخَلَوْتَ الدَّهْرَيَوْمًا فَلَا تَقُلْ ☆ خَلَوْتُ وَلٰكِنْ قُلْ عَلَيَّ رَقِيْبُ

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ يَغْفَلُ سَاعَةً ☆ وَلَا اَنَّ مَا يَخْفٰى عَلَيْهِ يَغِيْبُ

यानी जब तू बिल्कुल तन्हाई और ख़ल्वत में हो उस वक़्त भी यह न कह कि मैं अकेला ही हूँ बल्कि कहता रह कि मुझ पर एक निगरानी करने वाला है। यानी किसी घड़ी अल्लाह तआ़ला को बेख़बर न समझ और छुपे से छुपे काम को उस पर छुपा हुआ न समझ।

फिर फ़रमाता है कि दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى.

दुनिया व आख़िरत की मिल्कियत हमारी ही है। उसकी तारीफ़ इस बादशाहत पर भी हमारा फ़र्ज़ है। फ़रमाता है:

وَهُوَاللّٰهُ لَآاِلٰـهَ اِلَّا هُوَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ.

Maktab-e-Ashraf

वही माबूदे बरहक़ है और वही तारीफ़ व सना का हक़दार है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

एक और आयत में है कि अल्लाह तआ़ला के लिये तमाम तारीफ़ें हैं जिसकी मिल्कियत में आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें हैं, और उसी की तारीफ़ है आख़िरत में, और वह दाना और ख़बरदार है। पस हर वह चीज़ जो आसमान व ज़मीन में है उसी की बादशाहत में है। आसमान व ज़मीन की सारी मख़्लूक़ उसकी गुलामी और उसकी ख़िदमत-गुज़ारी में है, और उसके सामने पस्त है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا...... الخ.

आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ रहमान के सामने गुलामी की हैसियत में पेश होने वाली है। उन सब को उसने घेर रखा है और सब को एक-एक करके गिन रखा है। उसकी तरफ़ तमाम मामले लौटाये जाते हैं। अपनी मख़्लूक़ में जो चाहे हुक्म देता है। वह आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है, ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि एक नेकी को दस गुना बढ़ाकर देता है, और फिर अपने पास से अज्रे अ़ज़ीम इनायत फ़रमाता है। क़ुरआन पाक में एक जगह इरशाद है:

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ....... الخ.

क़ियामत के दिन हम अ़दल की तराज़ू रखेंगे और किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। राई के बराबर का अ़मल भी हम सामने ला रखेंगे और हम हिसाब करने और लेने में काफ़ी हैं।

फिर फ़रमाया कि मख़्लूक़ में तसर्रुफ़ (उलट-फेर और इख़्तियार) भी उसी का चलता है, दिन रात की गर्दिश भी उसी के हाथ में है, वह अपनी हिक्मत से घटाता बढ़ाता है, कभी के दिन लम्बे कभी की रातें, और कभी दोनों बराबर। कभी जाड़ा कभी गर्मी, कभी बारिश कभी पतझड़, और यह सब बन्दों की भलाई और उनकी मस्लेहत के लिहाज़ से है। वह दिलों की छोटी से छोटी बातों और दूर के पोशीदा राज़ों से भी वाक़िफ़ है।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ	तुम लोग अल्लाह तआ़ला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और (ईमान लाकर) जिस माल में तुमको उसने क़ायम-मक़ाम किया है उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करो, सो जो लोग तुममें से ईमान ले आएँ और ख़र्च करें, उनको बड़ा सवाब होगा। (7) और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हालाँकि रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुमको इस बात की तरफ़ बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ, और ख़ुद ख़ुदा ने तुमसे अ़हद लिया था, अगर तुमको ईमान लाना हो। (8) वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने (ख़ास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर साफ़-साफ़

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۗ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ
قٰتَلُوْا ۗ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۗ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ
كَرِيْمٌ ۝ ع ١٧

आयतें भेजता है ताकि वह तुमको (कुफ़्र और जहालत की) अंधेरियों से रोशनी की तरफ़ लाए, और बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हाल पर बड़ा शफ़क़त करने वाला, बड़ा मेहरबान है। (9) और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते? हालाँकि सब आसमान और ज़मीन अख़ीर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुममें से जो लोग मक्का फ़तह होने से पहले (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च कर चुके और लड़ चुके बराबर नहीं, वे लोग दर्जे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने (मक्का के फ़तह होने के) बाद में ख़र्च किया और लड़े, और (यूँ) अल्लाह तआ़ला ने भलाई (यानी सवाब) का वायदा सबसे कर रखा है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (10)

कोई शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह क़र्ज़ के तौर पर दे? फिर ख़ुदा तआ़ला उस (दिए हुए के सवाब) को उस शख़्स के लिए बढ़ाता चला जाए और उसके लिए पसन्दीदा अज्र है। (11)

Maktab E Ashraf

ईमान की दावत

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने और अपने रसूल सल्ल. के ऊपर ईमान लाने और उस पर मज़बूती और हमेशगी के साथ जमकर रहने की हिदायत फ़रमाता है, और अपनी राह में ख़ैरात करने की रग़बत (शौक़ और तवज्जोह) दिलाता है। जो माल हाथों हाथ तुम्हें उसने पहुँचाया हो तुम उसकी इताअ़त गुज़ारी में उसे ख़र्च करो और समझ लो कि जिस तरह दूसरे हाथों से तुम्हें मिला है इसी तरह जल्द ही तुम्हारे हाथों से दूसरे हाथों में चला जायेगा, और तुम पर हिसाब और नाराज़गी रह जायेगी। इसमें यह भी इशारा है कि तेरे बाद तेरा वारिस मुम्किन है नेक हो और वह तेरे तर्के (छोड़े हुए माल) को मेरी राह में ख़र्च करके मुझसे बहुत नज़दीकी हासिल करे, और मुम्किन है कि वह बद हो और अपनी बदमस्ती और बुरे आमाल में तेरा जमा किया हुआ माल फ़ना कर दे और उसकी बुराईयों का सबब तू बने। न तू छोड़ता न वह उड़ाता। हुज़ूर सल्ल. सूरः 'तकासुर' (अल्हाकुमुत्तकासुरु.......) पढ़कर फ़रमाने लगे- इनसान अगरचे कहता रहता है कि यह भी मेरा माल है, वह भी मेरा माल है, हालाँकि दर असल इनसान का माल वह है जो खा लिया, पहन लिया, सदक़ा कर दिया। खाया हुआ फ़ना हो गया, पहना हुआ पुराना होकर बरबाद हो गया, हाँ राहे ख़ुदा में दिया हुआ बतौर ख़ज़ाने के जमा रहा। (मुस्लिम शरीफ़) और जो रह गया वह तो औरों का माल है, तू तो उसे

Maktaba Ashraf

जमा करके छोड़ जाने वाला है।

फिर इन्हीं दोनों बातों की तरग़ीब (दिलचस्पी) दिलाता है, बहुत बड़े अज्र का वायदा देता है। फिर फ़रमाता है कि तुम्हें ईमान से कौनसी चीज़ रोकती है? रसूल तुममें मौजूद हैं और तुम्हें ईमान की तरफ़ बुला रहे हैं, दलीलें दे रहे हैं और मोजिज़े दिखा रहे हैं। सही बुख़ारी की शरह के शुरू के हिस्से किताबुल-ईमान में हम यह हदीस बयान कर आये हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने पूछा- सबसे ज़्यादा अच्छे ईमान वाले तुम्हारे नज़दीक कौन हैं? कहा फ़रिश्ते। फ़रमाया वे तो अल्लाह के पास ही हैं, फिर ईमान क्यों न लाते? कहा फिर अम्बिया। फ़रमाया उन पर तो वही और कलामे ख़ुदा उतरता है, वे कैसे ईमान न लाते? कहा फिर हम। फ़रमाया वाह तुम ईमान से कैसे रुक सकते थे? मैं तुममें ज़िन्दा मौजूद हूँ। सुनो! बेहतरीन और अ़जीब तर ईमान वाले वे लोग हैं जो तुम्हारे बाद आयेंगे, सहीफ़ों में लिखा देखेंगे और ईमान क़बूल करेंगे। सूरः ब-क़रह के शुरू में आयतः

اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ.

(यानी सूरः ब-क़रह की आयत 3) की तफ़सीर में भी हम ऐसी हदीसें लिख आये हैं। फिर उन्हें वायदे के दिन का क़ौल व क़रार याद दिलाता है। जैसे एक और आयत में हैः

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ....... الخ.

कि याद करो तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को........।

इससे मुराद रसूले ख़ुदा सल्ल. से बैअ़त करना है, और इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि मुराद वह मीसाक़ (अ़हद और क़रार) है जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ में उनसे लिया गया था। मुजाहिद रह. का भी यही मज़हब है। वल्लाहु आलम

वह ख़ुदा जो अपने बन्दे पर रोशन हुज्जतें, बेहतरीन दलीलें और उम्दा आयतें नाज़िल फ़रमाता है, ताकि ज़ुल्म व ज़्यादती की घंघोर घटाओं और राय व क़ियास की बदतरीन अंधेरियों से तुम्हें निकाल कर नूरानी, रोशन और साफ़ सीधी राहे हक़ पर ला खड़ा कर दे, ख़ुदा रऊफ़ (नर्मी करने वाला) है साथ ही रहीम (रहम करने वाला) है, यह उसका सुलूक और करम है कि लोगों की रहनुमाई के लिये किताबें नाज़िल फ़रमायीं, रसूल भेजे, शक व शुब्हे दूर कर दिये, हिदायत की वज़ाहत कर दी, ईमान और ख़ैरात का हुक्म करके फिर ईमान की रग़बत दिलाकर और यह बयान फ़रमाकर कि ईमान न लाने का अब कोई उज़्र मैंने बाक़ी नहीं रखा, फिर सच्चाई की रग़बत (तवज्जोह व रुचि) दिलाई और फ़रमाया कि मेरी राह में ख़र्च करो और ग़ुर्बत से न डरो। इसलिये कि जिसकी राह में तुम ख़र्च कर रहे हो वह ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों का तन्हा मालिक है, अ़र्श व कुर्सी उसी की है और वह तुम से इस ख़ैरात के बदल का वायदा कर चुका है। फ़रमाता हैः

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ.

जो कुछ तुम अल्लाह की राह में दोगे उसका बेहतरीन बदला वह तुम्हें देगा और रोज़ी पहुँचाने वाला दर हक़ीक़त वही है। एक दूसरी जगह फ़रमाता हैः

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ.

यह फ़ानी माल तुम ख़र्च करोगे तो वह अपने पास से हमेशा रहने वाला तुम्हें देगा।

तवक्कुल वाले ख़र्च करते रहते हैं और मालिके अ़र्श उनको तंगदस्ती से महफ़ूज़ रखता है। उनको इस बात का भरोसा होता है कि हमारे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किये हुए माल का बदला दोनों जहान में हमें यक़ीनन मिलकर रहेगा। फिर इस बात का बयान हो रहा है कि फ़त्हे-मक्का से पहले जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपने माल ख़र्च किये और जिन लोगों ने यह नहीं किया, अगरचे मक्का फ़तह होने के बाद किया हो, ये दोनों बराबर नहीं हैं। इस वजह से भी कि उस वक़्त तंगी और लाचारी ज़्यादा थी और क़ुव्वत व ताक़त कम थी, और इसलिये भी कि उस वक़्त ईमान वही क़बूल करता था जिसका दिल हर मैल-कुचैल से पाक होता था। फ़त्हे-मक्का के बाद तो इस्लाम को खुला ग़लबा मिला और मुसलमानों की तायदाद बहुत ज़्यादा हो गयी और फ़ुतूहात की वुस्अ़त हुई। साथ ही माल भी नज़र आने लगा। पस उस वक़्त और इस वक़्त में जितना फ़र्क़ है उतना ही उन लोगों और इन लोगों के अज्र में फ़र्क़ है। उन्हें बहुत बड़े अज्र मिलेंगे, अगरचे दोनों असल भलाई और असल अज्र में शरीक हैं।

बाज़ हज़रात ने कहा है कि फ़तह से मुराद "सुलह हुदैबिया" है। इसकी ताईद मुस्नद अहमद की इस रिवायत से भी होती है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ में कुछ इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और मनमुटाव) हो गया, जिसमें हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने फ़रमाया- तुम इसी पर अकड़ रहे हो कि हम से कुछ दिन पहले इस्लाम लाये। जब हुज़ूर सल्ल. को इसका इल्म हुआ तो आपने फ़रमाया- मेरे सहाबा (साथियों) को मेरे लिये छोड़ दो, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम उहुद पहाड़ के या किसी और पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दो तो भी उनके आमाल को नहीं पहुँच सकते।

ज़ाहिर है कि यह वाक़िआ़ हज़रत ख़ालिद रज़ि. के मुसलमान हो जाने के बाद का है और आप सुलह हुदैबिया के बाद और फ़त्हे-मक्का से पहले ईमान लाये थे, और यह इख़्तिलाफ़ (विवाद) जिसका ज़िक्र इस रिवायत में है, बनू ख़ुज़ैमा के बारे में हुआ था। हुज़ूर सल्ल. ने फ़त्हे-मक्का के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि. की अगुवाई में उनकी तरफ़ एक लश्कर भेजा था। जब यह वहाँ पहुँचे तो उन लोगों ने पुकारना शुरू किया कि हम मुसलमान हो गये, लेकिन अपनी नावाक़फ़ियत (अज्ञानता) की वजह से यह तो न कहा कि हम इस्लाम लाये बल्कि कहने लगे कि हम साबी हुए यानी बेदीन हुए, इसलिये कि काफ़िर मुसलमानों को यही कहा करते थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने ग़ालिबन इस कलिमे का असल मतलब न समझकर उनके क़त्ल का हुक्म दे दिया बल्कि उनके जो लोग गिरफ़्तार कर लिये गये थे उन्हें क़त्ल करने को फ़रमाया। इस वाक़िए पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने उनका विरोध किया, इस वाक़िए का मुख़्तसर बयान ऊपर वाली हदीस में है।

सही हदीस में है कि मेरे सहाबा को बुरा न कहो, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो भी उनके कम से कम सवाब को नहीं पहुँचेगा, बल्कि डेढ़ पाव को भी न पहुँचेगा। इब्ने जरीर में है कि हुदैबिया वाले साल हम हुज़ूर सल्ल. के साथ जब असफ़ान में पहुँचे तो आपने फ़रमाया- ऐसे लोग भी आयेंगे कि तुम अपने आमाल को उनके आमाल के मुक़ाबले में हक़ीर समझने लगोगे। हमने कहा क्या क़ुरैशी? कहा नहीं, बल्कि यमनी, निहायत नर्म दिल और निहायत अच्छे अख़्लाक़ वाले, सादा मिज़ाज। हमने कहा हुज़ूर! फिर क्या वे हमसे बेहतर होंगे? आपने जवाब दिया कि अगर उनमें से किसी के पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी हो और वह उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करे तो तुम में से एक के तीन पाव बल्कि डेढ़ पाव अनाज की ख़ैरात को भी नहीं पहुँच सकता। याद रखो कि हममें और दूसरे तमाम लोगों में यही फ़र्क़ है। फिर आपने इसी आयत "ला

यस्तवी........" (यानी इसी आयत की जिसमें है कि वे लोग जिन्होंने फ़त्हे-मक्का से पहले माल ख़र्च किये और जिन्होंने बाद में किये ये बराबर नहीं हो सकते) की तिलावत की, लेकिन यह रिवायत ग़रीब है। सहीहैन में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रह. की रिवायत में ख़ारजियों के ज़िक्र में है कि तुम अपनी नमाज़ें उनकी नमाज़ों के मुक़ाबले और अपने रोज़े उनके रोज़ों के मुक़ाबले पर मामूली और कमतर शुमार करोगे, वे दीन से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह तीर शिकार से (यानी उनके अ़क़ीदे सही न होंगे, आमाल ज़्यादा होंगे तो क्या फ़ायदा, जब वह क़बूल ही नहीं)।

इब्ने जरीर में है कि बहुत जल्दी एक क़ौम आयेगी कि तुम अपने आमाल को कमतर समझने लगोगे जब उनके आमाल से अपने आमाल की तुलना करोगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा क्या वे क़ुरैशियों में से होंगे? आपने फ़रमाया नहीं, वे सादा-मिज़ाज नर्म-दिल यहाँ वाले हैं और आपने यमन की तरफ़ अपने हाथ से इशारा किया। फिर फ़रमाया वे यमनी लोग हैं, ईमान तो यमन वालों का ईमान है, और हिक्मत यमन वालों की हिक्मत है। हमने पूछा क्या वे हम से भी अफ़ज़ल होंगे? फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर उनमें से किसी के पास सोने का पहाड़ हो और उसे वह अल्लाह की राह में दे डाले तो भी तुम्हारे एक मुद्द या आधे मुद्द (यह नापने का एक बरतन था) को भी नहीं पहुँच सकता। फिर आपने अपनी और उंगलियाँ तो बन्द कर लीं और छोटी उंगली को लम्बा करके फ़रमाया- ख़बरदार हो जाओ यह है फ़र्क़ हम में और दूसरे लोगों में। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

पस इस हदीस में हुदैबिया का ज़िक्र नहीं, फिर यह भी हो सकता है कि मुम्किन है फ़त्हे-मक्का से पहले ही फ़त्हे-मक्का के बाद की ख़बर अल्लाह तआ़ला ने आपको दे दी हो, जैसे कि सूरः मुज़्ज़म्मिल में जो उन शुरू की सूरतों में से है जो मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई थीं, अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी थीः

وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

यानी कुछ और लोग ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की राह में जिहाद करते हैं।

पस जिस तरह इस आयत में एक आने वाले वाक़िए का तज़किरा किया है इसी तरह इस आयत और हदीस को भी समझ लिया जायेगा। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि हर एक से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वायदा किया है, यानी फ़त्हे-मक्का से पहले और उसके बाद भी जिसने जो कुछ राहे ख़ुदा में दिया है उसका अज्र व सवाब पायेगा, यह और बात है कि किसी को बहुत ज़्यादा दिया जाये किसी को उससे कम। जैसे एक और जगह है कि मुजाहिद और ग़ैर-मुजाहिद जो उज़्र (मजबूरी) वाले भी न हों दर्जे में बराबर नहीं अगरचे भले वायदे में दोनों शामिल हैं। एक सही हदीस में है कि क़वी (ताक़तवर) मोमिन ख़ुदा के नज़दीक ज़ईफ़ (कमज़ोर) मोमिन से अफ़ज़ल है, लेकिन भलाई दोनों में है। अगर यह जुमला इस आयत में न होता तो मुम्किन था कि किसी को उनके बाद वालों के हल्केपन का ख़्याल गुज़रे, इसलिये फ़ज़ीलत बयान फ़रमा कर फिर अ़त्फ़ डालकर (यानी एक दूसरे को जोड़कर) असल अज्र में दोनों को शरीक बताया।

फिर फ़रमाया- तुम्हारे तमाम आमाल की तुम्हारे रब को ख़बर है। वह दर्जों में जो फ़र्क़ रखता है वह भी अन्दाज़े से नहीं बल्कि सही इल्म से। हदीस शरीफ़ में है एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ जाता है। यह भी याद रहे कि इस आयत के बड़े मिस्दाक़ हज़रत अबू बक्र रज़ि. हैं। इसलिये इस पर अ़मल करने वाले तमाम अम्बिया की उम्मत के सरदार आप हैं। आपने शुरू के तंगी के वक़्त अपना तमाम माल

Maktab E Ashraf

अल्लाह की राह में दे दिया था, जिसका बदला सिवाय ख़ुदा के किसी और से मतलूब न था। हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं दरबारे रिसालत में था और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. भी थे, सिर्फ़ एक अ़बा (लम्बा चौग़ा और नीचा कुर्ता) आपके जिस्म पर थी, गिरेबान काँटे से अटकाये हुए थे। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम नाज़िल हुए और पूछा क्या बात है जो हज़रत अबू बक्र ने सिर्फ़ एक अ़बा पहन रखी है? और काँटा लगा रखा है? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उन्होंने अपना तमाम माल मेरे कामों में फ़तह से पहले ही अल्लाह की राह में ख़र्च कर डाला है। अब उनके पास कुछ नहीं। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- उनसे कहो कि ख़ुदा उन्हें सलाम कहता है और फ़रमाता है- क्या इस फ़क़ीरी में तुम मुझसे ख़ुश हो या नाख़ुश हो? आपने सिद्दीक़े अकबर रज़ि. से वाक़िआ बयान किया और जवाब माँगा, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैं अपने रब तआ़ला से नाराज़ कैसे हो सकता हूँ बल्कि मैं तो इस हाल में बहुत ख़ुश हूँ। यह हदीस सनद के एतिबार से ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि कौन है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ दे। इससे मुराद ख़ुदा तआ़ला की रज़ा और ख़ुशनूदी के लिये ख़र्च करना है। बाज़ों ने कहा है कि बाल-बच्चों को खिलाना पिलाना वग़ैरह ख़र्च मुराद है। हो सकता है कि यह आयत अपने उमूम के लिहाज़ से दोनों सूरतों को शामिल हो। फिर इस पर वायदा फ़रमाता है कि उसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बदला मिलेगा, और बहुत पाकीज़ा रोज़ी जन्नत में मिलेगी। इस आयत को सुनकर हज़रत अबू दह्दाह अन्सारी हुज़ूर सल्ल. के पास आये और कहा- क्या हमारा रब हमसे क़र्ज़ माँगता है? आपने फ़रमाया हाँ। फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ज़रा अपना हाथ तो दीजिए। आपने हाथ बढ़ाया तो आपका हाथ अपने हाथ में लेकर फ़रमाया- मेरा बाग़ जिसमें खजूर के छह सौ पेड़ हैं, वह मैंने अपने रब को दिया। आपके बीवी बच्चे भी उसी बाग़ में थे, आप आये और बाग़ के दरवाज़े पर खड़े होकर अपनी बीवी साहिबा को आवाज़ दी, वह लब्बैक कहती हुई आयीं तो फ़रमाने लगे- बच्चों को लेकर चली आओ, मैंने यह बाग़ अपने रब तआ़ला को क़र्ज़ दे दिया है। वह ख़ुश होकर कहने लगीं कि आपने बहुत नफ़े की तिजारत की, और बाल बच्चों को और घर के सामान को लेकर बाहर चली आयीं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाने लगे- जन्नती पेड़ वहाँ के बाग़ात जो मेवों से लदे हुए और जिनकी शाख़ें याक़ूत और मोती की हैं, वे अबू दह्दाह को अल्लाह तआ़ला ने दे दीं।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى
نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ
الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝
يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

जिस दिन आप मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा, आज तुमको ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। (12) (और यह वह दिन होगा) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से (पुलसिरात पर) कहेंगे कि (ज़रा) हमारा इन्तिज़ार कर लो, हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर

Maktab E Ashraf

نُوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۗ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

लें। उनको जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर (वहाँ से) रोशनी तलाश करो, फिर उन (दोनों फ़रीक़ों) के दरमियान में एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा (भी) होगा। (जिसकी कैफ़ियत यह है कि) उसकी अन्दरूनी ओर में रहमत होगी और बाहरी ओर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) ये (मुनाफ़िक़) उनको पुकारेंगे कि क्या (दुनिया में) हम तुम्हारे साथ न थे? वे (मुसलमान) कहेंगे कि हाँ (थे तो सही) लेकिन तुमने अपने को गुमराही में फँसा रखा था और तुम मुन्तज़िर रहा करते थे, और (इस्लाम के हक़ होने में) तुम शक रखते थे, और तुमको तुम्हारी बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था, यहाँ तक कि तुम पर ख़ुदा का हुक्म आ पहुँचा और तुमको धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के साथ धोखे में डाल रखा था। (14) ग़र्ज़ कि आज न तुमसे कोई बदला लिया जाएगा और न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा साथी है और वह (वाक़ई) बुरा ठिकाना है। (15)

क़ियामत के दिन का कुछ हाल

यहाँ बयान हो रहा है कि मुसलमानों के नेक आमाल के मुताबिक़ उन्हें नूर मिलेगा जो क़ियामत के दिन उनके साथ-साथ रहेगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि उनमें बाज़ का नूर पहाड़ों के बराबर होगा और बाज़ का खजूर के दरख़्तों के बराबर, बाज़ का खड़े इनसान के क़द के बराबर, सबसे कम नूर जिस गुनाहगार मोमिन का होगा उसके पैर के अंगूठे पर नूर होगा, जो कभी रोशन होता होगा और कभी बुझ जाता होगा। (इब्ने जरीर)

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हम से ज़िक्र किया गया कि हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है- बाज़ मोमिन ऐसे भी होंगे जिनका नूर इस क़द्र होगा कि जिस क़द्र मदीना से अ़दन का फ़ासला है और अबीन दूर है और सनआ़ का फ़ासला है। बाज़ इससे कम बाज़ इससे कम, यहाँ तक कि बाज़ वे भी होंगे जिनके नूर से सिर्फ़ उनके दोनों क़दमों के पास ही उजाला होगा। हज़रत जुनादा बिन उमैया रह. फ़रमाते हैं- लोगो! तुम्हारे नाम मय वलदियत के और ख़ास निशानियों के साथ ख़ुदा के यहाँ लिखे हुए हैं। इसी तरह तुम्हारा खुला छुपा अ़मल भी वहाँ लिखा हुआ है। क़ियामत के दिन नाम लेकर पुकार कर कह दिया जायेगा कि ऐ फ़ुलाँ! यह तेरा नूर है और ऐ फ़ुलाँ तेरे लिये कोई नूर हमारे यहाँ नहीं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि अव्वल तो हर शख़्स को नूर अता होगा, लेकिन जब पुलसिरात पर जायेंगे तो मुनाफ़िक़ का नूर बुझ जायेगा, इसे देखकर मोमिन भी डरने लगेंगे कि ऐसा न हो कि हमारा नूर भी बुझ जाये, तो अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करेंगे कि ख़ुदाया! हमारा नूर हमारे लिये पूरा-पूरा कर। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत से मुराद पुलसिरात पर नूर का मिलना है ताकि उस अन्धेरी जगह से आराम से गुज़र जायें। रसूले मक़बूल सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे पहले सज्दे की इजाज़त क़ियामत के दिन मुझे दी जायेगी, और इसी तरह सबसे पहले सज्दे से सर उठाने का हुक्म भी मुझे होगा। मैं आगे पीछे दायें बायें नज़रें डालूँगा और अपनी उम्मत को पहचान लूँगा। एक शख़्स ने कहा हुज़ूर! हज़रत नूह से लेकर आपकी उम्मत तक की तमाम उम्मतें उस मैदान में इकट्ठी होंगी, उनमें से आप अपनी उम्मत के पहचान कैसे करेंगे? आपने फ़रमाया मख़्सूस निशानियों की वजह से मेरी उम्मत के वुज़ू वाले बदनी अंग चमक रहे होंगे। यह वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) किसी और उम्मत में न होगा, और उन्हें उनके नामा-ए-आमाल दाहिने हाथों में दिये जायेंगे, और उनके चेहरे चमक रहे होंगे, और उनका नूर उनके आगे-आगे चलता होगा, और उनकी औलाद उनके साथ होगी। इमाम ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि उनके दाहिने हाथ में उनका अ़मल नामा होगा जैसे दूसरी बाज़ आयतों में तशरीह है। उनसे कहा जायेगा कि आज तुम्हें उन जन्नतों की ख़ुशख़बरी है जिनके हर-हर गोशे में चश्मे जारी हैं, जहाँ से कभी निकलना नहीं, यह ज़बरदस्त कामयाबी है।

इसके बाद की आयत में मैदाने क़ियामत के हौलनाक, दिल तोड़ने वाले और कपकपा देने वाले वाक़िए का बयान है, कि सिवाय सच्चे ईमान और अच्छे आमाल वालों के निजात किसी को न होगी। सुलैम बिन आ़मिर फ़रमाते हैं कि हम एक जनाज़े के साथ बाबे दमिश्क़ में थे। जब जनाज़े की नमाज़ हो चुकी और दफ़न का काम शुरू हुआ तो हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि. ने फ़रमाया- लोगो! तुम इस दुनिया की मन्ज़िल में सुबह व शाम कर रहे हो, नेकियाँ और बुराईयाँ कर सकते हो। इसके बाद एक और मन्ज़िल की तरफ़ तुम सब कूच करने वाले हो, वह मन्ज़िल यही क़ब्र की है। जो तन्हाई का, अन्धेरे का, कीड़ों का और तंगी तारीकी वाला घर है, मगर जिसके लिये ख़ुदा तआ़ला उसे वुस्अ़त दे दे। यहाँ से फिर तुम मैदाने क़ियामत के विभिन्न मक़ामात पर आओगे, एक जगह बहुत से लोगों के चेहरे सफ़ेद हो जायेंगे और बहुत से लोगों के काले पड़ जायेंगे। फिर एक और मैदान में जाओगे जहाँ सख़्त अन्धेरा होगा, वहाँ ईमान वालों को नूर तक़सीम किया जायेगा और काफ़िर व मुनाफ़िक़ बेनूर रह जायेंगे। इसी का ज़िक्र सूरः नूर की आयत नम्बर 40 में है। पस जिस तरह आँखों वाले की बसारत (रोशनी) से अन्धा कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकता इसी तरह मुनाफ़िक़ व काफ़िर ईमान वालों के नूर से कुछ फ़ायदा न उठा सकेगा, तो मुनाफ़िक़ ईमान वालों से आरज़ू करेंगे कि इस क़द्र आगे न बढ़ जाओ, कुछ तो ठहरो, जो हम भी तुम्हारे नूर के साये में चलें। तो जिस तरह दुनिया में मुसलमानों के साथ ये लोग मक्र व फ़रेब करते थे, आज उनसे कहा जायेगा कि लौट जाओ और नूर तलाश कर लाओ। यह वापस नूर की तक़सीम की जगह जायेंगे लेकिन वहाँ कुछ न पायेंगे, यही ख़ुदा तआ़ला की वह तदबीर है जिसका बयान सूरः निसा की आयत 142 में है।

अब लौटकर जो यहाँ आयेंगे तो देखेंगे कि मोमिनों और उनके दरमियान एक दीवार रोक हो गयी है, जिसके उस तरफ़ रहमत ही रहमत है और इस तरफ़ अ़ज़ाब व सज़ा ही है। पस मुनाफ़िक़ नूर की तक़सीम के वक़्त तक धोखे में ही रहेगा, नूर मिल जाने पर राज़ खुल जायेगा, तमीज़ हो जायेगी और ये मुनाफ़िक़ ख़ुदा की रहमत से मायूस हो जायेंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब पूरा अन्धेरा छाया

Maktab E Ashraf

हुआ होगा कि कोई इनसान अपना हाथ भी न देख सके, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला एक नूर ज़ाहिर करेगा, मुसलमान उस तरफ़ जाने लगेंगे तो मुनाफ़िक़ भी पीछे लग जायेंगे। जब मोमिन ज़्यादा आगे निकल जायेंगे तो ये उन्हें रोकने के लिये आवाज़ देंगे, और याद दिलायेंगे कि दुनिया में हम सब साथ ही थे। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि क़ियामत के दिन लोगों को उनकी पर्दा-पोशी के लिये उनके नामों से पुकारा जायेगा, मगर पुलसिरात पर इम्तियाज़ (फ़र्क़) हो जायेगा, मोमिनों को नूर मिलेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मिलेगा, लेकिन जब बीच में पहुँच जायेंगे तो मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ जायेगा। ये मोमिनों को आवाज़ें देंगे लेकिन उस वक़्त मोमिन ख़ुद डरे हुए होंगे, यह एक ऐसा वक़्त होगा कि हर एक नफ़्सी-नफ़्सी में होगा। जिस दीवार का यहाँ ज़िक्र है यह जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक हद्दे फ़ासिल होगी। इसी का ज़िक्र आयत 'व बैनहुमा हिजाबुन' में है। पस जन्नत में रहमत और जहन्नम में अ़ज़ाब। ठीक बात यही है, लेकिन बाज़ का क़ौल है कि इससे मुराद बैतुल-मुक़द्दस की दीवार है जो जहन्नम की वादी के पास होगी।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि यह दीवार बैतुल-मुक़द्दस की पूर्वी दीवार है, जिसके अन्दर की तरफ़ मस्जिद वग़ैरह है और जिसके ज़ाहिर में जहन्नम की वादी है। बाज़ दूसरे बुज़ुर्गों ने भी यही कहा है, लेकिन यह याद रखना चाहिये कि उनका मतलब यह नहीं कि बिल्कुल यही दीवार इस आयत में मुराद है, बल्कि इसका ज़िक्र मायनों के क़रीब होने के सबब इस आयत की तफ़सीर में उन हज़रात ने कर दिया है। इसलिये कि जन्नत आसमानों में आला इल्लिय्यीन (ऊँची जगह) में है और जहन्नम अस्फ़लुस्साफ़िलीन (सब से नीचे) में, और हज़रत कअ़बे अहबार से जो मन्क़ूल है कि जिस दरवाज़े का ज़िक्र इस आयत में है उससे मुराद मस्जिद का "बाबुर्रहमत" है, यह बनी इस्राईल की रिवायत है, जो हमारे लिये सनद नहीं बन सकती। हक़ीक़त यह है कि यह दीवार क़ियामत के दिन मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के दरमियान अलग करने के लिये खड़ी की जायेगी। मोमिन तो उसके दरवाज़े में से जाकर जन्नत में पहुँच जायेंगे, फिर दरवाज़ा बन्द हो जायेगा और मुनाफ़िक़ हैरान व परेशान अंधेरे व अ़ज़ाब में रह जायेंगे। जैसे कि दुनिया में ये लोग कुफ़्र व जहालत, शक व हैरत की अंधेरियों में थे। अब ये याद दिलायेंगे कि देखो दुनिया में हम तुम्हारे साथ थे, जुमा जमाअ़त से अदा करते थे, अ़रफ़ात और ग़ज़ावत में मौजूद रहते थे, वाजिबात अदा करते थे। ईमान वाले कहेंगे कि हाँ बात तो ठीक है लेकिन अपने करतूत तो देखो। गुनाहों में, नफ़्सानी इच्छाओं में, ख़ुदा की नाफ़रमानियों में उम्र भर लज़्ज़तें उठाते रहे, और आज तौबा कर लेंगे, कल बुरे आमाल छोड़ देंगे, इसी में रहे, इन्तिज़ार में ही उम्र गुज़ार दी, कि देखें मुसलमानों का नतीजा (अन्जाम) क्या होता है? और तुम्हें यह भी यक़ीन न हुआ कि क़ियामत आयेगी भी या नहीं, और फिर इस आरज़ू में रहे कि अगर आयेगी भी तो हम ज़रूर बख़्श दिये जायेंगे, और मरते दम तक ख़ुदा की तरफ़ ख़ुलूस (नेक-नीयती) के साथ झुकने की तौफ़ीक़ तुम्हें मयस्सर न आयी, और अल्लाह के साथ तुम्हें धोखेबाज़ शैतान ने धोखे में ही रखा, यहाँ तक कि आज तुम जहन्नम में पहुँच गये।

मतलब यह है कि जिस्मों से तुम हमारे साथ थे, लेकिन दिल और नीयत से तुम हमारे साथ न थे, बल्कि हैरत व शक में पड़े रहे, रियाकारी में रहे और दिल लगाकर ख़ुदा को याद करना कभी तुम्हें नसीब न हुआ। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि ये मुनाफ़िक़ मोमिनों के साथ थे। निकाह, उठने-बैठने, मजमे, मौत ज़िन्दगी में शरीक रहे, लेकिन अब यहाँ बिल्कुल अलग कर दिये गये। सूरः मुद्दस्सिर की आयतों में है कि मुसलमान मुजरिमों से उनको जहन्नम में देखकर पूछेंगे कि आख़िर तुम यहाँ कैसे फंस गये? और वे अपने

बुरे आमाल का ज़िक्र करेंगे। वाज़ेह रहे कि यह सवाल सिर्फ़ बतौर डाँट-डपट के और उन्हें शर्मिन्दा करने के लिये होगा, वरना असलियत से मुसलमान ख़ूब आगाह होंगे।

फिर जैसे वहाँ फ़रमाया था कि किसी की सिफ़ारिश तुम्हें नफ़ा न देगी, यहाँ फ़रमाया कि आज उनसे फ़िदया (बदले में कोई माल) न लिया जायेगा, चाहे ज़मीन भर कर सोना भी दें तो क़बूल न किया जायेगा। न मुनाफ़िक़ों से, न काफ़िरों से, उनका ठिकाना जहन्नम है, वही उनके लायक़ है और ज़ाहिर है कि वह बहुत बुरी जगह है।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ○ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ○	क्या ईमान वालों के लिए इस बात का वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ख़ुदा की नसीहत के और जो हक़ दीन (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) नाज़िल हुआ है उसके सामने झुक जाएँ? और उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको उनसे पहले (आसमानी) किताब मिली थी (यानी यहूदी और ईसाई), फिर (उसी हालत में) उन पर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया (और तौबा न की) फिर उनके दिल (ख़ूब ही) सख़्त हो गए, और बहुत-से आदमी उनमें के (आज) काफ़िर हैं। (16) यह बात जान लो कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को उसके सूख जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है, हमने तुमसे उसकी नज़ीरें बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

क्या अभी तक वह वक़्त नहीं आया?

परवर्दिगारे आ़लम फ़रमाता है- क्या मोमिनों के लिये अब तक वह वक़्त नहीं आया कि अल्लाह का ज़िक्र, वअ़ज़ व नसीहत, क़ुरआनी आयतें और अहादीसे नबवी सुनकर उनके दिल मोम हो जायें? सुनें और मानें, अहकाम बजा लायें। जिन चीज़ों से रोका गया है उनसे परहेज़ करें। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरआन नाज़िल होते हुए तेरह साल का अ़रसा न गुज़रा था कि मुसलमानों के दिलों को उस तरफ़ न झुकने और देरी करने की शिकायत की गयी। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- चार ही साल गुज़रे थे कि हम पर यह इताब (नाराज़गी का इज़हार) हुआ। (मुस्लिम) रसूले करीम सल्ल. के सहाबा रन्जीदा होकर हुज़ूर से कहते हैं- हज़रत! कुछ बात तो बयान फ़रमाईये, पस यह आयत उतरती है:

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ.

(मुराद क़ुरआन पाक है) फिर एक मर्तबा कुछ दिनों बाद यही अ़र्ज़ करते हैं तो यह आयत उतरती है:

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ.

(मुराद हदीसे पाक है) फिर एक अ़रसे के बाद यही कहते हैं तो यह आयत उतरी (जिसकी यह तफ़सीर बयान हो रही है)। रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं कि सबसे पहली ख़ैर जो मेरी उम्मत से उठ जायेगी वह ख़ुशूअ़ (दिल का अल्लाह की तरफ़ झुकाव और डर) होगा, फिर फ़रमाया- तुम यहूदियों व ईसाईयों की तरह न हो जाना जिन्होंने अल्लाह की किताब को बदल दिया, मामूली क़ीमत पर उसे फ़रोख़्त कर दिया। पस किताबुल्लाह को पीठ पीछे डालकर राय और अन्दाज़े के पीछे पड़ गये और अपनी तरफ़ से गढ़े हुए अक़वाल को मानने लगे, और ख़ुदा के दीन में दूसरों की पैरवी करने लगे। अपने उलेमा और राहिबों (ईसाईयों के आ़बिदों) की उलट-सुलट बातें दीन में दाख़िल कर लीं, इन बुरे आमाल की सज़ा में ख़ुदा ने उनके दिल सख़्त कर दिये। कितनी ही ख़ुदा की बातें क्यों न सुनाओ उनके दिल नर्म नहीं होते। कोई वअ़ज़ व नसीहत उन पर असर नहीं करता, कोई वायदा वईद उनके दिल ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं कर सकते, बल्कि मैं ज़्यादातर फ़ासिक़ (गुनाहगार) व बदकार बन गये। दिल के खोटे और आमाल के भी कच्चे। जैसे एक और आयत में है:

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ........ الخ.

उनके अ़हद तोड़ने की वजह से हमने उन पर लानत नाज़िल की और उनके दिल सख़्त कर दिये। ये अहकाम को अपनी जगह से बदल डाल देते हैं और हमारी नसीहतें भुला बैठते हैं। यानी उनके दिल फ़ासिक़ हो गये, ख़ुदा की बातें बदलने लगे, नेकियाँ छोड़ दीं, बुराईयों में व्यस्त हो गये। इसलिये रब्बुल-आ़लमीन इस उम्मत को सचेत कर रहा है कि ख़बरदार उनके बुरे आमाल तुम न सीख लेना, बुनियाद व अहकाम में उनसे बिल्कुल अलग रहो। इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत रबीअ़ बिन अबू अ़मीला फ़रमाते हैं कि क़ुरआन व हदीस की मिठास तो मानी हुई है ही, लेकिन मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से एक बहुत ही प्यारी और मीठी बात सुनी है जो मुझे बेहद महबूब और पसन्दीदा है। आपने फ़रमाया- बनी इस्राईल की आसमानी किताब पर कुछ ज़माना गुज़र गया तो उन लोगों ने कुछ किताबें ख़ुद तैयार कर लीं और उनमें वे मसाईल लिखे जो उन्हें पसन्द थे, और जो उनके अपने ज़ेहन से उन्होंने तराश लिये थे। अब मज़े लेकर ज़बानें मोड़-मोड़कर (यानी ग़ैर-वाज़ेह अन्दाज़ में) उन्हें पढ़ने लगे। उनके अक्सर मसाईल ख़ुदा की किताब के ख़िलाफ़ थे। जिन-जिन अहकाम के मानने को उनका जी न चाहता था, उन्होंने बदल डाले थे और अपनी किताब में अपनी तबीयत के मुताबिक़ मसाईल जमा कर लिये थे और उन्हीं पर आ़मिल हो गये।

अब उन्हें सूझी कि और लोगों को भी मनवा लें, और उन्हें भी आमादा करें कि इन्हें हमारी लिखी हुई किताबों को आसमानी किताबें समझें और अ़मल इन्हीं पर रखें। अब लोगों को उसी की दावत देने लगे और ज़ोर पकड़ते गये, यहाँ तक कि जो उनकी उन किताबों को न मानता उसको यह सताते, तकलीफ़ देते, मारते पीटते बल्कि क़त्ल कर डालते। उनमें एक शख़्स अल्लाह वाले पूरे आ़लिम और मुत्तक़ी थे। उन्होंने उनकी ताक़त और ज़्यादती से मरऊब होकर किताबुल्लाह को एक लतीफ़ चीज़ पर लिखकर एक नरसंघे में डालकर अपनी गर्दन में उसे डाल लिया, उन लोगों का फ़साद व ख़राबी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था, यहाँ तक कि बहुत से उन लोगों को जो किताबुल्लाह पर आ़मिल थे, उन्होंने क़त्ल कर दिया। फिर आपस में मश्विरा किया कि देखो इस तरह एक-एक शख़्स को कब तक क़त्ल करते रहेंगे। उनका बड़ा आ़लिम और हमारी इस किताब को बिल्कुल न मानने वाला तमाम बनी इस्राईल में सबसे बढ़कर किताबुल्लाह का आ़मिल फ़ुलाँ आ़लिम है, उसे पकड़ो और उससे अपनी राय और क़ियास की किताब मनवाओ। अगर वह मान लेगा

Maktab E Ashraf

तो फिर हमारी कामयाबी है और अगर वह न माने तो उसे क़त्ल कर दो। फिर तुम्हारी इस किताब का मुहाफ़िज़ (सुरक्षा करने वाला) कोई न रहेगा, और दूसरे लोग ख़्वाह-मख़्वाह हमारी इन किताबों को क़बूल कर लेंगे और इन्हें मानने लगेंगे। चुनाँचे इन राय व क़ियास वालों ने किताबुल्लाह के आ़लिम व आ़मिल उस बुज़ुर्ग को पकड़वाकर बुलवाया और उससे कहा कि देख हमारी इस किताब में जो है उस सब को तू मानता है या नहीं? इस पर तेरा ईमान है या नहीं? उस ख़ुदा के बन्दे किताबुल्लाह को मानने वाले आ़लिम ने कहा कि इसमें तुमने क्या लिखा है? ज़रा मुझे सुनाओ तो? उन्होंने सुनाया और कहा इसको तू मानता है? उस बुज़ुर्ग को अपनी जान का डर था इसलिये जुर्रत के साथ यह तो कह न सका कि नहीं मानता, बल्कि अपने उस नरसंघे की तरफ़ इशारा करके कहा, मेरा इस पर ईमान है। वे समझ बैठे कि इसका इशारा हमारी किताब की तरफ़ है। चुनाँचे उसको सताने और तकलीफ़ देने से रुक गये, लेकिन फिर भी उसके तौर-तरीक़ों और अ़मल से कुढ़ते ही रहे, यहाँ तक कि जब उसका इन्तिक़ाल हुआ तो उन्होंने तफ़तीश शुरू की कि ऐसा न हो कि इसके पास अल्लाह की किताब और दीन के सच्चे मसाईल की कोई किताब हो। आख़िर वह नरसंघा उनके हाथ लग गया, पढ़ा तो उसमें असल किताबुल्लाह के असल मसाईल मौजूद थे। अब बात बनाई कि हमने तो कभी ये मसाईल नहीं सुने, ऐसी बातें हमारे दीन में नहीं, चुनाँचे ज़बरदस्त फ़ितना बरपा हो गया और बहत्तर गिरोह हुए। उन सब में बहत्तरवाँ गिरोह जो सही रास्ते और हक़ पर था, वह था जो उस नरसंघे वाले मसाईल पर आ़मिल (अ़मल करने वाला) था।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह वाक़िआ़ बयान फ़रमाकर कहा कि लोगो! तुममें से जो बाक़ी रहेगा वह ऐसी ही चीज़ों को देखेगा और वह बिल्कुल बेबस होगा। उन बुरी किताबों के मिटाने की उसमें ताक़त न होगी, पस ऐसी मजबूरी और बेकसी के वक़्त भी उसका यह फ़र्ज़ तो ज़रूर है कि अल्लाह तआ़ला पर यह साबित कर दे कि वह उन्हें सब को बुरा जानता है। इमाम अबू जाफ़र तबरी रह. ने भी यह रिवायत नक़ल की है कि अ़तरीस बिन उरक़ूब रह. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास आये और कहने लगे ऐ अ़ब्दुल्लाह! जो शख़्स भलाई का हुक्म न करे और बुराई से न रोके वह हलाक हुआ। आपने फ़रमाया हलाक वह होगा जो अपने दिल से अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई न जाने। फिर आपने बनी इस्राईल का यह वाक़िआ़ बयान फ़रमाया।

फिर अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि जान लो! मुर्दा ज़मीन को ख़ुदा ज़िन्दा कर देता है। इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि सख़्त दिलों की सख़्ती के बाद भी ख़ुदा उन्हें नर्म करने पर क़ादिर है। गुमराहियों की तह में उतर जाने के बाद भी अल्लाह सही रास्ते पर लाता है, जिस तरह बारिश ख़ुश्क ज़मीन को तर कर देती है। इसी तरह किताबुल्लाह मुर्दा दिलों को ज़िन्दा कर देती है। बादलों में जब ख़ूब गहरा अंधेरा छा गया हो, किताबुल्लाह की रोशनी उसे एक दम से मुनव्वर कर देती है, अल्लाह तआ़ला की वही दिल के ताले की कुन्जी है। सच्चा हादी (हिदायत देने वाला) वही है, गुमराही के बाद राह पर लाने वाला, जो चाहे करने वाला, हिक्मत व इन्साफ़ वाला और लुत्फ़ व ख़ैर वाला, बड़ाई और जलाल वाला, बुलन्दी व शान वाला वही है।

बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औ़रतें और ये (सदक़ा देने वाले) अल्लाह	إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ
اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ○ ع ۹ ۱۸

को नेक-नीयती के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं, वह सदक़ा (सवाब के एतिबार से) उनके लिए बढ़ा दिया जाएगा, और उनके लिए पसन्दीदा अज्र है। (18) और जो लोग अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं, उनके लिए (जन्नत में) उनका (ख़ास) अज्र और (पुलसिरात पर) उनका (ख़ास) नूर होगा। और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया, यही लोग दोज़ख़ी हैं। (19)

Maktaba Ashraf

बहुत बड़ा और पसन्दीदा अज्र

फ़क़ीर, मिस्कीन, मोहताजों और हाजतमन्दों को ख़ालिस ख़ुदा की मर्ज़ी की जुस्तजू में जो लोग अपने हलाल माल नेक नीयती से राहे ख़ुदा में सदक़ा देते हैं, उनके बदले बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ख़ुदा तआ़ला उन्हें अ़ता फ़रमायेगा। दस और इससे भी ज़्यादा सात-सात सौ गुना तक, बल्कि इससे भी ज़्यादा, उनके सवाब बेहिसाब हैं, उनके अज्र बहुत बड़े हैं। अल्लाह तआ़ला और रसूल सल्ल. पर ईमान रखने वाले ही सिद्दीक़ व शहीद हैं। इन दोनों सिफ़तों के मुस्तहिक़ सिर्फ़ ईमान वाले लोग हैं। बाज़ हज़रात ने "अश्शुहदा-ऊ" को अलग जुमला माना है। ग़र्ज़ कि तीन क़िस्में हुई- "मुसद्दिक़ीन, सिद्दीक़ीन, शुहदा" जैसे एक और रिवायत में है कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. का इताअ़त-गुज़ार, इनाम पाने वाले लोगों के साथ है, जो नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालेह (नेक) लोग हैं। पस सिद्दीक़ व शहीद में यहाँ भी फ़र्क़ किया गया है, जिससे मालूम होता है कि ये दो क़िस्म के लोग हैं, सिद्दीक़ का दर्जा शहीद से यक़ीनन बड़ा है। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि जन्नती लोग अपने से ऊपर के बालाख़ाने वालों को इस तरह देखेंगे जैसे चमकते हुए पूर्वी या पश्चिमी सितारे को तुम आसमान के किनारे पर देखते हो। लोगों ने कहा- ये दर्जे तो सिर्फ़ अम्बिया के होंगे, आपने फ़रमाया हाँ क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है, ये वे लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तस्दीक़ की। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक ग़रीब हदीस से यह भी मालूम होता है कि शहीद और सिद्दीक़ दोनों वसफ़ (गुण) इस आयत में उसी मोमिन के हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी उम्मत के मोमिन शहीद हैं, फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। हज़रत अ़मर बिन मैमून रह. का क़ौल है कि ये दोनों इन दोनों उंगलियों की तरह क़ियामत के दिन आयेंगे। बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों के क़ालिब (ख़ोल) में होंगी, जन्नत में जहाँ चाहेंगी खाती पीती फिरेंगी, और रात को क़िन्दीलों में सहारा लेंगी। उनके रब ने उनकी तरफ़ एक बार देखा और पूछा तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा यह कि आप दुनिया में हमें दोबारा भेज दें ताकि हम फिर आपकी राह में जिहाद करें और शहादत हासिल करें। अल्लाह ने जवाब दिया यह तो मैं फ़ैसला कर चुका हूँ कि कोई लौटकर फिर दुनिया में नहीं जायेगा।

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमाता है कि उन्हें अज्र व नूर मिलेगा जो नूर उनके सामने रहेगा और उनके आमाल के मुताबिक़ होगा। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि शहीदों की चार क़िस्में हैं- वह पक्के ईमान वाला मोमिन जो दुश्मने ख़ुदा से भिड़ गया और लड़ता रहा, यहाँ तक कि टुकड़े-टुकड़े हो गया, इसका दर्जा है कि मेहशर वाले इस तरह सर उठा-उठाकर इसकी तरफ़ देखेंगे, और यह फ़रमाते हुए आपने इस क़द्र अपना सर बुलन्द किया कि टोपी नीचे गिर गयी। इस हदीस के रावी हज़रत उमर रज़ि. ने भी इसके बयान करने के वक़्त इतना ही अपना सर बुलन्द किया कि आपकी टोपी भी ज़मीन पर जा पड़ी। दूसरा वह शख़्स जो ईमान वाला है, जिहाद के लिये निकला मगर दिल में हौसला कम है कि अचानक एक तीर आ लगा, रूह परवाज़ कर गयी। यह दूसरे दर्जे का जन्नती और शहीद है। तीसरा वह जिसके भले-बुरे आमाल थे, लेकिन रब तआ़ला ने उसे पसन्द फ़रमाया और मैदाने जिहाद में काफ़िरों के हाथों शहादत नसीब हुई। यह तीसरे दर्जे में है। चौथा वह जिसके गुनाह बहुत ज़्यादा हैं, जिहाद में निकला और ख़ुदा ने शहादत नसीब फ़रमाकर अपने पास बुला लिया। इन नेक लोगों का अन्जाम बयान करके अब बुरे लोगों का अन्जाम बयान किया कि ये जहन्नमी हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝	तुम ख़ूब जान लो कि (आख़िरत के मुक़ाबले में) दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल-तमाशा और (एक ज़ाहिरी) ज़ीनत और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र करना और मालों और औलाद में एक-दूसरे से अपने को ज़्यादा बतलाना है। जैसे बारिश (बरसती) है कि उसकी पैदावार (खेती) किसानों को अच्छी मालूम होती है, फिर वह सूख जाती है सो उसको तू ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा-चूरा हो जाती है। और आख़िरत (की कैफ़ियत यह है कि उस) में सख़्त अ़ज़ाब है, और ख़ुदा की तरफ़ से मग़फ़िरत और रज़ामन्दी है, और दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ धोखे का सामान है। (20) तुम अपने परवर्दिगार की मग़फ़िरत की तरफ़ दौड़ो और (इससे बढ़कर) ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी लम्बाई-चौड़ाई आसमान और ज़मीन की वुसअ़त के बराबर है। वह उन लोगों के वास्ते तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह अपना फ़ज़्ल जिसको चाहें इनायत करें, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (21)

Mahtab E Ashraf

दुनिया की यह ज़िन्दगी

दुनिया की तहक़ीर व तौहीन (बेहैसियती और ज़िल्लत) बयान हो रही है कि दुनिया वालों को खेल-तमाशे, बनने-संवरने, फ़ख़्र व घमंड और औलाद व माल की अधिकता की ख़्वाहिश के सिवाय और है ही क्या? जैसे एक और आयत में है:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ........ الخ.

यानी लोगों के लिये उनकी ख़्वाहिश की चीज़ों को सजा-संवार दिया गया है, जैसे औरतें बच्चे वग़ैरह....। फिर दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल बयान हो रही है कि इसकी ताज़गी फ़ानी है और यहाँ की नेमतें एक दिन ख़त्म होने वाली हैं। "ग़ैस" कहते हैं उस बारिश को जो लोगों की नाउम्मीदी के बाद बरसे। जैसे एक जगह फ़रमान है:

وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ م بَعْدِ مَاقَنَطُوْا.

ख़ुदा वह है जो लोगों की नाउम्मीदी के बाद बारिश बरसाता है।

पस जिस तरह बारिश की वजह से ज़मीन से खेतियाँ पैदा होती हैं और वो लहलहाती हुई किसान की आँखों को भली मालूम होती हैं, इसी तरह दुनिया वाले दुनियावी असबाब पर फूलते हैं, लेकिन नतीजा यह होता है कि वही हरी-भरी खेती ख़ुश्क होकर पीली पड़ जाती है। फिर आख़िर सूखकर रेज़ा-रेज़ा (चूरा-चूरा) हो जाती है। ठीक इसी तरह दुनिया की तरोताज़गी और यहाँ की तरक़्क़ी भी ख़ाक में मिल जाने वाली है। दुनिया की भी यही सूरतें होती हैं कि एक वक़्त जवान है, फिर अधेड़ है, फिर बुढ़ापा है। ठीक इसी तरह ख़ुद इनसान की हालत है, उसके बचपन, जवानी अधेड़ उम्र और बुढ़ापे को देख लीजिये फिर उसकी मौत और फ़ना को सामने देखिये। कहाँ जवानी के वक़्त का जोश व उमंग, ज़ोर व ताक़त और कस-बल, और कहाँ बुढ़ापे की कमज़ोरी, झुर्रियाँ पड़ा हुआ जिस्म, झुकी हुई कमर और कमज़ोर हड्डियाँ। जैसे एक जगह अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ م بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ م بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً يَخْلُقُ مَايَشَآءُ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ.

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया, फिर उस कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत दी, फिर उस क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा कर दिया, वह जो चाहे पैदा करता है, और जो वह अ़लीम और क़दीर है।

इस मिसाल से दुनिया का फ़ना होना और इसका ज़वाल ज़ाहिर करके फिर आख़िरत के दोनों मन्ज़र दिखाकर एक से डराता है और दूसरे की रग़बत (शौक़) दिलाता है। पस फ़रमाता है कि बहुत जल्द आने वाली क़ियामत अपने साथ अ़ज़ाब और सज़ाओं को लायेगी, और मग़फ़िरत व रज़ा-ए-इलाही को लायेगी। पस तुम वह काम करो कि नाराज़गी से बच जाओ और रज़ा हासिल कर लो। सज़ाओं से बच जाओ और बख़्शिश के हक़दार बन जाओ। दुनिया सिर्फ़ धोखे की जगह है, इसकी तरफ़ झुकने वाले पर आख़िर यह वक़्त आ जाता है कि यह इसके सिवाय किसी और चीज़ का ख़्याल ही नहीं करता, इसी की धुन में रात-दिन मशग़ूल रहता है, बल्कि इस कमी वाली और ज़वाल वाली कमीनी दुनिया को आख़िरत पर तरजीह

देने लगता है। होते-होते यहाँ तक नौबत पहुँच जाती है कि बहुत सी बार आख़िरत का मुन्किर हो जाता है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि एक कोड़े के बराबर जन्नत की जगह सारी दुनिया और इसकी तमाम चीज़ों से बेहतर है। पढ़ो क़ुरआन फ़रमाता है कि दुनिया तो सिर्फ़ धोखे का सामान है। (इब्ने जरीर) आयत की ज़्यादती के बग़ैर यह हदीस सही में भी है। वल्लाहु आलम

Maktab E Ashraf

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि तुम में से हर एक नज़दीक है, इसलिये उसे चाहिये कि भलाईयों की तरफ़ बढ़े और बुराईयों से बचता रहे, ताकि गुनाह और बुराईयाँ माफ़ हो जायें, और सवाब और दर्जे बुलन्द हो जायें। इसी लिये इसके साथ ही फ़रमाया कि दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ और जन्नत की तरफ़, जिसकी वुस्अ़त (फैलाव) आसमानों और ज़मीनों के बराबर है। जैसे एक और आयत में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَسَارِعُوْآ اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ.

अपने रब की मग़फ़िरत और जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसकी कुशादगी (फैलाव) तमाम आसमान और सारी ज़मीनें हैं, जो पारसा लोगों के लिये बनाई गयी है।

यहाँ फ़रमाया कि यह अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने वालों के लिये तैयार की गयी है। ये लोग अल्लाह के इस फ़ज़्ल के लायक़ थे, इसी लिये उस बड़े फ़ज़्ल व करम वाले ने अपनी नवाज़िश के लिये इन्हें चुन लिया और इन पर अपना पूरा एहसान और आला इनाम किया। पहले एक सही हदीस बयान हो चुकी है कि मुहाजिरीन में से जो ग़रीब व तंगदस्त हज़रात थे उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मालदार लोग तो जन्नत के बुलन्द दर्जों को, हमेशा क़ायम रहने वाली नेमतों को पा गये। आपने फ़रमाया यह कैसे? कहा कि नमाज़ रोज़ा तो वे और हम सब करते हैं, लेकिन माल की वजह से वे सदक़ा करते हैं, गुलाम आज़ाद करते हैं, मगर ग़रीब होने की वजह से ये काम हम से नहीं हो सकते। आपने फ़रमाया आओ मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ बताऊँ कि उसके करने से तुम हर शख़्स से आगे बढ़ जाओगे, मगर उनसे नहीं जो तुम्हारी तरह ख़ुद भी उसे करने लगें। देखो तुम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तैंतीस बार सुब्हानल्लाह कहो और इतनी ही बार अल्लाहु अकबर और इसी तरह अल्हम्दु लिल्लाह। कुछ दिनों बाद ये हज़रात फिर हाज़िरे ख़िदमत हुए और कहा या रसूलल्लाह! मालदार भाईयों को भी इस वज़ीफ़े की इत्तिला मिल गयी और उन्होंने भी इसे पढ़ना शुरू कर दिया। आपने फ़रमाया- यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ۙ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ	कोई मुसीबत न दुनिया में आती है और न ख़ास तुम्हारी जानों में मगर वह एक ख़ास किताब (यानी लौहे-महफ़ूज़) में लिखी है, इससे पहले कि हम उन जानों को पैदा करें, यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है। (22) (यह बात इस वास्ते बतला दी है) ताकि जो चीज़ तुमसे जाती रहे तुम उस पर (इतना) ग़म न करो, और ताकि जो चीज़ तुमको अ़ता फ़रमाई है उस पर इतराओ नहीं, और अल्लाह तआ़ला किसी इतराने वाले शैख़ीबाज़ को पसन्द नहीं

مُخْتَالٍ فَخُوْرِ نِ۟ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۖ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ٥	करता। (23) जो ऐसे हैं कि (दुनिया की मुहब्बत की वजह से) ख़ुद भी बुख़्ल "यानी कन्जूसी" करते हैं और दूसरे लोगों को भी बुख़्ल की तालीम करते हैं, और जो शख़्स (हक़ दीन से) मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह तआ़ला बेपरवाह हैं, तारीफ़ के लायक़ हैं। (24)

Maktaba E Ashraf

मुसीबतें और परेशानियाँ

अल्लाह तआ़ला अपनी उस क़ुदरत की ख़बर दे रहा है जो उसने मख़्लूक़ात के पैदा करने से पहले ही अपनी मख़्लूक़ की तक़दीर मुक़र्रर की थी। फ़रमाया कि ज़मीन के जिस हिस्से में कोई आफ़त आये, जिस किसी शख़्स पर कोई मुसीबत आ पड़े उसे यक़ीन रखना चाहिये कि मख़्लूक़ की पैदाईश से पहले ही यह अल्लाह के इल्म में मुक़र्रर था, और इसका होना यक़ीनी था। बाज़ कहते हैं कि जानों की पैदाईश से पहले ही, लेकिन ज़्यादा ठीक बात यह है कि मख़्लूक़ की पैदाईश से पहले ही। इमाम हसन रह. से इस आयत के बारे में सवाल हुआ तो फ़रमाने लगे- सुब्हानल्लाह! हर मुसीबत जो आसमान व ज़मीन में है, वह जानों की पैदाईश से पहले ही रब की किताब में मौजूद है, इसमें क्या शक है? ज़मीन की मुसीबतों से मुराद ख़ुश्क-साली, क़हत (सूखा पड़ना) वग़ैरह है, और जानों की मुसीबत दर्द दुख और बीमारी है। जिस किसी को कोई ख़राश लगती है, या फिसल जाने से भी कोई तकलीफ़ पहुँचती है या किसी सख़्त मेहनत से पसीना आ जाता है, ये सब उसके गुनाह की वजह से है। और अभी तो बहुत से गुनाह हैं जिन्हें वह ग़फ़ूरुर्रहीम ख़ुदा बख़्श देता है। यह आयत बेहतरीन और बहुत आला दलील है क़द्रिया (एक फ़िर्क़ा है) की तरदीद में, जिनका ख़्याल है कि पहले से इल्म कोई चीज़ नहीं। ख़ुदा उन्हें ज़लील करे।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने तक़दीरें मुक़र्रर कीं आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पचास हज़ार बरस पहले। एक और रिवायत में है कि उसका अ़र्श पानी पर था। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फिर फ़रमाता है कि कामों के वजूद में आने से पहले उनका अन्दाज़ा कर लेना, उनके होने का इल्म हासिल कर लेना और उसे लिख देना ख़ुदा पर कुछ मुश्किल नहीं। वही तो उनका पैदा करने वाला है, जिसका इल्म हो चुकी और होने वाली तमाम चीज़ों को शामिल है। फिर इरशाद होता है कि हमने तुम्हें यह ख़बर इसलिये दी है ताकि तुम यक़ीन रखो कि जो तुम्हें पहुँचा वह हरगिज़ किसी सूरत में टलने वाला न था। पस मुसीबत के वक़्त सब्र व शुक्र, जमाव और साबित-क़दमी, दिल की मज़बूती और रूहानी ताक़त तुम में मौजूद रहे। हाय-वाय, बेसब्री और बेहिम्मती तुम से दूर रहे। रोने-पीटना, बेजा फ़रियादें करना तुम पर न छा जाये। तुम चैन व सुकून से रहो कि यह तकलीफ़ तो आने वाली थी ही। इसी तरह अगर माल व दौलत वग़ैरह मिल जाये तो उस वक़्त ग़ुरूर व तकब्बुर न करो, उसे अल्लाह का अ़तीया मानो, तकब्बुर और ग़ुरूर तुम में न आ जाये। ऐसा न हो कि दौलत व माल वग़ैरह के नशे में फूल जाओ और ख़ुदा को भूल जाओ। इसलिये कि उस वक़्त भी हमारी यह तालीम तुम्हारे सामने होगी कि यह मेरे हाथ की कमाई, मेरी होशियारी व अ़क़्ल का नतीजा नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला की देन है। इरशाद होता है कि अपने जी में ख़ुद को बड़ा समझने वाले दूसरों पर फ़ख़्र करने वाले ख़ुदा के दुश्मन हैं।

Maktaba Ashraf

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि रंज व राहत, ख़ुशी व ग़म तो हर शख़्स पर आता है, ख़ुशी को शुक्र में और ग़म को सब्र में गुज़ार दो। फिर इरशाद होता है कि ये लोग ख़ुद भी बख़ील और ख़िलाफ़े शरअ़ काम करने वाले हैं और दूसरों को भी बुरा रास्ता बताते हैं। जो शख़्स अल्लाह के हुक्मों के पालन से हट जाये वह ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ेगा, क्योंकि वह तमाम मख़्लूक़ से बेनियाज़ (बेपरवाह) है और हर तरह तारीफ़ उसी के लायक़ है। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

اِنْ تَكْفُرُوْآ اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ.

यानी अगर तुम और तमाम रू-ए-ज़मीन के इनसान काफ़िर हो जायें तो भी ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, अल्लाह तआ़ला सारी मख़्लूक़ से ग़नी (बेपरवाह) है, और तारीफ़ व सना का हक़दार है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ۝ ٣ ع ١ ١٩

हमने (इसी आख़िरत का सुधार करने के लिए) अपने पैग़म्बरों को खुले-खुले अहकाम देकर भेजा, और हमने उनके साथ किताब को और इन्साफ़ करने (के हुक्म) को नाज़िल फ़रमाया ताकि लोग (अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ में) सही राह पर क़ायम रहें, और हमने लोहे को पैदा किया जिसमें सख़्त हैबत है, और (इसके अ़लावा) लोगों के और भी तरह-तरह के फ़ायदे हैं, और (इसलिए लोहा पैदा किया) ताकि अल्लाह तआ़ला जान ले कि बेदेखे उसकी और उसके रसूलों की (यानी दीने हक़ की) कौन मदद करता है, अल्लाह तआ़ला ताक़तवर और ज़बरदस्त है। (25)

कारामद लोहा

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने अपने पैग़म्बर को मोजिज़े देकर और मज़बूत हुज्जतें (दलीलें) अ़ता फ़रमाकर और फिर पूरे दलाईल देकर दुनिया में मबऊस फ़रमाया (भेजा)। फिर साथ ही किताब भी उन्हें दी जो साफ़ सच्ची है और अ़दल व हक़ दिया, जिससे हर अ़क़्लमन्द इनसान उनकी बातों के क़बूल कर लेने पर फ़ितरी तौर पर मजबूर हो जाता है। हाँ फ़ासिद राय वाले और फिरी हुई अ़क़्ल वाले उससे मेहरूम रह जाते हैं। जैसे एक और जगह हैः

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ.

जो शख़्स अपने रब की तरफ़ की दलील पर हो, और उसको तिलावत करे और साथ ही उसका शाहिद (गवाह) भी हो।

एक और जगह है कि अल्लाह की यह फ़ितरत है, जिस पर मख़्लूक़ को उसने पैदा किया। और फ़रमाता है कि आसमान को उसने बुलन्द किया और तराज़ू रख दी। पस यहाँ इरशाद है, यह इसलिये कि

Maktab E Ashraf

लोग हक़ व अ़दल (सही राह और इन्साफ़) पर क़ायम हो जायें, यानी रसूले पाक की पैरवी करने लगें, और रसूल का हुक्म बजा लायें, रसूल ही की तमाम बातों को हक़ समझें, क्योंकि उसके अ़लावा पूरी तरह हक़ किसी और का कलाम नहीं। जैसे एक जगह फ़रमान हैः

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا.

तेरे रब का कलिमा जो अपनी ख़बरों में सच्चा और अपने अहकाम में अ़दल (इन्साफ़) वाला है, पूरा हो चुका है। यही वजह है कि जब ईमान वाले जन्नतों में पहुँच जायेंगे और ख़ुदा की नेमतों से मालामाल हो जायेंगे तो कहेंगे- ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमें इसकी हिदायत की, अगर उसकी हिदायत न होती तो हम इस राह पर नहीं लग सकते थे। हमारे रब के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे।

फिर फ़रमाता है कि हमने हक़ का इनकार करने वालों का सर कुचलने के लिये लोहा बनाया है। यानी सबसे पहले तो किताब, रसूल और हक़ से हुज्जत क़ायम की, फिर ग़लत दिल वालों की टेढ़ निकालने के लिये लोहे को पैदा किया कि उसके हथियार बनें और ख़ुदा के दोस्त हज़रात ख़ुदा के दुश्मनों के दिल का काँटा निकाल दें। यही नमूना हुज़ूर सल्ल. की ज़िन्दगी में बिल्कुल साफ़ तौर पर नज़र आता है, कि मक्का शरीफ़ में तेरह साल मुश्रिकों को समझाने, तौहीद व सुन्नत की दावत देने, उनके ग़लत अ़क़ीदों की इस्लाह (सुधार और सही) करने में गुज़ारे। ख़ुद अपने ऊपर मुसीबतें झेलीं। लेकिन जब यह हुज्जत ख़त्म हो गयी तो शरीअ़त ने मुसलमानों को हिजरत की इजाज़त दी, फिर हुक्म दिया कि अब उन मुख़ालिफ़ों से जिन्होंने इस्लाम की इशाअ़त (प्रसार) को रोक रखा है, मुसलमानों को तंग कर रखा है, उनकी ज़िन्दगी दूभर कर दी है, उनसे बाक़ायदा जंग करो, उनकी गर्दनें मारो और अल्लाह के पैग़ाम के उन मुख़ालिफ़ों से अल्लाह की ज़मीन को पाक करो। मुस्नद अहमद और अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मैं क़ियामत से पहले तलवार के साथ भेजा गया हूँ यहाँ तक कि एक अल्लाह जिसका कोई शरीक नहीं, की ही इबादत की जाये और मेरा रिज़्क़ मेरे नेज़े के साये के नीचे रखा गया है, और कमीनापन और ज़िल्लत उन लोगों पर है जो मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ करें। और जो किसी क़ौम की मुशाबहत करे (यानी उन जैसा बने) वह उन्हीं में से है। पस लोहे से लड़ाई के हथियार बनते हैं, जैसे तलवार, नेज़े, छुरियाँ, तीर, लोहे के लिबास वग़ैरह और लोगों के लिये इसके अ़लावा भी इसमें बहुत से फ़ायदे हैं, जैसे सिक्के, कुदाल, फावड़े, आरे, खेती के उपकरण बनने के सामान, पकाने के बर्तन, रूई के तोले वग़ैरह वग़ैरह। और भी बहुत सी ऐसी चीज़ें जो इनसानी ज़िन्दगी की ज़रूरियात में से हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के साथ जन्नत से आयीं- नहाई (अहरन, जिस पर रखकर लोहा कूटते हैं), ज़म्बूर (एक उपकरण जिसका मुंह गोल होता है, उससे कीलों को निकाला जाता है) और हथोड़ा। (इब्ने जरीर) फिर फ़रमाया ताकि अल्लाह जान ले कि उन हथियारों के उठाने से अल्लाह व रसूल की मदद करने का नेक इरादा किसका है? ख़ुदा क़ुव्वत और ग़लबे वाला है, और उसके दीन की जो मदद करे वह उसकी मदद करता है। दर असल अपने दीन को वही मज़बूत करता है, उसने जिहाद तो सिर्फ़ अपने बन्दों की आज़माईश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है, वरना

Maktab E Ashraf

ग़लबा व मदद तो उसी की तरफ़ से है।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ○ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ○

और हमने नूह और इब्राहीम (अ़लैहिमस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा, और हमने उनकी औलाद में पैग़म्बरी और किताब जारी रखी, सो उन लोगों में बाज़े तो हिदायत पाने वाले हुए और बहुत-से उनमें नाफ़रमान थे। (26) फिर उनके बाद और रसूलों को (जो कि मुस्तक़िल शरीअ़त रखने वाले न थे) एक के बाद एक भेजते रहे और उनके बाद ईसा इब्ने मरियम (अ़लैहिस्सलाम) को भेजा, और हमने उनको इन्जील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की थी हमने उनके दिलों में शफ़क़त और रहम व तरस पैदा किया। और उन्होंने रहबानियत "यानी दुनिया से बिल्कुल बेताल्लुक़ हो जाने" को ख़ुद ईजाद कर लिया, हमने इसको उन पर वाजिब न किया था, लेकिन उन्होंने हक़ तआ़ला की रज़ा के वास्ते इसको इख़्तियार किया था, सो उन्होंने उस (रहबानियत) की पूरी रियायत न की। सो उनमें से जो लोग ईमान लाए हमने उनको उनका (वायदा किया हुआ) अज्र दिया, और ज़्यादा उनमें नाफ़रमान हैं। (27)

अम्बिया और रसूलों का भेजा जाना

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इस फ़ज़ीलत को देखिये कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के बाद से लेकर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तक जितने पैग़म्बर आये सब आप ही की नस्ल में आये। और फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाद जितने भी नबी और रसूल आये सब के सब आप ही की नस्ल में से हुए। जैसे एक और आयत में है:

وَجَعَلْنَافِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ........ الخ.

और हमने रख दिया उनकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब को।

यहाँ तक कि बनी इस्राईल के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी सुनाई। पस हज़रत नूह और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिमस्सलाम के बाद बराबर रसूलों का सिलसिला रहा हज़रत ईसा तक, जिन्हें इन्जील मिली और जिनके मानने वाली उम्मत रहम-दिल और नर्म मिज़ाज वाक़े हुई (इस तारीफ़ में हर ईसाई दाख़िल नहीं, बल्कि वही हज़रात दाख़िल हैं

जो हज़रत ईसा के सच्चे पैरोकार थे)। अल्लाह के ख़ौफ़ और मख़्लूक़ पर रहमत के अच्छे गुणों के मालिक। फिर ईसाईयों की एक बिद्अ़त (बुरी रस्म) का ज़िक्र है जो उनकी शरीअ़त में तो न थी लेकिन उन्होंने ख़ुद अपनी तरफ़ से उसको ईजाद कर लिया था। इसके बाद के जुमले के दो मतलब बयान किये गये हैं, एक तो यह कि मक़सद उनका नेक था। ख़ुदा की रज़ा पाने के लिये यह तरीक़ा निकाला था। हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत क़तादा रह. वग़ैरह का यही क़ौल है। दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि हमने उन पर इसे वाजिब न किया था, हाँ हमने उन पर सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करना वाजिब किया था।

फिर फ़रमाता है कि ये उसे भी न निभा सके, जैसा चाहिये था उस तरह उस पर भी न जमे। पस दोहरी ख़राबी आयी, एक अपनी तरफ़ से नई बात अल्लाह के दीन में ईजाद करने की, दूसरे उस पर भी क़ायम न रहने की। यानी जिसे वे ख़ुद अल्लाह की निकटता का ज़रिया अपने ज़ेहन से समझ बैठे थे आख़िरकार उस पर भी पूरे न उतरे। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. को पुकारा, आपने लब्बैक कहा, फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया सुनो! बनी इस्राईल के बहत्तर गिरोह हो गये, जिनमें से तीन ने निजात पाई। पहले फ़िर्क़े ने तो बनी इस्राईल की गुमराही देखकर उनकी हिदायत के लिये अपनी जानें हथेलियों पर रखकर उनके बड़ों को तब्लीग़ (अल्लाह के दीन को उनको पहुँचाना) शुरू की, लेकिन आख़िर वे लोग मरने-मारने और लड़ने-झगड़ने पर उतर आये और बादशाह और बड़े लोगों ने जो उस तब्लीग़ से बहुत घबराते थे, उन पर लश्कर के साथ चढ़ाई की और उन्हें क़त्ल भी किया, क़ैद भी किया। उन लोगों ने निजात हासिल कर ली। फिर दूसरी जमाअ़त खड़ी हुई, उनमें मुक़ाबले की ताक़त तो न थी फिर भी अपने दीन की क़ुव्वत से सरकशों और बादशाहों के दरबार में हक़ कहना शुरू किया और ख़ुदा के सच्चे दीन और हज़रत ईसा के असली मस्लक (रास्ते) की तरफ़ उन्हें दावत देने लगे। उन बद-नसीबों ने उन्हें क़त्ल भी कराया, आरों से भी चीरा और आग में भी जलाया, जिसे उस जमाअ़त ने सब्र व शुक्र के साथ बरदाश्त किया और निजात हासिल की। फिर तीसरी जमाअ़त उठी, ये उनसे भी ज़्यादा कमज़ोर थे, इनमें ताक़त न थी कि असल दीन के अहकाम की तब्लीग़ उन ज़ालिमों में करें, इसलिये इन्होंने अपने दीन का तहफ़्फ़ुज़ (सुरक्षा और बचाव) इसी में समझा कि जंगलों में निकल जायें और पहाड़ों पर चढ़ जायें। अल्लाह की इबादत में मशग़ूल हो जायें और दुनिया से किनारा कर लें। इन्हीं का ज़िक्र 'रहबानियत' वाली आयत में है। यही हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है, उसमें तिहत्तर फ़िर्क़ों का बयान है, और उसमें यह भी है कि अज्र उन्हीं को मिलेगा जो मुझ पर ईमान लायें और मेरी तस्दीक़ करें, और उनमें के अक्सर फ़ासिक़ (बदकार व गुनाहगार) हैं, और वे वे हैं जो मुझे झुठलायें और मेरे ख़िलाफ़ करें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल के बादशाहों ने हज़रत ईसा के बाद तौरात व इन्जील में तब्दीलियाँ कर लीं, लेकिन एक जमाअ़त ईमान पर क़ायम रही और असली तौरात व इन्जील उनके हाथ में रही, जिसे वे तिलावत किया करते थे। एक मर्तबा उन लोगों ने जिन्होंने किताबुल्लाह में रद्दोबदल कर लिया था, अपने बादशाहों से उन सच्चे मोमिनों की शिकायत की कि ये लोग किताबुल्लाह कहकर जिस किताब को पढ़ते हैं उसमें तो हमें गालियाँ लिखी हैं। उसमें लिखा हुआ है कि जो कोई ख़ुदा तआ़ला की नाज़िल की हुई किताब के मुताबिक़ हुक्म (फ़ैसला) न करे वह काफ़िर है, और इसी तरह की बहुत सी आयतें हैं। फिर ये लोग हमारे आमाल पर भी उंगली उठाते रहते हैं, लिहाज़ा आप उन्हें दरबार में

बुलवाईये और मजबूर कीजिए कि या तो वे इसी तरह पढ़ें जिस तरह हम पढ़ते हैं, और वैसा ही अक़ीदा और ईमान रखें जैसा हमारा है, वरना बहुत बुरी और इब्रतनाक सज़ा दीजिए। चुनाँचे उन सच्चे मुसलमानों को दरबार में बुलवाया गया और उनसे कहा गया कि या तो हमारी संशोधित किताब पढ़ा करो और तुम्हारे पास जो किताबें हैं उन्हें छोड़ दो, वरना जानों से हाथ धो लो और क़त्ल-स्थल की तरफ़ क़दम बढ़ाओ। इस पर उन पाकबाज़ों की एक जमाअ़त ने तो कहा कि तुम हमको सताओ नहीं, तुम एक ऊँची इमारत बना दो हमें वहाँ पहुँचा दो और डोरी और टोकरी दे दो, हमारा खाना पीना उसमें डाल दिया करो, हम ऊपर से खींच लिया करेंगे, नीचे उतरेंगे ही नहीं और तुम्हारी आबादियों में आयेंगे ही नहीं। एक जमाअ़त ने कहा सुनो! हम यहाँ से हिजरत कर जाते हैं, जंगलों और पहाड़ों में निकल जाते हैं, तुम्हारी बादशाहत की सीमा से बाहर चले जाते हैं। चश्मों, नहरों, नदियों, नालों और तालाबों से जानवरों की तरह मुँह लगाकर पानी पी लिया करेंगे और जो चीज़ मिल जायेगी उस पर गुज़ारा कर लेंगे। उसके बाद अगर तुम हमें अपने मुल्क में देख लो तो बेशक गर्दन उड़ा देना। तीसरी जमाअ़त ने कहा- हमें अपनी आबादी के एक तरफ़ कुछ ज़मीन दे दो और वहाँ एक दीवार एक घेरा खींच दो, वहीं पर हम कुएँ खोद लेंगे और खेती कर लिया करेंगे, तुम लोगों में हरगिज़ न आयेंगे। चूँकि इस अल्लाह वाली जमाअ़त से उन लोगों की क़रीबी रिश्तेदारियाँ थीं, इसलिये ये दरख़्वास्तें मन्ज़ूर कर ली गयीं और ये लोग अपने-अपने ठिकाने पर चले गये। लेकिन उनके साथ कुछ और लोग भी लग गये, जिनमें दर असल इल्म व ईमान न था बस यूँ ही उनके पीछे लगकर साथ हो लिये। उन लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल हुई:

وَرَهْبَانِيَّةَ ن ابْتَدَعُوْهَا...... الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 27 जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)

पस जब अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अनवर सल्ल. को मबऊस फ़रमाया उस वक़्त उनमें बहुत कम लोग रह गये थे। आपके नबी बनकर तशरीफ़ लाने की ख़बर सुनते ही ख़ानक़ाहों वाले अपनी ख़ानक़ाहों से और जंगलों वाले अपने जंगलों से और अलग आबादी में रहने वाले अपनी घेराबन्दियों से निकल खड़े हुए। आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए, आप पर ईमान लाये, आपकी तस्दीक़ की, जिसका ज़िक्र इस आयत में है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا..... الخ.

यानी ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, तुम्हें अल्लाह अपनी रहमत का दोगुना हिस्सा देगा (यानी हज़रत ईसा पर ईमान लाने का और फिर हुज़ूरे पाक सल्ल. पर ईमान लाने का)। और तुम्हें नूर देगा जिसकी रोशनी में तुम चलो फिरो, यानी क़ुरआन व हदीस, ताकि अहले किताब जान लें जो तुम जैसे हैं कि अल्लाह के किसी फ़ज़्ल का इख़्तियार उन्हें नहीं और सारा फ़ज़्ल ख़ुदा के हाथ में है, जिसे चाहे देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (यह इस सूरत की आयत नम्बर 28 है जो अभी आगे आ रही है)।

यह मज़मून ग़रीब है, और इन दोनों बाद की आयतों (यानी आयत नम्बर 28,29) की तफ़सीर इस आयत के बाद ही आ रही है, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

अबू यअ़ला में है कि लोग हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास मदीना में हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. की ख़िलाफ़त के ज़माने में आये, आप उस वक़्त मदीना के अमीर थे। जब यह

Maktab E Ashraf

आये उस वक़्त हज़रत अनस नमाज़ अदा कर रहे थे, और बहुत मुख़्तसर नमाज़ पढ़ रहे थे, जैसे सफ़र की हालत की नमाज़ हो, या क़रीब क़रीब उस जैसी। जब सलाम फेरा तो लोगों ने आप से पूछा कि क्या आपने फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी या नफ़िल? फ़रमाया फ़र्ज़, और यही नमाज़ रसूलुल्लाह सल्ल. की थी। मैंने तो इसमें कोई ग़लती और चूक नहीं की, हाँ अगर कुछ भूल गया हूँ तो उसके बारे में नहीं कह सकता। हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि अपनी जान पर सख़्ती न करो, वरना तुम पर सख़्ती की जायेगी। एक क़ौम ने अपनी जानों पर सख़्ती की और उन पर भी सख़्ती की गयी। पस उनकी बाक़ी बची ख़ानक़ाहों में और ऐसे ही घरों में अब भी देख लो, यह थी वह दुनिया से किनारा करने की सख़्ती जो ख़ुदा ने उन पर वाजिब नहीं की थी।

दूसरे दिन हम लोगों ने कहा आईये सवारियों पर चलें, देखें और सबक़ व नसीहत हासिल करें। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया बहुत अच्छा! सब सवार होकर चले और कई एक बस्तियाँ देखीं जो बिल्कुल उजड़ गयी थीं और मकानात औंधे पढ़े हुए थे। हमने कहा इन शहरों से आप वाक़िफ़ हैं? फ़रमाया ख़ूब अच्छी तरह, बल्कि इनके रहने वालों से भी। उन्हें नाफ़रमानी व तकब्बुर और हसद (एक दूसरे से जलने) ने हलाक किया। हसद नेकियों के नूर को बुझा देता है और नाफ़रमानी व घमंड उसको सच्चा करता या झुठलाता है। आँख का भी ज़िना है, हाथ और क़दम ज़बान का भी ज़िना है, और शर्मगाह उसकी तस्दीक़ (सच्चा) करती या झुठलाती है।

मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर नबी के लिये रहबानियत (दुनिया से किनारा करना और उसको छोड़ना) थी और मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करना है। एक शख़्स हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. के पास आया, कहा कि मुझे कुछ वसीयत कीजिए। आपने फ़रमाया तुम ने मुझसे वह सवाल किया जो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से किया था। मैं तुझे वसीयत करता हूँ अल्लाह से डरते रहने की, यही तमाम नेकियों की जड़ है और तू जिहाद को ज़रूरी समझ, यही इस्लाम की रहबानियत है, और अल्लाह के ज़िक्र और क़ुरआन की तिलावत पर हमेशगी कर, यही तेरी राहत व रूह है आसमानों में और यही याद है ज़मीन में। यह रिवायत मुस्नद अहमद में है। वल्लाहु आलम।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ
وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ
لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۲۸﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ
اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ
فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾ ع ٤ ٢٠

ऐ (ईसा अ़लैहिस्सलाम पर) ईमान रखने वालो! तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तआ़ला तुमको अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से देगा, और तुम को ऐसा नूर इनायत करेगा कि तुम उसको लिए हुए चलते-फिरते होगे और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (28) (और ये दौलतें तुमको इसलिये देगा) ताकि अहले किताब को यह बात मालूम हो जाये कि उन लोगों को अल्लाह के फ़ज़्ल के किसी हिस्से पर (भी) इख़्तियार नहीं, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे दे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

Maktab e Ashraf

तक़वा और अल्लाह का नूर

इससे पहले बयान हो चुका है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिन मोमिनों का यहाँ ज़िक्र है इससे मुराद अहले किताब मोमिन हैं, और उन्हें दोहरा अज्र मिलेगा, जैसे कि सूरः क़सस की आयत में है। और जैसे कि एक हदीस में आया है कि तीन शख़्सों को अल्लाह तआ़ला दोहरा अज्र देगा, एक वह अहले किताब (यानी यहूदी व ईसाई) जो अपने नबी पर ईमान लाया फिर मुझ पर भी ईमान लाया, उसे दोहरा अज्र है। और वह गुलाम जो अपने आक़ा की ताबेदारी (ख़िदमत) करे और ख़ुदा का हक़ भी अदा करे, उसे भी दो-दो अज्र हैं, और वह जो अपनी बाँदी को अदब सिखाये और बहुत अच्छा अदब सिखाये, जैसे शरई अदब फिर उसे आज़ाद कर दे और निकाह कर दे, वह भी दोहरे अज्र का मुस्तहिक़ है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि जब अहले किताब इस दोहरे अज्र पर फ़ख़्र करने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत इस उम्मत के हक़ में नाज़िल फ़रमाई। पस इन्हें दोहरे अज्र के बाद हिदायत का नूर देने का भी वायदा किया और मग़फ़िरत का भी। पस नूर और मग़फ़िरत इन्हें ज़्यादा मिली। (इब्ने जरीर) इसी मज़मून को इस आयत में बयान किया गया है:

يَـٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا........ الخ.

यानी ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहे तो वह तुम्हारे लिये फ़ुरक़ान (यानी हक़ व बातिल की तमीज़) इनायत करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराईयाँ दूर करेगा, और तुम्हें माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यहूदियों के एक बड़े आ़लिम से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हें एक नेकी पर ज़्यादा से ज़्यादा किस क़द्र फ़ज़ीलत मिलती है? उसने कहा साढ़े तीन सौ तक। आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया और फ़रमाया- हमें तुमसे दोहरा मिला है। हज़रत सईद रज़ि. ने इसे बयान फ़रमाकर यही आयत पढ़ी और फ़रमाया- इसी तरह जुमे का दोहरा अज्र है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि तुम्हारी और यहूदियों व ईसाईयों की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिसने चन्द मज़दूर किसी काम पर लगाने चाहे और ऐलान किया कि कोई है जो मुझसे एक क़ीरात (सोने की एक ख़ास मात्रा, दिरहम के बारहवें हिस्से के बराबर वज़न) लेकर और सुबह की नमाज़ से लेकर आधे दिन तक काम करे? पस यहूदी तैयार हो गये। उसने फिर कहा ज़ोहर से अ़सर तक अब जो काम करे उसे मैं एक क़ीरात दूँगा, इस पर ईसाई तैयार हुए, काम किया और उजरत (मज़दूरी) ली। उसने फिर कहा अब अ़सर से मग़रिब तक जो काम करे मैं उसे दो क़ीरात दूँगा, पस वह तुम मुसलमान हो। इस पर यहूदी व ईसाई बहुत बिगड़े और कहने लगे काम हमने ज़्यादा किया और दाम इन्हें ज़्यादा मिले, हमें कम दिया गया। तो उन्हें जवाब मिला कि मैंने तुम्हारा कोई हक़ तो नहीं मारा? उन्होंने कहा नहीं, ऐसा तो नहीं हुआ। जवाब मिला फिर यह मेरा फ़ज़्ल है जिसे चाहूँ दूँ।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि मुसलमानों, यहूदियों और ईसाईयों की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसने चन्द लोगों को काम पर लगाया, उजरत (मज़दूरी) तय कर ली और कहा दिन भर काम करो, वे काम पर लग गये, लेकिन आधा दिन काम करके कह दिया कि अब हमें ज़रूरत नहीं जो हमने किया हम उसकी उजरत भी नहीं चाहते और अब हम काम भी नहीं करेंगे। उसने उन्हें समझाया कि ऐसा न करो

Maktaba E Ashraf

काम पूरा करो और मज़दूरी ले जाओ, लेकिन उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया और काम अधूरा छोड़कर उजरत लिये बग़ैर चलते बने। उसने और मज़दूर लगाये और कहा कि बाक़ी काम शाम तक तुम पूरा कर दो और पूरे दिन की मज़दूरी मैं तुम्हें दूँगा। ये काम पर लगे लेकिन अ़सर के वक़्त ये भी काम से हट गये और कह दिया कि अब हम से नहीं हो सकता, हमें आपकी उजरत नहीं चाहिये। उसने उन्हें भी समझाया कि देखो अब दिन ही कितना बाक़ी रह गया है, तुम काम पूरा करो और उजरत ले जाओ। लेकिन ये न माने और चले गये। उसने फिर और मज़दूरों को बुलाया और कहा लो तुम मग़रिब तक काम करो और दिन भर की मज़दूरी ले जाओ। चुनाँचे उन्होंने मग़रिब तक काम किया और उन दोनों जमाअ़तों की उजरत (मज़दूरी) भी यही ले गये। पस यह है उनकी मिसाल और इस नूर की मिसाल जिसे उन्होंने क़बूल किया।

फिर फ़रमाता है- यह इसलिये ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें कि ख़ुदा जिसे दे ये उसके लौटाने की और जिसे न दे उसे देने की कुछ भी क़ुदरत नहीं रखते। और इस बात को भी वे जान लें कि फ़ज़्ल व करम का मालिक सिर्फ़ वही परवर्दिगार है, उसके फ़ज़्ल का कोई अन्दाज़ा और हिसाब नहीं लगा सकता।

अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उसके फ़ज़्ल व तौफ़ीक़ से तफ़सीर इब्ने कसीर के सत्ताईसवें पारे और साथ ही सूरः हदीद की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर अट्ठाईस

सूरः मुजादला

सूरः मुजादला मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ○	बेशक अल्लाह तआ़ला ने उस औरत की बात सुन ली जो आप से अपने शौहर के मामले में झगड़ती थी, और (अपने रंज व ग़म की) अल्लाह तआ़ला से शिकायत करती थी, और अल्लाह तआ़ला तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था, (और) अल्लाह (तो) सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (1)

एक घरेलू झगड़ा

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात तारीफ़ व सना के लायक़ है जिसने तमाम आवाज़ों को घेर रखा है। यह शिकायत करने वाली बीबी साहिबा हुज़ूरे पाक सल्ल. से इस तरह चुपके-चुपके बातें कर रही थीं कि बावजूद उसी घर में होने के मैं बिल्कुल न समझ सकी कि वह क्या कह रही हैं? अल्लाह तआ़ला ने इस पोशीदा आवाज़ को भी सुन लिया और यह आयत उतरी। (बुख़ारी व मुस्नद वग़ैरह) एक और रिवायत में आपका यह फ़रमान इस तरह मन्क़ूल है कि बरकत वाला है वह ख़ुदा जो हर ऊँची नीची आवाज़ को सुनता है, यह शिकायत करने वाली बीबी साहिबा हज़रत ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जब हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुयीं तो इस तरह चुपके-चुपके बातें कर रही थीं कि कोई लफ़्ज़ तो कान तक पहुँच जाता था वरना अक्सर बातें बावजूद उसी घर में मौजूद होने के मेरे कानों तक नहीं पहुँची थीं। अपने मियाँ की शिकायत करते हुए फ़रमाया- या रसूलल्लाह! मेरी जवानी तो उनके साथ कटी, बच्चे उनसे हुए, अब जबकि मैं बुढ़िया हो गयी तो मेरे शौहर ने मुझसे ज़िहार कर लिया।

नोटः "ज़िहार" फ़ुक़हा (मसाईल बयान करने वाले उलेमा) की एक इस्तिलाह है जिसका मतलब है कि शौहर अपनी बीवी को किसी ऐसी औ़रत के बदनी अंग के साथ तश्बीह दे जो शौहर के लिये हराम थी। जैसे वह कह दे कि तू मुझ पर ऐसे ही हराम है जैसे मेरी माँ की पुश्त हराम है। इस तरह के

Maktab E Ashraf

अलफ़ाज़ कहने से एक अस्थायी जुदाई मियाँ-बीवी के बीच हो जाती है। तफ़सील मसाईल की किताबों में देखी जा सकती है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने अपने इस दुखड़े का रोना रोती हूँ। अभी यह बीबी साहिबा घर से बाहर नहीं निकली थीं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम यह आयत लेकर उतरे। उनके शौहर का नाम हज़रत औस बिन सामित था। (इब्ने अबी हातिम) उन्हें कुछ दिमाग़ी परेशानी की शिकायत थी, जब उसका ज़ोर होता तो उस हालत में अपनी बीबी साहिबा से ज़िहार कर लेते थे, जब अच्छे हो जाते तो ऐसे हो जाते जैसे कोई झगड़ा ही न हुआ हो। यह बीबी साहिबा हुज़ूर सल्ल. से फ़तवा पूछने और ख़ुदा के सामने अपनी इल्तिजा बयान करने को आयीं, जिस पर यह आयत उतरी।

हज़रत अबू यज़ीद रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में कुछ लोगों के साथ जा रहे थे कि एक औ़रत ने आवाज़ दी। आप फ़ौरन ठहर गये और उनके पास जाकर तवज्जोह और अदब से सर झुकाये उनकी बातें सुनने लगे। जब वह अपनी फ़रमाईश की तामील करा चुकीं और ख़ुद लौट गयीं तब अमीरुल-मोमिनीन भी वापस आये। एक शख़्स ने कहा- अमीरुल-मोमिनीन! एक बुढ़िया के कहने से आप रुक गये और इतने आदमियों को आपकी वजह से अब तक रुकना पड़ा? आपने फ़रमाया- अफ़सोस जानते भी हो यह कौन थीं? उसने कहा नहीं! फ़रमाया यह वह औ़रत हैं जिनकी शिकायत अल्लाह तआ़ला ने सातवें आसमान पर सुनी, यह हज़रत ख़ौला बिन्ते सालबा हैं। अगर यह आज बातें करते-करते रात कर देतीं तो भी मैं उनकी बातें सुनता, हाँ नमाज़ के वक़्त नमाज़ अदा कर लेता और फिर उनकी ख़िदमत के लिये हाज़िर हो जाता। (इब्ने अबी हातिम) इसकी सनद मुन्क़ता है और दूसरी सनद से भी मरवी है। एक रिवायत में है कि यह ख़ौला बिन्ते सामित थीं और इनकी वालिदा का नाम मुआ़ज़ा था, जिनके बारे में यह आयतः

وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ......... الخ.

(यानी सूरः नूर की आयत 33) नाज़िल हुई थी। लेकिन दुरुस्त यह है कि हज़रत ख़ौला औस बिन सामित की बीवी थीं। अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो।

الَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ

तुममें जो लोग अपनी बीवियों से 'ज़िहार' करते हैं (जैसे यूँ कह देते हैं कि तू मुझ पर मेरी माँ की तरह है) वे उनकी माएँ नहीं हैं, उनकी माएँ तो बस वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है, और वे लोग बेशक एक नामाक़ूल और (चूँकि) झूठ बात कहते हैं (इसलिए गुनाह ज़रूर होगा) और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाले, बख़्श देने वाले हैं। (2) और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं, फिर अपनी कही हुई बात की तलाफ़ी करना चाहते हैं तो उनके ज़िम्मे एक ग़ुलाम या बाँदी का आज़ाद

Maktab E Ashraf

اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

करना है, इससे पहले कि दोनों (मियाँ-बीवी) आपस में मिलें, इससे तुमको नसीहत की जाती है, और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (3) फिर जिसको (गुलाम-बाँदी) मयस्सर न हो तो उसके ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े हैं, इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें। फिर जिससे यह भी न हो सकें तो उसके ज़िम्मे साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह हुक्म इसलिए (बयान किया गया) है कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल.) पर ईमान ले आओ, और ये अल्लाह की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, और काफ़िरों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (4)

ज़िहार और उसके अहकाम

हज़रत ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि ख़ुदा की क़सम मेरे और मेरे शौहर औस बिन सामित के बारे में इस सूरः मुजादला की शुरू की (चार) आयतें उतरी हैं। मैं उनके घर में थी, यह बूढ़े और बड़ी उम्र के थे और कुछ अख़्लाक़ के भी अच्छे न थे। एक दिन बातों में मैंने उनकी किसी बात के ख़िलाफ़ किया और उन्हें जवाब दिया, जिस पर वह बड़े नाराज़ हुए और ग़ुस्से में फ़रमाने लगे तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह है। फिर घर से चले गये और बाहर मज्लिस में कुछ देर बैठे रहे, फिर वापस आये और मुझसे ख़ास बातचीत (यानी हमबिस्तरी) करनी चाही। मैंने कहा उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में ख़ुवैला की जान है, तुम्हारे इस कहने के बाद अब यह बात नामुम्किन है। यहाँ तक कि ख़ुदा और उसके रसूल का फ़ैसला हमारे बारे में न हो। लेकिन वह न माने और ज़बरदस्ती करने लगे, मगर चूँकि कमज़ोर और ज़ईफ़ थे, मैं उन पर ग़ालिब आ गयी और वह अपने मक़सद में कामयाब न हो सके। मैं अपनी पड़ोसन के यहाँ गयी और उससे कपड़ा माँगा और ओढ़कर रसूलुल्लाह सल्ल. के पास पहुँची। इस वाक़िए को भी बयान किया और भी अपनी मुसीबतें और तकलीफ़ें बयान करनी शुरू कर दीं। आप यही फ़रमाते जाते थे ख़ुवैला! अपने शौहर के बारे में अल्लाह से डरो, वह बूढ़े हैं। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि हुज़ूर सल्ल. पर वही की कैफ़ियत तारी हुई। जब वही उतर चुकी तो आपने फ़रमाया ऐ ख़ुवैला! तेरे और तेरे शौहर के बारे में क़ुरआने करीम की आयतें नाज़िल हुई हैं। फिर आपने इस सूरत की शुरू की चार आयतें पढ़कर सुनायीं और फ़रमाया जाओ अपने मियाँ से कहो कि एक गुलाम आज़ाद कर दें। मैंने कहा हुज़ूर! उनके पास गुलाम कहाँ? वह तो बहुत ग़रीब शख़्स हैं। आपने फ़रमाया अच्छा तो दो महीने के लगातार रोज़े रखें। मैंने कहा हुज़ूर! वह तो बड़ी उम्र के बूढ़े नातवाँ कमज़ोर हैं, दो माह के रोज़ों की भी ताक़त नहीं। आपने फ़रमाया फिर साठ मिस्कीनों को एक वसक़ (तक़रीबन चार मन पुख़्ता) खजूरें दे दें। मैंने कहा हुज़ूर! उस मिस्कीन के पास यह भी नहीं। आपने फ़रमाया अच्छा आधा कर दो और अपने शौहर के साथ जो

Maktab E Ashraf

तुम्हारे चचा के लड़के भी हैं मुहब्बत, प्यार, ख़ैरख़्वाही और फ़रमाँबरदारी से गुज़ारा करो।

(मुस्नद अहमद व अबू दाऊद)

इनका नाम बाज़ रिवायतों में ख़ुवैला के बजाय ख़ौला भी आया है और बिन्ते सालबा के बदले बिन्ते मालिक बिन सालबा भी आया है। इन अक़्वाल में ऐसा कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जो एक दूसरे के ख़िलाफ़ हो वल्लाहु आलम।

इस सूरत की इन शुरू की आयतों का सही शाने नुज़ूल यही है। हज़रत सलमा बिन सख़र रज़ि. का वाक़िआ जो अब आ रहा है वह इसके नुज़ूल (उतरने) का सबब नहीं हुआ, हाँ अलबत्ता ज़िहार का जो हुक्म इन आयतों में था वही उन्हें भी दिया गया। यानी ग़ुलाम का आज़ाद करना, या रोज़े रखना, या खाना देना। हज़रत सलमा बिन सख़र अन्सारी का वाक़िआ ख़ुद उनकी ज़बानी यह है कि मुझे हमबिस्तरी की ताक़त औरों से बहुत ज़्यादा थी, रमज़ान में इस ख़ौफ़ से कि कहीं ऐसा न हो दिन में रोज़े के वक़्त मैं बच न सकूँ मैंने रमज़ान भर के लिये अपनी बीवी से ज़िहार कर लिया। एक रात जबकि वह मेरी ख़िदमत में मसरूफ़ थीं, बदन के किसी हिस्से पर से कपड़ा हट गया, फिर ताब कहाँ थी? उससे बातचीत (सोहबत) कर बैठा। सुबह अपनी क़ौम के पास आकर मैंने कहा रात ऐसा वाक़िआ हो गया है, तुम मुझे लेकर रसूलुल्लाह सल्ल. के पास चलो और आप से पूछो कि इस गुनाह का बदला क्या है? सबने इनकार किया और कहा कि हम तो तेरे साथ नहीं जायेंगे, ऐसा न हो कि क़ुरआने करीम में इसके बारे में कोई आयत उतरे या हुज़ूर कोई ऐसी बात फ़रमा दें कि हमेशा के लिये हम पर आ़र (शर्म और ताना) बाक़ी रह जाये। तू जाने तेरा काम। तूने ऐसा क्यों किया? हम तेरे साथी नहीं। मैंने कहा अच्छा फिर मैं अकेला जाता हूँ। चुनाँचे मैं गया और हुज़ूर सल्ल. से तमाम वाक़िआ बयान किया। आपने फ़रमाया तुमने ऐसा किया? मैंने कहा जी हाँ हुज़ूर मुझसे ऐसा हो गया। आपने फिर फ़रमाया तुमने ऐसा किया? मैंने फिर यही अ़र्ज़ किया- हाँ हुज़ूर मुझसे यह ख़ता हो गयी। आपने तीसरी दफ़ा भी यही फ़रमाया तो मैंने फिर इक़रार किया और कहा कि हुज़ूर मैं मौजूद हूँ जो सज़ा मेरे लिये तजवीज़ की जाये मैं उसे सब्र से बरदाश्त करूँगा। आप हुक्म दीजिए। आपने फ़रमाया जाओ एक ग़ुलाम आज़ाद करो, मैंने अपनी गर्दन पर हाथ रखकर कहा हुज़ूर! मैं तो सिर्फ़ इसका मालिक हूँ। ख़ुदा की क़सम ग़ुलाम आज़ाद करने की ताक़त नहीं। आपने फ़रमाया फिर दो महीने के लगातार रोज़े रखो, मैंने कहा या रसूलल्लाह! रोज़ों ही की वजह से तो यह हुआ। आपने फ़रमाया- फिर जाओ सदक़ा करो। मैंने कहा उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है मेरे पास कुछ नहीं है, बल्कि आज की रात सब घर वालों ने फ़ाक़ा किया है। फ़रमाया अच्छा बनू ज़ुरैक़ के क़बीले के सदक़े वाले के पास जाओ और उससे कहो कि वह सदक़े का माल तुम्हें दे दे, तुम उसमें से एक वसक़ खजूर तो साठ मिस्कीनों को दे दो और बाक़ी तुम आप अपने और अपने बाल बच्चों के काम में लाओ। मैं ख़ुश-ख़ुश वापस लौटा, अपनी क़ौम के पास आया और उनसे कहा तुम्हारे पास तो मैंने तंगी और बुराई पाई और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास मैंने कुशादगी (आसानी) और बरकत पाई। हुज़ूर का हुक्म है कि अपने सदक़े तुम मुझे दे दो। चुनाँचे उन्होंने मुझे दे दिये। (मुस्नद अहमद, अबू दाऊद वग़ैरह)

बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि यह वाक़िआ हज़रत औस बिन सामित और उनकी बीवी साहिबा हज़रत ख़ुवैला बिन्ते सालबा के वाक़िए के बाद का है। चुनाँचे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का इरशाद है कि ज़िहार का वाक़िआ हज़रत औस बिन सामित का है जो हज़रत उबादा बिन सामित के भाई थे, उनकी बीवी का नाम ख़ौला बिन्ते सालबा बिन मालिक था। इस वाक़िए से हज़रत ख़ौला को अन्देशा था कि शायद

तलाक़ हो गयी, उन्होंने ख़ास कर हुज़ूर से कहा कि मेरे मियाँ ने मुझसे ज़िहार कर लिया है और अगर हम अलग हो गये तो दोनों बरबाद हो जायेंगे। मैं अब इस लायक़ भी नहीं रही कि मुझसे औलाद हो, हमारे इस ताल्लुक़ को भी ज़माना गुज़र चुका और भी इसी तरह की बातें कहती जाती थीं और रोती जाती थीं। अब तक ज़िहार का कोई हुक्म इस्लाम में न था और इस पर ये शुरू की चार आयतें उतरीं। हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत औस को बुलवाया और पूछा कि क्या तुम गुलाम आज़ाद कर सकते हो? उन्होंने क़सम खाकर इनकार किया। हुज़ूरे पाक ने उनके लिये रक़म जमा की, उन्होंने उससे गुलाम ख़रीद कर आज़ाद किया और अपनी बीवी से रुजू किया। (इब्ने जरीर)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के अ़लावा और बहुत से सहाबा रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन का यही बयान है कि ये आयतें उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई हैं। वल्लाहु आलम।

लफ़्ज़ ज़िहार "ज़हर" (जिसके मायने पुश्त के हैं) से निकला है चूँकि जाहिलीयत के ज़माने के लोग अपनी बीवी से ज़िहार करते वक़्त यूँ कहते थेः

اَنْتِ عَلَيَّ كَظَهْرِ اُمِّيْ.

"अन्ति अ़लय्-य क-ज़हरि उम्मी" यानी तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ। शरीअ़त में हुक्म यह है कि इस तरह चाहे किसी भी बदनी अंग का नाम ले, ज़िहार हो जायेगा। ज़िहार जाहिलीयत के ज़माने में तलाक़ समझा जाता था, अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत के लिये इसमें कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया और इसे तलाक़ शुमार नहीं किया, जैसा कि जाहिलीयत का दस्तूर था। पहले बुज़ुर्गों में से अक्सर हज़रात ने यही फ़रमाया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. जाहिलीयत के इस दस्तूर का ज़िक्र करके फ़रमाते हैं कि इस्लाम में जब हज़रत ख़ुवैला वाला वाक़िआ़ पेश आया और दोनों मियाँ-बीवी नादिम (शर्मिन्दा) हुए तो हज़रत औस ने अपनी बीवी को हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में भेजा, यह जब आयीं तो देखा कि आप कंघी कर रहे हैं। आपने वाक़िआ़ सुनकर फ़रमाया- हमारे पास इसका कोई हुक्म नहीं। इतने में ये आयतें उतरीं और आपने हज़रत ख़ुवैला रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इसकी ख़ुशख़बरी दी और आयतें पढ़कर सुनायीं। जब गुलाम को आज़ाद करने का ज़िक्र आया तो उज़्र किया कि हमारे पास गुलाम नहीं, फिर रोज़ों का ज़िक्र सुनकर कहा कि अगर हर रोज़ तीन मर्तबा पानी न पियें तो अपने बुढ़ापे की वजह से मर जायें। जब खाना खिलाने का ज़िक्र सुना तो कहा चन्द लुक़्मों पर तो सारा दिन गुज़रता है औरों को देना तो कहाँ मुम्किन है। चुनाँचे हुज़ूरे पाक ने आधा वसक़ तीस साअ़ मंगवा कर उन्हें दिये और फ़रमाया इसे सदक़ा करो और अपनी बीवी से रुजू कर लो। (इब्ने जरीर) इसकी सनद क़वी और पुख़्ता है, लेकिन अदायेगी का ज़िक्र ग़रीब होने से ख़ाली नहीं।

हज़रत अबुल-आ़लिया से भी इसी तरह मरवी है। फ़रमाते हैं कि ख़ौला बिन्ते दुलैज एक अन्सारी की बीवी थीं जो कम-निगाह वाले, ग़रीब और मिज़ाज के तेज़ थे। किसी दिन किसी बात पर मियाँ-बीवी में झगड़ा हुआ तो जाहिलीयत की रस्म के मुताबिक़ ज़िहार कर लिया जो उनकी तलाक़ थी। यह बीबी हुज़ूर के पास पहुँचीं, उस वक़्त आप हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में थे और उम्मुल-मोमिनीन आपका सर धो रही थीं। जाकर सारा वाक़िआ़ बयान किया, आपने फ़रमाया अब क्या हो सकता है? मेरे इल्म में तो तू उस पर हराम हो गयी। यह सुनकर कहने लगीं ख़ुदाया- मेरी अ़र्ज़ तुझसे है। अब हज़रत आ़यशा आपका सर मुबारक का एक तरफ़ का हिस्सा धोकर घूमकर दूसरी जानिब आयीं और उधर का हिस्सा धोने लगीं तो हज़रत ख़ौला भी घूमकर उसी तरफ़ आ बैठीं और अपना वाक़िआ़ दोहराया। आपने फिर यही जवाब दिया।

हज़रत उम्मुल-मोमिनीन ने देखा कि आपके चेहरे का रंग बदल गया है, तो उनसे कहा कि दूर हटकर बैठो। यह दूर खिसक गयीं। उधर वही नाज़िल होनी शुरू हुई। जब उतर चुकी तो आपने फ़रमाया- वह औरत कहाँ है? हज़रत उम्मुल-मोमिनीन ने उन्हें आवाज़ देकर बुलाया। आपने फ़रमाया जाओ अपने शौहर को ले आओ। यह दौड़ती हुई गयीं और अपने शौहर को बुला लायीं तो वाक़ई वह ऐसे ही थे जैसे इन्होंने कहा था। आपने "अस्तअ़ीज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल् अ़लीमि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर इस सूरत की ये आयतें (1-4) सुनायीं और फ़रमाया- क्या तुम गुलाम आज़ाद कर सकते हो? उन्होंने कहा नहीं। फिर आपने मालूम फ़रमाया कि अच्छा दो महीने के लगातार रोज़े रख सकते हो? उन्होंने क़सम खाकर कहा कि अगर दो तीन दफ़ा दिन में न खाऊँ तो बीनाई (आँखों की रोशनी) बिल्कुल जाती रहती है। फ़रमाया क्या साठ मिस्कीनों को खाना दे सकते हो? उन्होंने कहा नहीं, लेकिन अगर आप मेरी इमदाद फ़रमायें तो और बात है। पस हुज़ूर सल्ल. ने उनकी मदद की और फ़रमाया- साठ मिस्कीनों को खिला दो और जाहिलीयत की इस तलाक़ की रस्म को हटाकर अल्लाह तआ़ला ने इसे ज़िहार मुक़र्रर फ़रमाया। (इब्ने अबी हातिम व इब्ने जरीर)

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि "ईला" और "ज़िहार" जाहिलीयत के ज़माने की तलाक़ें थीं, अल्लाह तआ़ला ने ईला में तो चार महीने की मुद्दत मुक़र्रर फ़रमाई और ज़िहार में कफ़्फ़ारा मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रत इमाम मालिक रह. ने लफ़्ज़ "मिनकुम" (तुम में से) से इस्तिदलाल किया है कि चूँकि यहाँ ख़िताब मोमिनों से है इसलिये इस हुक्म में काफ़िर दाख़िल नहीं। जमहूर का मज़हब इसके ख़िलाफ़ है, वे इसका जवाब यह देते हैं कि यह ग़लबे के एतिबार से कह दिया गया है इसलिये बतौर क़ैद के इसके विपरीत मायनों को मुराद नहीं ले सकते। लफ़्ज़ "मिन निसाइहिम" (तुम्हारी औरतों में से) से जमहूर ने इस्तिदलाल किया है कि बाँदी से ज़िहार नहीं, न वह इस ख़िताब में दाख़िल है।

फिर फ़रमाता है कि इस कहने से कि "तू मुझ पर मेरी माँ की तरह है" या "मेरे लिये तू मेरी माँ के जैसी है" या "मेरी माँ की पीठ की तरह है" या और ऐसे ही अलफ़ाज़ अपनी बीवी को कह देने से वह माँ नहीं बन जाती, असली माँ तो वही है जिसके पेट से यह पैदा हुआ है। ये लोग अपने मुँह से ग़लत और बेहूदा बात बोल देते हैं, अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला और बख़्श देने वाला है। उसने जाहिलीयत की इस तंगी को तुमसे दूर कर दिया। इसी तरह हर वह कलाम जो एक दम ज़बान से बग़ैर सोचे समझे और बिना इरादे के निकल जाये। चुनाँचे अबू दाऊद वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. ने सुना कि एक शख़्स अपनी बीवी को कह रहा है "ऐ मेरी बहन"। आपने फ़रमाया क्या यह तेरी बहन है? ग़र्ज़ कि आपको यह कहना बुरा लगा और इससे आपने रोका, मगर इससे हुर्मत (हराम होना) साबित नहीं की, क्योंकि वास्तव में उसका यह मक़सद न था, यूँ ही ज़बान से बिना इरादे के निकल गया था, वरना ज़रूर हुर्मत साबित हो जाती। क्योंकि सही क़ौल यही है कि जो शख़्स अपनी बीवी को उस नाम से याद करे जो रिश्ते हमेशा के लिये हराम हैं जैसे बहन या फूफी या ख़ाला वग़ैरह तो वह भी हुक्म में माँ के हैं।

जो लोग ज़िहार करें, फिर अपने कहने से लौटें। इसका मतलब एक तो यह बयान किया गया है कि ज़िहार किया फिर दोबारा उस लफ़्ज़ को कहा, लेकिन यह ठीक नहीं बक़ौल हज़रत इमाम शाफ़ई रह. मतलब यह है कि ज़िहार किया, फिर उस औरत को रोके रखा यहाँ तक कि इतना ज़माना गुज़र गया कि अगर चाहता तो उसमें बाक़ायदा तलाक़ दे सकता था, लेकिन तलाक़ न दी। इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि "फिर लौटे" देखना है सोहबत (हमबिस्तरी) की तरफ़, या इरादा करे तो यह हलाल नहीं जब तक कि मज़कूरा (मुक़र्रर किया हुआ) कफ़्फ़ारा अदा न करे। हज़रत सईद रज़ि. फ़रमाते हैं- मुराद यह है कि जिस

Maktab E Ashraf

चीज़ को उसने अपनी जान पर हराम कर लिया था अब फिर उस काम को करना चाहे तो यह कफ़्फ़ारा अदा करे। हज़रत हसन बसरी रह. का क़ौल है कि सोहबत करनी चाहिये वरना और तरह छूने में कफ़्फ़ारे से पहले भी उनके नज़दीक कोई हर्ज नहीं। इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यहाँ "छूने" से मुराद सोहबत करना है। इमाम ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि हाथ लगाना बोसा लेना भी कफ़्फ़ारे की अदायेगी से पहले जायज़ नहीं। सुनन में है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! मैंने अपनी बीवी से ज़िहार किया था फिर कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले मैं उससे मिल लिया। आपने फ़रमाया अल्लाह तुझ पर रहम करे, ऐसा तूने क्यों किया? कहने लगा या रसूलल्लाह! चाँदनी रात में उसकी पाज़ेबों की चमक ने मुझे बेताब कर दिया। आपने फ़रमाया अब उससे नज़दीकी न करना जब तक कि ख़ुदा तआ़ला के फ़रमान के मुताबिक़ कफ़्फ़ारा अदा न करे। नसाई में यह हदीस मुर्सल तौर पर मौजूद है।

फिर कफ़्फ़ारा बयान हो रहा है कि एक ग़ुलाम आज़ाद करे। यहाँ यह क़ैद नहीं कि मोमिन ही हो जैसे क़त्ल के कफ़्फ़ारे में ग़ुलाम के मोमिन होने की क़ैद है। इमाम शाफ़ई रह. तो फ़रमाते हैं कि यह मुतलक़ उस मुक़ैयद पर महमूल होगी, क्योंकि आज़ाद करना जैसा वहाँ है ऐसा ही यहाँ भी है। इसकी दलील यह हदीस भी है कि एक काले रंग की बाँदी के बारे में हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया था- इसे आज़ाद कर दो, यह मोमिना (ईमान वाली) है। ऊपर वाक़िआ़ गुज़र चुका जिससे मालूम होता है कि ज़िहार करके फिर कफ़्फ़ारे से पहले वाक़िआ़ होने वाले को आपने दूसरा कफ़्फ़ारा अदा करने को नहीं फ़रमाया।

फिर फ़रमाता है कि इससे तुम्हें नसीहत की जाती है यानी धमकाया जा रहा है। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मस्लेहतों (बेहतराईयों) से ख़बरदार है और तुम्हारे हालात का जानने वाला है। जो ग़ुलाम के आज़ाद करने पर क़ादिर न हो (जैसे आजकल ग़ुलामों का आ़म रिवाज नहीं है) वह दो महीने के लगातार रोज़े रखने के बाद अपनी बीवी से इस सूरत में मिल सकता है। और अगर इसकी भी हिम्मत न हो तो फिर साठ मिस्कीनों को खाना देने के बाद। पहले हदीसें गुज़र चुकीं जिनसे मालूम होता है कि मुक़द्दम (सब से अच्छी और बेहतर) पहली सूरत है, फिर दूसरी फिर तीसरी, जैसा कि सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की उस हदीस में भी है जिसमें आपने रमज़ान में अपनी बीवी से सोहबत करने वाले को फ़रमाया था। हमने ये अहकाम इसलिये मुक़र्रर किये हैं ताकि तुम्हारा कामिल ईमान अल्लाह पर और उसके रसूल पर हो जाये। यह ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हदें हैं, उसकी मना की गयी बातें हैं, ख़बरदार इस हुर्मत को न तोड़ना। जो काफ़िर हों यानी ईमान न लायें, हुक्म का पालन न करें, शरीअ़त के अहकाम की बेक़द्री करें, उनसे लापरवाही बरतें, उन्हें बलाओं से बचने वाला न समझो, बल्कि उनके लिये दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا
كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنزَلْنَا
ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ ۚ وَلِلْكَٰفِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वे (दुनिया में भी) ऐसे ज़लील होंगे जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने खुले-खुले अहकाम नाज़िल किए हैं, और काफ़िरों को ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा। (5) जिस दिन उन सबको अल्लाह तआ़ला दोबारा ज़िन्दा करेगा। फिर उनका सब किया हुआ उनको बतलायेगा। (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ने

Maktab E Ashraf

عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ
یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ
مَا یَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰی ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ
وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰی
مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَیْنَ مَا
كَانُوْا ۚ ثُمَّ یُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝

वह महफ़ूज़ कर रखा है और ये लोग उसको भूल गए, और अल्लाह हर चीज़ की ख़बर रखता है। (6)

क्या आपने इस पर नज़र नहीं फ़रमाई कि अल्लाह तआला सब कुछ जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। कोई सरगोशी "यानी चुपके-चुपके बातें करना" तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिसमें चौथा वह (यानी अल्लाह) न हो, और न पाँच की (काना-फूसी) होती है जिसमें छठा वह न हो, और न इस (अंक) से कम (में) होती है (जैसे दो चार आदमियों में) और न उससे ज़्यादा, मगर वह (हर हालत में) उन लोगों के साथ होता है, चाहे वे लोग कहीं भी हों। फिर उन (सब) को क़ियामत के दिन उनके किए हुए काम बतला देगा, बेशक अल्लाह तआला को हर बात की पूरी ख़बर है। (7)

अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त

फ़रमान है कि ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करने वाले और शरीअ़त के अहकाम से मुँह मोड़ने वाले ज़िल्लत, नहूसत और लानत के हक़दार हैं। जिस तरह इनसे पहले लोग इन्हीं आमाल के कारण बरबाद और ज़लील कर दिये गये, इसी तरह ये भी इस सरकशी के कारण तबाह और ज़लील किये जायेंगे। हमने इस तरह वाज़ेह, इस क़द्र ज़ाहिर, इतनी साफ़ और ऐसी खुली हुई आयतें बयान कर दी हैं और निशानियाँ ज़ाहिर कर दी हैं कि सिवाय उसके जिसकी नाफ़रमानी और घमंड की आ़दत हो और कोई इनसे इनकार नहीं कर सकता, और जो इनका इनकार करे वह काफ़िर है, और ऐसे काफ़िरों के लिये यहाँ की ज़िल्लत के बाद वहाँ के भी तौहीन वाले अ़ज़ाब हैं। यहाँ उनके तकब्बुर ने ख़ुदा की तरफ़ झुकने से रोका, वहाँ इसके बदले उन्हें बेइन्तिहा ज़लील किया जायेगा, ख़ूब रौंदा जायेगा। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों पिछलों को एक ही मैदान में जमा करेगा और जो भलाई बुराई जिस किसी ने की थी उससे उसे आगाह करेगा। अगरचे ये भूल गये थे लेकिन अल्लाह तआ़ला ने तो उसे याद रखा था। उसके फ़रिश्तों ने उसे लिख रखा था, न तो अल्लाह पर कोई चीज़ छुप सके न अल्लाह तआ़ला किसी चीज़ को भूले।

फिर बयान फ़रमाता है कि तुम जहाँ हो, जिस हालत में हो, न तुम्हारी बातें ख़ुदा के सुनने से रह सकती हैं न तुम्हारी हालतें ख़ुदा के देखने से छुपी रह सकती हैं, उसके इल्म ने सारी दुनिया का घेराव कर रखा है। उसे हर ज़माने और हर जगह की इत्तिला हर वक़्त है, वह ज़मीन व आसमान की तमाम कायनात से ख़बरदार है। तीन शख़्स आपस में मिलकर बहुत ही छुपे तरीक़े से, राज़दारी के साथ अपनी बातें ज़ाहिर

करें उन्हें वह सुनता है और वह ख़ुद को तीन ही न समझें बल्कि अपना चौथा ख़ुदा को गिनें, और जो पाँच शख़्स तन्हाई में राज़दारी की बातें कर रहे हों वे भी यक़ीन रखें कि वे जहाँ कहीं भी हैं उनके साथ उनका ख़ुदा है, यानी उनके हाल क़ाल से मुत्तला है। उनके कलाम को सुन रहा है और उनकी हालतों को देख रहा है। फिर साथ ही साथ उसके फ़रिश्ते भी लिखते जा रहे हैं। जैसे एक और जगह हैः

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.

क्या लोग नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला उनकी पोशीदगियों (छुपी हुई बातों और कामों) को और उनके चुपके-चुपके बातें करने को अच्छी तरह जानता है, और अल्लाह तआ़ला तमाम ग़ैबों पर इत्तिला रखने वाला है। एक और जगह इरशाद हैः

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰهُمْ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ.

क्या उनका यह गुमान है कि हम उनकी पोशीदा (छुपी) बातों और ख़ुफ़िया मश्विरों को सुन नहीं रहे हैं? बराबर सुन रहे हैं। और हमारे भेजे हुए उनके पास मौजूद हैं जो लिखते जा रहे हैं।

अक्सर बुज़ुर्गों ने इस बात पर इजमा (एक राय) नक़ल किया है कि इस आयत से मुराद "जानकारी" है (यानी अल्लाह तआ़ला का वजूद नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला का इल्म हर जगह है। हर तीन के मजमे में चौथा उसका इल्म है) बिला शक इस बात पर ईमाने कामिल और पुख़्ता यक़ीन रखना चाहिये कि यहाँ मुराद ज़ात से साथ होना नहीं बल्कि इल्म के एतिबार से हर जगह मौजूद होना है। हाँ बेशक उसका सुनना देखना भी इसी तरह उसके इल्म के साथ-साथ है। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपनी तमाम मख़्लूक़ पर मुत्तला (इत्तिला व ख़बर रखने वाला) है, उनका कोई काम उससे पोशीदा नहीं। फिर क़ियामत के दिन उन्हें उनके तमाम आमाल जता देगा। अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को जानने वाला है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत का शुरू भी अपने इल्म के बयान से किया था और ख़त्म भी अपने इल्म के बयान पर किया।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ز وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ لا وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ط حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ الْمَصِيْرُo يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا	क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फ़रमाई जिनको सरगोशी "चुपके-चुपके बातें करने" से मना किया गया था, (मगर) फिर (भी) वह वही काम करते हैं जिससे उनको मना किया गया था, और गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियाँ "यानी कानाफूसी" करते हैं। और वे लोग जब आपके पास आते हैं आपको ऐसे लफ़्ज़ से सलाम कहते हैं जिससे अल्लाह ने आपको सलाम नहीं फ़रमाया और अपने जी में (या अपने आपस में) कहते हैं कि (अगर यह पैग़म्बर हैं तो) अल्लाह तआ़ला हमको हमारे इस कहने पर (फ़ौरन) सज़ा क्यों नहीं देता? उनके लिए जहन्नम काफ़ी

تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝	है, उसमें ये लोग (ज़रूर) दाख़िल होंगे, सो वह बुरा ठिकाना है। (8) ऐ ईमान वालो! जब तुम (किसी ज़रूरत से) सरगोशी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियाँ मत करो, और नफ़ा पहुँचाने और परहेज़गारी की बातों की सरगोशियाँ करो और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। (9) ऐसी सरगोशी सिर्फ़ शैतान की तरफ़ से (यानी उसके बहकाने से) है ताकि मुसलमानों को रंज में डाले, और वह (शैतान) बग़ैर ख़ुदा के इरादे के उनको कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, और मुसलमानों को (हर मामले में) अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (10)

अल्लाह तआ़ला का एक हुक्म

ग़लत क़िस्म की सरगोशियों (चुपके-चुपके बातें करने) से यहूदियों को रोक दिया गया था इसलिये कि उनमें और हुज़ूरे पाक सल्ल. में जब सुलह-सफ़ाई थी तो ये लोग यह हरकत करने लगे कि जहाँ कहीं किसी मुसलमान को देखा और जहाँ कोई उनके पास गया कि ये इधर-उधर जमा होकर चुपके-चुपके इशारों किनायों में इस तरह काना-फूसी करने लगते कि अकेला दुकेला मुसलमान यह गुमान करता कि शायद ये लोग मेरे क़त्ल की साज़िशें कर रहे हैं, या मेरे ख़िलाफ़ और ईमान वालों के ख़िलाफ़ कुछ छुपी तरकीब सोच रहे हैं। उसे उनकी तरफ़ जाते हुए भी डर लगता था। जब ये शिकायतें आ़म हुई तो हुज़ूर सल्ल. ने यहूदियों को इस ग़लत हरकत से रोक दिया, लेकिन वे बाज़ नहीं आये। इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है कि हम लोग बारी-बारी रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में रात को हाज़िर होते कि अगर कोई काम हो तो करें, एक रात को बारी वाले भी आ गये और कुछ और लोग भी सवाब की नीयत से आ गये। चूँकि लोग ज़्यादा जमा हो गये तो हम चन्द जमाअ़तों में तक़सीम होकर इधर-उधर बैठ गये और हर जमाअ़त बातें करने लगी। इतने में हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- ये सरगोशियाँ (कानों में बातें) क्या हो रही हैं? क्या तुम्हें इससे रोका नहीं गया? हमने कहा हुज़ूर! हमारी तौबा है, हम मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे, क्योंकि उससे खटका लगा रहता है। आपने फ़रमाया मैं तुम्हें इससे भी ज़्यादा ख़ौफ़ की चीज़ बतलाता हूँ और वह छुपा हुआ शिर्क है, इस तरह कि एक शख़्स उठ खड़ा हो और दूसरों को दिखाने के लिये कोई दीनी काम करे (यानी रियाकारी)। इसकी सनद ग़रीब है और इसमें बाज़ रावी ज़ईफ़ हैं।

फिर बयान होता है कि उनकी सरगोशियाँ (चुपके-चुपके बातें) या तो गुनाह के कामों के लिये होती हैं जिसमें उनका ज़ाती नुक़सान है, या ज़ुल्म पर होती हैं जिसमें दूसरों के नुक़सान की तरकीबें सोचते हैं, या पैग़म्बरे ख़ुदा की मुख़ालफ़त पर एक दूसरे को पुख़्ता करते हैं और आपकी नाफ़रमानियों के मन्सूबे गाँठते हैं। फिर उन बदकारों की एक बहुत बुरी ख़स्लत बयान हो रही है कि सलाम के अलफ़ाज़ को भी बदल देते

हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा एक यहूदी हुज़ूरे पाक के पास आया और कहा "अस्सामु अलै-क या अबल्-क़ासिम"। "साम" के मायने मौत के हैं। इस पर हज़रत आयशा रज़ि. ने नाराज़ होकर उस बद-बातिन यहूदी को कुछ कहना चाहा लेकिन आप सल्ल. ने फ़रमाया- आयशा! अल्लाह तआला बुरे अलफ़ाज़ और सख़्त कलामी को नापसन्द फ़रमाता है। मैंने कहा- क्या हुज़ूर ने नहीं सुना? उन्होंने आपको "अस्सलाम" नहीं बल्कि "अस्साम" कहा है। आपने फ़रमाया क्या तुमने नहीं सुना? मैंने कह दिया "व अलैकुम" (यानी और तुम पर भी)। इसी का बयान यहाँ हो रहा है। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनके जवाब में फ़रमाया था "अलैकुमुस्साम वज़्ज़ाम वल्लअ्नतु" (यानी तुम ही पर हो मौत, बुराई और लानत) और आपने हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को रोकते हुए फ़रमाया कि हमारी दुआ उनके हक़ में मक़बूल है और उनका हमें देखना सुनाना ना-मक़बूल है।

(इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक मर्तबा हुज़ूरे पाक सल्ल. अपने सहाबा के मजमे में तशरीफ़ रखते थे कि एक यहूदी ने आकर सलाम किया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जवाब दिया। फिर हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा से पूछा मालूम भी है उसने क्या कहा था? उन्होंने कहा हज़रत सलाम किया था। आपने फ़रमाया नहीं! उसने कहा था "सामुन अलैकुम" यानी तुम्हारा दीन मग़लूब हो, मिट जाये। फिर आपने हुक्म दिया कि उस यहूदी को बुलाओ। जब वह आ गया तो आपने फ़रमाया सच बता क्या तूने "सामुन अलैकुम" नहीं कहा था? उसने कहा हाँ हुज़ूर मैंने यही कहा था। आपने फ़रमाया सो जब कभी कोई अहले किताब तुममें से किसी को सलाम करे तो तुम सिर्फ़ "अलैक" कह दिया करो, यानी जो तूने कहा हो वही तुझ पर। (इब्ने जरीर वग़ैरह)

फिर ये लोग अपनी इस करतूत पर ख़ुश होकर अपने दिल में कहते थे कि अगर यह सच्चे नबी होते तो अल्लाह तआला हमारी इस चालबाज़ी पर हमें दुनिया में ज़रूर अज़ाब करता। इसलिये कि अल्लाह तआला तो हमारे अन्दर के हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ है। पस ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि उन्हें आख़िरत के घर का अज़ाब ही काफ़ी है, जहाँ ये जहन्नम में जायेंगे और बुरी जगह पहुँचेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से मरवी है कि इस आयत का शाने नुज़ूल (उतरने का कारण व मौक़ा) यहूदियों का इस तरीक़े का सलाम है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि मुनाफ़िक़ इसी तरह सलाम करते थे।

फिर अल्लाह तआला मोमिनों को अदब सिखाता है कि तुम उन मुनाफ़िक़ों और यहूदियों जैसे काम न करना, तुम गुनाह के कामों और हद से गुज़र जाने और नबी की न मानने के मश्विरे न करना, बल्कि तुम्हें उनके विपरीत नेकी के और अपने बचाव के मश्विरे करने चाहियें, तुम्हें हर वक़्त उस अल्लाह से डरते रहना चाहिये जिसकी तरफ़ तुम्हें जमा होना है। जो उस वक़्त तुम्हें हर नेकी बदी की जज़ा सज़ा देगा और तमाम आमाल व अक़वाल से आगाह करेगा, अगरचे तुम भूल गये हो लेकिन उसके पास सब महफ़ूज़ (सुरक्षित) और मौजूद हैं। हज़रत सफ़वान फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का हाथ थामे हुए था कि एक शख़्स आया और उसने कहा- आपने रसूलुल्लाह सल्ल. से मोमिन की जो सरगोशी (चुपके से बात) क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से होगी उसके बारे में क्या सुना है? आपने फ़रमाया नबी करीम सल्ल. से मैंने सुना है कि अल्लाह तआला मोमिन को अपने क़रीब बुलायेगा और इस क़द्र क़रीब करेगा कि अपना मुबारक हाथ (उसकी शान के मुताबिक़ जो भी इसका मतलब हो) उस पर रख देगा और लोगों से उसे पर्दे में करेगा और उससे उसके गुनाहों का इक़रार करायेगा और पूछेगा- याद है फ़ुलाँ गुनाह तुमने किया था? यह इक़रार करता जायेगा और दिल धड़क रहा होगा कि अब हलाक हुआ। इतने में अल्लाह तआला

फ़रमायेगा देख दुनिया में भी मैंने तेरी पर्दापोशी की और आज भी मैंने बख़्शिश की। फिर उसे उसकी नेकियों का नामा-ए-आमाल दिया जायेगा। लेकिन काफ़िर व मुनाफ़िक़ के बारे में तो गवाह पुकार कर कह देंगे कि ये ख़ुदा पर झूठ बोलने वाले लोग हैं, ख़बरदार हो जाओ! इन ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है।

फिर इरशाद है कि इस क़िस्म की सरगोशी (काना-फूसी) जिससे मुसलमान को तकलीफ़ पहुँचे और उसे बदगुमानी हो, शैतान की तरफ़ से है। शैतान उन मुनाफ़िक़ों वग़ैरह से यह काम इसलिये कराता है ताकि मोमिनों को ग़म व रंज हो, लेकिन हक़ीक़त यह है कि ख़ुदा की इजाज़त के बग़ैर न शैतान न कोई और उन्हें कोई नुक़सान पहुँचा सकता है, जिसे कोई ऐसी हरकत मालूम हो उसे चाहिये कि "अऊज़ु बिल्लाह...." पढ़े, ख़ुदा की पनाह ले और अल्लाह पर भरोसा रखे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला उसे कोई नुक़सान न पहुँचेगा। ऐसी काना-फूसी जो किसी मुसलमान को नागवार गुज़रे हदीस में भी मना आयी है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर पाक सल्ल. ने फ़रमाया- जब तुम तीन आदमी हो तो दो मिलकर कान में मुँह डाल कर बातें करने न बैठ जाओ, इससे उस तीसरे का दिल रन्जीदा और दुखी होगा। (बुख़ारी व मुस्लिम) एक और रिवायत में है कि हाँ अगर उस तीसरे की इजाज़त हो तो कोई हर्ज नहीं। (मुस्लिम शरीफ़)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ○	ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए कि मज्लिस में जगह खोल दो तो तुम जगह खोल दिया करो। अल्लाह तुमको (जन्नत में) खुली जगह देगा। और जब (किसी ज़रूरत से) यह कहा जाए कि (मज्लिस से) उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो, अल्लाह तआ़ला (इस हुक्म के मानने से) तुममें ईमान वालों के और (ईमान वालों में) उन लोगों के जिनको (दीन का) इल्म अ़ता हुआ है (आख़िरत के) दर्जे बुलन्द कर देगा, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (11)

एक अख़्लाक़ी फ़रीज़ा

यहाँ ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला मज्लिसी आदाब सिखाता है। उन्हें हुक्म देता है कि उठने-बैठने में भी एक दूसरे का ख़्याल व लिहाज़ रखो। इरशाद है कि जब मज्लिस जमा हो और कोई आये तो ज़रा इधर-उधर हट-हटाकर उसे भी जगह दो, मज्लिस में जगह खोल दो और इसके बदले अल्लाह तआ़ला तुम्हें कुशादगी देगा। इसलिये कि हर अ़मल का बदला उसी जैसा होता है। चुनाँचे एक हदीस में है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये मस्जिद बना दे अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में घर बना देगा। एक और हदीस में है कि जो किसी सख़्ती वाले पर आसानी करे अल्लाह तआ़ला उस पर दुनिया व आख़िरत में आसानी करेगा जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की मदद में लगा रहे अल्लाह तआ़ला ख़ुद उस बन्दे की मदद पर रहता है। और भी इसी तरह की बहुत सी हदीसें हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- यह आयत ज़िक्र की मज्लिस के बारे में उतरी है। जैसे वअ़ज़ (दीनी बयान) हो रहा है, हुज़ूर सल्ल. कुछ नसीहत की

Maktab-E-Ashraf

बातें फ़रमा रहे हैं, लोग बैठे सुन रहे हैं, अब जो दूसरा कोई आया तो कोई अपनी जगह से नहीं सरकता ताकि उसे भी जगह मिल जाये तो क़ुरआने करीम ने हुक्म दिया कि ऐसा न करो, इधर-उधर खुल जाया करो ताकि उस आने वाले की जगह हो जाये। हज़रत मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि जुमे के दिन यह आयत उतरी, रसूलुल्लाह सल्ल. उस दिन सुफ़्फ़ा में थे, यानी मस्जिद के एक छप्पर के नीचे, जगह तंग थी और आपकी आ़दत मुबारक थी कि जो मुहाजिर और अन्सारी सहाबा बदर की लड़ाई में आपके साथ थे आप उनकी बड़ी इज़्ज़त और तकरीम किया करते थे, उस दिन इत्तिफ़ाक़ से चन्द बदरी सहाबा ज़रा देर से आये तो हुज़ूरे पाक सल्ल. के आस-पास खड़े हो गये, आप से सलामु अ़लैक हुई, आपने जवाब दिया फिर और अहले मज्लिस को सलाम किया, उन्होंने भी जवाब दिया। अब ये इसी उम्मीद पर खड़े हो गये कि ज़रा कुशादगी देखें तो बैठ जायें, लेकिन कोई शख़्स अपनी जगह से न हिला जो उनके लिये जगह होती। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने जब यह देखा तो नाम ले-लेकर बाज़ लोगों को उनकी जगह से खड़ा किया और उन बदरी सहाबियों को बैठने को फ़रमाया, जो लोग खड़े किये गये थे उन्हें ज़रा नागवार हुआ।

उधर मुनाफ़िक़ों के हाथ में एक मश्ग़ला लग गया। कहने लगे लीजिए यह इन्साफ़ करने के दावेदार नबी हैं कि जो लोग शौक़ से आये, पहले आये, अपने नबी के क़रीब जगह ली, इत्मीनान से अपनी अपनी जगह बैठ गये, उन्हें तो उनकी जगह से खड़ा कर दिया और देर से आने वालों को उनकी जगह दिलवा दी, किस क़द्र नाइन्साफ़ी है। इधर हुज़ूर सल्ल. ने उनके दिल मैले न हों इसलिये दुआ़ की- अल्लाह उस पर रहम करे जो अपने मुसलमान भाई के लिये मज्लिस में जगह कर दे। इस हदीस को सुनते ही सहाबा ने फ़ौरन ख़ुद-बख़ुद अपनी जगह से हटना और आने वालों को जगह देना शुरू कर दिया और जुमे ही के दिन यह आयत उतरी। (इब्ने अबी हातिम)

बुख़ारी व मुस्लिम और मुस्नद वग़ैरह में हदीस है कि कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को उसकी जगह से हटाकर ख़ुद वहाँ न बैठे, बल्कि तुम्हें चाहिये कि इधर-उधर हटकर उसके लिये जगह बना दो। मुस्नद शाफ़ई में है कि तुम में से कोई शख़्स अपने भाई को जुमे के दिन उसकी जगह से हरगिज़ न उठाये बल्कि कह दे कि गुंजाईश करो। इस मसले में उलेमा का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि किसी आने वाले के लिये खड़े हो जाना जायज़ है या नहीं? बाज़ लोग तो इजाज़त नहीं देते और यह हदीस पेश करते हैं कि जो शख़्स यह चाहे कि लोग उसके लिये सीधे खड़े हो जाया करें वह जहन्नम में अपनी जगह बनाये। बाज़ बुज़ुर्ग तफ़सील करते हैं और फ़रमाते हैं कि सफ़र से अगर कोई आया हो तो और हाकिम के लिये उसकी हुकूमत की जगह खड़े हो जाना दुरुस्त है क्योंकि हुज़ूरे पाक ने जिनके लिये खड़े होने को फ़रमाया था यह हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे। बनू क़ुरैज़ा के आप हाकिम बनाये गये थे, जब उन्हें आता हुआ देखा तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि अपने सरदार के लिये खड़े हो जाओ और यह (सम्मान के तौर पर न था बल्कि) सिर्फ़ इसलिये था कि उनके अहकाम को बख़ूबी जारी करायें। वल्लाहु आलम। हाँ इसे आ़दत बना लेना कि मज्लिस में जहाँ कोई बड़ा आदमी आया और लोग खड़े हो गये, यह अ़जमियों (अ़रब से बाहर के लोगों) का तरीक़ा है। सुनन की हदीस में है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के नज़दीक रसूले ख़ुदा सल्ल. से ज़्यादा महबूब और इज़्ज़त वाला कोई न था, लेकिन फिर भी आपको देखकर वे खड़े नहीं हुआ करते थे, जानते थे कि आप इसे पसन्द नहीं फ़रमाते।

सुनन की एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. आते ही मज्लिस के ख़त्म पर बैठ जाया करते थे और जहाँ आप तशरीफ़ फ़रमा हो जाते वही जगह अध्यक्षता और सरदारी की जगह हो जाती और सहाबा

किराम अपने-अपने रुतबों के मुताबिक़ मज्लिस में बैठ जाते। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. आपके दायें, जनाब फ़ारूक़े आज़म रज़ि. आपके बायें और उमूमन हज़रत उस्मान व अ़ली रज़ि. आपके सामने बैठते थे, क्योंकि ये दोनों बुज़ुर्ग "कातिबे वही" थे। आप उनसे फ़रमाते और ये वही को लिख लिया करते थे। सही मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान था कि मुझसे क़रीब होकर अ़क़्लमन्द, बुद्धिमान लोग बैठें। फिर दर्जा-ब-दर्जा। और यह इन्तिज़ाम इसलिये था कि हुज़ूर के मुबारक इरशादात ये हज़रात सुनें और बख़ूबी समझें। यही वजह थी कि सुफ़्फ़ा वाली मज्लिस में जिसका ज़िक्र अभी-अभी गुज़रा है आपने और लोगों को उनकी जगह से हटाकर वह जगह बदरी सहाबा को दिलवाई, अगरचे इसके साथ और कारण भी थे। मिसाल के तौर पर उन लोगों को ख़ुद चाहिये था कि उन बुज़ुर्ग सहाबा का ख़्याल करते और लिहाज़ व मुरव्वत बरत कर ख़ुद हटकर उन्हें जगह देते। जब उन्होंने ऐसा नहीं किया तो फिर हुक्म देकर उनसे ऐसा कराया गया। इसी तरह पहले के लोग हुज़ूर सल्ल. के बहुत से कलिमात पूरी तरह सुन चुके थे, अब ये हज़रात आये थे तो आपने चाहा कि ये भी आराम से बैठकर मेरी हदीसें सुन लें और तालीम हासिल कर लें।

इसी तरह उम्मत को इस बात की तालीम भी देनी थी कि वे अपने बड़ों और बुज़ुर्गों को इमाम के पास बैठने दें और उन्हें अपने से मुक़द्दम रखें। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. नमाज़ की सफ़ों के ठीक करने के वक़्त हमारे मोंढे ख़ुद पकड़ कर ठीक करते और फ़रमाते जाते- सीधे रहो, टेढ़े तिरछे न खड़े हुआ करो, दानाई और अ़क़्लमन्दी वाले मुझसे बिल्कुल क़रीब रहें, फिर दर्जा-ब-दर्जा। हज़रत अबू मसऊद रज़ि. इस हदीस को बयान फ़रमाकर फ़रमाते हैं कि बावजूद इस हुक्म के अफ़सोस कि तुम अब बड़ी टेढ़ी सफ़ें करते हो। मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। ज़ाहिर है कि जब आपका यह हुक्म नमाज़ के लिये था तो नमाज़ के अ़लावा दूसरे वक़्तों में तो यक़ीनन यही हुक्म रहेगा।

अबू दाऊद शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- सफ़ों को दुरुस्त करो, मोंढे मिलाये रखो, सफ़ों के दरमियान ख़ाली जगह न छोड़ो, अपने भाईयों के लिये सफ़ में नर्म बन जाया करो, सफ़ में शैतान के लिये सुराख़ न छोड़ो, सफ़ मिलाने वाले को अल्लाह तआ़ला मिलाता है और सफ़ तोड़ने वाले को अल्लाह तआ़ला काट देता है। इसी लिये सैयदुल-क़ुर्रा हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब पहुँचते तो पहली सफ़ में से किसी कम-समझ वाले शख़्स को पीछे हटा देते और ख़ुद पहली सफ़ में मिल जाते और इसी हदीस को दलील में पेश फ़रमाते कि हुज़ूर ने फ़रमाया है- मुझसे क़रीब समझदार और आला अ़क़्लमन्द खड़े हों, फिर दर्जा-ब-दर्जा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. को देखकर अगर कोई शख़्स खड़ा हो जाता तो आप उसकी जगह पर न बैठते और इस हदीस को पेश करते जो ऊपर गुज़री कि किसी को उठाकर उसकी जगह में कोई और न बैठे।

यहाँ बतौर नमूने के ये चन्द मसाईल और थोड़ी हदीसें लिखकर हम आगे चलते हैं, तफ़सील की यहाँ गुंजाईश नहीं। एक सही हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. बैठे थे कि तीन शख़्स आये, एक तो मज्लिस के दरमियान जगह ख़ाली देखकर वहाँ आकर बैठ गये, दूसरे ने मज्लिस के आख़िर में जगह बना ली, तीसरे वापस चले। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- लोगो! मैं तुम्हें तीन शख़्सों के बारे में ख़बर दूँ। एक ने तो अल्लाह की तरफ़ जगह ली और अल्लाह तआ़ला ने उसे जगह दी, दूसरे ने शर्म की अल्लाह ने भी उससे हया की, तीसरे ने मुँह फेर लिया तो अल्लाह तआ़ला ने भी उससे मुँह फेर लिया। मुस्नद अहमद में है कि किसी को हलाल नहीं कि दो शख़्सों के दरमियान तफ़रीक़ (भेदभाव) करे, हाँ उसकी रज़ामन्दी से हो तो और बात है। (अबू दाऊद व तिर्मिज़ी)

इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इसे हसन कहा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हसन बसरी रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि मज्लिसों की कुशादगी का हुक्म जिहाद के बारे में है। इसी तरह उठ खड़े होने का हुक्म भी जिहाद के बारे में है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- यानी जब तुम्हें भलाई और ख़ैर के काम की तरफ़ बुलाया जाये तो तुम फ़ौरन आ जाओ। हज़रत मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि जब तुम्हें नमाज़ के लिये बुलाया जाये तो आ जाया करो। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद फ़रमाते हैं कि सहाबा जब हुज़ूर सल्ल. के यहाँ आते तो जाते वक़्त हर एक की तमन्ना यह होती कि सबसे आख़िर में हुज़ूर सल्ल. से जुदा मैं हूँ। बहुत सी बार आपको कोई काम होता तो बड़ा हर्ज होता, लेकिन आप मुरव्वत से कुछ न फ़रमाते, इस पर यह हुक्म हुआ कि जब तुमसे खड़े होने को कहा जाये तो खड़े हो जाया करो। जैसे एक और जगह है:

وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا.

अगर तुम से लौट जाने को कहा जाये तो लौट जाओ।

फिर फ़रमाता है कि मज्लिसों में जब जगह देने को कहा जाये तो जगह देने में और जब चले जाने को कहा जाये तो चले जाने में अपनी बेइज़्ज़ती न समझो, बल्कि यह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मर्तबा बुलन्द करना और अपनी इज़्ज़त कराना है। उसे ख़ुदा ज़ाया न करेगा, बल्कि उस पर दुनिया और आख़िरत में नेक बदला देगा। जो शख़्स अल्लाह के अहकाम पर तवाज़ो से गर्दन झुका दे, अल्लाह उसकी इज़्ज़त बढ़ाता है और उसकी शोहरत नेकी के साथ करता है। ईमान वालों और सही इल्म वालों का यही काम होता है कि ख़ुदा के अहकाम के सामने गर्दन झुका दिया करें और इससे वे बुलन्द दर्जों के मुस्तहिक़ हो जाते हैं। अल्लाह तआ़ला को इल्म है कि बुलन्द मर्तबे का मुस्तहिक़ कौन है और कौन नहीं?

हज़रत नाफ़े बिन अ़ब्दुल-हारिस से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. की मुलाक़ात अ़स्फ़ान में होती है, हज़रत उमर रज़ि. ने उन्हीं मक्का शरीफ़ का आ़मिल बनाया था तो उनसे पूछा कि तुम मक्का शरीफ़ में अपनी जगह किसे छोड़ आये हो? जवाब दिया कि इब्ने अबज़ी को। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने फ़रमाया वह तो हमारे मौला (यानी आज़ाद किये हुए गुलाम) हैं। उन्हें तुम मक्का वालों का अमीर बनाकर चले हो? कहा हाँ! इसलिये कि वह ख़ुदा की किताब का माहिर और फ़राईज़ (मीरास के मसाईल) का जानने वाला और अच्छा वअ़ज़ कहने वाला है। हज़रत उमर रज़ि. ने उस वक़्त फ़रमाया सच फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल. ने कि अल्लाह तआ़ला इस किताब की वजह से एक क़ौम को इज़्ज़त पर पहुँचाकर बुलन्द रुतबे वाला करेगा और बाज़ों को पस्त व कम दर्जे वाला करेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से सरगोशी "यानी कान में बात" (करने का इरादा) किया करो तो अपनी उस सरगोशी से पहले (मिस्कीनों को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है और (गुनाहों से) पाक होने का अच्छा ज़रिया है। फिर अगर तुमको (सदक़ा देने की) ताक़त न हो तो अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (12) क्या तुम	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ

Maktab E Ashraf

تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝	अपनी सरगोशी "यानी चुपके-चुपके कान में बात करने" से पहले ख़ैरात देने से डर गए? सो (ख़ैर!) जब तुम (उसको) न कर सके और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हाल पर इनायत फ़रमाई तो तुम नमाज़ के पाबन्द रहो और ज़कात दिया करो और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल का कहना माना करो, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (13)

एक हिक्मत भरी बात

अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि मेरे नबी से जब तुम कोई राज़ की बात करना चाहो तो उससे पहले मेरी राह में ख़ैरात किया करो ताकि तुम पाक-साफ़ हो जाओ और इस क़ाबिल बन जाओ कि मेरे पैग़म्बर से मश्विरा कर सको। हाँ अगर कोई ग़रीब मिस्कीन शख़्स हो तो ख़ैर उसे अल्लाह तआ़ला की बख़्शिश और उसके रहम पर नज़रें रखनी चाहियें। यानी यह हुक्म सिर्फ़ उन्हें है जो मालदार हों। फिर फ़रमाया- क्या तुम्हें इस हुक्म के बाक़ी रह जाने का अन्देशा था और ख़ौफ़ था कि यह सदक़ा कब तक वाजिब रहेगा, अच्छा जब तुमने उसे न किया और अल्लाह तआ़ला ने भी तुम्हें माफ़ फ़रमाया तो अब ऊपर ज़िक्र हुए फ़राईज़ का पूरी तरह ख़्याल रखो। कहा जाता है कि सरगोशी (काना-फूसी) से पहले सदक़ा निकालने का शर्फ़ (गौरव) सिर्फ़ हज़रत अ़ली रज़ि. को हासिल हुआ है, फिर यह हुक्म ख़त्म हो गया। एक दीनार सदक़ा देकर हुज़ूर सल्ल. से पोशीदा बातें कीं, दस मसाईल पूछे, फिर तो यह हुक्म ही ख़त्म हो गया। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से ख़ुद भी यह वाक़िआ़ तफ़सील के साथ मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया- इस आयत पर न मुझसे पहले किसी ने अ़मल किया न मेरे बाद कोई अ़मल कर सका। मेरे पास एक दीनार था जिसे भुनाकर मैंने दस दिरहम लिये, एक दिरहम अल्लाह के नाम पर किसी मिस्कीन को दे दिया, फिर आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर आप से सरगोशी (पोशीदा बातें) कीं। उसके बाद यह हुक्म ख़त्म हो गया, तो मुझसे पहले भी किसी ने इस पर अ़मल नहीं किया और न मेरे बाद कोई इस पर अ़मल कर सकता है। फिर आपने इस आयत की तिलावत की।

इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. से पूछा- क्या सदक़े की मिक़्दार (मात्रा) एक दीनार मुक़र्रर कर देनी चाहिये? आपने फ़रमाया यह तो बहुत (यानी ज़्यादा) हुई। फ़रमाया फिर आधा दीनार? कहा हर शख़्स को इसकी भी ताक़त नहीं। आपने फ़रमाया अच्छा तुम ही बतलाओ किस क़द्र? फ़रमाया एक जौ के बराबर सोना। आपने फ़रमाया वाह-वाह तुम तो बड़े ही ज़ाहिद हो। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं- पस मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत पर आसानी और कमी कर दी। तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है और इसे हसन ग़रीब कहा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुसलमान बराबर हुज़ूर सल्ल. से राज़दारी करने से पहले सदक़ा निकाला करते थे लेकिन ज़कात के हुक्म ने इसे उठा दिया। आप फ़रमाते हैं- सहाबा रज़ि. ने कसरत से सवालात करने शुरू कर दिये जो हुज़ूर सल्ल. पर ये भारी और

Maktaba E Ashraf

नागवार गुज़रते थे, तो अल्लाह तआ़ला ने यह हुक्म देकर आप पर कमी और आसानी कर दी, क्योंकि अब लोगों ने सवालात छोड़ दिये। फिर अल्लाह तआ़ला ने नर्मी से काम लिया और इस हुक्म को मन्सूख़ (ख़त्म और निरस्त) कर दिया। हज़रत इक्रिमा रह. और हसन बसरी रह. का भी यही क़ौल है कि यह हुक्म मन्सूख़ है। हज़रत क़तादा रह. और हज़रत मुक़ातिल रह. भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि सिर्फ़ दिन की चन्द घड़ियों तक यह हुक्म रहा, हज़रत अ़ली रज़ि. भी यही फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ मैं ही इस पर अ़मल कर सका था और दिन का थोड़ा ही हिस्सा इस हुक्म को नाज़िल हुए हुआ था, फिर यह मन्सूख़ हो गया।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَ
يَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً
فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ
مُّهِيْنٌ ۝ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ
اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا
يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى
شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝
اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ
ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ
اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फ़रमाई जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया है, ये (मुनाफ़िक़) लोग न तो (पूरे-पूरे) तुममें हैं और न उन ही में हैं, और झूठी बात पर क़समें खा जाते हैं, और वे (ख़ुद भी) जानते हैं। (14) अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब मुहैया कर रखा है, (क्योंकि) बेशक वे बुरे-बुरे काम किया करते थे। (15) उन्होंने अपनी क़समों को (अपने बचाव के लिए) ढाल बना रखा है, फिर ख़ुदा की राह से रोकते रहते हैं। सो (इस वजह से) उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होने वाला है। (16) उनके माल और औलाद अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको ज़रा भी न बचा सकेंगे, (और) ये लोग दोज़ख़ी हैं वे लोग उसमें हमेशा रहने वाले हैं। (17) जिस दिन अल्लाह उन सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा, सो ये उसके सामने भी (झूठी) क़समें खा जाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खा जाते हैं, और यूँ ख़्याल करेंगे कि हम किसी अच्छी हालत में हैं। ख़ूब सुन लो कि ये लोग बड़े ही झूठे हैं। (18) उन पर शैतान ने पूरा क़ब्ज़ा जमा लिया है, सो उसने उनको ख़ुदा की याद भुला दी है, ये लोग शैतान का गिरोह है, ख़ूब सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बरबाद होने वाला है। (19)

मुनाफ़िक़ों की बुरी हरकतें और उन पर सख़्त चेतावनी

मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो रहा है कि ये अपने दिल में यहूद की मुहब्बत रखते हैं अगरचे उनके भी दिल से साथी नहीं और न तुम्हारे हैं, गोया कि न इधर के हैं न उधर के। साफ़ झूठी क़समें खा जाते हैं, ईमान वालों के पास आकर उनकी सी कहने लगते हैं, रसूल के पास आकर क़समें खाकर अपनी ईमानदारी का यक़ीन दिलाते हैं और दिल में उसके ख़िलाफ़ जज़्बात पाते हैं और अपने ग़लत कहने का इल्म रखते हुए बेधड़क क़समें खा लेते हैं। उनके इन बुरे आमाल की वजह से उन्हें सख़्त अ़ज़ाब होंगे। इस धोखेबाज़ी का बुरा बदला उन्हें दिया जायेगा। ये तो अपनी क़समों को अपनी ढालें (अपना बचाव) बनाये हुए हैं और ख़ुदा की राह से रुक गये हैं। ईमान ज़ाहिर करते हैं, कुफ़्र दिल में रखते हैं और क़समों से अपनी बुराई को छुपाते हैं और नावाक़िफ़ लोगों पर अपनी सच्चाई का सुबूत अपनी क़समों से पेश करके उन्हें अपना प्रशंसक बना लेते हैं और फिर धीरे-धीरे उन्हें भी अपने रंग में रंग लेते हैं, और ख़ुदा की राह से रोक देते हैं। चूँकि उन्होंने झूठी क़समों से ख़ुदा तआ़ला के सम्मानित नाम की बेइज़्ज़ती की थी, इसलिये उन्हें ज़िल्लत व अपमान वाले अ़ज़ाब होंगे, जिस दिन अ़ज़ाबों को न उनके माल दूर कर सकेंगे न उस वक़्त उनकी औलाद उन्हें कुछ काम आयेगी। यह तो जहन्नमी बन चुके और वहाँ से उनका निकलना भी कभी न होगा। क़ियामत वाले दिन जब उनका हश्र होगा और एक भी इस मैदान में आये बग़ैर न रह सकेगा, सब जमा हो जायेंगे। तो चूँकि ज़िन्दगी में उनकी आ़दत थी कि अपनी झूठी बातों को क़समों से सच साबित कर दिखाते थे, आज ख़ुदा के सामने भी अपनी हिदायत और सही रास्ते पर जमाव पर बड़ी-बड़ी क़समें खा लेंगे और समझते होंगे कि यहाँ भी यह चालाकी चल जायेगी, मगर उन झूठों की भला ख़ुदा के सामने चालबाज़ी कहाँ चल सकती है? वह तो उनका झूठा होना यहाँ भी मुसलमानों में बयान फ़रमा चुका।

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. अपने किसी हुजरे के साये में तशरीफ़ फ़रमा थे और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी आस-पास बैठे थे। सायेदार जगह कम थी, मुश्किल से लोग उससे पनाह लिये बैठे थे कि आपने फ़रमाया- देखो अभी एक शख़्स आयेगा जो शैतानी निगाह से देखता है, वह आये तो उससे बात न करना। थोड़ी देर में एक केरी (नीली) आँखों वाला शख़्स आया, हुज़ूरे पाक ने उसे अपने पास बुलाकर फ़रमाया- क्यों भाई! तू और फ़ुलाँ फ़ुलाँ मुझे क्यों गालियाँ देते हो? यह यहाँ से चला गया और जिन-जिनका नाम हुज़ूर ने लिया था उन्हें लेकर आया और फिर तो क़समों का ताँता बाँध दिया कि हम में से किसी ने हुज़ूर की कोई बेअदबी नहीं की। इस पर यह आयत उतरी कि ये झूठे हैं। यही हाल मुश्रिकों का भी दरबारे ख़ुदा में होगा कि क़समें खा जायेंगे कि हमें अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब है, कि हमने शिर्क नहीं किया।

फिर फ़रमाता है कि उन पर शैतान मुसल्लत है और उसने उनके दिल को अपनी मुट्ठी में लिया है, अल्लाह की याद, अल्लाह के ज़िक्र से उन्हें दूर डाल दिया है। अबू दाऊद की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिस किसी बस्ती या जंगल में तीन शख़्स भी हों और उनमें नमाज़ क़ायम न की जाती हो तो शैतान उन पर छा जाता है। पस तू जमाअ़त को लाज़िम पकड़े रह। भेड़िया उसी बकरी को खाता है जो रेवड़ से अलग हो। हज़रत सायब रह. फ़रमाते हैं- यहाँ जमाअ़त से मुराद नमाज़ की जमाअ़त है। फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा के ज़िक्र को भूलने वाले शैतानी जमाअ़त के अफ़राद हैं, शैतान का यह लश्कर यक़ीनन नामुराद और घाटा उठाने वाला है।

Maktab E Ashraf

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ
فِى الْاَذَلِّيْنَ ○ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ
رُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ○ لَا تَجِدُ
قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ
كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ
اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ
الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ
اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ع ٣ ع ٢

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं ये लोग इन्तिहाई ज़लील लोगों में हैं। (20) और अल्लाह तआ़ला ने यह बात (अपने क़दीमी हुक्म में) लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ग़ालिब रहेंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला क़ुव्वत वाला, ग़लबे वाला है। (21) जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा) ईमान रखते हैं, आप उनको न देखेंगे कि वे ऐसे शख़्सों से दोस्ती रखते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं, अगरचे वे उनके बाप या बेटे या भाई या कुनबा ही क्यों न हों। उन लोगों के दिलों में अल्लाह तआ़ला ने ईमान जमा दिया है और उनके (दिलों) को अपने फ़ैज़ से क़ुव्वत दी है, (फ़ैज़ से मुराद नूर है)। और उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे। ये लोग अल्लाह का गिरोह है। ख़ूब सुन लो कि अल्लाह ही का गिरोह कामयाबी पाने वाला है। (22)

अल्लाह और रसूल के मुख़ालिफ़ीन

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि जो लोग हक़ से बरगश्ता हैं, हिदायत से दूर हैं, अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं, शरीअ़त के अहकाम की इताअ़त से अलग हैं, ये लोग इन्तिहाई दर्जे के ज़लील बेवक़ार और ख़स्ता हाल हैं। अल्लाह की रहमत से दूर, ख़ुदा की मेहरबानी भरी नज़रों से ओझल और दुनिया व आख़िरत में बरबाद हैं। अल्लाह तआ़ला तो फ़ैसला कर चुका है बल्कि अपनी पहली किताब में ही लिख चुका है और मुक़द्दर कर चुका है, जो तक़दीर और जो तहरीर न मिटेगी न बदलेगी, न उसको बदलने की किसी में ताक़त है कि वह और उसकी किताब और उसके रसूल और उसके मोमिन बन्दे दुनिया और आख़िरत में ग़ालिब रहेंगे। जैसे एक और जगह है:

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا......... الخ.

हम अपने रसूल और ईमान वाले बन्दों की ज़रूर मदद करेंगे, दुनिया में भी आख़िरत में भी, जिस दिन गवाह क़ायम हो जायेंगे और जिस दिन गुनाहगारों को कोई उज़्र व माज़िरत फ़ायदा न पहुँचायेगी, उन पर लानतें बरसती होंगी और उनके लिये बुरा घर होगा। यह लिखने वाला ख़ुदा क़वी है, वह ग़ालिब व क़ह्हार

है, अपने दुश्मनों पर हर वक़्त क़ाबू रखने वाला है, उसका यह अटल फ़ैसला और तयशुदा मामला है कि दोनों जहान में अन्जाम के एतिबार से ग़लबा व नुसरत (मदद) मोमिनों का हिस्सा है।

फिर फ़रमाया- यह नामुम्किन है कि अल्लाह के दोस्त उसके दुश्मनों से मुहब्बत रखें। एक और जगह है- मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमान को छोड़कर काफ़िरों को अपना वली और दोस्त न बनायें, ऐसा करने वाले ख़ुदा के यहाँ किसी गिनती में नहीं। हाँ डर ख़ौफ़ के वक़्त मस्लेहत के तौर पर हो तो और बात है। अल्लाह तआला तुम्हें अपनी बुलन्द ज़ात से डरा रहा है। एक और जगह है- ऐ नबी! आप ऐलान कर दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप-दादे, बेटे-पोते, बीवी-बच्चे, कुनबा-क़बीला, माल व दौलत, तिजारत व हुनर, घर-बार वग़ैरह तुम्हें अल्लाह तआला, उसके रसूल और उसकी राह के जिहाद से ज़्यादा प्यारे, अज़ीज़ और महबूब हैं, तो तुम ख़ुदा के जल्द ही होने वाले अज़ाबों का इन्तिज़ार करो। इस क़िस्म के फ़ासिक़ों (बुरे लोगों और बदकारों) की रहबरी भी ख़ुदा की तरफ़ से नहीं होती।

हज़रत सईद बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. फ़रमाते हैं- यह आयत हज़रत अबू उबैदा आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह रज़ि. के बारे में उतरी है। जंगे बदर में उनके वालिद कुफ़्र की हिमायत में मुसलमानों के मुक़ाबले पर आये, आपने उन्हें क़त्ल कर दिया। हज़रत उमर रज़ि. ने अपने आख़िरी वक़्त में जबकि ख़िलाफ़त के लिये एक जमाअ़त को मुक़र्रर किया कि ये लोग मिलकर जिसे चाहें ख़लीफ़ा बना लें, उस वक़्त हज़रत अबू उबैदा रज़ि. के बारे में फ़रमाया था कि अगर यह होते तो मैं इन्हीं को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करता। और यह भी फ़रमाया गया है कि एक-एक सिफ़त अलग-अलग बुज़ुर्गों में थी। जैसे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने तो अपने वालिद को क़त्ल किया था और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने अपने बेटे अ़ब्दुर्रहमान के क़त्ल का इरादा किया था और हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ि. ने अपने भाई उबैद बिन उमैर को क़त्ल किया था और हज़रत उमर, हज़रत हमज़ा, हज़रत अ़ली और हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अपने क़रीबी रिश्तेदारों उतबा, शैबा और वलीद बिन उतबा को क़त्ल किया था। वल्लाहु आलम।

इसी संदर्भ में यह वाक़िआ़ भी आ सकता है कि जिस वक़्त रसूले ख़ुदा सल्ल. ने बदरी क़ैदियों के बारे में मुसलमानों से मश्विरा किया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने तो फ़रमाया कि उनसे फ़िदया ले लिया जाये ताकि मुसलमानों की माली मुश्किलात दूर हो जायें। मुश्रिकों से जिहाद करने के लिये लड़ाई के सामान जमा कर लें, और ये छोड़ दिये जायें। क्या अ़जब कि अल्लाह तआ़ला उनके दिल इस्लाम की तरफ़ फेर दे, आख़िर हैं तो हमारे ही कुनबे रिश्ते के। लेकिन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने अपनी राय इसके बिल्कुल ख़िलाफ़ पेश की कि या रसूलल्लाह! जिस मुसलमान का जो रिश्तेदार मुश्रिक है वह उसके हवाले कर दिया जाये और उसे हुक्म दिया जाये कि वह उसे क़त्ल कर दे। हम अल्लाह तआ़ला को दिखाना चाहते हैं कि हमारे दिलों में इन मुश्रिकों की कोई मुहब्बत नहीं, मुझे मेरा फ़ुलाँ रिश्तेदार सौंप दीजिए और हज़रत अ़ली के हवाले अ़क़ील को कर दीजिए और फ़ुलाँ शख़्स को फ़ुलाँ काफ़िर दे दीजिये, वग़ैरह।

फिर फ़रमाता है कि जो अपने दिल को अल्लाह के दुश्मनों की मुहब्बत से ख़ाली कर दे और मुश्रिक रिश्तेदारों से भी मुहब्बत छोड़ दे वह कामिल ईमान वाला शख़्स है, जिसके दिल में ईमान ने जड़ें जमा ली हैं और जिनकी क़िस्मत में नेकबख़्ती लिखी जा चुकी है और जिनकी निगाह में ईमान की ज़ीनत जच गयी है और उनकी ताईद अल्लाह तआ़ला ने अपने पास की रूह से की है, यानी उन्हें क़वी (मज़बूत व ताक़तवर) बना दिया है। यही बहती हुई नहरों वाली जन्नत में जायेंगे, जहाँ से कभी न निकाले जायेंगे, अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी ये ख़ुदा से ख़ुश। चूँकि उन्होंने ख़ुदा के लिये रिश्ते-कुनबे वालों को नाराज़ कर दिया था, अल्लाह

Maktab E Ashraf

तआ़ला उसके बदले उनसे राज़ी हो गया और उन्हें इस क़द्र दिया कि ये भी ख़ुश हो गये। ख़ुदाई लश्कर यही है और कामयाब गिरोह भी यही है, जो शैतानी लश्कर और नाकाम गिरोह के मुक़ाबिल है।

हज़रत अबू हाज़िम आरज रह. ने हज़रत ज़ोहरी रह. को लिखा कि जाह (रुतबा और क़द्र व इ़ज़्ज़त) दो क़िस्म की है, एक वह जिसे अल्लाह तआ़ला अपने औलिया (दोस्तों और नेक लोगों) के हाथों पर जारी करता है, जो हज़रात आ़म लोगों की निगाहों में नहीं जचते, जिनकी आ़म शोहरत नहीं होती, जिनकी सिफ़त अल्लाह के रसूल सल्ल. ने भी बयान फ़रमाई है कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों की निगाहों को दोस्त रखता है जो गुमनाम मुत्तक़ी नेकोकार हैं, अगर वे न आयें तो पूछताछ न हो और आ जायें तो आव-भगत न हो, उनके दिल हिदायत के चिराग़ हैं, हर सियाह रंग अंधेरे वाले फ़ितने से निकलते हैं, ये हैं वे अल्लाह के वली और दोस्त जिन्हें ख़ुदा ने अपना लश्कर फ़रमाया है और जिनकी कामयाबी का ऐलान किया है।

(इब्ने अबी हातिम)

मुस्नद नुऐम बिन हम्माद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी दुआ़ में फ़रमाया- ऐ अल्लाह! किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर (बुरे और बदकार) का कोई एहसान और सुलूक मुझ पर न रख, क्योंकि मैंने तेरी नाज़िल की हुई वही में पढ़ा है कि ईमान वाले अल्लाह के मुख़ालिफ़ों के दोस्त नहीं होते। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं- उलेमा का ख़्याल है कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी है जो बादशाह (यानी बड़े और सरदार लोगों) से मेल-जोल रखते हों। (अबू अहमद अ़स्करी)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मुजादला की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः हश्र

सूरः हश्र मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सही बुख़ारी शरीफ़ व सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत सईद इब्ने जुबैर रह. ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि यह सूरः हश्र है तो आपने फ़रमाया क़बीला बनू नज़ीर के बारे में उतरी है। बुख़ारी शरीफ़ की दूसरी रिवायत में है कि आपने फ़रमाया- यह सूरत सूरः बनू नज़ीर है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ هُوَ الَّذِىْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों और ज़मीन में (मख़्लूक़ात) हैं, (चाहे अपनी ज़बान से या अपने हाल से) और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (1) वही है जिसने (उन) अहले किताब काफ़िरों (यानी बनू-नज़ीर) को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान भी न

ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ ق فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصَارِ ٥ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى الدُّنْيَا ط وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ج وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ٥ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ٥

था कि वे (कभी अपने घरों से) निकलेंगे, और (ख़ुद) उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके किले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, सो उन पर ख़ुदा (का अज़ाब) ऐसी जगह से पहुँचा कि उनको ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से भी उजाड़ रहे थे, सो ऐ समझ रखने वालो! (इस हालत को देखकर) इबरत हासिल करो। (2) और अगर अल्लाह तआ़ला उनकी क़िस्मत में वतन से निकाला जाना न लिख चुकता तो उनको दुनिया ही में (क़त्ल की) सज़ा देता, और उनके लिए आख़िरत में दोज़ख़ का अज़ाब (तैयार) है। (3) यह इस सबब से है कि उन लोगों ने अल्लाह की और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त की है, और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको सख़्त सज़ा देने वाला है। (4) जो खजूरों के पेड़ के तने तुमने काट डाले या उन को उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो (दोनों बातें) ख़ुदा ही के हुक्म (और रज़ा) के मुवाफ़िक़ हैं, और ताकि काफ़िरों को ज़लील करे। (5)

यह दुनिया सबक़ लेने की जगह है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि आसमानों और ज़मीन की हर एक चीज़ अल्लाह तआ़ला की पाकी, तारीफ़, बड़ाई, बुज़ुर्गी और तौहीद में मशग़ूल है। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ.

यानी हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की पाकीज़गी और तारीफ़ बयान करती है। वह ग़लबे वाला, बुलन्द जनाब वाला और आ़ली सरकार वाला है, और अपने तमाम अहकाम और तमाम फ़रमान में हिक्मत वाला है जिसने अहले किताब के काफ़िरों यानी क़बीला बनू नज़ीर के यहूदियों को उनके घरों से निकाला। इसका मुख़्तसर क़िस्सा यह है कि मदीने में तशरीफ़ लाने के बाद हुज़ूर सल्ल. ने उन यहूदियों से सुलह कर ली थी कि न आप उनसे लड़ें न ये आप से लड़ें। लेकिन उन लोगों ने इस अ़हद को तोड़ दिया जिसकी वजह से ख़ुदा तआ़ला का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को उन पर ग़ालिब किया और आपने उन्हें यहाँ से निकाल दिया। मुसलमानों को कभी इसका ख़्याल तक न था। ख़ुद ये यहूदी

Maktab E Ashraf

भी समझ रहे थे कि इन मज़बूत क़िलों के होते हुए कोई उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता, लेकिन जब खुदा तआ़ला की पकड़ आयी, ये सब हिफ़ाज़ती बन्दोबस्त बेकार साबित हुए और अचानक इस तरह गिरफ़्त में आ गये कि हैरान रह गये, और आपने उन्हें मदीने से निकलवा दिया। बाज़ तो मुल्क शाम की उपजाऊ ज़मीनों में चले गये जो हश्र व नश्र (क़ियामत क़ायम होने) की जगह है, और बाज़ ख़ैबर की तरफ़ जा निकले। उनसे कह दिया गया था कि ऊँटों पर लादकर जो लेजा सको अपने साथ ले जाओ, इसलिये उन्होंने अपने घरों को उजाड़ दिया, तोड़-फोड़कर जो चीज़ें लेजा सकते थे अपने साथ उठा लीं, जो रह गयीं वो मुसलमानों के हाथ लगीं।

इस वाक़िए को बयान करके फ़रमाता है कि खुदा तआ़ला और उसके रसूल सल्ल. के मुख़ालिफ़ों का अन्जाम देखो और उससे इबरत (सबक़ व नसीहत) हासिल करो कि किस तरह उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब अचानक आ पड़ा, दुनिया में भी तबाह व बरबाद किये गये और आख़िरत में भी ज़लील व रुस्वा हो गये और दर्दनाक अ़ज़ाब में जा पड़े। अबू दाऊद में है कि इब्ने उबई और उसके मुश्रिक साथियों को जो औस व ख़ज़रज क़बीलों में से थे। काफ़िर क़ुरैश ने ख़त लिखा, यह ख़त उन्हें हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम बदर के मैदान से वापस लौटें उससे पहले मिल गया था, उसमें लिखा था कि तुम ने मुहम्मद (हुज़ूर सल्ल.) को अपने शहर में ठहराया है पस या तो तुम उससे लड़ाई करो और उन्हें निकाल बाहर करो या हम तुम्हें निकाल देंगे और अपने तमाम लश्करों को लेकर तुम पर हमला करेंगे और तुम्हारे तमाम लड़ाकों को हम क़त्ल कर देंगे और तुम्हारी औ़रतों लड़कियों को बाँदी बना लेंगे। खुदा की क़सम यह होकर ही रहेगा। अब तुम सोच समझ लो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके बुत-परस्त साथियों ने इस खत को पाकर आपस में मश्विरा किया और खुफ़िया तौर पर हुज़ूर सल्ल. से लड़ाई करने की तजवीज़ सर्वसम्मति से मन्ज़ूर कर ली।

जब हुज़ूर सल्ल. को ये साज़िशें मालूम हुई तो आप खुद उनके पास गये और उनसे फ़रमाया- मुझे मालूम हुआ है कि क़ुरैशियों का ख़त काम कर गया और तुम लोग अपनी मौत के सामान अपने हाथों करने लगे हो, तुम अपनी औलाद और अपने भाईयों को अपने हाथों ज़िबह करना चाहते हो, मैं तुम्हें फिर एक मर्तबा मौक़ा देता हूँ कि सोच-समझ लो और अपने इस बुरे इरादे से बाज़ आ जाओ। हुज़ूर सल्ल. के इस इरशाद ने उन पर असर किया और वे लोग अपनी-अपनी जगह चले गये, लेकिन क़ुरैश ने बदर से फ़ारिग़ होकर उन्हें फिर एक ख़त लिखा और इसी तरह धमकाया, उन्हें उनकी क़ुव्वत उनकी तायदाद और उनके मज़बूत क़िले याद दिलाये। ये फिर झाँसे में आ गये और बनू नज़ीर ने साफ़ तौर पर अ़हद के ख़िलाफ़ करने पर कमर बाँध ली और हुज़ूर सल्ल. के पास आदमी भेजा कि आप तीस आदमी लेकर आईये, हम में से भी तीस पढ़े हुए और जानने वाले आदमी आते हैं। हमारे और तुम्हारे दरमियान की जगह पर ये साठ आदमी मिलें और आपस में बातचीत हो, अगर ये लोग आपको सच्चा मान लें और ईमान ले आयें तो हम भी आपके साथ हैं। इस अ़हद तोड़ने की वजह से दूसरे दिन सुबह रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने लश्कर लेजाकर उनका घेराव कर लिया और उनसे फ़रमाया कि अब अगर तुम नये सिरे से अमन व अमान का अ़हद व पैमान करो तो ख़ैर! वरना तुम्हें अमन नहीं। उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया और लड़ने मरने पर तैयार हो गये, चुनाँचे दिन भर लड़ाई होती रही। दूसरे दिन सुबह को आप बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ लश्कर लेकर बढ़े और बनू नज़ीर को यूँही छोड़ा। उनसे भी यही फ़रमाया कि तुम नये सिरे से अ़हद व पैमान करो, उन्होंने मन्ज़ूर कर लिया और मुआ़हिदा (समझौता) हो गया। आप वहाँ से फ़ारिग़ होकर फिर बनू नज़ीर के पास आये, लड़ाई शुरू हुई, आख़िर उनको शिकस्त हुई और हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम मदीना ख़ाली कर

दो, जो सामान लेजाना चाहो ऊँटों पर लादकर ले जाओ। चुनाँचे उन्होंने घर-बार का सामान यहाँ तक कि दरवाज़े और लकड़ियाँ भी ऊँटों पर लादे और जिला-वतन हो गये। उनके खजूरों के दरख़्त मख़्सूस तौर पर रसूलुल्लाह सल्ल. के हो गये, अल्लाह तआला ने ये आपको ही दिलवा दिये। जैसा कि इसी सूरत की आयत नम्बर 6 में बयान किया गया है। लेकिन हुज़ूरे पाक सल्ल. ने अक्सर हिस्सा मुहाजिरीन को दे दिया, हाँ अन्सारियों में से सिर्फ़ दो ज़रूरत मन्दों को ही हिस्सा दिया वरना सब का सब मुहाजिरों में तक़सीम कर दिया, जो बाक़ी रह गया था यही वह माल था जो रसूलुल्लाह का सदक़ा था और जो बनू फ़ातिमा के हाथ लगा।

बनू नज़ीर की लड़ाई का मुख़्तसर क़िस्सा यह है कि मुश्रिकों ने धोखेबाज़ी से सहाबा किराम रज़ि. को बीरे मऊना (एक जगह का नाम है) में शहीद कर दिया, जिनकी तायदाद सत्तर थी। उनमें एक हज़रत अ़मर बिन उमैया ज़मरी रज़ि. बचकर भाग निकले, मदीना शरीफ़ की तरफ़ आते-आते मौक़ा पाकर उन्होंने क़बीला बनू आ़मिर के दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया, हालाँकि यह क़बीला रसूलुल्लाह सल्ल. से मुआ़हिदा कर चुका था और आपने उन्हें अमन व अमान दे रखा था, लेकिन इसकी ख़बर हज़रत अ़मर को न थी। जब यह मदीना पहुँचे और हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया तुमने उन्हें क़त्ल कर डाला? अब मुझे उनके वारिसों को दियत यानी क़त्ल का जुर्माना व ख़ून-बहा अदा करना पड़ेगा। बनू नज़ीर और बनू आ़मिर में भी आपस में दोस्ती, एक दूसरे का साथ देने का अ़हद और आपस में समझौता था, इसलिये हुज़ूर सल्ल. उनकी तरफ़ चले ताकि कुछ ये दें कुछ आप दें और बनू आ़मिर को राज़ी कर लिया जाये। क़बीला बनू नज़ीर की गढ़ी (आबादी) मदीना की पूर्वी दिशा में कई मील के फ़ासले पर थी, जब आप यहाँ पहुँचे तो उन्होंने कहा हाँ हुज़ूर हम मौजूद हैं, अभी अभी जमा करके अपने हिस्से के मुताबिक़ आपकी ख़िदमत में हाज़िर करते हैं। उधर आप से हटकर ये लोग आपस में मश्चिरा करने लगे कि इससे बेहतर मौक़ा कब हाथ लगेगा? इस वक़्त आप क़ब्ज़े में हैं, आओ काम तमाम कर डालो। चुनाँचे यह मश्चिरा हुआ कि जिस दीवार से आप लगे बैठे हैं उस घर पर कोई चढ़ जाये और वहाँ से बड़ा सा पत्थर आप पर फेंक दे कि आप दब जायें। अ़मर बिन जिहाश बिन कअ़ब इस काम पर मुक़र्रर हुआ, उसने आपकी जान लेने का बेड़ा उठाया और छत पर चढ़ गया। चाहता था कि पत्थर लुढ़का दे, इतने में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को हुज़ूर सल्ल. के पास भेजा और हुक्म दिया कि आप यहाँ से उठ खड़े हों। चुनाँचे आप फ़ौरन हट गये और यह बुरी फ़ितरत वाले अपने बुरे इरादे में नाकाम रहे। आपके साथ उस वक़्त चन्द सहाबा थे जैसे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह, आप यहाँ से फ़ौरन मदीना शरीफ़ की तरफ़ चल पड़े। उधर जो सहाबा आपके साथ न थे और मदीना में आपके मुन्तज़िर थे, उन्हें देर लगने के सबब ख़्याल हुआ और वे आपको ढूँढने के लिये निकल खड़े हुए लेकिन एक शख़्स से मालूम हुआ कि आप मदीना शरीफ़ पहुँच गये हैं। चुनाँचे ये लोग वापस आये, पूछा कि हुज़ूर क्या मामला है? आपने सारा क़िस्सा सुनाया और हुक्म दिया कि जिहाद की तैयारी करो। मुजाहिदीन ने कमरें बाँध लीं और राहे ख़ुदा में निकल खड़े हुए।

यहूदियों ने लश्करों को देखकर अपने क़िले के फाटक बन्द कर दिये और अन्दर शरण ले ली। आपने घेराव कर लिया। फिर हुक्म दिया कि उनके खजूर के दरख़्त जो आस-पास हैं वे काट दिये जायें और जला दिये जायें। अब तो यहूद चीख़ने लगे कि यह क्या हो रहा है? आप तो ज़मीन में फ़साद करने (ख़राबी और बिगाड़ फैलाने) से औरों को रोकते थे और फ़सादियों को बुरा कहते थे, फिर यह क्या होने लगा? पस इधर

तो दरख़्त कटने का ग़म और उधर जो कुमक आने वाली थी उसकी तरफ़ से मायूसी, इन दोनों चीज़ों ने उन यहूदियों की कमर तोड़ दी। कुमक का वाक़िआ यह है कि बनू औफ़ बिन ख़ज़्रज का क़बीला जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल और वदीआ़ और मालिक बिन अबू कोक़ल और सुवैद और दाअ़िस वग़ैरह थे, उन लोगों ने बनू नज़ीर को कहलवा भेजा था कि तुम मुक़ाबले पर जमे रहो और क़िला हवाले न करो हम तुम्हारी मदद पर हैं, तुम्हारे दुश्मन हमारे दुश्मन हैं, हम तुम्हारे साथ मिलकर उससे लड़ेंगे और अगर तुम निकले तो हम भी निकलेंगे, लेकिन अब तक उनका यह वायदा पूरा न हुआ और उन्होंने यहूदियों की कोई मदद न की। इधर उनके दिल मरऊब हो गये तो उन्होंने दरख़्वास्त की- या रसूलल्लाह! हमारी जान बख़्शी कीजिए हम मदीना छोड़ जाते हैं, लेकिन हम अपना जो माल ऊँटों पर लादकर ले जा सकें वह हमें दे दिया जाये। आपने उन पर रहम खाकर उनकी यह दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली और ये लोग यहाँ से चले गये। जाते वक़्त अपने दरवाज़ों तक को उखाड़ कर ले गये। घरों को गिरा गये और मुल्क शाम और ख़ैबर में जाकर आबाद हो गये। उनके बाक़ी के माल ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल. के हो गये कि आप जिस तरह चाहें उन्हें ख़र्च करें। चुनाँचे आपने शुरू के मुहाजिरीन को यह माल तक़सीम कर दिया, हाँ अन्सार में से सिर्फ़ दो शख़्सों को यानी सहल बिन हुनैफ़ और अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा को दिया, इसलिये कि ये दोनों हज़रात ग़रीब और ज़रूरत मन्द थे। बनू नज़ीर में से सिर्फ़ दो शख़्स मुसलमान हुए जिनके माल उन्हीं के पास रहे, एक तो यामीन बिन उमैर जो अ़मर बिन जिहाश के चचा के लड़के का लड़का था। यह उमैर वह है जिसने हुज़ूर सल्ल. पर पत्थर फेंकने का बेड़ा उठाया था। दूसरे अबू सअ़्द बिन वहब।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत यामीन से फ़रमाया कि ऐ यामीन! तेरे इस चचाज़ाद भाई ने देख तो मेरे साथ किस क़द्र बुरा बर्ताव बरता और मुझे नुकसान पहुँचाने की किस बेबाकी से कोशिश की? हज़रत यामीन रज़ि. ने एक शख़्स को कुछ देकर अ़मर को क़त्ल करा दिया। सूरः हश्र बनू नज़ीर के इसी वाक़िए के बयान में उतरी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिसे इसमें शक हो कि मेहशर की ज़मीन शाम का मुल्क है वह इस आयत को पढ़ ले।

उन यहूदियों से जब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया कि तुम यहाँ से निकल जाओ तो उन्होंने कहा हम कहाँ जायें? आपने फ़रमाया मेहशर की ज़मीन की तरफ़। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल. ने बनू नज़ीर को जिला-वतन किया (वतन से निकाला) तो फ़रमाया यह अव्वले हश्र (पहला जमा होना) है और हम भी इसके पीछे ही पीछे हैं। (इब्ने जरीर) बनू नज़ीर के उन क़िलों का घेराव सिर्फ़ छह रोज़ रहा था। घेराव करने वालों को क़िले की मज़बूती, यहूदियों की अधिकता, उनकी एकता और मुनाफ़िक़ों की साज़िशें और ख़ुफ़िया चालें वग़ैरह देखकर हरगिज़ यह यक़ीन न था कि इस क़द्र जल्द ये क़िला ख़ाली कर देंगे। उधर ख़ुद यहूद भी अपने क़िले की मज़बूती पर नाज़ाँ (इतरा रहे) थे और जानते थे कि वे हर तरह सुरक्षित हैं, लेकिन अल्लाह का हुक्म ऐसी जगह से आ गया कि उनके ख़्याल में भी न था। यही अल्लाह तआ़ला का दस्तूर है कि मक्कार अपनी मक्कारी में रहते हैं और बेख़बरी में उन पर अ़ज़ाब आ जाता है। उनके दिलों में रौब छा गया और भला रौब क्यों न छाता, घेराव करने वाले वे थे जिन्हें ख़ुदा की तरफ़ से रौब दिया गया था कि दुश्मन महीने भर की राह पर हो और वहीं उसका दिल दहलने लगता था। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

यहूदी अपने हाथों अपने घरों को बरबाद करने लगे, छतों की लकड़ी और दरवाज़े ले जाने के लिये

तोड़ने फोड़ने शुरू कर दिये। मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि मुसलमानों ने भी उनके घर तोड़े इस तरह कि ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गये उनके जो-जो मकानात वग़ैरह क़ब्ज़े में आते गये। इसी तरह ख़ुद यहूद भी अपने मकानों को आगे से तो महफ़ूज़ करते जाते थे और पीछे से तोड़कर निकलने के रास्ते बनाते जाते थे।

फिर फ़रमाता है- ऐ आँखों वालो! सबक़ हासिल करो और उस ख़ुदा से डरो जिसकी लाठी में आवाज़ नहीं। अगर उन यहूदियों के मुक़द्दर में जिला-वतनी (देस निकाला) न होती तो उन्हें इससे भी सख़्त अ़ज़ाब किया जाता। ये क़त्ल होते और क़ैद कर लिये जाते, वग़ैरह वग़ैरह। फिर आख़िरत के सख़्त और बदतरीन अ़ज़ाब भी उनके लिये तैयार हैं। बनू नज़ीर की यह लड़ाई जंगे बदर के छह माह बाद हुई। माल जो ऊँटों पर लद जायें उन्हें ले जाने की इजाज़त थी, मगर हथियार ले जाने की इजाज़त न थी। ये उस क़बीले के लोग थे जिन्हें इससे पहले कभी जिला-वतनी (वतन से निकलना) न हुई थी। हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रह. के क़ौल के मुताबिक़ इस सूरत की शुरू की पाँच आयतें इसी वाक़िए के बयान में नाज़िल हुई हैं।

"जला-अ" के मायने क़त्ल व फ़ना के भी किये गये हैं। हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें जिला-वतनी (देस निकाले) के वक़्त तीन-तीन में एक-एक ऊँट और एक-एक मश्क दी थी। इस फ़ैसले के बाद भी हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि. को उनके पास भेजा था और उन्हें इजाज़त दी थी कि तीन दिन में अपना सामान ठीक करके चले जायें। इस दुनियावी अ़ज़ाब के साथ ही आख़रत के अ़ज़ाब का भी बयान हो रहा है कि वहाँ भी उनके लिये निश्चित और लाज़िमी तौर पर जहन्नम की आग है।

उन पर इस सख़्ती की असली वजह यह है कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्ल. के हुक्म के ख़िलाफ़ किया और एक तरीक़े से तमाम नबियों को झुठलाया, इसलिये कि हर नबी ने आपके बारे में पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की थी। ये लोग आपको पूरी तरह जानते थे बल्कि औलाद को उनका बाप जिस क़द्र पहचानता है उससे भी ज़्यादा ये लोग नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. को जानते थे, लेकिन फिर भी सरकशी और हसद (जलन) की वजह से माना नहीं, बल्कि मुक़ाबले पर तुल गये। और यह ज़ाहिर बात है कि अल्लाह तआ़ला भी अपने मुख़ालिफ़ों पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाता है।

"लीनतिन्" कहते हैं अच्छी खजूरों के पेड़ों को, अ़जवा और बरनी जो खजूर की क़िस्में हैं, बाज़ हज़रात के क़ौल के मुताबिक़ वो "लीनतिन" में दाख़िल नहीं, और बाज़ कहते हैं कि सिर्फ़ अ़जवा नहीं, और बाज़ कहते हैं कि हर क़िस्म की खजूरें इसमें दाख़िल हैं। बुवैरा भी दाख़िल है। यहूदियों ने जो बतौर ताने के कहा था कि खजूरों के दरख़्त कटवा कर अपने क़ौल के ख़िलाफ़ अ़मल करके ज़मीन में फ़साद क्यों फैलाते हो? यह उसका जवाब है कि जो कुछ हो रहा है वह अल्लाह का हुक्म है और उसकी इजाज़त से उसके दुश्मनों को ज़लील व नाकाम करने और उन्हें पस्त व बदनसीब करने के लिये हो रहा है। जो दरख़्त (पेड़) बाक़ी रखे जायें वो इजाज़त से, और जो काटे जाते हैं वो भी मस्लेहत के साथ। यह भी मरवी है कि बाज़ मुहाजिरीन ने बाज़ को उन दरख़्तों के काटने से मना किया था कि आख़िर ये मुसलमानों को माले ग़नीमत के तौर पर मिलने वाले हैं, फिर इन्हें क्यों काटा जाये? जिस पर यह आयत उतरी कि रोकने वाले भी अपनी जगह सही हैं और काटने वाले भी हक़ पर हैं। उनकी नीयत मुसलमानों के नफ़े की है और इनकी नीयत काफ़िरों को तकलीफ़ देने, गुस्सा दिलाने और उन्हें उनकी शरारत का मज़ा चखाने की है, और यह भी इरादा है कि इससे जलकर वे गुस्से में बिफर कर मैदान में आ जायें तो फिर दो-दो हाथ हो जायें और दीन के दुश्मन अपने अन्जाम तक पहुँचा दिये जायें।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने यह फ़ेल कर तो लिया फिर डरे कि ऐसा न हो कि काटने में या बाक़ी

छोड़ने में ख़ुदा की तरफ़ से कोई पकड़ हो, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल. से पूछा और यह आयत नाज़िल हुई। यानी दोनों बातों पर अज्र है, काटने पर भी और छोड़ने पर भी। बाज़ रिवायतों में है कि कटवाये भी थे और जलवाये भी थे। बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों पर उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने एहसान किया और उनको मदीना शरीफ़ में ही रहने दिया, लेकिन आख़िरकार जब ये भी मुक़ाबले पर आये और शिकस्त खाई तो इनके लड़ने वाले मर्द तो क़त्ल किये गये और औरतें व बच्चे और माल मुसलमानों में तक़सीम कर दिये गये। हाँ जो लोग हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हो गये और ईमान लाये वे बच गये। फिर मदीने से तमाम यहूदियों को निकाल दिया। बनू कैनुक़ाअ़ को भी जिनमें से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे और बनू हारिसा को भी और तमाम यहूदियों को जिला-वतन किया। इन तमाम वाक़िआ़त को अ़रब के शायरों ने अपने अश्आ़र में भी निहायत ख़ूबी से अदा किया है, जो सीरत इब्ने इस्हाक़ में मरवी हैं। यह वाक़िआ़ बक़ौल इब्ने इस्हाक़ के उहुद और बीरे मऊना के बाद का है, और बक़ौल उरवा बदर के छह महीने बाद का है। वल्लाहु आलम।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً ۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۗ وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ○

और जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को उनसे दिलवाया, सो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊँट, लेकिन अल्लाह तआ़ला (की आ़दत है कि) अपने रसूलों को जिस पर चाहे (ख़ास तौर पर) मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। (6) जो कुछ अल्लाह तआ़ला (इस तौर पर) अपने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को दूसरी बस्तियों के (काफ़िर) लोगों से दिलवा दे (जैसे फ़िदक और एक हिस्सा ख़ैबर का), सो वह (भी) अल्लाह का हक़ है और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का और (आपके) रिश्तेदारों का और यतीमों का और ग़रीबों का और मुसाफ़िरों का ताकि वह (ग़नीमत का माल) तुम्हारे मालदारों के क़ब्ज़े में न आ जाए। और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुमको जो कुछ दे दिया करें वह ले लिया करो, और जिस चीज़ (के लेने) से तुमको रोक दें (और अलफ़ाज़ के आ़म होने से यही हुक्म है अफ़आ़ल और अहकाम में भी) तुम रुक जाया करो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला (मुख़ालफ़त करने पर) सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)

माले ग़नीमत और उसका हक़दार

"फ़ै" किस माल को कहते हैं? उसकी सिफ़त क्या है? उसका हुक्म क्या है? यह सब बयान हो रहा है। पस फ़ै काफ़िरों के उस माल को कहते हैं जो उनसे लड़े-भिड़े बग़ैर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ जाये, जैसे बनू नज़ीर का यह माल था जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा, कि मुसलमानों ने अपने घोड़े या ऊँट उस पर नहीं दौड़ाये थे, यानी उन काफ़िरों से आमने सामने का कोई मुक़ाबला और लड़ाई नहीं हुई बल्कि उनके दिल खुदा ने अपने रसूल की हैबत से भर दिये और वे अपने क़िले ख़ाली करके चले गये जो मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गये, इसे "फ़ै" कहते हैं, और यह माल हुज़ूर सल्ल. का हो गया, आप जिस तरह चाहें उसमें तसर्रुफ़ करें (अपना इख़्तियार इस्तेमाल करें)। पस आपने नेकी और ख़ैर के कामों में उसे ख़र्च किया जिसका बयान इसके बाद वाली दूसरी आयत में है। पस फ़रमाता है कि बनू नज़ीर का जो माल बतौर फ़ै के अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को दिलवाया, जिस पर मुसलमानों ने अपने घोड़े या ऊँट न दौड़ाये थे बल्कि सिर्फ़ खुदा ने अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल को उस पर ग़लबा दे दिया था और खुदा तआ़ला पर यह क्या मुश्किल है? वह तो हर-हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, न उस पर किसी का ग़लबा न उसे कोई रोकने वाला, बल्कि सब पर ग़ालिब वही, सब उसके फ़रमान के ताबे हैं।

फिर फ़रमाया कि जो शहर इस तरह फ़तह किये जायें उनके माल का यही हुक्म है कि रसूलुल्लाह सल्ल. उसे अपने क़ब्ज़े में करेंगे, फिर उन्हें देंगे जिनका बयान इस आयत और इसके बाद वाली आयत में है। यह है फ़ै के माल का मसरफ़ (ख़र्च का मौक़ा) और उसके ख़र्च का हुक्म। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि बनू नज़ीर के माल बतौर फ़ै के ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल. के हो गये थे, आप उसमें से अपने घर वालों को साल भर का ख़र्च देते थे और जो बचा रहता उसे लड़ाई और जंग के उपकरण और सामान ख़रीदने में ख़र्च करते। (सुनन व मुस्नद वग़ैरह) अबू दाऊद में हज़रत मालिक बिन औस रज़ि. से रिवायत है कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने मुझे दिन चढ़े बुलाया, मैं घर गया तो देखा कि आप एक चौकी पर जिस पर कोई कपड़ा वग़ैरह न था बैठे हुए हैं। मुझे देखकर फ़रमाया- तुम्हारी क़ौम के चन्द लोग आये हैं, मैंने उन्हें कुछ दिया है, तुम उसे लेकर उनमें तक़सीम कर दो। मैंने कहा अच्छा होता अगर जनाब किसी और को यह काम सौंपते। आपने फ़रमाया नहीं! तुम ही करो। मैंने कहा बहुत बेहतर। इतने में आपका दारोग़ा यरफ़ा आया और कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन! हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास तशरीफ़ लाये हैं। क्या उन्हें इजाज़त है? आपने फ़रमाया हाँ आने दो। चुनाँचे ये हज़रात तशरीफ़ लाये, यरफ़ा फिर आया और कहा- अमीरुल-मोमिनीन! हज़रत अ़ब्बास और हज़रत अ़ली इजाज़त तलब कर रहे हैं। आपने फ़रमया इजाज़त है। ये दोनों हज़रात भी तशरीफ़ लाये। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन! मेरा और इनका (यानी हज़रत अ़ली का) फ़ैसला कीजिए। तो पहले जो चारों बुज़ुर्ग आये थे उनमें से भी बाज़ ने कहा हाँ अमीरुल-मोमिनीन इन दोनों हज़रात के दरमियान फ़ैसला कर दीजिए और इन्हें राहत पहुँचाईये।

हज़रत मालिक बिन औस फ़रमाते हैं कि उस वक़्त मेरे दिल में ख़्याल आया कि इन चारों हज़रात को इन दोनों हज़रात ने ही अपने से पहले यहाँ भेजा है। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- ठहरो, फिर उन चारों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया- तुम्हें उस खुदा की क़सम जिससे आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क्या तुम्हें मालूम है कि रसूले खुदा सल्ल. ने फ़रमाया है कि हमारा वरसा (मीरास का माल) बाँटा नहीं जाता, हम

जो कुछ छोड़ जायें वह सदक़ा है। उन चारों हज़रात ने इसका इक़रार किया। फिर आप उन दोनों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और इसी तरह क़सम देकर उनसे भी यही सवाल किया और उन्होंने भी इक़रार किया। फिर आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के लिये एक ख़ास्सा (विशेषता) किया था जो और किसी के लिये न था, फिर आपने यही आयत (यानी आयत नम्बर 6, जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) पढ़ी और फ़रमाया- बनू नज़ीर के माल अल्लाह तआ़ला ने बतौर फ़ै के अपने रसूल सल्ल. को दिये थे। ख़ुदा की क़सम न तो मैंने तुम पर इसमें किसी को तरजीह दी और न ख़ुद ही उसे ले लिया। रसूलुल्लाह सल्ल. अपना और अपने अहल (घर वालों) का साल भर का ख़र्च उसमें से ले लेते थे और बाक़ी बैतुल-माल को अ़ता फ़रमा देते थे। फिर उन चारों बुज़ुर्गों को इसी तरह क़सम देकर पूछा- क्या तुम्हें यह मालूम है? उन्होंने कहा हाँ। फिर इन दोनों से क़सम देकर पूछा और इन्होंने भी हाँ में जवाब दिया।

फिर फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल. के दुनिया से तशरीफ़ लेजाने के बाद हज़रत अबू बक्र वाली (ख़लीफ़ा) बनें और तुम दोनों ख़लीफ़ा-ए-रसूल के पास आये। ऐ अ़ब्बास! तुम तो अपनी रिश्तेदारी का वास्ता देकर अपने चचाज़ाद भाई के माल में से अपना वरसा तलब करते थे और यह भी हज़रत अ़ली अपना हक़ जताकर अपनी बीवी यानी हज़रत फ़ातिमा की तरफ़ से उनके वालिद (हुज़ूर सल्ल.) के माल से वरसा (मीरास का हिस्सा) तलब करते थे, जिसके जवाब में तुम दोनों से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है- "हमारा वरसा नहीं बाँटा जाता, हम जो छोड़ जायें वह सदक़ा है" अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है कि हज़रत अबू बक्र यक़ीनन सही बात कहने वाले, नेकोकार, सही रास्ते पर चलने वाले और हक़ की पैरवी करने वाले थे। चुनाँचे इस माल की निगरानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने की।

आपका इन्तिक़ाल हो जाने के बाद आपका और रसूले ख़ुदा सल्ल. का ख़लीफ़ा मैं बना और वह माल मेरी निगरानी और ज़िम्मेदारी में रहा। फिर आप दोनों के दोनों एक मश्विरे से मेरे पास आये और मुझसे उसे माँगा जिसके जवाब में मैंने कहा कि अगर तुम इस शर्त से उस माल को अपने क़ब्ज़े में करो कि जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ल. उसे ख़र्च करते थे तुम भी करते रहोगे तो मैं तुम्हें सौंप देता हूँ। तुम ने इस बात को क़बूल किया और ख़ुदा तआ़ला को बीच में देकर तुमने उस माल की निगरानी और ज़िम्मेदारी ली। फिर तुम जो अब आये हो तो क्या उसके अ़लावा कोई और फ़ैसला चाहते हो? क़सम ख़ुदा की क़ियामत तक उसके सिवा इसका कोई फ़ैसला मैं नहीं कर सकता। हाँ यह हो सकता है कि अगर तुम अपने वायदे के मुताबिक़ उस माल की निगरानी और उसका ख़र्च नहीं कर सकते तो तुम उसे फिर लौटा दो (ताकि मैं ख़ुद उसे उसी तरह ख़र्च करूँ जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ल. करते थे और जिस तरह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त में और आज तक होता रहा)।

मुस्नद अहमद में है कि लोग नबी सल्ल. को अपने खजूरों के पेड़ वग़ैरह दे दिया करते थे यहाँ तक कि बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर के माल आपके क़ब्ज़े में आये तो अब आपने उन लोगों को उनके दिये हुए माल वापस देने शुरू किये। हज़रत अनस रज़ि. को भी उनके घर वालों ने आपकी ख़िदमत में भेजा कि हमारा दिया हुआ भी सब या जितना चाहें हमें वापस कर दें। मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल. को याद दिलाया, आपने वह सब वापस करने को फ़रमाया, लेकिन आप यह सब हज़रत उम्मे ऐमन को अपनी तरफ़ से दे चुके थे, उन्हें जब मालूम हुआ कि यह सब मेरे क़ब्ज़े से निकल जायेगा तो उन्होंने आकर मेरी गर्दन में कपड़ा डाल दिया और मुझसे फ़रमाने लगीं- ख़ुदा की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, हुज़ूर तुझे यह

नहीं देंगे, आप तो मुझे वह सब कुछ दे चुके। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ऐ उम्मे ऐमन! तुम न घबराओ, हम तुम्हें इसके बदले इतना-इतना देंगे, लेकिन वह न मानीं और यही कहे चली गयीं। आपने फ़रमाया- अच्छा और इतना-इतना हम तुम्हें दे देंगे, लेकिन वह अब भी ख़ुश न हुईं और वही फ़रमाती रहीं। आपने फिर फ़रमाया लो हम तुम्हें इतना-इतना और देंगे, यहाँ तक कि जितना उन्हें दे रखा था उससे जब तक़रीबन दस गुना ज़्यादा देने का वायदा रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया तब आप राज़ी होकर ख़ामोश हो गयीं और हमारा माल हमें मिल गया।

यह फ़ै का माल जिन जगहों में ख़र्च होगा यही जगहें ग़नीमत के माल के ख़र्च करने की भी हैं, और सूरः अनफ़ाल में उनकी पूरी तशरीह व तफ़सील के साथ कामिल तफ़सीर अल्हम्दु लिल्लाह गुज़र चुकी है, इसलिये हम यहाँ बयान नहीं करते।

फिर फ़रमाता है कि फ़ै के माल के ख़र्च करने की जगहें हमने इसलिये वज़ाहत के साथ बयान कर दीं कि यह मालदारों के हाथ लगकर कहीं उनका लुक़्मा न बन जाये कि अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ वे उसे उड़ायें और मिस्कीनों (ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों) के हाथ कुछ भी न लगे। फिर फ़रमाता है कि जिस काम के करने को मेरे पैग़म्बर तुमसे कहें तुम उसे करो, और जिस काम से वह तुम्हें रोकें तुम उससे रुक जाओ। यक़ीन मानो जिसका वह हुक्म करते हैं वह भलाई का काम होता है और जिससे वह रोकते हैं वह बुराई का काम होता है। इब्ने अबी हातिम में है कि एक औरत हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास आयी और कहा- आप गूदने से (यानी चमड़े पर या हाथों पर औरतें सूई वग़ैरह से गुदवाकर जो तिलों की तरह के निशान वग़ैरह बना लेती हैं, उससे) और बालों में बाल मिला लेने से (जो औरतें अपने बालों को लम्बा ज़ाहिर करने के लिये करती हैं, उससे) मना फ़रमाते हैं, तो क्या यह मनाही अल्लाह की किताब में है? या हदीसे रसूलुल्लाह में? आपने फ़रमाया किताबुल्लाह में भी और हदीसे रसूलुल्लाह में भी, दोनों में इस मनाही को पाता हूँ। उस औरत ने कहा ख़ुदा की क़सम पूरे क़ुरआन पाक को मैंने पढ़ा है, ध्यान से देखा है और ख़ूब देखभाल (तलाश) की है लेकिन मैंने तो कहीं इस मनाही को नहीं पाया। आपने फ़रमाया क्या तुमने यह आयत नहीं पढ़ी?

مَآ اٰتٰـكُمُ الرَّسُوْلُ...... الخ.

(इसी सूरत की आयत नम्बर 7, जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) उसने कहा हाँ यह तो पढ़ी है। फ़रमाया (क़ुरआन से साबित हुआ कि रसूल सल्ल. का हुक्म और आपकी मनाही क़ाबिले अ़मल हैं, अब सुनो) ख़ुद मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि आपने गूदने से और बालों में बाल मिलाने से पेशानी और चेहरे के बाल नोचने से मना फ़रमाया है (ये भी औरतें अपनी ख़ूबसूरती ज़ाहिर करने के लिये करती हैं और इस ज़माने में तो मर्द भी ख़ूब ज़्यादा करते हैं)। उस औरत ने कहा- हज़रत यह तो आपकी घर वालियाँ भी करती हैं। आपने फ़रमाया जाओ देख आओ। वह गयीं, देखकर आयीं और कहने लगीं हज़रत माफ़ कीजिए ग़लती हुई, इन बातों में से कोई बात आपके घराने वालियों में मैंने नहीं देखी। आपने फ़रमाया- तुम भूल गयीं कि ख़ुदा के नेक बन्दे (हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम) ने क्या फ़रमाया था:

مَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ.

यानी मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हें जिस चीज़ से रोकूँ ख़ुद मैं उसके ख़िलाफ़ करूँ।

मुस्नद इमाम अहमद और बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने फ़रमाया- अल्लाह

Muktab E Ashraf

तआ़ला लानत भेजता है उस औरत पर जो गुदवाये और गूदे, और जो अपनी पेशानी के बाल ले (यानी काटे या उखाड़े) और जो ख़ूबसूरती के लिये अपने सामने के दाँतों में कुशादगी (खुलापन और छेद) करे और अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई पैदाईश (शक्ल व सूरत) को बदलना चाहे।

यह सुनकर बनू असद की एक औरत जिनका नाम उम्मे याक़ूब था, आपके पास आयीं और पूछा- क्या आपने इस तरह फ़रमाया है? आपने जवाब दिया हाँ मैं उस पर लानत क्यों न करूँ जिस पर अल्लाह के रसूल सल्ल. ने लानत की है? और जो क़ुरआन में मौजूद है? उसने कहा मैंने पूरा क़ुरआन जितना भी दोनों पट्ठों के दरमियान है शुरू से आख़िर तक पढ़ा है, लेकिन मैंने तो यह हुक्म कहीं नहीं पाया? आपने फ़रमाया अगर तुम सोच-समझकर पढ़तीं तो ज़रूर पातीं। क्या तुमने यह आयत नहीं पढ़ी?

مَآاٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ..... الخ.

(यानी यही आयत जिसमें बयान है कि जो रसूल तुम को दें यानी हुक्म करें उसको ले लो और जिस चीज़ से मना करें उससे रुक जाओ) उसने कहा हाँ यह तो पढ़ी है। फिर आपने वह हदीस सुनाई। उसने आपके घर वालों के बारे में कहा। फिर देखकर आयीं और माफ़ी चाही। उस वक़्त आपने फ़रमाया अगर मेरी घर वाली ऐसा करती तो मैं उससे मिलना छोड़ देता। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्ल. ने फ़रमाया- जब मैं तुम्हें कोई हुक्म दूँ तो जहाँ तक तुम से हो सके उसे बजा लाओ (यानी उसका पालन करो), और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोकूँ तो तुम रुक जाओ। नसाई में हज़रत उमर और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने कद्दू के बर्तन में और सब्ज़ ठलिया में और खजूर की लकड़ी के कुरेदे हुए बर्तन में और राल की रंगी हुई ठलिया में नबीज़ (खजूर का शीरा) बनाने से (यानी खजूर या किशमिश वग़ैरह को भिगोकर रखने से) मना फ़रमाया। फिर इसी आयत की तिलावत की।

फिर फ़रमाता है कि अ़ज़ाब से बचने के लिये उसके अहकाम बजा लाओ और उसकी ममनूआ़त (मना की हुई बातों और चीज़ों) से बचते रहो। याद रखो कि उसकी नाफ़रमानी, मुख़ालफ़त, इनकार करने वालों को और उसके मना किये हुए कामों के करने वालों को वह सख़्त सज़ा देता है और दुख की मार मारता है।

लِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ	(और) उन ज़रूरतमन्द मुहाजिरीन का (ख़ास तौर पर) हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से (ज़ुल्म व ज़बरदस्ती से) अलग कर दिए गए। वे अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल (यानी जन्नत) और रज़ा के तालिब हैं, और वे अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन) की मदद करते हैं, (और) यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (8) और (तथा) उन लोगों का (भी हक़ है) जो दारुल-इस्लाम (यानी मदीना) में उन (मुहाजिरों) के (आने से) पहले से क़रार पकड़े हुए हैं। जो उनके पास हिजरत

Maktab E Ashraf

حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۛ وَمَنْ يُّوْقَ
شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا
اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا
بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا
لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

करके आता है उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं। और मुहाजिरों को जो कुछ मिलता है उससे ये (अन्सार हज़रात) अपने दिलों में कोई रश्क नहीं पाते, और अपने से मुक़द्दम रखते हैं अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो, और (वाक़ई) जो शख़्स अपनी तबीयत की कन्जूसी से महफ़ूज़ रखा जाए ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9) और उन लोगों का (भी उस फ़ै के माल में हक़ है) जो उनके बाद आए। जो (इन ज़िक्र हुए लोगों के हक़ में) दुआ करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको बख़्श दे और हमारे भाईयों को (भी) जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं, और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न होने दीजिए। ऐ हमारे रब! आप बड़े शफ़क़त वाले (और) रहम करने वाले हैं। (10)

ग़नीमत का माल कहाँ ख़र्च हो और किसे दिया जाये?

ऊपर बयान हुआ था कि फ़ै का माल यानी काफ़िरों का वह माल जो मुसलमानों के क़ब्ज़े में मैदाने जंग में लड़े-भिड़े बग़ैर आ गया हो, उसके मालिक रसूलुल्लाह सल्ल. हैं। फिर आप यह माल किसे देंगे? इसका बयान भी ऊपर हुआ था। अब इन आयतों में भी उन्हें फ़ै के माल के हक़दारों का मज़ीद बयान हो रहा है कि उसके हक़दार वे ग़रीब मुहाजिर हैं जिन्होंने अल्लाह को राज़ी करने के लिये अपनी क़ौम को नाराज़ कर लिया, यहाँ तक कि उन्हें अपना प्यारा वतन और ख़ून-पसीना एक करके जमा किया हुआ माल वग़ैरह सब छोड़-छाड़कर चल देना पड़ा। अल्लाह के दीन की और उसके रसूल की मदद में बराबर मश्ग़ूल हैं, ख़ुदा के फ़ज़्ल व ख़ुशनूदी के चाहने वाले हैं, यही सच्चे लोग हैं जिन्होंने अपना फ़ेल अपने क़ौल के मुताबिक़ कर दिखाया। ये गुण मुहाजिरीन हज़रात में थे।

फिर अन्सार की तारीफ़ बयान हो रही है और उनकी फ़ज़ीलत, रुतबे और बुज़ुर्गी का इज़हार हो रहा है। उनकी दरिया दिली, नेक-नफ़्सी, ईसार व सख़ावत का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने मुहाजिरीन से पहले ही दारुल-हिजरत (हिजरत के स्थान) मदीना में अपनी रिहाईश रखी और ईमान पर क़ायम रहे, मुहाजिर पहुँचें इससे पहले ही ये ईमान ला चुके थे, बल्कि बहुत से तो मुहाजिरीन से भी पहले ला चुके थे। सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर के मौक़े पर यह रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- मैं अपने बाद के ख़लीफ़ा को वसीयत करता हूँ कि शुरू के मुहाजिरीन के हक़ अदा करता रहे, उनकी ख़ातिर मुदारात (ध्यान रखने और ख़ैरख़्वाही) में कमी न करे, और मेरी वसीयत है कि अन्सार के साथ भी नेकी और भलाई करे जिन्होंने मदीना में जगह बनाई और ईमान में जगह हासिल की। उन में के अच्छे लोगों की भलाईयाँ क़बूल करे और उनकी ख़ताओं से दरगुज़र करे। उनकी तबई शराफ़त देखिये कि जो भी अल्लाह की राह में

हिजरत करके आये ये अपने दिल में उसे घर दे दें और अपना जान व माल उन पर निसार करना अपना फ़ख़्र जानते हैं। मुस्नद अहमद में है कि मुहाजिरीन ने एक मर्तबा कहा या रसूलल्लाह! हमने तो दुनिया में अन्सार जैसे लोग नहीं देखे, थोड़े में से थोड़ा और बहुत में से बहुत बराबर हमें दे रहे हैं। मुद्दतों से हमारा तमाम ख़र्च उठा रहे हैं, बल्कि हमारे नाज़ उठा रहे हैं और कभी चेहरे पर शिकन भी नहीं बल्कि ख़िदमत करते हैं और ख़ुश होते हैं, देते हैं और एहसान नहीं रखते, काम-काज ख़ुद करें और कमाई हमें दें। या हुज़ूर! हमें तो डर है कि कहीं हमारे आमाल का सारा का सारा अज्र उन्हीं को न मिल जाये। आपने फ़रमाया नहीं-नहीं! जब तक तुम उनकी तारीफ़ व प्रशंसा करते रहोगे और उनके लिये दुआयें माँगते रहोगे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने अन्सारियों को बुलाकर फ़रमाया- मैं बहरीन का इलाक़ा तुम्हारे नाम लिख देता हूँ। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! जब तक आप हमारे मुहाजिर भाईयों को भी उतना ही न दें हम उसे न लेंगे। आपने फ़रमाया अच्छा अगर नहीं लेते तो देखो आईन्दा भी सब्र करते रहना, मेरे बाद ऐसा वक़्त भी आयेगा कि औरों को दिया जायेगा और तुम्हें छोड़ दिया जायेगा। गोया कि आपने पेशीनगोई फ़रमाई कि वह वक़्त भी आयेगा कि तुम्हारे हुक़ूक़ को अदा न किया जायेगा।

सही बुख़ारी शरीफ़ की एक और हदीस में है कि अन्सारियों ने कहा- या रसूलल्लाह! हमारे खजूरों के बाग़ात हम में और हमारे मुहाजिर भाईयों में तक़सीम कर दीजिए। आपने फ़रमाया- नहीं! फिर फ़रमाया सुनो काम-काज भी तुम ही करो और हम सब को तो पैदावार में शरीक रखो। अन्सार ने जवाब दिया या रसूलल्लाह! हमें यह भी ख़ुशी से मन्ज़ूर है। फिर फ़रमाता है कि ये अपने दिलों में कोई हसद (जलन और ईर्ष्या) उन मुहाजिरीन के रुतबे और बुलन्द दर्जों पर नहीं करते, जो उन्हें मिल जाये उन्हें उस पर रश्क नहीं होता। इसी मतलब पर उस हदीस की दलालत भी है जो मुस्नद अहमद में हज़रत अनस रज़ि. की रिवायत से मौजूद है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्ल. के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया- देखो अभी एक जन्नती शख़्स आने वाला है। थोड़ी देर में एक अन्सारी सहाबी अपने बायें हाथ में अपनी जूतियाँ लिये हुए ताज़ा वुज़ू करके आ रहे थे, दाढ़ी पर से पानी टपक रहा था। दूसरे दिन भी इसी तरह हम बैठे हुए थे कि आपने यही फ़रमाया और वही शख़्स इसी तरह आये। तीसरे दिन भी यही हुआ। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स आज देखते भालते रहे और जब मज्लिसे नबवी ख़त्म हुई और यह बुज़ुर्ग वहाँ से उठकर चले तो यह भी उनके पीछे हो लिये और उन अन्सारी सहाबी से कहने लगे हज़रत! मुझमें और मेरे वालिद में कुछ बोल-चाल हो गयी है जिस पर मैं क़सम खा बैठा हूँ कि तीन दिन तक अपने घर नहीं जाऊँगा, पस अगर आप मेहरबानी फ़रमाकर मुझे इजाज़त दें तो मैं ये तीन दिन आपके यहाँ गुज़ारूँ? उन्होंने कहा बहुत अच्छा। चुनाँचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने ये तीन रातें उनके घर उनके साथ गुज़ारीं। देखा कि वह रात को तहज्जुद की लम्बी नमाज़ भी नहीं पढ़ते, सिर्फ़ इतना करते हैं कि जब आँख खुले तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और उसकी बड़ाई का बयान अपने बिस्तर पर ही लेटे-लेटे ही कर लेते हैं, यहाँ तक कि सुबह की नमाज़ के लिये उठें। हाँ यह बात ज़रूर थी कि मैंने उनके मुँह से सिवाय कलिमा-ए-ख़ैर के और कुछ नहीं सुना।

जब तीन रातें गुज़र गयीं तो मुझे उनका अ़मल बहुत ही हल्का (मामूली) सा मालूम होने लगा। अब मैंने उनसे कहा कि हज़रत! दर असल न तो मेरे और मेरे वालिद के दरमियान कोई ऐसी बातें हुई थीं, न मैंने नाराज़गी के कारण घर छोड़ा था, बल्कि वाक़िआ़ यह हुआ कि तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि अभी एक जन्नती शख़्स आ रहा है और तीनों मर्तबा आप ही आये, तो मैंने इरादा किया कि आपकी ख़िदमत में कुछ दिन रहकर देखूँ तो सही कि आप ऐसी कौनसी इबादतें करते हैं जो ज़िन्दगी ही में रसूले

Maktab_e_Ashraf

करीम की मुबारक ज़बान से आपके जन्नती होने की यक़ीनी ख़बर हम तक पहुँच गयी। चुनाँचे मैंने बहाना किया और तीन दिन रात तक आपकी ख़िदमत में रहा ताकि आपके आमाल देखकर मैं वैसे ही अ़मल शुरू कर दूँ लेकिन मैंने तो आपको न तो कोई नया और अहम अ़मल करते हुए देखा न इबादत में ही औरों से ज़्यादा बढ़ा हुआ देखा, अब जा रहा हूँ लेकिन ज़बानी एक सवाल है कि आप ही बतलाईये आख़िर वह कौनसा अ़मल है जिसने आपको पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. की ज़बानी जन्नती बनाया? आपने फ़रमाया बस तुम मेरे आमाल तो देख चुके, उनके अ़लावा और कोई ख़ास छुपा अ़मल तो है नहीं। चुनाँचे उनसे रुख़्सत होकर चला, थोड़ी दूर निकला था कि उन्होंने मुझे आवाज़ दी और फ़रमाया हाँ मेरा एक अ़मल सुनते जाओ, वह यह है कि मेरे दिल में कभी किसी मुसलमान से धोखेबाज़ी, हसद और बुग़ज़ का इरादा भी नहीं हुआ। मैं कभी किसी मुसलमान का बुरा चाहने वाला नहीं बना। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने यह सुनकर फ़रमाया कि बस अब मालूम हुआ, इसी अ़मल ने आपको इस दर्जे तक पहुँचाया है, और यही वह चीज़ है जो हर एक के बस की नहीं। इमाम नसाई ने भी अपनी किताब "अ़मलुल-यौमि वल्लैलति" में इस हदीस को ज़िक्र किया है। ग़र्ज़ कि उन अन्सारी सहाबी में यह वस्फ़ (ख़ूबी और गुण) था कि मुहाजिरीन को अगर कोई माल वग़ैरह दिया जाये और उन्हें न मिले तो वह बुरा नहीं मानते थे। बनू नज़ीर के माल जब मुहाजिरीन में तक़सीम हुए तो किसी अन्सारी ने उसमें कलाम किया, जिस पर यह आयत नाज़िल हुईः

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ...... الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 6) हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारे मुहाजिर भाई भी माल व औलाद छोड़कर तुम्हारी तरफ़ आये हैं। अन्सार ने कहा फिर हुज़ूर हमारा माल उनमें और हममें बराबर बाँट दीजिए। आपने फ़रमाया तुम इससे भी ज़्यादा एहसान कर सकते हो? उन्होंने कहा जो हुज़ूर का इरशाद हो। आपने फ़रमाया मुहाजिर खेत और बाग़ात का काम नहीं जानते, तुम आप अपने माल को क़ब्ज़े में रखो, ख़ुद काम करो, ख़ुद बाग़ात में मेहनत करो और पैदावार में उन्हें शरीक कर लो। अन्सार ने इसे भी ख़ुशी से मन्ज़ूर कर लिया।

फिर फ़रमाता है कि बावजूद ख़ुद ज़रूरत मन्द होने के भी अपने दूसरे भाईयों की हाजत व ज़रूरत को मुक़द्दम (पहले और आगे) रखते हैं। अपनी ज़रूरत चाहे बाक़ी रह जाये लेकिन दूसरे मुसलमान की ज़रूरत जल्द पूरी हो जाये, यह उनकी हर वक़्त की तमन्ना है। एक सही हदीस में भी है कि जिसके पास कमी और क़िल्लत हो, ख़ुद को ज़रूरत हो और फिर भी वह सदक़ा करे तो उसका सदक़ा अफ़ज़ल और बेहतर है। यह दर्जा उन लोगों के दर्जे से भी बढ़ा हुआ है जिनका ज़िक्र एक दूसरी जगह है कि माल की ज़रूरत के बावजूद वे उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं। लेकिन ये लोग तो ख़ुद अपनी हाजत होते हुए ख़र्च करते हैं, मुहब्बत होती है और हाजत नहीं होती, उस वक़्त का ख़र्च इस दर्जे को नहीं पहुँच सकता कि ख़ुद को ज़रूरत हो और फिर भी अल्लाह की राह में दे देना। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. का सदक़ा इसी क़िस्म से है कि आपने अपना तमाम माल लाकर अल्लाह के रसूल सल्ल. के सामने ढेर लगा दिया, आपने पूछा भी कि अबू बक्र कुछ बाक़ी भी रख आये हो? जवाब दिया अल्लाह और उसके रसूल को बाक़ी रख आया हूँ। इसी तरह वह वाक़िआ़ है जो जंगे यरमूक में हज़रत इक्रिमा रज़ि. और उनके साथियों को पेश आया था कि मैदाने जिहाद में ज़ख़्म खाये हुए पड़े हैं, रेत और मिट्टी ज़ख़्मों में भर रही है, कराह रहे हैं, तड़प रहे हैं, सख़्त तेज़ धूप पड़ रही है, प्यास की वजह से हलक़ चटख़ रहा है, इतने में एक मुसलमान कंधे पर मश्क

लटकाये आ जाता है और इन ज़ख़्मी मुजाहिदों के सामने पानी पेश करता है, लेकिन एक कहता है कि उस दूसरे को पहले पिलाओ, दूसरा कहता है उस तीसरे को पहले पिलाओ। वह अभी तीसरे तक पहुँचा भी नहीं कि वह शहीद हो जाता है, दूसरे को देखता है कि वह भी प्यासा ही चल बसा, तीसरे के पास आता है लेकिन देखता है कि वह भी सूखे होंठों ही ख़ुदा से जा मिला। अल्लाह तआ़ला उन बुज़ुर्गों से ख़ुश हो और उन्हें भी अपनी ज़ात से ख़ुश रखे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और कहा या रसूलल्लाह! मैं सख़्त हाजत मन्दों हूँ मुझे कुछ खिलवाईये। आपने अपने घरों में आदमी भेजा लेकिन तमाम घरों से जवाब मिला कि हुज़ूर हमारे पास ख़ुद कुछ नहीं। यह मालूम करके फिर आपने और लोगों से कहा कि कोई है जो आज की रात इन्हें अपना मेहमान रखे? एक अन्सारी उठ खड़े हुए और कहा हुज़ूर! मैं इन्हें अपना मेहमान रखूँगा। चुनाँचे यह ले गये और अपनी बीवी से कहा देखो यह रसूलुल्लाह सल्ल. के मेहमान हैं, आज चाहे हमें कुछ भी खाने को न मिले लेकिन यह भूखे न रहें। बीवी साहिबा ने कहा आज घर में भी बरकत है, बच्चों के लिये अलबत्ता टुकड़े रखे हुए हैं। उन अन्सारी सहाबी ने फ़रमाया अच्छा बच्चों को तो बहला फुसला कर भूखा सुला दो और हम तुम दोनों अपने पेट पर कपड़ा बाँधकर फ़ाक़े से रात गुज़ार देंगे। खाते वक़्त चिराग़ बुझा देना ताकि मेहमान यह समझे कि हम खा रहे हैं और दर असल हम खायेंगे नहीं। चुनाँचे ऐसा ही किया। जब यह अन्सारी सहाबी रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये तो आपने फ़रमाया कि इस शख़्स के और इसकी बीवी के रात के अ़मल से अल्लाह तआ़ला ख़ुश हुआ और हंस दिया। उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुईः

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ........الخ.

(कि वे दूसरों को अपने से आगे रखते हैं चाहे उन पर फ़ाक़ा ही हो) सही मुस्लिम की रिवायत में इन अन्सारी सहाबी का नाम भी है, यानी हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु। फिर फ़रमाता है कि जो अपने नफ़्स की बख़ीली, हिर्स और लालच से बच गया उसने निजात पा ली। मुस्नद अहमद और मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि लोगो! ज़ुल्म से बचो, क़ियामत के दिन यह ज़ुल्म अन्धेरियाँ बन जायेगा। लोगो! बुख़्ल (कन्जूसी) और हिर्स (लालच) से बचो, यही वह चीज़ है जिसने तुमसे पहले लोगों को बरबाद कर दिया। इसी की वजह से उन्होंने ख़ून बहाये और हराम को हलाल बना लिया। एक और सनद से यह भी मरवी है कि फ़हश (बुरे कामों और बेहयाई) से बचो, अल्लाह तआ़ला गन्दी बातों और बेहयाई के कामों को नापसन्द फ़रमाता है। हिर्स और बुख़्ल की मज़म्मत (बुराई और निंदा) में ये अलफ़ाज़ भी हैं कि इसी के कारण पहलों ने ज़ुल्म किये, बुरे आमाल और गुनाह किये और रिश्ते तोड़े।

अबू दाऊद वग़ैरह में है कि अल्लाह की राह का गुबार (धूल) और जहन्नम का धुआँ किसी बन्दे के पेट में जमा हो ही नहीं सकता। इसी तरह बुख़्ल और ईमान भी किसी बन्दे के दिल में जमा नहीं हो सकते। यानी अल्लाह की राह की गर्द जिस पर पड़ी वह जहन्नम से आज़ाद हो गया, और जिसके दिल में बुख़्ल ने घर कर लिया उसके दिल में ईमान के रहने की गुंजाईश ही नहीं रहती। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के पास आकर एक शख़्स ने कहा कि ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! मैं तो हलाक हो गया। आपने फ़रमाया क्या बात है? कहा क़ुरआन में तो है कि जो अपने नफ़्स के बुख़्ल से बचा दिया गया उसने फ़लाह पा ली, और मैं तो माल को बड़ा रोकने वाला हूँ। ख़र्च करते हुए दिल रुकता है। आपने फ़रमाया इस कन्जूसी का ज़िक्र इस

आयत में नहीं, यहाँ बख़ीली से यह मुराद है कि अपने किसी मुसलमान भाई का माल ज़ुल्म के तौर पर (यानी नाहक़) खा जाये। हाँ बुख़्ल कन्जूसी के मायने में भी है, जो बहुत बुरी चीज़ है। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत अबुल-हय्याज असदी रह. फ़रमाते हैं कि बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए मैंने देखा कि एक साहिब सिर्फ़ यही दुआ़ कर रहे हैं:

اَللّٰهُمَّ قِنِىْ شُحَّ نَفْسِىْ.

ख़ुदाया! मुझे मेरे नफ़्स की हिर्स (लालच) से बचा ले।

आख़िर मुझसे न रहा गया, मैंने कहा आप सिर्फ़ यही दुआ़ क्यों माँग रहे हैं? उसने कहा जब इससे महफ़ूज़ हो गया तो फिर न ज़िना हो सकेगा न चोरी न और कोई बुरा काम। अब जो मैंने देखा तो वह हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ थे। (इब्ने जरीर)

एक हदीस में है कि जिसने ज़कात अदा की, मेहमान नवाज़ी की और अल्लाह की राह के ज़रूरी कामों में दिया वह अपने नफ़्स के बुख़्ल (हिर्स और कन्जूसी) से दूर हो गया।

उसके बाद फ़ै के माल के मुस्तहिक़ लोगों की तीसरी क़िस्म का बयान हो रहा है कि अन्सार और मुहाजिरों में से जो ग़रीब और फ़क़ीर हैं उनके बाद उनके ताबे जो उनके बाद के लोग हैं उनमें के मसाकीन भी इस माल के मुस्तहिक़ हैं, जो अल्लाह तआ़ला से अपने से पहले ईमान वालों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़यें करते रहते हैं। जैसे कि सूरः बराअत में है:

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ.

यानी शुरू में और पहल करने वाले मुहाजिर व अन्सार और उनके बाद के वे लोग जो एहसान (नेक काम करने) में उनके पैरोकार हैं, अल्लाह तआ़ला उन सबसे ख़ुश है और ये सब अल्लाह तआ़ला से राज़ी हैं। यानी ये बाद के लोग उन पहलों के कमालात, गुणों और अच्छे निशानात व रास्ते की पैरवी करने वाले और उन्हें नेक दुआ़ओं से याद रखने वाले हैं, गोया ज़ाहिर बातिन उनके ताबे हैं।

इस दुआ़ से हज़रत इमाम मालिक रह. ने कितना पाकीज़ा इस्तिदलाल किया है कि राफ़ज़ी (शिया) को फ़ै के माल में से इमामे वक़्त कुछ न दे, क्योंकि वे रसूले करीम सल्ल. के सहाबा के लिये दुआ़ करने के बजाय उन्हें गालियाँ देते हैं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि उन लोगों को देखो किस तरह क़ुरआन के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं, क़ुरआन हुक्म देता है कि मुहाजिर व अन्सार के लिये दुआ़यें करें और ये गालियाँ देते हैं। फिर यही आयत आपने तिलावत फ़रमाई। (इब्ने अबी हातिम)

एक और रिवायत में इतना और भी है कि मैंने तुम्हारे नबी सल्ल. से सुना है कि यह उम्मत ख़त्म न होगी यहाँ तक कि इनके पिछले इनके पहलों को लानत करें। (बग़वी) अबू दाऊद में है कि हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- सूरः हश्र की आयत नम्बर 6 जिसमें फ़ै के माल का बयान है वह तो ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल. का है, इसी तरह उसके बाद की आयत (यानी आयत नम्बर 7) ने आ़म कर दिया है, तमाम मुसलमानों को इसमें शामिल कर लिया है। अब एक मुसलमान भी ऐसा नहीं जिसका हक़ इस माल में न हो सिवाय तुम्हारे ग़ुलामों के। इस हदीस की सनद में इन्क़िताअ़ (यानी दरमियान में टूटी हुई) है। इब्ने जरीर में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने:

Maktab E Ashraf

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ.........الخ

(यानी सूरः तौबा की आयत 60) को पढ़कर फ़रमाया- माले ज़कात के मुस्तहिक़ तो ये लोग हैं। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ........الخ.

(यानी दसवें पारे की पहली आयत) और फ़रमाया- माले ग़नीमत के मुस्तहिक़ ये लोग हैं। फिर आपने यह आयतः

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ..........الخ.

(यानी सूरः हश्र की आयत 6) पढ़कर फ़रमाया- माले फ़ै के मुस्तहिक़ लोगों को बयान फ़रमाते हुए इस आयत ने तमाम मुसलमानों को इस माले फ़ै का हक़दार कर दिया है, सब उसके मुस्तहिक़ हैं। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो तुम देखोगे कि गाँव के चरवाहे को भी उसका हिस्सा दूँगा, जिसकी पेशानी पर इस माल के हासिल करने के लिये पसीना तक न आया हो।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ

क्या आपने उन मुनाफ़िक़ों (यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उबई वग़ैरह) की हालत नहीं देखी कि अपने (तरीक़े पर चलने वाले) भाईयों से जो कि अहले किताब काफ़िर हैं, (यानी बनू नज़ीर से) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! अगर तुम निकाले गए तो हम तुम्हारे साथ निकल जाएँगे और तुम्हारे मामले में हम किसी का कभी कहना नहीं मानेंगे। और अगर तुमसे किसी की लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं। (11) ख़ुदा की क़सम! अगर अहले किताब निकाले गए तो ये (मुनाफ़िक़ लोग) उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे। और अगर (मान लो, अगरचे ऐसा होना मुहाल है कि) उनकी मदद भी की तो पीठ फेरकर भागेंगे, फिर उनकी कोई मदद न होगी। (12) बेशक तुम लोगों का ख़ौफ़ उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में अल्लाह से भी ज़्यादा है, (और) यह (उनका तुमसे डरना और ख़ुदा से न डरना) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि समझते नहीं। (13)

Maktab E Ashraf

قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْمِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ط بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ط تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ط ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ○ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ج فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ○ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ○ ع ٥

ये लोग (तो) सब मिलकर भी तुमसे न लड़ेंगे मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या दीवार (क़िला व शहर-पनाह) की आड़ में, उनकी लड़ाई आपस (ही) में बड़ी तेज़ है। ऐ मुख़ातब! तू उनको (ज़ाहिर में) मुत्तफ़िक़ "यानी एकजुट" ख़्याल करता है हालाँकि उनके दिल ग़ैर-मुत्तफ़िक़ "बिखरे हुए" हैं। यह इस वजह से है कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन की) अक़्ल नहीं रखते। (14) उन लोगों के जैसी मिसाल है जो उनसे कुछ ही पहले हुए हैं जो (दुनिया में भी) अपने किरदार का मज़ा चख चुके हैं और (आख़िरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब (होने वाला) है। (15) शैतान के जैसी मिसाल है कि (पहले तो) इनसान से कहता है, तू काफ़िर हो जा, फिर जब वह काफ़िर हो जाता है तो (उस वक़्त साफ़) कह देता है कि मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं, मैं तो अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन से डरता हूँ। (16) सो आख़िरी अन्जाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहाँ हमेशा रहेंगे। (एक गुमराह करने की वजह से दूसरा गुमराह होने की वजह से), और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (17)

मुनाफ़िक़ों की बुरी हरकतें और मक्कारियाँ

अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उस जैसे मुनाफ़िक़ों की चालबाज़ी और मक्कारी का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने बनू नज़ीर के यहूदियों को थपक कर झूठा दिलासा दिलाकर ग़लत वायदा करके मुसलमानों से भिड़ा दिया। उनसे वायदा किया कि हम तुम्हारे साथी हैं, लड़ने में तुम्हारी मदद करेंगे और तुम हार गये और मदीना से देस-निकाला मिला तो हम भी तुम्हारे साथ इस शहर को छोड़ देंगे। लेकिन वायदे के वक़्त ही उसको पूरा करने की नीयत न थी और यह भी कि उनमें इतना हौसला भी नहीं कि ऐसा कर सकें, न लड़ाई में उनकी मदद कर सकें न बुरे वक़्त में उनका साथ दें। अगर बदनामी के ख़्याल से मैदान में आ भी जायें तो यहाँ आते ही तीर व तलवार की सूरत देखते ही रोंगटे खड़े हो जायें और नामर्दी के साथ भागते ही बन पड़े। फिर मुस्तक़िल तौर पर पेशीनगोई (भविष्यवाणी) फ़रमाता है कि उनकी तुम्हारे मुक़ाबले में इमदाद न की जायेगी, यह ख़ुदा से भी इतना नहीं डरते जितना तुम से ख़ौफ़ खाते हैं। जैसा कि एक दूसरी जगह है:

اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً.

यानी उनका एक फ़रीक़ लोगों से इतना डरता है जितना अल्लाह से, बल्कि इससे भी ज़्यादा। बात यह है कि ये बेसमझ लोग हैं।

उनके नामर्दी और बुज़दिली की यह हालत है कि ये मैदान की लड़ाई कभी लड़ नहीं सकते, हाँ अगर मज़बूत और सुरक्षित क़िलों में बैठे हुए हों या मोर्चों की आड़ में छुपकर कुछ कार्रवाई करने का मौक़ा हो तो ख़ैर ज़रूरत की वजह से कर गुज़रेंगे, लेकिन मैदान में आकर बहादुरी के जोहर दिखाना यह उनका काम नहीं, ये आपस ही में एक दूसरे के दुश्मन हैं। जैसा कि एक दूसरे मौक़े पर इरशाद है:

وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ.

बाज़ को बाज़ से लड़ाई का मज़ा चखाना है। तुम उन्हें इकट्ठा व एक समझ रहे हो लेकिन ये दर असल बिखरे हुए और बंटे हुए हैं। एक का दिल दूसरे से नहीं मिलता। मुनाफ़िक़ अपनी जगह और अहले किताब अपनी जगह एक दूसरे के दुश्मन हैं। वजह यह है कि बेअ़क्ल लोग हैं।

फिर फ़रमाया कि उनकी मिसाल उनसे कुछ ही पहले के काफ़िरों जैसी है, जिन्होंने यहाँ भी अपने किये का बदला भुगता और वहाँ का भुगतना अभी बाक़ी है। इससे मुराद या तो क़ुरैश के काफ़िर हैं कि बदर वाले दिन उनकी कमर कुबड़ी हो गयी और सख़्त नुक़सान उठाकर मरने वालों को छोड़कर भाग खड़े हुए, या बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूदी हैं कि वे भी शरारत पर उतर आये, अल्लाह तआ़ला ने उन पर अपने नबी अ़लैहिस्सलाम को ग़ालिब किया और आपने उन्हें मदीना से निकाल दिया। यह दोनों वाक़िए अभी-अभी के (यानी ताज़े) हैं और तुम्हारी इबरत का सही सबक़ हैं, लेकिन उस वक़्त जबकि कोई इबरत हासिल करने वाला, अन्जाम को सोचने वाला हो भी। ज़्यादा मुनासिब मक़ाम बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूद का वाक़िआ़ ही है। वल्लाहु आलम।

मुनाफ़िक़ों के वायदों पर उन यहूदियों का शरारत पर तैयार होना और उनके चढ़ाने में आकर समझौता तोड़ डालना, फिर उन मुनाफ़िक़ों का उन्हें मौक़े पर काम न आना, लड़ाई के वक़्त मदद न पहुँचाना, न देस-निकाले में साथ देना एक मिसाल से समझाया जाता है कि देखो शैतान भी इसी तरह इनसान को कुफ़्र पर आमादा करता है। और जब यह कुफ़्र कर चुकता है तो ख़ुद भी उसे मलामत करने लगता है और अपना अल्लाह वाला होना ज़ाहिर करने लगता है।

इस मिसाल का एक वाक़िआ़ याद आया, उसने एक औ़रत पर अपना असर डाला और यह ज़ाहिर किया कि गोया उसे जिन्नात सता रहे हैं। उधर उस औ़रत के भाईयों को यह वस्वसा (दिल में ख़्याल) डाला कि इसका इलाज उसी आ़बिद से हो सकता है। यह उस औ़रत को उस आ़बिद (नेक आदमी) के पास लाये, उसने इलाज व तदबीर यानी दम करना वग़ैरह शुरू किया और यह औ़रत यहीं रहने लगी। एक दिन आ़बिद उसके पास ही था कि शैतान ने उसके ख़्यालात ख़राब करने शुरू किये, यहाँ तक कि वह ज़िना कर बैठा और वह औ़रत हामिला (गर्भवती) हो गयी। अब रुस्वाई के ख़ौफ़ से शैतान ने छुटकारे की यह सूरत बतलाई कि इस औ़रत को मार डाल वरना राज़ खुल जायेगा। चुनाँचे उसने उसे क़त्ल कर डाला। इधर उसने जाकर औ़रत के भाईयों को शक दिलवाया, वे दौड़े हुए आये। शैतान उस बुज़ुर्ग के पास आया और कहा- वे लोग आ रहे हैं, इज़्ज़त भी जायेगी और जान भी जायेगी, अगर मुझे ख़ुश कर ले और मेरा कहा मान ले तो इज़्ज़त और जान दोनों बच सकती हैं। उसने कहा जिस तरह तू कहे मैं तैयार हूँ। शैतान ने कहा मुझे सज्दा कर, आ़बिद ने उसे सज्दा कर लिया। यह कहने लगा अफ़सोस है तुझ पर, कमबख़्त मैं अब

Maktab-E-Ashraf

तुझसे बेज़ार हूँ। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो रब्बुल-आलमीन है। (इब्ने जरीर)

एक और रिवायत में इस तरह है कि एक औरत बकरियाँ चराया करती थी और एक राहिब (ईसाई आबिद) की ख़ानकाह के नीचे रात गुज़ारा करती थी। उसके चार भाई थे। एक दिन शैतान ने राहिब को गुदगुदाया और उससे ज़िना कर बैठा। उसे हमल (गर्भ) रह गया। शैतान ने राहिब के दिल में डाली कि अब बड़ी रुस्वाई होगी, इससे बेहतर यह है कि इसे मार डाल और कहीं दफ़न कर दे, तेरी नेकी व बुज़ुर्गी को देखते हुए तेरी तरफ़ तो किसी का ख़्याल भी न जायेगा और अगर मान लो फिर भी कुछ पूछगछ हो तो इनकार कर देना। भला कौन है जो तेरी बात को ग़लत जाने? उसकी समझ में भी यह बात आ गयी। एक रोज़ रात के वक़्त मौक़ा पाकर उस औरत को जान से मार डाला और किसी वीरान जगह ज़मीन में दबा आया। अब शैतान उसके चारों भाईयों के पास पहुँचा और हर एक के ख़्वाब में उसे सारा वाक़िआ कह सुनाया और उसके दफ़न की जगह भी बता दी। सुबह जब ये जागे तो एक ने कहा आज की रात तो मैंने एक अ़जीब ख़्वाब देखा है, हिम्मत नहीं पड़ती कि आप से बयान कर दूँ। दूसरों ने कहा नहीं! कहो तो सही। चुनाँचे उसने अपना पूरा ख़्वाब बयान किया कि इस तरह फ़ुलाँ आबिद ने उससे बदकारी की, फिर जब हमल ठहर गया तो उसे क़त्ल कर दिया और फ़ुलाँ जगह उसकी लाश दबा आया है। उन तीनों में से हर एक ने कहा मुझे भी यही ख़्वाब आया है। अब तो उन्हें यक़ीन हो गया कि सच्चा ख़्वाब है। चुनाँचे उन्होंने जाकर हुकूमत को इत्तिला दी और बादशाह के हुक्म से उस राहिब को उस ख़ानक़ाह से साथ लिया और उस जगह पहुँचकर ज़मीन खोदकर उसकी लाश बरामद की। कामिल सुबूत के बाद अब उसको शाही दरबार में ले चले। उस वक़्त शैतान उसके सामने ज़ाहिर हुआ और कहा- ये सब मेरे किये काम हैं, अब भी अगर तू मुझे राज़ी कर ले तो तेरी जान बचा दूँगा। उसने कहा जो तू कहे मैं करने को तैयार हूँ। कहा मुझे सज्दा कर ले, उसने यह भी कर दिया। पस पूरा बेईमान (काफ़िर) बनाकर शैतान कहता है कि मैं तो तुझसे बरी हूँ। मैं तो अल्लाह तआ़ला से डरता हूँ जो तमाम जहानों का रब है। चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया और पादरी साहब को क़त्ल कर दिया गया। मशहूर है कि उस पादरी का नाम बरसीसा था। हज़रत अ़ली, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि., हज़रत ताऊस, हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान रह. वग़ैरह से यह क़िस्सा मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ से कमी-बेशी के साथ मन्क़ूल है। वल्लाहु आलम

इसके बिल्कुल विपरीत जुरैज आबिद का क़िस्सा है कि एक बदकार औरत ने उन पर तोहमत लगा दी कि इसने मेरे साथ ज़िना किया है और यह बच्चा जो मुझे हुआ है वह इसी का है। चुनाँचे लोगों ने हज़रत जुरैज के इबादत ख़ाने को घेर लिया और निहायत बेअदबी से मारते-पीटते हुए गालियाँ देते हुए बाहर ले आये और इबादत ख़ाने को ढहा दिया। यह बेचारे घबराये हुए बार-बार पूछते हैं कि आख़िर वाक़िआ क्या है? लेकिन मजमा आपे से बाहर है। आख़िर किसी ने कहा कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह के औलिया के लिबास में यह शैतानी हरकत? इस औरत से तूने बदकारी की है। हज़रत जुरैज ने फ़रमाया- अच्छा ठहरो सब्र करो, उस बच्चे को लाओ। चुनाँचे वह दूध पीता छोटा सा बच्चा लाया गया। हज़रत जुरैज ने अपनी इज़्ज़त की बक़ा की ख़ुदा से दुआ की, फिर उस बच्चे से पूछा ऐ बच्चे! बतला तेरा बाप कौन है? उस बच्चे को ख़ुदा ने अपने वली की इज़्ज़त बचाने के लिये अपनी क़ुदरत से बोलने की क़ुव्वत अ़ता फ़रमा दी और उसने साफ़ स्पष्ट ज़बान में ऊँची आवाज़ से कहा- मेरा बाप एक चरवाहा है। यह सुनते ही बनी इस्राईल के होश जाते रहे, ये उस बुज़ुर्ग के सामने माज़िरत करने लगे, माफ़ी माँगने लगे। उन्होंने कहा बस अब मुझे छोड़ दो। लोगों ने कहा कि हम आपकी इबादत गाह सोने की बना देते हैं। आपने फ़रमाया बस उसे जैसी

वह थी वैसे ही रहने दो।

फिर फ़रमाता है कि आख़िर अन्जाम कुफ़्र के करने और हुक्म देने वाले का यही हुआ कि दोनों हमेशा के लिये जहन्नम में हक़दार हुए। हर ज़ालिम अपने ज़ुल्म की सज़ा पा ही लेता है।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ○ وَلَا تَكُونُوا كَٱلَّذِينَ نَسُوا ٱللَّهَ فَأَنسَىٰهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَـٰسِقُونَ ○ لَا يَسْتَوِىٓ أَصْحَـٰبُ ٱلنَّارِ وَأَصْحَـٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۚ أَصْحَـٰبُ ٱلْجَنَّةِ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ○	ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और हर शख़्स देखभाल ले कि कल (क़ियामत) के वास्ते उसने क्या ज़ख़ीरा भेजा है। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है। (18) और तुम उन लोगों की तरह मत हो जिन्होंने अल्लाह (के अहकाम) से बेपरवाई की, सो अल्लाह ने ख़ुद उनकी जान से उनको बेपरवाह बना दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। (19) दोज़ख़ वाले और जन्नती आपस में बराबर नहीं। जो जन्नत वाले हैं वे कामयाब लोग हैं (और दोज़ख़ी नाकाम हैं)। (20)

अपने आमाल को जाँचते रहो

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम दिन चढ़े रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर थे कि कुछ लोग आये जो नंगे बदन और खुले पैर थे, सिर्फ़ चादरों या लम्बे कुर्तों से बदन छुपाये हुए तलवारें गर्दनों में लटकाये हुए थे। अक्सर बल्कि तमाम के तमाम क़बीला मुज़र में से थे। उनकी इस तंगी और ग़ुर्बत की हालत ने रसूलुल्लाह सल्ल. के चेहरे की रंगत को बदल दिया था। आप घर में गये, फिर बाहर आये, फिर हज़रत बिलाल को अज़ान कहने का हुक्म दिया। अज़ान हुई, फिर तकबीर हुई, आपने नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुतबा शुरू किया और यह आयत तिलावत फ़रमायी:

يَآأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ........ الخ.

(यानी सूरः निसा की पहली आयत) फिर सूरः हश्र की यह आयत पढ़ी:

يَـآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّاقَدَّمَت...... الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 18, जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) और लोगों को ख़ैरात देने की रग़बत दिलाई, जिस पर लोगों ने सदक़ा देना शुरू किया। बहुत से दिरहम व दीनार (सोने चाँदी के सिक्के), कपड़े लत्ते, गेहूँ खजूरें वग़ैरह आ गयीं। आप बराबर तक़रीर किये जाते थे यहाँ तक कि फ़रमाया- अगर आधी खजूर भी दे सकते हो तो ले आओ। एक अन्सारी सहाबी एक थैली नक़दी के भरी हुई बहुत वज़नी जिसे मुश्किल से उठा सकते थे, ले आये। फिर तो लोगों ने लाईन लगा दी, जो पाया लाना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि हर चीज़ का ढेर लग गया। हुज़ूर सल्ल. का उदास चेहरा अब खिल गया और सोने की तरह चमकने लगा। आपने फ़रमाया- जो भी किसी इस्लामी ख़ैर के काम को शुरू करे उसे अपना भी और उसके

बाद जो भी उस काम को करें सब का बदला मिलता है, लेकिन बाद वालों के अज्र घटकर नहीं। इसी तरह जो इस्लाम में किसी बुरे और शरीअ़त के ख़िलाफ़ किसी तरीक़े को जारी करे उस पर उसका अपना गुनाह भी होता है और फिर जितने लोग उस पर अ़मल करें उन सब को जितना गुनाह मिलेगा उतना ही उसे भी मिलता है, मगर उनके गुनाह हटते नहीं। (मुस्लिम)

आयत में पहले हुक्म होता है कि अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहने की सूरत पैदा करो, यानी उसके अहकाम पर अ़मल करके और उसकी नाफ़रमानियों से बचकर। फिर फ़रमान है कि वक़्त से पहले अपना हिसाब आप कर लिया करो। देखते रहो कि क़ियामत के दिन जब ख़ुदा के सामने पेश होगे तब काम आने वाले नेक आमाल का कितना कुछ ज़ख़ीरा तुम्हारे पास है। फिर ताकीद के साथ इरशाद होता है कि अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो और जान रखो कि तुम्हारे आमाल व हालात से अल्लाह तआ़ला पूरा बाख़बर है। न कोई छोटा काम उससे पोशीदा है न बड़ा, न छुपा न खुला। फिर फ़रमान है कि अल्लाह के ज़िक्र को न भूलो वरना वह तुम्हें नेक आमाल जो आख़िरत में नफ़ा देने वाले हैं भुला देगा। इसलिये कि हर अ़मल का बदला उसी के हिसाब से होता है। इसी लिये फ़रमाया कि यही लोग फ़ासिक़ हैं यानी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त से निकल जाने वाले और क़ियामत के दिन नुक़सान पाने वाले और हलाकत में पड़ने वाले यही लोग हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ. وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۝

ऐ मुसलमानो! तुम्हें तुम्हारे माल व औलाद ख़ुदा से ग़ाफ़िल न कर दें, जो ऐसा करें वह सख़्त नुक़सान उठाने वाले हैं।

तबरानी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के एक ख़ुतबे का मुख़्तसर सा हिस्सा यह मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया- क्या तुम नहीं जानते कि सुबह व शाम तुम अपने मुक़र्ररा वक़्त (यानी दुनिया से रुख़्सती) की तरफ़ बढ़ रहे हो? पस तुम्हें चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी के समय को अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी में गुज़ारो और इस मक़सद को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम के बग़ैर सिर्फ़ अपनी ताक़त व क़ुव्वत से कोई हासिल नहीं कर सकता। जिन लोगों ने अपनी उम्र अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी के अ़लावा और दूसरे कामों में खपाई उन जैसे तुम न होना। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें उन जैसा होने से मना फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ.

कि तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अपने नफ़्सों को भुला दिया।

ख़्याल करो कि तुम्हारी जान पहचान के तुम्हारे भाई आज कहाँ हैं? उन्होंने अपने पिछले वक़्त में जो आमाल किये थे उनका बदला लेने या उनकी सज़ा भुगतने के लिये वह अल्लाह के दरबार में जा पहुँचे। या तो उन्होंने नेकबख़्ती और ख़ुशनसीबी पाई या नामुरादी और बदबख़्ती हासिल कर ली। कहाँ हैं वे सरकश व नाफ़रमान लोग जिन्होंने चमक-दमक वाले शहर बसाये और उनके मज़बूत क़िले खड़े किये। आज वे क़ब्रों के गड्ढों में पत्थरों के नीचे दबे पड़े हैं। यह है किताबुल्लाह क़ुरआने करीम, तुम इस नूर से रोशनी हासिल करो जो तुम्हें क़ियामत के दिन की अंधेरियों में काम आ सके। इसके बयान की ख़ूबी से इबरत हासिल करो

Maktab E Ashraf

और बन-संवर जाओ। देखो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम और उनके घर वालों की तारीफ़ बयान करते हुए फ़रमायाः

إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا وَّكَانُوا لَنَا خَاشِعِيْنَ.

यानी वे नेक कामों में आगे बढ़ते थे और बड़ी उम्मीदों और सख़्त ख़ौफ़ के साथ हम से दुआ़यें किया करते थे, और हमारे सामने झुके जाते थे।

सुनो वह बात भलाई से ख़ाली है जिससे ख़ुदा की रज़ामन्दी मक़सूद न हो। वह माल ख़ैर व बरकत वाला नहीं जो ख़ुदा की राह में ख़र्च न किया जाता हो। वह शख़्स नेकबख़्ती से दूर है जिसकी जहालत उसकी बुर्दबारी पर ग़ालिब हो, इसी तरह वह शख़्स भी नेकी से ख़ाली हाथ है जो अल्लाह के अहकाम की तामील में किसी मलामत करने वाले की मलामत से ख़ौफ़ खाये। इसकी सनद बहुत उम्दा है और इसके रावी मोतबर हैं, अगरचे इसके एक रावी नुऐम बिन नमहा के बारे में मोतबर या ग़ैर-मोतबर होने का स्पष्ट ज़िक्र नहीं है, लेकिन इमाम अबू दाऊद सजिस्तानी रह. का यह फ़ैसला काफ़ी है कि जरीर बिन उस्मान रह. की तमाम सनदें सिक़ा (भरोसे वाली) हैं, और यह भी आप ही के उस्तादों में से हैं, और इस ख़ुतबे के और शवाहिद (ताईदें) भी हैं। वल्लाहु आलम

फिर इरशाद होता है कि जहन्नमी और जन्नती अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बराबर नहीं। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ....... الخ.

यानी क्या बदकारों ने यह समझ रखा है कि हम उन्हें ईमान वाले नेक काम करने वाले लोगों के जैसा कर देंगे? उनका जीना और मरना बराबर है? उनका यह दावा बिल्कुल ग़लत और बुरा है। एक और जगह इरशाद हैः

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ..... الخ.

अंधा और देखने वाला, ईमान वाला नेक बन्दा और बदकार बराबर नहीं। तुम बहुत ही कम नसीहत हासिल कर रहे हो। एक और जगह फ़रमान हैः

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا........ الخ.

क्या हम ईमान लाने और नेक आमाल करने वालों को फ़सादियों (बुरे काम करने वालों) जैसा कर देंगे? या परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे?

और भी इस मज़मून की बहुत सी आयतें हैं। मतलब यह है कि नेक काम करने वाले लोगों का इकराम (इज़्ज़त व सम्मान) होगा और बदकार लोगों की रुस्वाई होगी। यहाँ भी इरशाद होता है कि जन्नती लोग कामयाब और फ़लाह व निजात पाने वाले हैं। ये अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से पूरी तरह बच जायेंगे।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَ	अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो (ऐ मुख़ातब!) तू उसको देखता कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता। और इन अ़जीब मज़ामीन को हम

تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَاللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ ع ٣ ٦

लोगों के (नफ़े के) लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। (21) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लायक़) नहीं, वह जानने वाला है छुपी चीज़ों का और ज़ाहिर चीज़ों का, वही बड़ा मेहरबान, रहम वाला है। (22) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं, वह बादशाह है (सब ऐबों से) पाक है, सालिम है, अमन देने वाला है, निगहबानी करने वाला है, ज़बरदस्त है, ख़राबी का दुरुस्त करने वाला है, बड़ी अज़्मत वाला है अल्लाह (जिसकी शान यह है कि) लोगों के शिर्क से पाक है। (23) वह माबूद (बरहक़) है, पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है (यानी हर चीज़ को हिक्मत के मुवाफ़िक़ बनाता है)। सूरत बनाने वाला है, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, सब चीज़ें उसकी तस्बीह करती हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (24)

Maktaba E Ashraf

क़ुरआने पाक की बड़ाई का बयान

क़ुरआने करीम की अज़्मत (बड़ाई) बयान हो रही है कि वास्तव में यह पाक किताब इस क़द्र बुलन्द मर्तबे वाली है कि दिल इसके सामने झुक जायें, रोंगटे खड़े हो जायें, कलेजे कपकपा जायें। इसके सच्चे वायदे और इसकी हक़्क़ानी डाँट-डपट हर-हर सुनने वाले को थर्रा दे और अल्लाह के दरबार में झुक जाने पर मजबूर कर दे। अगर यह क़ुरआन अल्लाह तआ़ला किसी सख़्त बुलन्द और ऊँचे पहाड़ पर भी नाज़िल फ़रमाता और उसे ग़ौर व फ़िक्र (सोचने-समझने और विचार) की हिस (एहसास की क़ुव्वत) भी देता तो वह भी अल्लाह के ख़ौफ़ से टूटकर बिखर जाता। फिर इनसानों के दिलों पर जो दूसरी चीज़ों की तुलना में बहुत ही नर्म और छोटे हैं, जिन्हें पूरी समझ-बूझ हासिल है, इसका बहुत बड़ा असर पड़ना चाहिये।

इन मिसालों को लोगों के सामने उनके ग़ौर व फ़िक्र (सोच-विचार करने) के लिये ख़ुदा ने बयान फ़रमा दिया। मतलब यह है कि इनसानों को भी डर और आ़जिज़ी चाहिये। हदीस में है कि मस्जिदे नबवी में मिम्बर तैयार होने से पहले रसूले ख़ुदा सल्ल. एक खजूर के तने पर टेक लगाकर ख़ुतबा पढ़ा करते थे। जब मिम्बर बन गया, बिछ गया और हुज़ूर सल्ल. ख़ुतबा पढ़ने को खड़े हुए और वह तना दूर हो गया तो उसमें से रोने की आवाज़ आने लगी और इस तरह सिसकियाँ ले-लेकर वह रोने लगा जैसे कोई बच्चा बिलक-बिलक कर रोता हो और उसे चुप कराया जा रहा हो। क्योंकि उसे इस ज़िक्र व वही के सुनने से कुछ दूरी

हो गयी......। इमाम हसन बसरी रह. इस हदीस को बयान करके फ़रमाते थे कि लोगो! एक खजूर का तना इस क़द्र अल्लाह के रसूल का चाहने वाला हो तो तुम्हें चाहिये कि तुम उससे बहुत ज़्यादा शौक़ रखो। इसी तरह की यह आयत है कि जब एक पहाड़ का यह हाल हो तो तुम्हें चाहिये कि तुम तो इस हालत में उससे आगे रहो। एक और जगह फ़रमाने ख़ुदा है:

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ....... الخ.

यानी अगर कोई क़ुरआन (पढ़ी जाने वाली चीज़) ऐसा होता कि उसके कारण पहाड़ चला दिये जायें या ज़मीन काट दी जाये या मुर्दे बोल पड़ें (तो इसके क़ाबिल यही क़ुरआन था, मगर फिर भी उन काफ़िरों को ईमान नसीब न होता)। दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ....... الخ.

यानी बाज़ पत्थर ऐसे हैं जिनसे नहरें बह निकलती हैं। बाज़ वो हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है। बाज़ ख़ुदा के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा न तो कोई पालने और परवरिश करने वाला है, न उसके सिवा किसी की ऐसी ज़ात है कि उसकी किसी क़िस्म की इबादत कोई करे। उसके सिवा जिन जिनकी लोग परस्तिश और पूजा करते हैं वे सब बातिल हैं। वह तमाम कायनात का इल्म रखने वाला है, जो चीज़ें हम पर ज़ाहिर हैं और जो चीज़ें हमसे पोशीदा हैं, सब उस पर रोशन हैं चाहे बड़ी हों या छोटी, यहाँ तक कि अंधेरियों के ज़र्रे भी उस पर ज़ाहिर हैं। वह इतनी बड़ी वसीअ़ रहमत वला है कि उसकी रहमत तमाम मख़्लूक़ को घेरे हुए है। वह दुनिया और आख़िरत में रहमान भी है और रहीम भी है। हमारी तफ़सीर के शुरू में इन दोनों नामों की पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है। क़ुरआने करीम में एक जगह है:

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ.

मेरी रहमत ने तमाम चीज़ों को घेर लिया है। एक और मौक़े पर फ़रमान है:

كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ.

तुम्हारे रब ने अपनी ज़ात पर रहम व रहमत लिख ली है। एक और फ़रमान है:

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ.

कह दो कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व रहमत के साथ ही ख़ुश होना चाहिये। तुम्हारी जमा की हुई चीज़ से बेहतर यही है। उस मालिक रब्बे माबूद के सिवा और कोई ख़ूबियों और कमालात वाला नहीं। तमाम चीज़ों का तन्हा वही मालिक व मुख़्तार है। हर चीज़ पर क़ब्ज़ा और तसर्रुफ़ करने वाला भी वही है। कोई नहीं जो उसके आड़े आ सके और उसके किसी काम में रुकावट डाल सके, या उसे मना कर सके। वह क़ुद्दूस है यानी ज़ाहिर है मुबारक है। ज़ाती और सिफ़ाती नुक़सानात से पाक है, तमाम बुलन्द मर्तबे वाले फ़रिश्ते और सबकी सब आला मख़्लूक़ उसकी तस्बीह व तक़दीस (पाकी और बुज़ुर्गी करने) में मुस्तक़िल तौर पर मशग़ूल है। वह तमाम ऐबों और नुक़सानों से ख़ाली और पाक है, उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं, अपने कामों में भी उसकी ज़ात हर तरह के नुक़सान से पाक है। वह मुअ्मिन (अमन देने वाला) है यानी तमाम मख़्लूक़ को उसने इस बात से बेख़ौफ़ कर रखा है कि उन पर किसी तरह

Maktab E Ashraf

का किसी वक़्त अपनी तरफ़ से ज़ुल्म हो। उसने यह फ़रमाकर कि वह हक़ है सब को अमन दे रखा है। अपने ईमान वाले बन्दों के ईमान की तस्दीक़ करता है। वह "मुहैमिन" है यानी अपनी तमाम मख़्लूक़ के तमाम आमाल का हर वक़्त बराबर तौर पर शाहिद (देखने वाला) और निगराँ है। जैसे एक जगह अल्लाह का फ़रमान है:

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ.

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर शाहिद (गवाह और देखने वाला) है। एक और फ़रमान है:

ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَايَفْعَلُوْنَ.

अल्लाह तआ़ला उनके तमाम कामों पर गवाह है। एक और जगह फ़रमाया:

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ م بِمَا كَسَبَتْ....... الخ.

मतलब यह है कि हर नफ़्स जो कुछ कर रहा है उसे अल्लाह तआ़ला देख रहा है। वह अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) है, हर चीज़ उसके फ़रमान के ताबे है। तमाम मख़्लूक़ पर वह ग़ालिब है। पस उसकी इ़ज़्ज़त, बड़ाई, बादशाहत और शान की वजह से उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। वह जब्बार और मुतकब्बिर है, बड़ाई और छा जाना सिर्फ़ उसी को शायाने शान है। सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- अ़ज़मत मेरा तहबन्द है और किब्रियाई मेरी चादर है (यानी बड़ाई और बुलन्द व बाला होना मेरी ही शान है) जो मुझसे इन दोनों में से किसी को छीनना चाहेगा (यानी घमण्ड और बड़ाई जतायेगा) मैं उसे अ़ज़ाब दूँगा। अपनी मख़्लूक़ को जिस चीज़ पर चाहे वह रख सकता है, तमाम कामों की इस्लाह (सही करना) उसी के हाथ है। वह हर बुराई से नफ़रत और दूरी रखने वाला है। जो लोग अपनी कम-समझी की वजह से दूसरों को उसका शरीक ठहरा रहे हैं वह उन सबसे बेज़ार (दूर और ला-ताल्लुक़) है। उसकी ख़ुदाई किसी की शिर्कत से पाक है।

अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़ है यानी मुक़द्दर करने वाला, फिर बारी है यानी उसे जारी और ज़ाहिर करने वाला। कोई ऐसा नहीं कि जो तक़दीर और उसके लागू करने दोनों पर क़ादिर हो। जो चाहे अन्दाज़ा मुक़र्रर करे और फिर उसी के मुताबिक़ उसे चलाये भी। कभी भी उसमें फ़र्क़ न आने दे। बहुत से तरतीब देने वाले और अन्दाज़ा करने वाले हैं जो फिर उसे जारी करने और उसी के मुताबिक़ बराबर जारी रखने पर क़ादिर नहीं। तक़दीर (यानी किसी चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर करने) के साथ उसे जारी और लागू करने पर भी क़ुदरत रखने वाली अल्लाह ही की ज़ात है। पस ख़ल्क़ (पैदा करने) से मुराद तक़दीर (अन्दाज़ा मुक़र्रर करना) और बरी से मुराद उस तक़दीर का लागू और ज़ाहिर करना है।

अ़रब में ये अलफ़ाज़ इन मायनों में मिसाल और कहावत के तौर पर भी बराबर राईज हैं। उसी की शान है कि जिस चीज़ को जब जिस तरह करना चाहे कह देता है कि "हो जा" वह उसी तरह उसी सूरत में हो जाती है। जैसे एक जगह फ़रमाया:

فِىْٓ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّاشَآءَ رَكَّبَكَ.

जिस सूरत में उसने चाहा तुझे तरकीब दी (यानी तैयार किया और बनाया)।

इसलिये फ़रमाता है कि वह मुसव्विर है यानी जिसकी ईजाद (बनाना) जिस तरह की चाहता है कर गुज़रता है। प्यारे-प्यारे और बड़ाई वाले नामों वाला वही है। सूरः आराफ़ में इस जुमले की तफ़सीर गुज़र चुकी है, तथा हदीस भी बयान हो चुकी है जो बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की रिवायत से

मौजूद है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला के निन्नानवे यानी एक कम एक सौ नाम हैं, जो उन्हें शुमार कर ले, याद रख ले वह जन्नत में दाख़िल होगा। वह वित्र है यानी वाहिद (अकेला) है और इकाई को पसन्द रखता है (इसी वजह से नाम भी जोड़ा नहीं, बल्कि उनमें इकाई है)।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में उन नामों का स्पष्ट तौर पर बयान भी आया है। वो नाम ये हैं:-

अल्लाह (तआ़ला के सिवा और कोई माबूद नहीं सिर्फ़ माबूदे बरहक़ वही है और) वही (1) रहमान (2) रहीम (3) मलिक (4) क़ुद्दूस (5) सलाम (6) मुअ्मिन (7) मुहैमिन (8) अ़ज़ीज़ (9) जब्बार (10) मुतकब्बिर (11) ख़ालिक़ (12) बारी (13) मुसव्विर (14) ग़फ़्फ़ार (15) वह्हाब (16) रज़्ज़ाक़ (17) क़ह्हार (18) फ़त्ताह (19) अ़लीम (20) क़ाबिज़ (21) बासित (22) ख़ाफ़िज़ (23) राफ़ेअ़् (24) मुअ़िज़्ज़ (25) मुज़िल्ल (26) समीअ़ (27) बसीर (28) हकम (29) अ़दल (30) लतीफ़ (31) ख़बीर (32) हलीम (33) अ़ज़ीम (34) ग़फ़ूर (35) शकूर (36) अ़ली (37) कबीर (38) हफ़ीज़ (39) मुक़ीत (40) हसीब (41) जलील (42) करीम (43) रक़ीब (44) मुजीब (45) वासेअ़् (46) हकीम (47) वदूद (48) मजीद (49) बाअ़िस (50) शहीद (51) हक़ (52) वकील (53) क़वी (54) मतीन (55) वली (56) हमीद (57) मुहसी (58) मुब्दी (59) मुअ़ीद (60) मुहयी (61) मुमीत (62) हय्यु (63) क़य्यूम (64) वाजिद (65) माजिद (66) वाहिद (67) समद (68) क़ादिर (69) मुक़्तदिर (70) मुक़द्दम (71) मुअख़्ख़र (72) अव्वल (73) आख़िर (74) ज़ाहिर (75) बातिन (76) वाली (77) मुतआ़ल (78) बर्र (79) तव्वाब (80) मुन्तक़िम (81) अ़फ़ुव्वु (82) रऊफ़ (83) मालिकुल-मुल्क (84) ज़ुल-जलालि वल-इक्राम (85) मुक़्सित (86) जामेअ़् (87) ग़नी (88) मुग़नी (89) मुअ़्ती (90) मानेअ़् (91) ज़ार्र (92) नाफ़ेअ़् (93) नूर (94) हादी (95) बदीअ़ (96) बाक़ी (97) वारिस (98) रशीद (99) सबूर है।

इब्ने माजा में भी यह हदीस है और उसमें कुछ आगे-पीछे और कमी-ज़्यादती भी है। ग़र्ज़ कि इन तमाम हदीसों वग़ैरह का बयान पूरी तरह सूरः आराफ़ की तफ़सीर में गुज़र चुका है, इसलिये यहाँ सिर्फ़ इतना लिख देना काफ़ी है, बाक़ी सब को दोबारा ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें उसकी तस्बीह (पाकी) बयान करती हैं। जैसे एक दूसरी जगह अल्लाह का फ़रमान है:

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ، اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا.

उसकी पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आसमान और ज़मीनें और उनमें जो मख़्लूक़ है, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी तस्बीह तारीफ़ के साथ बयान न करती हो। लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं सकते। बेशक वह बुर्दबार और बख़्शिश करने वाला है।

वह अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) है, उसकी हिक्मत वाली सरकार अपने अहकाम और तक़दीर (हर चीज़ के अन्दाज़े) के मामले में ऐसी नहीं कि किसी तरह की कमी निकाली जाये या कोई एतिराज़ क़ायम किया जा सके। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि जो शख़्स सुबह को तीन मर्तबा "अऊ़ज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल् अ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीम" सूरः हश्र की आख़िर की इन तीन आयतों को पढ़ ले अल्लाह तआ़ला उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर करता है जो शाम तक उस पर रहमत भेजते हैं, और अगर उसी दिन उसका इन्तिक़ाल हो जाये तो शहादत का मर्तबा पाता है। और जो शख़्स इनकी तिलावत शाम के वक़्त करे वह भी इसी हुक्म में है। तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब बतलाते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः हश्र की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः मुम्तहिना

सूरः मुम्तहिना मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّىْ
وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ
وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ
يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا
بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا
فِىْ سَبِيْلِىْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِىْ تُسِرُّوْنَ
اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ
وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ○ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا
لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ
وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ
تَكْفُرُوْنَ ○ؕ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ
اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ कि उनसे दोस्ती का इज़्हार करने लगो, हालाँकि तुम्हारे पास जो हक़ दीन आ चुका है वे उसके इनकारी हैं। रसूल को और तुमको इस बिना पर कि तुम अपने परवर्दिगार अल्लाह पर ईमान ले आए शहर से निकाल चुके हैं। अगर तुम मेरे रास्ते पर जिहाद करने की ग़र्ज़ से और मेरी रज़ामन्दी ढूँढने की ग़र्ज़ से (अपने घरों से) निकले हो। तुम उनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बातें करते हो, हालाँकि मुझको सब चीज़ों का ख़ूब इल्म है, तुम जो कुछ छुपाकर करते हो और जो ज़ाहिर करते हो। और (आगे इस पर धमकी है कि) जो शख़्स तुममें से ऐसा करेगा वह सही रास्ते से भटकेगा। (1) अगर उनको तुम पर क़ब्ज़ा हासिल हो जाए तो (फ़ौरन) दुश्मनी का इज़्हार करने लगें और (वह दुश्मनी का इज़्हार यह कि) तुम पर बुराई के साथ हाथ और ज़बान चलाने लगें (यह दुनियावी नुक़सान पहुँचाना है), और (दीनी नुक़सान पहुँचाना यह कि) वे इस बात के इच्छुक हैं कि तुम काफ़िर (ही) हो जाओ। (2) तुम्हारे रिश्तेदार और औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे काम न आएँगे, ख़ुदा तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल को ख़ूब देखता है। (3)

काफ़िरों से दिली दोस्ती न करो

हज़रत हातिब बिन अबू बल्तआ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में इस सूरत की शुरू की आयतें नाज़िल हुई हैं। वाक़िआ यह हुआ कि हज़रत हातिब रज़ि. मुहाजिरीन में से थे, बदर की लड़ाई में भी आपने मुसलमानों के लश्कर में शिर्कत की थी। उनके बाल-बच्चे और माल-दौलत मक्का ही में था और ख़ुद क़ुरैश में से न थे, सिर्फ़ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हलीफ़ (साथी) थे। इस वजह से मक्का में उन्हें अमन हासिल था। अब यह रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ मदीना शरीफ़ में थे, यहाँ तक कि जब मक्का वालों ने अ़हद तोड़ दिया और रसूलुल्लाह सल्ल. ने उन पर हमला करना चाहा तो आपकी इच्छा यह थी कि उन पर अचानक हमला फ़रमायें ताकि ख़ूनरेज़ी (रक्तपात) न होने पाये और मक्का शरीफ़ पर क़ब्ज़ा हो जाये। इसी लिये आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ भी की कि बारी तआ़ला! हमारी तैयारी की ख़बरें हमारे पहुँचने तक मक्का वालों को न पहुँचे। इधर आपने मुसलमानों को तैयारी का हुक्म दिया।

हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इस मौक़े पर एक ख़त मक्का वालों के नाम लिखा और एक क़ुरैशी औ़रत के हाथ उसे चलता किया। जिसमें रसूलुल्लाह सल्ल. के इस इरादे और मुसलमानों के लश्कर लेकर चढ़ाई करने की ख़बर दर्ज थी। आपका इरादा इससे सिर्फ़ यह था कि मेरा कोई एहसान क़ुरैश पर रह जाये जिसके सबब मेरे बाल-बच्चे और माल-दौलत महफ़ूज़ रहें। चूँकि हुज़ूरे पाक की दुआ़ क़बूल हो चुकी थी इसलिये नामुम्किन था कि क़ुरैश वालों को किसी ज़रिये से भी इस इरादे का इल्म हो जाये, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्ल. को इस पोशीदा राज़ से मुत्तला (बाख़बर) फ़रमा दिया और आपने उस औ़रत के पीछे अपने सवार भेजे। रास्ते में उसे रोका गया और ख़त उससे हासिल कर लिया गया। यह मुफ़स्सल वाक़िआ सही हदीसों में पूरी तरह आ चुका है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अ़ली और हज़रत मिक़दाद रज़ि. को रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- तुम यहाँ से फ़ौरन कूच करो रौज़ा-ए-ख़ाख़ में जब तुम पहुँचोगे तो तुम्हें एक सांडनी पर सवार औ़रत मिलेगी जिसके पास एक ख़त है, तुम उसे क़ब्ज़े में करो और यहाँ ले आओ। हम दोनों घोड़ों पर सवार होकर बहुत तेज़ रफ़्तारी से रवाना हो गये। रौज़ा-ए-ख़ाख़ में जब पहुँचे तो वास्तव में हमें एक सांडनी पर सवार औ़रत दिखाई दी। हमने उससे कहा कि जो ख़त तेरे पास है वह हमारे हवाले कर, उसने साफ़ इनकार कर दिया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं। हमने कहा तू ग़लत कहती है, तेरे पास ख़त यक़ीनन है, अगर तू न देगी तो हम तेरे कपड़ों की तलाशी लेकर जबरन वह ख़त तुझसे छीनेंगे। अब तो वह औ़रत घबरा गई और आख़िर उसने अपनी चुटिया खोलकर उसमें से वह पर्चा निकाल कर हमारे हवाले किया। हम उसी वक़्त वहाँ से वापस रवाना हुए और हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में उसे पेश कर दिया। पढ़ने पर मालूम हुआ कि हज़रत हातिब रज़ि. ने उसे लिखा है और यहाँ के हालात की इत्तिला दी है, बल्कि हुज़ूर सल्ल. के इरादों से मक्का के काफ़िरों को आगाह किया है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया हातिब यह क्या हरकत है? हज़रत हातिब रज़ि. ने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! जल्दी न कीजिए मेरी भी सुन लीजिए। मैं क़ुरैश वालों में मिला हुआ था, ख़ुद क़ुरैश वालों में से न था, फिर आप पर ईमान लाकर आपके साथ हिजरत की, जितने और मुहाजिरीन हैं उन सब के रिश्तेदार और ख़ानदानी मक्का में मौजूद हैं जो उनके बाल-बच्चे वग़ैरह मक्का में रह गये हैं वे उनकी हिफ़ाज़त करते हैं, लेकिन मेरा कोई रिश्तेदार नहीं जो मेरे बच्चों की हिफ़ाज़त करे, इसलिये मैंने चाहा कि क़ुरैशियों के साथ कोई सुलूक व एहसान कर दूँ जिससे वे मेरे बच्चों की हिफ़ाज़त करें और जिस तरह औरों

के नसब (ख़ानदान) की वजह से उनका ताल्लुक़ है मेरे एहसान की वजह से मेरा ताल्लुक़ हो जाये। या रसूलल्लाह! मैंने कोई कुफ़्र नहीं किया, न अपने दीन से मुर्तद हुआ हूँ न इस्लाम के बाद कुफ़्र से राज़ी हुआ हूँ। बस इस ख़त की वजह सिर्फ़ अपने बच्चों की हिफ़ाज़त का बहाना था। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया लोगो! तुम से जो वाक़िआ हातिब बयान करते हैं वह बिल्कुल शब्द-शब्द सच्चा है कि अपने नफ़े की ख़ातिर एक ग़लती कर बैठे हैं न कि मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाना या काफ़िरों की मदद करना इनका मक़सद हो। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. इस मौक़े पर मौजूद थे और यह वाक़िआत आपके सामने हुए। आपको बहुत गुस्सा आया और फ़रमाने लगे या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दीजिए कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। आपने फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह बदरी सहाबी हैं और बदर वालों के मुताल्लिक़ ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया है कि जो चाहो अ़मल करो, मैंने तुम्हें बख़्श दिया (यानी एक तरह से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह भविष्यवाणी थी कि इन में से कोई ऐसा काम न करेगा जो उसकी बख़्शिश के आड़े आये)। यह रिवायत और भी बहुत सी हदीस की किताबों में है। सही बुख़ारी शरीफ़ किताबुल-मग़ाज़ी में इतना और भी है कि फिर अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत उतारी और किताबुत्तफ़सीर में है कि हज़रत अ़मर रज़ि. ने फ़रमाया इसी बारे में यह आयत उतरी:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّىْ.. الخ.

(यानी इस सूरत की पहली आयत) लेकिन रावी को शक है कि आयत के उतरने का बयान हज़रत अ़मर का है या हदीस में है। इमाम अ़ली बिन मदीनी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान रह. से पूछा गया कि यह आयत इसी बारे में उतरी है? तो सुफ़ियान ने फ़रमाया- यह लोगों की बात में से है, मैंने इसे हज़रत अ़मर रज़ि. से हिफ़्ज़ किया है और एक हर्फ़ भी नहीं छोड़ा, और मेरा ख़्याल है कि मेरे सिवा किसी ने इसे याद भी नहीं रखा। बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में हज़रत मिक़दाद रज़ि. के नाम के बाद हज़रत अबू मरसद रज़ि. का नाम है। उसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने यह भी बतला दिया था कि उस औ़रत के पास हज़रत हातिब का ख़त है, उस औ़रत की सवारी को बैठाकर उसके इनकार पर हर चन्द टटोलते हैं, लेकिन कोई पर्चा हाथ नहीं लगता। आख़िर जब हम आ़जिज़ आ गये और कहीं से पर्चा न मिला तो हमने उस औ़रत से कहा कि इसमें तो बिल्कुल शक नहीं कि तेरे पास पर्चा है अगरचे हमें नहीं मिलता, लेकिन तेरे पास है ज़रूर। यह नामुम्किन है कि रसूलुल्लाह सल्ल. की बात ग़लत हो। अब अगर तू नहीं देती हो हम तेरे कपड़े उतारकर टटोलेंगे। जब उसने देखा कि इन्हें पुख़्ता यक़ीन है और ये बिना लिये न टलेंगे तो उसने अपना सर खोलकर अपने बालों में से पर्चा निकाल कर हमें दे दिया। हम उसे लेकर वापस ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। हज़रत उमर रज़ि. ने यह वाक़िआ देख-सुनकर फ़रमाया- इसने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों की ख़ियानत की, मुझे इसकी गर्दन मारने की इजाज़त दीजिए। हुज़ूरे पाक ने हज़रत हातिब रज़ि. से मालूम किया और उन्होंने वह जवाब दिया जो ऊपर गुज़र चुका। आप ने सबसे फ़रमा दिया कि इन्हें कुछ न कहो और हज़रत उमर रज़ि. से भी वह फ़रमाया जो पहले बयान हुआ कि यह बदरी सहाबा में से हैं जिनके लिये अल्लाह तआ़ला ने जन्नत वाजिब कर दी है। इसको सुनकर हज़रत उमर रज़ि. रो दिये और फ़रमाने लगे- अल्लाह और उसके रसूल को ही कामिल इल्म है। यह हदीस इन अलफ़ाज़ से सही बुख़ारी किताबुल-मग़ाज़ी में ग़ज़्वा-ए-बदर के ज़िक्र में है।

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपना मक्का जाने का इरादा अपने चन्द हमराज़ बड़े

सहाबा रज़ि. के सामने तो ज़ाहिर किया था जिनमें हज़रत हातिब रज़ि. भी थे, बाक़ी आ़म तौर पर मशहूर था कि ख़ैबर जा रहे हैं। इस रिवायत में यह भी है कि जब हम ख़त को सारे सामान में टटोल चुके और न मिला तो हज़रत अबू मरसद रज़ि. ने कहा- शायद इसके पास कोई पर्चा है ही नहीं, इस पर हज़रत अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया- यह नामुम्किन है, न रसूलुल्लाह सल्ल. झूठ बोल सकते हैं न हमने झूठ कहा। जब हमने उसे धमकाया तो उसने हमसे कहा तुम्हें अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं? क्या तुम मुसलमान नहीं हो? एक रिवायत में है कि उसने पर्चा अपने जिस्म में से निकाला। हज़रत उमर रज़ि. के फ़रमान में यह भी है कि आपने फ़रमाया- यह बदर में मौजूद तो ज़रूर थे लेकिन अ़हद तोड़ा और दुश्मनों में हमारी ख़बर पहुँचायी।

एक और रिवायत में है कि यह औ़रत क़बीला मुज़ैना की औ़रत थी। बाज़ कहते हैं कि उसका नाम सारा था, अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद की आज़ाद की हुई बाँदी थी। हज़रत हातिब रज़ि. ने उसे कुछ देना तय किया था और उसने अपने बालों के नीचे काग़ज़ रखकर ऊपर से सर गूँध लिया था। आपने अपने घोड़े सवारों से फ़रमाया था कि उसके पास हज़रत हातिब का दिया हुआ इस मज़मून का ख़त है। आसमान से इसकी ख़बर हुज़ूरे पाक के पास आयी थी। बनू अबू अहमद के हुलैफ़ा में यह औ़रत पकड़ी गयी थी। इस औ़रत ने उनसे कहा था कि तुम मुँह फेर लो मैं निकाल देती हूँ। उन्होंने मुँह फेर लिया, फिर उसने निकाल कर हवाले किया। इस रिवायत में हज़रत हातिब रज़ि. के जवाब में यह भी है कि ख़ुदा की क़सम मैं अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखता हूँ कोई बदलाव मेरे ईमान में नहीं हुआ और इसी बारे में इस सूरत की आयतें हज़रत इब्राहीम के क़िस्से के ख़त्म तक उतरीं।

एक और रिवायत में है कि उस औ़रत को इसकी उजरत (मज़दूरी) के दस दिरहम हज़रत हातिब रज़ि. ने दिये थे और हुज़ूर सल्ल. ने उस ख़त के हासिल करने के लिये हज़रत उमर रज़ि. और हज़रत अ़ली रज़ि. को भेजा था और जोहफ़ा में यह मिली थी।

मतलब आयतों का यह है कि ऐ मुसलमानो! मुश्रिकों और काफ़िरों को जो ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल. और मोमिन बन्दों से लड़ने वाले हैं, जिनके दिल तुम्हारी दुश्मनी से भरे हुए हैं, तुम्हें हरगिज़ लायक़ (शोभा) नहीं कि उनसे दोस्ती, मुहब्बत, मेल-मिलाप और अपनाईयत रखो। तुम्हें इसके ख़िलाफ़ हुक्म दिया गया है। इरशाद है:

يَـٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَـآءَ...... الخ.

ऐ ईमान वालो! यहूद व ईसाईयों से दोस्ती मत गाँठो, वे आपस में ही एक दूसरे के दोस्त हैं। तुम में से जो भी उनसे दिल से दोस्ती और मुहब्बत करे वह उन्हीं में से होगा। इसमें किसी क़द्र डाँट-डपट के साथ मनाही भी फ़रमाई है। एक और जगह है:

يَـٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا..... الخ.

ऐ मुसलमानो! उन अहले किताब और काफ़िरों से दोस्तियाँ मत करो जो तुम्हारे दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं और उसे खेल समझ रहे हैं। अगर तुम में ईमान है तो अल्लाह तआ़ला की ज़ात से डरो।

एक और जगह इरशाद है कि ऐ मुसलमानो! मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों से दोस्तियाँ न करो, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआ़ला का खुला इल्ज़ाम साबित कर लो (यानी तुम्हारे पास कोई उज़्र भी न हो और अल्लाह की पकड़ के पात्र बन जाओ)।

एक और जगह फ़रमाया- मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों के अ़लावा काफ़िरों से दोस्ती न करें,

Maktab E Ashraf

जो ऐसा करे वह ख़ुदा की तरफ़ से किसी चीज़ में नहीं। हाँ बतौर ज़रूरत, वक़्ती मामले और बचाव के हो तो और बात है। अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपने आप से डरा रहा है। इसी बिना पर रसूले ख़ुदा सल्ल. ने हज़रत हातिब रज़ि. का उज़्र क़बूल फ़रमा लिया कि अपने माल व औलाद की सुरक्षा की ख़ातिर यह काम इनसे हो गया था।

मुस्नद अहमद में है कि हमारे सामने रसूलुल्लाह सल्ल. ने कई मिसालें बयान फ़रमायीं। एक और तीन और पाँच और सात और नौ और ग्यारह और फिर उनमें से तफ़सील के साथ सिर्फ़ एक ही बयान की बाक़ी सब छोड़ दीं। फ़रमाया एक ज़ईफ़ मिस्कीन क़ौम थी जिस पर ज़ोरावर (दबंग) ज़ालिम क़ौम चढ़ाई करके आ गयी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन कमज़ोरों की मदद की और उन्हें अपने दुश्मन पर ग़ालिब कर दिया। ग़ालिब आकर उनमें घमंड और तकब्बुर समा गया और उन्होंने उन पर अत्याचार शुरू कर दिये। जिस पर अल्लाह तआ़ला उनसे हमेशा के लिये नाराज़ हो गया।

फिर मुसलमानों को होशियार करता है कि तुम उन दीन के दुश्मनों से क्यों दिली दोस्ती और मुहब्बत रखते हो? हालाँकि ये तुम से बुरा सुलूक करने में किसी मौक़े पर कमी नहीं करते। क्या यह ताज़ा वाक़िआ़ भी तुम्हारे ज़ेहन से उतर गया कि उन्होंने तुम्हें बल्कि ख़ुद रसूललाह सल्ल. को भी जबरन वतन से निकाल बाहर किया और इसकी कोई वजह न थी सिवाय इसके कि तुम्हारी तौहीद (अल्लाह को एक मानना) और रसूल की फ़रमाँबरदारी उन पर भारी गुज़रती थी। जैसे एक और जगह है:

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ.

यानी मोमिनों से सिर्फ़ इस बिना पर झगड़ा और दुश्मनी है कि वे अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हैं।

एक और जगह है कि ये लोग सिर्फ़ इस वजह से नाहक़ जिला-वतन किये गये (अपने वतन से निकाले गये) कि वे कहते थे- हमारा रब अल्लाह है। फिर फ़रमाता है कि अगर वास्तव में तुम मेरी राह के जिहाद को निकले हो और मेरी रज़ामन्दी के तालिब हो तो हरगिज़ उन काफ़िरों से जो तुम्हारे और मेरे दुश्मन हैं, मेरे दीन को और तुम्हारे जान व माल को नुक़सान पहुँचा रहे हैं, दोस्तियाँ न पैदा करो। भला किस क़द्र ग़लती है कि तुम उन से छुपे तौर पर दोस्ताना रखो? क्या यह छुपाना ख़ुदा तआ़ला से भी छुपा रह सकता है? जो ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला है। दिलों के भेद और नफ़्स के वस्वसे (ख़्याल) भी जिसके सामने खुले होते हैं। बस सुन लो कि जो भी उन काफ़िरों से दोस्ती व मुहब्बत रखे वह सीधी राह से भटक जायेगा। तुम नहीं देख रहे कि उन काफ़िरों का अगर बस चले, अगर उन्हें कोई मौक़ा मिल जाये तो न अपने हाथ-पाँव से तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में बचें न बुरा कहने से अपनी ज़बानें रोकें, जो उनके बस में होगा वे कर गुज़रेंगे, बल्कि अपनी पूरी कोशिश इस बात पर लगा देंगे कि तुम्हें भी अपनी तरह काफ़िर बना लें। पस जबकि उनकी अन्दरूनी और खुली दुश्मनी का हाल तुम्हें अच्छी तरह मालूम है फिर कितना अंधेर है कि तुम अपने दुश्मनों को अपना दोस्त समझ रहे हो और अपनी राह में आप काँटे बो रहे हो?

ग़र्ज़ यह कि मुसलमानों को काफ़िरों पर एतिमाद करने, उनसे ऐसे गहरे ताल्लुक़ात रखने और दिली मुहब्बत रखने से रोका जा रहा है, और वे बातें याद दिलाई जा रही हैं जो उनसे अलग होने पर आमादा कर दें। तुम्हारे क़रीबी ताल्लुक़ात और रिश्तेदारियाँ तुम्हें अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आयेंगी। अगर तुम ख़ुदा को नाराज़ करके उन्हें ख़ुश करो और चाहो कि तुम्हें नफ़ा हो या नुक़सान हट जाये, यह बिल्कुल कच्ची सोच है, न ख़ुदा की तरफ़ के नुक़सान को कोई टाल सकता है न उसके दिये हुए नफ़े को कोई रोक सकता

है। अपने वालों (यानी ताल्लुकात वालों या रिश्तेदारों) से उनके कुफ़्र पर जिसने मुवाफ़कत की, वह बरबाद हुआ, अगरचे रिश्तेदार कैसा ही करीबी हो कुछ नफ़ा नहीं। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया कि या रसूलल्लाह! मेरा बाप कहाँ है? आपने फ़रमाया- जहन्नम में। जब वह जाने लगा तो आपने उसे बुलाया और फ़रमाया सुन- मेरा बाप और तेरा बाप दोनों ही जहन्नमी हैं। यह हदीस सही मुस्लिम शरीफ़ में और सुनन अबू दाऊद में भी है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؗ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَیْنَنَا وَبَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَالْیَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ یَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ۝ ع 2

तुम्हारे लिए इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) में और उन लोगों में जो कि (ईमान और इताअ़त में) उनके शरीके हाल थे, एक उम्दा नमूना है, जबकि उन सबने अपनी क़ौम से कह दिया कि हम तुमसे और जिनको तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उनसे बेज़ार हैं, हम तुम्हारे मुन्किर हैं, और हम में और तुम में हमेशा के लिए बैर, दुश्मनी और बुग़्ज़ (ज़्यादा) ज़ाहिर हो गया, जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ। लेकिन इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार ज़रूर करूँगा, और तुम्हारे लिए (इस्तिग़फ़ार से ज़्यादा) मुझको ख़ुदा के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं। ऐ हमारे परवर्दिगार! हम आप पर भरोसा करते हैं और आप ही की तरफ़ रुजू करते हैं। और आप ही की तरफ़ लौटना है। (4) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको काफ़िरों का तख़्ता-ए-मश्क़ "यानी ज़ुल्म व सितम का निशाना" न बना। और ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाह माफ़ कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (5) बेशक उन लोगों में तुम्हारे लिए यानी ऐसे शख़्स के लिए उम्दा नमूना है जो अल्लाह (के सामने जाने) का और क़ियामत के दिन (के आने) का एतिक़ाद रखता हो। और जो शख़्स (इस हुक्म से) रूगरदानी करेगा, सो (उसी का नुक़सान होगा क्योंकि) अल्लाह तआ़ला (तो) बिल्कुल बेनियाज़ और तारीफ़ के लायक़ है। (6)

हज़रत इब्राहीम की हिम्मत और दीनी पुख़्तगी

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को काफ़िरों से मुहब्बत और दोस्ती न करने की हिदायत फ़रमाकर उनके सामने अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके मानने वालों का नमूना पेश कर रहा है कि उन्होंने अपने रिश्ते-कुनबे और क़ौम के लोगों से साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि हम तुमसे और जिन्हें तुम पूजते हो उनसे बेज़ार, ज़िम्मेदारी से बरी और अलग-थलग हैं। हम तुम्हारे दीन और तरीक़े से नफ़रत करने वाले हैं। जब तक तुम इसी तरीक़े और इसी मज़हब पर हो तुम हमें अपना दुश्मन समझो। नामुम्किन है कि बिरादरी की वजह से हम तुम्हारे इस कुफ़्र के बावजूद तुम से भाईचारा और दोस्ताना ताल्लुक़ात रखें। हाँ यह और बात है कि ख़ुदा तुम्हें हिदायत दे और तुम अल्लाह "वह्दहू ला-शरी-क लहू" पर ईमान ले आओ, उसकी तौहीद मान लो और उसी एक की इबादत शुरू कर दो और जिन-जिनको तुमने ख़ुदा का शरीक और साथी ठहरा रखा है और जिन-जिनकी पूजा-पाठ में मशग़ूल हो उन सब को छोड़ दो। अपने इस कुफ़्र के चलन और शिर्क के तरीक़े से हट जाओ तो फिर बेशक तुम हमारे भाई हो, हमारे अ़ज़ीज़ हो, वरना हम में और तुम में कोई मेल और इत्तिफ़ाक़ नहीं, हम तुम से और तुम हम से अलग हो। हाँ यह याद रहे कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने वालिद से जो इस्तिग़फ़ार का वायदा किया था और फिर उसे पूरा किया उसमें उनकी पैरवी नहीं, इसलिये कि यह इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी तलब करना) उस वक़्त तक रहा जिस वक़्त तक कि अपने वालिद का अल्लाह का दुश्मन होना उन पर वज़ाहत के साथ ज़ाहिर न हुआ था। जब उन्हें यक़ीनी तौर पर उसकी ख़ुदा से दुश्मनी खुल गयी तो उससे साफ़ बेज़ारी ज़ाहिर कर दी। बाज़ मोमिन अपने मुश्रिक माँ-बाप के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करते थे। एक और सनद में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का अपने वालिद के लिये दुआ़ माँगना पेश करते थे इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़रमानः

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ.

(यानी सूरः तौबा की आयत 113-114) पूरी दो आयतों तक नाज़िल फ़रमाया और यहाँ भी हज़रत इब्राहीम के तरीक़े में से इसको अलग कर लिया कि इस बात में उनकी पैरवी तुम्हारे लिये वर्जित (मना) है और हज़रत इब्राहीम के इस इस्तिग़फ़ार की तफ़सील भी बयान कर दी और उसका ख़ास सबब और ख़ास वक़्त भी बयान फ़रमा दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि., मुजाहिद रह., मुक़ातिल बिन हय्यान रह., ज़ह्हाक रह. वग़ैरह ने भी यही मतलब बयान किया है।

फिर इरशाद होता है कि क़ौम से बराअत करके अब अल्लाह के दामन में छुपते हैं और अल्लाह की बारगाह में आ़जिज़ी और विनम्रता से अ़र्ज़ करते हैं कि बारी तआ़ला! तमाम कामों में हमारा भरोसा और एतिमाद तेरी ही पाक ज़ात पर है, हम अपने तमाम काम तुझे सौंपते हैं, तेरी तरफ़ रुजू व रग़बत करते हैं, आख़िरत के घर में भी हमें तेरी ही जानिब लौटना है। फिर कहते हैं कि ख़ुदाया! तू हमें काफ़िरों के लिये फ़ितना न बना। यानी ऐसा न हो कि ये हम पर ग़ालिब आकर हमें मुसीबत में मुब्तला कर दें। इसी तरह यह भी न हो कि तेरी तरफ़ से हम पर कोई नाराज़गी व अ़ज़ाब नाज़िल हो और वह उनके और बहकने का सबब बनें। अगर ये हक़ पर होते तो ख़ुदा तआ़ला इन्हें अ़ज़ाब क्यों करता? अगर ये किसी मैदान में जीत गये तो भी उनके लिये यह फ़ितने का सबब होगा कि हम इसलिये ग़ालिब आये कि हम ही हक़ पर हैं।

Maktab E Ashraf

इसी तरह अगर ये हम पर ग़ालिब आ गये तो ऐसा न हो कि हमें तकलीफ़ें पहुँचा-पहुँचाकर तेरे दीन से दूर कर दें। फिर दो दुआ माँगते हैं कि ख़ुदाया! हमारे गुनाहों को भी बख़्श दे, हमारी पर्दा पोशी कर और हमें माफ़ फ़रमा। तू अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) है, तेरी जनाब में पनाह लेने वाला नामुराद नहीं लौटता, तेरे दर को खटकाने वाला ख़ाली हाथ नहीं जाता, तू अपनी शरीअ़त (क़ानून) के बनाने में अपने अक़्वाल व अफ़आ़ल में और क़ज़ा व तक़दीर के मुक़द्दर करने में हिक्मतों वाला है, तेरा कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं।

फिर ताकीद के तौर पर वही पहली बात दोहराई जाती है कि उनमें तुम्हारे लिये नेक नमूना है। जो भी अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के हक़ होने और आने पर ईमान रखता हो उसे उनकी पैरवी में आगे बढ़कर क़दम रखना चाहिये, और जो अल्लाह के अहकाम से मुँह फेर ले वह जान ले कि ख़ुदा उससे बेपरवाह है, वह तारीफ़ व सना के लायक़ है। मख़्लूक़ उस ख़ालिक़ की तारीफ़ में मशग़ूल है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ.

अगर तुम और तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग कुफ़्र पर और ख़ुदा के न मानने पर उतर आयें तो अल्लाह तआ़ला का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह तआ़ला सबसे ग़नी, सबसे बेनियाज़ और सबसे बेपरवाह है और वह तारीफ़ किया गया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ग़नी उसे कहा जाता है जो अपनी ग़िना में कामिल हो, अल्लाह तआ़ला ही की यह सिफ़त है कि वह हर तरह बेनियाज़ और बिल्कुल बेपरवाह है, किसी और की ज़ात ऐसी नहीं। उसका कोई बराबरी वाला नहीं, उसके जैसा कोई और नहीं, वह पाक है, अकेला है, सब पर हाकिम सब पर ग़ालिब सब का बादशाह है। 'हमीद' (तारीफ़ वाला) है, यानी मख़्लूक़ उसे सराह रही है। अपने तमाम अक़्वाल (बातों) में, तमाम अफ़आ़ल (कामों) में वह प्रशंसा और तारीफ़ों वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके सिवा कोई पालने वाला नहीं, रब वही है, माबूद वही है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۚ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ○ اِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي

अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है (यानी उधर से वायदा है) कि तुम में और उन लोगों में जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, दोस्ती कर दे, और अल्लाह तआ़ला को बड़ी क़ुदरत है, और अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (7) अल्लाह तआ़ला तुमको उन लोगों के साथ एहसान और इन्साफ़ का बर्ताव करने से मना नहीं करता जो तुमसे दीन के बारे में नहीं लड़े, और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ का बर्ताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। (8) सिर्फ़ उन लोगों के साथ दोस्ती करने से अल्लाह तआ़ला तुमको मना करता है जो तुम से दीन के बारे में लड़े हों, (चाहे सामने आकर या इरादे से) और

الَّذِيْنَ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○	तुमको तुम्हारे घरों से निकाला हो। और (अगर निकाला भी न हो, लेकिन) तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की हो। और जो शख़्स ऐसों से दोस्ती करेगा सो वे गुनाहगार होंगे। (9)

Maktaba Ashraf

यह भी हो सकता है

काफ़िरों से मुहब्बत रखने की मनाही और उनके बुग़ज़ व दुश्मनी के बयान के बाद अब इरशाद होता है कि बहुत सी बार मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला तुम में और उन में सुलह और समझौता करा दे। बुग़ज़, नफ़रत और जुदाई के बाद मुहब्बत, दोस्ती और उल्फ़त पैदा करा दे। कौनसी चीज़ है जिस पर ख़ुदा क़ादिर न हो? वह विभिन्न और मुख़्तलिफ़ चीज़ों को जमा कर सकता है। दुश्मनी और दिल के बैर के बाद दिलों में उल्फ़त व मुहब्बत पैदा कर देना उसके हाथ में है। जैसे एक और जगह अन्सार पर अपनी नेमत बयान फ़रमाते हुए इरशाद होता है:

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ...... الخ.

तुम पर जो ख़ुदा की नेमत है उसे याद करो कि तुम्हारी दिली दुश्मनी को उसने दिली मुहब्बत व उल्फ़त से बदल दिया और तुम ऐसे हो गये जैसे सगे भाई हों। तुम आग के किनारे पहुँच चुके थे लेकिन उसने तुम्हें वहाँ से बचा लिया।

हुज़ूरे पाक सल्ल. ने अन्सारियों से फ़रमाया- क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में नहीं पाया था? फिर अल्लाह तआ़ला ने मेरी वजह से तुम्हें हिदायत दी। और तुम बिखरे हुए थे, मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें जमा कर दिया। क़ुरआने करीम में इरशाद है:

هُوَالَّذِىْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ....... الخ.

ऐ नबी! अल्लाह तआ़ला ने अपनी मदद से मोमिनों को साथ करके तेरी मदद की और ईमान वालों में आपस में वह मुहब्बत और एकता पैदा कर दी कि अगर पूरी दुनिया की दौलत ख़र्च करके तू वह एकता व मुहब्बत पैदा करना चाहता तो न कर सकता था। यह उल्फ़त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से थी, जो ग़ालिब व हकीम है।

एक हदीस में है कि दोस्तों की दोस्ती के वक़्त भी इस बात को पेशे नज़र रखो कि क्या अ़जब उससे किसी वक़्त दुश्मनी हो जाये। और दुश्मनी में भी हद से न गुज़रो, क्या ख़बर कब दोस्ती हो जाये (दोनों ही सूरतों में अगर हद से गुज़रोगे तो बाद में शर्मिन्दगी होगी)।

अ़रब का एक शायर कहता है:

وَقَدْ يَجْمَعُ اللّٰهُ الشَّتِيْتَيْنِ بَعْدَمَا ☆ يَظُنَّانِ كُلَّ الظَّنِّ اَنْ لَّا تَلَاقِيَا

यानी ऐसे दो दुश्मनों में भी जो एक से एक जुदा हों और इस तरह कि दिल में गिरह दे ली हो कि हमेशा हमेशा अब कभी न मिलेंगे, अल्लाह तआ़ला मिलाप व इत्तिफ़ाक़ पैदा करा देता है और इस तरह एक हो जाते हैं कि गोया कभी दो न थे।

Maktaba Ashraf

अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर्रहीम है, काफ़िर जब तौबा करें ख़ुदा क़बूल फ़रमा लेगा, जब वे उसकी तरफ़ झुकें वह उन्हें अपनी रहमत के साये में ले लेगा, कोई गुनाह हो और कोई गुनाहगार हो, इधर वह मालिक की तरफ़ झुका उधर उसकी रहमत की गोद खुली। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत अबू सुफ़ियान सख़र बिन हर्ब के बारे में नाज़िल हुई है, उनकी बेटी साहिबा से रसूले ख़ुदा सल्ल. ने निकाह कर लिया था और यही निकाह का रिश्ता मुहब्बत का सबब बन गया। लेकिन यह क़ौल कुछ मुनासिब मालूम नहीं होता इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल. का यह निकाह फ़त्हे-मक्का से बहुत पहले हुआ था और हज़रत अबू सुफ़ियान का इस्लाम सबके नज़दीक फ़त्हे-मक्का की रात का है। बल्कि इससे बहुत अच्छी तौजीह तो वह है जो इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अबू सुफ़ियान सख़र बिन हर्ब को यमन के एक हिस्से पर हाकिम बना रखा था, हुज़ूर सल्ल. के इन्तिक़ाल के बाद यह आ रहे थे कि रास्ते में ज़ुलख़िमार मुर्तद (बेदीन) मिल गया। आपने उससे जंग की और बाक़ायदा लड़े, पस मुर्तद (दीन इस्लाम से फिर जाने वाले) लोगों से सबसे पहली लड़ाई लड़ने वाले, दीन के रास्ते में जिहाद करने वाले आप हैं। हज़रत इब्ने शिहाब रह. का क़ौल है कि उन्हीं के बारे में यह आयत (यानी आयत नम्बर 7) उतरी है।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि. ने इस्लाम क़बूल करने के बाद हुज़ूर सल्ल. से कहा कि या रसूलल्लाह! मेरी तीन दरख़्वास्तें हैं, अगर इजाज़त हो तो अ़र्ज़ करूँ? आपने फ़रमाया कहो, तो कहा पहली तो यह कि मुझे इजाज़त दीजिए कि जिस तरह अपने कुफ़्र के ज़माने में मुसलमानों से लगातार जंग करता रहा अब इस्लाम के ज़माने में मैं काफ़िरों से बराबर लड़ाई जारी रखूँ। आपने इसे मन्ज़ूर फ़रमाया। फिर कहा मेरे लड़के मुआ़विया को अपना मुन्शी (वही को लिखने वाला) बना लीजिए। आपने इसे भी मन्ज़ूर फ़रमाया (इस पर भी जो कलाम है वह पहले गुज़र चुका)। और मेरी बेहतरीन बच्ची उम्मे हबीबा को आप अपने निकाह में क़बूल फ़रमायें। आपने यह भी क़बूल फ़रमा लिया (इस पर भी कलाम पहले गुज़र चुका है)।

फिर इरशाद होता है कि जिन काफ़िरों ने तुम से मज़हबी लड़ाई नहीं की, न तुम्हें तुम्हारे वतन से निकाला, जैसे औरतें और कमज़ोर लोग वग़ैरह, उनके साथ सुलूक व एहसान (अच्छा बर्ताव) और अ़दल व इन्साफ़ करने से अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें नहीं रोकता, वह तो ऐसे इन्साफ़ वाले लोगों से मुहब्बत रखता है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ि. के पास उनकी मुश्रिक माँ आयीं, यह उस ज़माने का ज़िक्र है जिसमें हुज़ूरे पाक सल्ल. और मक्का के मुश्रिकों के दरमियान सुलह-नामा हो चुका था तो हज़रत असमा ख़िदमते नबवी में हाज़िर होकर मसला पूछती हैं कि मेरी माँ आयी हुई हैं और अब तक वह इस दीन से अलग हैं, क्या मुझे जायज़ है कि मैं उनके साथ सुलूक (अच्छाई का मामला) करूँ? आपने फ़रमाया हाँ जाओ, उनसे सिला-रहमी करो। मुस्नद की इस रिवायत में है कि उनका नाम क़ुतैला था, यह मक्का से गोह, पनीर और घी बतौर तोहफ़े के लेकर आयी थीं, लेकिन हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपनी मुश्रिक माँ को न तो अपने घर में आने दिया न यह तोहफ़ा हदिया क़बूल किया। फिर हुज़ूर सल्ल. से मालूम किया और आपकी इजाज़त पर हदिया भी लिया और अपनी माँ को ठहराया भी। बज़्ज़ार की हदीस में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का नाम भी है, लेकिन यह ठीक नहीं, इसलिये कि हज़रत आ़यशा की वालिदा (माँ) का नाम उम्मे रोमान रज़ियल्लाहु अ़न्हा था, इस्लाम ला चुकी थीं और हिजरत करके मदीना में तशरीफ़ लाई थीं। हाँ हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की वालिदा उम्मे रोमान न थीं, चुनाँचे उनका नाम क़ुतैला ऊपर हदीस में मज़कूर है। वल्लाहु आलम

Maktab E Ashraf

"मुक़्सितीन" की तफ़सीर सूरः हुजुरात में गुज़र चुकी है। जिन्हें अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है। हदीस में है कि "मुक़्सितीन" वे लोग हैं जो अ़दल (इन्साफ़) के साथ हुक्म करते हैं चाहे अपने घर वालों का मामला हो, या अपने मातहतों का। ये लोग अल्लाह तआ़ला के अ़र्श की दायीं तरफ़ नूर के मिम्बरों पर होंगे। फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा तआ़ला की मनाही तो उन लोगों की दोस्ती से है जो तुम्हारी दुश्मनी की वजह से तुम्हारे दुश्मनों की मदद करें।

फिर मुश्रिकों से एकता व इत्तिफ़ाक़ और दोस्ती व मुहब्बत रखने वालों को धमकाता और उसका गुनाह बताता है कि ऐसा करने वाले ज़ालिम गुनाहगार हैं। एक और जगह फ़रमाया- यहूदियों ईसाईयों से दोस्ती करने वाला हमारे नज़दीक उन्हीं जैसा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ
مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا
تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ
وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ
اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ
تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ
وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْئَلُوْا مَآ
اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ
حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ○ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ
اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औ़रतें (ग़ैर-इस्लामी मुल्क से) हिजरत करके आएँ तो तुम उनका इम्तिहान कर लिया करो। उनके ईमान को अल्लाह ही ख़ूब जानता है। पस अगर उनको (उस इम्तिहान की रू से) मुसलमान समझो तो उनको काफ़िरों की तरफ़ वापस मत करो, (क्योंकि) न तो वे औ़रतें उन काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न वे काफ़िर उन औ़रतों के लिए हलाल हैं। और उन काफ़िरों ने जो कुछ ख़र्च किया हो वह उनको अदा कर दो। और तुमको उन औ़रतों से निकाह कर लेने में कुछ गुनाह न होगा जबकि तुम उनके मेहर उनको दे दो। और (ऐ मुसलमानो!) तुम काफ़िर औ़रतों के ताल्लुक़ात को बाक़ी मत रखो, और (इस सूरत में) जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो (उन काफ़िरों से) माँग लो, और जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो वे (तुमसे) माँग लें, यह अल्लाह का हुक्म है (इसका पालन करो) वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है। (10) और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने से (बिल्कुल ही) तुम्हारे हाथ न आए फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी बीवियाँ हाथ से निकल गईं, जितना (मेहर) उन्होंने (उन बीवियों

ٱلَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَٰجُهُم مِّثْلَ مَآ أَنفَقُوا۟ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِىٓ أَنتُم بِهِۦ مُؤْمِنُونَ ۝	पर) ख़र्च किया था उसके बराबर तुम उनको दे दो, और अल्लाह से कि जिस पर तुम ईमान रखते हो डरते रहो। (11)

Maktab E Ashraf

मोमिन औरतों से मुताल्लिक़ एक हुक्म

सूरः फ़तह की तफ़सीर में सुलह हुदैबिया का वाक़िआ तफ़सील से बयान हो चुका है। इस सुलह के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्ल. और काफ़िर क़ुरैश के बीच जो शर्तें तय हुई थीं उनमें से एक यह भी थी कि जो काफ़िर मुसलमान होकर हुज़ूर के पास चला जाये आप उसे मक्का वालों को वापस कर दें। लेकिन क़ुरआने करीम ने उनमें से उन औरतों को मख़्सूस (अलग) कर दिया कि जो औरत ईमान कबूल करके आये और वास्तव में हो भी वह सच्ची ईमान वाली तो मुसलमान उसे काफ़िरों को वापस न दें। क़ुरआन के हुक्म को किसी हदीस से ख़ास करने की यह बेहतरीन मिसाल है और बाज़ बुज़ुर्गों के नज़दीक यह आयत इस हदीस की नासिख़ (हुक्म को बदलने वाली) है।

इस आयत का शाने नुज़ूल (उतरने का मौक़ा और सबब) यह है कि हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते उक़्बा बिन अबू मुईत रज़ि. मुसलमान होकर हिजरत करके मदीना चली आयीं। उनके दोनों भाई उमारा और वलीद उनके वापस लेने के लिये रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से कहा सुना। पस यह इम्तिहान की आयत नाज़िल हुई और मोमिन औरतों को वापस लौटाने को मना कर दिया गया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मालूम किया गया कि हुज़ूर सल्ल. उन औरतों का इम्तिहान किस तरह लेते थे? आपने बताया इस तरह कि ख़ुदा की क़सम खाकर सच-सच कहे कि वह अपने शौहर की नाइत्तिफ़ाक़ी की वजह से नहीं चली आयी, और ऐसे ही सिर्फ़ आब व हवा और ज़मीन की तब्दीली करने के लिये घूमने-फिरने के तौर पर नहीं आयी और किसी दुनियावी मक़सद के लिये नहीं आयी, बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला की और उसके रसूलुल्लाह सल्ल. की मुहब्बत में इस्लाम की ख़ातिर मैंने वतन छोड़ा है, इसके अ़लावा और कोई ग़र्ज़ नहीं। क़सम देकर इन सवालात का करना और ख़ूब आज़माना यह काम हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. के सुपुर्द था। एक और रिवायत में है कि इम्तिहान इस तरह होता था कि वह अल्लाह तआ़ला के सच्चे माबूद और ला-शरीक होने की गवाही दें और हुज़ूरे पाक सल्ल. के ख़ुदा के बन्दे और उसके भेजे हुए रसूल होने की गवाही दें। अगर आज़माईश में किसी दुनियावी मक़सद का पता चल जता तो उन्हें वापस लौटा देने का हुक्म था। जैसे यह मालूम हो जाये कि मियाँ-बीवी की झगड़े की वजह से या किसी और शख़्स की मुहब्बत में चली आयी है, वग़ैरह। इस आयत के इस जुमले से कि अगर तुम्हें मालूम हो जाये कि यह ईमान वाली औ़रत है तो उसे काफ़िरों की तरफ़ मत लौटाओ, साबित होता है कि ईमान पर भी यक़ीनी तौर पर मुत्तला (बाख़बर) हो जाना मुम्किन चीज़ है।

फिर इरशाद होता है कि मुसलमान औ़रतें काफ़िरों पर और काफ़िर मर्द मुसलमान औ़रतों के लिये हलाल नहीं। इस आयत ने इस रिश्ते को हराम कर दिया वरना इससे पहले मोमिन औ़रतों का निकाह काफ़िर मर्दों से जायज़ था, जैसे कि नबी सल्ल. की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा का निकाह अबुल-आ़स बिन रबीअ़ से हुआ था, हालाँकि यह उस वक़्त काफ़िर थे और रसूलुल्लाह सल्ल. की बेटी मुस्लिम थीं। बदर की लड़ाई में यह भी काफ़िरों के साथ थे और जो काफ़िर ज़िन्दा पकड़े गये उनमें यह भी

गिरफ़्तार होकर आये थे। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी वालिदा हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार उनके फ़िदये में भेजा था कि यह आज़ाद होकर आ जायें, जिसे देखकर हुज़ूरे पाक सल्ल. पर बड़ी रिक़्क़त तारी हुई (यानी आपका दिल भर आया) और आपने मुसलमानों से फ़रमाया- अगर मेरी बेटी के क़ैदी को छोड़ देना तुम पसन्द करते हो तो उसे रिहा कर दो। मुसलमानों ने ख़ुशी से बग़ैर फ़िदये के उन्हें छोड़ देना मन्ज़ूर किया। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें आज़ाद कर दिया और फ़रमाया कि आपकी बेटी को आपके पास मदीना में भेज दें। उन्होंने इसे मन्ज़ूर कर लिया और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. के साथ भेज भी दिया। यह वाक़िआ सन् 2 हिजरी का है।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा मदीना में ही रहने लगीं और यूँही बैठी रहीं, यहाँ तक कि सन् 8 हिजरी में उनके शौहर हज़रत अबुल-आ़स को अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम की तौफ़ीक़ दी और वह मुसलमान हो गये तो हुज़ूर सल्ल. ने फिर उसी पहले वाले निकाह पर बग़ैर नये मेहर के अपनी बेटी को उनके पास रुख़्सत कर दिया। एक और रिवायत में है कि दो साल बाद हज़रत अबुल-आ़स रज़ि. मुसलमान हो गये थे और हुज़ूरे पाक ने उसी पहले निकाह पर हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को लौटा दिया था, यही सही है, इसलिये कि मुसलमान औ़रतों के मुश्रिक मर्दों पर हराम होने के दो साल बाद यह मुसलमान हो गये थे।

एक और रिवायत में है कि उनके इस्लाम लाने के बाद नये सिरे से निकाह हुआ और नया मेहर बंधा। इमाम तिर्मिज़ी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत यज़ीद ने फ़रमाया है कि पहली रिवायत के रावी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हैं, वह रिवायत सनद के एतिबार से बहुत आला है और दूसरी रिवायत के रावी हज़रत अ़मर बिन शुऐब रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं और अ़मल इसी पर है, लेकिन यह याद रहे कि अ़मर बिन शुऐब रज़ि. वाली रिवायत के एक रावी हज्जाज बिन अरतात को हज़रत इमाम अहमद रह. वग़ैरह ज़ईफ़ बतलाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वाली हदीस का जवाब जमहूर यह देते हैं कि यह शख़्सी (व्यक्तिगत) वाक़िआ है, मुम्किन है उनकी इद्दत ख़त्म ही न हुई हो। अक्सर हज़रात का मज़हब यह है कि इस सूरत में जब औ़रत ने इद्दत के दिन पूरे कर लिये और अब तक उसका काफ़िर शौहर मुसलमान नहीं हुआ तो वह निकाह ख़त्म हो जाता है। हाँ बाज़ हज़रात का मज़हब यह है कि इद्दत पूरी कर लेने के बाद औ़रत को इख़्तियार है, अगर चाहे अपने उस निकाह को बाक़ी रखे, अगर चाहे ख़त्म करके दूसरा निकाह कर ले और इसी पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत को महमूल करते हैं।

फिर हुक्म होता है कि उन मुहाजिर औ़रतों के जो ख़र्चे हुए हैं वो उनके काफ़िर शौहरों को अदा कर दो, जैसे कि मेहर। फिर फ़रमान है कि अब उन्हें उनके मेहर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई हर्ज नहीं। इद्दत का गुज़र जाना, वली का मुक़र्रर करना वग़ैरह जो चीज़ें निकाह में ज़रूरी हैं उन शर्तों को पूरी करके उन मुहाजिर औ़रतों से जो मुसलमान निकाह करना चाहे कर सकता है। फिर इरशाद होता है कि तुम पर भी ऐ मुसलमानो! उन औ़रतों का अपने निकाह में बाक़ी रखना हराम है जो काफ़िर हैं, इसी तरह काफ़िर औ़रतों से निकाह करना भी हराम है। इस हुक्म के नाज़िल होते ही हज़रत उमर रज़ि. ने अपनी दो काफ़िर बीवियों को फ़ौरन तलाक़ दे दी, जिनमें से एक ने तो मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान से निकाह कर लिया और दूसरी ने सफ़वान इब्ने उमैया से।

हुज़ूर सल्ल. ने काफ़िरों से सुलह की और अभी तो आप हुदैबिया के नीचे के हिस्से में ही थे कि यह आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों से कह दिया गया कि जो औ़रत हिजरत करके आये, उसका ईमान वाली होना और ख़ालिस नीयत से हिजरत करना भी मालूम हो जाये तो उनके काफ़िर शौहरों को उनके दिये हुए

Maktab E Ashraf

मेहर वापस कर दो। इसी तरह काफ़िरों को भी यह हुक्म सुना दिया गया, इस हुक्म की वजह वह अ़हद-नामा (समझौता) था जो अभी-अभी तय हुआ था। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने अपनी जिन दो काफ़िर बीवियों को तलाक़ दी उनमें से पहली का नाम क़रीबा था, यह अबू उमैया बिन मुग़ीरा की लड़की थी और दूसरी का नाम उम्मे कुलसूम था जो अ़मर बिन जरवल ख़ुज़ाई की लड़की थी। हज़रत उबैदुल्लाह की वालिदा यही थी। इससे अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा बिन ग़ानिम ख़ुज़ाई ने निकाह कर लिया, यह भी मुश्रिक था। इसी तरह इस हुक्म के मातहत हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह ने अपनी काफ़िर बीवी उरवा बिन्ते रबीआ़ बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब को तलाक़ दे दी, इससे ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स ने निकाह कर लिया।

फिर इरशाद होता है कि तुम्हारी बीवियों पर जो तुमने ख़र्च किया है उसे काफ़िरों से ले लो जबकि वे उनमें चली जायें, और काफ़िरों की औ़रतें जो मुसलमान होकर तुम में आ जायें उन्हें तुम उनका ख़र्च दे दो। सुलह के बारे में और औ़रतों के बारे में ख़ुदा तआ़ला का फ़ैसला बयान हो चुका जो उसने अपनी मख़्लूक़ में कर दिया। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तमाम मस्लेहतों से बाख़बर है और उसका कोई हुक्म हिक्मत से ख़ाली नहीं होता, इसलिये कि पूरी तरह हकीम वही है।

इसके बाद की आयतः

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ......الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 11) का मतलब हज़रत क़तादा रह. यह बयान फ़रमाते हैं कि जिन काफ़िरों से तुम्हारा अ़हद व पैमान, सुलह व सफ़ाई नहीं, अगर कोई औ़रत किसी मुसलमान के घर से जाकर उनमें जा मिले तो ज़ाहिर है कि उसके शौहर का किया हुआ ख़र्च नहीं देंगे, तो उसके बदले तुम्हें भी इजाज़त दी जाती है कि अगर उनमें से कोई औ़रत मुसलमान होकर तुममें चली आये तो तुम भी उसके शौहर को कुछ न दो, जब तक वे न दें। हज़रत ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि मुसलमानों ने तो ख़ुदा के इस हुक्म की तामील की और काफ़िरों की जो औ़रतें मुसलमान होकर हिजरत करके आयीं उनके लिये हुए मेहर उनके शौहरों को वापस किये, लेकिन मुश्रिकों ने इस हुक्म के मानने से इनकार कर दिया। इस पर यह आयत उतरी और मुसलमानों को इजाज़त दी गयी कि अगर तुम में से कोई औ़रत उनके यहाँ चली गयी है और उन्होंने तुम्हारी ख़र्च की हुई रक़म अदा नहीं की तो जब उनमें से कोई औ़रत तुम्हारे यहाँ आ जाये तो तुम अपना वह ख़र्च निकाल कर बाक़ी अगर कुछ बचे तो दे दो वरना मामला ख़त्म हुआ। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से उनका यह मतलब मन्क़ूल है कि इसमें रसूलुल्लाह सल्ल. को यह हुक्म दिया जाता है कि जो मुसलमान औ़रत काफ़िरों में जा मिले और काफ़िर उसके शौहर को उसका किया हुआ ख़र्च अदा न करें तो माले ग़नीमत में से आप उस मुसलमान को उसके ख़र्च के बराबर दे दें। पस "फ़-आ़क़बतुम" के मायने यह हुए कि फिर तुम्हें क़ुरैश या काफ़िरों की किसी और जमाअ़त से माले ग़नीमत हाथ लगे तो उन मर्दों को जिनकी औ़रतें काफ़िरों में चली गयी हैं उनका किया हुआ ख़र्च अदा कर दो। यानी मेहरे मिस्ल।

इन अक़वाल में कोई टकराव और विरोधाभास नहीं, मतलब यह है कि पहली सूरत में अगर मुम्किन हो तो वह सही, वरना माले ग़नीमत में से उसे उसका हक़ दे दिया जाये, दोनों बातों में इख़्तियार है और हुक्म में गुंजाईश है। हज़रत इमाम इब्ने जरीर रह. इसी मतलब को पसन्द फ़रमाते हैं।

يَـٰٓأَيُّهَا النَّبِىُّ إِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنَٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰٓ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَٰدَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَٰنٍ يَّفْتَرِينَهُۥ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِى مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ○

ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! जब मुसलमान औ़रतें आपके पास (इस ग़र्ज़ से) आएँ कि आप से इन बातों पर बैअ़त करें कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी करेंगी, और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न बोहतान की औलाद लाएँगी, जिसको अपने हाथों और पाँव के दरमियान (शौहर के नुत्फ़े से जन्म दी हुई दावा करके) बना लें, और जायज़ बातों में वे आपके ख़िलाफ़ न करेंगी, तो आप उनको बैअ़त कर लिया कीजिए, और उनके लिए अल्लाह से मग़फ़िरत तलब किया कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

Maktab E Ashraf

औ़रतों की बैअ़त

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान औ़रतें हुज़ूरे पाक सल्ल. के पास हिजरत करके आती थीं उनका इम्तिहान इसी आयत से होता था। जो औ़रत इन तमाम बातों का इक़रार कर लेती उसे हुज़ूर सल्ल. ज़बानी फ़रमा देते कि मैंने तुम से बैअ़त की, यह नहीं कि आप उनके हाथ से हाथ मिलाते हों। क़सम ख़ुदा की आपने कभी बैअ़त करते हुए किसी औ़रत के हाथ को हाथ नहीं लगाया। सिर्फ़ ज़बानी फ़रमा देते कि इन बातों पर मैंने तुम से बैअ़त ली। तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि हज़रत उमैमा बिन्ते रक़ीक़ा फ़रमाती हैं- कई एक औ़रतों के साथ मैं भी हुज़ूरे पाक सल्ल. से बैअ़त करने के लिये हाज़िर हुई तो क़ुरआन की इस आयत के मुताबिक़ आपने हम से अ़हद व पैमान लिया, और हम अच्छी बातों में हुज़ूर की नाफ़रमानी न करेंगी के इक़रार के वक़्त फ़रमाया यह भी कह लो कि जहाँ तक तुम्हारी ताक़त है। हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल को हमारा ख़्याल हमसे बहुत ज़्यादा है और उनकी मेहरबानी भी हम पर ख़ुद हमारी मेहरबानी से बढ़कर है। फिर हमने कहा हुज़ूर! आप हमसे मुसाफ़ा नहीं करते? फ़रमाया नहीं, मैं ग़ैर-औ़रतों से मुसाफ़ा नहीं किया करता। मेरा एक औ़रत से कह देना सौ औ़रतों की बैअ़त के लिये काफ़ी है। पस बैअ़त हो चुकी।

इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को हसन सही कहते हैं। मुस्नद अहमद में इतनी ज़्यादती और भी है कि हम में से किसी औ़रत के साथ हुज़ूर सल्ल. ने मुसाफ़ा नहीं किया। यह हज़रत उमैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बहन और हज़रत फ़ातिमा रज़ि. की ख़ाला होती हैं। मुस्नद अहमद में है, हज़रत सलमा बिन्ते क़ैस रज़ियल्लाहु अ़न्हा जो रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़ाला थीं और दोनों क़िब्लों की तरफ़ हुज़ूर सल्ल. के साथ नमाज़ अदा की थी, बनू अ़दी बिन नज्जार के क़बीला में से थीं, फ़रमाती हैं कि अन्सार की औ़रतों के साथ ख़िदमते नबवी में बैअ़त करने के लिये मैं भी आयी थी और इस आयत में जिन

Maktab E Ashraf

बातों का ज़िक्र है उनका हमने इक़रार किया, आपने फ़रमाया- एक इस बात का भी इक़रार करो कि अपने शौहरों की ख़ियानत और उनके साथ धोखा न करोगी। हमने इसका भी इक़रार किया। बैअ़त की और जाने लगीं। फिर मुझे ख़्याल आया और एक औ़रत को मैंने हुज़ूर के पास भेजा कि वह मालूम कर ले कि ख़ियानत व धोखा न करने से आपका क्या मतलब है? आपने फ़रमाया यह कि उसका माल चुपके से किसी और को न दो। मुस्नद की हदीस में है कि हज़रत आ़यशा बिन्ते क़ुदामा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं अपनी वालिदा राबता बिन्ते सुफ़ियान ख़ुज़ाआ़ के साथ हुज़ूर सल्ल. से बैअ़त करने वालों में थी, हुज़ूर सल्ल. इन बातों पर बैअ़त ले रहे थे और औ़रतें इसका इक़रार करती थीं। मेरी वालिदा के हुक्म से मैंने भी इक़रार किया और बैअ़त वालियों में शामिल हुई। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उम्मे अ़तीया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मन्क़ूल है कि हमने इन बातों पर और इस बात पर कि हम किसी मुर्दे पर नौहा न करेंगी (यानी बयान करके न रोयेंगी) हुज़ूर सल्ल. से बैअ़त की, इस दौरान में एक औ़रत ने अपना हाथ समेट लिया और कहा मैं नौहा करने से रुकने पर बैअ़त नहीं करती, इसलिये कि फ़ुलाँ औ़रत ने मेरे फ़ुलाँ मुर्दे पर नौहा करने में मेरी मदद की है, तो मैं उसका बदला ज़रूर उतारूँगी। हुज़ूर सल्ल. इसे सुनकर ख़ामोश हो रहे और कुछ न फ़रमाया। वह चली गयीं लेकिन फिर थोड़ी ही देर में वापस आयीं और बैअ़त कर ली।

मुस्लिम शरीफ़ में भी यह हदीस है और इतनी ज़्यादती भी है कि इस शर्त को सिर्फ़ उस औ़रत ने और हज़रत उम्मे सुलैम बिन्ते मलहान ने ही पूरी की। बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि पाँच औ़रतों ने इस अ़हद को पूरा किया- उम्मे सुलैम, उम्मे अ़ला, अबू सबरा की बेटी जो हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. की बीवी थीं और दो औ़रतें, और या अबू सबरा की बेटी, हज़रत मुआ़ज़ की बीवी और एक औ़रत और। नबी सल्ल. ईद वाले दिन भी औ़रतों से इस बैअ़त का मुआ़हिदा लिया करते थे। बुख़ारी में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि रमज़ान की ईद की नमाज़ मैंने हुज़ूरे पाक सल्ल. के साथ और हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ि. के साथ पढ़ी है, सब के सब ख़ुतबे से पहले नमाज़ पढ़ते थे, फिर नमाज़ के बाद ख़ुतबा कहते थे। एक मर्तबा नबी सल्ल. ख़ुतबे से उतरे गोया वह नक़्शा मेरी निगाह के सामने है कि लोगों को बैठाया जाता था और आप उनके दरमियान से तशरीफ़ ला रहे थे, यहाँ तक कि औ़रतों के पास आये। आपके साथ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे, यहाँ पहुँचकर आपने इसी आयत की तिलावत की फिर अपने मालूम किया कि क्या तुम अपने इस इक़रार पर साबित-क़दम (जमी हुई) हो? एक औ़रत ने खड़े होकर जवाब दिया कि हाँ हुज़ूर हम इस पर मज़बूती के साथ क़ायम हैं, किसी और ने जवाब नहीं दिया। हदीस के रावी हज़रत हसन रह. को यह नहीं मालूम कि यह जवाब देने वाली कौनसी औ़रत थीं।

फिर आपने फ़रमाया- अच्छा ख़ैरात करो और हज़रत बिलाल रज़ि. ने अपना कपड़ा फैला दिया। चुनाँचे औ़रतों ने उसमें बिना नगीने की और नगीने वाली अंगूठियाँ अल्लाह की राह में डालीं। मुस्नद अहमद की रिवायत में हज़रत उमैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बैअ़त के ज़िक्र में आयत के अ़लावा इतना और भी है कि नौहा न करना और जाहिलीयत के ज़माने की तरह अपना बनाव-सिंगार ग़ैर-मर्दों को न दिखाना। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मर्दों से भी एक मज्लिस में फ़रमाया कि मुझसे इन बातों पर बैअ़त करो जो इस आयत में हैं, जो शख़्स इस बैअ़त को निभा दे उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे और जो इसके कुछ ख़िलाफ़ कर गुज़रे और वह मुस्लिम हुकूमत से पोशीदा रहे उसका हिसाब अल्लाह से है। अगर चाहे बख़्श दे और अगर चाहे अ़ज़ाब करे।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. फ़रमाते हैं कि अ़क़्बा-ए-ऊला में हम बारह शख़्सों ने रसूलुल्लाह सल्ल. से बैअ़त की और इन्हीं बातों पर जो इस आयत में मज़कूर हैं आपने हमसे बैअ़त ली और फ़रमाया अगर तुम इस पर पूरे उतरे तो यक़ीनन तुम्हारे लिये जन्नत है। यह वाक़िआ़ जिहाद की फ़र्ज़ियत से पहले का है। इब्ने जरीर की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. को हुक्म दिया कि वह औ़रतों से कहें कि रसूलुल्लाह तुमसे इस बात पर बैअ़त लेते हैं कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करो, उन बैअ़त के लिये आने वालों में हज़रत हिन्द भी थीं जो उत्बा बिन रबीआ़ की बेटी और हज़रत सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बीवी थीं। यही थीं जिन्होंने अपने कुफ़्र के ज़माने में हुज़ूर सल्ल. के चचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का पेट चीर दिया था, इस वजह से यह उन औ़रतों में ऐसी हालत से आयी थीं कि कोई इन्हें पहचान न सके। इसने जब फ़रमान सुना तो कहने लगी मैं कुछ कहना चाहती हूँ लेकिन अगर बोलूँगी तो हुज़ूर सल्ल. मुझे पहचान लेंगे और अगर पहचान लेंगे तो मेरे क़त्ल का हुक्म दे देंगे, मैं इसी वजह से इस तरह आयी हूँ कि पहचानी न जाऊँ। मगर औ़रतें सब ख़ामोश रहीं और इनकी बात अपनी ज़बान से कहने से इनकार कर दिया। आख़िर इनही को कहना पड़ा कि यह ठीक है, जब शिर्क से मर्दों को रोका गया है तो औ़रतों को क्यों न रोका गया होगा? हुज़ूर सल्ल. ने इनकी तरफ़ देखा लेकिन आपने कुछ न फ़रमाया। फिर हज़रत उमर रज़ि. से कहा इनसे कह दो कि दूसरी बात यह है कि ये चोरी न करें। इस पर हिन्द रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा मैं अबू सुफ़ियान की मामूली सी चीज़ कभी कभी ले लिया करती हूँ क्या ख़बर यह भी चोरी में दाख़िल है या नहीं? और मेरे लिये यह हलाल भी है या नहीं? हज़रत सुफ़ियान रज़ि. भी मज्लिस में मौजूद थे, यह सुनते ही कहने लगे मेरे घर में से जो कुछ भी तूने लिया हो चाहे वह ख़र्च में आ गया हो या अब भी बाक़ी हो वह सब मैं तेरे लिये हलाल करता हूँ। अब तो नबी सल्ल. ने साफ़ पहचान लिया कि यह मेरे चचा हमज़ा की क़ातिला और उनके कलेजे को चीरने वाली फिर उसे चबाने वाली औ़रत हिन्द हैं। आप उन्हें पहचान कर और उनकी यह गुफ़्तगू सुनकर और हालत देखकर मुस्कुरा दिये और उन्हें अपने पास बुलाया। उन्होंने आकर हुज़ूर सल्ल. का हाथ थामकर माफ़ी माँगी, आपने फ़रमाया तुम वही हिन्द हो? उन्होंने कहा पिछले गुनाह अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिये। हुज़ूर ख़ामोश हो रहे और बैअ़त के सिलसिले में फिर लग गये और फ़रमाया तीसरी बात यह है कि इन औ़रतों में से कोई बदकारी न करे। इस पर हज़रत हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औ़रत भी बदकारी करती है? आपने फ़रमाया ठीक है, ख़ुदा की क़सम आज़ाद औ़रतें इस बुरे काम से हरगिज़ आलूदा नहीं होतीं।

आपने फिर फ़रमाया चौथी बात यह है कि अपनी औलाद को क़त्ल न करें। हिन्द रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा आपने उन्हें बदर के दिन क़त्ल किया है, आप जानें और वह। आपने फ़रमाया पाँचवीं बात यह है कि ख़ुद अपनी ही तरफ़ से बनाकर बिना सर पैर का कोई ख़ास बोहतान न तराश लें, और छठी बात यह है कि मेरी शरई बातों में मेरी नाफ़रमानी न करें, और सातवाँ अ़हद आपने उनसे यह भी लिया कि वे नौहा न करें। जाहिलीयत के ज़माने में किसी के मर जाने पर कपड़े फाड़ डालते थे, मुँह नोच लेते थे, बाल कटवा देते थे और हाय-वाय किया करते थे। यह असर (रिवायत) ग़रीब है और इसके बाज़ हिस्से में नकारत भी है, इसलिये कि अबू सुफ़ियान और उनकी बीवी हिन्द के इस्लाम के वक़्त उन्हें हुज़ूर की तरफ़ से कोई अन्देशा न था बल्कि उससे भी आपने सफ़ाई और मुहब्बत का इज़हार कर दिया था। वल्लाहु आलम

एक और रिवायत में है कि फ़त्हे-मक्का वाले दिन बैअ़त वाली यह आयत नाज़िल हुई। नबी सल्ल. ने सफ़ा पर मर्दों से बैअ़त ली और हज़रत उमर रज़ि. ने औ़रतों से बैअ़त ली। उसमें इतना और भी है कि

औलाद के कृत्ल की मनाही सुनकर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया- हमने तो उन्हें बचपन से पाल-पोसकर बड़ा किया लेकिन उन बड़ों को तुमने कृत्ल किया। इस पर हज़रत उमर रज़ि. हंसी की वजह से लौट-पोट हो गये। इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि जब हिन्द बैअ़त करने आयीं तो उनके हाथ मर्दों की तरह सफ़ेद थे। आपने फ़रमाया जाओ इनका रंग बदल लो, चुनाँचे वह मेहंदी लगाकर हाज़िर हुईं। उनके हाथ में दो सोने के कड़े थे, उन्होंने पूछा कि इनके बारे में क्या हुक्म है? फ़रमाया- जहन्नम की आग के दो अंगारे हैं (यह हुक्म उस वक़्त है जब उनकी ज़कात न अदा की जाये)। इस बैअ़त के लेने के वक़्त आपके हाथ में एक कपड़ा था, जब औलाद के क़त्ल की मनाही पर उनसे अ़हद लिया गया तो एक औ़रत ने कहा कि उनके बाप-दादों को तो कृत्ल किया और उनकी औलाद की वसीयत हमें हो रही है (इस तरह की बातें औ़रतों की तरफ़ से दिल्लगी की थीं, इसी लिये आपने बुरा न माना। इसी से यह भी पता लगता है कि यह बैअ़त कैसे ख़ुशगवार माहौल में हुई)।

शुरू में बैअ़त की यह सूरत थी लेकिन फिर उसके बाद तो आपने यह दस्तूर कर रखा था कि जब बैअ़त करने के लिये औ़रतें जमा हो जातीं तो आप ये सब बातें उनके सामने पेश फ़रमाते, वे इनका इक़रार करतीं और वापस लौट जातीं। पस फ़रमाने ख़ुदा है कि जो औ़रत इन बातों पर बैअ़त करने के लिये आये तो उससे बैअ़त ले लो, कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करना, ग़ैर-लोगों के माल न चुराना, हाँ उस औ़रत को जिसका शौहर अपनी ताक़त के मुताबिक़ खाने पीने पहनने ओढ़ने को न देता हो तो जायज़ है कि अपने शौहर के माल से दस्तूर और उर्फ़ के मुताबिक़ और अपनी ज़रूरत के लिहाज़ से ले ले, चाहे शौहर को उसका इल्म न हो। इसकी दलील हज़रत हिन्द वाली हदीस है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया कि या रसूलल्लाह! मेरे शौहर अबू सुफ़ियान बख़ील (कन्जूस) हैं, वह मुझे इतना ख़र्च नहीं देते कि मुझे और मेरी औलाद को काफ़ी हो सके, इसलिये उनकी बेख़बरी में उनके माल में से ले लूँ तो मुझे जायज़ है या नहीं? आपने फ़रमाया आ़म दस्तूर के मुताबिक़ उसके माल से इतना ले ले जो तुझे और तेरे बाल बच्चों को काफ़ी हो सके। (सहीहैन) और वे ज़िनाकारी न करें। जैसे एक और जगह इरशाद है:

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّسَآءَ سَبِيْلًا.

ज़िना के क़रीब न जाओ वह बेहयाई है और बुरी राह है।

हज़रत समुरा वाली हदीस में ज़िना की सज़ा जहन्नम का दर्दनाक अ़ज़ाब बयान की गयी है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत फ़ातिमा बिन्ते उत्बा जब बैअ़त के लिये आयीं और इस आयत की तिलावत उनके सामने की गयी तो उन्होंने शर्म से अपना हाथ अपने सर पर रख लिया, आपको उनकी यह हया अच्छी मालूम हुई। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- इन्हीं शर्तों पर सबने बैअ़त की है। यह सुनकर उन्होंने भी बैअ़त कर ली। हुज़ूर सल्ल. की बैअ़त के तरीक़े ऊपर बयान हो चुके हैं। औलाद को क़त्ल न करने का हुक्म आ़म है, पैदा शुदा औलाद को मार डालना भी इसी मनाही में है जैसे कि जाहिलीयत के ज़माने वाले इस ख़ौफ़ से क़त्ल करते थे कि उन्हें कहाँ से खिलायेंगे पिलायेंगे और गर्भपात कराना भी इसी मनाही में है चाहे इस तरह हो कि ऐसे इलाज किये जायें जिससे हमल ठहरे ही नहीं, या ठहरे हुए हमल को किसी तरह गिरा दिया जाये, बुरी ग़र्ज़ वग़ैरह से। बोहतान न बाँधने का एक मतलब तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह बयान फ़रमाया है कि दूसरे की औलाद को अपने शौहर की तरफ़ मन्सूब करना (यानी ज़िना से बच्चा पैदा हो जाये तो ज़ाहिर है कि वह शौहर की तरफ़ ही मन्सूब होगा)।

Maktab E Ashraf

अबू दाऊद की हदीस में है कि मुलाअ़ना वाली (लानत वाली) आयत के नाज़िल होने के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो औरत किसी क़ौम में उसे दाख़िल करे जो उस क़ौम का नहीं वह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक किसी गिनती में शुमार नहीं, और जो शख़्स अपनी औलाद से इनकार कर जाये हालाँकि वह उसके सामने मौजूद हो, अल्लाह तआ़ला उससे आड़ कर लेगा और तमाम अगलों पिछलों के सामने उसे रुस्वा व ज़लील करेगा। हुज़ूर सल्ल. की नाफ़रमानी न करें, यानी आपके अहकाम बजा लायें और आपके मना किये हुए कामों से रुक जाया करें। यह शर्त यानी मारूफ़ होने की (यानी नेक कामों में इताअ़त की) औरत के लिये अल्लाह तआ़ला ने लगा दी है। हज़रत मैमून फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की इताअ़त भी सिर्फ़ मारूफ़ (नेक कामों) में रखी है और मारूफ़ ही ताअ़त (नेकी) है। हज़रत इब्ने ज़ैद फ़रमाते हैं- देख लो कि मख़्लूक़ में सब से बेहतरीन रसूलुल्लाह सल्ल. की फ़रमाँबरदारी का हुक्म भी मारूफ़ में ही है।

इस बैअ़त वाले दिन हुज़ूरे पाक सल्ल. ने औरतों से नौहा न करने का इक़रार भी लिया था जैसा कि हज़रत उम्मे अ़तीया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की हदीस में पहले गुज़र चुका। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- हमसे ज़िक्र किया गया है कि इस बैअ़त में यह भी था कि औरतें ग़ैर-मेहरमों से बातचीत न करें। इस पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! बहुत सी बार ऐसा भी होता है कि हम घर पर मौजूद नहीं होते और मेहमान आ जाते हैं। आपने फ़रमाया मेरी मुराद उनसे बातचीत करने की मनाही नहीं, मैं उनसे काम की बात करने से नहीं रोकता। (इब्ने जरीर) इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस बैअ़त के मौक़े पर औरतों को ना-मेहरम मर्दों से बातें करने से मना फ़रमाया और फ़रमाया कि नौहा न करने की शर्त पर एक औरत ने कहा- फ़ुलाँ क़बीले की औरतों ने मेरा साथ दिया है तो उनके नौहे में मैं भी उनका साथ देकर बदला ज़रूर उतारूँगी। चुनाँचे वह गयीं, बदला उतारा, फिर आकर हुज़ूर सल्ल. से बैअ़त की......। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हा जिनका नाम उन औरतों में है जिन्होंने नौहा न करने की बैअ़त को पूरा किया, यह मलहान की बेटी और हज़रत अनस रज़ि. की वालिदा हैं। एक और रिवायत में है कि जिस औरत ने बदले के नौहा की इजाज़त माँगी थी ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने उसे इजाज़त दी थी (यह वक़्ती बात और उनके लिये ख़ास इजाज़त मानी जायेगी, इस पर आ़म इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता)। यही वह मारूफ़ (नेक काम) है जिसमें नाफ़रमानी मना है।

बैअ़त करने वाली औरतों में से एक का बयान है कि मारूफ़ (नेक कामों) में हम हुज़ूर सल्ल. की नाफ़रमानी न करें, इसका मतलब यह है कि मुसीबत के वक़्त मुँह न नौचें, बाल न मुंडवायें, कपड़े न फाड़ें, हाय-वाय न करें। इब्ने जरीर में हज़रत उम्मे अ़तीया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि जब हुज़ूर हमारे यहाँ मदीना में तशरीफ़ लाये तो एक दिन आपने हुक्म दिया कि सब अन्सारी औरतें फ़ुलाँ घर में जमा हों। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को वहाँ भेजा। आप दरवाज़े पर खड़े हो गये और सलाम किया। हमने आपके सलाम का जवाब दिया। फिर फ़रमाया- मैं रसूलुल्लाह का क़ासिद हूँ। हमने कहा रसूलुल्लाह को भी मरहबा हो और आपके क़ासिद को भी। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हें हुक्म करूँ कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क न करना। चोरी और ज़िनाकारी से बचना। इसी पर तुम बैअ़त करो। हमने कहा हम सब हाज़िर हैं और इक़रार करती हैं। चुनाँचे आपने वहीं बाहर खड़े-खड़े अपना हाथ अन्दर की तरफ़ बढ़ा दिया और हमने अपने हाथ अन्दर से अन्दर ही बढ़ाये। फिर आपने फ़रमाया- ऐ अल्लाह!

Maktab E Ashraf

गवाह रह। फिर हमें हुक्म हुआ कि दोनों ईदों में हम अपनी बड़ी उम्र की औरतों और जवान कुंवारी लड़कियों को ले जाया करें। हम पर जुमा फ़र्ज़ नहीं, हमें जनाज़ों के साथ न जाना चाहिये। हज़रत इस्माईल हदीस को बयान करने वाले फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी दादी साहिबा हज़रत उम्मे अ़तीया रज़ि. से पूछा कि औरतें मारूफ़ (नेक कामों) में हुज़ूर की नाफ़रमानी न करें, इससे क्या मतलब है? फ़रमाया यह कि नौहा न करें। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि जो कोई मुसीबत के वक़्त अपने कल्लों पर थप्पड़ मारे, दामन चाक करे और जाहिलीयत के वक़्त की हाये-वाये मचाये वह हम में से नहीं। एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. उससे बरी हैं जो गला फाड़कर हाय-वाय करे, बाल नोचे या सर मुंडवाये और कपड़े फाड़े, या दामन चीरे। अबू यअ़्ला में है कि मेरी उम्मत में चार काम जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) के हैं जिन्हें वह न छोड़ेगी। हसब नसब (नस्ल और ख़ानदान व क़ौम) पर फ़ख़्र करना। इनसान को उसके नसब का ताना देना। सितारों से बारिश तलब करना और मय्यित पर नौहा करना। और फ़रमाया नौहा करने वाली औरत अगर बिना तौबा किये मर जाये तो उसे क़ियामत के दिन गन्धक का कुर्ता पहनाया जायेगा और खुजली की चादर उढ़ाई जायेगी।

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने नौहा करने वालियों पर और नौहा को कान लगाकर सुनने वालियों पर लानत फ़रमाई। इब्ने जरीर की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि मारूफ़ (शरीअ़त के अहकाम) में नाफ़रमानी न करने से मुराद नौहा न करना है। यह हदीस तिर्मिज़ी की किताबुत्तफ़सीर में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब कहते हैं।

ऐ ईमान वालो! उन लोगों से (भी) दोस्ती मत करो जिन पर अल्लाह तआ़ला ने ग़ज़ब फ़रमाया है कि वे आख़िरत (की भलाई और सवाब) से ऐसे नाउम्मीद हो गए हैं जैसे काफ़िर लोग जो क़ब्रों में (दफ़न) हैं, नाउम्मीद हैं। (13)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝

ये आख़िरत में मेहरूम हैं

इस सूरत के शुरू में जो हुक्म था वही आख़िर में बयान हो रहा है कि यहूद व ईसाई और दूसरे काफ़िरों से जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब और उसकी लानत हो चुकी है, और ख़ुदा की रहमत और उसकी शफ़क़त से दूर हो चुके हैं, तुम उनसे दोस्ताना और मेल-मिलाप न रखो। वे आख़िरत के सवाब से और वहाँ की नेमतों से ऐसे ना-उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों वाले काफ़िर। इस पिछले जुमले के दो मायने बयान किये गये हैं- एक तो यह कि जैसे ज़िन्दा काफ़िर अपने मुर्दा काफ़िरों के दोबारा ज़िन्दा होने से मायूस हो चुके हैं। दूसरे यह कि जिस तरह मुर्दा काफ़िर हर भलाई से ना-उम्मीद हो चुके हैं। वे मरकर आख़िरत के अहवाल देख चुके और अब उन्हें किसी क़िस्म की भलाई की उम्मीद नहीं रही।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मुम्तहिना की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः सफ़्फ़

सूरः सफ़्फ़ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तफ़सीर सूरः सफ़्फ़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा एक दिन यह तज़किरा कर रहे थे कि कोई जाये और रसूलुल्लाह सल्ल. से यह मालूम करे कि ख़ुदा को सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल कौनसा है? मगर अभी कोई गया भी न था कि हमारे पास रसूलुल्लाह सल्ल. का क़ासिद पहुँचा और हममें से एक-एक को बुलाकर हुज़ूर के पास ले गया। जब हम सब जमा हो गये तो आपने इस पूरी सूरत की तिलावत की। (मुस्नद अहमद) (उसमें ज़िक्र है कि जिहाद सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल ख़ुदा तआ़ला को है)। इब्ने अबी हातिम की इस हदीस में है कि हम हुज़ूरे पाक से सवाल करते हुए डरे और उसमें यह भी है कि जिस तरह हुज़ूर सल्ल. ने पूरी सूरत पढ़कर सुनाई थी उसी तरह इस रिवायत के बयान करने वाले सहाबी ने ताबिई को पढ़कर सुनाई, और ताबिई ने अपने शागिर्द को और उसने अपने शागिर्द को, इसी तरह आख़िर तक। एक और रिवायत में है कि हमने कहा था- अगर हमें ऐसे अ़मल की ख़बर हो जाये तो हम ज़रूर उस पर आ़मिल हो जायें। मुझसे मेरे उस्ताद शैख़ मुस्नद अबुल-अ़ब्बास अहमद बिन अबू तालिब हज्जार ने भी अपनी सनद से यह हदीस बयान की है और उसमें भी निरन्तर तौर पर हर उस्ताद का अपने शागिर्द को यह सूरत पढ़कर सुनाना बयान किया गया है, यहाँ तक कि मेरे उस्ताद ने भी अपने उस्ताद से इसे सुना है, लेकिन चूँकि वह ख़ुद उम्मी (बेपढ़े) थे और इसे याद करने का उन्हें वक़्त नहीं मिला, उन्होंने मुझे पढ़कर नहीं सुनाई। लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह मेरे दूसरे उस्ताद हाफ़िज़े कबीर अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन उस्मान रह. ने अपनी सनद से यह हदीस मुझे पढ़ाते वक़्त यह सूरत भी पूरी पढ़कर सुनाई है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الۡاَرۡضِ‌ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ○ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لِمَ تَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ○
كَبُرَ مَقۡتًا عِنۡدَ اللّٰهِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا لَا

सब चीज़ें अल्लाह ही की पाकी बयान करती हैं (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (1) ऐ ईमान वालो! ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो? (2) ख़ुदा के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़गी की है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं। (3) अल्लाह तो उन लोगों को (ख़ास तौर

Maktab E Ashraf

تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝	पर) पसन्द करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं कि गोया वह एक इमारत है कि जिसमें सीसा पिलाया गया है। (4)

क़ौल और अ़मल में फ़र्क़ होना

पहली आयत की तफ़सीर कई बार गुज़र चुकी है, अब फिर उसको दोहराने की ज़रूरत नहीं। फिर उन लोगों का रद्द होता है जो कहें और न करें। वायदा करें और पूरा न करें। बाज़ पहले उलेमा ने इस आयत से यह दलील ली है कि वायदे को पूरा करना वाजिब है, जिससे वायदा किया है चाहे वह ताकीद करे या न करे। उनकी दलील सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की यह हदीस भी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मुनाफ़िक़ों की तीन आ़दतें होती हैं, जब वायदा करे ख़िलाफ़ करे, जब बात करे झूठ बोले, जब अमानत दिया जाये ख़ियानत करे। दूसरी सही हदीस में है कि चार बातें जिसमें हों व ख़ालिस मुनाफ़िक़ है और जिसमें उन चार में से एक हो उसमें एक ख़स्लत निफ़ाक़ की है जब तक उसे न छोड़े। उनमें से एक वायदा ख़िलाफ़ी है। शरह सही बुख़ारी के शुरू में हमने इन दोनों हदीसों की पूरी शरह (व्याख्या) कर दी है। इसी लिये यहाँ भी इसकी ताकीद में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को यह बात सख़्त नापसन्द है कि तुम वह कहो जो ख़ुद न करो।

मुस्नद अहमद और अबू दाऊद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ से रिवायत है कि हमारे पास रसूलुल्लाह सल्ल. आये, मैं उस वक़्त छोटा बच्चा था, खेल-कूद के लिये जाने लगा तो मेरी वालिदा ने मुझे आवाज़ देकर कहा- इधर आ कुछ दूँ। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया कुछ देना भी चाहती हो या नहीं? मेरी वालिदा ने कहा हाँ हुज़ूर! खजूरें दूँगी। आपने फ़रमाया फिर तो ठीक है वरना याद रखो कुछ न देने का इरादा होता और यूँ कहतीं तो तुम पर एक झूठ लिखा जाता। हज़रत इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि जब वायदे के साथ वायदा किये हुए की ताकीद का ताल्लुक़ हो तो उस वायदे को पूरा करना वाजिब हो जाता है, जैसे किसी शख़्स ने किसी से कह दिया कि तू निकाह कर ले और इतना-इतना हर रोज़ मैं तुझे देता रहूँगा। उसने निकाह कर लिया तो जब तक निकाह बाक़ी है उस शख़्स पर वाजिब है कि उसे अपने वायदे के मुताबिक़ देता रहे। इसलिये कि उसमें आदमी के हक़ का ताल्लुक़ साबित हो गया, जिस पर उससे सख़्ती के साथ पूछ हो सकती है। जमहूर का मज़हब यह है कि अ़हद का पूरा करना मुतलक़ वाजिब ही नहीं (यानी इसका दर्जा ऐसा नहीं)।

इस आयत का जवाब वे यह देते हैं कि जब लोगों ने जिहाद की फ़र्ज़ियत की इच्छा जताई और वह फ़र्ज़ हो गया तो अब बाज़ लोग देखने लगे जिस पर यह आयत उतरी। जैसे एक और जगह है:

اَلَمْ تَرَاِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ........ الخ.

यानी क्या तूने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया कि तुम अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ व ज़कात का ख़्याल रखो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उनमें ऐसे लोग भी निकल आये जो लोगों से इस तरह डरने लगे जैसे ख़ुदा से डरते हैं, बल्कि उससे भी बहुत ज़्यादा। कहने लगे परवर्दिगार! तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया? क्यों हमें एक वक़्ते मुक़र्ररा तक पीछे न छोड़ा, जो क़रीब ही तो है। तू कह दे

कि दुनिया की चीज़ें तो बहुत ही कम हैं, हाँ परहेज़गारों के लिये आख़िरत बेहतरीन चीज़ है। तुम पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा। तुम कहीं भी हो तुम्हें मौत ढूँढ निकालेगी चाहे तुम मज़बूत महलों में हो।

एक और जगह इरशाद है:

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ لَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ...... الخ.

यानी मुसलमान कहते हैं कि क्यों कोई सूरत नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई मोहकम सूरत उतारी जाती है और उसमें लड़ाई का ज़िक्र होता है तो तू देखेगा कि बीमार दिल वाले तेरी तरफ़ इस तरह देखेंगे जैसे वह देखता है जिस पर मौत की बेहोशी हो।

इसी तरह की यह आयत भी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि बाज़ मोमिनों ने जिहाद की फ़र्ज़ियत से पहले कहा- क्या ही अच्छा होता कि अल्लाह तआ़ला हमें वह अ़मल बतलाता जो उसे सबसे ज़्यादा पसन्द हो, ताकि हम उस पर आ़मिल (अ़मल करने वाले) होते। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को ख़बर दी कि सबसे ज़्यादा पसन्द अ़मल मेरे नज़दीक वह ईमान है जो शक से पाक हो, और बेईमानों से जिहाद करना। तो बाज़ मुसलमानों पर हुक्म भारी गुज़रा जिस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि वे बातें ज़बान से क्यों निकालते हो जिन्हें नहीं करते। इमाम इब्ने जरीर इसी को पसन्द फ़रमाते हैं कि मुसलमानों ने कहा- अगर हमें मालूम हो जाता कि किस अ़मल को अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है तो हम ज़रूर वह अ़मल बजा लाते, इस पर अल्लाह तआ़ला ने वह अ़मल बताया कि मेरी राह में सफ़ें बाँध कर मज़बूती के साथ जमकर जिहाद करने वालों को मैं बहुत पसन्द फ़रमाता हूँ। फिर उहुद वाले दिन उनकी आज़माईश हो गयी और लोग पीठ फेरकर भाग खड़े हुए जिस पर यह अल्लाह का यह फ़रमान उतरा कि वह क्यों कहते हो जो करके नहीं दिखाते?

बाज़ हज़रात फ़रमाते हैं कि यह उनके बारे में नाज़िल हुई है जो कहें कि हमने जिहाद किया है हालाँकि उन्होंने जिहाद न किया हो। कह दें कि हम ज़ख़्मी हुए और हुए न हों। कह दें कि हम पर मार पड़ी और पड़ी न हो। कह दें कि हम क़ैद किये गये और क़ैद न किये गये हों। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मुनाफ़िक़ हैं कि मुसलमानों की मदद का वायदा करते लेकिन वक़्त पर पूरा न करते। ज़ैद बिन असलम जिहाद मुराद लेते हैं। हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं कि उन कहने वालों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा अन्सारी भी थे, जब यह आयत उतरी और मालूम हुआ कि जिहाद सबसे ज़्यादा उम्दा अ़मल है तो आपने अ़हद कर लिया कि मैं तो अब से लेकर मरते दम तक ख़ुदा की राह में ख़ुद को वक़्फ़ (समर्पित) कर चुका। चुनाँचे इसी पर क़ायम भी रहे, यहाँ तक कि अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गये।

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बसरा के क़ारियों को एक मर्तबा बुलवाया तो तीन सौ क़ारी उनके पास आये जिनमें से हर एक क़ुरआन का क़ारी था। फिर फ़रमाया तुम बसरा वालों के क़ारी और उनमें से बेहतरीन लोग हो। सुनो हम एक सूरत पढ़ते थे जो मुसब्बहात की (जो सूरतें 'सब्ब-ह' या 'युसब्बिहु' से शुरू होती हैं उन) सूरतों के जैसी थी, फिर ख़ुद-बख़ुद हम उसको भूल गये, हाँ मुझे उसमें से इतना याद रह गया:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ.

यानी ऐ ईमान वालो! वह क्यों कहते हो जो नहीं करते, फिर वह लिखा जाये और तुम्हारी गर्दनों में गवाह के तौर पर लटका दिया जाये। फिर क़ियामत के दिन उसके बारे में पूछगछ हो।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के महबूब वे लोग हैं जो सफ़ें बाँधकर अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबले में डट जाते हैं ताकि अल्लाह तआ़ला का कलिमा बुलन्द हो, इस्लाम की हिफ़ाज़त हो और दीन का ग़लबा हो। मुस्नद अहमद में है कि तीन क़िस्म के लोगों की तीन हालतें हैं जिन्हें देखकर अल्लाह तबारक व तआ़ला ख़ुश होता है और हंस देता है- रात को उठकर तहज्जुद पढ़ने वाले, नमाज़ के लिये सफ़ें बाँधने वाले, मैदाने जंग में क़तार लगाने वाले। इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत मुतर्रिफ़ फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत अबूज़र रज़ि. की रिवायत से एक हदीस पहुँची थी, मेरी ख़्वाहिश थी कि ख़ुद हज़रत अबूज़र से मिलकर वह हदीस सुन लूँ चुनाँचे एक मर्तबा जाकर आप से मुलाक़ात की और वाक़िआ़ बयान किया। आपने ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाकर कहा वह हदीस क्या है? मैंने कहा यह कि अल्लाह तआ़ला तीन शख़्सों को दुश्मन जानता है और तीन को दोस्त रखता है। फ़रमाया हाँ मैं अपने दोस्त हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर झूठ नहीं बोल सकता, वास्तव में आपने हम से यह हदीस बयान फ़रमाई है। मैंने पूछा वे तीन कौन हैं? जिन्हें अल्लाह तआ़ला महबूब जानता है। फ़रमाया एक तो वह जो ख़ुदा की राह में जिहाद करे और सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ा की नीयत से निकले, दुश्मन से जब मुक़ाबला हो तो बहादुरी से जिहाद करे, तुम इसकी तस्दीक़ ख़ुद अल्लाह की किताब में भी देख सकते हो, फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई और फिर पूरी हदीस बयान की।

इब्ने अबी हातिम में यह हदीस इसी तरह इन्हीं अलफ़ाज़ में इतनी ही आयी है, हाँ तिर्मिज़ी और नसाई में पूरी हदीस है, और हमने भी इसे दूसरी जगह पूरी ज़िक्र की है। अल्हम्दु लिल्लाह।

हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. से इब्ने अबी हातिम में मन्क़ूल है कि अल्लाह तआला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है- आप मेरे बन्दे मुतवक्किल और पसन्दीदा हैं, बुरे अख़्लाक़ वाले, बद-ज़बान, बाज़ारों में शोर व गुल करने वाले नहीं, बुराई का बदला बुराई से नहीं देते बल्कि माफ़ कर देते हैं। आपकी पैदाईश का स्थान मक्का है, हिजरत का मक़ाम तूबा (मदीना) है, मुल्क आपका शाम है, उम्मत आपकी बहुत ज़्यादा अल्लाह की तारीफ़ बयान करने वाली है, हर हाल में और हर मन्ज़िल में अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना बयान करते रहते हैं, सुबह के वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में उनकी पस्त आवाज़ें बराबर सुनाई देती हैं, जैसे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट। अपने नाख़ुन और मूँछे कतरते हैं और अपने तहबन्द अपनी आधी पिंडलियों तक बाँधते हैं। उनकी सफ़ें मैदाने जिहाद में ऐसी होती हैं जैसी नमाज़ में। फिर हज़रत कअ़ब रह. ने इसी आयत की तिलावत की, फिर फ़रमाया सूरज की निगहबानी (हिफ़ाज़त व निगरानी) करने वाले, जहाँ वक़्ते नमाज़ आ जाये नमाज़ अदा कर लेने वाले चाहे सवारी पर हों।

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब तक हुज़ूर सल्ल. सफ़ें न बंधवा लेते दुश्मन से लड़ाई शुरू नहीं करते थे। पस सफ़ बन्दी की तालीम मुसलमानों को ख़ुदा की दी हुई है। एक दूसरे से मिला रहे, साबित-क़दम (मज़बूती से जमे) रहें और मुक़ाबले से हटें नहीं। एक दूसरे से मिला हुआ खड़ा रहे, तुम नहीं देखते कि इमारत का बनाने वाला नहीं चाहता कि उसकी इमारत में कहीं ऊँच-नीच हो या टेढ़ी-तिरछी हो, या सुराख़ रह जायें। इसी तरह अल्लाह तआ़ला नहीं चाहता कि उसके हुक्म और मामले में इख़्तिलाफ़ (बिखराव) हो, मैदाने जंग में और नमाज़ के वक़्त मुसलमानों की सफ़-बन्दी ख़ुद उसने की है। पस तुम अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील करो। जो अल्लाह के अहकाम बजा लायेगा यह उसके लिये सुरक्षा और बचाव है। अबू बहरिया फ़रमाते हैं कि मुसलमान घोड़ों पर सवार होकर लड़ना पसन्द नहीं करते थे, उन्हें तो यह अच्छा मालूम होता था कि ज़मीन पर पैदल सफ़ें बनाकर आमने-सामने का मुक़ाबला करें। आप फ़रमाते हैं कि जब तुम मुझे देखो कि मैंने सफ़ में इधर-उधर तवज्जोह की तो तुम जो चाहो मलामत करना

और बुरा-भला कहना (मक़सद यह है कि यह सफ़-बन्दी बहुत ज़रूरी चीज़ है)।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ○ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ○	और (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझको क्यों तकलीफ़ पहुँचाते हो हालाँकि तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ। फिर जब (इस तंबीह पर भी) वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को और (ज़्यादा) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआ़ला (का मामूल है कि वह) ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता। (5) और (इसी तरह वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि ईसा इब्ने मरियम ने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि मुझसे पहले जो तौरात (आ चुकी) है मैं उसकी तस्दीक़ करने वाला हूँ, और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका (मुबारक) नाम अहमद होगा, मैं उनकी ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ फिर जब वह उन लोगों के पास खुली दलीलें लाए तो वे लोग (उन दलीलों यानी मोजिज़ों के बारे में) कहने लगे, यह खुला जादू है। (6)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम से एक ख़िताब

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया- तुम मेरी रिसालत की सच्चाई जानते हो फिर क्यों मुझको सताने के पीछे पड़े हो? इसमें गोया इस तरह पर हुज़ूरे पाक सल्ल. को तसल्ली दी जाती है। चुनाँचे आपको भी जब सताया जाता तो फ़रमाते- अल्लाह तआ़ला हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर रहमत नाज़िल फ़रमाये, उनको इससे ज़्यादा परेशान किया गया, लेकिन फिर भी साबिर रहे। और साथ ही इसमें मोमिनों को अदब सिखाया जा रहा है कि वे अल्लाह के नबी को तकलीफ़ न पहुँचायें। ऐसा न करें जिससे आपका दिल मैला हो। जैसे एक और जगह है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى.......... الخ.

ऐ ईमान वालो! तुम ऐसे न होना जैसे मूसा अ़लैहिस्सलाम को सताने वाले थे।

अल्लाह तआ़ला ने अपने उस इज़्ज़त वाले बन्दे को उनकी बकवास बाज़ी और झूठे इल्ज़ामात से पाक किया। पस जब ये लोग बावजूद इल्म के हक़ की इत्तिबा से हट गये और टेढ़े चलने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने भी उनके दिल हिदायत से हटा दिये। चुनाँचे वे शक व हैरानी में पड़ गये। एक और जगह है:

Maktab E Ashraf

وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ............الخ

यानी हम उनके दिल और आँखें उलट देंगे जिस तरह ये हमारी आयतों पर पहली दफ़ा ईमान नहीं लाये, और हम उन्हें उनकी नाफ़रमानी की हालत में छोड़ देंगे, जिस में ये हैरान व परेशान रहेंगे। एक और जगह इरशाद है:

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَاتَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى ....الخ.

जो रसूल की मुख़ालफ़त करे हिदायत ज़ाहिर होने के बाद और मोमिनों के रास्ते से हटकर किसी की ताबेदारी करे, हम उसे उसी तरफ़ मुतवज्जह करेंगे जिस तरफ़ वह मुतवज्जह हुआ है, और आख़िरकार उसे हम जहन्नम में डाल देंगे, और वह बहुत बुरी जगह है।

यहाँ भी इरशाद होता है कि अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ों (बदकारों) की रहबरी नहीं करता। फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का ख़ुतबा बयान होता है जो आपने बनी इस्राईल में पढ़ा था, जिसमें फ़रमाया था कि तौरात में मेरी ख़ुशख़बरी दी गयी थी और अब मैं तुम्हें अपने बाद आने वाले एक रसूल की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) सुनाता हूँ जो नबी अ़रबी उम्मी मक्की अहमदे मुज्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। पस हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल के नबियों के ख़त्म करने वाले हैं (यानी बनी इस्राईल के आख़िरी नबी हैं) और हज़रत मुहम्मद सल्ल. तमाम अम्बिया और मुर्सलीन के ख़ातिम (ख़त्म करने वाले) हैं। आपके बाद न तो कोई नबी आयेगा न रसूल। नुबुव्वत व रिसालत सब आप पर पूरी तरह और हर एतिबार से ख़त्म हो गयी।

सही बुख़ारी शरीफ़ में एक निहायत पाकीज़ा हदीस है जिसमें है कि आपने फ़रमाया- मेरे बहुत से नाम हैं, मुहम्मद, अहमद, माही (मिटाने वाला) जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्र को मिटा दिया, और मैं हाशिर हूँ जिसके क़दमों पर लोगों का हश्र किया जायेगा। और मैं आ़क़िब (सब से बाद में आने वाला) हूँ। यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ में भी है। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हमारे सामने अपने बहुत से नाम बयान फ़रमाये, जो हमें याद रहे उनमें से ये चन्द हैं। फ़रमाया- मैं मुहम्मद हूँ मैं अहमद हूँ मैं हाशिर हूँ मैं मुक़फ़्फ़ी हूँ मैं नबी-ए-रहमत हूँ मैं नबी-ए-तौबा हूँ मैं नबी-ए-मल्हमा हूँ। यह हदीस भी सही मुस्लिम शरीफ़ में है। क़ुरआने करीम में है:

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الَّذِىْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِى التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ...... الخ.

जो पैरवी करते हैं इस रसूल नबी-ए-उम्मी की जिन्हें अपने पास लिखा हुआ पाते हैं तौरात में भी और इन्जील में भी........। एक और जगह फ़रमान है:

وَاِذْاَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ.......... الخ.

अल्लाह तआ़ला ने जब नबियों से अ़हद लिया कि जब कभी मैं तुम्हें किताब व हिक्मत दूँ फिर तुम्हारे पास मेरा रसूल आये जो उसे पहुँचाता हो जो तुम्हारे साथ है तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाओगे और उसकी ज़रूर मदद करोगे। क्या तुम इसका इक़रार करते हो और इस पर मेरा अ़हद लेते हो? सब ने कहा हमें इक़रार है। फ़रमाया बस गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि कोई नबी अल्लाह तआ़ला ने ऐसा मबऊस नहीं फ़रमाया जिससे यह इक़रार न लिया हो कि उसकी ज़िन्दगी में अगर हज़रत मुहम्मद सल्ल. मबऊस किये

जायें तो वह आपकी ताबेदारी करें, बल्कि हर नबी से यह वायदा भी लिया जाता रहा कि वह अपनी अपनी उम्मत से भी यह अहद ले लें।

एक मर्तबा सहाबा रज़ि. ने मालूम किया कि हुज़ूर! आप हमें कुछ अपने बारे में बताईये। आपने फ़रमाया मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ हूँ और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ख़ुशख़बरी हूँ। मेरी वालिदा का जब पाँव भारी हुआ तो ख़्वाब में देखा कि गोया उनमें से एक नूर निकला है जिससे शाम (मुल्क सीरिया) के शहर बसरा के महल चमक उठे। (इब्ने इस्हाक़) इसकी सनद उम्दा है और दूसरी सनदों से इसके शवाहिद (ताईदें) भी हैं।

मुस्नद अहमद में है कि मैं अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ख़ातिमुन्नबिय्यीन था उस वक़्त भी जबकि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम अपनी मिट्टी में गुँधे हुए थे। मैं तुम्हें इसकी शुरूआ़त सुना दूँ। मैं अपने वालिद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की बशारत और अपनी माँ का ख़्वाब हूँ। अम्बिया की माँयें आ़म तौर पर इसी तरह के ख़्वाब (सपने) देखती हैं। मुस्नद अहमद में एक और सनद से भी इसी के क़रीब-क़रीब रिवायत है। मुस्नद की एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हमें नजाशी (हब्शा के बादशाह) के यहाँ भेज दिया था, हम तक़रीबन अस्सी आदमी थे, हम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत जाफ़र, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह भी थे। हमारे यहाँ पहुँचने पर क़ुरैश ने यह ख़बर पाकर हमारे पीछे अपनी तरफ़ से बादशाह के पास अपने दो सफ़ीर (दूत) भेजे- अ़मर बिन आ़स और उमारा बिन वलीद। उनके साथ दरबारे शाही के लिये तोहफ़े भी भेजे। जब ये आये तो इन्होंने बादशाह के सामने सज्दा किया, फिर दायें बायें घूमकर बैठ गये। फिर अपनी दरख़्वास्त पेश की कि हमारे कुनबे-क़बीले के चन्द लोग हमारे दीन को छोड़कर हम से बिगड़ कर आपके मुल्क में चले आये हैं, हमारी क़ौम ने हमें इसलिये आपकी ख़िदमत में भेजा है कि आप उन्हें हमारे हवाले कर दीजिए। नजाशी ने पूछा वे कहाँ हैं? उन्होंने कहा यहीं इसी शहर में हैं। हुक्म दिया कि उन्हें हाज़िर करो। चुनाँचे ये मुसलमान सहाबा दरबार में आये। इनके ख़तीब उस वक़्त हज़रत जाफ़र रज़ि. थे, बाक़ी लोग उनके ताबे थे।

ये जब आये तो इन्होंने सलाम किया लेकिन सज्दा नहीं किया। दरबारियों ने कहा तुम बादशाह के सामने सज्दा क्यों नहीं करते? जवाब मिला कि हम अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी को सज्दा नहीं करते। पूछा गया क्यों? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल हमारी तरफ़ भेजा और उस रसूल ने हमें हुक्म दिया कि हम अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और को सज्दा न करें, और हुज़ूर ने हमें हुक्म दिया है कि हम नमाज़ें पढ़ते रहें, ज़कात अदा करते रहें। अब अ़मर बिन आ़स से न रहा गया कि ऐसा न हो इन बातों का असर बादशाह पर पड़े, दरबारियों और ख़ुद बादशाह को भड़काने के लिये वह बीच में बोल पड़े कि हुज़ूर! इनके एतिक़ाद (मान्यतायें) हज़रत ईसा बिन मरियम के बारे में आप लोगों से बिल्कुल अलग हैं। इस पर बादशाह ने पूछा बतलाओ तुम हज़रत ईसा और उनकी वालिदा के बारे में क्या अ़क़ीदा रखते हो? उन्होंने कहा हमारा अ़क़ीदा इस बारे में वही है जो अल्लाह तआ़ला ने अपनी पाक किताब में हमें तालीम फ़रमाया है, कि वह अल्लाह का कलिमा और रूहुल्लाह हैं। जिस रूह को अल्लाह तआ़ला ने कुंवारी मरियम बतूल की तरफ़ डाला, जो कुंवारी थीं, किसी इनसान ने हाथ भी नहीं लगाया था, न उन्हें बच्चा होने का कोई मौक़ा था।

बादशाह ने यह सुनकर ज़मीन से एक तिनका उठाया और कहा ऐ हब्शा के लोगो और ऐ वाइज़ो आलिमो और दुर्वेशो! इनका और हमारा इस बारे में एक ही अक़ीदा है। ख़ुदा की क़सम इनके और हमारे अक़ीदे में इस तिनके जितना भी फ़र्क़ नहीं। ऐ मुहाजिरो की जमाअत! तुम्हें मरहबा हो और उस रसूल को भी मरहबा हो जिनके पास से तुम आये हो। मेरी गवाही है कि वह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, वह वही हैं जिनकी पेशीनगोई हमने इन्जील में पढ़ी है, और यह वही हैं जिनकी ख़ुशख़बरी हमारे पैग़म्बर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दी है। मेरी तरफ़ से तुम्हें आम इजाज़त है, जहाँ चाहो रहो सहो, ख़ुदा की क़सम अगर मुल्क के इस झंझट से मैं आज़ाद होता तो मैं यक़ीनन हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होता, आपकी जूतियाँ उठाता, आपकी ख़िदमत करता और आपको वुज़ू कराता।

इतना कहकर हुक्म दिया कि ये दोनों क़ुरैशी जो तोहफ़ा लेकर आये हैं वह इन्हें वापस कर दिया जाये। इन मुहाजिरीन हज़रात में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद तो जल्द ही हुज़ूर सल्ल. से आ मिले, जंगे बदर में भी आपके साथ शिर्कत की। उस हब्शा के बादशाह के इन्तिक़ाल की ख़बर जब हुज़ूर को पहुँची तो आपने उनके लिये मग़फ़िरत की दुआ माँगी। यह पूरा वाक़िआ हज़रत जाफ़र और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मन्क़ूल है, तफ़सीरी विषय से चूँकि यह अलग चीज़ है इसलियें हमने इसे यहाँ मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र कर दिया। इसकी और ज़्यादा तफ़सील सीरत की किताबों में मुलाहिज़ा हो। हमारा मक़सूद यह है कि हुज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. के बारे में पहले अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम बराबर पेशीनगोईयाँ (भविष्यवाणियाँ) करते रहे और अपनी उम्मत को अपनी किताब में से आपकी सिफ़तें सुनाते रहे और आपकी पैरवी और मदद का उन्हें हुक्म करते रहे। हाँ आपके मामले की शोहरत हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम की दुआ के बाद हुई जो तमाम अम्बिया के बाप थे। इसी तरह मज़ीद शोहरत का कारण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बशारत (ख़ुशख़बरी) हुई। जिस हदीस में आपने पूछने वाले के सवाल पर अपने नुबुव्वत के मामले की निस्बत हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की दुआ और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बशारत की तरफ़ है उससे यही मुराद है। इन दोनों के साथ आपका अपनी वालिदा मोहतरमा के ख़्वाब का ज़िक्र करना इसलिये था कि मक्का वालों में आपकी शोहरत शुरू होने का सबब यह ख़्वाब था। अल्लाह तआ़ला आप पर बेशुमार दुरूद व रहमत भेजे।

फिर इरशाद होता है कि बावजूद इस क़द्र शोहरत और बावजूद अम्बिया की लगातार पेशीनगोईयों के भी जब आप रोशन और स्पष्ट दलीलें लेकर आये तो मुख़ालिफ़ों और काफ़िरों ने कहा कि यह तो साफ़-साफ़ जादू है।

और (वाक़ई) उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे, हालाँकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो। और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं दिया करता। (7) ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ يُرِيْدُوْنَ

لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ
نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْٓ
اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُوْنَ ۝ ع

मुँह से (फूँक मारकर) बुझा दें हालाँकि अल्लाह तआला अपने नूर को कमाल तक पहुँचाकर रहेगा, अगरचे काफ़िर लोग कैसे ही नाख़ुश हों। (8) (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने (इस नूर के पूरा करने के लिए) अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी क़ुरआन) और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर भेजा है ताकि इस (दीन) को तमाम (बक़िया) दीनों पर ग़ालिब कर दे (कि यही पूरा करना है), अगरचे मुश्रिक कैसे ही नाख़ुश हों। (9)

यह तो बहुत बड़ा ज़ुल्म है

इरशाद होता है कि जो शख़्स अल्लाह तआला पर झूठ बोहतान बाँधे और उसके शरीक मुक़र्रर करे, उससे बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं। अगर यह शख़्स बेख़बर होता जब भी एक बात थी, यहाँ तो यह हालत है कि उसकी तौहीद और इख़्लास की तरफ़ बुलाया जा रहा है। भला ऐसे ज़ालिमों की क़िस्मत में हिदायत कहाँ? उन काफ़िरों की तमन्ना तो यह है कि हक़ को बातिल से रोक दें। उनकी मिसाल बिल्कुल ऐसी ही है जैसे कोई सूरज को फूँक से बुझाना चाहे, इसी तरह यह भी मुहाल है कि ख़ुदा का दीन उन काफ़िरों से रद्द हो जाये। अल्लाह तआला फ़ैसला कर चुका है कि वह अपने नूर को पूरा करके ही रहेगा काफ़िर बुरा मानें तो मानते रहें। उसके बाद अपने रसूल और अपने दीन की हक़्क़ानियत (सच्चाई और हक़ होने) को वाज़ेह फ़रमाया। इन दोनों आयतों की पूरी तफ़सीर सूरः बराअत में गुज़र चुकी है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى
تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ

ऐ मोमिनो! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुमको एक दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले? (10) (वह यह है कि) तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आओ। और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (11) (जब ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में (दाख़िल करेगा) जो हमेशा रहने के बाग़ों में (बने) होंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12) और (इस आख़िरत के फल

Maktab E Ashraf

عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝	के अलावा) एक और (दुनियावी फल) भी है कि तुम उसको (भी ख़ास तौर पर) पसन्द करते हो। (यानी) अल्लाह की तरफ़ से मदद और जल्दी फ़तह पाना। और (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए। (13)

एक बहुत ही नफ़े का सौदा

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाली हदीस पहले गुज़र चुकी है कि सहाबा रज़ि. ने हुज़ूर से यह पूछना चाहा कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल कौनसा है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई जिसमें फ़रमा रहा है कि आओ मैं तुम्हें एक सरासर नफ़े वाली तिजारत बतलाऊँ, उसमें नुक़सान की कोई संभावना ही नहीं, जिससे मक़सूद हासिल और डर दूर हो जायेगा। वह यह है कि तुम अल्लाह की वह्दानियत (एक होने) और उसके रसूल की रिसालत (रसूल व पैग़म्बर होने) पर ईमान लाओ, अपनी जान और माल उसकी राह में क़ुरबान करने पर तुल जाओ। जान लो कि यह दुनिया की तिजारत और इसके लिये कोशिश व भाग-दौड़ करने से बहुत ही बेहतर है। अगर इस मेरी बतलाई हुई तिजारत के तुम ताजिर (सौदागर) बन गये तो तुम्हारी हर ख़ता से, हर गुनाह से मैं दरगुज़र कर लूँगा और जन्नतों के पाकीज़ा महलों में बुलन्द व बाला दर्जों में तुम्हें पहुँचाऊँगा, तुम्हारे चौबारों और उन हमेशगी वाले बाग़ों के दरख़्तों के नीचे से साफ़-सुथरी नहरें पूरी रवानी से जारी होंगी। यक़ीन जान लो कि ज़बरदस्त कामयाबी और आला मक़सद यही है। अच्छा इससे भी ज़्यादा सुनो, तुम जो हमेशा दुश्मनों के मुक़ाबले पर मेरी मदद तलब करते रहते हो और अपनी फ़तह चाहते हो तो मेरा वायदा है कि यह भी तुम्हें दूँगा। इधर मुक़ाबला हुआ उधर फ़तह हुई। इधर सामने आये उधर फ़तह व कामयाबी ने तुम्हारे क़दम चूमे। एक और जगह इरशाद होता है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ.

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित-क़दमी (सही रास्ते पर जमाव) इनायत फ़रमायेगा। एक और फ़रमान है:

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ.

यानी यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करेगा जो अल्लाह के दीन की मदद करे। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाला और कभी ख़त्म न होने वाली इ़ज़्ज़त वाला है।

यह मदद, यह दुनिया की फ़तह और वह जन्नत और आख़िरत की नेमतें उन लोगों के हिस्से में हैं जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त में लगे रहें और दीने ख़ुदा की ख़िदमत में जान व माल से पीछे न हटें। इसीलिये फ़रमा दिया कि ऐ नबी! उन ईमान वालों को मेरी तरफ़ से यह ख़ुशख़बरी पहुँचा दो।

Maktab E Ashraf

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ؏	ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा इब्ने मरियम (अ़लैहिस्सलाम) ने (उन) हवारियों से फ़रमाया कि अल्लाह के वास्ते मेरा कौन मददगार होता है? वे हवारी बोले, हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं। सो (इस कोशिश के बाद) बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोग इनकारी रहे। सो हमने ईमान वालों की उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में ताईद की, सो वे ग़ालिब हो गए। (14)

ع ٢ ٥ ١٠

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि वे हर आन और हर लम्हा जान व माल, इज़्ज़त व आबरू, क़ौल व फ़ेल, अपनी हर हरकत से, दिल और ज़बान से अल्लाह की और उसके रसूल की तमाम बातों को क़बूल करते रहें। फिर मिसाल देता है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पैरोकारों को देख कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ पर फ़ौरन लब्बैक पुकार उठे, और उनके इस कहने पर कि कोई है जो ख़ुदा की बातों पर मेरी इमदाद करे? उन्होंने फ़ौरन कह दिया कि हम सब आपके साथी हैं और अल्लाह के दीन की इमदाद में आपके ताबे हैं। चुनाँचे रूहुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने इस्राईलियों और यूनानियों में उन्हें मुबल्लिग़ (दीन का दाओ़) बनाकर शाम के शहरों में भेजा। हज के दिनों में सरदारे दो जहाँ सल्ल. भी फ़रमाया करते थे कि कोई है जो मुझे जगह (यानी ठिकाना) दे ताकि मैं ख़ुदा की रिसालत को पहुँचा दूँ? क़ुरैश तो मुझे रब का पैग़ाम पहुँचाने से रोक रहे हैं। चुनाँचे मदीना के क़बीला औस व ख़ज़्रज को ख़ुदा तआ़ला ने यह हमेशा की नेकबख़्ती बख़्शी, उन्होंने आप से बैअ़त की, आपकी बातें क़बूल कीं और मज़बूत अ़हद व पैमान किये कि अगर आप हमारे यहाँ आ जायें तो फिर किसी सुर्ख़ व सियाह की ताक़त नहीं जो आपको दुख पहुँचाये, हम आप पर अपनी जानें निसार कर देंगे और आप पर कोई आँच न आने देंगे। फिर जब हुज़ूर सल्ल. अपने साथियों को लेकर हिजरत करके उनके यहाँ गये तो हक़ीक़त में उन्होंने अपने कहने को पूरा कर दिखाया और अपनी ज़बान की पासदारी की। इसी लिये "अन्सार" के सम्मानित लक़ब (उपनाम) से नवाज़े गये और यह लक़ब गोया उनका एक ख़ास नाम बन गया। अल्लाह उनसे ख़ुश हो और उन्हें भी राज़ी करे, आमीन।

अब जबकि हवारियों को लेकर आप अल्लाह के दीन की तब्लीग़ के लिये खड़े हुए तो बनी इस्राईल के कुछ लोग तो सही रास्ते पर आ गये और कुछ लोग न आये बल्कि आपको और आपकी पाकबाज़ वालिदा माजिदा को बदतरीन बुराई की तरफ़ मन्सूब किया। उन यहूदियों पर ख़ुदा की फटकार पड़ी और हमेशा के लिये अल्लाह की बारगाह में ज़लील ठहरे। फिर मानने वालों में से भी एक जमाअ़त मानने ही में हद से

गुज़र गयी और उन्हें उनके दर्जे से बहुत बढ़ा दिया। फिर उस गिरोह में भी कई गिरोह हो गये, बाज़ तो कहने लगे कि सैयदना हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के बेटे हैं, बाज़ ने कहा तीन में के तीसरे हैं, यानी बाप, बेटा और रूहुल-क़ुदुस, और बाज़ों ने तो आपको ख़ुदा ही मान लिया। इन सब का ज़िक्र सूरः निसा में तफ़सील के साथ मुलाहिज़ा हो।

सच्चे ईमान वालों की अल्लाह तआ़ला ने अपने आख़िरी नबी हुज़ूर सल्ल. को भेजकर ताईद की। उनके दुश्मन ईसाईयों पर उन्हें ग़ालिब कर दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब ख़ुदा का इरादा हुआ कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को आसमान पर चढ़ाये, आप नहा-धोकर अपने साथियों के पास आये। आपके सर से पानी के क़तरे टपक रहे थे। ये बारह सहाबा थे जो एक घर में बैठे हुए थे। आते ही फ़रमाया- तुम में वे भी हैं जो मुझ पर ईमान ला चुके हैं, लेकिन फिर मेरे साथ कुफ़्र करेंगे और एक दो दफ़ा नहीं बल्कि बारह-बारह मर्तबा। फिर फ़रमाया- तुममें से कौन इस बात पर आमादा है कि वह मेरा हमशक्ल कर दिया जाये और इस तरह मेरे बदले क़त्ल किया जाये, और जन्नत में मेरे दर्जे में मेरा साथी बने। एक नौजवान जो उन सब में कम-उम्र था, उठ खड़ा हुआ और ख़ुद को पेश किया। आपने फ़रमाया तुम बैठ जाओ। फिर वही बात कही अब की मर्तबा भी वही कम-उम्र नौजवान सहाबी खड़े हुए। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अब की मर्तबा भी उन्हें बैठा दिया। फिर तीसरी मर्तबा भी सवाल किया, अब की मर्तबा भी यही नौजवान खड़े हुए। आपने फ़रमाया- बहुत बेहतर। उसी वक़्त उनकी शक्ल व सूरत बिल्कुल हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जैसी हो गयी और ख़ुद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उसी घर के एक रोशन दान से आसमान की तरफ़ उठा लिये गये।

अब यहूदियों की दौड़ आई और उन्होंने उस नौजवान को ईसा अ़लैहिस्सलाम समझकर गिरफ़्तार कर लिया और क़त्ल कर दिया और सूली पर चढ़ा दिया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पेशीनगोई के मुताबिक़ उन बाक़ी के ग्यारह लोगों में बाज़ ने बारह-बारह मर्तबा कुफ़्र किया, हालाँकि उससे पहले ईमान वाले थे। फिर बनी इस्राईल के मानने वाले गिरोह के तीन फ़िर्क़े हो गये। एक फ़िर्क़े ने तो कहा कि ख़ुद ख़ुदा हमारे बीच हज़रत मसीह की सूरत में था, जब तक चाहा रहा फिर आसमान पर चढ़ गया। उन्हें याक़ूबिया कहा जाता है। एक फ़िर्क़े ने कहा कि हम में ख़ुदा का बेटा था, जब तक अल्लाह तआ़ला ने चाहा उसे हममें रखा और जब चाहा अपनी तरफ़ चढ़ा लिया। उन्हें नस्तूरिया कहा जाता है। तीसरी जमाअ़त हक़ पर क़ायम रही, उनका अ़क़ीदा है कि ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम हम में थे, जब तक ख़ुदा की मर्ज़ी रही आप हम में मौजूद रहे, फिर अल्लाह तआ़ला ने अपनी तरफ़ उठा लिया। यह जमाअ़त मुसलमानों की है। फिर उन दोनों काफ़िर जमाअ़तों की ताक़त बढ़ गयी और उन्होंने इन मुसलमानों को मार-पीटकर क़त्ल व ग़ारत करना शुरू किया और ये मग़लूब ही रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मबऊस फ़रमाया।

पस बनी इस्राईल की वह मुसलमान जमाअ़त आप पर भी ईमान लाई और उन काफ़िर जमाअ़तों ने आप से भी कुफ़्र किया। पस ईमान वालों की अल्लाह तआ़ला ने मदद की और उन्हें उनके दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया। हुज़ूर सल्ल. का ग़ालिब आ जाना और दीने इस्लाम का तमाम दीनों को मग़लूब कर देना ही उनका ग़ालिब आना और अपने दुश्मनों पर फ़तह पाना है। देखें तफ़सीर इब्ने जरीर और सुनन नसाई। पस यह उम्मत हक़ पर क़ायम रहकर हमेशा ग़ालिब रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म यानी क़ियामत आ जाये और यहाँ तक कि इस उम्मत के आख़िरी लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथ होकर मसीह

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

दज्जाल से लड़ाई करेंगे जैसा कि सही हदीसों में मौजूद है। वल्लाहु आलम।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः सफ़्फ़ की तफ़सीर पूरी हुई फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

सूरः जुमा

सूरः जुमा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमे की नमाज़ में सूरः जुमा और सूरः मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ○ هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ○
وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ○ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ○

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करती हैं जो कि बादशाह है, (ऐबों से) पाक है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1) वही है जिस ने (अ़रब के) अनपढ़ लोगों में उन्हीं (की क़ौम) में से (यानी अ़रब में से) एक पैग़म्बर भेजा, जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और उनको (ग़लत अ़क़ीदों और बुरे अख़्लाक़ से) पाक करते हैं, और उनको किताब और समझदारी (की बातें) सिखलाते हैं, और ये लोग (आपके पैग़म्बर की हैसियत से तशरीफ़ लाने से) पहले से खुली गुमराही में थे। (2) और (इन मौजूदा लोगों के अ़लावा) दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। (3) यह (रसूल के ज़रिये से गुमराही से निकल कर हिदायत की तरफ़ आना) ख़ुदा का फ़ज़्ल है, वह फ़ज़्ल जिसको चाहता है देता है, और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (4)

Maktab E Ashraf

नबी-ए-उम्मी

हर बेज़बान और बोलने वाली चीज़ अल्लाह तआ़ला की पाकीज़गी बयान करती रहती है। जैसे एक और जगह भी फ़रमाया है कि कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी तस्बीह, उसकी तारीफ़ के साथ न करती हो। तमाम मख़्लूक़ चाहे वह आसमान की हो या ज़मीन की, उसकी तारीफ़ और पाकीज़गी के बयान में मसरूफ़ और मशग़ूल है। वह आसमान व ज़मीन का बादशाह और इन दोनों में अपना पूरा तसर्रुफ़ (इख़्तियार) और हुक्म जारी करने वाला है। वह तमाम तसर्रुफ़ात से पाक और बेऐब है। तमाम उम्दा सिफ़ात का मालिक है। वह अ़ज़ीज़ व हकीम है, इसकी तफ़सीर कई बार गुज़र चुकी है।

"उम्मियों" से मुराद अ़रब के लोग हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ.......... الخ.

यानी आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों से कह दीजिए कि क्या तुमने इस्लाम क़बूल किया? अगर वे मुसलमान हो जायें तो सही रास्ते पर हैं और अगर मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ इस्लाम का पहुँचा देना है, और बन्दों की पूरी देखभाल करने वाला अल्लाह तआ़ला है। यहाँ अ़रब का ज़िक्र करना इसलिये नहीं कि ग़ैर-अ़रब (अ़रब से बाहर के लोगों) की नफ़ी हो, बल्कि सिर्फ़ इसलिये है कि उन पर दूसरों के मुक़ाबले में एहसान व इकराम बहुत ज़्यादा है (जैसे कि आख़िरी नबी उनमें भेजे गये)।

एक और जगह इरशाद है:

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ.

यानी यह तेरे लिये भी नसीहत है और तेरी क़ौम के लिये भी।

यहाँ भी क़ौम की ख़ुसूसियत नहीं, क्योंकि क़ुरआने करीम सारे जहान वालों के लिये नसीहत है। इसी तरह एक और जगह फ़रमान है:

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ.

अपने कुनबे क़बीले वाले और रिश्तेदारों को डरा दे।

यहाँ भी यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आपकी तंबीह सिर्फ़ अपने घर वालों के साथ ही मख़्सूस है, बल्कि सब के लिये आ़म है। एक जगह अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ। एक और जगह फ़रमान है:

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ.

यानी इसके साथ मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँ और हर उस शख़्स को जिसे यह पहुँचे। इसी तरह क़ुरआन के बारे में फ़रमाया:

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ.

तमाम गिरोहों में से जो भी इसका इनकार करे वह जहन्नमी है।

इसी तरह की और भी बहुत सी आयतें हैं जिनसे साफ़ साबित है कि हुज़ूर सल्ल. का नबी बनकर

तशरीफ़ लाना पूरी दुनिया के लिये था। तमाम मख़्लूक़ के आप पैग़म्बर थे, हर सुर्ख़ व सियाह की तरफ़ आप नबी बनाकर भेजे गये थे। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

सूरः अन्आम की तफ़सीर में इसका पूरा बयान हम कर चुके हैं और बहुत सी आयतें व हदीसें हमने वहाँ ज़िक्र की हैं। फ़ल्हम्दु लिल्लाह। यहाँ यह फ़रमाना कि अनपढ़ों यानी अ़रब वालों में अपना रसूल भेजना इसलिये है कि हज़रत ख़लीलुल्लाह की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और जबकि मख़्लूक़ को अल्लाह के नबी की सख़्त हाजत थी, सिवाय चन्द अहले किताब के जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के सच्चे दीन पर क़ायम थे और दीन के मामले में कमी ज़्यादती से अलग थे, बाक़ी तमाम दुनिया दीने हक़ को भुला बैठी थी और ख़ुदा तआ़ला की नाराज़गी के कामों में मुब्तला थी, अल्लाह तआ़ला ने आपको मबऊस फ़रमाया। आपने उन अनपढ़ लोगों को ख़ुदा तआ़ला के कलाम की आयतें पढ़कर सुनायीं, उन्हें पाकीज़गी सिखाई और किताब व हिक्मत का उस्ताद व गुरू बना दिया, हालाँकि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे।

सुनिये अ़रब के लोग हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दीन के दावेदार थे लेकिन हालत यह थी कि असल दीन को बरबाद और उलट-पुलट कर चुके थे, उसमें इस क़द्र बदलाव कर दिया था कि तौहीद शिर्क से और यक़ीन शक से बदल चुका था, साथ ही बहुत सी बिदअ़तें अल्लाह के दीन में शामिल कर दी थीं। इसी तरह अहले किताब ने भी अपनी किताबों को बदल दिया था, उनमें तब्दीली कर ली थी और उसको उलट-पुलट कर दिया था, साथ ही मायने में भी उलट-फेर कर लिया था, पस अल्लाह पाक ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को अ़ज़ीमुश्शान शरीअ़त और कामिल मुकम्मल दीन देकर दुनिया वालों की तरफ़ भेजा कि इस बिगाड़ का सुधार करें। दुनिया वालों को असल अहकामे इलाही पहुँचायें। ख़ुदा की मर्ज़ी और नामर्ज़ी के अहकाम लोगों को बता दें। जन्नत से क़रीब करने वाले, अ़ज़ाब से निजात दिलाने वाले तमाम आमाल बतलायें। सारी मख़्लूक़ को मज़हब की बुनियादी बातें और अहकाम सब सिखायें, कोई छोटी बड़ी बात बाक़ी न छोड़ें, तमाम शक व शुब्हे सब के दूर कर दें और ऐसे दीन पर लोगों को डाल दें जिसमें हर भलाई मौजूद हो। इस बुलन्द ख़िदमत के लिये आप में वो कमालात और बड़ाईयाँ जमा कर दीं जो न आप से पहले किसी में थीं न आपके बाद किसी में हो सकती हैं। अल्लाह तआ़ला आप पर हमेशा-हमेशा दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाता रहे, आमीन।

दूसरी आयत की तफ़सीर में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से सही बुख़ारी शरीफ़ में मरवी है कि हम हुज़ूरे पाक सल्ल. के पास बैठे हुए थे कि आप पर सूरः जुमा नाज़िल हुई। जब आपने इस आयत की तिलावत फ़रमाई तो लोगों ने पूछा "व आख़रीन मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्" से क्या मुराद है? तीन मर्तबा हुज़ूरे पाक सल्ल. से सवाल हुआ तब आपने अपना हाथ हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सर पर रखा और फ़रमाया- अगर ईमान सुरैया सितारे के पास होता तो भी इन लोगों में से एक या कई एक पा लेते।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि यह सूरत मदनी है और यह भी साबित हुआ कि हुज़ूर सल्ल. की पैग़म्बरी तमाम दुनिया वालों की तरफ़ है, सिर्फ़ अ़रब वालों के लिये ही मख़्सूस नहीं। क्योंकि आपने इस आयत की तफ़सीर में फ़ारस वालों को फ़रमाया। इसी आ़म बेसत की बिना पर आपने फ़ारस व रोम के बादशाहों के नाम इस्लाम क़बूल करने के लिये पत्र और फ़रमान भेजे। हज़रत मुजाहिद रह. वग़ैरह भी फ़रमाते हैं कि इससे मुराद अ़रब से बाहर के लोग हैं, यानी अ़रब के अ़लावा लोग, जो हुज़ूर सल्ल. पर ईमान लायें और आपकी वही की तस्दीक़ करें (वैसे "आख़रीन" से वे सब ईमान वाले मुराद हैं जो आप सल्ल. के मुबारक ज़माने में न थे, बाद में हुए)। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि अब से तीन-तीन

पुश्तों के बाद आने वाले मेरे उम्मती बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। वह ख़ुदा इज़्ज़त व हिक्मत वाला है। अपनी शरीअ़त और अपनी तक़दीर में ग़ालिब और हिक्मत वाला है। फिर फ़रमान है कि यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, यानी हुज़ूरे पाक सल्ल. को ऐसी ज़बरदस्त अ़ज़ीमुश्शान नुबुव्वत के साथ सम्मानित फ़रमाना और इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम से नवाज़ना यह ख़ास ख़ुदा का फ़ज़्ल है। अल्लाह अपना फ़ज़्ल जिसे चाहे दे। वह बड़े फ़ज़्ल व करम वाला है।

Maktab E Ashraf

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰةَ ثُمَّ لَمْ
يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ
اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ
زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا
يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ ۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ
تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ ع ٨

जिन लोगों को तौरात पर अ़मल करने का हुक्म दिया गया, फिर उन्होंने उस पर अ़मल नहीं किया उनकी हालत उस गधे जैसी हालत है जो बहुत-सी किताबें लादे हुए है। (ग़र्ज़) उन लोगों की बुरी हालत है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया (जैसे यहूद हैं), और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं दिया करता। (5) (और अगर ये लोग यह कहें कि हम बावजूद इस हालत के भी अल्लाह के मक़बूल हैं तो) आप (उनसे) कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा यह दावा है कि तुम किसी और की शिर्कत के बग़ैर अल्लाह के मक़बूल (और प्यारे) हो, तो तुम (इसकी तस्दीक़ के लिए) मौत की तमन्ना कर (के दिखा) दो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो। (6) और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे, उन (कुफ़्रिया) आमाल (के ख़ौफ़ और सज़ा) की वजह से जो अपने हाथों समेटते हैं, और अल्लाह को ख़ूब इत्तिला है उन ज़ालिमों (के हाल) की। (7) आप (उनसे यह भी) कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो वह (मौत एक दिन) तुमको आ पकड़ेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (यानी ख़ुदा) के पास ले जाए जाओगे। फिर वह तुमको तुम्हारे सब किए हुए काम बतला देगा (और सज़ा देगा)। (8)

बेअ़मल लोग जानवरों की तरह हैं

इन आयतों में यहूदियों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) बयान हो रही है कि उन्हें तौरात दी गयी और अ़मल करने के लिये उन्होंने उसे ली, फिर अ़मल न किया। फ़रमाया जाता है कि उनकी मिसाल गधे के

जैसी है कि अगर उस पर किताब का बोझ लाद दिया जाये तो उसे यह तो मालूम है कि उस पर कोई बोझ है, लेकिन यह नहीं जानता कि उसमें क्या है? इसी तरह ये यहूदी हैं कि ज़ाहिरी अलफ़ाज़ तो ख़ूब रटे हुए हैं लेकिन न तो यह मालूम है कि मतलब क्या है? न उस पर उनका अमल है, बल्कि और तब्दीली व तहरीफ़ करते रहते हैं। पस दर असल ये उस बेसमझ जानवर से भी बदतर हैं, क्योंकि उसे तो क़ुदरत ने समझ ही नहीं दी, लेकिन ये तो समझ रखते हुए फिर भी उसका इस्तेमाल नहीं करते। इसी लिये एक दूसरी आयत में फ़रमाया गया है:

أُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ.

ये लोग चौपायों (जानवरों) के जैसे हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा बहके हुए, ये ग़ाफ़िल लोग हैं।

यहाँ फ़रमाया कि अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले की बुरी मिसाल है, ऐसे ज़ालिम ख़ुदा की हिदायत से मेहरूम रहते हैं। मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स जुमा के दिन इमाम के ख़ुतबे की हालत में बात करे वह गधे के जैसा है, जो किताबें उठाये हुए हो। और जो उसे कहे कि चुप रह उसका भी जुमा जाता रहा (यानी ख़ुतबे का सवाब जाता रहा)।

फिर फ़रमाता है- ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम हक़ पर हो और हुज़ूरे पाक सल्ल. और आपके सहाबा नाहक़ पर हैं तो आओ और दुआ माँगो कि हम दोनों में से जो नाहक़ पर हो ख़ुदा तआ़ला उसे मौत दे। फिर फ़रमाता है कि उन्होंने जो आमाल आगे भेज रखे हैं वे उनके सामने हैं जैसे कुफ़्र, बुरे आमाल, बदकारी, ज़ुल्म, नाफ़रमानी वग़ैरह, इस वजह से हमारी पेशीनगोई है कि वे इस पर तैयार न होंगे। उन ज़ालिमों को ख़ुदा तआ़ला अच्छी तरह जानता है। सूरः ब-क़रह की आयत नम्बर 94-96 की तफ़सीर में यहूदियों के इस मुबाहले का पूरा ज़िक्र हम कर चुके हैं और वहीं यह भी बयान कर दिया है कि मुराद यह है कि अपने ऊपर अगर ख़ुद गुमराह हों या अपने मुक़ाबिल पर अगर वे गुमराह हों तो मौत की बद्दुआ करें। जैसे कि ईसाईयों के मुबाहले का ज़िक्र सूरः आले इमरान में गुज़र चुका है। देखिये सूरः आले इमरान की आयत नम्बर 61 की तफ़सीर।

मुश्रिक लोगों से भी मुबाहले का ऐलान किया गया था। देखिये सूरः मरियम की आयत नम्बर 75 की तफ़सीर।

यानी ऐ नबी! उनसे कह दे कि जो गुमराही में है और रहमान उसे और बढ़ा दे.......।

मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि अबू जहल मलऊन ने कहा- अगर मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को काबे के पास देखूँगा तो उनकी गर्दन नापूँगा। जब यह ख़बर हुज़ूर को पहुँची तो आपने फ़रमाया- अगर वह ऐसा करता तो सब देखते कि फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते और अगर यहूद मुक़ाबले पर आकर मौत तलब करते तो यक़ीनन वे मर जाते और अपनी जगह जहन्नम में देख लेते, और अगर मुबाहले के लिये लोग निकलते तो वे लौटकर अपने घर वालों को हरगिज़ न पाते। यह हदीस बुख़ारी, तिर्मिज़ी और नसाई में भी मौजूद है।

फिर फ़रमाता है कि मौत से तो कोई बच ही नहीं सकता। जैसे सूरः निसा में है:

اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ.

यानी तुम जहाँ कहीं भी हो वहाँ तुम्हें मौत पा ही लेगी चाहे मज़बूत महलों में हो।

मोजम तबरानी की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि मौत से भागने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे एक

Maktaba Ashraf

लोमड़ी हो, जिस पर ज़मीन का कुछ क़र्ज़ हो, वह इस डर से कि कहीं यह मुझसे माँग न बैठे भागते भागते जब थक जाये तब अपने भट में घुस जाये, जहाँ घुसी और ज़मीन ने फिर उससे तक़ाज़ा किया कि लोमड़ी मेरा क़र्ज़ अदा करो। वह फिर वहाँ से दुम दबाये हुए तेज़ी से भागी, आख़िर यूँही भागते भागते मर गयी।

يَـٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○	ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन (जुमे की) नमाज़ के लिए अज़ान कही जाया करे तो तुम अल्लाह की याद (यानी नमाज़ व ख़ुतबे) की तरफ़ (फ़ौरन) चल पड़ा करो, और ख़रीद व बेच (और इसी तरह दूसरे काम जो चलने से रुकावट हों) छोड़ दिया करो। यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुमको कुछ समझ हो। (क्योंकि उसका नफ़ा बाक़ी है और ख़रीद व बेच वग़ैरह का नफ़ा फ़ना हो जाने वाला है)। (9) फिर जब (जुमे की) नमाज़ पूरी हो चुके तो (उस वक़्त तुमको इजाज़त है कि) तुम ज़मीन पर चलो-फिरो और ख़ुदा की रोज़ी तलाश करो और (उसमें भी) अल्लाह को ख़ूब ज़्यादा याद करते रहो ताकि तुमको भलाई हासिल हो। (10)

जुमा की नमाज़

जुमा का लफ़्ज़ "जमा" से निकला है। वजह इस निकलने की यह है कि इस दिन मुसलमान बड़ी-बड़ी मस्जिदों में ख़ुदा की इबादत के लिये जमा होते हैं, और यह भी वजह है कि इसी दिन तमाम मख़्लूक़ कामिल (सम्पूर्ण) हुई। छह दिन में सारी कायनात बनाई गयी है, छठा दिन जुमे का है। इसी दिन हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा किये गये, इसी दिन जन्नत में बसाये गये और इसी दिन वहाँ से निकाले गये। इसी दिन में क़ियामत क़ायम होगी। इस दिन में एक ऐसी घड़ी (क्षण) है कि उस वक़्त मोमिन बन्दा अल्लाह तआ़ला से जो तलब करे अल्लाह तआ़ला उसे इनायत फ़रमाता है, जैसे कि सही हदीसों में आया है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत सलमान रज़ि. से पूछा- जानते हो जुमे का दिन क्या है? उन्होंने कहा अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। आपने फ़रमाया- इसी दिन तेरे माँ-बाप (यानी आदम व हव्वा) को अल्लाह तआ़ला ने जमा किया (मिलाया)। या यूँ फ़रमाया कि तुम्हारे बाप को जमा किया। इसी तरह एक मौक़ूफ़ हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरवी है। फ़ल्लाहु आलम

पहले इसे यौमुल-अ़रूबा कहा जाता था। पहली उम्मतों को भी हर सात में से एक दिन दिया गया था, लेकिन जुमे की हिदायत उन्हें न हुई। यहूदियों ने शनिवार को पसन्द किया जिसमें मख़्लूक़ की पैदाईश शुरू भी न हुई थी, ईसाईयों ने इतवार इख़्तियार किया जिसमें मख़्लूक़ की पैदाईश की शुरूआत हुई है और इस उम्मत के लिये अल्लाह तआ़ला ने जुमे को पसन्द फ़रमाया, जिस दिन में अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पूरा किया था। जैसे सही बुख़ारी की हदीस में है कि हम दुनिया में आने के एतिबार से तो सबसे पीछे हैं

लेकिन क़ियामत के दिन सबसे पहले होंगे, सिवाय इसके कि उन्हें हमसे पहले किताबुल्लाह दी गयी, फिर उनके इस दिन में उन्होंने झगड़ा और मतभेद किया, अल्लाह तआ़ला ने हमें सही रास्ता दिखाया, पस लोग इसमें भी हमारे पीछे हैं। यहूदी कल और ईसाई परसों। मुस्लिम में इतना और भी है कि क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ में से सबसे पहले फ़ैसला हमारे बारे में किया जायेगा।

यहाँ अल्लाह तआ़ला मोमिनों को जुमे के दिन अपनी इबादत के लिये जमा होने का हुक्म दे रहा है। "सई" (कोशिश) से मुराद आयत में सई कोशिश के मायने में है। जैसे एक और आयत में है:

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا.

यानी जो शख़्स आख़िरत का इरादा करे फिर उसके लिये कोशिश भी करे।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की क़िराअत में बजाय "फ़स्औ" के "फ़मज़ू" है। यह याद रहे कि नमाज़ के लिये दौड़कर जाना मना है। सहीहैन में है कि जब तुम तकबीर सुनो तो नमाज़ के लिये सुकून व वक़ार के साथ चलो, दौड़ो नहीं। जितनी पाओ पढ़ लो और जो छूट जाये उसे अदा कर लो। एक और रिवायत में है कि आप नमाज़ में थे कि लोगों की आहट ज़ोर-ज़ोर से सुनी। फ़ारिग़ होकर फ़रमाया क्या बात है? लोगों ने कहा हज़रत हम जल्दी-जल्दी नमाज़ में शामिल हुए। फ़रमाया ऐसा न करो, नमाज़ को इत्मीनान के साथ चलकर आओ, जितनी पाओ पढ़ लो जो छूट जाये पूरी कर लो। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम यहाँ यह हुक्म नहीं कि दौड़कर नमाज़ के लिये आओ, यह तो मना है, बल्कि मुराद दिल, नीयत और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अपने दिल और अपने अ़मल से कोशिश करो। जैसे एक दूसरी जगह है:

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ.

कि हज़रत इस्माईल ज़बीहुल्लाह जब ख़लीलुल्लाह के साथ चलने-फिरने के क़ाबिल हो गये।

जुमा के लिये आने वाले को गुस्ल भी करना चाहिये। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि जब तुम में से कोई जुमा की नमाज़ के लिये जाने का इरादा करे तो वह गुस्ल कर लिया करे। एक और हदीस में है कि जुमा के दिन का गुस्ल हर बालिग़ पर वाजिब है। एक और रिवायत में है कि हर बालिग़ पर सातवें दिन सर और जिस्म का धोना है। सही मुस्लिम की हदीस में है कि वह दिन जुमे का दिन है। सुनने अर्बआ़ में है कि जो शख़्स जुमा के दिन अच्छी तरह गुस्ल करे और सवेरे से ही मस्जिद की तरफ़ चल दे, पैदल जाये सवार न हो और इमाम से क़रीब होकर ख़ुतबे को कान लगाकर सुने, कोई बेकार बात या हरकत न करे तो उसे हर हर क़दम के बदले साल भर के रोज़ों और साल भर के क़ियाम (रातों को नमाज़ में खड़े होने) का सवाब है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि जो शख़्स जुमा के दिन जनाबत (नापाकी से पाक होने) के गुस्ल की तरह गुस्ल करे (यानी अच्छी तरह), पहली घड़ी में मस्जिद जाये उसने गोया एक ऊँट अल्लाह की राह में क़ुरबान किया। दूसरी घड़ी में जाने वाला गाय की क़ुरबानी करने वाले की तरह है, तीसरी घड़ी में जाने वाला भेड़ की क़ुरबानी करने वाले जैसा है। चौथी घड़ी में जाने वाला अल्लाह की राह में मुर्ग़ का सदक़ा करने वाले जैसा है, पाँचवीं घड़ी में जाने वाला अण्डा अल्लाह की राह में सदक़ा करने वाले की तरह है, फिर जब इमाम आ जाये, फ़रिश्ते ख़ुतबा सुनने के लिये हाज़िर हो जाते हैं।

मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है कि जुमे के दिन अपनी ताक़त के मुताबिक़ अच्छा लिबास पहने, ख़ुशबू लगाये, मिस्वाक करे और सफ़ाई और पाकीज़गी के साथ जुमे की नमाज़ के लिये आये। एक हदीस

में गुस्ल के बयान के साथ ही मिस्वाक करना और ख़ुशबू मलना भी है। मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स जुमा के दिन गुस्ल करे और अपने घर वालों की ख़ुशबू मले अगर हो, और अच्छा लिबास पहने फिर मस्जिद में आये और कुछ नवाफ़िल पढ़े अगर जी चाहे, और किसी को तकलीफ़ न दे (यानी गर्दनें फलाँग कर न आये, न किसी बैठे हुए को हटाये), फिर जब इमाम आ जाये और ख़ुतबा शुरू हो तो ख़ामोशी से सुने, तो उसके गुनाह जो इस जुमे से लेकर दूसरे जुमे तक के हों सब का कफ़्फ़ारा हो जाता है।

अबू दाऊद और इब्ने माजा में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से मिम्बर पर बयान फ़रमाते हुए सुना कि तुम में से किसी पर क्या हर्ज है अगर वह अपने रोज़मर्रा के मेहनती लिबास के अ़लावा दो कपड़े ख़रीदकर जुमे के लिये मख़्सूस करके रख ले। हुज़ूर ने यह उस वक़्त फ़रमाया जब लोगों के बदन पर वही मामूली चादरें देखीं तो फ़रमाया कि अगर ताक़त हो तो ऐसा क्यों न कर लो।

जिस अज़ान का यहाँ इस आयत में ज़िक्र है उससे मुराद वह अज़ान है जो इमाम के मिम्बर पर बैठ जाने के बाद होती है। नबी सल्ल. के ज़माने में यही अज़ान थी। जब आप घर से तशरीफ़ लाते, मिम्बर पर जाते और आपके बैठ जाने के बाद आपके सामने यह अज़ान होती थी, इससे पहले की अज़ान हुज़ूर के ज़माने में न थी, इसे अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. ने सिर्फ़ लोगों की अधिकता को देखकर बढ़ाई। सही बुख़ारी शरीफ़ में नबी सल्ल., हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ रज़ि. के ज़माने में जुमे की अज़ान सिर्फ़ उसी वक़्त होती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुतबा कहने के लिये बैठ जाये। हज़रत उस्मान रज़ि. के ज़माने में जब लोग बहुत ज़्यादा हो गये तो आपने दूसरी अज़ान एक अलग जगह पर कहलवानी शुरू की। उस मकान का नाम ज़ूरा था। मस्जिद के क़रीब सब से बुलन्द यही मकान था। हज़रत मकहूल रह. से इब्ने अबी हातिम में रिवायत है कि अज़ान सिर्फ़ एक ही थी, जब इमाम आता था उसके बाद सिर्फ़ तकबीर होती थी। जब नमाज़ खड़ी होने लगे इसी अज़ान के वक़्त ख़रीद व फ़रोख़्त हराम होती है। हज़रत उस्मान रज़ि. ने इससे पहले की अज़ान का हुक्म सिर्फ़ इसलिये दिया था कि लोग जमा हो जायें। जुमे में आने का हुक्म आज़ाद मर्दों को है, औ़रतों, गुलामों और बच्चों को हीं। मुसाफ़िर, मरीज़ और तीमारदार और ऐसे ही और उज़्र वाले भी माज़ूर गिने गये हैं, जैसा कि मसाईल की किताबों में इसका बयान मौजूद है।

फिर फ़रमाता है कि बै (ख़रीद फ़रोख़्त) को छोड़ दो, यानी अल्लाह के ज़िक्र के लिये चल पड़ो, तिजारत को छोड़ दो, जब नमाज़े जुमा की अज़ान हो जाये। उलेमा-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है कि अज़ान के बाद ख़रीद व फ़रोख़्त हराम है। इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि देने वाला अगर दे तो वह भी सही है या नहीं? आयत के ज़ाहिर से तो यही मालूम होता है कि वह भी सही न ठहरेगा। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि बै को छोड़कर अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ की तरफ़ तुम्हारा आना ही तुम्हारे हक़ में दीन दुनिया की बेहतरी का सबब है, अगर तुम में इल्म हो। हाँ जब नमाज़ से फ़राग़त हो जाये तो उस मजमे से चले जाना और ख़ुदा के फ़ज़्ल (रोज़ी) की तलाश में लग जाना तुम्हारे लिये हलाल है। इराक बिन मालिक रज़ि. जुमा की नमाज़ से फ़ारिग़ होर लौटकर मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और यह दुआ़ पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَجَبْتُ دَعْوَتَكَ وَصَلَّيْتُ فَرِيْضَتَكَ وَانْتَشَرْتُ كَمَآ اَمَرْتَنِیْ فَارْزُقْنِیْ مِنْ فَضْلِكَ وَاَنْتَ

Maktab E Ashraf

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ.

यानी ऐ अल्लाह! मैंने तेरी आवाज़ पर हाज़िरी दी और तेरी फ़र्ज़ की हुई नमाज़ अदा की, फिर तेरे हुक्म के मुताबिक इस मजमे से उठ आया, अब तू मुझे अपना फ़ज़्ल नसीब फ़रमा, तू सबसे बेहतर रोज़ी पहुँचाने वाला है। (इब्ने अबी हातिम)

इस आयत को सामने रखकर बाज़ पहले बुज़ुर्गों और उलेमा ने फ़रमाया है कि जो शख़्स जुमा के दिन नमाज़े जुमा के बाद ख़रीद व फ़रोख़्त करे उसे अल्लाह तआ़ला सत्तर हिस्से ज़्यादा बरकत देगा। फिर फ़रमाता है कि ख़रीद व फ़रोख़्त की हालत में भी अल्लाह का ज़िक्र किया करो, दुनिया के नफ़े में इस क़द्र मशग़ूल न हो जाओ कि आख़िरत के नफ़े को भूल बैठो। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स किसी ज़रूरत से बाज़ार जाये और वहाँ "ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल्-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर" पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके लिये एक लाख नेकियाँ लिखता है, और एक लाख बुराईयाँ माफ़ फ़रमाता है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि बन्दा बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाला उसी वक़्त कहलाता है जबकि खड़े बैठे लेटे हर वक़्त अल्लाह की याद करता रहे।

और (बाज़े लोगों का यह हाल है कि) वे लोग जब किसी तिजारत या मशग़ूल होने वाली चीज़ को देखते हैं तो वे उसकी तरफ़ दौड़ने के लिए बिखर जाते हैं, और आपको खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि जो चीज़ (अल्लाह की निकटता और सवाब की क़िस्म में से) ख़ुदा के पास है वह ऐसे मशग़ले और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सब से अच्छा रोज़ी पहुँचाने वाला है। (11)	وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْآ إِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ ع ٢ ١٢

यह हरकत अच्छी नहीं

मदीने में जुमा के दिन तिजारती माल के आ जाने की वजह से जो हज़रात ख़ुतबा छोड़कर उठ खड़े हुए थे उन पर अल्लाह तआ़ला इताब (नाराज़गी ज़ाहिर) कर रहा है कि ये लोग जब कोई तिजारत या खेल तमाशा देख लेते हैं तो उसकी तरफ़ चल खड़े होते हैं और आप (सल्ल.) को ख़ुतबे में ही खड़ा छोड़ देते हैं। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं कि यह माले तिजारत दहया बिन ख़लीफ़ा का था, जुमा के दिन आया और शहर में ख़बर के लिये तबल बजने लगा। हज़रत दहया रज़ि. उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे, तबल की आवाज़ सुनकर सब लोग उठ खड़े हुए सिर्फ़ चन्द आदमी रह गये। मुस्नद अहमद में है कि सिर्फ़ बारह आदमी रह गये बाक़ी लोग इस तिजारती क़ाफ़िले की तरफ़ चल दिये, जिस पर यह आयत उतरी। मुस्नद यअ़ला में इतना और भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अगर ये भी बाक़ी न रहते और सब उठकर चले जाते तो तुम सब पर यह वादी आग बनकर भड़क उठती। जो लोग हुज़ूर सल्ल. के पास से नहीं गये थे उनमें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी थे। इस आयत

से यह भी मालूम हुआ कि जुमे का ख़ुतबा खड़े होकर पढ़ना चाहिये।

सही मुस्लिम में है कि नबी सल्ल. जुमे के दिन दो ख़ुतबे पढ़ते थे, बीच में बैठ जाते थे। क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते थे और लोगों को वअ़्ज़ व नसीहत फ़रमाते थे। यहाँ यह बात भी मालूम रहनी चाहिये कि यह वाक़िआ बाज़ हज़रात के क़ौल के मुताबिक़ उस वक़्त का है जब हुज़ूरे पाक सल्ल. जुमे की नमाज़ के बाद ख़ुतबा पढ़ा करते थे। मरासीले अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ख़ुतबे से पहले जुमे की नमाज़ पढ़ाया करते थे जैसे ईदों में होता है, यहाँ तक कि एक मर्तबा आप ख़ुतबा सुना रहे थे कि एक शख़्स ने आकर कहा- दहया बिन ख़लीफ़ा माले तिजारत लेकर आ गया है। यह सुनकर सिवाय चन्द लोगों के और सब उठ खड़े हुए। फिर फ़रमाता है- ऐ नबी! उन्हें ख़बर सुना दो कि आख़िरत का सवाब जो अल्लाह के पास है वह खेल-तमाशों से ख़रीद व फ़रोख़्त से बहुत ही बेहतर है। जो अल्लाह पर तवक्कुल रखकर इजाज़त वाले वक़्तों में रोज़ी की तलब करे अल्लाह उसे बेहतरीन तरीक़े पर रोज़ियाँ देगा।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः जुमा की तफ़सीर पूरी हुई फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

सूरः मुनाफ़िक़ून

सूरः मुनाफ़िक़ून मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ
لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ○
اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى

जब आपके पास ये मुनाफ़िक़ीन आते हैं तो कहते हैं कि हम (दिल से) गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं। और यह तो अल्लाह को मालूम है कि आप अल्लाह के रसूल हैं (इसमें तो उनके क़ौल को झुठलाया नहीं जाता) और (इसके बावजूद) अल्लाह तआ़ला गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ लोग (इस कहने में) झूठे हैं। (1) उन लोगों ने अपनी क़समों को (अपनी जान व माल बचाने के लिए) ढाल बना रखा है, फिर ये लोग (दूसरों को भी) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक उनके ये आमाल बहुत ही बुरे हैं। (2) (और हमारा) यह (कहना कि उनके आमाल बहुत बुरे हैं) इस सबब से है कि ये लोग (पहले ज़ाहिर में) ईमान लाए फिर

قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ز اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝	(कुफ़्रिया कलिमात कहकर) काफ़िर हो गए, सो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है, तो ये (हक़ बात को) नहीं समझते। (3) और जब आप उनको देखें तो (ज़ाहिरी शान व शौकत की वजह से) उनके डील-डोल आपको अच्छे मालूम हों। और अगर ये बातें करने लगें तो आप उनकी बातें सुन लें, गोया कि ये लकड़ियाँ हैं जो (दीवार के) सहारे लगाई हुई (खड़ी) हैं। हर शोर पुकार को (चाहे वह किसी वजह से हो) अपने ऊपर (पड़ने वाली) ख़्याल करने लगते हैं। यही लोग (तुम्हारे पूरे) दुश्मन हैं, आप उनसे होशियार रहिए ख़ुदा उनको ग़ारत करे, (हक़ दीन से) कहाँ फिरे चले जाते हैं। (4)

मुनाफ़िक़ों की चालबाज़ियाँ

अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ों को ज़ाहिर करता है कि अगरचे ये तेरे पास आकर क़समें खा-खाकर अपने इस्लाम का इज़हार करते हैं, तेरी रिसालत का इक़रार करते हैं, मगर दर असल दिल के खोटे हैं। वास्तव में आप रसूलुल्लाह भी हैं, उनका यह क़ौल भी है, मगर चूँकि उनके दिल में इसका कोई असर नहीं लिहाज़ा ये झूठे हैं इस बात में कि ये तुझे रसूलुल्लाह मानते हैं। ये सच्चे होने के लिये चाहे क़समें खायें लेकिन आप यक़ीन न कीजिए। ये क़समें तो उनका एक मामूली मशग़ला है, गोया कि अपने झूठ को सच बनाने का एक ज़रिया हैं। वह मक़सद यह है कि मुसलमान उनसे होशियार रहें, कहीं उन्हें सच्चा ईमान वाला समझकर किसी बात में उनकी तक़लीद (पैरवी) न करने लगें और फिर ये इस्लाम के रंग में उनसे कुफ़्र करा दें। ये ख़ुदा की राह से दूर और बुरे आमाल वाले लोग हैं। इमाम ज़ह्हाक रह. की क़िराअत में "ईमानुहुम" अलिफ़ के ज़ेर के साथ है, तो मतलब यह होगा कि उन्होंने अपनी ज़ाहिरी तस्दीक़ को अपने लिये एक बचाव बना लिया है कि क़त्ल से और कुफ़्र के हुक्म से दुनिया में बच जायें। यह निफ़ाक़ (दोग़लापन) उनके दिलों में इस गुनाह की नहूसत के सबब रच-बस गया है कि ईमान से घूमकर कुफ़्र की तरफ़ और हिदायत से हटकर गुमराही की जानिब आ गये हैं। अब दिलों पर अल्लाह की मोहर लग चुकी है और बात की तह को पहुँचने की क़ाबलियत सब उनसे छिन चुकी है। बज़ाहिर तो ख़ुश हैं और बड़ी अच्छी तरह गुफ़्तगू करते हैं कि ख़्वाह-मख़्वाह दूसरे का दिल अटका लें (यानी वह इनकी बातों में फंस जाये), लेकिन बातिन में बड़े खोटे बड़े कमज़ोर दिल वाले, नामुराद और बद-नीयत हैं। जहाँ कोई वाक़िआ ज़ाहिर हुआ बस समझ बैठे कि हाय मरे। एक दूसरी जगह है:

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ........ الخ.

तुम्हारे मुक़ाबले में बुख़्ल (कन्जूसी) करते हैं। फिर जिस वक़्त ख़ौफ़ होता है तो तुम्हारी तरफ़ इस तरह आँखें फेरकर देखते हैं गोया किसी शख़्स पर मौत की बेहोशी तारी है। फिर जब ख़ौफ़ चला जाता है तो

तुम्हें अपनी बद-कलामी (बुरे कलाम) से छेद डालते हैं और माले ग़नीमत के लालच में न कहने की बातें भी कह गुज़रते हैं। ये बेईमान हैं, इनके आमाल बरबाद हैं, अल्लाह पर यह चीज़ निहायत ही आसान है। पस उनकी ये आवाज़ें ख़ाली पेट के ढोल की बुलन्द आवाज़ से ज़्यादा हैसियत नहीं रखतीं। यही तुम्हारे दुश्मन हैं, इनकी चिकनी-चुपड़ी बातों और भोली सूरतों के धोखे में न आ जाना। अल्लाह इन्हें बरबाद करे, ज़रा सोचें तो क्यों हिदायत को छोड़कर ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं?

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ों की बहुत सी अ़लामतें (निशानियाँ) हैं जिनसे वे पहचान लिये जाते हैं। उनका सलाम लानत है, उनकी ख़ुराक लूट-मार है, उनकी ग़नीमत हराम और ख़ियानत है, वे मस्जिदों की नज़दीकी नापसन्द करते हैं, वे नमाज़ों के लिये आख़िर वक़्त में आते हैं, तकब्बुर और घमण्ड वाले होते हैं, नर्मी और सुलूक, तवाज़ो और विनम्रता से मेहरूम होते हैं। न ख़ुद इन कामों को करते हैं न दूसरों के इन कामों को वक़्अ़त की निगाह से देखते हैं। रात की लकड़ियाँ और दिन के शोर व गुल करने वाले। एक और रिवायत में है कि दिन को ख़ूब खाने पीने वाले और रात को ख़ुश्क लकड़ियों की तरह पड़े रहने वाले।

और जब उनसे कहा जाता है कि (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास) आओ तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह इस्तिग़फ़ार कर दें तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और आप उनको देखेंगे कि (वे उस नसीहत करने वाले और इस्तिग़फ़ार से) तकब्बुर करते हुए बेरुख़ी करते हैं। (5) (जब उनके कुफ़्र की यह हालत है तो) उनके हक़ में दोनों बातें बराबर हैं चाहे उनके लिए आप इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अल्लाह तआ़ला उनको हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमान लोगों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता। (6) ये वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास (जमा) हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो यहाँ तक कि ये आप ही बिखर जाएँगे। और (उनका यह कहना कोरी जहालत है, क्योंकि) अल्लाह ही के हैं सब ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीन के, और लेकिन मुनाफ़िक़ीन समझते नहीं हैं। (7) (और) ये (लोग) कहते हैं कि अगर हम अब मदीना में लौटकर जाएँगे तो इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा। और	وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ إِلَى

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ط وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع	(यह कहना बिल्कुल जहालत है, बल्कि हक़ीक़त में) अल्लाह ही की है इज़्ज़त और उसके रसूल की, (अल्लाह के साथ ताल्लुक़ के वास्ते से) और मुसलमानों के (अल्लाह और उसके रसूल के साथ ताल्लुक़ के वास्ते से) और लेकिन मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं। (8)

मुनाफ़िक़ों को सही रास्ते की दावत और उनका मुँह मोड़ना

मलऊन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो रहा है कि उनके गुनाहों पर जब उनसे सच्चे मुसलमान कहते हैं कि आओ रसूले करीम सल्ल. तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करेंगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा, तो ये तकब्बुर के साथ सर हिलाने लगते हैं, बेरुख़ी बरतते हैं और रुक जाते हैं। इसका बदला यही है कि अब उनके लिये बख़्शिश के दरवाज़े बन्द हैं, नबी का इस्तिग़फ़ार भी उन्हें कुछ नफ़ा न देगा। भला उन फ़ासिक़ों (बदकारों) की क़िस्मत में हिदायत कहाँ?

सूरः बराअत (सूरः तौबा) में भी इसी मज़मून की आयत गुज़र चुकी है और वहीं उसकी तफ़सीर और साथ ही उससे संबन्धित हदीसें भी बयान कर दी गयी हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि सुफ़ियान मुनाफ़िक़ ने अपना मुँह दायीं तरफ़ फेर लिया था और नाराज़गी व अकड़ के साथ तिरछी आँख से घूरा था, इसी का ज़िक्र इस आयत में है। और पहले उलेमा में से अक्सर हज़रात का फ़रमान है कि यह सब का सब बयान अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल का है जैसे कि आगे जल्द ही आ रहा है, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल अपनी क़ौम का बड़ा शख़्स था। जब नबी सल्ल. जुमे के दिन ख़ुतबे के लिये मिम्बर पर बैठते तो यह खड़ा हो जाता और कहता था लोगो! यह हैं अल्लाह के रसूल, जो तुम में मौजूद हैं, जिनकी वजह से अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा इकराम (सम्मान) किया और तुम्हें इज़्ज़त दी। अब तुम पर फ़र्ज़ है कि तुम आपकी मदद करो और आपकी इज़्ज़त व तकरीम करो, आपका फ़रमान सुनो और जो फ़रमायें उस पर अ़मल करो। यह कहकर बैठ जाया करता था। उहुद के मैदान में इसका निफ़ाक़ खुल गया और यह वहाँ से हुज़ूर सल्ल. की खुली नाफ़रमानी करके तिहाई लश्कर को लेकर मदीना को वापस लौट आया। जब रसूलुल्लाह सल्ल. ग़ज़वा-ए-उहुद से फ़ारिग़ हुए और मदीना में ख़ैरियत से तशरीफ़ लाये, जुमे का दिन आया और आप मिम्बर पर चढ़े तो आ़दत के मुताबिक़ यह आज भी खड़ा हुआ और कहना चाहता ही था कि बाज़ सहाबा इधर-उधर से खड़े हो गये और इसके कपड़े पकड़कर कहने लगे- ऐ दुश्मने ख़ुदा! बैठ जा, तू अब यह कहने का मुँह नहीं रखता, तूने जो कुछ किया वह किसी से छुपा नहीं, अब तू इसका अहल नहीं कि ज़बान से जो जी में आये कहे। यह नाराज़ होकर लोगों की गर्दनें फलाँगता हुआ बाहर निकला और कहता जाता था कि मैं किसी बुरी बात के कहने के लिये खड़ा नहीं हुआ था, मैं तो उसका काम और मज़बूत करने के लिये खड़ा हुआ था।

चन्द अन्सारी सहाबी उसे मस्जिद के दरवाज़े पर मिल गये, उन्होंने कहा क्या बात है? कहने लगा मैं तो उसका काम मज़बूत करने के लिये खड़ा हुआ था कि चन्द लोग मुझ पर उछल कर आ गये, मुझे घसीटने लगे और डाँट-डपट करने लगे, जैसे कि मैं किसी बुरी बात के कहने के लिये खड़ा हुआ था।

हालाँकि मेरी नीयत यह थी कि मैं आपकी बातों की ताईद करूँ। उन्होंने कहा ख़ैर अब तुम वापस चलो हम रसूलुल्लाह सल्ल. से अर्ज़ करेंगे। आप तुम्हारे लिये ख़ुदा से बख़्शिश चाहेंगे। उसने कहा मुझे कोई ज़रूरत नहीं। हज़रत क़तादा और हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में उतरी है। वाक़िआ यह था कि उसी की क़ौम के एक मुसलमान नौजवान ने उसकी ऐसी ही चन्द बुरी बातें रसूलुल्लाह सल्ल. तक पहुँचाई थीं। हुज़ूर ने उसे बुलवाया तो यह साफ़ इनकार कर गया और क़समें खा गया। अन्सारियों ने उस सहाबी को मलामत और डाँट-डपट की और उसे झूठा जाना। इस पर ये आयतें उतरीं और उस मुनाफ़िक़ की झूठी क़समों का और उस नौजवान सहाबी की सच्चाई का अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाया। अब उससे कहा गया कि तू चल और रसूलुल्लाह सल्ल. से इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दरख़्वास्त) कर, तो उसने इनकार के लहजे में सर हिला दिया और न गया।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. की आ़दत मुबारक थी कि जिस मन्ज़िल में उतरते वहाँ से कूच न करते जब तक नमाज़ न पढ़ लें। ग़ज़्वा-ए-तबूक में हुज़ूर सल्ल. को ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई कह रहा है कि हम इ़ज़्ज़त वाले इन ज़िल्लत वालों को मदीना पहुँचकर निकाल देंगे। पस आपने आख़िरी दिन में उतरने से पहले ही कूच कर दिया। उससे कहा गया कि हुज़ूर के पास जाकर अपनी ख़ता की माफ़ी अल्लाह से तलब कर। इसका बयान इस आयत में है। इसकी सनद सईद बिन जुबैर रह. तक तो सही है लेकिन यह कहना कि यह वाक़िआ ग़ज़्वा-ए-तबूक का है, इसमें ताम्मुल (क़ाबिले विचार बात) है, बल्कि यह ठीक नहीं है, इसलिये कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल तो ग़ज़्वे (लड़ाई) में था ही नहीं बल्कि लश्कर की एक जमाअ़त को लेकर यह तो लौट गया था। सीरत और मग़ाज़ी की किताबों के लेखकों में तो यह मशहूर है कि यह वाक़िआ ग़ज़्वा-ए-मुरैसीअ़ यानी ग़ज़्वा-ए-बनू मुस्तलिक़ का है। चुनाँचे इस क़िस्से में हज़रत मुहम्मद बिन यहया बिन हस्सान और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र और हज़रत आ़सिम बिन उमर बिन क़तादा से मन्क़ूल है कि इस लड़ाई के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल. का एक जगह क़ियाम (पड़ाव) था, वहाँ हज़रत जहजाह बिन सईद ग़िफ़ारी और हज़रत सिनान बिन यज़ीद का पानी की भीड़ पर कुछ झगड़ा हो गया, जहजाह हज़रत उमर के कारिन्दे थे, झगड़े ने तूल पकड़ा, सिनान ने अन्सारियों को अपनी मदद के लिये आवाज़ दी और जहजाह ने मुहाजिरीन को। उस वक़्त हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और अन्सार की एक जमाअ़त अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के पास बैठी हुई थी, उसने जब यह फ़रियाद सुनी तो कहने लगा लो हमारे ही शहरों में इन लोगों ने हम पर हमले शुरू कर दिये। ख़ुदा की क़सम हमारी और इन क़ुरैशियों की मिसाल वही है जो किसी ने कहा है कि अपने कुत्ते को मोटा ताज़ा करता रह कि तुझे ही काटे। ख़ुदा की क़सम अगर हम लौटकर मदीना गये तो हम इ़ज़्ज़त वाले लोग इन बेहैसियत लोगों को वहाँ से निकाल देंगे। फिर उसकी क़ौम के जो लोग उसके पास बैठे थे उनसे कहने लगा- यह सब आफ़त तुमने ख़ुद अपने हाथों अपने ऊपर ली है। तुमने इन्हें अपने शहर में बसाया, तुमने इन्हें अपने माल का आधों-आध हिस्सा दिया, अब भी अगर तुम इनकी माली इमदाद न करो तो ये ख़ुद तंग आकर मदीने से निकल भागेंगे।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. ने ये तमाम बातें सुनीं। आप उस वक़्त बहुत कम-उम्र थे, सीधे सरकारे नुबुव्वत में हाज़िर हुए और पूरा वाक़िआ बयान फ़रमाया। उस वक़्त आपके पास हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. भी बैठे हुए थे, वह ग़ुस्से में होकर फ़रमाने लगे या रसूलल्लाह! उबादा बिन बिश्र को हुक्म फ़रमाईये कि उसकी गर्दन अलग कर दे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- फिर लोगों में यह मशहूर हो जायेगा कि मुहम्मद अपने साथियों की गर्दनें मारते हैं, यह ठीक नहीं, जाओ लोगों में कूच (चलने) की मुनादी कर दो। अ़ब्दुल्लाह

Maktab E Ashraf

बिन उबई को जब यह मालूम हुआ कि उसकी गुफ़्तगू का इल्म हुज़ूरे पाक सल्ल. को हो गया है तो बहुत घबराया और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर उज़्र माज़िरत, बहाने और अपनी बात का दूसरा मतलब बताने लगा, बात बदलने लगा और क़समें खा गया कि मैंने ऐसा हरगिज़ नहीं कहा। चूँकि यह शख़्स अपनी क़ौम में सम्मानित और ताक़तवर था, दूसरे लोग भी कहने लगे कि हुज़ूर शायद इस बच्चे ने ही ग़लती की हो, इसे वहम हो गया हो, वाक़िआ साबित तो होता नहीं।

हुज़ूर सल्ल. यहाँ से जल्दी ही कूच के वक़्त से पहले ही तशरीफ़ ले चले। रास्ते में हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. मिले और आपकी शाने नुबुव्वत के क़ाबिल अदब से सलाम किया, फिर अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर आज क्या बात है जो वक़्त से पहले ही जनाब ने कूच किया? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम नहीं हुआ कि तुम्हारे साथी इब्ने उबई ने क्या कहा? वह कहता है कि मदीना जाकर हम इज़्ज़तदार लोग इन ज़लीलों को निकाल देंगे। हज़रत उसैद ने कहा या रसूलल्लाह! इज़्ज़त वाले आप हैं और ज़लील वह है। या रसूलल्लाह! आप उसकी बातों का ख़्याल भी न फ़रमाईये, दर असल वह बहुत जला हुआ है। सुनिये मदीना वालों ने उसे सरदार बनाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया था, ताज तैयार हो रहा था कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त आपको लाया, उसके हाथ से सरदारी निकल गयी, यह भड़क रहा है। हुज़ूर सल्ल. चलते ही रहे, दोपहर को ही चल दिये थे शाम हुई रात हुई सुबह हुई यहाँ तक कि धूप में तेज़ी आ गयी, तब आपने पड़ाव किया ताकि लोग इस बात पर फिर न उलझ जायें। चूँकि तमाम लोग थके-हारे और रात के जागे हुए थे उतरते ही सब सो गये। इधर यह सूरत नाज़िल हुई। (सीरत इब्ने इस्हाक़)

बैहक़ी में है कि हम एक ग़ज़वा (लड़ाई) में हुज़ूर सल्ल. के साथ थे। एक मुहाजिर ने एक अन्सारी को पत्थर मार दिया, इस पर बात बढ़ गयी और दोनों ने अपनी जमाअ़त से फ़रियाद की और उन्होंने पुकारा। हुज़ूर सल्ल. सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाने लगे यह क्या जाहिलीयत की आवाज़ लगाने लगे। इस फ़ुज़ूल ख़राब आ़दत को छोड़ो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल कहने लगा अब मुहाजिर यह करने लग गये, अल्लाह की क़सम मदीना पहुँचते ही हम इज़्ज़तदार लोग इन ज़लीलों को वहाँ से निकाल बाहर करेंगे। उस वक़्त मदीना शरीफ़ में अन्सार की तायदाद मुहाजिरीन से बहुत ज़्यादा थी अगरचे बाद में मुहाजिरीन बहुत ज़्यादा हो गये थे। हज़रत उमर रज़ि. को जब इब्ने उबई के इस क़ौल का इल्म हुआ तो हुज़ूर सल्ल. से इसके क़त्ल करने की इजाज़त चाही, मगर आपने रोक दिया। उसने इनकार किया और क़समें खा गया, उस वक़्त मेरी क़ौम ने मुझे बहुत कुछ बुरा कहा और हर तरह मलामत की कि मैंने ऐसा क्यों किया? मैं निहायत ग़मगीन दिल होकर वहाँ से चल दिया और सख़्त रंज व ग़म में था कि हुज़ूर सल्ल. ने मुझे याद फ़रमाया और फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने तेरा उज़्र नाज़िल फ़रमाया, तेरी सच्चाई ज़ाहिर की है। और यह आयत उतरी (यानी यही आयत नम्बर 7, जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)।

यह हदीस और भी बहुत सी किताबों में है। मुस्नद अहमद में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म का यह बयान इस तरह है कि मैं अपने चचा के साथ एक ग़ज़वा में था और मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की ये दोनों बातें सुनीं। मैंने अपने चचा से बयान कीं और मेरे चचा ने हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ कीं। जब आपने उसे बुलाया उसने इनकार किया और क़समें खा गया तो हुज़ूर सल्ल. ने उसे सच्चा और मुझे झूठा जाना। मेरे चचा ने भी मुझे बहुत बुरा भला कहा। मुझे इस क़द्र ग़म और शर्मिन्दगी हुई कि मैंने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया यहाँ तक कि यह सूरत उतरी और आपने मेरी तस्दीक़ की और मुझे यह पढ़कर सुनाई।

मुस्नद की एक और रिवायत में है कि एक सफ़र के मौक़े पर जब सहाबा को तंगी पहुँची तो उसने

Maktab E Ashraf

उन्हें कुछ देने की मनाही कर दी.......। रसूलुल्लाह ने जब उन्हें इसलिये बुलवाया कि आप उनके लिये इस्तिग़फ़ार करें तो उन्होंने इससे भी मुँह फेर लिया। क़ुरआने करीम ने उन्हें टेक लगाई लकड़ियाँ इसलिये कहा है कि ये लोग अच्छे ख़ूबसूरत जिस्म वाले थे। तिर्मिज़ी वग़ैरह में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. से रिवायत है कि हम एक ग़ज़वा में हुज़ूर सल्ल. के साथ निकले, हमारे साथ कुछ देहाती लोग भी थे। पानी की जगह वह पहले पहुँचना चाहते थे इसी तरह हम भी इसी कोशिश में रहते थे। एक मर्तबा एक देहाती ने जाकर पानी पर क़ब्ज़ा करके हौज़ भर लिया और उसके इर्द-गिर्द (चारों तरफ़) पत्थर रख दिये और ऊपर से चमड़ा फैला दिया। एक अन्सारी ने आकर उस हौज़ में से अपने ऊँट को पानी पिलाना चाहा, उसने रोका। अन्सारी ने पिलाने पर ज़ोर दिया। उसने एक लकड़ी उठाकर अन्सारी के सर पर मारी, जिससे उसका सर ज़ख़्मी हो गया। यह चूँकि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई का साथी था, सीधा उसके पास आया और तमाम माजरा कह सुनाया। अ़ब्दुल्लाह बड़ा बिगड़ा और कहने लगा इन देहातियों को कुछ न दो, ये ख़ुद भूखे मरेंगे तो भाग जायेंगे। ये खाने के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आ जाते थे और खा लिया करते थे तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा तुम हुज़ूर का खाना और ऐसे वक़्त ले जाओ जब ये लोग न हों, आप अपने साथियों के साथ खाना खा लेंगे ये रह जायेंगे। यूँ ही भूखे मरते भाग जायेंगे। और अब हम मदीना जाकर इन कमीनों को निकाल बाहर करेंगे।

मैं उस वक़्त अपने चचा का रदीफ़ (ऊँटनी पर सवारी का साथी) था। मैंने यह सब सुना, अपने चचा से ज़िक्र किया, चचा ने हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र किया, आपने उसे बुलवाया, यह इनकार कर गया और हलफ़ उठा लिया। हुज़ूर सल्ल. ने उसे सच्चा समझा और मुझे झूठा क़रार दिया। मेरे चचा मेरे पास आये और कहा तुमने यह हरकत की? हुज़ूर सल्ल. तुझ पर नाराज़ हो गये और तुझे झूठा जाना और दूसरे मुसलमानों ने भी तुझे झूठा समझा। मुझ पर तो ग़म का पहाड़ टूट पड़ा, सख़्त ग़म की हालत में सर झुकाये मैं हुज़ूर के साथ जा रहा था, थोड़ी ही देर गुज़री होगी कि आप मेरे पास आये, मेरा कान पकड़ा। जब मैंने सर उठाकर आपकी तरफ़ देखा तो आप मुस्कुराये और चल दिये। अल्लाह की क़सम मुझे इस क़द्र ख़ुशी हुई कि बयान से बाहर है। अगर दुनिया की हमेशा की ज़िन्दगी मुझे मिल जाती जब भी मैं इतना ख़ुश न हो सकता था। फिर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. मेरे पास आये और पूछा कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने तुमसे क्या कहा? मैंने कहा फ़रमाया तो कुछ भी नहीं, मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले गये। आपने फ़रमाया बस फिर ख़ुश हो जा। आपके बाद ही हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. तशरीफ़ लाये, यही सवाल मुझसे किया और मैंने यही जवाब दिया। सुबह को सूरः मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई। एक दूसरी रिवायत में इस सूरत का "मिन्हल् अज़िल्ल" तक पढ़ना भी मरवी है।

अ़ब्दुल्लाह बिन लहीआ़ और मूसा बिन उक़्बा ने भी इस हदीस को मग़ाज़ी में बयान किया है, लेकिन उन दोनों की रिवायत में ख़बर पहुँचाने वाले का नाम औस बिन अरक़म है जो क़बीला बनू हारिस बिन ख़ज़्रज में से थे। तो मुम्किन है कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ने भी ख़बर पहुँचाई हो और हज़रत औस ने भी। और यह भी मुम्किन है कि रावी से नाम में ग़लती हो गयी हो, वल्लाहु आलम।

इब्ने अबी हातिम में है कि यह वाक़िआ़ ग़ज़वा-ए-मुरैसीअ़ का है, यह वह ग़ज़वा (लड़ाई) है जिसमें हज़रत ख़ालिद रज़ि. को भेजकर हुज़ूर सल्ल. ने मनात बुत को तुड़वाया था, जो क़िफ़ा मुशल्लल और समन्दर के दरमियान था। इसी ग़ज़्वे में दो शख़्सों के दरमियान झगड़ा हो गया था, एक मुहाजिर था दूसरा क़बीला बहज़ का था, और क़बीला बहज़ अन्सारियों का हलीफ़ (साथी) था। बहज़ी ने अन्सारियों को और

मुहाजिर ने मुहाजिरीन को आवाज़ दी। कुछ लोग दोनों तरफ़ से खड़े हो गये और झगड़ा होने लगा। जब ख़त्म हुआ तो मुनाफ़िक़ लोग अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के पास जमा हुए और कहने लगे- हमें तो तुमसे बहुत कुछ उम्मीदें थीं, तुम हमारे दुश्मनों से हमारा बचाव थे, अब तो तुम बेकार से हो गये, न नफ़े का ख़्याल न नुक़सान का, तुम ने ही इन जलाबीब को इतना चढ़ा दिया कि बात-बात पर ये हम पर चढ़ दौड़ें। नये मुहाजिरीन को ये लोग जलाबीब कहते थे। इस ख़ुदा के दुश्मन ने जवाब दिया कि अब मदीना पहुँचते ही इन सब को वहाँ से वापस निकाल देंगे। मालिक बिन दख़शुम जो मुनाफ़िक़ था उसने कहा मैं तो तुम्हें पहले ही से कहता हूँ कि इन लोगों के साथ सुलूक करना छोड़ दो ये ख़ुद-बख़ुद मुन्तशिर हो जायेंगे। ये बातें हज़रत उमर रज़ि. ने सुन लीं और ख़िदमते नबवी में आकर अ़र्ज़ करने लगे कि इस फ़ितना उठाने वाले अ़ब्दुल्लाह बिन उबई का क़िस्सा पाक करने की मुझे इजाज़त दीजिए। आपने फ़रमाया- अच्छा अगर इजाज़त दूँ तो क्या तुम उसे क़त्ल कर डालोगे? हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! ख़ुदा की क़सम अभी अपने हाथ से उसकी गर्दन मारूँगा। आपने फ़रमाया अच्छा बैठ जाओ। इतने में हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. भी यही कहते हुए आये। आपने उनसे भी यही पूछा और उन्होंने भी यही जवाब दिया। आपने उन्हें भी बैठा लिया। फिर थोड़ी देर गुज़री होगी कि कूच करने का हुक्म दिया और वक़्त से पहले ही लश्कर ने कूच किया। वह दिन रात दूसरी सुबह तक बराबर चलते ही रहे, जब धूप में तेज़ी आ गयी तो उतरने को फ़रमाया। फिर दोपहर ढलते ही जल्दी से कूच किया और इसी तरह चलते रहे। तीसरे दिन सुबह को क़िफ़ा मुशल्लल से मदीना शरीफ़ पहुँच गये। हज़रत उमर रज़ि. को बुलवाया, उनसे पूछा कि अगर मैं उसके क़त्ल का तुमको हुक्म देता तो तुम उसे मार देते? हज़रत उमर रज़ि. ने अ़र्ज़ किया यक़ीनन मैं उसका सर तन से जुदा कर देता। आपने फ़रमाया अगर तुम उसे उस दिन क़त्ल कर देते तो बहुत से लोगों के नाक ख़ाक में भर जाते (यानी बहुत से लोग मारे जाते) कि मैं अगर उन्हें कहता तो वे भी उसे मार डालने में देर न लगाते। फिर लोगों को बातें बनाने का मौक़ा मिलता कि मुहम्मद अपने साथियों को भी बेदर्दी के साथ मार डालता है। इसी वाक़िए का बयान इन आयतों में है। यह मज़मून बहुत ग़रीब है और इसमें बहुत सी ऐसी उम्दा बातें हैं जो दूसरी रिवायतों में नहीं।

सीरत मुहम्मद इब्ने इस्हाक़ में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ के बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो सच्चे मुसलमान थे, इस वाक़िए के बाद हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में आये और गुज़ारिश की कि या रसूलल्लाह! मैंने सुना है कि मेरे बाप ने जो बकवास की है उसके बदले में आप उसे क़त्ल करना चाहते हैं? अगर यूँही है तो उसके क़त्ल का हुक्म आप किसी और को न दीजिए मैं ख़ुद जाता हूँ और अभी उसका सर आपके क़दमों में ला डालता हूँ। क़सम ख़ुदा की क़बीला ख़ज़रज का एक-एक शख़्स जानता है कि मुझसे ज़्यादा कोई बेटा अपने बाप से एहसान व सुलूक और मुहब्बत व इ़ज़्ज़त करने वाला नहीं (लेकिन मैं फ़रमाने रसूलुल्लाह पर अपने प्यारे बाप की गर्दन मारने को तैयार हूँ)। अगर आपने किसी और को यह हुक्म दिया और उसने उसे मारा तो मुझे डर है कि कहीं बदले के जोश में मैं उसे न मार बैठूँ और ज़ाहिर है कि अगर यह हरकत मुझसे हो गयी तो मैं एक काफ़िर के बदले एक मुसलमान को मारकर जहन्नमी हो जाऊँगा। आप मेरे बाप के क़त्ल का मुझे हुक्म दीजिए। आपने फ़रमाया- नहीं! मैं उसे क़त्ल करना नहीं चाहता, हम तो उससे और नर्मी बरतेंगे और उसके साथ अच्छा सुलूक करेंगे जब तक वह हमारे साथ है।

हज़रत इक्रिमा रह. और हज़रत इब्ने ज़ैद रह. का बयान है कि जब हुज़ूर सल्ल. अपने लश्करों समेत मदीना पहुँचे तो इस मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के लड़के हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु मदीना

Maktab E Ashraf

Maktab-E-Ashraf

शरीफ़ के दरवाज़े पर खड़े हो गये, तलवार खींच ली, लोग मदीना में दाख़िल होने लगे यहाँ तक कि उनका बाप आया तो यह फ़रमाने लगे दूर रहो, मदीना में न जाओ। उसने कहा क्या बात है? मुझे क्यों रोक रहा है? हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया- तू मदीना में नहीं जा सकता जब तक कि अल्लाह के रसूल तेरे लिये इजाज़त न दें। इज़्ज़त वाले आप ही हैं और तू ज़लील है। यह रुक कर खड़ा हो गया यहाँ तक कि रसूले करीम सल्ल. तशरीफ़ लाये। आपकी आ़दत मुबारक थी कि लश्कर के आख़िरी हिस्से में होते थे। आपको देखकर उस मुनाफ़िक़ ने अपने बेटे की शिकायत की, आपने उनसे पूछा कि इसे क्यों रोक रखा है? उन्होंने कहा क़सम है ख़ुदा की, जब तक आपकी इजाज़त न हो यह अन्दर नहीं जा सकता। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने इजाज़त दी तब हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने अपने बाप को शहर में दाख़िल होने दिया।

मुस्नद हुमैदी में है कि आपने अपने वालिद से कहा कि जब तक तू अपनी ज़बान से यह न कहे कि रसूलुल्लाह सल्ल. इज़्ज़त वाले और मैं ज़लील हूँ तू मदीना में नहीं जा सकता। और इससे पहले हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया था कि या रसूलल्लाह! अपने बाप की हैबत (रौब) की वजह से मैंने आज तक निगाह ऊँची करके उसके चेहरे को भी नहीं देखा, लेकिन आप अगर उस पर नाराज़ हैं तो मुझे हुक्म दीजिए अभी उसकी गर्दन हाज़िर करता हूँ किसी और को उसके क़त्ल का हुक्म न दीजिए। ऐसा न हो कि मैं अपने बाप के क़ातिल को अपनी आँखों से चलता फिरता न देख सकूँ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ع ٢ ١٤

ऐ ईमान वालो! तुमको तुम्हारे माल और औलाद (मुराद इससे दुनिया की तमाम चीज़ें हैं) अल्लाह की याद (और इताअ़त) से (मुराद इससे दीन के तमाम अहकाम हैं) ग़ाफ़िल न करने पाएँ, और जो ऐसा करेगा तो ऐसे लोग नाकाम रहने वाले हैं। (9) और (इबादतों में से एक माली इबादत और नेकी का हुक्म किया जाता है कि) हमने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से (वाजिब हुक़ूक़) इससे पहले-पहले ख़र्च कर लो कि तुममें से किसी की मौत आ खड़ी हो, फिर वह (तमन्ना व हसरत के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको और थोड़े दिनों क्यों मोहलत न दी गई कि मैं ख़ैर-ख़ैरात दे लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता। (10) और अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को जबकि उसकी (उम्र की) मीयाद (ख़त्म होने पर) आ जाती है हरगिज़ मोहलत नहीं देता। और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है (वैसे ही बदले के हक़दार होंगे)। (11)

अल्लाह के ज़िक्र का एहतिमाम

अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि वे ख़ूब ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र किया करें और तंबीह करता है कि ऐसा न हो कि माल व औलाद की मुहब्बत में फंसकर अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जायें। फिर फ़रमाता है कि जो ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाये और दुनिया की चमक-दमक पर रीझ जाये, अपने रब की इताअ़त में सुस्त पड़ जाये वह अपना नुक़सान आप करने वाला है। फिर अपनी इताअ़त में माल ख़र्च करने का हुक्म दे रहा है कि अपनी मौत से पहले ख़र्च कर लो, मौत के वक़्त की बेकसी देखकर शर्मिन्दा होना और उम्मीदें बाँधना कुछ नफ़ा न देगा। उस वक़्त चाहेगा कि थोड़ी सी देर के लिये भी अगर छोड़ दिया जाये तो जो कुछ नेक अ़मल हो सके कर ले और अपना माल भी दिल खोलकर अल्लाह की राह में दे ले, लेकिन आह! अब वक़्त कहाँ? आने वाली मुसीबत आन पड़ी और न टलने वाली आफ़त सर पर खड़ी हो गयी। एक और जगह फ़रमान है:

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ....... الخ.

यानी लोगों को होशियार कर दे, जिस दिन उनके पास अ़ज़ाब आ जायेगा तो ये ज़ालिम कहने लगेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी सी मोहलत मिल जाये ताकि हम तेरी दावत क़बूल कर लें और तेरे रसूलों की इत्तिबा करें........। इस आयत में तो काफ़िरों की मज़म्मत (बुराई) का ज़िक्र है, दूसरी आयत में नेक अ़मल में कमी करने वालों के अफ़सोस का बयान इस तरह हुआ है:

حَتّٰى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ.

यानी जब उनमें से किसी को मौत आने लगती है तो कहता है- ऐ मेरे रब! तू मुझे लौटा दे तो मैं नेक अ़मल कर लूँ......। यहाँ फ़रमाता है कि मौत का वक़्त आगे पीछे नहीं होता। ख़ुदा ख़ुद ख़बर रखने वाला है कि कौन अपने क़ौल में सच्चा है और अपने सवाल में हक़ पर है। ये लोग तो अगर लौटाये जायें तो फिर इन बातों को भूल जायेंगे और वही कुछ करने लगेंगे जो इससे पहले करते रहे। तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हर वह शख़्स जो मालदार हो और उसने हज न किया हो या ज़कात न दी हो, वह मौत के वक़्त दुनिया में वापस लौटने की आरज़ू करता है। एक शख़्स ने कहा हज़रत! अल्लाह का ख़ौफ़ कीजिए वापसी की आरज़ू तो काफ़िर करते हैं। आपने फ़रमाया जल्दी क्यों करते हो? सुनो! क़ुरआन फ़रमाता है- फिर आपने यही पूरा रुकूअ़ तिलावत करके सुनाया। उसने पूछा ज़कात कितने में वाजिब है? फ़रमाया दो सौ और ज़्यादा में। पूछा हज कब फ़र्ज़ हो जाता है? फ़रमाया जब रास्ते और सवारी के ख़र्च की ताक़त हो।

एक मरफ़ूअ़ रिवायत में भी इसी तरह मरवी है लेकिन मौक़ूफ़ ही ज़्यादा सही है। इमाम ज़ह्हाक की रिवायत इब्ने अ़ब्बास वाली भी मुन्क़ता है। दूसरी सनद में एक रावी अबू जनाब कल्बी है वह भी ज़ईफ़ है। वल्लाहु आलम। इब्ने अबी हातिम में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. के सामने सहाबा ने उम्र के ज़्यादा होने का ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया- जब अजल (मुक़र्रर वक़्त और मौत) आ जाये फिर पीछे नहीं हट सकती। उम्र का बढ़ना सिर्फ़ इस तरह है कि अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को नेक सालेह औलाद दे जो उसके लिये उसके मारने के बाद दुआ़ करती रहे, और वह दुआ़ उसे उसकी क़ब्र में पहुँचती रहे।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः मुनाफ़िक़ून की तफ़सीर पूरी हुई फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

Maktab E Ashraf

सूरः तग़ाबुन

सूरः तग़ाबुन मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

इब्ने अ़साकिर की एक बहुत ही ग़रीब बल्कि मुन्कर (यानी नाक़ाबिले क़बूल) हदीस में है कि जो बच्चा पैदा होता है उसके सर के जोड़ों में सूरः तग़ाबुन की पाँच आयतें लिखी हुई होती हैं।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं अल्लाह की पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान करती हैं। उसी की बादशाही है और वही तारीफ़ के लायक़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (1) वही है जिसने तुमको पैदा किया, सो (बावजूद इसके भी) तुममें बाज़े काफ़िर हैं और बाज़े मोमिन हैं। और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे (ईमानी व कुफ़्रिया) आमाल को देख रहा है। (2) उसी ने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया और तुम्हारा नक़्शा बनाया, सो उम्दा नक़्शा बनाया, और उसी के पास (सब को) लौटना है। (3) वह सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और सब चीज़ों को जानता है जो तुम छुपाकर करते हो और जो खुले तौर पर करते हो, और अल्लाह तआ़ला दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (4)

आ़लम का पैदा करने और बनाने वाला

मुसब्बहात की सूरतों में सबसे आख़िरी सूरत यही है। मख़्लूक़ात के अल्लाह तआ़ला की तस्बीह व पाकी का बयान कई दफ़ा हो चुका है। मुल्क व तारीफ़ वाला अल्लाह ही है, हर चीज़ पर उसकी हुकूमत, हर काम में और हर चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर करने में वह तारीफ़ का हक़दार, जिस चीज़ का इरादा करे उसे पूरा करने की क़ुदरत, न कोई उसका विरोध कर सके, न उसे कोई रोक सके। वह अगर न चाहे तो

कुछ भी न हो, वही तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है। उसके इरादे से बाज़ इनसान काफ़िर हुए बाज़ मोमिन, वह अच्छी तरह जानता है कि हिदायत का मुस्तहिक़ कौन है और गुमराही का मुस्तहिक़ कौन है? वह अपने बन्दों के आमाल पर शाहिद (गवाह और देखने वाला) है, और हर-हर अ़मल का पूरा-पूरा बदला देगा। उसने अ़दल व हुकूमत के साथ आसमान व ज़मीन की पैदाईश की है। उसी ने तुम्हें पाकीज़ा ख़ूबसूरत शक्लें दे रखी हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

يَآاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ.......... الخ.

ऐ इनसान! तुझे तेरे रब्बे करीम से किसने ग़ाफ़िल कर दिया? उसी ने तुझे पैदा किया, फिर दुरुस्त किया, फिर ठीक-ठाक किया और जिस सूरत में चाहा तुझे बनाया और तैयार किया। एक दूसरी जगह इरशाद है:

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا....... الخ.

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और तुम्हें बेहतरीन सूरतें दीं और पाकीज़ा चीज़ें खाने को इनायत फ़रमायीं.....।

आख़िर सब को उसी की तरफ़ लौटना है। आसमान व ज़मीन और हर-हर नफ़्स, तमाम कायनात का इल्म उसे हासिल है, यहाँ तक कि वह इरादों और पोशीदा बातों से भी वाक़िफ़ है।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ز فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌo ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ز فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَمِيْدٌo	क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़्र किया, फिर उन्होंने अपने (उन) आमाल का वबाल (दुनिया में भी) चखा और (उसके अ़लावा आख़िरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होने वाला है। (5) यह इस सबब से है कि उन लोगों के पास उनके पैग़म्बर खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (उन रसूलों के बारे में) कहा कि क्या आदमी हमको हिदायत करेंगे? ग़र्ज़ कि उन्होंने कुफ़्र किया और मुँह मोड़ा और ख़ुदा ने (भी उनकी कुछ) परवाह न की, और अल्लाह (सब से) बेपरवाह (और) तारीफ़ के लायक़ है। (6)

पहलों की सबक़ लेने वाली तारीख़

यहाँ पहले काफ़िरों के कुफ़्र, उनकी बुरी सज़ा और बदतरीन बदले का ज़िक्र हो रहा है कि क्या तुम्हें तुम से पहले मुन्किरों (इनकार करने वालों) का हाल मालूम नहीं? कि रसूलों की मुख़ालफ़त और हक़ को झुठलाना क्या रंग लाया? दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये, यहाँ भी अपने बुरे आमाल का ख़मियाज़ा भुगता और वहाँ का भुगतना अभी बाक़ी पड़ा है जो निहायत दर्दनाक है। इसकी वजह सिवाय इसके और कुछ नहीं कि दलाईल व हुज्जतें और रोशन निशान के साथ जो अल्लाह के नबी उनके पास आये। उन्होंने

Maktaba Ashraf

उन्हें न माना और अपने नज़दीक इसे मुहाल जाना कि इनसान पैग़म्बर हो और उन्हीं जैसे एक आदम-ज़ाद के हाथ पर उन्हें हिदायत दी जाये। पस इनकार कर बैठे और अ़मल छोड़ दिया। अल्लाह तआ़ला ने भी उनसे बेपरवाही बरती, वह तो ग़नी (बेपरवाह) है और साथ ही तारीफ़ व हम्द का हक़दार।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ
بَلٰى وَرَبِّىْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ○ فَاٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِیْٓ اَنْزَلْنَا ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ○ يَوْمَ
يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ
التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○

ये काफ़िर (आख़िरत के अ़ज़ाब का मज़मून सुनकर) यह दावा करते हैं कि वे हरगिज़-हरगिज़ दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे। आप कह दीजिए क्यों नहीं! ख़ुदा की क़सम! ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुमने किया है तुमको सब जतला दिया जाएगा (और उस पर सज़ा दी जाएगी)। और यह (मरने के बाद ज़िन्दा करना और बदला देना) अल्लाह तआ़ला को बिल्कुल आसान है। (7) सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर (यानी क़ुरआन पर) जो कि हमने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (8) (और उस दिन को याद करो) कि जिस दिन तुम सब को एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन है नफ़े और नुक़सान का। और (बयान उसका यह है कि) जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता होगा और नेक काम करता होगा अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह दूर कर देगा और उसको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिसमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। (9) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा ये लोग दोज़ख़ी हैं, उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (10)

बातिल और बेबुनियाद ख़्याल

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि काफ़िर, मुश्रिक और बेदीन लोग कहते हैं कि मरने के बाद हश्र नहीं होगा (यानी दोबारा नहीं उठेंगे)। ऐ नबी तुम उन्हें कह दो कि हाँ ज़रूर होगा। फिर तुम्हारे तमाम छोटे-बड़े छुपे-खुले आमाल का इज़हार तुम पर किया जायेगा। सुनो! तुम्हारा दोबारा पैदा करना, तुम्हें बदले देना

वग़ैरह तमाम काम ख़ुदा तआ़ला पर बिल्कुल आसान हैं। यह तीसरी आयत है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को क़सम खाकर क़ियामत की हक़्क़ानियत के बयान करने को फ़रमाया है। पहली आयत तो सूरः यूनुस में है:

Maktab E Ashraf

وَيَسْتَنْبِئُوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ. قُلْ اِیْ وَرَبِّیْ اِنَّهٗ لَحَقٌّ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ.

यानी ये लोग तुझसे पूछते हैं कि क्या वह हक़ है? तू कह मेरे रब की क़सम वह हक़ है, और तुम ख़ुदा को आ़जिज़ नहीं कर सकते। दूसरी आयत सूरः सबा में है:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ قُلْ بَلٰى وَرَبِّیْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ.

काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत न आयेगी, तू कह दे कि हाँ मेरे रब की क़सम यक़ीनन और ज़रूर आयेगी। और तीसरी आयत यह है (यानी इसी सूरः तग़ाबुन की आयत नम्बर 7, जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है)।

फिर इरशाद होता है कि अल्लाह तआ़ला पर, रसूलुल्लाह पर और अल्लाह की तरफ़ से उतरे हुए नूर यानी क़ुरआने करीम पर ईमान लाओ, तुम्हारा कोई ख़ुफ़िया अ़मल भी अल्लाह तआ़ला पर पोशीदा नहीं। क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआ़ला तुम सब को जमा करेगा और इसी लिये उसका नाम यौमुल-जमा (इकट्ठे होने का दिन) है। जैसे एक और जगह है:

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ.

यह लोगों के जमा किये जाने और उनके हाज़िर होने का दिन है। एक दूसरी जगह है:

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ.

यानी क़ियामत वाले दिन तमाम पहले पिछले जमा किये जायेंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि यौमुत्तग़ाबुन क़ियामत का एक नाम है। इस नाम की वजह यह है कि जन्नत व दोज़ख़ वालों को नुक़सान में डालेंगे। हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं कि इससे ज़्यादा तग़ाबुन क्या होगा कि उनके सामने उन्हें जन्नत में और उनके सामने उन्हें जहन्नम में ले जायें। गोया इसकी तफ़सीर इसके बाद वाली आयत में है कि ईमान वाले नेक आमाल के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे और बहती नहरों वाली हमेशगी की जन्नत में उसे दाख़िल किया जायेगा, और पूरी कामयाबी को पहुँच जायेगा और कुफ़्र व झुठलाने वाले जहन्नम की आग में जायेंगे, जहाँ पड़े जलते भुनते रहेंगे, भला उससे बुरा ठिकाना और क्या हो सकता है?

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ ۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ○ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا	कोई मुसीबत ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर नहीं आती। और जो शख़्स अल्लाह पर (पूरा) ईमान रखता है अल्लाह तआ़ला उसके दिल को (सब्र व रज़ा की) राह दिखा देता है, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (11) और (कलाम का ख़ुलासा यह है कि हर मामले में जिसमें मुसीबतें

اَلرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝	भी दाख़िल हैं) अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, और अगर तुम (इताअ़त से) मुँह मोड़ोगे तो (याद रखो कि) हमारे रसूल के ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (12) अल्लाह के सिवा कोई माबूद (बनने के क़ाबिल) नहीं और मुसलमानों को अल्लाह ही पर (मुसीबतों वग़ैरह में) भरोसा रखना चाहिए। (13)

मुसीबतों का फ़ल्सफ़ा

सूरः हदीद में भी यह मज़मून गुज़र चुका है कि जो कुछ होता है वह ख़ुदा की इजाज़त और उसके हुक्म से होता है। उसकी क़ुदरत व मर्ज़ी के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता। अब जिस शख़्स को कोई तकलीफ़ पहुँचे वह जान ले कि अल्लाह तआ़ला की क़ज़ा व क़द्र (तक़दीर व फ़ैसले) से मुझे यह तकलीफ़ पहुँची, फिर सब्र व बरदाश्त से काम ले और अल्लाह की मर्ज़ी पर साबित-क़दम (जमा) रहे और सवाब व भलाई की उम्मीद रखे। अल्लाह के फ़ैसले और तक़दीर पर लब न हिलाये, तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल की रहबरी करता है और उसे बदले के तौर पर दिल की हिदायत अ़ता फ़रमाता है। सच्चे यक़ीन की चमक वह दिल में देखता है और बहुत सी बार ऐसा भी होता है कि उस मुसीबत का बदला या उससे भी बेहतर दुनिया में अ़ता फ़रमा देता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि उसका ईमान मज़बूत हो जाता है, उसे मुसीबतें और परेशानियाँ ढीला नहीं कर सकते। वह जानता है कि जो पहुँचा वह रुकने वाला न था, और जो न पहुँचा वह मिलने वाला ही न था। हज़रत अ़ल्क़मा रह. के सामने यह आयत पढ़ी जाती है और आप से इसका मतलब मालूम किया जाता है तो फ़रमाते हैं- इससे मुराद वह शख़्स है जो हर मुसीबत के वक़्त इस बात का अ़क़ीदा रखे कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, फिर राज़ी ख़ुशी उसे बरदाश्त करे। यही मतलब है कि वह "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ ले।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि मोमिन पर ताज्जुब है, हर-हर बात में उसके लिये बेहतरी होती है। ज़रर व नुक़सान पर सब्र व सहार करके, नफ़े और भलाई पर शुक्र व एहसान मन्दी करके बेहतरी समेट लेता है। यह दो तरफ़ा भलाई मोमिन के सिवा किसी और के हिस्से में नहीं। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! सबसे अफ़ज़ल अ़मल कौनसा है? आपने फ़रमाया- अल्लाह पर ईमान लाना, उसकी तस्दीक़ करना, उसकी राह में जिहाद करना। उसने कहा हज़रत मैं कोई आसान काम चाहता हूँ। आपने फ़रमाया जो फ़ैसला क़िस्मत का तुझ पर जारी हो तू उसमें अल्लाह तआ़ला का गिला-शिकवा न कर। उसकी रज़ा पर राज़ी रह, यह उससे हल्का मामला है। फिर अपनी और अपने रसूल की इताअ़त का हुक्म देता है कि शरई मामलात में इन इताअ़तों से ज़रा सा भी हद से न बढ़े। जिसका हुक्म मिले उसको पूरा करो, जिससे रोका जाये रुक जाओ। अगर तुम इसके मानने से मुँह मोड़ते हो तो हमारे रसूल सल्ल. पर कोई बोझ नहीं। उनके ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ थी जो वह कर चुके, अब अ़मल न

करने की सज़ा तुम्हें भुगतनी पड़ेगी।

फिर फ़रमान है कि अल्लाह तआ़ला एक है, बेनियाज़ है, उसके सिवा किसी की ज़ात किसी तरह की इबादत के लायक़ नहीं। यह ख़बर मायने में तलब के है, यानी अल्लाह तआ़ला की तौहीद मानो, इख़्लास के साथ सिर्फ़ उसी की इबादतें करो। फिर फ़रमाता है- चूँकि तवक्कुल और भरोसे के लायक़ भी वही है इसलिये तुम उसी पर भरोसा रखो। जैसे एक और जगह इरशाद है:

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا.

पूरब व पश्चिम का रब वही है, माबूदे हक़ीक़ी भी उसके सिवा कोई नहीं, तू उसी को अपना कारसाज़ बना ले।

Maktab E Ashraf

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ
اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ
تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ
فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا
وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ
شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ
تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ع ٢ ٨ ١٦

ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और औलाद तुम्हारे (दीन की) दुश्मन हैं, सो तुम उनसे होशियार रहो (और उनकी ऐसी बात पर अ़मल मत करो), और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र कर जाओ और बख़्श दो तो अल्लाह तआ़ला (तुम्हारे गुनाहों का) बख़्शने वाला (और तुम्हारे हाल पर) रहम करने वाला है। (14) तुम्हारे माल और औलाद बस तुम्हारे लिए एक आज़माईश की चीज़ है। और (जो शख़्स उनमें पड़कर अल्लाह को याद रखेगा तो) अल्लाह के पास (उसके लिए) बड़ा अज्र है। (15) तो जहाँ तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो और (उसके अहकाम को) सुनो और मानो, और (ख़ासकर हुक्म के मौक़ों में) ख़र्च (भी) किया करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और जो शख़्स अपने नफ़्स की हिर्स से महफ़ूज़ रहा ऐसे ही लोग (आख़िरत में) फ़लाह पाने वाले हैं। (16) अगर तुम अल्लाह को अच्छी तरह (यानी नेक-नीयती के साथ) क़र्ज़ दोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जायेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्र करने वाला है (कि नेक अ़मल को क़बूल फ़रमाता है और) बड़ा बुर्दबार है। (17) छुपे और ज़ाहिर (आमाल) का जानने वाला है (और) ज़बरदस्त है (और) हिक्मत वाला है। (18)

Maktab E Ashraf

माल व औलाद का फ़ितना

इरशाद होता है कि बाज़ औरतें अपने मर्दों को और बाज़ औलाद अपने माँ-बाप को अल्लाह की याद और नेक अमल से रोक देती हैं जो दर हक़ीक़त दुश्मनी है, जिससे पहले भी तंबीह हो चुकी है कि ऐसा न हो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दे, अगर ऐसा हो गया तो तुम्हें बड़ा नुक़सान रहेगा। यहाँ भी फ़रमाता है कि उनसे होशियार रहो, अपने दीन की हिफ़ाज़त उनकी ज़रूरियात और फ़रमाईशों के पूरा करने पर मुक़द्दम रखो। बीवी बच्चों और माल की ख़ातिर इनसान रिश्तों को तोड़ देता है, ख़ुदा की नाफ़रमानी पर तुल जाता है, उनकी मुहब्बत में फंसकर अल्लाह के अहकाम को पीठ पीछे डाल देता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मक्का के बाज़ लोग इस्लाम क़बूल कर चुके थे मगर बीवी-बच्चों की मुहब्बत ने उन्हें हिजरत से रोक दिया। फिर जब इस्लाम अच्छी तरह फैल गया तब ये लोग हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरबार में हाज़िर हुए। देखा कि उनसे पहले के मुहाजिरीन ने बहुत कुछ इल्मे दीन हासिल कर लिया है, अब जी में आया कि अपने बाल-बच्चों को सज़ा दें, जिस पर यह फ़रमान हुआः

اِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا...... الخ.

यानी अब दरगुज़र करो, आईन्दा के लिये होशियार रहो। अल्लाह तआ़ला माल व औलाद लेकर इनसान को परख लेता है कि मुसीबत में मुब्तला होने वाले कौन हैं? और इताअ़त गुज़ार कौन हैं? अल्लाह के पास जो बड़ा अज्र है, तुम्हें चाहिये कि उस पर निगाहें रखो। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान है:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ........ الخ.

यानी बतौर आज़माईश के लोगों के लिये दुनियावी ख़्वाहिशें यानी बीवियों और औलाद और सोने चाँदी के बड़े-बड़े लगे हुए ढेर और सधे हुए घोड़ों और मवेशी और खेती की मुहब्बत की ज़ीनत दी गयी है, मगर यह सब दुनिया की चन्द रोज़ की ज़िन्दगी का सामान है, और हमेशगी वाला अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के पास है।

मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हुज़ूरे पाक सल्ल. ख़ुतबा फ़रमा रहे थे कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा लम्बे-लम्बे कुर्ते पहने आ गये, दोनों बच्चे कुर्तों में उलझ-उलझ कर गिरते पड़ते आ रहे थे, यह कुर्ते सुर्ख़ रंग के थे। हुज़ूर सल्ल. की नज़रें जब उन पर पड़ीं तो मिम्बर से उतरकर उन्हें उठाकर लाये और अपने सामने बैठा लिया। फिर फ़रमाने लगे- अल्लाह तआ़ला सच्चा है और उसके रसूल ने भी सच फ़रमाया है कि तुम्हारे माल व औलाद फ़ितना (आज़माईश) हैं, इन दोनों को गिरते-पड़ते आते देखकर सब्र न आ सका। आख़िर ख़ुतबा छोड़कर उन्हें उठाना पड़ा।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत अश्अ़स बिन क़ैस फ़रमाते हैं कि कन्दा क़बीले के वफ़्द में मैं भी हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझसे पूछा तुम्हारी कुछ औलाद भी हैं। मैंने कहा हाँ अब आते हुए एक लड़का हुआ है, काश कि उसके बजाये कोई दरिन्दा होता। आपने फ़रमाया ख़बरदार! ऐसा न कहो। उनमें आँखों की ठण्डक है, और अगर इन्तिक़ाल कर जायें तो अज्र है। फिर फ़रमाया हाँ यही बुज़दिली और ग़म का सबब भी बन जाते हैं, यह बुज़दिली और ग़म व रंज भी हैं।

Maktaba E Ashraf

बज़्ज़ार में है कि औलाद दिल का फल है और यह बुख़्ल व नामर्दी और ग़मी का कारण भी है। तबरानी में है कि तेरा दुश्मन सिर्फ़ वही नहीं जो तेरे मुक़ाबले में कुफ़्र पर जमकर लड़ाई के लिये आया। क्योंकि अगर तूने उसे क़त्ल कर दिया तो तेरे लिये नूर का सबब है, और अगर उसने तुझे क़त्ल कर दिया तो तू निश्चित तौर पर जन्नती हो गया। फिर फ़रमाया शायद तेरा पूरा दुश्मन तेरा बच्चा है, जो तेरी पीठ से निकला फिर तुझसे दुश्मनी करने लगा। फिर फ़रमाता है अपनी ताक़त भर अल्लाह का ख़ौफ़ रखो, उसके अ़ज़ाबों से बचाव का सामान करो। सहीहैन में है कि जो हुक्म मैं करूँ उसे अपनी हिम्मत भर उस पर अ़मल करो, जिससे मैं रोक दूँ उससे रुक जाओ।

बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़्याल है कि सूरः आले इमरान की आयतः

يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ...... الخ.

(यानी सूरः आले इमरान की आयत नम्बर 102) की नासिख़ (उसके हुक्म को बदलने वाली) यह आयत है। यानी पहले फ़रमाया था कि अल्लाह तआ़ला से इस क़द्र डरो जितना उससे डरना चाहिये, लेकिन अब फ़रमा दिया कि अपनी ताक़त के मुताबिक़। चुनाँचे हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि पहली आयत लोगों पर बड़ी भारी पड़ी थी। इस क़द्र लम्बे क़ियाम करते थे कि पैरों पर वरम आ जाता था और इतने लम्बे सज्दे करते थे कि पेशानियाँ ज़ख़्मी हो जाती थीं। पस अल्लाह तआ़ला ने यह दूसरी आयत उतार कर हुक्म को हल्का और आसान कर दिया। और भी बाज़ मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने यही फ़रमाया है और पहली आयत को मन्सूख़ और इस दूसरी आयत को नासिख़ बतलाया है।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) बन जाओ, उनके हुक्म से एक इंच इधर-उधर न हटो, न आगे बढ़ो न पीछे सरको, उसके किसी हुक्म को न छोड़ो, और न उनके ख़िलाफ़ करो। जो ख़ुदा ने तुम्हें दे रखा है उसमें से रिश्तेदारों को, फ़क़ीरों मिस्कीनों को और हाजत मन्दों को देते रहो। ख़ुदा तआ़ला ने तुम पर एहसान किया, तुम दूसरी मख़्लूक़ पर एहसान करो ताकि इस जहान में भी ख़ुदा तआ़ला के एहसान के मुस्तहिक़ बन जाओ, और अगर यह न किया तो दोनों जहान की बरबादी अपने हाथों ख़ुद मोल लोगे।

आयत "व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही......." की तफ़सीर सूरः हश्र की आयत नम्बर 9 में गुज़र चुकी है। जब तुम कोई चीज़ अल्लाह के रास्ते में दोगे अल्लाह उसका बदला देगा। हर सदक़े की जज़ा अ़ता फ़रमायेगा। तुम्हारा मिस्कीनों के साथ सुलूक करना गोया ख़ुदा को क़र्ज़ देना है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- कौन है जो ऐसे को क़र्ज़ दे जो न ज़ालिम है न मुफ़लिस न नादेहन्दा। पस फ़रमाता है कि वह तुम्हें बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर वापस कर देगा। जैसे सूरः ब-क़रह में भी फ़रमाया है कि कई-कई गुना बढ़ाकर देगा। साथ ही ख़ैरात से तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। अल्लाह बड़ा क़द्रदान है, थोड़ी सी नेकी का बहुत बड़ा अज्र देता है, वह बुर्दबार है, दरगुज़र करता है, बख़्श देता है, गुनाहों और ख़ताओं से चश्म-पोशी कर लेता है, ख़ताओं और बुराईयों को माफ़ फ़रमा देता है। वह छुपे खुले का आ़लिम (जानने वाला) है, वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। अल्लाह के इन पाक नामों की तफ़सीर कई-कई मर्तबा इससे पहले गुज़र चुकी है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः तग़ाबुन की तफ़सीर पूरी हुई फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

Maktab E Ashraf

सूरः तलाक़

सूरः तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ
فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْ
بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ
وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ
لَا تَدْرِىْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ
اَمْرًا ۝

ऐ पैग़म्बर! (आप लोगों से कह दीजिए कि) जब तुम लोग (अपनी) औ़रतों को तलाक़ देने लगो तो उनको इद्दत (के ज़माने यानी हैज़) से पहले (यानी पाकी के ज़माने में) तलाक़ दो, और तुम इद्दत को याद रखो और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो जो तुम्हारा रब है। उन औ़रतों को उनके (रहने के) घरों से मत निकालो (क्योंकि तलाक़ वाली का रहने का ठिकाना निकाह वाली की तरह वाजिब है) और न वे औ़रतें ख़ुद निकलें, मगर हाँ! कोई खुली बेहयाई करें तो और बात है। और ये सब ख़ुदा के मुक़र्रर किए हुए अहकाम हैं, और जो शख़्स अल्लाह के अहकाम से तजावुज़ करेगा (जैसे उस औ़रत को घर से निकाल दिया) उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तुझको ख़बर नहीं शायद अल्लाह तआ़ला इस तलाक़ देने के बाद कोई नई बात (तेरे दिल में) पैदा कर दे। (जैसे तलाक़ पर शर्मिन्दगी हो तो रुजू करने में उसकी तलाफ़ी हो सकती है)। (1)

बाज़ मसाईल का बयान

सब से पहले तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शराफ़त व सम्मान के तौर पर ख़िताब किया गया, फिर आपकी उम्मत से ख़िताब किया गया और तलाक़ के मसले को समझाया गया। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तलाक़ दी, वह अपने मायके आ गयीं, इस पर यह आयत उतरी और आप से फ़रमाया गया कि उनसे रुजू कर लो, वह बहुत ज़्यादा रोज़ा रखने वाली और बहुत ज़्यादा नमाज़ पढ़ने वाली हैं। और वह भी आपकी बीवी हैं और जन्नत में भी

Maktab E Ashraf

आपकी बीवियों में दाख़िल हैं। यही रिवायत मुर्सल तौर पर इब्ने जरीर में है। दूसरी सनदों से भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तलाक़ दी, फिर रुजू कर लिया। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने अपनी बीवी साहिबा को हैज़ (माहवारी) की हालत में तलाक़ दे दी, हज़रत उमर रज़ि. ने यह वाक़िआ़ हुज़ूरे पाक सल्ल. से बयान किया, आप नाराज़ हुए और फ़रमाया उन्हें चाहिये कि रुजू कर लें, फिर हैज़ से पाक होने तक रोके रखें। फिर दूसरा हैज़ आये और उससे नहा लें, फिर अगर जी चाहे तो तलाक़ दें। बहरहाल पाकीज़गी की हालत में तलाक़ होनी चाहिये, बातचीत करने (यानी मियाँ-बीवी वाले मिलाप) से पहले, यही वह इद्दत है जिसका हुक्म अल्लाह तआ़ला ने दिया है। यह हदीस और भी बहुत सी किताबों में बहुत सी सनदों के साथ मज़कूर है। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ऐमन रह. ने जो अ़ज़्ज़ा के मौला (आज़ाद किये हुए ग़ुलाम) हैं, हज़रत अबू ज़ुबैर रज़ि. के सुनते हुए हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से सवाल किया- उस शख़्स के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं जिसने अपनी बीवी को हैज़ (माहवारी) की हालत में तलाक़ दी? आपने फ़रमाया- सुनो इब्ने उमर ने अपनी बीवी को हैज़ की हालत में रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़िन्दगी में तलाक़ दी तो हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म दिया कि उसे लौटा ले, चुनाँचे हज़रत इब्ने उमर ने रुजू कर लिया और यही हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था उसके पाक हो जाने के बाद उसे इख़्तियार है चाहे तलाक़ दे चाहे न दे। और हुज़ूरे पाक सल्ल. ने इस आयत की तिलावत कीः

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ.

(मुस्लिम शरीफ़) दूसरी रिवायत में हैः

فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ.

यानी तोहर की हालत में सोहबत से पहले। बहुत से बुज़ुर्गों ने यही फ़रमाया है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यानी माहवारी की हालत में तलाक़ न दो। न उस तोहर (पाकी की हालत) में तलाक़ दो जिसमें सोहबत हो चुकी हो, बल्कि उस वक़्त रहने दो, जब हैज़ आ जाये फिर उससे नहा ले तब एक तलाक़ दो।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि इद्दत से मुराद तोहर (पाकी की हालत) है, क़रअ़ से मुराद हैज़ (माहवारी की हालत) है। या हमल (गर्भ) की हालत में जब हमल ज़ाहिर हो। जिस तोहर में सोहबत कर चुका है उसमें तलाक़ न दे, न मालूम हामिला (गर्भवती) है या नहीं। यहीं से मसाईल पर गहरी नज़र रखने वाले उलेमा ने तलाक़ के अहकाम लिये हैं और तलाक़ की दो क़िस्में की हैं- "तलाक़े सुन्नत" और "तलाक़े बिद्अ़त" तलाक़े सुन्नत तो यह है कि तोहर की यानी पाकीज़गी की हालत में सोहबत करने से पहले तलाक़ दे दे, या गर्भ की हालत में तलाक़ दे और तलाक़े बिद्अ़त यह है कि माहवारी की हालत में तलाक़ दे या तोहर में दे लेकिन सोहबत कर चुका हो और मालूम न हो कि हमल है या नहीं? तलाक़ की तीसरी क़िस्म भी है जो न तलाक़े सुन्नत है न तलाक़े बिदअ़त, और वह नाबालिग़ लड़की की तलाक़ है और उस औ़रत की जिसे हैज़ (माहवारी) के आने से नाउम्मीदी हो चुकी हो (यानी ज़्यादा उम्र हो गयी हो) और उस औ़रत की जिससे सोहबत न हुई हो। इन सब के अहकाम और तफ़सीली बहस की जगह अहकाम की किताबें हैं न कि तफ़सीर। वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलम।

फिर फ़रमान है कि इद्दत की हिफ़ाज़त करो, उसकी इब्तिदा इन्तिहा (शुरू-आख़िर) की देखभाल रखो, ऐसा न हो कि इद्दत की लम्बाई औ़रत को दूसरा शौहर करने से रोक दे और इस बारे में अपने माबूदे

हक़ीक़ी परवर्दिगारे आलम से डरते रहो। इद्दत के ज़माने में तलाक़ पाई हुई औरत की रिहाईश का मकान शौहर के ज़िम्मे है, वह उसे निकाल न दे, और न ख़ुद उसे निकलना जायज़ है, क्योंकि वह अपने शौहर के हक़ में रुकी हुई है।

"फ़ाहिशतुम् मुबय्यिनतुन" (खुली बेहयाई) ज़िना को भी शामिल है और इसे भी कि औरत अपने शौहर को तंग करे, उसके हुक्म के ख़िलाफ़ करे और उसे तकलीफ़ पहुँचाये या बद-ज़बानी व बद-अख़्लाक़ी शुरू कर दे, अपने कामों से और अपनी ज़बान से ससुराल वालों को तकलीफ़ पहुँचाये तो इन सूरतों में बेशक शौहर को जायज़ है कि उसे अपने घर से निकाल बाहर करे। यह अल्लाह तआ़ला की मुक़र्रर की हुई हदें हैं, उसकी शरीअ़त (क़ानून) और उसके बतलाये हुए अहकाम हैं। जो शख़्स इन पर अ़मल न करे, इनकी बेक़द्री के साथ इन्हें तोड़ दे, इनसे आगे बढ़ जाये वह अपना ही बुरा करने वाला और अपनी ही जान पर ज़ुल्म ढाने वाला है। शायद कि अल्लाह कोई नई बात पैदा कर दे, अल्लाह के इरादों को और होने वाली बातों को कोई नहीं जान सकता।

इद्दत का ज़माना तलाक़ पाई हुई औरत को शौहर के घर गुज़ारने का हुक्म देना इस मस्लेहत से है कि मुम्किन है इस मुद्दत में उसके शौहर के ख़्यालात बदल जायें, तलाक़ देने पर शर्मिन्दा हो, दिल में उसको वापस लौटा लेने का ख़्याल पैदा हो जाये और फिर रुजू करके दोनों मियाँ-बीवी अमन व अमान से गुज़ारा करने लगें। नई बात और नया काम पैदा करने से मुराद भी रुजू करना है। इसी बिना पर बाज़ पहले बुज़ुर्गों और उनके पैरोकार जैसे हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. वग़ैरह का मज़हब है कि मबतूता (यानी वह औरत जिसकी तलाक़ के बाद शौहर रुजू करने का हक़ बाक़ी न रहा हो उस) के लिये इद्दत गुज़ारने के ज़माने तक मकान का देना शौहर के ज़िम्मे नहीं। इसी तरह जिस औरत का शौहर फ़ौत हो जाये उसे भी रिहाईशी मकान इद्दत के लिये देना उसके वारिसों पर नहीं। उनकी एतिमादी दलील हज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस फ़हरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा वाली हदीस है कि जब उनके शौहर हज़रत अबू उमर बिन हफ़्स ने उनको तीसरी और आख़िरी तलाक़ दे दी और वह उस वक़्त यहाँ मौजूद न थे बल्कि यमन में थे और वहीं से तलाक़ दी थी तो उनके वकील ने उनके पास थोड़े से जौ भेज दिये थे कि यह तुम्हारी ख़ुराक है। यह बहुत नाराज़ हुईं। उसने कहा बिगड़ती क्यों हो? तुम्हारा ख़र्चा, खाना-पीना हमारे ज़िम्मे नहीं। यह रसूलुल्लाह सल्ल. के पास गयीं, आपने फ़रमाया ठीक है, तेरा ख़र्चा उस पर नहीं। मुस्लिम में है कि न तेरे रहने सहने का घर। और उनसे फ़रमाया कि तुम उम्मे शुरैक के घर अपनी इद्दत गुज़ारो। फिर फ़रमाया वहाँ तो मेरे अक्सर सहाबा जाया आया करते हैं तुम अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम के यहाँ अपनी इद्दत का ज़माना गुज़ारो, वह एक नाबीना (अंधे) आदमी हैं, तुम वहाँ आराम से अपने कपड़े भी रख सकती हो।

मुस्नद अहमद में है कि इनके शौहर को हुज़ूर सल्ल. ने किसी जिहाद पर भेजा था। उन्होंने वहीं से इन्हें तलाक़ भेज दी। उनके भाई ने इनसे कहा कि हमारे घर से चली जाओ, इन्होंने कहा नहीं, जब तक इद्दत ख़त्म न हो जाये मेरा रहना सहना और खाना पीना मेरे शौहर के ज़िम्मे है। उसने इनकार किया, आख़िर हुज़ूर सल्ल. के पास यह मामला पहुँचा। जब आपको मालूम हुआ कि यह आख़िरी तीसरी तलाक़ है तब आपने हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया कि नान-नफ़क़ा (ख़र्चा और खाना-पीना) घर-बार शौहर के ज़िम्मे उस सूरत में है कि उसे रुजू करने का हक़ हासिल हो, जब यह नहीं तो वह भी नहीं। तुम यहाँ से चली जाओ और फ़ुलाँ औरत के घर अपनी इद्दत गुज़ारो। फिर फ़रमाया वहाँ तो सहाबा की आवा-जाही है, तुम इब्ने उम्मे मक्तूम के घर इद्दत का ज़माना गुज़ारो, यह नाबीना हैं तुम्हें देख नहीं सकते......।

Maktaba E Ashraf

तबरानी में है कि यह हज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस, ज़ह्हाक बिन क़ैस क़रशी की बहन थीं, इनके शौहर मख़ज़ूमी क़बीले के थे। तलाक़ की ख़बर के बाद इनके रहने की जगह, ख़र्चा और खाना-पीना तलब करने पर इनके शौहर के रिश्तेदारों ने कहा था कि न तो तुम्हारे मियाँ ने कुछ भेजा है न हमें देने को कहा है। और हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान में यह भी है कि जब औरत को वह तलाक़ मिल जाये जिसके बाद वह अपने पहले शौहर पर हराम हो जाती है, जब तक दूसरे से निकाह और फिर पूरी तरह अलैहदगी न हो जाये तो इस सूरत में इद्दत का नान-नफ़्क़ा (खाना ख़र्चा) और रहने का मकान उस शौहर के ज़िम्मे नहीं।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْفَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَىْءٍ قَدْرًا ۝	फिर जब वे (तलाक़ पाई हुई) औरतें अपनी इद्दत गुज़र जाने के क़रीब पहुँच जाएँ (तो तुमको दो इख़्तियार हैं, या तो) उनको क़ायदे के मुवाफ़िक़ निकाह में रहने दो या क़ायदे के मुवाफ़िक़ उनको रिहाई दो, और आपस में से दो मोतबर शख़्सों को गवाह कर लो। (ऐ गवाहो! अगर गवाही की ज़रूरत पड़े तो) ठीक-ठीक अल्लाह के वास्ते (बिना किसी रियायत के) गवाही दो। इस मज़मून से उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो। और जो शख़्स अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए (परेशानियों से) निजात की शक्ल निकाल देता है। (2) और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचाता है जहाँ उसका गुमान भी नहीं होता। और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआला उस (की ज़रूरतों को पूरा करने और उसके काम बनाने) के लिए काफ़ी है। अल्लाह तआला अपना काम (जिस तरह चाहे) पूरा करके रहता है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ का (अपने इल्म में) एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। (3)

इद्दत का समापन और आगे की बातें

इरशाद होता है कि इद्दत वाली औरतों की इद्दत जब पूरी होने के क़रीब पहुँच जाये तो उनके शौहरों को चाहिये कि दो बातों में से एक कर लें, या तो उन्हें भलाई और सुलूक के साथ अपने ही निकाह में रोके रखें यानी तलाक़ जो दी थी उससे रुजू करके बाक़ायदा उसके साथ रहना-सहना रखें या उन्हें तलाक़ दे दें। लेकिन बुरा-भला कहे बग़ैर, गाली-गलौज दिये बग़ैर, धमकाये और डाँट-डपट के बग़ैर, भलाई, अच्छाई और

Muftah E Ashraf

ख़ूबसूरती के साथ (यह याद रहे कि रुजू करने का इख़्तियार उस वक़्त है जब एक तलाक़ हुई हो या दो हुई हों)। फिर फ़रमाता है कि अगर रुजू करने का इरादा हो और रुजू कर लो यानी उसको फिर लौटा लो तो इस पर दो आदिल मुसलमान गवाह रख लो। अबू दाऊद और इब्ने माजा में है कि हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि. से मालूम किया गया कि एक शख़्स अपनी बीवी को तलाक़ देता है, फिर उससे सोहबत करता है, न तलाक़ पर गवाह रखता है न रुजू करने पर। आपने फ़रमाया उसने ख़िलाफ़े सुन्नत तलाक़ दी और ख़िलाफ़े सुन्नत रुजू किया। तलाक़ पर भी गवाह रखना चाहिये और रुजू करने पर भी। अब दोबारा ऐसा न करना।

हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि निकाह, तलाक़, रुजू करना बग़ैर दो आ़दिल गवाहों के जायज़ नहीं, जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा है, हाँ मजबूरी हो तो और बात है। फिर फ़रमाता है कि गवाह मुक़र्रर करने का और सच्ची शहादत (गवाही) देने का हुक्म उन्हें हो रहा है जो अल्लाह पर और आने वाले दिन (यानी क़ियामत) पर ईमान रखते हों, ख़ुदा की शरीअ़त के पाबन्द और अ़ज़ाबे आख़िरत से डरने वाले हों। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि रुजू करने पर गवाह रखना वाजिब है अगरचे आप से एक दूसरा क़ौल भी मन्क़ूल है। इसी तरह निकाह पर गवाह रखना भी आप वाजिब बतलाते हैं। एक और जमाअ़त का भी यही क़ौल है। इस मसले को मानने वाली उलेमा-ए-किराम की जमाअ़त यह भी कहती है कि रुजू करना बग़ैर ज़बान से कहे साबित नहीं होता। क्योंकि गवाह रखना ज़रूरी है और जब तक ज़बान से न कहे गवाह कैसे मुक़र्रर किये जायेंगे।

फिर फ़रमाता है कि जो शख़्स अल्लाह के अहकाम पर अ़मल करे, उसकी हराम की हुई चीज़ों से परहेज़ करे, अल्लाह तआ़ला उसके लिये छुटकारा और निजात पैदा करता है और ऐसी जगह से इस तरह रोज़ी पहुँचाता है कि उसके ख़्वाब व ख़्याल में भी न हो। मुस्नद अहमद में है, हज़रत अबूज़र रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मेरे सामने रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की, फिर फ़रमाया ऐ अबूज़र! अगर तमाम लोग सिर्फ़ इसे ही ले लें तो काफ़ी है। आपने बार-बार इसकी तिलावत शुरू की यहाँ तक कि मुझे ऊँघ आने लगी। फिर आपने फ़रमाया ऐ अबूज़र! तुम क्या करोगे जब तुम्हें मदीना से फिर निकाल दिया जायेगा। मैंने जवाब दिया कि मैं और कुशादगी और रहमत की तरफ़ चला जाऊँगा, यानी मक्का शरीफ़ को, वहीं का कबूतर बनकर रह जाऊँगा। आपने फ़रमाया फिर क्या करोगे जब तुम्हें वहाँ से भी निकाला जायेगा। मैंने कहा शाम की पाक ज़मीन में चला जाऊँगा। फ़रमाया जब शाम से निकाला जायेगा तो क्या करोगे? मैंने कहा हुज़ूर! ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ पैग़म्बर बनाकर भेजा है, फिर तो अपनी तलवार अपने कन्धे पर रखकर मुक़ाबले पर उतर आऊँगा। आपने फ़रमाया क्या मैं तुमको इससे बेहतर तरकीब बतलाऊँ? मैंने कहा हाँ हुज़ूर! ज़रूर इरशाद हो। फ़रमाया बस सुनते और मानते रहो अगरचे तुम्हारा अमीर हब्शी ग़ुलाम हो।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम में बहुत ही जामे आयत यह है (यानी जो अपने अन्दर बहुत से अहकाम रखती है):

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ......... الخ.

और सबसे ज़्यादा कुशादगी का वायदा इस आयत में है:

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهُ مَخْرَجًا........ الخ.

(यानी यही आयत जिसमें बताया गया है कि हम उसको ऐसी जगह से रोज़ी देते हैं जहाँ उसके सपने

और ख़्याल में भी न हो)

मुस्नद में फ़रमाने रसूल है कि जो शख़्स ख़ूब ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करे अल्लाह तआ़ला उसे हर ग़म से निजात और हर तंगी से फ़राख़ी देगा, और ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचायेगा जहाँ का उसे ख़्याल व गुमान तक न हो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसे अल्लाह तआ़ला दुनिया और आख़िरत की परेशानी व बेचैनी से निजात देगा। रबीअ़ रह. फ़रमाते हैं कि लोगों पर जो काम भारी हो वह उस पर आसान हो जायेगा। हज़रत इब्ने मसऊद वग़ैरह से मन्क़ूल है- वह जानता है कि अल्लाह अगर चाहे दे अगर न चाहे न दे। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि तमाम बातों के शुब्हे से और मौत की तकलीफ़ से बचा लेगा और रोज़ी ऐसी जगह से देगा जहाँ का गुमान भी न हो। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यहाँ अल्लाह से डरने के यह मायने हैं कि सुन्नत के मुताबिक़ तलाक़ दे और सुन्नत के मुताबिक़ रुजू कर ले। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत औ़फ़ बिन मालिक अश्जई रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बेटे को काफ़िर गिरफ़्तार करके ले गये और उन्हें जेलख़ाने में डाल दिया, उनके वालिद हुज़ूर सल्ल. के पास आते और अपने बेटे की हालत और हाजत, मुसीबत और तकलीफ़ बयान करते रहते। आप उन्हें सब्र करने की तल्क़ीन करते और फ़रमाते जल्द ही अल्लाह तआ़ला उसके लिये छुटकारे का रास्ता बना देगा। थोड़े दिन गुज़रे होंगे कि उनके बेटे दुश्मनों में से निकल भागे, रास्ते में दुश्मनों की बकरियों का रेवड़ मिल गया जिसे अपने साथ हंका लाये और बकरियाँ लिये हुए अपने वालिद की ख़िदमत में जा पहुँचे। बस यह आयत उतरी कि मुत्तक़ी बन्दों को ख़ुदा निजात (छुटकारा) देता है और जहाँ उसका गुमान भी न हो वहाँ से उसे रोज़ी पहुँचाता है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि गुनाह की वजह से इनसान अपनी रोज़ी से मेहरूम हो जाता है, तक़दीर को लौटाने वाली चीज़ सिर्फ़ दुआ़ है। उम्र में बढ़ोतरी करने वाली चीज़ सिर्फ़ नेकी और दूसरों के साथ अच्छा सुलूक करना है। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि हज़रत मालिक अश्जई रज़ि. के लड़के हज़रत औ़फ़ रज़ि. जब काफ़िरों की क़ैद में थे तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उनसे कहलवा दो कि ज़्यादा से ज़्यादा "ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" पढ़ते रहें। एक दिन अचानक बैठे-बैठे उनकी क़ैद खुल गयी और वहाँ से निकल भागे। उन लोगों की एक ऊँटनी हाथ लग गयी जिस पर सवार हो लिये। रास्ते में उनके ऊँटों के रेवड़ मिले उन्हें अपने साथ हंका लाये। वे लोग पीछे दौड़े लेकिन यह किसी के हाथ न लगे, सीधे अपने घर आये और दरवाज़े पर खड़े होकर आवाज़ दी। बाप ने आवाज़ सुनकर फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम यह तो औ़फ़ है। माँ ने कहा हाय वह कहाँ! वह तो क़ैद व बन्द की मुसीबतें झेल रहा होगा। अब दोनों माँ-बाप और ख़ादिम दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, खोला देखा तो उनके लड़के हज़रत औ़फ़ हैं और तमाम अंगनाई ऊँटों से भरी पड़ी है। पूछा कि ये ऊँट कैसे हैं? उन्होंने वाक़िआ़ बयान किया तो फ़रमाया अच्छा ठहरो मैं हुज़ूर सल्ल. से इनके बारे में मसला मालूम करता हूँ (कितनी एहतियात और परहेज़गारी थी कि दुश्मनों के माल के बारे में भी मसला मालूम किया)। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया वह सब तुम्हारा माल है, जो चाहो करो, और यह आयत उतरी कि अल्लाह से डरने वालों की मुश्किल अल्लाह आसान करता है और बेगुमान रोज़ी पहुँचाता है।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि जो शख़्स हर तरफ़ से खिंचकर अल्लाह तआ़ला का हो जाये अल्लाह उसकी हर मुश्किल में उसे किफ़ायत करता है और बेहिसाब रोज़ियाँ देता है। और जो ख़ुदा से हटकर दुनिया ही का हो जाये अल्लाह तआ़ला उसे उसी की तरफ़ सौंप देता है। मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हुज़ूर सल्ल. के साथ आपकी सवारी पर आपके पीछे बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया- मैं तुम्हें चन्द बातें सिखाता हूँ सुनो! तुम अल्लाह तआ़ला की याद रखो, वह तुम्हें याद

रखेगा, अल्लाह तआ़ला के हुक्म की हिफ़ाज़त करो तो अल्लाह तआ़ला को अपने पास बल्कि अपने सामने पाओगे, जब कुछ माँगना हो अल्लाह तआ़ला ही से माँगो, जब मदद तलब करनी हो उसी से मदद चाहो कि तमाम उम्मत मिलकर तुम्हें नफ़ा पहुँचाना चाहे और ख़ुदा तआ़ला को मन्ज़ूर न हो तो ज़रा सा भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकती, और इसी तरह सारे के सारे जमा होकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें तो भी नहीं पहुँचा सकते, अगर तक़दीर में न लिखा हो। क़लमें उठ चुकीं और सहीफ़े ख़ुश्क हो गये (यानी नफ़ा-नुक़सान सब कुछ तक़दीर में पहले से लिखा जा चुका, अल्लाह के अ़लावा किसी के हाथ में कुछ नहीं)।

तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि जिसे कोई हाजत (ज़रूरत) हो और वह लोगों की तरफ़ ले जाये तो बहुत मुम्किन है कि वह सख़्ती में पड़ जाये, और काम मुश्किल हो जाये। और जो अपनी हाजत अल्लाह की तरफ़ ले जाये अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसकी मुराद पूरी करता है, या तो जल्दी इसी दुनिया ही में या देर के बाद यानी मौत के बाद। फिर इरशाद होता है कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ैसले और अहकाम जिस तरह और जैसे चाहे अपनी मख़्लूक़ में पूरे करने वाला और अच्छी तरह जारी रखने वाला है। हर चीज़ का उसने अन्दाज़ा मुक़र्रर किया हुआ है। जैसे एक दूसरी जगह है:

كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ.

कि हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से (यानी पहले से तयशुदा और मुक़द्दर) है।

(ऊपर इद्दत का मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र था) और (तफ़सील यह है कि) तुम्हारी (तलाक़ दी हुई) बीवियों में से जो औ़रतें (ज़्यादा उम्र होने की वजह से) माहवारी आने से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुमको (उनकी इद्दत के मुतैयन करने में) शुब्हा हो तो उनकी इद्दत तीन महीने हैं। और इसी तरह जिन औ़रतों को (अब तक उम्र कम होने की वजह से) माहवारी नहीं आई। और गर्भवती औ़रतों की इद्दत उस गर्भ का पैदा हो जाना है। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके हर एक काम में आसानी कर देगा। (4) यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) अल्लाह का हुक्म है, जो उसने तुम्हारे पास भेजा है। और जो शख़्स (इन मामलात में और दूसरे मामलात में भी) अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उसके गुनाहों को दूर कर देगा (जो कि बड़े नुक़सान का सबब हैं) और उसको बड़ा अज्र देगा। (5)	وَالّٰٓـئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ لا وَّالّٰٓـئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ط وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ط وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا o ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ط وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا o

बड़ी उम्र की औरतों के बाज़ मसाईल

जिन बुढ़िया औरतों की अपनी बड़ी उम्र होने के कारण माहवारी बन्द हो गयी हो उनकी इद्दत यहाँ बतलाई जाती है कि तीन महीने की इद्दत गुज़ारें जैसे कि माहवारी वाली औरतों की इद्दत तीन हैज़ है। देखिये सूरः ब-क़रह की आयत नम्बर 228। इसी तरह वे नाबालिग़ लड़कियाँ जो इस उम्र को नहीं पहुँचीं कि उन्हें हैज़ (माहवारी) आये, उनकी इद्दत भी तीन महीने रखी, अगर तुम्हें शक हो। इसकी तफ़सीर में दो क़ौल हैं- एक तो यह कि ये ख़ून देख लें और तुम्हें शुब्हा गुज़रे कि आया हैज़ (माहवारी) का ख़ून है या बीमारी का। दूसरा क़ौल यह है कि उनकी इद्दत के हुक्म में तुम्हें शक बाक़ी रह जाये और तुम उसे न पहचान सको तो तीन महीने याद रख लो। यह दूसरा क़ौल ही ज़्यादा वाज़ेह (स्पष्ट) है। इसकी दलील यह रिवायत भी है कि हज़रत उबई बिन कअ़ब ने कहा था- या रसूलल्लाह! बहुत सी औरतों की इद्दत अभी बयान नहीं हुई, कमउम्र लड़कियाँ, बूढ़ी बड़ी उम्र की औरतें और गर्भ वाली औरतें। इसके जवाब में यह आयत उतरी।

फिर हामिला (गर्भवती) की इद्दत बयान फ़रमाई कि हमल (गर्भ) का बाहर आना उसकी इद्दत है अगरचे तलाक़ या शौहर की मौत के ज़रा सी देर बाद ही हो जाये। जैसे कि इस आयते करीमा के अलफ़ाज़ में और नबी पाक की हदीसों से साबित है, और पहले व बाद के जमहूर उलेमा का क़ौल है। हाँ हज़रत अ़ली और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के नज़दीक जिस औरत का शौहर वफ़ात पा जाये और वह हामिला हो तो उसके लिये हमल के पूरा होने या महीनों की गिनती के एतिबार से जो इद्दत ज़्यादा लम्बी हो वही गुज़ारी जायेगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास एक शख़्स आया, उस वक़्त हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. भी वहीं मौजूद थे। उसने सवाल किया कि उस औरत के बारे में आपका क्या फ़तवा है जिसे अपने शौहर के इन्तिक़ाल के बाद चालीसवें दिन बच्चा हो जाये। आपने फ़रमाया दोनों इद्दतों में से आख़िरी इद्दत उसे गुज़ारनी पड़ेगी। यानी इस सूरत में तीन महीने की इद्दत उस पर है। अबू सलमा ने कहा कि क़ुरआन में जो है कि हमल वालियों की इद्दत बच्चे का हो जाना है? हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया मैं भी अपने चचाज़ाद भाई अबू सलमा के साथ हूँ यानी मेरा भी यही फ़तवा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उसी वक़्त अपने गुलाम कुरैब को हज़रत सैयदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास भेजा कि जाओ उनसे यह मसला पूछ आओ, उन्होंने फ़रमाया- सुबैआ़ असलमिया के शौहर क़त्ल किये गये और यह उस वक़्त हामिला (पेट से) थीं। चालीस रातों के बाद बच्चा पैदा हो गया, उस वक़्त उनका पैग़ाम आया और हुज़ूरे पाक सल्ल. ने निकाह कर दिया। पैग़ाम भेजने वालों में हज़रत अबुस्सनाबिल भी थे। यह हदीस थोड़ी तफ़सील से दूसरी किताबों में भी है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उतबा ने हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अरक़म ज़ोहरी रह. को लिखा कि वह सुबैआ़ बिन्ते हारिस असलमिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास जायें और उनसे उनका वाक़िआ़ मालूम करके मुझे लिख भेजें। यह गये, मालूम किया और लिखा कि उनके शौहर हज़रत सअ़द बिन ख़ौला रज़ि. थे, यह बदरी सहाबी थी। हज्जतुल-विदा में फ़ौत हो गये, उस वक़्त यह हमल से थीं, थोड़े ही दिन के बाद इन्हें बच्चा पैदा हो गया। जब निफ़ास (बच्चे की पैदाईश के बाद आने वाले ख़ून) से पाक हुयीं तो अच्छे कपड़े पहनकर संवर कर बैठ गयीं। हज़रत अबुस्सनाबिल बिन बअ़्कक जब इनके पास आये तो इन्हें इस हालत में

देखकर कहने लगे- तुम जो इस तरह बैठी हो तो क्या निकाह करना चाहती हो? वल्लाह तुम निकाह नहीं कर सकतीं जब तक कि चार महीने दस दिन न गुज़र जायें। मैं यह सुनकर चादर ओढ़कर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप से यह मसला पूछा। आपने फ़रमाया बच्चा पैदा होते ही तुम इद्दत से निकल गयी, अब तुम्हें इख़्तियार है अगर चाहो अपना निकाह कर लो। (मुस्लिम)

सही बुख़ारी में इस आयत के तहत में इस हदीस के ज़िक्र करने के बाद यह भी है कि हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रह. एक मज्लिस में थे जहाँ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू यअ़ला भी थे, जिनका अदब व सम्मान उनके साथी बहुत ही किया करते थे। उन्होंने हामिला (गर्भवती औ़रत) की इद्दत आख़िरी दो इद्दतों में की मियाद बतलाई (यानी बच्चा पैदा होने या चार महीने दस दिन में से जो ज़्यादा लम्बी हो), इस पर मैंने हज़रत सुबैआ़ वाली हदीस बयान की। इस पर मेरे बाज़ साथी मुझे ठोका लगाने लगे, मैंने कहा फिर तो मैंने बड़ी जुर्रत की अगर अ़ब्दुल्लाह पर मैंने बोहतान बाँधा हालाँकि वह कूफ़ा के एक इलाक़े में ज़िन्दा मौजूद हैं। पस वह ज़रा शर्मा गये और कहने लगे लेकिन उनके चचा तो यह नहीं कहते। मैं हज़रत अबू अ़तीया मालिक बिन आ़मिर से मिला, उन्होंने मुझे हज़रत सुबैआ़ वाली हदीस पूरी सुनाई। मैंने कहा तुम ने इसके बारे में हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से भी कुछ सुना है? फ़रमाया हम हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. की ख़िदमत में थे आपने फ़रमाया- क्या तुम उस पर सख़्ती करते हो और छूट नहीं देते? सूरः तलाक़ सूरः निसा के बाद उतरी है और उसमें फ़रमान है कि हामिला औ़रत की इद्दत हमल का पैदा होना है।

इब्ने जरीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि जो मुलाअ़ना करना चाहे मैं उससे मुलाअ़ना करने को तैयार हूँ। यानी मेरे फ़तवे के ख़िलाफ़ जिसका फ़तवा हो मैं तैयार हूँ कि वह मेरे मुक़ाबले में आये और झूठे पर ख़ुदा की लानत की दुआ़ करे। मेरा फ़तवा यह है कि हमल वाली की इद्दत बच्चे का पैदा हो जाना है। पहले आ़म हुक्म था कि जिन औ़रतों के शौहर मर जायें वे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारें, उसके बाद यह आयत नाज़िल हुई कि हमल वालियों की इद्दत बच्चे का पैदा हो जाना है। पस ये औ़रतें उन औ़रतों में से मख़्सूस हो गयीं। अब मसला यही है कि जिस औ़रत का शौहर इन्तिक़ाल कर जाये और वह हामिला हो तो जब हमल से फ़ारिग़ हो जाये इद्दत से निकल गयी।

इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. ने यह उस वक़्त फ़रमाया था जब उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत अ़ली रज़ि. का फ़तवा यह है कि उसकी इद्दत इन दोनों इद्दतों में से जो आख़िरी (यानी बड़ी) हो वह है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उबई बिन कअ़ब ने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा कि हमल वालियों की इद्दत जो हमल का पैदा होना है, यह तीन तलाक़ वालियों की इद्दत है या जिनके शौहर मर जायें उनकी? आपने फ़रमाया दोनों की। यह हदीस बहुत ग़रीब है बल्कि मुन्कर है। इसलिये कि इसकी सनद में मुसन्ना बिन सबाह है और वह बिल्कुल मतरूकुल-हदीस है (यानी उसकी हदीसें नहीं ली जातीं) लेकिन इसकी दूसरी सनदें भी हैं। फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ियों के लिये हर मुश्किल से आसानी और हर तकलीफ़ से राहत इनायत फ़रमा देता है। यह अल्लाह के अहकाम और उसकी पाक शरीअ़त है, जो अपने रसूल सल्ल. के वास्ते से तुम्हारी तरफ़ उतार रहा है। अल्लाह से डरने वालों को दूसरी चीज़ों के डर से अल्लाह तआ़ला बचा लेता है और उनके थोड़े अ़मल पर बड़ा अज्र देता है।

Maktaba Ashraf

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ط وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ج فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ج وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ج وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ٥ لِيُنْفِقْ ذُوْسَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ط وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰهُ اللّٰهُ ط لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰهَا ط سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ٥ ع ١٧

तुम उन (तलाक़ दी हुई) औरतों को अपनी गुन्जाईश के मुवाफ़िक़ रहने का मकान दो जहाँ तुम रहते हो। और उनको तंग करने के लिए (उसके बारे में) तकलीफ़ मत पहुँचाओ। और अगर वे (तलाक़ दी हुई) औरतें गर्भ से हों तो गर्भ पैदा होने तक उनको (खाने-पीने का) ख़र्च दो। फिर अगर वे (तलाक़ दी हुई) औरतें (जबकि पहले ही से बच्चे वालियाँ हों या बच्चा पैदा होने से ही उनकी इद्दत ख़त्म हुई हो) तुम्हारे लिए (बच्चे को उजरत पर) दूध पिला दें तो तुम उनको (तय की हुई) उजरत दो, और (उजरत के बारे में) आपस में मुनासिब तरीक़े पर मश्विरा कर लिया करो। और अगर तुम आपस में कश्मकश करोगे तो कोई दूसरी औरत दूध पिला देगी। (6) (आगे बच्चे के ख़र्च के बारे में इरशाद है कि) गुन्जाईश वाले को अपनी गुन्जाईश के मुवाफ़िक़ (बच्चे पर) ख़र्च करना चाहिए। और जिसकी आमदनी कम हो उसको चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसको दिया है उसमें से ख़र्च करे। ख़ुदा तआ़ला किसी शख़्स को उससे ज़्यादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाता जितना उसको दिया है। ख़ुदा तआ़ला तंगी के बाद जल्दी फ़रागत भी देगा (अगरचे हाजत व ज़रूरत के पूरा करने के बक़द्र हो)। (7)

अच्छा बर्ताव और उम्दा व्यवहार

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि जब उनमें से कोई अपनी बीवी को तलाक़ दे तो इद्दत के गुज़र जाने तक उसके रहने-सहने को अपना मकान दे। यह जगह अपनी ताक़त के मुताबिक़ है यहाँ तक कि हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अगर ज़्यादा गुंजाईश न हो तो अपने ही मकान का एक कोना उसे दे दे। उसे तकलीफ़ें पहुँचाकर इस क़द्र तंग न करो कि वह मकान छोड़कर चली जाये, या तुमसे छूटने के लिये अपना मेहर का हक़ छोड़ दे। या इस तरह की तलाक़ दी, देखा कि दो एक रोज़ इद्दत के रह गये हैं फिर रुजू का ऐलान कर दिया, फिर तलाक़ दे दी और इद्दत के ख़त्म होने के क़रीब रुजू कर लिया ताकि न वह बेचारी सुहागन रहे न बेवा। फिर इरशाद होता है कि अगर तलाक़ वाली औ़रत हमल (गर्भ) से हो तो बच्चा होने तक उसका नान-नफ़क़ा (ख़र्चा और खाना-पीना) उसके शौहर के ज़िम्मे है, अक्सर उलेमा

Maktab E Ashraf

का ख़्याल है कि यह हुक्म ख़ास उन औरतों के लिये बयान हो रहा है जिन्हें आख़िरी तलाक़ दे दी गयी हो, जिससे रुजू करने का हक़ उनके शौहर को न रहा हो। इसलिये कि जिनसे रुजू हो सकता है उनकी इद्दत तक का ख़र्च तो शौहर के ज़िम्मे है ही, वे हमल से हों तब भी और बिना हमल वाली हों तो भी। दूसरे बाज़ उलेमा हज़रात फ़रमाते हैं कि यह हुक्म भी उन्हीं औरतों का बयान हो रहा है जिनसे रुजू करने का हक़ हासिल हो, क्योंकि ऊपर भी उन्हीं का बयान था। इसे अलग इसलिये बयान कर दिया कि उमूमन हमल की मुद्दत लम्बी होती है तो कोई यह न समझ बैठे कि इद्दत की मुद्दत का नफ़क़ा (ख़र्चा) तो हमारे ज़िम्मे है फिर उन्हें इसलिये साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि रुजू करने की गुंजाईश वाली तलाक़ के वक़्त अगर औरत हमल से हो तो जब तक बच्चा न हो उसका खिलाना पिलाना शौहर के ज़िम्मे है, फिर इसमें भी उलेमा का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि ख़र्च उसके लिये हमल के वास्ते से है या हमल के लिये ही। इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह से दोनों क़ौल मरवी हैं और इस बिना पर बहुत से ऊपर के मसाईल में भी इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हुआ है।

फिर फ़रमाता है कि जब ये तलाक़ पाने वाली औरतें हमल (गर्भ) से फ़ारिग़ हो जायें तो अगर तुम्हारी औलाद को वे दूध पिलायें तो तुम्हें उनके दूध पिलाने की उजरत (मज़दूरी) देनी चाहिये, हाँ औरत को इख़्तियार है चाहे दूध पिलाये या न पिलाये। लेकिन पहली बार का दूध उसे ज़रूर पिलाना चाहिये चाहे फिर दूध न पिलाये, क्योंकि उमूमन बच्चे की ज़िन्दगी इस दूध के साथ जुड़ी हुई है, तो अगर वह बाद में भी दूध पिलाती रहे तो माँ-बाप के दरमियान जो उजरत तय हो जाये वह अदा करनी चाहिये, तुममें आपस में जो काम हों वो भलाई के साथ बाक़ायदा दस्तूर के मुताबिक़ होने चाहियें, न यह उसके नुक़सान के पीछे रहे न वह इसे तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश करे। जैसे सूरः ब-क़रह में फ़रमायाः

لَاتُضَآرَّ وَالِدَةٌ م بِوَلَدِهَا وَلَامَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ.

यानी बच्चे के बारे में न उसकी माँ को नुक़सान पहुँचना चाहिये न उसके बाप को।

नोटः यानी न यह हो कि बाप औरत को उजरत न दे और सोचे कि वह अपनी ममता से परेशान होकर दूध पिलायेगी ही, न ही औरत यह सोचे कि वह मेरे अ़लावा और किसी से दूध नहीं पिलवा सकता, इसलिये उजरत बहुत ज़्यादा माँगे, ये दोनों बातें बच्चे के लिये नुक़सान का कारण बन सकती हैं। यहाँ यह बात भी दिलचस्प है कि शरीअ़त का हुक्म है कि पहला दूध बच्चे को पिलाना औरत के लिये ज़रूरी है चाहे फिर दूध न पिलाये, क्योंकि उमूमन बच्चे की ज़िन्दगी उस दूध के साथ जुड़ी हुई है। इमाम इब्ने कसीर रह. ने यह बात क़रीब सात सौ साल पहले लिख दी है जिसका आज के डाक्टर और हुकूमत प्रचार कर रहे हैं कि माँ का पहला दूध ज़रूर पिलायें क्योंकि वह बच्चे के लिये बेहद ज़रूरी और लाभदायक है। इस नुकते पर ग़ौर फ़रमायें और उलेमा-ए-इस्लाम की मेहनत व ज़हानत की दाद दीजिये।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

फिर फ़रमाता है कि अगर आपस में इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) बढ़ जाये जैसे लड़के का बाप कम देना चाहता है जो उसकी माँ को मन्ज़ूर नहीं, या माँ ज़्यादा माँगती है जो बाप पर भारी है और समझौता नहीं हो सकता, दोनों किसी बात पर रज़ामन्द नहीं होते तो इख़्तियार है कि किसी और दाया को दे दें। हाँ जो और दाया को दिया जाना मन्ज़ूर किया जाता है अगर उसी पर इस बच्चे की माँ रज़ामन्द हो जाये तो ज़्यादा हक़ उसी का है। फिर फ़रमाता है कि बच्चे का बाप या वली जो हो उसे चाहिये कि बच्चे पर अपनी गुंजाईश के मुताबिक़ ख़र्च करे, तंगी वाला अपनी ताक़त के मुताबिक़ दे। ताक़त से बढ़कर तकलीफ़ किसी को अल्लाह

नहीं देता। तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ि. के बारे में हज़रत उमर रज़ि. ने दरियाफ़्त किया तो मालूम हुआ कि वह मोटा कपड़ा पहनते हैं और हल्की ग़िज़ा खाते हैं, आपने हुक्म दिया कि उन्हें एक हज़ार दीनार भिजवा दो, और जिसके हाथ भिजवाये उनसे कह दिया कि देखना वह इन दीनारों को पाकर क्या करते हैं? जब ये अशरफ़ियाँ उन्हें मिल गयीं तो उन्होंने बारीक कपड़े पहने और निहायत उम्दा ग़िज़ायें खानी शुरू कर दीं। क़ासिद ने वापस आकर हज़रत उमर रज़ि. से बयान किया, आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला उस पर रहम करे, उसने इस आयत पर अ़मल किया कि कुशादगी वाला अपनी कुशादगी (गुंजाईश) के मुताबिक़ ख़र्च करे और तंगी परेशानी वाला अपनी हालत के मुवाफ़िक़। तबरानी की एक ग़रीब हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- एक शख़्स के पास दस दीनार थे उसने उनमें से एक अल्लाह के रास्ते में सदक़ा किया, दूसरे के पास दस औक़िया थे, उसने उसमें से एक औक़िया यानी चालीस दिर्हम ख़र्च किये, तीसरे के पास सौ औक़िया थे जिसमें से उसने अल्लाह के नाम पर दस औक़िया ख़र्च किये तो ये सब अज्र में ख़ुदा के नज़दीक बराबर हैं। इसलिये कि हर एक ने अपने माल का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के रास्ते में दिया है। फिर अल्लाह तआ़ला सच्चा वायदा देता है कि वह तंगी के बाद आसानी कर देगा। जैसे एक और जगह है:

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا.

तहक़ीक़ कि सख़्ती के साथ आसानी है।

मुस्नद अहमद की हदीस इस जगह ज़िक्र करने के क़ाबिल है जिसमें है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- पहले ज़माने में एक मियाँ-बीवी थे जो फ़क्र व फ़ाक़े (यानी ग़ुर्बत) से अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। कुछ भी पास न था। एक मर्तबा यह शख़्स सफ़र से आया और सख़्त भूखा था, भूख के मारे बेताब था। आते ही अपनी बीवी से पूछा कि कुछ खाने को है? उसने कहा आप ख़ुश हो जाईये अल्लाह तआ़ला की दी हुई रोज़ी हमारे यहाँ आ पहुँची है। उसने कहा फिर लाओ जो कुछ हो दे दो, मैं बहुत भूखा हूँ। बीवी ने कहा और ज़रा सी देर सब्र कर लो, अल्लाह की रहमत से हमें बहुत कुछ उम्मीद है। फिर जब कुछ देर और हो गयी उसने बेताब होकर कहा जो कुछ तुम्हारे पास है देती क्यों नहीं? मुझे तो भूख से सख़्त तकलीफ़ हो रही है। बीवी ने कहा इतनी जल्दी क्यों करते हो? अब तन्दूर को देखती हूँ। उठकर जो देखती हैं तो अल्लाह की क़ुदरत से उनके तवक्कुल के बदले वह बकरी के पहलू (रान) के गोश्त से भरा हुआ है, और देखती हैं कि घर की दोनों चक्कियाँ ख़ुद ही चल रही हैं और बराबर आटा निकल रहा है। उन्होंने तन्दूर में से सब गोश्त निकाल लिया और चक्की में से सारा आटा उठा लिया और झाड़ दीं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. क़सम खाकर फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक सल्ल. का फ़रमान है कि अगर वह सिर्फ़ आटा ले लेतीं और चक्की न झाड़तीं तो वो क़ियामत तक चलती रहती।

एक और रिवायत में है कि एक शख़्स अपने घर पहुँचे, देखा कि भूख के मारे घर वालों का बुरा हाल है। ख़ुद जंगल की तरफ़ निकल खड़े हुए। यहाँ उनकी नेकबख़्त बीवी साहिबा ने देखा कि मियाँ भी परेशान हाल हैं, यह मन्ज़र देख नहीं सके और चल दिये तो चक्की को ठीक-ठाक किया, तन्दूर सुलगाया और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने लगीं कि ऐ अल्लाह! हमें रोज़ी दे। दुआ़ करके उठीं तो देखा कि हण्डिया गोश्त से भरी हुई है, तन्दूर में रोटियाँ लग रही हैं और चक्की से बराबर आटा उबला चला आता है। इतने में मियाँ भी तशरीफ़ लाये। पूछा कि मेरे बाद तुम्हें कुछ मिला? बीवी साहिबा ने कहा हमारे रब ने हमें बहुत

कुछ अ़ता फ़रमा दिया। उसने जाकर चक्की के दूसरे पाट को उठा लिया। जब हुज़ूर सल्ल. से यह वाक़िआ़ बयान हुआ तो आपने फ़रमाया- अगर वह उसे न उठाता तो क़ियामत तक यह चक्की चलती ही रहती।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ○ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ○ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ○ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ○

और बहुत-सी बस्तियाँ थी जिन्होंने अपने रब के हुक्म (मानने) से और उसके रसूलों से सरकशी की, सो हमने उन (के आमाल) का सख़्त हिसाब किया और हमने उनको बड़ी भारी सज़ा दी (कि वह सज़ा अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक करना है)। (8) ग़र्ज़ कि उन्होंने अपने आमाल का वबाल चखा और उनका अन्जाम घाटा ही हुआ। (9) (यह तो दुनिया में हुआ और आख़िरत में) अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (और जब नाफ़रमानी का अन्जाम यह है) तो ऐ समझदारो! जो कि ईमान लाए हो, ख़ुदा से डरो, ख़ुदा ने तुम्हारे पास एक नसीहत-नामा भेजा (10) (और वह नसीहत-नामा देकर) एक ऐसा रसूल (भेजा) जो तुम को अल्लाह के साफ़-साफ़ अहकाम पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं, ताकि ऐसे लोगों को जो ईमान लाएँ और अच्छे अ़मल करें (कुफ़्र व जहालत की) अंधेरियों से (ईमान, इल्म और अ़मल के) नूर की तरफ़ ले आएँ। और (आगे ईमान वग़ैरह इबादतों पर वायदा है कि) जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा ख़ुदा उसको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उनको (बहुत) अच्छी रोज़ी दी। (11)

नेक आमाल करो और बुरे अन्जाम से डरते रहो

जो लोग अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ करें, उसके रसूल को न मानें, उसकी शरीअ़त पर न चलें, उन्हें डाँटा जा रहा है कि देखो पहले लोगों में से भी जो इस तरीक़े और चलन पर चले वे तबाह व बरबाद हो गये। जिन्होंने मुँह मोड़ा, सरकशी और तकब्बुर किया, अल्लाह के हुक्म और रसूल की पैरवी से बेपरवाही बरती आख़िरकार उन्हें सख़्त हिसाब देना पड़ा और अपनी बदकारी का मज़ा चखना पड़ा। अन्जाम कार नुक़सान उठाया। उस वक़्त पछताये लेकिन अब पछतावा किस काम का? फिर दुनिया के इन अ़ज़ाबों से ही

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

अगर मामला साफ़ हो जाता तब भी एक बात थी, नहीं! फिर उनके लिये आख़िरत में भी बहुत सख़्त अ़ज़ाब और बेपनाह मार है। ऐ सोच समझ वालो! अब तुम्हें चाहिये कि उन जैसे न बनो और उनके अन्जाम से इबरत (सबक़) हासिल करो। ऐ अ़क़्लमन्द ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तरफ़ क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा दिया है। ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है जैसा कि एक दूसरी जगह भी फ़रमाया है:

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ.

कि हमने ही इस क़ुरआन को नाज़िल फ़रमाया और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

और बाज़ का ख़्याल है कि ज़िक्र से मुराद यहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। चुनाँचे साथ ही फ़रमाया है "रसूलन" तो यह उसी पहले लफ़्ज़ का बदल है। चूँकि क़ुरआन के पहुँचाने वाले रसूलुल्लाह सल्ल. ही हैं, तो इस मुनासबत से आपको लफ़्ज़ "ज़िक्र" से याद किया गया। हज़रत इमाम इब्ने जरीर रह. भी इस मतलब को दुरुस्त बतलाते हैं। फिर रसूलुल्लाह सल्ल. की हालत बयान फ़रमाई कि वह ख़ुदा की वाज़ेह और रोशन आयतें पढ़कर सुनाते हैं ताकि लोग अन्धेरों से निकल आयें और रोशनियों में पहुँच जायें। जैसे एक और जगह है:

كِتَابٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ....... الخ.

इस किताब को हमने तुझे दिया है ताकि तू लोगों को अंधेरियों से रोशनी में लाये। एक दूसरी जगह इरशाद है:

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا.......... الخ.

अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है, वह उन्हें अंधेरियों से उजाले की तरफ़ लाता है। यानी कुफ़्र व जहालत से ईमान व इल्म की तरफ़। चुनाँचे एक दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपनी नाज़िल की हुई 'वही' को नूर फ़रमाया है। क्योंकि इससे हिदायत और सही रास्ते की रहनुमाई हासिल हुई है और इसी का नाम रूह भी रखा है, क्योंकि इससे दिलों को ज़िन्दगी मिलती है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا وَاِنَّكَ لَتَهْدِىْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

यानी हमने इसी तरह तेरी तरफ़ अपने हुक्म से रूह की वही की, तू नहीं जानता था कि किताब क्या है और ईमान क्या है? लेकिन हमने उसे नूर कर दिया जिसके साथ हम अपने जिस बन्दे को चाहें हिदायत करते हैं। यक़ीनन तू सही और सच्ची राह की रहबरी करता है।

फिर ईमान वालों और नेक आमाल वालों का बदला बहती नहरों वाली हमेशगी की जन्नत बयान हुआ है, जिसकी तफ़सीर कई बार गुज़र चुकी है।

(आगे अल्लाह की फ़रमाँबरदारी का वाजिब होना बयान किया जाता है, यानी) अल्लाह ऐसा है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं की तरह ज़मीन भी, (और) उन सब में (अल्लाह	اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ

لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ۝	तआ़ला के) अहकाम नाज़िल होते रहते हैं। (और यह इसलिए बतलाया गया) कि तुमको मालूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है, और अल्लाह हर चीज़ को (अपने) इल्मी घेरे में लिए हुए है। (12)

Maktaba Ashraf

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरतों पर निगाह डालो

अल्लाह तआ़ला अपनी कामिल क़ुदरत और अपनी अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि मख़्लूक़ उसकी बड़ाई व इ़ज़्ज़त का ख़्याल करके उसके फ़रमान को क़द्र की निगाह से देखे और उस पर आ़मिल बनकर उसे ख़ुश कर ले। तो फ़रमाया कि सातों आसमानों का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) अल्लाह तआ़ला है। जैसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया थाः

اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا.

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह पाक ने सातों आसमानों को किस तरह ऊपर तले पैदा किया है?

एक और जगह इरशाद हैः

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِیْهِنَّ.

यानी सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जो कुछ है सब उस ख़ुदा की तस्बीह पढ़ते रहते हैं।

फिर फ़रमाता है कि इसी की तरह ज़मीनें हैं। जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की सही हदीस में है कि जो शख़्स ज़ुल्म करके (यानी नाहक़ तौर पर) किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन ले लेगा उसे सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जायेगा। सही बुख़ारी में है कि उसे सातों ज़मीनों तक धंसाया जायेगा। मैंने इसकी तमाम सनदें और कुल अलफ़ाज़ कायनात की शुरूआ़त और ज़मीन की पैदाईश के बयान में ज़िक्र कर दिये हैं। जिन बाज़ लोगों ने कहा है कि इससे मुराद हफ़्त-अक़लीम (सात विलायतें, पूरी दुनिया) है उन्होंने बेफ़ायदा दिमाग़ मारा है और बिना वजह के विवाद में फंस गये हैं, और बिना दलील के क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ किया है। सूरः हदीद की आयत नम्बर 3 की तफ़सीर में सातों ज़मीनों, उनके दरमियान की दूरी और उनकी मोटाई का जो पाँच सौ साल की है, पूरा बयान हो चुका है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. वग़ैरह भी यही फ़रमाते हैं।

एक और हदीस में भी है कि सातों आसमान और जो कुछ उनमें और उनके बीच में है, और सातों ज़मीनें और जो कुछ उनमें और उनके बीच में है, कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे किसी लम्बे चौड़े बहुत बड़े चटियल मैदान में एक छल्ला पड़ा हो। इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि अगर मैं इसकी तफ़सीर तुम्हारे सामने बयान करूँ तो तुम उसे न मानोगे और न मानना झूठा जानना है। एक और रिवायत में है कि किसी शख़्स ने इस आयत का मतलब पूछा था, इस पर आपने फ़रमाया था कि मैं कैसे यक़ीन कर लूँ कि जो मैं तुझे बतलाऊँगा तू उसका इनकार न करेगा? (क्योंकि बहुत सी बार इनसान हर बात को अ़क़्ल पर जाँचता है, और अगर वह समझ में न आये तो उसका इनकार कर बैठता है, जबकि मज़हबी मामलात में अ़क़्ल मेयार नहीं)।

Maktab E Ashraf

एक और रिवायत में नकल है कि हर ज़मीन में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के जैसे और इस ज़मीन की मख़्लूक के जैसी है, और इब्ने मुसन्ना वाली इस रिवायत में आया है कि हर आसमान में इब्राहीम के जैसे हैं। बैहकी की किताब "अल-अस्माउ वस्सिफ़ात" में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का कौल है कि सातों ज़मीनों में से हर एक में नबी है, तुम्हारे नबी की तरह। और आदम हैं आदम अ़लैहिस्सलाम की तरह, और नूह हैं नूह अ़लैहिस्सलाम की तरह, और इब्राहीम हैं इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरह, और ईसा हैं ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरह। फिर इमाम बैहकी ने एक और रिवायत भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की ज़िक्र की है और फ़रमाया है कि इसकी सनद सही है, लेकिन यह बिल्कुल शाज़ (ग़ैर-मशहूर) है। अबुज़्ज़ुहा जो इस हदीस के एक रावी हैं; मेरे इल्म में तो उनकी मुताबिअ़त कोई नहीं करता। वल्लाहु आलम

एक मुर्सल और बहुत ही मुन्कर रिवायत इब्ने अबिद्दुन्या ने ज़िक्र की है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. एक मर्तबा सहाबा के मजमे में तशरीफ़ लाये, देखा कि सब किसी ग़ौर व फ़िक्र (सोच-विचार) में चुप-चाप हैं। पूछा क्या बात है? जवाब मिला अल्लाह की मख़्लूक के बारे में सोच रहे हैं। फ़रमाया ठीक है मख़्लूकात पर ग़ौर करो लेकिन कहीं ख़ुदा के बारे में ग़ौर व खोज में न पड़ जाना। सुनो इस पश्चिम की तरफ़ एक सफ़ेद ज़मीन है, उसकी सफ़ेदी उसका नूर है, या फ़रमाया उसका नूर उसकी सफ़ेदी है। सूरज का रास्ता चालीस दिन का है, वहाँ अल्लाह की एक मख़्लूक है जिसने एक आँख झपकने के बराबर भी कभी उसकी नाफ़रमानी नहीं की। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा फिर शैतान उनसे कहाँ है? फ़रमाया उन्हें यह भी नहीं मालूम कि शैतान पैदा भी किया गया है या नहीं। पूछा क्या वे भी इनसान हैं? फ़रमाया उन्हें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश का भी इल्म नहीं।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरः तलाक की तफ़सीर पूरी हुई फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

सूरः तहरीम

सूरः तहरीम मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ٥ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ	ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिए हलाल किया है आप (कसम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम फ़रमाते हैं? (फिर वह भी) अपनी बीवियों की ख़ुशी हासिल करने के लिए। और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला, मेहरबान है। (1) अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना (यानी कसम तोड़ने के बाद उसके कफ़्फ़ारे का तरीका)

الْحَكِيْمُ ○ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ
اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ
اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ
هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ○ اِنْ
تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ
وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ
وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ○ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ
طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ
مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۗىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ
سٰۗىِٕحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ○

मुक़र्रर फ़रमा दिया है, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारा कारसाज़ है। और वह बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (2) और जबकि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने अपनी किसी बीवी से एक बात चुपके से फ़रमाई, फिर जब उस बीवी ने वह बात (दूसरी बीवी को) बतला दी और पैग़म्बर को अल्लाह तआ़ला ने (वही के ज़रिये से) उसकी ख़बर कर दी, तो पैग़म्बर ने (उस ज़ाहिर कर देने वाली बीवी को) थोड़ी-सी बात तो जतला दी और थोड़ी-सी बात को टाल गए। सो जब पैग़म्बर ने उस बीवी को वह बात जतलाई, वह कहने लगी कि आपको इसकी किसने ख़बर कर दी? आपने फ़रमाया कि मुझ को बड़े जानने वाले, ख़बर रखने वाले (यानी ख़ुदा ने) ख़बर कर दी। (3) ऐ (पैग़म्बर की) दोनों बीवियो! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल माईल हो रहे हैं। और अगर (इसी तरह) पैग़म्बर के मुक़ाबले में तुम दोनों कार्रवाईयाँ करती रहीं तो याद रखो पैग़म्बर का साथी अल्लाह है और जिब्राईल है और नेक मुसलमान हैं, और उनके अ़लावा फ़रिश्ते (आपके) मददगार हैं। (4) अगर पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ दे दें तो उनका परवर्दिगार बहुत जल्द तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ दे देगा, जो इस्लाम वाली, ईमान वाली, फ़रमाँबरदारी करने वाली, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ा रखने वाली होंगी, कुछ बेवा और कुछ कुंवारियाँ। (5)

आपको इसका इख़्तियार नहीं

इस सूरत की शुरू की आयतों के शाने नुज़ूल (उतरने के सबब और मौक़े) में मुफ़स्सिरीन के कई अक़्वाल हैं:

1. बाज़ तो कहते हैं कि यह हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में नाज़िल हुई हैं। उन्हें हुज़ूर सल्ल. ने अपने ऊपर हराम कर लिया था जिस पर ये आयतें नाज़िल हुईं। नसाई में यह रिवायत मौजूद है

कि हज़रत आयशा और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के कहने सुनने से ऐसा हुआ था कि एक बाँदी के बारे में आपने यह फ़रमाया था, इस पर ये आयतें नाज़िल हुईं। इब्ने जरीर में है कि उम्मे इब्राहीम के साथ आपने किसी बीवी साहिबा के घर में बातचीत की जिस पर उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मेरे घर में और मेरे बिस्तर पर? चुनाँचे आपने उसे अपने ऊपर हराम कर लिया तो उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हलाल आप पर हराम कैसे हो जायेगा? आपने क़सम खाई कि अब उनसे इस क़िस्म की बातचीत न करूँगा। इस पर यह आयत उतरी। हज़रत ज़ैद फ़रमाते हैं- इससे मालूम हुआ कि किसी का यह कह देना कि तू मुझ पर हराम है बेकार और फ़ुज़ूल है। हज़रत ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं- आपने यह फ़रमाया था कि तू मुझ पर हराम है, अल्लाह की क़सम मैं तुझ से सोहबत न करूँगा। हज़रत मसरूक़ रह. फ़रमाते हैं कि बस हराम करने के बारे में तो आप पर इताब (अल्लाह की तरफ़ से नाराज़गी का इज़हार) किया गया और क़सम के कफ़्फ़ारे का हुक्म हुआ।

इब्ने जरीर में है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने हज़रत उमर रज़ि. से मालूम किया कि ये दोनों औरतें कौन थीं? फ़रमाया आयशा और हफ़्सा। और क़िस्से की शुरूआत उम्मे इब्राहीम हज़रत मारिया के बारे में हुई। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में उनकी बारी वाले दिन हुज़ूर सल्ल. इनसे मिल लिये थे, जिस पर हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को रंज हुआ कि मेरी बारी के दिन मेरे घर और मेरे बिस्तर पर? हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें रज़ामन्द करने और मनाने के लिये कह दिया कि मैं इसे अपने ऊपर हराम करता हूँ। अब तुम इस वाक़िए का ज़िक्र किसी से न करना। लेकिन हज़रत हफ़्सा रज़ि. ने हज़रत आयशा से वाक़िआ कह दिया, अल्लाह ने इसकी इत्तिला अपने नबी सल्ल. को दे दी और ये तमाम आयतें नाज़िल फ़रमायीं। आपने कफ़्फ़ारा देकर अपनी क़सम तोड़ दी और उस बाँदी (हज़रत मारिया) से मिले-जुले। इसी वाक़िए को दलील बनाकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. का फ़तवा है कि जो कहे कि फ़ुलाँ चीज़ मुझ पर हराम है, उसे क़सम का कफ़्फ़ारा देना चाहिये। एक शख़्स ने आप से यही मसला पूछा कि मैं अपनी औरत को अपने ऊपर हराम कर चुका हूँ तो आपने फ़रमाया वह तुझ पर हराम नहीं।

सब से सख़्त कफ़्फ़ारा तो अल्लाह की राह में गुलाम आज़ाद करना है। इमाम अहमद और बहुत से फ़ुक़हा का फ़तवा है कि जो शख़्स अपनी बीवी या बाँदी या किसी खाने पीने पहनने ओढ़ने की चीज़ को अपने ऊपर हराम करे तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब हो जाता है। इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ बीवी और बाँदी के हराम करने पर तो कफ़्फ़ारा है किसी और चीज़ पर नहीं, और अगर हराम कहने से नीयत तलाक़ की कर रखी है तो बेशक तलाक़ हो जायेगी। इसी तरह बाँदी के बारे में अगर आज़ाद करने की नीयत हराम का लफ़्ज़ कहने से की है तो वह आज़ाद हो जायेगी।

2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मन्क़ूल है कि यह आयत उस औरत के बारे में नाज़िल हुई है जिसने अपना नफ़्स हुज़ूर सल्ल. को हिबा किया था। लेकिन यह ग़रीब है, बिल्कुल सही बात यह है कि इन आयतों का उतरना आपके शहद हराम कर लेने पर था।

3. सही बुख़ारी में इस आयत के मौक़े पर है कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के घर रसूलुल्लाह सल्ल. शहद पीते थे और उसकी ख़ातिर ज़रा सी देर वहाँ ठहरे भी थे, इस पर हज़रत आयशा और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने आपस में मश्विरा किया कि हम में से जिसके यहाँ हुज़ूर आयें वह कहे कि या रसूलल्लाह! आज तो आपके मुँह से गोंद की सी बू (गंध) आती है, शायद आपने खाया होगा। चुनाँचे हमने यही किया, आपने फ़रमाया नहीं! मैंने तो ज़ैनब के घर शहद पिया है। अब क़सम खाता हूँ कि

न पियूँगा, यह किसी से कहना मत।

इमाम बुख़ारी रह. इस हदीस को "किताबुल-ऐमान वन्नुज़ूर" में भी कुछ ज़्यादती के साथ लाये हैं, जिस में है कि दोनों औरतों से यहाँ मुराद हज़रत आयशा और हज़रत हफ़्सा हैं। और चुपके से बात कहना यही था कि मैंने शहद पिया है। किताबुत्तलाक़ में भी इमाम साहिब रह. इस हदीस को लाये हैं। फिर फ़रमाया है कि "मग़ाफ़ीर" गोंद के जैसी एक चीज़ है जो खारी घास में पैदा होती है, उसमें किसी क़द्र मिठास होती है। सही बुख़ारी शरीफ़ की किताबुत्तलाक़ में यह हदीस हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से इन अलफ़ाज़ में मरवी है कि हुज़ूर सल्ल. को मिठास और शहद बहुत पसन्द था। अ़सर की नमाज़ के बाद अपनी बीवियों के घर आते और किसी से नज़दीकी करते। एक मर्तबा आप हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास तशरीफ़ ले गये और जितना वहाँ रुकते थे उससे ज़्यादा रुके। मुझे ग़ैरत सवार हुई, तहक़ीक़ की तो मालूम हुआ कि उनकी क़ौम की एक औरत ने एक कुप्पी शहद की उन्हें बतौर हदिये के भेजी है, उन्होंने हुज़ूर सल्ल. को शहद का शर्बत पिलाया और इतनी देर रोके रखा। मैंने कहा ख़ैर! मैं इसे किसी बहाने से ख़त्म कर दूँगी। चुनाँचे मैंने हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ़ से कहा कि तुम्हारे पास जब हुज़ूर आयें और क़रीब हों तो तुम कहना कि आज क्या आपने मग़ाफ़ीर खाया है? आप फ़रमायेंगे- नहीं। तुम कहना फिर यह बदबू कैसी आती है? आप फ़रमायेंगे कि मुझे हफ़्सा ने शहद पिलाया है, तो तुम कहना शायद शहद की मक्खी ने उरफ़ुत नाम के काँटोंदार दरख़्त को चूसा होगा। मेरे पास आयेंगे तो मैं भी यही कहूँगी। फिर ऐ सफ़िया! जब तुम्हारे पास आप आयें तो तुम भी यही कहना।

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्ल. मेरे घर आये, अभी तो दरवाज़े ही पर थे, मैंने इरादा किया कि तुमने जो कुछ मुझसे कहा है मैं आप से कह दूँ क्योंकि मैं तुमसे बहुत डरती थी, लेकिन ख़ैर उस वक़्त तो ख़ामोश रही जब आप मेरे पास आये मैंने तुम्हारा तमाम कहना पूरा कर दिया। फिर हज़रत मेरे पास आये, मैंने भी यही कहा, फिर आप हज़रत सफ़िया के पास गये उन्होंने भी यही कहा। फिर जब हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गये तो उन्होंने ने शहद का शर्बत पिलाना चाहा, आपने फ़रमाया मुझे इसकी हाजत नहीं। हज़रत सौदा रज़ि. फ़रमाने लगीं अफ़सोस हमने उसे हराम करा दिया। मैंने कहा ख़ामोश रहो।

सही मुस्लिम की इस हदीस में इतनी बढ़ोतरी और है कि नबी सल्ल. को बदबू से सख़्त नफ़रत थी इसलिये उन बीवियों ने कहा था कि आपने मग़ाफ़ीर खाया है, उसमें थोड़ी बदबू होती है। जब आपने जवाब दिया कि नहीं मैंने तो शहद पिया है तो उन्होंने कह दिया कि फिर उस शहद की मक्खी ने उरफ़ुत दरख़्त को चूसा होगा, जिसके गोंद का नाम मग़ाफ़ीर है और उसके असर से उस शहद में उसकी बू रह गयी होगी।

इस रिवायत में लफ़्ज़ "जरसत्" है जिसके मायने इमाम ज़ोहरी ने किये हैं "खाया" और शहद की मक्खियों को भी "जवारिस" कहते हैं, और "ज-र-स" धीमी हल्की आवाज़ को कहते हैं। अ़रब के लोग बोलते हैं "समिअ्तु ज-रसत्तैर" जबकि परिन्दा दाना चुग रहा हो और उसकी चोंच की आवाज़ सुनाई देती है। एक हदीस में है कि फिर वे जन्नती परिन्दों की हल्की और मीठी सुहानी आवाज़ें सुनेंगे। यहाँ भी अ़रबी में लफ़्ज़ "जरस" है। इमाम इस्मई कहते हैं कि मैं हज़रत शोबा रह. की मज्लिस में था, वहाँ उन्होंने इस लफ़्ज़ जरस को बड़े शीन के साथ (यानी जरश) पढ़ा, मैंने कहा छोटे सीन से है। हज़रत शोबा रह. ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया यह हमसे ज़्यादा जानते हैं, यही ठीक है, तुम सही कर लो। ग़र्ज़ कि शहद पीने के वाक़िए में शहद पिलाने वालियों में दो नाम हैं, एक हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का, दूसरा हज़रत ज़ैनब

रज़ियल्लाहु अ़न्हा का। बल्कि इस चीज़ पर इत्तिफ़ाक़ करने वालियों में हज़रत आ़यशा के साथ हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का नाम है। पस मुम्किन है कि ये दो वाक़िए हों। यहाँ तक तो ठीक है लेकिन इन दोनों के बारे में इस आयत का नाज़िल होना ज़रा ग़ौर-तलब है। वल्लाहु आलम

आपस में इस क़िस्म का मश्विरा करने वाली हज़रत आ़यशा और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा थीं। यह उस हदीस से भी मालूम होता है जो मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है। फ़रमाते हैं- मुझे मुद्दतों से आरज़ू थी कि हज़रत उमर रज़ि. से हुज़ूर की उन दोनों बीवी साहिबान का नाम मालूम करूँ जिनका ज़िक्र इस आयत में है, पस हज के सफ़र में हज़रत उमर चले तो मैं भी साथ हो लिया। एक मौक़े पर रास्ते में हज़रत उमर रज़ि. रास्ता छोड़कर जंगल की तरफ़ चले, मैं डोलची लिये हुए पीछे-पीछे गया। आप ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर आये मैंने पानी डलवाया और वुज़ू कराया। अब मौक़ा पाकर सवाल किया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! जिनके बारे में यह आयत है वे दोनों कौन हैं? आपने फ़रमाया इब्ने अ़ब्बास! अफ़सोस। हज़रत ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि. को उनका यह मालूम करना बुरा मालूम हुआ, लेकिन छुपाना जायज़ न था इसलिये जवाब दिया कि इससे मुराद आ़यशा और हफ़्सा हैं। फिर हज़रत उमर रज़ि. ने वाक़िआ़ बयान करना शुरू किया कि हम क़ुरैशी तो अपनी औ़रतों को अपने हुक्म के ताबे रखते थे लेकिन मदीना वालों पर उमूमन उनकी औ़रतें हावी थीं। जब हम हिजरत करके मदीना आये तो हमारी औ़रतों ने भी उनकी देखा-देखी हम पर ग़लबा हासिल करना चाहा, मैं मदीना शरीफ़ के ऊँचाई वाले हिस्से में हज़रत उमैया बिन ज़ैद के घर में ठहरा हुआ था। एक मर्तबा मैं अपनी बीवी पर कुछ नाराज़ हुआ और कुछ कहने सुनने लगा तो उलट कर उसने मुझे जवाब देने शुरू किये। मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ कि यह क्या हरकत है? यह नई बात कैसी? उसने मेरा ताज्जुब देखकर कहा कि आप किस ख़्याल में हैं? अल्लाह की क़सम हुज़ूरे पाक सल्ल. की बीवियाँ भी आपको जवाब देती हैं। और बाज़ मर्तबा तो दिन-दिन भर बोल-चाल छोड़ देती हैं।

अब मैं तो एक दूसरी उलझन में पड़ गया, सीधा अपनी बेटी हफ़्सा (जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के निकाह में थीं) के घर गया और मालूम किया कि क्या यह सच है कि तुम हुज़ूर सल्ल. को जवाब देती हो? और कभी कभी सारा-सारा दिन रूठी रहती हो? जवाब मिला कि सच है। मैंने कहा कि वह बरबाद हुई और नुक़सान में पड़ी जिसने ऐसा किया। क्या तुम इससे ग़ाफ़िल हो गयी कि रसूलुल्लाह सल्ल. के गुस्से की वजह से ऐसी औ़रत पर ख़ुदा नाराज़ हो जाये और वह कहीं की न रहे? ख़बरदार आईन्दा से हुज़ूर को कोई जवाब न देना, आप से कुछ तलब न करना, जो माँगना हो मुझसे माँग लिया करो। हज़रत आ़यशा को देखकर तुम उनकी हिर्स न करना, वह तुमसे अच्छी और तुमसे बहुत ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्ल. की महबूब (प्यारी) हैं।

अब और सुनो! मेरा पड़ोसी एक अन्सारी था उसने और मैंने बारियाँ (नम्बर) मुक़र्रर कर ली थीं, एक दिन मैं हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में गुज़ारता और एक दिन वह। मैं अपनी बारी वाले दिन की तमाम हदीसें व आयतें वग़ैरह उन्हें आकर सुना देता और वह मुझे। यह बात हम में उस वक़्त मशहूर हो रही थी कि ग़स्सान का बादशाह अपने फ़ौजी घोड़ों को नाल लगवा रहा है और उसका इरादा हम पर चढ़ाई करने का है। एक मर्तबा मेरे साथी अपनी बारी वाले दिन गये हुए थे, इशा के वक़्त आये और मेरा दरवाज़ा खटखटा कर मुझे आवाज़ें देने लगे। मैं घबराकर बाहर निकला कि ख़ैरियत तो है? उसने कहा आज तो बड़ा बुरा काम हो गया। मैंने कहा क्या ग़स्सानी बादशाह आ पहुँचा? उसने कहा उससे भी बढ़कर। मैंने पूछा वह

क्या? कहा- रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी। मैंने कहा अफ़सोस हफ़्सा बरबाद हो गयी और उसने नुक़सान उठाया। मुझे पहले ही से इस बात का खटका था। सुबह की नमाज़ पढ़ते ही कपड़े पहनकर मैं चला। सीधा हफ़्सा के पास गया, देखा कि वह रो रहीं हैं। मैंने कहा क्या रसूलुल्लाह सल्ल. ने तुम्हें तलाक़ दे दी? जवाब दिया यह तो कुछ मालूम नहीं, आप हम से अलग होकर अपने बालाख़ाने (ऊपर वाले कमरे) में तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं वहाँ गया, देखा कि एक हब्शी गुलाम पहरे पर है। मैंने कहा जाओ मेरे लिये इजाज़त तलब करो। वह गया, फिर आकर कहा हुज़ूर ने कुछ जवाब नहीं दिया। मैं वहाँ से वापस आया, मस्जिद में गया, फिर उठ खड़ा हुआ और वहाँ जाकर गुलाम से कहा कि मेरे लिये इजाज़त तलब करो। उसने फिर आकर यही कहा कि कुछ जवाब नहीं मिला। मैं दोबारा मस्जिद चला गया, फिर वहाँ से घबराकर निकला, यहाँ आया, फिर गुलाम से कहा। गुलाम गया, आया और वही जवाब दिया। मैं वापस मुड़ा ही था कि गुलाम ने मुझे आवाज़ दी कि आईये आपको इजाज़त मिल गयी।

मैं गया, देखा कि हुज़ूर सल्ल. एक बोरिये पर टेक लगाये बैठे हुए हैं जिसके निशान आपके जिस्म मुबारक पर ज़ाहिर हैं। मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या आपने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है? आपने सर उठाकर मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया- नहीं। मैंने कहा अल्लाहु अकबर! (यह ख़ुशी का इज़हार था) मैंने कहा या रसूलल्लाह! बात यह है कि हम क़ौमे क़ुरैश तो अपने बीवियों को अपने दबाव में रखा करते थे लेकिन मदीना वालों पर उनकी बीवियाँ ग़ालिब हैं। यहाँ आकर हमारी औरतों ने भी उनकी देखा-देखी यही हरकत शुरू कर दी। फिर मैंने अपनी बीवी का वाक़िआ़ बयान किया और मेरी यह ख़बर पाकर कि हुज़ूर की बीवियाँ भी ऐसा करती हैं, यह कहना भी बयान किया कि क्या उन्हें डर नहीं कि अल्लाह के रसूल के गुस्से की वजह से ख़ुदा भी उनसे नाराज़ हो जाये, और वे हलाक हो जायें। इस पर हुज़ूर सल्ल. मुस्कुराये। मैंने फिर अपना हफ़्सा के पास जाना और उन्हें हज़रत आ़यशा की हिर्स (बराबरी) करने से रोकना बयान किया, इस पर दोबारा मुस्कुराये। मैंने कहा अगर इजाज़त हो तो ज़रा सी देर और रुक जाऊँ? आपने इजाज़त दी, मैं बैठ गया। अब जो सर उठाकर हर तरफ़ नज़रें दौड़ाई तो आपकी बैठक (दरबारे ख़ास) में सिवाय तीन ख़ुश्क खालों के और कोई चीज़ न देखी। दुखी-दिल होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! दुआ़ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला आपकी उम्मत पर कुशादगी करे। देखिये तो फ़ारस और रोम के लोग जो अल्लाह की इबादत ही नहीं करते उन्हें किस क़द्र दुनिया की नेमतों में वुस्अ़त दी गयी है? यह सुनते ही आप संभल कर बैठे और फ़रमाने लगे- ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तू शक में है? उस क़ौम की अच्छाईयाँ (यानी अच्छाईयों के बदले) उन्हें फ़ौरन दुनिया ही में दे दी गयीं। मैंने कहा हुज़ूर मेरे लिये अल्लाह से बख़्शिश की तलब कीजिए। बात यह थी कि आपने सख़्त नाराज़गी की वजह से क़सम खाई थी कि महीने भर तक अपनी बीवियों के पास न जाऊँगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने आपको तंबीह की।

यह हदीस बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि साल भर इसी उम्मीद में गुज़र गया कि मौक़ा मिले तो हज़रत उमर से उन दोनों के नाम मालूम करूँ लेकिन हज़रत उमर के रौब और दबदबे की वजह से हिम्मत नहीं पड़ती थी, यहाँ तक कि हज की वापसी में पूछा। फिर पूरी हदीस बयान की जो ऊपर गुज़र चुकी।

सही मुस्लिम में है कि तलाक़ की शोहरत का वाक़िआ़ पर्दे की आयतों के नाज़िल होने से पहले का है। उसमें यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि. जिस तरह हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास जाकर उन्हें समझा आये थे इसी तरह हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास भी हो आये थे, और यह भी है कि उस

गुलाम का नाम जो डेवढ़ी पर पहरा दे रहे थे हज़रत रबाह था। यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से कहा कि आप औरतों के बारे में इस मशक़्क़त में क्यों पड़ते हैं? अगर आप उन्हें तलाक़ भी दे दें तो आपके साथ अल्लाह तआ़ला है और उसके फ़रिश्ते हैं और जिब्राईल व मीकाईल और मैं व अबू बक्र और तमाम मोमिन हैं। हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्हम्दु लिल्लाह मैं इस क़िस्म की जो बात कहता मुझे उम्मीद लगी रहती कि अल्लाह तआ़ला मेरी बात की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमायेगा। पस इस मौक़े पर भी इख़्तियार वाली आयतः

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ......الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 5) औरः

وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ.......... الخ.

(यानी इसी सूरत की आयत नम्बर 4) आप पर नाज़िल हुईं। मुझे जब आप से मालूम हुआ कि आपने अपनी पाक बीवियों को तलाक़ नहीं दी तो मैंने मस्जिद में आकर दरवाज़े पर खड़े होकर ऊँची आवाज़ से सब को इत्तिला दे दी कि हुज़ूर ने अपनी बीवियों को तलाक़ नहीं दी। इसी के बारे में यह आयत उतरीः

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ...............الخ

यानी जहाँ उन्हें कोई अमन की या ख़ौफ़ की ख़बर पहुँची कि यह उसे शोहरत देने लगते हैं। अगर यह उस ख़बर को रसूल या अ़क़्लमन्द व और इल्म रखने वाले मुसलमानों तक पहुँचा देते तो बेशक उनमें से जो लोग बात की तह तक जाने वाले हैं वे उसे समझ लेते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु यहाँ तक इस आयत को पढ़कर फ़रमाते हैं- इस बात की तह तक जाने वाला और इससे दलील हासिल करने वालों में मैं ही हूँ। और भी बहुत से बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन से मन्क़ूल है कि "सालिहुल-मुअ्मिनीन" (नेक ईमान वालों) से मुराद हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा हैं। बाज़ों ने हज़रत उस्मान का नाम भी लिया है, बाज़ ने हज़रत अ़ली रज़ि. का। एक ज़ईफ़ हदीस में मरफ़ूअ़न सिर्फ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का नाम है लेकिन उसकी सनद ज़ईफ़ और बिल्कुल मुन्कर है।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि आपकी बीवियाँ ग़ैरत में आ गयीं जिस पर मैंने उनसे कहा कि अगर हुज़ूर सल्ल. तुम्हें तलाक़ दे देंगे तो अल्लाह तआ़ला तुमसे बेहतर बीवियाँ आपको देगा। पस मेरे लफ़्ज़ों ही में क़ुरआन की यह आयत उतरी। पहले यह बयान हो चुका है कि हज़रत उमर रज़ि. ने बहुत सी बातों में क़ुरआन की मुवाफ़क़त की, जैसे पर्दे के बारे में, बदरी क़ैदियों के बारे में, मक़ामे इब्राहीम को क़िब्ला ठहराने के बारे में। इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि मुझे जब हुज़ूर सल्ल. की बीवियों के मन-मुटाव की ख़बर पहुँची तो उनकी ख़िदमत में गया और उन्हें भी कहना शुरू किया, यहाँ तक कि आख़िरी उम्मुल-मोमिनीन के पास पहुँचा तो मुझे जवाब मिला कि क्या हमें रसूलुल्लाह ख़ुद नसीहत करने के लिये कम हैं जो तुम आ गये? इस पर मैं तो ख़ामोश हो गया लेकिन क़ुरआन में यह आयत नाज़िल हुईः

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ......الخ.

(यानी यही आयत नम्बर 5)

सही बुख़ारी में है कि जवाब देने वाली उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जो बात हुज़ूर ने चुपके से अपनी बीवी साहिबा से कही थी उसका वाक़िआ़ यह है कि हज़रत हफ़्सा के घर में आप थे, वह जब तशरीफ़ लायीं और हज़रत मारिया से आपको मशग़ूल पाया तो आपने उन्हें फ़रमाया तुम (हज़रत) आ़यशा को ख़बर न करना, मैं तुम्हें एक ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ। मेरे इन्तिक़ाल के बाद मेरी ख़िलाफ़त पर अबू बक्र के बाद तुम्हारे वालिद आयेंगे। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ख़बर दी। पस हज़रत आ़यशा रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा कि इसकी ख़बर आपको किसने पहुँचाई? आपने फ़रमाया मुझे अ़लीम व ख़बीर ख़ुदा ने ख़बर पहुँचाई। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा ने कहा मैं आपकी तरफ़ न देखूँगी जब तक कि आप मारिया को अपने ऊपर हराम न कर लें। आपने ऐसा ही कर लिया। इस पर यह आयत उतरीः

يَآاَيُّهَاالنَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ..........الخ.

यानी ऐ नबी जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने आपके लिये हलाल किया है, आप क़सम खाकर उसको अपने ऊपर क्यों हराम करते हैं। (तबरानी) लेकिन इस रिवायत की सनद में कलाम है। मक़सद यह है कि इन तमाम रिवायात से इन पाक आयतों की तफ़सीर तो ज़ाहिर ही है।

"साइहातुन" की तफ़सीर एक तो यह है कि रोज़े रखने वालियाँ। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही तफ़सीर इस लफ़्ज़ की आयी है। जो हदीस सूरः बराअत के इस लफ़्ज़ की तफ़सीर में गुज़र चुकी है कि इस उम्मत की सियाहत रोज़े रखना है। दूसरी तफ़सीर यह है कि मुराद इससे हिजरत करने वालियाँ हैं, लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा वरीयता प्राप्त है। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया कि उनमें से बाज़ बेवा होंगी और बाज़ कुंवारियाँ। इसलिये कि जी ख़ुश रहे, क़िस्मों की तब्दीली नफ़्स को भी अच्छी मालूम होती है। मोजम तबरानी में इब्ने यज़ीद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. से इस आयत में जो वायदा फ़रमाया है उससे मुराद बेवा है तो हज़रत आसिया हैं जो फ़िरऔ़न की बीवी थीं, और कुंवारी से मुराद हज़रत मरियम हैं जो हज़रत इमरान की बेटी थीं। इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये, उस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आपके पास आयीं तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला हज़रत ख़दीजा को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि उन्हें ख़ुशख़बरी हो जन्नत के एक चाँदी के घर की, जहाँ न गर्मी है न तकलीफ़ है, न शोर गुल। जो छिदे हुए मोती का बना हुआ है, जिसके दायें बायें मरियम बिन्ते इमरान और आसिया बिन्ते मुज़ाहिम के मकानात हैं। एक और रिवायत में है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के इन्तिक़ाल के वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ ख़दीजा! अपनी सौतनों से मेरा सलाम कहना। हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! क्या मुझसे पहले भी आपने किसी से निकाह किया था? आपने फ़रमाया- नहीं! मगर अल्लाह तआ़ला ने मरियम बिन्ते इमरान और आसिया फ़िरऔ़न की बीवी और कुलसुम मूसा की बहन, इन तीनों को मेरे निकाह में दे रखी हैं। यह हदीस भी ज़ईफ़ है। हज़रत अबू उमामा से अबू यअ़ला में मरवी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क्या तुम जानते हो अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में मेरा निकाह मरियम बिन्ते इमरान, कुलसुम मूसा की बहन और आसिया फ़िरऔ़न की बीवी से कर दिया है। मैंने कहा या रसूलल्लाह! आपको मुबारकबाद हो। यह हदीस भी ज़ईफ़ है और साथ ही मुर्सल भी है।

Maktab E Ashraf

يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا قُوٓا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَـٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ع يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا تُوبُوٓا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۖ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَـٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللَّهُ النَّبِىَّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَـٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَآ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घर वालों को (दोज़ख़ की) उस आग से बचाओ जिसका ईंधन (और सोख़्ता) आदमी और पत्थर हैं। जिसपर सख़्त-मिज़ाज (और) मज़बूत फ़रिश्ते (मुतैयन) हैं, जो ख़ुदा की किसी बात में (ज़रा भी) नाफ़रमानी नहीं करते जो उनको हुक्म देता है। और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उसको (फ़ौरन) पूरा करते हैं। (6) (और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल करते वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) ऐ काफ़िरो! तुम आज उज़्र (और माज़िरत) मत करो (कि बेफ़ायदा है), बस तुमको तो उसकी सज़ा मिल रही है जो कुछ तुम (दुनिया में) किया करते थे। (7)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। (तौबा का नतीजा फ़रमाते हैं कि) उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम्हारा रब (उस तौबा की बदौलत) तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। (और यह उस दिन होगा) जिस दिन कि अल्लाह तआ़ला नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को और जो मुसलमान (दीन की रू से) उनके साथ हैं, उनको रुस्वा न करेगा। उनका नूर उनके दाहिने और उनके सामने दौड़ता होगा, (और यूँ) दुआ़ करते होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए इस नूर को आख़िर तक रखिए। (यानी राह में बुझ न जाए), और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दीजिए, आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं। (8)

जहन्नम और उसकी सख़्तियाँ

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है- अपने घराने के अफ़राद को इल्म व अदब सिखाओ। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के फ़रमान बजा लाओ, उसकी नाफ़रमानियाँ मत करो, अपने घर के लोगों को अल्लाह के ज़िक्र की ताकीद करो ताकि अल्लाह तुम्हें जहन्नम से बचा ले। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह से डरो और अपने घर वालों को भी यही तलक़ीन

करो। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह की इताअ़त का उन्हें हुक्म दो और नाफ़रमानियों से रोकते रहो, उन पर अल्लाह के हुक्म क़ायम रखो और उन्हें अल्लाह के अहकाम पर अ़मल करने की ताकीद करते रहो, नेक कामों में उनकी मदद करो और बुरे कामों पर उन्हें तंबीह (डाँट-डपट) करो। इमाम ज़स्हाक व मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि अपने रिश्ते-कुनबे के लोगों को और अपने बाँदी-गुलाम को अल्लाह तआ़ला के फ़रमान बजा लाने की और उसकी नाफ़रमानियों से रुकने की तालीम देता रहे।

मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह सल्ल. का इरशाद है कि जब बच्चे सात साल के हो जायें तो उन्हें नमाज़ पढ़ने को कहते सुनते रहा करो। जब दस साल के हो जायें और नमाज़ में सुस्ती करें तो उन्हें मारकर धमका कर नमाज़ पढ़ाओ। यह हदीस अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में भी है। फ़ुक़हा (मसाईल बयान करने वाले उलेमा) का फ़रमान है कि इसी तरह रोज़े की भी ताकीद और तंबीह इस उम्र से शुरू कर देनी चाहिये ताकि बालिग़ होने तक पूरी तरह नमाज़ रोज़े की आ़दत हो जाये। इताअ़त के बजा लाने और नाफ़रमानी से बचे रहने और बुराई से दूर रहने का जज़्बा पैदा हो जाये। इन कामों से तुम और वे जहन्नम की आग से बच जाओगे, जिस आग का ईंधन इनसानों के जिस्म और पत्थर हैं। इन चीज़ों से यह आग सुलगाई गयी है, फिर ख़्याल कर लो कि किस क़द्र तेज़ होगी? पत्थर से मुराद या तो वो पत्थर हैं जिनकी दुनिया में पूजा होती रही, जैसे एक दूसरी जगह है:

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ.

तुम और तुम्हारे माबूद जहन्नम की लकड़ियाँ हो।

या गंधक के निहायत ही बदबूदार पत्थर हैं। एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की, उस वक़्त आपकी ख़िदमत में बाज़ सहाबा थे जिनमें से एक बूढ़े आदमी ने मालूम किया या रसूलल्लाह! क्या जहन्नम के पत्थर दुनिया के पत्थरों जैसे हैं? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जहन्नम का एक पत्थर दुनिया के तमाम पहाड़ों से बड़ा है। उन्हें यह सुनकर बेहोशी आ गयी। हुज़ूर सल्ल. ने उनके दिल पर हाथ रखा तो दिल धड़क रहा था। आपने उन्हें आवाज़ दी कि ऐ शैख़ कहो "ला इला-ह इल्लल्लाहु" उसने इसे पढ़ा, फिर आपने उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दी तो आपके सहाबा ने कहा क्या हम सब के बीच सिर्फ़ इसी को यह ख़ुशख़बरी दी जा रही है? आपने फ़रमाया देखो क़ुरआन में है:

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ.

यह उसके लिये है जो मेरे सामने खड़ा होने और मेरी धमकियों का डर रखता हो।

यह हदीस ग़रीब और मुर्सल है। फिर इरशाद होता है कि उस आग से अ़ज़ाब करने वाले फ़रिश्ते सख़्त तबीयत वाले हैं, जिनके दिलों में काफ़िरों के लिये अल्लाह ने रहम रखा ही नहीं, और जो ख़ौफ़नाक तरीक़े से सख़्त सज़ायें करते हैं, जिनके देखने से भी पित्ता पानी और कलेजा छलनी हो जाये। हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि जब जहन्नमियों का पहला जत्था जहन्नम को चलेगा तो देखेगा कि पहले दरवाज़े पर चार लाख फ़रिश्ते अ़ज़ाब करने वाले तैयार हैं, जिनके चेहरे बड़े ख़ौफ़नाक और बहुत ही काले-सियाह हैं, कुचलियाँ बाहर को निकली हुई हैं, सख़्त बेरहम हैं। एक ज़र्रे के बराबर भी ख़ुदा ने उनके दिलों में रहम नहीं रखा। इस क़द्र लम्बे-चौड़े जिस्म वाले हैं कि अगर कोई परिन्दा उनके एक कन्धे से उड़कर दूसरे कन्धे तक पहुँचना चाहे तो दो महीने गुज़र जायें। फिर दरवाज़े पर उन्नीस फ़रिश्ते पायेंगे जिनके सीनों की चौड़ाई सत्तर

Mahtab E Ashraf

साल का रास्ता है। फिर एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े की तरफ़ ढकेल दिये जायेंगे, पाँच सौ साल तक गिरते रहने के बाद दूसरा दरवाज़ा आयेगा, वहाँ भी इसी तरह ऐसे ही और इतने ही फ़रिश्तों को मौजूद पायेंगे। इसी तरह हर-हर दरवाज़े पर।

ये फ़रिश्ते ख़ुदा तआ़ला के हुक्म के ताबे हैं। इधर फ़रमाया गया उधर इन्होंने अ़मल शुरू कर दिया। इनका नाम ज़बानिया है। अल्लाह तआ़ला हमें अपने अ़ज़ाब से पनाह दे, आमीन। क़ियामत के दिन काफ़िरों से फ़रमाया जायेगा कि आज तुम बेकार उज़्र पेश न करो, कोई माज़िरत हमारे सामने चल न सकेगी। तुम्हारे करतूत का मज़ा तुम्हें चखना ही पड़ेगा।

फिर इरशाद है कि ऐ ईमान वालो! तुम सच्ची और ख़ालिस तौबा करो जिससे तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ हो जायें, मैल-कुचैल धुल जाये, बुराईयों की आ़दत छूट जाये। हज़रत नोमान बिन बशीर ने अपने एक ख़ुतबे में बयान फ़रमाया कि लोगो! मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से सुना है कि ख़ालिस तौबा यह है कि इनसान गुनाह की माफ़ी चाहे और फिर उस गुनाह को न करे। एक और रिवायत में है कि फिर उसके करने का इरादा भी न करे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से भी इसी के क़रीब मरवी है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यही आया है जो ज़ईफ़ है, और ठीक यही है कि वह भी मौक़ूफ़ ही है। वल्लाहु आलम

पहले बुज़ुर्ग और उलेमा फ़रमाते हैं कि ख़ालिस तौबा यह है कि गुनाह को उस वक़्त छोड़ दे, जो हो चुका है उस पर शर्मिन्दा हो और आगे के लिये न करने का पुख़्ता इरादा हो, और अगर गुनाह में किसी इनसान का हक़ है तो चौथी शर्त यह है कि वह हक़ बाक़ायदा अदा कर दे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि शर्मिन्दा होना भी तौबा करना है। हज़रत उबई बिन कअ़ब फ़रमाते हैं- हमें बताया गया था कि इस वक़्त उम्मत के आख़िरी लोग क़ियामत के क़रीब क्या काम करेंगे, उनमें एक यह है कि इनसान अपनी बीवी या बाँदी से उसके पाख़ाने की जगह में सोहबत करेगा। जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्ल. ने बिल्कुल हराम कर दिया है, और इस फ़ेल पर ख़ुदा तआ़ला और उसके रसूल की नाराज़गी होती है। इसी तरह मर्द मर्द से बदफ़ेली करेंगे, जो हराम और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब है। उन लोगों की नमाज़ भी ख़ुदा के यहाँ मकबूल नहीं जब तक कि पक्की सच्ची तौबा न करें। हज़रत ज़िर्र ने हज़रत उबई रज़ि. से पूछा- तौबा-ए-नसूह क्या है? फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल. से यही सवाल किया था तो आपने फ़रमाया- ग़लती से गुनाह हो गया, फिर उस पर शर्मिन्दा होना अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहना और जब वह गुनाह याद आये उससे इस्तिग़फ़ार हो। जब कोई शख़्स तौबा करने पर पुख़्तगी कर लेता है और अपनी तौबा पर जमा रहता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी तमाम पिछली ख़तायें मिटा देता है, जैसा कि सही हदीस में है कि इस्लाम लाने से पहले की तमाम बुराईयाँ इस्लाम फ़ना कर देता है और तौबा से पहले की तमाम ख़तायें तौबा जला देती है। अब रही यह बात कि तौबा-ए-नसूह में यह शर्त भी है कि तौबा करने वाला फिर मरते दम तक उस गुनाह को न करे जैसे कि हदीसों और बुज़ुर्गों के अकवाल अभी बयान हुए जिनमें है कि फिर कभी न करे। या सिर्फ़ उसका पक्का इरादा काफ़ी है कि इसे अब कभी न करूँगा, चाहे फिर इनसान होने के नाते भूले चूके हो जाये।

जैसे कि अभी हदीस गुज़री कि तौबा अपने से पहले गुनाहों को बिल्कुल मिटा देती है। तो सिर्फ़ ख़ाली तौबा से ही गुनाह माफ़ हो जाते हैं या फिर मरते दम तक उस काम का न होना गुनाह की माफ़ी की शर्त के तौर पर है? पस पहली बात की दलील तो यह सही हदीस है कि जो शख़्स इस्लाम में नेकियाँ करे वह

Maktab-E-Ashraf

अपनी जाहिलीयत की बुराईयों पर पकड़ा न जायेगा। और जो इस्लाम लाकर भी बुराईयों में मुब्तला रहे वह इस्लाम की और जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) की दोनों बुराईयों में पकड़ा जायेगा। पस इस्लाम जो कि गुनाहों को दूर करने में तौबा से बढ़कर है, जब उसके बाद भी अपने बुरे आमाल की वजह से पहली बुराईयों में भी पकड़ हुई तो तौबा के बाद तो और ज़्यादा होनी चाहिये। वल्लाहु आलम

लफ़्ज़ "अ़सा" (उम्मीद है) अगरचे तमन्ना, उम्मीद और इमकान के मायने देता है लेकिन कलामुल्लाह में इसी के मायने यक़ीन के होते हैं। पस फ़रमान है कि ख़ालिस तौबा करने वाले यक़ीनन अपने गुनाहों को माफ़ करवा लेंगे और सरसब्ज़ व शादाब जन्नतों में जायेंगे। फिर इरशाद है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने नबी और उनके ईमान वाले साथियों को हरगिज़ शर्मिन्दा न करेगा, उन्हें ख़ुदा की तरफ़ से नूर अ़ता होगा जो उनके आगे-आगे और दायीं तरफ़ होगा, दूसरे सब अन्धेरों में होंगे और ये रोशनी में होंगे जैसे कि पहले सूरः हदीद की तफ़सीर में गुज़र चुका।

जब ये देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों को जो रोशनी मिली थी ऐन ज़रूरत के वक़्त वह उनसे छीन ली गयी और वे अन्धेरों में भटकते रह गये तो दुआ़ करेंगे कि ख़ुदाया! हमारे साथ ऐसा न हो, हमारी रोशनी तो आख़िर वक़्त तक हमारे साथ ही रहे, हमारा नूरे ईमान बुझने न पाये। बनू किनाना के एक सहाबी फ़रमाते हैं कि फ़त्हे-मक्का वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे मैंने नमाज़ पढ़ी तो मैंने आपकी इस दुआ़ को सुना कि या अल्लाह! मुझे क़ियामत के दिन रुस्वा न करना। एक हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन सबसे पहले सज्दे की इजाज़त मुझे दी जायेगी, और इसी तरह सबसे पहले सज्दे से सर उठाने की इजाज़त भी मुझ ही को इनायत होगी। मैं अपने सामने और दायें-बायें नज़र डालकर अपनी उम्मत को पहचान लूँगा। एक सहाबी ने कहा हुज़ूर! उन्हें कैसे पहचानेंगे? वहाँ तो बहुत सी उम्मतें होंगी। आपने फ़रमाया मेरी उम्मत के लोगों की एक निशानी तो यह है कि उनके बदन के वुज़ू वाले अंग रोशन होंगे, चमक रहे होंगे, किसी और उम्मत में यह बात न होगी। दूसरी पहचान यह है कि उनके नामा-ए-आमाल उनके दायें हाथ में होंगे, तीसरी निशानी यह होगी कि सज्दे के निशान उनकी पेशानियों पर होंगे, जिनसे मैं पहचान लूँगा। चौथी पहचान यह है कि उनका नूर उनके आगे-आगे होगा।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَ
اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ○ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ
كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! कुफ़्फ़ार से (तलवारों से) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बान से) जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए। (दुनिया में तो ये इसके मुस्तहिक़ हैं) और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। (9) अल्लाह तआ़ला काफ़िरों के लिए नूह (अ़लैहिस्सलाम) की बीवी और लूत (अ़लैहिस्सलाम) की बीवी का हाल बयान फ़रमाता है। वे दोनों हमारे ख़ास बन्दों में से दो बन्दों के निकाह में थीं। सो उन

Maktab E Ashraf

كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ○	औरतों ने उन दोनों बन्दों का हक़ ज़ाया किया, तो वे दोनों नेक बन्दे अल्लाह के मुक़ाबले में उनके ज़रा भी काम न आ सके, और उन दोनों औरतों को (काफ़िरा होने की वजह से) हुक्म हो गया कि और जाने वालों के साथ तुम दोनों भी दोज़ख़ में जाओ। (10)

जिहाद का हुक्म

अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म देता है कि काफ़िरों से जिहाद करो हथियारों के साथ और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो अल्लाह की हदें और सज़ायें जारी करने के साथ। उन पर दुनिया में सख़्ती करो, आख़िरत में भी उनका ठिकाना जहन्नम है, जो बदतरीन लौटने की जगह है। फिर मिसाल देकर समझाया कि काफ़िरों का मुसलमानों से मिलना-जुलना उन्हें उनके कुफ़्र के बावजूद ख़ुदा तआ़ला के यहाँ कुछ नफ़ा नहीं दे सकता। देखो दो पैग़म्बरों की औ़रतें हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की जो हर वक़्त उन नबियों की सोहबत में रहने वाली और अपने कुफ़्र पर क़ायम थीं, पस पैग़म्बरों की आठ पहर की सोहबत उन्हें कुछ काम न आयी। अल्लाह के नबी उन्हें आख़िरत का नफ़ा न पहुँचा सके और न आख़िरत के नुक़सान से बचा सके, बल्कि उन औ़रतों को भी जहन्नमियों के साथ जहन्नम में जाने को कह दिया गया। यह याद रहे कि ख़ियानत करने से मुराद यहाँ बदकारी नहीं, अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की इज़्ज़त व आबरू इससे बहुत आला और बाला है कि उनकी घर वालियाँ फ़ाहिशा (बदकारा) हों। हम इसका पूरा बयान सूरः नूर की तफ़सीर में कर चुके हैं, बल्कि यहाँ मुराद दीन की ख़ियानत है, यानी दीन में अपने शौहरों की ख़ियानत की, उनका साथ न दिया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उनकी ख़ियानत ज़िना न थी बल्कि यह थी कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की बीवी तो लोगों से कहा करती थी कि यह मजनूँ हैं और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी जो मेहमान हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के यहाँ आते तो काफ़िरों को ख़बर कर देती थी। ये दोनों बेदीन थीं। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की बीवी राज़दारी के साथ और पोशीदा तौर पर ईमान लाने वालों के नाम काफ़िरों पर ज़ाहिर कर दिया करती थी, इसी तरह हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी भी अपने शौहर की नुबुव्वत की मुख़ालिफ़ थी और जो लोग आपके यहाँ मेहमान बनकर ठहरते यह जाकर अपनी काफ़िर क़ौम को ख़बर कर देती, जिन्हें मर्दों के साथ बदफ़ेली की आ़दत थी, बल्कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि किसी पैग़म्बर की किसी औ़रत ने भी बदकारी नहीं की, इसी तरह हज़रत इक्रिमा, हज़रत सईद बिन ज़ुबैर, हज़रत ज़ह्हाक रह. वग़ैरह से भी मरवी है। इससे दलील लेकर बाज़ उलेमा ने कहा है कि यह जो आ़म लोगों में मशहूर है कि हदीस में है कि जो शख़्स किसी ऐसे के साथ खाये जो बख़्शा हुआ हो तो उसे भी बख़्श दिया जाता है, यह हदीस बिल्कुल ज़ईफ़ है और हक़ीक़त भी यही है कि यह हदीस बिल्कुल बेअसल है, हाँ एक बुज़ुर्ग से मरवी है कि उन्होंने ख़्वाब में हुज़ूरे पाक सल्ल. की ज़ियारत की और पूछा कि क्या हुज़ूर ने यह हदीस इरशाद फ़रमाई है? आपने फ़रमाया नहीं, लेकिन अब मैं ऐसा कहता हूँ (यह बात ज़ाहिर है कि शरीअ़त के अहकाम के सामने ख़्वाब की ऐसी हैसियत नहीं कि उसको किसी शरई

हुक्म का दर्जा दिया जा सके)।

और अल्लाह तआ़ला मुसलमानों (की तसल्ली) के लिए फ़िरऔ़न की बीवी (हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा) का हाल बयान फ़रमाता है। जबकि उनकी बीवी ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे वास्ते जन्नत में अपने नज़दीक में मकान बनाईये और मुझको फ़िरऔ़न (की बुराई) से और उसके अ़मल (यानी कुफ़्र के नुक़सान और असर) से महफ़ूज़ रखिए, और मुझको तमाम ज़ालिम (यानी काफ़िर) लोगों से महफ़ूज़ रखिए। (11) (और साथ ही मुसलमानों की तसल्ली के लिए) इमरान की बेटी (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) का हाल बयान करता है, जिन्होंने अपनी आबरू को (हराम और हलाल दोनों से) महफ़ूज़ रखा। सो हमने उनके दामन में अपनी रूह फूँक दी और उन्होंने अपने परवर्दिगार के पैग़ामों की (जो उनको फ़रिश्तों के ज़रिये पहुँचे थे) और उसकी किताबों की तस्दीक़ की। और वह इताअ़त करने वालों में से थीं। (12)	وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝ ع

फ़िरऔ़न की बीवी का वाक़िआ़

यहाँ अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के लिये मिसाल बयान फ़रमाकर इरशाद फ़रमाता है कि अगर ये अपनी ज़रूरत की वजह से काफ़िरों से मिलें-जुलें तो इन्हें कुछ नुक़सान न होगा। जैसे एक और जगह है:

لَايَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكَافِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ......... الخ.

ईमान वालों को चाहिये कि मुसलमानों के सिवा औरों से दोस्तियाँ न करें, जो ऐसा करेगा वह ख़ुदा की तरफ़ से किसी भलाई में नहीं, हाँ अगर बतौर बचाव और वक़्ती मस्लेहत के हो तो और बात है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि रू-ए-ज़मीन के तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा सरकश (नाफ़रमान और घमण्डी) फ़िरऔ़न था, लेकिन उसके कुफ़्र ने भी उसकी बीवी को कुछ नुक़सान न पहुँचाया। इसलिये कि वह अपने ज़बरदस्त ईमान पर पूरी तरह क़ायम थीं और हैं। जान लो कि अल्लाह तआ़ला आ़दिल व हाकिम है, वह एक के गुनाह पर दूसरे को नहीं पकड़ता।

हज़रत सलमान रज़ि. फ़रमाते हैं कि फ़िरऔ़न उस नेकबख़्त बीवी को तरह-तरह से सताता था, सख़्त गर्मियों में उन्हें धूप में खड़ा कर देता, लेकिन परवर्दिगार अपने फ़रिश्तों के परों का साया उन पर कर देता और उन्हें गर्मी की तकलीफ़ से बचा लेता, बल्कि उन्हें उनके जन्नती मकान को दिखा देता, जिससे उनकी

रूह को ताज़गी और ईमान की ज़्यादती हो जाती। यह फ़िरऔ़न और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में यह मालूम करती रहती थीं कि कौन ग़ालिब रहा, तो हर वक़्त यही सुनतीं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ग़ालिब रहे, बस यही उनके ईमान का सबब बना और यह पुकार उठीं कि मैं मूसा और हारून के रब पर ईमान लाई। फ़िरऔ़न को जब यह मालूम हुआ तो उसने कहा कि जो बड़ी से बड़ी पत्थर की चट्टान तुम्हें मिले उसे उठवा लाओ, इसे चित लिटाओ और इससे कहो कि अपने इस अ़क़ीदे से बाज़ आये, अगर बाज़ आ जाये तो तू मेरी बीवी है, इज़्ज़त व सम्मान के साथ वापस लाओ और अगर न माने तो वह चट्टान इस पर गिरा दो और इसका क़ीमा कर डालो। जब ये लोग पत्थर लाये, उन्हें ले गये, लिटाया और पत्थर उन पर गिराने के लिये उठाया तो उन्होंने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई, परवर्दिगार ने पर्दे हटा दिये और जन्नत को और वहाँ जो मकान उनके लिये बनाया गया था उसे उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया और इसी में उनकी रूह परवाज़ कर गयी। जिस वक़्त पत्थर फेंका गया उस वक़्त उनमें रूह थी ही नहीं। अपनी शहादत के वक़्त दुआ़ माँगती हैं कि ख़ुदाया! जन्नत में अपने क़रीब की जगह मुझे इनायत फ़रमा। इस दुआ़ की बारीकी पर भी नज़र डालिये कि पहले ख़ुदा का पड़ोस माँगा जा रहा है, फिर घर की प्रार्थना की जा रही है।

इस वाक़िए के बयान में एक मरफ़ूअ़ हदीस भी वारिद हुई है। फिर दुआ़ करती हैं कि मुझे फ़िरऔ़न और उसके अ़मल से निजात दे, मैं उसकी काफ़िराना हरकतों से बेज़ार हूँ मुझे इस ज़ालिम से आ़फ़ियत में रख। इन बीबी साहिबा का नाम आसिया बिन्ते मुज़ाहिम था। उनके ईमान लाने का वाक़िआ़ हज़रत अबुल्-आ़लिया रह. इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि फ़िरऔ़न के दारोग़ा की औ़रत का ईमान उनके ईमान का ज़रिया बना। वह एक रोज़ फ़िरऔ़न की लड़की का सर गूँध रही थीं, अचानक कंघी हाथ से गिर गयी और उनके मुँह से निकल गया कि काफ़िर बरबाद हों। इस पर फ़िरऔ़न की लड़की ने कहा- क्या मेरे बाप के सिवा तू किसी और को अपना रब मानती है? उसने कहा मेरा, तेरे बाप का और हर चीज़ का रब अल्लाह तआ़ला है। उसने गुस्से में आकर उन्हें ख़ूब मारा पीटा और अपने बाप को इसकी ख़बर कर दी। फ़िरऔ़न ने उन्हें बुलाकर ख़ुद पूछा कि क्या तुम मेरे सिवा किसी और की इबादत करती हो? जवाब दिया कि हाँ मेरा, तेरा और तमाम मख़्लूक़ का रब अल्लाह है, मैं उसी की इबादत करती हूँ। फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया और उन्हें चित लेटाकर उनके हाथ पैरों पर मेख़ें (बड़ी-बड़ी कीलें) गड़वा दीं और साँप छोड़ दिये जो उन्हें काटते रहें। फिर एक दिन और कहा कि अब भी तेरे ख़्यालात दुरुस्त हुए या नहीं? वहाँ से जवाब मिला कि मेरा, तेरा और तमाम मख़्लूक़ का रब अल्लाह ही है। फ़िरऔ़न ने कहा अब तेरे सामने मैं तेरे लड़के को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा वरना अब भी मेरा कहा मान ले और इस दीन से बाज़ आ जा। उन्होनें जवाब दिया कि जो कुछ तू कर सकता हो कर डाल। उस ज़ालिम ने उनके लड़के को पकड़वा कर मंगवाया और उनके सामने उसे मार डाला। जब उस बच्चे की रूह निकली तो उसने कहा ऐ माँ! ख़ुश हो जा, तेरे लिये अल्लाह तआ़ला ने बड़े-बड़े सवाब तैयार कर रखे हैं और फ़ुलाँ-फ़ुलाँ नेमतें तुझे मिलेंगी। उन्होंने उस रूह को कपकपा देने वाले मन्ज़र को ख़ुद अपनी आँखों से देखा लेकिन सब्र किया और तक़दीर पर राज़ी होकर बैठ रहीं।

फ़िरऔ़न ने फिर उन्हें इसी तरह बाँधकर डलवा दिया और साँप छोड़ दिये। फिर एक दिन आया और अपनी बात दोहराई। इन नेकबख़्त बीबी ने फिर निहायत सब्र व हिम्मत से वही जवाब दिया। उसने फिर वही धमकी दी और उनके दूसरे बच्चे को भी उनके सामने ही क़त्ल करा दिया, उसकी रूह ने इसी तरह

Maktab-E-Ashraf

अपनी वालिदा को ख़ुशख़बरी दी और सब्र की तलक़ीन की। फ़िरऔन की बीवी ने बड़े बच्चे की रूह की ख़ुशख़बरी सुनी थी, अब इस छोटे बच्चे की भी ख़ुशख़बरी सुनी और ईमान ले आयीं। इधर उन बीबी साहिबा की रूह अल्लाह तआला ने क़ब्ज़ कर ली और उनकी मन्ज़िल (ठिकाना) और मक़ाम जो ख़ुदा के यहाँ था वह पर्दा हटाकर फ़िरऔन की बीवी को दिखा दिया गया। यह अब ईमान व यक़ीन में बहुत बढ़ गयीं, यहाँ तक कि फ़िरऔन को भी इनके ईमान की ख़बर हो गयी।

उसने एक रोज़ अपने दरबारियों से कहा कि तुम्हें कुछ मेरी बीवी की ख़बर है? तुम उसे क्या जानते हो? सबने बड़ी तारीफ़ की और उनकी भलाईयाँ बयान कीं। फ़िरऔन ने कहा तुम्हें नहीं मालूम? वह मेरे सिवा दूसरे ख़ुदा को मानती है। फिर मश्विरा हुआ कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाये। चुनाँचे मेख़ें गाड़ी गयीं और उनके हाथ-पाँव बाँधकर डाल दिया गया। उस वक़्त हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपने रब से दुआ़ की कि परवर्दिगार मेरे लिये अपने पास जन्नत में मकान बना। अल्लाह तआ़ला ने उनकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और पर्दे उठाकर उन्हें उनका जन्नती दर्जा दिखा दिया। जिस पर यह हंसने लगीं। ठीक उसी वक़्त फ़िरऔन आ गया और इन्हें हंसता हुआ देखकर कहने लगा लोगो! तुम्हें ताज्जुब नहीं मालूम होता कि इतनी सख़्त सज़ा में यह मुब्तला है और फिर हंस रही है? यक़ीनन इसका दिमाग़ ठिकाने नहीं। ग़र्ज़ कि इन्हीं अ़ज़ाबों में यह शहीद हो गयीं।

फिर दूसरी मिसाल हज़रत मरियम बिन्ते इमरान रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बयान की जाती है कि वह निहायत पाकदामन थीं, हमने अपने फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के द्वारा उनमें रूह फूँकी। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को इनसानी सूरत में अल्लाह तआ़ला ने भेजा और हुक्म दिया था कि वह अपने मुँह से उनके गिरेबान में फूँक मार दें, उसी से हमल रह गया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। पस इरशाद है कि हमने उसमें अपनी रूह फूँकी। फिर हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम की और तारीफ़ हो रही है कि वह अपने रब की तक़दीर और शरीअ़त को सच मानने वाली और पूरी फ़रमाँबरदार थीं।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने ज़मीन पर चार लकीरें खींचीं और सहाबा से मालूम किया- जानते हो यह क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ही को पूरा इल्म है। आपने फ़रमाया- तमाम जन्नती औ़रतों में से अफ़ज़ल ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद और फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद और मरियम बिन्ते इमरान और आसिया बिन्ते मुज़ाहिम हैं, जो फ़िरऔन की बीवी थीं। सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मर्दों में से तो कमाल वाले बहुत सारे हुए हैं, लेकिन औ़रतों में से कामिल औ़रतें सिर्फ़ हज़रत आसिया हैं जो फ़िरऔन की बीवी थीं, और हज़रत मरियम बिन्ते इमरान हैं, और हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद हैं, और आ़यशा की फ़ज़ीलत औ़रतों पर ऐसी ही है जैसे 'सरीद' (सालन में चूरी हुई रोटी) की फ़ज़ीलत बाक़ी खानों पर। हमने अपनी किताब "अल-बिदाया वन्निहाया" में में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से के बयान के मौक़े पर इस हदीस की सनदें और अलफ़ाज़ बयान कर दिये हैं। फ़ल्हम्दु लिल्लाह। और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से इसी सूरत (यानी सूरः तहरीम) की आयत (नम्बर 5) के अलफ़ाज़ "सय्यिबातिंव्-व अबकारा" की तफ़सीर के मौक़े पर वह हदीस भी हम बयान कर चुके हैं जिसमें है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. की जन्नती बीवियों में से एक हज़रत आसिया बिन्ते मुज़ाहिम रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः तहरीम की तफ़सीर और पारा 28 दोनों मुकम्मल हुए।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर उनत्तीस

सूरः मुल्क

सूरः मुल्क मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

फ़ज़ाईल सूरः मुल्क

मुस्नद अहमद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- क़ुरआने करीम में तीस आयतों की एक सूरत है जो अपने पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करती रहेगी यहाँ तक कि उसे बख़्श दिया जाये। वह सूरत "तबारकल्लज़ी बि-यदिहिल् मुल्कु" है। अबू दाऊद व नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन कहते हैं। तारीख़ इब्ने अ़साकिर में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- तुम से पहली उम्मत में एक शख़्स मर गया जिसके साथ किताबुल्लाह में से सिवाय सूरः तबारकल्लज़ी के और कोई चीज़ न थी। जब उसे दफ़न किया गया और फ़रिश्ता उसके पास आया तो यह सूरत उसके सामने खड़ी हो गयी। फ़रिश्ते ने कहा तू किताबुल्लाह में है, मैं तुझे नाराज़ करना नहीं चाहता, तुझे मालूम है कि तेरे या अपने या इस मय्यित के किसी नफ़े नुक़सान का मुझे इख़्तियार नहीं, अगर तू यही चाहती है तो तू अल्लाह तआ़ला के पास जाकर इसकी सिफ़ारिश कर। चुनाँचे यह सूरत अल्लाह तआ़ला के पास गयी और कहा ख़ुदाया! तेरी किताब में है मुझे फ़ुलाँ शख़्स ने सीखा पढ़ा, अब क्या तू उसे आग में जलायेगा? क्या इसके बावजूद कि मैं उसके सीने में महफ़ूज़ हूँ तू उसे अ़ज़ाब करेगा? अगर यही करना है तो मुझे अपनी किताब में से मिटा डाल। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तू इस वक़्त ग़ुस्से में है। यह कहेगी मुझे हक़ है कि मैं अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करूँ। पस जनाबे बारी का इरशाद होगा कि जा मैंने उसे तुझे दिया और तेरी सिफ़ारिश क़बूल कर ली। अब यह सूरत उसके पास आयी, अ़ज़ाब के फ़रिश्ते को हटाया और उसके मुँह से अपना मुँह मिलाकर कहा- इस मुँह को मरहबा हो यही मेरी तिलावत किया करता था। इस सीने को सौ बार शाबाश हो, इसने मुझे याद कर रखा था। उन दोनों क़दमों को मुबारकबाद हो, यही खड़े होकर रातों को मेरी क़िराअत के साथ क़ियाम किया करते थे, और यह सूरत क़ब्र में उसकी साथी व ग़मख़्वार बन गयी और कोई दहशत व ख़ौफ़ उसे नहीं पहुँचने दिया।

इस हदीस के सुनते ही तमाम छोटे बड़े, आज़ाद और ग़ुलाम ने इसे सीख लिया। इसका नाम रसूलुल्लाह सल्ल. ने "मुनजिया" रखा, यानी निजात दिलवाने वाली सूरत। लेकिन यह याद रहे कि यह हदीस बहुत ही मुन्कर है (यानी क़ाबिले भरोसा नहीं)। इसके रावी फ़ुरात बिन सायब को इमाम अहमद, इमाम यहया बिन मईन, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हातिम, इमाम दारे क़ुतनी रह. वग़ैरह ज़ईफ़ कहते हैं।

Maktab E Ashraf

एक दूसरी सनद से है कि यह कौल इमाम ज़ोहरी रह. का है, मरफ़ूअ़ हदीस नहीं। इमाम बैहक़ी रह. ने किताब "इसबाति अ़ज़ाबिल-क़ब्रि" में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से एक हदीस मरफ़ूअ़ भी बयान की है और मौक़ूफ़ भी। उसमें भी जो मज़्मून है वह इसकी ताईद में काम दे सकता है। हमने इसे "अहकामे कुबरा" की किताबुल-जनाईज़ में बयान किया है।

तबरानी वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- क़ुरआने करीम की एक सूरत है जिसने अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से ख़ुदा तआ़ला से लड़-झगड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल कराया, वह सूरः तबारकल्लज़ी है। तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि किसी सहाबी ने जंगल में एक डेरा लगाया जहाँ एक क़ब्र भी थी, लेकिन उसे इल्म न था। उसने सुना कि कोई शख़्स सूरः मुल्क पढ़ रहा है और उसने इसे पूरी पढ़ी। उसने नबी सल्ल. से सारा वाकिआ़ बयान किया तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- यह सूरत रोकने वाली है, यह सूरत निजात दिलवाने वाली है, जो अ़ज़ाबे क़ब्र से निजात दिलवाती है। यह हदीस ग़रीब है। तिर्मिज़ी की एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. सोने से पहले सूरः सज्दा और सूरः मुल्क ज़रूर पढ़ लिया करते थे।

हज़रत ताऊस रह. की रिवायत है कि ये दोनों सूरतें क़ुरआन की दूसरी सूरतों पर सत्तर दर्जा फ़ज़ीलत रखती हैं। तबरानी में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी दिली ख़्वाहिश है कि यह सूरत मेरी उम्मत में से हर एक के दिल में रहे यानी सूरः मुल्क। यह हदीस भी ग़रीब है और इसका रावी इब्राहीम ज़ईफ़ है। इसी जैसी रिवायत सूरः यासीन में गुज़र चुकी है। मुस्नद अ़ब्द बिन हुमैद में ज़रा तफ़सील के साथ बयान है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. ने एक शख़्स से फ़रमाया- आ मैं तुझे एक ऐसा तोहफ़ा दूँ कि तू ख़ुश हो जाये। सूरः तबारकल्लज़ी.......... पढ़ा कर और इसे अपने अहल व अ़याल (घर वालों) को, घर के बच्चों को और पड़ोसियों को सिखा। यह सूरत निजात दिलवाने वाली और शफ़ाअ़त करने वाली है, क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से ख़ुदा तआ़ला से सिफ़ारिश करेगी, उसे आग के अ़ज़ाब से बचा लेगी, और अ़ज़ाबे क़ब्र से भी। रसूलुल्लाह सल्ल. का इरशाद है- मैं तो चाहता हूँ कि मेरे एक-एक उम्मती के दिल में यह सूरत हो।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ نِ۝ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ
وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ لا الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ
سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ
الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ لا
هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ

वह (ख़ुदा) बड़ा बुलन्द शान वाला है जिसके क़ब्ज़े में तमाम बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (1) जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे कि तुममें कौन शख़्स अ़मल में ज़्यादा अच्छा है। और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है। (2) जिसने सात आसमान ऊपर-नीचे पैदा किए। तू ख़ुदा की इस कारीगरी में कोई ख़लल न देखेगा, सो तू (अब की बार) फिर निगाह डालकर देख ले, कहीं तुझको कोई ख़लल नज़र आता है? (3) (यानी बिना सोचे तूने बहुत बार देखा होगा अब की बार सोच-फ़िक्र से निगाह कर)। फिर बार-बार निगाह डालकर देख (आख़िरकार)

كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝	निगाह ज़लील और आजिज़ होकर तेरी तरफ़ लौट आएगी। (4) और हमने क़रीब के आसमान को चिराग़ों (यानी सितारों) से सजा रखा है, और हमने उन (सितारों) को शैतानों को मारने का ज़रिया भी बना दिया है और हमने उन (शैतानों) के लिए (उनके कुफ़्र की वजह से) दोज़ख़ का अज़ाब (भी) तैयार कर रखा है। (5)

अल्लाह की ज़ात बड़ी बरकत वाली है

अल्लाह तआ़ला अपनी तारीफ़ बयान फ़रमा रहा है और बता रहा है कि तमाम मख़्लूक़ पर उसी का क़ब्ज़ा है, जो चाहे करे कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता। उसके ग़लबे, रहमत और अ़दल की वजह से उससे कोई पूछताछ भी नहीं कर सकता, वह तमाम चीज़ों पर क़ुदरत रखने वाला है। फिर अपना मौत व ज़िन्दगी को पैदा करना बयान फ़रमा रहा है। इस आयत से उन लोगों ने इस्तिदलाल किया है जो कहते हैं कि मौत एक वजूदी चीज़ है, क्योंकि वह भी पैदा की हुई है। आयत का मतलब यह है कि तमाम मख़्लूक़ को अ़दम से वजूद में लाया ताकि अच्छे आमाल का इम्तिहान हो जाये। जैसे एक दूसरी जगह है:

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ.

तुम अल्लाह तआ़ला के साथ क्यों कुफ़्र करते हो? तुम तो मुर्दा थे उसने तुम्हें ज़िन्दा कर दिया।

पस पहले हाल यानी अ़दम को यहाँ भी मौत कहा गया और इस पैदाईश को हयात (ज़िन्दगी) कहा गया, इसी लिये इसके बाद इरशाद होता है:

ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ.

वह फिर तुम्हें मार डालेगा और फिर ज़िन्दा कर देगा।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान मौत की ज़िल्लत में थे दुनिया को अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दगी का घर बना दिया, फिर मौत का, और आख़िरत को जज़ा (बदले) का, फिर बक़ा का। लेकिन यही रिवायत एक दूसरे मौक़े पर हज़रत क़तादा रह. का क़ौल बयान की गयी है। आज़माईश इस बात की है कि तुम में से अच्छे अ़मल वाला कौन है? ज़्यादा अ़मल वाला नहीं, बल्कि बेहतर अ़मल वाला। वह बावजूद ग़ालिब और बुलन्द शान वाला होने के फिर भी गुनाहगारों और हक़ रास्ते से मुँह मोड़ने वाले लोगों के लिये जब वे रुजू करें और तौबा करें माफ़ करने और बख़्शने वाला भी है। जिसने सात आसमान ऊपर नीचे पैदा किये एक पर एक। अगरचे बाज़ लोगों ने यह भी कहा है कि एक पर एक मिला हुआ है, लेकिन दूसरा क़ौल है कि बीच में जगह है और एक दूसरे के ऊपर फ़ासले से है। ज़्यादा सही यही क़ौल है और मेराज वग़ैरह की हदीस से भी यही बात साबित होती है।

अल्लाह के बनाने और पैदा करने में तू कोई कमी व ऐब न पायेगा, बल्कि तू देखेगा कि वह बराबर है, न हेर-फेर है, न बुराई है, न बेतरतीबी है, न कमी, ऐब और ख़लल है। अपनी नज़र आसमान की तरफ़

Maktaba Ashraf

डाल और ग़ौर से देख कि कहीं कोई ऐब, टूट-फूट, फटन व सुराख़ दिखाई देता है? फिर भी अगर शक रहे तो दो-दो दफ़ा देख ले, कोई कमी नज़र न आयेगी चाहे तूने ख़ूब नज़रें जमा कर टटोल कर देखा हो फिर भी नामुम्किन है कि तुझे कोई टूट-फूट और कमी नज़र आये। तेरी निगाहें थककर और नाकाम होकर झुक जायेंगी।

कमी और ऐब की नफ़ी करके अब कमाल को साबित किया जा रहा है। फ़रमाया दुनिया वाले आसमान को हमने इन क़ुदरती चिराग़ों यानी सितारों से रौनक़दार बना रखा है, जिनमें बाज़ चलने फिरने वाले हैं और बाज़ एक जगह ठहरे रहने वाले हैं। फिर उनका एक और फ़ायदा बयान हो रहा है कि उनसे शैतानों को मारा जाता है, उनमें से शोले निकल कर उन पर गिरते हैं। यह नहीं कि ख़ुदा सितारा उन पर टूटे। वल्लाहु आलम। शयातीन की तुम दुनिया में यह रुस्वाई तो देखते ही हो आख़िरत में भी उनके लिये जलाने वाला अ़ज़ाब है। जैसे सूरः "साफ़्फ़ात" के शुरू में है कि हमने दुनिया वाले आसमान को सितारों से सजा दिया है और सरकश शैतानों से उनकी हिफ़ाज़त कर दी है। वे बुलन्द रुतबे वाले फ़रिश्तों की बातें नहीं सुन सकते और हर तरफ़ की मार से हटा दिये जाते हैं और उनके लिये हमेशा वाला अ़ज़ाब है। अगर कोई उनमें से एक-आध बात उचक कर ले भागता है तो उसके पीछे चमकदार तेज़ शोला लपकता है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि सितारे तीन फ़ायदों के लिये पैदा किये गये हैं- आसमान की सजावट, शैतानों की मार और राह पाने के निशानात। जिस शख़्स ने इसके सिवा और कोई बात तलाश की उसने अपनी राय की पैरवी की और अपना सही हिस्सा खो दिया, और बावजूद इल्म न होने के तकल्लुफ़ किया (यानी ख़्वाह-मख़्वाह का दिमाग़ लड़ाया)। (इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम)

और जो लोग अपने रब (की तौहीद) का इनकार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है, और वह बुरी जगह है। (6) जब ये लोग उसमें डाले जाएँगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे, और वह इस तरह जोश मारती होगी (7) जैसे मालूम होता है कि (अभी) गुस्से के मारे फट पड़ेगी। (और) जब उसमें (काफ़िरों का) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके मुहाफ़िज़ उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं आया था? (8) वे काफ़िर (क़बूल करने के तौर पर) कहेंगे कि वाक़ई हमारे पास डराने वाला (पैग़म्बर) आया था, सो (यह हमारी शामत थी कि) हमने (उसको) झुठला दिया और कह दिया कि अल्लाह ने (अहकाम व किताबें) कुछ नाज़िल नहीं किया, (और) तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो। (9) और (काफ़िर फ़रिश्तों से यह भी) कहेंगे	وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا

كُنَّا فِىٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ٥ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ٥	कि हम अगर सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में (शामिल) न होते। (10) ग़र्ज़ कि अपने जुर्म का इक़रार करेंगे, सो दोज़ख़ियों पर लानत है। (11)

Maktab E Ashraf

काफ़िरों के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि जो भी उसके साथ कुफ़्र करे वह जहन्नमी है, उसका अन्जाम और जगह बद से बदतर है। यह बहुत ऊँचे और मक्रूह गधे की सी आवाज़ें मारने वाली और जोश मारने वाली जहन्नम है, जो उन पर जल-भुन (यानी ग़ुस्सा खा) रही है और आक्रोश से इस तरह दाँत भींच रही है कि गोया अभी टूट-फूट जायेगी। उनको और ज़्यादा ज़लील करने, आख़िरी हुज्जत क़ायम करने और इक़बाली मुजरिम बनाने के लिये जहन्नम के दारोग़ा उनसे पूछते हैं कि बद-नसीबो! क्या ख़ुदा के रसूलों ने तुम्हें इससे डराया न था? तो हाय-वाय करते हुए अपनी जानों को पीटते हुए जवाब देते हैं कि आये तो थे लेकिन वाय बदनसीबी कि हमने उन्हें झूठा जाना, ख़ुदा की किताब को भी न माना और पैग़म्बरों को सही रास्ते से हटा हुआ बताया। अब अल्लाह का अ़दल साफ़ तौर पर साबित हो चुकना है और फ़रमाने बारी ही उतरना है, जो उसने फ़रमायाः

مَاكُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا.

हम जब तक रसूल न भेज दें अ़ज़ाब नहीं देते। एक दूसरे मौक़े पर इरशाद हैः

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءُوْهَا.

जब जहन्नमी जहन्नम के पास पहुँच जायेंगे और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और जहन्नम के दारोग़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुममें से ही रसूल नहीं आये थे? जो तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन की मुलाक़ात से डराते थे। तो कहेंगे कि हाँ आये तो थे और डरा भी दिया था लेकिन काफ़िरों पर अ़ज़ाब का कलिमा हुज्जत हो गया। अब अपने आपको मलामत करेंगे और कहेंगे कि अगर हमारे कान होते, अगर हम में अ़क़्ल होती तो धोखे में न पड़े रहते, अपने मालिक व ख़ालिक़ के साथ कुफ़्र न करते, न रसूलों को झुठलाते न उनकी ताबेदारी से मुँह मोड़ते। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अब तो इन्होंने ख़ुद अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया, इनके लिये लानत हो, दूरी हो। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि लोग जब तक दुनिया में अपने आप में ग़ौर न करेंगे और अपनी बुराईयों को आप देख न लेंगे हलाक न होंगे। (मुस्नद अहमद) एक और हदीस में है कि क़ियामत वाले दिन इस तरह हुज्जत (दलील) क़ायम की जायेगी कि ख़ुद इनसान समझ लेगा कि मैं दोज़ख़ में जाने के ही क़ाबिल हूँ। (मुस्नद अहमद)

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ٥ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ	बेशक जो लोग अपने रब से बेदेखे डरते हैं उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र (मुक़र्रर) है। (12) और तुम लोग चाहे छुपाकर बात कहो या पुकारकर कहो (उसको सब ख़बर है, क्योंकि)

Maktab E Ashraf

اَوِاجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ○ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِىْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ○	वह दिलों तक की बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है। (13) (और भला) क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है? और वह बारीकी से देखने वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला है। (14) वह ऐसा (नेमत देने वाला) है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ताबे कर दिया, सो तुम उसके रास्तों में चलो (फिरो) और ख़ुदा की रोज़ी में से (जो ज़मीन में पैदा की है) खाओ (पियो) और (खा-पीकर इसको भी याद रखना कि) उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है। (15)

ع

अल्लाह से डरते रहो

अल्लाह तआ़ला उन लोगों को ख़ुशख़बरी दे रहा है जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरते रहते हैं। अगरचे तन्हाई में हों, जहाँ किसी की निगाहें उन पर न पड़ सकें, फिर भी अल्लाह के ख़ौफ़ से किसी नाफ़रमानी के काम को नहीं करते, न इताअ़त व इबादत से जी चुराते हैं। वह उनके गुनाह भी माफ़ फ़रमा देगा और ज़बरदस्त सवाब और बेहतरीन अज्र भी इनायत फ़रमायेगा। जैसे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जिन सात शख़्सों को अल्लाह तआ़ला अपने अ़र्श का साया उस दिन देगा जिस दिन उसके सिवा कोई साया न होगा, उनमें से एक वह है जिसको कोई हुस्न व माल वाली औ़रत ज़िनाकारी की तरफ़ बुलाये और वह कह दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। और उसे भी साया मिलेगा जो इस तरह छुपे तौर पर सदक़ा करे कि दायें हाथ के ख़र्च करने की ख़बर बायें हाथ को भी न लगे। मुस्नद बज़्ज़ार में है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने एक मर्तबा अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे दिलों की जो कैफ़ियत आपके सामने होती है आपके बाद वह नहीं रहती। आप सल्ल. ने फ़रमाया यह बताओ रब के साथ तुम्हारा क्या ख़्याल रहता है? जवाब दिया कि ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह ही को रब मानते हैं। आपने फ़रमाया जाओ फिर यह निफ़ाक़ नहीं।

फिर फ़रमाता है कि तुम्हारी छुपी-खुली बातों का मुझे इल्म है, दिलों में गुज़रने वाले ख़्यालात से भी मैं आगाह हूँ। यह नामुम्किन है कि जो ख़ालिक़ हो वह आ़लिम न हो और यह कि मख़्लूक़ से ख़ालिक़ बेख़बर हो, वह तो बड़ा बारीक-बीं है और बेहद ख़बर रखने वाला है। उसके बाद अपनी नेमत का इज़्हार करता है कि ज़मीन को उसने तुम्हारे ताबे कर दिया है, वह सुकून के साथ ठहरी हुई है, हिलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाती। पहाड़ों की मेख़ें उसमें गाड़ दी हैं, पानी के चश्मे उसमें जारी कर दिये हैं, रास्ते उसमें बना दिये हैं, तरह-तरह के फ़ायदे उसमें रख दिये हैं, फल और अनाज उसमें से निकल रहे हैं, जिस जगह तुम जाना चाहो जा सकते हो, तरह-तरह की लम्बी फ़ायदेमन्द तिजारतें कर रहे हो, तुम्हारी कोशिशें वह कामयाब करता है और तुम्हें अपनी रोज़ियाँ इन असबाब (सामानों और चीज़ों) से दे रहा है। मालूम हुआ कि असबाब (सामान और साधनों) के हासिल करने की कोशिश तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि अगर तुम ख़ुदा की ज़ात पर पूरा-पूरा भरोसा करो तो वह तुम्हें इस तरह रोज़ियाँ दे जिस तरह परिन्दों को दे रहा है कि अपने घौंसलों से ख़ाली पेट निकलते हैं और पेट भरे वापस जाते हैं। पस उनका सुबह व शाम

आना-जाना और रिज़्क़ को तलाश करना भी तवक्कुल में दाख़िल समझा गया, क्योंकि असबाब (संसाधनों) का पैदा करने वाला, उन्हें आसान करने वाला वही एक ख़ुदा है। उसी की तरफ़ कियामत के दिन लौटना है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. वग़ैरह तो "मनाकिब" से मुराद रास्ते और इधर-उधर की जगहें लेते हैं, और क़तादा रह. वग़ैरह से मरवी है कि मुराद पहाड़ हैं। हज़रत बशीर बिन कअ़ब रह. ने इस आयत की तिलावत की और अपनी बाँदी से जिससे उन्हें औलाद हुई थी, फ़रमाया- अगर मनाकिब की सही तफ़सीर तुम बता दो तो तुम आज़ाद हो। उसने कहा इससे पहाड़ मुराद हैं। आपने हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा, जवाब मिला कि यह तफ़सीर सही है।

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ٥ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ٥ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ٥ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؔ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍۢ بَصِيْرٌ ٥

क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व इख़्तियार रखता है) कि वह तुमको ज़मीन में धंसा दे, फिर वह ज़मीन थरथरा (कर उलट-पुलट हो) ने लगे। (16) या तुम लोग उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व तसर्रुफ़ रखता) है कि वह तुम पर (क़ौमे आ़द की तरह) एक तेज़ हवा भेज दे (जिससे तुम हलाक हो जाओ)। सो जल्द ही (यानी मरते ही) तुमको मालूम हो जाएगा कि मेरा (अ़ज़ाब से) डराना कैसा (सही) था। (17) और उनसे पहले जो लोग गुज़र चुके हैं उन्होंने (दीने हक़ को) झुठलाया था, सो (देख लो उन पर) मेरा अ़ज़ाब कैसा (वाक़ेअ़) हुआ। (18) क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिन्दों की तरफ़ नज़र नहीं की, कि पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं, और (कभी उसी हालत में) पर समेट लेते हैं, सिवाय (ख़ुदा-ए-) रहमान के उनको कोई थामे हुए नहीं है। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (और जिस तरह चाहे उसमें तसर्रुफ़ कर रहा है)। (19)

यह कैसा ग़लत और बेबुनियाद ख़्याल है

इन आयतों में भी अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने लुत्फ़ व रहमत का बयान फ़रमा रहा है कि लोगों के कुफ़्र व शिर्क की बिना पर वह तरह-तरह के दुनियावी अ़ज़ाबों पर भी क़ादिर है, लेकिन उसका हिल्म (बरदाश्त) और माफ़ करना है कि वह अ़ज़ाब नहीं करता। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमायाः

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ......... الخ.

Maktaba Ashraf

यानी अगर अल्लाह तआ़ला लोगों को उनकी बुराईयों पर पकड़ लेते तो रू-ए-ज़मीन पर किसी को बाक़ी न छोड़ते। लेकिन वह एक मुक़र्रर वक़्त तक उन्हें मोहलत दिये हुए हैं। जब उनका वह वक़्त आ जायेगा तो ख़ुदा तआ़ला उन मुजरिम बन्दों से आप समझ लेंगे।

यहाँ भी फ़रमाया कि ज़मीन इधर-उधर हो जाती और हिलने व काँपने लग जाती और ये सारे के सारे उसमें धंसा दिये जाते, या इन पर ऐसी आँधी भेज दी जाती जिसमें पत्थर होते और इनके दिमाग़ तोड़ दिये जाते। जैसे एक और जगह इरशाद है:

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ...... الخ.

यानी क्या तुम निडर हो गये हो कि ज़मीन के किसी किनारे में तुम धंस जाओ या तुम पर वह पत्थर बरसाये और कोई न हो जो तुम्हारी वकालत (यानी मदद व हमदर्दी) कर सके।

यहाँ भी इरशाद है कि उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मेरी धमकियों और डराने को न मानने का अन्जाम क्या होता है। क्या तुम मेरी क़ुदरतों को रोज़मर्रा देखते नहीं हो कि परिन्दे तुम्हारे सरों पर उड़ते फिरते हैं, कभी दोनों परों से कभी किसी को रोक कर, फिर क्या मेरे सिवा कोई और उन्हें थामे हुए है? मैंने हवाओं को उनके ताबे कर दिया है और ये मुस्तक़िल उड़ते फिरते हैं। यह भी मेरा लुत्फ़ व करम और रहमत व नेमत है। मख़्लूक़ात की हाजतें, ज़रूरतें, उनकी ख़ैरख़्वाही और बेहतरी का निगराँ और कफ़ील मैं ही हूँ। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِیْ جَوِّ السَّمَآءِ...... الخ.

क्या उन्होंने उन परिन्दों को नहीं देखा जो आसमान व ज़मीन के बीच मुसख़्ख़र (ताबे) हैं।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ۚ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ۝ اَفَمَنْ يَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤى اَمَّنْ يَّمْشِیْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ	हाँ! रहमान के सिवा वह कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर (आफ़तों से) तुम्हारी हिफ़ाज़त कर सके, (और) काफ़िर (जो अपने माबूदों के बारे में ऐसा ख़्याल रखते हैं) तो (वे) ख़ालिस धोखे में हैं। (20) (और) हाँ, (यह भी बतलाओ कि) वह कौन है जो तुमको रोज़ी पहुँचा दे अगर अल्लाह तआ़ला अपनी रोज़ी बन्द कर ले, (मगर ये लोग इससे भी मुतास्सिर नहीं होते) बल्कि ये लोग सरकशी और (हक़ से) नफ़रत पर जम रहे हैं। (21) सो (जिस काफ़िर का हाल ऊपर सुना है उसको सुनकर सोचो कि) क्या जो शख़्स मुँह के बल गिरता हुआ चल रहा हो वह मन्ज़िले मक़सूद पर ज़्यादा पहुँचने वाला होगा या वह शख़्स जो सीधा एक हमवार सड़क पर चला जा रहा हो। (22) आप (उनसे) कहिए कि वही (ऐसा क़ादिर व नेमत देने वाला) है

Maktab E Ashraf

لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ۝	जिसने तुमको पैदा किया, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए, (मगर) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (23) (और) आप (यह भी) कहिए कि वही है जिसने तुमको रू-ए-ज़मीन पर फैलाया, और तुम (क़ियामत के दिन) उसी के पास इकट्ठे किए जाओगे। (24) और ये लोग (जब क़ियामत का ज़िक्र सुनते हैं तो) कहते हैं कि यह वायदा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो (बतलाओ)। (25) आप (जवाब में) कह दीजिए कि यह (उसके सही वक़्त का) इल्म तो ख़ुदा ही को है, और मैं तो सिर्फ़ (ख़ुलासे के तौर पर मगर) साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (26) फिर जब उस (वायदा किए गए अ़ज़ाब) को पास आता हुआ देखेंगे तो उस वक़्त (ग़म के) मारे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जाएँगे, और (उनसे) कहा जाएगा कि यही है वह जिसको तुम माँगा करते थे (कि अ़ज़ाब लाओ, अ़ज़ाब लाओ)। (27)

फिर कौन मददगार हो

अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के इस अ़क़ीदे को नकार रहा है कि वे जिन बुज़ुर्गों की इबादत करते हैं वे उनकी इमदाद कर सकते हैं और उन्हें रोज़ियाँ पहुँचा सकते हैं। फ़रमाता है कि सिवाय ख़ुदा तआ़ला के न तो कोई मदद दे सकता है न रोज़ी पहुँचा सकता है, न बचा सकता है। काफ़िरों का यह अ़क़ीदा महज़ एक धोखा है। अब अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी रोज़ियाँ रोक ले तो फिर कोई भी उन्हें जारी नहीं कर सकता। देने लेने पर, पैदा करने और फ़ना करने पर, रिज़्क़ और मदद करने पर सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला वह्दहू ला-शरीक लहू को ही क़ुदरत है। ये लोग ख़ुद उसे दिल से जानते हैं लेकिन फिर भी उसके साथ दूसरों को शरीक करते हैं। हक़ीक़त यह है कि यह किस क़द्र अपनी गुमराही में, टेढ़ी चाल, गुनाह और सरकशी में बहे चले जाते हैं। इनकी तबीयतों में ज़िद, तकब्बुर, हक़ से इनकार बल्कि हक़ की दुश्मनी बैठ चुकी है, यहाँ तक कि भली बातों को सुनना भी इन्हें गवारा नहीं, अ़मल करना तो दूर की बात है।

फिर मोमिन व काफ़िर की मिसाल बयान फ़रमाता है कि काफ़िर की मिसाल तो ऐसी है जैसे कोई शख़्स कमर कुबड़ी करके, सर झुकाये, नज़रें नीची किये चला जा रहा है, न राह देखता है न उसे मालूम है कि कहाँ जा रहा है बल्कि हैरान व परेशान राह भूला और हक्का-बक्का है। और मोमिन की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स सीधी राह पर सीधा खड़ा होकर चल रहा है, रास्ता ख़ुद साफ़ और बिल्कुल सीधा है, यह शख़्स ख़ुद उसे अच्छी तरह जानता है और बराबर सही तौर पर चल रहा है। यही हाल उनका क़ियामत के दिन होगा कि काफ़िर तो औंधे मुँह जहन्नम में जमा किये जायेंगे और मुसलमान इज़्ज़त के साथ जन्नत में

Maktab E Ashraf

पहुँचाये जायेंगे। जैसे एक और जगह है:

أُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا....... الآية.

ज़ालिमों को, उन जैसों को और उनके उन माबूदों को जो ख़ुदा के सिवा थे जमा करके जहन्नम का रास्ता दिखा दो...... ।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मालूम किया गया- हुज़ूर! लोग मुँह के बल चलाकर किस तरह उठाये जायेंगे? आपने फ़रमाया जिसने पैरों के बल चलाया है वह मुँह के बल चलाने पर भी क़ादिर है। सहीहैन में भी यह रिवायत है कि ख़ुदा तआ़ला वह है जिसने तुम्हें पहली मर्तबा जबकि तुम कुछ न थे पैदा किया, तुम्हें कान आँख और दिल दिये, यानी अ़क्ल व समझ तुममें पैदा की, तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो, यानी अपनी इन क़ुव्वतों को ख़ुदा तआ़ला के हुक्मों के पालन में और उसकी नाफ़रमानियों से बचने में बहुत ही कम ख़र्च करते हो। ख़ुदा तआ़ला ही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया, तुम्हारी ज़बानें अलग-अलग, तुम्हारे रंग-रूप अलग-अलग, तुम्हारी शक्लों सूरतों में भिन्नता और तुम ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर बसा दिये गये। फिर बिखरने और फैल जाने के बाद वह वक़्त भी आयेगा कि तुम सब उसके सामने लाकर खड़े कर दिये जाओगे। उसने जिस तरह तुम्हें इधर-उधर फैला दिया है उसी तरह एक तरफ़ समेट लेगा, और जिस तरह शुरू में उसने तुम्हें पैदा किया इसी तरह दोबारा तुम्हें लौटायेगा।

फिर बयान होता है कि काफ़िर जो मरकर दोबारा जीने के क़ायल नहीं, वे उस दूसरी ज़िन्दगी को मुहाल और नामुम्किन समझते हैं। उसका बयान सुनकर एतिराज़ करते हैं कि अच्छा फिर वह वक़्त कब आयेगा जिसकी हमें ख़बर दे रहे हो? अगर सच्चे हो तो बता दो कि इस बिखराव के बाद इज्तिमा (जमा और एकत्र होना) कब होगा? अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि उन्हें जवाब दो कि इसका इल्म मुझे नहीं कि क़ियामत कब क़ायम होगी, इसे तो सिर्फ़ वही ग़ैब का जानने वाला ही जानता है, हाँ इतना मुझे बताया गया है कि क़ियामत आयेगी ज़रूर। मेरी हैसियत सिर्फ़ यह है कि मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँ और उस दिन की हौलनाकियों से अवगत करा दूँ। मेरा फ़र्ज़ तो सिर्फ़ तुम्हें पहुँचा देना था जिसे मैं अल्लाह का शुक्र है कि अदा कर चुका।

फिर अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि जब क़ियामत क़ायम होने लगेगी और काफ़िर उसे अपनी आँखों से देख लेंगे और मालूम कर लेंगे कि अब वह क़रीब आ गयी, क्योंकि हर आने वाली चीज़ आकर ही रहती है चाहे देर सवेर में आये। जब वे उसे आती हुई पा लेंगे जिसे अब तक झुठलाते रहे तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा, क्योंकि अपनी ग़फ़लत का नतीजा सामने देखने लगेंगे और क़ियामत की हौलनाकियाँ बदहवास किये हुए होंगी। निशानियाँ सब सामने होंगी, उस वक़्त उनसे बतौर डाँट के और बतौर ज़लील करने के कहा जायेगा- यह है वह जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे।

आप (उनसे) कहिए कि तुम यह बतलाओ कि अगर ख़ुदा तआ़ला मुझको और मेरे साथ वालों को (तुम्हारी तमन्ना के अनुसार) हलाक कर दे या (हमारी उम्मीद और अपने वायदे के अनुसार) हम पर रहमत फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब से कौन बचा लेगा? (28)	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ

Maktab E Ashraf

عَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ
مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ
مَّعِيْنٍ ۝ ع ٢ ٢

(और) आप (उनसे यह भी) कहिए कि वह बड़ा मेहरबान है, हम उस पर ईमान लाए और हम उस पर भरोसा करते हैं। सो जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन है। (यानी तुम, जैसा कि हम कहते हैं, या हम जैसा कि तुम कहते हो)। (29) आप (यह भी) कह दीजिए कि अच्छा यह बतलाओ कि अगर तुम्हारा पानी (जो कुओं में है) नीचे को उतर कर ग़ायब हो जाए, सो वह कौन है जो तुम्हारे पास सोत का पानी ले आए (यानी कुएँ की सोत को जारी कर दे)। (30)

ईमान और उसकी बरकतें, कुफ़्र और उसकी नहूसतें

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी! उन मुश्रिकों से कहो जो ख़ुदा तआ़ला की नेमतों का इनकार कर रहे हैं कि तुम जो इस बात की तमन्ना में हो कि हमें नुक़सान पहुँचे तो मान लो कि हमें ख़ुदा की तरफ़ से नुक़सान पहुँचा, या उसने मुझ पर और मेरे साथियों पर रहम किया, लेकिन इससे तुम्हें क्या? सिर्फ़ इस बात से तुम्हारा छुटकारा (निजात) तो नहीं हो सकता। तुम्हारी निजात की सूरत यह तो नहीं। निजात तो मौक़ूफ़ (निर्भर) है तौबा करने पर, ख़ुदा की तरफ़ झुकने पर, उसके दीन को मान लेने पर, हमारे बचाव या हलाकत पर तुम्हारी निजात नहीं, तुम हमारा ख़्याल छोड़कर अपनी बख़्शिश की सूरत तलाश करो।

फिर फ़रमाया कि हम रब्बुल-आ़लमीन रहमान व रहीम पर ईमान ला चुके, तमाम बातों और मामलात में हमारा भरोसा और तवक्कुल उसी की पाक ज़ात पर है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ.

उसी की इबादत कर और उसी पर भरोसा कर।

अब तुम जल्द ही जान लोगे कि दुनिया और आख़िरत में फ़लाह व कामयाबी किसे मिलती है और नुक़सान व घाटे में कौन पड़ता है। रब की रहमत किस पर है और हिदायत पर कौन है? ख़ुदा का ग़ज़ब किस पर है और ग़लत रास्ते पर कौन है?

फिर फ़रमाता है कि अगर उस पानी को जिसके पीने पर इनसान की ज़िन्दगी का मदार है, ज़मीन चूस ले, यानी ज़मीन से निकले ही नहीं चाहे तुम खोदते खोदते थक जाओ, तो सिवाय ख़ुदा तआ़ला के कोई है जो बहने वाला, उबलने वाला और जारी होने वाला पानी तुम्हें दे सके? यानी अल्लाह तआ़ला के सिवा इस पर क़ादिर कोई नहीं, वही है जो अपने फ़ज़्ल व करम से पाक-साफ़ निथरे हुए और स्वच्छ पानी को ज़मीन पर जारी करता है, जो इधर से उधर तक जाता है और बन्दों की हाजतों को पूरा करता है, ज़रूरत के मुताबिक़ हर जगह आसानी से उपलब्ध हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः मुल्क की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः क़लम

सूरः क़लम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ○ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ○ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ○ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ○ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ○ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ○ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ○	नून। क़सम है क़लम की और (क़सम है) उन (फ़रिश्तों) के लिखने की (जो आमाल के लिखने वाले हैं) (1) कि आप अपने रब के फ़ज़्ल से मजनूँ नहीं हैं। (जैसा कि नुबुव्वत के मुन्किर लोग कहते हैं) (2) और बेशक आपके लिए (इस अहकाम की तब्लीग़ पर) ऐसा अज्र है जो (कभी) ख़त्म होने वाला नहीं (3) और बेशक आप (उम्दा) अख़्लाक़ के आला पैमाने पर हैं। (4) सो (उनकी बेहूदा बातों का ग़म न कीजिए, क्योंकि) आप भी देख लेंगे और ये लोग भी देख लेंगे (5) कि तुममें किसको जुनून "यानी पागलपन" था। (6) आपका परवर्दिगार उसको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह (सही) राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जनता है। (7)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बड़े अ़क़्लमन्द हैं

"नून" वग़ैरह जैसे हुरूफ़े हिज्जा का तफ़सीली बयान सूरः ब-क़रह के शुरू में गुज़र चुका है, इसलिये यहाँ दोबारा उसको बताने की ज़रूरत नहीं। कहा गया है कि यहाँ "नून" से मुराद वह बड़ी मछली है जो पूरी दुनिया को घेर लेने वाले पानी पर है, जो सातों ज़मीनों को उठाये हुए है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि सबसे पहले ख़ुदा तआ़ला ने क़लम को पैदा किया और उसने फ़रमाया लिख! उसने कहा क्या लिखूँ? फ़रमाया तक़दीर लिख डाल। पस उस दिन से लेकर क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है, उस पर क़लम जारी हो गया। फिर ख़ुदा तआ़ला ने मछली पैदा की और पानी के बुख़ारात (भाप/बादल) बुलन्द किये जिससे आसमान बने और ज़मीन को उस मछली की पीठ पर रखा, मछली ने हरकत की जिससे ज़मीन भी हिलने लगी, पस ज़मीन पर पहाड़ गाड़ कर उसे मज़बूत और ठहरने वाली कर दिया। फिर आपने इस आयत की तिलावत की। (इब्ने अबी हातिम)

मतलब यह है कि यहाँ "नून" से मुराद यह मछली है। तबरानी में मरफ़ूअ़न मरवी है कि सबसे पहले खुदा तआ़ला ने क़लम और मछली को पैदा किया, क़लम ने मालूम किया मैं क्या लिखूँ? हुक्म हुआ हर वह चीज़ जो क़ियामत तक होने वाली है। फिर आपने पहली आयत की तिलावत की। पस नून से मुराद यह मछली है और क़लम से मुराद यह क़लम है। इब्ने अ़साकिर की हदीस में है कि सबसे पहले अल्लाह तआ़ला ने क़लम को पैदा किया, फिर नून यानी दवात को। फिर क़लम से फ़रमाया लिख ले, उसने पूछा क्या? फ़रमाया जो हो रहा है और जो होने वाला है अ़मल, रिज़्क़, उम्र, मौत वग़ैरह। पस क़लम ने सब कुछ लिख लिया। यही मुराद है इस आयत में। फिर क़लम पर मुहर लगा दी, अब वह क़ियामत तक न चलेगा। फिर अ़क़्ल को पैदा किया और फ़रमाया मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम अपने दोस्तों में तो मैं तुझे कमाल तक पहुँचाऊँगा और अपने दुश्मनों में तुझे नाक़िस रखूँगा। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- यह मशहूर था कि "नून" से मुराद वह मछली है जो सातवीं ज़मीन के नीचे है। अ़ल्लामा बग़वी रह. वग़ैरह मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि उस मछली की पीठ पर एक चट्टान है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है, उस पर एक बैल है जिसके चालीस हज़ार सींग हैं, उसकी पीठ पर सातों ज़मीनें और उनकी तमाम मख़्लूक़ है। वल्लाहु आलम।

ताज्जुब तो यह है कि इन बाज़ मुफ़स्सिरीन ने उस हदीस को भी इन्हीं मायनों पर महमूल किया है जो मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. को ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह सल्ल. मदीना आ गये हैं तो वह आपके पास आये और बहुत कुछ सवालात किये। कहा कि मैं वो बातें पूछना चाहता हूँ जिन्हें नबियों के सिवा और कोई नहीं जानता। बतलाईये क़ियामत की पहली निशानी क्या है? और जन्नतियों का पहला खाना क्या है? और क्या वजह है कि कभी बच्चा अपने बाप की तरफ़ खिंचता है कभी माँ की तरफ़? हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- ये बातें अभी अभी जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझे बता दीं। इब्ने सलाम कहने लगे फ़रिश्तों में से यही फ़रिश्ता है जो यहूदियों का दुश्मन है। आपने फ़रमाया सुनो! क़ियामत की पहली निशानी एक आग का निकलना है जो लोगों को पूरब की तरफ़ से पश्चिम की तरफ़ ले जायेगी, और जन्नतियों का पहला खाना मछली की कलेजी की ज़्यादती (अतिरिक्त हिस्सा) है और मर्द का पानी औ़रत के पानी पर छा जाये तो लड़का होता है और जब औ़रत का पानी मर्द के पानी पर आगे बढ़ जाये तो वही खींच लेती है (यानी बच्चा माँ की शक्ल पर चला जाता है)।

दूसरी हदीस में इतना और ज़्यादा है कि पूछा- जन्नतियों के इस खाने के बाद उन्हें क्या मिलेगा? फ़रमाया- जन्नती बैल ज़िबह किया जायेगा जो जन्नत में चरता चुगता रहा था। पूछा उन्हें पानी कौनसा मिलेगा? फ़रमाया सल्सबील नाम की नहर का। यह भी कहा गया है कि मुराद "नून" से नूर की तख़्ती है। एक मुर्सल ग़रीब हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यह आयत पढ़कर फ़रमाया- इससे मुराद नूर की तख़्ती और नूर का क़लम है जो क़ियामत तक के हालात पर चल चुका है। इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं- मुझे ख़बर दी गयी है कि यह नूरानी क़लम सौ साल की लम्बाई रखता है। और यह भी कहा गया है कि नून से मुराद दवात है और क़लम से मुराद क़लम है। हसन और क़तादा रह. भी यही फ़रमाते हैं। एक बहुत ही ग़रीब मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह मरवी है जो इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तआ़ला ने "नून" को पैदा किया और वह दवात है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने नून यानी दवात को पैदा किया और क़लम को पैदा किया, फिर फ़रमाया लिख। उसने पूछा क्या लिखूँ? फ़रमाया जो क़ियामत तक होने वाला है, आमाल चाहे नेक हों चाहे बुरे, रोज़ी चाहे हलाल हो चाहे हराम। फिर यह भी कि कौनसी चीज़ दुनिया में

कब जायेगी, किस क़द्र रहेगी, कैसे निकलेगी? फिर ख़ुदा तआ़ला ने बन्दों पर मुहाफ़िज़ (निगरानी करने वाले) फ़रिश्ते मुक़र्रर किये। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते हर दिन के अ़मल ख़ाज़िन फ़रिश्तों से मालूम करके लिख लेते हैं। जब रिज़्क़ ख़त्म हो जाता है, उम्र पूरी हो जाती है, मुक़र्ररा मुद्दत आ पहुँचती है तो मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते ख़ज़ाने के फ़रिश्तों के पास आकर पूछते हैं कि बताओ आज के दिन का क्या सामान है? वे कहते हैं कि बस उस शख़्स के लिये हमारे पास अब कुछ भी नहीं रहा। यह सुनकर ये फ़रिश्ते नीचे उतरते हैं तो देखते हैं कि वह मर गया। इस बयान के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया- तुम तो अ़रब वाले हो, क्या तुम ने क़ुरआन में मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों के बारे में यह नहीं पढ़ा?

اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ.

मतलब यह है कि हम तुम्हारे आमाल को असल से नक़ल करके लिख लिया करते हैं।

नोटः मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों से आमाल के लिखने वाले और ख़ज़ाना के फ़रिश्तों से वे फ़रिश्ते मुराद हैं जिनके पास तमाम हालात और आमाल की तफ़सील स्टॉक में मौजूद है।

यह तो था लफ़्ज़ "नून" के मुताल्लिक़ बयान अब क़लम के बारे में सुनिये। बज़ाहिर मुराद यहाँ आ़म क़लम है, जिससे लिखा जाता है। जैसे एक दूसरी जगह अल्लाह का फ़रमान हैः

اَلَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ.

यानी उस ख़ुदा तआ़ला ने क़लम से लिखना सिखाया।

पस इसकी क़सम खाकर इस बात पर इत्तिला की जाती है कि मख़्लूक़ पर मेरी एक नेमत यह भी है कि मैंने उन्हें लिखना सिखाया, जिससे उलूम तक उनकी रसाई हो सके। इसी लिये इसके बाद फ़रमायाः

وَمَا يَسْطُرُوْنَ.

यानी उस चीज़ की क़सम जो लिखते हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इसकी तफ़सीर यह भी मन्क़ूल है कि उस चीज़ की जो जानते हैं। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि मुराद इससे फ़रिश्तों का लिखना है जो बन्दों के आमाल लिखते हैं। कुछ दूसरे मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि मुराद इससे वह क़लम है जो क़ुदरती तौर पर चला और तक़दीरें लिखीं, आसमान व ज़मीन की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले। और इस क़ौल की दलील में यह जमाअ़त वे हदीसें ज़िक्र करती है जो क़लम के ज़िक्र में मौजूद हैं। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि क़लम से मुराद वह क़लम है जिससे ज़िक्र लिखा गया।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तू अल्लाह के शुक्र से दीवाना नहीं, जैसे कि तेरी क़ौम के जाहिल और हक़ के इनकारी लोग कहते हैं, बल्कि तेरे लिये बहुत बड़ा अज्र और बेहिसाब सवाब है, जो न ख़त्म हो न टूटे न कटे, क्योंकि तूने रिसालत (अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने) का हक़ अदा कर दिया है और हमारी राह में सख़्त से सख़्त मुसीबतें झेली हैं। हम तुझे बेहिसाब अज्र देंगे। तू बहुत बड़े और उम्दा अख़्लाक़ पर है यानी दीने इस्लाम पर, और बेहतरीन अदब पर है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से हुज़ूरे पाक सल्ल. के अख़्लाक़ के बारे में सवाल किया गया तो आपने जवाब दिया कि आपका अख़्लाक़ क़ुरआन था। सअ़द फ़रमाते हैं- यानी जैसे कि क़ुरआन और हदीस में है। सिद्दीक़ा ने पूछा- क्या तूने क़ुरआन नहीं पढ़ा? पूछने वाले हज़रत सअ़द बिन हिशाम रज़ि. ने कहा हाँ पढ़ा है। आपने फ़रमाया बस तो आपका ख़ुल्क़ (अख़्लाक़)

Maktab E Ashraf

क़ुरआने करीम था। मुस्लिम में यह हदीस पूरी है जिसे हम सूरः मुज़्ज़म्मिल की तफ़सीर में बयान करेंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला। बनू अस्वद के एक शख़्स ने हज़रत आ़यशा से यही सवाल किया था तो आपने यही फ़रमाकर फिर आयतः

وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ

(यानी यही इस सूरत की आयत नम्बर 4) तिलावत फ़रमाई। उसने कहा कोई एक-आध वाक़िआ़ तो बयान कर दीजिए। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- सुनो! एक मर्तबा मैंने भी आपके लिये खाना पकाया और हज़रत हफ़्सा ने भी। मैंने अपनी बाँदी से कहा कि देखो अगर मेरे खाने से पहले हज़रत हफ़्सा के यहाँ का खाना आ जाये तो तू गिरा देना। चुनाँचे उसने यही किया और बर्तन भी टूट गया। हुज़ूर सल्ल. बिखरे हुए खाने को समेटने लगे और फ़रमाया- इस बर्तन के बदले साबुत बर्तन तुम दो। ख़ुदा की क़सम और कुछ डाँटा-डपटा नहीं। (मुस्नद अहमद)

नोटः यह हुज़ूरे पाक की आपके प्रति हद से बढ़ी हुई मुहब्बत के सबब था, हर एक की यही इच्छा थी कि हर तरह की ख़िदमत का मुझे सब से ज़्यादा मौक़ा मिले। और जहाँ कई सौतनें हों वहाँ यह जज़्बा और ज़्यादा दिखाई देता है, यह आ़म इनसानी फ़ितरत है, लिहाज़ा किसी तरह की बदगुमानी इन पाक नुफ़ूस से जायज़ नहीं। इसकी वाज़ेह मिसाल यह है कि नबी पाक सल्ल. की पाक बीवियाँ एक दूसरी बीवी की ख़ूबियों और कमालात का बाद में खुले दिल से एतिराफ़ करती थीं। इससे मालूम हुआ कि यह वक़्ती भावना होती थी जिसका सबब नबी करीम सल्ल. की हद से बढ़ी हुई मुहब्बत और ख़िदमत का जज़्बा था। अल्लाह तआ़ला हमारी इन माँओं को अपनी हमेशा-हमेशा की रज़ामन्दियों से नवाज़े और हमें उनका हक़ समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

मतलब इस हदीस का जो कई सनदों से विभिन्न अलफ़ाज़ में कई किताबों में है, यह है कि एक तो आप सल्ल. की फ़ितरत और पैदाईश में ही ख़ुदा तआ़ला ने पसन्दीदा अख़्लाक़, बेहतरीन ख़स्लतें और पाकीज़ा आ़दतें रखी थीं, तो इस तरह आप सल्ल. का अ़मल क़ुरआने करीम पर ऐसा था कि गोया अहकामे क़ुरआन का मुजस्सम अ़मली नमूना आप हैं। हर हुक्म को बजा लाने और हर मना की गयी बात से रुक जाने पर आपकी हालत यह थी कि गोया क़ुरआन में जो कुछ है वह आपकी आ़दतों और आपके करीमाना अख़्लाक़ का बयान ही है। हज़रत अनस रज़ि. का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. की दस साल तक ख़िदमत की लेकिन किसी दिन भी आपने अदना दर्जे की नाराज़गी का इज़हार तक नहीं फ़रमाया, किसी करने के काम को न करूँ या न करने के काम को कर गुज़रूँ तो भी डाँट-डपट तो क्या इतना भी न फ़रमाते कि ऐसा क्यों हुआ? हुज़ूर सल्ल. सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाले थे। हुज़ूरे पाक की हथेली से ज़्यादा नर्म न तो रेशम है न कोई और चीज़। हुज़ूर सल्ल. के पसीने से ज़्यादा ख़ुशबू वाली चीज़ मैंने तो कोई नहीं सूँघी, न मुश्क और न इत्र। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और सबसे ज़्यादा उम्दा अख़्लाक़ वाले थे। आपका क़द न तो बहुत लम्बा था न आप छोटे क़द के थे। इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं। शमाईले तिर्मिज़ी में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने हाथ से न तो कभी किसी ख़ादिम या गुलाम को मारा न बीवी बच्चों को, न किसी और को। हाँ ख़ुदा की राह का जिहाद अलग चीज़ है। जब कभी दो कामों में आपको इख़्तियार दिया जाता तो आप उसे पसन्द फ़रमाते जो ज़्यादा आसान होता। हाँ यह और बात है कि उसमें

कुछ गुनाह हो तो आप उससे बहुत दूर हो जाते। कभी भी हुज़ूर सल्ल. ने अपना बदला किसी से नहीं लिया, हाँ यह और बात है कि कोई खुदा तआ़ला की हुर्मतों को तोड़ता तो आप खुदा के अहकाम जारी करने के लिये ज़रूर उससे नाराज़ होते।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. इरशाद फ़रमाते हैं- मैं बेहतरीन अख़्लाक़ और पाकीज़ा तरीन आदतों को पूरा करने के लिये आया हूँ। फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! आप और आपके मुख़ालिफ़ और मुन्किर अभी-अभी (यानी जल्दी ही) जान लेंगे कि दर असल गुमराह कौन था? जैसे एक और जगह है:

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرِ.

उन्हें अभी कल ही मालूम हो जायेगा कि झूठा और शेख़ीबाज़ शरारती कौन था? एक और जगह है:

وَاِنَّآ اَوْاِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ.

हम या तुम हिदायत पर हैं या खुली गुमराही पर।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी यह हक़ीक़त क़ियामत के दिन खुल जायेगी। आप से मरवी है कि मफ़्तून मजनून (दीवाने) को कहते हैं। मुजाहिद रह. वग़ैरह का भी यही क़ौल है। क़तादा रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं- यानी कौन शैतान से ज़्यादा नज़दीक है? मफ़्तून के ज़ाहिरी मायने यह हैं कि जो हक़ से बहक जाये और गुमराह हो जाये।

फिर फ़रमाया कि तुममें से बहकने वाले और सही रास्ते वाले सब खुदा पर ज़ाहिर हैं, उसे ख़ूब मालूम है कि सही रास्ते से किस का क़दम फिसल गया है।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ○ وَدُّوْا لَوْتُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ○ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ○ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ○ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ○ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ○ اَنْ كَانَ ذَامَالٍ وَّبَنِيْنَ ○ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ○

तो आप उन झुठलाने वालों का (कभी) कहना न मानिए। (जैसा कि अब तक भी नहीं माना)। (8) ये लोग चाहते हैं कि आप (अपनी ज़िम्मेदारी यानी तब्लीग़ में) ढीले हो जाएँ तो ये लोग भी ढीले हो जाएँ। (9) और आप (ख़ास तौर से) किसी ऐसे शख़्स का कहना न मानें जो बहुत क़समें खाने वाला हो। (मुराद झूठी क़समें खाने वाला है)। (10) बेवक़्अ़त हो, ताना देने वाला हो, चुग़लियाँ लगाता फिरता हो (11) नेक काम से रोकने वाला हो, (एतिदाल की) हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहों का करने वाला हो (12) और सख़्त मिज़ाज हो, (और) इन (सब) के अ़लावा हरामज़ादा (भी) हो। (13) इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला हो। (14) जब हमारी आयतें उसके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये बे-सनद बातें हैं जो

Maktab-e-Ashraf

पहलों से नक़्ल होती हुई चली आती हैं। (15) हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग़ लगा देंगे। (16)	سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝

ऐसे लोगों से आप कोई वास्ता न रखिये

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी! जो नेमतें हमने तुझे दीं, जो सीधा रास्ता और आला अख़्लाक़ हमने तुझे अ़ता फ़रमाया, अब तुझे चाहिये कि हमारी न मानने वालों की तू न मान। उनकी तो ख़ुशी ही यह है कि आप ज़रा भी नर्म पड़ें तो ये खिल जायें। और यह भी मतलब है कि ये चाहते हैं कि आप इनके झूठे माबूदों की तरफ़ कुछ तो ध्यान दें, हक़ से ज़रा सा तो इधर-उधर हो जायें। फिर फ़रमाता है कि ज़्यादा क़समें खाने वाले कमीने शख़्स की भी न मान, चूँकि झूठे शख़्स को अपनी ज़िल्लत और झूठ बोलने के ज़ाहिर हो जाने का डर रहता है, इसलिये वह क़समें खा-खाकर दूसरे को अपना यक़ीन दिलाना चाहता है। क़समों पर क़समें खाये चला जाता है और ख़ुदा के नामों को बेमौक़ा इस्तेमाल करता फिरता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि "महीन" से मुराद काज़िब (झूठा) है। मुजाहिद रह. कहते हैं कि कमज़ोर दिल वाला। हसन रह. कहते हैं कि "हल्लाफ़" मुकाबरा (अपनी बड़ाई जताने और घमंड) करने वाला और "महीन' ज़ईफ़ कमज़ोर। "हम्माज़" ग़ीबत करने वाला, चुग़लख़ोर जो इधर की उधर लगाये और उधर की इधर, ताकि फ़साद हो जाये, तबीयतों में बल और दिल में बैर आ जाये।

रसूलुल्लाह सल्ल. के रास्ते में दो क़ब्रें आ गयीं, आपने फ़रमाया इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह पर नहीं बल्कि ऐसी बातों पर जो बज़ाहिर बहुत हल्की मालूम होती हैं, एक तो पेशाब करने में पर्दे का ख़्याल न रखता था, दूसरा चुग़लख़ोर था......। (बुख़ारी व मुस्लिम) हुज़ूरे पाक सल्ल. फ़रमाते हैं कि चुग़लख़ोर जन्नत में न जायेगा। (मुस्नद) दूसरी रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. ने यह हदीस उस वक़्त सुनाई थी जब आप से कहा गया कि यह शख़्स पुलिस का आदमी है (चूँकि पुलिस का काम दूसरों हालात की टोह लेकर अपने महकमे में उनको बताना है, यह भी एक तरह की चुग़लख़ोरी में दाख़िल है, जबकि बिना वजह किसी सही और दीनी इरादे में जासूसी का फ़र्ज़ अन्जाम दिया जाये)।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि तुममें सबसे भला शख़्स कौन है? लोगों ने कहा ज़रूर इरशाद फ़रमायें। फ़रमाया- जब उसे देखा जाये तो ख़ुदा याद आ जाये, और सुन लो सबसे बदतर वह शख़्स है जो चुग़लख़ोर हो, दोस्तों में फ़साद डालने वाला हो, पाक साफ़ लोगों को तोहमत लगाने वाला हो। तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है। फिर उन बुरे लोगों की नापाक आ़दतें और हरकतें बयान हो रही हैं कि वह भलाईयों से रुकने वाला और दूसरों को रोकने वाला है, हलाल चीज़ों और हलाल कामों से हटकर हराम ख़ोरी और हरामकारी में पड़ता है। गुनाहगार, बुरे किरदार वाला और हराम चीज़ों को इस्तेमाल करने वाला है। बुरी आ़दत वाला, बुरी ज़बान बोलने वाला, माल जमा करके रखने वाला और न देने वाला है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जन्नती लोग आ़जिज़ व ज़ईफ़ हैं (यानी दुनिया में जिन नेक लोगों को कमज़ोर और बेहैसियत समझा जाता है, जिन्हें कमज़ोर गिना जाता है) जो ख़ुदा के यहाँ इस बुलन्द मर्तबे में हैं कि अगर वे किसी बात पर क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआ़ला उसको पूरा कर दे। और जहन्नमी लोग सरकश, घमण्डी और अपने को बड़ा समझने वाले होते हैं। एक और हदीस में है कि बुरे अख़्लाक़ वाला, ख़ूब खाने पीने वाला, लोगों पर ज़ुल्म करने

वाला, पेटू आदमी। लेकिन इस रिवायत को अक्सर रावियों ने मुर्सल की हैसियत से बयान किया है।

एक और हदीस में है कि उस नालायक़ शख़्स पर आसमान रोता है जिसे ख़ुदा तआ़ला ने तन्दुरुस्ती दी, पेट भर खाने को दिया, माल व रुतबा और इ़ज़्ज़त भी अ़ता फ़रमाई, फिर भी लोगों पर ज़ुल्म व सितम कर रहा है। यह हदीस भी दो मुर्सल सनदों से मरवी है। ग़र्ज़ कि "उतुल्ल" कहते हैं जिसका बदन सही हो, ताक़तवर हो और ख़ूब खाने पीने वाला दबंग शख़्स हो।

"ज़नीम" से मुराद बदनाम है जो बुराई में मशहूर हो। अ़रब की लुग़त में ज़नीम उसे कहते हैं जो किसी क़ौम में से समझा जाता हो लेकिन दर असल उसका न हो। अ़रब के शायरों ने उसे इसी मायने में लिया है। यानी जिसका नसब सही न हो। कहा गया है कि मुराद इससे अख़्नस बिन शुरैक़ सक़फ़ी है जो बनू ज़ोहरा का हलीफ़ (साथी) था, और बाज़ कहते हैं कि यह अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस ज़ोहरी है। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि इससे हरामी बच्चा मुराद है। यह भी बयान हुआ है कि जिस तरह एक बकरी जो तमाम बकरियों में से अलग थलग हो और चिरा हुआ कान अपनी गर्दन पर लटकाये हुए हो तो वह एक निगाह में पहचान ली जाती है इसी तरह काफ़िर मोमिनों में पहचान लिया जाता है। इसी तरह के और भी बहुत से अक़वाल हैं लेकिन ख़ुलासा सब का सिर्फ़ इसी क़द्र है कि ज़नीम वह शख़्स है जो बुराई से मशहूर हो और उमूमन ऐसे लोग इधर उधर से मिले हुए होते हैं, जिनके सही नसब (ख़ानदान व नस्ल) और असली बाप का पता नहीं होता। ऐसों पर शैतान का ग़लबा बहुत ज़्यादा रहा करता है। जैसे एक हदीस में है कि ज़िना की औलाद जन्नत में नहीं जायेगी (यानी आ़म तौर पर ऐसे लोग जन्नती कामों से मेहरूम रहते हैं)। एक और रिवायत में है कि ज़िना की औलाद तीन बड़े लोगों की बुराई का मजमूआ़ है, अगर वह भी अपने माँ बाप के जैसे काम करे।

फिर फ़रमाया कि उसकी इन शरारतों की वजह यह है कि वह मालदार और बेटों का बाप बन गया है। हमारी इस नेमत का गुणगान तो क्या करता और उल्टा हमारी आयतों को झुठलाता और तौहीन करके कहता फिरता है कि ये तो पुराने अफ़साने हैं। एक और जगह ख़ुदा तआ़ला ने फ़रमाया है:

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا...... الخ.

मुझे छोड़ दे और उसे जिसे मैंने अकेला व तन्हा पैदा किया है, और बहुत सा माल दिया है, और हाज़िर रहने वाले लड़के दिये हैं। और भी बहुत फ़राग़त दे रखी है फिर भी उसकी हिर्स है कि मैं उसे और दूँ। हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता, यह तो मेरी आयतों का मुख़ालिफ़ है, मैं इसे जल्द ही बदतरीन मुसीबत में डालूँगा। उसने ग़ौर व फ़िक्र करके अन्दाज़ा लगाया, यह तबाह हो, कितनी बड़ी तजवीज़ उसने सोची, मैं फिर कहता हूँ कि यह बरबाद हो, उसने कैसी बुरी तजवीज़ की। उसने फिर नज़र डाली और मुँह बनाकर चेहरा बिगाड़ लिया, फिर मुँह फेरकर बैठने लगा और कह दिया कि यह कलामुल्लाह तो पुराना नक़ल किया हुआ है। साफ़ ज़ाहिर है कि यह इनसानी कलाम है। उसकी इस बात पर मैं भी उसे सक़र (जहन्नम का एक तब्क़ा) में डालूँगा। तुझे क्या मालूम कि सक़र क्या है? न वह किसी को बाक़ी रखती है न छोड़ती है, पिण्डली पर लिपट जाती है, उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुतैयन हैं। इसी तरह यहाँ भी फ़रमाया कि उसकी नाक पर हम दाग़ लगायेंगे (यानी घमण्ड के सबब वह बहुत इतराता था तो हम उसका ग़ुरूर तोड़ेंगे और उसकी नाक नीची करेंगे)। उसे हम इस क़द्र रुस्वा करेंगे कि उसकी बुराई किसी पर छुपी न रहेगी, हर एक उसे जान पहचान लेगा। जैसे निशान वाली नाक वाले को एक निगाह में हज़ारों आदमियों में लोग पहचान लेते

हैं, और जो दाग़ छुपायेगा तो छुप न सकेगा।

यह भी कहा गया है कि बदर वाले दिन उसकी नाक पर तलवार लगेगी, और यह भी कहा गया है कि क़ियामत वाले दिन जहन्नम की मुहर लगेगी, यानी मुँह काला कर दिया जायेगा। तो नाक से मुराद पूरा चेहरा हुआ। इमाम अबू जाफ़र इब्ने जरीर रह. ने इन तमाम अक़्वाल को नक़ल करके फ़रमाया है कि इन सब में मुवाफ़क़त और तालमेल इस तरह हो जाता है कि ये तमाम बातें उसमें जमा हो जायेंगी, यह भी होगा और वह भी होगा। दुनिया में रुस्वा होगा, सच-मुच नाक पर निशान लगेगा, आख़िरत में भी निशान वाला मुजरिम बनेगा। हक़ीक़त में यह है भी बहुत सही बात। इब्ने अबी हातिम में अल्लाह के रसूल का फ़रमान है कि बन्दा हज़ारों फिर हज़ारों बरस तक ख़ुदा के यहाँ मोमिन लिखा रहता है लेकिन मरता इस हालत में है कि ख़ुदा उस पर नाराज़ होता है। और बन्दा ख़ुदा के यहाँ काफ़िर हज़ारों साल तक लिखा रहता है फिर मरते वक़्त ख़ुदा तआ़ला उससे ख़ुश हो जाता है।

नोटः यानी आख़िर वक़्त में दोनों ही कोई ऐसा अ़मल कर बैठते हैं जिससे उनकी पिछली हालत बदल जाती है। मोमिन काफ़िर और काफ़िर मोमिन बन जाता है। इसलिये ज़रूरी है कि हर मोमिन बन्दा अपने ईमान की हिफ़ाज़त करता रहे, आख़िर वक़्त तक अल्लाह से डरता रहे और अपने आमाल की निगरानी करता रहे। अल्लाह तआ़ला हम सब का ईमान पर ख़ात्मा फ़रमाये आमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

जो शख़्स दूसरों के ऐब तलाश करने और चुग़लख़ोरी की हालत में मरेगा और जो लोगों को बदनाम करने वाला होगा तो क़ियामत के दिन उसकी नाक पर दोनों होंठों की तरफ़ से निशान लगा दिया जायेगा, जो उस मुजरिम की पहचान बन जायेगा।

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝ فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ۝ فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ۙ	हमने उनकी आज़माईश कर रखी है जैसे हमने बाग़ वालों की आज़माईश की थी, जबकि उन लोगों ने (यानी उनमें से अक्सर ने या बाज़ ने) क़सम खाई कि उस (बाग़) का फल ज़रूर सुबह चलकर तोड़ लेंगे। (17) और (ऐसा यक़ीन व भरोसा हुआ कि) उन्होंने इन्शा-अल्लाह भी नहीं कहा। (18) सो उस बाग़ पर आपके रब की तरफ़ से एक फिरने वाला (अ़ज़ाब) फिर गया और वे सो रहे थे। (19) फिर सुबह को वह बाग़ ऐसा रह गया जैसा कटा हुआ खेत (कि ख़ाली ज़मीन रह जाती है)। (20) सो सुबह के वक़्त (सोकर जो उठे तो) एक-दूसरे को पुकार कर कहने लगे (21) कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुमको फल तोड़ना है। (22) फिर वे लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करते चले (23) कि आज तुम तक कोई मोहताज न

Maktab E Ashraf

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ۝ فَلَمَّا
رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ۝ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ
لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى
بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا
طٰغِيْنَ ۝ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا
مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ
الْعَذَابُ ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ
كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

आने पाए। (24) और (अपने ख़्याल में) अपने को उसके न देने पर क़ादिर समझकर चले। (25) फिर जब (वहाँ पहुँचे और) उस बाग़ को (उस हालत में) देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भूल गए। (26) बल्कि (जगह तो वही है लेकिन) हमारी क़िस्मत ही फूट गई (कि बाग़ का यह हाल हो गया)। (27) उनमें जो किसी क़द्र अच्छा आदमी था वह कहने लगा कि क्या मैंने तुमको कहा न था, अब (तौबा और) तस्बीह क्यों नहीं करते। (28) सब (तौबा के तौर पर) कहने लगे कि हमारा परवर्दिगार पाक है, बेशक हम ख़तावार हैं। (29) फिर एक-दूसरे को मुख़ातब बनाकर आपस में इल्ज़ाम देने लगे। (30) (फिर सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे बेशक हम हद से निकलने वाले थे। (सब मिलकर तौबा कर लो) (31) शायद (तौबा की बरकत से) हमारा परवर्दिगार हमको उससे अच्छा बाग़ उसके बदले दे दे, (अब) हम अपने रब की तरफ़ रुजू होते हैं। (32) इस तरह अ़ज़ाब हुआ करता है और आख़िरत का अ़ज़ाब इस (दुनियावी अ़ज़ाब) से भी बढ़कर है। क्या अच्छा होता कि ये लोग (इस बात को) जान लेते (ताकि ईमान ले आते)। (33)

एक सबक़ लेने वाली दास्तान

यहाँ उन काफ़िरों की मिसाल बयान हो रही है जो हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत को झुठला रहे थे, कि जिस तरह ये बाग़ वाले थे कि ख़ुदा की नेमत की नाशुक्री की तो ख़ुदा तआ़ला के अ़ज़ाब में अपने आपको डाल दिया, यही हालत इन काफ़िरों की है कि ख़ुदा की नेमत यानी हुज़ूर सल्ल. की पैग़म्बरी की नाशुक्री यानी इनकार ने इन्हें भी ख़ुदा तआ़ला की नाराज़गी का हक़दार बना दिया है। तो फ़रमाता है कि हमने उन्हें भी आज़मा लिया, जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माया था। जिस बाग़ में तरह-तरह के फल मेवे वग़ैरह थे, उन लोगों ने आपस में क़समें खायीं कि सुबह होने से पहले ही फल उतार लेंगे ताकि फ़क़ीरों मिस्कीनों और माँगने वालों को पता न चले जो वे आ खड़े हों और हमें उनको भी देना पड़े, बल्कि तमाम फल और मेवे ख़ुद ही ले आयेंगे। अपनी इस तदबीर की कामयाबी पर उन्हें बड़ा भरोसा था और ख़ुशी में फूले न समाते थे (कि बहुत अच्छी तरकीब समझ में आयी, अब किसी को कुछ देना न पड़ेगा), यहाँ तक कि ख़ुदा

को भी भूल गये, इन्शा-अल्लाह तक किसी की ज़बान से न निकला, इसलिये उनकी यह क़सम पूरी न हुई। रात ही रात में उनके पहुँचने से पहले आसमानी आफ़त ने सारे बाग़ को जलाकर राख कर दिया। ऐसा हो गया जैसे काली रात और कटी हुई खेती। इसी लिये हुज़ूर सल्ल. इरशाद फ़रमाते हैं कि लोगो! गुनाहों से बचो, गुनाहों की नहूसत की वजह से इनसान उस रोज़ी से भी मेहरूम कर दिया जाता है जो उसके लिये तैयार कर दी गयी है। फिर हुज़ूर सल्ल. ने इन दोनों आयतों की तिलावत की। ये लोग गुनाह की वजह से अपने बाग़ के फल और उसकी पैदावार से मेहरूम हो गये। (इब्ने अबी हातिम)

सुबह के वक़्त ये आपस में एक दूसरे को आवाज़ें देने लगे कि अगर फल उतारने का इरादा है तो अब देर न लगाओ, सवेरे ही चल पड़ो। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह बाग़ अंगूर का था। अब ये चुपके-चुपके बातें करते हुए चले ताकि कोई सुन न ले, और ग़रीब-गुरबा को पता न लग जाये। चूँकि उनकी काना-फूसी उस ख़ुदा तआ़ला से तो छुपी नहीं रह सकती थीं जो दिल के भेदों से भी पूरी तरह वाक़िफ़ रहता है। वह बयान फ़रमाता है कि उनकी वो ख़ुफ़िया बातें यह थीं कि देखो होशियार रहो, कोई मिस्कीन भनक पाकर कहीं आ न जाये, हरगिज़ किसी फ़क़ीर को बाग़ में घुसने ही न देना। अब क़ुव्वत व सख़्ती, पुख़्ता इरादे और ग़रीबों पर ग़ुस्से के साथ अपने बाग़ को चले। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि "हर्द" उनकी बस्ती का नाम था, लेकिन यह कुछ ज़्यादा सही नहीं मालूम होता। ये जानते थे कि अब हम फलों पर क़ाबिज़ हैं, अभी उतार कर सब ले आयेंगे। लेकिन जब वहाँ पहुँचे तो हैरान व परेशान रह गये, देखते हैं कि लहलहाता हुआ हरा-भरा बाग़, लदे हुए दरख़्त और पके हुए फल सब ग़ारत और बरबाद हो चुके हैं। सारे बाग़ में आँधी फिर गयी है, और तमाम बाग़ मेवों समेत जलकर कोयला हो गया है, कोई फल नहीं रहा, सारी तरोताज़गी ख़ुश्की से बदल गयी है, बाग़ सारा का सारा जलकर राख हो गया है। दरख़्तों के काले काले डरावने ठुड खड़े हैं।

ये लोग पहले तो समझे कि हम रास्ता भूल गये, किसी और बाग़ में चले आये। और यह मतलब भी हो सकता है कि हमारा काम का तरीक़ा ग़लत था जिसका नतीजा यह है। फिर ध्यान से देखने से जब यह यक़ीन हो गया कि यह बाग़ तो हमारा ही है तब समझ गये और कहने लगे है तो यही लेकिन हम बद-क़िस्मत हैं। हमारे नसीब में ही इसका फल और फ़ायदा नहीं। उन सब में जो अ़दल व इन्साफ़ वाला और भलाई और बेहतरी वाला था, वह बोल पड़ा कि देखो मैं तो पहले ही तुम से कहता था कि इन्शा-अल्लाह क्यों नहीं कहते? इमाम सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि उनके ज़माने में सुब्हानल्लाह कहना भी इन्शा-अल्लाह कहने के बराबर था। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि इसके मायने ही इन्शा-अल्लाह कहने के हैं, और यह भी कहा गया है कि उनमें से नेक शख़्स ने उनसे कहा कि देखो मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि तुम क्यों ख़ुदा की पाकीज़गी और उसकी तारीफ़ व सना नहीं करते?

यह सुनकर अब वे कहने लगे कि हमारा रब पाक है, बेशक हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। अब इताअ़त बजा लाये (यानी नेक बन गये) जबकि अ़ज़ाब पहुँच चुका, अब अपनी ग़लती को माना जब सज़ा दे दी गयी। अब तो एक दूसरे को मलामत करने लगे कि हमने बहुत ही बुरा किया कि मिस्कीनों का हक़ मारना चाहा और ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी से रुक गये। फिर सभों ने कहा कि कोई शक नहीं कि हमारी सरकशी (नाफ़रमानी और तकब्बुर) हद से बढ़ गयी इसी वजह से यह अ़ज़ाब आया। फिर कहते हैं कि शायद हमारा रब हमें इससे बेहतर बदला दे। यानी दुनिया में, और यह भी मुम्किन है कि आख़िरत के ख़्याल से उन्होंने यह कहा हो। वल्लाहु आलम।

Maktab E Ashraf

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि यह वाक़िआ यमन वालों का है। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि ये लोग जरदान के रहने वाले थे जो सनआ (यमन की राजधानी) से छह मील के फ़ासले पर एक बस्ती है। कुछ दूसरे मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि ये हब्शा के रहने वाले थे, मज़हब के एतिबार से अहले किताब थे। यह बाग़ उन्हें उनके बाप की मीरास में मिला था, उसका यह दस्तूर था कि बाग़ की पैदावार में से बाग़ का ख़र्च निकाल कर अपने और अपने बाल-बच्चों के लिये साल भर का ख़र्च रखकर बाक़ी नफ़ा ख़ुदा के नाम सदक़ा कर देता था। उसके इन्तिक़ाल के बाद इन बच्चों ने आपस में मश्विरा किया और कहा कि हमारा बाप तो बेवक़ूफ़ था जो इतनी बड़ी रक़म हर साल इधर-उधर देता था, हम इन फ़क़ीरों को अगर न दें और अपना माल बाक़ायदा संभालें तो बहुत जल्द दौलतमन्द बन जायेंगे। यह इरादा उन्होंने पुख़्ता कर लिया तो उन पर यह अज़ाब आया जिससे असल माल भी तबाह कर दिया और बिल्कुल ख़ाली हाथ रह गये।

फिर फ़रमाता है कि जो शख़्स भी ख़ुदा तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ करे, अल्लाह तआला की नेमतों में बुख़्ल (कन्जूसी) करे और ख़ुदा तआला की नेमतों की नाशुक्री करे, उस पर इसी तरह के अज़ाब नाज़िल होते हैं, और ये तो दुनियावी अज़ाब हैं आख़िरत के अज़ाब तो अभी बाक़ी हैं जो बहुत सख़्त और बदतरीन हैं। बैहक़ी की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने रात के वक़्त खेती काटने और बाग़ के फल उतारने से मना फ़रमाया है।

इसमें कोई शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास राहत व आराम की जन्नतें हैं। (34) क्या हम फ़रमाँबरदारों को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे? (35) तुमको क्या हुआ, तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (36) क्या तुम्हारे पास कोई (आसमानी) किताब है जिसमें पढ़ते हो (37) कि उसमें तुम्हारे लिए वह चीज़ (लिखी) हो जिसको तुम पसन्द करते हो। (38) क्या हमारे ज़िम्मे कुछ क़समें चढ़ी हुई हैं जो तुम्हारी ख़ातिर से खाई गई हों, और क़समें क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली हों (जिनका मज़मून यह हो) कि तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जो तुम फ़ैसला कर रहे हो (यानी सवाब व जन्नत)। (39) उनसे पूछिए कि उनमें उसका कौन ज़िम्मेदार है। (40) क्या उनके ठहराए हुए (ख़ुदाई में) कुछ शरीक हैं? सो उनको चाहिए कि ये अपने उन शरीकों को पेश करें अगर ये सच्चे हैं। (41)	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ○ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ○ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ○ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ○ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ○ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ○ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ○ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ○

परहेज़गारी और नेकी की बरकतें

ऊपर चूँकि दुनियावी जन्नत वालों का हाल बयान हुआ था और ख़ुदा तआला की नाफ़रमानी और

Maktab E Ashraf

उसके हुक्म के ख़िलाफ़ करने से उन पर जो बला और आफ़त आयी उसका ज़िक्र था, इसलिये अब उन मुत्तक़ी और परहेज़गार लोगों का हाल ज़िक्र किया गया जिन्हें आख़िरत में जन्नतें मिलेंगी, जिनकी नेमतें न फ़ना होंगी न घटेंगी न ख़त्म होंगी न सड़ेंगी न गलेंगी। फिर फ़रमाता है- क्या ऐसा हो सकता है कि मुसलमान और गुनाहगार जज़ा (बदला पाने) में बराबर हो जायें? क़सम है ज़मीन व आसमान के रब की कि यह नहीं हो सकता। क्या हो गया है तुम किस तरह यह चाहते हो? क्या तुम्हारे हाथों में ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई कोई ऐसी किताब है जो ख़ुद तुम्हें भी याद हो और अगलों के हाथों तुम पिछलों तक पहुँची हो और उसमें वही हो जो तुम्हारी तमन्ना है और जो तुम कह रहे हो? या हमारा कोई मज़बूत वायदा और अ़हद तुम से है? कि तुम जो कुछ कह रहे हो वही होगा और तुम्हारी ये बेजा और ग़लत ख़्वाहिशें पूरी होकर ही रहेंगी? उनसे ज़रा पूछो तो कि इस बात का कौन ज़ामिन (गारंटी लेने वाला) है और किसके हाथ में यह ज़िम्मेदारी है? क्या यही हैं जो तुम्हारे झूठे माबूद हैं? इन्हीं को अपनी सच्चाई के सुबूत में पेश करो।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝ فَذَرْنِىْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِىْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِىْ مَتِيْنٌ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝

(वह दिन याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन साक़ "यानी पिण्डली" की तजल्ली फ़रमाई जाएगी और सज्दे की तरफ़ लोगों को बुलाया जाएगा, सो ये (काफ़िर) लोग सज्दा न कर सकेंगे। (42) (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी के मारे) झुकी होंगी (और) साथ ही उनपर ज़िल्लत छाई होगी। और (वजह इसकी यह है कि) ये लोग (दुनिया में) सज्दे की तरफ़ बुलाए जाया करते थे और वे सही सालिम थे (यानी उस पर क़ादिर थे)। (43) और जो इस कलाम को झुठलाते हैं उनको (इस मौजूदा हाल पर) रहने दीजिए। हम उनको धीरे-धीरे (जहन्नम की तरफ़) लिए जा रहे हैं, इस तौर पर कि उनको ख़बर भी नहीं। (44) और (दुनिया में अ़ज़ाब नाज़िल कर डालने से) उनको मोहलत देता हूँ, बेशक मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। (45) क्या आप उनसे कुछ बदला माँगते हैं कि वे उस तावान से दबे जाते हैं। (इसलिए आपकी इताअ़त से नफ़रत है)। (46) या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये (उसको) लिख लिया करते हैं। (47)

पिण्डली की तजल्ली के द्वारा इम्तिहान

ऊपर चूँकि बयान हुआ था कि परहेज़गारों के लिये नेमतों वाली जन्नतें हैं, इसलिये यहाँ बयान हो रहा

है कि ये नेमतें उन्हें कब मिलेंगी? तो फ़रमा दिया कि उस दिन जिस दिन पिण्डली खोल दी जायेगी। यानी क़ियामत के दिन, जो दिन बड़ी हौलनाकियों वाला, ज़लज़लों वाला, इम्तिहान वाला और आज़माईश वाला बड़े-बड़े अहम मामलात के ज़ाहिर होने का दिन होगा। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. की हदीस है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना, फ़रमाते थे कि हमारा रब अपनी पिण्डली खोल देगा, पस हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत सज्दे में गिर पड़ेगी, हाँ दुनिया में जो लोग दिखाने सुनाने के लिये सज्दे करते थे वह भी सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी कमर तख़्ते की तरह हो जायेगी। यानी सज्दा न कर सकेंगे। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है और दूसरी किताबों में भी है, जो कई-कई सनदों से अलफ़ाज़ के थोड़े बदलाव के साथ मरवी है। यह हदीस बड़ी लम्बी और मशहूर है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस पिण्डली के खुल जाने से यह मुराद है कि यह दिन तकलीफ़, दुख और सख़्ती का दिन होगा जिसको यहाँ मुहावरे में बयान किया गया है। (इब्ने जरीर) और इब्ने जरीर इसे दूसरी सनद से शक के साथ बयान करते हैं कि इब्ने मसऊद रज़ि. या इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से।

"पिण्डली के खुल जाने" यानी पिण्डली की तजल्ली फ़रमाने की तफ़सीर में बहुत अहम और बड़ी अ़ज़ीमुश्शान बात मन्क़ूल है। जैसे एक शायर का क़ौल हैः

كشف الحرب عن ساق.

"लड़ाई खुल गयी पिण्डली से" यहाँ भी लड़ाई की विशालता और बड़ाई बयान की गयी है। मुजाहिद रह. से भी यही मन्क़ूल है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन यह घड़ी बहुत सख़्त होगी। आप फ़रमाते हैं कि यह मामला बहुत सख़्त बड़ी घबराहट वाला और हौलनाक है। आप फ़रमाते हैं कि जिस दिन मामला खोल दिया जायेगा, आमाल ज़ाहिर हो जायेंगे और यह खुलना आख़िरत का आ जाना है। ये सब रिवायतें इब्ने जरीर में हैं। इसके बाद यह हदीस है कि नबी सल्ल. ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया- मुराद बहुत बड़ा नूर है, लोग उसके सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे। यह हदीस अबू यअ़ला में भी है और इसकी सनद में एक मुब्हम (अपरिचित) रावी है। वल्लाहु आलम।

नोटः पहले भी यह बात बयान की जा चुकी कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जो बदन के हिस्सों जैसे हाथ पैर चेहरा वग़ैरह की निस्बत है, इस सिलसिले में दिमाग़ पर ज़ोर डालना, अपने ज़ेहन से उसकी कोई ख़्याली तस्वीर तय करना या इसको इनसानों के बदनी अंगों पर क़्यास करना ख़ुद को हलाकत में डालना है। यह सब समझाने के लिये है। बस यह यक़ीन रखे कि बदनी हिस्सों की जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ निस्बत है यह उसकी शायाने शान जैसी होगी वैसी है। यह बहुत नाज़ुक मामला है। लिहाज़ा अपनी तरफ़ से इसमें अ़क़्ली घोड़े दौड़ाने में ठोकर खाना यक़ीनी है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

फिर फ़रमाया- आज के दिन उन लोगों की आँखें ऊपर को न उठेंगी और ज़लील व पस्त हो जायेंगे, क्योंकि दुनिया में बड़े नाफ़रमान और घमण्ड व ग़ुरूर वाले थे। सेहत व सलामती की हालत में दुनिया में जब उन्हें सज्दे के लिये बुलाया जाता था तो रुक जाते थे, जिसकी सज़ा यह मिली कि आज सज्दा करना चाहते हैं लेकिन नहीं कर सकते। पहले कर सकते थे लेकिन नहीं करते थे। ख़ुदा तआ़ला की तजल्ली देखकर मोमिन सब सज्दे में गिर पड़ेंगे लेकिन काफ़िर व मुनाफ़िक़ सज्दा न कर सकेंगे, कमर तख़्ता हो जायेगी, झुकेगी ही नहीं, बल्कि पीठ के बल चित गिर पड़ेंगे। यहाँ भी उनकी हालत मोमिनों के ख़िलाफ़ थी वहाँ भी ख़िलाफ़ ही रहेगी।

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमाया कि मुझे और मेरी इस हदीस (कलाम) यानी क़ुरआन के झुठलाने वालों को तू छोड़ दे। इसमें बड़ी वईद और सख़्त डाँट है कि तू ठहर जा मैं ख़ुद इनसे निपट लूँगा, देख तो सही कि किस तरह धीरे-धीरे इन्हें पकड़ता हूँ। ये अपनी सरकशी और गुरूर में बढ़ते जायेंगे, मेरी ढील के राज़ को न समझेंगे और फिर एक दम पाप का घड़ा फूटेगा और मैं अचानक इन्हें पकड़ लूँगा। मैं इन्हें बढ़ाता रहूँगा, ये बदमस्त होते चले जायेंगे, ये इसे शान और अपनी बड़ाई समझेंगे हालाँकि होगी वह ज़िल्लत व पस्ती। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ........ الخ.

यानी क्या उनका गुमान है कि माल व औलाद का बढ़ना उनके लिये हमारी जानिब से किसी की भलाई की बिना पर है? नहीं! बल्कि ये बेसमझ हैं। एक और जगह फ़रमाया:

فَلَمَّا نَسُوْا مَاذُكِّرُوْا بِهٖ........ الخ.

जब ये हमारे वअ़ज़ व नसीहत को भुला चुके तो हमने इन पर तमाम चीज़ों के दरवाज़े खोल दिये, यहाँ तक कि उन्हें जो दिया गया उस पर इतराने लगे, हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और उनकी उम्मीदें कट गयीं।

यहाँ भी इरशाद होता है कि मैं उन्हें ढील दूँगा, बढ़ाऊँगा और ऊँचा करूँगा, यह मेरी तदबीर है और मेरी तदबीर मेरे मुख़ालिफ़ों और मेरे नाफ़रमानों के साथ बहुत बड़ी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ज़ालिम को मोहलत देता है, फिर जब पकड़ता है तो छोड़ता नहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी:

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ.

यानी इस तरह तेरे रब की पकड़ बड़ी दर्दनाक और बहुत सख़्त है।

फिर फ़रमाया- तू कुछ उनसे उजरत और बदला तो माँगता ही नहीं जो उन पर भारी पड़ता हो और जिसके तावान से ये झुके जाते हैं। न उनके पास कोई ग़ैब का इल्म है जिसे ये लिख रहे हों। इन दोनों जुमलों की तफ़सीर सूरः "वत्तूर" में गुज़र चुकी है। ख़ुलासा-ए-मतलब यह है कि ऐ नबी! आप उन्हें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बग़ैर उजरत और बग़ैर माल तलब करने के और बग़ैर बदले की ख़्वाहिश के बुला रहे हैं, आपकी ग़र्ज़ सिवाय सवाब हासिल करने के और कोई नहीं, तो इस पर भी ये लोग सिर्फ़ अपनी जहालत और सरकशी (नाफ़रमानी व घमण्ड) की वजह से आपको झुठला रहे हैं?

तो आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिये और (तंगदिली में) मछली (के पेट में जाने) वाले पैग़म्बर (यूनुस अ़लैहिस्सलाम) की तरह न होईये जबकि उन्होंने (यानी यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने) दुआ़ की और वह ग़म से घुट रहे थे। (48) अगर ख़ुदावन्दी एहसान उनकी मदद न करता तो वह (जिस) मैदान में (मछली	فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۞ لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ

Maktaba E Ashraf

وَهُوَمَذْمُوْمٌ ○ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ○ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ○	के पेट से निकालकर डाले गए थे उसी) बदहाली के साथ डाले जाते (मदद करने से मुराद तौबा का कुबूल करना है)। (49) फिर उनके रब ने उनको और मक़बूल कर लिया और उनको नेकों में से कर दिया। (50) और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो (अपने हद दर्जा बैर और दुश्मनी की वजह से) ऐसे मालूम होते हैं कि गोया आपको अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे। (यह एक मुहावरा है)। और (उसी दुश्मनी की वजह से आपके बारे में) कहते हैं कि यह मजनूँ है। (51) हालाँकि यह क़ुरआन (जिसके साथ आप बात फ़रमाते हैं) तमाम जहान के वास्ते नसीहत है। (52)

सब्र करने की तलक़ीन

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ नबी! अपनी क़ौम की ईज़ा (तकलीफ़ देने) और उनके झुठलाने पर सब्र व बरदाश्त करो, जल्द ही अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला होने वाला है। आख़िरकार आपका और आपके पैरोकारों का ही ग़लबा होगा, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। देखो तुम मछली वाले नबी की तरह न होना।

इससे मुराद यूनुस बिन मत्ता अ़लैहिस्सलाम हैं, जबकि वह अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा और नाराज़ होकर निकल खड़े हुए। फिर जो हुआ सो हुआ। यानी आपका कश्ती में सवार होना, मछली का आपको निगल जाना और समन्दर की तह में बैठ जाना, और उस तह-ब-तह अंधेरियों में इस क़द्र नीचे आपका समन्दर को ख़ुदा तआ़ला की पाकीज़गी बयान करते हुए सुनना और ख़ुद आपका भी पुकारना और "ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन" पढ़ना, फिर आपकी दुआ़ का क़ुबूल होना और उससे निजात पाना वग़ैरह। इस वाक़िए का मुफ़स्सल बयान पहले गुज़र चुका है। जिसके बयान के बाद अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला का इरशाद है कि हम इसी तरह ईमान वालों को निजात दिया करते हैं, और फ़रमाता है कि अगर वह तस्बीह न करते तो क़ियामत तक उसी के पेट में पड़े रहते। यहाँ भी फ़रमान है कि जब उसने ग़म और दुख की हालत में हमें पुकारा। पहले बयान हो चुका है कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की ज़बान से निकलते ही यह कलिमा अ़र्श पर पहुँचा, फ़रिश्तों ने कहा ख़ुदाया इस कमज़ोर ग़ैर-मारूफ़ इलाक़े की आवाज़ तो ऐसी मालूम होती है कि जैसे पहले की सुनी हुई हो। अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया क्या तुमने उसे पहचाना नहीं? फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया नहीं, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया यह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है। फ़रिश्तों ने कहा परवर्दिगार फिर तेरा यह बन्दा वह है जिसके नेक आमाल हर रोज़ आसमानों पर चढ़ते रहे, जिसकी दुआ़यें हर वक़्त क़ुबूलियत का दर्जा पाती रहीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया सच है। फ़रिश्तों ने कहा फिर ऐ अर्हमुर्राहिमीन उनके रातों के वक़्त के नेक आमाल की बिना पर

उन्हें इस सख़्ती से निजात अ़ता फ़रमा दीजिये। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला का इरशाद हुआ कि ऐ मछली! तू उन्हें किनारे पर आकर उगल दे, पस मछली ने उन्हें किनारे पर आकर उगल दिया।

यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि ख़ुदा ने उन्हें फिर मक़बूल और चुनिन्दा बनाकर उनके और दर्जे बढ़ा दिये और नेकोकारों में कर दिया। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- किसी के लिये ज़ेबा (मुनासिब) नहीं कि वह अपने आपको हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम बिन मत्ता से अफ़ज़ल बताये। सहीहैन में भी यह हदीस है।

अगली आयत का मतलब यह है कि तेरे बुग़ज़ व हसद की वजह से ये काफ़िर तो अपनी आँखों से घूर-घूरकर तुझे फिसला देना चाहते हैं, अगर ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से हिमायत और सुरक्षा न होती तो यक़ीनन ये तो ऐसा कर गुज़रते। इस आयत में दलील है इस बात की कि नज़र का लगना और उसकी तासीर का ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से होना हक़ है जैसा कि बहुत सी हदीसों में भी है, जो कई-कई सनदों से मरवी हैं। अबू दाऊद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि झाड़-फूँक सिर्फ़ नज़र, ज़हरीले जानवरों और न थमने वाले ख़ून की है। बाज़ सनदों में नज़र का लफ़्ज़ नहीं। यह हदीस इब्ने माजा में भी है और सही मुस्लिम शरीफ़ और तिर्मिज़ी में भी है। एक ग़रीब हदीस अबू यअ़ला में है कि नज़र अल्लाह के हुक्म से इनसान को गिरा देती है। मुस्नद अहमद में है कि 'उल्लू' और 'नज़र' में कुछ भी हक़ नहीं सबसे सच्चा शगुन फ़ाल है। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी इसे ग़रीब कहते हैं। एक और रिवायत में है कि कोई डर ख़ौफ़ उल्लू और नज़र में नहीं, और नेक फ़ाल सबसे ज़्यादा सच्चा फ़ाल है। एक और रिवायत में है कि नज़र हक़ है, नज़र हक़ है, वह बुलन्दी वाले को भी नीचे उतार देती है। (मुस्नद अहमद) सही मुस्लिम में है कि नज़र हक़ है, अगर कोई चीज़ तक़दीर से आगे बढ़ने वाली होती तो नज़र आगे बढ़ जाती। जब तुम से ग़ुस्ल कराया जाये तो ग़ुस्ल कर लिया करो। मुस्नद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को इन अलफ़ाज़ के साथ अल्लाह की पनाह में देते थे:

أُعِيْذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ وَّهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ.

यानी तुम दोनों को अल्लाह तआ़ला के भरपूर कलिमात की पनाह में सौंपता हूँ हर शैतान से और हर एक ज़हरीले जानवर से और हर एक लग जाने वाली नज़र से।

और फ़रमाते कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम भी हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को इन्हीं अलफ़ाज़ से ख़ुदा की पनाह में दिया करते थे। यह हदीस सुनन और बुख़ारी शरीफ़ में भी है। इब्ने माजा में है कि सहल बिन हुनैफ़ ग़ुस्ल कर रहे थे कि आ़मिर बिन रबीआ़ कहने लगे- मैंने तो आज तक ऐसी पिण्डली किसी पर्दे में रहने वाले की भी न देखी। यह कहना था कि वह बेहोश होकर गिर पड़े। लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! इनकी ख़बर लीजिए यह तो बेहोश हो गये। आप सल्ल. ने फ़रमाया किसी पर तुम्हारा शक भी है? लोगों ने अ़र्ज़ किया हाँ आ़मिर बिन रबीआ़ पर। आप सल्ल. ने फ़रमाया तुममें से क्यों कोई अपने भाई को क़त्ल करता है? जब तुम में से कोई अपने भाई की किसी ऐसी चीज़ को देखे जो उसे बहुत अच्छी लगे तो उसे चाहिये कि उसके लिये बरकत की दुआ़ करे। फिर पानी मंगवाकर आ़मिर से फ़रमाया कि तुम वुज़ू करो, मुँह और कोहनियों तक हाथ और घुटने और तहबन्द के अन्दरूनी हिस्से का जिस्म (धो डालो)। दूसरी रिवायत में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- बर्तन को उसकी

Maktab E Ashraf

पीठ के पीछे से औंधा कर दो। नसाई वग़ैरह में यह रिवायत मौजूद है। हज़रत अबू सईद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक सल्ल. जिन्नात और इनसानों की बुरी नज़र से पनाह माँगा करते थे। जब सूरः मुअ़व्वज़तैन (यानी सूरः फ़लक़ और सूरः नास) नाज़िल हुई तो आप सल्ल. ने इन्हें ले लिया और सब को छोड़ दिया। (इब्ने माजा, तिर्मिज़ी, नसाई) मुस्नद वग़ैरह में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हुज़ूर के पास आये और कहा ऐ नबी! क्या आप बीमार हैं? आपने फ़रमाया हाँ। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहाः

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ كُلِّ نَفْسٍ وَّعَيْنٍ وَاللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ.

"बिस्मिल्लाहि अरक़ी-क मिन कुल्लि शैइंय्-यूज़ी-क मिन कुल्लि नफ़्सिंव्-व अ़ैनिन् वल्लाहु यश्फ़ी-क बिस्मिल्लाहि अरक़ी-क।"

बाज़ रिवायतों में कुछ अलफ़ाज़ का हेर-फेर भी है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि यक़ीनन नज़र का लग जाना बरहक़ है। मुस्नद की एक हदीस में इसके बाद यूँ भी है कि इसका सबब शैतान है और इब्ने आदम (इनसान) का हसद (जलना और ईर्ष्या करना) है। मुस्नद की एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से पूछा गया कि तुमने हुज़ूर सल्ल. से यह सुना है कि शगुन तीन चीज़ों में है? घर, घोड़ा और औ़रत। तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया- अगर मैं ऐसा कहूँ फिर तो मैं रसूले ख़ुदा सल्ल. पर वह कहूँगा जो आपने नहीं फ़रमाया। हाँ मैंने हुज़ूर सल्ल. से यह तो सुना है कि आपने फ़रमाया- सबसे सच्चा शगुन नेक फ़ाल है और नज़र का लगना हक़ है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हज़रत जाफ़र के बच्चों को नज़र लग जाया करती है, क्या मैं कुछ दम करा लिया करूँ? आपने फ़रमाया हाँ, अगर कोई चीज़ तक़दीर से आगे निकल जाने वाली होती तो वह नज़र होती। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को भी हुज़ूर सल्ल. का बुरी नज़र से दम करने का हुक्म मरवी है। (इब्ने माजा) हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नज़र लगाने वाले को हुक्म किया जाता था कि वह वुज़ू करे और जिसको नज़र लगी है उसे उस पानी से ग़ुस्ल कराया जाता था। (अहमद)

एक और हदीस में है कि उल्लू और नज़र हक़ है और सबसे सच्चा शगुन फ़ाल है। मुस्नद अहमद में भी हज़रत सहल और हज़रत आ़मिर रज़ि. वाला क़िस्सा जो ऊपर बयान हुआ किसी क़द्र तफ़सील के साथ मरवी है। बाज़ रिवायतों में यह भी है कि ये दोनों बुज़ुर्ग ग़ुस्ल के इरादे से चले और हज़रत आ़मिर रज़ि. पानी में ग़ुस्ल के लिये उतरे और उनका बदन देखकर हज़रत सहल रज़ि. की नज़र लग गयी और वह वहीं पानी में ख़रख़राहट करने लगे। मैंने तीन मर्तबा आवाज़ें दी लेकिन जवाब न मिला। मैं हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़िआ़ सुनाया, आप ख़ुद तशरीफ़ लाये और थोड़े से पानी में खच-खच करते हुए तहबन्द ऊँचा उठाये हुए वहाँ तक पहुँचे और उनके सीने में हाथ मारा और दुआ़ कीः

اَللّٰهُمَّ اصْرِفْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا.

ऐ अल्लाह! तू इससे इसकी गर्मी और सर्दी और तकलीफ़ दूर कर दे.......।

मुस्नद अहमद में है कि मेरी उम्मत की क़ज़ा व क़द्र (तक़दीरे फ़ैसले) के बाद अक्सर मौत नज़र से होगी। फ़रमाते हैं कि नज़र हक़ है। अल्लाह के रसूल का फ़रमान है कि एक की बीमारी दूसरे को नहीं लगती और न उल्लू की वजह से बरबादी का यक़ीन कर लेना कोई असलियत रखता है, और न हसद कोई चीज़ है, हाँ नज़र सच है। इब्ने अ़साकिर में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हुज़ूर सल्ल. के पास तशरीफ़ लाये, आप उस वक़्त ग़मगीन थे। सबब पूछा तू फ़रमाया- हसन और हुसैन को नज़र लग गयी है। फ़रमाया

Maktab E Ashraf

यह सच्चाई के क़ाबिल चीज़ है, नज़र वाक़ई लगती है। हज़रत जिब्राईल ने कहा कि आपने ये कलिमात पढ़कर उन्हें पनाह में क्यों न दिया? हुज़ूर सल्ल. ने पूछा वे कलिमात क्या हैं? फ़रमाया यूँ कहोः

اَللّٰهُمَّ ذَاالسُّلْطَانِ الْعَظِيْمِ ذَا الْمَنِّ الْقَدِيْمِ ذَا الْوَجْهِ الْكَرِيْمِ وَلِيَّ الْكَلِمَاتِ التَّامَّاتِ وَالدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ مِنْ اَنْفُسِ الْجِنِّ وَاَعْيُنِ الْاِنْسِ.

अल्लाहुम्-म ज़स्सुल्तानिल् अज़ीमि ज़ल्मन्निल् क़दीमि ज़ल्वज्हिल् करीमि वलिय्यल् कलिमातित्ताम्माति वद्दअ़वातिल् मुस्तजाबाति आ़फ़िल् ह-सनि वल्-हुसैनि मिन् अन्फ़ुसिल् जिन्नि व अअ़्युनिल् इन्सि।

यानी ऐ अल्लाह! ऐ बहुत बड़ी बादशाही वाले! ऐ ज़बरदस्त क़दीम एहसानों वाले! ऐ सबसे बुज़ुर्ग चेहरे वाले! ऐ पूरे कलिमों वाले और दुआ़ओं को क़बूलियत का दर्जा देने वाले! तू हसन और हुसैन को तमाम जिन्नात की हवाओं से और तमाम इनसानों की आँखों से अपनी पनाह दे।

हुज़ूर सल्ल. ने यह दुआ़ पढ़ी, वहीं दोनों बच्चे उठ खड़े हुए और आपके सामने खेलने कूदने लगे, तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- लोगो! अपनी जानों को अपनी बीवियों को और अपनी औलाद को इसी पनाह के साथ पनाह दिया करो। इस जैसी और कोई पनाह की दुआ़ नहीं।

फिर फ़रमाता है कि जहाँ ये काफ़िर अपनी हिक़ारत (अपमान) भरी नज़रें आप पर डालते हैं वहाँ अपनी ताने भरी ज़बान भी आप पर खोलते हैं और कहते हैं कि यह तो क़ुरआन के लाने में मजनूँ हैं। अल्लाह तआ़ला उनके जवाब में फ़रमाता है कि क़ुरआन तो ख़ुदा की तरफ़ से तमाम आ़लम के लिये नसीहत की किताब है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः क़लम की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः हाक़्क़ह

सूरः हाक़्क़ह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَلْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا	वह होने वाली चीज़ (1) कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़। (2) और आपको कुछ ख़बर है कि कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़ (यह बार-बार पूछना डराने और उसका हौलनाक होना बयान करने के लिए है)। (3) समूद और आ़द ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ (यानी क़ियामत) को झुठलाया। (4) सो समूद तो एक

Maktab E Ashraf

بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ
صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ
لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ
فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ
خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ ۢ بَاقِيَةٍ ۝
وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ
بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ
فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ
حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ
تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝

ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिए गए। (5) और आद जो थे सो वह एक तेज़ व तुन्द हवा से हलाक किए गए। (6) जिसको अल्लाह तआ़ला ने उन पर सात रात और आठ दिन लगातार मुसल्लत कर दिया था। सो (ऐ मुख़ातब! अगर) तू (उस वक़्त मौजूद होता) तो उस क़ौम को इस तरह गिरा हुआ देखता कि गोया वह गिरी हुई खजूरों के तने (पड़े) हैं। (7) सो क्या तुझको उनमें का कोई बचा हुआ नज़र आता है? (यानी बिल्कुल ख़ात्मा हो गया) (8) और (इसी तरह) फ़िरऔ़न ने और उससे पहले लोगों ने और (क़ौमे लूत की) उल्टी हुई बस्तियों ने बड़े-बड़े क़ुसूर किए (यानी कुफ़्र व शिर्क, इस पर उनके पास रसूल भेजे गए)। (9) सो उन्होंने अपने रब के रसूल का कहना न माना तो अल्लाह ने उनको बहुत सख़्त पकड़ा, (यानी) हमने। (10) जबकि (नूह अ़लैहिस्सलाम के वक़्त में) पानी को तुग़यानी "यानी हद से ज़्यादा बढ़ोतरी और उफान" हुई तो तुमको कश्ती में सवार किया (और बाक़ी को ग़र्क़ कर दिया) (11) ताकि हम उस मामले को तुम्हारे लिए यादगार (और इब्रत) बनाएँ, और याद रखने वाले कान उसको याद रखें। (12)

एक यक़ीनी और लाज़िमी चीज़

"हाक़्क़ह" क़ियामत का एक नाम है और इस नाम की वजह यह है कि वायदे-वईद की हक़्क़ानियत और हक़ीक़त का दिन वही है, इसी लिये उस दिन की हौलनाकी (घबराहट) बयान करते हुए फ़रमाया- तुम उस "हाक़्क़ह" की सही कैफ़ियत से बेख़बर हो। फिर उन लोगों का बयान है जिन लोगों ने उसे झुठलाया था और फिर अपने इस इनकार का ख़मियाज़ा उठाया। तो फ़रमाया कि क़ौमे समूद को देखो, एक तरफ़ तो फ़रिश्ते के दहाड़ने की, कलेजों को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली आवाज़ आती है, दूसरी तरफ़ से ज़मीन में ग़ज़ब का भूंचाल आता है और सब तबाह व बरबाद हो जाते हैं। पस बक़ौल हज़रत क़तादा रह. के "ताग़ियह" के मायने हैं चिंघाड़ के, और मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद गुनाह हैं, यानी वे अपने गुनाहों के कारण बरबाद कर दिये गये। रबीअ़ बिन अनस और इब्ने ज़ैद रह. का क़ौल है कि इससे मुराद उनकी सरकशी (नाफ़रमानी और घमण्ड) है। इब्ने ज़ैद रह. ने इसकी ताईद में यह आयत पढ़ी:

Maktaba E Ashraf

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَا.

यानी समूदियों ने अपनी सरकशी के सबब झुठलाया। यानी ऊँटनी की कोचें काट दीं। और क़ौमें आद के लोग ठण्डी हवाओं के तेज़ झोंकों से जिन्होंने उनके दिल ज़ख़्मी कर दिये तहस-नहस कर दिये गये। ये आँधियाँ जो ख़ैर व बरकत से ख़ाली थीं, बराबर और लगातार सात रातें और आठ दिन तक चलती रहीं। उन दिनों में उनके लिये सिवाय नहूसत और बरबादी के और कोई भलाई न थी। जैसे एक और जगह है:

فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ.

नहूसत वाले दिनों में।

हज़रत रबीअ़ रह. फ़रमाते हैं कि जुमे के दिन से ये हवायें शुरू हुई थीं। बाज़ कहते हैं कि बुध से। इन हवाओं को अ़रब में "आजाज़" इसलिये भी कहते हैं कि क़ुरआन ने फ़रमाया है- उन आ़द वालों की हालतें आजाज़ यानी खजूरों के खोखले तनों जैसी हो गयीं। दूसरी वजह यह भी है कि उमूमन ये हवायें जाड़ों के आख़िर में चला करती हैं, और "अ़जज़" कहते हैं आख़िर को। और यह वजह भी बयान की जाती है कि आ़द वालों की एक बुढ़िया ग़ार (खोह) में घुस गयी थी जो उन हवाओं से आठवें रोज़ वहीं तबाह हो गयी, और बुढ़िया को अ़रबी में "अ़जूज़" कहते हैं। वल्लाहु आलम।

"ख़ावियह" के मायने हैं ख़राब, सड़ा-गला, खोखला। मतलब यह है कि हवाओं ने उन्हें उठा-उठाकर उल्टा दे पटख़ा। उनके सर फट गये, सरों का तो चूरा-चूरा हो गया और बाक़ी जिस्म ऐसा रह गया जैसे खजूर के पेड़ का सिरा पत्तों वाला काटकर ठुढ रहने दिया हो। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी मदद की गयी "सबा" के साथ यानी पुर्वा हवा के साथ, और आ़द वाले हलाक किये गये "दबूर" से यानी पछवा हवा से (यानी ख़न्दक़ की लड़ाई के मौक़े पर जो हवा चली वह पुर्वा थी जिससे दुश्मन भागने पर मजबूर हो गये)।

इब्ने अबी हातिम में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ौमे आ़द वालों को हलाक करने के लिये हवाओं के ख़ज़ाने में से सिर्फ़ अंगूठी के बराबर जगह खोली गयी थी जिससे हवायें निकलीं और पहले वे गाँव और देहात वालों पर आयीं, उन तमाम मर्दों औ़रतों को छोटे बड़ों को उनके मालों और जानवरों समेत लेकर आसमान व ज़मीन के दरमियान लटका दिया। शहर वालों को बहुत बुलन्दी और काफ़ी ऊँचाई के सबब यह मालूम देने लगा कि काले रंग का बादल चढ़ा हुआ है, ख़ुश होने लगे कि गर्मी के कारण जो हमारी बुरी हालत हो रही है अब पानी बरस जायेगा। इतने में हवा को हुक्म हुआ और उसने उन तमाम को इन शहर वालों पर फेंक दिया, और वे सब हलाक हो गये। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि उस हवा के पंख और दुम थी।

फिर फ़रमाता है कि बताओ तो उनमें से या उनकी नस्ल में से एक को भी तुम देख रहे हो? यानी सब के सब तबाह व बरबाद कर दिये गये, कोई नाम लेवा पानी देवा भी बाक़ी न रहा। फिर फ़रमाया कि फ़िरऔ़न और उससे पहले ख़ताकार, नाफ़रमाने रसूल का भी यही अन्जाम हुआ। "क़ब्लहू" की दूसरी क़िराअत "क़ि-बलहू" भी है, तो मायने यह होंगे कि फ़िरऔ़न और उसके पास और साथ के लोग यानी फ़िरऔ़नी क़िब्ती, काफ़िर। "मुअ्तफ़िकात" से मुराद भी पैग़म्बरों को झुठलाने वाली पहली उम्मतें हैं। "ख़ातिअह" से मतलब नाफ़रमानी और ख़तायें हैं। पस फ़रमाया कि उनमें से हर एक ने अपने अपने ज़माने के रसूल को झुठलाया। जैसे एक दूसरे मौक़े पर बयान है:

Maktaba Ashraf

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ.

यानी उन सब ने रसूलों को झुठलाया और उन पर अ़ज़ाब आ पहुँचे।

और यह भी याद रहे कि एक पैग़म्बर का इनकार गोया तमाम अम्बिया का इनकार है। जैसे क़ुरआने करीम ने फ़रमायाः

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ نِ الْمُرْسَلِيْنَ.

और फ़रमायाः

كَذَّبَتْ عَادُ نِ الْمُرْسَلِيْنَ.

और फ़रमायाः

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ نِ الْمُرْسَلِيْنَ.

यानी क़ौमे नूह ने, क़ौमे आ़द ने, क़ौमे समूद ने रसूलों को झुठलाया।

हालाँकि सब के पास यानी हर एक उम्मत के पास एक ही रसूल आया था (लेकिन कहा यह गया कि उन्होंने रसूलों को झुठलाया)। यही मतलब यहाँ भी है कि उन्होंने अपने रब के पैग़म्बर की नाफ़रमानी की पस ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें बहुत सख़्त, घातक, बड़ी दर्दनाक पकड़ में पकड़ लिया।

इसके बाद अपना एहसान जताता है कि देखो जब नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ की वजह से ज़मीन पर तूफ़ान आया और पानी हद से गुज़र गया, चारों तरफ़ सैलाब ठाठें मारने लगा और निजात की कोई जगह न रही, उस वक़्त हमने तुम्हें कश्ती में चढ़ा लिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब क़ौमे नूह ने अपने नबी को झुठलाया, उनकी मुख़ालफ़त की और सताना शुरू किया, ख़ुदा तआ़ला के सिवा दूसरों की इबादत करने लगे, उस वक़्त हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने तंग आकर उनकी हलाकत की दुआ़ की, जिसे ख़ुदा तआ़ला ने कबूल फ़रमाया और मशहूर तूफ़ाने नूह नाज़िल फ़रमाया, जिससे सिवाय उन लोगों के जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती में सवार थे, रू-ए-ज़मीन पर कोई न बचा। पस सब लोग हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की नस्ल और आपकी औलाद में से हैं। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि पानी का एक-एक क़तरा अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से, पानी के दारोग़ा फ़रिश्ते की नाप-तौल से बरसता है, इसी तरह हवा का हल्का सा झोंका भी बिना नापे-तौले नहीं चलता। लेकिन हाँ आ़द वालों पर जो हवायें चलीं और क़ौमे नूह पर जो तूफ़ान आया वह तो बेहद, बेशुमार और बग़ैर नाप-तौल के था। अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से पानी और हवा ने वह ज़ोर बाँधा कि निगराँ फ़रिश्तों की कुछ न चली। इसी लिये क़ुरआन में "तग़ल् मा-उ" और "बिरीहिन् सर्सरिन् आ़तियतिन्" के अलफ़ाज़ हैं (कि पानी उफान पर आ गया और हवा बहुत तेज़ और सख़्त हो गयी)। इसी लिये इस अहम एहसान को ख़ुदा तआ़ला याद दिला रहा है कि ऐसे ख़तरे के मौक़े पर हमने तुम्हें चलती कश्ती पर सवार कर दिया, ताकि यह कश्ती तुम्हारे लिये नमूना बन जाये। चुनाँचे आज भी वैसी ही कश्तियों पर सवार होकर समन्दर के लम्बे चौड़े सफ़र तय कर रहे हो। जैसे एक और जगह इरशाद हैः

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ.......... اَلخ.

यानी तुम्हारी सवारी के लिये कश्तियाँ और चौपाये जानवर बनाये ताकि तुम उन पर सवारी करो और सवार होकर अपने रब की नेमत याद करो। एक और जगह इरशाद फ़रमायाः

Mahtab E Ashraf

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ............الخ.

यानी उनके लिये क़ुदरत का एक निशान यह भी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी कश्ती में चढ़ा लिया, और भी हमने उस जैसी उनकी सवारियाँ पैदा कर दीं।

हज़रत क़तादा रह. ने ऊपर की इस आयत का यह मतलब भी बयान किया है कि वही कश्ती-ए-नूह बाक़ी रही, यहाँ तक कि इस उम्मत के पहले लोगों ने भी उसे देखा, लेकिन ज़्यादा वाज़ेह मतलब पहला ही है। फिर फ़रमाया- यह इसलिये भी कि याद रखने और सुनने वाला कान इसे याद कर ले, महफ़ूज़ रख ले और इस नेमत को न भूले। यानी सही समझ और सच्ची समाअ़त वाली अ़क़्ले सलीम और सही समझ रखने वाले जो ख़ुदा तआ़ला की बातों और उसकी नेमतों से बेपरवाही और बेतवज्जोही नहीं बरतते, उनकी पन्द व नसीहत का एक ज़रिया यह भी बन गया।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत मक्हूल फ़रमाते हैं कि जब ये अलफ़ाज़ उतरे तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने अपने रब से सवाल किया कि वह अ़ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) को ऐसा ही बना दे। चुनाँचे हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्ल. से कोई चीज़ सुनकर फिर मैंने फ़रामोश नहीं की (यानी भूला नहीं)। यह रिवायत इब्ने जरीर में भी है, लेकिन मुर्सल है। इब्ने अबी हातिम की एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया- मुझे हुक्म किया गया है कि मैं तुझे अपने नज़दीक करूँ दूर न करूँ, और तुझे तालीम दूँ और तू भी याद रखे और यही तुझे भी चाहिये, इस पर यह आयत उतरी। यह रिवायत दूसरी सनद से भी इब्ने जरीर में मन्क़ूल है लेकिन वह भी सही नहीं।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۭ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

फिर जब सूर में एक ही बार में फूँक मारी जाएगी (मुराद पहली फूँक मारना है) (13) और (उस वक़्त) ज़मीन और पहाड़ (अपनी जगह से) उठा लिए जाएँगे, फिर दोनों एक ही दफ़ा में टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे। (14) तो उस दिन होने वाली चीज़ हो पड़ेगी। (15) और आसमान फट जाएगा और वह (आसमान) उस दिन बिल्कुल बोदा होगा। (16) और फ़रिश्ते (जो आसमान में फैले हुए हैं) उसके किनारे पर आ जाएँगे और आपके परवर्दिगार के अ़र्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे। (17) जिस दिन (ख़ुदा के सामने हिसाब के वास्ते) तुम पेश किए जाओगे (और) तुम्हारी कोई बात (अल्लाह तआ़ला से) छुपी न होगी। (18)

क़ियामत के सूर का फूँका जाना

क़ियामत की हौलनाकियों (दहशत व घबराहट के आ़लम और वहाँ पेश आने वाली परेशानियों) का बयान हो रहा है। सबसे पहली घबराहट पैदा करने वाली चीज़ सूर का फूँका जाना होगा, जिससे सब के

Maktab E Ashraf

दिल दहल जायेंगे। फिर नफ़्ख़ा (सूर) फूँका जायेगा जिससे ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ बेहोश हो जायेगी, मगर जिसे अल्लाह चाहे। फिर सूर फूँका जायेगा जिसकी आवाज़ से तमाम मख़्लूक़ अपने रब के सामने खड़ी हो जायेगी। यहाँ उसी पहले नफ़्ख़े (सूर फूँके जाने) का बयान है। यहाँ ताकीद के तौर पर यह भी फ़रमा दिया कि यह उठ खड़े होने का नफ़्ख़ा (सूर का फूँका जाना) एक ही है, इसलिये कि जब ख़ुदा तआ़ला का हुक्म हो गया फिर न तो उसका उल्लंघन हो सकता है न वह टल सकता है, न दोबारा फ़रमाने की ज़रूरत है और न ताकीद की। इमाम रबीअ़ रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद आख़िरी नफ़्ख़ा (सूर का फूँका जाना) है, लेकिन वाज़ेह क़ौल वही है जो हमने पहले लिखा। इसी लिये यहाँ इसके साथ ही फ़रमाया कि ज़मीन व आसमान उठा लिये जायेंगे और खाल की तरह फैला दिये जायेंगे। ज़मीन बदल दी जायेगी और क़ियामत वाक़े हो जायेगी। हज़रत अ़ली फ़रमाते हैं कि आसमान हर खुलने की जगह से फट जायेगा। जैसे सूरः नबा में हैः

وَفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا.

यानी आसमान खोल दिया जायेगा और उसमें दरवाज़े दरवाज़े हो जायेंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि आसमान में सुराख़ और गड्ढे पड़ जायेंगे और फट जायेगा। अ़र्श उसके सामने हो जायेगा। फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे जो किनारे अब तक टूटे न होंगे, और दरवाज़ों पर होंगे। आसमान की लम्बाई में फैले हुए होंगे और ज़मीन वालों को देख रहे होंगे। फिर फ़रमाया कि क़ियामत वाले दिन आठ फ़रिश्ते ख़ुदा तआ़ला का अ़र्श अपने ऊपर उठाये हुए होंगे (इसकी जो शक्ल होगी उसको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, बस हम पर तो फ़रमान के मुताबिक़ लाना फ़र्ज़ है, उसकी कैफ़ियत क्या होगी? यह अल्लाह ही जानता है, उसकी शायाने-शान ही यह चीज़ ज़हूर में आयेगी)। पस या तो मुराद अ़र्शे अ़ज़ीम का उठाना है या उस अ़र्श का उठाना मुराद है जिस पर क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला लोगों के फ़ैसलों के लिये तशरीफ़ फ़रमा होंगे। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ते पहाड़ी बकरों की सूरत में होंगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि उनकी आँख के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक सौ साल का रास्ता है (यानी वे बहुत बड़े और लम्बे-चौड़े होंगे)।

इब्ने अबी हातिम की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि मुझे इजाज़त दी गयी है कि मैं तुम्हें अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ते के बारे में ख़बर दूँ कि उसकी गर्दन और कान के नीचे तक की लौ के दरमियान इतना फ़ासला है कि उड़ने वाला परिन्दा सात सौ साल तक उड़ता चला जाये। इसकी सनद बहुत उम्दा है और इसके सब रावी मोतबर हैं। इसे इमाम अबू दाऊद ने भी अपनी सुनन में रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इसी तरह फ़रमाया। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद फ़रिश्तों के आठ हिस्से हैं, जिनमें से हर एक हिस्से की गिनती तमाम इनसानों जिन्नों सब फ़रिश्तों के बराबर है।

फिर फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ तुम उस ख़ुदा के सामने पेश किये जाओगे जो छुपी और ज़ाहिर तमाम चीज़ों और बातों को अच्छी तरह जानता है। जिस तरह खुली से खुली चीज़ का वह आ़लिम है इसी तरह छुपी से छुपी चीज़ को भी वह जानता है। इसी लिये फ़रमाया कि तुम्हारा कोई भेद उस रोज़ छुप न सकेगा। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. का क़ौल है कि लोगो! अपनी जानों का हिसाब कर लो इससे पहले कि तुम से हिसाब लिया जाये, और अपने आमाल का ख़ुद अन्दाज़ा कर लो इससे पहले कि इन आमाल का

Maktab E Ashraf

वज़न किया जाये, ताकि कल क़ियामत वाले दिन तुम पर आसानी हो, जिस दिन कि तुम्हारा पूरा-पूरा हिसाब लिया जायेगा और एक बड़ी पेशी में खुद खुदा तआ़ला के सामने तुम पेश कर दिये जाओगे।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन लोग तीन मर्तबा खुदा के सामने पेश किये जायेंगे। पहली और दूसरी बार तो उ़ज़्र माज़िरत और झगड़ा टंटा करते रहेंगे, लेकिन तीसरी पेशी जो आख़िरी होगी उस वक़्त आमाल उड़ाये जायेंगे, फिर आमाल-नामा किसी के दायें हाथ में आयेगा और किसी के बायें हाथ में। यह हदीस इब्ने माजा में भी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के क़ौल से भी यही रिवायत इब्ने जरीर में मौजूद है, और हज़रत क़तादा रह. से भी इस जैसी रिवायत मुर्सल तौर पर मन्क़ूल है।

(फिर आमाल-नामे हाथ में दिए जाएँगे तो) जिस शख़्स का आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह तो (ख़ुशी के मारे आस-पास वालों से) कहेगा कि लो मेरा आमाल-नामा पढ़ो। (19) मेरा (तो पहले ही से) एतिक़ाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है। (20) ग़र्ज़ कि वह शख़्स पसन्दीदा ऐश (21) यानी आ़लीशान जन्नत में होगा। (22) जिसके मेवे (इस क़द्र) झुके होंगे (कि जिस हालत में चाहेंगे) ले सकेंगे (23) (और हुक्म होगा कि) खाओ-पियो मज़े के साथ उन आमाल के सिले में जो तुमने गुज़िश्ता दिनों (यानी दुनिया में रहने के दौरान) में किए हैं। (24)	فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۚ○ اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۚ○ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۙ○ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ○ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ○ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا ۢبِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ○

कामयाब जमाअ़त

यहाँ यह बयान हो रहा है कि जिन ख़ुशनसीब लोगों को क़ियामत के दिन उनके नामा-ए-आमाल उनके दायें हाथ में दिये जायेंगे वे नेकबख़्त हज़रात बेहद ख़ुश होंगे और ख़ुशी के जोश में बेसाख़्ता हर एक से कहते फिरेंगे कि मेरा नामा-ए-आमाल तो पढ़ो। यह इसलिये कि जो गुनाह इनसान होने के नाते उनसे हो गये थे वे भी उनकी तौबा की वजह से नामा-ए-आमाल से मिटा दिये गये हैं, और न सिर्फ़ मिटा दिये गये हैं बल्कि उनकी जगह पर नेकियाँ लिख दी गयी हैं। पस यह सरासर नेकियों का नामा-ए-आमाल एक-एक को पूरे सुरूर और बेइन्तिहा ख़ुशी से दिखाते फिरते हैं। हज़रत अबू उस्मान रह. फ़रमाते हैं कि चुपके से पर्दे में मोमिन को उसका नामा-ए-आमाल दिया जायेगा जिसमें उसके गुनाह लिखे हुए होंगे, वह उसे पढ़ता होगा और हर एक गुनाह पर उसके होश उड़-उड़ जाते होंगे, चेहरे की रंगत उड़ती होगी, इतने में उसकी निगाह अपनी नेकियों पर पड़ जायेगी, जब उन्हें पढ़ने लगेगा तब ज़रा चैन आयेगा, होश व हवास दुरुस्त होंगे और चेहरा खिल जायेगा। फिर नज़रें जमाकर पढ़ेगा तो देखेगा कि उसकी बुराईयाँ भी भलाईयों से बदल दी गयी हैं। हर बुराई की जगह भलाई लिखी हुई है। अब तो उसकी बाँछें खिल जायेंगी और ख़ुशी-ख़ुशी निकल खड़ा होगा और जो भी मिलेगा उससे कहेगा ज़रा मेरा नामा-ए-आमाल तो पढ़ो।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिन्हें फ़रिश्तों ने उनकी शहादत के बाद ग़ुस्ल दिया था, उनके लड़के हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे को क़ियामत वाले दिन अपने सामने खड़ा करेगा और उसकी बुराईयाँ उसके नामा-ए-आमाल की पुश्त पर लिखी हुई होंगी, जो उस पर ज़ाहिर की जायेंगी। अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा कि बता क्या तूने ये आमाल किये हैं? वह इक़रार करेगा कि हाँ बेशक ख़ुदाया ये बुराईयाँ मुझसे हुई हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- देख मैंने दुनिया में तुझे रुस्वा नहीं किया और न फ़ज़ीहत की, अब यहाँ भी मैं तुझसे दरगुज़र करता हूँ और तेरे तमाम गुनाहों को माफ़ करता हूँ। जब यह इससे फ़ारिग़ होगा तब अपना नामा-ए-आमाल लेकर दिल की ख़ुशी के साथ एक एक को दिखाता फिरेगा। हज़रत उमर रज़ि. वाली सही हदीस जो पहले बयान हो चुकी है, जिसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपने बन्दे को अपने पास बुलायेगा और उससे उसके गुनाहों के बारे में पूछेगा कि फ़ुलाँ गुनाह किया? फ़ुलाँ गुनाह किया? वह इक़रार करेगा यहाँ तक कि समझ लेगा कि अब मैं हलाक हुआ। उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमायेगा- ऐ मेरे बन्दे! दुनिया में मैंने तेरी इन बुराईयों पर पर्दा डाल रखा था, अब आज तुझे क्या रुस्वा करूँ, जा मैंने तुझे बख़्श दिया। फिर उसका नामा-ए-आमाल उसके दायें हाथ में दिया जायेगा जिसमें सिर्फ़ नेकियाँ ही नेकियाँ होंगी। लेकिन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के बारे में तो गवाह पुकार उठेंगे कि ये लोग वे हैं जिन्होंने ख़ुदा तआ़ला के बारे में झूठ कहा। लोगो सुनो! इन ज़ालिमों पर ख़ुदा तआ़ला की लानत है।

फिर फ़रमाता है कि यह दाहिने हाथ के नामा-ए-आमाल वाला कहता है कि मुझे तो दुनिया में ही पूरा यक़ीन था कि यह हिसाब का दिन निश्चित तौर पर आने वाला है। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

اَلَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ.

यानी उन्हें यक़ीन था कि वे अपने रब से मिलने वाले हैं।

फ़रमाया इनकी जज़ा (बदला) यह है कि अपनी दिल-पसन्द और दिल को ख़ुश करने वाली ज़िन्दगी पायेंगे, और बुलन्द व ऊँची जन्नत में रहेंगे। जिसके महल ऊँचे-ऊँचे होंगे, जिसकी हूरें ख़ूबसूरत और नेक सीरत होंगी। वह घर नेमतों के भरपूर ख़ज़ाने होंगे, और ये तमाम नेमतें न ख़त्म होने वाली बल्कि कमी से भी महफ़ूज़ होंगी (यानी ख़त्म होना तो दूर की बात है उनमें कोई कमी भी न होगी)।

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! क्या ऊँचे मर्तबे वाले आपस में एक दूसरे से मुलाक़ातें भी करेंगे? आपने फ़रमाया हाँ बुलन्द मर्तबे के लोग कम मर्तबे के लोगों के पास मुलाक़ात के लिये उतरेंगे। एक और सही हदीस में है कि जन्नत में एक सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के बीच इतना फ़ासला है जितना ज़मीन व आसमान में। फिर फ़रमाता है कि उसके फल नीचे-नीचे होंगे। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह फ़रमाते हैं कि इस क़द्र झुके हुए होंगे कि जन्नती अपने तख़्तों और बिस्तरों पर लेटे ही लेटे उन मेवों को तोड़ लिया करेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर एक जन्नती को ख़ुदा की तरफ़ से एक लिखा हुआ परवाना मिलेगा जिसमें लिखा हुआ होगाः

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. هٰذَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ لِفُلَانِ ابْنِ فُلَانٍ اَدْخِلُوْهُ جَنَّةً عَالِيَةً قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ.

यानी ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से शुरू। यह इजाज़त नामा है अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़ुलाँ शख़्स के लिये जो फ़ुलाँ का बेटा है। उसे बुलन्द व बाला झुकी हुई शाख़ों और लदे हुए ख़ोशों (गुच्छों) वाली ख़ुशगवार जन्नत में जाने दो। (तबरानी) बाज़ रिवायतों में है कि यह परवाना पुलसिरात पर हवाले कर

Maktaba Ashraf

दिया जायेगा।

फिर फ़रमाया कि उन्हें बतौर एहसान और मज़ीद लुत्फ़ व करम के ज़बानी भी खाने पीने की इजाज़त दी जायेगी (यानी लिखित इजाज़त के साथ-साथ ज़बानी भी इजाज़त मिलेगी) और कहा जायेगा कि यह तुम्हारे नेक आमाल का बदला है। आमाल का बदला कहना सिर्फ़ बतौर लुत्फ़ व करम के है वरना सही हदीस में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अ़मल करते जाओ सीधे और क़रीब क़रीब रहो और जान रखो कि सिर्फ़ आमाल जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी नहीं। लोगों ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर! आपके आमाल भी नहीं? फ़रमाया न मेरे, हाँ यह और बात है कि अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व करम और उसकी रहमत मेरे शामिले हाल रहे।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَیَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ کِتٰبِیَهْ ۚ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِیَهْ ۚ یٰلَیْتَهَا کَانَتِ الْقَاضِیَةَ ۚ مَآ اَغْنٰی عَنِّیْ مَالِیَهْ ۚ هَلَكَ عَنِّیْ سُلْطٰنِیَهْ ۚ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ ثُمَّ الْجَحِیْمَ صَلُّوْهُ ۙ ثُمَّ فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ لَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ ۙ وَلَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ۚ فَلَیْسَ لَهُ الْیَوْمَ هٰهُنَا حَمِیْمٌ ۙ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِیْنٍ ۙ لَّا یَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ۚ	और जिसका आमाल-नामा उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा, सो वह (बहुत ही हसरत से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि मुझ को मेरा आमाल-नामा ही न मिलता। (25) और मुझ को यह ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है। (26) क्या अच्छा होता कि (पहली) मौत ही ख़ात्मा कर चुकती। (27) (अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया। (28) मेरा रुतबा और पद (भी) मुझसे गया गुज़रा। (29) (ऐसे शख़्स के लिए फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उस शख़्स को पकड़ लो और उसको तौक़ पहना दो (30) फिर उसको दोज़ख़ में दाख़िल कर दो। (31) फिर एक ऐसी ज़न्जीर में जिसकी पैमाईश सत्तर गज़ है उसको जकड़ दो (32) यह शख़्स अल्लाह पर ईमान न रखता था। (33) और (वह ख़ुद तो किसी को क्या देता औरों को भी) ग़रीब आदमी के खिलाने की तरग़ीब न देता था (इसलिए अ़ज़ाब का हक़दार हुआ)। (34) सो आज उस शख़्स का न कोई दोस्त है (35) और न उसको कोई खाने की चीज़ नसीब है, सिवाय ज़ख़्मों के धोवन के (36) जिसको बड़े गुनाहगारों के सिवा कोई न खाएगा। (37)

ع ۱ ۵

गुनाहगार और क़िस्मत के मारों का हाल

यहाँ गुनाहगारों का हाल बयान हो रहा है कि जब मैदाने क़ियामत में उन्हें उनका नामा-ए-आमाल उनके बायें हाथ में दिया जायेगा तो वे निहायत परेशान और शर्मिन्दा होंगे और हसरत व अफ़सोस से कहेंगे

Maktab E Ashraf

कि काश! हमें हमारा आमाल नामा मिलता ही नहीं। और काश कि हम हिसाब की इस हालत से ही न गुज़रते। काश कि मौत ने ही हमारा काम ख़त्म कर दिया होता और यह दूसरी ज़िन्दगी हमें मिलती ही नहीं। जिस मौत से दुनिया में बहुत ही घबराते थे आज उसकी आरज़ूयें करेंगे। ये कहेंगे कि हमारे माल व रुतबे ने भी आज हमारा साथ छोड़ दिया और हमारी इन चीज़ों ने भी ये अ़ज़ाब हम से न हटाये। तन्हा हमारी ज़ात पर यह वबाल आ पड़ा, न कोई मददगार हमें नज़र आता है न इससे महफ़ूज़ रहने की कोई सूरत दिखाई देती है। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इसे पकड़ लो, इसके गले में तौक़ डाल दो और इसे जहन्नम में ले जाओ और उसमें फेंक दो।

हज़रत मिन्हाल बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआ़ला के इस फ़रमान को सुनते ही कि इसे पकड़ो, सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी तरफ़ लपकेंगे जिनमें से अगर एक फ़रिश्ते को भी इस तरह अल्लाह तआ़ला हुक्म करे तो एक छोड़ सत्तर हज़ार लोगों को पकड़ कर जहन्नम में फेंक दे। इब्ने अबिद्दुन्या में है कि चार लाख फ़रिश्ते उसकी तरफ़ दौड़ेंगे और कोई चीज़ बाक़ी न रहेगी मगर उसे तोड़ फोड़ देंगे। यह कहेगा कि तुम्हें मुझसे क्या ताल्लुक़ (यानी तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो)? वे कहेंगे कि अल्लाह तबारक व तआ़ला तुझ पर ग़ज़बनाक (ग़ुस्सा और नाराज़) है और इस वजह से हर चीज़ तुझ पर गुस्से में है। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान के सादिर होते ही सत्तर हज़ार फ़रिश्ते गुस्से से दौड़ेंगे, जिनमें से हर एक दूसरे पर बढ़ना चाहेगा कि इसे मैं तौक़ पहनाऊँ। फिर उसे जहन्नम की आग में ग़ोता देने का हुक्म होगा। फिर उन ज़न्जीरों में जकड़ा जायेगा जिनका एक एक हल्क़ा (कुन्डा और कड़ी) बक़ौल हज़रत कअ़बे अहबार के दुनिया भर के लोहे के बराबर होगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं कि यह नाप फ़रिश्तों के हाथ का है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का फ़रमान है कि ये ज़न्जीरें उसके जिस्म में पिरो दी जायेंगी, पाख़ाने के रास्ते से डाली जायेंगी और मुँह से निकाली जायेंगी, और इस तरह आग में भूना जायेगा जैसे सीख़ में कबाब और तेल में टिड्डी। यह भी मरवी है कि पीछे से ये ज़न्जीरें डाली जायेंगी और नाक के दोनों नथुनों से निकाली जायेंगी जिससे कि वह पैरों के बल खड़ा ही न हो सकेगा।

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अगर कोई बड़ा सा पत्थर आसमान से फेंका जाये तो ज़मीन पर वह एक रात में आ जाये, लेकिन अगर उसी को जहन्नमियों के बाँधने की ज़न्जीर के सिरे पर से छोड़ा जाये तो दूसरे सिरे तक पहुँचने में चालीस साल लग जायेंगे। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन बतलाते हैं।

फिर फ़रमाया कि यह ख़ुदा तआ़ला पर ईमान न रखता था, न मिस्कीन को खिला देने की किसी को रग़बत देता था, यानी न तो ख़ुदा की इताअ़त व इबादत करता था न ख़ुदा की मख़्लूक़ के हक़ अदा करके उसे नफ़ा पहुँचाता था। ख़ुदा का हक़ तो मख़्लूक़ पर यह है कि उसकी तौहीद (एक माबूद होने) को मानें, उसके साथ किसी को शरीक न करें। और बन्दों का हक़ यह है कि आपस में एक दूसरे को इमदाद पहुँचाते रहें। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों हुक़ूक़ को उमूमन एक साथ बयान फ़रमाया है, जैसे नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो। और नबी सल्ल. ने इन्तिक़ाल के वक़्त में इन दोनों को एक साथ बयान फ़रमाया कि नमाज़ की हिफ़ाज़त करो और अपने मातहतों के साथ नेक सुलूक करो।

फिर फ़रमान होता है कि यहाँ पर आज के दिन उसका कोई ख़ालिस दोस्त ऐसा नहीं, न कोई क़रीबी रिश्तेदार या सिफ़ारिशी ऐसा है कि उसे अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचा सके, और न उसके लिये कोई

ग़िज़ा है सिवाय बदतरीन सड़ी-भुसी बेकार चीज़ के, जिसका नाम "ग़िस्लीन" है, यह जहन्नम का एक पेड़ है, और मुम्किन है कि इसी का दूसरा नाम "ज़क्क़ूम" हो। और ग़िस्लीन के यह मायने भी किये गये हैं कि जहन्नमियों के बदन से जो ख़ून और पानी बहता है वह है। यह भी कहा गया है कि उनकी पीप वग़ैरह।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَۙ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَۙ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍۙ وَّ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَۙ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ	फिर (बदला देने का मज़्मून बयान करने के बाद) मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की भी जिनको तुम देखते हो (38) और उन चीज़ों की भी जिनको तुम नहीं देखते (39) कि यह क़ुरआन (अल्लाह तआ़ला का) कलाम है एक इज़्ज़त वाले फ़रिश्ते का लाया हुआ है (पस जिस पर आया वह ज़रूर रसूल है)। (40) और यह किसी शायर का कलाम नहीं है जैसा कि कुफ़्फ़ार (आपको शायर कहते थे, मगर) तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41) और न किसी काहिन "यानी अन्दाज़े से ग़ैब की बातें बताने वाले" का कलाम है (जैसा कि बाज़ कुफ़्फ़ार आपको कहते थे), तुम बहुत कम समझते हो। (42) रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से भेजा हुआ (कलाम) है। (43)

यह अ़ज़ीम आसमानी किताब

अल्लाह तआ़ला क़सम खाता है। अपनी मख़्लूक़ में से अपनी उन निशानियों की क़सम खा रहा है जिन्हें लोग देख रहे हैं और उनकी भी जो लोगों की निगाहों से पोशीदा हैं, इस बात पर कि क़ुरआने करीम उसका कलाम और उसकी 'वही' (उतारा हुआ पैग़ाम) है। जो उसने अपने बन्दे और अपने चुने हुए रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर उतारी है। जिसे उसने अमानत के अदा करने और रिसालत की तब्लीग़ के लिये पसन्द फ़रमा लिया है। "रसूले करीम" से मुराद हज़रत मुहम्मद सल्ल. हैं, इसकी निस्बत हुज़ूर सल्ल. की तरफ़ इसलिये की गयी है कि उसके मुबल्लिग़ और पहुँचाने वाले आप ही हैं, इसलिये लफ़्ज़ "रसूल" लाये, क्योंकि रसूल तो पैग़ाम अपने भेजने वाले का पहुँचता है अगरचे ज़बान उसकी होती है लेकिन कहा हुआ भेजने वाले का होता है। यही वजह है कि सूरः "तकवीर" में इसकी निस्बत उस रसूल की तरफ़ की गयी है जो फ़रिश्तों में से हैं। फ़रमान है:

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ............الخ

यानी यह क़ौल उस बुज़ुर्ग (बुलन्द रुतबे वाले) रसूल का है जो क़ुव्वत वाला और अ़र्श के मालिक के पास रहने वाला है। वहाँ उसका कहना माना जाता है और है भी वह अमानत दार।

इससे मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं। इसी लिये इसके बाद फ़रमाया कि तुम्हारे साथी यानी

Maktab_E_Ashraf

मुहम्मद सल्ल. मजनूँ (दीवाने) नहीं, बल्कि आपने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को उनकी असल सूरत में साफ़ किनारों पर देखा भी है, और वह पोशीदा इल्म पर बख़ील भी नहीं। न यह शैतान मरदूद का क़ौल है। इसी तरह यहाँ भी इरशाद होता है कि न तो यह किसी शायर का कलाम है न काहिन का क़ौल है, अलबत्ता तुम्हारे ईमान में और नसीहत हासिल करने में कमी है। पस कभी तो अपने कलाम की निस्बत इनसानी रसूल की तरफ़ की और कभी फ़रिश्तों में के रसूल की तरफ़। इसलिये कि ये इसके पहुँचाने वाले, लाने वाले और इस पर अमीन हैं। हाँ दर असल कलाम किसका है? इसे भी साथ ही साथ बयान फ़रमा दिया कि यह उतारा हुआ रब्बुल-आ़लमीन का है।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने इस्लाम लाने से पहले का अपना एक वाक़िआ़ बयान करते हैं कि मैं आपके पास गया देखा कि आप मस्जिदे हराम में पहुँच गये हैं। मैं भी गया और आपके पीछे खड़ा हो गया। आपने सूरः "हाक़्क़ह" शुरू की जिसे सुनकर मुझे इसके अलफ़ाज़ की बेहतरीन तरकीब, मज़ामीन का उम्दा अन्दाज़ और भाषाई एतिबार से आला मेयार के होने पर ताज्जुब आने लगा, आख़िर में मेरे दिल में ख़्याल आया कि क़ुरैश के लोग ठीक कहते हैं कि यह शख़्स शायर है। अभी मैं इसी ख़्याल में था कि आपने ये आयतें तिलावत कीं कि यह क़ौल रसूले करीम का है, शायर का नहीं। तुम में ईमान ही कम है। मैंने ख़्याल किया अच्छा शायर न सही काहिन तो ज़रूर है। इधर आपकी तिलावत में यह आयत आयी कि यह काहिन का क़ौल भी नहीं, तुमने नसीहत ही कम ली है। अब आप पढ़ते चले गये यहाँ तक कि पूरी सूरत ख़त्म की। फ़रमाते हैं कि यह पहला मौक़ा था कि मेरे दिल में इस्लाम पूरी तरह घर कर गया और रोंगट रोंगटे में इस्लाम की सच्चाई घुस गयी। पस और चीज़ों के साथ यह भी उन कारणों में से एक ख़ास कारण है जो हज़रत उमर रज़ि. के इस्लाम लाने का सबब हुए। हमने आपके इस्लाम लाने की पूरी कैफ़ियत सीरते उमर रज़ि. में लिख दी है। तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝
لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ
الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ
حٰجِزِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِنَّا
لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ
عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ ع ٢ ١٥ ٦

और अगर यह (पैग़म्बर) हमारे ज़िम्मे कुछ (झूठी) बातें लगा देते (44) तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते (45) फिर हम उनकी दिल की रग काट डालते। (46) फिर तुममें कोई उनका इस सज़ा से बचाने वाला भी न होता। (47) और बिला शुब्हा यह क़ुरआन परहेज़गारों के लिए नसीहत है। (48) और हमको मालूम है कि तुममें बाज़े झुठलाने वाले भी हैं (पस हम उनको उसकी सज़ा देंगे)। (49) और (इस एतिबार से) यह क़ुरआन काफ़िरों के हक़ में हसरत का सबब है। (50) और यह क़ुरआन तहक़ीक़ी यक़ीनी बात है। (51) सो (जिसका यह कलाम है) अपने (उस) अ़ज़ीम शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (52)

Maktab E Ashraf

अगर 'वही' में कुछ उलट-फेर किया जाये तो........

यहाँ अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हो रहा है कि जिस तरह तुम कहते हो अगर वास्तव में हमारे यह रसूल ऐसे ही होते कि हमारी रिसालत (पैग़ाम और हमारी उतारी हुई वही) में कुछ कमी-बेशी कर डालते या हमारी न कही हुई बात हमारे नाम से बयान कर देते तो यक़ीनन उसी वक़्त हम इन्हें बदतरीन सज़ा देते, यानी अपने हाथ से इनका दायाँ हाथ थामकर इनकी वह रग काट डालते जिस पर दिल का दारोमदार है और कोई हमारे और उनके दरमियान भी न आ सकता कि उन्हें बचाने की कोशिश करे। पस मतलब यह हुआ कि हुज़ूर नबी करीम सल्ल. सच्चे पाकबाज़ रुश्द व हिदायत वाले हैं। इसी लिये ख़ुदा तआ़ला ने ज़बरदस्त तब्लीग़ी ख़िदमत आप सल्ल. को सौंप रखी है और अपनी तरफ़ से बहुत से ज़बरदस्त मोजिज़े और आपके सच्चा होने की बेहतरीन बड़ी-बड़ी निशानियाँ आप सल्ल. को इनायत फ़रमा रखी हैं।

फिर फ़रमाया- यह क़ुरआन मुत्तक़ियों के लिये तज़किरा (याददेहानी) है। जैसे एक दूसरी जगह है कि कह दो कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है और बेईमान तो अन्धे, बहरे हैं ही। फिर फ़रमाया कि बावजूद इस सफ़ाई और खुले हक़ के हमें अच्छी तरह मालूम है कि तुममें से बाज़ इसे झूठा बतलाते हैं, यह झुठलाना उन लोगों के लिये क़ियामत के दिन हसरत व अफ़सोस का सबब होगा। या यह मतलब है कि यह क़ुरआन और इस पर ईमान हक़ीक़त में काफ़िरों पर हसरत का कारण होगा, जैसा कि एक दूसरे मौक़े पर है कि इसी तरह हम इसे गुनाहगारों के दिलों में उतारते हैं कि वे इस पर ईमान नहीं लाते। एक दूसरी जगह इरशाद है:

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ.

उनमें और उनकी इच्छा में हिजाब (आड़ और पर्दा) डाल दिया गया है।

फिर फ़रमाया कि यह ख़बर बिल्कुल सच, हक़ और शक व शुब्हे से ऊपर है। फिर अपने नबी को हुक्म देता है कि इस क़ुरआन के नाज़िल करने वाले रब्बे अ़ज़ीम के नाम की बड़ाईयाँ और पाकीज़गियाँ बयान करते रहिये।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः हाक़्क़ह की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः मआ़रिज

सूरः मआ़रिज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 44 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

سَالَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ٥لِّلْكٰفِرِيْنَ

لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ٥مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ٥

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ

كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ٥

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ٥ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ

بَعِيْدًا ٥وَّنَرٰهُ قَرِيْبًا ٥

एक दरख़्वास्त करने वाला (इनकार करने के तौर पर) उस अ़ज़ाब की दरख़्वास्त करता है जो वाक़ेअ़ होने वाला है (1) काफ़िरों पर, (और) जिसका कोई दूर करने वाला नहीं। (2) और जो कि अल्लाह की तरफ़ से वाक़ेअ़ होगा जो कि सीढ़ियों का (यानी आसमानों का) मालिक है। (3) (जिन सीढ़ियों से) फ़रिश्ते और (मोमिनों की) रूहें उसके पास चढ़कर जाती हैं (और वह अ़ज़ाब) ऐसे दिन में होगा जिसकी मिक्दार (यानी मात्रा दुनिया के) पचास हज़ार साल के (बराबर) है। (4) सो आप (उनकी मुख़ालफ़त पर) सब्र कीजिए, और सब्र भी ऐसा जिसमें शिकायत का नाम न हो। (5) ये लोग उस दिन को (इस वजह से कि ये उसके आने के इनकारी हैं) दूर देख रहे हैं। (6) और हम उसको (ज़ाहिर होने के एतिबार से) क़रीब देख रहे हैं। (7)

अ़ज़ाब की तलब में जल्दी न करो

"बि-अ़ज़ाब" में जो "ब" है वह बता रही है कि यहाँ फ़ेल की तज़मीन है, गोया कि फ़ेल मुक़द्दर है। यानी ये काफ़िर अ़ज़ाब के वाक़े होने की तलब में जल्दी कर रहे हैं। जैसे एक दूसरी जगह है:

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ.

यानी ये अ़ज़ाब के माँगने में जल्द बाज़ी कर रहे हैं और अल्लाह तआ़ला हरगिज़ वायदा-ख़िलाफ़ी नहीं करता। यानी उसका अ़ज़ाब यक़ीनन अपने निर्धारित वक़्त पर आकर ही रहेगा।

नसाई शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि काफ़िरों ने अल्लाह का अ़ज़ाब माँगा जो उन पर यक़ीनन आने वाला है, यानी आख़िरत में। उनकी इस तलब के अलफ़ाज़ भी दूसरी जगह क़ुरआन

में मन्क़ूल हैं। कहते हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ.

यानी ख़ुदाया! अगर यह इस्लाम की दावत वग़ैरह हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा, या हमारे पास कोई दर्दनाक अ़ज़ाब ला।

इब्ने ज़ैद रह. वग़ैरह कहते हैं कि इससे मुराद वह अ़ज़ाब की वादी है जो क़ियामत के दिन अ़ज़ाबों से बह निकलेगी। लेकिन यह क़ौल ज़ईफ़ है और इससे कोई मतलब ही वाज़ेह नहीं होता। सही क़ौल पहला ही है, जिस पर कलाम के अन्दाज़ की दलालत भी है। फिर फ़रमाता है कि वह अ़ज़ाब काफ़िरों के लिये तैयार है और उन पर आ पड़ने वाला है, जब आ जायेगा तो उसे कोई दूर करने वाला नहीं, और न किसी में इतनी ताक़त है कि उसे हटा सके।

"ज़िल्-मआ़रिज" के मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की तफ़सीर के मुताबिक़ दर्जों वाला, यानी बुलन्दियों और बड़ाईयों वाला। और हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि मुराद "मआ़रिज" से आसमान की सीढ़ियाँ हैं। क़तादा रह. कहते हैं कि फ़ज़्ल व करम और नेमत व रहम वाला। यानी यह अ़ज़ाब उस ख़ुदा की तरफ़ से है जो इन सिफ़तों वाला है। उसकी तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं। रूह की तफ़सीर में हज़रत अबू सालेह रह. फ़रमाते हैं कि यह एक क़िस्म की मख़्लूक़ है, इनसान तो नहीं लेकिन इनसानों से बिल्कुल मिलती-जुलती है। मैं कहता हूँ- मुम्किन है कि इससे मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हों, और मुम्किन है कि इससे मुराद इनसानों की रूहें हों, इसलिये कि वे भी क़ब्ज़ होने के बाद आसमान की तरफ़ चढ़ती हैं। जैसा कि हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की एक लम्बी हदीस में है कि जब फ़रिश्ते पाक रूह निकालते हैं तो उसे लेकर एक आसमान से दूसरे आसमान पर चढ़ते हैं, यहाँ तक कि सातवें आसमान पर पहुँचते हैं। अगरचे इसके बाज़ रावियों में कलाम है लेकिन यह हदीस मशहूर है और इसकी ताईद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. वाली हदीस भी है, जैसा कि पहले यह रिवायत मुस्नद इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में गुज़र चुकी है, जिसकी सनद के रावी एक जमाअ़त की शर्त के मुताबिक़ हैं। पहली हदीस भी मुस्नद अहमद, अबू दाऊद व नसाई और इब्ने माजा में है। हमने उसके अलफ़ाज़ और उसकी सनदों का तफ़सीली बयान आयतः

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا.........الخ.

(यानी सूरः इब्राहीम की आयत नम्बर 27) की तफ़सीर में कर दिया है। फिर फ़रमाया उस दिन में जिसकी लम्बाई पचास हज़ार साल की है, इसमें चार क़ौल हैं, एक तो यह कि इससे मुराद वह दूरी है जो सब से नीचे की ज़मीन से अ़र्शे मुअ़ल्ला तक है। और इसी तरह अ़र्श के नीचे से ऊपर तक का फ़ासला इतना ही है, और अ़र्शे मुअ़ल्ला सुर्ख़ याक़ूत का है, जैसे कि इमाम इब्ने अबी शैबा रह. ने अपनी किताब "सिफ़तुल-अ़र्श" में ज़िक्र किया है। इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके हुक्म की इन्तिहा नीचे की ज़मीन से आसमानों के ऊपर तक की पचास हज़ार साल की है और एक दिन एक हज़ार साल का है, यानी आसमान से ज़मीन तक और ज़मीन से आसमान तक एक दिन में जो एक हज़ार साल के बराबर है। इसलिये कि आसमान व ज़मीन का फ़ासला पाँच सौ साल का है। यही रिवायत दूसरी सनद से हज़रत मुजाहिद रह. के क़ौल से मरवी है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के क़ौल से नहीं है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इब्ने अबी हातिम में रिवायत है कि हर ज़मीन की मोटाई पाँच सौ साल के फ़ासले की है, और एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन तक पाँच सौ साल की दूरी है, तो सात हज़ार साल यह हो

Maktab E Ashraf

गये। इसी तरह सात आसमान, तो चौदह हज़ार साल यह हुए और सातवें आसमान से अ़र्शे अ़ज़ीम तक छत्तीस हज़ार साल का फ़ासला है। यही मायने हैं ख़ुदा तआ़ला के इस फ़रमान के कि उस दिन में जिसकी मिक़्दार (लम्बाई) पचास हज़ार साल के बराबर है। दूसरा क़ौल यह है कि मुराद इससे यह है कि जब से अल्लाह तआ़ला ने इस आ़लम (जहान) को पैदा किया है तब से लेकर क़ियामत तक की इसके बाक़ी रहने की आख़िरी मुद्दत पचास हज़ार साल की है, चुनाँचे हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि दुनिया की कुल उम्र पचास हज़ार साल की है, और यही एक दिन है जो इस आयत में मुराद लिया गया है। हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि दुनिया की पूरी मुद्दत यही है, लेकिन किसी को मालूम नहीं कि किस क़द्र गुज़र गयी और कितनी बाक़ी है, सिवाय अल्लाह तबारक व तआ़ला के।

तीसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद क़ियामत का दिन है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह सही सनद के साथ नक़ल किया गया है। हज़रत इक्रिमा रह. भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि क़ियामत के दिन को अल्लाह तआ़ला काफ़िरों पर पचास हज़ार साल का कर देगा। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. से अ़र्ज़ किया गया- यह दिन तो बहुत ही बड़ा है। आपने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, यह मोमिन पर इस क़द्र आसान हो जायेगा कि दुनिया की एक फ़र्ज़ नमाज़ की अदायेगी में जितना वक़्त लगता है उससे भी कम होगा। यह हदीस इब्ने जरीर में भी है, इसके दो रावी ज़ईफ़ हैं। वल्लाहु आलम

मुस्नद की एक और हदीस में है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. के पास से क़बीला बनू आ़मिर का एक शख़्स गुज़रा, लोगों ने कहा कि हज़रत यह अपने क़बीले में सब से बड़ा मालदार है। आपने उसे बुलवाया और फ़रमाया- क्या वास्तव में तुम सब से ज़्यादा मालदार हो? उसने कहा हाँ मेरे पास रंग-बिरंग के सैंकड़ों ऊँट, क़िस्म क़िस्म के ग़ुलाम, आला आला दर्जे के घोड़े वग़ैरह हैं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया देखो ख़बरदार ऐसा न हो कि ये जानवर अपने पाँव से तुम्हें रौंदें और अपने सींगों से तुम्हें मारें। बार-बार यही फ़रमाते रहे यहाँ तक कि आ़मिरी के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने कहा- हज़रत यह क्यों? आपने फ़रमाया- सुनो मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जो अपने ऊँटों का हक़ अदा न करेगा (जैसे उनकी ज़कात अदा न करे), उनकी सख़्ती में और उनकी आसानी में, तो उसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन एक चटियल लम्बे चौड़े साफ़ मैदान में चित लिटायेगा और उन तमाम जानवरों को मोटा ताज़ा करके हुक्म देगा कि इसे रौंदते हुए चलो। चुनाँचे वे एक-एक करके उसे कुचलते हुए गुज़रेंगे। जब आख़िर वाला गुज़र जायेगा तो पहले वाला लौटकर आ जायेगा, यही अ़ज़ाब उसे होता रहेगा। उस दिन में जिसकी मिक़्दार (लम्बाई) पचास हज़ार साल की है, यहाँ तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाये, फिर वह अपना रास्ता देख लेगा। इसी तरह गाय, घोड़े, बकरी वग़ैरह भी सींग वाले जानवर अपने सींगों से भी उसे मारते जायेंगे। कोई उनमें बिना सींग वाला या टूटे हुए सींग वाला न होगा। उस आ़मिरी शख़्स ने पूछा ऐ अबू हुरैरह! फ़रमाईये ऊँटों में ख़ुदा का हक़ क्या है? फ़रमाया- मिस्कीनों को सवारी के लिये तोहफ़े में देना, ग़रीबों के साथ सुलूक करना, दूध पीने के लिये जानवर देना, उनके नरों की ज़रूरत जिन्हें मादा के लिये हो, उन्हें माँगा हुआ बेक़ीमत देना। यह हदीस अबू दाऊद और नसाई में भी दूसरी सनद से मज़कूर है।

मुस्नद की एक हदीस में है कि जो सोने-चाँदी के ख़ज़ाने वाला उसका हक़ अदा न करेगा, उसका सोना चाँदी तख़्तियों की सूरत में बनाया जायेगा और जहन्नम की आग में तपा कर उसकी पेशानी, करवट और पीठ दाग़ी जायेगी, यहाँ तक कि ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों के फ़ैसले कर ले, उस दिन में जिसकी मिक़्दार

(लम्बाई) तुम्हारी गिनती से पचास हज़ार साल की होगी। फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़ देख लेगा। फिर आगे बकरियों और ऊँटों का बयान है जैसे ऊपर गुज़रा, और यह भी बयान है कि घोड़े तीन किस्म के लोगों के लिये हैं- एक किस्म के तो अज्र दिलाने वाले, दूसरी किस्म के पर्दा पोशी करने वाले (यानी उसकी हालत छुपाने वाले), तीसरी किस्म के बोझ ढोने वाले......। यह हदीस पूरी-पूरी सही मुस्लिम शरीफ़ में भी है। इन रिवायतों के पूरा बयान करने और इनकी सनदों और अलफ़ाज़ को पूरी तरह नक़ल करने की मुनासिब जगह अहकाम (मसाईल) की किताबुज़्ज़कात है, यहाँ इनके ज़िक्र करने से हमारी ग़र्ज़ सिर्फ़ इन अलफ़ाज़ से है कि यहाँ तक कि ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला करेगा उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है।

आपने फ़रमाया वह दिन क्या है जो पचास हज़ार साल का है? उसने कहा हज़रत मैं तो ख़ुद मालूम करने आया हूँ। आपने फ़रमाया- सुनो ये दो दिन हैं जिनका ज़िक्र अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपनी किताब में किया है, अल्लाह तआ़ला ही को इनकी हक़ीक़त का अच्छी तरह इल्म है, मैं तो बावजूद जानने के किताबुल्लाह में कुछ कहना ना-पसन्द जानता हूँ।

फिर फ़रमाता है ऐ नबी! तुम अपनी क़ौम के झुठलाने पर और अ़ज़ाब के माँगने की जल्दी पर जिसे वे अपने नज़दीक न आने वाला जानते हैं, सब्र व बरदाश्त करो, जैसा कि एक दूसरे मौक़े पर इरशाद है:

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا...... الخ.

यानी बेईमान तो क़ियामत के जल्द आने की तमन्नायें करते हैं और ईमान वाले उसके आने को हक़ जान कर उससे डर रहे हैं।

इसी लिये यहाँ भी फ़रमाया कि ये तो उसे दूर जान रहे हैं बल्कि मुहाल (नामुम्किन) और वाक़े न होने वाला मानते हैं। लेकिन हम उसे क़रीब ही देख रहे हैं। यानी मोमिन तो उसका आना हक़ जानते हैं और समझते हैं कि अब आने ही वाली है, न जाने कब क़ियामत क़ायम हो जाये और कब अ़ज़ाब आ पड़े, क्योंकि उसके सही वक़्त को सिवाय अल्लाह की ज़ात के और कोई जानता ही नहीं। पस हर वह चीज़ जिसके आने और होने में कोई शक न हो, उसका आना क़रीब ही समझा जाता है और उसके वाक़े (ज़ाहिर) होने का हर वक़्त खटका ही रहता है।

(वह अ़ज़ाब उस दिन वाक़े होगा) जिस दिन (कि आसमान रंग में) तेल तलछट की तरह हो जाएगा। (8) और (उस दिन) पहाड़ रंगीन ऊन की तरह (जो कि धुनी हुई हो) हो जाएँगे (यानी उड़ते फिरेंगे)। (9) और (उस दिन) कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा (10) इसके बावजूद कि एक-दूसरे को दिखा भी दिए जाएँगे। (और उस दिन) मुजरिम (यानी काफ़िर) इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अ़ज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों को (11)	يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝ وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۝

Maktab E Ashraf

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝ كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ۝ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ۝ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝	और बीवी को और भाई को (12) और कुनबे को जिनमें वह रहता था (13) और तमाम ज़मीन पर रहने वालों को अपने फ़िदये में दे दे, फिर यह (फ़िदये में दे देना) उसको (अज़ाब से) बचा ले। (14) यह हरगिज़ न होगा, (बल्कि) वह आग ऐसी भड़कती हुई है (15) जो खाल (तक) उतार देगी (16) (और) वह उस शख़्स को (ख़ुद) बुलाएगी जिसने (दुनिया मे हक़ से) पीठ फेरी होगी और (अल्लाह व उसके रसूल की बात मानने से) बेरुख़ी की होगी। (17) और जमा किया होगा फिर उसको उठा-उठाकर रखा होगा। (18)

क़ियामत की दहशत व घबराहट का कुछ हाल

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जिस अ़ज़ाब को ये तलब कर रहे हैं वह अ़ज़ाब इन तलब करने वाले काफ़िरों पर उस दिन आयेगा जिस दिन आसमान ज़ैतून के तेल की तलछट जैसा हो जायेगा और पहाड़ ऐसे हो जायेंगे जैसी धुनी हुई रूई। यही फ़रमान एक और जगह है:

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ.

और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।

फिर फ़रमाता है कि कोई क़रीबी रिश्तेदार से कुछ मालूम तक न करेगा, हालाँकि एक दूसरे को बुरी हालत में देख रहे होंगे, लेकिन ख़ुद ऐसे मशग़ूल होंगे कि दूसरे का हाल पूछने का भी होश नहीं रहेगा, सब अपनी ही फ़िक्र में पड़े रहेंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक दूसरे को देखेगा पहचानेगा, लेकिन फिर भाग खड़ा होगा। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ.

यानी हर एक शख़्स ऐसे मशग़ले में लगा होगा जो दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होने का मौक़ा ही न देगा। एक और जगह फ़रमान है कि लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस दिन बाप अपनी औलाद को और औलाद अपने माँ-बाप को कुछ काम न आयेगी.....। एक दूसरे मौक़े पर इरशाद है कि चाहे अ़ज़ीज़ और रिश्तेदार ही हों लेकिन कोई किसी का बोझ न उठायेगा। एक और जगह फ़रमान है:

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ.

यानी सूर फूँकते ही आपस के सब रिश्ते-नाते और एक दूसरे की ग़मख़्वारी (हमदर्दी) ख़त्म हो जायेगी। एक और जगह फ़रमान है:

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ.........الخ.

यानी उस दिन इनसान अपने भाई से, अपनी माँ से, अपने बाप से, अपनी बीवी से और अपनी औलाद से भागता फिरेगा, हर शख़्स अपनी परेशानियों की वजह से के दूसरे से लापरवाह होगा। यह वह दिन होगा कि उस दिन हर गुनाहगार चाहेगा कि अपनी औलाद को अपने फ़िदये (बदले) में देकर जहन्नम के अ़ज़ाब से छूट जाये और अपनी बीवी को और अपने भाई को और अपने रिश्ते-कुनबे और अपने ख़ानदान और क़बीले को बल्कि चाहे पूरी दुनिया के लोगों को जहन्नम में डाल दिया जाये लेकिन उसे आज़ाद कर दिया जाये। आह क्या ही दिल को पिघलाने वाला मन्ज़र है कि अपने कलेजे के टुकड़ों को अपनी शाख़ों (यानी औलाद) और अपनी जड़ों (यान माँ-बाप और बड़ों) को और सब के सब को आज फ़िदये में देने पर तैयार है ताकि ख़ुद बच जाये। फ़ैसले के एक मायने माल के भी किये गये हैं। ग़र्ज़ कि सारी की सारी महबूब हस्तियों को अपनी तरफ़ से फ़िदये के तौर पर देने में रज़ामन्द होगा लेकिन कोई चीज़ काम न आयेगी, कोई बदला और फ़िदया क़बूल न होगा, कोई बदला और मुआ़वज़ा स्वीकार न किया जायेगा, बल्कि उस आग के अ़ज़ाबों में डाला जायेगा जो ऊँचे-ऊँचे और तेज़-तेज़ शोले फेंकने वाली सख़्त भड़कने वाली है, जो सर की खाल तक झुलसा कर खींच लाती है। बदन की खाल दूर कर देती है और खोपड़ी पिलपिली कर देती है। हड्डियों को गोश्त से अलग कर देती है, रग पट्ठे खिंचने लगते हैं, हाथ पाँव ऐंठने लगते हैं, पिण्डलियाँ कटी जाती हैं, चेहरा बिगड़ जाता है, हर-हर अंग बिगड़ जाता है, चीख़-पुकार करता रहता है, हड्डियों का चूरा करती रहती है, खालें जलाती जाती है। यह आग अपनी स्पष्ट ज़बान और ऊँची आवाज़ से अपने वालों को जिन्होंने दुनिया में बदकारियाँ और ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ की थीं पुकारती है, फिर जिस तरह पक्षी जानवर दाना चुगता है, इसी तरह मैदाने हश्र में से ऐसे बुरे किरदार व बुरे आमाल वाले लोगों को एक-एक करके देख-भाल कर चुन लेगी।

अब उनके बुरे आमाल बयान हो रहे हैं कि ये दिल से झुठलाने वाले और बदन से अ़मल छोड़ देने वाले थे। ये माल को जमा करने वाले और उसका ज़ख़ीरा करके रख छोड़ने वाले थे। अल्लाह तआ़ला के ज़रूरी अहकाम में भी माल ख़र्च करने से गुरेज़ करते थे, बल्कि ज़कात तक अदा न करते थे। हदीस में है कि समेट-समेट कर न रखो वरना अल्लाह तआ़ला भी तुम से रोक लेगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उकैम रह. तो इस आयत पर अ़मल करते हुए कभी थैली का मुँह ही न बाँधते थे। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि ऐ इनसान! अल्लाह तआ़ला की वईद सुन रहा है फिर भी माल समेटता जा रहा है? हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि माल को जमा करने में हलाल हराम का पास न रखता था और फ़रमाने ख़ुदा होते हुए भी ख़र्च की हिम्मत नहीं करता था।

इनसान कम-हिम्मत पैदा हुआ है। (19) जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो (ज़रूरत से ज़्यादा) चीख़-पुकार करने लगता है। (20) और जब उसको ख़ुशहाली और फ़रागृत होती है तो (अपने ज़िम्मे वाजिब हुक़ूक़ से) बुख़्ल करने लगता है। (21) मगर वह नमाज़ी (यानी मोमिन) (22) जो अपनी नमाज़ पर बराबर तवज्जोह	اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ فِيْ

Maktab E Ashraf

اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝ ع	रखते हैं (23) और जिनके मालों में हक़ है (24) सवाली और बे-सवाली सब का। (25) और जो क़ियामत के दिन का एतिक़ाद रखते हैं (26) और जो अपने परवर्दिगार के अज़ाब से डरने वाले हैं। (27) (और) वाक़ई उनके रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं (यह एक अलग और ग़ैर-मुताल्लिक़ जुमले के तौर पर है)। (28) और जो अपनी शर्मगाहों को (हराम से) महफ़ूज़ रखने वाले हैं। (29) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफ़ाज़त नहीं करते), क्योंकि उन पर (इसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। (30) हाँ! जो इसके अ़लावा (और जगह अपनी शहवत पूरी करने का) तलबगार हो, ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। (31) और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अ़हद का ख़्याल रखने वाले हैं। (32) और जो अपनी गवाहियों को ठीक-ठीक अदा करते हैं, (33) और जो अपनी (फ़र्ज़) नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। (34) (बस) ऐसे लोग जन्नतों में इ़ज़्ज़त से दाख़िल होंगे। (35)

इनसान की जल्द-बाज़ी

यहाँ इनसानी फ़ितरत की कमज़ोरी बयान हो रही है कि यह बड़ा ही बेसब्रा है। मुसीबत के वक़्त तो घबराहट और परेशानी की वजह से पागल हो जाता है, गोया दिल उड़ गया और गोया अब कोई आस बाक़ी नहीं रही, और राहत के वक़्त बख़ील कन्जूस बन जाता है, अल्लाह तआ़ला का हक़ भी नहीं देता। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान में सब से बुरी चीज़ बुख़्ल और आला दर्जे की कन्जूसी है। (अबू दाऊद) फिर फ़रमाया कि हाँ इस बुरी ख़स्लत से वे लोग दूर हैं जिन पर अल्लाह का ख़ास फ़ज़्ल है और जिन्हें तक़दीरी तौर पर ख़ैर की तौफ़ीक़ मिल चुकी है। जिनकी सिफ़तें ये हैं कि वे पूरे नमाज़ी हैं। वक़्तों की हिफ़ाज़त करने वाले, वाजिबाते नमाज़ को अच्छी तरह पूरा करने वाले, सुकून व इत्मीनान और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा करने वाले हैं। जैसे एक जगह फ़रमाया:

Maktab E Ashraf

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ......... الخ.

उन ईमान वालों ने निजात पा ली जो अपनी नमाज़ ख़ौफ़ से अदा करते हैं।

ठहरे हुए बिना हरकत वाले पानी को भी अ़रब के लोग "माउन् दाइमुन्" कहते हैं। इससे साबित हुआ कि नमाज़ में इत्मीनान वाजिब है। जो शख़्स अपने रुकूअ़ सज्दे पूरी तरह ठहर कर इत्मीनान से अदा नहीं करता वह अपनी नमाज़ पर दाईम नहीं, क्योंकि न वह सुकून करता है न इत्मीनान, बल्कि कौए की तरह ठूंगे मार लेता है, उसकी नमाज़ उसे निजात नहीं दिलवायेगी। और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद हर नेक अ़मल पर पाबन्दी और हमेशगी करना है, जैसे कि अल्लाह के नबी सल्ल. का फ़रमान है कि ख़ुदा को सब से ज़्यादा पसन्दीदा अ़मल वह है जिस पर हमेशगी (पाबन्दी) की जाये चाहे वह कम हो। ख़ुद हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की आ़दत मुबारक भी यही थी कि जिस काम को करते उस पर पाबन्दी फ़रमाते।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हमसे ज़िक्र किया गया कि हज़रत दानियाल पैग़म्बर ने उम्मते मुहम्मदिया की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया कि वह ऐसी नमाज़ पढ़ेगी कि अगर क़ौमे नूह ऐसी नमाज़ पढ़ती तो डूबती नहीं, क़ौमे आ़द की अगर ऐसी नमाज़ होती तो उन पर नहूसत भरी हवायें न भेजी जातीं और अगर क़ौमे समूद की नमाज़ ऐसी होती तो उन्हें चीख़ से हलाक न किया जाता। पस ऐ लोगो! नमाज़ को अच्छी तरह पाबन्दी से पढ़ा करो। मोमिन का यह ज़ेवर और उसका बेहतरीन ख़ुल्क़ (अख़्लाक़) है।

फिर फ़रमाता है कि उनके मालों में ज़रूरत मन्दों का भी निर्धारित हिस्सा है। "साइल" और "मेहरूम" की पूरी तफ़सीर सूरः ज़ारियात में गुज़र चुकी है। ये लोग हिसाब और जज़ा के दिन पर भी पूरा यक़ीन और पूरा-पूरा ईमान रखते हैं। इसी वजह से वे आमाल करते हैं जिनसे सवाब पायें और अ़ज़ाब से छूटें। फिर उनकी सिफ़त बयान होती है कि वे अपने रब के अ़ज़ाब से डरने और ख़ौफ़ खाने वाले हैं, जिस अ़ज़ाब से कोई अ़क़्लमन्द इनसान बेख़ौफ़ नहीं रह सकता, हाँ जिसे ख़ुदा अमन दे। और ये लोग अपनी शर्मगाहों को हराम कारी से रोकते हैं, जहाँ ख़ुदा की इजाज़त नहीं उस जगह से बचाते हैं, हाँ अपनी बीवियों और अपनी मिल्कियत की बाँदियों से अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) पूरी करते हैं। सो इसमें उन पर कोई मलामत और एतिराज़ नहीं, लेकिन जो शख़्स इनके अ़लावा और जगह या किसी और तरह अपनी शहवत पूरी करे (जैसे इग़लाम बाज़ी, और मुट्ठी मारना वग़ैरह) वह यक़ीनन अल्लाह की हदों से आगे बढ़ने वाला है। इन दोनों आयतों की पूरी तफ़सीर अट्ठारहवें पारे की शुरू की आयतों में गुज़र चुकी। यहाँ दोबारा ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

ये लोग अमानत के अदा करने वाले, वायदों, क़ौल और क़रार को पूरा करने वाले और अच्छी तरह निभाने वाले हैं। न ख़ियानत करते हैं न अ़हद के ख़िलाफ़ करते और तोड़ते हैं। ये सब सिफ़तें मोमिनों की हैं और इनके ख़िलाफ़ अ़मल करने वाला मुनाफ़िक़ है। जैसे कि सही हदीस में है कि मुनाफ़िक़ की तीन ख़स्लतें हैं, जब कभी बात करे तो झूठ बोले, जब कभी वायदा करे तो उसके ख़िलाफ़ करे और जब झगड़े तो गालियाँ दे। ये अपनी शहादतों की भी हिफ़ाज़त करने वाले हैं, यानी न उसमें कमी करते हैं न ज़्यादती, न शहादत (गवाही) देने से भागते हैं न उसे छुपाते है, जो छुपा ले तो वह दिल का गुनाहगार है।

फिर फ़रमाया कि ये अपनी नमाज़ की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं, यानी वक़्त पर अरकान और वाजिबात और मुस्तहब्बात को पूरी तरह बजा लाकर नमाज़ पढ़ते हैं। यहाँ यह बात ख़ास तवज्जोह के लायक़ है कि इन जन्नतियों की सिफ़तें बयान करते हुए शुरू की सिफ़त भी नमाज़ की अदायेगी की बयान की और ख़त्म

Maktab E Ashraf

भी इसी पर किया। इससे मालूम हुआ कि नमाज़ दीन के मामले में एक अज़ीमुश्शान काम है और सब से ज़्यादा शराफ़त और फ़ज़ीलत वाली चीज़ भी यही है। इसका अदा करना सख़्त ज़रूरी और इसका बन्दोबस्त निहायत ही ताकीद वाला है। सूरः मोमिनून (अट्ठारहवें पारे के शुरू) में भी ठीक इसी तरह बयान हुआ है और वहाँ सिफ़तों के बाद बयान फ़रमाया है कि यही लोग हमेशा हमेशा के लिये जन्नतुल-फ़िरदौस के वारिस हैं। और यहाँ फ़रमाया कि यही लोग जन्नती हैं और वहाँ तरह-तरह की लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों से इज़्ज़त व शान के साथ खुश और लाभान्वित होंगे।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۙ○
عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ○
اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيْمٍ ۙ○ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ○
فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا
لَقٰدِرُوْنَ ۙ○ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَ
مَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ○ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا
وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ
يُوْعَدُوْنَ ۙ○ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ
الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ
يُّوْفِضُوْنَ ۙ○ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ○ ع ٢ ٩ ٨

तो काफ़िरों को क्या हुआ कि (इन मज़ामीन के झुठलाने को) आपकी तरफ़ दौड़े आ रहे हैं। (36) दाहिने और बाएँ से जमाअ़तें बनकर। (37) क्या उनमें हर शख़्स इसकी हवस रखता है कि वह राहत व आराम की जन्नत में दाख़िल होगा। (38) यह हरगिज़ न होगा, हमने उनको ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसकी उनको भी ख़बर है। (39) फिर (दूसरे तौर पर कियामत के क़ायम होने के लिए) मैं क़सम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के मालिक की कि हम इस पर क़ादिर हैं (40) कि (दुनिया ही में) उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ (यानी पैदा कर दें) और हम (इससे) आ़जिज़ नहीं हैं। (41) तो आप उनको इसी शग़ल और तफ़रीह में रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसका उनसे वायदा किया जाता है (42) जिस दिन ये क़ब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ेंगे जैसे किसी इबादत-गाह की तरफ़ दौड़े जाते हैं। (43) (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी की वजह से) नीचे को झुकी होंगी (और) उन पर ज़िल्लत छाई होगी। (बस) यह है उनका वह दिन जिसका उनसे वायदा किया जाता था (जो कि अब ज़ाहिर हुआ)। (44)

हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत में है

अल्लाह तआ़ला उन काफ़िरों पर इनकार (रद्द) रहा है जो हुज़ूर सल्ल. के मुबारक ज़माने में थे। ख़ुद आपको वे देख रहे थे और आप जो हिदायत लेकर आये वह उनके सामने थी, और ये आपके खुले मोजिज़े

भी अपनी आँखों से देख रहे थे, फिर बावजूद इन तमाम बातों के वे भाग जाते थे और टोलियाँ-टोलियाँ होकर दायें-बायें कतरा जाते थे। यह मज़मून एक और जगह इस तरह है:

فَمَالَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ.......... الخ.

ये नसीहत से मुँह फेरकर उन गधों की तरह जो शेर से भाग रहे हों, क्यों भाग रहे हैं?

यहाँ भी इसी तरह फ़रमाया कि इन काफ़िरों को क्या हो गया है? ये नफ़रत करके क्यों तेरे पास से भागे जा रहे हैं? क्यों दायें बायें सरकते जाते हैं? और क्या वजह है कि इख़्तिलाफ़ के साथ बिखर कर इधर-उधर हो रहे हैं? हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. ने नफ़्स की इच्छाओं पर अ़मल करने वालों के हक़ में यही फ़रमाया है कि वे अल्लाह की किताब के मुख़ालिफ़ होते हैं और आपस में भी मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग और बिखरे हुए) होते हैं। हाँ किताबुल्लाह की मुख़ालफ़त में सब एक होते हैं। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं- यानी दायें-बायें अलग हो जाते हैं और पूछते हैं कि उस शख़्स ने क्या कहा? हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि दायें बायें टोलियाँ-टोलियाँ होकर हुज़ूर सल्ल. के इर्द-गिर्द (आस-पास) फिरते रहते हैं। न किताबुल्लाह की तमन्ना है न रसूलुल्लाह सल्ल. की चाहत है।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. लोगों के पास तशरीफ़ लाये और वे अलग-अलग होकर दायरे और हल्के बनाये हुए थे तो आपने फ़रमाया- मैं तुम्हें अलग-अलग जमाअ़तों की सूरत में कैसे देख रहा हूँ? (अहमद) इब्ने जरीर में एक और सनद से भी मन्क़ूल है। फिर इरशाद होता है कि क्या उनकी आरज़ू है कि जन्नते नईम में दाख़िल किये जायें? ऐसा हरगिज़ न होगा, यानी जब उनकी हालत यह है कि किताबुल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल. से दायें बायें कतरा जाते हैं फिर उनकी यह तमन्ना पूरी नहीं हो सकती, बल्कि यह जहन्नमी गिरोह है। अब जिस चीज़ को मुहाल जानते हैं उसका बेहतरीन सुबूत उन ही की मालूमात और इक़रार से बयान हो रहा है कि जिसने तुम्हें ज़ईफ़ पानी (यानी वीर्य के क़तरे) से पैदा किया है जैसे कि ख़ुद तुम्हें भी मालूम है, फिर क्या वह तुम्हें दोबारा पैदा नहीं कर सकता? जैसे एक और जगह इरशाद है:

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ.

क्या हमने तुम्हें हक़ीर पानी से पैदा नहीं किया? एक और जगह इरशाद है:

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ.......... الخ.

इनसान को देखना चाहिये कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है जो पीठ और छाती के बीच से निकलता है। यक़ीनन वह ख़ुदा जिसने इसको पैदा किया इसके लौटाने पर क़ादिर है, जिस दिन सब छुपी चीज़ें और बातें खुल पड़ेंगी और कोई ताक़त न होगी, न मददगार।

पस यहाँ भी फ़रमाता है कि मुझे क़सम है उसकी जिसने ज़मीन व आसमान को पैदा किया और पूरब व पश्चिम मुतैयन की और सितारों के छुपने और ज़ाहिर होने की जगहें मुक़र्रर कर दीं। मतलब यह है कि ऐ काफ़िरो! जैसा तुम्हारा गुमान है वैसा मामला नहीं, कि न हिसाब किताब होगा न हश्र नश्र होगा, बल्कि ये सब यक़ीनन होने वाली चीज़ें हैं। इसी लिये क़सम से पहले उनके बातिल ख़्याल को झूठा कहा और उसे इस तरह साबित किया कि अपनी कामिल क़ुदरत के विभिन्न और अनेक नमूने उनके सामने पेश किये, जैसे मसलन आसमान व ज़मीन के पैदा होने का इब्तिदाई बयान और उनमें हैवानात (जानवरों), जमादात (बेजान

Maktab E Ashraf

चीज़ों) और मुख़्तलिफ़ किस्म की मख़्लूक़ की मौजूदगी। जैसे एक और जगह इरशाद है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰـكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ.

यानी आसमान व ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग बेइल्म हैं।

मतलब यह है कि जब वह बड़ी-बड़ी चीज़ों को पैदा करने पर क़ादिर है तो छोटी छोटी चीज़ों की पैदाइश पर क्यों क़ादिर न होगा? जैसे एक और जगह इरशाद है:

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِىَ الْمَوْتٰى.
بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

यानी क्या ये नहीं देखते कि जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया और उनकी पैदाईश में आजिज़ न हुआ, क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक वह क़ादिर है। और एक इसी पर क्या हर हर चीज़ पर उसे क़ुदरत हासिल है। एक और जगह इरशाद है:

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضَ.......الخ.

यानी क्या ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला इन जैसा पैदा करने पर क़ादिर नहीं? हाँ है और वही पैदा करने वाला और जानने वाला है। वह जिस चीज़ का इरादा करे कह देता है कि हो जा, वह उसी वक़्त हो जाती है।

यहाँ इरशाद हो रहा है कि पूरबों और पश्चिमों के परवर्दिगार की क़सम! हम इनके इन जिस्मों को जैसे ये अब हैं इससे भी बेहतर सूरत में बदल डालने पर पूरे-पूरे क़ादिर हैं। कोई चीज़ कोई शख़्स और कोई काम हमें आजिज़ और लाचार नहीं कर सकता। जैसा कि एक और मक़ाम पर इरशाद है:

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ لَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ........الخ.

क्या किसी शख़्स का यह गुमान है कि हम उसकी हड्डियाँ न जमा कर सकेंगे? ग़लत गुमान है, बल्कि हम तो उसकी पौर-पौर जमा करके ठीक-ठाक बना देंगे। एक और जगह फ़रमाया:

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ.......... الخ.

हमने तुम्हारे दरमियान मौत मुक़द्दर कर दी है और हम इससे आजिज़ नहीं कि तुम जैसों को बदल डालें और तुम्हें उस नये अन्दाज़ में पैदा करें जिसे तुम जानते भी नहीं।

पस एक मतलब तो ऊपर दर्ज आयत का यह है। दूसरा मतलब इमाम इब्ने जरीर रह. ने यह भी बयान फ़रमाया है कि हम इस चीज़ पर क़ादिर हैं कि तुम्हारे बदले ऐसे लोग पैदा कर दें जो हमारे आज्ञाकारी और फ़रमाँबरदार हों और हमारी नाफ़रमानियों से रुके रहने वाले हों। जैसे एक और जगह है:

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ......... الخ.

यानी अगर तुमने मुँह मोड़ा तो ख़ुदा तआला तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौम को लायेगा और वह तुम जैसी न होगी। लेकिन पहला मतलब दूसरी आयतों की साफ़ दलालत की वजह से ज़्यादा ज़ाहिर है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

फिर फ़रमाता है- ऐ नबी! इन्हें इनके झुठलाने, कुफ़्र करने और सरकशी में बढ़ने ही में छोड़ दो, जिसका वबाल इन पर उस दिन आयेगा जिसका इनसे वायदा हो चुका है। जिस दिन ख़ुदा तआ़ला इन्हें बुलायेगा और ये मैदाने मेहशर की तरफ़ जहाँ इन्हें हिसाब के लिये खड़ा किया जायेगा इस तरह लपकते हुए जायेंगे जिस तरह दुनिया में किसी बुत या झण्डे या थान को छूने और डंडोत करने के लिये एक दूसरे से आगे बढ़ते हुए जाते हैं। मारे शर्म व नदामत के निगाहें ज़मीन पर गड़ी हुई होंगी और चेहरों पर फटकार बरस रही होगी। यह है दुनिया में ख़ुदा की इताअ़त से मुँह मोड़ने का नतीजा और यह है वह दिन जिसके होने को आज मुहाल जानते हैं और हंसी मज़ाक़ में नबी सल्ल. की, शरीअ़त की और कलामे ख़ुदा का अपमान करते हुए कहते हैं कि क़ियामत क्यों क़ायम नहीं होती? हम पर अ़ज़ाब क्यों नहीं आता?

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः मआ़रिज की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः नूह

सूरः नूह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ○ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ○ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَأَطِيْعُوْنِ○ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ○	हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि तुम अपनी क़ौम को (कुफ़्र के वबाल से) डराओ, इससे पहले कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आए। (1) उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (2) (और कहता हूँ) कि तुम अल्लाह की इबादत (यानी तौहीद इख़्तियार) करो और उससे डरो और मेरा कहना मानो (3) तो वह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको वक़्ते मुक़र्रर (यानी मौत के वक़्त) तक (बिना सज़ा के) मोहलत देगा। अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त (है), जब (वह) आ जाएगा तो टलेगा नहीं। क्या ख़ूब होता अगर तुम (इन बातों को) समझते। (4)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम का ज़िक्र

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि हमने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को उनकी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा और हुक्म दिया कि अ़ज़ाब के आने से पहले अपनी क़ौम को होशियार कर दो। अगर वे तौबा कर लेंगे और ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ झुकने लगेंगे तो अ़ज़ाबे ख़ुदा उनसे उठ जायेंगे। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने यह पैग़ाम अपनी उम्मत को पहुँचा दिया और साफ़ कह दिया कि देखो मैं खुले लफ़्ज़ों में आगाह किये देता हूँ, मैं साफ़-साफ़ कह रहा हूँ कि ख़ुदा तआ़ला की इबादत, उसका डर और मेरी इताअ़त लाज़िमी चीज़ें हैं। जो काम तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किये हैं उनसे बचो, गुनाह के कामों से अलग रहो। जो कुछ मैं कहूँ उसका पालन करो। जिससे मैं रोकूँ रुक जाओ। मेरी रिसालत की तस्दीक़ करो तो ख़ुदा तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ फ़रमायेगा। यानी वे गुनाह जिन पर सज़ा का वायदा है और बड़े-बड़े गुनाह हैं अगर तुमने ये तीनों काम किये तो वो माफ़ हो जायेंगे और जिन अ़ज़ाबों से वह तुम्हें अब तुम्हारी इन ख़ताओं और ग़लत कामों की वजह से बरबाद करने वाला है उस अ़ज़ाब को हटा देगा। और तुम्हारी उम्रें बढ़ा देंगे। इस आयत से यह इस्तिदलाल भी किया गया है कि अल्लाह की इताअ़त, नेक सुलूक और सिला-रहमी से हक़ीक़त में उम्र बढ़ जाती है। हदीस में यह भी है कि सिला-रहमी उम्र बढ़ाती है।

फिर इरशाद होता है कि नेक आमाल इससे पहले कर लो कि ख़ुदा का अ़ज़ाब आ जाये, इसलिये कि जब वह आ जाता है फिर न उसे कोई हटा सकता है और न रोक सकता है। उस ख़ुदा-ए-आज़म व अकबर की बड़ाई ने हर चीज़ को पस्त कर रखा है, उसकी इ़ज़्ज़त व बड़ाई के सामने तमाम मख़्लूक़ पस्त है।

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ دَعَوْتُ قَوْمِیْ لَیْلًا
وَّنَهَارًا ○ فَلَمْ یَزِدْهُمْ دُعَآءِیْۤ اِلَّا
فِرَارًا ○ وَاِنِّیْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ
جَعَلُوْۤا اَصَابِعَهُمْ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا
ثِیَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ○ ثُمَّ اِنِّیْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ○
ثُمَّ اِنِّیْۤ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ
اِسْرَارًا ○ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ
كَانَ غَفَّارًا ○ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ

(जब लम्बी मुद्दत तक इन नसीहतों का कुछ असर क़ौम पर न हुआ तो) नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (हक़ तआ़ला से) दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात को भी और दिन को भी (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया। (5) सो मेरे बुलाने पर (दीन से) और ज़्यादा भागते रहे। (6) और (वह भागना यह हुआ कि) मैंने जब कभी उनको (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया ताकि (ईमान के सबब) आप उनको बख़्श दें तो उन लोगों ने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में दे लीं (ताकि हक़ बात को सुनें भी नहीं), और (यह कि हद दर्जे नफ़रत की वजह से) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेट लिए और इसरार किया और (मेरी इताअ़त से) हद दर्जे का तकब्बुर किया। (7) फिर (भी) मैंने उनको बुलन्द आवाज़ से बुलाया। (8) फिर मैंने उनको (ख़ुसूसी तौर पर

Maktab E Ashraf

مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ؕ مَالَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ۚ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ۙ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۝ۙ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۝ۙ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ۚ ع ١

ख़िताब करके) ऐलानिया समझाया और उनको बिल्कुल ख़ुफ़िया भी समझाया। (9) और (उस समझाने में) मैंने (उनसे यह) कहा कि तुम अपने रब से गुनाह बख़्शवाओ बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। (10) कसरत से तुम पर बारिश भेजेगा। (11) और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा, और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा। (12) (मैंने उनसे यह भी कहा कि) तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह की बड़ाई के मोतक़िद नहीं हो? (वरना शिर्क न करते)। (13) हालाँकि उसने तुमको तरह-तरह से बनाया। (14) क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह सात आसमान ऊपर-तले पैदा किए (15) और उनमें चाँद को नूर (की चीज़) बनाया और सूरज को (एक रोशन) चिराग़ (की तरह) बनाया। (16) और अल्लाह तआ़ला ने तुमको ज़मीन से एक ख़ास तौर पर पैदा किया। (17) फिर तुम को (मौत के बाद) ज़मीन ही में ले जाएगा और (क़ियामत में फिर इसी ज़मीन से) तुमको बाहर ले आएगा। (18) और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श (की तरह) बनाया (19) ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (20)

लगातार एक हज़ार साल तक तब्लीग़

यहाँ बयान हो रहा है कि साढ़े नौ सौ साल तक की लम्बी मुद्दत में किस-किस तरह हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को सही राह और हिदायत की तरफ़ बुलाया, क़ौम ने किस-किस तरह मुँह मोड़ा और क्या-क्या तकलीफ़ें ख़ुदा के इस मक़बूल और चुनिन्दा पैग़म्बर को पहुँचायीं और अपनी ज़िद पर अड़ गये। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम शिकायत के तौर पर अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं कि ख़ुदाया! मैंने तेरे हुक्म की पूरी तरह से तामील की, तेरे फ़रमाने आ़लीशान के मुताबिक़ न दिन को दिन समझा न रात को रात, बल्कि हर वक़्त उन्हें सही रास्ते की दावत देता रहा, लेकिन इसे क्या करूँ कि जिस मेहनत व कोशिश और दिल के दर्द के साथ मैं उन्हें नेकी की तरफ़ बुलाता रहा वे उसी सख़्ती से मुझसे भागते रहे, हक़ से मुँह मोड़ते रहे, यहाँ तक हुआ कि मैंने उनसे कहा कि आओ रब की सुनो ताकि रब भी तुम्हें बख़्शे, लेकिन उन्होंने मेरे इन अलफ़ाज़ का सुनना भी गवारा नहीं किया, कान बन्द कर लिये। यही हाल क़ुरैश के

काफ़िरों का था कि कलामुल्लाह को सुनना भी पसन्द नहीं करते थे। जैसे कि इरशाद है:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ.

यानी काफ़िरों ने कहा- इस क़ुरआन को न सुनो और जब यह पढ़ा जाता है तो शोर व गुल करो ताकि तुम ग़ालिब रहो।

क़ौमे नूह ने जहाँ अपने कानों में उंगलियाँ डालीं वहीं अपने मुँह भी कपड़ों से छुपा लिये ताकि वे पहचाने भी न जायें, और न कुछ सुनें, अपने तकब्बुर की वजह से पीठ फेर ली। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आ़म लोगों के मजमे में भी मैंने उन्हें कहा सुना, बुलन्द आवाज़ से भी उनके कान खोल दिये और बहुत सी बार एक-एक को चुपके-चुपके भी समझाया, ग़र्ज़ कि तमाम तरीक़े इख़्तियार कर लिये कि यूँ नहीं यूँ समझ जायें और यूँ नहीं तो यूँ सही रास्ते पर आ जायें।

मैंने उनसे कहा कि कम से कम तुम अपनी बदकारियों से तौबा ही कर लो, वह ग़फ़्फ़ार है हर झुकने वाले की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है और चाहे उससे कैसे ही बुरे से बुरे आमाल हो गये हों एक आन में माफ़ फ़रमा देता है, और यही नहीं बल्कि दुनिया में भी वह तुम्हें तुम्हारे इस्तिग़फ़ार (माफ़ी माँगने) की वजह से तरह-तरह की नेमतें अ़ता फ़रमायेगा और दर्द व दुख से बचा लेगा, वह तुम पर ख़ूब मूसलाधार बारिश बरसायेगा।

फ़ायदाः यह याद रहे कि सूखा पड़ने के दिनों में जब "नमाज़-ए-इस्तिस्क़ा" के लिये मुसलमान निकलें तो मुस्तहब है कि उस नमाज़ में इस सूरत को पढ़ें। इसकी एक दलील तो यही आयत है, दूसरी अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का अ़मल भी यही है। आप से नक़ल है कि बारिश माँगने के लिये जब आप निकले तो मिम्बर पर चढ़कर आपने ख़ूब इस्तिग़फ़ार किया और इस्तिग़फ़ार वाली आयतों की तिलावत की, जिनमें एक आयत वह भी थी। फिर फ़रमाने लगे कि बारिश को मैंने बारिश की तमाम राहों से जो आसमान में हैं तलब कर लिया है। यानी वे अहकाम अदा किये हैं जिनसे ख़ुदा बारिश नाज़िल फ़रमाया करता है।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम इस्तिग़फ़ार करोगे तो बारिश के साथ ही साथ रिज़्क़ की बरकत भी तुम्हें मिलेगी। ज़मीन व आसमान की बरकतों से तुम मालामाल हो जाओगे। खेतियाँ ख़ूब होंगी, जानवरों के थन दूध से भरे रहेंगे, माल व औलाद में तरक़्क़ी होगी, तरह-तरह के फलों से लदे-फदे बाग़ात तुम्हें नसीब होंगे जिनके दरमियान हर तरफ़ साफ़ और बरकत वाले पानी की रेल-पेल (अधिकता) होगी, हर तरफ़ नहरें और दरिया जारी हो जायेंगे।

इस तरह रग़बतें (दिलचस्पी और शौक़) दिलाकर फिर ज़रा डराते भी हैं। फ़रमाते हैं कि तुम ख़ुदा की अ़ज़मत (बड़ाई) के क़ायल क्यों नहीं होते? उसके अ़ज़ाब से निडर क्यों हो गये हो? देखते नहीं कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम्हें किन-किन हालतों में किस-किस लौट-फेर के साथ पैदा किया है? पहले पानी की बूँद, फिर जमा हुआ ख़ून, फिर गोश्त का लोथड़ा, फिर और सूरत फिर और हालत वग़ैरह। इसी तरह देखो कि उसने एक पर एक इस तरह आसमान पैदा किये चाहे वह सिर्फ़ सुनने ही से मालूम हुए हों या उन वुजूहात से मालूम हुए हों जो महसूस हैं, जो सितारों की चाल और उनके ग्रहण से समझी जा सकती हैं, जैसे कि सितारों का इल्म रखने वालों का बयान है, अगरचे इसमें भी उनका सख़्त मतभेद है, कि चलने फिरने वाले बड़े बड़े सितारे सात हैं, एक एक को बेनूर कर देता है, सबसे क़रीब आसमाने दुनिया में तो चाँद है जो

दूसरों को फीका और बेनूर किये हुए है और दूसरे आसमान पर उतारिद है, तीसरे आसमान में ज़ोहरा है, चौथे आसमान में बुरूज है, पाँचवें आसमान में मिर्रीख़ है, छठे आसमान में मुश्तरी है, सातवें आसमान में ज़ोहल है और बाक़ी सितारे जो सवाबित हैं (वो सितारे जो गर्दिश नहीं करते, एक जगह ठहरे रहते हैं) वे आठवें आसमान में हैं, जिसका नाम ये लोग फ़लके सवाबित (सवाबित सितारों वाला आसमान) रखते हैं। और उनमें से जो शरीअ़त वाले हैं वे उसे कुर्सी कहते हैं। और नवाँ आसमान उनके नज़दीक अत्लस और असीर है जिसकी हरकत उनके ख़्याल में दूसरे आसमानों की हरकत के ख़िलाफ़ (उलट) है, इसलिये कि दर असल उसकी हरकत और दूसरी हरकतों के पैदा होने का सबब है। वह पश्चिम से पूरब की तरफ़ हरकत करता है और बाक़ी सब आसमान पूरब से पश्चिम की तरफ़ और उन्हीं के साथ सितारे भी घूमते फिरते रहते हैं। लेकिन सय्यारों की हरकत आसमानों की हरकत के बिल्कुल बरअ़क्स (उलट) है, वे पश्चिम से पूरब की तरफ़ हरकत करते हैं और उनमें का हर एक अपने आसमान का चक्कर ख़ुदा तआ़ला की तय की हुई हरकत के मुताबिक़ करता है। चाँद तो हर महीने में एक बार, सूरज हर साल में एक बार, ज़ोहल हर तीस साल में एक बार। मुद्दत और समय की यह कमी-बेशी उस आसमान की लम्बाई चौड़ाई के एतिबार से है, वरना सब की हरकत तेज़ी में बिल्कुल मुनासबत रखती है।

यह ख़ुलासा है उनकी सारी बातों का जिसमें उनमें आपस में भी बहुत कुछ मतभेद है। न हम उसे यहाँ ज़िक्र करना चाहते हैं न उसकी तहक़ीक़ व तफ़तीश से इस वक़्त कोई ग़र्ज़ है। मक़सूद सिर्फ़ इस क़द्र है कि अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने सात आसमान बनाये हैं और वे ऊपर नीचे हैं, फिर उनमें सूरज चाँद को पैदा किया है। दोनों की चमक-दमक, रोशनी और उजाला अलग अलग है, जिससे दिन रात की तमीज़ हो जाती है। फिर चाँद की निर्धारित मन्ज़िलें और बुरूज हैं। फिर उसकी रोशनी घटती बढ़ती रहती है और ऐसा वक़्त भी आता है कि वह बिल्कुल छुप जाता है और ऐसा वक़्त भी आता है कि वह अपनी पूरी रोशनी के साथ होता है, जिससे महीने और साल मालूम होते हैं। जैसे क़ुरआन में अल्लाह का फ़रमान हैः

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا...... الخ.

ख़ुदा वह है जिसने सूरज चाँद ख़ूब रोशन और चमकदार बनाये और चाँद की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम्हें साल और हिसाब मालूम हो जाये। उनकी पैदाईश हक़ ही के साथ है। आ़लिमों (जानने वालों और इल्म रखने वालों) के सामने अल्लाह की क़ुदरत के ये नमूने अलग-अलग मौजूद हैं।

फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम्हें ज़मीन से उगाया (इस ताबीर ने मज़मून को बेहद लतीफ़ कर दिया)। फिर तुम्हें मार डालने के बाद उसी में लौटाया जायेगा। फिर क़ियामत के दिन उसी से तुम्हें निकालेगा जैसे पहली बार पैदा किया था, और अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श बना दिया और वह हिले-डुले नहीं इसलिये उस पर मज़बूत पहाड़ गाड़ दिये। इसी ज़मीन के खुले और लम्बे-चौड़े रास्तों पर तुम चलते फिरते हो, इसी पर रहते सहते हो, इधर से उधर जाते आते हो।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की ग़र्ज़ और मक़सद यह है कि अल्लाह की बड़ाई और उसकी क़ुदरत के नमूने अपनी क़ौम के सामने रखकर उन्हें आमादा कर रहे हैं कि ज़मीन व आसमान की बरकतों के देने वाले, हर चीज़ के पैदा करने वाले, आ़लीशान क़ुदरत के रखने वाले, राज़िक़ ख़ालिक़ ख़ुदा का क्या तुम पर इतना भी हक़ नहीं कि तुम उसी की इबादत करो? उसका लिहाज़ रखो और उसके कहने से उसके सच्चे नबी की राह इख़्तियार करो? तुम्हें ज़रूर चाहिये कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो, किसी और को सच्चा

माबूद न जानो, उस जैसा उसका शरीक उसका साझी किसी को न जानो। उसकी बीवी जानने से, बेटों पोतों से, वज़ीर व सलाहकार से, उसके जैसा किसी और को जानने से पाक मानो, उसी को बुलन्द व बाला और अज़ीम व आला जानो।

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۝ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۝ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝

(और यह सब गुफ़्तगू और वाक़िआ अर्ज़ करके) नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (यह) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! उन लोगों ने मेरा कहना नहीं माना और ऐसे शख़्सों की पैरवी की कि जिनके माल और औलाद ने उनको नुक़सान ही ज़्यादा पहुँचाया। (21) और (उन्होंने जिनकी पैरवी की है वे ऐसे हैं कि) जिन्होंने (हक़ के मिटाने के लिए) बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। (22) और जिन्होंने (अपने पैरोकारों से) कहा कि तुम अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और (ख़ास तौर पर) 'वद्द' को और न 'सुवाअ़' को और न 'यग़ूस' को और 'यऊक़' को और 'नस्र' को छोड़ना। (23) और उन (सरदार) लोगों ने बहुतों को (बहका-बहकाकर) गुमराह कर दिया, और (अब आप) उन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा दीजिए। (24)

क़ौम की नाफ़रमानी और ख़ुदा के पैग़म्बर की शिकायत

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी पिछली शिकायतों के साथ ही अल्लाह की बारगाह में अपनी क़ौम के लोगों के इस चलन को भी बयान किया कि मेरी पुकार को जो उनके लिये सरासर नफ़ा देने वाली थी उन्होंने कान तक से न लगाया, हाँ अपने मालदारों और ऐश परस्तों की मान ली जो तेरे हुक्म से बिल्कुल ग़ाफ़िल थे और मालदारों के पीछे मस्त थे, अगरचे वास्तव में वह माल व औलाद भी उनके लिये सरासर वबाले जान थी, क्योंकि उनकी तरफ़ ध्यान देने से वे इतराते थे और ख़ुदा को भूलते थे, और ज़्यादा नुक़सान में उतर जाते थे। और उन सरदारों ने जो माल व रुतबे वाले थे उनसे बड़ी मक्कारी की। "कुब्बार किबार" दोनों मायने में कबीर के हैं, यानी बहुत बड़ा। क़ियामत के दिन भी ये लोग यही कहेंगे कि तुम्हारा काम दिन रात मक्कारी से हमें कुफ़्र व शिर्क का हुक्म करना था, और इन बड़ों ने उन छोटों से कहा कि अपने इन बुतों को जिन्हें तुम पूजते रहे हो हरगिज़ न छोड़ना।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि क़ौमे नूह के बुतों को अ़रब के काफ़िरों ने ले लिया। दूमतुल-जन्दल में क़बीला कल्ब "वद्द" को पूजते थे। हुज़ैल क़बीला "सुवाअ़" का परस्तार था, क़बीला मुराद और क़बीला बनू ग़ुतैफ़ जो जुरुफ़ के रहने वाले थे, यह शहर सबा के पास है "यग़ूस" की पूजा करता था, क़बीला हमदान "यऊक़" का पुजारी था। आले ज़ी कलाअ़ का क़बीला हुमैर "नस्र" बुत का मानने वाला था।

ये सब बुत दर असल कौमे नूह के नेक सालेह बुजुर्ग औलिया-अल्लाह लोग थे। उनके इन्तिकाल के बाद शैतान ने उस ज़माने के लोगों के दिलों में यह बात डाली कि इन बुज़ुर्गों की इबादत की जगहों में उनकी कोई यादगार क़ायम करें। चुनाँचे उन्होंने वहाँ निशान बना दिये और हर बुज़ुर्ग के नाम पर उन्हें मशहूर किया। जब तक ये लोग ज़िन्दा रहे तब तक तो उस जगह की पूजा न हुई लेकिन उन निशानात और यादगार क़ायम करने वाले लोगों के मर जाने के बाद और इल्म के उठ जाने के बाद जो लोग आये, अपनी जहालत की वजह से उन्होंने बाक़ायदा उन जगहों की और उन नामों की पूजा-पाठ शुरू कर दी (क़ब्रों को पूजने वाले या उनके हद से ज़्यादा एहतिराम करने वाले साहिबान ज़रा ध्यान दें और अपनी आख़िरत के साथ-साथ यह भी सोचें कि कहीं हमारे इस अ़मल की वजह से आने वाली नस्ल कुफ़्र तक तो नहीं पहुँच जायेगी?)।

हज़रत इक्रिमा, हज़रत ज़ह्हाक, हज़रत क़तादा और हज़रत इब्ने इस्हाक़ रह. भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत मुहम्मद बिन क़ैस रह. फ़रमाते हैं कि ये बुज़ुर्ग, आ़बिद, अल्लाह वाले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के सही मायनों में हुक्म मानने वाले और नेक लोग थे, जिनकी पैरवी और लोग भी करते थे। जब ये वफ़ात पा गये तो इनके मुक़्तदियों (पैरोकारों) ने कहा कि अगर हम इनकी तस्वीरें बना लें तो हमें इबादत में ख़ूब दिलचस्पी रहेगी और इबादत का शौक़ इन बुज़ुर्गों की सूरतें देखकर बढ़ता रहेगा। चुनाँचे ऐसा ही किया। जब ये लोग भी ख़त्म हो गये और इनकी नस्लें आयीं तो शैतान ने उन्हें यह समझाया कि तुम्हारे बड़े तो इनकी पूजा-पाठ करते थे और इन्हीं से बारिश वग़ैरह की दुआ़ माँगते थे। चुनाँचे उन्होंने अब बाक़ायदा इन बुज़ुर्गों की तस्वीरों की पूजा शुरू कर दी।

हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर रह. हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से में बयान करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया- हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के चालीस बच्चे थे, बीस लड़के बीस लड़कियाँ। उनमें से जिनकी बड़ी उम्रें हुईं उनमें हाबील, क़ाबील, सालेह और अ़ब्दुर्रहमान थे, जिनका पहला नाम अ़ब्दुल-हारिस और वद्द था, जिन्हें शीस और हब्तुल्लाह भी कहा जाता है। तमाम भाईयों ने सरदारी इन्हीं को दे रखी थी। उनकी औलाद ये चारों थे, यानी सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़ और नस्र। हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की बीमारी के वक़्त उनकी औलाद, यग़ूस, यऊक़ सुवाअ़ और नस्र थी। वद्द उन सब में बड़ा और सबसे नेक-सुलूक वाला था। इब्ने अबी हातिम में है कि अबू जाफ़र रह. नमाज़ पढ़ रहे थे और लोगों ने यज़ीद बिन मुहल्लब का ज़िक्र किया, आपने फ़ारिग़ होकर फ़रमाया- सुनो वह वहाँ क़त्ल किया गया जहाँ सबसे पहले ग़ैरुल्लाह की परस्तिश (पूजा) हुई।

वाकिआ़ यह हुआ कि एक दीनदार अल्लाह का वली मुसलमान जिसे लोग बहुत चाहते थे और बड़े मोतक़िद थे, वह मर गया। ये लोग मुजाविर बनकर उसकी क़ब्र पर बैठ गये और रोना पीटना और उसे याद करना शुरू किया, बड़े बेचैन और मुसीबत ज़दा हो गये। शैतान मरदूद ने यह देखकर इनसानी सूरत में उनके पास आकर उनसे कहा कि इस बुज़ुर्ग की यादगार क्यों क़ायम नहीं कर लेते? जो हर वक़्त तुम्हारे सामने रहे और तुम उसे न भूलो। सब ने इस राय को पसन्द किया। शैतान ने उस बुज़ुर्ग की तस्वीर बनाकर उनके पास खड़ी कर दी जिसे देखकर ये लोग उसे याद करते थे और उसकी इबादत के तज़किरे रहते थे। जब वे सब इसमें मशग़ूल हो गये तो शैतान ने कहा कि तुम सब को यहाँ आना पड़ता है इसलिये यह बेहतर होगा कि मैं इसकी बहुत सारी तस्वीरें बना दूँ, तुम उन्हें अपने-अपने घरों में रख लो। वे इस पर भी राज़ी हुए और यह भी हो गया। अब तक सिर्फ़ ये तस्वीरें और बुत यादगार के तौर पर थे मगर उनकी

दूसरी पुश्त में जाकर डायरेक्ट उन ही की इबादत होने लगी, असल वाकिआ सब भूल गये और अपने बाप दादाओं को भी उनकी इबादत करने वाला समझ कर ख़ुद भी बुत-परस्ती (मूर्ती पूजन) में मशग़ूल हो गये। उनका नाम वद्द था और यही वह पहला बुत है जिसकी पूजा ख़ुदा के सिवा की गयी। उन्होंने बहुत मख़्लूक़ को गुमराह किया। उस वक़्त से लेकर अब तक अ़रब व अ़जम में ख़ुदा के सिवा और दूसरों की परस्तिश शुरू हो गयी और मख़्लूक़े ख़ुदा बहक गयी। चुनाँचे ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपनी दुआ में अ़र्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को बुत-परस्ती से बचा। ख़ुदाया उन्होंने अक्सर मख़्लूक़ को गुमराह कर दिया है। फिर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम के लिये बद्दुआ करते हैं। (क्योंकि उनकी नाफ़रमानी और सरकशी के सबब उनको यह मालूम हो गया था कि ये अब हरगिज़ ईमान न लायेंगे, तो ऐसे में उनकी हैसियत बदन के उस अंग की तरह हो गयी थी जो ख़राब होकर गल-सड़ जाये, अगर उसको बदन से अलग न किया जाये तो पूरे बदन के हलाक होने का डर रहता है लिहाज़ा उसको बदन से काट देना ही बदन की हिफ़ाज़त है। इसी तरह ये लोग दुनिया में रहने के लायक़ ही न रहे थे, जिसके सबब इनके लिये बद्दुआ की गयी। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

مِمَّا خَطِيْٓـٔـٰتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ
فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ○
وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ
مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ○ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ
يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ○ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ
دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا
تَبَارًا ○ ع

(उन लोगों का अन्जाम यह हुआ कि) अपने इन गुनाहों के सबब वे ग़र्क़ किए गए, फिर (ग़र्क़ होने के बाद) दोज़ख़ में दाख़िल किए गए। और ख़ुदा के सिवा उनको कोई हिमायती मयस्सर न हुए। (25) और नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (यह भी) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! काफ़िरों में से ज़मीन पर एक रहने वाला भी मत छोड़। (26) (क्योंकि) अगर आप उनको रू-ए-ज़मीन पर रहने देंगे तो आपके बन्दों को गुमराह ही कर देंगे, और (आगे भी) उनके महज़ बुरी और काफ़िर ही औलाद पैदा होगी। (27) ऐ मेरे रब! मुझको और मेरे माँ-बाप को और जो मोमिन होने की हालत में मेरे घर में दाख़िल हैं उनको (यानी घर वालों और बाल-बच्चों को, बीवी और किनआ़न को छोड़कर) और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बख़्श दीजिए, और उन ज़ालिमों की हलाकत व तबाही और बढ़ाईये। (28)

क़ौमे नूह की उनके बुरे आमाल की वजह से हलाकत

फ़रमाता है कि अपने गुनाहों की कसरत (अधिकता) की वजह से ये लोग हलाक कर दिये गये। उनकी सरकशी, उनकी ज़िद और हठ-धर्मी, उनकी अल्लाह के रसूल के साथ मुख़ालफ़त व दुश्मनी हद से गुज़र

Maktab E Ashraf

गयी तो उन्हें पानी में डुबो दिया गया और यहाँ से आग के गड्ढे में ढकेल दिये गये। कोई खड़ा न हुआ जो उन्हें इन अज़ाबों से बचा सकता। जैसे फ़रमान है:

لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ.

यानी आज के दिन अज़ाबे खुदा से कोई नहीं बचा सकता, सिर्फ़ वही निजात पायेगा जिस पर खुदा तआ़ला रहम करे।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपने मालिके हक़ीक़ी से उन बदनसीबों की शिकायत व फ़रियाद करते हैं और उस मालिक से उन पर आफ़त व अ़ज़ाब नाज़िल करने की दरख़्वास्त पेश करते हैं, कि अब तो इन नाशुक्रों में से खुदाया एक को भी ज़मीन पर चलता फिरता न छोड़। और यही हुआ भी कि सारे के सारे पानी में ग़र्क़ कर दिये गये, यहाँ तक कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का सगा बेटा जो बाप से अलग रहा था वह भी न बच सका। समझा तो यह था कि पानी मेरा क्या बिगाड़ेगा, मैं किसी बड़े पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा, लेकिन वह पानी तो न था, वह तो अल्लाह का अ़ज़ाब था, वह तो अल्लाह का ग़ज़ब था, वह तो नूह अ़लैहिस्सलाम की बद्दुआ़ थी, उससे भला कौन बच सकता था? पानी उसे वहीं जा पकड़ता है और वह अपने बाप के सामने बातें करता-करता डूब मरता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अगर तूफ़ाने नूह में खुदा तआ़ला किसी पर रहम करता तो उसके लायक़ वह औ़रत थी जो पानी को उबलते और बरसते देखकर अपने बच्चे को लेकर उठ खड़ी हो गई थी और पहाड़ पर चढ़ गयी थी। जब पानी वहाँ भी जा चढ़ा तो बच्चे को उठाकर अपने मोंढे पर बैठा लिया। जब पानी वहाँ भी पहुँच गया तो उसको सर पर बैठा लिया। जब पानी सर तक जा चढ़ा तो अपने बच्चे को हाथों में लेकर सर से ऊपर उठा लिया, लेकिन आख़िर पानी वहाँ तक पहुँच गया और माँ बेटा डूब गये। पस अगर उस दिन ज़मीन के काफ़िरों में से कोई भी क़ाबिले रहम होता तो यह थी। मगर यह भी न बच सकी न बचा सकी। यह हदीस ग़रीब है लेकिन रावी इसके सब मोतबर हैं।

ग़र्ज़ कि रू-ए-ज़मीन के काफ़िर ग़र्क़ कर दिये गये सिर्फ़ वे ईमान वाले अफ़राद बाक़ी रहे जो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के साथ उनकी कश्ती में थे, और अल्लाह के हुक्म से हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें अपने साथ अपनी कश्ती में सवार कर लिया था।

चूँकि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को सख़्त कड़वा और लम्बा तजुर्बा हो चुका था इसलिये अपनी नाउम्मीदी को ज़ाहिर फ़रमाते हुए कहते हैं कि खुदाया! मेरी चाहत है कि इन तमाम काफ़िरों को बरबाद कर दिया जाये, इनमें से जो भी बाक़ी बच जायेगा वही दूसरों की गुमराही का सबब बनेगा, और जो नस्ल उसकी फैलेगी वह भी उसी जैसी बदकार और काफ़िर दिल वाली होगी। साथ ही अपने लिये बख़्शिश तलब करते हैं और अ़र्ज़ करते हैं- ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श, मेरे माँ-बाप को बख़्श और हर उस शख़्स को जो मेरे घर में आ जाये और हो भी वह ईमान वाला। घर से मुराद मस्जिद भी ली गयी है लेकिन आ़म मुराद यही है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मोमिन ही के साथ उठ-बैठ, रह-सह और सिर्फ़ परहेज़गार ही तेरा खाना खायें। यह हदीस अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ इसी सनद से यह हदीस मारूफ़ (परिचित और मशहूर) है।

फिर अपनी दुआ़ को आ़म करते और कहते हैं कि तमाम ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को भी बख़्श, चाहे ज़िन्दा हों चाहे मुर्दा। इसी लिये मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है कि हर शख़्स अपनी दुआ़ में दूसरे मोमिनों को भी शामिल रखे ताकि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की पैरवी भी हो और उन हदीसों पर भी अ़मल

हो जाये जो इस बारे में हैं। और वे दुआयें भी आ जायें जो मन्क़ूल हैं। फिर दुआ के ख़ात्मे (समापन) पर कहते हैं कि बारी तआला! तू इन काफ़िरों को तबाही, बरबादी, हलाकत और नुक़सान में ही बढ़ता रह। दुनिया व आख़िरत में वे बरबाद ही रहें।

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सूरः नूह की तफ़सीर पूरी हुई

सूरः जिन्न

सूरः जिन्न मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًاO يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ط وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًاO وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًاO وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًاO وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًاO وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًاO وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًاO

आप (उन लोगों से) कहिये कि मेरे पास इस बात की वही आई है कि जिन्नात में से एक जमाअ़त ने क़ुरआन सुना। फिर (अपनी क़ौम में वापस जाकर) उन्होंने कहा कि हमने एक अ़जीब क़ुरआन सुना है। (1) जो सही रास्ता बतलाता है, सो हम तो उस पर ईमान ले आए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएँगे। (2) और (उन्होंने यह भी बयान किया कि) हमारे परवर्दिगार की बड़ी शान है, उसने न किसी को बीवी बनाया और न औलाद। (3) और हममें जो अहमक़ हुए हैं वे अल्लाह की शान में हद से बढ़ी हुई बातें कहते थे। (4) और हमारा (पहले) यह ख़्याल था कि इनसान और जिन्नात कभी ख़ुदा की शान में झूठ बात न कहेंगे। (5) और बहुत-से लोग आदमियों में ऐसे थे कि वे जिन्नात में से बाज़े लोगों की पनाह लिया करते थे। सो उन आदमियों ने उन जिन्नात का दिमाग़ और ख़राब कर दिया। (6) और जैसा कि तुमने ख़्याल कर रखा था वैसा ही आदमियों ने भी ख़्याल कर रखा था कि अल्लाह तआला किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा। (7)

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तब्लीग़ी कोशिशें और जिन्नात का इस्लाम क़बूल करना

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. से फ़रमाता है कि अपनी क़ौम को इस वाक़िए की इत्तिला दीजिए कि जिन्नात ने क़ुरआने करीम सुना, इसे सच्चा माना, इस पर ईमान लाये और इसके फ़रमाँबरदार बन गये। इसलिये फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम कहो कि मेरी तरफ़ वही की गई है कि जिन्नात की एक जमाअ़त ने क़ुरआने करीम सुना और अपनी क़ौम में जाकर ख़बर की कि आज हमने अ़जीब व ग़रीब किताब सुनी जो सच्चा और निजात का रास्ता बतलाती है। हम तो उसे मान चुके, नामुम्किन है कि अब हम ख़ुदा तआ़ला के साथ किसी और की इबादत करें। यही मज़मून सूरः अहक़ाफ़ की आयत 29 में गुज़र चुका है:

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ....... الخ.

यानी जबकि हमने जिन्नों की एक जमाअ़त को तेरी तरफ़ लौटाया ताकि वे क़ुरआन सुनें।

इसकी तफ़सीर हदीसों की रोशनी में वहीं हम बयान कर चुके हैं, यहाँ उसको दोबारा लिखने की ज़रूरत नहीं। फिर ये जिन्नात अपनी क़ौम से कहते हैं कि हमारे रब की क़ुदरत और उसका हुक्म बहुत बुलन्द व बाला, बड़ी शान व इज़्ज़त वाला है। उसकी नेमतें, क़ुदरतें और मख़्लूक़ पर मेहरबानियाँ बहुत हैं। उसकी बुज़ुर्गी व बड़ाई बहुत बुलन्द है, उसका जलाल व इकराम बहुत बढ़ा चढ़ा हुआ है, उसका ज़िक्र बुलन्द रुतबे वाला है, उसकी शान आला है। एक रिवायत में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मन्क़ूल है कि "जद" कहते हैं बाप को। अगर जिन्नात को यह इल्म होता कि इनसानों में जद होता है तो वे ख़ुदा के बारे में यह लफ़्ज़ न कहते। यह क़ौल अगरचे सनद के एतिबार से क़वी है लेकिन इसका कोई मतलब समझ में नहीं आता, मुम्किन है कि इसके कुछ हिस्से (अंश) छूट गये हों। वल्लाहु आलम।

फिर अपनी क़ौम से कहते हैं कि ख़ुदा तआ़ला इससे पाक और बरतर है कि उसकी बीवी हो या उसकी औलाद हो। फिर कहते हैं कि हमारा बेवक़ूफ़ यानी शैतान, अल्लाह तआ़ला पर झूठ तोहमत रखता है, और यह भी हो सकता है कि मुराद इससे आ़म हो यानी जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला की औलाद और बीवी साबित करता है वह बेअ़क़्ल है, झूठ बकता है, बातिल अ़क़ीदा रखता है और ज़ालिमाना बात मुँह से निकालता है। फिर फ़रमाते हैं कि हम तो इसी ख़्याल में थे कि जिन्नात व इनसान ख़ुदा पर झूठ नहीं बाँध सकते, लेकिन क़ुरआन सुनकर मालूम हुआ कि दोनों जमाअ़तें रब्बुल-आ़लमीन पर तोहमत रखती थीं। दर असल ख़ुदा तआ़ला की ज़ात इस ऐब से पाक है।

फिर कहते हैं कि जिन्नात के ज़्यादा बहकने का सबब यह हुआ कि वे देखते थे कि जब कभी इनसान किसी जंगल या वीराने में जाते हैं तो जिन्नात की पनाह तलब किया करते हैं, जैसे कि जाहिलीयत के ज़माने के अ़रब वालों की आ़दत थी कि जब कभी किसी पड़ाव पर उतरते तो कहते कि हम इस जंगल के बड़े जिन्न की पनाह में आते हैं, और समझते थे कि ऐसा कह लेने के बाद तमाम जिन्नात के शर (बुराई और सताने) से हम महफ़ूज़ हो जाते हैं। जैसे किसी शहर में जाते तो वहाँ के बड़े रईस (सरदार) की पनाह लेते ताकि शहर के दूसरे दुश्मन लोग उन्हें तकलीफ़ न पहुँचायें। जिन्नों ने जब यह देखा कि इनसान भी हमारी पनाह लेते हैं तो उनकी सरकशी (तकब्बुर और नाफ़रमानी) और बढ़ गयी और उन्होंने और बुरी तरह

इनसानों को सताना शुरू किया। यह मतलब भी हो सकता है कि जिन्नात ने यह हालत देखकर इनसानों को और डराना शुरू किया और उन्हें तरह-तरह से सताने लगे। दर असल जिन्नात इनसानों से डरा करते थे जैसे कि इनसान जिन्नों से बल्कि इससे भी ज़्यादा, यहाँ तक कि जिस जंगल बयाबान में इनसान जा पहुँचता तो वहाँ से जिन्नात भाग खड़े होते थे, लेकिन जब से मुश्रिक लोगों ने ख़ुद उनसे पनाह माँगनी शुरू की और कहने लगे कि इस वादी के सरदार जिन्न की पनाह में हम आते हैं इससे कि हमें या हमारी औलाद व माल को कोई नुक़सान पहुँचे, अब जिन्नों ने समझा कि ये तो ख़ुद हमसे डरते हैं तो उनकी जुर्रत और बढ़ गयी और अब उन्होंने तरह-तरह से डराना सताना और छेड़ना शुरू कर दिया। वे गुनाह में, ख़ौफ़ में और सरकशी में और ज़्यादा बढ़ गये।

करदम बिन अबू साईब अन्सारी कहते हैं कि मैं अपने वालिद के साथ मदीना से किसी काम के लिये बाहर निकला। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. की बेसत हो चुकी थी (यानी आप नुबुव्वत का ऐलान कर चुके थे) और मक्का शरीफ़ में आप एक पैग़म्बर की हैसियत से ज़ाहिर हो चुके थे। रात के वक़्त हम एक चरवाहे के पास जंगल में ठहर गये, आधी रात के वक़्त एक भेड़िया आया और बकरी उठाकर ले भागा। चरवाहा उसके पीछे दौड़ा और पुकार कर कहने लगा- ऐ इस जंगल के आबाद रखने वाले! तेरी पनाह में आया हुआ शख़्स लुट गया? साथी ही एक आवाज़ आयी हालाँकि कोई शख़्स नज़र न आता था, कि ऐ भेड़िये इस बकरी को छोड़ दे। थोड़ी देर में हमने देखा कि वही बकरी भागी भागी आयी और रेवड़ में मिल गयी। उसे ज़ख़्म भी नहीं आया था। यही बयान उस आयत में है जो अल्लाह के रसूल पर मक्का में उतरी कि बाज़ लोग जिन्नात की पनाह माँगा करते थे। ऐसा मुम्किन है कि यह भेड़िया बनकर आने वाला भी जिन्न ही हो और बकरी के बच्चे को पकड़ ले गया हो और चरवाहे की इस दुहाई पर छोड़ दिया हो, ताकि चरवाहे को और फिर उसकी बात सुनकर औरों को इस बात का पूरा यक़ीन हो जाये कि जिन्नात की पनाह में आ जाने से नुक़सानात से महफ़ूज़ रहते हैं और फिर इस अक़ीदे के कारण वे और गुमराह हों और ख़ुदा के दीन से निकल जायें। वल्लाहु आलम

ये मुसलमान जिन्नात अपनी क़ौम से कहते हैं कि ऐ जिन्नो! जिस तरह तुम्हारा गुमान था इसी तरह इनसान भी इसी ख़्याल में थे कि अब अल्लाह तआ़ला किसी रसूल को न भेजेगा (और यह भी कि मरकर ज़िन्दा नहीं होना पड़ेगा, जिससे अपने आमाल का हिसाब देना पड़े)।

और हमने (अपनी पुरानी आदत के अनुसार) आसमान (की ख़बरों) की तलाशी लेना चाहा, सो हमने उसको सख़्त पहरों (यानी मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों) और शोलों से भरा हुआ पाया। (8) और (उससे पहले) हम आसमान (की ख़बरें सुनने) के मौक़ों में (ख़बर) सुनने के लिए जा बैठा करते थे, सो जो कोई अब सुनना चाहता है तो अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। (9) और हम नहीं जानते कि (इन नये	وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजने से) ज़मीन वालों को कोई तकलीफ़ पहुँचाना मक़सूद है या उनके रब ने उनको हिदायत देने का इरादा फ़रमाया है। (10)	اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِى الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًاۙ

Maktab E Ashraf

जिन्नात पर पाबन्दियाँ

हुज़ूरे पाक सल्ल. की बेसत (नबी बनकर तशरीफ़ लाने) से पहले जिन्नात आसमानों पर जाते, किसी जगह बैठते और कान लगाकर फ़रिश्तों की बातें सुनते। फिर आकर काहिनों को ख़बर देते थे और काहिन उन बातों को बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर और एक में सौ झूठ मिलाकर अपने मानने वालों से कहते। अब जब हुज़ूर सल्ल. को पैग़म्बर बनाकर भेजा गया और आप पर क़ुरआने करीम नाज़िल होना शुरू हुआ तो आसमानों पर ज़बरदस्त पहरे बैठा दिये गये और उन शयातीन को पहले की तरह वहाँ जा बैठने और बातें उड़ा लाने का मौक़ा न रहा, ताकि क़ुरआने करीम और काहिनों का कलाम ख़ल्त-मल्त न हो जाये (एक दूसरे में न मिल जाये) और हक़ के इच्छुक को दिक़्क़त पेश न आये। ये मुसलमान जिन्नात अपनी क़ौम से कहते हैं कि पहले तो हम आसमान पर जा बैठते थे मगर अब तो सख़्त पहरे लगे हुए हैं और आग के शोले ताक में लगे हुए हैं, ऐसे छूटकर आते हैं कि अपने निशाने से चूकते ही नहीं, जला-भुना देते हैं। अब हम नहीं कह सकते कि इससे वास्तविक मुराद क्या है? ज़मीन वालों की कोई बुराई चाही गई है या उनके साथ उनके रब का इरादा नेकी और भलाई का है।

ख़्याल कीजिए कि ये मुसलमान जिन्नात किस क़द्र अदब से काम लेने वाले थे कि बुराई की निस्बत के लिये किसी ख़ास ज़ात का ज़िक्र नहीं किया और भलाई की निस्बत ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ की, और कहा कि दर असल आसमान की इस हिफ़ाज़त से क्या मतलब है? इसे हम नहीं जानते। इसी तरह हदीस शरीफ़ में भी आया है कि ख़ुदाया! तेरी तरफ़ से शर और बुराई नहीं। सितारे इससे पहले भी कभी कभी झड़ते थे लेकिन इस अधिकता के साथ उनका आग बरसाना क़ुरआने करीम की हिफ़ाज़त के लिये हुआ था। चुनाँचे एक हदीस में है कि हम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास बैठे हुए थे कि अचानक एक सितारा झड़ा और बड़ी रोशनी हो गयी तो आप सल्ल. ने हम से मालूम फ़रमाया- पहले इसे झड़ता देखकर तुम क्या कहा करते थे? हमने कहा हुज़ूर! हमारा ख़्याल था कि या तो यह किसी बड़े आदमी की पैदाईश पर झड़ता है या किसी बड़े आदमी की मौत पर। आप सल्ल. ने फ़रमाया- नहीं! बल्कि अल्लाह तआ़ला जब कभी किसी काम का आसमान पर फ़ैसला करता है (तब ऐसा होता है)।

यह हदीस पूरे तौर पर सूरः सबा की तफ़सीर में गुज़र चुकी है। दर असल सितारों का अधिकता के साथ गिरना, जिन्नात का उनसे हलाक होना, आसमान की हिफ़ाज़त का बढ़ जाना, उनका आसमान की ख़बरों से मेहरूम हो जाना ही इस चीज़ का सबब बना कि ये निकल खड़े हुए और इन्होंने चारों तरफ़ तलाश शुरू कर दी कि क्या वजह हुई जो हमारा आसमानों पर जाना बन्द हो गया। चुनाँचे उनमें से एक जमाअ़त का गुज़र अ़रब के इलाक़े में हुआ और यहाँ रसूले ख़ुदा सल्ल. को सुबह की नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हुए सुना और समझ गये इस नबी की बेसत और इस कलाम का नुज़ूल ही हमारी बन्दिश का सबब है। पस ख़ुशनसीब समझदार जिन्नात तो मुसलमान हो गये, बाक़ी दूसरे जिन्नात को ईमान नसीब न हुआ। सूरः अहक़ाफ़ की आयतः

Maktab E Ashraf

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ.

(यानी आयत नम्बर 29) में इसका पूरा बयान गुज़र चुका है। सितारों का झड़ना, आसमान का सुरक्षित हो जाना, जिन्नात ही के लिये नहीं बल्कि इनसानों के लिये भी एक ख़ौफ़नाक अ़लामत थी। वे घबरा रहे थे और मुन्तज़िर थे कि देखिये क्या नतीजा हो? और उमूमन नबियों के तशरीफ़ लाने और अल्लाह के दीन के इज़हार के वक़्त ऐसा होता भी था। हज़रत सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि शैतान इससे पहले आसमानी बैठकों में बैठकर फ़रिश्तों की आपस की बातें उड़ा लाया करते थे, जब हुज़ूर सल्ल. पैग़म्बर बनाये गये तो एक रात उन शयातीन पर बड़े अंगारे बरसाये गये, जिसे देखकर ताईफ़ शहर के लोग घबरा गये कि शायद आसमान वाले हलाक हो गये। उन्होंने देखा कि ताबड़-तोड़ सितारे टूट रहे हैं, शोले उठ रहे हैं और दूर-दूर तक तेज़ी के साथ जा रहे हैं। उन्होंने गुलाम आज़ाद करने और अपने जानवरों को अल्लाह की राह में छोड़ने शुरू कर दिये। आख़िर अ़ब्दे यालैल बिन अ़मर बिन उमैर ने उनसे कहा कि ऐ ताईफ़ वालो! तुम क्यों अपने माल बरबाद कर रहे हो? तुम सितारे देखो, अगर सितारों को अपनी-अपनी जगह पाओ तो समझ लो कि आसमान वाले तबाह नहीं हुए बल्कि ये सब कुछ इन्तिज़ामात सिर्फ़ इब्ने अबी कब्शा के लिये हो रहे हैं। और अगर तुम देखो कि वास्तव में सितारे अपनी जगह पर मौजूद नहीं हैं तो बेशक आसमान वालों को हलाक हुआ मान लो। उन्होंने सितारों को देखा तो सितारे सब अपनी-अपनी मुक़र्ररा जगह पर नज़र आये, तब उन्हें चैन आया। शयातीन में भी भाग-दौड़ मच गयी। यह इब्लीस के पास आये, वाक़िआ कह सुनाया तो इब्लीस ने कहा मेरे पास हर-हर इलाक़े की मिट्टी लाओ। मिट्टी लाई गयी, उसने सूँघी और सूँघकर बताया कि इसका सबब मक्का में है। सात जिन्नात नसीबीन के रहने वाले मक्का पहुँचे, यहाँ हुज़ूर सल्ल. मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ा रहे थे और क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे, जिसे सुनकर उनके दिल नर्म हो गये। बहुत ही क़रीब होकर क़ुरआन सुना, फिर उसके असर से मुसलमान हो गये और अपनी क़ौम को भी इस्लाम की दावत दी।

और हममें (पहले से भी) बाज़े नेक (होते आए) हैं और बाज़े और तरह के (होते आए) हैं, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर थे। (11) और (हमारा तरीक़ा तो यह है कि) हमने समझ लिया है कि हम ज़मीन (के किसी हिस्से) में (जाकर) अल्लाह तआ़ला को हरा नहीं सकते और न (और कहीं) भागकर उसको हरा सकते हैं। (12) और हमने जब हिदायत की बात सुन ली तो हमने उसका यक़ीन कर लिया, सो (हमारी तरह) जो शख़्स अपने रब पर ईमान ले आएगा तो उसको न किसी कमी का अन्देशा होगा और न ज़्यादती का। (13) और हम में बाज़े तो मुसलमान (हो गए) हैं और बाज़े हम में (पहले	وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ

أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَأَمَّا
الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَن
لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم
مَّاءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ
عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝

की तरह बदस्तूर) बेराह हैं। सो जो शख़्स मुसलमान हो गया उन्होंने तो भलाई का रास्ता ढूँढ लिया (14) और जो बेराह हैं दोज़ख़ के ईंधन हैं। (15) और (मुझको अल्लाह की तरफ़ से ये मज़ामीन भी नाज़िल हुए हैं कि) अगर ये (मक्का वाले) लोग (सीधे) रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उनको फ़रागत के पानी से सैराब करते। (16) ताकि उसमें उनका इम्तिहान करें। और जो शख़्स अपने परवर्दिगार की याद (यानी ईमान लाने और फ़रमाँबरदारी) से मुँह फेरेगा अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा। (17)

विभिन्न और अनेक फ़िर्क़े

जिन्नात अपनी क़ौम का इख़्तिलाफ़ (भिन्नता और अलग-अलग जमाअ़तों में बंटना) बयान करते हैं और कहते हैं कि हम में नेकोकार भी हैं और बदकार भी हैं, हम विभिन्न राहों पर लगे हुए हैं। हज़रत आमश रह. फ़रमाते हैं कि एक जिन्न हमारे पास आया करता था, मैंने एक मर्तबा उससे पूछा कि तमाम खानों में से तुम्हें कौनसा खाना पसन्द है? उसने कहा चावल। मैंने ला दिये तो देखा कि लुक़्मे बराबर उठ रहे हैं लेकिन खाने वाला कोई नज़र नहीं आता। मैंने पूछा जो ख़्वाहिशें हम में हैं क्या वे तुम में भी हैं? उसने कहा हाँ हैं। मैंने फिर पूछा कि राफ़ज़ी (शियाओं में का एक फ़िर्क़ा) तुम में कैसे गिने जाते हैं? उसने कहा बहुत बुरे। हाफ़िज़ अबुल-हज्जाज मिज़्ज़ी रह. फ़रमाते हैं कि इसकी सनद सही है। इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत अ़ब्बास बिन अहमद दमिश्क़ी फ़रमाते हैं कि मैंने रात के वक़्त एक जिन्न को अश्आर में यह कहते सुना कि दिल ख़ुदा की मुहब्बत से पुर हो गये हैं, यहाँ तक कि पूरब व पश्चिम में उसकी जड़ें जम गयी हैं, और वे हैरान व परेशान इधर-उधर ख़ुदा की मुहब्बत में फिर रहे हैं जो उनका रब है। उन्होंने मख़्लूक़ से ताल्लुक़ात काटकर अपने ताल्लुक़ात ख़ुदा से जोड़ लिये हैं। फिर कहते हैं कि हमें मालूम हो चुका है कि ख़ुदा की क़ुदरत हम पर हाकिम है, हम उससे न भागकर बच सकेंगे न किसी और तरह उसे आ़जिज़ कर सकेंगे। अब फ़ख़्र के तौर पर यह कहते हैं कि हम तो हिदायत नामे (यानी अल्लाह के कलाम) को सुनते ही उस पर ईमान ला चुके। वास्तव में है भी यह फ़ख़्र का मक़ाम, इससे ज़्यादा शर्फ़ और फ़ज़ीलत और क्या हो सकती है कि रब का कलाम फ़ौरी असर करे। फिर कहते हैं कि मोमिन के न तो नेक अ़मल ज़ाया होंगे न उस पर ख़्वाह-म-ख़्वाह की बुराईयाँ लादी जायेंगी। जैसे एक और जगह है:

فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا.

यानी नेकोकार मोमिन को ज़ुल्म व नुक़सान का डर नहीं।

फिर कहते हैं कि हम में बाज़ तो मुसलमान हैं और बाज़ हक़ से हटे हुए और अ़दल (इन्साफ़ और सही राह) को छोड़े हुए हैं। मुसलमान निजात के इच्छुक हैं। वे ज़ालिम जहन्नम की लकड़ियाँ और ईंधन हैं।

Maktab E Ashraf

Mahtab E Ashraf

इसके बाद की आयतः

وَاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا...... الخ.

(यानी आयत नम्बर 16) के दो मतलब बयान किये गये हैं। एक तो यह कि अगर तमाम लोग इस्लाम पर और सही रास्ते पर और अल्लाह की इताअ़त पर जम जाते तो हम उन पर ख़ूब ज़्यादा बारिशें बरसाते और ख़ूब वुस्अ़त से रोज़ियाँ देते। जैसे एक और जगह हैः

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰةَ......... الخ.

यानी अगर ये तौरात व इन्जील और आसमानी किताबों पर सीधे उतरते तो उन्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ियाँ मिलतीं। एक और जगह फ़रमान हैः

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ.

यानी अगर बस्ती वाले ईमान ले आते और इस तरह मुत्तक़ी बन जाते तो हम उन पर आसमान व ज़मीन की बरकतें खोल देते। यह इसलिये कि उनकी पुख़्ता जाँच (आज़माईश) हो जाये कि हिदायत पर कौन जमा रहता है और कौन फिर से गुमराही की तरफ़ लौट जाता है।

हज़रत मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत क़ुरैश के काफ़िरों के बारे में उतरी है जबकि उन पर सात साल का क़हत (सूखा) पड़ा था। दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि अगर ये सब के सब गुमराही पर जम जाते तो इन पर रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिये जाते, ताकि ये इच्छा-परस्त हो जायें, ख़ुदा तआ़ला को भूल जायें और बदतरीन सज़ाओं के हक़दार हो जायें। जैसे एक और फ़रमान हैः

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ......... الخ.

यानी जब वे नसीहत भुला बैठे तो हमने भी उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये, जिसकी वजह से वे ख़ुदा तआ़ला से बिल्कुल ग़ाफ़िल हो गये और अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया, और फिर वे मायूस हो गये। इसी तरह की आयत यह भी हैः

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ............ الخ.

(यानी सूरः मोमिनून की आयत नम्बर 55 और 56)

फिर फ़रमाता है कि जो भी अपने रब के ज़िक्र से बेपरवाही (ग़फ़लत) बरतेगा उसका रब उसे दर्दनाक और सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि "सअ़द" (सॉद-अ़ैन-दाल) जहन्नम के एक पहाड़ का नाम है और हज़रत सईद बिन जुबैर रह. कहते हैं कि जहन्नम के एक कुएँ का नाम है।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ	और (उन वही के ज़रिये आए मज़मूनों में से एक यह है कि) जितने सज्दे हैं वे सब अल्लाह का हक़ हैं सो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी की इबादत मत करो। (18) और जब ख़ुदा का ख़ास बन्दा (मुराद रसूलुल्लाह

اَدْعُوْا رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ○ قُلْ
اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ○ قُلْ
اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ
اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ○ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ○ حَتّٰٓى
اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ○

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं) ख़ुदा की इबादत करने खड़ा होता है तो ये (काफ़िर) लोग उस बन्दे पर भीड़ लगाने को हो जाते हैं। (19)आप (उनसे) कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने परवर्दिगार की इबादत करता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। (20) आप (यह भी) कह दीजिए कि मैं तुम्हारे न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूँ और न किसी भलाई का। (21) आप कह दीजिए कि (अगर ख़ुदा न करे मैं ऐसा करूँ तो) मुझको ख़ुदा (के ग़ज़ब) से कोई नहीं बचा सकता, और न मैं उसके सिवा कोई पनाह (की जगह) पा सकता हूँ। (22) लेकिन ख़ुदा की तरफ़ से पहुँचाना और उसके पैग़ामों का अदा करना यह मेरा काम है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का कहना नहीं मानते तो यक़ीनन उन लोगों के लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (23) (लेकिन ये काफ़िर लोग इस जहालत से बाज़ न आएँगे) यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वायदा किया जाता है। उस वक़्त जानेंगे कि किस के मददगार कमज़ोर हैं और किस की जमाअ़त कम है। (24)

Maktab E Ashraf

मस्जिदें और उनकी तामीर से मक़ासिद

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि उसकी इबादत की जगहों को शिर्क से पाक रखें, वहाँ किसी दूसरे का नाम न पुकारें, न किसी और को ख़ुदा की इबादत व इताअ़त में शरीक करें। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यहूदी व ईसाई अपने गिरजों और कनीसों में जाकर ख़ुदा के साथ औरों को भी शरीक करते थे, तो इस उम्मत को हुक्म हो रहा है कि वे ऐसा न करें बल्कि नबी सल्ल. भी और उम्मत भी सब तौहीद (एक अल्लाह को मानने) वाले रहें। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने के वक़्त सिर्फ़ मस्जिदे अक़्सा (बैतुल-मुक़द्दस वाली मस्जिद) और मस्जिदे हराम (काबा शरीफ़ की मस्जिद) थीं। हज़रत आमश ने इस आयत की तफ़सीर यह भी बयान की है कि जिन्नात ने हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम से इजाज़त चाही कि आपकी मस्जिद में और इनसानों के साथ हम नमाज़ अदा कर लें तो गोया उनसे कहा जा रहा है कि नमाज़ पढ़ो लेकिन इनसानों के साथ मिल-जुल न जाओ।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि जिन्नात ने हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया कि हम तो दूर-दराज़ इलाक़ों में रहते हैं, नमाज़ों में आपकी मस्जिद में कैसे पहुँच सकेंगे? तो उन्हें कहा जाता है कि मक़सूद नमाज़ का अदा करना और सिर्फ़ ख़ुदा ही की इबादत करना है, चाहे कहीं हो।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत आ़म मसाजिद को शामिल है। हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत सज्दे के अंगों के बारे में नाज़िल हुई है, यानी जिन बदनी अंगों पर तुम सज्दा करते हो वे सब अल्लाह ही के हैं। पस तुम पर उन आज़ा (बदनी अंगों) से दूसरे के लिये सज्दा करना हराम है। सही हदीस में है कि मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है, पेशानी और हाथ के इशारे से नाक को भी इसमें शामिल कर लिया, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पहुँचे (कलाई)।

आयत "लम्मा क़ा-म" (यानी आयत नम्बर 19) का एक मतलब तो यह है कि जिन्नात ने जब हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी क़ुरआन की तिलावत सुनी तो इस तरह आगे बढ़-बढ़कर झुकने लगे जैसे एक दूसरे के सरों पर चढ़े चले जाते हैं। दूसरा मतलब यह है कि जिन्नात अपनी क़ौम से कह रहे हैं कि हुज़ूर सल्ल. के सहाबा की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) की हालत यह है कि जब हुज़ूर सल्ल. नमाज़ को खड़े होते हैं और आपके सहाबा पीछे होते हैं तो आपकी पैरवी और इताअ़त में आख़िर तक मशग़ूल रहते हैं, गोया एक हल्क़ा है। तीसरा क़ौल यह है कि जब रसूले ख़ुदा सल्ल. लोगों में ख़ुदा तआ़ला की तौहीद का ऐलान करते हैं तो काफ़िर लोग दाँत चबा-चबाकर उलझ जाते हैं, जिन्नात व इनसान मिल जाते हैं कि इस दीन को मिटा दें और इसकी रोशनी को बुझा दें, मगर ख़ुदा तआ़ला का इरादा इसके विपरीत हो चुका है। यह तीसरा क़ौल ही ज़्यादा ज़ाहिर मालूम होता है, क्योंकि इसके बाद ही है कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब का नाम पुकारता हूँ किसी और की इबादत नहीं करता। यानी हक़ की दावत और तौहीद की आवाज़ उनके कान में पड़ी जो मुद्दतों से ग़ैर-मानूस हो चुकी थी, तो उन काफ़िरों ने तकलीफ़ पहुँचाने, मुख़ालफ़त करने और झुठलाने पर कमर बाँध ली, हक़ को मिटा देना चाहा और रसूले करीम सल्ल. की दुश्मनी पर एकजुट हो गये। उस वक़्त उनसे रसूले करीम सल्ल. ने कहा कि मैं तो अपने पालने वाले एक अल्लाह की इबादत में मशग़ूल हूँ जिसका कोई शरीक नहीं, मैं उसी की पनाह में हूँ, उसी पर मेरा तवक्कुल (भरोसा) है, वही मेरा सहारा है, मुझसे यह उम्मीद हरगिज़ न रखो कि मैं किसी और के सामने झुकूँ या किसी और की पूजा करूँ। मैं तुम जैसा इनसान हूँ, तुम्हारे नफ़े व नुक़सान का मालिक मैं नहीं हूँ, मैं तो ख़ुदा का एक ग़ुलाम हूँ, अल्लाह तआ़ला के बन्दों में से एक बन्दा हूँ। तुम्हारी हिदायत व गुमराही का मुख़्तार व मालिक मैं नहीं। सब चीज़ें ख़ुदा तआ़ला के क़ब्ज़े में हैं, मैं तो सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाने वाला हूँ। अगर मैं ख़ुद भी ख़ुदा की नाफ़रमानी करूँ तो ख़ुदा मुझे ज़रूर अ़ज़ाब देगा, और फिर कोई मुझको न बचा सकेगा। मुझे कोई पनाह की जगह उसके सिवा नज़र ही नहीं आती। मेरी हैसियत सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ और रसूल की है।

बाज़ तो कहते हैं कि यहाँ मतलब यह है कि मैं नफ़े नुक़सान, हिदायत व गुमराही का मालिक नहीं, मैं तो सिर्फ़ तब्लीग़ करने वाला, पैग़ाम पहुँचाने वाला हूँ। और बाज़ कहते हैं- मतलब यह है कि ख़ुदा के अ़ज़ाब से मुझे सिर्फ़ मेरी रिसालत की अदायेगी ही बचा सकती है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ...... الخ.

यानी ऐ रसूल! तेरी तरफ़ जो तेरे रब की तरफ़ से उतारा गया है उसे पहुँचा दे, और अगर तूने यह न किया तो तूने रिसालत का हक़ अदा नहीं किया। अल्लाह तआ़ला तुझे लोगों से बचा लेगा। नाफ़रमानों के

लिये हमेशा वाली जहन्नम की आग है जिसमें से न वे निकल सकेंगे। जब ये इनसानों और जिन्नात में के मुश्रिक लोग क़ियामत वाले दिन ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब को देख लेंगे उस वक़्त मालूम हो जायेगा कि कमज़ोर मददगारों वाला और बेवक़अ़त गिनती वाला (यानी जिसका कोई शुमार ही नहीं) कौन है? यानी मोमिन, अल्लाह को एक मानने वाले, या मुश्रिक? हक़ीक़त यह है कि मुश्रिकों का नाम को भी कोई मदद करने वाला उस दिन न होगा, और ख़ुदा तआ़ला के लश्करों के मुक़ाबले पर उनकी गोया कोई गिनती न होगी।

قُلْ اِنْ اَدْرِیْٓ اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ
یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْٓ اَمَدًا ۝ عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا
یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی
مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ یَسْلُكُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ
وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝ لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا
رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَیْهِمْ
وَاَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ۝ ع ٢ ١٢

(और) ग़ैब का जानने वाला वही है, सो वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला "यानी अवगत" नहीं करता (26) हाँ मगर अपने किसी मक़बूल और चुने हुए पैग़म्बर को। तो (इस तरह इत्तिला देता है कि) उस पैग़म्बर के आगे और पीछे हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते भेज देता है। (27) (और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है) ताकि (ज़ाहिरी तौर पर) अल्लाह तआ़ला को मालूम हो जाए कि उन फ़रिश्तों ने अपने परवर्दिगार के पैग़ाम (रसूल तक हिफ़ाज़त से) पहुँचा दिये और अल्लाह तआ़ला उन (पहरेदारों) के तमाम हालात का इहाता किए हुए है और उसको हर चीज़ की गिनती मालूम है। (28)

क़ियामत के आने का निर्धारित वक़्त कोई नहीं बता सकता

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म देता है कि लोगों से कह दें कि क़ियामत कब होगी इसका इल्म मुझे नहीं, बल्कि मैं यह भी नहीं जानता कि उसका वक़्त क़रीब है या दूर है और लम्बी मुद्दत के बाद आने वाली है।

फ़ायदाः इस आयते करीमा में दलील है इस बात की कि अक्सर जाहिलों में जो मशहूर है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का भी इल्म रखते हैं, वह बिल्कुल ग़लत है। इस रिवायत की कोई असल नहीं, महज़ झूठ है और बिल्कुल बेअसल रिवायत है। हमने तो इसे किसी किताब में नहीं पाया, हाँ इसके ख़िलाफ़ साफ़ साबित है। हुज़ूर सल्ल. से क़ियामत के क़ायम होने का वक़्त पूछा जाता था और आप उसके मुतैयन वक़्त से अपनी ला-इल्मी (अज्ञानता) ज़ाहिर करते थे। एक देहाती की सूरत में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने भी आकर जब क़ियामत के बारे में सवाल किया था तो आपने साफ़ फ़रमा दिया था कि उसका इल्म न पूछने वाले को है और न उसे है जिससे पूछा जाता है। एक और हदीस में है कि एक देहात के रहने वाले ने बुलन्द आवाज़ से आप सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर! क़ियामत कब आयेगी? आपने फ़रमाया वह आयेगी ज़रूर और बता कि तूने उसके लिये क्या तैयारी कर रखी है? उसने कहा मेरे पास रोज़े नमाज़ की कसरत तो नहीं, अलबत्ता अल्लाह व रसूल की मुहब्बत है। आप सल्ल. ने फ़रमाया फिर तू उसके साथ होगा जिससे तुझे मुहब्बत है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मुसलमान किसी हदीस से इस क़द्र ख़ुश नहीं हुए जितने

Maktaba E Ashraf

इस हदीस से हुए। इस हदीस से भी मालूम हुआ कि क़ियामत का ठीक वक़्त आप सल्ल. को मालूम न था। इब्ने अबी हातिम में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ लोगो! अगर तुमको कुछ इल्म है तो अपने आपको मुर्दों में शुमार किया करो, ख़ुदा की क़सम जिसका तुम से वायदा किया जाता है वह यक़ीनन एक वक़्त आने वाली है। यहाँ भी आप सल्ल. इसका कोई मुक़र्ररा वक़्त नहीं बतलाते। अबू दाऊद में किताबुल-मलाहिम के आख़िर में है कि अल्लाह तआ़ला इस उम्मत को क्या अ़जब है कि आधे दिन तक की मोहलत दे दे। एक और रिवायत में इतना और भी है कि हज़रत सअ़द रह. से पूछा गया कि आधे दिन से क्या मुराद है? फ़रमाया- पाँच सौ साल।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा आ़लिमुल-ग़ैब (ग़ैब की और छुपी चीज़ों का जानने वाला) है, वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता मगर रसूलों में से जिसे चुन ले उसको मुत्तला (बाख़बर) कर देता है। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَآءَ.

यानी उसके इल्म में से किसी चीज़ को नहीं घेर सकते (यानी मालूम कर सकते) मगर जो ख़ुदा चाहे।

यानी रसूल चाहे इनसानों में से हों चाहे फ़रिश्तों में से हों, जिसे ख़ुदा जितना चाहता है बतला देता है बस वे उतना ही जानते हैं।

फ़ायदाः फिर इसको और ज़्यादा ख़ास किया जाता है कि इसकी हिफ़ाज़त और साथ ही उस इल्म की इशाअ़त (प्रसार व फैलाने) के लिये जो ख़ुदा ने उसे दिया है उसके आस-पास हर वक़्त निगहबान फ़रिश्ते मुक़र्रर रहते हैं।

"ताकि वह जान ले" में "वह" से मुराद बाज़ के नज़दीक नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं, यानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के आगे पीछे चार-चार फ़रिश्ते होते थे ताकि हुज़ूर सल्ल. को यक़ीन आ जाये कि उन्होंने अपने रब का पैग़ाम सही तौर पर मुझे पहुँचाया है। और बाज़ कहते हैं कि इस "वह" से मुराद मुश्रिक लोग हैं, यानी बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते अल्लाह के नबी की हिफ़ाज़त करते हैं शैतान से और उसकी नस्ल से, ताकि मुश्रिक लोग जान लें कि रसूलों ने अल्लाह की रिसालत (पैग़ाम) अदा कर दी है। यानी रसूलों के झुठलाने वाले भी रसूलों की रिसालत को जान लें। मगर इनमें ज़रा नज़र (सोचने का मक़ाम) है। इमाम याक़ूब की क़िराअत पेश के साथ है, यानी लोग जान लें कि रसूलों ने तब्लीग़ कर दी। और मुम्किन है यह मतलब हो कि अल्लाह जान ले, यानी वह अपने रसूलों की अपने फ़रिश्ते भेजकर हिफ़ाज़त करता है ताकि वे रिसालत अदा कर सकें और अल्लाह की 'वही' महफ़ूज़ रख सकें, और ख़ुदा तआ़ला जान ले कि उन्होंने रिसालत (पैग़ाम) अदा कर दी। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमायाः

وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا...... الخ.

यानी जिस क़िब्ले पर तू था उसे हमने सिर्फ़ इसलिये मुक़र्रर किया था कि हम रसूल के सच्चे ताबेदारों और मुर्तदों (दीन से फिर जाने वालों) को जान लें। एक और जगह फ़रमान है:

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِينَ اٰمَنُوا........ الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को और मुनाफ़िक़ों को बराबर जान कर रहेगा (कि मोमिन कौन हैं और मुनाफ़िक़ कौन हैं)।

और भी इस क़िस्म की आयतें हैं। मतलब यह है कि ख़ुदा तआ़ला पहले ही से जानता है, लेकिन उसे

ज़ाहिर करके भी जान लेता है। इसी लिये यहाँ इसके बाद ही फ़रमाया कि हर चीज़ और सब की गिनती ख़ुदा के इहाते (जानकारी के घेरे) में है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः जिन्न की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः मुज़्ज़म्मिल

सूरः मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्नद बज़्ज़ार में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि क़ुरैशी लोग दारुन्नदवा (यह एक मज्लिस थी जिसमें क़ुरैश के लोग मश्विरे करते थे) में जमा होकर आपस में कहने लगे कि आओ मिलकर मुहम्मद का एक ऐसा नाम तय करें कि सब की ज़बान से वही निकले, ताकि बाहर के लोग एक ही आवाज़ सुनकर जायें। बाज़ों ने कहा उनका नाम "काहिन" (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला जैसे ज्योतिषी होते हैं) रखो। दूसरे ने कहा कि दर हक़ीक़त वह काहिन तो नहीं, कहा अच्छा फिर उनका नाम "मजनूँ" (जिसको पागलपन हो) रखो, इस पर औरों ने कहा कि वह मजनूँ भी नहीं। फिर बाज़ों ने कहा कि "साहिर" (जादूगर) नाम रखो, लेकिन कुछ बोले कि वह साहिर यानी जादूगर भी नहीं हैं। ग़र्ज़ कि वे कोई ऐसा बुरा नाम तजवीज़ न कर सके जिस पर सब का इत्तिफ़ाक़ (सहमति) हो और यह मजमा यूँ ही उठ खड़ा हुआ। हुज़ूरे पाक सल्ल. यह ख़बर सुनकर मुँह लपेट कर, कपड़ा ओढ़कर (ग़म की वजह से) लेटे रहे। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और इसी तरह यानी ऐ कपड़ा लपेटकर ओढ़ने वाले कहकर आपको मुख़ातिब किया। इस रिवायत के एक रावी मुअ़ल्ला बिन अ़ब्दुर्रहमान से अगरचे उलेमा की एक जमाअ़त रिवायत लेती है और वे उनसे हदीसें नक़ल करते हैं, लेकिन उनकी रिवायतों में बहुत सी ऐसी हदीसें भी हैं जिन पर उनकी मुताबअ़त नहीं की जाती (यानी किसी और मुहद्दिस ने उनकी ताईद नहीं की)।

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ○ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا○ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا○ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا○ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا○ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ

ऐ कपड़ों में लिपटने वाले। (1) रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी-सी रात। (2) यानी आधी रात (कि उसमें खड़े न रहो बल्कि आराम करो) या उस आधी से किसी क़द्र कम कर दो (3) या आधी से कुछ बढ़ा दो। और क़ुरआन को ख़ूब साफ़-साफ़ पढ़ो (कि एक-एक हर्फ़ अलग-अलग हो)। (4) हम तुम पर एक भारी कलाम डालने को हैं (मुराद क़ुरआन है)। (5) बेशक रात के उठने में दिल और

Maktab E Ashraf

وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۝ اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۝ وَاذْكُرِاسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝

ज़बान का ख़ूब मेल होता है, और (दुआ या पढ़ने पर) बात ख़ूब ठीक निकलती है। (6) बेशक तुमको दिन में बहुत काम रहता है (दुनियावी भी और दीनी भी)। (7) और अपने रब का नाम याद करते रहो और सबसे कटकर उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो। (8) वह पूरब और पश्चिम का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपने काम सुपुर्द कर देने के लिए क़रार दिये रहो। (9)

अल्लाह तआ़ला का प्यार भरा ख़िताब

अल्लाह तआ़ला अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म देता है कि रातों के वक़्त कपड़े लपेटकर सो रहने को छोड़ दें और तहज्जुद की नमाज़ के क़ियाम को इख़्तियार कर लें। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ........ الخ.

उनकी करवटें बिस्तरों से अलग होती हैं और अपने रब को ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारते हैं और हमारे दिये हुए में से देते रहते हैं।

हुज़ूर सल्ल. पूरी उम्र इस हुक्म का पालन करते रहे, तहज्जुद की नमाज़ सिर्फ़ आप पर वाजिब थी यानी उम्मत पर वाजिब नहीं है। जैसे एक और जगह है:

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ........ الخ.

रातों को तहज्जुद पढ़ा कर, यह हुक्म नफ़िल के तौर पर सिर्फ़ तुझे है। तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद में पहुँचाने वाला है।

यहाँ इस हुक्म के साथ ही मिक़दार भी बयान फ़रमा दी कि आधी रात या कुछ कम व ज़्यादा। मुज़्ज़म्मिल के मायने सोने वाले और कपड़ा लपेटने वाले के हैं। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. अपनी चादर ओढ़कर लेटे हुए थे। और यह भी कहा गया है कि ऐ क़ुरआन के अच्छी तरह लेने वाले तू आधी रात तक तहज्जुद में मशग़ूल रहा कर, या कुछ बढ़ा घटा दिया कर। और क़ुरआन शरीफ़ को आहिस्ता-आहिस्ता ठहर-ठहर कर पढ़ा कर, ताकि ख़ूब समझता जाये। इस हुक्म के भी हुज़ूर आ़मिल थे। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि आप सल्ल. क़ुरआने करीम को तरतील के साथ पढ़ते थे जिससे बड़ी देर में सूरत ख़त्म होती थी, गोया छोटी सी सूरत बड़ी से बड़ी हो जाती थी। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अनस रज़ि. से रसूलुल्लाह सल्ल. की क़िराअत (क़ुरआन पढ़ने) की कैफ़ियत मालूम की गयी तो आप फ़रमाते थे कि ख़ूब खींच करके हुज़ूर पढ़ा करते थे फिर "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर वक़्फ़ करते (ठहरते), फिर "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" पढ़कर वक़्फ़ करते, फिर "मालिकि यौमिद्दीन" पढ़कर ठहरते। यह हदीस मुस्नद अहमद, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में भी है। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि क़ुरआन

के क़ारी (पढ़ने वाले) से क़ियामत के दिन कहा जायेगा कि पढ़ता जा और चढ़ता जा, और तरतील से पढ़ जैसे दुनिया में तरतील से पढ़ा करता था। तेरा दर्जा वह है जहाँ तेरी आख़िरी आयत ख़त्म हो। यह हदीस अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सही कहते हैं। हमने इस तफ़सीर के शुरू में वे हदीसें ज़िक्र कर दी हैं जो तरतील के मुस्तहब होने और अच्छी आवाज़ में क़ुरआन पढ़ने पर दलालत करती हैं। जैसे वह हदीस जिसमें है कि क़ुरआन को अपनी आवाज़ों से सजाया करो, और वह शख़्स हम में से नहीं (मुसलमान नहीं) जो अच्छी आवाज़ के साथ क़ुरआन न पढ़े (यहाँ गाकर पढ़ना मुराद नहीं, बल्कि अच्छे अन्दाज़ से पढ़ना मुराद है)। और हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. के बारे में हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमाना कि इसे आले दाऊद की बेहतरीन आवाज़ अ़ता की गयी है, और हज़रत अबू मूसा का फ़रमाना कि अगर मुझे मालूम होता कि आप सुन रहे हैं तो मैं और अच्छे गले से ज़्यादा उम्दगी के साथ पढ़ता। और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. का यह फ़रमान कि रेत की तरह क़ुरआन को न फैलाओ और शे'रों की तरह क़ुरआन को बेतहज़ीबी से न पढ़ो, इसके अ़जाईब (अ़जीब व ग़रीब मज़ामीन) पर ग़ौर करो और दिलों में असर लेते जाओ और इसके पीछे न पड़ जाओ कि जल्द सूरत ख़त्म हो। (बग़वी)

एक शख़्स ने आकर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से कहा कि मैंने मुफ़स्सल की तमाम सूरतें आज की रात एक ही रक्अ़त में पढ़ डालीं। आपने फ़रमाया कि फिर तो तूने शे'रों की तरह जल्दी-जल्दी पढ़ा होगा, मुझे वह बराबर-बराबर की सूरतें ख़ूब याद हैं जिन्हें रसूले करीम सल्ल. मिलाकर पढ़ा करते थे। फिर मुफ़स्सल सूरतों में से बीस सूरतों के नाम लिये कि इनमें से दो-दो सूरतें हुज़ूर एक एक रक्अ़त में पढ़ा करते थे। फिर ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि हम तुझ पर जल्द ही एक अ़ज़ीम बात उतारेंगे। यानी अ़मल में भारी होगी और उतरते वक़्त अपनी अ़ज़मत व शान की वजह से वज़नी और क़ीमती होगी। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. पर वही उतरी, उस वक़्त आपका घुटना मेरे घुटने पर था, वही का इतना बोझ पड़ा कि मैं तो डरने लगा कि मेरी रान कहीं टूट न जाये। मुस्नद अहमद में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से पूछा- वही का एहसास भी आपको होता है? आपने फ़रमाया मैं ऐसी आवाज़ सुनता हूँ जैसे किसी ज़न्जीर के बजने की आवाज़ हो, उस वक़्त मैं ख़ामोश हो जाता हूँ। जब वही नाज़िल होती है मुझ पर इतना बोझ पड़ता है, मैं समझता हूँ कि मेरी जान निकल जायेगी।

सही बुख़ारी शरीफ़ के शुरू में है कि हज़रत हारिस बिन हिशाम पूछते हैं या रसूलल्लाह! आपके पास वही किस तरह आती है? आपने फ़रमाया कभी तो घन्टी की आवाज़ की तरह होती है जो मुझ पर बहुत भारी पड़ती है, और जब वह गुनगुनाहट की आवाज़ ख़त्म हो जाती है तो उस दौरान में जो कुछ कहा गया था वह मुझे ख़ूब महफ़ूज़ (याद) हो जाता है, और कभी फ़रिश्ता इनसानी सूरत में मेरे पास आता है, मुझसे कलाम करता है और मैं याद कर लेता हूँ। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं- मैंने देखा कि सख़्त जाड़े वाले दिन में भी जब आप पर वही उतरती थी तो आपकी पेशानी मुबारक से पसीने के क़तरे टपकने लगते। मुस्नद अहमद में है कि कभी ऊँटनी पर हुज़ूर सल्ल. सवार होते और उस हालत में वही आती तो ऊँटनी झुक जाती। इब्ने जरीर में यह भी है कि फिर जब तक वही ख़त्म न हो लेती ऊँटनी से क़दम न उठाया जाता और न उसकी गर्दन ऊँची होती। मतलब यह है कि ख़ुद वही का उतरना भी अहम बोझल था, फिर अहकाम का बजा लाना और उनका आ़मिल होना भी ऐसा ही था। यही क़ौल हज़रत इमाम इब्ने जरीर का है। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान से मन्क़ूल है कि जिस तरह दुनिया में यह सक़ील (भारी) काम है इसी तरह

आख़िरत में अज्र भी भारी मिलेगा।

फिर फ़रमाता है कि रात का उठना नफ़्स को मग़लूब करने के लिये और ज़बान को दुरुस्त करने के लिये अकसीर है। 'न-श-अ' के मायने हब्शी ज़बान में क़ियाम करने (खड़ा होने) के हैं। रात भर में जब उठे उसे "नाशि-अतल्लैल" कहते हैं। तहज्जुद की नमाज़ की ख़ूबी यह है कि दिल और ज़बान एक हो जाता है और तिलावत के जो अलफ़ाज़ ज़बान से निकलते हैं दिल में गड़ जाते हैं और दिन के मुक़ाबले में रात की तन्हाई में मायने मतलब ख़ूब ज़ेहन में बैठ जाते हैं, क्योंकि दिन भीड़-भड़क्के, शोर व गुल और कमाई धन्धे का वक़्त होता है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने "अक़्व-म क़ीला" को "अस्वबु क़ीला" पढ़ा तो लोगों ने कहा हम तो "अक़्वमु" पढ़ते हैं? आपने फ़रमाया "अक़्वमु" अस्वबु, अहय्यउ और इन जैसे सब अलफ़ाज़ एक ही मायने रखते हैं।

फिर फ़रमाता है कि दिन में तुम्हें बहुत फ़राग़त है, नींद पूरी कर सकते हो, सो और बैठ सकते हो, राहत हासिल कर सकते हो, नवाफ़िल ख़ूब ज़्यादा अदा कर सकते हो, अपने दुनियावी काम-काज पूरे कर सकते हो, फिर रात को आख़िरत के काम के लिये ख़ास कर लो। इस बिना पर यह हुक्म उस वक़्त था जब रात की नमाज़ फ़र्ज़ थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर एहसान किया और सहूलत देने के तौर पर उसमें कमी कर दी और फ़रमाया- थोड़ी रात क़ियाम किया (नमाज़ में खड़े हुआ) करो। इस फ़रमान के बाद हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रह. ने "इन्-न रब्ब-क यअ़्लमु" से "फ़क़्रऊ मा तयस्स-र मिन्हु" तक पढ़ा (यानी आयत नम्बर 20) और यह आयत भी पढ़ीः

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ...... الخ.

(यानी सूरः बनी इस्राईल की आयत 49)

आपका यह क़ौल है भी ठीक। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत सईद बिन हिशाम ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और मदीना की तरफ़ रवाना हुए ताकि वहाँ अपने मकानात बेच डालें और उनकी क़ीमत से हथियार वग़ैरह ख़रीद कर जिहाद में जायें और रोमियों से लड़ते रहें यहाँ तक कि या तो रोम फ़तह हो या शहादत नसीब हो। मदीना शरीफ़ में अपनी क़ौम से मिले और अपना इरादा ज़ाहिर किया तो उन्होंने कहा- सुनो रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़िन्दगी में आप ही की क़ौम में से छह शख़्सों ने यही इरादा किया था कि औरतों को तलाक़ दे दें, मकानात वग़ैरह बेच डालें और अल्लाह की राह में खड़े हो जायें, हुज़ूर सल्ल. को जब यह मालूम हुआ तो आपने उनसे फ़रमाया- क्या जिस तरह मैं करता हूँ उसी तरह करने में तुम्हारे लिये अच्छा नहीं है? ख़बरदार ऐसा न करना, अपने इस इरादे से बाज़ आ जाओ। यह हदीस सुनकर हज़रत सईद ने भी अपना इरादा छोड़ दिया और वहीं उसी जमाअ़त से कहा कि तुम गवाह रहना कि मैंने अपनी बीवी से रुजू कर लिया। अब हज़रत सईद चले गये फिर जब उस जमाअ़त से मुलाक़ात हुई तो कहा कि यहाँ से जाने के बाद मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. के पास गया और उनसे हुज़ूरे पाक सल्ल. के वित्र पढ़ने की कैफ़ियत मालूम की तो उन्होंने कहा कि इस मसले को सबसे ज़्यादा बेहतर तौर पर हज़रत आ़यशा बतला सकती हैं, तुम वहीं जाओ और उन ही से मालूम करो और उनसे जो सुनो वह ज़रा मुझसे भी कह जाना। मैं हज़रत हकीम बिन अफ़्लह के पास गया और उनसे मैंने कहा कि तुम मुझे उम्मुल-मोमिनीन की ख़िदमत में ले चलो। उन्होंने फ़रमाया- मैं वहाँ नहीं जाऊँगा इसलिये कि मैंने उन्हें मश्विरा दिया कि इन दोनों आपस में लड़ने वाली जमाअ़तों यानी हज़रत अ़ली और उनका मुक़ाबला करने वालों के बारे में आप

कुछ दख़ल न दीजिए, लेकिन उन्होंने न माना और दख़ल दिया। मैंने उन्हें क़सम दी और कहा कि नहीं आप मुझे ज़रूर वहाँ ले चलिये, ख़ैर बहुत मुश्किल से वह राज़ी हुए और मैं उनके साथ गया। उम्मुल-मोमिनीन ने हज़रत हकीम की आवाज़ पहचान ली और फ़रमाया- क्या हकीम है? जवाब दिया गया कि हाँ मैं हकीम बिन अफ़्लह हूँ। पूछा तुम्हारे साथ कौन हैं? कहा सईद बिन हिशाम। पूछा हिशाम कौन? आ़मिर के लड़के? कहा हाँ आ़मिर के लड़के। तो हज़रत आ़यशा ने आ़मिर के लिये रहमत की दुआ़ की और फ़रमाया- आ़मिर बहुत अच्छे आदमी थे, ख़ुदा उन पर रहम करे।

मैंने अ़र्ज़ किया- उम्मुल-मोमिनीन! मुझे बतलाईये कि रसूलुल्लाह सल्ल. के अख़्लाके मुबारक क्या थे? आपने फ़रमाया क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते? मैंने कहा क्यों नहीं? फ़रमाया बस हुज़ूर सल्ल. का ख़ुल्क़ क़ुरआन था। अब मैंने इजाज़त माँगने का इरादा किया लेकिन फ़ौरन ही याद आ गया कि रसूलुल्लाह सल्ल. की रात की नमाज़ का हाल भी मालूम कर लूँ। इस सवाल के जवाब में उन्होंने फ़रमाया- क्या तुमने सूरः मुज़्ज़म्मिल नहीं पढ़ी? मैंने कहा हाँ पढ़ी है। फ़रमाया सुनो इस सूरत के शुरू के हिस्से में रात का क़ियाम फ़र्ज़ हुआ और साल भर तक हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ होने के तौर पर अदा करते रहे, यहाँ तक कि क़दमों पर वरम आ गया। बारह महीने के बाद इस सूरत के ख़ात्मे (आख़िर) की आयतें उतरीं और ख़ुदा तआ़ला ने कमी कर दी, फ़र्ज़ियत उठ गयी और नफ़्लियत बाक़ी रह गयी। मैंने फिर उठने का इरादा किया लेकिन ख़्याल आया कि वित्र का मसला भी मालूम कर लूँ तो मैंने कहा उम्मुल-मोनिमीन! हुज़ूर सल्ल. के वित्र पढ़ने की कैफ़ियत से भी आगाह फ़रमाईये। आपने फ़रमाया हाँ सुनो हम आपकी मिस्वाक, वुज़ू का पानी वग़ैरह तैयार करके एक तरफ़ रख दिया करते थे। जब भी ख़ुदा चाहता और आपकी आँख खुलती, उठते मिस्वाक करते वुज़ू करते और आठ रक्अ़तें पढ़ते, बीच में अत्तहिय्यात में बिल्कुल न बैठते। आठवीं रक्अ़त पूरी करके आप अत्तहिय्यात में बैठते, अल्लाह तबारक व तआ़ला का ज़िक्र करते, दुआ़ करते और ज़ोर से सलाम फेरते कि हम भी सुन लें। फिर बैठे ही बैठे दो रक्अ़तें और अदा करते (और एक वित्र पढ़ते) बेटा ये सब मिलकर ग्यारह रक्अ़तें हुयीं।

नोटः इमाम इब्ने कसीर रह. शाफ़ई हैं इसलिये अपना मस्लक बयान करने के लिये वही रिवायत लाये जो उनके मस्लक की ताईद करे। इस सिलसिले में मसाईल की किताबों या उलेमा की तरफ़ रुजू करें। हनफ़ी हज़रात के पास अपने मस्लक की मज़बूत और क़वी दलीलें हैं। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

फिर जब आप उम्र-रसीदा हो गये और बदन भारी हो गया तो आपने सात वित्र पढ़े, फिर सलाम फेरने के बाद बैठकर दो रक्अ़तें अदा कीं। बस बेटा ये नौ रक्अ़तें हुईं। और हुज़ूर सल्ल. की आ़दत मुबारक थी कि जब किसी नमाज़ को पढ़ते तो उस पर हमेशगी करते, हाँ अगर किसी व्यस्तता या नींद या दुख तकलीफ़ और बीमारी की वजह से रात में नमाज़ न पढ़ सकते तो दिन में बारह रक्अ़त अदा फ़रमा लिया करते। मैं नहीं जानती कि किसी एक रात में रसूलुल्लाह सल्ल. ने पूरा क़ुरआन सुबह तक पढ़ा हो और न रमज़ान के सिवा किसी और महीने के पूरे रोज़े रखे हों।

अब मैं उम्मुल-मोमिनीन से रुख़्सत होकर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास आया और वहाँ के तमाम सवाल जवाब दोहराये। आपने सब की तस्दीक़ की और फ़रमाया- अगर मेरी भी आमद व रफ़्त (जाना-आना) उनके पास होती तो जाकर ख़ुद अपने कानों से सुन आता। यह हदीस सही मुस्लिम शरीफ़ में भी है। इब्ने जरीर में है, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं नबी सल्ल. के लिये

Maktab E Ashraf

बोरिया रख दिया करती जिस पर आप तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमा लिया करते। लोगों ने कहीं यह ख़बर सुन ली और रात की नमाज़ में हुज़ूर सल्ल. की इक़्तिदा करने (आपके पीछे नमाज़ पढ़ने) के लिये वे भी आ गये। हुज़ूर सल्ल. कुछ नाराज़ होकर बाहर तशरीफ़ लाये। चूँकि आपको उम्मत पर शफ़कत व रहमत थी और साथ ही डर था कि ऐसा न हो कि यह नमाज़ फ़र्ज़ हो जाये। लिहाज़ा आप उनसे फ़रमाने लगे कि लोगो! उन ही आमाल की तकलीफ़ उठाओ जिनकी तुममें ताक़त हो। अल्लाह तआ़ला सवाब देने से नहीं थकेगा, अलबत्ता तुम अ़मल करने से थक जाओगे। सबसे बेहतर अ़मल वह है जिस पर हमेशगी और पाबन्दी हो सके और इनसान उसे निभा सके। इधर क़ुरआने करीम में ये आयतें उतरीं और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने रात का क़ियाम (यानी नफ़िलों में खड़ा होना) शुरू किया, यहाँ तक कि रस्सियाँ बाँधने लगे कि नींद न आये। आठ महीने इसी तरह गुज़र गये, उनकी इस कोशिश को जो वे ख़ुदा की रज़ामन्दी की तलब में कर रहे थे देखकर ख़ुदा ने भी उन पर रहम किया और इसे इशा के फ़र्ज़ की तरफ़ लौटा दिया, और रात का खड़ा होना छोड़ दिया गया। यह रिवायत इब्ने अबी हातिम में भी है लेकिन इसका रावी मूसा बिन उबैदा ज़ुबैदी ज़ईफ़ है। असल हदीस बग़ैर सूरः मुज़्ज़म्मिल के नाज़िल होने के ज़िक्र के सही में भी है और इस हदीस के अलफ़ाज़ से तो यह समझा जाता है कि यह सूरत मदीना में नाज़िल हुई हालाँकि यह सूरत मक्का शरीफ़ में उतरी है। इसी तरह इस रिवायत में है कि आठ महीने के बाद इसकी आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं, यह क़ौल भी ग़रीब है। सही वह है जो मुस्नद के हवाले से पहले गुज़र चुका कि साल भर के बाद आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी इब्ने अबी हातिम में मन्क़ूल है कि सूरः मुज़्ज़म्मिल की शुरू की आयतों के उतरने के बाद सहाबा किराम रज़ि. रमज़ान शरीफ़ के क़ियाम की तरह क़ियाम करते रहे और इस सूरत की शुरू व आख़िर की आयतों के उतरने में तक़रीबन साल भर का फ़ासला था। हज़रत अबू उसामा रह. से भी इब्ने जरीर में इसी तरह मरवी है। हज़रत अबू अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि शुरू की आयतों के उतरने के बाद सहाबा किराम रज़ि. ने साल भर तक क़ियाम किया, यहाँ तक कि उनके क़दम और पिण्डलियाँ वरमा गयीं। फिर "फ़क़्रऊ मा तयस्स-र मिन्हु" (और तुम लोग जितना इसमें से आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो) नाज़िल हुई और लोगों ने राहत पाई।

हसन बसरी और इमाम सुद्दी रह. का भी यही क़ौल है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की रिवायत से सोलह महीने की मुद्दत मन्क़ूल है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि एक साल या दो साल तक क़ियाम फ़रमाते रहे, क़दम और पिण्डलियाँ सूज गयीं फिर सूरत की आख़िर की आयतें उतरीं और कमी हो गयी। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. दस साल की मुद्दत बताते हैं। (इब्ने जरीर) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि पहली आयत के हुक्म के मुताबिक़ ईमान वालों ने रात का क़ियाम शुरू किया लेकिन बड़ी मशक़्क़त पड़ती थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने रहम फ़रमाया और "अ़लि-म अन् स-यकूनु" से "मा तयस्स-र मिन्हु" तक की आयतें नाज़िल फ़रमाकर आसानी कर दी और तंगी न रखी। यह अल्लाह तआ़ला का शुक्र व एहसान है।

फिर फ़रमान है कि अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रह, उसकी इबादत के लिये फ़ारिग़ हो जा। यानी दुनिया के मामलात से फ़ारिग़ होकर दिल के सुकून और इत्मीनान के साथ ख़ूब ज़्यादा उसका ज़िक्र कर, उसकी तरफ़ माईल और पूरी तरह मुतवज्जह हो जा। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ.

यानी जब अपने काम-धन्धे से फ़ारिग़ होओ तो हमारी इबादत मेहनत से बजा लाओ। इख़्लास, फ़रागत, कोशिश और यक्सूई से ख़ुदा की तरफ़ झुक जाओ। एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने "तबत्तुल" (यानी बाल-बच्चे और दुनिया छोड़ देने) से मना फ़रमाया है। यहाँ मतलब यह है कि दुनियावी ताल्लुक़ात और रिश्तों से कटकर ख़ुदा की इबादत में तवज्जोह और मशग़ूलियत का वक़्त भी ज़रूर निकाला करो, वह मालिक है, वह हर चीज़ में उलट-फेर और इख़्तियार वाला है, पूरब व पश्चिम सब उसी के क़ब्ज़े में है, उसके सिवा इबादत के लायक़ कोई नहीं। तू जिस तरह सिर्फ़ उसी ख़ुदा की इबादत करता है इसी तरह सिर्फ़ उसी पर भरोसा भी रख। जैसे एक और आयत में है:

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ.

उसी की इबादत कर और उसी पर भरोसा रख। यही मज़मून इस आयत "इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन" में भी बयान किया गया है। इस मायने की और भी बहुत सी आयतें हैं कि इबादत, इताअ़त, तवक्कुल और भरोसे के लायक़ एक उसी की पाक ज़ात है।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝ وَذَرْنِىْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۝ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ۝ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ۝ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۝ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۭ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝

और ये लोग जो बातें करते हैं उन पर सब्र करो, और ख़ूबसूरती के साथ उनसे अलग रहो। (10) और मुझको और उन झुठलाने वालों और ऐश व आराम में रहने वालों को (मौजूदा हालत पर) छोड़ दो (यानी रहने दो) और उन लोगों को थोड़े दिनों की और मोहलत दे दो। (11) हमारे यहाँ बेड़ियाँ हैं और दोज़ख़ है (12) और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अज़ाब है। (13) जिस दिन कि ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे, और पहाड़ (चूरा-चूरा होकर) उड़ने वाली रेत हो जाएँगे। (14) बेशक हमने तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर (क़ियामत के दिन) गवाही देंगे जैसा कि हमने फ़िरऔन के पास एक रसूल भेजा था (15) फिर फ़िरऔन ने उस रसूल का कहना न माना तो हमने उसको बहुत सख़्ती के साथ पकड़ा। (16) सो अगर तुम (भी रसूल के भेजने के बाद नाफ़रमानी और) कुफ़्र करोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे जो (बहुत ही ज़्यादा) सख़्ती और अपने बहुत बड़ा (लम्बा) होने से बच्चों को भी बूढ़ा कर देगा। (17) जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वायदा ज़रूर होकर रहेगा। (18)

Maktab E Ashraf

सब्र व संयम और मज़बूती से दीन पर जमे रहने का हुक्म

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को काफ़िरों की ताने भरी बातों पर सब्र करने की हिदायत करता है और फ़रमाता है कि उन्हें उनके हाल पर बग़ैर डाँट-डपट के ही छोड़ दीजिए, मैं ख़ुद उनसे निपट लूँगा। मेरे ग़ज़ब और ग़ुस्से के वक़्त देख लूँगा कि कैसे ये लोग निजात पाते हैं। हाँ उनके मालदार ख़ुशहाल लोगों को जो बेफ़िक्रे हैं और तुझे सताने के लिये बातें बना रहे हैं, जिन पर दूसरे हुक़ूक़ हैं माल के और जान के, और ये उनमें से एक भी अदा नहीं करते तो तू उनसे बेताल्लुक़ हो जा, फिर देख कि मैं उनके साथ क्या करता हूँ। थोड़े वक़्त दुनिया में तो चाहे ये फ़ायदा उठायें मगर अन्जामकार अ़ज़ाब में फंसेंगे और अ़ज़ाब भी कैसे! सख़्त क़ैद व बन्द के, बदतरीन भड़कती हुई न बुझने वाली और न कम होने वाली आग के, और उस खाने के जो हलक़ में जाकर अटक जायेगा, न निगल सकेंगे न उगल सकेंगे। और भी तरह-तरह के दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। फिर वह वक़्त भी होगा जब ज़मीनों में और पहाड़ों पर ज़लज़ला पड़ा हुआ होगा और सख़्त और बड़ी चट्टानों वाले पहाड़ आपस में टकरा-टकराकर चूरा चूरा हो गये होंगे, जैसे रेत के बिखरे हुए ज़र्रे हों जिन्हें हवा इधर से उधर ले जायेगी और नाम व निशान तक मिटा देगी। और ज़मीन में एक चटियल साफ़ मैदान की तरह रह जायेगी जिसमें कहीं ऊँच-नीच नज़र न आयेगी।

फिर फ़रमाता है कि ऐ लोगो! और ख़ुसूसन ऐ काफ़िरो! हमने तुम पर गवाही देने वाला अपना सच्चा रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुम में भेज दिया है जैसे कि फ़िरऔन के पास हमने अपने अहकाम के पहुँचा देने के लिये अपने एक रसूल को भेजा था। उसने जब उस रसूल की न मानी तो तुम जानते हो कि हमने उसको बुरी तरह बरबाद किया और सख़्ती से पकड़ लिया। इसलिये याद रखो कि अगर इस नबी की तुम ने भी न मानी तो तुम्हारी भी ख़ैर नहीं, अल्लाह के अ़ज़ाब तुम पर भी आयेंगे और तुम तहस-नहस कर दिये जाओगे। क्योंकि यह रसूल रसूलों के सरदार हैं, इनके झुठलाने का वबाल भी दूसरे वबालों में बड़ा है।

इसके बाद की आयत के दो मायने हैं, एक तो यह कि अगर तुमने कुफ़्र किया तो बताओ तो सही कि उस दिन के अ़ज़ाब से कैसे निजात हासिल करोगे? जिस दिन की हैबत ख़ौफ़ और डर बच्चों को बूढ़ा कर देगा। और दूसरे मायने यह हैं कि अगर तुमने इतने बड़े हौलनाक (दहशत वाले) दिन का भी कुफ़्र कर लिया और उसके भी मुन्किर (इनकार करने वाले) रहे तो तुम्हें तक़वा और ख़ुदा का डर कैसे हासिल होगा? अगरचे ये दोनों मायने बहुत ही उम्दा हैं लेकिन पहले मायने ज़्यादा बेहतर हैं। वल्लाहु आलम

तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया- यह क़ियामत का दिन है, जिस दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से फ़रमायेगा- उठो और अपनी औलाद में से जहन्नमियों को अलग करो। वह पूछेंगे ख़ुदाया! कितनी तायदाद में से कितने? हुक्म होगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे, यह सुनते ही मुसलमानों के तो होश उड़ गये और घबरा गये। हुज़ूर सल्ल. भी उनके चेहरे देखकर समझ गये और बतौर तसल्ली के फ़रमाया- सुनो आदम की औलाद तो बहुत से हैं, याजूज-माजूज भी आदम की औलाद में से हैं, जिनमें से एक-एक अपने पीछे ख़ास अपनी पीठ से सगी औलाद एक एक हज़ार छोड़कर जाता है। पस उनमें और उन जैसों में से मिलकर जहन्नमियों की यह तायदाद (संख्या) हो जायेगी और जन्नत तुम्हारे लिये और तुम जन्नत के लिये हो जाओगे। यह हदीस ग़रीब

है और सूरः हज की तफ़सीर के शुरू में इसी जैसी हदीसों का तज़किरा गुज़र चुका है। उस दिन की हैबत और दहशत की वजह से आसमान भी फट जायेगा। उस दिन का वायदा यक़ीनन सच्चा है और होकर ही रहेगा। उस दिन के आने में कोई शक नहीं।

اِنَّ هٰـذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَـمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى
رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَـعْـلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ ١ ع ١٩ ١٣
اَدْنٰـى مِـنْ ثُـلُثَيِ الَّيْـلِ وَنِـصْفَـهٗ وَثُلُثَهٗ
وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ۚ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِـمَ اَنْ لَّنْ تُـحْصُوْهُ
فَتَـابَ عَلَيْـكُـمْ فَـاقْرَءُوْا مَـا تَيَسَّرَ مِنَ
الْـقُرْاٰنِ ۚ عَـلِـمَ اَنْ سَيَـكُوْنُ مِـنْكُـمْ
مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ
يَبْتَـغُـوْنَ مِـنْ فَـضْـلِ الـلّٰـهِ ۙ وَاٰخَـرُوْنَ
يُـقَـاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا
تَيَسَّـرَ مِـنْـهُ ۙ وَاَقِيْـمُـوا الـصَّـلٰـوةَ وَاٰتُوا
الـزَّكٰـوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَ
مَـا تُـقَـدِّمُوْا لِاَنْفُسِـكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِـنْـدَ الـلّٰــهِ هُـوَ خَيْـرًا وَّاَعْظَمَ اَجْـرًا ۚ
وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ٢ ع ١ ١٤

यह (तमाम मज़मून) एक (बहुत ही उम्दा) नसीहत है सो जिसका जी चाहे अपने परवर्दिगार की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले। (19)

आपके रब को मालूम है कि आप और आपके साथ वालों में से बाज़े आदमी (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े रहते हैं। और रात और दिन का पूरा अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है। उसको मालूम है कि तुम इस (वक़्त के अन्दाज़े) को ज़ब्त नहीं कर सकते तो (इन कारणों से) उसने तुम्हारे हाल पर इनायत की। सो (अब) तुम लोग जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो। उसको (यह भी) मालूम है कि बाज़े आदमी तुम में बीमार होंगे और बाज़े आदमी रोज़ी की तलाश के लिए मुल्क में सफ़र करेंगे, और बाज़े अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे (इसलिए भी इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया) सो (इसलिए भी तुमको इजाज़त है कि अब) तुम लोग जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो और (फ़र्ज़) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह (यानी इख़्लास से) क़र्ज़ दो। और जो नेक अ़मल अपने लिए आगे (ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत बनाकर) भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुँचकर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे। और अल्लाह से गुनाह माफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (20)

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

यह एक नसीहत है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह सूरत अ़क्लमन्दों के लिये सरासर नसीहत व इबरत है, जो भी हिदायत और सही रास्ते का तालिब हो वह अल्लाह की मर्ज़ी से हिदायत का रास्ता पा लेगा और अपने रब की तरफ़ पहुँच जाने का ज़रिया हासिल कर लेगा। जैसे एक दूसरी सूरत में फ़रमायाः

وَمَاتَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ. اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا.

तुम्हारी ख़्वाहिश (इच्छा और मर्ज़ी) काम नहीं आती, वही होता है जो ख़ुदा तआ़ला चाहे। सही इल्म वाला और पूरी हिक्मत वाला अल्लाह तआ़ला ही है।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! आपका और आपके सहाबा की एक जमाअ़त का कभी दो तिहाई रात तक रात के खड़े होने (यानी रात में नमाज़ पढ़ने) में मशग़ूल रहना, कभी आधी रात इसी में गुज़ारना, कभी तिहाई रात तक तहज्जुद पढ़ना अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह मालूम है। अगरचे तुम्हारा मक़सद ठीक उस वक़्त को पूरा करना नहीं होता और है भी वह मुश्किल काम, क्योंकि रात दिन का सही अन्दाज़ा अल्लाह ही को है। कभी दोनों बराबर होते हैं, कभी रात छोटी दिन बड़ा, कभी दिन छोटा रात बड़ी, ख़ुदा ही जानता है कि उसको निभाने की ताक़त तुममें नहीं, तो अब रात की नमाज़ इतनी ही पढ़ो जितनी तुम आसानी से पढ़ सको। कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं कि लाज़िमी तौर पर इतना वक़्त लगाना ही होगा। यहाँ "सलात" की ताबीर रात से की है, जैसे सूरः सुब्हानल्लज़ी (सूरः बनी इस्राईल) में है:

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلٰوتِكَ....... الخ.

यानी अपनी क़िराअत न तो बुलन्द कर न बिल्कुल पस्त कर।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा को मालूम है कि इस उम्मत में उज़्र वाले (जिन्हें कोई मजबूरी है) लोग भी हैं जो रात के खड़े होने को छोड़ने पर माज़ूर हैं। जैसे बीमार, जिन्हें इसकी ताक़त नहीं, मुसाफ़िर कि रोज़ी की तलाश में इधर-उधर जा आ रहे हैं, मुजाहिद जो बहुत अहम काम में मशग़ूल हैं। यह आयत बल्कि यह पूरी सूरत मक्की है, मक्का शरीफ़ में नाज़िल हुई, उस वक़्त जिहाद नहीं था बल्कि मुसलमान बहुत ही पस्त हालत में थे। फिर ग़ैब की यह ख़बर देना और इसी तरह ज़ुहूर में भी आना कि मुसलमानों को जिहाद में पूरी मशग़ूली हुई, यह नुबुव्वत की आला और बेहतरीन दलील है। तो इन मजबूरियों के कारण तुम्हें रुख़्सत (छूट और रियायत) दी जाती है कि जितना क़ियाम तुम से आसानी से किया जा सके कर लिया करो।

हज़रत अबू रजा मुहम्मद ने हसन रह. से पूछा ऐ अबू सईद! उस शख़्स के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं जो पूरे क़ुरआन का हाफ़िज़ है लेकिन तहज्जुद नहीं पढ़ता, सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता है? आपने फ़रमाया उसने क़ुरआन को तकिया बना लिया, उस पर ख़ुदा की लानत हो (यानी उसको अल्लाह तआ़ला ने इतनी बड़ी दौलत दी है तो उसको ज़रूर इससे फ़ायदा उठाकर रात का कुछ वक़्त अल्लाह की बारगाह में खड़े होकर गुज़ारना चाहिये)।

अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दे के लिये फ़रमाया कि वह हमारे इल्म को जानने वाला था, और फ़रमाया तुमको वह कुछ सिखा गया जिसे न तुम जानते थे न तुम्हारे बाप-दादा। मैंने कहा अबू सईद अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाता है कि जो क़ुरआन आसानी से तुम पढ़ सको पढ़ो। फ़रमाया हाँ ठीक तो है,

पाँच आयतें ही पढ़ लो। पस बज़ाहिर मालूम होता है कि हाफ़िज़े क़ुरआन का रात की नमाज़ में कुछ न कुछ क़ियाम करना (यानी नफ़्ली नमाज़ तहज्जुद वग़ैरह पढ़ना) इमाम हसन बसरी रह. के नज़दीक हक़ व वाजिब था। एक हदीस भी इस पर दलालत करती है जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. से उस शख़्स के बारे में सवाल हुआ जो सुबह तक सोया रहता है, फ़रमाया यह वह शख़्स है जिसके कान में शैतान पेशाब कर जाता है। इसका एक तो यह मतलब बयान किया गया है कि इससे मुराद वह शख़्स है जो इशा के फ़र्ज़ भी न पढ़े। और यह भी कहा गया है कि जो रात को नफ़्ली क़ियाम न करे। सुनन की हदीस में है- ऐ क़ुरआन वालो! वित्र पढ़ा करो। दूसरी रिवायत में है कि जो वित्र न पढ़े वह हममें से नहीं। हसन बसरी रह. के क़ौल से भी ज़्यादा ग़रीब क़ौल अबू बक्र बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ हंबली रह. का है, जो कहते हैं कि रमज़ान के महीने का क़ियाम फ़र्ज़ है। वल्लाहु आलम

यह याद रहे कि सही मस्लक तो यही है कि तहज्जुद की नमाज़ न तो रमज़ान में वाजिब है न ग़ैर रमज़ान में। रमज़ान शरीफ़ के बारे में भी हदीस शरीफ़ में साफ़ आ चुका है कि ख़ुदा तआ़ला ने इसके क़ियाम (रात में नमाज़ में खड़े होने) को नफ़्ली क़रार दिया है। (मुतर्जिम) तबरानी की हदीस में इस आयत की तफ़सीर में मरफ़ूअ़न मरवी है कि अगरचे सौ ही आयतें हों। लेकिन यह हदीस बहुत ग़रीब है, सिर्फ़ मोजम तबरानी में ही मैंने इसे देखा है।

फिर इरशाद है कि फ़र्ज़ नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो और फ़र्ज़ ज़कात की अदायेगी किया करो। यह आयत उन हज़रात की दलील है जो फ़रमाते हैं कि ज़कात की फ़र्ज़ियत का हुक्म मक्का शरीफ़ में ही नाज़िल हो चुका था, हाँ कितनी निकाली जाये? निसाब क्या है? वग़ैरह-वग़ैरह, यह सब मदीना शरीफ़ में बयान हुआ। वल्लाहु आलम। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत इक्रिमा, हज़रत मुजाहिद, हज़रत हसन और हज़रत क़तादा रह. वग़ैरह बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि इस आयत ने इससे पहले के हुक्म (यानी रात के क़ियाम) को मन्सूख़ कर दिया। इन दोनों हुक्मों के दरमियान किस क़द्र मुद्दत थी? इसमें जो इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है उसका बयान ऊपर गुज़र चुका। सहीहैन की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक शख़्स से फ़रमाया- पाँच नमाज़ें दिन रात में फ़र्ज़ हैं। उसने पूछा इसके अ़लावा भी कोई नमाज़ मुझ पर फ़र्ज़ है? आप सल्ल. ने फ़रमाया बाक़ी सब नवाफ़िल हैं।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ दो, यानी अल्लाह की राह में सदक़ा ख़ैरात करते रहो, जिस पर अल्लाह तआ़ला तुम्हें बहुत बेहतर, आला और पूरा-पूरा बदला देगा। जैसे एक और जगह है कि ऐसा कौन है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ दे और ख़ुदा उसे बहुत कुछ बढ़ाये-चढ़ाये। तुम जो भी नेकियाँ करके आगे भेजोगे वह तुम्हारे लिये उस चीज़ से जिसे तुम अपने पीछे छोड़कर जाओगे बहुत ही बेहतर और अज्र व सवाब में बहुत ही ज़्यादा है। अबू यअ़ला मूसली की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सहाबा से एक मर्तबा पूछा- तुम में से ऐसा कौन है जिसे अपने वारिस का माल अपने माल से ज़्यादा महबूब (प्यारा) हो? उन्होंने कहा हुज़ूर! हम में से तो एक भी ऐसा नहीं। आपने फ़रमाया और सोच लो। उन्होंने कहा हुज़ूर! यही बात है। फ़रमाया सुनो! तुम्हारा माल वह है जिसे तुम अल्लाह के रास्ते में देकर अपने लिये आगे भेज दो, और जो छोड़ जाओगे वह तुम्हारा माल नहीं, वह तुम्हारे वारिसों का माल है। यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ और नसाई में भी मौजूद है। फिर फ़रमान है कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से किया करो और अपने तमाम कामों में इस्तिग़फ़ार किया करो, जो इस्तिग़फ़ार करे वह मग़फ़िरत हासिल कर लेता है, क्योंकि ख़ुदा मग़फ़िरत करने वाला और मेहरबानियों वाला है। (सूरः मुज़्ज़म्मिल की तफ़सीर पूरी हुई)

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

सूरः मुद्दस्सिर

सूरः मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ○ قُمْ فَاَنْذِرْ○ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ○ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ○ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ○ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ○ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ○ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ○ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ○ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ○

ऐ कपड़े में लिपटने वाले! (1) उठो (यानी अपनी जगह से उठो, या यह कि तैयार हो) फिर (काफ़िरों को) डराओ। (2) और अपने रब की बड़ाईयाँ बयान करो। (3) और अपने कपड़ों को पाक रखो। (4) और बुतों से अलग रहो (जिस तरह कि अब तक अलग हो) (5) और किसी को इस ग़र्ज़ से मत दो कि (दूसरे वक़्त) ज़्यादा मुआवज़ा चाहो। (6) और फिर (डराने "यानी तब्लीग़ करने" में जो तकलीफ़ व परेशानी पेश आए उस पर) अपने रब (को ख़ुश करने) के वास्ते सब्र कीजिए। (7) फिर जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा (8) सो वह वक़्त यानी वह दिन एक सख़्त दिन होगा (9) जिसमें काफ़िरों पर ज़रा भी आसानी न होगी। (10)

अल्लाह के रसूल सल्ल. को तब्लीग़ का हुक्म

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सही बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि सबसे पहले क़ुरआने करीम की यही आयत "या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु" नाज़िल हुई है, लेकिन जमहूर का क़ौल यह है कि सब से पहले जो वही उतरी वह "इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी.........." की आयतें हैं। जैसे कि इस सूरत की तफ़सीर के मौक़े पर आयेगा, इन्शा-अल्लाह तआ़ला। यहया बिन अबू बक्र रह. फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से सवाल किया कि सबसे पहले क़ुरआने करीम की कौनसी आयतें नाज़िल हुईं? तो फ़रमाया- "या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु.........."। मैंने कहा लोग तो "इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी.........." बतलाते हैं? आपने फ़रमाया मैंने हज़रत जाबिर रज़ि. से पूछा था, उन्होंने यही जवाब दिया जो मैंने तुम्हें दिया, और मैंने भी यही कहा जो तुमने मुझे कहा, इसके जवाब में हज़रत जाबिर रज़ि. ने फ़रमाया कि मैं तो तुम से वही कहता हूँ जो हमसे रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि मैंने ग़ारे हिरा में अल्लाह की याद की, जब मैं वहाँ से फ़ारिग़ हुआ और उतरा तो मैंने सुना कि गोया मुझे कोई आवाज़ दे रहा है। मैंने अपने आगे पीछे

दायें बायें देखा मगर कोई नज़र न आया, तो मैंने सर उठाकर ऊपर को देखा और मुझे नज़र पड़ा। मैं ख़दीजा के पास आया और कहा मुझे चादर उढ़ा दो और मुझ पर ठण्डा पानी डालो। उन्होंने ऐसा ही किया और "या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु......." की आयतें उतरीं। (बुख़ारी)

सही बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल. ने वही के रुक जाने की हदीस बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि एक मर्तबा मैं चला जा रहा था कि अचानक आसमान की तरफ़ से मुझे आवाज़ सुनाई दी। मैंने निगाह उठाकर देखा कि जो फ़रिश्ता मेरे पास ग़ारे हिरा में आया था वह आसमान व ज़मीन के बीच एक कुर्सी पर बैठा है। मैं ख़ौफ़ और घबराहट की वजह से ज़मीन की तरफ़ झुक गया और घर आते ही कहा कि मुझे कपड़ों से ढक दो। चुनाँचे घर वालों ने मुझे कपड़े उढ़ा दिये और सूरः "मुद्दस्सिर" की शुरू की पाँच आयतें उतरीं।

अबू सलमा रह. फ़रमाते हैं कि "रुज्ज़" से मुराद बुत हैं। फिर 'वही' बराबर आने लगी। ये अलफ़ाज़ बुख़ारी के हैं और यही सियाक़ (मज़मून) महफ़ूज़ है। इससे साफ़ पता चलता है कि इससे पहले भी कोई वही आयी थी, क्योंकि आपका वह फ़रमान मौजूद है कि यह वही था जो ग़ारे हिरा में मेरे पास आया था। यानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम जबकि ग़ारे हिरा में सूरः "इक़्रअ् बिस्मि" की आयतें "अलम् यअ़लम" तक पढ़ाकर गये थे। फिर उसके बाद वही कुछ ज़माने तक न आयी, फिर जो उसकी आमद शुरू हुई उसमें सबसे पहली वही सूरः मुद्दस्सिर की शुरू की आयतें थीं, और इसी तरह उन दोनों हदीसों में ततबीक़ (मुवाफ़क़त) भी हो जाती है कि दर असल सबसे पहली वही तो "इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी" की आयतें हैं, फिर वही के रुक जाने के बाद सबसे पहली वही इस सूरत की आयतें हैं। इसकी ताईद मुस्नद अहमद वग़ैरह की हदीसों से भी होती है, जिनमें है कि वही रुक जाने के बाद की पहली वही इस सूरत की शुरू की आयतें हैं। तबरानी में इस सूरत का शाने नुज़ूल यह है कि वलीद बिन मुग़ीरा ने क़ुरैशियों की दावत की, जब खा पी चुके तो कहने लगा बताओ तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते हो? तो बाज़ों ने कहा जादूगर है, बाज़ ने कहा काहिन है, बाज़ों ने कहा शायर है, बाज़ ने कहा शायर नहीं है। बाज़ ने कहा उसका यह कलाम यानी क़ुरआन नक़ल किया हुआ जादू है। चुनाँचे इस पर इजमा (सब की सहमति) हो गया कि उन्हें मन्क़ूल (नक़ल किया हुआ) जादू कहा जाये। हुज़ूर सल्ल. को जब यह इत्तिला पहुँची तो ग़मगीन हुए और सर पर कपड़ा डाल लिया और कपड़ा ओढ़ लिया, जिस पर ये आयतें (इय सूरत की शुरू की छह आयतें) उतरीं। फिर फ़रमाता है कि खड़े हो जाओ, यानी पुख़्ता और मज़बूत इरादे के साथ कमर बस्ता और तैयार हो जाओ, और लोगों को हमारी ज़ात से, जहन्नम से, उनके बुरे आमाल की सज़ा से डराओ।

पहली वही से नुबुव्वत के साथ हुज़ूर सल्ल. को सम्मानित किया गया और इस वही से आप रसूल बनाये गये। और अपने रब ही की ताज़ीम करो, और अपने कपड़ों को पाक रखो। नाफ़रमानी, अ़हद के ख़िलाफ़ करने, वायदा तोड़ने वग़ैरह से बचते रहो। जैसे कि एक शायर के शे'र में है कि अल्लाह के फ़ज़्ल से मैं बुराईयों के लिबास से और उज़्र के रूमाल से ख़ाली और अलग हूँ। अ़रब वालों के मुहावरे में यह बराबर आता है कि पकड़े पाक रखो, यानी गुनाह छोड़ दो। आमाल की इस्लाह कर लो।

यह मतलब भी बयान किया गया है कि दर असल आप सल्ल. न तो काहिन हैं न जादूगर, पस ये लोग कुछ ही कहा करें आप परवाह भी न करें। अ़रबी मुहावरे में जो नाफ़रमानी करने वाला, अ़हद के ख़िलाफ़ करने वाला हो उसे मैले और गन्दे कपड़ों वाला कहते हैं, और जो नेक परहेज़गार, आबरू वाला और वायदे का पाबन्द हो उसे पाक कपड़ों वाला कहते हैं। शायर कहता है:

إِذَا الْمَرْءُ لَمْ يَدْنَسْ مِنَ اللُّؤْمِ عِرْضُهُ ☆ فَكُلُّ رِدَآءٍ يَرْتَدِيْهِ جَمِيْلٌ

यानी इनसान जब बुरे आमाल और ग़लत हरकतों से अलग है तो हर कपड़े में वह हसीन है।

और यह मतलब भी है कि ग़ैर-ज़रूरी लिबास न पहनो, अपने कपड़ों को नाफ़रमानी से लिप्त न करो, कपड़े पाक साफ़ रखो, मैलों को धो डाला करो, मुश्रिकों की तरह अपना लिबास नापाक न रखो। दर असल ये सब मतलब ठीक हैं। यह भी हो, वह भी हो और साथ ही दिल भी पाक हो। दिल पर भी कपड़े का हुक्म अ़रब के कलाम में पाया जाता है। जैसे मशहूर शायर इमरउल-क़ैस के शे'र में है।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह. से इस आयत की तफ़सीर में मरवी है कि अपने दिल और अपनी नीयत को साफ़ रखो। मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी रह. और हज़रत हसन से यह भी मरवी है कि अपने अख़्लाक़ को अच्छा रखो। फिर फ़रमाता है कि गन्दगी को छोड़ दो, यानी बुतों को और अल्लाह की नाफ़रमानी को छोड़ दो। जैसे एक और जगह फ़रमान है:

يَـٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ.

ऐ नबी! अल्लाह से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न मानो।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपने भाई हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया था- ऐ हारून! मेरे बाद मेरी क़ौम में तुम मेरी जानशीनी करो (जगह लो)। सुधार की कोशिश में लगे रहो और बिगाड़ पैदा करने वालों के रास्ते पर न लगो। फिर फ़रमाता है कि दूसरी ज़्यादती के इच्छुक न रहो।

यह मतलब भी बयान किया गया है कि अपने नेक आमाल का एहसान ख़ुदा पर ज़्यादती की तलब की सूरत में न रखो। और यह भी कहा गया है कि ख़ैर की तलब की कसरत से कमज़ोरी न बरतो। और यह भी कहा गया है कि अपनी नुबुव्वत के बारे में एहसान लोगों पर रखकर उसके बदले दुनिया को तलब न करो। ये चार क़ौल हुए, लेकिन पहला ही ज़्यादा बेहतर है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि उनके सताने पर, जो अल्लाह की राह में तकलीफ़ तुझे पहुँचे तू रब की रज़ामन्दी की ख़ातिर सब्र व बरदाश्त कर। अल्लाह तआ़ला ने जो तुझको मन्सब (पद और मक़ाम) दिया है, उस पर लगा रह, और जमा रह। "नाक़ूर" से मुराद सूर है। मुस्नद अहमद, इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैं कैसे राहत से रहूँ? हालाँकि सूर वाले फ़रिश्ते ने अपने मुँह में सूर ले रखा है और पेशानी झुकाये हुए अल्लाह के हुक्म का मुन्तज़िर है कि कब हुक्म हो और वह सूर फूँक दे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा या रसूलल्लाह! फिर हमें क्या इरशाद होता है? फ़रमाया कहो:

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

"हस्बुनल्लाहु व नेअ़्मल् वकीलु अ़लल्लाहि तवक्कल्ना"

फिर सूर के फूँके जाने का ज़िक्र करके, यह फ़रमाकर कि जब सूर फूँका जायेगा फिर फ़रमाता है कि वह दिन और वह वक़्त काफ़िरों पर बड़ा सख़्त होगा, जो किसी तरह आसान न होगा। जैसे एक और जगह ख़ुद काफ़िरों का क़ौल नक़ल किया गया है:

يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ.

यह आज का दिन तो बेहद भारी और सख़्त मुश्किल का दिन है।

फ़ायदाः हज़रत ज़ुरारा बिन औफ़ा रह. जो बसरा के क़ाज़ी थे, वह एक मर्तबा अपने मुक़्तदियों को

Maktaba Ashraf

सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे, इसी सूरत की तिलावत की, जब इस आयत पर पहुँचे तो बेसाख़्ता ज़ोर की एक चीख़ मुँह से निकल गयी और गिर पड़े। लोगों ने देखा तो रूह परवाज़ हो चुकी थी। अल्लाह तआ़ला उन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ وَّجَعَلْتُ
لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ
وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۙ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ
اَزِيْدَ ۙ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ؕ
سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ
فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ
ثُمَّ نَظَرَ ۙ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ ثُمَّ اَدْبَرَ
وَاسْتَكْبَرَ ۙ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ
يُّؤْثَرُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ؕ
سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۙ لَا
تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۙ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۚ عَلَيْهَا
تِسْعَةَ عَشَرَ ؕ

(आगे बाज़ ख़ास काफ़िरों का ज़िक्र है, यानी) मुझको और उस शख़्स को (अपने-अपने हाल पर) रहने दो जिसको मैंने अकेला पैदा किया (11) और उसको कसरत से माल दिया (12) और पास रहने वाले बेटे (दिए) (13) और सब तरह का सामान उसके लिए मुहैया कर दिया। (14) फिर भी इस बात की हवस रखता है कि (उसको) और ज़्यादा दूँ (15) हरगिज़ (वह ज़्यादा देने के क़ाबिल) नहीं, (क्योंकि) वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है। (16) उसको जल्द ही (यानी मरने के बाद) दोज़ख़ के पहाड़ पर चढ़ाऊँगा। (17) उस शख़्स ने सोचा फिर एक बात तजवीज़ की (18) सो उस पर ख़ुदा तआ़ला की मार हो कैसी बात तजवीज़ की। (19) (और) फिर (दोबारा) उस पर ख़ुदा की मार हो, कैसी बात तजवीज़ की। (20) फिर (हाज़िर लोगों के चेहरों को) देखा (21) फिर मुँह बनाया (ताकि देखने वाले समझें कि इसको क़ुरआन से बहुत ज़्यादा नफ़रत है) और ज़्यादा मुँह बनाया। (22) और फिर मुँह फेरा और तकब्बुर किया। (23) फिर बोला कि बस यह जादू है (जो औरों से) मन्क़ूल (है)। (24) बस यह तो आदमी का कलाम है। (25) मैं उसको जल्द ही दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा। (26) और तुमको कुछ ख़बर भी है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है? (27) (उससे डराना और ख़ौफ़ दिलाना मक़सद है, वह ऐसी है कि) न तो बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी। (28) (और) वह (जलाकर) बदन की हैसियत बिगाड़ देगी। (29) (और) उस पर उन्नीस फ़रिश्ते (जो उसके मुहाफ़िज़ हैं, जिनमें एक का नाम मालिक है, मुक़र्रर) होंगे। (30)

Maktab E Ashraf

Aaftab E. Ashraf

एक ख़ास ऐलान

जिस ख़बीस ने ख़ुदा तआ़ला की नेमतों का कुफ़्र किया और क़ुरआन मजीद को इनसानी क़ौल कहा उसकी सज़ाओं का ज़िक्र हो रहा है। पहले जो नेमतें उस पर इनाम हुई हैं उनका बयान हो रहा है कि यह बिल्कुल अकेला ख़ाली हाथ दुनिया में आया था, माल औलाद कुछ साथ न था, फिर ख़ुदा तआ़ला ने इसे मालदार बना दिया, हज़ारों लाखों दीनार, सोना-चाँदी, ज़मीन वग़ैरह इनायत फ़रमाई और बाज़ अक़्वाल के मुताबिक़ तेरह और बाज़ दूसरे अक़्वाल के अनुसार दस बेटे दिये, जो सब के सब उसके पास बैठे रहते थे। नौकर-चाकर बाँदी-ग़ुलाम काम-काज करते रहते और यह मज़े से अपनी ज़िन्दगी अपनी औलाद के साथ गुज़ारता। ग़र्ज़ कि दौलत बाँदी-ग़ुलाम बाल-बच्चे राहत व आराम हर तरह की मुहैया थी फिर भी नफ़्स की इच्छा पूरी न होती थी और चाहता था कि ख़ुदा और बढ़ा दे, हालाँकि ऐसा अब न होगा। यह हमारी बातों के इल्म के बाद कुफ़्र और सरकशी करता है। इसे तो "सऊद" पर चढ़ाया जायेगा।

मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है, जिसमें काफ़िर गिराया जायेगा, चालीस साल तक अन्दर ही अन्दर जाता रहेगा लेकिन फिर भी तह तक न पहुँचेगा। और "सऊद" जहन्नम की आग के एक पहाड़ का नाम है जिस पर काफ़िर को चढ़ाया जायेगा, सत्तर साल तक तो चढ़ता ही रहेगा फिर वहाँ से नीचे गिरा दिया जायेगा, सत्तर साल तक नीचे लुढ़कता रहेगा और इसी हमेशा की सज़ा में गिरफ़्तार रहेगा। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब कहते हैं। साथ ही इसमें नकारत भी है। इब्ने अबी हातिम में है कि सऊद जहन्नम के एक आग के पहाड़ का नाम है जो आग है। इसे मजबूर किया जायेगा कि उस पर चढ़े। हाथ रखते ही पिघल जायेगा और उठाते ही पहले जैसा सही हो जायेगा। इसी तरह पाँव भी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सऊद जहन्नम की एक चट्टान का नाम है, जिस पर काफ़िर को मुँह के बल घसीटा जायेगा। सुद्दी रह. कहते हैं कि यह पत्थर बड़ा चिकना है जिस पर आदमी फिसल जाता है। मुजाहिद रह. कहते हैं कि मतलब आयत का यह है कि हम इसे मशक़्क़त वाला अ़ज़ाब करेंगे। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ऐसा अ़ज़ाब जिसमें कभी भी राहत हासिल न हो। न छुटकारा मिले। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी मतलब को पसन्द फ़रमाते हैं।

फिर फ़रमाता है कि हमने उसे इस तकलीफ़ देने वाले अ़ज़ाब से इसलिये क़रीब कर दिया कि वह ईमान से बहुत दूर था, वह सोच-सोच कर और गढ़ रहा था कि वह क़ुरआन को क्या कहे और क्या बात बनाये। फिर उस पर अफ़सोस किया जाता है और अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ उसकी हलाकत के कलिमे कहे जाते हैं कि यह ग़ारत कर दिया जाये, यह बरबाद कर दिया जाये, कितना बुरा कलाम सोचा और कितनी बेहयाई की झूठ बात गढ़ निकाली। बार-बार के ग़ौर व फ़िक्र के बाद पेशानी पर बल डाल-डालकर मुँह बिगाड़-बिगाड़ कर हक़ से हटकर भलाई से मुँह मोड़कर अल्लाह की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) से सर फेर कर दिल कड़ा करके साफ़ कह दिया कि यह क़ुरआन ख़ुदा का कलाम नहीं, बल्कि मुहम्मद पहले लोगों का जादू या मन्तर वग़ैरह नक़ल कर लिया करते हैं और उसी को सुना रहे हैं। कि यह कलामे ख़ुदा नहीं बल्कि इनसानी क़ौल और जादू है जो नक़ल किया जाता है। इस मलऊन का नाम वलीद बिन मुग़ीरा मख़ज़ूमी था जो क़ुरैश का सरदार था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- वाक़िआ़ यह है कि एक मर्तबा यह वलीद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के पास आया और इच्छा ज़ाहिर की कि आप कुछ क़ुरआन सुनायें। हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने

Maktab E Ashraf

चन्द आयतें पढ़कर सुनाईं जो उसके दिल में उतर गयीं। जब यहाँ से निकला और क़ुरैश के काफ़िरों के मजमे में पहुँचा तो कहने लगा लोगो! ताज्जुब की बात है (हज़रत) मुहम्मद जो क़ुरआन पढ़ते हैं ख़ुदा की क़सम न तो वह शे'र है न जादू-मन्तर है, न किसी दीवाने की बड़ है, बल्कि वल्लाह वह तो ख़ास ख़ुदा तआ़ला का कलाम है, इसमें कोई शक नहीं है। क़ुरैशियों ने यह सुनकर सर पकड़ लिया और कहने लगे अगर यह मुसलमान हो गया तो बस फिर क़ुरैश में से एक भी इस्लाम लाये बग़ैर बाक़ी न रहेगा।

अबू जहल को जब यह ख़बर पहुँची तो उसने कहा घबराओ नहीं, देखो मैं एक तरकीब से उसे इस्लाम से फेर दूँगा। यह कहते ही अपने ज़ेहन में एक तरकीब सोचकर यह वलीद के घर पहुँचा और कहने लगा आपकी क़ौम ने आपके लिये चन्दा करके बहुत सारा माल जमा किया है और वह आपको सदक़े में देने वाले हैं। उसने कहा वाह क्या मज़े की बात है! मुझे उनके चन्दों और सदक़ों की क्या ज़रूरत है? दुनिया जानती है कि उन सब में मुझसे ज़्यादा माल व औलाद वाला कोई नहीं। अबू जहल ने कहा यह तो ठीक है लेकिन लोगों में ऐसी बातें हो रही हैं कि आप जो अबू बक्र के पास आते-जाते हैं वह सिर्फ़ इसलिये कि उनसे कुछ हासिल वसूल हो। वलीद ने कहा ओहो मेरे ख़ानदान में मेरे बारे में ये बातें हो रही हैं? मुझे तो बिल्कुल मालूम न था। अच्छा अब क़सम ख़ुदा की न मैं अबू बक्र के पास जाऊँगा न उमर के पास जाऊँगा, और न मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्ल.) के पास जाऊँगा। और वे तो जो कुछ कहते हैं वह सिर्फ़ जादू है जो नक़ल किया जाता है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें नाज़िल फ़रमाईं। यानी (आयत नम्बर 11 से 28 तक)। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उसने कहा था कि मैं क़ुरआन के बारे में बहुत कुछ ग़ौर व ख़ौज़ के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह शे'र तो नहीं, इसमें मिठास है, इसमें नूर है, यह ग़ालिब है मग़लूब नहीं, लेकिन है यक़ीनन जादू। इस पर ये आयतें उतरीं।

इब्ने जरीर में है कि वलीद बिन मुग़ीरा हुज़ूर सल्ल. के पास आया था और क़ुरआन सुनकर उसका दिल नर्म पड़ गया था और पूरा असर हो चुका था। जब अबू जहल को यह मालूम हुआ तो दौड़ा भागा आया और इस डर से कि कहीं यह मुसलमान न हो जाये उसे भड़काने के लिये झूठ बोलने लगा कि चचा आपकी क़ौम आपके लिये माल जमा करना चाहती है। पूछा क्यों? कहा इसलिये कि आपको दें और आपका मुहम्मद के पास जाना छुड़वायें, क्योंकि आप वहाँ माल हासिल करने की ग़र्ज़ से ही जाते आते हैं। उसने गुस्से में आकर कहा- मेरी क़ौम को मालूम नहीं कि मैं उन सबसे ज़्यादा मालदार हूँ? अबू जहल ने कहा यह तो ठीक है लेकिन इस वक़्त तो लोगों का यह ख़्याल पुख़्ता हो गया है कि मुहम्मद से माल हासिल करने की ग़र्ज़ से आप उसी के हो गये हैं। अगर आप चाहते हैं कि यह बात लोगों के दिलों से उठ जाये तो आप उसके बारे में कुछ सख़्त अलफ़ाज़ कहें ताकि लोगों को यक़ीन हो जाये कि आप उसके मुख़ालिफ़ हैं और आपको उससे कोई लालच नहीं है। उसने कहा भाई बात तो यह है कि उसने जो क़ुरआन मुझे सुनाया है क़सम है ख़ुदा की न वह शे'र है न क़सीदा और न दीवाने की बड़। न जिन्नात का क़ौल है और न उनके अश्आर हैं। तुम्हें ख़ूब मालूम है कि जिन्नात और इनसान का कलाम मुझे ख़ूब याद है, मैं ख़ुद मशहूर शायर हूँ। कलाम की अच्छाई बुराई से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ लेकिन ख़ुदा की क़सम मुहम्मद का कलाम उसमें से कुछ भी नहीं। अल्लाह जानता है कि उसमें अ़जीब मिठास, लज़्ज़त, शगुफ़्तगी और दिल को छू लेने वाली कशिश है, वह तमाम कलामों का सरदार है, उसके सामने और कोई कलाम जचता नहीं, वह सब पर छा जाता है, उसमें कशिश, बुलन्दी और जज़्ब है। अब तुम ही बतलाओ कि मैं उस कलाम के बारे में क्या कहूँ?

Maktab E Ashraf

अबू जहल ने कहा सुनो! जब तक तुम उसे बुराई के साथ याद न करोगे तुम्हारी क़ौम के ख़्यालात तुम्हारे बारे में साफ़ नहीं होंगे। उसने कहा तो मुझे मोहलत दो मैं सोचकर उसके बारे में कोई ऐसा कलिमा कह दूँगा। चुनाँचे सोच-साच कर क़ौमी तरफ़दारी और नाक रखने की ख़ातिर उसने कह दिया कि यह तो जादू है जिसे वह नक़ल करता है। इस पर आयत नम्बर 11 से 30 तक की आयतें उतरीं। सुद्दी रह. कहते हैं कि दारुन्नदवा (क़ुरैश की मश्विरे की मज्लिस) में बैठकर उन सब लोगों ने मश्विरा किया कि हज के मौसम पर लोग बहुत ज़्यादा आयेंगे तो बतलाओ उन्हें मुहम्मद के बारे में क्या कहें? कोई ऐसी बात तजवीज़ करो कि सब एक ही ज़बान में वही बात कहें, ताकि अ़रब भर में और फिर और जगह भी वही मशहूर हो जाये। तो अब किसी ने शायर कहा, किसी ने जादूगर कहा, किसी ने काहिन और नजूमी कहा, किसी ने मजनूँ और दीवाना कहा, वलीद बैठा सोचता रहा और ग़ौर व फ़िक्र करके देख-भालकर तेवरी चढ़ा कर और मुँह बनाकर कहा- पहले जादूगरों का क़ौल है जिसे यह नक़ल कर रहा है। क़ुरआने करीम में एक और जगह है:

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا.

यानी ज़रा देख तो सही तेरी कैसी-कैसी मिसालें गढ़ते हैं? लेकिन बहक कर रह जाते हैं और किसी नतीजे तक नहीं पहुँच सकते।

अब उसकी सज़ा का ज़िक्र हो रहा है कि मैं उसे जहन्नम की आग में ग़र्क़ कर दूँगा जो ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब की आग है, जो गोश्त-पोस्त को, रग-पट्ठों को खा जाती है, फिर ये सब नये आते हैं और फिर जलाये जाते हैं। न मौत आयेगी न राहत वाली ज़िन्दगी मिलेगी। खाल उधेड़ देने वाली वह आग है जो एक ही लपेट में जिस्म को रात से ज़्यादा काला कर देती है। जिस्म व खाल को भून-भुलस देती है। उन्नीस दारोग़ा उस पर मुक़र्रर हैं जो न थकें न रहम करें। हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि चन्द यहूदियों ने सहाबा से पूछा- बतलाओ तो जहन्नम के दारोग़ाओं की संख्या कितनी है? उन्होंने कहा अल्लाह और उसका रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। फिर किसी शख़्स ने आकर हुज़ूर से यह वाक़िआ़ बयान किया। उसी वक़्त यह आयत नाज़िल हुई:

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ.

कि उस पर उन्नीस हैं।

आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को सुना दी और फ़रमाया- ज़रा उन्हें मेरे पास तो लाओ, मैं भी उनसे पूछूँ कि जन्नत की मिट्टी क्या है? सुनो वह सफ़ेद मेदे की तरह है। फिर यहूदी आपके पास आये और आप से पूछा कि जहन्नम के दारोग़ाओं की संख्या कितनी है? आपने दोनों हाथ की उंगलियाँ दो दफ़ा झुकायीं, दूसरी दफ़ा में अंगूठा रोक लिया, यानी उन्नीस। फिर आप सल्ल. ने फ़रमाया तुम बतलाओ कि जन्नत की मिट्टी क्या है? उन्होंने अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम से कहा आप ही कहिये। इब्ने सलाम रज़ि. ने कहा गोया वह सफ़ेद रोटी है। आपने फ़रमाया याद रखो यह सफ़ेद रोटी वह जो ख़ालिस मेदे की हो। (इब्ने अबी हातिम) मुस्नद बज़्ज़ार में है कि जिस शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. को सहाबा के लाजवाब होने की ख़बर दी थी उसने आकर कहा था कि आज तो आपके सहाबा हार गये। फ़रमाया कैसे? उसने कहा उनसे जवाब न बन पड़ा और कहना पड़ा कि हम अपने नबी से पूछ लें। आप सल्ल. ने फ़रमाया भला वह भी हारे हुए कहे जा सकते हैं? जिनसे वह बात पूछी जाती है जिसे वह नहीं जानते तो वह कहते हैं कि हम अपने नबी से पूछ

कर जवाब देंगे। उन अल्लाह के दुश्मन यहूदियों को ज़रा मेरे पास तो लाओ। हाँ उन्होंने अपनी नबी से ख़ुदा को देखने का सवाल किया था और उन पर अ़ज़ाब भेजा गया था। अब यहूद बुलवाये गये जवाब दिया गया और हुज़ूर सल्ल. के सवाल पर बड़े चकराये और एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे.....।

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّ
مَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ
لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ
مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ
وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۭ وَمَا هِيَ
اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ ع ٣١ ١٥
وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝
اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝

और हमने दोज़ख़ के कारकुन (आदमी नहीं बल्कि) सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हमने जो उनकी तादाद (ज़िक्र व बयान करने में) सिर्फ़ ऐसी रखी है जो काफ़िरों की गुमराही का ज़रिया हो तो इसलिए ताकि अहले किताब (सुनने के साथ) यक़ीन कर लें और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए, और अहले किताब और मोमिनीन शक न करें। और ताकि जिन लोगों के दिलों में (शक की) बीमारी है वह और काफ़िर लोग कहने लगें कि इस अ़जीब मज़मून से अल्लाह तआ़ला का क्या मक़सद है? (जिस तरह इस ख़ास बाब में ख़ुदा तआ़ला ने काफ़िरों को गुमराह किया) इसी तरह अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है हिदायत कर देता है। और (यह उन्नीस फ़रिश्तों का मुक़र्रर होना किसी हिक्मत से है वरना) तुम्हारे रब के लश्करों (यानी फ़रिश्तों की तादाद) को सिवाय रब के कोई नहीं जानता, और दोज़ख़ का हाल बयान करना सिर्फ़ आदमियों की नसीहत के लिए है। (31)

क़सम है चाँद की। (32) और रात की जब वह जाने लगे। (33) और सुबह की जब वह रोशन हो जाए (34) कि यक़ीनन दोज़ख़ बड़ी भारी चीज़ है। (35) जो इनसान के लिए बड़ा डरावा है। (36) (यानी) तुममें जो (आगे की तरफ़) बढ़े उसके लिए भी या जो (ख़ैर से) पीछे की तरफ़ हटे उसके लिए भी। (37)

यह एक आज़माईश और इम्तिहान है

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अ़ज़ाब के देने पर और जहन्नम की निगरानी पर हमने फ़रिश्ते मुक़र्रर किये हैं जो रहम न करने वाले बल्कि सख़्त-कलामी (यानी डाँट-डपट) करने वाले हैं। इसमें क़ुरैश के

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

मुश्रिकों की तरदीद है, उन्हें जिस वक़्त जहन्नम के दारोग़ाओं की तायदाद बतलाई गयी तो अबू जहल ने कहा ऐ क़ुरैशियो! अगर ये उन्नीस हैं तो ज़्यादा से ज़्यादा एक सौ नब्बे हम मिलकर उन्हें हरा देंगे। इस पर कहा जाता है कि वे फ़रिश्ते हैं इनसान नहीं हैं। उन्हें न तुम हरा पाओगे न थका सकोगे।

फ़ायदाः यह भी कहा गया है कि अबुल-अशद्दैन जिसका नाम कलदा बिन उसैद बिन ख़लफ़ था, उसने इस तायदाद को सुनकर कहा कि ऐ क़ुरैशियो! तुम सब मिलकर उनमें से दो को रोक लेना बाक़ी सत्रह को मैं काफ़ी हूँ। यह बड़ा घमण्डी शख़्स था और साथ ही बड़ा ताक़तवर भी। यह गाय के चमड़े पर खड़ा हो जाता, फिर दस ताक़तवर शख़्स मिलकर उसे इसके पैरों के नीचे से निकालना चाहते तो खाल के टुकड़े हो जाते लेकिन इसके क़दम हिलते भी नहीं। यही शख़्स है जिसने रसूलुल्लाह सल्ल. के सामने आकर कहा था कि आप मुझसे कुश्ती लड़ें, अगर आपने मुझे गिरा दिया तो मैं आपकी नुबुव्वत को मान लूँगा। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने इससे कुश्ती लड़ी और कई बार इसको गिराया, लेकिन इसे ईमान लाना नसीब न हुआ। इमाम इब्ने इस्हाक़ ने कुश्ती वाला वाक़िआ रुकाना बिन अ़ब्दे यज़ीद बिन हाशिम बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब का बताया है। मैं कहता हूँ कि इन दोनों बातों में कुछ टकराव नहीं, मुम्किन है कि इससे और उससे दोनों से कुश्ती हुई हो। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाता है कि इस गिनती का ज़िक्र था ही इम्तिहान के लिये। एक तरफ़ काफ़िरों का कुफ़्र खुल पड़ा, दूसरी तरफ़ अहले किताब को पूरा यक़ीन हो गया कि इस रसूल की रिसालत हक़ है, क्योंकि ख़ुद उनकी किताब में भी यही गिनती है। तीसरी तरफ़ ईमान वाले अपने ईमान में कामिल हो गये, हुज़ूर सल्ल. की बात की तस्दीक़ की और ईमान बढ़ा। अहले किताब और मुसलमानों को कोई शक व शुब्हा न रहा, बीमार दिल वाले मुनाफ़िक़ लोग चीख़ उठे कि भला बतलाओ कि इसे यहाँ ज़िक्र करने में क्या हिक्मत है? अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐसी ही बातें बहुत से लोगों के ईमान की मज़बूती का सबब बन जाती हैं और बहुत से लोगों के शुब्हे वाले दिल और डावाँ-डोल हो जाते हैं। ख़ुदा तआ़ला के ये सब काम हिक्मत और भेदों से भरे हैं। तेरे रब के लश्करों की गिनती, उनकी सही तायदाद और उनकी कसरत का किसी को इल्म नहीं, वही ख़ूब जानता है। यह न समझ कि बस उन्नीस ही हैं, जैसे यूनानी फ़ल्सफ़ियों और उनके हम-ख़्याल लोगों ने अपनी जहालत की वजह से समझ लिया कि इससे मुराद "उक़ूले अ़शरा" (दस अ़क़्लें) और नौ नफ़्स हैं, हालाँकि यह सिर्फ़ उनका दावा है जिस पर दलील क़ायम करने से वे बिल्कुल आ़जिज़ हैं। अफ़सोस कि आयत के शुरू हिस्से पर तो उनकी नज़रें हैं लेकिन आख़िरी हिस्से के साथ वे कुफ़्र (इनकार) कर रहे हैं, जहाँ साफ़ अलफ़ाज़ मौजूद हैं कि तेरे रब के लश्करों को सिवाय उसके कोई नहीं जानता। फिर सिर्फ़ उन्नीस के क्या मायने?

बुख़ारी व मुस्लिम की मेराज वाली हदीस में साबित हो चुका है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने बैतुल-मामूर के हालात बयान करते हुए फ़रमाया कि वह सातवें आसमान पर है और उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं। इसी तरह दूसरे रोज़ दूसरे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं। इसी तरह हमेशा तक, लेकिन फ़रिश्तों की तायदाद इस क़द्र ज़्यादा है कि जो आज गये उनकी बारी फिर क़ियामत तक नहीं आयेगी। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, और वह सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते। आसमान चरचरा रहे हैं और उन्हें चरचराने का हक़ है, एक उंगली टिकाने की जगह ऐसी ख़ाली नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता सज्दे में न पड़ा हो। अगर तुम वह जान लेते जो मैं जानता हूँ तो तुम बहुत कम हंसते, बहुत ज़्यादा रोते और बिस्तरों पर अपनी बीवियों के साथ लज़्ज़त न पा सकते, बल्कि फ़रियाद व

ज़ारी करते हुए जंगलों की तरफ़ निकल खड़े होते। इस हदीस को बयान फ़रमाकर हज़रत अबूज़र रज़ि. की ज़बान से बेसाख़्ता निकल जाता है कि काश मैं दरख़्त होता जो काट दिया जाता। यह हदीस तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं, और हज़रत अबूज़र से मौक़ूफ़न भी रिवायत की गयी है। तबरानी में है कि सातों आसमानों में क़दम रखने की बालिश्त भर या हथेली जितनी जगह भी ऐसी नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता क़ियाम की या रुकूअ़ की या सज्दे की हालत में न हो। फिर भी ये सब कल क़ियामत के दिन कहेंगे कि खुदाया! तू पाक है, हमें जिस क़द्र तेरी इबादत करनी चाहिये थी उतनी हम से हो न सकी। अलबत्ता हमने तेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया।

इमाम मुहम्मद बिन नस्र मरूज़ी रह. की किताब 'अस्सलात' में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक मर्तबा सहाबा किराम रज़ि. से सवाल किया कि जो मैं सुन रहा हूँ तुम भी सुन रहे हो? उन्होंने जवाब में कहा या रसूलल्लाह! हमें तो कुछ सुनाई नहीं देता। आपने फ़रमाया आसमानों का चरचर बोलना मैं सुन रहा हूँ। और उनको इस चरचराहट पर मलामत नहीं किया जा सकता, क्योंकि उन पर इस क़द्र फ़रिश्ते हैं कि एक बालिश्त भर जगह भी ख़ाली नहीं। कहीं कोई रुकूअ़ में है और कहीं कोई सज्दे में। दूसरी रिवायत में है कि दुनिया वाले आसमान में एक क़दम रखने की जगह भी ऐसी नहीं जहाँ सज्दे में या क़ियाम में कोई फ़रिश्ता न हो। इसी लिये फ़रिश्तों का यह क़ौल क़ुरआने करीम में मौजूद है:

وَمَامِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ. وَاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ. وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ.

यानी हममें से हर एक के लिये जगह मुक़र्रर है, और हम सफ़ें बाँधने वाले और खुदा तआ़ला की तस्बीह बयान करने वाले हैं। इस हदीस का मरफ़ूअ़ होना बहुत ही मशकूक है। एक दूसरी रिवायत में यह क़ौल हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. का बयान किया गया है। एक और सनद से हज़रत अ़ला बिन सअ़द रज़ि. की रिवायत से भी मरफ़ूअ़न मरवी है, यह सहाबी फ़त्हे मक्का में और उसके बाद के जिहादों में हुज़ूर सल्ल. के साथ थे। लेकिन सनद के हिसाब से यह भी ग़रीब है। एक और बहुत ही ग़रीब बल्कि सख़्त मुन्कर हदीस में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. आये, नमाज़ खड़ी हुई थी और तीन शख़्स बैठे हुए थे, जिनमें का एक अबू जहश लैसी था। आपने फ़रमाया उठो, हुज़ूर के साथ नमाज़ में खड़े हो जाओ, तो दो शख़्स तो खड़े हो गये लेकिन अबू जहश कहने लगा अगर कोई ऐसा शख़्स आये जो ताक़त व क़ुव्वत में मुझसे ज़्यादा हो और मुझसे कुश्ती लड़े और मुझे गिरा दे फिर मेरा मुँह मिट्टी में मिला दे तो मैं उठूँगा वरना बस उठ चुका। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया और कौन आयेगा आ जा मैं तैयार हूँ। चुनाँचे कुश्ती होने लगी और मैंने उसे पछाड़ा। फिर उसके मुँह को मिट्टी में मिला दिया। इतने में हज़रत उस्मान रज़ि. आ गये और उसे मेरे हाथ से छुड़ा दिया। मैं बड़ा बिगड़ा और गुस्से की हालत में हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे देखते ही फ़रमाया- अबू हफ़्सा आज क्या बात है? मैंने तमाम वाक़िआ़ कह सुनाया। आप सल्ल. ने फ़रमाया अगर उमर उससे खुश होता तो उस पर रहम करता, खुदा की क़सम मेरे नज़दीक तो उस ख़बीस का सर उतार लेना अच्छा था। यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ि. यूँ ही वहाँ से उठ खड़े हुए और उसकी तरफ़ लपके। ख़ासी दूर निकल चुके थे कि हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें आवाज़ दी और फ़रमाया- बैठो, सुन तो लो कि खुदा अबू जहश की नमाज़ से बिल्कुल बेनियाज़ है। दुनिया वाले आसमान में खुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाले बेशुमार फ़रिश्ते खुदा के सामने सज्दे में पड़े हुए हैं, जो क़ियामत तक सर ही नहीं उठायेंगे। क़ियामत में सज्दे से सर उठायेंगे और यह कहते हुए हाज़िर होंगे कि ऐ हमारे रब! हमसे तेरी इबादत का

Maktab E Ashraf

हक् अदा नहीं हो सका। इसी तरह दूसरे आसमान में भी यही हाल है। हज़रत उमर रज़ि. ने सवाल किया कि हुज़ूर! उनकी तस्बीह क्या है? आपने फ़रमाया दुनिया वाले आसमान के फ़रिश्ते तो कहते हैं:

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ.

"सुब्हा-न ज़िल्-मुल्कि वल्-म-लकूति" और दूसरे आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं:

سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ.

"सुब्हा-न ज़िल-इज़्ज़ति वल्-ज-बरूति" और तीसरे आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं:

سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَایَمُوْتُ.

"सुब्हानल-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु"

ऐ उमर! तुम भी अपनी नमाज़ में इसे कहा करो। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! इससे पहले जो पढ़ना आपने सिखाया है और जिसके पढ़ने को फ़रमाया है उसका क्या होगा? फ़रमाया कभी यह कहो कभी वह पढ़ो। पहले जो पढ़ने को आपने फ़रमाया था वह यह था:

اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ جَلَّ وَجْهُكَ.

यानी ख़ुदाया! तेरे अ़ज़ाबों से मैं तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ और तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामन्दी की पनाह चाहता हूँ और तुझसे तेरी ही पनाह पकड़ता हूँ तेरा चेहरा जलाल वाला है।

इस्हाक़ मरूज़ी जो इस हदीस के रावी हैं इनसे हज़रत इमाम बुख़ारी रह. रिवायत करते हैं और इमाम इब्ने हिब्बान रह. भी इन्हें मोतबर रावियों में गिनते हैं। लेकिन हज़रत इमाम अबू दाऊद, इमाम नसाई, इमाम उकैली और इमाम दारे क़ुतनी रह. इन्हें ज़ईफ़ कहते हैं। इमाम अबू हातिम राज़ी फ़रमाते हैं कि थे तो यह सच्चे मगर नाबीना हो गये थे और कभी-कभी तलक़ीन क़बूल कर लिया करते थे, हाँ इनकी किताबों की हदीसें सही हैं। उनसे यह भी मरवी है कि यह मुज़्तरिब हैं और इनके उस्ताज़ अ़ब्दुल-मलिक बिन क़ुदामा अबू क़तादा जहमी में भी कलाम है। ताज्जुब है कि इमाम मुहम्मद इब्ने नस्र रह. ने इनकी इस हदीस को कैसे नक़ल कर दिया? और न तो इस पर कलाम किया न इसके हाल को मालूम कराया, न इसके बाज़ रावियों के ज़ईफ़ होने को बयान किया, हाँ इतना तो किया है कि इसे दूसरी सनद से मुर्सल तौर पर रिवायत कर दिया है, और मुर्सल की दो सनदें लाये हैं- एक हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. से, दूसरी हज़रत हसन बसरी रह. से। फिर एक और रिवायत लाये हैं कि हज़रत अ़दी बिन अरतात रह. ने मदाईन की जामा मस्जिद में अपने ख़ुतबे (बयान) में फ़रमाया कि मैंने एक सहाबी से सुना है, उन्होंने नबी सल्ल. से सुना कि आपने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला के बहुत से ऐसे फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा से कपकपाते रहते हैं, उनके आँसू गिरते रहते हैं और वे उन फ़रिश्तों पर टपकते हैं जो नमाज़ में मशग़ूल हैं। और उनमें ऐसे फ़रिश्ते भी हैं जो दुनिया की शुरूआ़त से रुकूअ़ में ही हैं और बाज़ सज्दे में ही हैं, क़ियामत के दिन अपनी पीठ और सर उठायेंगे और बहुत ही आ़जिज़ी से अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे कि ख़ुदाया! तू पाक है हम से तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं हो सका। इस हदीस की सनद में कोई हर्ज नहीं।

फिर फ़रमाता है कि यह आग जिसकी सिफ़त तुम सुन चुके, यह लोगों के लिये पूरी तरह इबरत व नसीहत का ज़रिया है। फिर चाँद की रात के जाने की, सुबह के रोशन होने की क़समें खाकर फ़रमाता है कि वह आग एक ज़बरदस्त और बहुत बड़ी चीज़ है। जो चाहे इस अ़ज़ाब की इत्तिला को क़बूल करके हक़

Maktab E Ashraf

की राह पर लग जाये, जो चाहे बावजूद इसके भी हक़ से पीठ ही फेरता रहे, उससे दूर भागता रहे और उसे रद्द करता रहे।

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝ إِلَّآ
أَصْحَٰبَ ٱلْيَمِينِ ۝ فِى جَنَّٰتٍ ۛ
يَتَسَآءَلُونَ ۝ عَنِ ٱلْمُجْرِمِينَ ۝ مَا
سَلَكَكُمْ فِى سَقَرَ ۝ قَالُوا۟ لَمْ نَكُ مِنَ
ٱلْمُصَلِّينَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ ٱلْمِسْكِينَ ۝
وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ ٱلْخَآئِضِينَ ۝ وَكُنَّا
نُكَذِّبُ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ۝ حَتَّىٰٓ أَتَىٰنَا ٱلْيَقِينُ ۝
فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَٰعَةُ ٱلشَّٰفِعِينَ ۝ فَمَا لَهُمْ
عَنِ ٱلتَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ۝ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ
مُّسْتَنفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍۭ ۝ بَلْ يُرِيدُ
كُلُّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا
مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا ۖ بَل لَّا يَخَافُونَ ٱلْءَاخِرَةَ ۝
كَلَّآ إِنَّهُۥ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَن شَآءَ ذَكَرَهُۥ ۝
وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ هُوَ
أَهْلُ ٱلتَّقْوَىٰ وَأَهْلُ ٱلْمَغْفِرَةِ ۝ ع ٢٥ ١٦

हर शख़्स अपने (कुफ़्रिया) आमाल के बदले में (दोज़ख़ में) मुक़ैयद होगा। (38) मगर वे दाहिने वाले (39) कि वे जन्नतों में होंगे, पूछते होंगे (40) मुजरिमों (यानी काफ़िरों) का हाल (ख़ुद उन काफ़िरों ही से) (41) (यानी मोमिन लोग काफ़िरों से पूछेंगे) कि तुमको दोज़ख़ में किस बात ने दाख़िल किया? (42) वे कहेंगे, हम न तो नमाज़ पढ़ा करते थे (43) और न ग़रीब को (जिसका हक़ वाजिब था) खाना खिलाया करते थे। (44) और मशग़ले में रहने वालों के साथ हम भी (उस) मशग़ले में रहा करते थे। (45) और क़ियामत के दिन को झुठलाया करते थे। (46) यहाँ तक कि (उसी हालत में) हमको मौत आ गई। (47) सो (जो हालत ज़िक्र हुई उसमें) उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी। (48) (और जब कुफ़्र और हक़ से मुँह मोड़ने की बदौलत उनकी यह हालत बनने वाली है) तो उनको क्या हुआ कि इस (क़ुरआनी) नसीहत से मुँह फेरते हैं (49) कि गोया वे जंगली गधे हैं (50) जो शेर से भागे जा रहे हैं। (51) बल्कि उनमें हर शख़्स यह चाहता है कि उसको खुले हुए (आसमानी) नविश्ते दिए जाएँ। (52) (आगे इस बेहूदा दरख़्वास्त का रद्द है कि यह) हरगिज़ नहीं (हो सकता) बल्कि ये लोग आख़िरत (के अ़ज़ाब) से नहीं डरते। (53) (पस यह) हरगिज़ नहीं हो सकता बल्कि क़ुरआन (ही) नसीहत (के लिए काफ़ी) है। (54) जिसका जी चाहे इससे नसीहत हासिल करे। (55) और बग़ैर ख़ुदा के चाहे ये लोग नसीहत क़बूल नहीं करेंगे। वही है जिस (के अ़ज़ाब) से डरना चाहिए और (वही है) जो (बन्दों के गुनाह) माफ़ करता है। (56)

इनसान और उससे पूछताछ

अल्लाह तआला ख़बर देता है कि हर शख़्स अपने आमाल में क़ियामत के दिन जकड़ा बंधा होगा। लेकिन जिनके दायें हाथ में आमाल नामा आया है वे जन्नत के बालाख़ानों (चौबारों) में चैन से बैठे हुए जहन्नमियों को बदतरीन अ़ज़ाबों में देखकर उनसे पूछेंगे कि तुम यहाँ कैसे पहुँच गये? वे जवाब देंगे कि हमने न तो रब की इबादत की न मख़्लूक़ के साथ एहसान किया। बग़ैर इल्म के जो ज़बान पर आया बकते रहे। जहाँ किसी को एतिराज़ करते सुना हम भी साथ हो गये और बातें बनाने लग गये, और क़ियामत के दिन को झुठलाते ही रहे, यहाँ तक कि मौत आ गयी।

''यक़ीन'' के मायने मौत के इस आयत में भी हैं:

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ.

यानी मौत के वक़्त तक ख़ुदा की इबादत में लगा रह।

और हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात के बारे में हदीस में भी यक़ीन का लफ़्ज़ आया है। अब ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि ऐसे लोगों को किसी की सिफ़ारिश और शफ़ाअ़त नफ़ा न देगी इसलिये कि शफ़ाअ़त वहाँ नाफ़ा होती है जहाँ शफ़ाअ़त का मौक़ा हो, लेकिन जिनका दम भी कुफ़्र पर निकला हो उनके लिये शफ़ाअ़त कहाँ? वे हमेशा के लिये ''हावियह'' (जहन्नम) में गये।

फिर फ़रमाया क्या बात है? कौनसी वजह है? कि ये काफ़िर तेरी नसीहत और दावत से मुँह फेर रहे हैं और क़ुरआन व हदीस से इस तरह भागते हैं जैसे जंगली गधे शिकारी शेर से। फ़ारसी ज़बान में जिसे शेर कहते हैं उसे अ़रबी ज़बान में ''असद'' कहते हैं और हब्शी ज़बान में 'क़स्वरह' कहते हैं और नब्ती ज़बान में ''औया''। फिर फ़रमाता है कि ये मुश्रिक तो चाहते हैं कि इनके हर-हर शख़्स के लिये अलग-अलग किताब उतरे। जैसे एक और जगह इनका क़ौल है:

حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ......... الخ.

यानी जब उनके पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम तो हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक कि वह हमको न दिया जाये जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया है। अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह इल्म है कि रिसालत के क़ाबिल कौन है?

और यह मतलब भी हो सकता है कि हमें बग़ैर इल्म के छोड़ दिया जाये। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- दर असल वजह यह है कि उन्हें आख़िरत का ख़ौफ़ ही नहीं, क्योंकि उन्हें उसका यक़ीन नहीं, उस पर ईमान नहीं बल्कि उसे झुठलाते हैं। फिर फ़रमाया- सच्ची बात तो यह है कि क़ुरआन ख़ालिस नसीहत और सबक़ लेने वाली चीज़ है, जो चाहे इबरत (सबक़) हासिल कर ले और नसीहत पकड़े। जैसे एक और जगह अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ.

यानी तुम्हारी तमन्नायें ख़ुदा तआ़ला की मशीयत (चाहत व मर्ज़ी) के ताबे हैं।

फिर फ़रमाया- उसी की ज़ात इस क़ाबिल है कि उससे ख़ौफ़ खाया जाये, और वही ऐसा है कि हर रुजू करने वाले की तौबा क़बूल फ़रमा ले। मुस्नद अहमद में है कि रसूले करीम सल्ल. ने इस आयत की

Maktab E Ashraf

तिलावत की और फ़रमाया- तुम्हारा रब फ़रमाता है- मैं इसका हक़दार हूँ कि मुझसे डरा जाये और मेरे साथ दूसरा माबूद न ठहराया जाये, जो मेरे साथ शरीक बनाने से बच गया तो वह मेरी बख़्शिश का हक़दार हो गया। इब्ने माजा, नसाई और तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह हदीस है, और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब कहते हैं। इसके एक रावी सुहैल क़वी नहीं।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः मुद्दस्सिर की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः क़ियामत

सूरः क़ियामत मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की। (1) और क़सम खाता हूँ ऐसे नफ़्स की जो अपने ऊपर मलामत करे। (2) (आगे उन लोगों का रद्द है जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकार करते हैं, यानी) क्या इनसान ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ हरगिज़ जमा न करेंगे? (3) हम ज़रूर जमा करेंगे (और यह जमा करना हमको कुछ दुश्वार नहीं) क्योंकि हम इस पर क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोरियों तक को दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि बाज़ा आदमी (क़ियामत का इनकारी होकर) यूँ चाहता है कि अपनी आने वाली ज़िन्दगी में भी (बेख़ौफ़ व ख़तर होकर) बुराईयाँ और गुनाह करता रहे। (5) (इसलिए इनकार करने के तौर पर) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब आएगा? (6) सो जिस वक़्त (हैरत के मारे) आँखें फटी रह जाएँगी। (7) और चाँद बेनूर हो जाएगा। (8) और (चाँद की क्या तख़्सीस है बल्कि) सूरज और चाँद (दोनों) एक हालत के हो जाएँगे (यानी दोनों बेनूर हो जाएँगे) (9)	لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِo وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِo اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗo بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗo بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗo يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِo فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُo وَخَسَفَ الْقَمَرُo وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُo يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّo كَلَّا لَا

Maktab E Ashraf

उस दिन इनसान कहेगा, अब किधर भागूँ? (10) (इरशाद होता है) हरगिज़ (भागना मुम्किन) नहीं (क्योंकि) कहीं पनाह की जगह नहीं। (11) उस दिन सिर्फ़ आप ही के परवर्दिगार के पास (जाने का) ठिकाना है। (12) उस दिन इनसान को उसका सब अगला-पिछला किया हुआ जतला दिया जाएगा। (13) (और इनसान का अपने आमाल से आगाह होना कुछ उस जतलाने पर मौक़ूफ़ न होगा) बल्कि इनसान ख़ुद अपनी हालत पर ख़ूब बाख़बर होगा। (14) अगरचे (तबीयत के तक़ाज़े की वजह से उस वक़्त भी) अपने हीले (बहाने) सामने लाये। (15)	وَزَرَ ٥ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمُسْتَقَرُّ ٥ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ٥ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ٥ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ٥

इनसान को दोबारा ज़िन्दा होकर उठना है

यह कई बार बयान हो चुका है कि जिस चीज़ पर क़सम खाई जाये अगर वह रद्द करने की चीज़ हो तो क़सम से पहले "ला" का कलिमा नफ़ी की ताईद के लिये लाना जायज़ होता है। यहाँ क़ियामत के होने पर और जाहिलों के इस क़ौल की तरदीद पर कि क़ियामत न होगी, क़सम खाई जा रही है तो फ़रमाता है कि क़सम है क़ियामत के दिन की, और क़सम है मलामत करने वाली जान की। हज़रत हसन रह. तो फ़रमाते हैं कि क़ियामत की क़सम है और मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम नहीं है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि दोनों की क़सम है। हसन और आरज की क़िराअत "फ़-उक़्सिमु बियौमिल् क़ियामति" है इससे भी हज़रत हसन के क़ौल की ताईद होती है, इसलिये कि उनके नज़दीक पहले की क़सम है और दूसरे की नहीं। लेकिन सही क़ौल यही है कि दोनों की क़सम खाई है जैसे कि हज़रत क़तादा रह. का फ़रमान है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और सईद बिन जुबैर रह. से भी यही मन्क़ूल है और इमाम इब्ने जरीर रह. का मुख़्तार (पसन्दीदा) क़ौल भी यही है। क़ियामत के दिन को तो हर शख़्स जानता ही है, "नफ़्से-लव्वामा" की तफ़सीर में हज़रत हसन बसरी रह. से मरवी है कि इससे मुराद मोमिन का नफ़्स है कि वह हर वक़्त अपने आपको मलामत ही करता रहता है कि यह क्यों कह दिया? यह क्यों खा लिया? यह ख़्याल दिल में क्यों आया? हाँ फ़ासिक़ फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) ग़ाफ़िल होता है, उसे क्या पड़ी है जो अपने नफ़्स को रोके। यह भी मरवी है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ अपने आपको मलामत करेगी, ख़ैर वाले ख़ैर की कमी पर और शर (बुराई और गुनाह) वाले शर के सरज़द होने पर। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद बुरा नफ़्स है जो नाफ़रमान हो। जो चीज़ जाती रहे उस पर शर्मिन्दा होने वाला और उस पर मलामत करने वाला।

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि ये सब अक़वाल मायने के एतिबार से क़रीब-क़रीब हैं। मतलब यह है कि यह वह नफ़्से लव्वामा है जो नेकी की कमी पर, बुराई के हो जाने पर अपने नफ़्स को मलामत करता है और छूट जाने वाली नेकी पर शर्मिन्दा करता है।

फिर फ़रमाता है कि क्या इनसान यह सोचे हुए है कि हम क़ियामत के दिन उसकी हड्डियों के जमा करने पर क़ादिर न होंगे, यह बहुत ही ग़लत ख़्याल है, हम उसे विभिन्न और अनेक जगह से जमा करके दोबारा खड़ा करेंगे और उसकी पोर-पोर बना देंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं- यानी हम क़ादिर हैं कि उसे ऊँट या घोड़े के तलवे की तरह बना दें। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- यानी दुनिया में भी अगर हम चाहते तो उसे ऐसा कर देते। आयत के लफ़्ज़ों से तो बज़ाहिर यही मालूम होता है कि "क़ादिरी-न" हाल है "नज्मउ" से, यानी दुनिया में भी अगर हम चाहते तो इसे ऐसा कर देते। जमा करेंगे! हाँ जल्द ही जमा करेंगे, इस हाल में कि हमें उनके जमा करने की क़ुदरत है, बल्कि अगर हम चाहें तो जितना यह था उससे भी कुछ ज़्यादा बनाकर इसे उठायें, इसकी उंगलियों के सिरे बराबर करके। इब्ने क़ुतैबा और ज़ुजाज के क़ौल के यही मायने हैं।

फिर फ़रमाता है कि इनसान अपने आगे बुराईयाँ और गुनाह करना चाहता है, क़दम क़दम बढ़ रहा है, उम्मीदें बाँधे हुए है। कहता जाता है कि पहले अ़मल कर लूँ फिर क़ियामत से पहले तौबा भी कर लूँगा। जबकि क़ियामत का दिन उसके आगे है। कुफ़्र करता है, वह गोया अपने सर पर सवार होकर आगे बढ़ रहा है। हर वक़्त यही पाया जाता है कि एक-एक क़दम अपने नफ़्स को ख़ुदा की नाफ़रमानी की तरफ़ बढ़ाता जाता है मगर जिन पर रब का रहम है।

अक्सर बुज़ुर्गों का क़ौल इस आयत की तफ़सीर में यही है कि गुनाहों में जल्दी करता है और तौबा में ताख़ीर (देरी) करता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हिसाब के दिन से इनकारी है। इब्ने ज़ैद रह. भी यही कहते हैं और यही ज़ाहिर मुराद है, क्योंकि इसके बाद ही है कि वह पूछता है- क़ियामत कब होगी? उसका यह सवाल भी इनकार के तौर पर है, यह तो जानता है कि क़ियामत का आना मुहाल है। जैसे एक और जगह है:

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ.......... الخ.

कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बता दो कि क़ियामत कब आयेगी? उनसे कह दो कि उसका एक दिन मुक़र्रर है, जिससे न तुम एक लम्हा आगे बढ़ सकोगे न पीछे हट सकोगे।

यहाँ भी फ़रमाता है कि जब आँखें पथरा जायेंगी। जैसे एक और जगह है:

لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ........الخ.

यानी पलकें झपकेंगी नहीं बल्कि रौब व दहशत और ख़ौफ़ व घबराहट के मारे आँखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर देखते रहेंगे। चाँद की रोशनी बिल्कुल जाती रहेगी और सूरज चाँद जमा कर दिये जायेंगे, यानी दोनों को बेनूर करके लपेट लिया जायेगा। जैसे एक जगह फ़रमाया है:

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ. وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ.

जब सूरज बेनूर हो जायेगा और जब सितारे टूट-टूटकर गिर पड़ेंगे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की किराअत में:

وَجَمَعَ بَيْنَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ.

है। (यानी सूरज व चाँद को जमा कर देगा) इनसान जब यह परेशानी, सख़्त हौल, घबराहट और कायनात की व्यवस्था की यह ख़तरनाक हालत देखेगा तो भागता जायेगा और कहेगा कि पनाह और भागने

की जगह कहाँ है? अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जवाब मिलेगा कि कोई पनाह नहीं, रब के सामने और उसके पास ठहरने के सिवा कोई चारा-ए-कार नहीं। जैसे एक और जगह है:

مَالَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَالَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ.

यानी आज न तो कोई पनाह की जगह है, न ऐसी जगह कि वहाँ जाकर तुम अनजान और बेपहचान बन जाओ। आज हर शख़्स को उसके अगले-पिछले नये-पुराने छोटे-बड़े आमाल से अवगत किया जायेगा। जैसे फ़रमान है:

وَوَجَدُوْا مَاعَمِلُوْا حَاضِرًا............ الخ.

यानी जो किया था मौजूद पा लेंगे, और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा। इनसान अपने आपको अच्छी तरह जानता है, अपने आमाल का ख़ुद आईना है अगरचे इनकार करे और हीले-बहाने व उज़्र पेश करता फिरे। जैसे एक जगह फ़रमान है:

اِقْرَاْ كِتَابَكَ. كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا.

अपना नामा-ए-आमाल ख़ुद पढ़ ले और ख़ुद ही अपने आपको जाँच ले। उसके कान आँख हाथ पाँव और दूसरे अंग ही उस पर गवाही देने को काफ़ी हैं। लेकिन अफ़सोस कि यह दूसरों के ऐबों और नुक़सान को देखता है और अपने कीड़े चुनने से ग़ाफ़िल है।

कहा जाता है कि तौरात में लिखा हुआ है कि ऐ इनसान! तू दूसरों की आँखों का तो तिनका देखता है और अपनी आँख का शहतीर भी तुझे दिखाई नहीं देता? क़ियामत के दिन चाहे इनसान फ़ुज़ूल के बहाने बनाये और झूठी दलीलें दे और बेकार के उज़्र पेश करे, एक भी क़बूल न किया जायेगा। इस आयत के एक मायने यह भी किये गये हैं कि वह पर्दा डाले, यमन के लोग पर्दे को अिज़ार कहते हैं। लेकिन सही मायने पहले हैं। जैसे एक दूसरी जगह है कि कोई माक़ूल उज़्र न पाकर अपने शिर्क का सिरे से इनकार ही कर देंगे कि ख़ुदा की क़सम हम मुश्रिक थे ही नहीं। एक और जगह है कि क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने भी क़समें खा-खाकर सच्चा होना चाहेंगे, जैसे दुनिया में तुम्हारे सामने उनकी हालत है, लेकिन ख़ुदा पर तो उनका झूठ ज़ाहिर है चाहे वे अपने आपको कुछ भी समझते रहें। ग़र्ज़ कि उज़्र-माज़िरत (हीले बहाने) उन्हें क़ियामत के दिन कुछ कारामद न होगी। जैसे एक और जगह फ़रमाता है:

لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ.

ज़ालिमों को उनकी माज़िरत (बहाने बनाना) कुछ कारामद न होगी। ये तो अपने शिर्क के साथ ही अपने तमाम बुरे आमाल का इनकार कर देंगे, लेकिन यह सब बेफ़ायदा होगा।

(और) ऐ पैग़म्बर! (वही के ख़त्म हो चुकने से पहले) क़ुरआन पर अपनी ज़बान न हिलाया कीजिए ताकि आप उसको जल्दी-जल्दी लें। (16) (क्योंकि) हमारे ज़िम्मे है (आपके दिल में) उसका जमा कर देना (और आपकी ज़बान से) उसका पढ़वा देना। (17) (जब यह हमारे ज़िम्मे	لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝ كَلَّا بَلْ

تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ ۢبَاسِرَةٌ ۝ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝	है) तो जब हम उसको पढ़ने लगा करें (यानी हमारा फ़रिश्ता पढ़ने लगा करे) तो आप उसके ताबे हो जाया कीजिए। (18) फिर उसका बयान करा देना (भी) हमारा ज़िम्मे है। (19) (ऐ इनकारियो! क़ियामत के बारे में जैसा कि तुम समझ रहे हो) हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि (सिर्फ़ बात यह है) कि तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो (20) और आख़िरत को छोड़ बैठे हो। (21) बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले होंगे। (22) अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे। (23) (यह तो मोमिनों का हाल हुआ) और बहुत-से चेहरे उस दिन बद्-रौनक़ होंगे। (24) (और वे लोग) ख़्याल कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा (यानी उनको सख़्त अज़ाब होगा)। (25)

आप परेशान न हों

यहाँ अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. को तालीम देता है कि फ़रिश्ते से वही किस तरह लें। हुज़ूरे पाक सल्ल. उसके लेने में बहुत जल्दी करते थे और क़िराअत (पढ़ने) में फ़रिश्ते के बिल्कुल साथ-साथ रहते थे। पस अल्लाह तआ़ला हुक्म फ़रमाता है कि जब फ़रिश्ता वही लेकर आये तो आप सुनते रहें, फिर जिस अन्देशे (आशंका) की बिना पर आप ऐसा करते थे उसके बारे में तसल्ली देता है कि आपके सीने में इसे जमा कर देना और वक़्त पर आपकी ज़बान से इसका पढ़वा देना, यह हमारे ज़िम्मे है। इसी तरह इसका वाज़ेह कराना और तफ़सीर और बयान आप से कराने के ज़िम्मेदार भी हम हैं। पस पहली हालत तो याद कराना, दूसरी तिलावत कराना, तीसरी मज़मून की तफ़सीर और वज़ाहत व मतलब बयान कराना तीनों की ज़िम्मेदारी ख़ुदा तआ़ला ने अपने ज़िम्मे ली। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا.

यानी जब तक तेरे पास वही पूरी न आये तू पढ़ने में जल्दी न किया कर, हमसे दुआ़ माँग कि ऐ मेरे रब! मेरे इल्म को ज़्यादा करता रह।

फिर फ़रमाता है कि इसे तेरे सीने में जमा करना और इसे तुझसे पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है। जब हम इसे पढ़ें (यानी जब हमारा नाज़िल किया हुआ फ़रिश्ता इसे तिलावत करे) तो तू सुन ले। जब वह पढ़ चुके तब तू पढ़। हमारी मेहरबानी से तुझे पूरा याद निकलेगा। इतना ही नहीं बल्कि याद कराने, तिलावत कराने के बाद हम तुझे इसके मायने मतलब और इसकी तफ़सीर व व्याख्या साथ समझा देंगे ताकि हमारी असली मुराद और साफ़ शरीअ़त से तू पूरी तरह आगाह हो जाये।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. को इससे पहले वही लेने में सख़्त तकलीफ़ होती थी। इस ख़तरे

Maktaba Ashraf

से कि कहीं मैं भूल न जाऊँ फ़रिश्ते के साथ-साथ पढ़ते जाते थे और आप सल्ल. के होंठ मुबारक हिलते जाते थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हदीस के रावी ने अपने होंठ हिलाकर दिखाये कि इस तरह और उनके शागिर्द सईद रह. भी अपने उस्ताद की तरह होंठ हिलाकर अपने शागिर्द को दिखाते, इस पर यह आयत उतरी कि इतनी जल्दी न करो और होंठ न हिलाओ, इसे आपके सीने में जमा करना और आपकी ज़बान से इसकी तिलावत कराना हमारे ज़िम्मे है। जब हम इसे पढ़ें तो आप सुनिये और चुप रहिये। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के चले जाने के बाद उन्हीं की तरह उनका पढ़ाया हुआ पढ़वाना भी हमारे ज़िम्मे है। बुख़ारी व मुस्लिम में भी यह रिवायत है। बुख़ारी शरीफ़ में यह भी है कि फिर जब वही उतरती तो आप नज़रें नीची कर लेते और जब वही चली जाती आप पढ़ते। इब्ने अबी हातिम में भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत से यह हदीस नक़ल की गयी है और बहुत से पहले बुज़ुर्गों और मुफ़स्सिरीन ने यही फ़रमाया है।

यह भी नक़ल किया गया है कि हुज़ूर सल्ल. हर वक़्त तिलावत फ़रमाया करते थे कि ऐसा न हो कि मैं भूल जाऊँ। इस पर ये आयतें उतरीं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और अ़तीया औ़फ़ी रह. फ़रमाते हैं कि इसका बयान हम पर है, यानी हराम हलाल का वाज़ेह करना। हज़रत क़तादा रह. का क़ौल भी यही है।

फिर इरशाद होता है कि इन काफ़िरों को क़ियामत के इनकार ने और ख़ुदा की पाक किताब को न मानने और ख़ुदा के अ़ज़ीम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. की इताअ़त न करने पर आमादा करने वाली चीज़ दुनिया की मुहब्बत और आख़िरत का छोड़ देना है, हालाँकि आख़िरत का दिन बड़ी अहमियत वाला दिन है।

फ़ायदाः उस दिन बहुत से लोग तो वे होंगे जिनके चेहरे तरोताज़ा और ख़ुश व ख़ुर्रम होंगे, और अपने रब के दीदार से सम्मानित हो रहे होंगे। जैसे कि सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि जल्द ही तुम अपने रब को साफ़-साफ़ खुल्लम-खुल्ला अपने सामने देखोगे। बहुत सी हदीसों से मुतवातिर सनदों से जो हदीस के इमामों ने अपनी किताबों में ज़िक्र की हैं, साबित हो चुका है कि ईमान वाले अपने रब के दीदार से क़ियामत के दिन मुशर्रफ़ (गौरान्वित) होंगे। उन हदीसों को न तो कोई हटा सकता है न उनका इनकार कर सकता है।

सही बुख़ारी और सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू सईद और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरवी है कि लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या हम अपने रब को क़ियामत के दिन देखेंगे? आपने फ़रमाया सूरज और चाँद को जबकि आसमान साफ़ बिना बादल के हो, देखने में तुम्हें कोई चीज़ रोक होती है? उन्होंने कहा नहीं। आपने फ़रमाया इसी तरह तुम अल्लाह तआ़ला को देखोगे। सहीहैन में ही हज़रत जरीर रह. से मरवी है कि नबी सल्ल. ने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया- तुम इसी तरह अपने रब को देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो। पस अगर तुम्हें चाहिये कि सूरज निकलने से पहले की नमाज़ (यानी सुबह की नमाज़) और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ (यानी अ़सर की नमाज़) में किसी तरह की सुस्ती न करो।

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इन्हीं दोनों बरकत वाली किताबों में मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- दो जन्नतें सोने की हैं वहाँ के बर्तन-भांडे और हर चीज़ सोने की है। और दो जन्नतें चाँदी की हैं उनके बर्तन-भांडे और हर चीज़ चाँदी ही की है। उन जन्नतियों और अल्लाह के दीदार के दरमियान सिवाय अल्लाह की बड़ाई की चादरों के और कुछ आड़ नहीं। यह जन्नते अ़दन का ज़िक्र है। सही मुस्लिम की हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायेंगे तो ख़ुदा तआ़ला उनसे मालूम फ़रमायेगा- कुछ चाहते हो कि बढ़ा दूँ? वे कहेंगे ख़ुदाया तूने हमारे चेहरे सफ़ेद नूरानी कर दिये, हमें जन्नत में पहुँचा दिया, जहन्नम से बचा लिया, अब हमें किस चीज़ की ज़रूरत है? उसी वक़्त पर्दे हटा दिये जायेंगे और उन जन्नत वालों की निगाहें अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुनव्वर होंगी। इसमें उन्हें जो सुरूर व लज़्ज़त हासिल

होगी वह किसी चीज़ में हासिल न होगी, सबसे ज़्यादा महबूब उन्हें दीदारे बारी तआ़ला होगा, इसी को इस आयत में लफ़्ज़ "ज़ियादतुन" से ताबीर किया गया है। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ.

यानी एहसान (नेकी) करने वालों को जन्नत भी मिलेगी और दीदारे ख़ुदा भी।

सही मुस्लिम की हज़रत जाबिर रज़ि. वाली रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर क़ियामत के मैदान में मुस्कुराता हुआ तजल्ली फ़रमायेगा। पस मालूम हुआ कि ईमान वाले क़ियामत के मैदान में और जन्नतों में दीदारे ख़ुदा से मुशर्रफ़ (सम्मानित) किये जायेंगे। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- सब से हल्के दर्जे का जन्नती अपने मुल्क और अपनी मिल्कियत को दो हज़ार साल देखता रहेगा, दूर और नज़दीक की चीज़ें बराबर निगाह में होंगी, हर तरफ़ और हर जगह उसकी बीवियाँ और ख़ादिम नज़र आयेंगे। और आला दर्जे के जन्नती एक-एक दिन में दो-दो मर्तबा अल्लाह के पाक और बड़ाई वाले चेहरे को देखेंगे। तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस है। यह हदीस हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की रिवायत से मरफ़ूअ़न भी मरवी है, अगर हम इस क़िस्म की तमाम हदीसें और रिवायतें और उनकी सनदें और उनके मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ यहाँ जमा करेंगे तो मज़मून बहुत लम्बा हो जायेगा, बहुत ही सही और हसन हदीसें बहुत सी मुस्नद और सुनन की किताबों में भी मरवी हैं, जिनमें की अक्सर हमारी इस तफ़सीर में विभिन्न मक़ामात पर भी आ गयी हैं। हाँ तौफ़ीक़ ख़ुदा के हाथ में है, ख़ुदा का शुक्र है कि इस मसले में यानी ख़ुदा तआ़ला का दीदार मोमिनों को क़ियामत के दिन नसीब होने में, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, ताबिईन रह. और उम्मत के बुज़ुर्गों का इत्तिफ़ाक़ और इजमा है। मुस्लिम इमाम हज़रात सब इस पर मुत्तफ़िक़ (एक राय) हैं। जो लोग इसकी तावील करते हैं और कहते हैं कि मुराद इससे ख़ुदा तआ़ला की नेमतों को देखना है जैसे इमाम मुजाहिद रह. और अबू सालेह रह. से तफ़सीर इब्ने जरीर में मरवी है, उनका क़ौल हक़ से दूर और सरासर तकल्लुफ़ से भरा हुआ है। उनके पास इस आयत का क्या जवाब है जहाँ बदकारों के बारे में फ़रमाया गया हैः

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ.

यानी फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) क़ियामत के दिन अपने परवर्दिगार से पर्दे में कर दिये जायेंगे।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि फ़ाजिरों के दीदारे इलाही से मेहरूम रहने का साफ़ मतलब यही है कि नेकोकार लोग दीदारे इलाही से नवाज़े जायेंगे, और मुतवातिर हदीसों से साबित हो चुका है और इसी पर इस आयत के अलफ़ाज़ साफ़ दलालत करते हैं, कि ईमान वाले अल्लाह तआ़ला के दीदार से लुत्फ़ उठायेंगे। हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि ये चेहरे हुस्न व ख़ूबी वाले होंगे, क्योंकि अल्लाह के दीदार पर उनकी निगाहें पड़ती होंगी। फिर भला ये नूर वाले और हसीन क्यों न होंगे। और बहुत से मुँह उस दिन बिगड़े हुए होंगे, बदशक्ल हो रहे होंगे, बेरौनक़ और उदास होंगे, उन्हें यक़ीन होगा कि हम पर अब कोई हलाकत और ख़ुदा की पकड़ आई। अभी हमें जहन्नम में जाने का हुक्म हुआ। जैसे एक और जगह हैः

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ.

यानी उस दिन बाज़ चेहरे गोरे चिट्टे ख़ूबसूरत और हसीन होंगे और बाज़ काले मुँह वाले होंगे। एक और जगह हैः

Maktab E Ashraf

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ........الخ

यानी क़ियामत के दिन बहुत से चेहरे ख़ौफ़ज़दा, दहशत ज़दा, डरावने, बेरौनक़ और ज़लील होंगे जो अ़मल करते रहे और तकलीफ़ उठाते रहे, लेकिन आज भड़कती हुई आग में जा घुसे। फिर फ़रमायाः

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ........ الخ.

यानी बाज़ मुँह उस दिन नेमतों वाले ख़ुश व ख़ुर्म चमकते और प्रसन्न भी होंगे, जो अपने पिछले आमाल से ख़ुश होंगे। और बुलन्द व बाला जन्नतों में ठिकाना रखते होंगे। इसी मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۝ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمَسَاقُ ۝ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۝ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝

हरगिज़ ऐसा नहीं, जब जान हंसली तक पहुँच जाती है (26) और (उस वक़्त बहुत ही हसरत से) कहा जाता है कि कोई झाड़ने वाला है? (27) और (उस वक़्त) वह (मरने वाला) यक़ीन कर लेता है कि यह (दुनिया से) जुदाई का वक़्त है। (28) और (मौत की सख़्तियों से) एक पिण्डली दूसरी पिण्डली से लिपट जाती है (29) उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होता है। (30)

तो उसने न तो (ख़ुदा और रसूल की) तस्दीक़ की थी और न नमाज़ पढ़ी थी। (31) लेकिन (ख़ुदा और रसूल को) झुठलाया था और (अहकाम से) मुँह मोड़ा था। (32) फिर नाज़ करता हुआ अपने घर चल देता है। (33) तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। (34) फिर (दोबारा सुन ले कि) तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। (35) क्या इनसान यह ख़्याल करता है कि यूँ ही बेकार छोड़ दिया जाएगा? (36) क्या यह शख़्स (शुरू ही में सिर्फ़) एक मनी "यानी वीर्य" का क़तरा न था जो (औरत के गर्भ में) टपकाया गया था। (37) फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, फिर अल्लाह तआ़ला ने (उसको इनसान) बनाया, फिर आज़ा "यानी जिस्मानी हिस्से" दुरुस्त किए। (38) फिर उसकी दो क़िस्में कर दीं, मर्द और औरत। (39) (तो) क्या वह (ख़ुदा जिसने शुरू में अपनी

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ○	क़ुदरत से यह सब कुछ किया) इस बात पर क़ुदरत नहीं रखता कि (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40)

ع ٢ ١٨

Maktaba E Ashraf

मौत और उसकी बेचैनियाँ

यहाँ पर मौत का और सकरात के आ़लम (जान निकलने के वक़्त और उस वक़्त की बेचैनी) का बयान हो रहा है। अल्लाह तआ़ला हमें उस वक़्त हक़ पर साबित क़दम रखे। "कल्ला" को अगर यहाँ डाँट के मायने में लिया जाये तो यह मायने होंगे कि ऐ इनसान! तू जो मेरी ख़बरों को झुठलाता है यह ठीक नहीं, बल्कि उनसे मुताल्लिक़ चीज़ों को तू रोज़मर्रा खुल्लम-खुल्ला देख रहा है। और अगर इस लफ़्ज़ को "हक़्क़न" के मायने में लें तो मतलब और ज़्यादा ज़ाहिर है, यानी यह बात यक़ीनी है कि जब तेरी रूह तेरे जिस्म से निकलने लगे और तेरे नरख़रे तक पहुँच जाये। "तराक़ी" बहुवचन है "तरक़ुवतुन" का, उन हड्डियों को कहते हैं जो सीने पर और मोंढों के बीच में हैं, जिसे हंसली की हड्डी कहते हैं। जैसे एक और जगह है:

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ............... صٰدِقِيْنَ.

यानी जबकि रूह हलक़ तक पहुँच जाये और तुम देख रहे हो, और हम तुमसे भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं लेकिन तुम नहीं देख सकते। पस अगर तुम अल्लाह के हुक्म के मातहत नहीं हो और अपने इस क़ौल में सच्चे हो तो उस रूह को क्यों नहीं लौटा लाते?

इस जगह पर उस हदीस पर भी नज़र डाल ली जाये जो बुसूर बिन जह्हाश की रिवायत से सूरः यासीन की तफ़सीर में गुज़र चुकी है। "तराक़ी" बहुवचन है "तरक़ुवतुन" का, उन हड्डियों को कहते हैं जो हलक़ूम के क़रीब हैं। उस वक़्त आवाज़ ज़्यादा होती है यानी इस रूह को लेकर कौन चढ़ेगा? रहमत के फ़रिश्ते या अ़ज़ाब के? और पिण्डली के पिण्डली से रगड़ा खाने का एक मतलब तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से यह मन्क़ूल है कि दुनिया और आख़िरत उस पर जमा हो जाती है, दुनिया का आख़िरी दिन होता है और आख़िरत का पहला दिन होता है, जिससे सख़्ती पर सख़्ती हो जाती है, मगर जिस पर रब का रहम व करम हो। दूसरा मतलब हज़रत इक्रिमा रह. से यह नक़ल किया गया है कि एक बहुत बड़ा मामला दूसरे बहुत बड़े मामले से मिल जाता है, बला पर बला आ जाती है।

तीसरा मतलब हज़रत हसन बसरी रह. वग़ैरह से यह मरवी है कि ख़ुद मरने वाले की बेक़रारी और दर्द की शिद्दत से पाँव पर पाँव का चढ़ जाना मुराद है। पहले तो यह इन पाँवों पर चलता फिरता था लेकिन अब इनमें जान कहाँ? और यह भी मरवी है कि कफ़न के वक़्त पिण्डली से पिण्डली का मिल जाना मुराद है। चौथा मतलब हज़रत ज़ह्हाक रह. से यह भी मरवी है कि दो काम दो तरफ़ जमा हो जाते हैं। इधर तो लोग उसके जिस्म को नहला-धुलाकर ख़ाक के सुपुर्द करने को तैयार हैं उधर फ़रिश्ते उसकी रूह लेजाने में मशग़ूल हैं। अगर नेक है तो उम्दा तैयारी और धूम-धाम के साथ, अगर बुरा है तो निहायत बुराई और बदतर हालत के साथ। अब लौटने और क़रार पाने की जगह, रहने सहने और पहुँचे जाने की जगह, खींच कर जाने और चलकर पहुँचने की जगह अल्लाह ही की तरफ़ है। रूह आसमान की तरफ़ चढ़ जाती है, फिर वहाँ से हुक्म होता है कि इसे ज़मीन की तरफ़ वापस ले जाओ, मैंने इन सब को उसी से पैदा किया है, उसी

में लौटाकर ले जाऊँगा और फिर उसी से इन्हें दोबारा निकालूँगा। जैसे कि हज़रत बरा की लम्बी हदीस में आया है। यही मज़मून एक और जगह बयान हुआ है:

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ....... الخ.

वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, वही तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिये तुम्हारे पास फ़रिश्ते भेजता है, यहाँ तक कि तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाये तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोई ख़ता और ग़लती नहीं करते। फिर सब के सब अपने सच्चे मौला की तरफ़ लौटाये जाते हैं। यक़ीन मानो कि हुक्म उसी का चलता है और वह सब से जल्द हिसाब लेने वाला है।

फिर उस काफ़िर इनसान का हाल बयान हो रहा है जो अपने दिल और अपने अ़क़ीदे से हक़ को झुठलाने वाला और अपने अ़मल से हक़ से मुँह मोड़ने वाला था, जिसका ज़ाहिर व बातिन बरबाद हो चुका था और कोई भलाई उसमें बाक़ी नहीं रही थी। न वह ख़ुदा की बातों की दिल से तस्दीक़ करता था न जिस्म से इबादते ख़ुदा बजा लाता था, यहाँ तक कि नमाज़ का भी चोर था, हाँ झुठलाने और मुँह मोड़ने में बेबाक था और अपने इस नाकारा अ़मल पर इतराता और फूलता हुआ बेहिम्मती और बद-अ़मली के साथ अपनों में जा मिलता था। जैसे एक दूसरी जगह है:

وَإِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ.

यानी जब अपने यारों-रिश्तेदारों की तरफ़ लौटते हैं तो ख़ूब बातें बनाते हुए मज़े करते हुए ख़ुश ख़ुश जाते हैं। एक और जगह है:

اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا........ الخ.

यानी ये अपने घराने में ख़ुश व मस्त था और समझ रहा था कि ख़ुदा की तरफ़ उसे लौटना ही नहीं है। उसका यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत था। उसके रब की निगाहें उस पर थीं।

फिर उसे अल्लाह तबारक व तआ़ला धमकाता और फ़रमाता है कि ख़राबी हो तुझ पर, ख़ुदा तआ़ला के साथ कुफ़्र करके फिर इतराता है? जैसे एक और जगह है:

ذُقْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ.

यानी क़ियामत के दिन काफ़िर से बतौर डाँट के और उसकी ज़िल्लत व पस्ती ज़ाहिर करने के लिये कहा जायेगा कि ले अब मज़ा चख, तू तो बड़ी इज़्ज़त व सम्मान वाला था। एक और जगह फ़रमान है:

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ.

कुछ खा पी लो, आख़िर तुम बदकार व गुनाहगार हो। एक और जगह है:

فَاعْبُدُوْا مَاشِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ.

जाओ ख़ुदा के सिवा जिसकी चाहो इबादत करो। वग़ैरह वग़ैरह।

ग़र्ज़ यह कि इन तमाम जगहों में ये अहकाम बतौर डाँट के हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. से जब आयत "औला ल-क फ़-औला सुम्-म औला ल-क फ़-औला" के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया- रसूलुल्लाह सल्ल. ने जो मुझको फ़रमाया था फिर क़ुरआन में भी यही अलफ़ाज़ नाज़िल हुए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी इसी के क़रीब-क़रीब नसाई में मौजूद है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत क़तादा रह. की

Maktab E Ashraf

रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. के इस फ़रमान पर उस अल्लाह के दुश्मन ने कहा कि तू मुझे धमकाता है? ख़ुदा की क़सम तू और तेरा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इन दोनों पहाड़ियों के दरमियान चलने वालों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला मैं हूँ। फ़रमाता है- क्या इनसान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जायेगा? यानी मौत के बाद ज़िन्दा नहीं किया जायेगा? उसे कोई हुक्म और किसी चीज़ की मनाही न की जायेगी? ऐसा हरगिज़ नहीं! बल्कि दुनिया में इसे हुक्म व मनाही और आख़िरत में अपने आमाल के सबब जज़ा व सज़ा ज़रूर मिलेगी। मक़सूद यहाँ पर क़ियामत के आने को साबित करना और क़ियामत के इनकारियों का रद्द करना है। इसी लिये दलील के तौर पर कहा जाता है कि इनसान दर असल नुत्फ़े (क़तरे) की शक्ल में बेजान व बेबुनियाद था, पानी का एक ज़लील क़तरा (यानी वीर्य) था, जो पीठ से गर्भ में आया, फिर ख़ून की फुटकी बनी, फिर गोश्त का लोथड़ा हुआ, फिर ख़ुदा तआ़ला ने शक्ल व सूरत देकर रूह फूँकी और सही सलामत अंगों वाला इनसान बनाकर मर्द या औ़रत की सूरत में पैदा किया। क्या वह ख़ुदा जिसने एक मामूली नुत्फ़े को ऐसा क़द-काठी वाला मज़बूत इनसान बना दिया, वह इस बात पर क़ादिर नहीं कि इसे फ़ना करके फिर दोबारा पैदा कर दे? यक़ीनन पहली मर्तबा का पैदा करने वाला दोबारा बनाने पर बहुत ज़्यादा और कहीं ज़्यादा क़ादिर है। या कम से कम उतना ही जितना पहली मर्तबा था। जैसे एक जगह फ़रमायाः

هُوَالَّذِیْ یَبْدَاُ الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ وَهُوَاَهْوَنُ عَلَیْهِ.

उसने शुरू में पैदा किया, वही फिर लौटा लायेगा और वह उस पर बहुत ज़्यादा आसान है।

इस आयत के मतलब में भी दो क़ौल हैं, लेकिन पहला क़ौल ही ज़्यादा मशहूर है जैसा कि सूरः रूम की तफ़सीर में इसका बयान और तक़रीर गुज़र चुकी है। वल्लाहु आलम।

फ़ायदाः इब्ने अबी हातिम में है कि एक सहाबी अपनी छत पर ऊँची आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जब इस सूरत की आख़िरी आयत की तिलावत की तो फ़रमायाः

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ فَبَلٰی.

यानी ऐ अल्लाह तू पाक है और बेशक क़ादिर है।

लोगों ने इस कहने का सबब पूछा तो फ़रमाया- मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इस आयत का यही जवाब देते हुए सुना है। अबू दाऊद में भी यही हदीस है लेकिन दोनों किताबों में इस सहाबी का नाम नहीं, गोया यह नाम न होना कोई नुक़सान का सबब नहीं। अबू दाऊद की एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स तुममें से सूरः "वत्तीनि" की आख़िरी आयत "अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल् हाकिमीन" पढ़े वह "बला व अ-न अ़ला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन" कहे। यानी हाँ, और मैं भी इस पर गवाह हूँ। और जो शख़्स सूरः "क़ियामत" की आख़िरी आयत "अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युहयियल् मौता" पढ़े तो वह कहे "बला" और जो शख़्स सूरः "वल-मुर्सलात" की आख़िरी आयत "फ़-बिअय्यि हदीसिम् बअ़दहू युअ्मिनून" पढ़े वह "आमन्ना बिल्लाहि" कहे। यह हदीस मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी में भी है। इब्ने जरीर में हज़रत क़तादा रह. से मरवी है कि नबी सल्ल. इस सूरत की इस आख़िरी आयत के बाद फ़रमाते "सुब्हान-क व बला"। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इस आयत के जवाब में यह कहना इब्ने अबी हातिम में मरवी है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः क़ियामत की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः दह्र

सूरः दह्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 31 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सही मुस्लिम के हवाले से यह हदीस पहले गुज़र चुकी है कि जुमे के दिन सुबह की नमाज़ में हुज़ूरे पाक सल्ल. सूरः सज्दा और सूरः दह्र (यानी सूरः इनसान) पढ़ा करते थे। एक मुर्सल ग़रीब हदीस में है कि जब यह सूरत उतरी और हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने इसकी तिलावत की, उस वक़्त आप सल्ल. के पास एक साँवले रंग के सहाबी बैठे हुए थे। जब जन्नत की नेमतों का ज़िक्र आया तो उनके मुँह से ख़ुद-बख़ुद एक चीख़ निकल गयी और साथ ही रूह परवाज़ कर गई। जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारे साथी और तुम्हारे भाई की जान जन्नत के शौक़ में निकल गयी।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ○ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ○ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ○	**बेशक इनसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है जिसमें वह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था (यानी इनसान न था बल्कि नुत्फ़ा था) (1) हमने उसको मख़्लूत "यानी मिश्रित" नुत्फ़े से पैदा किया, इस तौर पर कि हम उसको मुकल्लफ़ बनाएँ। तो (इसी वास्ते) हमने उसको सुनता-देखता (समझता) बनाया। (2) हमने उसको (भलाई-बुराई पर बाख़बर करके) रास्ता बतलाया (यानी अहकाम का मुख़ातब बनाया, फिर) या तो वह शुक्रगुज़ार (और मोमिन) हो गया या नाशुक्रा (और काफ़िर) हो गया। (3)**

इनसान की शुरूआ़त

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि उसने इनसान को पैदा किया हालाँकि इससे पहले वह अपनी बेहैसियती और अपनी कमज़ोरी की वजह से ऐसी चीज़ न था कि उसका ज़िक्र किया जाये। उसे मर्द व औ़रत के मिले-जुले पानी (वीर्य) से पैदा किया और अ़जीब-अ़जीब तरह की तब्दीलियों के बाद यह मौजूदा शक्ल व सूरत और अन्दाज़ पर आया। हम इसे आज़मा रहे हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا.

ताकि वह तुम्हें आज़माये कि तुम में से अच्छे अ़मल करने वाला कौन है? पस उसने तुम्हें कान और आँखें अ़ता फ़रमाईं ताकि इताअ़त और नाफ़रमानी में तमीज़ कर सको। हमने उसे राह दिखा दी, ख़ूब स्पष्ट करके अपना सीधा रास्ता उस पर खोल दिया। इसी तरह एक और जगह फ़रमान है:

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰـهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى.

यानी क़ौमे समूद वालों को हमने हिदायत की, लेकिन उन्होंने गुमराही को हिदायत पर तरजीह दी। एक और जगह इरशाद है:

وَهَدَيْنٰـهُ النَّجْدَيْنِ.

हमने इनसान को दोनों राहें दिखा दीं। यानी भलाई बुराई की।

इस आयत की तफ़सीर में इमाम मुजाहिद, इमाम अबू सालेह, इमाम ज़ह्हाक और इमाम सुद्दी रह. से मरवी है कि इसे हमने राह दिखलाई, यानी माँ के पेट से बाहर आने की। लेकिन यह क़ौल ग़रीब है और सही क़ौल पहला है और जमहूर से यही मन्क़ूल है।

सही मुस्लिम की हदीस में है कि हर शख़्स सुबह के वक़्त अपने नफ़्स की ख़रीद व फ़रोख़्त करता है, या तो उसे हलाक कर देता है या आज़ाद करा लेता है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत कअ़ब बिन अ़जरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से आपने फ़रमाया- ख़ुदा तुझे बेवक़ूफ़ों की सरदारी से बचाये। हज़रत कअ़ब ने कहा या रसूलल्लाह! वह क्या है? फ़रमाया वे मेरे बाद के सरदार होंगे जो मेरी सुन्नतों पर न अ़मल करेंगे, न मेरे तरीक़े पर चलेंगे। पस जो लोग उनके झूठ की तस्दीक़ करें और उनके ज़ुल्म की इमदाद करें वे न मेरे हैं और न मैं उनका हूँ। याद रखो वे मेरे हौज़े कौसर पर भी नहीं आ सकते। और जो उनके झूठ को सच्चा न करे और उनके ज़ुल्मों में उनका मददगार न बने वह मेरा है और मैं उसका हूँ। ये लोग मेरे हौज़े कौसर पर मुझसे मिलेंगे। ऐ कअ़ब! रोज़ा ढाल (बचाव) है और सदक़ा ख़ताओं को मिटा देता है, और नमाज़ अल्लाह की नज़दीकी का सबब है, या फ़रमाया कि निजात की दलील है। ऐ कअ़ब! वह गोश्त पोस्त जन्नत में नहीं जा सकता जो हराम से पला हो, वह तो जहन्नम में ही जाने के क़ाबिल है। ऐ कअ़ब! लोग हर सुबह अपने नफ़्स की ख़रीद व फ़रोख़्त करते हैं, कोई तो उसे आज़ाद करा लेता है और कोई हलाक कर गुज़रता है। सूरः रूम की आयतः

فِطْرَةَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا.

(यानी आयत नम्बर 30) की तफ़सीर में हज़रत जाबिर रज़ि. की रिवायत से हुज़ूर सल्ल. का यह इरशाद भी गुज़र चुका है कि हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है, यहाँ तक कि ज़बान चलने लगती है, फिर या तो शुक्रगुज़ार बनता है या नाशुक्रा। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि जो निकलने वाला निकलता है उसके दरवाज़े पर दो झण्डे होते हैं, एक फ़रिश्ते के हाथ में दूसरा शैतान के हाथ में। पस अगर वह उस काम के लिये निकला जो ख़ुदा तआ़ला का पसन्दीदा है तो फ़रिश्ता अपना झण्डा लिये हुए उसके साथ हो लेता है, और यह वापसी तक फ़रिश्ते के झण्डे तले ही रहता है। और अगर यह ख़ुदा तआ़ला की नाराज़गी के काम के लिये निकला है तो शैतान अपना झण्डा लगाये उसके साथ हो लेता है और वापसी तक यह शैतानी झण्डे तले रहता है।

اِنَّـآ اَعْتَـدْنَـا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْـنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝	हमने काफ़िरों के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (4) (और) जो नेक (लोग) हैं वे ऐसे शराब के जाम से (शराबें) पियेंगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी। (5) यानी ऐसे चश्मे से (पियेंगे) जिससे अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे पियेंगे (और) जिसको वह (ख़ास बन्दे जहाँ चाहेंगे) बहाकर ले जाएँगे। (6) वे लोग वाजिबात को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आ़म होगी। (7) और वे लोग (सिर्फ़) ख़ुदा तआ़ला की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं। (8) हम तुमको सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ामन्दी के लिए खाना खिलाते हैं, न हम तुमसे (इसका अमली) बदला चाहें और न (इसका ज़बान से) शुक्रिया (चाहें)। (9) हम अपने रब की तरफ़ से एक सख़्त और तल्ख़ दिन का अन्देशा रखते हैं। (10) सो अल्लाह तआ़ला उनको (इस इताअ़त और इख़्लास की बरकत से) उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको ताज़गी और ख़ुशी अ़ता फ़रमायेगा (यानी चेहरों पर ताज़गी और दिलों में ख़ुशी देगा)। (11) और उनकी पुख़्तगी (यानी दीन पर जमे रहने) के बदले में उनको जन्नत और रेशमी लिबास देगा। (12)

अ़ज़ाबों में घिरे काफ़िरों का हाल

यहाँ अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि उसकी मख़्लूक़ में से जो भी उससे कुफ़्र करे उसके लिये ज़न्जीरें, तौक़ और शोलों वाली भड़कती हुई तेज़ आग तैयार है। जैसे एक दूसरी जगह है:

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ يُسْحَبُوْنَ فِی الْحَمِيْمِ. ثُمَّ فِی النَّارِ يُسْجَرُوْنَ.

जबकि तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे और बेड़ियाँ उनके पाँव में होंगी और यह हमीम में घसीटे जायेंगे फिर जहन्नम में जलाये जायेंगे।

उन बदनसीबों की सज़ा का ज़िक्र करके अब नेक लोगों की जज़ा (बदले) का ज़िक्र हो रहा है कि उन्हें वो जाम पिलाये जायेंगे जिनमें काफ़ूर नाम की नहर का पानी मिला हुआ होगा। ज़ायक़ा भी आला, ख़ुशबू भी उम्दा और फ़ायदा भी बेहतर। काफ़ूर की सी ठण्डक और सोंठ की सी ख़ुशबू। काफ़ूर एक नहर का नाम

है जिससे ख़ुदा तआ़ला के ख़ास बन्दे पानी पीते हैं और सिर्फ़ उसी से आसूदगी (राहत व सैराबी) हासिल करते हैं। और अल्लाह की इनायत यह कि इस नहर तक उन्हें आने की ज़रूरत नहीं, ये अपने बाग़ों में, मकानों में, मज्लिसों में, बैठकों में जहाँ भी चाहेंगे उसे ले जायेंगे और वहीं वह पहुँच जायेगी। "तफ़जीर" के मायने रवानगी और जारी होने के हैं।

फिर उन लोगों की नेकियाँ बयान हो रही हैं कि जो इबादतें ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से उनके ज़िम्मे थीं उनको तो पूरा करते ही थे बल्कि जो चीज़ यह अपने ऊपर कर लेते उसे भी पूरा करते हैं। यानी नज़्र (मन्नत) भी पूरी करते हैं। हदीस में है कि जो अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की नज़्र माने (यानी किसी नेक काम की मन्नत माने, उसको अपने ऊपर वाजिब कर ले) वह पूरी करे, और जो किसी नाफ़रमानी (और बुरे काम) की नज़्र माने उसे पूरी न करे। इमाम बुख़ारी रह. ने इसे इमाम मालिक की रिवायत से बयान फ़रमाया है।

वे अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियों से भागते हैं, क्योंकि क़ियामत के दिन का डर है जिसकी घबराहट आ़म तौर पर सब को घेर लेगी, और हर एक एक उलझन में पड़ जायेगा मगर जिस पर ख़ुदा तआ़ला का रहम व करम हो। ज़मीन व आसमान तक काँप रहे होंगे। "इस्तितार" के मायने ही हैं फैल जाने वाली और चारों तरफ़ को घेर लेने वाली चीज़ के।

ये नेकोकार लोग अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मुस्तहिक़ लोगों पर अपनी ताक़त के मुताबिक़ ख़र्च भी करते रहते थे यानी बावजूद खाने की मुहब्बत और ख़्वाहिश व ज़रूरत के अल्लाह की राह में ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों को देते रहते हैं। एक और जगह फ़रमान हैः

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ.

यानी तुम हरगिज़ भलाई हासिल नहीं कर सकते जब तक कि अपनी पसन्दीदा चीज़ें अल्लाह की राह में ख़र्च न करो।

हज़रत नाफ़े रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बीमार पड़े, आपकी बीमारी में अंगूर का मौसम आया। जब अंगूर पकने लगे तो आपका दिल भी चाहा कि मैं अंगूर खाऊँ। आपकी बीवी साहिबा हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने एक दिरहम के अंगूर मंगाये। आदमी जो लेकर आया उसके साथ ही साथ एक साईल (माँगने वाला) भी आ गया और उसने आवाज़ दी कि मैं साईल हूँ। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया वे सब इसी को दे दो। चुनाँचे दे दिये। फिर दोबारा आदमी गया और अंगूर ख़रीद लाया। अब की मर्तबा भी साईल (माँगने वाला) आ गया और उसके सवाल पर उसी को सब के सब अंगूर दे दिये गये। लेकिन अब की मर्तबा हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने साईल (माँगने वाले) को कहलवा भेजा कि अगर अब की बार आये तो तुम्हें कुछ न मिलेगा। चुनाँचे तीसरी मर्तबा एक दिरहम के अंगूर मंगाये गये। (बैहक़ी)

एक और सही हदीस में है कि अफ़ज़ल (बेहतरीन) सदक़ा वह है जो तू अपनी सेहत की हालत में बावजूद माल की मुहब्बत के, बावजूद अमीरी की तमन्ना और तंगदस्ती के ख़ौफ़ के अल्लाह के रास्ते में दे। यानी माल की हिर्स (इच्छा और लालच) भी हो, मुहब्बत भी हो और हाजत व ज़रूरत भी हो, फिर भी अल्लाह की राह में उसे क़ुरबान कर दे।

यतीम और मिस्कीन किसे कहते हैं? इसका तफ़सीली बयान पहले गुज़र चुका है। क़ैदी के बारे में

हज़रत सईद वग़ैरह तो फ़रमाते हैं कि मुसलमान अहले क़िब्ला मुराद है, लेकिन इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह का फ़रमान है कि उस वक़्त क़ैदियों में सिवाय मुश्रिकीन के और कोई मुस्लिम न था। और इसी की ताईद उस हदीस शरीफ़ से भी होती है जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. ने बदरी क़ैदियों के बारे में अपने सहाबा रज़ि. को फ़रमाया था कि इनका इकराम (एहतिराम और ख़ातिर तवाज़ो) करो। चुनाँचे खाने-पीने में सहाबा ख़ुद अपनी जानों से भी ज़्यादा उनका ख़्याल रखते थे। हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद गुलाम हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. आयत के आ़म होने की वजह से इसी को पसन्द करते हैं, और मुस्लिम मुश्रिक सब को शामिल करते हैं। गुलामों और मातहतों के साथ एहसान व सुलूक करने की ताकीद बहुत सी हदीसों में आयी है, बल्कि हज़रत रसूले अकरम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. की आख़िरी वसीयत अपनी उम्मत को यही है कि नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो और अपने मातहतों के साथ अच्छा सुलूक करो और उनका पूरा ख़्याल रखो। ये इस नेक सुलूक का न तो उन लोगों से कोई बदला चाहते हैं न शुक्रिया, बल्कि अपने हाल से गोया ऐलान कर देते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की वजह से देते हैं, इसमें हमारी ही बेहतरी है कि इससे अल्लाह की रज़ा और मर्ज़ी-ए-मौला हमें हासिल हो जाये। हम सवाब और अज्र के मुस्तहिक़ हो जायें।

हज़रत सईद रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम यह बात वे लोग मुँह से नहीं निकालते, यह दिली इरादा होता है जिसका इल्म ख़ुदा को है, तो ख़ुदा तआ़ला ने इसे ज़ाहिर फ़रमा दिया कि और लोगों की रग़बत (दिलचस्पी और शौक़) का सबब बने। यह पाकबाज़ जमाअ़त ख़ैरात व सदक़ात करके उस दिन के अ़ज़ाब और घबराहटों से बचना चाहती है जो बड़ा ही लम्बा, अंधेरियों वाला और चेहरे बिगाड़ देने वाला है। उनका अ़क़ीदा है कि इस बिना पर ख़ुदा तआ़ला हम पर रहम करेगा और उस मोहताजी व बेकसी वाले दिन हमें हमारी ये नेकियाँ काम आयेंगी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से "अ़बूस" के मायने तंगी वाला और "क़म्तरीर" के मायने बहुत लम्बा नक़ल किये गये हैं। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि काफ़िर का मुँह उस दिन बिगड़ जायेगा, उसकी तेवरी चढ़ जायेगी और उसकी दोनों आँखों के बीच से पसीना बहने लगेगा जो रोग़ने गन्धक की तरह का होगा। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि होंठ चढ़ जायेंगे और चेहरा सिमट जायेगा। हज़रत सईद और हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि घबराहट और हौलनाकियों की वजह से सूरत बिगड़ जायेगी, पेशानी तंग हो जायेगी। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि बुराई और सख़्ती वाला दिन होगा। लेकिन सब से वाज़ेह बेहतर निहायत मुनासिब ठीक क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का है।

"क़म्तरीर" के लुग़वी मायने इमाम इब्ने जरीर रह. ने शदीद के किये हैं, यानी बहुत सख़्ती वाला। उनकी इस नेक-नीयती और पाक अ़मल की वजह से ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें इस दिन की बुराई से बाल-बाल बचा लिया, और इतना ही नहीं बल्कि इन्हें बजाय चेहरे बिगड़ने के हंसते चेहरे वाला और बजाय दिल की घबराहट के दिल का इत्मीनान व ख़ुशी अ़ता फ़रमायी। ख़्याल कीजिए कि यहाँ इबारत में किस क़द्र उम्दा अन्दाज़ इख़्तियार किया गया है। एक दूसरी जगह है:

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ. ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ.

कि उस दिन बहुत से चेहरे खिले हुए होंगे।

हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु की लम्बी हदीस में है कि नबी सल्ल. को जब कभी कोई ख़ुशी होती तो आपका चेहरा चमकने लगता और ऐसा मालूम होता गोया चाँद का टुकड़ा है। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की एक लम्बी हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. मेरे पास तशरीफ़ लाये,

Maktab E Ashraf

चेहरा मुबारक ख़ुशी से रोशन हो रहा था और मुखड़े मुबारक की रगें चमक रही थीं।

फिर फ़रमाता है कि उनके सब्र के अज्र में उन्हें रहने-सहने के लिये बहुत बड़ी जन्नत, पाक ज़िन्दगी और पहनने ओढ़ने के लिये रेशमी लिबास मिला। इब्ने अ़साकिर में है कि अबू सुलैमान दारानी के सामने इस सूरत की तिलावत हुई। जब क़ारी (पढ़ने वाले) ने इस आयत को पढ़ा तो आपने फ़रमाया- उन्होंने दुनियावी इच्छाओं को छोड़ रखा था। फिर ये अश्आ़र पढ़े:

كَمْ قَتِيْلٍ لِّشَهْوَةٍ وَاَسِيْرٍ ☆ اُفٍّ مِّنْ مُّشْتَهٰى خِلَافِ الْجَمِيْلِ

شَهَوَاتُ الْاِنْسَانِ تُوْرِثُهُ الذُّلَّ ☆ وَتُلْقِيْهِ فِى الْبَلَاءِ الطَّوِيْلِ

अफ़सोस नफ़्स की शहवत (इच्छा) ने और भलाईयों के ख़िलाफ़ बुराईयों के करने ने बहुत सों का गला घोंट दिया, और कई एक को क़ैदी और बन्दी बना दिया। नफ़्सानी ख़्वाहिश ही हैं जो इनसान को बदतरीन ज़िल्लत व रुस्वाई और बला व मुसीबत में डाल देती हैं।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ

इस हालत में कि वे वहाँ (जन्नत में) मसहरियों पर (आराम और इज़्ज़त से) तकिया लगाए होंगे। न वहाँ तपिश (और गर्मी) पाएँगे और न जाड़ा (13) (बल्कि ख़ुशी बख़्शने वाली दरमियानी हालत होगी) और यह हालत होगी कि (वहाँ के यानी जन्नत के) दरख़्तों के साये उनपर झुके होंगे और उनके मेवे उनके इख़्तियार में होंगे (कि हर वक़्त हर तरह बिना मशक़्क़त ले सकेंगे)। (14) और उनके पास चाँदी के बरतन लाए जाएँगे और आबख़ोरे "यानी पानी पीने के बरतन" जो शीशे के होंगे (15) (और) वह शीशे चाँदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा। (16) और वहाँ उनको (ज़िक्र हुए जामे शराब के अ़लावा) ऐसा जामे शराब पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी। (17) यानी ऐसे चश्मे से (उन को पिलाया जाएगा) जो वहाँ होगा जिसका नाम (वहाँ) सल्सबील (मशहूर) होगा। (18) और उनके पास (ये चीज़ें लेकर) ऐसे लड़के आना-जाना करेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे (और इस क़द्र हसीन हैं कि) ऐ मुख़ातब! अगर तू उनको (चलते-फिरते) देखे तो यूँ समझे कि मोती हैं जो बिखर गए हैं। (19) और ऐ मुख़ातब! अगर

Maktab E Ashraf

नَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ○ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ز وَّحُلُّوْآ اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ج وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ○ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ○ع	तू उस जगह को देखे तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी हुकूमत दिखाई दे। (20) (और) उन जन्नतियों पर बारीक रेशम के हरे रंग के कपड़े होंगे और दबीज़ रेशम के कपड़े भी (क्योंकि हर लिबास में अलग लुत्फ़ है) और उनको चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे, और उनका रब उनको पाकीज़ा शराब पीने को देगा (जिसमें न नापाकी होगी न गदलापन)। (21) यह तुम्हारा सिला है, और तुम्हारी कोशिश (जो दुनिया में करते थे) मक्बूल हुई। (22)

ع ۲۲ ۱۹

आख़िरत की नेमतें

जन्नतियों की नेमतों और राहतों का, उनके मुल्क और रुतबे व माल का ज़िक्र हो रहा है कि ये लोग मुकम्मल आराम से, पूरे इत्मीनान और ख़ुश-दिली के साथ जन्नत के सुसज्जित और जड़ाऊ वाले तख़्तों पर बेफ़िक्री से टेक लगाये सुरूर व राहत से बैठे मज़े लूट रहे होंगे। सूरः "वस्साफ़्फ़ात" की तफ़सीर में इसकी पूरी शरह (व्याख्या) गुज़र चुकी है, वहीं यह भी बयान हो चुका है कि "इत्तिका" से मुराद लेटना है या कोहनियाँ टिकाना है, या चार ज़ानू (आलती-पालती मारकर) बैठना है, या कमर लगाकर टेक लगाना है। और यह भी बयान हो चुका है कि "अराईक" सोने के सायेदार पलंगों को कहते हैं।

फिर एक और नेमत बयान हो रही है कि वहाँ न तो सूरज की तेज़ किरनों से उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, न जाड़े की बहुत सर्द हवायें उन्हें नागवार गुज़रेंगी, बल्कि बहार का सा मौसम हर वक़्त और हमेशा रहता है। गर्मी सर्दी के झमेलों से अलग हैं। जन्नती पेड़ों की शाख़ें झूम-झूमकर उन पर साया किये हुए होंगी और मेवे उनसे बिल्कुल क़रीब होंगे, चाहे लेटे-लेटे तोड़कर खा लें चाहे बैठे-बैठे ले लें, चाहे खड़े होकर ले लें। पेड़ों पर चढ़ने की तकलीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं, सरों पर मेवेदार लच्छे और लदे हुए लच्छे लटक रहे होंगे, तोड़ा और खा लिया। अगर खड़े हैं तो मेवे उतने ही ऊँचे हैं, बैठे हैं तो किसी क़द्र झुक गये, लेटे हैं तो और क़रीब आ गये। न तो काँटों की रुकावट है और न दूरी की दर्दसरी है।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है और उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है। उसके दरख़्तों के तने सोने चाँदी के हैं, डालियाँ लुअ्लुअ् ज़बर्जद और याक़ूत (हीरे और मोतियों) की हैं, उनके बीच पत्ते और फल हैं, जिनके तोड़ने में कोई दिक़्क़त और मुश्किल नहीं, चाहे बैठे-बैठे तोड़ लो, चाहे खड़े-खड़े, बल्कि अगर चाहें लेटे-लेटे। एक तरफ़ हंसते चेहरे वाले, ख़ूबसूरत, दिल को ख़ुश कर देने वाले, अदब सलीक़े वाले, फ़रमाँबरदार ख़ादिम तरह तरह के खाने चाँदी के बर्तनों में लगाये लिये खड़े हैं। दूसरी तरफ़ शराबे तहूर (पाक शराब) से छलकते हुए शीशे के गिलासों के जाम लिये साक़ी (पिलाने वाले) इशारे के मुन्तज़िर हैं। ये गिलास सफ़ाई में शीशे जैसे और सफ़ेदी में चाँदी जैसे होंगे। दर असल होंगे चाँदी के लेकिन शीशे की तरह साफ़ और चमकदार होंगे कि अन्दर की चीज़ बाहर से नज़र आयेगी। जन्नत की तमाम चीज़ों की कुछ न कुछ बराये नाम मुशाबहत दुनिया की चीज़ों में भी पाई जाती है, लेकिन इन चाँदी

के शीशे जैसे गिलासों की कोई मिसाल नहीं मिलती।

फिर ये जाम मिले-जुले हैं, साक़ी के हाथ में भी अच्छे लगें, उनकी हथेलियों पर भले मालूम हों और पीने वालों की इच्छा के अनुसार शराबे तहूर उसमें समा जाये, जो न बचे न कम पड़े। उन नायाब गिलासों में जो पाक, उम्दा ज़ायक़े वाली, मस्ती वाली, बिना नशे की शराब उन्हें मिलेगी वह जन्नत की नहर सलूसबील के पानी से मिलाकर दी जायेगी। जैसा ऊपर गुज़र चुका है कि नहर काफ़ूर के पानी से मिलाकर दी जायेगी, तो मतलब यह है कि कभी उस ठण्डक वाले सर्द मिज़ाज पानी से, कभी इस नफ़ीस गर्म मिज़ाज पानी से, ताकि सन्तुलन क़ायम रहे।

यह नेक लोगों का ज़िक्र है, और अल्लाह के ख़ास क़रीबी इस नहर का शर्बत पियेंगे। "सलूसबील" बक़ौल हज़रत इक्रिमा के एक चश्मे का नाम है, क्योंकि वह तेज़ी के साथ लगातार रवानगी से लहरिया चाल से बह रहा है। उसका पानी बहुत हल्का, बहुत मीठा, उम्दा ज़ायक़े वाला और ख़ुशबूदार है, जो आसानी से पिया जाये, और आसानी से पचता रहे। इन नेमतों के साथ ही ख़ूबसूरत हसीन नौजवान कम-उम्र लड़के उनकी ख़िदमत के लिये तैयार होंगे। ये ग़िलमान जन्नती जिस उम्र में होंगे उसी में रहेंगे, यह नहीं कि उम्र बढ़कर सूरत बिगड़ जाये। ये नफ़ीस पोशाकें और बहुत क़ीमती जड़ाऊ ज़ेवर पहने हुए बड़ी संख्या में इधर-उधर कामों पर बंटे हुए होंगे। जिन्हें दौड़े-भागे मुस्तैदी और चालाकी से अन्जाम दे रहे होंगे। ऐसा मालूम होगा गोया कि सफ़ेद आबदार मोती इधर-उधर जन्नत में बिखरे पड़े हैं। वास्तव में इससे ज़्यादा अच्छी तश्बीह (मिसाल और संज्ञा) उनके लिये कोई और न थी कि ये ख़ूबसूरत, उम्दा अख़्लाक़ व बर्ताव वाले, सफ़ेद नूरानी चेहरों वाले, पाक साफ़ सजी हुई पोशाकें पहने हुए और ज़ेवरों में लदे हुए अपने मालिक की फ़रमाँबरदारी में दौड़ते-भागते, इधर-उधर फिरते ऐसे भले मालूम होंगे जैसे एक बेहतरीन मकान के ख़ूबसूरत सेहन में बिखरे हुए सच्चे मोती इधर-उधर लुढ़क रहे हों।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हर एक जन्नती के एक हज़ार ख़ादिम होंगे जो विभिन्न काम-काज में लगे हुए होंगे। फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम जन्नत की जिस जगह नज़र डालो तुम्हें नेमतें और अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत ही सल्तनत नज़र आयेगी। तुम देखोगे कि राहत व सुरूर, नेमत व नूर से चप्पा-चप्पा भरा हुआ है। चुनाँचे एक सही हदीस में है कि सबसे आख़िर में जो जहन्नम में से निकाला जायेगा और जन्नत में भेजा जायेगा उससे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- जा मैंने तुझे जन्नत में वह दिया जो पूरी दुनिया के बराबर है, बल्कि उससे भी दस हिस्से ज़्यादा दिया। और हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की रिवायत से वह हदीस भी पहले गुज़र चुकी है कि अदना जन्नती की मिल्कियत और मुल्क दो हज़ार साल की दूरी के बराबर होगा। हर दूर क़रीब की चीज़ें एक साथ उसकी निगाह में होंगी। यह हाल तो है अदना जन्नती का, फिर समझ लो कि आला जन्नती का दर्जा क्या होगा? और उसकी नेमतें कैसी होंगी।

तबरानी की एक बहुत ही ग़रीब हदीस में है कि एक हब्शी दरबारे रिसालत में हाज़िर हुआ, आपने उससे फ़रमाया तुम्हें जो कुछ पूछना हो, जिस बात को समझना हो पूछ लो। उसने कहा या रसूलल्लाह! सूरत व शक्ल में, रंग व रूप में, नुबुव्वत व रिसालत में आपको हम पर फ़ज़ीलत दी गयी है, अब तो यह फ़रमाईये कि अगर मैं भी उन चीज़ों पर ईमान लाऊँ जिन पर आप ईमान लाये हैं और जिन पर आप अ़मल करते हैं अगर मैं उसी पर अ़मल करूँ तो क्या जन्नत में आपके साथ हो सकता हूँ? आपने फ़रमाया हाँ! क़सम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है, काले रंग के लोगों को जन्नत में वह सफ़ेद रंग दिया जायेगा जो एक हज़ार साल के फ़ासले से दिखाई देगा। फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स "ला इला-ह

Maktab E Ashraf

इल्लल्लाहु" कहे उसके लिये ख़ुदा के पास अ़हद मुक़र्रर हो जाता है। और जो शख़्स "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही" कहे उसके लिये एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं। एक शख़्स ने कहा- फिर या रसूलल्लाह! हम कैसे हलाक हो जायेंगे? आपने फ़रमाया सुनो! एक शख़्स इतनी नेकियाँ लायेगा कि अगर किसी बड़े पहाड़ पर रखी जायें तो उस पर बोझल पड़ें, लेकिन फिर जो ख़ुदा की नेमतें उसके मुक़ाबिल आयेंगी तो क़रीब होगा कि वे सब फ़ना हो जायें, मगर यह और बात है कि अल्लाह अपनी रहमत व तवज्जोह फ़रमाये। उस वक़्त इस सूरत की शुरू की बीस आयतें उतरीं। उसी हब्शी ने कहा या हुज़ूर! जो कुछ आपकी आँखें जन्नत में देखेंगी क्या मेरी आँखें भी देखेंगी? आपने फ़रमाया हाँ-हाँ! बस वह रोने लगा यहाँ तक कि उसकी रूह परवाज़ कर गयी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं- मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने हाथ मुबारक से उसे दफ़न किया।

फिर जन्नत वालों के लिबास का ज़िक्र हो रहा है कि वह सब्ज़ हरे रंग का महीन और चमकदार रेशम होगा। "सुन्दुस" आला दर्जे का ख़ालिस नर्म रेशम जो बदन से लगा हुआ होगा। "इस्तबूरक़" उम्दा बहुत क़ीमती रेशम, जिसमें चमक-दमक होगी, जो ऊपर पहनाया जायेगा, साथ ही चाँदी के कंगन हाथों में होंगे। यह लिबास अबरार (नेक लोगों) का है, और मुक़र्रबीने ख़ास (अल्लाह के ख़ास और नज़दीकी हज़रात) के बारे में एक दूसरी जगह इरशाद है:

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ.

उन्हें सोने के कंगन हीरे जड़े हुए पहनाये जायेंगे और ख़ालिस नर्म साफ़ रेशमी लिबास होगा। इन ज़ाहिरी जिस्मानी इस्तेमाली नेमतों के साथ ही उन्हीं मज़ेदार, सुरूर वाली, पाक और पाक करने वाली शराब पिलाई जायेगी जो तमाम ज़ाहिरी बातिनी बुराई दूर कर देगी। हसद (दूसरों से जलना), कीना, बद-अख़्लाक़ी गुस्सा वग़ैरह सब दूर कर देगी। जैसे अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. से मन्क़ूल है कि जब जन्नत वाले जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे तो उन्हें दो नहरें नज़र आयेंगी और उन्हें अपने आप ही ख़्याल पैदा होगा, एक का वे पानी पियेंगे तो उनके दिलों में जो कुछ था सब दूर हो जायेगा। दूसरी में गुस्ल करेंगे जिससे चेहरे तरोताज़ा और चमकदार हो जायेंगे। ज़ाहिरी और बातिनी दोनों ख़ूबी उन्हें आला दर्जे की हासिल होंगी जिसका बयान यहाँ हो रहा है। फिर उनसे उनके दिल ख़ुश करने के लिये और उनकी ख़ुशी बढ़ाने के लिये बार-बार कहा जायेगा कि यह तुम्हारे नेक आमाल का बदला और तुम्हारी भली कोशिशों की क़द्रदानी है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ.

दुनिया में जो-जो आमाल तुम ने किये उनकी नेक जज़ा में आज तुम ख़ूब सुकून व आराम से रहो और इत्मीनान से खाते पीते रहो। एक और जगह फ़रमान है:

وَنُوْدُوْآ اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ.

यानी आवाज़ दी जायेगी कि इन जन्नतों के वारिस तुम्हें तुम्हारे नेक आमाल व किरदार की बिना पर बनाया गया है। यहाँ भी फ़रमाया है कि तुम्हारी कोशिश क़ाबिले क़द्र है, थोड़े अ़मल पर बहुत अज्र है। अल्लाह तआ़ला हमें भी उनमें से करे, आमीन।

Maktaba-E-Ashraf

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۝ۚ
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا
اَوْ كَفُوْرًا ۝ۚ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۝ۚۖ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ
وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا
ثَقِيْلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ
اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ۝ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَمَا تَشَآءُوْنَ
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ۝ۖۗ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ
وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ۧ ع ٢ ٢٠

हमने आप पर क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। (23) सो आप अपने रब के हुक्म पर (कि इसमें तब्लीग़ भी दाख़िल है) मुस्तक़िल रहिए और उनमें से किसी फ़ासिक़ या काफ़िर के कहने में न आईये। (24) और (आगे ज़रूरी इबादतों का हुक्म है) यानी अपने परवर्दिगार का सुबह व शाम नाम लिया कीजिए। (25) और रात के किसी क़द्र हिस्से में भी उसको सज्दा किया कीजिए (यानी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा कीजिए) और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया कीजिए। (मुराद इससे तहज्जुद है, फ़राईज़ के अ़लावा)। (26) ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे (आने वाले) एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं। (27) हम ही ने उनको पैदा किया है और हम ही ने उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए। और (साथ ही यह कि) जब हम चाहें उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल दें। (28) यह (सब जो कुछ ज़िक्र हुआ, काफ़ी) नसीहत है, सो जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले। (29) और बग़ैर ख़ुदा के चाहे तुम लोग कोई बात चाह नहीं सकते। (और बाज़ लोगों के लिए ख़ुदा के न चाहने में बाज़ हिक्मतें होती हैं, क्योंकि) ख़ुदा तआ़ला बड़ा इल्म और हिक्मत वाला है। (30) वह जिसको चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और (जिसको चाहे कुफ़्र और ज़ुल्म में मुब्तला रखता है। फिर) ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (31)

आप हिम्मत व सब्र से काम लीजिये

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी पर अपना ख़ास करम जो किया है उसे याद दिलाता है कि हमने तुझ पर थोड़ा-थोड़ा करके यह क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया। अब इस इकराम के मुक़ाबले में तुम्हें भी चाहिये कि मेरी राह में सब्र व सहार से काम लो, मेरी क़ज़ा व क़द्र (तक़दीर व फ़ैसले) पर साबिर शाकिर हो जाओ। देखो तो सही कि मैं अपनी उम्दा तदबीर से तुम्हें कहाँ से कहाँ पहुँचाता हूँ। उन काफ़िरों मुनाफ़िक़ों की बातों में न आना चाहे ये तब्लीग़ से रोकें, लेकिन तुम न रुकना, बिना किसी रियायत के, बग़ैर मायूस

हुए और बिना थकान के हर वक़्त दीनी नसीहत और दीनी तब्लीग़ से ग़र्ज़ रखो। मेरी ज़ात पर भरोसा रखो, मैं तुम्हें लोगों के सताने से बचाऊँगा। तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी मेरी है।

"फ़ाजिर" कहते हैं बुरे आमाल वाले, गुनाहगार को, और "कफ़ूर" कहते हैं दिल के मुन्किर को। दिन के शुरू व आख़िर के हिस्से में रब का नाम लिया करो, रातों को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो और देर तक ख़ुदा की तस्बीह करो। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ...... الخ.

रात को तहज्जुद पढ़ो, जल्द ही तुम्हें तुम्हारा रब मक़ामे महमूद में पहुँचायेगा।

सूरः मुज़्ज़म्मिल के शुरू में फ़रमाया- ऐ लिहाफ़ ओढ़ने वाले! रात का क़ियाम किया कर, मगर थोड़ी रात, आधी रात या इससे कुछ कम या कुछ ज़्यादा। और क़ुरआन को तरतील से (ठहर-ठहर कर) पढ़।

फिर काफ़िरों को रोकता है कि दुनिया की मुहब्बत में फंसकर आख़िरत को न छोड़ो, वह बड़ा भारी दिन है। इस फ़ानी दुनिया के पीछे पड़कर उस ख़ौफ़नाक दिन की दुश्वारियों से ग़ाफ़िल हो जाना अ़क़्लमन्दी का काम नहीं। फिर फ़रमाता है कि सब के ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाले) हम हैं और सब का यह जिस्म और उसके अन्दर की तमाम ताक़तें हमने ही बनायी हैं, और हम बिल्कुल ही क़ादिर हैं कि क़ियामत के दिन उन्हें बदल कर नई पैदाईश (अन्दाज़) में पैदा करें। यहाँ पैदाईश की शुरूआ़त को दोबारा फिर पैदा करने की दलील बनाई है। और इस आयत का यह मतलब भी है कि अगर हम चाहें और जब चाहें हमें क़ुदरत हासिल है कि उन्हें फ़ना कर दें, मिटा दें और उन जैसे दूसरे इनसानों को उनके क़ायम-मक़ाम (जगह लेने वाले) कर दें। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद हैः

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ. الخ.

अगर ख़ुदा तआ़ला चाहे तो ऐ लोगो तुम सब को हलाक कर दे और दूसरे लाये। अल्लाह तआ़ला इस पर हर आन क़ादिर है।

एक और जगह फ़रमाया कि अगर चाहे तुम्हें फ़ना कर दे और नई मख़्लूक़ लाये, ख़ुदा पर यह भारी और मुश्किल नहीं। फिर फ़रमाता है कि यह सूरत (सूरः) पूरी तरह इबरत व नसीहत है, जो चाहे इससे नसीहत हासिल करके ख़ुदा तआ़ला से मिलने की राह पर चलने लग जाये। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ.

इन पर क्या बोझ पड़ जाता अगर ये ख़ुदा को और क़ियामत के दिन को मान लेते?

फिर फ़रमाया- बात यह है कि जब तक ख़ुदा न चाहे तुम्हें हिदायत की चाहत ही न होगी। अल्लाह तआ़ला अ़लीम (सब कुछ जानने वाला) व हकीम (हिक्मत वाला) है। हिदायत के मुस्तहिक़ के लिये वह हिदायत की राहें आसान कर देता है और हिदायत के असबाब (साधन और ज़रिये) मुहैया कर देता है। और जो अपने आपको गुमराही का मुस्तहिक़ बना लेता है उसे वह हिदायत से हटा देता है, हर काम में उसकी हिक्मत और हुज्जत काम कर रही है। जिसे चाहे अपनी रहमत के साये के नीचे ले ले और जिसे चाहे गुमराही के रास्ते पर चलने दे और सही रास्ता न दिखाये। उसकी हिदायत न तो कोई खो सकेगा, न उसकी गुमराही को कोई सही राह से बदल सकेगा। उसके अ़ज़ाब गुनाहगारों, ज़ालिमों और ना-इन्साफ़ों के लिये ही ख़ास हैं।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और तौफ़ीक़ से सूरः दह्र की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

Mahtab E Ashraf

सूरः मुर्सलात

सूरः मुर्सलात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम मिना के ग़ार में थे जब यह सूरत उतरी। हुज़ूर सल्ल. इसकी तिलावत कर रहे थे और मैं आप से सुनकर याद कर रहा था कि अचानक एक साँप हम पर हमलावर हुआ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इसे मारो, हम झपटे लेकिन वह निकल गया तो आपने फ़रमाया- तुम्हारी सज़ा से वह बच गया जैसे तुम उसकी बुराई से महफ़ूज़ रहे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. की वालिदा साहिबा हज़रत उम्मुल-फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूरे पाक सल्ल. को मग़रिब की नमाज़ में इस सूरत की क़िराअत करते हुए सुना है। दूसरी हदीस में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. को इस सूरत को पढ़ते हुए सुनकर उम्मुल-फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया- मेरे अ़ज़ीज़ आज तो तुमने याद दिलाया, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बाने मुबारक से इस सूरत को मग़रिब की नमाज़ में पढ़ते हुए आख़िरी मर्तबा सुना है। (मुस्नद अहमद व सहीहैन)

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝
وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝
فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝ اِنَّمَا
تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝ فَاِذَا النُّجُوْمُ
طُمِسَتْ ۝ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝ وَاِذَا
الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۝

क़सम है उन हवाओं की जो नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजी जाती हैं। (1) फिर उन हवाओं की जो तेज़ी से चलती हैं (जिससे ख़तरों का अन्देशा होता है)। (2) और उन हवाओं की जो बादलों को (उठाकर) फैलाती हैं। (3) फिर उन हवाओं की जो बादलों को मुन्तशिर कर देती हैं (जैसा कि बारिश के बाद होता है)। (4) फिर उन हवाओं की जो (दिल में) अल्लाह तआ़ला की याद डालती हैं (5) (यानी) तौबा का या डराने का (जज़्बा दिल में डालती हैं) (6) कि जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर होने वाली है, (मुराद क़ियामत है)। (7) सो जब सितारे बेनूर हो जाएँगे (8) और जब आसमान फट जाएगा (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरेंगे (10) और जब सब पैग़म्बर मुक़र्ररा वक़्त पर जमा किए जाएँगे। (11) किस दिन के लिए पैग़म्बरों का मामला मुल्तवी (यानी स्थगित) रखा

لِاَیِّ یَوۡمٍ اُجِّلَتۡ ○ لِیَوۡمِ الۡفَصۡلِ ○ وَمَاۤ اَدۡرٰکَ مَا یَوۡمُ الۡفَصۡلِ ○ وَیۡلٌ یَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُکَذِّبِیۡنَ ○

गया है? (12) (आगे जवाब है) फ़ैसले के दिन के लिए (मुल्तवी रखा गया है)। (13) और (आगे उस फ़ैसले के दिन के हौलनाक होने का ज़िक्र है कि) आपको मालूम है कि वह फ़ैसले का दिन कैसा कुछ है? (यानी बहुत सख़्त है)। (14) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (15)

Maktab-E-Ashraf

क़ियामत का आना यक़ीनी है

बाज़ बड़े सहाबा और ताबिईन रह. वग़ैरह से तो मरवी है कि ऊपर ज़िक्र हुई क़समें इन सिफ़तों और गुणों वाले फ़रिश्तों की खाई हैं। बाज़ कहते हैं कि पहले की चार क़समें तो हवाओं की हैं और पाँचवीं क़सम फ़रिश्तों की है। बाज़ ने कुछ नहीं कहा कि आया "वल-मुर्सलात" से मुराद फ़रिश्ते हैं या हवायें हैं। हाँ "वल्-आसिफ़ात" के बारे में कहा है कि इससे मुराद तो हवायें हैं। बाज़ "आसिफ़ात" में यह फ़रमाते हैं और "नाशिरात" में कोई फ़ैसला नहीं करते। यह भी मरवी है कि नाशिरात से मुराद बारिश है। बज़ाहिर तो यह मालूम होता है कि "मुर्सलात" से मुराद हवायें हैं जैसा कि एक दूसरी जगह क़ुरआन में फ़रमान है:

وَاَرۡسَلۡنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ ......الخ.

यानी हमने हवायें चलायीं जो बादल को बोझल करने वालियाँ हैं। एक और जगह इरशाद है:

یُرۡسِلُ الرِّیٰحَ بُشۡرًا...... الخ.

अपनी रहमत से पहले उसकी ख़ुशख़बरी देने वाली ठण्डी-ठण्डी हवायें वह चलाता है।

"आसिफ़ात" से भी मुराद हवायें हैं, वो नर्म, हल्की और भीनी-भीनी हवायें थीं, ये ज़रा तेज़ झोंकों वाली और आवाज़ वाली हवायें हैं। "नाशिरात" से मुराद भी हवायें हैं, जो बादलों को आसमान में चारों तरफ़ फैला देती हैं और जिधर ख़ुदा का हुक्म होता है उन्हें ले जाती हैं। "फ़ारिक़ात" और "मुल्क़ियात" से मुराद अलबत्ता फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से रसूलों पर वही लेकर आते हैं, जिससे हक़ व बातिल, हलाल व हराम, हिदायत व गुमराही में इम्तियाज़ और फ़र्क़ हो जाता है ताकि लोगों के उज़्र (बहाने) ख़त्म हो जायें और इनकारी लोगों को तंबीह हो जाये।

इन क़समों के बाद फ़रमान है कि जिस क़ियामत का तुम से वायदा किया गया है, जिस दिन तुम सब के सब अव्वल आख़िर वाले अपनी-अपनी क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे और अपने कर्मों का फल पाओगे, नेकी की जज़ा और बदी की सज़ा। सूर फूँक दिया जायेगा और एक चटियल मैदान में तुम सब जमा कर दिये जाओगे। यह वायदा यक़ीनन हक़ है, होकर रहने वाला और लाज़िमी तौर पर आने वाला है। उस दिन सितारों का नूर और उनकी चमक-दमक फीकी पड़ जायेगी। जैसे फ़रमाया:

وَاِذَا النُّجُوۡمُ انۡکَدَرَتۡ.

एक और जगह फ़रमाया:

Maktaba Ashraf

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ.

सितारे बेनूर होकर झड़ जायेंगे और आसमान फट जायेगा। टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा होकर उड़ जायेंगे, यहाँ तक कि नाम व निशान भी बाक़ी न रहेगा। एक और जगह इरशाद हैः

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ........ الخ.

एक और जगह फ़रमायाः

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ............ الخ.

यानी पहाड़ रेज़ा-रेज़ा (टुकड़े-टुकड़े) होकर उड़ जायेंगे और उस दिन वो चलने लगेंगे। बिल्कुल नाम व निशान मिट जायेगा और ज़मीन हमवार बग़ैर ऊँच-नीच के रह जायेगी और रसूलों को जमा करेगा, और उनसे गवाहियाँ लेगा। जैसे एक और जगह फ़रमान हैः

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا........ الخ.

ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी, नामा-ए-आमाल दे दिये जायेंगे, नबियों और गवाहों को लाया जायेगा और हक़ व इन्साफ़ के साथ फ़ैसले किये जायेंगे, किसी पर ज़ुल्म न होगा। फिर फ़रमाता है कि इन रसूलों को ठहराया गया था इसलिये कि क़ियामत के दिन फ़ैसले होंगे। जैसे एक जगह फ़रमायाः

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ...... الخ.

यह ख़्याल न कर कि ख़ुदा तआ़ला अपने रसूलों से वायदा-ख़िलाफ़ी करेगा, नहीं-नहीं! अल्लाह तआ़ला बड़े ग़लबे वाला और इन्तिक़ाम (बदला लेने) वाला है। जिस दिन यह ज़मीन बदल दी जायेगी और आसमान भी बदल दिया जायेगा, और सब के सब अल्लाह वाहिद व क़ह्हार के सामने पेश हो जायेंगे। उसी दिन को यहाँ फ़ैसले का दिन कहा गया। फिर उस दिन की अ़ज़मत (अहमियत व बड़ाई) ज़ाहिर करने के लिये फ़रमाया- ऐ नबी! मेरे मालूम कराये बग़ैर तुम भी उस दिन की हक़ीक़त से बाख़बर नहीं हो सकते। उस दिन इन झुठलाने वालों के लिये सख़्त ख़राबी है। एक ग़ैर-सही हदीस में यह भी गुज़र चुका है कि “वैल” जहन्नम की एक वादी (घाटी) का नाम है।

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ	(आगे अ़ज़ाब से डरावा है, यानी) क्या हम पहले (काफ़िर) लोगों को (अ़ज़ाब से) हलाक नहीं कर चुके? (16) फिर पिछलों को भी (अ़ज़ाब में) उन (पहलों) ही के साथ-साथ कर देंगे। (17) हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं (यानी उनके कुफ़्र पर सज़ा देते हैं)। (18) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (19) (आगे मरने के बाद ज़िन्दा करने की क़ुदरत का बयान है, यानी) क्या हमने तुमको एक बेक़द्र पानी (यानी नुत्फ़े) से नहीं बनाया? (20) फिर हमने उसको एक मुक़र्ररा

Maktab E Ashraf

اَلْقٰدِرُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝	वक़्त तक एक महफ़ूज़ जगह (यानी औरत के गर्भ में) रखा। (21) ग़र्ज़ हमने (इन तसर्रुफ़ात का) एक अन्दाज़ा ठहराया (22) सो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं। (23) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (24) क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया (25) ज़िन्दों और मुर्दों को? (26) और हमने इस (ज़मीन) में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बनाए (जिनसे बहुत-से फ़ायदे जुड़े हुए हैं) और हमने तुमको मीठा पानी पिलाया। (27) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (28)

इन चीज़ों से सबक़ लो

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम से पहले भी जिन लोगों ने मेरे रसूलों की रिसालत को झुठलाया मैंने उन्हें तहस-नहस् कर दिया। फिर उनके बाद और आये, उन्होंने भी ऐसा ही किया और हमने उन्हें भी इसी तरह ग़ारत कर दिया। हम मुजरिमों की ग़फ़लत का यही बदला देते चले आये हैं। उस दिन इन झुठलाने वालों की दुर्गत होगी। फिर अपनी मख़्लूक़ को अपना एहसान याद दिलाता और क़ियामत के इनकारियों के सामने दलील पेश करता है कि हमने इसे (यानी इनसान) हक़ीर और ज़लील क़तरे से पैदा किया जो ख़ालिक़े कायनात के सामने कोई चीज़ न था। जैसे सूरः यासीन की तफ़सीर में गुज़र चुका कि ऐ इब्ने आदम! भला तू मुझे आ़जिज़ कर सकेगा? मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है। फिर उस क़तरे को हमने रहम (गर्भ) में ठहराया जो इस पानी के जमा होने की जगह है। उसे बढ़ाता और महफ़ूज़ रखता है। एक निर्धारित मुद्दत तक वह वहीं रहा, यानी छह महीने से नौ महीने तक। हमारे इस अन्दाज़े को देखो कि किस क़द्र सही और बेहतरीन है। फिर भी अगर तुम उस आने वाले दिन को न मानोगे तो यक़ीन जानो कि तुम्हें क़ियामत के दिन बड़ी हसरत और सख़्त अफ़सोस होगा।

फिर फ़रमाया कि क्या हमने ज़मीन को यह ख़िदमत सुपुर्द नहीं की कि वह तुम्हें ज़िन्दगी में भी अपनी पीठ पर चलाती रहे और मौत के बाद भी तुम्हें अपने पेट में छुपाये रखे? फिर ज़मीन के न हिलने जुलने के लिये हमने मज़बूत वज़नी पहाड़ उसमें गाड़ दिये और बादलों से बरसता हुआ और चश्मों से रिस्ता हुआ हल्का जल्द हज़्म होने वाला, ख़ुशगवार पानी हमने तुम्हें पिलाया। इन नेमतों के बावजूद भी अगर तुम मेरी बातों को झुठलाते ही रहे तो याद रखो वह वक़्त आ रहा है जब हसरत और अफ़सोस करोगे और यह अफ़सोस कुछ काम न आयेगा।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝ لَّا	तुम उस अज़ाब की तरफ़ चलो जिसको झुठलाते थे। (29) एक सायबान "यानी साया करने वाला जैसे छज्जा वग़ैरह" की तरफ़ चलो

Maktaba E Ashraf

ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ۝ اِنَّهَا تَرْمِيْ
بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا يَوْمُ لَا
يَنْطِقُوْنَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا يَوْمُ
الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝ فَاِنْ
كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ ع ٢١

जिसकी तीन शाखें हैं। (30) जिसमें न (ठंडा) साया है और न वह गर्मी से बचाता है। (31) वह अंगारे बरसायेगा जैसे बड़े-बड़े महल। (32) जैसे काले-काले ऊँट। (33) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (34) यह वह दिन होगा जिसमें लोग बोल न सकेंगे (35) और न उनको (उज़्र करने की) इजाज़त होगी, सो उज़्र भी न कर सकेंगे। (36) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (37) (उन लोगों से कहा जाएगा कि) यह है फ़ैसले का दिन (जिसको तुम झुठलाया करते थे), हमने (आज) तुमको और पहलों को (फ़ैसले के लिए) जमा कर लिया। (38) सो अगर तुम्हारे पास (आज के फ़ैसले से बचने की) कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। (39) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (40)

लो अब ये चीज़ें अपनी आँखों से देख लो

जो काफ़िर लोग क़ियामत के दिन, जज़ा व सज़ा और जन्नत व दोज़ख़ को झुठलाते थे उनसे क़ियामत के दिन कहा जायेगा कि लो जिसे सच्चा न मानते थे वह सज़ा और वह दोज़ख़ यह मौजूद है, इसमें जाओ। उसके शोले भड़क रहे हैं और ऊँचे-ऊँचे हो-होकर उनमें तीन फाँकें खुल जाती हैं, तीन हिस्से हो जाते हैं और साथ ही धुआँ भी ऊपर को चढ़ता है जिससे नीचे की तरफ़ छाँव पड़ती है और साया मालूम होता है, लेकिन वास्तव में न तो वह साया है न आग की हरारत को कम करता है। यह जहन्नम इतनी तेज़ व तुन्द, सख़्त और बहुत ज़्यादा आग वाली है कि उसकी चिंगारियाँ जो उड़ती हैं वो भी एक क़िले के बराबर और बड़े मज़बूत दरख़्त के मज़बूत लम्बे-चौड़े तने के जैसी हैं। देखने वाले को यह महसूस होता है कि जैसे वो काले रंग के ऊँट हैं या कश्तियों के रस्से हैं या ताँबे के टुकड़े हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम जाड़े के मौसम में तीन-तीन हाथ की या कुछ ज़्यादा लम्बी लकड़ियाँ लेकर उन्हें बुलन्द कर लेते, उसे हम "क़स्र" कहा करते थे। कश्ती की रस्सियाँ जब इकट्ठी हो जाती हैं तो अच्छी-ख़ासी इनसानी क़द के बराबर ऊँची हो जाती हैं। इसी को यहाँ मुराद लिया गया है। उन झुठलाने वालों पर हसरत व अफ़सोस है। आज न बोल सकेंगे और न उन्हें उज़्र व माज़िरत करने की इजाज़त मिलेगी। क्योंकि उन पर हुज्जत (दलील) क़ायम हो चुकी और ज़ालिमों पर ख़ुदा की बात साबित हो गयी। अब उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं। यह याद रहे कि क़ुरआने करीम में उनका बोलना, इनकार करना, छुपाना और उज़्र करना भी बयान हुआ है तो मतलब यह है कि हुज्जत क़ायम होने से पहले उज़्र

Maktab E Ashraf

माज़िरत वग़ैरह पेश करेंगे, जब सब तोड़ दिया जायेगा और दलीलें पेश हो जायेंगी तो अब बोल-चाल उज़्र-माज़िरत ख़त्म हो जायेगी। ग़र्ज़ कि मैदाने हश्र के मुख़्तलिफ़ मौक़े और लोगों की मुख़्तलिफ़ (विभिन्न और अलग-अलग) हालतें होंगी। किसी वक़्त यह, किसी वक़्त वह, इसी लिये यहाँ हर कलाम के समापन पर झुठलाने वालों की तबाही और बरबादी की ख़बर दे दी जाती है।

फिर फ़रमाता है कि यह फ़ैसले का दिन है, अगले-पिछले सब यहाँ जमा हैं, अगर तुम किसी चालाकी और मक्कारी से, होशियारी और फ़रेब देने से मेरे क़ब्ज़े से निकल सकते हो तो निकल जाओ, पूरी कोशिश कर लो। ख़्याल फ़रमाईये कि किस क़द्र दिल हिला देने वाला जुमला है। परवर्दिगारे आलम ख़ुद क़ियामत के दिन इन इनकार करने वालों से फ़रमायेगा कि अब ख़ामोश क्यों हो? वह चलत-फिरत, चालाकी और बेबाकी क्या हुई? देखो मैंने तुम सब को एक मैदान में वायदे के अनुसार जमा कर दिया, आज अगर किसी तरीक़े और किसी तदबीर से मुझसे छूट सकते हो तो कोताही न करो (छूट जाओ)। जैसे एक और जगह है:

يَامَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ........ الخ.

यानी ऐ जिन्नात व इनसानों के गिरोह! अगर तुम आसमान व ज़मीन के किनारों से बाहर चले जाने की ताक़त रखते हो तो निकल जाओ, मगर इतना समझ लो कि बग़ैर क़ुव्वत के तुम बाहर नहीं जा सकते (और वह तुम में है नहीं)। एक और जगह इरशाद है:

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْئًا.

यानी तुम ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है- ऐ मेरे बन्दो! न तो तुम्हें मुझे नफ़ा पहुँचाने का इख़्तियार है न नुक़सान पहुँचाने का। न तुम मुझे कोई फ़ायदा पहुँचा सकते हो न मेरा कुछ बिगाड़ सकते हो। हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह जदली रह. फ़रमाते हैं कि मैं बैतुल-मुक़द्दस गया, देखा कि वहाँ हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर और हज़रत कअ़बे अहबार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मैं भी बैठ गया तो मैंने सुना कि हज़रत उबादा रज़ि. फ़रमाते हैं- क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों पिछलों को एक साफ़ चटियल मैदान में जमा करेगा, आवाज़ देने वाला आवाज़ देकर सब को होशियार कर देगा। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- आज का दिन फ़ैसलों का दिन है, तुम सब अगले पिछलों को मैंने जमा कर दिया है, अब मैं तुम से कहता हूँ कि अगर मेरे साथ कोई दग़ा फ़रेब मक्र हीला बहाना कर सकते हो तो कर लो। सुनो! घमण्डी, सरकश, मुन्किर और झुठलाने वाला आज मेरी पकड़ से बच नहीं सकता, और न कोई नाफ़रमान शैतान मेरे अ़ज़ाब से निजात पा सकता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने फ़रमाया- लो एक हदीस मैं भी सुना दूँ। उस दिन जहन्नम अपनी गर्दन लम्बी करके लोगों के बीचों बीच पहुँचकर बुलन्द आवाज़ से कहेगी ऐ लोगो! तीन क़िस्म के लोगों को अभी ही पकड़ लेने का मुझे हुक्म मिल चुका है। मैं उन्हें ख़ूब पहचानती हूँ। कोई बाप अपनी औलाद को और कोई भाई अपने भाई को इतना न जानता होगा जितना मैं उन्हें पहचानती हूँ। आज न तो वे मुझसे कहीं छुप सकते हैं न कोई उन्हें छुपा सकता है। एक तो वह जिसने ख़ुदा के साथ किसी को शरीक किया हो। दूसरा वह जो मुन्किर (इनकार करने वाला) और घमण्डी हो, और तीसरा वह जो नाफ़रमान शैतान हो। फिर वह मुड़-मुड़कर चुन-चुनकर इन सिफ़तों के लोगों को मैदाने मेहशर में से छाँट लेगी और एक-एक को पकड़ कर निगल जायेगी। और हिसाब से चालीस साल पहले ही ये लोग जहन्नम में पहुँच जायेंगे। (अल्लाह तबारक व

तआ़ला हमें महफ़ूज़ रखे)।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَّعُيُونٍ ۝ وَّفَوَاكِهَ
مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـئًا
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝
كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ۝
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ
ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ۝ ع ٢ ٢٢

परहेज़गार लोग सायों और चश्मों में (41) और पसन्दीदा मेवों में होंगे (42) (और उनसे कहा जाएगा कि) अपने नेक आमाल के सिले में ख़ूब मज़े से खाओ-पियो। (43) हम नेक लोगों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (44) (और ये काफ़िर लोग जन्नत की नेमतों को भी झुठलाते हैं, सो समझ लें कि) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (45) तुम (दुनिया में) थोड़े दिन और खा लो, बरत लो, (जल्द ही कमबख़्ती आने वाली है) तुम बेशक मुजरिम हो। (46) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। (47) और (उन काफ़िरों की सरकशी और जुर्म की यह हालत है कि) जब उनसे कहा जाता है कि (ख़ुदा की तरफ़) झुको तो नहीं झुकते। (48) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। (49) तो फिर इस (इस क़द्र उम्दा अन्दाज़ में नसीहत करने और डराने वाले क़ुरआन) के बाद और फिर कौनसी बात पर ईमान लाएँगे? (50)

Mahtab E Ashraf

नेक आमाल वाले और उन पर अल्लाह की रहमतें

ऊपर चूँकि बदकारों की सज़ाओं का बयान हुआ था यहाँ नेकोकारों की जज़ा (सवाब और बदले) का बयान हो रहा है कि जो लोग मुत्तक़ी परहेज़गार थे, ख़ुदा के इबादत-गुज़ार थे, फ़राईज़ और वाजिबात के पाबन्द थे, ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानियों से हराम कारियों से बचते थे, वे क़ियामत के दिन जन्नतों में होंगे, जहाँ तरह-तरह की नहरें चल रही हैं। गुनाहगार काले बदबूदार धुएँ में घिरे हुए होंगे और ये नेक किरादर वाले लोग जन्नतों के घने ठण्डे और मस्त करने वाले सायों में पूरी तरह आराम से लेटे बैठे होंगे। सामने साफ़-सुथरे चश्मे अपनी पूरी रवानी से जारी होंगे। तरह-तरह के फल मेवे और तरकारियाँ मौजूद होंगे, जिसे जब जी चाहे खायेंगे। न रोक-टोक होगी, न कमी और नुक़सान का अन्देशा होगा, न फ़ना होने और ख़त्म होने का ख़तरा होगा।

फिर हौसला बढ़ाने और दिल में ख़ुशी को और ज़्यादा करने के लिये ख़ुदा तबारक व तआ़ला की तरफ़ से बार-बार फ़रमान होगा कि ऐ मेरे प्यारे बन्दो! ऐ जन्नतियो! तुम यह ख़ुशी और फ़रागत के साथ सहता-पचता ख़ूब खाओ पियो। हम हर नेक काम करने वाले परहेज़गार मुख़्लिस इनसान को इसी तरह भला

बदला और नेक जज़ा देते हैं। हाँ झुठलाने वालों की तो आज बड़ी ख़राबी है।

उन झुठलाने वालों को धमकाया जाता है कि अच्छा दुनिया में तो तुम कुछ खा पी लो, बरत-बरता लो, फ़ायदे उठा लो, जल्द ही ये नेमतें भी फ़ना हो जायेंगी और तुम भी मौत के घाट उतरोगे। फिर तुम्हारा अन्जाम जहन्नम ही है जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका। तुम्हारे बुरे आमाल और ग़लत चलन की सज़ा हमारे पास तैयार है। कोई मुजरिम हमारी निगाह से बाहर नहीं। हमारे नबी को, हमारी वही को न मानने वाला, उसे झूठा जानने वाला क़ियामत के दिन सख़्त नुक़सान और पूरे ख़सारे में होगा। उसके लिये सख़्त ख़राबी होगी। जैसे एक और जगह इरशाद है:

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ.

दुनिया में हम उन्हें थोड़ा सा फ़ायदा पहुँचा देंगे, फिर तो हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ बेबस कर देंगे। एक और जगह फ़रमान है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ. مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ.

यानी अल्लाह तबारक व तआ़ला पर झूठ बाँधने वाले कामयाब नहीं हो सकते। दुनिया में मामूली और फ़ानी फ़ायदा उठा लें, फिर उनका लौटना तो हमारी ही तरफ़ है, हम उन्हें उनके कुफ़्र की सज़ा में बहुत सख़्त अ़ज़ाब चखायेंगे।

फिर फ़रमाया कि इन नादान इनकारियों को जब कहा जाता है कि आओ ख़ुदा के सामने झुक तो लो, जमाअ़त के साथ नमाज़ तो अदा कर लो, तो उनसे यह भी नहीं हो सकता। इससे भी जी चुराते हैं, बल्कि इसे हिक़ारत (अपमान की नज़र) से देखते और तकब्बुर के साथ इनकार कर देते हैं। उनके लिये जो झुठलाने में उम्रें गुज़ार देते हैं क़ियामत के दिन बड़ी मुसीबत होगी। फिर फ़रमाया कि जब ये लोग इस पाक बुज़ुर्गी वाले कलाम पर भी ईमान नहीं लाते तो फिर किस कलाम को मानेंगे? जैसे एक दूसरी जगह है:

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ.

यानी अल्लाह तबारक व तआ़ला पर और उसकी आयतों पर जब ये ईमान न लाये तो अब किस बात पर ईमान लायेंगे?

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स इस सूरत की इस आयत को पढ़े तो उसे इसके जवाब में "आमन्तु बिल्लाहि व बिमा अन्ज़-ल" कहना चाहिये। यानी मैं अल्लाह तआ़ला पर और उसकी उतारी हुई किताबों पर ईमान लाया। यह हदीस सूरः क़ियामत की तफ़सीर में भी गुज़र चुकी है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मुर्सलात की तफ़सीर पूरी हुई। अल्लाह तबारक व तआ़ला का शुक्र है कि उन्तीसवें पारे की तफ़सीर भी पूरी हुई। अल्लाह तआ़ला हम सब को अपने पाक कलाम की सही समझ अ़ता फ़रमाये, इस पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे और इसे क़बूल फ़रमाये, आमीन या रब्बल्-आ़लमीन।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर तीस

सूरः नबा

सूरः नबा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ○ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ○
الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ○ كَلَّا
سَيَعْلَمُوْنَ ○ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ○ اَلَمْ
نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ○ وَّالْجِبَالَ
اَوْتَادًا ○ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ○ وَّجَعَلْنَا
نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ○ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ○
وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ○ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ
سَبْعًا شِدَادًا ○ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ○
وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ○
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ○ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ○

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) लोग किस चीज़ का हाल पूछते हैं? (1) उस बड़े वाक़िए का हाल पूछते हैं (2) जिसमें ये लोग (अहले हक़ के साथ) इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। (3) हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि क़ियामत आएगी और) उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (4) (दोबारा कहते हैं कि जैसा ये लोग समझते हैं) हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि आएगी) उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (5) क्या हमने ज़मीन को फ़र्श (6) और पहाड़ों को (ज़मीन की) मेख़ें नहीं बनाया? (7) और (इसके अ़लावा हमने और भी क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाई, चुनाँचे) हमने ही तुमको जोड़ा-जोड़ा (यानी मर्द व औ़रत) बनाया। (8) और हम ही ने तुम्हारे सोने को राहत की चीज़ बनाया। (9) और हम ही ने रात को पर्दे की चीज़ बनाया (10) और हम ही ने दिन को रोज़गार का वक़्त बनाया। (11) और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। (12) और हम ही ने (आसमान में) एक रोशन चिराग़ बनाया (मुराद सूरज है)। (13) और हम ही ने पानी भरे बादलों से कसरत से पानी बरसाया। (14) ताकि हम उस पानी के ज़रिये से पैदा करें ग़ल्ला और सब्ज़ी (15) और घने बाग़। (16)

Maktaba E Ashraf

ये कैसे सवालात हैं?

जो मुश्रिक लोग कियामत का इनकार करते थे और उसको झुठलाने की ग़र्ज़ से आपस में सवालात करते थे, यहाँ खुदा तआ़ला उनके सवालात का जवाब और उनकी हक़ीक़त बयान फ़रमाकर उनकी तरदीद करता है, कि "ये लोग आपस में किस बारे में सवालात कर रहे हैं?" जिस तरह दूसरी ज़बानों में सवालिया कलिमात से ख़ुतबात की शुरूआ़त इन्शा की जान समझी जाती है ऐसे ही हश्र के मुन्किरों जाहिलीयत के ज़माने के लोगों वग़ैरह के यहाँ अ़रबी में भी यह कलाम का यह अन्दाज़ बहुत उम्दा और जानदार समझा जाता था। यानी किस चीज़ के मुताल्लिक़ पूछगछ कर रहे हैं? क्या कियामत के बारे में पूछगछ कर रहे हैं? हालाँकि वह तो एक बहुत बड़ी ख़बर है। यानी हौलनाक और बुरी ख़बर है। और रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है। हज़रत क़तादा और इब्ने ज़ैद रह. ने इस "न-ब-ए अ़ज़ीम" (बहुत बड़ी ख़बर) से मरने के बाद दोबारा जी उठना मुराद लिया है। मगर हज़रत मुजाहिद रह. कहते हैं कि इससे क़ुरआन मुराद है। लेकिन पहली बात ज़्यादा ठीक मालूम होती है कि इससे मरने के बाद दोबारा उठना मुराद है। फिर इस आयतः

اَلَّذِیْ هُمْ فِیْهِ مُخْتَلِفُوْنَ.

(जिस में ये लोग आपस में मतभेद और झगड़ा रखते हैं) में जिस इख़्तिलाफ़ (झगड़े और मतभेद) का ज़िक्र है वह यह है कि लोग इसके बारे में दो गिरोहों में तक़सीम हैं, एक तो इसको मानते हैं कि वह होकर रहेगी, और दूसरे इसको नहीं मानते। फिर खुदा तआ़ला उन कियामत के इनकारियों को धमकाते हुए फ़रमाता है कि "यक़ीनन इनको उसकी हक़ीक़त बहुत जल्द मालूम हो जायेगी, बहुत जल्द तो क्या बल्कि अभी मालूम हो जायेगी"। उनको खुदा तआ़ला ने यह बहुत सख़्त धमकी और वईद सुनाई है।

फिर खुदा तआ़ला अपनी अ़जीब व ग़रीब मख़्लूक़ात की बारीकियाँ बतलाकर अपनी अ़ज़ीमुश्शान क़ुदरत की निशानियाँ बयान फ़रमाता है, जिनसे साबित हो जाता है कि जब खुदा तआ़ला ऐसी-ऐसी चीज़ें बग़ैर किसी नमूने के पहली बार में पैदा कर सकता है तो क्या इनको दोबारा पैदा नहीं कर सकता? चुनाँचे फ़रमाता है कि "क्या हमने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श और बिछौना नहीं बनाया?" यानी तमाम मख़्लूक़ के लिये इसको हमवार करके नहीं बिछा दिया? इस तरह कि वह तुम्हारे आगे पस्त और फ़रमाँबरदार है। बग़ैर किसी हिलने-जुलने के ख़ामोशी के साथ जमी हुई पड़ी है। "और पहाड़ों को (इसकी) मेख़ें (कीलें) बनाया है" यानी उनको इसकी मेख़ें बनाकर इसमें गाड़ दिया है ताकि यह उनसे जमी और थमी रहे। और पहले की तरह हिले-जुले नहीं, और अपने ऊपर बसी हुई मख़्लूक़ को परेशान न करे। फिर फ़रमाया कि उसके बाद अपने आपको देखो कि हमने तुमको जोड़ा-जोड़ा बनाकर पैदा किया है, यानी नर व मादा और मर्द व औ़रत, जो आपस में एक दूसरे से फ़ायदा उठाकर अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हैं और इस तरह नस्ल बढ़ती रहती है। जैसे एक और जगह फ़रमाता हैः

وَمِنْ اٰیٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا....... الخ.

यानी खुदा की निशानियों में से एक यह है कि उसने खुद तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े पैदा किये ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। उसने अपनी मेहरबानी से तुम में आपस में मुहब्बत और रहम डाल दिया।

फिर फ़रमाता है कि हमने तुम्हारी नींद को हरकत के कट जाने का सबब बनाया ताकि आराम और इत्मीनान हासिल कर लो और दिन भर की थकान, सुस्ती और परेशानी दूर हो जाये। इसी मायने की और

एक आयत सूरः फ़ुरक़ान में गुज़र चुकी है। "रात को हमने लिबास बनाया कि उसका अन्धेरा और सियाही सब लोगों पर छा जाती है।" जैसा कि एक दूसरे मौक़े पर इरशाद हैः

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا.

क़सम है रात की जबकि वह ढक ले।

अ़रब के शायर लोग भी अपने शे'रों में रात को लिबास कहते हैं। हज़रत क़तादा रह. ने फ़रमाया है कि रात सुकून का ज़रिया बन जाती है और रात के उलट दिन को हमने रोशन और उजाले वाला बनाया है ताकि तुम उसमें कारोबार कर सको, कहीं आ-जा सको, व्यापार तिजारत, लेन-देन कर सको और अपनी रोज़ियाँ और रिज़्क़ हासिल कर सको। और हमने जहाँ तुम्हें रहने-सहने को ज़मीन दी वहाँ हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये जो बड़े लम्बे-चौड़े, मज़बूत-पुख़्ता, उम्दा और सजे-संवरे हैं। तुम देखते हो कि उनमें हीरों की तरह चमकते हुए सितारे लग रहे हैं। बाज़ चलते-फिरते रहते हैं और बाज़ एक जगह ठहरे हुए हैं।

फिर फ़रमाया हमने सूरज को चमकता चिराग़ बनाया जो तमाम जहान को रोशन कर देता है, हर चीज़ को चमका देता है और दुनिया को रोशन कर देता है। और देखो कि हमने पानी से भरी बदलियों से ख़ूब ज़्यादा पानी बरसाया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हवायें चलती हैं, इधर-उधर बादलों को ले जाती हैं और फिर उन बादलों से ख़ूब बारिश बरसती है और ज़मीन को सैराब करती है। और भी बहुत से मुफ़स्सिरीन ने यही फ़रमाया है कि "मुअ़्सिरात" से मुराद बाज़ों ने तो हवा ली है और बाज़ों ने बादल जो एक-एक क़तरा बराबर बरसाते हैं। "मर्अतु मुअ़्सिरात" अ़रब में उस औ़रत को कहते हैं जिसके हैज़ (माहवारी) का ज़माना बिल्कुल क़रीब आ गया हो, लेकिन अब तक हैज़ न जारी हुआ हो। हज़रत हसन और हज़रत क़तादा रह. ने फ़रमाया है कि "मुअ़्सिरात" से मुराद आसमान है। लेकिन यह क़ौल ग़रीब है, सब से ज़्यादा वाज़ेह क़ौल यह है कि मुराद इससे बादल हैं जैसा कि एक और जगह पर हैः

اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيَاحَ...... الخ.

अल्लाह तआ़ला हवाओं को भेजता है जो बादलों को उभारती हैं और उन्हें परवर्दिगार की मन्शा के मुताबिक़ आसमान पर फैला देती हैं और उन्हें वह टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर तू देखता है कि उनके दरमियान से पानी निकलता है।

"सज्जाजन्" के मायने ख़ूब लगातार बहने के हैं, जो बहुत ज़्यादा बह रहा हो और ख़ूब बरस रहा हो। एक हदीस में है कि अफ़ज़ल हज वह है जिसमें "लब्बैक" ख़ूब पुकारी जाये और ख़ून ख़ूब बहाया जाये यानी क़ुरबानियाँ ज़्यादा की जायें। इस हदीस में भी लफ़्ज़ "सज्जुन" है। एक और हदीस में है कि इस्तिहाज़ा (वह ख़ून जो बीमारी की वजह से माहवारी के दिनों के अ़लावा दूसरे दिनों में आता रहे) का मसला पूछने वाली एक सहाबी औ़रत से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि तुम रूई का फाया रख लो। उसने कहा- हुज़ूर! वह तो बहुत ज़्यादा है, मैं तो हर वक़्त बहुत ख़ून बहाती हूँ। इस रिवायत में भी लफ़्ज़ "असज्, सज्जन" है। यानी बिना रुके बराबर ख़ून आता रहता है। तो यहाँ इस आयत में भी मुराद यही है कि पानी बादल से ख़ूब ज़्यादा बराबर बिना रुके बरसता ही रहता है। वल्लाहु आलम।

फिर हम उस पानी से जो पाक-साफ़, बरकत वाला, लाभदायक है, अनाज और दाने पैदा करते हैं जो इनसान और हैवान सब के खाने में आते हैं। सब्ज़ियाँ उगाते हैं, और तरह-तरह के ज़ायक़ों, रंगों, ख़ुशबुओं वाले मेवे और फल-फूल उनसे पैदा होते हैं अगरचे ज़मीन के एक ही टुकड़े पर वो मिले-जुले हैं। "अलफ़ाफ़न्" के मायने जमा होने के हैं। एक और जगह हैः

Maktaba E Ashraf

وَفِى الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ........ الخ.

ज़मीन में विभिन्न प्रकार के टुकड़े हैं जो आपस में मिले-जुले हैं। और अंगूर के दरख़्त हैं, खेतियाँ हैं, खजूरों के दरख़्त हैं, बाज़े शाख़ों वाले और बाज़े बिना शाख़ों वाले, और वे सब एक ही पानी से सैराब किये (सींचे) जाते हैं। और हम एक से एक को मेवे (फल फ्रूट) में ज़्यादा करते हैं। यक़ीनन अक़्ल मन्दों के लिये इसमें निशानियाँ हैं।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا ۝ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝ جَزَآءً وِّفَاقًا ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ۝ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَىْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۝ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۝ ع

बेशक फ़ैसले का दिन एक मुतैयन वक़्त है। (17) यानी जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम लोग गिरोह-गिरोह होकर आओगे। (18) और आसमान खुल जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे। (19) और पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाएँगे, सो वे रेत की तरह हो जाएँगे। (20) (आगे उस फ़ैसले के दिन में जो फ़ैसला होगा उसका बयान है, यानी) बेशक दोज़ख़ एक घात की जगह है (21) सरकशों का ठिकाना (है) (22) जिसमें वे बेइन्तिहा ज़मानों (तक पड़े) रहेंगे। (23) (और) उसमें न तो वे किसी ठंडक (यानी राहत) का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का (जो कि प्यास को बुझाने वाली हो) (24) सिवाय गर्म पानी और पीप के। (25) और (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा। (26) (और वे आमाल जिनका यह बदला है, ये हैं कि) वे लोग (क़ियामत के) हिसाब का अन्देशा न रखते थे। (27) और हमारी आयतों को ख़ूब झुठलाते थे। (28) और हमने (उनके आमाल में से) हर चीज़ को (उनके आमाल-नामे में) लिखकर ज़ब्त (महफ़ूज़) कर रखा है। (29) सो मज़ा चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएँगे। (30)

फ़ैसले का दिन

यानी क़ियामत का दिन हमारे इल्म में तय शुदा है। न वह आगे होगा न पीछे, ठीक वक़्त पर आ जायेगा। उसका सही इल्म अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को नहीं। जैसे एक और जगह है:

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ.

Maktab E Ashraf

नहीं ढील देते हम उन्हें लेकिन वक़्ते मुक़र्ररा के लिये। उस दिन सूर में फूँक लगाई जायेगी और लोग जमाअ़तें (यानी ग्रुप के ग्रुप) बनकर आयेंगे। हर उम्मत अपने-अपने नबी के साथ अलग-अलग होगी। जैसे क़ुरआन पाक में इरशाद फ़रमायाः

يَوْمَ نَدْعُوْكُلَّ اُنَاسٍ م بِاِمَامِهِمْ.

जिस दिन हम तमाम लोगों को उनके इमामों समेत बुलायेंगे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इन दोनों सूरों के बीच मुद्दत चालीस होगी। लोगों ने पूछा चालीस दिन? फ़रमाया मैं नहीं कह सकता। पूछा चालीस महीने? फ़रमाया मुझे ख़बर नहीं। पूछा चालीस साल? फ़रमाया मैं यह भी नहीं कह सकता। फिर अल्लाह तआ़ला आसमान से पानी बरसायेगा और जिस तरह पेड़-पौधे उगते हैं लोग ज़मीन से उगेंगे। इनसान सारा का सारा गल-सड़ जाता है लेकिन एक हड्डी बाक़ी रह जायेगी और वह कमर की रीढ़ की हड्डी है, उसी से क़ियामत के दिन मख़्लूक़ तैयार की जायेगी। आसमान खोल दिये जायेंगे और उसमें फ़रिश्तों के उतरने के रास्ते और दरवाज़े बन जायेंगे। पहाड़ चलाये जायेंगे और बिल्कुल रेत के ज़र्रे बन जायेंगे। जैसे एक और जगह फ़रमाया हैः

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً........ الخ.

यानी तुम पहाड़ों को देख रहे हो, जान रहे हो कि वे पुख़्ता मज़बूत और जमे हुए हैं। लेकिन ये बादलों की तरह चलने-फिरने लगेंगे। यानी देखने वाला समझता है कि वह कुछ है हालाँकि दर असल कुछ नहीं। आख़िर में बिल्कुल बरबाद हो जायेंगे, नाम व निशान तक न रहेगा। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद हैः

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا...... الخ.

लोग तुझसे पहाड़ों के बारे में मालूम करते हैं। तू कह कि उन्हें मेरा रब धूल की तरह उड़ा देगा, और ज़मीन बिल्कुल हमवार मैदान रह जायेगी, जिसमें न कोई मोड़ होगा न टीला। एक और जगह हैः

يَوْمَ نُسَيِّرُالْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً.

जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे और तू देखेगा कि ज़मीन बिल्कुल खुल गयी है।

फिर फ़रमाता है कि सरकश, नाफ़रमान और रसूल के मुख़ालिफ़ों की ताक में जहन्नम लगी हुई है। यही उनके लौटने और रहने-सहने की जगह है। इसके मायने हज़रत हसन और हज़रत क़तादा रह. ने यह भी किये हैं कि कोई शख़्स जन्नत में भी नहीं जा सकता जब तक जहन्नम पर से न गुज़रे। अगर आमाल ठीक हैं तो निजात पा ली, और अगर बुरे आमाल हैं तो रोक लिया गया और जहन्नम में झोंक दिया गया। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि उस पर तीन पुल हैं। फिर फ़रमाया- वह उसमें मुद्दतों और युगों तक पड़े रहेंगे। "अहक़ाब" जमा (बहुवचन) है "हुक़्ब" की। एक लम्बे ज़माने को हुक़्ब कहते हैं। बाज़ कहते हैं कि हुक़्ब अस्सी साल का होता है, साल बारह महीने का, महीना तीस दिन का और हर दिन एक हज़ार साल का। बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ताबिईन रह. से यह मन्क़ूल है। बाज़ कहते हैं कि सत्तर साल का "हुक़्ब" होता है। कोई कहता है कि चालीस साल का जिसमें से हर दिन एक हज़ार साल का। बशीर बिन कअ़ब रह. तो कहते हैं एक-एक दिन इतना बड़ा और ऐसे तीन सौ साल का एक हुक़्ब।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हुक़्ब एक हज़ार महीने का, महीना तीस दिन का, साल बारह महीनों का, साल के दिन तीन सौ साठ, हर दिन तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल का। (इब्ने अबी हातिम)

लेकिन यह हदीस बेबुनियाद और ग़ैर-मोतबर है। इसके रावी क़ासिम जो जाबिर बिन ज़ुबैर के लड़के हैं, यह दोनों मतरूक हैं। एक और रिवायत में है कि अबू मुस्लिम बिन अ़ला ने सुलैमान तैमी रह. से पूछा कि क्या जहन्नम में से कोई निकलेगा भी? तो जवाब दिया कि मैंने हज़रत नाफ़े रह. से, उन्होंने इब्ने उमर रज़ि. से सुना कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ुदा की क़सम जहन्नम में से कोई भी बग़ैर लम्बी मुद्दत रहे न निकलेगा। फिर फ़रमाया अस्सी से कुछ ऊपर साल का "हुक़्ब" होता है, और हर साल तीन सौ साठ दिन का जो तुम गिनते हो। इमाम सुद्दी रह. कहते हैं कि सात सौ हुक़्ब रहेंगे। हर हुक़्ब सत्तर साल का, हर साल तीन सौ साठ दिन का और हर दिन दुनिया के एक हज़ार साल के बराबर का। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत "फ़-ज़ूक़ू" (तो मज़ा चखो......) की आयत से मन्सूख़ हो चुकी है। ख़ालिद बिन मादान रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत और आयत "इल्ला मा शा-अ........" (यानी सूरः हूद की आयत नम्बर 107) यानी जहन्नमी जब तक ख़ुदा चाहेगा जहन्नम में रहेंगे, ये दोनों आयतें तौहीद वालों (यानी ईमान वालों) के बारे में हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- यह भी मुम्किन है कि अहक़ाब तक रहना "हमीमंव्-व ग़स्साक़न्" वाली आयत से संबन्धित हो, यानी वह एक ही अ़ज़ाब गर्म पानी और बहती पीप का मुद्दतों रहेगा, फिर दूसरी क़िस्म का अ़ज़ाब शुरू होगा। लेकिन सही यही है कि यह जहन्नम का अ़ज़ाब शुरू होकर ख़त्म न होगा।

हज़रत हसन बसरी रह. से जब यह सवाल हुआ तो कहा कि अहक़ाब से मुराद हमेशा जहन्नम में रहना है। लेकिन हुक़्ब कहते हैं सत्तर साल को, जिसका हर दिन दुनिया के एक हज़ार बरस के बराबर होता है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि अहक़ाब कभी ख़त्म नहीं होते, एक हुक़्ब ख़त्म हुआ दूसरा शुरू हो गया। इन अहक़ाब की सही मुद्दत का अन्दाज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही को है, हाँ यह हमने सुना है कि एक हुक़्ब अस्सी साल का, एक साल तीन सौ साठ दिन का, हर दिन दुनिया के एक हज़ार साल का। उन जहन्नमियों को न तो कलेजे की ठण्डक नसीब होगी न कोई अच्छा पानी पीने को मिलेगा। हाँ ठण्डक के बदले गर्म खौलता हुआ पानी मिलेगा और खाने पीने की चीज़ बहती हुई पीप मिलेगी। "हमीम" इतने सख़्त गर्म को कहते हैं जिसके बाद हरारत का कोई दर्जा न हो। और "ग़स्साक़" कहते हैं जहन्नमी लोगों के लहू पीप पसीने आँसू और ज़ख़्मों से बहे हुए ख़ून पीप वग़ैरह को। उस गर्म चीज़ के मुक़ाबले में यह इस क़द्र सर्द होगी अपनी जगह ख़ुद एक अ़ज़ाब और बेहद बदबूदार है। सूरः सॉद में "ग़स्साक़" की पूरी तफ़सीर बयान हो चुकी है, अब यहाँ दोबारा इसके बयान की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से हमें अपने अ़ज़ाब से बचाये, आमीन। बाज़ों ने कहा है कि "बर्दुन" से मुराद नींद है। अ़रब के शायरों के शे'रों में भी "बर्दुन" नींद के मायने में पाया जाता है।

फिर फ़रमाया कि यह उनके आमाल का पूरा-पूरा बदला है। उनके बुरे आमाल भी तो देखो, उनका अ़क़ीदा था कि हिसाब का कोई दिन आयेगा ही नहीं। हमने जो-जो दलीलें अपने नबी पर नाज़िल फ़रमाई थीं ये उन सब को झुठलाते थे। फिर फ़रमाया कि हमने अपने बन्दों के तमाम आमाल व अफ़आ़ल को गिन रखा और शुमार कर रखा है। वे सब हमारे पास लिखे हुए हैं और सब का बदला भी हमारे पास तैयार है। उन जहन्नमियों से कहा जायेगा कि अब इन अ़ज़ाबों का मज़ा चखो। ऐसे ही और इससे भी बुरे अ़ज़ाब तुम्हें बढ़ा-चढ़ाकर होते रहेंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जहन्नमियों के लिये इससे ज़्यादा सख़्त और मायूस करने वाली और कोई आयत नहीं। उनके अ़ज़ाब हर वक़्त बढ़ते ही रहेंगे। हज़रत अबू बरज़ा असलमी रह.

से मालूम किया गया कि जहन्नमियों के लिये सबसे ज़्यादा सख़्त आयत कौनसी है, तो फ़रमाया- हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत को पढ़कर फ़रमाया कि उन लोगों को ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानियों ने तबाह कर दिया। लेकिन इस हदीस के रावी जसर बिन फ़र्क़द बिल्कुल ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं।

ख़ुदा से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है। (31) यानी (खाने और सैर करने को) बाग़ (जिनमें तरह-तरह के मेवे होंगे) और अंगूर (32) और (दिल बहलाने को) नौजवान हमउम्र औरतें (33) और (पीने को) लबालब भरे हुए शराब के जाम। (34) (और) वहाँ न कोई बेहूदा बात सुनेंगे और न झूठ (क्योंकि ये बातें वहाँ बिल्कुल नापैद हैं) (35) यह (उनको उनकी नेकियों का) बदला मिलेगा जो कि काफ़ी इनाम होगा (आपके) रब की तरफ़ से (36)	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ۙ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ۙ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۙ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ۙ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۚ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۙ

परहेज़गार लोग और अल्लाह तआ़ला की नेमतें

नेक लोगों के लिये ख़ुदा तआ़ला की जो नेमतें व रहमतें हैं उनका बयान हो रहा है कि ये कामयाब हैं, कि जहन्नम से निजात पाई और जन्नत में पहुँच गये। "हदाईक़" कहते हैं खजूर वग़ैरह के बाग़ात को। उन्हें नौजवान कुंवारी हूरें भी मिलेंगी जो उभरे हुए सीने वालियाँ और हम-उम्र होंगी। जैसे कि सूरः वाक़िआ़ की तफ़सीर में इसका पूरा बयान गुज़र चुका है। एक हदीस में है कि जन्नतियों के लिबास ही ख़ुदा तआ़ला की रज़ामन्दी के होंगे। बादल उन पर आयेंगे और उनसे कहेंगे कि बतलाओ हम तुम पर क्या बरसायें? फिर वे जो फ़रमायेंगे बादल उन पर बरसायेंगे। यहाँ तक कि नौजवान कुंवारी लड़कियाँ भी उन पर बरसेंगी। (इब्ने अबी हातिम) उन्हें शराबे तहूर (पाक शराब) के छलकते हुए पाक-साफ़ भरपूर जाम पर जाम मिलेंगे जिसमें नशा न होगा कि बेहूदा गोई, बेकार बातें मुँह से निकलें और कान में पड़ें। जैसे एक और जगह है:

لَا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ.

उसमें न बेहूदा और बेकार (बात करना) होगा न बुराई और न गुनाह की बातें।

कोई बात ग़लत और फ़ुज़ूल न होगी। वह दारुस्सलाम (सलामती और अमन का घर) है जिसमें कोई ऐब और बुराई की बात ही नहीं। यह जो कुछ बदले इन पारसा लोगों को मिले हैं ये उनके नेक आमाल के नतीजे हैं जो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और उसके एहसान व इनाम की बिना पर उन्हें मिले हैं, जो बेहद काफ़ी और पूरे हैं, जो बहुत ज़्यादा और भरपूर हैं। अ़रब के लोग कहते हैं:

اَعْطَانِىْ فَاَحْسَبَنِىْ.

इनाम दिया और भरपूर दिया।

इसी तरह कहते हैं। "हस्बियल्लाहु" यानी अल्लाह मुझे हर तरह काफ़ी-वाफ़ी है।

Maktaba E Ashraf

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ
يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا
يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ
صَوَابًا ۝ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ
عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِىْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝ ع

जो मालिक है आसमानों का और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो इन दोनों के दरमियान में हैं। (और जो) रहमान है, (और) किसी को उसकी तरफ़ से (मुस्तकि़ल) इख़्तियार न होगा (कि उसके सामने कुछ कह-सुन सके) (37) जिस दिन तमाम रूहों वाले और फ़रिश्ते (ख़ुदा के सामने) सफ़ बाँधे हुए (आजिज़ी के साथ झुके हुए) खड़े होंगे, (उस दिन) कोई न बोल सकेगा सिवाय उसके जिसको रहमान (बोलने की) इजाज़त दे दे और वह शख़्स बात भी ठीक कहे। (38) यह (दिन जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ) यक़ीनी दिन है, सो जिसका जी चाहे (उसके हालात सुनकर) अपने रब के पास (अपना) ठिकाना बना ले। (39) हमने तुमको एक नज़दीक आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है (जो कि ऐसे दिन में होने वाला है) जिस दिन हर शख़्स उन आमाल को (अपने सामने हाज़िर) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किए होंगे, और काफ़िर (हसरत से) कहेगा कि काश! मैं मिट्टी हो जाता (ताकि सज़ा से बच जाता)। (40)

अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और बुज़ुर्गी

अल्लाह तआ़ला अपनी अ़ज़्मत व जलाल की ख़बर दे रहा है कि आसमान व ज़मीन और उनके बीच की तमाम मख़्लूक़ का पालने वाला वही है। वह रहमान है जिसके रहम ने तमाम चीज़ों को घेर लिया है। जब तक उसकी इजाज़त न हो कोई उसके सामने लब नहीं हिला सकता। जैसे एक और जगह है:

مَنْ ذَاالَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

यानी कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश लेजा सके। एक और जगह इरशाद फ़रमाया है:

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

जिस दिन वह वक़्त आ जायेगा कि कोई भी बिना इजाज़त उससे बात न कर सकेगा।

"रूह" से मुराद या तो तमाम इनसानों की रूहें हैं या तमाम इनसान हैं। या एक तरह की ख़ास मख़्लूक़ है जो इनसानों की सी सूरतों वाले हैं। खाते पीते हैं, वे न फ़रिश्ते हैं न इनसान। या मुराद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं, हज़रत जिब्राईल को एक और जगह भी रूह कहा गया है। इरशाद है:

Maktab E Ashraf

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ............الخ

इसे अमानत दार रूह ने तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू डराने वाला बन जाये।

यहाँ मुराद रूह से यक़ीनन हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं। हज़रत मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि तमाम फ़रिश्तों से ज़्यादा मर्तबे और सम्मान वाले और ख़ुदा तआ़ला से बहुत ही नज़दीक और वही लेकर आने वाले यही हैं। या रूह से मुराद क़ुरआन है। इसकी दलील में यह आयत पेश की जा सकती है:

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا.

यानी हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ़ रूह उतारी। यहाँ रूह से मुराद क़ुरआन है।

छठा क़ौल यह है कि यह एक फ़रिश्ता है जो तमाम मख़्लूक़ के बराबर है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह फ़रिश्ता तमाम फ़रिश्तों से बहुत बड़ा है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह रूह नाम का फ़रिश्ता चौथे आसमान में है, तमाम आसमानों, तमाम पहाड़ों और तमाम फ़रिश्तों से बड़ा है। हर दिन बारह हज़ार तस्बीहें पढ़ता है, हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता पैदा होता है, क़ियामत के दिन अकेला वही एक सफ़ बनकर आयेगा। लेकिन यह क़ौल बहुत ही ग़रीब है। तबरानी में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि फ़रिश्तों में एक फ़रिश्ता वह भी है कि अगर उसे हुक्म हो कि तमाम आसमानों और ज़मीनों को लुक़्मा बना ले तो वह एक लुक़्मे में सब को ले लेगा। उसकी तस्बीह यह है:

سُبْحَانَكَ حَيْثُ كُنْتَ.

"सुब्हान-क हैसु कुन्-त" ख़ुदाया तू जहाँ कहीं भी है पाक है।

यह हदीस भी बहुत ग़रीब है, बल्कि इसके फ़रमाने रसूल होने में भी कलाम है। मुम्किन है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल हो, और वह भी बनी इस्राईल से लिया हो। वल्लाहु आलम।

इमाम इबने जरीर रह. ने ये सब अक़वाल ज़िक्र किये हैं लेकिन कोई फ़ैसला नहीं किया। मेरे नज़दीक तो इन तमाम अक़वाल से बेहतर क़ौल यह है कि यहाँ रूह से मुराद तमाम इनसान हैं। वल्लाहु आलम। फिर फ़रमाया कि सिर्फ़ वही उस दिन बात कर सकेगा जिसे वह रहमान इजाज़त दे। जैसे फ़रमाया:

يَوْمَ يَاْتِ لَاتَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ.

यानी जिस दिन वह वक़्त आयेगा कोई नफ़्स बग़ैर उसकी इजाज़त के कलाम भी न कर सकेगा।

एक सही हदीस में भी है कि उस दिन सिवाय रसूलों के और कोई बात न कर सकेगा। फिर फ़रमाया कि उसकी बात भी दुरुस्त (सही और ठीक) हो। सब से ज़्यादा हक़ बात "ला इला-ह इल्लल्लाहु" है। फिर फ़रमाया कि यह दिन हक़ है, यक़ीनन आने वाला है, जो चाहे अपने रब के पास लौटने की जगह और वह रास्ता बना ले जिस पर चलकर वह उसके पास सीधा जा पहुँचे। हमने बिल्कुल क़रीब आयी हुई आफ़त से आगाह कर दिया है। आने वाली चीज़ को तो आई हुई समझना चाहिये। उस दिन नये पुराने छोटे बड़े अच्छे बुरे तमाम आमाल इनसान के सामने होंगे। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमाया:

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا.

जो किया होगा उसे सामने पा लेंगे। एक और जगह है:

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ.

हर इनसान को उसके अगले पिछले आमाल से आगाह किया जायेगा।

उस दिन काफ़िर आरज़ू (तमन्ना) करेगा कि काश वह मिट्टी होता, पैदा ही न किया जाता, वजूद में ही न आता। अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब को आँख से देख लेगा, अपनी बदकारियाँ सामने होंगी, जो पाक फ़रिश्तों के इन्साफ़ वाले हाथों की लिखी हुई हैं। पस एक मायने तो यह हुए कि दुनिया में ही मिट्टी होने की यानी पैदा न होने की आरज़ू करेगा, दूसरे मायने यह हैं कि जब जानवरों का फ़ैसला होगा और उनके बदले दिलवाये जायेंगे यहाँ तक कि अगर बिना सींग वाली बकरी को सींग वाली बकरी ने मारा होगा तो उससे भी बदला दिलवाया जायेगा, फिर उनसे कहा जायेगा कि मिट्टी हो जाओ। चुनाँचे वे मिट्टी हो जायेंगे। उस वक़्त यह काफ़िर इनसान भी कहेगा कि हाय-हाय काश कि मैं भी हैवान (जानवर) होता और अब मिट्टी बन जाता। सूर की लम्बी हदीस में भी यह मज़मून आया है और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर वग़ैरह से भी यह मन्क़ूल है। अल्हम्दु लिल्लाह सूरः नबा की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः नाज़िआ़त

सूरः नाज़िआ़त मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 46 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ○ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ○
وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ○ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ○
فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ○ يَوْمَ تَرْجُفُ
الرَّاجِفَةُ ○ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ○ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ
وَّاجِفَةٌ ○ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ○ يَقُوْلُوْنَ
ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ○ ءَاِذَا

क़सम है उन फ़रिश्तों की जो (काफ़िरों की) जान सख़्ती से निकालते हैं। (1) और जो (मुसलमानों की रूह आसानी से निकालते हैं, गोया उनका) बन्द खोल देते हैं। (2) और जो तैरते हुए चलते हैं। (3) फिर तेज़ी के साथ दौड़ते हैं। (4) फिर हर मामले की तदबीर करते हैं। (5) (उन सब की क़समें खाकर कहते हैं कि क़ियामत ज़रूर आएगी) जिस दिन हिला देने वाली चीज़ हिला डालेगी (इससे सूर का पहली बार फूँका जाना मुराद है)। (6) जिसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ आएगी (इससे सूर का दूसरी बार फूँका जाना मुराद है)। (7) बहुत-से दिल उस दिन धड़क रहे होंगे। (8) उनकी आँखें शर्म के मारे झुक रही होंगी। (9) कहते हैं, क्या हम पहली हालत में फिर वापस

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝ قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝ فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۝	होंगे? (पहली से मुराद मौत से पहले की ज़िन्दगी है) (10) क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएँगे (11) फिर (ज़िन्दगी की तरफ़) वापस होंगे? (अगर ऐसा हुआ तो) उस सूरत में यह वापसी (हमारे लिए) बड़े घाटे की चीज़ होगी। (12) तो (यह समझ लें कि हमको कुछ मुश्किल नहीं, बल्कि) बस वह एक ही सख़्त आवाज़ होगी (13) जिससे लोग फ़ौरन ही मैदान में आ मौजूद होंगे। (14)

जिस दिन क़ियामत आयेगी

"नाज़िआ़त" से मुराद फ़रिश्ते हैं जो बाज़ लागों की रूहों को सख़्ती से घसीटते हैं और बाज़ रूहों को बहुत आसानी से निकालते हैं जैसे किसे के बन्द खोल दिये जायें। काफ़िरों की रूहें खींची जाती हैं। फिर बन्द खोल दिये जाते हैं और जहन्नम में डुबो दिये जाते हैं। यह ज़िक्र मौत के वक़्त का है। बाज़ कहते हैं "वन्नाज़िआ़ति ग़र्क़न्" से मुराद मौत है। बाज़ कहते हैं कि दोनों पहली आयतों से मतलब सितारे हैं। बाज़ कहते हैं कि मुराद सख़्त लड़ाई करने वाले हैं। लेकिन सही बात पहली ही है, यानी रूह निकालने वाले फ़रिश्ते। इसी तरह तीसरी आयत के बारे में भी यह तीनों तफ़सीर मन्क़ूल हैं, यानी फ़रिश्ते, मौत और सितारे। हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि कश्तियाँ मुराद हैं। इसी तरह "साबिक़ात" की तफ़सीर में भी तीन क़ौल हैं, मानी यह हैं कि ईमान और तस्दीक़ की तरफ़ आगे बढ़ने वाले। अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि मुजाहिदीन के घोड़े मुराद हैं। फिर अल्लाह के हुक्म की तामील तदबीर से करने वाले, इससे भी फ़रिश्ते मुराद हैं जैसा कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह का क़ौल है। आसमान से ज़मीन की तरफ़ अल्लाह तआ़ला के हुक्म से तदबीर (इन्तिज़ाम व व्यवस्था) करते हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. ने इन अक़वाल में कोई फ़ैसला नहीं किया। काँपने वाली के काँपने और उससे पीछे आने वाली के पीछे आने से मुराद दोनों नफ़ख़े (सूर का फूँका जाना) हैं, पहले नफ़ख़े का बयान इस आयत में भी है:

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ.

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कपकपा जायेंगे।

दूसरे नफ़ख़े (सूर फूँकने) का बयान इस आयत में है:

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً.

और ज़मीन और पहाड़ उठाये जायेंगे, फिर दोनों एक ही दफ़ा में चूर-चूर कर दिये जायेंगे।

मुस्नद इमाम अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- काँपने वाली आयेगी, उसके पीछे ही पीछे आने वाली होगी यानी मौत। अपने साथ की तमाम आफ़तों को लिये हुए आयेगी। एक शख़्स ने कहा हुज़ूर! अगर मैं वज़ीफ़े का तमाम वक़्त आप पर दुरूद पढ़ने में गुज़ार दूँ तो? आपने फ़रमाया फिर तो अल्लाह तआ़ला तुझे दुनिया और आख़िरत के तमाम ग़म व रंज से बचायेगा। तिर्मिज़ी में है कि दो

Maktab E Ashraf

तिहाई रात गुज़रने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल. खड़े होते और फ़रमाते- ऐ लोगो! अल्लाह को याद करो, कपकपाने वाली आ रही है, फिर उसके पीछे ही और आ रही है, मौत अपने साथ की तमाम आफ़तों को लिये हुए चली आ रही है। उस दिन बहुत से दिल डरे हुए होंगे, ऐसे लोगों की निगाहें ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ पस्त होंगी, क्योंकि वे अपने गुनाहों और ख़ुदा तआ़ला के अ़ज़ाब देख चुके होंगे। मुश्रिक लोग जो क़ियामत के दिन के मुन्किर थे और कहा करते थे कि क्या क़ब्र में जाने बाद भी ज़िन्दा किये जायेंगे? वे आज अपनी इस ज़िन्दगी को रुस्वाई और बुराई के साथ आँखों से देख लेंगे।

"हाफ़िरतुन" क़ब्र को भी कहते हैं, यानी क़ब्रों में चले जाने के बाद, जिस्म के रेज़े-रेज़े हो जाने के बाद, हड्डियों के सड़ गल जाने और खोखले हो जाने के बाद भी क्या हम ज़िन्दा किये जायेंगे? फिर तो यह दोबारा की ज़िन्दगी ख़सारे और घाटे वाली होगी। क़ुरैश के काफ़िरों का यह मक़ूला (कहना) था। "हाफ़िरतुन" के मायने मौत के बाद ज़िन्दगी के भी मन्क़ूल हैं और जहन्नम का नाम भी है। उसके बहुत सारे नाम हैं, जैसे "जहीम, सक़र, जहन्नम, हाविया, हाफ़िरा, लज़ा, हुतमा वग़ैरह।

अब अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जिस चीज़ को ये बड़ी भारी, अनहोनी और नामुम्किन समझते हैं, वह हमारी क़ुदरते कामिला के मातहत एक अदना सी बात है, इधर एक आवाज़ दी उधर सब ज़िन्दा होकर एक मैदान में जमा हो गये। यानी अल्लाह तआ़ला हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को हुक्म देगा, वह सूर फूँक देंगे, बस उनके सूर फूँकते ही तमाम अगले पिछले जी उठेंगे और ख़ुदा तआ़ला के सामने एक ही मैदान में खड़े हो जायेंगे, जैसा कि एक दूसरी जगह पर इरशाद है:

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ........الخ.

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी तारीफ़ें करते हुए उसे जवाब दोगे और जान लोगे कि बहुत ही कम ठहरे। एक और जगह फ़रमायाः

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ ۢ بِالْبَصَرِ.

हमारा हुक्म बस ऐसे एक दम से हो जायेगा जैसे आँख का झपकना। एक और जगह है:

وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْهُوَ اَقْرَبُ.

क़ियामत का मामला बस आँख झपकने के जैसा है, बल्कि इससे भी ज़्यादा क़रीब।

यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि सिर्फ़ एक आवाज़ ही की देर है। उस दिन परवर्दिगार सख़्त ग़ज़बनाक (यानी गुस्से में) होगा। यह आवाज़ भी गुस्से के साथ होगी। यह आख़िरी नफ़ख़ा (सूर फूँका जाना) है जिसके फूँके जाने के बाद ही तमाम लोग ज़मीन के ऊपर आ जायेंगे, हालाँकि उससे पहले नीचे थे। "साहिरतुन" रू-ए-ज़मीन को कहते हैं और सीधे साफ़ मैदान को भी कहते हैं। सुफ़ियान सौरी रह. कहते हैं कि मुराद इससे शाम (मुल्क सीरिया) की ज़मीन है। उस्मान बिन अबुल-आ़लिया का क़ौल है कि मुराद बैतुल-मुक़द्दस की ज़मीन है। वहब बिन मुनब्बेह कहते हैं कि बैतुल-मुक़द्दस की एक तरफ़ यह एक पहाड़ है। क़तादा रह. कहते हैं कि जहन्नम को भी "साहिरतुन" कहते हैं। लेकिन ये अक़वाल सब के सब ग़ैर-मशहूर हैं, ठीक क़ौल पहला है यानी रू-ए-ज़मीन। सब लोग ज़मीन पर जमा हो जायेंगे जो सफ़ेद होगी और बिल्कुल साफ़ और ख़ाली होगी, जैसे मेदे की रोटी होती है। एक और जगह बयान है:

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ............الخ.

Maktab E Ashraf

यानी जिस दिन यह ज़मीन बदल कर दूसरी ज़मीन हो जायेगी और आसमान भी बदल जायेंगे, और सब मख़्लूक़ अल्लाह तआ़ला वाहिद व क़ह्हार के रू-ब-रू हो जायेगी।

एक और जगह है कि लोग तुझसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, कह दे कि इन्हें मेरा रब टुकड़े-टुकड़े कर देगा और ज़मीन बिल्कुल हमवार मैदान बन जायेगी जिसमें न कोई मोड़-तोड़ होगा न ऊँची-नीची जगह। एक और जगह है कि हम पहाड़ों को चलायेंगे और ज़मीन साफ़ ज़ाहिर हो जायेगी। ग़र्ज़ कि एक बिल्कुल नई ज़मीन होगी जिस पर न कभी कोई ख़ता हुई होगी न क़त्ल व गुनाह।

هَلْ اَتٰـكَ حَدِيْثُ مُوْسٰی ۝ اِذْ نَادٰهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًی ۝ اِذْهَبْ اِلٰی فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰی ۝ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰۤی اَنْ تَزَكّٰی ۝ وَاَهْدِيَكَ اِلٰی رَبِّكَ فَتَخْشٰی ۝ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰی ۝ فَكَذَّبَ وَعَصٰی ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰی ۝ فَحَشَرَ فَنَادٰی ۝ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰی ۝ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰی ۝ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰی ۝	क्या आपको मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का क़िस्सा पहुँचा है? (15) जबकि उनको उनके परवर्दिगार ने एक पाक मैदान यानी तुवा में (यह उसका नाम है) पुकारा (16) कि तुम फ़िरऔ़न के पास जाओ, उसने बड़ी शरारत इख़्तियार की है। (17) सो उससे (जाकर) कहो कि क्या तुझको इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए? (18) और (तेरी दुरुस्ती की ग़र्ज़ से) मैं तुझको तेरे रब की तरफ़ (ज़ात व सिफ़ात की) रहनुमाई करूँ तो तू (यह सुनकर उससे) डरने लगे? (19) फिर (जब उसने नुबुव्वत की दलील तलब की तो) उसको (नुबुव्वत की) बड़ी निशानी दिखलाई। (20) तो उस (फ़िरऔ़न) ने उनको झुठलाया और (उनका) कहना न माना। (21) फिर (मूसा अ़लैहिस्सलाम से) अलग होकर (उनके ख़िलाफ़) कोशिश करने लगा (22) और (लोगों को) जमा किया फिर (उनके सामने) बुलन्द आवाज़ से तक़रीर की (23) और कहा कि मैं तुम्हारा आला रब हूँ। (24) सो अल्लाह तआ़ला ने उसको आख़िरत के और दुनिया के अ़ज़ाब में पकड़ा। (25) बेशक (इस वाक़िए में) ऐसे शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जो अल्लाह तआ़ला से डरे। (26)

ع ٢٦ ٢

वादी-ए-तुवा

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. को ख़बर देता है कि उसने अपने बन्दे और अपने रसूल हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा और मोजिज़ों से उनकी ताईद व इमदाद की। लेकिन बाजवूद इसके फ़िरऔ़न अपनी सरकशी और कुफ़्र से बाज़ न आया। आख़िरकार ख़ुदा का

Maktab E Ashraf

अ़ज़ाब आ गया और वह बरबाद हो गया। इसी तरह ऐ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ! आपके मुख़ालिफ़ों का भी यही हश्र होगा। इसी लिये इस वाक़िए के ख़ात्मे (समापन) पर फ़रमाया कि डरने वालों के लिये इसमें इबरत है। पस फ़रमाता है कि तुझे ख़बर भी है कि मूसा को उसके रब ने आवाज़ दी जबकि वह एक मुक़द्दस (पवित्र) मैदान में थे जिसका नाम तुवा है। इसका तफ़सीली बयान सूरः तॉहा में गुज़र चुका है। आवाज़ देकर फ़रमाया कि फ़िरऔन ने सरकशी, तकब्बुर, घमंड और अकड़ इख़्तियार कर रखी है, तुम उसके पास पहुँचो और उसे मेरा यह पैग़ाम दो कि क्या तू चाहता है कि मेरी बात मानकर इस पर चले जो पाकीज़गी की राह है। मेरी सुन, मेरी मान, सलामती के साथ पाकीज़गी हासिल कर लेगा। मैं तुझे ख़ुदा तआ़ला की इबादत के वो तरीक़े बतलाऊँगा जिससे तेरा दिल नर्म और रोशन हो जायेगा। उसमें ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ पैदा हो जायेगा और उसकी सख़्ती और क़सावत दूर होगी।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास पहुँचे, ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान उस तक पहुँचाया, हुज्जत पूरी की, दलीलें और निशानियाँ बयान कीं, यहाँ तक कि अपनी सच्चाई के सुबूत में मोजिज़े भी दिखाये, लेकिन वह बराबर हक़ को झुठलाता रहा और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की नाफ़रमानी पर जमा रहा। चूँकि दिल में कुफ़्र बैठ चुका था उससे तबीयत न हटी और बावजूद हक़ वाज़ेह हो जाने के उसको क़बूल करना और ईमान लाना नसीब न हुआ।

फ़ायदाः यह और बात है कि दिल से जानता था कि यह सच्चे नबी हैं और इनकी तालीम भी सही है, लेकिन दिल की मारिफ़त (यानी दिल से पहचानना) और चीज़ है और ईमान और चीज़ है, दिल की मारिफ़त पर अ़मल करने का नाम ईमान है कि हक़ के फ़रमान के ताबे बन जाये और ख़ुदा व रसूल की बातों पर अ़मल करने के लिये झुक जाये। फिर उसने हक़ से मुँह मोड़ लिया और ख़िलाफ़े हक़ कोशिश करने लगा। जादूगरों को जमा करके उनके हाथों हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को नीचा दिखाना चाहा। अपनी क़ौम को जमा किया और उसमें मुनादी की कि तुम सब का बुलन्द व बाला रब मैं ही हूँ। इससे चालीस साल पहले वह कह चुका थाः

مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ.

यानी मैं नहीं जानता कि तुम्हारा माबूद मेरे सिवा कोई और भी हो।

उसकी सरकशी और तकब्बुर हद से बढ़ गया और साफ़ कह दिया कि मैं ही रब हूँ बुलन्दियों वाला। और सब पर ग़ालिब मैं ही हूँ। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने भी उससे वह इन्तिक़ाम (बदला) लिया जो उस जैसे तमाम सरकशों के लिये हमेशा-हमेशा के लिये सबक़ और नसीहत बन जाये। दुनिया में भी और आख़िरत के बदतरीन अ़ज़ाब तो अभी बाक़ी हैं। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमायाः

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ.

यानी हमने उन्हें जहन्नम की तरफ़ बुलाने वाले अगुवाई करने वाले बनाया। क़ियामत के दिन उनकी कोई मदद न कर सकेगा।

पस आयत के ज़्यादा सही मायने यही हैं कि तुम्हारा सब का बुलन्द रब मैं हूँ। बाज़ कहते हैं कि मुराद कुफ़्र व नाफ़रमानी है। लेकिन सही क़ौल पहला है और इसमें कोई शक नहीं कि इसमें उन लोगों के लिये इबरत व नसीहत है जो नसीहत हासिल करें और (बुरे कामों और शिर्क व कुफ़्र से) बाज़ आ जायें।

Maktab E Ashraf

ءَ اَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ۚ بَنٰهَا ۞ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰهَا ۞ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰهَا ۞ وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ۞ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰهَا ۞ وَالْجِبَالَ اَرْسٰهَا ۞ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۞	भला तुम्हारा (दूसरी बार) पैदा करना (अपने आप में) ज़्यादा सख़्त है या आसमान का? अल्लाह तआ़ला ने उसको बनाया। (27) (इस तरह से कि) उसकी छत को बुलन्द किया और उसको दुरुस्त बनाया (कि कहीं उसमें नुक़्स और दरार नहीं) (28) और उसकी रात को अंधेरी बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। (29) और उसके बाद ज़मीन को बिछाया (30) (और बिछाकर) उससे उसका पानी और चारा निकाला। (31) और पहाड़ों को (उस पर) क़ायम कर दिया (32) तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए। (33)

मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर कुछ दलीलें

जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा हो उठने के मुन्किर थे उन्हें परवर्दिगार दलीलें देता है कि तुम्हारी पैदाईश से तो बहुत ज़्यादा मुश्किल पैदाईश आसमानों की है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ.

यानी ज़मीन व आसमान की पैदाईश इनसानों की पैदाईश से ज़्यादा मुश्किल है। एक और एक जगह इरशाद है:

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلٰى وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ.

क्या जिसने ज़मीन व आसमान पैदा कर दिया वह इन जैसे इनसानों को दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत नहीं रखता? ज़रूर क़ादिर है। और वही बड़ा पैदा करने वाला और ख़ूब जानने वाला है।

आसमान को उसने बनाया, यानी बुलन्द व बाला ख़ूब चौड़ा और खुला हुआ, बिल्कुल बराबर बनाया। फिर अन्धेरी रातों में ख़ूब चमकने वाले सितारे उसमें जड़ दिये। रात सियाह और अन्धेरे वाली बनाई और दिन को रोशन और नूर वाला बनाया। और ज़मीन को उसके बाद बिछा दिया। यानी पानी और चारा निकाला। सूरः "हा-मीम सज्दा" में यह बयान गुज़र चुका है कि ज़मीन की पैदाईश तो आसमान से पहले है, हाँ उसकी बरकतों का इज़हार आसमानों की पैदाईश के बाद हुआ, जिसका बयान यहाँ हो रहा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और बहुत से मुफ़स्सिरीन से यही मन्क़ूल है। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। इसका तफ़सीली बयान गुज़र चुका है।

और पहाड़ों को उसने ख़ूब मज़बूत गाड़ दिया है, वह हिक्मतों वाला सही इल्म वाला है, और साथ ही अपनी मख़्लूक़ पर बेहद मेहरबान है। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा किया तो वह हिलने लगी, परवर्दिगार ने पहाड़ों को पैदा करके ज़मीन पर गाड़ दिया, जिससे वह ठहर गयी। फ़रिश्तों को इससे सख़्त ताज्जुब हुआ और वे पूछने लगे ख़ुदाया! तेरी मख़्लूक़

में इन पहाड़ों से भी ज़्यादा सख़्त चीज़ कोई और है? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ लोहा है। पूछा उससे भी ज़्यादा सख़्त कोई और चीज़ है? फ़रमाया आग। पूछा उससे भी ज़्यादा सख़्त और कुछ? फ़रमाया पानी। पूछा उससे भी ज़्यादा सख़्त और कुछ? फ़रमाया हवा। पूछा परवर्दिगार क्या तेरी मख़्लूक़ में उससे भी भारी कोई और चीज़ है? फ़रमाया हाँ वह इनसान है जो अपने दायें हाथ से जो ख़र्च करता है उसकी ख़बर बायें हाथ को भी नहीं होती (यहाँ सख़्ती से मुराद भारी होना नहीं बल्कि कारामद और असर डालने वाली होना है)।

इब्ने जरीर में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि जब ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया तो वह काँपने लगी और कहने लगी कि मुझ पर तू आदम और उनकी औलाद को पैदा करने वाला है, जो अपनी गन्दगी मुझ पर डालेंगे और मेरी पीठ पर तेरी नाफ़रमानियाँ करेंगे। अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ को गाड़कर ज़मीन को ठहरा दिया, बहुत से पहाड़ तुम देख रहे हो और बहुत से तुम्हारी निगाहों से ओझल हैं। ज़मीन का पहाड़ों के बाद ठहर जाना बिल्कुल ऐसा ही था जैसे ऊँट को ज़िबह करते ही उसका गोश्त थिरकता रहता है, फिर कुछ देर बाद ठहर जाता है।

फिर फ़रमाता है कि यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ायदे के लिये है। यानी ज़मीन से चश्मों और नहरों का जारी करना, ज़मीन के छुपे ख़ज़ानों को ज़ाहिर करना, खेतियाँ और दरख़्त उगाना, पहाड़ों का गाड़ना ताकि ज़मीन से पूरा-पूरा फ़ायदा तुम उठा सको, ये सब बातें इनसानों के फ़ायदे के लिये हैं और उनके जानवरों के फ़ायदों के लिये, कि उनमें से बाज़ को गोश्त खाते हैं, बाज़ पर सवारियाँ लेते हैं और अपनी उम्र इस दुनिया में सुख-चैन से बसर कर रहे हैं।

सो जब वह बड़ा हंगामा आएगा (34) यानी जिस दिन इनसान अपने किए को याद करेगा (35) और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर की जाएगी (36) तो (उस दिन यह हालत होगी कि) जिस शख़्स ने (हक़ से) सरकशी की होगी (37) और (आख़िरत का मुन्किर होकर) दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी होगी (38) सो दोज़ख़ (उसका) ठिकाना होगा। (39) और जो शख़्स (दुनिया में) अपने परवर्दिगार के सामने खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिश से रोका होगा (40) सो जन्नत उसका ठिकाना होगा। (41) ये लोग आपसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी? (42) (सो) उसके बयान करने से आपका क्या ताल्लुक़ (43) उस (के इल्म को मुतैयन करने) का मदार सिर्फ़ आपके परवर्दिगार की तरफ़ है (44) (और) आप तो सिर्फ़ (उसकी मुख़्तसर ख़बर देकर) ऐसे शख़्स को डराने वाले हैं जो	فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ۝ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ۝ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰهَا ۝ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا ۝ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ

Maktab E Ashraf

उससे डरता हो। (45) जिस दिन ये उसको देखेंगे तो (उनको) ऐसा मालूम होगा कि गोया (दुनिया में) सिर्फ़ एक दिन के आख़िरी हिस्से में या उसके अव्वल हिस्से में रहे हैं। (46)	يَّخْشٰهَا ۞ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰهَا ۞

हंगामे का दिन

"ताम्मतुल-कुबरा" से मुराद क़ियामत का दिन है। इसलिये कि वह हौलनाक और बड़े हंगामे वाला दिन होगा। जैसे एक और जगह है:

وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ.

यानी क़ियामत बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है। उस दिन इनसान अपने भले-बुरे आमाल को याद करेगा और फिर ख़ूब नसीहत हासिल करेगा। जैसे एक और जगह इरशाद है:

يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى.

यानी उस दिन आदमी नसीहत हासिल कर लेगा, लेकिन आज की नसीहत उसे कुछ फ़ायदा न देगी।

लोगों के सामने जहन्नम लाई जायेगी और वे अपनी आँखों से उसे देख लेंगे। उस दिन सरकशी करने वालों और दुनिया को तरजीह देने वालों का ठिकाना जहन्नम होगा। उनकी ख़ुराक ज़क़्क़ूम होगा और उनका पानी हमीम होगा। हाँ हमारे सामने खड़े होने से डरते रहने वालों और अपने आपको नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बचाते रहने वालों, ख़ौफ़े ख़ुदा दिल में रखने वालों और बुराईयों से बाज़ रहने वालों का ठिकाना जन्नत है और वहाँ की तमाम नेमतों के हिस्सेदार सिर्फ़ यही हैं।

फिर फ़रमाता है कि क़ियामत के बारे में तुम से सवाल हो रहे हैं, तुम कह दो कि न मुझे उसका इल्म है न मख़्लूक़ में से किसी और को, सिर्फ़ ख़ुदा ही जानता है कि क़ियामत कब आयेगी। उसका सही वक़्त किसी को मालूम नहीं। वह ज़मीन व आसमान पर भारी पड़ रही है, वह अचानक आ जायेगी। लोग तुम से इस तरह पूछते हैं कि गोया तुम उसे जानते हो, हालाँकि उसका इल्म सिवाय ख़ुदा तबारक व तआ़ला के और किसी को नहीं। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम भी जिस वक़्त इनसानी सूरत में आप सल्ल. के पास आये और कुछ सवालात किये, जिनके जवाबात आप सल्ल. ने दिये, फिर इसी क़ियामत के दिन के मुक़र्ररा वक़्त का सवाल किया तो आप सल्ल. ने फ़रमाया- जिससे पूछते हो न वह उसे जानता है न ख़ुद पूछने वाले को उसका इल्म है।

फिर फ़रमाया कि ऐ नबी! आप तो सिर्फ़ लोगों को डराने वाले हैं और इससे नफ़ा उन्हीं को पहुँचेगा जो उस ख़ौफ़नाक दिन का डर रखते हैं। वह तैयारी कर लेंगे और उस दिन के ख़तरे से बच जायेंगे, बाक़ी लोग जो हैं वे आपके फ़रमान से इबरत (नसीहत) हासिल नहीं करेंगे बल्कि मुख़ालफ़त करेंगे और उस दिन बहुत बड़े नुक़सान और हलाक कर देने वाले अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे। लोग जब अपनी-अपनी क़ब्रों से उठकर मेहशर के मैदान में जमा होंगे उस वक़्त अपनी दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें बहुत ही कम नज़र आयेगी और ऐसा मालूम होगा कि सिर्फ़ सुबह का या सिर्फ़ शाम का कुछ हिस्सा दुनिया में गुज़ारा है। ज़ोहर से लेकर सूरज छुपने तक के वक़्त को "अ़शिय्या" कहते हैं और सूरज निकलने से लेकर आधे दिन तक के

वक्त को "जुहा" कहते हैं। मतलब यह है कि आख़िरत को देखकर दुनिया की लम्बी उम्र भी इतनी कम महसूस होने लगेगी। अल्हम्दु लिल्लाह सूरः नाज़िआ़त की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः अ़-ब-स

सूरः अ़-ब-स मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 42 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ○ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى○ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ○ اَوْيَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى○ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى○ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى○ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى○ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى○ وَهُوَ يَخْشٰى○ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى○ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ○ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ○ فِىْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ○ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ○ بِاَيْدِىْ سَفَرَةٍ○ كِرَامٍ بَرَرَةٍ○

पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के चेहरे पर नागवारी के असरात ज़ाहिर हो गए और मुतवज्जह न हुए (1) इस बात से कि उनके पास अंधा आया। (2) और आपको क्या ख़बर शायद नाबीना "यानी अंधा" (आपकी तालीम से पूरे तौर पर) संवर जाता। (3) या (किसी ख़ास मामले में) नसीहत कुबूल करता सो उसको नसीहत करना (कुछ न कुछ) फ़ायदा पहुँचाता। (4) तो जो शख़्स (दीन से) बेपरवाई करता है (5) आप उसकी तो फ़िक्र में पड़ते हैं (6) हालाँकि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह न संवरे। (7) और जो शख़्स आपके पास (दीन के शौक़ में) दौड़ता हुआ आता है (8) और वह (ख़ुदा से) डरता है (9) आप उससे बेतवज्जोही करते हैं। (10) (आप आईन्दा) हरगिज़ ऐसा न कीजिए। क़ुरआन (सिर्फ़ एक) नसीहत की चीज़ है। (11) सो जिसका जी चाहे उसको क़बूल कर ले। (12) वह (क़ुरआन लौहे-महफ़ूज़ के) ऐसे सहीफ़ों में (लिखा हुआ) है जो (अल्लाह के नज़दीक) मुकर्रम "सम्मानित" हैं। (13) बुलन्द रुतबे वाले हैं, पवित्र हैं। (14) जो ऐसे लिखने वालों (यानी फ़रिश्तों) के हाथों में (रहते) हैं (15) कि वे मुकर्रम (और) नेक हैं। (16)

Maktab F. Ashraf

एक अजीब वाकिआ

बहुत से मुफ़स्सिरीन से मन्कूल है कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक मर्तबा क़ुरैश के सरदारों को इस्लामी तालीम समझा रहे थे और बहुत ज़्यादा ध्यान के साथ उनकी तरफ़ मुतवज्जह थे। दिल में ख़्याल था कि हो सकता है अल्लाह तआला इन्हें इस्लाम अ़ता कर दे। अचानक हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि. आपके पास आये। पुराने मुसलमान थे, उमूमन हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होते रहते थे, दीने इस्लाम की तालीम सीखते रहते थे और मसाईल मालूम करते रहते थे। आज भी आ़दत के अनुसार आते ही सवालात शुरू किये और आगे बढ़-बढ़कर हुज़ूरे पाक को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करना चाहा। आप चूँकि उस वक़्त एक अहम दीनी काम में पूरी तरह मशग़ूल थे, इनकी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई बल्कि ज़रा नागवार गुज़रा और पेशानी मुबारक पर बल पड़ गये। इस पर ये आयतें नाज़िल हुयीं कि आपकी बुलन्द शान और आला अख़्लाक़ के लायक़ यह बात न थी कि उस नाबीना से जो हमारे ख़ौफ़ से दौड़ता भागता आपकी ख़िदमत में दीन का इल्म सीखने के लिये आये और आप उससे मुँह फेर लें। और उनकी तरफ़ मुतवज्जह रहें जो सरकश, घमंडी और नाफ़रमान हैं। बहुत मुम्किन है कि यही पाक हो जाये, अल्लाह की बातें सुनकर बुराईयों से बच जाये और अहकाम की तामील के लिये तैयार हो जाये। यह क्या कि आप उन बेपरवाह लोगों की तरफ़ पूरी की पूरी तवज्जोह फ़रमा लें? आप पर उनका सीधे रास्ते पर ला खड़ा करना कोई ज़रूरी थोड़ा ही है? वे अगर आपकी बातें न मानें तो आप पर उनके बारे में कोई पकड़ और पूछ न होगी। मतलब यह है कि दीन की तब्लीग़ में आला व अदना, फ़क़ीर व ग़नी, आज़ाद व ग़ुलाम, मर्द व औ़रत, छोटे बड़े सब बराबर हैं। आप सब को बराबर नसीहत किया करें। हिदायत ख़ुदा के हाथ में है वह अगर किसी को सही रास्ते से दूर रखे तो उसकी हिक्मत वही जानता है, जिसे अपनी राह पर लगाये उसे भी वही ख़ूब जानता है।

हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हु के आने के वक़्त हुज़ूर सल्ल. का मुख़ातब उबई बिन ख़लफ़ था। उसके बाद हुज़ूर सल्ल. इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि. की बड़ी तकरीम और इ़ज़्ज़त किया करते थे। (मुस्नद अबू यअ़ला) हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने इब्ने उम्मे मक्तूम को क़ादसिया की लड़ाई में देखा है। ज़िरह पहने हुए और काला झण्डा लिये हुए थे। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब यह आये और कहने लगे कि हज़रत! मुझे ख़ैर व फ़लाह की बातें सिखाईये तो उस वक़्त क़ुरैश के सरदार आपकी मज्लिस में थे। आप सल्ल. ने इनकी तरफ़ पूरी तवज्जोह न फ़रमाई, उन्हें समझाते जाते थे और फ़रमाते जाते थे कहो मेरी बात ठीक है? वे कहते जाते थे हाँ ठीक है। उन लोगों में उतबा बिन रबीआ़, अबू जहल बिन हिशाम, अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब थे। आपकी बड़ी कोशिश और पूरी तमन्ना थी कि किसी तरह ये लोग दीने हक़ को क़बूल कर लें। इधर यह आ गये और कहने लगे कि हुज़ूर! क़ुरआने पाक की कोई आयत मुझे सुनाईये और ख़ुदा की बातें सिखलाईये। आप सल्ल. को उस वक़्त इनकी बात ज़रा बेमौक़ा लगी, मुँह फेर लिया और उधर ही मुतवज्जह रहे। जब उनसे बातें पूरी करके आप सल्ल. घर जाने लगे तो आँखों के नीचे अन्धेरा छा गया, सर नीचा हो गया और ये आयतें उतरीं। फिर तो आप सल्ल. इनकी बड़ी इ़ज़्ज़त किया करते थे और पूरी तवज्जोह से कान लगाकर इनकी बातें सुना करते थे। आते जाते हर वक़्त पूछते कि कुछ काम है? कोई ज़रूरत है? कुछ कहते हो? कुछ माँगते हो? (इब्ने जरीर वग़ैरह) इस रिवायत में ग़राबत है, नकारत है और इसकी सनद में भी कलाम है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना, आप फ़रमाते थे कि बिलाल रात रहते हुए अज़ान दिया करते हैं तो तुम सेहरी खाते पीते रहो यहाँ तक कि इब्ने उम्मे मक्तूम की अज़ान सुनो। यह वह नाबीना हैं जिनके बारे में "अ़-ब-स व तवल्ला अन् जाअहुल् अअ़्मा........" (यानी इस सूरत की शुरू की आयतें) उतरी थीं। यह मुअज़्ज़िन थे। बीनाई (आँखों की रोशनी) में नुक़सान था, जब लोग सुबह सादिक़ देख लेते और इत्तिला कर देते कि सुबह हो गई तब यह अज़ान कहा करते थे। (इब्ने अबी हातिम) इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हु का मशहूर नाम तो अ़ब्दुल्लाह है, बाज़ों ने कहा है कि इनका नाम अ़मर है। वल्लाहु आलम

"इन्नहा तज़्किरतुन" यानी यह नसीहत है। इससे मुराद या तो यह सूरत है या यह बराबरी कि दीन की तब्लीग़ में सब बराबर हैं मुराद है। इमाम सुद्दी रह. कहते हैं कि इससे क़ुरआन मुराद है, जो शख़्स चाहे इसे याद कर ले। यानी अल्लाह को याद करे और अपने तमाम कामों में उसके फ़रमान को मुक़द्दम रखे, या यह मतलब है कि वही ख़ुदा को याद कर ले। यह सूरत और यह वअ़ज़ व नसीहत बल्कि सारा का सारा क़ुरआन इज़्ज़त व वक़ार वाले और मोतबर सहीफ़ों में है जो बुलन्द रुतबे और ऊँचे मक़ाम वाले हैं, जो मैल-कुचैल से और कमी-ज़्यादती से सुरक्षित और पाक-साफ़ हैं, जो फ़रिश्तों के पाक हाथों में हैं। और यह मतलब भी हो सकता है कि रसूले करीम सल्ल. के पवित्र सहाबा के हाथों में हैं। हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि इससे मुराद क़ारी (क़ुरआन के पढ़ने वाले) हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह नब्ती भाषा का लफ़्ज़ है, मायने हैं क़ारी। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- सही बात यह है कि इससे मुराद फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह तआ़ला और मख़्लूक़ के दरमियान सफ़ीर (नुमाईन्दे और दूत) हैं। सफ़ीर उसे कहते हैं जो सुलह और भलाई के लिये लोगों में कोशिश करता फिरे। अ़रब शायर के एक शे'र में भी यही मायने पाये जाते हैं। इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद फ़रिश्ते हैं, वे फ़रिश्ते जो ख़ुदा की जानिब से वही वग़ैरह लेकर आते हैं। वे ऐसे ही हैं जैसे लोगों में सुलह कराने वाले सफ़ीर होते हैं। ज़ाहिर बातिन में पाक हैं। ज़ाहिर में ख़ूबसूरत, शरीफ़, सम्मानित व बुज़ुर्ग और बातिन में उम्दा अख़्लाक़ और पाकीज़ा आमाल वाले हैं। यहाँ से यह भी मालूम कर लेना चाहिये कि क़ुरआन के पढ़ने वालों को अपने अख़्लाक़ व आमाल अच्छे रखने चाहियें। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो क़ुरआन को पढ़े और इसकी महारत हासिल करे वह बड़े रुतबे वाले लिखने वाले फ़रिश्ते के साथ होगा और जो बावजूद मशक़्क़त के भी पढ़े उसे दोहरा अज्र मिलेगा।

आदमी पर (जो ऐसे तज़्किरे से नसीहत हासिल न करे) ख़ुदा की मार, वह कैसा नाशुक्रा है। (17) (वह देखता नहीं कि) अल्लाह ने उसको कैसी (बेवक़्अ़त) चीज़ से पैदा किया। (18) (आगे जवाब है कि) नुत्फ़े से (पैदा किया। आगे उसकी कैफ़ियत का ज़िक्र है कि) उसकी सूरत बनाई फिर उस (के जिस्मानी अंगों) को अन्दाज़ से बनाया। (19) फिर उसके (निकलने का) रास्ता आसान कर दिया। (20) फिर (उम्र ख़त्म	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۙ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۙ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۙ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۙ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۙ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۙ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۙ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۗ

होने के बाद) उसको मौत दी, फिर उसको क़ब्र में ले गया। (21) फिर जब अल्लाह चाहेगा उस को दोबारा ज़िन्दा करेगा। (22) हरगिज़ (शुक्र नहीं अदा किया और) उसको जो हुक्म किया था उस पर अ़मल नहीं किया। (23) सो इनसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ देखे (24) कि हमने अ़जीब तौर पर पानी बरसाया। (25) फिर अ़जीब तौर पर ज़मीन को फाड़ा (26) फिर हमने पैदा किया उसमें ग़ल्ला (27) और अंगूर और तरकारी (28) और ज़ैतून और खजूर (29) और घने बाग़ (30) और मेवे और चारा। (31) (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे और (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे मवेशियों के फ़ायदे के लिए (32) (अब तो ये नाशुक्री और कुफ़्र करते हैं)।

इनसान कैसा नाशुक्रा है

जो लोग मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने के इनकारी थे, उनकी मज़म्मत (बुराई) बयान की जा रही है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- यानी इनसान पर लानत हो, यह कितना बड़ा नाशुक्र गुज़ार है। और यह मायने भी किये गये हैं कि उमूमन तमाम इनसान झुठलाने वाले हैं। बिना किसी दलील के, सिर्फ़ अपने ख़्याल से एक चीज़ को नामुम्किन जानकर बावजूद इल्मी सरमाये की कमी के ख़ुदा तआ़ला की बातों को झुठला देता है। और यह भी कहा गया है कि इसे उस झुठलाने पर कौनसी चीज़ आमादा (तैयार) करती है? इसके बाद उसकी असलियत बताई जाती है कि वह ख़्याल करे कि किस क़द्र हक़ीर और ज़लील चीज़ से ख़ुदा ने उसे बनाया है, क्या वह उसे दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत नहीं रखता? उसने इनसान को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर उसकी तक़दीर (अन्दाज़ा) मुक़र्रर की, यानी उम्र, रोज़ी, इल्म और नेक व बद होना। फिर उसके लिये माँ के पेट से निकलने का रास्ता आसान कर दिया। और यह मायने भी हैं कि हमने अपने दीन का रास्ता आसान कर दिया, यानी वाज़ेह और ज़ाहिर कर दिया। जैसे एक दूसरे मक़ाम पर इरशाद है:

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا.

यानी हमने उसे राह दिखाई, फिर या तो वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।

हज़रत हसन और इब्ने ज़ैद रह. इसी क़ौल को राजेह (वरीयता प्राप्त) बतलाते हैं। वल्लाहु आलम। उसकी पैदाईश के बाद फिर उसे मौत दी और फिर क़ब्र में ले गया। अ़रब का मुहावरा है कि वे जब किसी को दफ़न करते हैं तो कहते हैं "क़बरतुर्रजुलु" और कहते हैं "अक़्ब-रहुल्लाहु" इसी तरह के और भी मुहावरे हैं। मतलब यह है कि अब ख़ुदा ने उसे क़ब्र वाला बना दिया। फिर जब ख़ुदा चाहेगा उसे दोबारा ज़िन्दा कर देगा, उसी ज़िन्दगी को "बअ़स" और "नुशूर" कहते हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ.

उसकी निशानियों में से एक यह भी है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर तुम इनसान बनकर उठ बैठे। एक दूसरी जगह है:

كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا.

हड्डियों को देख कि हम किस तरह उन्हें उठाते-बिठाते हैं, फिर किस तरह उन पर गोश्त चढ़ाते हैं।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान के तमाम आज़ा (बदन के हिस्सों) वग़ैरह को मिट्टी खा जाती है मगर रीढ़ की हड्डी को नहीं खाती। लोगों ने कहा वह क्या है? आपने फ़रमाया- एक राई के दाने के बराबर है, उसी से फिर तुम्हारी पैदाईश होगी। यह हदीस बग़ैर सवाल व जवाब की ज़्यादती के बुख़ारी व मुस्लिम में भी है कि इनसान सड़-गल जाता है मगर रीढ़ की हड्डी, कि उसी से पैदा किया गया है और उसी से फिर तरकीब दिया (बनाया) जायेगा।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जिस तरह यह नाशुक्रा और बेक़द्र इनसान कहता है कि उसने अपनी जान व माल में ख़ुदा का जो हक़ था वह अदा कर दिया, लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि अभी तो इसने अल्लाह तआ़ला के फ़राईज़ (ज़रूरी चीज़ों) तक से मुक्ति और फ़राग़त हासिल नहीं की। हज़रत मुजाहिद रह. का फ़रमान है कि किसी शख़्स से अल्लाह तआ़ला के फ़राईज़ की पूरी अदायेगी नहीं हो सकती। हसन बसरी रह. से भी ऐसे ही मायने मरवी हैं। पहले ज़माने के उलेमा व बुज़ुर्गों में से मैंने तो इसके सिवा कोई और कलाम नहीं पाया, हाँ मुझे इसके यह मायने मालूम होते हैं कि अल्लाह के फ़रमान का यह मतलब है कि फिर जब चाहे दोबारा पैदा करेगा। अब तक उसके फ़ैसले के मुताबिक़ वक़्त नहीं आया। यानी अभी भी वह ऐसा नहीं करेगा, यहाँ तक कि निर्धारित मुद्दत ख़त्म हो और इनसान की तक़दीर (तयशुदा मामला) पूरी हो। उनकी क़िस्मत में इस दुनिया में आना और यहाँ भला-बुरा करना वग़ैरह जो मुक़र्रर हो चुका है वह सब ख़ुदा के अन्दाज़े के मुताबिक़ पूरा हो चुके, उस वक़्त वह हर चीज़ को दोबारा ज़िन्दा कर देगा और जैसे कि पहली मर्तबा पैदा किया था अब दूसरी मर्तबा पैदा करेगा।

इब्ने अबी हातिम में- हज़रत वहब बिन मुनब्बेह रह. से मरवी है कि हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- मेरे पास एक फ़रिश्ता आया और उसने मुझसे कहा कि क़ब्रें ज़मीन का पेट हैं और ज़मीन मख़्लूक़ की माँ है। जब तमाम मख़्लूक़ पैदा हो चुकेगी फिर क़ब्रों में पहुँच जायेगी और क़ब्रें सब भर जायेंगी उस वक़्त दुनिया का सिलसिला ख़त्म हो जायेगा और जो भी ज़मीन पर होंगे सब मर जायेंगे और जो कुछ ज़मीन में है उसे ज़मीन उगल देगी और क़ब्रों में जो मुर्दे हैं सब बाहर निकाल दिये जायेंगे। यह क़ौल हम अपनी इस तफ़सीर की दलील में पेश कर सकते हैं। वल्लाहु आलम

फिर इरशाद होता है कि मेरे इस एहसान को देखें कि मैंने उन्हें खाना दिया। इसमें भी दलील है मौत के बाद जी उठने की, कि जिस तरह ख़ुश्क ग़ैर-आबाद ज़मीन से हमने तरोताज़ा दरख़्त (पेड़-पौधे) उगाये और उनसे अनाज वग़ैरह पैदा करके तुम्हारे लिये खाना मुहैया किया, इसी तरह गली-सड़ी खोखली हड्डियों को भी हम एक रोज़ ज़िन्दा कर देंगे और उन्हें गोश्त पोस्त पहनाकर दोबारा तुम्हें ज़िन्दा कर देंगे। तुम देख लो कि हमने आसमान से बराबर पानी बरसाया फिर उसे हमने ज़मीन में पहुँचाकर ठहरा दिया, वह बीज में पहुँचा और ज़मीन में पड़े हुए दानों में अन्दर घुस गया जिस से वे दाने उगे, पौधा फूटा, ऊँचा हुआ और खेतियाँ लहलहाने लगीं। कहीं अनाज पैदा हुआ, कहीं अंगूर, कहीं तरकारियाँ। "हब" तो कहते हैं हर दाने

Maktab e Ashraf

Maktab E Ashraf

को, "ग़िनब" कहते हैं अंगूर को और "क़ज़्ब" उस सब्ज़ चारे को कहते हैं जिसे जानवर खाते हैं। और "ज़ैतून" को पैदा किया जो रोटी के साथ सालन का काम देता है, जलाया जाता है, तेल निकाला जाता है। और खजूर के दरख़्त पैदा किये जो गदराई हुई भी खाई जाती हैं, तर भी खाई जाती हैं, ख़ुश्क भी खाई जाती हैं और पक्की भी, और उसका शीरा भी बनाया जाता है और सिरका भी। और बाग़ात पैदा किये। "ग़ुल्बन" के मायने खजूरों के बड़े-बड़े मेवों से भरे दरख़्त के भी हैं। "हदाईक़" कहते हैं हर उस बाग़ को जो घना और ख़ूब भरा हुआ और गहरे साये वाला और बड़े दरख़्तों वाला हो। मोटी गर्दन वाले आदमी को भी अ़रब के लोग ग़ुल्ब कहते हैं। और मेवे पैदा किये और "अब्ब" (घास) कहते हैं ज़मीन की उस सब्ज़ी को जिसे जानवर खाते हैं और इनसान उसे नहीं खाते, जैसे घास पात वग़ैरह। "अब्ब" जानवर के लिये ऐसा ही है जैसे इनसान के लिये "फ़ाकिहा" यानी फल-मेवा।

हज़रत अ़ता का क़ौल है कि ज़मीन पर जो उगता है उसे "अब्ब" कहते हैं। इमाम ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि सिवाय मेवों के बाक़ी सब "अब्ब" हैं। अबुस्सा्ईब फ़रमाते हैं कि "अब्ब" आदमी के खाने में भी आता है और जानवर के खाने में भी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से इसके बारे में सवाल होता है तो फ़रमाते हैं कि कौनसा आसमान मुझे अपने तले साया देगा? और कौनसी ज़मीन मुझे अपनी पीठ पर उठायेगी? अगर मैं किताबुल्लाह में वह कहूँ जिसका मुझे इल्म न हो। लेकिन यह क़ौल मुन्क़ता है। इब्राहीम तैमी रह. ने हज़रत सिद्दीक़ को नहीं पाया। हाँ अलबत्ता सही सनद से इब्ने जरीर में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. से मरवी है कि आपने मिम्बर पर सूरः "अ़-ब-स" पढ़ी और यहाँ तक पहुँचकर कहा कि "फ़ाकिहतु" को तो हम जानते हैं लेकिन यह अब्ब क्या चीज़ है? फिर ख़ुद ही फ़रमाया उमर इस तकलीफ़ को छोड़। इससे मुराद यह है कि उसकी शक्ल व सूरत और उसकी सही कैफ़ियत मालूम नहीं, वरना इतना तो सिर्फ़ आयत के पढ़ने से ही साफ़ तौर पर मालूम हो रहा है कि यह ज़मीन से उगने वाली एक चीज़ है, क्योंकि पहले यह लफ़्ज़ मौजूद है:

فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا.. الخ.

फिर उगाया हमने उसमें..........।

फिर फ़रमाता है कि यह तुम्हारी ज़िन्दगी के क़ायम रखने, तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने और तुम्हारे जानवरों के लिये है। क़ियामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा और तुम इससे लाभान्वित होते रहोगे।

फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा (33) जिस दिन ऐसा आदमी भागेगा (जिसका ऊपर बयान हुआ), अपने भाई से (34) और अपनी माँ से और अपने बाप से (35) और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से। (यानी कोई किसी की हमदर्दी न करेगा)। (36) उनमें हर शख़्स को (अपना ही) ऐसा मश्ग़ला होगा जो उसको दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। (37) (यह तो	فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ

مُّسْتَبْشِرَةٌ ۚ ۝ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝ ع ٢

काफ़िरों का हाल हुआ, आगे मजमूई तौर पर मोमिनों और काफ़िरों की तफ़सील है कि) बहुत से चेहरे उस दिन (ईमान की वजह से) रोशन (38) (और ख़ुशी से) खिले हुए होंगे (39) और बहुत से चेहरों पर उस दिन (कुफ़्र की वजह से) स्याही छाई होगी। (40) (और उस स्याही के साथ) उन पर (ग़म की) कदूरत "यानी मलाल व मायूसी" छाई होगी। (41) यही लोग काफ़िर-फ़ाजिर (बदकार) हैं। (42)

MaktabE Ashraf

क़ियामत के दिन की अफ़रा-तफ़री का कुछ हाल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते है कि "साख़्ख़तुन" क़ियामत का नाम है और इस नाम की वजह यह है कि उसके नफ़ख़े (सूर फूँकने) की आवाज़ और उसका शोर व गुल कानों के पर्दे फाड़ देगा। उस दिन इनसान अपने क़रीबी रिश्तेदारों को देखेगा लेकिन भागता फिरेगा, कोई किसी के काम न आयेगा। मियाँ बीवी को देखकर कहेगा कि बतला तेरे साथ मैंने दुनिया में कैसा सुलूक किया? वह कहेगी कि बेशक आपने मेरे साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव और सुलूक किया, बहुत प्यार मुहब्बत से रखा। यह कहेगा आज मुझे ज़रूरत है सिर्फ़ एक नेकी दे दो ताकि इस आफ़त से छूट जाऊँ, तो वह जवाब देगी- आपका सवाल थोड़ी सी चीज़ का ही है मगर क्या करूँ यही ज़रूरत मेरे सामने भी है और इसी का ख़ौफ़ मुझे लग रहा है, मैं तो नेकी नहीं दे सकती। बेटा बाप से मिलेगा, यही कहेगा और यही जवाब पायेगा। एक सही हदीस में शफ़ाअ़त का बयान फ़रमाते हुए हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि बड़े-बड़े रुतबे वाले पैग़म्बरों से लोग शफ़ाअ़त की तलब करेंगे और उनमें से हर एक यही कहेगा कि "नफ़्सी नफ़्सी" यहाँ तक कि हज़रत ईसा रूहुल्लाह अ़लैहिस्सलाम भी यही फ़रमायेंगे कि आज मैं ख़ुदा तआ़ला से सिवाय अपनी जान के और किसी के लिये कुछ भी न कहूँगा। मैं तो आज अपनी वालिदा हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम के लिये भी कुछ न कहूँगा जिनके पेट से मैं पैदा हुआ हूँ। ग़र्ज़ कि दोस्त दोस्त से, रिश्तेदार रिश्तेदार से मुँह छुपाता फिरेगा, हर एक अपनी ही फ़िक्र में लगा हुआ होगा, किसी को दूसरे का होश भी न होगा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम नंगे पैरों, नंगे बदन और बिना ख़तना के ख़ुदा तआ़ला के यहाँ जमा किये जाओगे। आपकी बीवी साहिबा ने मालूम किया कि या रसूलल्लाह! फिर तो एक दूसरे की शर्मगाहों पर नज़रें पड़ेंगी। फ़रमाया- उस रोज़ की घबराहट, वहाँ का हैरत-अंगेज़ हंगामा हर शख़्स को मशग़ूल किये होगा, भला किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का मौक़ा उस दिन कहाँ? (इब्ने अबी हातिम) बाज़ रिवायतों में है कि आप सल्ल. ने फिर इसी आयत की तिलावत फ़रमाई कि वहाँ पर हर आदमी को अपनी जान की पड़ी होगी।

एक दूसरी रिवायत में है कि यह बीवी साहिबा उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं। एक और रिवायत में है कि एक दिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हों, मैं एक बात पूछती हूँ ज़रा बता दीजिए। आप सल्ल. ने फ़रमाया अगर मैं जानता हूँ तो ज़रूर बतलाऊँगा। पूछा हुज़ूर! लोगों का हश्र किस तरह होगा? आपने

फ़रमाया नंगे पैर और नंगे बदन। थोड़ी देर के बाद पूछा क्या औरतें भी इसी हालत में होंगी? फ़रमाया हाँ। यह सुनकर उम्मुल-मोनिमीन अफ़सोस करने लगीं। आपने फ़रमाया आयशा! इस आयत को सुन लो फिर तुम्हें इसका कोई रंज व ग़म न रहेगा कि कपड़े पहने हैं या नहीं? पूछा हुज़ूर! वह आयत कौनसी है? फ़रमायाः

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيهِ.....الخ.

कि उनमें से हर आदमी अपने ही मामले में ऐसा फंसा होगा जो उसको किसी और की तरफ़ ध्यान न देने देगा।

एक रिवायत में है कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह पूछा था, यह सुनकर कि लोग इस तरह नंगे बदन, नंगे पाँव, बिना ख़तना के जमा किये जायेंग, पसीने में डूबे हुए होंगे, किसी के मुँह तक पसीना पहुँच गया होगा और किसी के कानों तक, तो आप सल्ल. ने यह आयत पढ़कर सुनाई।

फिर इरशाद होता है कि वहाँ लोगों के दो गिरोह होंगे, बाज़ तो वे होंगे जिनके चेहरे ख़ुशी से चमक रहे होंगे, दिल ख़ुशी से मुत्मईन होंगे, मुँह ख़ूबसूरत और नूरानी होंगे। यह तो जन्नती जमाअत है। दूसरा गिरोह जहन्नमियों का होगा, उनके चेहरे सियाह होंगे, गर्द से भरे होंगे। हदीस में है कि उनका पसीना लगाम की तरह हो रहा होगा, फिर गर्द व गुबार पड़ रहा होगा। ये वे हैं जिनके दिलों में कुफ़्र था और जिनके आमाल बुरे थे। जैसे एक और जगह इरशाद हैः

وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا.

यानी उन काफ़िरों की औलाद भी बदकार काफ़िर ही होगी।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः अ-ब-स की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः तक्वीर

सूरः तक्वीर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स क़ियामत को अपनी आँखों से देखना चाहे तो वह "इज़श्शम्सु कुव्विरत्" (सूरः तक्वीर) "इज़स्समाउन् फ़-तरत्" (सूरः इन्फ़ितार) और "इज़स्समाउन् शक़्क़त्" (सूरः इन्शिक़ाक़) पढ़ ले।

जब सूरज बेनूर हो जाएगा। (1) और जब सितारे टूट-टूटकर गिर पड़ेंगे। (2) और जब पहाड़ चलाए जाएँगे। (3) और जब दस महीने	اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ○ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ○ وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ○ وَاِذَا

Maktab E Ashraf

الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝ وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ ۝ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝ وَإِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ۝	की गाभन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी। (4) और जब जंगली जानवर (घबराहट के मारे) सब जमा हो जाएँगे। (5) और जब दरिया भड़काए जाएँगे। (6) और जब एक-एक क़िस्म के लोग इकट्ठे किए जाएँगे। (7) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा (8) कि वह किस गुनाह पर क़त्ल की गई थी। (9) और जब आमाल-नामे खोले जाएँगे (ताकि सब अपने-अपने अ़मल देख लें)। (10) और जब आसमान खुल जाएगा (और उसके खुलने से आसमान की ऊपर की चीज़ें नज़र आने लगेंगी) (11) और जब दोज़ख़ (और ज़्यादा) दहकाई जाएगी। (12) और जब जन्नत क़रीब कर दी जाएगी। (13) (तो उस वक़्त) हर शख़्स उन आमाल को जान लेगा जो लेकर आया है। (14)

जब यह सूरज, चाँद और तारे सब बेनूर हो जायेंगे

यानी सूरज बेनूर हो जायेगा, जाता रहेगा, औंधा करके लपेट कर ज़मीन पर फेंक दिया जायेगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सूरज को चाँद और सितारों को लपेटकर बेनूर करके समन्दर में डाल दिया जायेगा और फिर पछवा हवायें चलेंगी और आग लग जायेगी। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि इसकी तह करके जहन्नम में डाल दिया जायेगा। (इब्ने अबी हातिम) और एक हदीस में सूरज के साथ चाँद का ज़िक्र भी है, लेकिन वह ज़ईफ़ है। सही बुख़ारी में यह हदीस अलफ़ाज़ के थोड़े से हेर-फेर के साथ मरवी है। उसमें है कि सूरज और चाँद क़ियामत के दिन लपेट लिये जायेंगे। इमाम बुख़ारी इसे किताब "बदउल्-ख़ल्क़" में लाये हैं लेकिन यहाँ लाना ज़्यादा मुनासिब था, या आ़दत के अनुसार वहाँ और यहाँ दोनों जगह लाते। जैसे इमाम साहिब रह. की आ़दत है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने जब यह हदीस बयान की कि क़ियामत के दिन यह होगा तो हज़रत हसन रह. कहने लगे- इनका क्या गुनाह है? फ़रमाया कि मैंने हदीस बयान की और तुम इस पर बातें बनाते हो? सूरज की क़ियामत वाले दिन यह हालत होगी, सितारे सारे के सारे हालत बदल कर झड़ जायेंगे। जैसे एक दूसरी जगह पर बयान है:

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ.

कि जब सितारे टूटकर झड़ पड़ेंगे। यह भी गदले और बेनूर होकर बुझ जायेंगे।

हज़रत उबई बिन कअ़ब फ़रमाते हैं कि क़ियामत से पहले छह निशानियाँ होंगी- लोग अपने बाज़ारों में होंगे कि अचानक सूरज की रोशनी जाती रहेगी और फिर अचानक सितारे टूट-टूटकर गिरने लगेंगे। फिर अचानक पहाड़ ज़मीन पर गिर पड़ेंगे, ज़मीन ज़ोर-ज़ोर से झटके लेने लगेगी और बुरी तरह हिलने लगेगी। बस फिर क्या इनसान क्या जिन्नात क्या जानवर और क्या जंगली जानवर, सब आपस में रल-मिल जायेंगे।

जानवर भी जो इनसानों से भागते फिरते थे, इनसानों के पास आ जायेंगे। लोगों पर इस कद्र बद-हवासी और घबराहट तारी होगी कि बेहतर से बेहतर माल और ऊँटनियाँ जो गाभन होंगी उनकी भी ख़ैर ख़बर न लेंगे। जिन्नात कहेंगे कि हम जाते हैं, तहक़ीक़ करेंगे क्या हो रहा है? लेकिन वे आयेंगे तो देखेंगे कि समन्दर में आग लग रही है, इसी हाल में एक दम ज़मीन फटने लगेगी और आसमान भी टूटने लगेंगे। सातों ज़मीनों और सातों आसमानों का यही हाल होगा। उधर से एक तेज़ हवा चलेगी जिससे तमाम जानदार मर जायेंगे। (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक और रिवायत में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि सारे सितारे और जिन-जिनकी खुदा तआ़ला के अ़लावा इबादत की गयी है, सब जहन्नम में गिराये जायेंगे, सिर्फ़ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मरियम बच रहेंगी, अगर ये भी अपनी इबादत से खुश होते तो ये भी जहन्नम में दाख़िल कर दिये जाते। (इब्ने अबी हातिम)

पहाड़ अपनी जगह से टल जायेंगे और बेनाम व निशान हो जायेंगे। ज़मीन साफ़ चटियल और हमवार मैदान रह जायेंगे। ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जायेंगी, न कोई उनकी निगरानी करेगा न चराये चुगायेगा। न दूध निकालेगा न सवारी लेगा। "इशारुन" बहुवचन है "अ़शरा" का, जो गाभन ऊँटनी दसवें महीने में लग जाये उसे "अ़शरा" कहते हैं। मतलब यह है कि घबराहट और बदहवासी, बेचैनी और परेशानी इस कद्र होगी कि बेहतर से बेहतर माल की भी परवाह न रहेगी। क़ियामत की इन बलाओं ने दिल उड़ा दिये होंगे, कलेजे मुँह को आ गये होंगे।

बाज़ लोग कहते हैं कि यह क़ियामत के दिन होगा और कुछ लोगों को इससे कुछ सरोकार न होगा। हाँ उनके देखने में यह होगा। इस क़ौल के क़ायल "इशार" के कई मायने बयान करते हैं, एक तो यह कहते हैं कि इससे मुराद बादल हैं जो दुनिया की बरबादी की वजह से आसमान व ज़मीन के बीच फिरते होंगे। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद वह ज़मीन है जिसका उश्र (दसवाँ हिस्सा) दिया जाता है। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद घर हैं जो पहले आबाद थे अब वीरान हैं। इमाम क़ुर्तुबी इन अक़्वाल को बयान करके तरजीह इसी को देते हैं कि मुराद इससे ऊँटनियाँ हैं और अक्सर मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है। मैं तो कहता हूँ कि पहले हज़राते उलेमा और इमामों से इसके अ़लावा कुछ नक़ल ही नहीं हुआ। वल्लाहु आलम

और जंगली (ग़ैर-पालतू) जानवर जमा किये जायेंगे। जैसे कि क़ुरआन में फ़रमान है:

مَامِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طَآئِرٍ......... الخ.

यानी ज़मीन पर चलने वाले तमाम जानवर और हवा में उड़ने वाले तमाम पक्षी भी तुम्हारी तरह गिरोह (जमाअ़तों की शक्ल में) हैं। हमने अपनी किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी। फिर ये सब अपने रब की तरफ़ जमा किये जायेंगे। सब जानवरों का हश्र उसी के पास होगा, यहाँ तक कि मक्खियाँ भी। इन सब का खुदा तआ़ला इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करेगा। इन जानवरों का हश्र इनकी मौत ही है। अलबत्ता इनसान व जिन्नात खुदा के सामने खड़े किये जायेंगे और इनसे हिसाब किताब होगा। रबीअ़ बिन ख़ैसम रह. ने कहा कि मुराद वहशियों (जंगली जानवरों) के हश्र से उन पर खुदा तआ़ला के हुक्म का आना है, लेकिन इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने यह सुनकर फ़रमाया कि इससे मुराद मौत है। ये तमाम जानवर भी एक दूसरे के साथ और इनसानों के साथ हो जायेंगे, खुद क़ुरआन में एक दूसरे मौक़े पर है:

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً.

Maktab-E-Ashraf

परिन्दे जमा किये हुए।

पस ठीक मतलब इस आयत का भी यही है कि वहशी जानवर जमा किये जायेंगे। हज़रत अ़ली रज़ि. ने एक यहूदी से पूछा- जहन्नम कहाँ है? उसने कहा समन्दर में। आपने फ़रमाया- मेरे ख़्याल में यह सच्चा है। क़ुरआन कहता है:

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ.

नमकीले दरिया की क़सम जो पानी से भरा हुआ है। और फ़रमाता है:

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ.

और जब दरिया भड़काये जायेंगे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला पछवा हवायें भेजेगा, वे उसे भड़का देंगी और वह शोले मारती हुई आग बन जायेगा। आयत "वल-बह्‌रिल् मस्जूर" (सूरः तूर की आयत नम्बर 6) की तफ़सीर में इसका मुफ़स्सल बयान गुज़र चुका है।

हज़रत मुआ़विया बिन सईद रह. फ़रमाते हैं कि बहरे रोम (रोम के समन्दर) में बरकत है, यह ज़मीन के बीच में है, सब नहरें इसी में आती हैं और बहरे कबीर (बड़ा दरिया) भी इसी में पड़ता है। इसके नीचे कुएँ हैं जिनके मुँह ताँबे से बन्द किये हुए हैं। क़ियामत के दिन वे सुलग उठेंगे। यह क़ौल अ़जीब है और साथ ही ग़रीब है। हाँ अबू दाऊद में एक हदीस है कि समन्दर का सफ़र सिर्फ़ हाजी करें और उमरा करने वाले या जिहाद करने वाले ग़ाज़ी, इसलिये कि समन्दर के नीचे आग है और आग के नीचे पानी है। इसका बयान भी सूरः फ़ातिर की तफ़सीर में गुज़र चुका है।

"सुज्जिरत" के मायने यह भी किये गये हैं कि सुखा दिया जायेगा, एक क़तरा भी बाक़ी न रहेगा। यह मायने भी किये गये हैं कि बहा दिया जायेगा और इधर-उधर बह निकलेगा। फिर फ़रमाता है कि हर तरह के लोग एक जगह जमा कर दिये जायेंगे। जैसे एक और जगह है:

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ.

ज़ालिमों को और उनके जोड़ों यानी उन जैसों को जमा करो।

हदीस में है कि हर शख़्स का उस क़ौम के साथ हश्र किया जायेगा जो उस जैसे आमाल करती होगी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً..... الخ.

तुम तीन तरह के गिरोह हो जाओगे। कुछ वे जिनके दाहिने हाथ में नामा-ए-आमाल होंगे, कुछ बायें हाथ वाले, कुछ आगे बढ़ने वाले। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने ख़ुतबा पढ़ते हुए इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया- हर जमाअ़त अपने जैसों से मिल जायेगी। दूसरी इस आयत की तफ़सीर पूछी गयी तो फ़रमाया नेक नेकों के साथ मिल जायेंगे और बद बदों के साथ आग में। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने एक मर्तबा लोगों से इस आयत की तफ़सीर पूछी तो सब ख़ामोश रहे। आपने फ़रमाया लो मैं बताऊँ। आदमी का जोड़ा जन्नत में उसी जैसा होगा, इसी तरह जहन्नम में भी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- मतलब इससे यही है कि तीन क़िस्म के लोग हो जायेंगे, यानी दायें वाले, बायें वाले और आगे बढ़ जाने वाले। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि हर क़िस्म के लोग एक साथ होंगे

Maktab E Ashraf

यही क़ौल इमाम इब्ने जरीर रह. भी पसन्द करते हैं और यही ठीक भी है। दूसरा क़ौल यह है कि अ़र्श के पास से पानी का एक दरिया जारी होगा जो चालीस साल तक बहता रहेगा और बहुत लम्बा चौड़ा होगा उससे तमाम मरे सड़े गले उगने लगेंगे। इस तरह के हो जायेंगे कि जो उन्हें पहचानता हो वह अगर उन्हें देख ले तो एक ही निगाह में पहचान ले। फिर रूहें छोड़ी जायेंगी और हर रूह अपने जिस्म में आ जायेगी। यही मायने हैं इस आयत के:

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ.

यानी रूहें जिस्मों से मिला दी जायेंगी।

और यह मायने भी बयान किये गये हैं कि मोमिनों का जोड़ा हूरों से बनाया जायेगा और काफ़िरों का शैतानों से। (तज़किरा क़ुर्तुबी)

फिर इरशाद होता है:

وَاِذَا الْمَوْءٗ دَةُ سُئِلَتْ.......الخ.

कि जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा।

जमहूर की क़िराअत यही है। ज़माना जाहिलीयत के लोग लड़कियों को नापसन्द करते थे और उन्हें ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे। उनसे क़ियामत के दिन सवाल होगा कि ये क्यों क़त्ल की गयीं? ताकि उनके क़ातिलों को ज़्यादा डाँट-डपट और शर्मिन्दगी हो। और यह भी समझ लीजिए कि जब मज़लूम से सवाल हुआ तो ज़ालिम का तो कहना ही क्या है? और यह भी कहा गया है कि वे ख़ुद पूछेंगी कि उन्हें किस बिना पर ज़िन्दा दफ़न किया गया? इससे मुताल्लिक़ हदीसें सुनिये। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैंने इरादा किया कि लोगों को गर्भ की हालत में सोहबत करने से रोक दूँ लेकिन मैंने देखा कि रूम और फ़ारस के लोग यह काम करते हैं और उनकी औलादों को इससे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचता। लोगों ने आप से अ़ज़्ल के बारे में सवाल किया (यानी जैसे ही वीर्य का नुत्फ़ा निकले तो उसको बाहर डाल देने) के बारे में, तो आप सल्ल. ने फ़रमाया- यह छुपे तौर पर ज़िन्दा गाड़ देना है (गोया कि आजकल के हिसाब से बर्थ कन्ट्रोल की जो सूरतें हैं अगर उनको बिना किसी शरई मजबूरी के इस्तेमाल किया जाये तो यह भी होने वाली औलाद को ज़िन्दा दफ़न करना है)।

"व इज़ल् मौऊदतु सुइलत्" में इसी का बयान है। सलमा बिन यज़ीद और उनके भाई सरकारे नुबुव्वत में हाज़िर होकर सवाल करते हैं कि हमारी माँ अमीर ज़ादी थीं, वह सिला-रहमी करती थीं, मेहमान नवाज़ी करती थीं और भी नेक काम बहुत कुछ करती थीं, लेकिन जाहिलीयत ही में मर गयी हैं तो क्या उन्हें उनके ये नेक काम कुछ नफ़ा देंगे? आपने फ़रमाया- नहीं। उन्होंने कहा उन्होंने हमारी एक बहन को ज़िन्दा दफ़न कर दिया था, क्या वह भी उसे कुछ नफ़ा देगा? आपने फ़रमाया ज़िन्दा गाड़ी हुई और ज़िन्दा गाड़ने वाली जहन्नम में हैं (क्योंकि वह लड़की भी काफ़िर थी, यह और बात है कि वह मज़लूम थी)। हाँ यह और बात है कि वह इस्लाम को क़बूल कर ले। (मुस्नद अहमद)

इब्ने अबी हातिम में है कि ज़िन्दा दफ़न करने वाली और जिसे दफ़न किया गया है, दोनों जहन्नम में हैं। एक सहाबी औरत के सवाल पर कि जन्नत में कौन जायेगा? आपने फ़रमाया कि नबी, शहीद, बच्चे और ज़िन्दा दफ़न की हुई लड़की। यह हदीस मुर्सल है हज़रत हसन रह. से, जिसे बाज़ मुहद्दिसीन ने क़बूलियत का मर्तबा दिया है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुश्रिकों के छोटी उम्र में मरे हुए

Maktab E Ashraf

बच्चे जन्नती हैं, जो उन्हें जहन्नमी कहे वह झूठा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَإِذَا الْمَوْءُ دَةُ سُئِلَتْ.

कि जब ज़िन्दा दफ़न की गयी लड़की से सवाल होगा कि वह क्यों गाड़ी गयी? (इब्ने अबी हातिम)

कैस बिन आ़सिम रज़ि. सवाल करते हैं कि या रसूलल्लाह! मैंने जाहिलीयत के (यानी इस्लाम से पहले) ज़माने में अपनी कई बच्चियों को ज़िन्दा दबाया है, मैं क्या करूँ? आपने फ़रमाया हर एक के बदले एक गुलाम आज़ाद करो। उन्होंने अ़र्ज़ किया हुज़ूर! गुलाम वाला तो मैं हूँ नहीं, अलबत्ता मेरे पास ऊँट हैं। फ़रमाया हर एक के बदले एक ऊँट ख़ुदा के नाम पर क़ुरबान करो। (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

एक दूसरी रिवायत में है कि मैंने अपनी आठ लड़कियाँ इसी तरह ज़िन्दा दबा दी हैं। आपके फ़रमान में है कि अगर चाहे तो यूँ करो। एक और रिवायत में है कि मैंने बारह तेरह लड़कियाँ ज़िन्दा दफ़न कर दी हैं। आपने फ़रमाया उनकी गिनती के मुताबिक़ गुलाम आज़ाद करो। उन्होंने कहा बहुत बेहतर मैं यही करूँगा। दूसरे साल वह एक सौ ऊँट लेकर आये और कहने लगे हुज़ूर! यह मेरी क़ौम का सदक़ा है, यह उसके बदले है जो मैंने मुसलमानों के साथ किया। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम उन ऊँटों को ले जाते थे और उनका नाम "क़ैसिया" रख छोड़ा था।

फिर इरशाद है कि नामा-ए-आमाल बाँटे जायेंगे। किसी के दाहिने हाथ में किसी के बायें हाथ में। ऐ आदम के बेटे तू लिखवा रहा है, जो लपेट कर फैला कर तुझे दिया जायेगा, देख ले कि क्या लिखवा रहा है। आसमान घसीट लिया जायेगा और खींच लिया जायेगा और समेट लिया जायेगा और बरबाद हो जायेगा। जहन्नम भड़काई जायेगी, ख़ुदा के ग़ज़ब और इनसान के गुनाहों से उसकी आग तेज़ हो जायेगी। जन्नत जन्नतियों के पास आ जायेगी। जब ये तमाम काम हो चुकेंगे उस वक़्त हर शख़्स जान लेगा कि उसने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में क्या कुछ आमाल किये थे। वे सब अ़मल उसके साथ मौजूद होंगे। जैसे एक और जगह हैः

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ.......... الخ.

जिस दिन हर शख़्स अपने किये हुए आमाल पा लेगा। नेक हैं तो सामने देख लेगा और बुरे हैं तो उस दिन वह आरज़ू करेगा कि काश उसके और उनके दरमियान बहुत दूरी होती। एक और जगह इरशाद हैः

يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ.

उस दिन इनसान को उसके तमाम अगले पिछले आमाल से आगाह किया जायेगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस सूरत को सुनते रहे और इसको सुनते ही फ़रमाया- पहली तमाम बातें इसी लिये बयान हुई थीं।

फَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ۝ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝ ذِىْ	(और जब ऐसा हौलनाक वाक़िआ़ होने वाला है) तो मैं क़सम खाता हूँ उन सितारों की जो (सीधे चलते-चलते) पीछे को हटने लगते हैं। (15) (और फिर पीछे ही को) चलते रहते हैं (और अपने निकलने की जगहों में) जा छुपते

قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ۙ مُّطَاعٍ ثَمَّ
اَمِيْنٍ ۗ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ۚ
وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ۚ وَمَا هُوَ عَلَى
الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۚ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ
رَّجِيْمٍ ۙ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعٰلَمِيْنَ ۙ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ
يَّسْتَقِيْمَ ۗ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ ع ۲۹ ۲

हैं। (16) और क़सम है रात की जब वह जाने लगे। (17) और क़सम है सुबह की जब वह आने लगे। (18) (आगे क़सम का जवाब है) कि यह क़ुरआन (अल्लाह तआ़ला का) कलाम है। (19) एक इ़ज़्ज़त वाले फ़रिश्ते (यानी जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम) का लाया हुआ जो क़ुव्वत वाला है और अ़र्श के मालिक के नज़दीक रुतबे वाला है। (20) (और) वहाँ (यानी आसमानों में) उसका कहना माना जाता है (और वह) अमानत दार हैं। (21) कि (वही को सही-सही पहुँचा देते हैं।) और यह तुम्हारे साथ के रहने वाले (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) मजनूँ नहीं हैं। (22) इन्होंने उस फ़रिश्ते को (असली सूरत में आसमान के) साफ़ किनारे पर देखा भी है। (23) और यह पैग़म्बर पोशीदा (बतलाई हुई वही की) बातों पर कन्जूसी करने वाले भी नहीं। (24) और यह क़ुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं है। (25) (जब यह साबित है) तो तुम लोग (इस बारे में) किधर को चले जा रहे हो? (26) बस यह तो (उमूमन) दुनिया जहान वालों के लिए एक बड़ी नसीहत की किताब है। (27) (और ख़ास तौर से) ऐसे शख़्स के लिए जो तुममें से सीधा चलना चाहे। (28) और तुम बग़ैर ख़ुदा-ए-रब्बुल आ़लमीन के चाहे कुछ नहीं चाह सकते। (29)

Maktab-E-Ashraf

यह क़ुरआन अल्लाह का कलाम है

हज़रत अ़मर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सुबह की नमाज़ में मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इस सूरत की तिलावत करते हुए सुना। उस नमाज़ में मैं भी मुक़्तदियों में शामिल था। (मुस्लिम) ये क़समें सितारों की खाई हैं जो दिन के वक़्त पीछे हट जाते हैं, यानी छुप जाते हैं और रात को ज़ाहिर होते हैं। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु यही फ़रमाते हैं और भी दूसरे सहाबा और ताबिईन वग़ैरह से इसकी यही तफ़सीर मरवी है। बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि तुलूअ़ (निकलने) के वक़्त सितारों को "ख़ुन्नसु" कहा जाता है और अपनी जगह पर उन्हें "जवार" कहा जाता है। बाज़ों ने कहा है कि मुराद इससे जंगली गाय है। यह भी मरवी है कि मुराद हिरन है। इब्राहीम रह. ने हज़रत मुजाहिद रह. से इसके मायने पूछे तो हज़रत

Maktaba Ashraf

मुजाहिद रह. ने फ़रमाया- हम सुनते हैं कि इससे मुराद नील गाय है जबकि वह अपनी जगह छुप जाये। हज़रत इब्राहीम रह. ने फ़रमाया कि वे मुझ पर झूठ बाँधते हैं जैसे हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नीचे वाले को ऊपर वाले का और ऊपर वाले (यानी ऊँचे) को नीचे वाले का ज़ामिन बताया।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने इसमें से किसी को मुतैयन नहीं किया और फ़रमाया- मुम्किन है कि तीनों चीज़ें मुराद हों। यानी सितारे, नील गाय और हिरन। "अ़स्अ़-स" के मायने हैं अन्धेरी वाली हुई, उठ खड़ी हुई, लोगों को ढाँप लिया और जाने लगी। सुबह की नमाज़ के वक़्त हज़रत अ़ली रज़ि. एक मर्तबा निकले और फ़रमाने लगे कि वित्र के पूछने वाले कहाँ हैं? फिर यह आयत पढ़ी। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी को पसन्द फ़रमाते हैं कि मायने यह हैं कि रात जब जाने लगे, क्योंकि इसके मुक़ाबले में है कि जब सुबह चमकने लगे। शायरों ने "अ़स्अ़-स" को "अद्ब-र" (पीछे हटा) के मायने में इस्तेमाल किया है। मेरे नज़दीक ठीक मायने यह हैं कि क़सम है रात की जब वह आये और अंधेरा फैलाये, और क़सम है दिन की जब वह आये और रोशनी फैलाये। जैसे एक और जगह है:

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى.

क़सम है रात की जब वह (दिन और सूरज को) छुपा ले। और क़सम है दिन की जब वह रोशन हो जाये। एक और मौक़े पर इरशाद है:

وَالضُّحٰى وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى.

क़सम है दिन की रोशनी की और रात की जब वह क़रार पकड़े। और एक जगह फ़रमायाः

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا.

जो निकालने वाला है सुबह का, और बनाया रात को सुकून की चीज़।

बल्कि इस तरह की आयतें बहुत सी हैं। मतलब सब का एक है। हाँ बेशक इस लफ़्ज़ के मायने पीछे हटने के भी हैं। उलेमा-ए-उसूल ने फ़रमाया है कि यह लफ़्ज़ आगे आने और पीछे जाने दोनों के मायने में आता है। इस बिना पर ये दोनों मायने ठीक हो सकते हैं। वल्लाहु आलम

और क़सम है सुबह की जबकि वह तुलूअ़ हो और रोशनी के साथ आये। फिर इन क़समों के बाद फ़रमाता है कि यह क़ुरआन एक बड़ाई वाले, शरीफ़, पाकीज़ा चेहरे वाले, ख़ूबसूरत फ़रिश्ते का कलाम है यानी हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का (यानी अल्लाह की तरफ़ से इसके लाने वाले यह हैं, कलाम तो अल्लाह का है, इसी लिये यहाँ हज़रत जिब्राईल के लिये रसूल का लफ़्ज़ लाये हैं)। वह क़ुव्वत वाले हैं। जैसा कि एक दूसरी जगह है:

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى. ذُوْمِرَّةٍ.

यानी सख़्त मज़बूत और सख़्त पकड़ और फ़ेल वाला फ़रिश्ता। वह अल्लाह तआ़ला के पास जो अ़र्श वाला है बुलन्द रुतबे वाला और सम्मानित है। वह नूर के सत्तर पर्दों में जा सकते हैं और उन्हें आ़म इजाज़त है, उनकी बात वहाँ सुनी जाती है। बड़े-बड़े फ़रिश्ते उनके फ़रमाँबरदार हैं, आसमानों में उनकी सरदारी है, दूसरे फ़रिश्ते उनके हुक्म के ताबे हैं, वह इस पैग़ाम पहुँचाने की ड्यूटी पर मुक़र्रर हैं कि ख़ुदा तआ़ला का कलाम उसके रसूलों तक पहुँचायें।

ये फ़रिश्ते ख़ुदा के अमीन हैं। मतलब यह है कि फ़रिश्तों में से जो इस रिसालत (पैग़ाम पहुँचाने) पर

मुक़र्रर हैं वे भी साफ़-पाक हैं और इनसानों में से जो रसूल मुक़र्रर हैं वे भी पाक और बरतर हैं। इसी लिये इसके बाद फ़रमाया कि तुम्हारे साथी यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल. दीवाने नहीं, यह पैग़म्बर उस फ़रिश्ते को उसकी असली सूरत पर भी देख चुके हैं जबकि वह अपने छह सौ परों समेत ज़ाहिर हुआ था। यह वाक़िआ बतहा (मक्का में एक स्थान) का है और यह पहली मर्तबा का देखना था। आसमान के खुले किनारों पर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का यह दीदार हासिल हुआ था। इसी का बयान इस आयत में है:

عَلَّمَهُ شَدِيْدُ الْقُوٰى. ذُوْمِرَّةٍ فَاسْتَوٰى. وَهُوَبِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى. ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى. فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى. فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآاَوْحٰى.

यानी उन्हें एक फ़रिश्ता तालीम करता है, जो बड़ा ताक़तवर और मज़बूत है, जो असली सूरत पर आसमान के बुलन्द व बाला किनारों पर ज़ाहिर हुआ था। फिर वह नज़दीक आया और बहुत क़रीब आ गया, सिर्फ़ दो कमानों का फ़ासला रह गया बल्कि इससे भी कम। फिर जो वही ख़ुदा ने अपने बन्दे पर नाज़िल करनी चाही नाज़िल फ़रमाई।

इस आयत की तफ़सीर सूरः नज्म में गुज़र चुकी है। बज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह सूरत मेराज से पहले उतरी है, इसलिये कि इसमें सिर्फ़ पहली मर्तबा का देखना ज़िक्र हुआ, और दोबारा का देखना इस आयत में मज़कूर है:

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى..........الخ

यानी उन्होंने उसको एक मर्तबा और भी सिद्रतुल-मुन्तहा के पास देखा है, जिसके क़रीब जन्नतुल-मावा है, जबकि उस बेरी के पेड़ को एक अ़जीब व ग़रीब चीज़ छुपाये हुए थी।

इस आयत में दूसरी मर्तबा देखने का ज़िक्र है। यह सूरत मेराज के वाक़िए के बाद नाज़िल हुई थी। "बि-ज़नीन" का मतलब है कि यह बख़ील नहीं हैं बल्कि जो ग़ैब की बातें आपको ख़ुदा की तरफ़ से मालूम कराई जाती हैं यह हर शख़्स को उन्हें सिखा दिया करते हैं। पस आपने न तो अहकाम की तब्लीग़ में कमी की और न आप पर इसकी तोहमत लगी। यह क़ुरआन शैतान मरदूद का कलाम नहीं, न शैतान इसे ले सके न उसके मतलब की यह चीज़, न वह इसके क़ाबिल। जैसे एक और जगह फ़रमाया है:

وَمَاتَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِيْنُ وَمَا يَنْبَغِىْ لَهُمْ وَمَايَسْتَطِيْعُوْنَ. اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ.

न इसे लेकर शैतान उतरे न उन्हें यह लायक़ है। न इसकी उसे ताक़त है। वह तो इसके सुनने से भी मेहरूम और दूर है।

फिर फ़रमाया कि तुम कहाँ जा रहे हो? यानी क़ुरआन की हक़्क़ानियत (हक़ होना), इसकी सच्चाई ज़ाहिर होने के बाद भी तुम क्यों इसे झुठला रहे हो? तुम्हारी अ़क़्लें कहाँ जाती रहीं? हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के पास जब बनू हनीफ़ा क़बीले के लोग मुसलमान होकर हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया- मुसैलमा जिसने नुबुव्वत का झूठा दावा कर रखा है, जिसे तुम आज तक मानते रहे, उसने जो कलाम गढ़ रखा है ज़रा उसे तो सुनाओ? जब उन्होंने सुनाया तो देखा कि निहायत घटिया अलफ़ाज़ हैं, बल्कि कोरी बकवास है। तो आपने फ़रमाया- तुम्हारी अ़क़्लें कहाँ जाती रहीं? ज़रा सोचो कि एक फ़ुज़ूल बकवास को तुम कलामे ख़ुदा मानते रहे? नामुम्किन है कि ऐसा बेमायने और बेनूर कलाम ख़ुदा तआ़ला का कलाम हो। यह भी हर एक हिदायत के तालिब को चाहिये कि इस क़ुरआन पर अ़मल करे, यही निजात और हिदायत

Maktab E Ashraf

का कफ़ील (ज़िम्मेदार) है, इसके सिवा दूसरे कलाम में हिदायत नहीं। तुम्हारी तमन्नायें काम नहीं आतीं कि जो चाहे हिदायत पा ले और जो चाहे गुमराह हो जाये, बल्कि यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, वह रब्बुल-आलमीन जो चाहे करता है, उसी की मर्ज़ी चलती है। इससे अगली आयत को सुनकर अबू जहल ने कहा था कि "फिर तो हिदायत व गुमराही हमारे बस की बात है" इसके जवाब में यह आयत उतरी।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः तक्वीर की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः इन्फ़ितार

सूरः इन्फ़ितार मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

नसाई शरीफ़ में है कि हज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इशा की नमाज़ पढ़ाई और उसमें लम्बी किराअत पढ़ी तो नबी सल्ल. ने फ़रमाया- मुआ़ज़ क्या ये सूरतें न थीं "सब्बिहिस्-म रब्बिकल् अअ्ला" और "वज़्ज़ुहा" और "इज़स्समाउन् फ़-तरत्"। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है, हाँ "इज़स्समाउन् फ़-तरत्" का ज़िक्र सिर्फ़ नसाई की रिवायत में है। और वह हदीस पहले गुज़र चुकी है जिसमें बयान है कि जो शख़्स कियामत के दिन को अपनी आँखों से देखना चाहे तो वह "इज़श्शम्सु कुव्विरत्" और "इज़स्समाउन् फ़-तरत्" और "इज़स्समाउन् शक़्क़त" को पढ़ ले।

जब आसमान फट जाएगा। (1) और जब सितारे (टूटकर) झड़ पड़ेंगे (2) और सब दरिया (मीठे व नमकीले) बह पड़ेंगे (3) और जब क़ब्रें उखाड़ी जाएँगी (यानी उनके मुर्दे निकल खड़े होंगे)। (4) (उस वक़्त) हर शख़्स अपने अगले और पिछले आमाल को जान लेगा। (5) ऐ इनसान! तुझको किस चीज़ ने तेरे ऐसे रब्बे करीम के साथ भूल में डाल रखा है (6) जिसने तुझको (इनसान) बनाया, फिर तेरे जिस्मानी अंगों को दुरुस्त किया, फिर तुझको (मुनासिब) एतिदाल पर बनाया। (7) (और) जिस सूरत में चाहा तुझको तरकीब दे दिया। (8) (इन सब उमूर (बातों) का तक़ाज़ा यह है कि तुमको) हरगिज़ (घमंडी और सरकश) नहीं (होना चाहिए	اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ○ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ○ وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ○ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ○ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ○ يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ○ الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰكَ فَعَدَلَكَ○ فِىْٓ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ○ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ○

मगर तुम बाज़ नहीं आते) बल्कि तुम (इस वजह से धोखे में पड़ गए हो कि तुम) जज़ा व सज़ा (ही) को झुठलाते हो। (9) और तुम पर (तुम्हारे सब आमाल) याद रखने वाले, (10) इज़्ज़त वाले, लिखने वाले मुक़र्रर हैं। (11) जो तुम्हारे सब कामों को जानते हैं। (12)	وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۝ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝

Maktab E Ashraf

यह तमाम कायनात उलट-पुलट हो जायेगी

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क़ियामत के दिन आसमान टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। जैसे फ़रमाया हैः

اَلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ بِهٖ

कि आसमान फट जायेगा।

सितारे सब के सब गिर पड़ेंगे और खा़रा और मीठा समन्दर आपस में गड-मड हो जायेंगे। और पानी सूख जायेगा और क़ब्रें फट जायेंगी, उनके फटने और खुलने के बाद मुर्दे जी उठेंगे। फिर यह शख़्स अपने अगले पिछले आमाल को अच्छी तरह जान लेगा। फिर अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को धमकाता है कि तुम क्यों घमंडी हो गये हो? यह नहीं कि ख़ुदा तआ़ला इसका जवाब तलब करता हो या सिखाता हो। बाज़ों ने यह भी कहा है, बल्कि उन्होंने जवाब दिया है कि अल्लाह के करम ने ग़ाफ़िल कर रखा है। यह मायने बयान करने ग़लत हैं। सही मतलब यही है कि ऐ इनसान! अपने अ़ज़मत व बड़ाई वाले ख़ुदा से तूने क्यों बेपरवाही बरत रखी है? किस चीज़ ने तुझे उसकी नाफ़रमानी पर उकसा रखा है? और क्यों तू उसके मुक़ाबले पर आमादा हो गया है?

हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा- ऐ इब्ने आदम! तुझे मेरी जानिब से किस चीज़ ने मग़रूर (घमंडी) कर रखा था? ऐ इब्ने आदम (आदम के बेटे)! बता तूने मेरे नबियों को क्या-क्या जवाब दिया। हज़रत उमर रज़ि. ने एक शख़्स को इस आयत की तिलावत करते हुए सुना तो फ़रमाया कि इनसानी जहालत ने इसे ग़ाफ़िल बना रखा है। हज़रत इब्ने उमर और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से भी यही मरवी है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि इसका बहकाने वाला शैतान है। हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अ़याज़ रह. फ़रमाते हैं कि अगर मुझसे यह सवाल हो तो मैं जवाब दूँ कि तेरे लटकाये हुए पर्दों ने (यानी ऐश व आराम ने)। हज़रत अबू बक्र वर्राक़ रह. फ़रमाते हैं कि मैं तो कहूँगा कि करीम के करम ने बेफ़िक्र कर दिया। बाज़ अ़रबी ज़बान के माहिरीन फ़रमाते हैं कि यहाँ पर "करीम" का लफ़्ज़ लाना गोया जवाब की तरफ़ इशारा सिखाना है, लेकिन यह क़ौल कुछ बेहतर नहीं बल्कि सही मतलब यह है कि करम वाले ख़ुदा के करम के मुक़ाबले में बुरे अफ़आ़ल और बुरे आमाल न करने चाहियें। कलबी और मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि अस्वद बिन शुरैक़ के बारे में यह आयत नाज़िल हुई है। उस ख़बीस ने हुज़ूर सल्ल. को मारा था और उसी वक़्त चूँकि उस पर अ़ज़ाब न आया तो वह भूल गया। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

फिर फ़रमाता है कि वह ख़ुदा जिसने तुझे पैदा किया, फिर दुरुस्त (ठीक-ठाक) बनाया, फिर दरमियाना क़द व लम्बाई बख़्शी, अच्छी शक्ल वाला और ख़ूबसूरत बनाया। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि नबी सल्ल. ने अपनी हथेली में थूका, फिर उस पर अपनी उंगली रखकर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है

कि ऐ इनसान! क्या तू मुझे आजिज़ कर सकता है? हालाँकि मैंने तो तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है (यानी वीर्य से) फिर ठीक-ठाक किया। फिर सही लम्बाई वाला बनाया, फिर तुझे पहना-उढ़ाकर चलना फिरना सिखाया। आख़िरकार तेरा ठिकाना ज़मीन के अन्दर है। तूने दौलत ख़ूब जमा की और मेरी राह में देने से रुकता रहा यहाँ तक कि जब दम हलक़ में आ गया तो कहने लगा- मैं सदक़ा करता हूँ। भला अब सदक़े का वक़्त कहाँ? जिस सूरत में चाहा बना दी। यानी बाप की, माँ की, मामूँ की, चचा की सूरत में पैदा किया। एक शख़्स से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया तेरे यहाँ क्या बच्चा होगा? उसने कहा या लड़का या लड़की। फ़रमाया किस के जैसा होगा? कहा या तो मेरे जैसा या उसकी माँ के जैसा। फ़रमाया ख़ामोश रहो, ऐसा न कहो। नुत्फ़ा जब रहम (माँ के गर्भ) में ठहरता है तो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तक नसब उसके सामने होता है। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

فِیۡۤ اَیِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ.

(जिस सूरत में चाहा तुझको तरकीब दे दिया) और फ़रमाया जिस सूरत में उसने चाहा तुझे बनाया। यह हदीस अगर सही होती तो आयत के मायने ज़ाहिर करने के लिये काफ़ी थी, लेकिन इसकी सनद साबित नहीं है। मज़हर बिन हैसम रह. जो इसके रावी हैं यह मतरूकुल-हदीस हैं। उन पर और जिरह भी है। सहीहैन की एक और हदीस में है कि एक शख़्स ने हुज़ूर के पास आकर कहा- मेरी बीवी के जो बच्चा पैदा हुआ है वह सियाह फ़ाम (यानी बहुत काले रंग का) है। आपने फ़रमाया तेरे पास ऊँट भी हैं? कहाँ हाँ। फ़रमाया किस रंग के हैं? कहा सुर्ख़ रंग के। फ़रमाया क्या उनमें कोई चितकब्रा भी है? कहा हाँ। फ़रमाया उस रंग का बच्चा सुर्ख़ नर व मादा के दरमियान कैसे पैदा हुआ? कहने लगा शायद ऊपर की नस्ल की तरफ़ कोई रग खींच ले गयी हो। आपने फ़रमाया इसी तरह तेरे बच्चे के सियाह रंग होने की वजह भी शायद यही हो।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि अगर चाहे बन्दर की सूरत बना दे, अगर चाहे सुअर की। अबू सालेह फ़रमाते हैं कि अगर चाहे कुत्ते की सूरत बना दे, अगर चाहे गधे की, अगर चाहे सुअर की। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह सब सच है और ख़ुदा तआ़ला सब चीज़ों पर क़ादिर है। वह मालिक है, बेहतरीन उम्दा और अच्छी शक्ल और दिल लुभाने वाली पाकीज़ा पाकीज़ा शक्लें सूरतें इनायत फ़रमाता है। उस करीम ख़ुदा की नाफ़रमानियों पर तुम्हें आमादा करने वाली चीज़ सिर्फ़ यही है कि तुम्हारे दिलों में क़ियामत का झुठलाना है। तुम उसका आना ही बरहक़ नहीं जानते, इसलिये उससे बेपरवाही बरत रहे हो। तुम यक़ीन मानो कि तुम पर बड़े रुतबे वाले मुहाफ़िज़ (निगराँ) और कातिब (लिखने वाले) फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। तुम्हें चाहिये कि उनका लिहाज़ रखो। वे तुम्हारे आमाल लिख रहे हैं। तुम्हें बुराई करते हुए शर्म आनी चाहिये। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के ये बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुम से जनाबत (नापाकी) और पाख़ाने की हालत के सिवा किसी वक़्त अलग नहीं होते, तुम उनका एहतिराम (अदब व सम्मान) करो। गुस्ल के वक़्त भी पर्दा कर लिया करो, दीवार से या ऊँट से ही सही। यह भी न हो तो अपने किसी साथी को खड़ा कर लिया करो ताकि वही पर्दा हो जाये। (इब्ने अबी हातिम)

बज़्ज़ार की इस हदीस के अलफ़ाज़ में कुछ तब्दीली है, और उसमें यह भी है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें नंगा होने से मना करता है (यानी बिना सख़्त ज़रूरत के नंगे न होओ)। अल्लाह तआ़ला के उन फ़रिश्तों से शर्माओ। उसमें यह भी है कि गुस्ल के वक़्त भी ये फ़रिश्ते दूर हो जाते हैं। एक और हदीस में है कि जब

Maktab E Ashraf

ये "किरामन कातिबीन" (आमाल लिखने वाले) बन्दे का रोज़ाना नामा-ए-आमाल ख़ुदा तआ़ला के सामने पेश करते हैं तो अगर शुरू और आख़िर में इस्तिग़फ़ार हो तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इसके दरमियान की सब ख़तायें मैंने अपने बन्दे की बख़्श दीं। (बज़्ज़ार) बज़्ज़ार की एक और ज़ईफ़ हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला के बाज़ फ़रिश्ते इनसानों और उनके आमाल को जानते पहचानते हैं, जब किसी बन्दे को नेकी में मशग़ूल पाते हैं तो आपस में कहते हैं कि आज की रात फ़ुलाँ शख़्स निजात पा गया, फ़लाह हासिल कर गया। और अगर इसके ख़िलाफ़ देखते हैं तो आपस में ज़िक्र करते हैं और कहते हैं कि आज की रात फ़ुलाँ शख़्स हलाक व तबाह हो गया।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ۝ ع 19

नेक लोग बेशक आराम में होंगे (13) और बदकार (यानी काफ़िर) लोग बेशक दोज़ख़ में होंगे। (14) बदले के दिन उसमें दाख़िल होंगे। (15) और (फिर दाख़िल होकर) उससे बाहर न होंगे (बल्कि उसमें हमेशा रहना होगा)। (16) और आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (17) (और हम) फिर (दोबारा कहते हैं कि) आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (18) वह दिन ऐसा है जिसमें किसी शख़्स के नफ़े के लिए कुछ बस न चलेगा और पूरी की पूरी हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी। (19)

बदले का दिन जानते हो क्या है?

जो अल्लाह तआ़ला के इताअ़त-गुज़ार फ़रमाँबरदार हैं, गुनाहों से दूर रहते हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला जन्नत की ख़ुशख़बरी देता है। हदीस में है कि उन्हें "अबरार" इसलिये कहा जाता है कि ये अपने माँ-बाप के फ़रमाँबरदार थे और अपनी औलाद के साथ नेक सुलूक करते थे। बदकार लोग हमेशा के अ़ज़ाब में पड़े रहेंगे, क़ियामत वाले दिन जो हिसाब और बदले का दिन है, उनका दाख़िला उसमें होगा, एक घड़ी भी उन पर से अ़ज़ाब हल्का न होगा, न मौत आयेगी, न राहत मिलेगी, न ज़रा सी देर उससे अलग होंगे।

फिर क़ियामत की हैबत (डर, ख़ौफ़) और उस दिन की हौलनाकी ज़ाहिर करने के लिये दो-दो बार फ़रमाया कि तुम्हें किस चीज़ ने मालूम करा दिया कि वह दिन कैसा है? फिर ख़ुद ही बतलाया कि उस दिन कोई किसी को कुछ भी नफ़ा न पहुँचा सकेगा, न अ़ज़ाब से निजात दिलवा सकेगा, हाँ यह और बात है कि किसी की सिफ़ारिश की इजाज़त ख़ुद ख़ुदा तआ़ला अ़ता फ़रमाये। इस मौक़े पर यह हदीस ज़िक्र करना बिल्कुल मुनासिब है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ बनू हाशिम (यानी ऐ मेरे ख़ानदान वालो)! अपनी जानों को जहन्नम से बचाने के लिये नेक आमाल की तैयारियाँ करो। मैं तुम्हें उस दिन ख़ुदा के अ़ज़ाब से बचाने का इख़्तियार नहीं रखता। यह हदीस सूरः शुअ़रा की तफ़सीर के आख़िर में गुज़र चुकी है, यहाँ यह भी फ़रमाया कि उस दिन हुक्म सिर्फ़ अल्लाह ही का होगा। जैसे एक दूसरी जगह इरशाद है:

Maktab E Ashraf

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ.

एक और जगह हैः

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ.

एक और जगह फ़रमायाः

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ.

मतलब सब का यही है कि मुल्क व मिल्कियत उस दिन सिर्फ़ एक अल्लाह क़स्हार व रहमान की ही होगी। अगरचे आज भी उसी की मिल्कियत है, वही तन्हा मालिक है, उसी का हुक्म चलता है, मगर वहाँ तो कोई ज़ाहिरी हुकूमत, मिल्कियत और हुक्म वाला भी न होगा।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः इन्फ़ितार की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन

सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 36 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करने वालों की (1) कि जब लोगों से (अपना हक़) नाप कर लें तो पूरा लें (2) और जब उनको नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। (3) (आगे नाप-तौल में कमी करने वालों को धमकाया और तंबीह की जा रही है कि) क्या उन लोगों को इसका यक़ीन नहीं है कि ज़िन्दा करके उठाए जाएँगे (4) एक बड़े दिन में। (5) जिस दिन तमाम आदमी रब्बुल-आ़लमीन के सामने खड़े होंगे। (6)	وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ○ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ○ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ○ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ○ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ○ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

नाप-तौल में कमी करने वालों का अन्जाम

नसाई और इब्ने माजा में है, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब नबी सल्ल. मदीना में तशरीफ़ लाये उस वक़्त मदीना वाले नाप-तौल के एतिबार से बहुत बुरे थे। जब यह आयत उतरी फिर उन्होंने नाप-तौल बहुत दुरुस्त कर ली। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत हिलाल बिन तलक़ ने एक मर्तबा

Maktab E Ashraf

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से कहा कि मक्के मदीने वाले बहुत ही उम्दा नाप-तौल रखते हैं। आपने फ़रमाया क्यों न रखते जबकि ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है:

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ.......... الخ.

(कि बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये) पस तत्फ़ीफ़ से मुराद नाप-तौल की कमी है, चाहे इस सूरत में हो कि औरों से लेते वक़्त ज़्यादा ले लिया और देते वक़्त कम दे दिया। इसी लिये उन्हें धमकाया कि ये नुक़सान उठाने वाले और हलाक होने वाले हैं। जब अपना हक़ लें तो पूरा लें बल्कि ज़्यादा ले लें और दूसरे को देने बैठें तो कम दें।

क़ुरआने करीम ने नाप-तौल दुरुस्त और ठीक करने का हुक्म इस आयत में भी दिया है:

اَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ.

यानी जब नापो तो नापो पूरा और वज़न भी सीधी तराज़ू से तौल कर दिया करो। एक और जगह हुक्म है:

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ...... الخ.

यानी नाप-तौल इन्साफ़ के साथ किया करो। हम किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते। एक और जगह फ़रमाया:

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ.

यानी तौल को क़ायम रखो और मीज़ान (तराज़ू) को घटाओ नहीं (यानी डंडी न मारो)।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को इसी बुरी आ़दत की वजह से ख़ुदा तआ़ला ने ग़ारत व बरबाद कर दिया। यहाँ भी अल्लाह तआ़ला डरा रहा है कि लोगों के हक़ मारने वाले क्या क़ियामत के दिन से नहीं डरते? जिस दिन ये उस पाक ज़ात के सामने खड़े किये जायेंगे जिस पर न तो कोई छुपी हुई बात पोशीदा है न ज़ाहिर बात। वह दिन भी निहायत हौलनाक व ख़तरनाक होगा, बड़ी घबराहट और परेशानी वाला दिन होगा। उस दिन ये लोगों को नुक़सान पहुँचाने वाले जहन्नम की भड़कती हुई आग में दाख़िल होंगे, जिस दिन लोग ख़ुदा तआ़ला के सामने पेश होंगे इस हालत में कि वे नंगे पैर, नंगे बदन और बिना ख़तना हुए होंगे, वह जगह भी निहायत तंग व तारीक होगी और मैदान आफ़तों व मुसीबतों से भरा होगा, वो मुसीबतें नाज़िल हो रही होंगे कि दिल परेशान होंगे, हवास बिगड़े हुए होंगे, होश जाता रहा होगा। सही हदीस में है कि आधे आधे कानों तक पसीना पहुँच गया होगा। (मुवत्ता इमाम मालिक रह.)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि उस दिन अल्लाह रहमान की बड़ाई के सामने सब खड़े कपकपा रहे होंगे। एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन बन्दों से सूरज इस क़द्र क़रीब हो जायेगा कि एक या दो नेज़े के बराबर ऊँचा होगा और सख़्त तेज़ होगा, हर शख़्स अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ अपने पसीने में ग़र्क़ होगा। बाज़ की एड़ियों तक पसीना होगा, बाज़ के घुटनों तक, बाज़ की कमर तक बाज़ को तो उनका पसीना लगाम बना हुआ होगा। एक और हदीस में है कि धूप इस क़द्र तेज़ होगी कि खोपड़ी भुन्ना उठेगी, और इस तरह उसमें जोश उठने लगेगा जिस तरह हण्डिया में जोश आने के वक़्त आवाज़ पैदा होती है। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने मुँह पर अपनी उंगलियाँ रखकर बताया कि इस तरह पसीने की लगाम चढ़ी हुई होगी। फिर आपने हाथ से इशारा करके बताया कि बाज़ बिल्कुल डूबे हुए होंगे। एक

और हदीस में है कि सत्तर साल तक ख़ामोश खड़े रहेंगे, यह भी कहा गया है कि तीन सौ साल तक खड़े रहेंगे, और यह भी कहा गया है कि चालीस हज़ार साल तक खड़े रहेंगे और दस हज़ार साल में फ़ैसला किया जायेगा। सही मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरफ़ूअ़न मरवी है कि उस दिन में जिसकी मिक़्दार (लम्बाई) पचास हज़ार साल की होगी।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने बशीर ग़िफ़ारी रज़ि. से फ़रमाया- तू क्या करेगा जिस दिन लोग ख़ुदा-ए-रब्बुल् आ़लमीन के सामने तीन सौ साल तक खड़े रहेंगे, न तो कोई ख़बर आसमान से आयेगी न कोई हुक्म किया जायेगा। हज़रत बशरी रज़ि. कहने लगे- अल्लाह ही मददगार है। आपने फ़रमाया सुनो! जब बिस्तर पर जाओ तो अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के दिन की तकलीफ़ों और हिसाब की बुराई से पनाह माँग लिया करो। सुनन अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. क़ियामत के दिन खड़े होने की जगह की तंगी से पनाह माँगा करते थे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि चालीस साल तक लोग सर ऊँचा किये खड़े रहेंगे, कोई बोलेगा नहीं, नेक व बद को पसीने की लगामें चढ़ी हुई होंगी। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि सौ साल तक खड़े रहेंगे। (इब्ने जरीर)

अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल. जब रात को उठकर तहज्जुद की नमाज़ शुरू करते तो दस मर्तबा ''अल्लाहु अक्बर'' कहते, दस मर्तबा ''अल्हम्दु लिल्लाह'' कहते, दस मर्तबा ''सुब्हानल्लाह'' कहते, दस मर्तबा ''अस्तग़फ़िरुल्लाह'' कहते, फिर कहते ''अल्लाहुम्मग़फ़िर् ली वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी व आ़फ़िनी'' (ख़ुदाया मुझे बख़्श, मुझे हिदायत दे, मुझे रोज़ियाँ दे और आ़फ़ियत इनायत फ़रमा)। फिर अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के दिन के मक़ाम की तंगी से पनाह माँगते।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝ وَمَآ
اَدْرٰكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ وَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ
مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّهُمْ

हरगिज़ (ऐसा) नहीं होगा, (यानी काफ़िर) लोगों का आमाल-नामा 'सिज्जीन' में रहेगा। (7) और (आगे डराने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि 'सिज्जीन' में रखा हुआ आमाल-नामा क्या चीज़ है? (8) वह एक निशान लगाया हुआ दफ़्तर है। (9) उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) झुठलाने वालों को बड़ी ख़राबी होगी। (10) जो जज़ा के दिन को झुठलाते हैं। (11) और उस (बदले के दिन को तो वही शख़्स झुठलाता है जो बन्दगी की हद) से गुज़रने वाला हो (और) मुजरिम हो। (12) (और) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो यूँ कह देता हो कि बे-सनद बातें हैं, अगलों से नक़ल होती हुई चली आती हैं। (13) हरगिज़ (ऐसा) नहीं बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) उनके दिलों पर उनके (बुरे) आमाल का ज़ंग बैठ गया है। (14)

Maktab E Ashraf

हरगिज़ (ऐसा) नहीं, ये लोग उस दिन (एक तो) अपने रब (का दीदार देखने) से रोक दिए जाएँगे। (15) फिर (सिर्फ़ इसी पर बस न होगा बल्कि) ये दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (16) फिर (उनसे) कहा जाएगा, यही है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (17)	عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

Maktab E Ashraf

सिज्जीन क्या है?

मतलब यह है कि बुरे लोगों का ठिकाना सिज्जीन है। यह लफ़्ज़ "फ़ईलुन" के वज़न पर "सिजनुन्" से लिया गया है। सिज्न तंगी को कहते हैं। फिर उसकी और ज़्यादा बुराईयाँ बयान करने के लिये फ़रमाया कि तुम्हें उसकी हक़ीक़त मालूम नहीं, वह दर्दनाक और हमेशा के दुख-दर्द की जगह है। नक़ल है कि यह जगह सातों ज़मीनों के नीचे है। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि. की एक लम्बी हदीस में यह गुज़र चुका है कि काफ़िर की रूह के बारे में अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि इसकी किताब सिज्जीन में लिख लो और सिज्जीन सातों ज़मीन के नीचे है। कहा गया है कि यह सातवीं ज़मीन के नीचे सब्ज़ रंग की एक चट्टान है, और कहा गया है कि जहन्नम में एक गड्ढा है। इब्ने जरीर की एक ग़रीब मुन्कर और ग़ैर-सही हदीस में है कि "फ़लक़" जहन्नम का एक मुँह बन्द किया हुआ कुआँ है, और सिज्जीन खुले मुँह वाला गड्ढा है। सही बात यह है कि इसके मायने हैं तंग जगह और जेलख़ाने के। नीचे की मख़्लूक़ में तंगी है और ऊपर की मख़्लूक़ में कुशादगी (खुलापन और आसानी)। आसमानों में हर ऊपर वाला आसमान नीचे वाले आसमान से कुशादा (खुला हुआ) है और ज़मीन में हर नीचे की ज़मीन ऊपर की ज़मीन से तंग है, यहाँ तक कि बिल्कुल नीचे की तह बहुत तंग है और सबसे ज़्यादा तंग जगह सातवीं ज़मीन का बीच का केन्द्र है। चूँकि काफ़िरों के लौटने की जगह जहन्नम है और वह सब से नीचे है। एक जगह फ़रमाया है:

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ.

यानी फिर हमने उसे नीचों में भी नीचा कर दिया। हाँ जो ईमान वाले और नेक आमाल वाले हैं।

ग़र्ज़ कि सिज्जीन एक तंग और तह की जगह है। जैसे क़ुरआने करीम ने एक और जगह फ़रमाया है:

إِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا.

जब वे जहन्नम की किसी तंग जगह में हाथ-पाँव जकड़ कर डाल दिये जायेंगे तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे।

"किताबुम् मरक़ूम" यह सिज्जीन की तफ़सीर नहीं बल्कि यह तफ़सीर है उसकी जो उनके लिये लिखा जा चुका है, कि आख़िरकार जहन्नम में पहुँचेंगे। उनका यह नतीजा लिखा जा चुका है और इससे फ़रागत हासिल कर ली गयी है। न उसमें अब कुछ ज़्यादती होगी न कमी। तो फ़रमाया- उनका अन्जाम सिज्जीन होना हमारी किताब में पहले से ही लिखा जा चुका है। उन झुठलाने वालों को उस दिन ख़राबी होगी। उन्हें जहन्नम का क़ैद ख़ाना और रुस्वाई वाले दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। "वैल" की मुकम्मल तफ़सीर गुज़र चुकी है। ख़ुलासा यह है कि उनकी हलाकत, बरबादी और ख़राबी है। जैसे कहा जाता है "वैलुन् लिफ़ुलानिन्" यानी

Maktab E Ashraf

फ़ुलों के लिये हलाकत और तबाही है। (मुस्नद और सुनन)

"वैलुन्" की हदीस में है कि वैल (ख़राबी) है उस शख़्स के लिये जो कोई झूठी बात कहकर लोगों को हंसाना चाहे उसे "वैल" है उसे "वैल" है। फिर उन झुठलाने वालों बदकार काफ़िरों के बारे में और ज़्यादा खोलकर बयान फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जो बदले के दिन (यानी क़ियामत) को नहीं मानते, उसे ख़िलाफ़े अ़क्ल कहकर वाक़े होने को मुहाल जानते हैं। फिर फ़रमाया कि क़ियामत का झुठलाना उन्हीं लोगों का काम है जो अपने कामों में हद से गुज़र जायें। हराम काम करने लगें या जायज़ कामों में हद से बढ़ जायें।

इसी तरह अपने अक़्वाल (बातों) में गुनाहगार हों, झूठ बोलें, वायदा-ख़िलाफ़ी करें, गालियाँ बकें वग़ैरह। ये वे लोग हैं कि हमारी आयतों को सुनकर उन्हें झुठलाते हैं, बदगुमानी करते हैं और बेझिझक कह गुज़रते हैं कि ये बातें तो पहली किताबों से ली गयी हैं। जैसे एक और जगह इरशाद फ़रमायाः

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ.

जब उन्हें कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या कुछ नाज़िल फ़रमाया है? तो कहते हैं कि पहले लोगों के अफ़साने हैं। एक और जगह फ़रमायाः

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا.

यानी ये कहते हैं कि पहलों के क़िस्से हैं जो इसे सुबह व शाम लिखवाये जा रहे हैं। अल्लाह तआ़ला उन्हें जवाब में फ़रमाता है कि वास्तविकता उनके क़ौल और उनके ख़्याल के मुताबिक़ नहीं, बल्कि दर असल यह क़ुरआन अल्लाह का कलाम है, उसकी वही है, जो उसने अपने बन्दे पर नाज़िल की है। हाँ उनके दिलों पर उनके बुरे आमाल ने पर्दे डाल दिये हैं, गुनाहों और ख़ताओं की अधिकता ने उनके दिलों को ज़ंग लगा दिया है, काफ़िरों के दिलों पर 'रैन" होता है और नेकोकार लोगों के दिलों पर "ग़ैम" होता है। तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- बन्दा गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक सियाह नुक्ता (काला धब्बा) हो जाता है, अगर तौबा कर लेता है तो उसकी सफ़ाई हो जाती है और अगर गुनाह करता है तो वह सियाही फैलती जाती है। इसी का बयान "कल्ला बल् रा-न" में है। नसाई शरीफ़ के अलफ़ाज़ में कुछ भिन्नता भी है।

मुस्नद अहमद में भी यह हदीस है, हज़रत हसन बसरी रह. वग़ैरह का फ़रमान है कि गुनाहों पर गुनाह करने से दिल अंधा हो जाता है और फिर मर जाता है। फिर फ़रमाया कि ये लोग उन अ़ज़ाबों में मुब्तला होकर अल्लाह के दीदार से भी मेहरूम और आड़ में कर दिये जायेंगे।

फ़ायदाः हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि इस आयत का साफ़ मफ़हूम यही है और दूसरी जगह खुले अलफ़ाज़ में भी यह बयान मौजूद है। फ़रमान हैः

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ.

यानी उस दिन बहुत से चेहरे तरोताज़ा (ख़ुश) होंगे और अपने रब को देख रहे होंगे। सही और मुतवातिर (सनद के एतिबार से निरन्तरता वाली) हदीसों से भी यह साबित है कि ईमान वाले क़ियामत वाले दिन अपने रब तआ़ला को अपनी आँखों से क़ियामत के मैदान में और जन्नत के नफ़ीस बाग़ीचों में देखेंगे।

हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि हिजाब (पर्दे) हट जायेंगे और मोमिन अपने रब को देखेंगे और काफ़िरों को पर्दों के पीछे कर दिया जायेगा। अलबत्ता मोमिन हर सुबह व शाम परवर्दिगारे आ़लम का दीदार

Maktab E Ashraf

हासिल करेंगे। या इसी जैसा और कलाम है।

फिर फ़रमाता है कि ये न सिर्फ़ ख़ुदा से ही मेहरूम रहेंगे बल्कि ये लोग जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे और इन्हें हिक़ारत, ज़िल्लत और डाँट-डपट के तौर पर गुस्से के साथ कहा जायेगा कि यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ۝ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝

(ये जो मोमिनों के अज्र व सवाब का इनकार करने वाले हैं) हरगिज़ (ऐसा) नहीं, नेक लोगों का आमाल-नामा इल्लिय्यीन में रहेगा। (18) और (आगे बड़ाई व रुतबा जताने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि इल्लिय्यीन में रखा हुआ आमाल-नामा क्या चीज़ है? (19) वह एक निशान लगाया हुआ दफ़्तर है (20) जिसको मुक़र्रब फ़रिश्ते (शौक़ से) देखते हैं। (21) (आगे उनके आख़िरत के बदले का बयान है कि) नेक लोग बड़ी राहत व आराम में होंगे। (22) मसेहरियों पर (बैठे जन्नत की अ़जीब-अ़जीब चीज़ों को) देखते होंगे। (23) ऐ मुख़ातब! तू उनके चेहरों में राहत व आराम की ख़ुशी व ताज़गी देखेगा। (24) (और) उनको पीने के लिए मुहर-बन्द ख़ालिस शराब मिलेगी (25) जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और हिर्स करने वालों को ऐसी चीज़ की हिर्स करनी चाहिए। (26) और उस (शराब) की मिलावट तसनीम (के पानी) की होगी। (27) यानी एक ऐसा चश्मा जिससे मुक़र्रब बन्दे पियेंगे। (28)

अ़िल्लिय्यीन क्या है?

बदकार लोगों का हश्र बयान करने के बाद अब नेक लोगों का बयान हो रहा है कि उनका ठिकाना अ़िल्लिय्यीन है जो कि सिज्जीन के बिल्कुल उलट है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने हज़रत कअ़ब रज़ि. से सिज्जीन का सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया कि वह सातवीं ज़मीन है और उसमें काफ़िरों की रूहें हैं। और अ़िल्लिय्यीन के सवाल के जवाब में फ़रमाया- यह सातवाँ आसमान है और उसमें मोमिनों की रूहें हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुराद इससे जन्नत है। औफ़ी रह. आप से रिवायत करते हैं कि उनके आमाल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक आसमान में हैं। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह अ़र्श का दाहिना पाया है। कुछ और हज़रात कहते हैं कि यह "सिद्‌रतुल-मुन्तहा" के पास है। ज़ाहिर यह है कि लफ़्ज़ "उलुव्वुन" (यानी बुलन्दी) से लिया गया है, जिस क़द्र कोई चीज़ ऊँची और बुलन्द होगी उसी क़द्र बड़ी और कुशादगी वाली

Maktab E Ashraf

होगी। इसी लिये उसकी बड़ाई और शान के इज़हार के लिये फ़रमाया कि तुम्हें उसकी हक़ीक़त मालूम ही नहीं। फिर इसकी ताकीद की कि यह यक़ीनी चीज़ है, किताब में लिखी जा चुकी है कि ये लोग इ़ल्लिय्यीन में जायेंगे जिसके पास हर आसमान के मुक़र्रब (ख़ास और अल्लाह के नज़दीकी) फ़रिश्ते जाते हैं।

फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ये नेकोकार हमेशगी वाली नेमतों और बाग़ात में होंगे और ख़ुदा तआ़ला के आ़म फ़ज़्ल व करम इन पर बारिश की तरह बरस रहे होंगे। ये मसेहरियों पर बैठे होंगे, अपने मुल्क व माल, नेमतों व राहतों, शान व रुतबे और माल व मता को देख-देखकर ख़ुश हो रहे होंगे। यह ख़ैर व फ़ज़्ल, यह नेमत व रहमत न कभी कम होगी न गुम होगी, न घटेगी न मिटेगी। और यह मायने भी हैं कि अपनी आराम की जगहों में बादशाहत के तख़्त पर बैठे अल्लाह के दीदार से मुशर्रफ़ होते रहेंगे। तो गोया कि बदकारों और बेईमानों के बिल्कुल विपरीत होंगे। उन पर अल्लाह का दीदार हराम था इनके लिये हर वक़्त इजाज़त है। जैसे कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की हदीस में है जो पहले बयान हो चुकी कि सब से नीचे दर्जे का जन्नती अपने मुल्क और मिल्कियत को दो हज़ार साल की राह तक देखेगा और सब से आख़िर की चीज़ें इस तरह उसकी नज़रों के सामने होंगी जिस तरह सब से शुरू की चीज़ें, और आला दर्जे के जन्नती तो दिन भर में दो-दो मर्तबा अल्लाह के दीदार की नेमत से अपने दिल को मसरूर और अपनी आँखों को रोशन करेंगे। अगर कोई उनके चेहरे पर नज़र डाले तो एक ही निगाह में उनकी ख़ुशहाली, ख़ुशी व मुसर्रत, तरोताज़गी, शान व शौकत और नूरानियत को देखकर उनका मर्तबा मालूम कर ले और समझ ले कि राहत व आराम में ख़ुश व ख़ुर्म हैं। जन्नती शराब का दौर चलता रहता है "रहीक़" जन्नत की एक क़िस्म की शराब है। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाये उसे अल्लाह तआ़ला "रहीक़" जन्नत की मुहर वाली शराब पिलायेगा, और जो किसी भूखे मुसलमान को खाना खिलाये उसे अल्लाह तआ़ला जन्नत के मेवे खिलायेगा। और जो किसी नंगे मुसलमान को कपड़ा पहनाये अल्लाह तआ़ला उसे जन्नती सब्ज़ रेशम के कपड़े पहनायेगा। (मुस्नद अहमद)

"ख़िताम" के मायने मिलाने के हैं। उसे ख़ुदा तआ़ला ने पाक साफ़ कर दिया है और मुश्क की मुहर लगा दी है। यह भी मायने हैं कि अन्जाम उसका मुश्क है, यानी कोई बदबू नहीं बल्कि मुश्क की सी ख़ुशबू है। चाँदी की तरह सफ़ेद रंग की शराब है, जिसकी मुहर लगेगी। इस क़द्र ख़ुशबू वाली है कि अगर किसी दुनिया वाले की उंगली उस पर लग जाये फिर अगर वह उसी वक़्त निकाल ले तो तमाम दुनिया उसकी ख़ुशबू से महक जायेगी और "ख़िताम" के मायने ख़ुशबू के भी किये गये हैं।

फिर फ़रमाता है कि हिर्स करने वाले (यानी एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने वाले, और किसी चीज़ को हासिल करने के लिये उसके पीछे पड़ने वाले), फ़ख़्र करने वाले और ज़्यादा समेटने वालों को चाहिये कि उसकी तरफ़ तवज्जोह करें। जैसे एक और जगह है:

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُوْنَ.

ऐसी चीज़ों के लिये अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिये (यानी यह है एक दूसरे से आगे बढ़ने और कोशिश करने की चीज़)। "तसनीम" जन्नत की बेहतरीन शराब का नाम है। यह एक नहर है जिससे साबिक़ीन (आगे बढ़ने वाले, यानी अल्लाह के ज़्यादा ख़ास) लोग तो बराबर पिया करते हैं और दाहिने हाथ वाले अपनी शराब "रहीक़" में मिलाकर पीते हैं।

Maktab E Ashraf

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا
يَضْحَكُونَ ○ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ○
وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا
فَكِهِينَ ○ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ
لَضَالُّونَ ○ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ○
فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ
يَضْحَكُونَ ○ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ○
هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ○ ع ١ ٨

(आगे मुसलमान और काफ़िर दोनों की दुनिया व आख़िरत का हाल मजमूई तौर पर बयान किया गया है, यानी) जो लोग मुजरिम थे (यानी काफ़िर) वे ईमान वालों से (उनका अपमान करने के तौर पर दुनिया में) हंसा करते थे। (29) और ये (ईमान वाले) जब उन (काफ़िरों) के सामने से होकर गुज़रते थे तो आपस में आँखों से इशारे करते थे। (30) और जब अपने घरों में जाते तो (वहाँ भी उनका तज़्किरा करके) दिल्लगियाँ करते। (31) और जब उनको देखते तो यूँ कहा करते कि ये लोग यक़ीनन ग़लती में हैं (क्योंकि काफ़िर लोग इस्लाम को ग़लती समझते थे)। (32) हालाँकि ये (काफ़िर) उन (मुसलमानों) पर निगरानी करने वाले करके नहीं भेजे गए। (33) सो आज (क़ियामत के दिन) ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे। (34) मसेहरियों पर (बैठे उनका हाल) देख रहे होंगे। (35) वाक़ई काफ़िरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (36)

मोमिनों का मज़ाक़ और हंसी उड़ाना

यानी दुनिया में तो इन काफ़िरों ने ख़ूब मज़े उड़ाये थे, ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते रहे, चलते फिरते आवाज़ें कसते रहे, अपमान व तौहीन की निगाह से देखते रहे और अपनों में जाकर ख़ूब बातें बनाते थे। जो चाहते थे पाते थे, लेकिन शुक्र तो कहाँ और कुफ़्र पर आमादा होकर मुसलमानों को सताने के पीछे पड़े रहते थे। और चूँकि मुसलमान इनकी मानते न थे तो यह उन्हें गुमराह कहा करते थे। ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि ये लोग मुहाफ़िज़ (निगराँ और दारोग़ा) बनाकर तो नहीं भेजे गये, इन्हें मोमिनों की क्या पड़ी है? क्यों हर वक़्त उनके पीछे पड़े हैं और उनके आमाल व अफ़आ़ल की देखभाल रखते हैं? और ताने भरी बातें बनाते रहते हैं। जैसे एक और जगह इरशाद है:

اِخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ...... الخ.

यानी इस जहन्नम में पड़े झुलसते रहो, मुझसे बात न करो। मेरे ख़ास बन्दे कहते थे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान लाये तू हमें बख़्श और हम पर रहम कर, तू सब से बड़ा रहम व करम करने वाला है, तो तुमने उन्हें मज़ाक़ में उड़ाया और इस क़द्र ग़ाफ़िल हुए कि मेरी याद भुला बैठे और उनसे हंसी-मज़ाक़ करने लगे। देखो आज मैंने उन्हें उनके सब्र का यह बदला दिया है कि वे हर तरह कामयाब हैं।

यहाँ भी इसके बाद इरशाद फ़रमाता है कि आज क़ियामत के दिन ईमान वाले उन बदकारों पर हंस रहे

हैं और तख़्तों पर बैठे अपने ख़ुदा को देख रहे हैं, जो साफ़ सुबूत है इस बात का कि ये गुमराह न थे चाहे तुम इन्हें रास्ते भटका हुआ कहा करते थे, बल्कि ये दर असल अल्लाह के दोस्त और वली थे, उसके ख़ास और क़रीबी बन्दों में थे। इसी लिये आज ख़ुदा का दीदार इनकी निगाहों के सामने है। ये ख़ुदा के मेहमान हैं और उसके इज़्ज़त वाले घर में ठहरे हुए हैं। जैसा कुछ उन काफ़िरों ने मुसलमानों के साथ दुनिया में किया था उसका पूरा बदला क्या उन्हें आख़िरत में मिल गया या नहीं? उनके मज़ाक़ के बदले आज उन पर हंसी उड़ी। यह उन्हें घटाते थे, ख़ुदा ने उन्हें बढ़ाया। ग़र्ज़ कि पूरा-पूरा बदला दे दिया गया।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः इन्शिक़ाक़

सूरः इन्शिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 25 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुवत्ता इमाम मालिक में है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और उसमें "इज़स्समाउन् शक़्क़त" (यानी यही सूरत) पूरी पढ़ी और सज्दा किया और फ़ारिग़ होकर फ़रमाया- रसूलुल्लाह सल्ल. ने भी इसके पढ़ते हुए सज्दा किया था। यह हदीस मुस्लिम और नसाई में भी है। बुख़ारी में है, हज़रत अबू राफ़े रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पीछे इशा की नमाज़ पढ़ी, आपने उसमें सूरः "इज़स्समाउन् शक़्क़त" की तिलावत की और सज्दा किया। मैंने पूछा तो जवाब दिया कि मैंने अबुल-क़ासिम (यानी हुज़ूर सल्ल.) के पीछे सज्दा किया है। (यानी हुज़ूर ने भी इस सूरत को नमाज़ में पढ़ा और सज्दे की आयत पर सज्दा किया और मुक़्तदियों ने भी सज्दा किया) पस मैं तो जब तक आप से मिलूँगा (यानी मुझे मौत आयेगी) उस वक़्त तक (इस जगह पर) सज्दा करता रहूँगा। इस हदीस की सनदें और भी हैं और सही मुस्लिम शरीफ़ और सुनन नसाई में मरवी है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- हमने रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ सूर "इज़स्समाउन् शक़्क़त" और सूरः "इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी......" में सज्दा किया।

जब (दूसरी बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमान फट जाएगा (ताकि उसमें से बादल और फ़रिश्ते नाज़िल हों) (1) और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह (आसमान) इसी लायक़ है। (2) और जब ज़मीन खींचकर बढ़ा दी जाएगी (3) और (वह ज़मीन) अपने अन्दर की चीज़ों (यानी मुर्दों) को बाहर उगल देगी और ख़ाली हो	اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ٥ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ٥ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ٥ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ٥ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ٥ يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

اِلٰی رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ﴿۶﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿۷﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿۸﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿۹﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿۱۰﴾ فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿۱۱﴾ وَّيَصْلٰی سَعِيْرًا ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِیْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿۱۴﴾ بَلٰۤی ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿۱۵﴾

जाएगी। (4) और अपने रब का हुक्म सुन लेगी, और वह इसी लायक़ है। (5) ऐ इनसान! तू अपने रब के पास पहुँचने तक (यानी मरने के वक़्त तक) काम में कोशिश कर रहा है, फिर (क़ियामत में) उस (काम की जज़ा) से जा मिलेगा। (6) तो (उस दिन) जिस शख़्स का आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा (7) सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा (8) और (वह उससे फ़ारिग़ होकर) अपने मुताल्लिक़ीन के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा। (9) और जिस शख़्स का आमाल-नामा (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से मिलेगा (10) सो वह मौत को पुकारेगा (11) और जहन्नम में दाख़िल होगा। (12) यह शख़्स (दुनिया में) अपने मुताल्लिक़ीन में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था (यहाँ तक कि ख़ुशी की ज़्यादती में आख़िरत को झुठलाया करता था)। (13) उसने ख़्याल कर रखा था कि उसको (ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। (14) (आगे इस ख़्याल का रद्द है कि लौटना) क्यों न होता, उसका रब उसको ख़ूब देखता था। (15)

क़ियामत के दिन के कुछ मनाज़िर (दृश्य)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क़ियामत के दिन आसमान फट जायेगा। वह अपने रब के हुक्म की तामील के लिये अपने कान लगाये हुए होगा। फटने का हुक्म पाते ही फट-फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। उसे भी चाहिये कि ख़ुदा तआ़ला का हुक्म बजा लाये, इसलिये कि यह उस ख़ुदा का हुक्म है जिसे कोई रोक नहीं सकता। जिससे बड़ा और कोई नहीं, जो सब पर ग़ालिब है उस पर ग़ालिब कोई नहीं। हर चीज़ उसके सामने मजबूर है। और ज़मीन फैला दी जायेगी, बिछा दी जायेगी और खोल दी जायेगी।

हदीस में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला ज़मीन को चमड़े की तरह खींच लेगा यहाँ तक कि ख़ुदा की क़सम इससे पहले उसने कभी इसे नहीं देखा। मैं कहूँगा ख़ुदाया जिब्राईल ने मुझसे कहा था कि यह तेरे भेजे हुए मेरे पास आते हैं, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा सच कहा था। मैं कहूँगा ख़ुदाया फिर मुझे शफ़ाअ़त की इजाज़त हो। चुनाँचे मक़ामे महमूद में खड़ा होकर मैं शफ़ाअ़त करूँगा और कहूँगा ख़ुदाया! तेरे इन बन्दों ने ज़मीन के कोने-कोने पर (यानी हर जगह) तेरी इबादत की है। (इब्ने जरीर)

फिर फ़रमाता है कि ज़मीन अपने अन्दर के तमाम मुर्दे उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी। यह भी रब के फ़रमान की मुन्तज़िर होगी और इसे भी यही लायक़ है। फिर इरशाद होता है कि ऐ इनसान! तू कोशिश

करता रहेगा, अपने रब की तरफ़ आगे बढ़ता रहेगा और आमाल करता रहेगा यहाँ तक कि एक दिन उससे मिल जायेगा और उसके सामने खड़ा होगा और अपने आमाल और अपनी कोशिश को अपने सामने देख लेगा। अबू दाऊद तयालिसी में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद! जी ले जब तक चाहे, आख़िरकार मौत आने वाली है। जिससे चाहे ताल्लुक़ व उन्सियत पैदा कर ले एक दिन उससे जुदाई होनी है। जो चाहे अ़मल कर ले एक दिन उसकी मुलाक़ात होने वाली है। ख़ुदा से तेरी मुलाक़ात होने वाली है। वह तुझे तेरे तमाम आमाल का बदला देगा और तेरी तमाम कोशिशों का फल तुझे अ़ता फ़रमायेगा। दोनों ही बातें आपस में एक दूसरे को लाज़िम हैं।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ऐ इनसान! तू कोशिश करने वाला है, लेकिन अपनी कोशिश में कमज़ोर है, जिससे यह हो सके कि अपनी तमाम की तमाम कोशिश नेकियों की करे तो वह कर ले, दर असल नेकी की क़ुदरत और बुराईयों से बचने की ताक़त सिवाय अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ के हासिल नहीं हो सकती। फिर फ़रमाया कि जिसके दाहिने हाथ में उसका आमाल नामा मिल जायेगा उसका हिसाब बिना सख़्ती के बहुत आसानी से होगा, उसकी छोटी-मोटी ख़तायें माफ़ भी हो जायेंगी, और जिससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लिया जायेगा वह हलाकत से न बचेगा। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिससे हिसाब में पूछगछ और छानबीन होगी वह तबाह होगा। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि क़ुरआन में तो यह है कि नेक लोगों का भी हिसाब होगाः

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيرًا.

आपने फ़रमाया- दर असल यह वह हिसाब नहीं, यह तो सिर्फ़ पेशी है, जिससे हिसाब में पूछगछ होगी वह बरबाद होगा। (मुस्नद अहमद)

एक दूसरी रिवायत में है कि यह बयान फ़रमाते हुए आप सल्ल. ने अपनी उंगली अपने हाथ पर रखकर जिस तरह कोई चीज़ कुरेदते हों उस तरह उसे हिला-जुलाकर बतलाया। मतलब यह है कि जिससे पूछताछ और खोद-कुरेद होगी वह अ़ज़ाब से बच नहीं सकता। ख़ुद हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि जिससे बाक़ायदा हिसाब होगा वह बिना अ़ज़ाब के नहीं रह सकता। और "हिसाबे यसीर" (आसान हिसाब) से मुराद सिर्फ़ पेशी है, हालाँकि ख़ुदा तआ़ला ख़ूब देखता रहा है। हज़रत सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि मैंने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. से सुना कि आप नमाज़ में यह दुआ़ माँग रहे थे "अल्लाहुम्-म हासिब्नी हिसाबंय्-यसीरा" (कि या अल्लाह मेरा हिसाब आसान फ़रमा) जब आप सल्ल. फ़ारिग़ हुए तो मैंने पूछा- हुज़ूर! यह आसान हिसाब क्या है? फ़रमाया सिर्फ़ नामा-ए-आमाल पर नज़र डाल ली जायेगी और कह दिया जायेगा जाओ हमने दरगुज़र किया। लेकिन ऐ आ़यशा! जिससे ख़ुदा तआ़ला हिसाब लेगा वह हलाक होगा (गोया कि हिसाब होने का मतलब होगा अ़ज़ाब में फंस जाना)। (मुस्नद अहमद)

ग़र्ज़ कि जिसके दायें हाथ में नामा-ए-आमाल आयेगा वह ख़ुदा के सामने पेश होते ही रुख़्सत पा जायेगा और अपने यार-रिश्तेदार और मिलने वालों में ख़ुश-ख़ुश जन्नत में वापस आयेगा। तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम लोग आमाल कर रहे हो और हक़ीक़त का इल्म किसी को नहीं, जल्द ही वह वक़्त आने वाला है कि तुम अपने आमाल को पहचान लोगे। बाज़ वे लोग होंगे कि हंसी-ख़ुशी अपनों से आ मिलेंगे और बाज़ ऐसे होंगे कि रंजीदा, ग़मगीन और नाख़ुश वापस आयेंगे। और जिसे पीठ पीछे से बायें हाथ में हाथ मोड़कर नामा-ए-आमाल दिया जायेगा वह नुक़सान और तबाही की पुकार

Maktab E Ashraf

पुकारेगा, हलाकत और मौत को बुलायेगा और जहन्नम में जायेगा। दुनिया में ख़ूब ख़ुश और मस्त था, बेफ़िक्री से मज़े कर रहा था, आख़िरत का ख़ौफ़ अन्जाम की परवाह बिल्कुल न थी, अब उसको ग़म व रंज, मायूसी व मेहरूमी और रंजीदगी ने हर तरफ़ से घेर लिया। यह समझ रहा था कि मौत के बाद ज़िन्दगी नहीं, इसे यक़ीन न था कि लौटकर ख़ुदा के पास भी जाना है।

फिर फ़रमाता है कि हाँ-हाँ उसे ख़ुदा ज़रूर दोबारा ज़िन्दा कर देगा जैसे कि पहली मर्तबा उसने उसे पैदा किया। फिर उसके नेक व बद आमाल की जज़ा व सज़ा देगा। बन्दों के आमाल व हालात की उसे पूरी इत्तिला है और वह उन्हें देख रहा है।

فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۙ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۗ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۗ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۠

सो (इस बिना पर) मैं क़सम खाकर कहता हूँ शफ़क़ "यानी वह सुर्ख़ी जो सुबह को सूरज के निकलने से पहले और शाम को सूरज के छुपने के बाद" की। (16) और रात की और उन चीज़ों की जिनको रात समेट (कर जमा कर) लेती है। (17) और चाँद की जब वह पूरा हो जाए (18) कि तुम लोगों को ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुँचना है। (19) सो (बावजूद इन चीज़ों के जो कि ख़ौफ़ और ईमान के जमा होने का तक़ाज़ा करती हैं) उन लोगों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते। (20) और (जब उनके बैर और दुश्मनी की यह हालत है कि) जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो उस वक़्त भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ नहीं झुकाते। (21) ✿ (सज्दा)

बल्कि ये काफ़िर (और उल्टा) झुठलाते हैं। (22) और अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ ये लोग (बुरे आमाल का ज़ख़ीरा) जमा कर रहे हैं। (23) सो (उन कुफ़्रिया आमाल के सबब) आप उन लोगों को एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर दे दीजिए। (24) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किए, उनके लिए (आख़िरत में) ऐसा अज्र है जो कभी मौक़ूफ़ होने वाला नहीं। (25)

✿ सज्दा नम्बर- 13 السجدة ۱۳ ع ۹ ۲۵

आख़िरत का सामना ज़रूर करना है

"शफ़क़" से मुराद वह सुर्ख़ी है जो सूरज के छुपने के बाद आसमान के पश्चिमी किनारों पर ज़ाहिर

होती है। हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत शद्दाद बिन औस, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, मुहम्मद बिन अ़ली बिन हुसैन, मक्हूल, बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी, बुकैर बिन अशज, मालिक इब्ने अबी ज़िअ्ब, अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा माजिशून रहमतुल्लाहि अ़लैहिम यही फ़रमाते हैं कि शफ़क़ उस सुर्ख़ी को कहते हैं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से भी यही मरवी है कि मुराद सफ़ेदी है। पस शफ़क़ आसमान के किनारों की सुर्ख़ी को कहते हैं। वह तुलूअ़ (सूरज निकलने) से पहले हो या छुपने के बाद। और अहले-सुन्नत के नज़दीक मशहूर यही है। ख़लील कहते हैं कि इशा के वक़्त तक यह शफ़क़ बाक़ी रहती है। इमाम ज़ोहरी कहते हैं कि सूरज के छुपने के बाद जो सुर्ख़ी और रोशनी बाक़ी रहती है उसे शफ़क़ कहते हैं। यह रात के शुरू हिस्से से इशा के वक़्त तक बाक़ी रहती है। इक्रिमा फ़रमाते हैं कि मग़रिब से लेकर इशा तक। सही मुस्लिम की हदीस में है कि मग़रिब का वक़्त "शफ़क़" ग़ायब होने तक है। मुजाहिद रह. से अलबत्ता मरवी है कि इससे मुराद सारा दिन है और और एक रिवायत में है कि मुराद सूरज है। ग़ालिबन इस मतलब की वजह इसके बाद का जुमला है।

तो गोया रोशनी और अंधेरे की क़सम खाई। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं दिन के जाने और रात के आने की क़सम है। कुछ हज़रात ने कहा है कि सफ़ेदी और सुर्ख़ी का नाम शफ़क़ है। एक और क़ौल है कि यह लफ़्ज़ इन दोनों मुख़्तलिफ़ मायनों में बोला जाता है। "व-स-क़" के मायने हैं जमा किया। यानी रात के सितारों और रात के जानवरों की क़सम। इसी तरह रात के अन्धेरे में तमाम चीज़ों का अपनी-अपनी जगह चले जाना। और चाँद की क़सम जबकि वह पूरा हो जाये, भरपूर हो जाये और उसमें पूरी रोशनी आ जाये।

"ल-तर्‌कबुन्-न" की तफ़सीर बुख़ारी में मरफ़ूअ़ हदीस से यह मन्क़ूल है कि एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ चढ़ते चले जाओगे। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो साल आयेगा वह अपने पहले वाले से ज़्यादा बुरा होगा। मैंने इसी तरह तुम्हारे नबी से सुना है। इस हदीस के और ऊपर बयान हुई हदीस के अलफ़ाज़ बिल्कुल एक हैं। बज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह मरफ़ूअ़ हदीस है। वल्लाहु आलम। और यह मतलब भी इस हदीस का बयान किया गया है कि इससे मुराद नबी करीम सल्ल. की ज़ात है, और इसकी ताईद हज़रत उमर, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और मक्का व कूफ़ा वालों की क़िराअत से भी होती है। उनकी क़िराअत "ल-तर्‌कबिन्-न" है।

इमाम शाबी रह. कहते हैं कि मतलब यह है- ऐ नबी! तुम एक आसमान के बाद दूसरे आसमान पर चढ़ोगे। मुराद इससे मेराज है। यानी मन्ज़िल-ब-मन्ज़िल चढ़ते चले जाओगे। इमाम सुद्दी रह. कहते हैं कि अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ मन्ज़िल तय करोगे। जैसे हदीस में है कि तुम अपने पहले लोगों के तरीक़ों पर चलोगे बिल्कुल बराबर, यहाँ तक कि अगर उनमें से कोई गोह के सुराख़ में दाख़िल हुआ हो तुम भी यही करोगे। लोगों ने कहा पहलों से मुराद आपकी क्या यहूदी व ईसाई हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया फिर और कौन? हज़रत मक्हूल रह. फ़रमाते हैं कि हर बीस साल के बाद तुम किसी न किसी ऐसे काम की ईजाद (नयी शुरूआ़त) करोगे जो उससे पहले न था। अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि आसमान फटेगा फिर सुर्ख़ रंग का हो जायेगा, फिर भी रंग बदलते चले जायेंगे। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि कभी तो आसमान धुआँ बन जायेगा फिर फूट जायेगा। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं- यानी बहुत से लोग जो दुनिया में पस्त व ज़लील थे आख़िरत में बुलन्द और इज़्ज़त वाले बन जायेंगे और बहुत से लोग जो दुनिया में मर्तबे और इज़्ज़त वाले थे वे आख़िरत में ज़लील व नाकाम हो जायेंगे। हज़रत इक्रिमा यह मतलब

Maktaba Ashraf

बयान करते हैं कि पहले दूध पीते थे फिर गिज़ा खाने लगे, पहले जवान थे फिर बुढ़ापा आया। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि नर्मी के बाद सख़्ती, सख़्ती के बाद नर्मी, अमीरी के बाद फ़क़ीरी, फ़क़ीरी के बाद अमीरी, सेहत के बाद बीमारी, बीमारी के बाद तन्दुरुस्ती।

एक मरफ़ूअ हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि इनसान ग़फ़लत में है, वह परवाह नहीं करता कि किस लिये पैदा किया गया है। अल्लाह तआला जब किसी को पैदा करना चाहता है तो फ़रिश्ते से कहता है कि उसकी रोज़ी, उसमें अजल (मुद्दत या मौत) उसकी ज़िन्दगी, उसका बद या नेक होना लिख ले। फिर वह फ़ारिग़ होकर चला जाता है और दूसरा फ़रिश्ता आता है जो उसकी हिफ़ाज़त करता है, यहाँ तक कि उसे समझ आ जाये। फिर वह फ़रिश्ता उठ जाता है। फिर दूसरे फ़रिश्ते उसका नामा-ए-आमाल लिखने वाले आ जाते हैं, मौत के वक़्त वे भी चले जाते हैं और मलकुल-मौत आ जाते हैं, उसकी रूह क़ब्ज़ करते हैं। फिर क़ब्र में उसकी रूह लौटा दी जाती है। मलकुल-मौत चले जाते हैं और सवाल व जवाब करने वाले फ़रिश्ते आ जाते हैं। अपने काम के बाद वे भी चले जाते हैं। क़ियामत के दिन नेकी बदी के फ़रिश्ते आ जायेंगे और उसकी गर्दन से उसका नामा-ए-आमाल खोल लेंगे, फिर उसके साथ ही रहेंगे। एक साईक़ (चलाने वाला) है दूसरा शहीद (गवाह) है। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगाः

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا.

तू इससे ग़ाफ़िल था। फिर रसूलुल्लाह सल्ल. ने यह आयत पढ़ीः

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ......الخ.

यानी एक हाल से दूसरा हाल।

फिर फ़रमाया लोगो! तुम्हारे आगे बड़े-बड़े अहम मामलात आ रहे हैं, जिनकी तुम में बरदाश्त नहीं। अल्लाह तआला बुलन्द व बरतर से मदद चाहो। यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है। मुन्कर हदीस है और इसकी सनद में कमज़ोर-कमज़ोर रावी हैं। लेकिन इसका मतलब बिल्कुल सही और दुरुस्त है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने इन तमाम अक़वाल को बयान करके फ़रमाया है- सही मतलब यह है कि ऐ मुहम्मद आप सख़्त-सख़्त कामों में एक के बाद एक पड़ने वाले हैं। और अगरचे ख़िताब हुज़ूर सल्ल. को है लेकिन मुराद सब लोग हैं कि वे क़ियामत की एक के बाद एक हौलनाकी (डरावनी और दहशत भरी हालत) देखेंगे। फिर फ़रमाया कि इन्हें क्या हो गया, ये क्यों ईमान नहीं लाते? और इन्हें क़ुरआन सुनकर सज्दे में गिर पड़ने से कौनसी चीज़ रोकती है? बल्कि ये काफ़िर लोग तो उल्टा झुठलाते हैं, हक़ की मुख़ालफ़त करते हैं और सरकशी और बुराई में फंसे हुए हैं। अल्लाह तआला उनके दिलों की बातों को जिन्हें ये छुपा रहे हैं अच्छी तरह जानते हैं। ऐ नबी! तुम उन्हें ख़बर पहुँचा दो कि अल्लाह तआला ने उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

फिर फ़रमाया कि उस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ होकर बेहतरीन अज्र के हक़दार ईमान वाले नेक अ़मल करने वाले लोग हैं। उन्हें पूरा-पूरा बेहिसाब अज्र मिलेगा। जैसे एक और जगह हैः

عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ.

वह कभी ख़त्म न होने वाला अ़तीया होगा।

बाज़ लोगों ने यह भी कह दिया कि बिना एहसान। लेकिन यह मायने ठीक नहीं। हर आन, हर लम्हा और हर वक़्त ख़ुदा तआ़ला के जन्नत वालों पर एहसान व इनाम होंगे, बल्कि सिर्फ़ उसके एहसान और उसके फ़ज़्ल व करम की बिना पर ही उन्हें जन्नत नसीब हुई न कि उनके आमाल की वजह से। पस उस मालिक का तो दायमी (हमेशा का) एहसान अपनी मख़्लूक़ पर है ही। उसकी पाक ज़ात हर तरह की, हर वक़्त की तारीफ़ों के लायक़ है हमेशा हमेशा के लिये। इसी लिये जन्नत वालों पर ख़ुदा की तस्बीह और उसकी तारीफ़ का इल्हाम इसी तरह किया जायेगा जिस तरह साँस बिना किसी तकलीफ़ के बेतकल्लुफ़ बल्कि बेइरादा चलता रहता है। क़ुरआन फ़रमाता है:

وَاٰخِرُ دَعْوٰهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

यानी उनका आख़िरी क़ौल यही होगा कि सब तारीफ़ जहानों के पालने वाले रब के लिये ही है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः इन्शिक़ाक़ की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः बुरूज

सूरः बुरूज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इशा की नमाज़ में यह सूरत और सूरः वस्समा-इ वत्तारिक़ि (यानी सूरः तारिक़) पढ़ते थे। एक और हदीस में है कि आपने इन सूरतों को इशा की नमाज़ में पढ़ने का हुक्म दिया है। लेकिन इमाम अहमद इस रिवायत में मुन्फ़रिद हैं।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ○ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ○ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ○ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ○ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ○ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ○ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ○ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ

क़सम है बुर्जों वाले आसमान की (मुराद बुर्जों से बड़े-बड़े सितारे हैं)। (1) और (क़सम) है वायदा किए हुए दिन की (2) और हाज़िर होने वाले की, और (क़सम है) उस (दिन) की जिसमें (लोगों की) हाज़िरी होती है। (3) कि मलऊन हुए ख़न्दक़ वाले (4) यानी बहुत-से ईंधन की आग वाले, (5) जिस वक़्त वे लोग उस (आग) के आस-पास बैठे हुए थे। (6) और वे जो कुछ मुसलमानों के साथ (ज़ुल्म व सितम) कर रहे थे उसको देख रहे थे। (7) और उन काफ़िरों ने उन मुसलमानों में कोई ऐब नहीं

الْحَمِيْدِ ۞ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ۞ اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ۞	पाया सिवाय इसके कि वे ख़ुदा पर ईमान ले आए थे जो ज़बरदस्त (और) तारीफ़ के लायक़ है। (8) ऐसा कि उसी की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन की, और (आगे ज़ालिमों के लिए आम सज़ा की धमकी और डाँट है, और मज़लूमों के लिए आम वायदा है) अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है। (9) जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को तकलीफ़ पहुँचाई और फिर तौबा नहीं की, तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है, और (ख़ास तौर पर जहन्नम में) उनके लिए जलने का अज़ाब है। (10)

यह बुर्जों वाला आसमान

बुरूज से मुराद बड़े-बड़े सितारे हैं जैसे कि इस आयतः

تَبٰرَكَ الَّذِیْ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوْجًا..........الخ

(यानी सूरः फ़ुरक़ान की आयत 61) की तफ़सीर में गुज़र चुका है। हज़रत मुजाहिद रह. से मरवी है कि बुरूज वो हैं जिनमें हिफ़ाज़त करने वाले रहते हैं। यहया रह. फ़रमाते हैं कि यह आसमानी महल है। मिन्हाल बिन अ़मर रह. कहते हैं कि मुराद अच्छी बनावट वाले आसमान हैं। इब्ने ख़ैसमा रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सूरज चाँद की मन्ज़िलें हैं जो बारह हैं, सूरज उनमें से हर एक में एक महीना चलता रहता है और चाँद उनमें से हर एक में दो दिन और एक तिहाई दिन चलता है, तो ये अट्ठाईस दिन हुए और दो रातों तक वह छुपा रहता है, नहीं निकलता। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- कि "यौमे मौऊद" से मुराद क़ियामत का दिन है और "शाहिद" से मुराद जुमे का दिन है। सूरज जिन-जिन दिनों पर निकलता और डूबता है उनमें सबसे आला और अफ़ज़ल दिन जुमे का दिन है। उसमें एक घड़ी ऐसी है कि उसमें बन्दा जो भलाई तलब करे मिल जाती है, और जिस बुराई से पनाह चाहे मिल जाती है। और "मशहूद" से मुराद अ़रफ़े (यानी हज) का दिन है। इब्ने ख़ुज़ैमा में भी यह हदीस है। मूसा बिन उबैदा रबज़ी इसके रावी हैं और यह ज़ईफ़ हैं। यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से ख़ुद उनके क़ौल से मरवी है और यही ज़्यादा सही मालूम होती है। मुस्नद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से भी यही मरवी है और दूसरे हज़रात से भी यह तफ़सीर मरवी है और उनमें इख़्तिलाफ़ नहीं। एक और रिवायत में मरफ़ूअ़न् मरवी है कि जुमे के दिन को जैसे यहाँ शाहिद कहा गया है, यह ख़ास हमारे लिये बतौर ख़ज़ाने के छुपाकर रखा गया था। एक और हदीस में है कि तमाम दिनों का सरदार जुमे का दिन है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यही मरवी है कि शाहिद से मुराद ख़ुद ज़ाते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) है और मशहूद से मुराद क़ियामत का दिन है। फिर आपने यह आयत पढ़ीः

Maktab E Ashraf

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ.

यानी इस दिन के लिये लोग जमा किये गये हैं और यह दिन मशहूद यानी हाज़िर किया गया है।

एक शख़्स ने हज़रत इमाम हसन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सवाल किया कि शाहिद और मशहूद क्या है? आपने फ़रमाया तुमने किसी और से पूछा है? उसने कहा हाँ, इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर से। फ़रमाया उन्होंने क्या जवाब दिया? कहा क़ुरबानी का दिन और जुमे का दिन। फ़रमाया नहीं! बल्कि मुराद शाहिद से मुहम्मद सल्ल. हैं जैसे कि क़ुरआन में एक दूसरी जगह है:

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَابِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا.

यानी क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से गवाह लायेंगे और तुझे उन पर गवाह बनायेंगे। और "मशहूद" से मुराद क़ियामत का दिन है। क़ुरआन कहता है:

وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ.

और यह हाज़िरी का दिन है।

यह भी मरवी है कि शाहिद से मुराद इब्ने आदम (इनसान) और "मशहूद" से मुराद क़ियामत का दिन है। और "मशहूद" से मुराद जुमा भी नक़ल किया गया है। और शाहिद से मुराद ख़ुद ख़ुदा भी है और अ़रफ़े का दिन भी है। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जुमे के दिन मुझ पर ख़ूब ज़्यादा दुरूद पढ़ा करो, वह "मशहूद" (हाज़िर होने) का दिन है। जिस पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. फ़रमाते हैं कि शाहिद अल्लाह है, क़ुरआन कहता है:

وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا.

और अल्लाह तआ़ला ही की शहादत काफ़ी है। (सूरः निसा 79)

और मशहूद हम हैं। क़ियामत के दिन हम सब ख़ुदा तआ़ला के सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे। अक्सर हज़रात का यह फ़रमान है कि शाहिद जुमे का दिन है और मशहूद अ़रफ़े का दिन है।

इन क़समों के बाद इरशाद होता है कि ख़न्दक़ों वालों पर लानत हो। यह काफ़िरों की एक क़ौम थी जिन्होंने मोमिनों को डरा-धमका कर दीन से हटाना चाहा और उनके इनकार पर ज़मीन में गड्ढे खोदकर उनमें लकड़ियाँ भरकर आग भड़काई, फिर उनसे कहा कि अब भी दीन से पलट जाओ। उन अल्लाह वाले लोगों ने इनकार किया और इन ज़ालिम काफ़िरों ने उन मुसलमानों को उस भड़कती हुई आग में डाल दिया। इसी को बयान किया जाता है कि ये लोग हलाक हुए। यह ईंधन भरी भड़कती हुई आग की ख़न्दक़ों के किनारों पर बैठे उन मोमिनों के जलने का तमाशा देख रहे थे, हालाँकि उन मोमिनों का कोई क़ुसूर न था इन्हें तो सिर्फ़ उनके मोमिन होने पर गुस्सा और नाराज़गी थी। दर असल ग़लबा रखने वाला अल्लाह तआ़ला ही है, उसकी पनाह में आ जाने वाला कभी बरबाद नहीं होता। वह अपने तमाम अक़वाल, अफ़आ़ल, शरीअ़त और तक़दीर में क़ाबिले तारीफ़ है। वह अगर अपने ख़ास बन्दों को किसी वक़्त काफ़िरों के हाथ से तकलीफ़ भी पहुँचा दे और उसका राज़ कसी को मालूम न हो सके तो न हो, लेकिन दर असल वह मस्लेहत व हिक्मत के बिना पर ही होता है। अल्लाह तआ़ला की पाकीज़ा सिफ़्तों में से यह भी है कि वह ज़मीनों, आसमानों और तमाम मख़्लूक़ात का मालिक है और वह हर चीज़ पर हाज़िर व नाज़िर है, कोई चीज़ उससे छुपी नहीं। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि यह वाक़िआ़ फ़ारस (प्राचीन ईरान) वालों का है।

Maktab E Ashraf

उनके बादशाह ने यह क़ानून जारी करना चाहा कि जिनसे हमेशा के लिये निकाह हराम है यानी माँ, बहन बेटी वग़ैरह ये सब हलाल हैं। उस वक़्त के उलेमा-ए-किराम ने इसका इनकार किया और रोका। इस पर उसने ख़न्दक़ें खुदवा कर उसमें आग जलाकर उन हज़रात को उसमें डाल दिया। चुनाँचे ये फ़ारस वाले आज तक इन औरतों को हलाल ही जानते हैं। यह ी मन्क़ूल है कि ये लोग यमन के थे, मुसलमानों में और काफ़िरों में लड़ाई हुई। मुसलमान ग़ालिब आ ये, फिर दूसरी लड़ाई में काफ़िर ग़ालिब आ गये तो उन्होंने गड्ढ़े खुदवाकर ईमान वालों को जला दिया। यह भी मरवी है कि यह वाक़िआ हब्श वालों का है। यह भी मरवी है कि यह वाक़िआ बनी इस्राईल का है, उन्होंने दानियाल और उनके साथियों के साथ यह सुलूक किया था। और अक़वाल भी हैं (लेकिन सारे वाक़िआत में मुसलमानों का हुस्ने सुलूम और काफ़िरों का बुरा सुलूक बहरहाल पाया गया)।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि पहले ज़माने में एक बादशाह था। उसके यहाँ एक जादूगर था। जब जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी मौत का वक़्त आ रहा है, मुझे किसी बच्चे को सौंप दो तो मैं उसे जादू सिखा दूँ। चुनाँचे एक ज़हीन लड़के को वह तालीम देने लगा, लड़का उसके पास जाता तो रास्ते में एक राहिब (ईसाई आ़बिद) का घर पड़ता। जहाँ वह इबादत में और कभी वअ़ज़ व नसीहत में मशग़ूल हो रहता था। यह भी खड़ा हो जाता और उसके इबादत के तरीक़े को देखता और वअ़ज़ सुनता। आते-जाते यहाँ रुक जाया करता था। जादूगर भी मारता और माँ-बाप भी, क्योंकि वहाँ भी देर में पहुँचता और यहाँ भी देर में आता। एक दिन उस बच्चे ने राहिब के सामने अपनी यह शिकायत बयान की। राहिब ने कहा कि जब जादूगर तुझ से पूछे कि क्यों देर लग गयी तो कह देना कि घर वालों ने रोक लिया था, और घर वाले बिगड़ें तो कह देना कि आज जादूगर ने रोक लिया था। यूँ ही एक ज़माना गुज़र गया कि एक तरफ़ तो वह जादू सीखता था, दूसरी तरफ़ अल्लाह का दीन और उसका कलाम सीखता था।

एक दिन इस लड़के ने देखा कि रास्ते में एक ज़बरदस्त डरावना जानवर पड़ा हुआ है। लोगों की आवा-जाही बन्द कर रखी है, इधर वाले उधर और उधर वाले इधर नहीं आ सकते, और सब लोग इधर-उधर हैरान व परेशान खड़े हैं। इसने अपने दिल में सोचा कि आज मौक़ा है, मैं इम्तिहान कर लूँ कि राहिब का दीन ख़ुदा तआ़ला को पसन्द है या जादूगर का? उसने एक पत्थर उठाया और यह कहकर उस पर फेंका कि ख़ुदाया अगर तेरे नज़दीक राहिब (ईसाई पादरी) का दीन और उसकी तालीम जादूगर के मामले से ज़्यादा महबूब है तो तू इस जानवर को इस पत्थर से हलाक कर दे ताकि लोगों को इस बला से निजात मिले। पत्थर के लगते ही वह जानवर मर गया और लोगों का आना-जाना शुरू हो गया। फिर जाकर राहिब को ख़बर दी, उसने कहा प्यारे बच्चे तू मुझसे अफ़ज़ल है। अब ख़ुदा की तरफ़ से तेरी आज़माईश होगी, अगर ऐसा हो तो तू किसी को मेरी ख़बर न करना। अब उस बच्चे के पास ज़रूरत मन्द लोगों का ताँता लग गया और उसकी दुआ़ से माँ के पेट से पैदा अन्धे कोढ़ी और हर क़िस्म के बीमार अच्छे होने लगे। बादशाह के एक नाबीना (अन्धे) वज़ीर तक भी यह शोहरत पहुँची। वह बड़े तोहफ़े और उपहार लेकर हाज़िर हुआ और कहने लगा कि अगर तू मुझे सही कर दे तो यह सब मैं तुझे दे दूँगा। उसने कहा कि शिफ़ा मेरे हाथ में नहीं, मैं किसी को शिफ़ा नहीं दे सकता। शिफ़ा देने वाला तो अल्लाह "वह्दहु ला शरी-क लहू" है। अगर तू उस पर ईमान लाने का वायदा करे तो मैं उससे दुआ़ करूँ। उसने इक़रार किया, बच्चे ने उसके लिये दुआ़ की, अल्लाह ने उसे शिफ़ा दे दी। वह बादशाह के दरबार में आया और जिस तरह अन्धा

Maktab E Ashraf

होने से पहले काम करता था, करने लगा और आँखें बिल्कुल रोशन थीं। बादशाह ने हैरान होकर पूछा कि तुझे आँखें किसने दीं? उसने कहा मेरे रब ने। बादशाह ने कहा हाँ यानी मैंने? वज़ीर ने कहा नहीं नहीं! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। बादशाह ने कहा अच्छा तो क्या मेरे सिवा तेरा कोई और रब भी है? वज़ीर ने कहा हाँ मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। अब उसने उसके साथ मार-पीट शुरू कर दी और तरह-तरह की तकलीफ़ें और ईज़ायें पहुँचाने लगा और पूछने लगा- तुझे यह तालीम किस ने दी? आख़िर उसने बता दिया कि उस बच्चे के हाथ पर मैंने इस्लाम क़ुबूल किया है। उसने उसे बुलवाया और कहा अब तो तुम जादू में ख़ूब माहिर हो गये हो कि अंधों को देखता और बीमारों को सही करने लग गये? उसने कहा ग़लत है, न मैं किसी को शिफ़ा दे सकता हूँ न जादू। शिफ़ा अल्लाह तआ़ला के हाथ में है। कहने लगा हाँ यानी मेरे हाथ में है, क्योंकि अल्लाह तो मैं ही हूँ। उसने कहा हरगिज़ नहीं। कहा फिर क्या तू मेरे सिवा किसी और को रब मानता है? वह कहने लगा हाँ मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। उसने उसे भी तरह-तरह की सज़ायें देनी शुरू कीं, यहाँ तक कि राहिब का पता लगा लिया। राहिब को बुलाकर उससे कहा कि तू इस्लाम को छोड़ दे और इस दीन से पलट जा। उसने इनकार किया तो उस बादशाह ने आरे से उसे चीर दिया और ठीक दो टुकड़े करके फेंक दिया। फिर उस नौजवान से कहा कि तू भी दीन से फिर जा। उसने भी इनकार किया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि हमारे सिपाही इसे फ़ुलाँ पहाड़ पर ले जायें और उसकी बुलन्द चोटी पर पहुँचकर फिर इसे इसके दीन छोड़ देने को कहें। अगर मान ले तो अच्छा वरना वहीं से इसे लुढ़का दें। चुनाँचे ये लोग उसे ले गये, जब वहाँ से धक्का देना चाहा तो उसने अल्लाह तबारक व तआ़ला से दुआ़ की:

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمْ بِمَا شِئْتَ.

ख़ुदाया! जिस तरह तू चाहे मुझे इनसे निजात दे।

दुआ़ के साथ ही पहाड़ हिला और वे सब सिपाही लुढक गये, सिर्फ़ वह बच्चा ही बचा रहा। वह वहाँ से उतरा और हंसी-ख़ुशी फिर उस ज़ालिम बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा यह क्या हुआ? मेरे सिपाही कहाँ हैं? फ़रमाया मेरे ख़ुदा ने मुझे उनसे बचा लिया। उसने और सिपाही बुलवाये और उनसे कहा कि इसे कश्ती में बैठाकर ले जाओ और समन्दर के बीचों बीच में डुबोकर चले आओ। ये उसे ले चले और बीच में पहुँचकर जब समन्दर में फेंकना चाहा तो उसने फिर वही दुआ़ की कि या अल्लाह! जिस तरह चाहे मुझे इनसे बचा। मौज (पानी की लहर) उठी और वे सिपाही सारे के सारे समन्दर में डूब गये, सिर्फ़ वह बच्चा ही बाक़ी रह गया। यह फिर बादशाह के पास आया और कहा मेरे रब ने मुझे उनसे भी बचा लिया। ऐ बादशाद! तू चाहे कितनी ही तदबीरें कर डाल लेकिन मुझे हलाक नहीं कर सकता। हाँ जिस तरह मैं कहूँ उस तरह अगर कर ले तो अलबत्ता मेरी जान निकल जायेगी। उसने कहा क्या करूँ? फ़रमाया तमाम लोगों को एक मैदान में जमा कर, फिर खजूर के तने पर सूली चढ़ा और मेरे तरकश में से एक तीर निकाल कर मेरी कमान पर चढ़ा और "बिस्मिल्लाहि रब्-ब हाज़ल् ग़ुलाम" यानी उस अल्लाह तआ़ला के नाम से जो इस बच्चे का रब है, कहकर वह तीर मेरी तरफ़ फेंक, वह मुझे लगेगा और मैं उससे मरूँगा।

चुनाँचे बादशाह ने यही किया। तीर बच्चे की कनपटी में लगा। उसने अपना हाथ उस जगह रख लिया और शहीद हो गया। उसके इस तरह शहीद होते ही लोगों को उसके दीन की सच्चाई का यक़ीन आ गया, हर तरफ़ से ये आवाज़ें उठने लगीं कि हम सब इस बच्चे के रब पर ईमान ला चुके। यह हाल देखकर

Maktaba E Ashraf

बादशाह के साथी बड़े घबराये और बादशाह से कहने लगे इस लड़के की तरकीब हम तो समझे ही नहीं, देखिये उसका यह असर पड़ा कि ये तमाम लोग उसके मज़हब पर हो गये। हमने तो इसी लिये इसे कृत्ल किया था कि कहीं यह मज़हब फैल न पड़े, लेकिन वह ख़तरा तो सामने ही आ गया और सब मुसलमान हो गये। बादशाह ने कहा अच्छा यह करो कि तमाम महलों और रास्तों में ख़न्दक़ें खुदवाओ, उनमें लकड़ियाँ भरो, उनमें आग लगा दो, जो इस दीन से फिर जाये उसे छोड़ दो और जो न माने उसे उस आग में डाल दो। उन मुसलमानों ने सब्र के साथ आग में जलना मन्ज़ूर कर लिया और उसमें कूद-कूदकर गिरने लगे, अलबत्ता एक औरत जिसकी गोद में दूध पीता बच्चा था वह ज़रा झिझकी तो उस बच्चे को ख़ुदा तआ़ला ने बोलने की ताक़त दी, उसने कहा अम्माँ! क्या कर रही हो, तुम तो हक़ पर हो, सब्र करो और इसमें कूद पड़ो। यह हदीस मुस्नद अहमद में भी है, सही मुस्लिम के आख़िर में भी है और नसाई में भी किसी क़द्र इख़्तिसार के साथ है।

तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है, हज़रत सुहैब रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह के नबी सल्ल. अ़सर की नमाज़ के बाद उमूमन धीरे से कुछ फ़रमाया करते थे, तो आप सल्ल. से पूछा गया कि हुज़ूर क्या फ़रमाते हैं? फ़रमाया नबियों में से एक नबी थे जो अपनी उम्मत पर फ़ख़्र करते थे। कहने लगे उनकी देखभाल कौन करेगा तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ वही भेजी कि उन्हें इख़्तियार है चाहे इस बात को पसन्द करें कि मैं ख़ुद उनसे इन्तिक़ाम (बदला) लूँ चाहे इस बात को पसन्द करें कि मैं उन पर उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दूँ। उन्होंने इन्तिक़ाम को पसन्द किया। चुनाँचे एक ही दिन में उनमें से सत्तर हज़ार मर गये। इसके साथ ही आप सल्ल. ने यह हदीस भी बयान की जो ऊपर गुज़री। फिर आख़िर में आप सल्ल. ने इस सूरत की आयत नम्बर 4 से 8 तक की तिलावत फ़रमाई। ये नौजवान शहीद दफ़्न कर दिये गये थे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनकी क़ब्र से उन्हें निकाला गया था। उनकी उंगली उसी तरह उनकी कनपटी पर रखी हुई थी जिस तरह शहादत के वक़्त थी। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं, लेकिन इस रिवायत में यह स्पष्ट नहीं कि यह वाक़िआ़ नबी सल्ल. ने बयान फ़रमाया है, तो मुम्किन है कि हज़रत सुहैब रूमी रज़ि. ने ही इस वाक़िए को बयान फ़रमाया हो, उनके पास ईसाईयों की ऐसी हिकायतें (क़िस्से और दास्तानें) बहुत सारी थीं। वल्लाहु आलम

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. ने भी इस क़िस्से को दूसरे अलफ़ाज़ में बयान फ़रमाया है जो इसके ख़िलाफ़ है। वह कहते हैं कि नजरान के लोग बुतों के पुजारी मुश्रिक थे और नजरान के पास एक छोटा सा गाँव था जिसमें एक जादूगर था, नजरानियों को जादू सिखाया करता था। फ़ैमून नाम के एक बुज़ुर्ग आ़लिम यहाँ आये और नजरान और उस गाँव के दरमियान उन्होंने क़ियाम किया। शहर के लड़के जो जादूगर से जादू सीखने जाया करते थे उनमें ताजिर का एक लड़का अ़ब्दुल्लाह नाम का था, उसे आते-जाते राहिब की इबादत और उसकी नमाज़ वग़ैरह के देखने का मौक़ा मिलता। वह इस पर सोच-विचार करता और दिल में उसके मज़हब की सच्चाई जगह करती जाती। उसने यहाँ आना-जाना शुरू कर दिया और मज़हबी तालीम भी उस राहिब से लेने लगा। कुछ दिनों बाद उसके मज़हब में दाख़िल हो गया और इस्लाम क़बूल कर लिया, तौहीद का पाबन्द हो गया और एक अल्लाह की इबादत करने लगा और इल्मे दीन अच्छी तरह हासिल किया। वह राहिब इस्मे-आज़म भी जानता था। उसने हर चन्द ख़्वाहिश की कि उसे बता दे लेकिन उसने न बताया और कह दिया कि अभी तुम में उसकी सलाहियत (योग्यता) नहीं आई, तुम अभी कमज़ोर दिल वाले हो, इसकी ताक़त मैं तुम में नहीं पाता। अ़ब्दुल्लाह के बाप तामिर को अपने बेटे के मुसलमान हो जाने की

बिल्कुल ख़बर न थी। वह समझ रहा था कि मेरा बेटा जादू सीख रहा है और वहीं आता-जाता रहता है। अ़ब्दुल्लाह ने जब देखा कि राहिब मुझे इस्मे-आज़म नहीं सिखाते और उन्हें मेरी कमज़ोरी का ख़ौफ़ है तो एक दिन उन्होंने तीर लिये और जितने नाम अल्लाह तबारक व तआ़ला के उन्हें याद थे हर-हर तीर पर एक नाम लिखा, फिर आग जलाकर बैठ गये और एक-एक तीर को उसमें डालना शुरू किया। जब वह तीर आया जिस पर इस्मे-आज़म था तो वह आग में पड़ते ही उछल कर बाहर निकल आया और उस पर आग ने बिल्कुल असर न किया। उसने समझ लिया कि यही इस्मे-आज़म है। अपने उस्ताद के पास आये और कहा हज़रत इस्मे-आज़म का इल्म मुझे हो गया। उस्ताद ने पूछा बताओ क्या है? उसने बताया। राहिब ने पूछा कैसे मालूम हुआ? उसने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया तो फ़रमाया कि भाई तुमने ख़ूब मालूम कर लिया, वाक़ई यही इस्मे-आज़म है। इसे अपने ही तक रखो, लेकिन मुझे डर है कि तुम खुल जाओगे। इनकी यह हालत हुई कि यह नजरान आये, यहाँ जिस बीमार पर जिस दुखी पर जिस सितम के मारे पर नज़र पड़ी उससे कहा कि अगर तुम एक अल्लाह को मानने वाले बन जाओ और दीने इस्लाम क़बूल कर लो तो मैं अपने रब से दुआ़ करता हूँ वह तुम्हें शिफ़ा और इस बीमारी से निजात दे देगा और दुख बला को टाल देगा। वह इसे क़बूल कर लेता, यह इस्मे-आज़म के साथ दुआ़ करते, अल्लाह तआ़ला उसे भला चंगा कर देता। अब नजरान वालों की भीड़ लगने लगी और जमाअ़त की जमाअ़त रोज़ाना इस्लाम में दाख़िल होने लगी। आख़िर बादशाह को इसका इल्म हुआ, उसने उसे बुलाकर धमकाया कि तूने मेरी प्रजा को बिगाड़ दिया और मेरे और मेरे बाप दादा के मज़हब पर हमला किया, मैं इसकी सज़ा में तेरे हाथ-पाँव काटकर तुझे अपाहिज बना दूँगा। अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर ने जवाब दिया कि तू ऐसा नहीं कर सकता।

अब बादशाह ने उसे पहाड़ पर से गिरा दिया, लेकिन वह नीचे आकर सही सलामत रहा। सारे जिस्म पर कहीं चोट भी न आई। नजरान के इन तूफ़ान उठाते और मौजें मारते दरियाओं में उन्हें डाला जहाँ से कोई बच नहीं सकता, लेकिन वह वहाँ से भी सेहत व सलामती के साथ वापस आ गये। ग़र्ज़ कि हर तरह आ़जिज़ आ गया तो फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर ने फ़रमाया कि ऐ बादशाह सुन! तू मेरे क़त्ल पर कभी क़ादिर न होगा यहाँ तक कि तू इस दीन को मान ले जिसे मैं मानता हूँ और एक ख़ुदा की इबादत करने लगे, अगर तू यह कर ले तो फिर तू मुझे क़त्ल कर सकता है। बादशाह ने ऐसा ही किया, उसने हज़रत अ़ब्दुल्लाह का बतलाया हुआ कलिमा पढ़ा और मुसलमान होकर जो लकड़ी उसके हाथ में थी उससे हज़रत अ़ब्दुल्लाह को मारा, जिससे कुछ मामूली सी खरोंच आई और उसी से वह शहीद हो गये। अल्लाह उनसे ख़ुश हो और अपनी ख़ास रहमतें उन्हें इनायत फ़रमाये। उनके साथ ही बादशाह भी मर गया।

इस वाक़िए ने लोगों के दिलों में यह बात जमा दी कि दीन उनका ही सच्चा है। चुनाँचे नजरान के तमाम लोग मुसलमान हो गये और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के सच्चे दीन पर क़ायम हो गये, वही मज़हब उस वक़्त हक़ था। अभी तक हुज़ूर सल्ल. नबी बनकर दुनिया में न आये थे। लेकिन फिर एक ज़माने के बाद उनमें बिद्अ़तें पैदा होने लगीं और फैल गयीं और दीने हक़ का नूर छिन गया। ग़र्ज़ कि नजरान में ईसाईयत के फैलने का असल सबब यह था। एक ज़माने के बाद ज़ू-नव्वास यहूदी ने अपने लश्कर लेकर उन ईसाईयों पर चढ़ाई की और ग़ालिब आ गया। फिर उनसे कहा या तो यहूदियत क़बूल कर लो या मौत। उन्होंने क़त्ल होना मन्ज़ूर किया। उसने ख़न्दक़ें खुदवा कर आग से भरकर उनको जला दिया। बाज़ों को क़त्ल भी किया, बाज़ों के हाथ-पाँव नाक-कान काट दिये। तक़रीबन बीस हज़ार मुसलमानों को इस सरकश ने क़त्ल किया, इसी का ज़िक्र इन आयतों में है:

Maktab E Ashraf

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ.

(यानी इस सूरत की आयत नम्बर 4 ता 9 में) ज़ू-नव्वास का नाम ज़ुरआ़ था। उसकी बादशाहत के ज़माने में उसे यूसुफ़ कहा जाता था। उसके बाप का नाम इब्ने तिबान अस्अ़द बिन करब था, जो तुब्बअ़ है जिसने मदीने में ग़ज़्वा किया और काबे पर पर्दा (ग़िलाफ़) चढ़ाया। उसके साथ दो यहूदी आ़लिम थे यमन वाले, उन्हीं के हाथ पर यहूदी मज़हब में दाख़िल हुए। ज़ू-नव्वास ने एक ही दिन में सिर्फ़ सुबह के वक़्त उन खाईयों में बीस हज़ार ईमान वालों को क़त्ल किया, उनमें से सिर्फ़ एक ही शख़्स बच निकला जिसका नाम दौस ज़ी सालबान था। यह घोड़े पर भाग खड़ा हुआ, अगरचे इसके पीछे भी घोड़े सवार दौड़ाये लेकिन यह हाथ न लगा। यह सीधा रोम में क़ैसर के पास गया, उसने हब्शा के बादशाह नजाशी को लिखा, चुनाँचे दौस वहाँ से हब्शा के ईसाईयों का लश्कर लेकर यमन आया, उसके सरदार अरबात और अब्रहा थे, यहूदी मग़लूब हुए, यमन यहूदियों के हाथ से निकल गया। ज़ू-नव्वास भाग निकला लेकिन वह पानी में ग़र्क़ हो गया। फिर सत्तर साल तक यहाँ हब्शा के ईसाईयों का क़ब्ज़ा रहा, आख़िरकार सैफ़ बिन ज़ी-यज़न हमीरी ने फ़ारस के बादशाह से इमदादी फ़ौजें अपने साथ लीं और सात सौ क़ैदी लोगों से उस पर चढ़ाई करके फ़तह हासिल की और फिर सल्तनते हमीरी क़ायम की। इसका कुछ बयान सूरः फ़ील में आयेगा, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि एक नजरानी ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में यह नजरान की एक बंजर ग़ैर-आबाद ज़मीन अपने किसी काम के लिये खोदी तो देखा कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर रह. का जिस्म उसमें है। आप बैठे हुए हैं, सर पर जिस जगह चोट आई थी वहीं हाथ है, अगर हटाते हैं तो ख़ून बहने लगता है, फिर हाथ को छोड़ देते हैं तो हाथ अपनी जगह चला जाता है और ख़ून थम जाता है। हाथ की एक उंगली में अंगूठी है जिस पर "रब्बियल्लाहु" लिखा हुआ है, यानी मेरा रब अल्लाह है। चुनाँचे इस वाक़िए की इत्तिला दरबारे ख़िलाफ़त में दी गयी। यहाँ से हज़रत फ़ारूक़ रज़ि. का फ़रमान गया कि उसे यूँही रहने दो और ऊपर से मिट्टी वग़ैरह जो हटाई है वह डालकर जिस तरह था उसी तरह बेनिशान कर दो। चुनाँचे यही किया गया।

इब्ने अबिद्दुन्या ने लिखा है कि जब हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. ने अस्बहान फ़तह किया तो एक दीवार देखी कि वह गिर पड़ी है। हुक्म दिया कि इसको बना दिया जाये, चुनाँचे वह बना दी गयी, लेकिन फिर गिर पड़ी, फिर बनवाई फिर गिर पड़ी। आख़िर मालूम हुआ कि उसके नीचे कोई नेकबख़्त शख़्स दफ़न हैं। जब ज़मीन खोदी गई तो देखा कि एक शख़्स का जिस्म खड़ा हुआ है, साथ ही एक तलवार है जिस पर लिखा है "मैं हारिस बिन मज़ाज़ हूँ जिसने खाईयों (उख़्दूद) वालों से इन्तिक़ाम लिया"। हज़रत अबू मूसा रज़ि. ने उस लाश को निकाल लिया और वहाँ दीवार खड़ी करा दी जो बराबर रही। मैं कहता हूँ कि यह हारिस बिन मज़ाज़ बिन अ़मर ज़ुरहुमी है जो काबा शरीफ़ के मुतवल्ली हुए थे। साबित बिन इस्माईल बिन इब्राहीम की औलाद के बाद उसका लड़का अ़मर बिन हारिस बिन मज़ाज़ था जो मक्का में ज़ुरहुम ख़ानदान का आख़िरी बादशाह था। जिस वक़्त ख़ुज़ाआ़ क़बीले ने इन्हें यहाँ से निकाला और यमन की तरफ़ जिला वतन किया, यही वह शख़्स है जिसने सब से पहले अ़रब में शे'र कहा, जिस शे'र में ग़ैर-आबाद मक्का को अपना आबाद करना और ज़माने के इन्क़िलाबात (उलट-फेर) से फिर वहाँ से निकाला जाना उसने बयान किया है। इस वाक़िए से तो मालूम होता है कि यह क़िस्सा हज़रत इस्माईल के कुछ बाद का और बहुत पुराना है, जो कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के तक़रीबन पाँच सौ साल के बाद का मालूम होता है।

Maktab E Ashraf

लेकिन इब्ने इस्हाक़ की उस लम्बी रिवायत से जो पहले गुज़री यह साबित हो रहा है कि यह क़िस्सा हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद का और हज़रत मुहम्मद सल्ल. से पहले का है। ज़्यादा ठीक भी यही मालूम होता है। वल्लाहु आलम।

यह भी हो सकता है कि यह वाक़िआ़ दुनिया में कई बार हुआ हो, जैसे कि इब्ने अबी हातिम की रिवायत से मालूम होता है, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि तुब्बअ़ के ज़माने में यमन में ख़न्दकें खुदवाई गयी थीं और क़ुस्तुनतीन के ज़माने में भी मुसलमानों को यही यातना दी गयी थी, जबकि ईसाईयों ने अपना क़िब्ला बदल दिया, दीने ईसवी में बिदअ़तें ईजाद कर लीं, तौहीद को छोड़ बैठे तो उस वक़्त जो सच्चे दीनदार थे उन्होंने उनका साथ न दिया और असली दीन पर क़ायम रहे तो उन ज़ालिमों ने ख़न्दकें (खाईयाँ) आग से भरकर उन्हें जला दिया। और यही वाक़िआ़ बाबिल की ज़मीन पर इराक़ में बुख़्ते नस्सर के ज़माने हुआ, जिसने एक बुत बना लिया था और लोगों से उसे सज्दा कराता था। हज़रत दानियाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके दोनों साथी अ़ज़रिया और मशाईल ने उसका इनकार किया तो उसने उन्हें उस आग की ख़न्दक़ में डाल दिया। अल्लाह तआ़ला ने आग को उन पर ठण्डा कर दिया, उन्हें सलामती अ़ता फ़रमाई, साफ़ निजात दी और उन सरकश काफ़िरों को उन ख़न्दक़ों में डाल दिया। ये नौ क़बीले थे, सब जलकर ख़ाक हो गये।

इमाम सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि तीन जगह यह मामला हुआ- इराक़ में, शाम में और यमन में। मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि ख़न्दकें तीन जगह थीं एक तो यमन के शहर नजरान में, दूसरी शाम में, तीसरी फ़ारस में। शाम में इसका बानी अन्तनानूस रोमी था और फ़ारस में बख़्ते नस्सर और ज़मीने अ़रब पर यूसुफ़ ज़ू-नव्वास। शाम और फ़ारस की ख़न्दक़ों का ज़िक्र क़ुरआन में नहीं यह ज़िक्र नजरान का है। हज़रत रबीअ़ बिन अनस रह. फ़रमाते हैं कि हमने सुना है कि फ़तरत के ज़माने में (यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. के बीच के ज़माने में) एक क़ौम थी उन्होंने जब देखा कि लोग फ़ितने और शर में गिरफ़्तार हो गये हैं, गिरोह बन गये हैं और हर गिरोह अपने ख़्यालात में ख़ुश है तो उन लोगों ने उन्हें छोड़ दिया और यहाँ से हिजरत करके अलग एक जगह बनाकर वहीं रहना-सहना शुरू किया और ख़ुदा तआ़ला की इबादत में यक्सूई के साथ मशग़ूल हो गये। नमाज़ों की पाबन्दी, ज़कात की अदायेगी में लग गये और उनसे अलग-थलग रहने लगे, यहाँ तक कि एक सरकश बादशाह को इस नेक जमाअ़त का पता लग गया, उसने इनके पास अपने आदमी भेजे और इन्हें समझाया कि तुम भी हमारे साथ मिल जाओ और बुतों की पूजा शुरू कर दो। इन सब ने बिल्कुल इनकार किया कि हमसे यह नहीं हो सकता कि अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू के सिवा किसी और की बन्दगी करें। बादशाह ने कहलवाया कि अगर यह तुम्हें मन्ज़ूर नहीं तो मैं तुम्हें क़त्ल कराऊँगा। जवाब मिला कि जो चाहो करो लेकिन हम से दीन नहीं छोड़ा जायेगा। उस ज़ालिम ने ख़न्दकें खुदवायीं, आग जलवाई और उन सब मर्दों औरतों बच्चों को जमा किया और उन ख़न्दक़ों के किनारों पर खड़ा करके कहा लो यह आख़िरी सवाल जवाब है, आया बुत परस्ती क़बूल करते हो या आग में गिरना क़बूल करते हो? उन्होंने कहा हमें जल मरना मन्ज़ूर है, लेकिन छोटे-छोटे बच्चों ने चीख़ पुकार शुरू कर दी। बड़ों ने उन्हें समझाया कि बस आज के बाद आग नहीं। न घबराओ और ख़ुदा का नाम लेकर कूद पड़ो। चुनाँचे सब के सब कूद पड़े। उन्हें आँच भी नहीं लगने पाई थी कि ख़ुदा ने उनकी रूहें क़ब्ज़ कर लीं। आग ख़न्दक़ों से बाहर निकल पड़ी और उन बद-किरदार सरकशों को घेर लिया और जितने भी थे सारे जला दिये गये। इसकी ख़बर इन आयतों (यानी इस सूरत की आयत 4-9) में है। तो इस बिना

पर "फ़-तनू" के मायने हुए कि जलाया। तो फ़रमाता है कि उन लोगों ने मुसलमान मर्दों औरतों को जला दिया है, अगर उन्होंने तौबा न की यानी अपने इस फ़ेल से बाज़ न आये, अपने इस किये पर नादिम न हुए तो उनके लिये जहन्नम और जलने का अ़ज़ाब है, ताकि बदला भी उनके अ़मल जैसा हो।

हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआ़ला के करम व रहम, उसकी मेहरबानी और इनायत को देखो कि जिन बदकारों ने उसके प्यारे बन्दों को ऐसे बदतरीन अ़ज़ाबों से मारा उन्हें भी वह तौबा करने को कहता है, और उनसे भी मग़फ़िरत और बख़्शिश का वायदा करता है। ख़ुदाया हमें भी अपनी वसीअ़ रहमतों से भरपूर हिस्सा अ़ता फ़रमा, आमीन।

Maktab E Ashraf

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝
إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُورُ
الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ
لِّمَا يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝
فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ۝
بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝ ع ٢٢ ١٠

(आगे मोमिनों के हक़ में जिनमें मज़लूम लोग भी आ गए, इरशाद है कि) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए उनके लिए (जन्नत के) बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (और) यह बड़ी कामयाबी है। (11) आपके रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12) (पस काफ़िरों पर सख़्त सज़ा का वाक़े होना कोई बईद नहीं और यह कि) वही पहली बार भी पैदा करता है और वही दोबारा (क़ियामत में भी) पैदा करेगा। (13) और वही बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ी मुहब्बत करने वाला (14) (और) अ़र्श का मालिक (और) बड़ाई वाला है। (15) वह जो चाहे सब कुछ कर गुज़रता है। (16) क्या आपको उन लश्करों का क़िस्सा पहुँचा है? (17) यानी फ़िरऔ़न और समूद का। (18) बल्कि ये काफ़िर (ख़ुद क़ुरआन को) झुठलाने में (लगे) हैं। (19) और (अन्जामकार उसकी सज़ा भुगतेंगे, क्योंकि अल्लाह उनको इधर-उधर से घेरे हुए है। (20) (क़ुरआन ऐसी चीज़ नहीं जो झुठलाने के क़ाबिल हो) बल्कि वह एक बड़ाई वाला क़ुरआन है (21) जो लौहे-महफ़ूज़ में (लिखा हुआ) है। (22)

अल्लाह तआ़ला की पकड़ बड़ी सख़्त है

अपने दुश्मनों का अन्जाम बयान करके अपने दोस्तों का नतीजा बयान फ़रमा रहा है कि उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं। उन जैसी कामयाबी और किसे मिलेगी? फिर फ़रमाता है कि तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वह अपने उन दुश्मनों को जो उसके रसूलों को झुठलाते रहे और उसकी

नाफ़रमानियों में लगे रहे सख़्त क़ुव्वत के साथ इस तरह पकड़ेगा कि निजात की कोई राह उनके लिये बाक़ी न रहेगी। वह बड़ी क़ुव्वतों वाला है जो चाहे किया, जो कुछ चाहता है वह एक लम्हे में हो जाता है। उसकी क़ुदरतों और ताक़तों को देखकर कि उसने तुम्हें पहले भी पैदा किया और फिर भी मार डालने के बाद दोबारा पैदा कर देगा, न उसे कोई रोके न आगे आये, न सामने पड़े। वह अपने बन्दों के गुनाहों को माफ़ करने वाला है बशर्ते कि वे उसकी तरफ़ झुकें, तौबा करें और उसके सामने नाक रगड़ें। फिर चाहे कैंसी ही ख़तायें हों एक दम में सब माफ़ हो जाती हैं।

वह अपने बन्दों से प्यार व मुहब्बत रखता है, वह अ़र्श वाला है, जो अ़र्श तमाम मख़्लूक़ से बुलन्द व बाला है और तमाम मख़्लूक़ के ऊपर है। "मजीद" की दो क़िराअतें हैं, दाल का पेश भी और दाल का ज़ेर भी। पेश के साथ वह ख़ुदा की सिफ़त बन जायेगा और ज़ेर के साथ अ़र्श की सिफ़त है। मायने दोनों के बिल्कुल सही और दुरुस्त हैं। वह जिस काम का जब इरादा करे करने पर क़ुदरत रखता है, उसकी बड़ाई, इन्साफ़ और हिक्मत की बिना पर न कोई उसे रोक सके न उससे पूछ सके। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से उनकी उस बीमारी में जिसमें आपका इन्तिक़ाल होता है लोग सवाल करते हैं कि किसी डाक्टर ने भी आपको देखा? फ़रमाया हाँ। पूछा क्या कहा? फ़रमाया कि जवाब दिया "फ़अ़्आ़लुल् लिमा युरीदु" (वह जो चाहे कर गुज़रता है)।

फिर फ़रमाता है कि क्या तुझे ख़बर भी है कि फ़िरऔ़नियों और समूदियों पर क्या-क्या अ़ज़ाब आये? और कोई ऐसा न था कि उनकी किसी तरह की मदद कर सकता, और न कोई उस अ़ज़ाब को हटा सका। मतलब यह है कि उसकी पकड़ सख़्त है, जब वह किसी ज़ालिम को पकड़ता है तो दर्दनाकी और सख़्ती से बड़ी ज़बरदस्त पकड़ पकड़ता है।

फ़ायदाः इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. तशरीफ़ ले जा रहे थे, आपने सुना कि कोई औ़रत क़ुरआने पाक की यह आयत पढ़ रही हैं:

هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ.

(यानी इसी सूरत की आयत 17 और उसके बाद की आयतें) आप खड़े हो गये और कान लगाकर सुनते रहे। फिर फ़रमायाः

نَعَمْ قَدْ جَآءَنِىْ.

यानी हाँ मेरे पास वे ख़बरें आ गयीं। यानी क़ुरआन की इस आयत का जवाब दिया कि क्या तुझे फ़िरऔ़नियों और समूदियों की ख़बर पहुँची है? फिर फ़रमाया कि बल्कि काफ़िर शक व शुब्हे में, कुफ़्र व सरकशी में हैं और अल्लाह उन पर क़ादिर और ग़ालिब है। न ये उससे गुम हो सकें न उसे आ़जिज़ कर सकें। बल्कि यह क़ुरआन इज़्ज़त व बड़ाई वाला है, यह लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है, बुलन्द मर्तबे वाले फ़रिश्तों में है, ज़्यादती कमी से पाक और पूरी तरह सुरक्षित है, न इसमें तब्दीली हो सकती है न कमी-ज़्यादती।

हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह लौहे-महफ़ूज़ हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम की पेशानी पर है। अ़ब्दुर्रहमान बिन सलमान फ़रमाते हैं कि दुनिया में जो कुछ हुआ, हो रहा है और होगा, वह सब लौहे-महफ़ूज़ में मौजूद है, और लौहे-महफ़ूज़ हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम की दोनों आँखों के सामने है, लेकिन जब तक उन्हें इजाज़त न मिले वह उसे देख नहीं सकते। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि लौहे-

महफ़ूज़ की पेशानी पर यह इबारत लिखी हुई है-

"कोई माबूद नहीं सिवाय अल्लाह तआला के, वह अकेला है, उसका दीन इस्लाम है, मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, जो अल्लाह तआला पर ईमान लाये, उसके वायदे को सच्चा जाने, उसके रसूलों की ताबेदारी करे, अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा"।

फ़रमाते हैं कि यह लौह (तख़्ती) सफ़ेद मोती की है, इसकी लम्बाई आसमान व ज़मीन के दरमियान के बराबर है और इसकी चौड़ाई पूरब व पश्चिम के बराबर है। इसके दोनों किनारे मोती और याक़ूत के हैं, इसके दोनों पट्ठे सुर्ख़ याक़ूत के हैं, इसका क़लम नूर है, इसका कलाम अ़र्श के साथ जुड़ा हुआ है, इसकी असल फ़रिश्ते की गोद में है।

मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि यह ख़ुदा तआला के अ़र्श की दायीं तरफ़ है। तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला हर दिन तीन सौ साठ मर्तबा उसे देखता है। वह पैदा करता है, रोज़ी देता है, मारता है, जिलाता है, इज़्ज़त देता है और जो चाहे करता है।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः बुरूज की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः तारिक़

सूरः तारिक़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 17 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्नद अहमद में है कि ख़ालिद बिन अबू जबल उदवानी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सक़ीफ़ क़बीले की पूर्वी जानिब में रसूलुल्लाह सल्ल. को लकड़ी पर या कमान पर टेक लगाये हुए इस पूरी सूरत को पढ़ते सुना, जबकि आप लोगों से इमदाद तलब करने के लिये यहाँ तशरीफ़ लाये थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने इसे याद कर लिया। जब यह सक़ीफ़ क़बीले वालों के पास वापस आये तो उन्होंने इनसे पूछा यह क्या कह रहे हैं? यह भी उस वक़्त तक मुश्रिक थे, इन्होंने बयान किया तो वे क़ुरैशी भी वहाँ मौजूद थे, बोल उठे कि अगर यह हक़ होता तो क्या अब तक हम मान न लेते? नसाई में हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी है कि हज़रत मुआज़ रज़ि. ने मग़रिब की नमाज़ में सूरः ब-क़रह या सूरः निसा पढ़ी तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ मुआज़! क्या तू फ़ितने में डालने वाला है (यानी इतनी बड़ी-बड़ी सूरतें पढ़कर लोगों को उकता देने वाले हो)। क्या तुझे यह काफ़ी न था कि सूरः तारिक़, सूरः शम्स और ऐसी ही सूरतें पढ़ लेता।

क़सम है आसमान की और उस चीज़ की जो रात को ज़ाहिर होने वाली है। (1) और आपको कुछ मालूम है कि वह रात को ज़ाहिर होने वाली चीज़ क्या है? (2) वह चमकदार	وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ○ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الطَّارِقُ○ النَّجْمُ الثَّاقِبُ○ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ

لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝	सितारा है। (3) कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस पर (आमाल का) याद रखने वाला कोई (फ़रिश्ता) मुक़र्रर न हो। (4) (जब यह बात है) तो इनसान को (क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए और) देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। (5) वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है (6) जो पीठ और सीने (यानी पूरे बदन) के दरमियान से निकलता है। (7) (तो इससे साबित हुआ कि) वह उसके दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। (8) (और यह दोबारा पैदा करना उस दिन होगा) जिस दिन सब की क़लई खुल जाएगी। (9) फिर इस इनसान को न तो ख़ुद (अपनी रक्षा की) क़ुव्वत होगी और न इसका कोई हिमायती होगा। (10)

वह रोशन सितारा

अल्लाह तआ़ला आसमानों की और उनमें मौजूद रोशन सितारों की क़सम खाता है "तारिक़" की तफ़सीर चमकते तारे से की है, वजह यह है कि दिन को छुपे रहते हैं और रात को ज़ाहिर हो जाते हैं। एक सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मना फ़रमाया कि कोई अपने घर रात के वक़्त बिना इत्तिला के न आये (ताकि अचानक आने से व्यवस्था करने और घर वालों के आराम में ख़लल पड़ने से परेशानी न हो, जहाँ ऐसा न हो वहाँ कोई हर्ज नहीं)।

यहाँ भी लफ़्ज़ "तरूक़" है। आप सल्ल. की एक दुआ़ में भी तारिक़ का लफ़्ज़ आया है। "साक़िब" कहते हैं चमकीले और रोशनी वाले सितारे को, जो शैतान पर गिरता है और उसे जला देता है। हर शख़्स पर ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से एक मुहाफ़िज़ (सुरक्षा करने वाला) मुक़र्रर है जो उसे आफ़तों से बचाता है। जैसे एक और जगह है:

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ.

आगे पीछे से बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से बन्दे की हिफ़ाज़त करते हैं।

फिर इनसान की ज़ईफ़ी (कमज़ोरी) का बयान हो रहा है कि देखो तो इसकी असल क्या है। और गोया कि इसमें क़ियामत का यक़ीन दिलाया गया है कि जो पहली बार में पैदा करने पर क़ादिर है वह लौटाने पर क़ादिर क्यों न होगा? जैसे फ़रमायाः

هُوَ الَّذِیْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ.

यानी जिसने पहले पैदा किया वही दोबारा लौटायेगा, और यह उस पर बहुत ही आसान है।

इनसान उछलने वाले पानी यानी औरत मर्द की मनी (वीर्य) से पैदा किया गया है, जो मर्द की पीठ और औरत की छाती से निकलती है। औरत का यह पानी ज़र्द रंग का और पतला होता है और दोनों से बच्चे की पैदाईश होती है। "तरीबतु" कहते हैं हार (पहनने) की जगह को। मोंढों से लेकर सीने तक को भी कहा गया है, नरख़रे से नीचे को भी कहा गया है और छातियों से ऊपर के हिस्से को भी कहा गया है, और नीचे की तरफ़ चार पसलियों को भी कहा गया है और दोनों छातियों, दोनों पैरों और दोनों आँखों के बीच को भी कहा गया है। दिल के निचोड़ को भी कहा गया है, सीने और पीठ के बीच को भी कहा जाता है। वह उसके लौटाने पर क़ादिर है यानी निकले हुए पानी को उसकी जगह वापस पहुँचा देने पर। और यह मतलब भी है कि उसे दोबारा पैदा करके आख़िरत की तरफ़ लौटाने पर भी। पहला क़ौल ही ठीक है और यह दलील कई मर्तबा बयान हो चुकी है।

फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन छुपी हुई चीज़ें खुल जायेंगी, राज़ ज़ाहिर हो जायेंगे, भेद सामने आ जायेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर ग़द्दार (अ़हद तोड़ने वाले और ख़ियानत करने वाले) की रानों के बीच उसकी ग़द्दारी (अ़हद तोड़ने) का झण्डा गाड़ दिया जायेगा और ऐलान हो जायेगा कि यह फ़ुलाँ पुत्र/पुत्री फ़ुलाँ की ग़द्दारी (अ़हद तोड़ना या ख़ियानत) है। उस दिन न तो ख़ुद इनसान को कोई क़ुव्वत हासिल होगी न उसका कोई और मददगार होगा। यानी न तो ख़ुद अपने आपको अ़ज़ाब से बचा सकेगा न कोई और होगा जो उसे ख़ुदा के अ़ज़ाब से बचा सके।

क़सम है आसमान की जिससे बारिश होती है (11) और ज़मीन की जो (बीज निकलते वक़्त) फट जाती है। (12) (आगे क़सम का जवाब है) कि यह क़ुरआन (हक़ व बातिल में) एक फ़ैसला कर देने वाला कलाम है (13) कोई बेकार चीज़ नहीं है। (14) (उन लोगों का यह हाल है कि) ये लोग (हक़ के इनकार के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहे हैं (15) और मैं भी (उनकी नाकामी और सज़ा के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहा हूँ। (16) तो आप उन काफ़िरों (की मुख़ालफ़त) को यूँ ही रहने दीजिए (और ज़्यादा दिन नहीं बल्कि) उनको थोड़े ही दिनों रहने दीजिए। (17)	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۝ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

बारिश वाला आसमान

"रज्अुन्" के मायने बारिश के, बारिश वाले बादल के, बरसने के, हर साल बन्दों की रोज़ी लौटाने के हैं जिसके बग़ैर ये और इनके जानवर हलाक हो जायें। सूरज, चाँद और सितारों के इधर-उधर लौटने के भी नक़ल किये गये हैं। ज़मीन फटती है, दाना घास चारा निकलता है। यह क़ुरआन हक़ है, अ़दल (इन्साफ़) का हुक्म है, ये कोई क़िस्से-कहानियाँ नहीं। काफ़िर इसे झुठलाते हैं, ख़ुदा की राह से लोगों को रोकते हैं,

Maktab E Ashraf

तरह तरह के मक्र व फ़रेब से लोगों को ख़िलाफ़े क़ुरआन पर उक्साते हैं तो ऐ नबी! इन्हें ज़रा सी ढील दे, फिर तू जल्द ही देख लेगा कि कैसे-कैसे बदतरीन अ़ज़ाबों में ये पकड़े जाते हैं। जैसे एक दूसरी जगह है:

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ.

यानी हम उन्हें कुछ मामूली सा फ़ायदा देंगे, फिर बहुत सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ उन्हें बेबस कर देंगे।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः तारिक़ की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः अअ़्ला

सूरः अअ़्ला मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

इस सूरत के मक्की होने की दलील यह हदीस है जो सही बुख़ारी शरीफ़ में है। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा में से सब से पहले हमारे पास हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा आये, हमें क़ुरआन पढ़ाना शुरू किया। फिर हज़रत अ़म्मार, हज़रत बिलाल और हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आये। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने साथ बीस सहाबा को लेकर आये, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये। मैंने नहीं देखा कि मदीना वाले शायद ही किसी चीज़ पर इस क़द्र ख़ुश हुए हों जैसा कि आप सल्ल. के तशरीफ़ लाने पर ख़ुश हुए, यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी पुकार उठे कि यह हैं रसूलुल्लाह। आप तशरीफ़ लाये, आपके आने से पहले ही मैंने सूरः "सब्बिहिस्-म" (यानी यही सूरत) इस जैसी और सूरतों के साथ याद कर ली थी। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. को यह सूरत बहुत महबूब थी। सहीहैन की हदीस में है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने हज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि तूने "सूरः अअ़्ला", "सूरः शमूस" और "सूरः लैल" के साथ नमाज़ क्यों न पढ़ाई? मुस्नद अहमद में है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. सूरः अअ़्ला और ग़ाशिया (इससे अगले वाली सूरत) दोनों ईद की नमाज़ों में पढ़ा करते थे और जुमे वाले दिन अगर ईद हो तो ईद में और जुमे में दोनों में इन्हीं सूरतों को पढ़ते। यह हदीस सही मुस्लिम में भी है, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। इब्ने माजा वग़ैरह में भी है। मुस्नद अहमद में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि वित्र की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्ल. सूरः अअ़्ला, सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास पढ़ते थे। एक रिवायत में इतना और इज़ाफ़ा है कि सूरः फ़लक़ और सूरः नास भी पढ़ते थे। यह हदीस भी बहुत से सहाबा से अनेक सनदों के साथ नक़ल की गयी है। हमें अगर किताब के तवील हो जाने का ख़ौफ़ न होता तो उन सनदों को और उन तमाम रिवायतों को जहाँ तक हो सकता ज़िक्र करते, लेकिन जितना कुछ मुख़्तसर तौर पर बयान कर दिया यह भी काफ़ी है। वल्लाहु तआ़ला आलम।

Maktab E Ashraf

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝ الَّذِىْ خَلَقَ
فَسَوّٰى ۝ وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۝ وَالَّذِىْٓ
اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً
اَحْوٰى ۝ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝ اِلَّا مَا
شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝
وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ
الذِّكْرٰى ۝ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝
وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ
الْكُبْرٰى ۝ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا
يَحْيٰى ۝

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) आप (और जो मोमिन आपके साथ हैं) अपने रब आ़लीशान के नाम की तस्बीह कीजिए। (1) जिसने (हर चीज़ को) बनाया, फिर (उसको) ठीक बनाया (2) और जिसने तजवीज़ किया फिर राह बतलाई। (3) और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला (4) फिर उसको स्याह कूड़ा कर दिया। (5) (इस क़ुरआन के बारे में हम वायदा करते हैं कि) हम (जितना) क़ुरआन (नाज़िल करते जाएँगे) आपको पढ़ा दिया करेंगे (यानी याद करा दिया करेंगे), फिर आप उसमें से कोई हिस्सा नहीं भूलेंगे (6) मगर जिस क़द्र (भुलाना) अल्लाह को मन्ज़ूर हो (कि मन्सूख़ करने का तरीक़ा यह भी है)। वह ज़ाहिर और छुपी हर चीज़ को जानता है। (7) और (इसी तरह) हम इस शरीअ़त के लिए आपको सहूलत देंगे (यानी समझना भी आसान होगा और अ़मल भी आसान होगा) (8) तो आप नसीहत किया कीजिए, अगर नसीहत करना मुफ़ीद होता हो। (9) वही शख़्स नसीहत मानता है जो (ख़ुदा से) डरता है। (10) और जो शख़्स बद-नसीब हो वह उससे गुरेज़ करता है (11) जो (आख़िरकार) बड़ी आग में (यानी दोज़ख़ की आग में) दाख़िल होगा। (12) फिर न उसमें मर ही जायेगा और न (आराम की ज़िन्दगी) जियेगा। (13)

पवित्र नाम

मुस्नद अहमद में है, उक़्बा बिन आ़मिर जोहनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब आयत "फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम" उतरी तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- इसे तुम अपने रुकूअ़ में कर लो। जब रसूलुल्लाह सल्ल. "सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ़्ला" पढ़ते तो कहते "सुब्हा-न रब्बियल्-अअ़्ला"। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी यह मरवी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यह मरवी है और आप जब "ला उक़्सिमु बियौमिल् क़ियामति" (यानी सूरः क़ियामत) पढ़ते और आख़िरी आयत "अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह़यियल् मौता" पर पहुँचते तो फ़रमाते "सुब्हान-क व बला"। अल्लाह तआ़ला यहाँ इरशाद फ़रमाता है कि अपने बुलन्दियों वाले, परवरिश करने वाले ख़ुदा के पाक नाम की पवित्रता और

Maktab E Ashraf

तस्बीह बयान करो जिसने तमाम मख़्लूक़ को पैदा किया और सब को अच्छी शक्ल व सूरत बख़्शी। इनसान को नेकबख़्ती (सही रास्ते) की रहनुमाई की, जानवरों को चरने चुगने वग़ैरह की। जैसा कि एक दूसरे मौक़े पर इरशाद है:

رَبُّنَا الَّذِیْٓ اَعْطٰی کُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی.

यानी हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी पैदाईश (एक ख़ास बनावट) अ़ता फ़रमाई, फिर रहबरी की (यानी उसको रास्ता दिखाया)।

सही मुस्लिम में है कि ज़मीन व आसमान की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले ख़ुदा तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ की तक़दीर लिखी। उसका अ़र्श पानी पर था, जिसने हर क़िस्म की नबातात (पेड़-पौधे, वनस्पति) और खेत निकाले, फिर उन सरसब्ज़ चारों को ख़ुश्क और काले रंग का कर दिया।

फिर फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद! हम आपको ऐसा पढ़ायेंगे जिसे आप भूलेंगे नहीं, हाँ अगर ख़ुद ख़ुदा कोई आयत भुला देनी चाहे तो और बात है। इमाम इब्ने जरीर रह. तो इसी मतलब को पसन्द करते हैं और मतलब इस आयत का यह है कि जो क़ुरआन हम आपको पढ़ाते हैं उसे न भूलिये हाँ जिसे हम ख़ुद मन्सूख़ कर दें वह और बात है। ख़ुदा पर बन्दों के छुपे खुले आमाल, हालात, अ़क़ीदे सब ज़ाहिर हैं, हम आपको भलाई के काम, अच्छी बातें, शरई मामलात आसान कर देंगे, न उनमें टेढ़ होगी न सख़्ती, न हर्ज होगा। आप तो नसीहत कीजिए अगर नसीहत फ़ायदा दे।

इससे मालूम हुआ कि नालायक़ों को न सिखाना चाहिये जैसे कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि अगर तुम दूसरों के साथ वे बातें करोगे जो उनकी अ़क़्ल में न आ सकें तो नतीजा यह होगा कि वे तुम्हारी भली बातें उनके लिये बुरी बन जायेंगी और फ़ितने का सबब हो जायेंगी, बल्कि लोगों से उनकी समझ के मुताबिक़ बातचीत करो, ताकि लोग ख़ुदा और रसूल को न झुठलायें।

फिर फ़रमाया कि इससे नसीहत वह हासिल करेगा जिसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ है, जो उसकी मुलाक़ात पर यक़ीन रखता है। और इससे वह इबरत व नसीहत हासिल नहीं कर सकता जो बदबख़्त हो, जो जहन्नम में जाने वाला हो, जहाँ न तो राहत की ज़िन्दगी है न भली मौत है, बल्कि वह हमेशा के अ़ज़ाब और हमेशा क़ायम रहने वाली बुराई है। उसमें तरह-तरह के अ़ज़ाब और बदतरीन सजायें हैं। मुस्नद अहमद में है कि जो असली जहन्नमी हैं उन्हें न तो मौत आयेगी न कारामद ज़िन्दगी मिलेगी, हाँ जिनके साथ ख़ुदा का इरादा रहमत का है वे आग में गिरते ही जलकर मर जायेंगे, फिर सिफ़ारिशी लोग जायेंगे और उनके ढेर (यानी लाशें) छुड़ा लायेंगे, फिर नहरे हयात में डाल दिये जायेंगे, जन्नती नहरों का पानी उन पर डाला जायेगा और वे इस तरह जी उठेंगे जिस तरह दाना नाली के किनारे कूड़े पर उग आता है कि पहले सब्ज़ (हरा) होता है फिर ज़र्द (पीला) फिर हरा। लोग कहने लगे हुज़ूर! आप तो इस तरह बयान फ़रमाते हैं जैसे आप जंगल (यानी खेती के मामलात) से वाक़िफ़ हों। यह हदीस विभिन्न अलफ़ाज़ से बहुत सी किताबों में मौजूद है। क़ुरआने करीम में एक और जगह है:

وَنَادَوْا یٰمٰلِكُ لِیَقْضِ عَلَیْنَا رَبُّكَ........ الخ.

यानी जहन्नमी लोग पुकार-पुकार कर कहेंगे कि ऐ मालिक! (यह जहन्नम के दारोग़ा का नाम है) ख़ुदा तआ़ला से कह कि वह हमें मौत दे दे। जवाब मिलेगा तुम तो अब इसी में पड़े रहने वाले हो। एक और जगह इरशाद है:

Maktab E Ashraf

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا......... الخ.

न तो उनको मौत आयेगी, न अ़ज़ाब कम होंगे। और भी इस मायने की कई आयतें हैं।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ۝ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝ ع	मुराद पाई उस शख़्स ने जो (क़ुरआन सुन कर ग़लत अ़क़ीदों और बुरे अख़्लाक़ से) पाक हो गया (14) और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा। (15) (मगर ऐ इनकार करने वालो! तुम आख़िरत का सामान नहीं करते) बल्कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो (16) हालाँकि आख़िरत (दुनिया से) कहीं बेहतर और पायदार है। (17) (और यह मज़मून सिर्फ़ क़ुरआन ही का दावा नहीं बल्कि) यह मज़मून पहले सहीफ़ों में भी है (18) यानी इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में। (पस इससे और भी ज़्यादा ताकीद हो गई)। (19)

ع ١٩ ١٢

कामयाबी पाने वाले ये होंगे

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जिसने बुरे और घटिया अख़्लाक़ से अपने आपको पाक कर लिया, इस्लामी अहकाम की तामील की, नमाज़ को ठीक वक़्त पर क़ायम किया, सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला की रज़ामन्दी और उसकी ख़ुशनूदी तलब करने के लिये, उसने निजात और फ़लाह (कामयाबी) पा ली। रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के एक होने, और उसका कोई शरीक न होने की गवाही दे, उसके सिवा किसी की इबादत न करे, मेरी रिसालत को मान ले और पाँचों वक़्त की नमाज़ों की पूरी तरह से हिफ़ाज़त करे वह निजात पा गया। (बज़्ज़ार)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद पाँच वक़्त की नमाज़ है। हज़रत अबुल-आ़लिया रह. ने एक मर्तबा अबू ख़ुल्दा से फ़रमाया कि कल जब ईदगाह जाओ तो मुझसे मिलते जाना। जब मैं गया तो मुझसे कहा कुछ खा लिया है? मैंने कहा हाँ। फ़रमाया नहा चुके हो? मैंने कहा हाँ। फ़रमाया ज़काते फ़ित्र (यानी फ़ित्रा) अदा कर चुके हो? मैंने कहा हाँ। फ़रमाया बस यही कहना था कि इस आयत में यही मुराद है। मदीना वाले फ़ितरे से और पानी पिलाने से अफ़ज़ल कोई और सदक़ा नहीं जानते थे। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. भी लोगों को फ़ित्रा अदा करने का हुक्म करते, फिर इसी आयत की तिलावत करते। हज़रत अबुल-अहवस रह. फ़रमाते हैं कि तुम में से कोई नमाज़ का इरादा करे और कोई साईल (माँगने वाला) आ जाये तो उसे ख़ैरात दे दे, फिर यही आयत पढ़ी। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि उसने अपने माल को पाक कर लिया और अपने रब को राज़ी कर लिया।

फिर इरशाद होता है कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी पर तरजीह (वरीयता) दे रहे हो जबकि दर असल तुम्हारी मस्लेहत, तुम्हारा नफ़ा आख़िरत की ज़िन्दगी को दुनियावी ज़िन्दगी पर तरजीह

देने में है। दुनिया हक़ीर है, फ़ानी है। आख़िरत आला है बाक़ी है। एक आक़िल (बुद्धिमान) ऐसा नहीं कर सकता कि फ़ानी को बाक़ी पर इख़्तियार कर ले और इसके इन्तिज़ाम (व्यवस्था) में पड़कर उसके एहतिमाम (पाबन्दी और ध्यान) को छोड़ दे।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दुनिया उसका घर है जिसका घर आख़िरत में न हो। दुनिया उसका माल है जिसका माल वहाँ न हो। इसके जमा करने के पीछे वे लगते हैं जो बेवक़ूफ़ हों। इब्ने जरीर में है कि हज़रत अ़र्फ़जा सक़फ़ी इस सूरत को हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के पास पढ़ रहे थे। जब इस आयत पर पहुँचे तो तिलावत छोड़कर अपने साथियों से फ़रमाने लगे कि सच है, हमने दुनिया को आख़िरत पर तरजीह दी। लोग ख़ामोश रहे तो आपने फ़रमाया- इसलिये कि हम दुनिया के गरवीदा (चाहने वाले) हो गये कि यहाँ की ज़ीनत (चमक-दमक) को, यहाँ की औरतों को, यहाँ के खाने पीने को हमने देख लिया, आख़िरत नज़रों से ओझल है तो हमने इस मौजूद की तरफ़ तवज्जोह की और उस बाद वाली दुनिया से आँखें फेर लीं। या तो यह फ़रमान हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. का तवाज़ो और विनम्रता के तौर पर है या फिर आ़म इनसान की बात बयान फ़रमा रहे हैं। वल्लाहु आलम।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिसने दुनिया से मुहब्बत की उसने अपनी आख़िरत को नुक़सान पहुँचाया, और जिसने आख़िरत से मुहब्बत रखी उसने दुनिया को नुक़सान पहुँचाया। ऐ लोगो! तुम बाक़ी रहने वाली को फ़ना होने वाली पर तरजीह दो। (मुस्नद अहमद)

फिर फ़रमाता है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के सहीफ़ों में भी यह था। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि यह सब बयान उन सहीफ़ों (आसमानी पुस्तिकाओं) में भी था। (बज़्ज़ार) नसाई में हज़रत अ़ब्बास रज़ि. से यह मरवी है और जब आयतः

وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰى.

(यानी सूरः नज्म की आयत 37) नाज़िल हुई तो फ़रमाया कि इससे मुराद यह है कि एक का बोझ दूसरे को नहीं उठाना है। सूरः नज्म में है:

اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى.....................الخ

यानी ये सब अहकाम पहली किताबों में भी थे। इसी तरह यहाँ भी मुराद "सब्बिहिस्-म" की ये आयतें हैं। बाज़ों ने पूरी सूरत कही है, बाज़ों ने आयत 14 से 17 तक कहा है। ज़्यादा ठीक भी यही मालूम होता है। वल्लाहु आलम।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः सब्बिहिस्-म की तफ़सीर पूरी हुई। ख़ुदा तआ़ला हर शख़्स को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाये, आमीन।

Maktab E Ashraf

सूरः ग़ाशिया

सूरः ग़ाशिया मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 26 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

यह हदीस पहले गुज़र चुकी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. सूरः "सब्बिहिस्-म" और सूरः "ग़ाशिया" को ईदैन की नमाज़ों और जुमे में पढ़ते थे। मुवत्ता इमाम मालिक में है कि जुमे के दिन पहली रक्अ़त में सूरः जुमा और दूसरी में सूरः ग़ाशिया (यानी यही सूरत, पढ़ते थे। (अबू दाऊद) सही मुस्लिम, इब्ने माजा और नसाई शरीफ़ में भी यह हदीस है।

هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ○ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ○ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ○ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً○ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ○ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ○ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ○

आपको उस आ़म घेराव करने वाले वाकिए की कुछ ख़बर पहुँची है? (मुराद इससे कियामत है)। (1) बहुत-से चेहरे उस दिन ज़लील (और) मुसीबत झेलते (2) (और मुसीबत झेलने से) ख़स्ता होंगे (3) (और) भड़कती हुई आग में दाख़िल होंगे (4) (और) खौलते हुए चश्मे से पानी पिलाए जाएँगे। (5) (और) उनको सिवाय एक काँटेदार झाड़ के और कोई खाना नसीब न होगा। (6) जो न (तो खाने वालों को) मोटा करेगा और न (उनकी) भूख को दूर करेगा। (7)

कियामत की ख़बर

"ग़ाशिया" कियामत का नाम है इसलिये कि वह सब पर आयेगी, सबको घेरे हुए होगी और हर एक को ढाँप लेगी। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, एक औ़रत की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आई, आप खड़े होकर सुनने लगे। उसने यही आयत "हल अता-क....." पढ़ी, यानी क्या तेरे पास ढाँप लेने वाली कियामत की बात पहुँची है? तो आपने जवाब में फ़रमाया "नअ़म् क़द जाअनी" यानी हाँ मेरे पास पहुँच चुकी है। उस दिन बहुत से लोग ज़लील चेहरों वाले होंगे, ज़िल्लत उन पर बरस रही होगी, उनके आमाल बरबाद हो गये होंगे। बड़े आमाल किये थे, सख़्त तकलीफ़ें उठाई थीं, वे आज भड़कती हुई आग में दाख़िल हो गये।

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक ख़ानकाह के पास से गुज़रे, वहाँ के राहिब (ईसाई पादरी) को आवाज़ दी, वह हाज़िर हुआ, आप उसे देखकर रो दिये। लोगों ने पूछा हज़रत! क्या बात है? फ़रमाया इसे देखकर यह आयत याद आ गयी कि "इबादत और मेहनत करते हैं, लेकिन आख़िर जहन्नम में

जायेंगे"। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद ईसाई हैं। हज़रत इक्रिमा और इमाम सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि दुनिया में गुनाहों के काम करते रहे और आख़िरत में अ़ज़ाब की तकलीफ़ें बरदाश्त करेंगे। ये सख़्त भड़कने वाली जलती, तपती आग में जायेंगे जहाँ सिवाय "ज़रीअ़" के और कुछ खाने को न मिलेगा। "ज़रीअ़" आग का पेड़ होगा, जहन्नम का पत्थर होगा, यह अ़फ़ूर की बैल होगी, उसमें ज़हरीले काँटेदार फल लगे होंगे। यह बदतरीन खाना होगा और बहुत ही बुरा होगा। न बदन बढ़ायेगा, न भूख मिटायेगा और न नुक़सान दूर होगा।

वُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝	बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले (8) (और) अपने (नेक) कामों की बदौलत ख़ुश होंगे (9) (और) आला दर्जे की जन्नत में होंगे (10) जिसमें कोई बेहूदा बात न सुनेंगे। (11) उस (जन्नत) में बहते हुए चश्मे होंगे। (12) (और) उस (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे तख़्त (बिछे) हैं (13) और रखे हुए आबख़ोरे "पानी पीने के बरतन" (मौजूद) हैं। (14) और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे (तकिए) हैं (15) और सब तरफ़ क़ालीन (ही क़ालीन) फैले पड़े हैं। (16)

तरोताज़ा और चमकते चेहरे

ऊपर चूँकि बदकारों का बयान और उन पर होने वाले अ़ज़ाबों का ज़िक्र हुआ है तो यहाँ नेकोकारों का और उनके सवाब का बयान हो रहा है। फ़रमाया कि उस दिन बहुत से चेहरे ऐसे भी होंगे जिन पर ख़ुशी के आसार जाहिर होंगे। ये अपने आमाल से ख़ुश होंगे, जन्नतों के बुलन्द बाला-ख़ानों में होंगे, जिसमें कोई बेहूदा बात कान में न पड़ेगी। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا.

कि उसमें सिवाय सलामती और सलाम के कोई बुरी बात न सुनेंगे। और फ़रमायाः

لَا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ.

न उसमें बेहूदगी है न गुनाह की बातें। एक और जगह फ़रमाया हैः

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا. اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا.

न उसमें फ़ुज़ूल बकवास सुनेंगे न बुरी बातें, सिवाय सलाम ही सलाम के और कुछ न होगा। उसमें बहती हुई नहरें होंगी।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों और मुश्क के टीलों से निकलती हैं, उसमें ऊँचे-ऊँचे बुलन्द व बाला तख़्त हैं, जिन पर बेहतरीन फ़र्श हैं और उनके पास हूरें बैठी हुई हैं। अगरचे ये तख़्त बहुत ऊँचे और मोटे हैं लेकिन जब ये अल्लाह तआ़ला के दोस्त उन पर बैठना चाहेंगे तो वे झुक जायेंगे। शराब के भरपूर जाम इधर-उधर क़रीने से चुने हुए हैं जो चाहे जिस क़िस्म का चाहे जिस मिक़्दार

में चाहे ले ले और पी ले। तकिये एक क़तार में लगे हुए हैं और इधर-उधर बेहतरीन बिस्तरे और फ़र्श बाक़ायदा बिछे हुए हैं। इब्ने माजा वग़ैरह में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि कोई है जो तहबन्द चढ़ाये (यानी मुस्तैद और तैयार हो जाये), जन्नत की तैयारी कर ले। उस जन्नत की जिसकी लम्बाई चौड़ाई बेहिसाब है। काबे के रब की क़सम वह एक चमकता हुआ नूर है। वह लहलहाता हुआ सब्ज़ा (हरियाली) है, वो बुलन्द व बाला महल हैं, वो बहती हुई नहरें हैं, वो बहुत ज़्यादा रेशमी जोड़े हैं, वो पके-पकाये तैयार उम्दा फल हैं, वह हमेशगी वाली जगह है। वह सरासर मेवे, सब्ज़ा, राहत और नेमत है। वह तरोताज़ा और बुलन्द व बाला जगह है। सब लोग बोल उठे कि हम सब उसके इच्छुक हैं और उसके लिये तैयारी करेंगे। फ़रमाया कि इन्शा-अल्लाह कहो। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने इन्शा-अल्लाह कहा।

اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ۙ
وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ۙ وَاِلَى
الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ۙ وَاِلَى الْاَرْضِ
كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ۙ فَذَكِّرْ ۗ اِنَّمَآ اَنْتَ
مُذَكِّرٌ ۝ۙ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝ۙ اِلَّا
مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝ۙ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ
الْاَكْبَرَ ۝ؕ اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۝ۙ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا
حِسَابَهُمْ ۝ ع ١ ٢٦ ١٣ النصف

तो क्या वे लोग ऊँट को नहीं देखते कि किस तरह (अ़जीब तौर पर) पैदा किया गया है? (17) और आसमान को (नहीं देखते) कि किस तरह बुलन्द किया गया है? (18) और पहाड़ों को (नहीं देखते) कि किस तरह खड़े किए गए हैं? (19) और ज़मीन को (नहीं देखते) कि किस तरह बिछाई गई है? (20) तो आप (भी उनकी फ़िक्र में न पड़िये बल्कि सिर्फ़) नसीहत कर दिया कीजिए, (क्योंकि) आप तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हैं। (21) (और) आप उनपर मुसल्लत नहीं हैं (जो ज़्यादा फ़िक्र में पड़ें)। (22) हाँ! मगर जो मुँह फेरेगा और कुफ़्र करेगा (23) तो ख़ुदा उसको (आख़िरत में) बड़ी सज़ा देगा। (24) क्योंकि हमारे ही पास उनका आना होगा। (25) फिर हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है (आप ज़्यादा ग़म में न पड़िये)। (26)

इन चीज़ों से सबक़ लो और नसीहत पकड़ो

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि वे उसकी मख़्लूक़ात (बनाई हुई चीज़ों) पर ग़ौर व ख़ोज़ के साथ नज़र डालें और देखें कि उसकी बेइन्तिहा क़ुदरत उनमें से हर चीज़ से किस तरह ज़ाहिर होती है। उसकी पाक ज़ात पर हर चीज़ किस तरह दलालत कर रही है। ऊँट को ही देखो कि किस अ़जीब व ग़रीब तरकीब और शक्ल व सूरत का है, कितना मज़बूत और ताक़तवर है, इसके बावजूद किस तरह नर्मी और आसानी से बोझ लाद लेता है और एक बच्चे के साथ भी किस तरह इताअ़त-गुज़ार (आज्ञाकारी) बनकर चलता है। उसका गोश्त भी तुम्हारे खाने में आता है, उसके बाल भी तुम्हारे काम आते हैं, उसका दूध तुम पीते हो और तरह-तरह के फ़ायदे उठाते हो। सबसे पहले उसे इसलिये बयान किया गया कि उमूमन अ़रब के इलाक़े में और अ़रब वालों के पास यही जानवर था।

Maktab E Ashraf

हज़रत क़ाज़ी शुरैह फ़रमाया करते थे कि आओ चलो चलकर देखें कि ऊँट की पैदाईश किस तरह है, और आसमान की बुलन्दी ज़मीन के मुक़ाबले में कैसी है, वग़ैरह। एक और जगह इरशाद है:

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ......... الخ.

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने उसे किस तरह बनाया, कैसे सजाया और एक सुराख़ नहीं छोड़ा। फिर पहाड़ों को देख कि कैसे गाड़ दिये गये ताकि ज़मीन हिल न सके और पहाड़ भी अपनी जगह न छोड़ सकें। फिर उसमें जो भलाई और नफ़े की चीज़ें पैदा की हैं उन पर भी नज़र डालो। ज़मीन को देखो कि कस तरह फैलाकर बिछा दी गयी है।

ग़र्ज़ कि यहाँ उन चीज़ों का ज़िक्र किया जो क़ुरआन के मुख़ातब अ़रब वालों की हर वक़्त नज़रों के सामने रहा करती हैं। एक देहाती जो अपने ऊँट पर सवार होकर निकलता है, ज़मीन उसके नीचे होती है, आसमान उसके ऊपर होता है, पहाड़ उसकी निगाहों के सामने होते हैं और ऊँट पर ख़ुद सवार है। इन चीज़ों से ख़ालिक़ की कामिल क़ुदरत और कारीगरी बिल्कुल ज़ाहिर है और साफ़ ज़ाहिर है कि इनका ख़ालिक़ और बनाने वाला रब अ़ज़मत व इ़ज़्ज़त वाला, मालिक व मुख़्तार, माबूदे बरहक़ और वास्तविक ख़ुदा वही है, उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जिसके सामने हम अपनी आ़जिज़ी और पस्ती का इज़हार करें, जिसे हम हाजतों के वक़्त पुकारें, जिसका नाम लें और जिसके सामने सर झुकायें।

हज़रत ज़िमाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जो सवालात हुज़ूरे पाक सल्ल. से किये थे वो इस तरह की क़समें देकर किये थे। बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसाई, मुस्नद अहमद वग़ैरह में हदीस है, हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि हमें बार-बार सवालात करने से रोक दिया गया था तो हमारी यह ख़्वाहिश रहती थी कि बाहर का कोई अ़क़्लमन्द शख़्स आये, वह सवालात करे, हम भी मौजूद हों और फिर हुज़ूर सल्ल. के जवाबात सुनें। चुनाँचे एक दिन एक देहाती आये और कहने लगे ऐ मुहम्मद (सल्ल.)! आपके क़ासिद हमारे पास आये और हम से कहा कि आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने आपको अपना रसूल बनाया है। आपने फ़रमाया उसने सच कहा। वह कहने लगा बतलाईये किस ने आसमान को पैदा किया? आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने। कहा ज़मीन किसने पैदा की? आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने। कहा इन पहाड़ों को किसने गाड़ दिया? और इनमें ये फ़ायदे की चीज़ें किसने पैदा कीं? आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने। कहा पस आपको क़सम है उस अल्लाह तआ़ला की जिसने आसमान व ज़मीन पैदा किये, और इन पहाड़ों को गाड़ दिया, क्या अल्लाह तआ़ला ही ने आपको अपना रसूल बनाकर भेजा है? आपने फ़रमाया हाँ। कहा आपके क़ासिद ने यह भी कहा है कि हम पर रात दिन में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। फ़रमाया उसने सच कहा। कहा उस अल्लाह तआ़ला की आपको क़सम है जिसने आपको भेजा है कि क्या यह ख़ुदा का हुक्म है? आपने फ़रमाया हाँ। कहा आपके क़ासिद ने यह भी कहा कि हमारे मालों में ज़कात फ़र्ज़ है। फ़रमाया सच कहा। कहा आपको अपने भेजने वाले ख़ुदा की क़सम क्या अल्लाह ने आपको यह हुक्म दिया है? फ़रमाया हाँ। कहा और आपके क़ासिद ने हममें से ताक़त रखने वाले लोगों को हज का हुक्म भी दिया है। आपने फ़रमाया हाँ उसने सच कहा। वह यह सुनकर यह कहता हुआ चल दिया कि उस एक ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, न मैं इन पर कुछ ज़्यादती करूँगा न इनमें कोई कमी करूँगा (यानी

दूसरों को भी आपकी बात इसी तरह बताऊँगा)।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अगर इसने सच कहा है तो यह जन्नत में दाख़िल होगा। बाज़ रिवायात में है कि उसने कहा मैं ज़िमाम बिन सालबा हूँ बनू सअ़द बिन बक्र का भाई। अबू यअ़ला में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. हमें अक्सर यह हदीस सुनाया करते थे कि ज़माना जाहिलीयत में एक औ़रत पहाड़ पर थी, उसके साथ उसका एक छोटा सा बच्चा था। यह औ़रत बकरियाँ चराया करती थी। उसके लड़के ने उससे पूछा कि अम्माँ जान! तुम्हें किसने पैदा किया? उसने कहा अल्लाह ने। पूछा मेरे अब्बा जी को किसने पैदा किया? उसने कहा अल्लाह ने। पूछा मुझे? कहा अल्लाह तआ़ला ने। पूछा आसमान को? कहा अल्लाह ने। पूछा पहाड़ों को? बतलाया कि उन्हें भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है। बच्चे ने फिर सवाल किया कि अच्छा इन बकरियों को किसने पैदा किया? अम्माँ ने कहा इन्हें भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है। बच्चे के मुँह से बेइख़्तियार निकला कि ख़ुदा तआ़ला बड़ी शान वाला है। उसका दिल अल्लाह की बड़ाई से भर गया, वह अपने नफ़्स पर क़ाबू न रख सका और पहाड़ पर से गिर पड़ा, टुकड़े टुकड़े हो गया। इब्ने दीनार रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. भी यह हदीस हम से अक्सर बयान फ़रमाया करते थे। इस हदीस की सनद में अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र मदीनी ज़ईफ़ हैं।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम तो ख़ुदा की रिसालत की तब्लीग़ किया करो, तुम पर सिर्फ़ अल्लाह के पैग़ाम का पहुँचा देना है, हिसाब हमारे ज़िम्मे है, आप उन पर मुसल्लत नहीं हैं, जबर करने वाले नहीं हैं, उनके दिलों में आप ईमान पैदा नहीं कर सकते, आप उन्हें ईमान लाने पर मजबूर नहीं कर सकते। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे हुक्म किया गया है कि मैं लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वे ला इला-ह इल्लल्लाहु कहें। जब वे इसे कह लें तो उन्होंने अपनी जान-माल मुझसे बचाये, मगर इस्लाम के हक़ के साथ (यानी अगर इस्लामी क़ानून के एतिबार से ही कहीं उनका माल या जान लेने पड़ें तो और बात है)। और उनका हिसाब अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसी आयत की तिलावत की। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुस्नद वग़ैरह)

फिर फ़रमाता है- मगर वह जो मुँह मोड़े और कुफ़्र करे। यानी न अ़मल करे, न ईमान लाये, न इक़रार करे। जैसे एक दूसरी जगह फ़रमान हैः

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى. وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى.

न तो (हक़ बात की) तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी बल्कि झुठलाया और मुँह फेर लिया।

इसी लिये फ़रमाया कि उसे बहुत बड़ा अ़ज़ाब होगा। अबू उमामा बाहिली हज़रत ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआ़विया रज़ि. के पास गये। उसने कहा कि तुम ने नबी सल्ल. से जो आसान से आसान हदीस सुनी हो उसे मुझे सुनाओ। आपने फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल. से सुना है कि तुम में से हर एक जन्नत में जायेगा मगर वह जो इस तरह की सरकशी करे जैसे शरीर ऊँट अपने मालिक पर करता है। (मुस्नद अहमद)

उन सब का लौटना हमारी ही तरफ़ है, फिर हम ही उनसे हिसाब लेंगे और उन्हें बदला देंगे, नेकी का नेक, बुराई का बुरा।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः ग़ाशिया की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktaba E Ashraf

सूरः फ़ज्र

सूरः फ़ज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

नसाई शरीफ़ में है कि हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने नमाज़ पढ़ाई। एक शख़्स आया और जमाअ़त में शामिल हो गया। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. ने नमाज़ में क़िराअत लम्बी की, उसने मस्जिद के एक कोने में अपनी नमाज़ पढ़ ली फिर फ़ारिग़ होकर चला गया। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. को भी यह वाक़िआ़ मालूम हुआ तो हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में आकर बतौर शिकायत यह वाक़िआ़ बयान किया। आपने उस जवान को बुलवाकर पूछा तो उसने कहा हुज़ूर! मैं क्या करता, मैं इनके पीछे नमाज़ पढ़ रहा था, इन्होंने लम्बी क़िराअत शुरू की तो मैंने घूमकर मस्जिद के कोने में अपनी नमाज़ पढ़ ली। फिर अपनी ऊँटनी को चारा डाला। आपने फ़रमाया ऐ मुआ़ज़! क्या तू फ़ितने में डालने वाला है (यानी लोगों को बिदकाने और उकताने वाला है)? तू इन सूरतों से कहाँ है (यानी इन्हें क्यों नहीं पढ़ लिया करता) सूरः अअ़्ला, सूरः शम्स, सूरः जुहा, सूरः फ़ज्र और सूरः लैल।

وَالْفَجْرِ○ وَلَيَالٍ عَشْرٍ○ وَّالشَّفْعِ
وَالْوَتْرِ○ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ○ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ
قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ○ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ
رَبُّكَ بِعَادٍ○ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ○ الَّتِيْ
لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ○ وَثَمُوْدَ
الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ○ وَفِرْعَوْنَ
ذِي الْاَوْتَادِ○ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ○
فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ○ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ

क़सम है (फ़ज्र के वक़्त की) (1) और (ज़िलहिज्जा की) दस रातों की (2) और जुफ़्त और ताक़ "यानी जोड़े और बेजोड़" की (3) और (क़सम है) रात की जब वह चलने लगे (यानी गुज़रने लगे) (4) क्यों इस (ज़िक्र हुई क़सम) में अ़क़्लमन्द के वास्ते काफ़ी क़सम भी है। (5) क्या आपको मालूम नहीं कि आपके परवर्दिगार ने क़ौमे आ़द यानी क़ौमे इरम के साथ क्या मामला किया? (6) जिनके डील-डोल सुतूनों के जैसे (लम्बे) थे। (7) (और) जिनके बराबर (ताक़त व क़ुव्वत में दुनिया भर के) शहरों में कोई शख़्स नहीं पैदा किया गया। (8) और (आपको मालूम है कि) क़ौमे समूद के (साथ क्या मामला किया गया) जो वादी-ए-क़ुरा में (पहाड़ के) पत्थरों को तराशा करते थे (और मकानात बनाया करते थे)। (9) और मेख़ों वाले फ़िरऔ़न के साथ, (10) जिन्होंने शहरों में सर

Mahtab Ashraf

رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝	उठा रखा था। (11) और उनमें बहुत फ़साद मचा रखा था। (12) सो आपके रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया। (13) बेशक आपका रब (नाफ़रमानों की) घात में है। (14)

पहले गुज़री इन क़ौमों के हाल पर निगाह डालिये

फ़जर तो हर शख़्स जानता है यानी सुबह। और यह मतलब भी है कि बक़्र-ईद के दिन की सुबह, और यह मुराद भी है कि सुबह के वक़्त की नमाज़, और पूरा दिन। और दस रातों से मुराद ज़िलहिज्जा के महीने की पहली दस रातें। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि कोई इबादत इन दस दिनों की इबादत से अफ़ज़ल नहीं। लोगों ने पूछा अल्लाह की राह का जिहाद भी? फ़रमाया यह भी नहीं, मगर वह शख़्स जो जान व माल लेकर निकला और फिर कुछ भी साथ लेकर न पलटा। बाज़ों ने कहा है कि मुहर्रम के पहले दस दिन मुराद हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि रमज़ान के पहले दस दिन हैं। लेकिन सही क़ौल पहला ही है यानी ज़िलहिज्जा की पहली दस रातें। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि "अ़श्र" से मुराद ईदुल-अज़्हा के दस दिन हैं और वत्र से मुराद अ़रफ़े का दिन (यानी ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़) है, और "शफ़्अ़" से मुराद क़ुरबानी का दिन है। इसकी सनद में तो कोई मुज़ायक़ा नहीं लेकिन मतन में नकारत है। वल्लाहु आलम।

वत्र से मुराद अ़रफ़े का दिन है। यह (ज़िलहिज्जा की) नवीं तारीख़ होती है तो शफ़्अ़ से मुराद दसवीं तारीख़ है, यानी बक़्र-ईद का दिन। वह ताक़ (बेजोड़, वह संख्या जिसका जोड़ा न हो) है, यह जुफ़्त (जोड़ेदार) है। हज़रत वासिल बिन साइब रह. ने हज़रत अ़ता रह. से पूछा कि क्या वत्र से मुराद यही वित्र नमाज़ है? आपने फ़रमाया नहीं! शफ़्अ़ अ़रफ़े का दिन है और वत्र ईदुल-अज़्हा की रात है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रह. ख़ुतबा पढ़ रहे थे कि एक शख़्स ने खड़े होकर पूछा कि शफ़्अ़ क्या है और वत्र क्या है? आपने फ़रमाया "फ़-मन् तअ़ज्ज-ल यौमैनि" में जो दो दिन का ज़िक्र है वह शफ़्अ़ है। और "व मन् त-अख़्ख़-र" में जो एक दिन है वह वत्र है। यानी ग्यारहवीं बारहवीं ज़िलहिज्जा के दिन शफ़्अ़ है और तेहरवीं तारीख़ वत्र है। आपने यह भी फ़रमाया कि "अय्यामे तशरीक़" (11,12,13 ज़िलहिज्जा) का बीच वाला दिन शफ़्अ़ है और आख़िरी दिन वत्र है। सहीहैन की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला के एक कम एक सौ नाम हैं, जो उन्हें याद कर ले वह जन्नती है। वह वत्र (बेजोड़ यानी एक) है, वत्र को दोस्त रखता है। ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद तमाम मख़्लूक़ है, उसमें शफ़्अ़ भी है और वत्र भी। यह भी कहा गया है कि मख़्लूक़ शफ़्अ़ और अल्लाह वत्र है। यह भी कहा गया है कि शफ़्अ़ सुबह की नमाज़ है और वत्र मग़रिब की नमाज़ है। यह भी कहा गया है कि शफ़्अ़ से मुराद जोड़े-जोड़े और वत्र से मुराद अल्लाह तआ़ला। जैसे आसमान-ज़मीन, तरी-ख़ुश्की, जिन्नात-इनसान, सूरज-चाँद वग़ैरह। क़ुरआने पाक में है:

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ.

हमने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है ताकि तुम इबरत हासिल कर लो।

यानी जान लो कि इन तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) एक अल्लाह है,

जिसका कोई शरीक नहीं। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद गिनती है, जिसमें जुफ़्त (जोड़े जैसे 2,4,6,8) भी है और ताक़ (बेजोड़ जैसे 1,3,5,7,9) भी है। एक हदीस में है कि शफ़्अ़ से मुराद दो दिन हैं और वत्र से मुराद तीसरा दिन। यह हदीस उस हदीस के मुख़ालिफ़ है जो इससे पहले गुज़र चुकी है। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद नमाज़ है कि उसमें शफ़्अ़ है। जैसे सुबह की दो, ज़ोहर अ़सर और इशा की चार-चार, और वत्र है जैसे मग़रिब की तीन रक्अ़तें हैं जो दिन के वित्र हैं और इसी तरह आख़िर रात का वित्र। एक मरफ़ूअ़ हदीस में मुत्लक़ नमाज़ के लफ़्ज़ के साथ मरवी है। बाज़ सहाबा से फ़र्ज़ नमाज़ मरवी है, लेकिन यह मरफ़ूअ़ हदीस, ज़्यादा ठीक यही मालूम होता है कि हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर मौक़ूफ़ है। वल्लाहु आलम।

इमाम इब्ने जरीर रह. ने इन आठों अक़्वाल में से किसी को फ़ैसल (आख़िरी और वरीयता-प्राप्त) क़रार नहीं दिया। फिर फ़रमाता है कि रात की क़सम जब वह जाने लगे। और यह भी मायने किये गये हैं कि जब वह आने लगे, बल्कि यही मायने ज़्यादा मुनासिब और "वल्-फ़ज्रि" से ज़्यादा मुनासबत रखते हैं। "फ़जर" कहते हैं रात के जाने को और दिन के आने को, तो यहाँ रात का आना और दिन का जाना मुराद होगा। जैसे इस आयत में हैः

وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ. وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ.

और क़सम है रात की जब वह जाने लगे और क़सम है सुबह की जब वह आने लगे।

हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि मुराद मुज़्दलिफ़ा की रात है। "हिज्र" से मुराद अ़क़्ल है। हिज्र कहते हैं रोक को, चूँकि अ़क़्ल भी ग़लत कामों और झूठी बातों से रोक देती है इसलिये इसे अ़क़्ल कहते हैं। हतीम को भी हिजरुल्-बैत इसी लिये कहते हैं कि वह तवाफ़ करने वाले को काबा शरीफ़ की शामी दीवार से रोक देता है। इसी से लिया गया है हिज्रे-यमामा, और इसी लिये अ़रब के लोग कहते हैं "ह-जरल् हाकिमु अ़ला फ़ुलानिन्" जबकि किसी शख़्स को बादशाह अपना इख़्तियार चलाने से रोक दे। और कहते हैं "हिज्रम् महजूरा"। तो फ़रमाता है कि इनमें अ़क़्लमन्दों के लिये सबक़ और नसीहत लेने की क़समें हैं। कहीं तो क़समें हैं इबादतों की, कहें इबादत के वक़्तों की। जैसे हज, नमाज़ वग़ैरह कि जिनसे उसके नेक बन्दे उसकी निकटता और उसकी नज़दीकी हासिल करते हैं और उसके सामने अपनी पस्ती व आ़जिज़ी ज़ाहिर करते हैं।

जब इन परहेज़गार नेकोकार लोगों का, इनकी आ़जिज़ी और तवाज़ो का, ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ का ज़िक्र किया तो अब इनके साथ ही इनके ख़िलाफ़ (विपरीत) जो सरकश और बदकार लोग हैं उनका ज़िक्र हो रहा है। फ़रमाता है कि क्या तुमने न देखा कि किस तरह अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे आ़द वालों को तबाह कर दिया जो कि सरकश और घमण्डी थे, ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानी और उसके रसूल की तकज़ीब करते (झुठलाते) थे और बुरे आमाल पर झुक पड़ते थे। उनमें ख़ुदा के रसूल हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम आये थे। यह आ़दे ऊला (पहली और शुरू की क़ौमे आद के लोग) हैं जो आ़द बिन इरम बिन अ़वस बिन साम बिन नूह की औलाद में थे। अल्लाह तआ़ला ने उनमें से ईमान वालों को तो निजात दे दी और बाक़ी बेईमानों को तेज़ व तुन्द, ख़ौफ़नाक और हलाकत वाली हवाओं से हलाक किया। सात रातें और आठ दिन तक यह ग़ज़बनाक आँधी चलती रही और ये सारे के सारे इस तरह ग़ारत हो गये कि उनके सर अलग थे और धड़ अलग थे। उनमें से एक भी बाक़ी न रहा, जिसका मुफ़स्सल (विस्तृत) बयान क़ुरआने करीम में कई जगह है। सूरः "अल्-हाक़्क़ा" में भी यह बयान है।

Maktab E Ashraf

"इ-र-म ज़ातिल् अ़िमादि" अ़िमाद की तफ़सीर बयान के जोड़ के लिये है ताकि अच्छी तरह वज़ाहत हो जाये। ये लोग मज़बूत और बुलन्द सुतूनों वाले घरों में रहते थे और अपने ज़माने के और लोगों से बहुत बड़े क़द व क़ामत वाले, क़ुव्वत व ताक़त वाले थे। इसी लिये हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें नसीहत करते हुए फ़रमाया थाः

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ....... الخ.

यानी याद करो कि ख़ुदा तआ़ला ने तुम्हें क़ौमे नूह के बाद ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया है और तुम्हें जिस्मानी ताक़त पूरी दी है, तुम्हें चाहिये कि ख़ुदा की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़सादी बनकर न रहो।

एक और जगह है कि क़ौमे आ़द वालों ने नाहक़ ज़मीन में सरकशी की और बोल उठे कि हम से ज़्यादा क़ुव्वत वाला और कौन है? क्या वे भूल गये कि उनको पैदा करने वाला उनसे बहुत ही ज़बरदस्त ताक़त व क़ुव्वत वाला है। यहाँ भी इरशाद होता है कि इस क़बीले जैसे ताक़तवर दूसरे शहरों में न थे, बड़े लम्बे क़द वाले, मोटे-ताज़े थे। इरम उनकी राजधानी थी, उन्हें सुतूनों वाला कहा जाता था, इसलिये भी कि ये लोग बहुत लम्बे क़द के थे, बल्कि सही वजह यह है कि उन जैसे और शहरों में न थे। ये अहक़ाफ़ में बने हुए लम्बे-लम्बे थे। और बाज़ों ने कहा है कि उनके क़बीले का ज़िक्र है यानी उस क़बीले जैसे लोग और शहरों में न थे। और यही क़ौल ठीक है, इससे पहला क़ौल ज़ईफ़ है इसलिये भी कि यही मुराद होती तो "लम् युज्अ़ल्" (नहीं बनाया गया) कहा जाता न कि "लम् युख़्लक़" (नहीं पैदा किया गया)।

इब्ने अबी हातिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि उनमें इस क़द्र जिस्मानी ताक़त थी कि उनमें से कोई उठता और एक बड़ी सारी चट्टान लेकर किसी क़बीले पर फेंक देता तो बेचारे सब के सब दबकर मर जाते। हज़रत सौर बिन ज़ैद देली रह. फ़रमाते हैं कि मैंने एक पन्ने पर लिखा हुआ पढ़ा है कि में शद्दाद बिन आ़द हूँ। मैंने सुतून बुलन्द किये हैं, मैंने हाथ मज़बूत किये हैं, मैंने सात ज़िराअ़ के ख़ज़ाने जमा किये हैं जो उम्मते मुहम्मद निकालेगी।

ग़र्ज़ कि चाहे यूँ कहिये कि वे उम्दा ऊँचे और मज़बूत मकानों वाले थे, या वे बुलन्द व बाला सुतूनों वाले थे, या वे बेहतरीन हथियार वाले थे, और यह भी हो सकता है कि लम्बे-लम्बे क़द वाले थे। मतलब यह है कि यह एक क़ौम थी जिसका ज़िक्र क़ुरआने करीम में कई जगह क़ौमे समूद वालों के साथ आया है। यहाँ भी इसी तरह आ़दियों और समूदियों दोनों का ज़िक्र है। वल्लाहु आलम।

बाज़ हज़रात ने यह भी कहा है कि "इरमे ज़ातिल् इमाद" एक शहर है, या तो दमिश्क़ या स्कन्दरिया, लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं मालूम होता, इसलिये कि इबारत का ठीक मतलब नहीं बनता। दूसरे इसलिये भी कि यहाँ यह मक़सूद है कि हर एक सरकश को ख़ुदा तआ़ला ने बरबाद किया, जिनका नाम आ़द था, न कि किसी शहर को। मैंने इस बात को यहाँ इसलिये बयान कर दिया है ताकि जिन मुफ़स्सिरीन की जमाअ़त ने यहाँ यह तफ़सीर की है उनसे कोई शख़्स धोखे में न पड़ जाये। वे लिखते हैं कि यह एक शहर का नाम है जिसकी एक ईंट सोने की है दूसरे चाँदी की। उसके मकानात, बाग़ात, महल वग़ैरह सब चाँदी सोने के हैं। कंकर लुअ्लुअ् और जवाहर हैं, मिट्टी मुश्क है, नहरें बह रही हैं, फल तैयार हैं, कोई रहने-सहने वाला नहीं है, दर व दीवार ख़ाली हैं, कोई हाँ हूँ करने वाला भी नहीं। यह शहर मुन्तक़िल होता (एक जगह से दूसरी जगह जाता) रहता है, कभी शाम में, कभी यमन में, कभी इराक़ में, कभी कहीं कभी कहीं, वग़ैरह। यह सब

Maktab E Ashraf

ख़ुराफ़ात बनी इस्राईल की हैं, उनके बद्दीन लोगों की ये गढ़ी हुई हैं ताकि जाहिलों में इस तरह की बातें फैलायें। सालबी वग़ैरह ने बयान किया है कि एक देहाती हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में अपने गुमशुदा ऊँटों को ढूँढ रहा था कि जंगल बयाबान में उसने इसी तरह की सिफ़ात का एक शहर देखा, उसमें गया घूमा फिरा, फिर लोगों से आकर ज़िक्र किया, लोग भी वहाँ गये लेकिन फिर कुछ नज़र न आया।

इब्ने अबी हातिम ने यहाँ ऐसे क़िस्से नक़ल किये हैं। यह क़िस्सा भी सही नहीं, और अगर यह देहाती वाला क़िस्सा सनद के एतिबार से सही मान लें तो मुम्किन है कि उसे कल्पना और ख़्याल हुआ हो और अपने ख़्याल में उसने यह नक़्शा जमा लिया हो और ख़्यालात की पुख़्तगी और अ़क़्ल की कमी ने उसे यक़ीन दिलाया हो कि वह सचमुच ही देख रहा है और वास्तव में यूँ न हो।

फ़ायदाः ठीक इसी तरह जो लालची जाहिल और ख़्यालात के कच्चे यूँ समझते हैं कि किसी ख़ास ज़मीन के नीचे सोने चाँदी के पुल हैं और तरह-तरह के जवाहर, याक़ूत, लुअ्लुअ् और मोती हैं, अक्सीरे कबीर है, लेकिन कुछ ऐसी रुकावटें हैं कि वहाँ लोग पहुँच नहीं सकते। जैसे ख़ज़ाने के मुँह पर कोई अज़्दहा बैठा है, किसी जिन्न का पहरा है, वग़ैरह। ये सब फ़ुज़ूल क़िस्से और बनाई हुई बातें हैं। इन्हें गढ़-गढ़ाकर बेवक़ूफ़ों और माल के लालचियों को अपने जाल में फाँसकर उनसे कुछ वसूल करने के लिये मक्कारों ने मशहूर कर रखे हैं। फिर कभी चिल्ले खींचने के बहाने से, कभी धूनी वग़ैरह देने के बहाने से, कभी किसी और तरह से उनसे ये मक्कार रुपये वसूल कर लेते हैं और अपना पेट पालते हैं, हाँ यह मुम्किन है कि ज़मीन में से जाहिलीयत के ज़माने का, या मुसलमानों के ज़माने का किसी का गाड़ा हुआ माल निकल आये तो उसका पता जिसे चल जाये वह उसके हाथ लग जाता है, न वहाँ कोई ख़ज़ाने का साँप होता है न कोई देव भूत जिन्न परी। जिस तरह उन लोगों ने मशहूर कर रखा है यह बिल्कुल ग़ैर-सही (यानी ग़लत) है। यह ऐसे ही लोगों की गढ़ी हुई है या उन जैसे ही लोगों से सुनी सुनाई है। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला नेक समझ दे। इमाम इब्ने जरीर रह. ने भी फ़रमाया है कि मुम्किन है कि इससे क़बीला मुराद हो और मुम्किन है कि शहर मुराद हो, लेकिन यह ठीक नहीं, यहाँ तो सिर्फ़ यह ज़ाहिर होता है कि एक क़ौम का ज़िक्र है, न कि शहर का। इसी लिये इसके बाद ही समूदियों का ज़िक्र किया कि वे समूद वाले जो पत्थरों को तराश लिया करते थे। जैसे एक दूसरी जगह हैः

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فَارِهِيْنَ.

यानी तुम पहाड़ों में अपने कुशादा, आरामदेह मकानात अपने हाथों पत्थरों में तराश लिया करते हो। इसके सुबूत में कि इसके मायने तराश लेने के हैं, अ़रबी शे'र भी हैं। इब्ने इस्हाक़ रह. फ़रमाते हैं कि समूदी अ़रब इलाक़े के थे, वादी-ए-क़ुरा में रहते थे। आ़दियों का क़िस्सा पूरा का पूरा सूरः आराफ़ में हम बयान कर चुके हैं, अब उसको दोबारा लिखने की ज़रूरत नहीं।

फिर फ़रमाया कि मेख़ों वाला फ़िरऔ़न। औताद के मायने इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने लश्करों के किये हैं, जो कि उसके कामों को मज़बूत करते रहते थे। यह भी नक़ल किया गया है कि फ़िरऔ़न गुस्से के वक़्त लोगों के हाथ-पाँव में मेख़ें (बड़ी कीलें) गड़वा कर मरवा डालता था। ज़न्जीरों में बाँधकर ऊपर से बड़ा पत्थर फेंकता था जिससे उसका कचूमर निकल जाता था। बाज़ लोग कहते हैं कि रस्सियों और मेख़ों वग़ैरह से उसके सामने खेल किये जाते थे, इसकी एक वजह यह भी बयान की गयी है कि उसने अपनी बीवी साहिबा को जो मुसलमान हो गयी थीं लेटाकर दोनों हाथों और दोनों पाँव में मेख़ें गाड़ीं, फिर बड़ा सारा

चक्की का पत्थर उनकी पीठ पर मारकर जान ले ली। ख़ुदा उन नेक बीबी पर रहम करे।

फिर फ़रमाया कि उन लोगों ने सरकशी पर कमर बाँध ली थी और फ़सादी लोग थे। लोगों को हक़ीर व ज़लील (गिरा हुआ कम दर्जे का) जानते थे और हर एक को तकलीफ़ पहुँचाते थे। नतीजा यह हुआ कि ख़ुदा के अ़ज़ाब का कोड़ा बरस पड़ा। वह वबाल आया जो टाले न टला और हलाक व बरबाद और तहस नहस हो गये। तेरा रब घात में है, देख रहा है, सुन रहा है, समझ रहा है, वक़्ते मुक़र्ररा पर हर बुरे व भले को नेकी बदी की जज़ा व सज़ा देगा। ये सब लोग उसके पास जाने वाले, बिल्कुल तन्हा उसके सामने खड़े होने वाले हैं, और वह अ़दल व इन्साफ़ के साथ उनमें फ़ैसले करेगा और हर शख़्स को पूरा-पूरा बदला देगा जिसका वह मुस्तहिक़ था। वह ज़ुल्म व ज़्यादती से पाक है। यहाँ पर इब्ने अबी हातिम ने एक हदीस ज़िक्र की है जो बहुत ग़रीब है, जिसकी सनद में कलाम है और सेहत में भी नज़र है। उसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ मुआ़ज़! मोमिन हक़ का क़ैदी है, ऐ मुआ़ज़! मोमिन तो हर वक़्त खटके में ही रहता है जब तक पुलसिरात से पार न हो जाये, ऐ मुआ़ज़! मोमिन को क़ुरआन ने बहुत सी दिली ख़्वाहिशों से रोक रखा है ताकि वह हलाकत से बच जाये। क़ुरआन उसकी दलील है, ख़ौफ़ उसकी हुज्जत है, शौक़ उसकी सवारी है, नमाज़ उसकी पनाह है, रोज़ा उसकी ढाल है, सदक़ा उसका छुटकारा है, सच्चाई उसकी अमीर है, शर्म उसका वज़ीर है और उसका रब इन सब के बाद उस पर वाक़िफ़ व आगाह है। वह तेज़-तेज़ निगाहों से उसे देख रहा है। इसके रावी यूनुस हज़्ज़ा और अबू हमज़ा मजहूल हैं (यानी उनके हालात मालूम नहीं)। फिर यह मुर्सल भी है। मुम्किन है यह अबू हमज़ा ही का कलाम हो। इसी लिये इब्ने अबी हातिम में है कि इब्ने अ़ब्दुल-कलाअ़ी ने अपने एक वअ़ज़ (दीनी बयान) में कहा- लोगो! जहन्नम के सात पुल हैं, उन सब पर पुलसिरात है। पहले ही पुल पर लोग रोके जायेंगे, यहाँ नमाज़ का हिसाब किताब होगा। यहाँ से निजात मिल गयी तो दूसरे पुल पर रोक होगी, यहाँ अमानत दारी का सवाल होगा। जो अमानत दार होगा उसने निजात पाई और जो ख़ियानत वाला निकला हलाक हुआ। तीसरे पुल पर सिला-रहमी की पूछगछ होगी, रिश्ते-नातों को काटने वाले यहाँ से निजात न पा सकेंगे और हलाक होंगे। रिश्तेदारी यानी सिला-रहमी वहीं मौजूद होगी और यह कह रही होगी कि ख़ुदाया जिसने मुझे जोड़ा तू उसे जोड़, और जिसने मुझे तोड़ा तू उसे तोड़। यही मायने हैं "इन्-न रब्ब-क ल-बिल्-मिरसाद" (कि बेशक आपका रब घात में है) के। यह असर (रिवायत) इतना ही है पूरा नहीं।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ
وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا
مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ
اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝
وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝

सो आदमी को जब उसका परवर्दिगार आज़माता है, यानी उसको (ज़ाहिरी तौर पर) इकराम व इनाम देता है तो वह (फ़ख़्र के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। (15) और जब उसको (दूसरी तरह) आज़माता है, यानी उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है तो वह (शिकायत के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र घटा दी। (16) हरगिज़ ऐसा नहीं! बल्कि तुम (में और आमाल भी अ़ज़ाब का सबब हैं, चुनाँचे तुम) लोग यतीम की (कुछ)

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

क़द्र (और ख़ातिर) नहीं करते हो (17) और दूसरों को भी मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देते। (18) और (तुम) मीरास का माल समेटकर खा जाते हो। (19) और माल से तुम लोग बहुत ही मुहब्बत रखते हो। (20)

इनसान के मिज़ाज में ठहराव नहीं

मतलब यह है कि जो लोग हैसियत व गुंजाईश और कुशादगी पाकर यूँ समझ बैठते हैं कि ख़ुदा ने उनका इकराम किया, यह ग़लत है, बल्कि दर असल यह इम्तिहान है। जैसे एक और जगह है:

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ.

यानी माल व औलाद के बढ़ जाने को ये लोग नेकियों का इज़ाफ़ा समझते हैं, दर असल यह उनकी नादानी है।

इसी तरह इसके उलट भी, यानी तंगी व परेशानी को इनसान अपनी तौहीन व अपमान समझ बैठता है हालाँकि दर असल यह भी ख़ुदा की तरफ़ से आज़माईश है। इसी लिये यहाँ "कल्ला" (हरगिज़ नहीं) कहकर इन दोनों ख़्यालात (सोचों) की तरदीद की, कि वास्तविकता यह नहीं कि जिसे ख़ुदा माल की वुस्अ़त दे उससे वह ख़ुश है, और जिस पर तंगी करे उससे नाख़ुश है, बल्कि मदार ख़ुशी और नाख़ुशी का इन दोनों हालतों में अ़मल पर है। ग़नी (मालदार) होकर शुक्रगुज़ारी करे तो ख़ुदा का महबूब, और फ़क़ीर होकर सब्र करे तो ख़ुदा का महबूब। ख़ुदा तआ़ला इस तरह और उस तरह आज़माता है। फिर यतीम की इज़्ज़त करने का हुक्म दिया। हदीस में है कि सब से अच्छा घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसकी अच्छी परवरिश हो रही हो, और बदतरीन घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उससे बदसुलूकी की जाती हो। फिर आप सल्ल. ने उंगली उठाकर फ़रमाया- मैं और यतीम का पालने वाला जन्नत में इस तरह होंगे यानी क़रीब क़रीब। अबू दाऊद की हदीस में है कि कलिमे की और बीच की उंगली मिलाकर उन्हें दिखाकर आप सल्ल. ने फ़रमाया कि मैं और यतीम का पालने वाला जन्नत में इस तरह होंगे।

फिर फ़रमाया कि ये लोग फ़क़ीरों मिस्कीनों के साथ सुलूक व एहसान करने, उन्हें खाना पीना देने को एक दूसरे को रग़बत व तवज्जोह नहीं दिलाते, और यह ऐब भी उनमें है कि मीरास का माल हलाल हो या हराम, सब हज़्म कर जाते हैं और माल की मुहब्बत भी उनमें बहुत ज़्यादा है।

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَ جِایْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ

(आगे इन कामों को अ़ज़ाब का सबब न समझने पर तंबीह है) कि हरगिज़ ऐसा नहीं! (जैसा कि तुम समझते हो)। जिस वक़्त ज़मीन को तोड़-तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा (21) और आपका रब और गिरोह के गिरोह फ़रिश्ते (मैदाने-मेहशर में) आएँगे। (22) और उस दिन जहन्नम को लाया जाएगा, उस दिन

Mahtab E Ashraf

الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰىؕ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِىْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِىْۚ فَيَوْمَئِذٍ لَّا
يُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ اَحَدٌۙ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗۤ
اَحَدٌؕ يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُۗ
ارْجِعِىْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةًۚ
فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْۙ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ع ١٤

इनसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौक़ा कहाँ रहा। (23) कहेगा काश! मैं इस (आख़िरत की) ज़िन्दगी के लिए कोई (नेक) अ़मल आगे भेज लेता! (24) पस उस दिन न तो ख़ुदा के अ़ज़ाब के बराबर कोई अ़ज़ाब देने वाला निकलेगा (25) और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला निकलेगा। (26) (और जो अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार थे उनको इरशाद होगा कि) ऐ इत्मीनान वाली रूह! (27) तू अपने परवर्दिगार (के क़रीब रहमत) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे ख़ुश और वह तुझसे ख़ुश। (28) फिर (उधर चलकर) तू मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा (कि यह भी रूहानी नेमत है), (29) और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। (30)

अब क्या फ़ायदा

क़ियामत के हौलनाक (डरावने और दहशत भरे) हालात का बयान हो रहा है कि यक़ीनन उस दिन ज़मीन पस्त कर दी जायेगी, ऊँची-नीची ज़मीन बराबर कर दी जायेगी और बिल्कुल साफ़ हमवार हो जायेगी। पहाड़ ज़मीन के बराबर कर दिये जायेंगे, तमाम मख़्लूक़ क़ब्र से निकल आयेगी। ख़ुद ख़ुदा तआ़ला मख़्लूक़ के फ़ैसले करने के लिये आ जायेगा। यह उस आ़म शफ़ाअ़त के बाद होगा जो तमाम औलादे आदम के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल. की होगी, और यह शफ़ाअ़त उस वक़्त होगी जबकि तमाम मख़्लूक़ एक-एक बड़े-बड़े पैग़म्बर के पास होकर आयेगी और हर नबी कह देगा कि मैं इस क़ाबिल नहीं, फिर सब के सब हुज़ूर सल्ल. के पास आयेंगे, आप फ़रमायेंगे कि हाँ-हाँ मैं इसके लिये तैयार हूँ। फिर आप सल्ल. जायेंगे और ख़ुदा के सामने सिफ़ारिश करेंगे कि वह परवर्दिगार लोगों के दरमियान फ़ैसले करने के लिये तशरीफ़ लाये, यही पहली शफ़ाअ़त है, और यही वह "मक़ामे महमूद" है जिसका तफ़सीली बयान सूरः बनी इस्राईल में गुज़र चुका है। फिर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त फ़ैसले के लिये तशरीफ़ लायेगा। उसके आने की कैफ़ियत वही जानता है, फ़रिश्ते भी उसके आगे-आगे क़तार बाँधे हाज़िर होंगे, जहन्नम भी लाई जायेगी।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जहन्नम की उस दिन सत्तर हज़ार लगामें होंगी, हर लगाम पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो उसे घसीट रहे होंगे। यही रिवायत ख़ुद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद से भी मरवी है। उस दिन इनसान अपने नये पुराने तमाम आमाल को याद करने लगेगा, बुराईयों पर पछतायेगा, नेकियों के न करने या कम करने पर अफ़सोस करेगा, गुनाहों पर नादिम (शर्मिन्दा) होगा। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर कोई बन्दा अपने पैदा होने से लेकर मरते दम तक सज्दे में पड़ा रहे और ख़ुदा का पूरा इताअ़त-गुज़ार रहे फिर भी अपनी उस इबादत को क़ियामत के

दिन मामूली और बेहैसियत समझेगा, और चाहेगा कि अगर मैं दुनिया की तरफ़ लौटा दिया जाऊँ तो अज्र व सवाब के काम और ज़्यादा करूँ।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उस दिन ख़ुदा के अ़ज़ाब जैसा अ़ज़ाब किसी और का न होगा, जो वह अपने नाफ़रमान और सरकश बन्दों को करेगा। न उस जैसी ज़बरदस्त पकड़-धकड़ और क़ैद व बन्द किसी की हो सकती है। "ज़बानिया" फ़रिश्ते बदतरीन बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ उन्हें पहनाये हुए होंगे।

यह तो हुआ बदबख़्तों का अन्जाम, अब नेकबख़्तों का हाल सुनिये। जो रूहें सुकून और इत्मीनान वाली हैं, पाक और साबित (दीन पर जमी हुई) हैं, हक़ के साथ हैं। उनसे मौत के वक़्त और क़ब्र से उठने के वक़्त कहा जायेगा कि तू अपने रब की तरफ़, उसके पड़ोस की तरफ़, उसके सवाब और अज्र की तरफ़, उसकी जन्नत और रज़ामन्दी की तरफ़ लौट चल। यह ख़ुदा से ख़ुश है और ख़ुदा इससे राज़ी है। और इसे इतना देगा कि यह भी ख़ुश हो जायेगा। तू मेरे ख़ास बन्दों में आ जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. के बारे में उतरी है। बुरैदा रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह से यह भी रिवायत है कि क़ियामत के दिन इत्मीनान वाली रूह से कहा जायेगा कि तू अपने रब यानी अपने साथी अर्थात अपने जिस्म की तरफ़ लौट जा, जिसे तू दुनिया में आबाद किये हुए थी। तुम दोनों एक दूसरे से राज़ी रज़ामन्द हो। यह भी है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह इस आयत को "फ़द्ख़ुली फ़ी अ़ब्दी" पढ़ते थे, यानी ऐ रूह मेरे बन्दे में, यानी उसके जिस्म में चली जा। लेकिन यह ग़रीब है, और ज़ाहिर क़ौल पहला ही है। जैसे एक और जगह है:

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ.

यानी फिर सब के सब अपने सच्चे मौला की तरफ़ लौटाये जायेंगे। एक और जगह है:

وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ.

यानी हमारा लौटना ख़ुदा की तरफ़ है यानी उसके हुक्म की तरफ़ और उसके सामने है।

इब्ने अबी हातिम में है कि ये आयतें हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. की मौजूदगी में उतरीं तो आपने कहा कितना अच्छा क़ौल है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया तुम्हें भी यही कहा जायेगा। दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. के सामने हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि. ने ये आयतें पढ़ीं तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने यह फ़रमाया जिस पर आपने यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि तुझे फ़रिश्ता मौत के वक़्त यही कहेगा।

इब्ने अबी हातिम में यह रिवायत भी है कि जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. के चचाज़ाद भाई का ताईफ़ में इन्तिक़ाल हुआ तो एक परिन्दा (पक्षी) आया, उस जैसा परिन्दा कभी ज़मीन पर देखा नहीं गया। वह लाश में चला गया, फिर निकलते हुए नहीं देखा गया। जब आपको दफ़न कर दिया गया तो क़ब्र के कोने से इसी आयत की तिलावत की आवाज़ आई और यह न मालूम हो सका कि कौन पढ़ रहा है। यह रिवायत तबरानी में है। अबू हाशिम क़ुबास बिन रज़ीन रह. फ़रमाते हैं कि जंगे रोम में हम दुश्मनों के हाथ क़ैद हो गये, रोम के बादशाह ने हमें अपने सामने बुलाया और कहा- या तो तुम इस दीन को छोड़ दो या क़त्ल होना मन्ज़ूर कर लो। एक-एक को वह यह कहता कि हमारा दीन क़बूल करो वरना जल्लाद को हुक्म देता हूँ कि तुम्हारी गर्दन मारे। तीन शख़्स तो मुर्तद हो गये (यानी दीन इस्लाम से फिर गये), जब चौथा आया तो उसने साफ़ इनकार किया। बादशाह के हुक्म से उसकी गर्दन उड़ा दी गयी और सर को

Maktab E Ashraf

नहर में डाल दिया गया। वह नीचे डूब गया और ज़रा सी देर में पानी पर आ गया और उन तीनों की तरफ़ देखकर कहने लगा- ऐ फ़ुलाँ और ऐ फ़ुलाँ और ऐ फ़ुलाँ! उनके नाम लेकर उन्हें आवाज़ दी। जब ये मुतवज्जह हुए सब दरबारी लोग भी देख रहे थे और ख़ुद बादशाह भी ताज्जुब के साथ सुन रहा था, उस मुसलमान शहीद के सर ने कहा सुनो! ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है:

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ. ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً. فَادْخُلِىْ فِىْ عِبَادِىْ. وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ.

(यानी इस सूरत की आख़िर की चार आयतें पढ़ीं जिनका तर्जुमा यह है- ऐ इत्मीनान वाली रूह! तू अपने परवर्दिगार (के क़रीब रहमत) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे ख़ुश और वह तुझसे ख़ुश। फिर (उधर चलकर) तू मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।) इतना कहकर वह सर फिर पानी में ग़ोता लगा गया। इस वाक़िए का इतना अच्छा असर हुआ कि क़रीब था कि ईसाई उसी वक़्त मुसलमान हो जाते, बादशाह ने उसी वक़्त दरबार बरख़ास्त करा दिया और वे तीनों फिर मुसलमान हो गये और हम सब यूँ ही क़ैद में रहे, आख़िर ख़लीफ़ा जाफ़र मन्सूर की तरफ़ से हमारा फ़िदया (रिहाई के लिये माल) आ गया और हमने निजात पाई। इब्ने अ़साकिर में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स से फ़रमाया कि यह दुआ़ पढ़ा करः

اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَسْئَلُكَ نَفْسًا بِكَ مُطْمَئِنَّةً تُؤْمِنُ بِلِقَآئِكَ وَتَرْضٰى بِقَضَآئِكَ وَتَقْنَعُ بِعَطَآئِكَ.

ख़ुदाया मैं तुझसे ऐसा नफ़्स तलब करता हूँ जो तेरी ज़ात पर इत्मीनान व भरोसा रखता हो, तेरी मुलाक़ात पर ईमान रखता हो, तेरी क़ज़ा (तक़दीर व फ़ैसले) पर राज़ी हो, तेरे दिये हुए पर क़नाअ़त (सब्र व शुक्र) करने वाला हो।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः फ़ज्र की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः बलद्

सूरः बलद् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّ ۢ بِهٰذَا
الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا
الْاِنْسَانَ فِىْ كَبَدٍ ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ
يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا

मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (यानी मक्का) की (1) और (मज़मून से हटकर इस जुमले में आपकी तसल्ली के लिए पेशीनगोई फ़रमाते हैं कि) आपको इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है। (2) और क़सम है बाप की औलाद की (3) कि हमने इनसान को बड़ी मशक़्क़त में पैदा किया है। (4) क्या वह यह ख़्याल करता है

لُّبَدًا ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝	कि उस पर किसी का बस न चलेगा (5) (और) कहता है कि मैंने इतना ज़्यादा माल ख़र्च कर डाला। (6) क्या वह यह ख़्याल करता है कि उसको किसी ने देखा नहीं? (7) क्या हमने उसको दो आँखें (8) और ज़बान और दो होंठ नहीं दिए? (9) और (फिर) हमने उसको (बुराई और भलाई के) दोनों रास्ते बतला दिए। (10)

Maktaba Ashraf

मक्का शहर की क़सम

अल्लाह तबारक व तआ़ला यहाँ मक्का मुकर्रमा की क़सम खाता है, इस हाल में कि वह आबाद है, उसमें लोग बसते हैं और वे भी अमन-चैन में हैं। "ला" से "अन्" पर रद्द किया है। फिर क़सम खाई और फ़रमाया कि ऐ नबी! तेरे लिये यहाँ एक मर्तबा लड़ाई हलाल होने वाली है जिसमें कोई गुनाह और हर्ज न होगा और उसमें जो मिले वह हलाल होगा। सिर्फ़ उसी वक़्त के लिये यह हुक्म है। सही हदीस में भी है कि इस बरकत वाले शहर मक्का को परवर्दिगारे आ़लम ने पहले दिन से ही हुर्मत (सम्मान) वाला बनाया है और क़ियामत तक यह हुर्मत व इज़्ज़त इसकी बाक़ी रहने वाली है। इसका दरख़्त न काटा जाये, इसके काँटे न उखाड़े जायें। मेरे लिये भी सिर्फ़ एक दिन ही की एक घड़ी (यानी कुछ समय) के लिये हलाल किया गया था, आज फिर इसकी हुर्मत इसी तरह लौट आयी जैसे कल थी। हर मौजूद आदमी को चाहिये कि वह मेरी यह बात उन तक पहुँचा दे जो इस मज्लिस में मौजूद नहीं हैं। एक रिवायत में है कि अगर यहाँ के लड़ाई झगड़े के जवाज़ (जायज़ होने) की दलील में कोई मेरी लड़ाई पेश करे तो कह देना कि ख़ुदा ने अपने रसूल को इजाज़त दी थी और तुम्हें नहीं दी।

फिर क़सम खाता है बाप की और औलाद की। बाज़ ने कहा है कि "मा व-ल-द" में "मा" नाफ़िया है, यानी क़सम है उसकी जो औलाद वाला है और क़सम है उसकी जो बिना औलाद के है, यानी बच्चों वाला और बाँझ। और अगर "मा" को मौसूला माना जाये तो मायने यह हुए कि बाप की और औलाद की क़सम। बाप से मुराद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और औलाद से मुराद तमाम इनसान। ज़्यादा क़वी और बेहतर बात यही मालूम होती है, क्योंकि इससे पहले क़सम है मक्का की जो तमाम ज़मीन और तमाम बस्तियों की माँ है, तो उसके बाद उसके रहने वालों की क़सम खाई और रहने वालों यानी इनसान की असल और उसकी जड़ यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की, फिर उनकी औलाद की क़सम खाई। अबू इमरान रह. फ़रमाते हैं कि मुराद हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और आपकी औलाद है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि आ़म है, यानी हर बाप और हर औलाद। फिर फ़रमाता है कि हमने इनसान को बिल्कुल दुरुस्त क़द व क़ामत वाला, जचे-तुले आज़ा (अंगों) वाला, ठीक ठाक पैदा किया है। उसकी माँ के पेट में ही उसे यह पाकीज़ा तरतीब और उम्दा तरकीब दी जाती है। जैसे एक जगह फ़रमायाः

اَلَّذِیْ خَلَقَكَ فَسَوّٰكَ...... الخ.

यानी उस ख़ुदा ने तुझे पैदा किया, दुरुस्त किया, ठीक ठाक बनाया और फिर जिस सूरत में चाहा तरकीब दी। एक और जगह हैः

Mahtab Ashraf

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ.

हमने इनसान को बेहतरीन सूरत पर बनाया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से मरवी है कि क़ुव्वत व ताक़त वाला पैदा किया है। ख़ुद इसे देखो, इसकी पैदाईश की तरफ़ ग़ौर करो, इसके दाँतों का निकलना देखो वग़ैरह। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं पहले नुत्फ़ा, फिर जमा हुआ ख़ून, फिर लोथड़ा गोश्त का, ग़र्ज़ कि अपनी पैदाईश में ख़ूब मशक़्क़तें उठाता है। जैसे एक और जगह हैः

حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا.

यानी उसकी माँ ने हमल (गर्भ की हालत) में तकलीफ़ उठाई, फिर पैदाईश में मशक़्क़त बरदाश्त की, बल्कि दूध पिलाने में भी मशक़्क़त और पालने-पोसने में भी तकलीफ़। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि सख़्ती और कमाने की तलब में पैदा किया गया है। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि सख़्ती और तूल में पैदा हुआ है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मशक़्क़त में यह भी है कि एतिदाल और क़ियाम में, दुनिया और आख़िरत में सख़्तियाँ सहनी पड़ती हैं। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम चूँकि आसमान में पैदा हुए थे इसलिये यह कहा गया। क्या वह यह समझता है कि उसके माल के लेने पर कोई क़ादिर नहीं? उस पर किसी का बस ही नहीं? क्या वह न पूछा जायेगा कि कहाँ से माल लाया और कहाँ ख़र्च किया? यक़ीनन उस पर ख़ुदा का बस है और वह पूरी तरह उस पर क़ादिर है।

फिर फ़रमाता है कि मैंने बड़े वारे के न्यारे किये, हज़ारों लाखों ख़र्च कर डाले। क्या वह यह ख़्याल करता है कि उसे कोई देख नहीं रहा? यानी क्या ख़ुदा की नज़रों से वह अपने आपको ग़ायब समझता है? क्या हमने इनसान को देखने वाली दो आँखें नहीं दीं? और दिल की बातों के इज़हार के लिये ज़बान अ़ता नहीं फ़रमाई? और दो होंठ नहीं दिये? जिनसे कलाम करने में मदद मिले, खाना खाने में मदद मिले और चेहरे की ख़ूबसूरती भी हो और मुँह की भी। इब्ने अ़साकिर में है, नबी सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ आदम के बेटे! मैंने बड़ी-बड़ी और बहुत ज़्यादा नेमतें तुझको बख़्शीं, जिन्हें तू गिन भी नहीं सकता, न उनका शुक्र अदा करने की तुझ में ताक़त है। मेरी ही यह नेमत भी है कि मैंने तुझे देखने को दो आँखें दीं, फिर मैंने उन पर पलकों का ग़िलाफ़ बना दिया है। पस इन आँखों से मेरी हलाल की हुई चीज़ें देख, अगर हराम चीज़ें तेरे सामने आयें तो इन दोनों को बन्द कर ले। मैंने तुझे ज़बान दी है और उसका ग़िलाफ़ भी इनायत फ़रमाया है। मेरी मर्ज़ी की बातें ज़बान से निकाल और मेरी मना की हुई बातों से ज़बान बन्द कर ले। मैंने तुझे शर्मगाह दी और उसका पर्दा भी अ़ता फ़रमाया है, हलाल जगह तो बेशक इस्तेमाल कर लेकिन हराम जगह पर्दा डाल ले। ऐ आदम के बेटे! तू मेरी नाराज़गी को बरदाश्त नहीं कर सकता और मेरे अ़ज़ाब के सहने की ताक़त नहीं रखता।

फिर फ़रमाया कि हमने उसे दोनों रास्ते दिखा दिये, भलाई का और बुराई का। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि दो रास्ते हैं, फिर तुम्हें बुराई का रास्ता भलाई के रास्ते से ज़्यादा अच्छा क्यों लगता है? यह हदीस बहुत ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। यह हदीस मुर्सल सनद के साथ भी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुराद इससे दोनों दूध हैं, कुछ और मुफ़स्सिरीन ने भी यही कहा है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि ठीक क़ौल पहला ही है। जैसे कि एक और जगह हैः

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ.......... الخ.

यानी हमने इनसान को मिले-जुले नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से पैदा किया, फिर हमने उसे सुनता देखता किया, हमने उसकी रहबरी की और रास्ता दिखा दिया। पस या तो शुक्रगुज़ार है या नाशुक्रा।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝ فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِىْ يَوْمٍ ذِىْ مَسْغَبَةٍ ۝ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

सो वह शख़्स (दीन की) घाटी में से होकर न निकला। (11) और आपको मालूम है कि घाटी (से) क्या (मुराद) है? (12) वह किसी (की) गर्दन का गुलामी से छुड़ा देना है (13) या खाना खिलाना फ़ाक़े के दिन में (14) किसी रिश्तेदार यतीम को, (15) या किसी ख़ाकसार मोहताज को (यानी अल्लाह के इन अहकाम का पालन करना चाहिए था)। (16) फिर (सब से बढ़कर यह कि) उन लोगों में से न हुआ जो ईमान लाए और एक-दूसरे को (ईमान की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह की, और एक-दूसरे को (मख़्लूक़ पर) रहम करने की (यानी जुल्म को छोड़ने की) तंबीह व नसीहत की। (17) यही लोग दाहिने वाले हैं। (18) और जो लोग हमारी आयतों के इनकारी हैं वे लोग बाएँ वाले हैं। (19) उन पर घेरने वाली आग होगी जिसको बन्द कर दिया जाएगा। (20)

ع ١٠ ١٥

एक घाटी

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि "अक़बा" जहन्नम के एक चिकने पहाड़ का नाम है। हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसके जहन्नम में सत्तर दर्जे हैं। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह दाख़िले की सख़्त घाटी है। इसमें अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी से दाख़िल हो जाओ। फिर उसका दाख़िला बतलाया यह कहकर कि तुम्हें किसने बतलाया कि यह घाटी क्या है? तो फ़रमाया गुलाम आज़ाद करना और अल्लाह के नाम पर खाना देना। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि यह निजात और ख़ैर के रास्तों पर क्यों न चला? फिर हमें तंबीह की और फ़रमाया- तुम क्या जानो अक़बा क्या है? गर्दन का आज़ाद करना, खाने का सदक़ा। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो किसी मुसलमान की गर्दन छुड़ाये (यानी किसी गुलाम को आज़ाद कराये या किसी बेगुनाह को किसी क़ैद से रिहा कराये) अल्लाह तआ़ला उसके हर-हर अंग को उसके हर-हर अंग के बदले जहन्नम से आज़ाद कर देता है, यहाँ तक कि हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव और शर्मगाह के बदले शर्मगाह। हज़रत अ़ली बिन हुसैन यानी इमाम ज़ैनुल-आ़बिदीन ने जब यह हदीस सुनी तो सईद बिन मरजाना (हदीस को बयान करने वाले) से पूछा कि क्या तुमने ख़ुद हज़रत अबू हुरैरह से यह हदीस सुनी है? आपने फ़रमाया हाँ। तो आपने अपने गुलाम से फ़रमाया कि मुतर्रफ़ को बुला लो, जब वह सामने आया तो आपने फ़रमाया जाओ तुम ख़ुदा के नाम पर

आज़ाद हो। बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में भी यह हदीस है। सही मुस्लिम में यह भी है कि यह गुलाम दस हज़ार दिरहम का ख़रीदा हुआ था। एक और हदीस में है कि जो मुसलमान मर्द किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद करे उसकी भी एक-एक हड्डी के बदले उसकी एक-एक हड्डी जहन्नम से आज़ाद कर दी जाती है, और जो मुसलमान औरत किसी मुसलमान बाँदी को आज़ाद करे उसकी भी एक-एक हड्डी के बदले उसकी एक-एक हड्डी जहन्नम से आज़ाद हो जाती है। (इब्ने जरीर)

मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के लिये मस्जिद बना दे अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में घर बनाता है, और जो मुसलमान गुलाम को आज़ाद करे अल्लाह तआ़ला उसे उसका फ़िदया बना देता है और उसे जहन्नम से आज़ाद कर देता है। जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हुआ उसे क़ियामत के दिन नूर मिलेगा। एक और रिवायत में यह भी है कि जो शख़्स ख़ुदा की राह में तीर चलाये चाहे वह लगे या न लगे, उसे हज़रत इस्माईल की औलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। एक और हदीस में है कि जिस मुसलमान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जायें उसे अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से जन्नत में दाख़िल करेगा। लेकिन हदीसों में मासूम बच्चे की मौत पर इस अज्रे अ़ज़ीम का वायदा है, और जवान की मौत पर किसी अज्र का वायदा नहीं (शायद इसकी वजह यह हो कि एक तो बच्चा मासूम होता है, दूसरे वह ज़िद करके अपनी बात मनवा लेता है)। क्योंकि जन्नत एक अ़ज़ीम नेमत है इसलिये किसी ख़ास अ़दद (संख्या) पर उसका मिलना मौक़ूफ़ होना चाहिये था, सब से पहला अ़दद जो कम भी है और जामे भी, वह तीन ही है। इसलिये तीन का अ़दद मेयार बना दिया गया। और जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में जोड़े (यानी ज़रूरत मन्दों को लिबास) दे तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल देगा, जिससे चाहे चला जाये। इन तमाम हदीसों की सनदें निहायत उम्दा हैं।

फ़ायदाः अबू दाऊद में है, हज़रत ग़रीफ़ बिन दैलमी फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने हज़रत वासिला बिन अस्क़ा रज़ि. से कहा कि हमें कोई ऐसी हदीस सुनाईये जिसमें कोई कमी ज़्यादती न हो, तो आप बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाने लगे कि तुम में से कोई पढ़े और उसका क़ुरआन शरीफ़ उसके घर में हो तो क्या वह कमी ज़्यादती करता है? हमने कहा हज़रत हमारा मतलब यह नहीं, हम तो यह कहते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्ल. से सुनी हुई हदीस हमें सुनाओ। आपने फ़रमाया हम एक मर्तबा रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में अपने एक साथी के बारे में हाज़िर हुए जिसने क़त्ल की वजह से अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर ली थी, तो आप सल्ल. ने फ़रमाया उसकी तरफ़ से गुलाम आज़ाद करो। अल्लाह तआ़ला उसके एक-एक अंग (बदन के हिस्से) के बदले उसका एक-एक उज़्व (अंग, बदनी हिस्सा) जहन्नम की आग से आज़ाद करेगा। यह हदीस नसाई शरीफ़ में भी है।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स किसी की गर्दन आज़ाद कराये अल्लाह तआ़ला उसे उसका फ़िदया बना देता है। ऐसी और भी बहुत सी हदीसें हैं। मुस्नद अहमद में है कि एक देहाती रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और कहने लगा हुज़ूर! कोई ऐसा काम बता दीजिए जिससे मैं जन्नत में जा सकूँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया थोड़े से अलफ़ाज़ में बहुत सारी बातें तू पूछ बैठा। नस्मा आज़ाद कर, रक़बा छुड़ा (यानी किसी जान को छुड़ा किसी की गर्दन आज़ाद कर)। उसने कहा हज़रत क्या ये दोनों एक चीज़ नहीं? आपने फ़रमाया नहीं, नस्मा की आज़ादगी के मायने तो हैं अकेला एक गुलाम आज़ाद करे, और रक़बा आज़ाद करने के मायने हैं कि थोड़ी बहुत मदद कर दे। दूध वाला जानवर दूध पीने के लिये किसी मिस्कीन को देना, ज़ालिम रिश्तेदार से नेक सुलूक करना, ये हैं जन्नत के काम। अगर इसकी तुझे ताक़त न हो तो भूखे

Maktab E Ashraf

Maktab-E-Ashraf

को खिला, प्यासे को पिला, नेकियों का हुक्म कर, बुराईयों से रोक। अगर इसकी भी ताक़त न हो तो सिवाय भलाई और नेक बात के और कोई कलिमा ज़बान से न निकाल। "ज़ी मस्ग़-बतिन" के मायने हैं भूख वाला, जब उसको खाने की इच्छा हो। ग़र्ज़ कि भूख के वक़्त का खिलाना और वह भी उसको जो नादान बच्चा है, सर से बाप का साया उठा चुका है और है भी उसका रिश्तेदार। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मिस्कीन को सदक़ा देना एक सवाब रखता है और रिश्तेदार को देना दोहरा अज्र दिलवाता है (यानी एक तो ज़रूरत मन्द की मदद करना और दूसरे रिश्तेदारी का हक़ अदा करना)। (मुस्नद अहमद)

या ऐसे मिस्कीन को देना जो मिट्टी में मिला हुआ हो, रास्ते में पड़ा हुआ हो। घर-दर न हो, बिस्तर न हो, भूख की वजह से पीठ ज़मीन से लग रही हो, अपने घर से दूर हो सफ़र में हो, फ़क़ीर व मिस्कीन, मोहताज व क़र्ज़ में दबा हुआ और मुफ़लिस हो, कोई उसका हाल पूछने वाला भी न हो, बाल-बच्चों वाला हो। ये सब मायने क़रीब-क़रीब एक ही हैं। फिर यह शख़्स बावजूद इन नेक कामों के दिल में ईमान रखता हो, इन नेकियों पर ख़ुदा से अज्र का तालिब हो। जैसे एक और जगह फ़रमाया है:

مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا........ الخ.

जो शख़्स आख़िरत का इरादा रखे और उसी के लिये कोशिश करे और हो भी वह ईमान वाला तो उनकी कोशिश ख़ुदा के यहाँ क़द्र की निगाह से देखी जाती है। एक और जगह फ़रमायाः

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى........ الخ.

ईमान वालों में से जो मर्द व औरत नेक अ़मल करे ये जन्नत में जायेंगे और वहाँ बेहिसाब रोज़ियाँ पायेंगे।

फिर उनकी एक और सिफ़त बयान हो रही है कि लोगों की तरफ़ से पेश आने वाली तकलीफ़ें सहने और उन पर रहम व करम करने की ये आपस में एक दूसरे को नसीहत व वसीयत करते हैं। जैसे कि हदीस में है- रहम करने वालों पर रहमान भी रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। एक और हदीस में है कि जो रहम न करे उस पर रहम नहीं किया जाता। अबू दाऊद में है कि जो हमारे छोटों पर रहम न करे और बड़ों के हक़ न समझे वह हम में से नहीं।

फिर फ़रमाता है कि ये लोग वे हैं जिनके दाहिने हाथ में आमाल नामा दिया जायेगा और हमारी आयतों को झुठलाने वालों के बायें हाथ में आमाल नामा मिलेगा। और ऊपर से बन्द तह-ब-तह आग में जायेंगे, जिससे न कभी छुटकारा मिलेगा न निजात, न राहत, न आराम। उसके दरवाज़े इन पर बन्द रहेंगे। इसका और ज़्यादा बयान सूरः हु-मज़ा में आयेगा, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि न उसमें रोशनी होगी न सुराख़ होगा, न कभी वहाँ से निकलना नसीब होगा। हज़रत अबू इमरान जोनी रह. फ़रमाते हैं कि जब क़ियामत का दिन आयेगा तो अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा, जिससे हर सरकश को, हर एक शैतान को और उस शख़्स को जिसकी शरारत से लोग दुनिया में डरते रहते थे, लोहे की ज़न्जीरों से मज़बूत बाँध दिया जायेगा। फिर जहन्नम में झोंक दिया जायेगा, फिर जहन्नम बन्द कर दी जायेगी। ख़ुदा की क़सम कभी उनके क़दम टिकेंगे ही नहीं, ख़ुदा की क़सम उन्हें कभी आसमान का सूरज ही दिखाई न देगा। ख़ुदा की क़सम कभी आराम से उनकी आँख लगेगी ही नहीं, ख़ुदा की क़सम उन्हें कभी कोई मज़े की चीज़ खाने पीने को मिलेगी ही नहीं। (इब्ने अबी हातिम)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः बलद् की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः शम्स

सूरः शम्स मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 15 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस पहले गुज़र चुकी है कि नबी सल्ल. ने हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. से फ़रमाया कि तुम ने सूरः अअ़्ला, सूरः शम्स और सूरः लैल के साथ इमामत क्यों न कराई।

क़सम है सूरज की और उसकी रोशनी की (1) और चाँद की जब सूरज (के छुपने के) पीछे आए। (2) और (क़सम है) दिन की जब वह उस (सूरज) को ख़ूब रोशन कर दे। (3) और (क़सम है) रात की जब वह उस (सूरज) को छुपा ले। (4) और (क़सम है) आसमान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बनाया। (5) और (क़सम है) ज़मीन की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बिछाया। (6) और (क़सम है इनसान की) जान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको दुरुस्त बनाया। (7) फिर उसकी बद-किरदारी और परहेज़गारी (दोनों बातों) को उसके दिल में डाला। (8) यक़ीनन वह मुराद को पहुँचा जिसने इस (जान) को पाक कर लिया (9) और नामुराद हुआ जिसने इसको (गुनाहों और बुराईयों में) दबा दिया। (10)	وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا○ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا○ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا○ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا○ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا○ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا○ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا○ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا○ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا○ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا○

यह सूरज और इसकी गर्मी व तपिश

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि "जुहा" से मुराद रोशनी है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि पूरा दिन मुराद है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि ठीक बात यह है कि अल्लाह तआ़ला ने सूरज की और उसके साथ दिन की क़सम खाई है। यानी सूरज छुप जाये और चाँद चमकने लगे। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि महीने के पहले पन्द्रह दिन में तो चाँद सूरज के पीछे रहता है और पिछले पन्द्रह दिन में यह आगे होता है। ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं कि मुराद इससे "शबे क़द्र" है। फिर दिन की क़सम खाई जबकि वह मुनव्वर (रोशन) हो जाये, यानी सूरज दिन को घेर ले। बाज़ अ़रबी भाषा के विद्वानों ने यह भी कहा है कि दिन जबकि अंधेरे को रोशन कर दे, लेकिन अगर यूँ कहा जाता कि फैलावट को वह जब चमका दे तो और

अच्छा होता, क्योंकि "यग़शाहा" में भी यह मायने ठीक बैठते। इसी लिये हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि दिन की क़सम जबकि वह उसे रोशन कर दे। इमाम इब्ने जरीर रह. इस क़ौल को पसन्द फ़रमाते हैं कि इन सब में ज़मीर "हा" (यानी उस) से मुराद 'शमूस" (यानी सूरज) है, क्योंकि इसी का ज़िक्र चल रहा है। रात जबकि उसे ढाँप ले और हर तरफ़ अंधेरा फैल जाये। यज़ीद बिन ज़ी हमाया कहते हैं कि जब रात आती है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दों को मेरी एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ ने छुपा लिया। पस मख़्लूक़ रात से डरती है जबकि उसके पैदा करने वाले से और ज़्यादा डरना चाहिये। (इब्ने अबी हातिम)

फिर आसमान की क़सम खाता है। यहाँ जो "मा" है यह मस्दरिया भी हो सकता है, यानी आसमान और उसकी बनावट की क़सम, हज़रत क़तादा रह. का क़ौल यही है। और यह "मा" मायने में "मन्" के भी हो सकता है तो मतलब यह होगा कि आसमान की क़सम और उसके बनाने वाले की क़सम, यानी ख़ुद अल्लाह की, मुजाहिद रह. यही फ़रमाते हैं। ये दोनों मायने एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। "बना" के मायने बुलन्दी के हैं, जैसे एक और जगह है:

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ..........الخ

यानी आसमान को हमने क़ुव्वत के साथ बनाया और हम ही कुशादगी वाले हैं। हमने ज़मीन को बिछाया और क्या ही अच्छा हम बिछाने वाले हैं।

इसी तरह यहाँ भी फ़रमाया कि ज़मीन और इसके हमवार होने की, इसे बिछाने इसे फैलाने की, इसकी तक़सीम की, इसकी मख़्लूक़ की क़सम। ज़्यादा मशहूर क़ौल इसकी तफ़सीर में फैलाने का है, लुग़त वालों के नज़दीक भी यही मारूफ़ (मशहूर व परिचित) है। जैसा कि इमाम जोहरी फ़रमाते हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है।

फिर फ़रमाया कि नफ़्स की और उसे ठीक-ठाक बनाने की क़सम, यानी उसे पैदा किया इस हाल में कि यह ठीक ठाक और फ़ितरत पर क़ायम था। जैसे एक दूसरी जगह है:

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا..........الخ.

अपने चेहरे को मुतवज्जह रख दीने हनीफ़ के लिये, फ़ितरत है अल्लाह की, जिस पर लोगों को बनाया, अल्लाह की पैदाईश (और बनाने) में तब्दीली नहीं।

हदीस में है कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी (आग को पूजने वाला) बना लेते हैं। जैसे चौपाये जानवर का बच्चा सही सालिम पैदा होता है। कोई उनमें से तुम कन कटा न पाओगे। (बुख़ारी व मुस्लिम) सही मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मैंने अपने बन्दों को सीधे रास्ते वाले पैदा किये, उनके पास शैतान पहुँचा और दीन से बहका दिया। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआ़ला ने उसके सामने बदकारी व परहेज़गारी को बयान कर दिया और जो चीज़ उसकी क़िस्मत में थी उसकी तरफ़ उसकी रहबरी हुई। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं यानी ख़ैर व शर ज़ाहिर कर दिया। इब्ने जरीर में है, हज़रत अबुल-अस्वद रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि. ने पूछा- ज़रा बतलाओ तो लोग जो कुछ आमाल करते हैं और तकलीफ़ें उठा रहे हैं यह क्या उनके लिये ख़ुदा की जानिब से मुक़र्रर हो चुकी है और उनकी तक़दीर में लिखी जा चुकी है? या यह ख़ुद आईन्दा के लिये अपने तौर पर कर रहे हैं? इस बिना पर कि अम्बिया उनके पास आ चुके और ख़ुदा की हुज्जत उन पर पूरी हुई। मैंने जवाब में कहा नहीं नहीं! बल्कि यह चीज़ पहले से तयशुदा और मुक़द्दर हो

Maktab E Ashraf

चुकी है। हज़रत इमरान ने कहा फिर क्या यह ज़ुल्म न होगा? मैं तो इसे सुनकर काँप उठा और घबराकर कहा कि हर चीज़ का ख़ालिक़ मालिक वही ख़ुदा है, तमाम मुल्क उसी के हाथ में है, उसके अफ़आल की पूछगछ करने वाला कोई नहीं, वह सब से सवाल कर सकता है। मेरा यह जवाब सुनकर हज़रत इमरान बहुत ख़ुश हुए और कहा ख़ुदा तआला तुझे दुरुस्तगी इनायत फ़रमाये। मैंने तो यह सवालात इसी लिये किये थे कि इम्तिहान हो जाये। सो एक शख़्स मुज़ैना या जुहैना क़बीले का हुज़ूरे पाक सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और यही सवाल किया जो मैंने पहले आप से किया, और हुज़ूर सल्ल. ने भी वही जवाब दिया जो आपने दिया। तो उसने कहा फिर हमारे आमाल से क्या होगा? आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि जिस किसी को अल्लाह तबारक व तआला ने जिस मन्ज़िल (ठिकाने) के लिये पैदा किया है उससे वैसे ही काम होकर रहेंगे। अगर जन्नती है तो जन्नत के आमाल और अगर दोज़ख़ी लिखा गया है तो वैसे ही आमाल उस पर आसान होंगे। सुनो क़ुरआन में इसकी तस्दीक़ मौजूद है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَنَفْسٍ وَّمَاسَوّٰهَا. فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا.

और उस ज़ात की (क़सम) जिसने उसको ठीक-ठाक बनाया, फिर उसको बुरे आमाल और परहेज़गारी दोनों बातों से आगाह किया।

यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ में भी है कि जिसने अपने नफ़्स को पाक किया वह कामयाब हुआ, यानी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में लगा रहा, बुरे आमाल, घटिया अख़्लाक़ छोड़ दिये। एक और जगह है:

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى. وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى.

जिसने पाकीज़गी इख़्तियार की और अपने रब का नाम याद किया फिर नमाज़ पढ़ी, उसने कामयाबी पा ली। और जिसने अपने ज़मीर को तबाह किया और हिदायत से हटाकर उसे बरबाद किया, नाफ़रमानियों में पड़ गया, अल्लाह की इताअ़त को छोड़ बैठा वह नाकाम और नामुराद हुआ।

और यह मायने भी हो सकते हैं कि जिस नफ़्स (जान) को अल्लाह तआला ने पाक किया वह कामयाब हुआ और जिस नफ़्स को ख़ुदा तआला ने नीचे गिरा दिया वह बरबाद, मेहरूम और नुक़सान उठाने वाला रहा। औफ़ी और अ़ली बिन अबू तल्हा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यही रिवायत करते हैं। इब्ने अबी हातिम की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यह आयतः

قَدْاَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا.

यक़ीनन वह कामयाब हुआ जिसने अपने नफ़्स को पाक किया।

पढ़कर फ़रमाया कि जिस नफ़्स को ख़ुदा ने पाक किया उसने छुटकारा पा लिया। लेकिन इस हदीस में एक इल्लत (कमज़ोरी) तो यह है कि जुवैबिर बिन सअ़द मतरूकुल-हदीस है। दूसरी इल्लत यह है कि इमाम ज़ह्हाक जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत करते हैं उनकी मुलाक़ात उनसे साबित नहीं।

फ़ायदाः तबरानी की हदीस में है किः

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا.

पढ़कर आप सल्ल. ने यह दुआ़ पढ़ीः

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا وَخَيْرُ مَنْ زَكّٰهَا.

Maktab-E-Ashraf

या अल्लाह! मेरे नफ़्स को परहेज़गारी से संवार दे, तू ही उसका वाली और मालिक है और तू ही उसको बेहतर पाक करने वाला है।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में यह दुआ यूँ आयी है:

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُمَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا.

मुस्नद अहमद की हदीस में है, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रात को एक मर्तबा मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि हुज़ूरे पाक अपने बिस्तर पर नहीं, अन्धेरे की वजह से मैं घर में अपने हाथों से टटोलने लगी तो मेरे हाथ आप पर पड़े। आप उस वक़्त सज्दे में थे और यह दुआ पढ़ रहे थे:

رَبِّ اَعْطِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَاوَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا.

या अल्लाह! मेरे नफ़्स को परहेज़गारी से संवार दे, तू ही उसका वाली और मालिक है और तू उसको बेहतर पाक करने वाला है।

यह हदीस सिर्फ़ मुस्नद अहमद में ही है। मुस्लिम शरीफ़ और मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि रसूले करीम सल्ल. यह दुआ माँगते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ. اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَعِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَدَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا.

या अल्लाह! मैं आजिज़ी और बेचारा हो जाने से, सुस्ती और हार जाने से, बुढ़ापे और नामर्दी से, बख़ीली और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे दिल को उसका तक़वा अ़ता फ़रमा और उसे पाक कर दे, तू ही उसे बेहतर पाक करने वाला है, तू ही उसका वाली और मौला है। ऐ अल्लाह! मुझे ऐसे दिल से बचा जिसमें तेरा डर न हो, और ऐसे नफ़्स से बचा जो कभी सैर न हो, और ऐसे इल्म से बचा जो नफ़ा न दे और ऐसी दुआ से बचा जो क़बूल न की जाये।

हदीस के बयान करने वाले हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने हमें यह दुआ सिखाई और हम तुम्हें सिखाते हैं।

क़ौमे समूद ने अपनी शरारत के सबब (सालेह अ़लैहिस्सलाम को) झुठलाया (11) (और यह उस ज़माने का क़िस्सा है) जबकि उस क़ौम में जो सबसे ज़्यादा बदबख़्त था (12) वह (ऊँटनी के क़त्ल करने के लिए) उठ खड़ा हुआ, तो उन लोगों से अल्लाह के पैग़म्बर (सालेह अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की (इस) ऊँटनी से और इसके पानी पीने से ख़बरदार रहना। (13) सो उन्होंने पैग़म्बर को झुठलाया,	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَآ ۝ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۝

फिर उस ऊँटनी को मार डाला, तो उनके परवर्दिगार ने उनके गुनाहों के सबब उन पर हलाकत नाज़िल फ़रमाई, फिर उस (हलाकत) को तमाम क़ौम के लिए आ़म फ़रमाया। (14) और अल्लाह तआ़ला को उस हलाकत के अख़ीर में किसी ख़राबी (के निकलने) का (किसी से) अन्देशा नहीं हुआ। (15)	فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمْ فَسَوّٰهَا ۝ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝ ع ١٥ ١٦

Maktab E Ashraf

क़ौमे समूद की सरकशी व नाफ़रमानी

अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहा है कि समूदियों ने अपनी सरकशी और तकब्बुर व ज़ुल्म की बिना पर अपने रसूलों की तस्दीक़ न की। मुहम्मद बिन कअ़ब रह. फ़रमाते हैं कि "बि-तग़्वाहा" का मतलब यह है कि उन सब ने झुठलाया, लेकिन पहली बात ही ज़्यादा दुरुस्त है। हज़रत मुजाहिद और हज़रत क़तादा रह. ने भी यही बयान किया है। इस सरकशी की वजह से और इस झुठलाने की नहूसत से ये इस क़द्र बदबख़्त हो गये कि उनमें से जो ज़्यादा बुरा था वह तैयार हो गया। उसका नाम क़ेदार बिन सालिफ़ था, उसी ने हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊँटनी की कोचें (टाँगें) काटी थीं। उसी के बारे में फ़रमान है:

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ.

समूद वालों की आवाज़ पर यह आ गया और इसने ऊँटनी को मार डाला।

यह शख़्स उस क़ौम में इज़्ज़त व सम्मान वाला और ऊँचे ख़ानदान का था, क़ौम का रईस और सरदार था। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक मर्तबा अपने ख़ुतबे में उस ऊँटनी का और उसके मार डालने वाले का ज़िक्र फ़रमाया और इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि जैसे अबू ज़मआ़ है, इसी जैसा यह शख़्स भी अपनी क़ौम में सम्मानित, सरदार और बड़ा आदमी था। इमाम बुख़ारी भी इसे तफ़सीर में और इमाम मुस्लिम जहन्नम की सिफ़त में लाये हैं, और सुनन तिर्मिज़ी व सुनन नसाई में भी यह रिवायत तफ़सीर में है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया- मैं तुझे दुनिया भर के सब से ज़्यादा बदबख़्त दो शख़्स बतलाता हूँ- एक तो समूद का उहैमिर जिसने ऊँटनी को मार डाला, दूसरा वह शख़्स जो तेरी पेशानी पर ज़ख़्म लगायेगा। यहाँ तक कि दाढ़ी ख़ून से तर-ब-तर हो जायेगी।

अल्लाह तआ़ला के रसूल हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमा दिया था कि ऐ क़ौम! ख़ुदा की ऊँटनी को बुराई (तकलीफ़) पहुँचाने से डरो, उसके पानी पीने के निर्धारित दिन में ज़ुल्म करके उसे पानी से न रोको, तुम्हारी और उसकी बारियाँ बंधी हुई हैं, लेकिन बदबख़्तों ने अल्लाह के पैग़म्बर की न मानी, जिस गुनाह के कारण उनके दिल सख़्त हो गये और फिर ये साफ़ तौर पर मुक़ाबले के लिये तैयार हो गये और उस ऊँटनी की कोचें (पिछली टाँगों की रगें) काट दीं, जिसे ख़ुदा तआ़ला ने बग़ैर माँ-बाप के पत्थर की एक चट्टान से पैदा किया था, जो हज़रत सालेह का मोजिज़ा और ख़ुदा की क़ुदरत की कामिल निशानी थी। ख़ुदा भी उन पर ग़ज़बनाक हो गया, उनको हलाक किया और सब पर बराबर से अ़ज़ाब उतरा। यह इसलिये कि समूद के उहैमिर के हाथ पर उसकी क़ौम के छोटे बड़ों ने मर्द व औ़रत ने बैअ़त कर ली थी

Maktaba Ashraf

और सब के मश्विरे से उसने उस ऊँटनी को काटा था। इसी लिये अ़ज़ाब में भी सब पकड़े गये।

आगे फ़रमाता है कि ख़ुदा किसी को सज़ा करे तो उसे यह ख़ौफ़ नहीं होता कि इसका अन्जाम क्या होगा? कहीं ये बिगड़ न बैठें (मतलब यह कि अल्लाह के ऊपर कोई ताक़त नहीं जो उसको किसी का डर हो)। यह मतलब भी हो सकता है कि उस बदकार उहैमिर ने ऊँटनी को मार तो डाला लेकिन अन्जाम से न डरा। मगर पहला मतलब ही बेहतर है। वल्लाहु आलम।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः शमूस की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः लैल

सूरः लैल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 21 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हज़रत मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह फ़रमाना पहले बयान हो चुका है कि तूने सूरः "सब्बिहिस्-म......', सूरः "वश्शमूसि......." और सूरः "वल्लैलि..." से इमामत क्यों न कराई?

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ○ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ○ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ○ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ○ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ○ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ○ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ○ وَاَمَّا مَنْ ۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ○ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ○ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ○ وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ○	क़सम है रात की जबकि वह (सूरज को और दिन को) छुपा ले। (1) और (क़सम है) दिन की जबकि वह रोशन हो जाए। (2) और (क़सम है) उस (ज़ात पाक) की जिसने नर और मादा को पैदा किया (3) कि बेशक तुम्हारी कोशिशें (यानी आमाल) मुख़्तलिफ़ हैं। (4) सो जिसने अल्लाह की राह में (माल) दिया और अल्लाह से डरा, (5) और अच्छी बात (यानी दीने इस्लाम) को सच्चा समझा, (6) तो हम उसको राहत की चीज़ के लिए सामान देंगे। (7) और जिसने (अपने ऊपर वाजिब हुक़ूक़ से) बुख़्ल किया और बजाय ख़ुदा से डरने के ख़ुदा से बेपरवाई इख़्तियार की (8) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुठलाया (9) तो हम उसको तकलीफ़ की चीज़ के लिए सामान दे देंगे। (10) और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वह बरबाद होने लगेगा (बरबादी से मुराद जहन्नम में जाना है)। (11)

Maktab E Ashraf

क़सम है अन्धेरी रात की

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अल्क़मा रज़ि. शाम आये, दमिश्क़ की मस्जिद में जाकर दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ख़ुदाया मुझे नेक साथी अ़ता फ़रमा। फिर चले तो हज़रत अबूदर्दा रज़ि. से मुलाक़ात हुई, पूछा कि तुम कहाँ के हो? हज़रत अल्क़मा रज़ि. ने कहा मैं कूफ़ा का रहने वाला हूँ। पूछा कि इब्ने उम्मे अ़ब्द इस सूरत को किस तरह पढ़ते थे? मैंने कहा "वज़्ज़-करि वल्-उन्सा" पढ़ते थे। हज़रत अबूदर्दा रज़ि. फ़रमाने लगे कि मैंने भी रसूलुल्लाह सल्ल. से यूँ ही सुना है और ये लोग मुझे शक व शुब्हे में डाल रहे हैं। फिर फ़रमाया क्या तुम में तकिये वाले यानी जिनके पास सफ़र में हुज़ूर सल्ल. का बिस्तरा रहता था और राज़दार ऐसे भेदों से वाक़िफ़ जिनका इल्म और किसी को नहीं वह जो शैतान से रसूलुल्लाह सल्ल. के फ़रमान के मुताबिक़ बचा लिये गये थे, वे नहीं? यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु। यह हदीस बुख़ारी में भी है, उसमें यह है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के शागिर्द और साथी हज़रत अबूदर्दा रज़ि. के पास आये, आप भी उन्हें ढूँढते हुए पहुँचे, फिर पूछा कि तुम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह की क़िराअत में क़ुरआन पढ़ने वाला कौन है? तो कहा हम सब हैं। फिर पूछा कि तुम सब में हज़रत अ़ब्दुल्लाह की क़िराअत को ज़्यादा याद रखने वाला कौन है? लोगों ने हज़रत अल्क़मा रज़ि. की तरफ़ इशारा किया तो उनसे सवाल किया कि "वल्लैलि इज़ा यग़शा" को हज़रत अ़ब्दुल्लाह से तुम ने किस तरह सुना? वह बोले कि "वज़्ज़-करि वल्-उन्सा" पढ़ते थे। कहा मैंने भी हुज़ूर सल्ल. से इसी तरह सुना है, और ये लोग चाहते हैं कि मैं:

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى.

पढ़ूँ। ख़ुदा की क़सम मैं तो इनकी मानूँगा नहीं (यह क़िराअत का मतभेद है जिसे विवाद का विषय नहीं बनाना चाहिये)। ग़र्ज़ कि हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अबूदर्दा रज़ि. की क़िराअत यही है और हज़रत अबूदर्दा ने तो इसे मरफ़ूअ़ कहा है, बाक़ी जमहूर की क़िराअत वही है जो मौजूदा क़ुरआनों में है। पस अल्लाह तआ़ला रात की क़सम खाता है जबकि वह मख़्लूक़ पर छा जाये, और दिन की क़सम खाता है जबकि वह तमाम चीज़ों को अपनी रोशनी से मुनव्वर कर दे, और अपनी ज़ात की क़सम खाता है जो नर व मादा का पैदा करने वाला है। जैसे फ़रमायाः

وَخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا.

हमने तुम्हें जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है। एक और जगह फ़रमायाः

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ.

हर चीज़ के जोड़े हमने पैदा किये हैं।

इन एक दूसरे की विपरीत चीज़ों और एक दूसरी के ख़िलाफ़ चीज़ों की क़समें खाकर फ़रमाता है कि तुम्हारी कोशिशें और तुम्हारे आमाल भी एक दूसरे के ख़िलाफ़ और एक दूसरे से विपरीत हैं। भलाई करने वाले भी हैं और बुराई में मुब्तला रहने वाले भी हैं। फिर फ़रमाता है कि जिसने दिया, यानी अपने माल को ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ ख़र्च किया और फूँक-फूँककर क़दम रखा, हर-हर मामले में ख़ौफ़े ख़ुदा करता रहा और उसके बदले को सच्च जानता रहा, उसके सवाब पर यक़ीन रखा। "हुस्ना" के मायने "ला इला-ह

Maktab-E-Ashraf

इल्लल्लाहु" के भी किये गये हैं, ख़ुदा की नेमतों के भी किये गये हैं, नमाज़ व रोज़ा, ज़कात, सदका-फ़ित्र और जन्नत के भी नक़ल किये गये हैं। फिर फ़रमाता है कि हम उसे आसानी की राह आसान करेंगे यानी भलाई और जन्नत की, और नेक बदले की। और जिसने अपने माल को राहे ख़ुदा में न दिया और अल्लाह तआ़ला से बेनियाज़ी बरती और 'हुस्ना" यानी क़ियामत के बदले को झुठलाया तो उस पर हम बुराई का रास्ता आसान कर देंगे। जैसे फ़रमायाः

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ........ الخ.

यानी हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट देंगे, जिस तरह वे पहली बार क़ुरआन पर ईमान न लाये थे, और हम उन्हें उनकी सरकशी में ही बहकते हुए छोड़ देंगे।

इस मायने की आयतें क़ुरआने करीम में जगह-जगह मौजूद हैं कि हर अ़मल का बदला उसी जैसा होता है। ख़ैर का इरादा करने वाले को ख़ैर की तौफ़ीक़ मिलती है और शर (बुराई) का इरादा रखने वालों को उसी की तौफ़ीक़ होती है। इस मायने की ताईद में ये हदीसें भी हैं- हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने एक मर्तबा रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया कि हमारे आमाल लिखी तक़दीर के अधीन हैं या ख़ुद हमारी तरफ़ से हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया- तक़दीर के लिखे हुए के मुताबिक़। कहने लगे फिर अ़मल की क्या ज़रूरत है? फ़रमाया हर शख़्स पर वे अ़मल आसान होंगे जिस चीज़ के लिये वह पैदा किया गया है। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि बक़ीअ़ (मदीना के क़ब्रिस्तान) में हम रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ एक जनाज़े में शरीक थे। आपने फ़रमाया सुनो! तुम में से हर एक की जगह जन्नत व दोज़ख़ में मुक़र्रर की हुई और लिखी हुई है। लोगों ने कहा फिर हम उस पर भरोसा करके क्यों न बैठ जायें? आपने फ़रमाया अ़मल करते रहो, हर शख़्स को वही आमाल रास आयेंगे जिनके लिये वह पैदा किया गया है। फिर आप सल्ल. ने यही आयतें तिलावत फ़रमायीं। (सही बुख़ारी शरीफ़)

इसी रिवायत की एक दूसरी सनद में है कि इस बयान के वक़्त आप सल्ल. के हाथ में एक तिनका था और सर नीचा किये हुए ज़मीन पर उसे फेर रहे थे। अलफ़ाज़ में कुछ कमी-बेशी भी है। मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का भी एक ऐसा ही सवाल जैसा कि ऊपर की हदीस में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. का गुज़रा, नक़ल किया गया है, और आप सल्ल. का जवाब भी उन्हें तक़रीबन ऐसा ही मरवी है। इब्ने जरीर में हज़रत जाबिर रज़ि. से भी ऐसी ही रिवायत मरवी है। इब्ने जरीर की एक हदीस में दो नौजवानों का ऐसा ही सवाल और हुज़ूर सल्ल. का ऐसा ही जवाब मरवी है। और फिर उन दोनों हज़रात का यह क़ौल भी है कि या रसूलल्लाह! हम कोशिश करके नेक आमाल करते रहेंगे। हज़रत अबूदर्दा रज़ि. से भी इसी तरह मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर दिन छुपने के वक़्त सूरज की दोनों तरफ़ दो फ़रिश्ते होते हैं और वे बुलन्द आवाज़ से दुआ़ करते हैं, जिसे तमाम चीज़ें सुनती हैं सिवाय जिन्नात और इनसान के, कि ऐ अल्लाह! सख़ी को नेक बदला दे और बख़ील का माल बरबाद कर। यही मायने हैं क़ुरआन की इन चार आयतों के।

इब्ने अबी हातिम की एक बहुत ही ग़रीब हदीस में इस पूरी सूरत का शाने नुज़ूल यह लिखा है कि एक शख़्स का खजूरों का बाग़ था, उनमें से एक दरख़्त की शाख़ें एक मिस्कीन शख़्स के घर में पड़ती थीं, वह बेचारा ग़रीब नेकबख़्त और बाल बच्चोंदार था। बाग़ वाला जब उस दरख़्त की खजूरें उतारने आता तो

उस मिस्कीन के घर में जाकर वहाँ की खजूरें उतारता, उसमें जो खजूरें नीचे गिरतीं उन्हें उस ग़रीब शख़्स के बच्चे चुन लेते तो यह आकर उनसे छीन लेता बल्कि अगर किसी बच्चे ने मुँह में डाल भी ली तो उंगली डालकर उसके मुँह से निकलवा लेता। उस मिस्कीन ने इसकी शिकायत रसूले ख़ुदा सल्ल. से की, आप सल्ल. ने उनसे तो फ़रमाया कि अच्छा तुम जाओ और आप उस बाग़ वाले से मिले और फ़रमाया कि तू अपना वह दरख़्त जिसकी शाख़ें (टहनियाँ) फ़ुलाँ मिस्कीन (ग़रीब आदमी) के घर में हैं मुझे दे दे, अल्लाह तआ़ला उसके बदले तुझे जन्नत का एक दरख़्त देगा। वह कहने लगा अच्छा हज़रत! मैंने दिया, मगर मुझे उसकी खजूरें बहुत अच्छी लगती हैं, मेरे तमाम बाग़ में ऐसी खजूरें किसी और दरख़्त की नहीं। हुज़ूर सल्ल. यह सुनकर ख़ामोशी के साथ वापस तशरीफ़ ले चले। एक शख़्स जो यह बातचीत सुन रहा था वह आप सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा- हज़रत! अगर यह दरख़्त मेरा हो जाये और मैं आपका कर दूँ तो क्या मुझे भी उसके बदले जन्नती दरख़्त मिल सकता है? आपने फ़रमाया हाँ। यह शख़्स उस बाग़ वाले के पास आये, इनका भी एक बाग़ खजूरों का था। यह पहला शख़्स उनसे ज़िक्र करने लगा कि हुज़ूर सल्ल. मुझे मेरे फ़ुलाँ खजूर के दरख़्त (पेड़) के बदले जन्नत का एक दरख़्त देने को फ़रमा रहे थे, मैंने यह जवाब दिया। यह सुनकर वह ख़ामोश हो रहे। फिर थोड़ी देर बाद फ़रमाया कि क्या तुम इसे बेचना चाहते हो? उसने कहा नहीं, हाँ यह और बात है कि जो क़ीमत इसकी माँगूँ वह कोई मुझे दे दे, लेकिन कौन दे सकता है? पूछा क्या क़ीमत लेना चाहते हो? कहा खजूर के चालीस दरख़्त (पेड़)। उसने कहा यह तो बड़ी ज़बरदस्त क़ीमत लगा रहे हो, एक के चालीस? फिर और बातों में लग गये। फिर कहने लगे अच्छा मैं इसे इतने ही में ख़रीदता हूँ। उसने कहा अगर सचमुच ख़रीदना है तो गवाह कर लो, उसने चन्द लोगों को बुला लिया और मामला तय हो गया, गवाह मुक़र्रर हो गये, फिर उसे कुछ सूझी तो कहने लगा कि देखिये साहिब जब तक हम तुम अलग नहीं हुए यह मामला तय नहीं हुआ, उसने भी कहा बहुत अच्छा मैं भी ऐसा अहमक़ नहीं हूँ कि तेरे एक दरख़्त के बदले जो झुका हुआ है, अपने चालीस दरख़्त दे दूँ। तो यह कहने लगा कि अच्छा-अच्छा मुझे मन्ज़ूर है, लेकिन दरख़्त जो मैं लूँगा वे तने वाले बहुत उम्दा लूँगा। उसने कहा अच्छा मन्ज़ूर है। चुनाँचे गवाहों के रू-ब-रू यह सौदा तय हुआ और मज्लिस बरख़ास्त हुई।

यह शख़्स ख़ुशी-ख़ुशी रसूले करीम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे या रसूलल्लाह! अब वह दरख़्त मेरा हो गया और मैंने उसे आपको दे दिया। रसूलुल्लाह सल्ल. उस मिस्कीन के पास तशरीफ़ ले गये और फ़रमाने लगे कि यह दरख़्त तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस पर यह सूरत नाज़िल हुई। इब्ने जरीर में है कि ये आयतें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई हैं। आप मक्का शरीफ़ में इस्लाम के शुरू ज़माने में बुढ़िया औरतों को और ज़ईफ़ (कमज़ोर) लोगों को जो मुसलमान हो जाते थे आज़ाद कर दिया करते थे, इस पर एक मर्तबा आपके वालिद हज़रत अबू क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जो अब तक मुसलमान नहीं हुए थे कहा कि बेटा तुम जो इन कमज़ोर लोगों को आज़ाद करते फिरते हो, इससे यह अच्छा हो कि नौजवानों ताक़त वालों को आज़ाद कराओ, ताकि वक़्त पर वे तुम्हें काम आयें, तुम्हारी मदद करें और दुश्मनों से लड़ें। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जवाब दिया कि अब्बा जी! मेरा इरादा दुनियावी फ़ायदा नहीं, मैं तो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा और उसकी मर्ज़ी चाहता हूँ। इस बारे में ये आयतें नाज़िल हुईं। "तरद्दा" के मायने मरने के भी नक़ल किये गये हैं और आग में गिरने के भी।

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝ۖ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ
وَالْاُوْلٰى ۝ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝ۚ لَا
يَصْلٰهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝ۙ الَّذِىْ كَذَّبَ
وَتَوَلّٰى ۝ۙ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ۙ الَّذِىْ
يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝ۚ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ
نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝ۙ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْاَعْلٰى ۝ۚ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝ ع ۲۱ / ١٧

वाक़ई हमारे ज़िम्मे राह का बतला देना है (12) और (जैसी राह कोई शख़्स इख़्तियार करेगा वैसा ही फल उसको देंगे, क्योंकि) हमारे ही क़ब्ज़े में है आख़िरत और दुनिया। (13) (आगे ख़ुलासे के तौर पर इरशाद है कि) तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूँ। (14) उसमें (हमेशा के लिए) वही बदबख़्त दाख़िल होगा (15) जिसने (दीने हक़ को) झुठलाया और (उससे) मुँह फेरा। (16) और उससे ऐसा शख़्स दूर रखा जाएगा जो बड़ा परहेज़गार है। (17) जो अपना माल (सिर्फ़) इस ग़र्ज़ से देता है कि (गुनाहों से) पाक हो जाए। (18) और सिवाय अपने बड़ी शान वाले परवर्दिगार की रज़ा हासिल करने के (कि यही उसका मक़सूद है) उसके ज़िम्मे किसी का एहसान न था (19) कि (उस देने से) उसका बदला उतारना (मक़सूद) हो। (20) और यह शख़्स जल्द ही ख़ुश हो जाएगा (यानी आख़िरत में ऐसी-ऐसी नेमतें मिलेंगी)। (21)

Maktaba E Ashraf

जो जैसा करेगा वैसा भरेगा

यानी हलाल व हराम का ज़ाहिर कर देना हमारे ज़िम्मे है। यह भी मायने हैं कि जो हिदायत पर चला वह यक़ीनन हम तक पहुँच जायेगा। जैसे एक जगह फ़रमायाः

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ.

और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है।

आख़िरत और दुनिया की मिल्कियत हमारी ही है। मैंने भड़कती हुई आग से तुम्हें होशियार कर दिया है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि. ने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मैंने ख़ुतबे की हालत में सुना है, आप बहुत बुलन्द आवाज़ से फ़रमा रहे थे, यहाँ तक कि उस जगह से बाज़ार तक आवाज़ पहुँचे और बार-बार फ़रमाते जाते थे कि लोगो मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा चुका, लोगो मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा रहा हूँ। बार-बार यह फ़रमा रहे थे यहाँ तक कि चादर मुबारक कन्धों से सरक कर पैरों में गिर पड़ी। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- सब से हल्के अ़ज़ाब वाला जहन्नमी क़ियामत के दिन वह होगा जिसके दोनों तलवों के नीचे दो अंगारे रख दिये जायेंगे जिससे उसका दिमाग़ उबल रहा होगा। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि हल्के अ़ज़ाब वाला

Mahtab E Ashraf

जहन्नमी वह होगा जिसकी दोनों जूतियाँ और दोनों तसमे आग के होंगे जिनसे उसका दिमाग़ इस तरह उबल रहा होगा जिस तरह हण्डिया में जोश आ रहा हो। इसके बावजूद कि सब से हल्के अ़ज़ाब वाला यही है लेकिन उसके ख़्याल में उससे ज़्यादा अ़ज़ाब वाला और कोई न होगा। इस जहन्नम में सिर्फ़ वही लोग घेर घार कर बदतरीन अ़ज़ाब किये जायेंगे जो बदनसीब हों, जिनके दिल में (दीन को) झुठलाना हो और जिस्म से इस्लाम पर अ़मल न हो।

मुस्नद अहमद की हदीस में भी है कि जहन्नम में सिर्फ़ शक़ी (बदबख़्त) लोग जायेंगे। लोगों ने पूछा शक़ी कौन है? फ़रमाया जो इताअ़त-गुज़ार न हो और न ख़ुदा के डर से कोई बदी छोड़ता हो। मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि मेरी सारी उम्मत जन्नत में जायेगी सिवाय उनके जो इनकार करें। लोगों ने पूछा मुन्किर कौन है? फ़रमाया जो मेरी इताअ़त करे वह जन्नत में गया और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने इनकार कर दिया। और फ़रमाया जहन्नम से दूरी उसे होगी जो अल्लाह से डरने वाला और परहेज़गार हो, जो अपने माल को ख़ुदा की राह में दे ताकि ख़ुद भी पाक हो जाये और अपनी चीज़ों को भी पाक कर ले, और दीन दुनिया में पाकीज़गी हासिल कर ले। यह इसलिये किसी के साथ अच्छा सुलूक नहीं करता कि उसका भी कोई एहसान उस पर है, बल्कि इसलिये कि आख़िरत में जन्नत ले और वहाँ ख़ुदा का दीदार नसीब हो।

फिर फ़रमाता है कि बहुत जल्द यक़ीनन ऐसी पाक सिफ़तों वाला शख़्स राज़ी हो जायेगा। अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि ये आयतें हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में उतरी हैं, यहाँ तक कि बाज़ मुफ़स्सिरीन ने तो इस पर इजमा (सब की सहमति) नक़ल किया है। बेशक सिद्दीक़े अकबर इसमें दाख़िल हैं और इसके उमूम में सारी उम्मत के पहले हैं, अगरचे आयत के अलफ़ाज़ आ़म हैं लेकिन आप सब से पहले इसके मिस्दाक़ थे। परहेज़गार थे, सख़ी थे, अपने मालों को अपने मौला की इताअ़त में और रसूलुल्लाह सल्ल. की इमदाद में दिल खोलकर ख़र्च करते रहते थे। हर एक के साथ एहसान व सुलूक करते, और किसी दुनियावी फ़ायदे की उम्मीद पर नहीं, किसी एहसान के बदले नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये, अल्लाह के रसूल की फ़रमाँबरदारी के लिये। जितने लोग थे चाहे बड़े हों चाहे छोटे सब के सब पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के एहसानात के बोझ थे, यहाँ तक कि उरवा बिन मसऊद जो क़बीला सक़ीफ़ का सरदार था, सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जबकि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने उसे डाँटा डपटा और दो बातें सुनायीं तो उसने कहा- अगर आपके एहसान मुझ पर न होते जिनका बदला मैं नहीं दे सका तो मैं आपको ज़रूर जवाब देता। पस जबकि अ़रब के सरदार और अ़रब के क़बीलों के बादशाह के ऊपर आपके इस क़द्र एहसान थे कि वह सर नहीं उठा सकता था तो भला औरों की क्या गिनती? इसी लिये यहाँ भी फ़रमाया गया कि किसी के एहसान का बदला उन्हें अदा नहीं करना बल्कि सिर्फ़ दीदारे ख़ुदा की इच्छा और तमन्ना है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जो शख़्स किसी चीज़ का जोड़ा ख़ुदा की राह में ख़र्च करे उसे जन्नत के दारोग़ा पुकारेंगे कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर से आ यह दरवाज़ा सबसे अच्छा है। तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! कोई ज़रूरत तो ऐसी नहीं लेकिन फ़रमाईये कोई ऐसा भी है जो जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाये? आपने फ़रमाया हाँ है, और मुझे ख़ुदा से उम्मीद है कि तुम उनमें से हो।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः लैल की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः ज़ुहा

सूरः ज़ुहा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

फ़ायदाः इस्माईल बिन क़ुस्तुनतीन और शबल बिन अ़ब्बाद के सामने हज़रत इक्रिमा रज़ि. क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे, जब इस सूरत तक पहुँचे तो दोनों ने फ़रमाया कि अब से आख़िर तक हर सूरत के ख़ात्मे पर अल्लाहु अकबर कहा करो। हमने इब्ने कसीर रह. के सामने पढ़ा तो उन्होंने हमें यही फ़रमाया और उन्होंने फ़रमाया कि हम से मुजाहिद रह. ने यह फ़रमाया है और मुजाहिद रह. को हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की यही तालीम थी और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. को हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. ने यही फ़रमाया था और उबई बिन कअ़ब को रसूलुल्लाह सल्ल. ने यह हुक्म दिया था। क़िराअत के इमाम हज़रत अबुल-हसन भी इस सुन्नत के रावी हैं। हज़रत अबू हातिम राज़ी रह. इस हदीस को ज़ईफ़ कहते हैं, इसलिये कि अबुल-हसन ज़ईफ़ हैं, अबू हातिम रह. तो इनसे हदीस ही नहीं लेते। इसी तरह अबू जाफ़र उक़ैली रह. भी इन्हें मुन्करुल-हदीस कहते हैं, लेकिन शैख़ शहाबुद्दीन अबू शाम्मा "शरह शातिबीया" में हज़रत इमाम शाफ़ई रह. से रिवायत करते हैं कि आपने एक शख़्स से सुना कि वह नमाज़ में इस तकबीर को कहते थे तो आपने फ़रमाया तूने अच्छा किया और सुन्नत को पहुँच गया। यह वाक़िआ़ इस बात को चाहता है कि यह हदीस सही हो। फिर क़ारियों में इस बात का भी इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि किस जगह यह तकबीर पढ़े और किस तरह पढ़े। बाज़ तो कहते हैं कि सूरः लैल के ख़ात्मे से, बाज़ कहते हैं कि सूरः वज़्ज़ुहा के आख़िर से। फिर बाज़ तो कहते हैं कि सिर्फ़ "अल्लाहु अक्बर" कहे, बाज़ कहते हैं कि "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर" कहे। बाज़ क़ारियों ने सूरः "वज़्ज़ुहा" से इन तकबीरों के कहने की यह वजह बयान की है कि जब 'वही' के आने में देर लगी और कुछ मुद्दत हुज़ूर सल्ल. पर वही न उतरी, फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और यही सूरत लाये तो ख़ुशी और प्रसन्नता के सबब आप सल्ल. ने तकबीर कही। लेकिन यह किसी ऐसी सनद के साथ मरवी नहीं जिससे इसके सही या ज़ईफ़ होने का पता चल सके। वल्लाहु आलम।

وَالضُّحٰى○ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى○ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى○ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى○ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ	क़सम है दिन की रोशनी की। (1) और रात की जबकि वह क़रार पकड़े। (2) (आगे क़सम का जवाब है) कि आपके परवर्दिगार ने न आपको छोड़ा और न (आप से) दुश्मनी की। (3) और आख़िरत आपके लिए दुनिया से कहीं ज़्यादा बेहतर है। (पस वहाँ आपको इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगी)। (4) और जल्द ही

Maktab E Ashraf

رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۞ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۞ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۞ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۞ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۞ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۞ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۞ ع ۱۸	अल्लाह तआला आपको (आख़िरत में बहुत ज़्यादा नेमतें) देगा, सो आप ख़ुश हो जाएँगे। (5) क्या अल्लाह तआला ने आपको यतीम नहीं पाया? फिर (आपको) ठिकाना दिया। (6) और अल्लाह ने आपको (शरीअ़त से) बेख़बर पाया, सो (आपको शरीअ़त का) रास्ता बतला दिया। (7) और अल्लाह तआला ने आपको नादार पाया, सो मालदार बना दिया। (8) तो आप (उसके शुक्रिए में) यतीम पर सख़्ती न कीजिए (9) और माँगने वाले को मत झिड़किये (10) (यह तो अ़मली शुक्र है) और अपने रब के (ज़िक्र हुए) इनामों का तज़्किरा करते रहा कीजिए (यानी ज़बान से क़ौली शुक्र भी कीजिए)। (11)

क़सम है दिन के उजाले की

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. बीमार हो गये और एक या दो रातों तक आप तहज्जुद की नमाज़ के लिये न उठ सके तो एक औ़रत कहने लगी कि तुझे तेरे शैतान ने छोड़ दिया, इस पर ये अगली आयतें नाज़िल हुईं। (बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह) हज़रत जुन्दुब रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के आने में कुछ देर हुई तो मुश्रिक लोग कहने लगे कि यह तो छोड़ दिये गये तो अल्लाह तआ़ला ने "वज़्ज़ुहा" से "मा क़ला" तक की आयतें नाज़िल कीं। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. की उंगली पर पत्थर मारा गया था जिसमें से ख़ून निकला और जिस पर आपने फ़रमायाः

هَلْ اَنْتِ اِلَّآ اِصْبَعٌ دَمِيْتِ ☆ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَالَقِيْتِ

यानी तू सिर्फ़ एक उंगली है और राहे ख़ुदा में तुझे यह ज़ख़्म लगा है।

तबीयत नासाज़ हो जाने की वजह से दो तीन रात आप बेदार न हुए जिस पर उस औ़रत ने वह नामुनासिब अलफ़ाज़ निकाले और ये आयतें नाज़िल हुईं। कहा गया है कि यह औ़रत अबू लहब की बीवी उम्मे जमील थी, उस पर ख़ुदा की मार। आपकी उंगली का ज़ख़्मी होना और इस मौज़ूँ कलाम का बेसाख़्ता ज़बाने मुबारक से अदा होना तो सहीहैन में भी साबित है लेकिन तहज्जुद के छूट जाने का सबब इसे बताना और इस पर उन आयतों का नाज़िल होना यह सही नहीं है। इब्ने जरीर में है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा था कि आपका रब आप से कहीं नाराज़ न हो गया हो? इस पर ये आयतें उतरीं। एक और रिवायत में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के आने में देर हुई तो हुज़ूर सल्ल. बहुत घबराये, इस पर हज़रत ख़दीजा ने यह सबब बयान किया और इस पर ये आयतें उतरीं। ये दोनों रिवायतें मुर्सल हैं और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का नाम तो इसमें महफ़ूज़ नहीं मालूम होता, हाँ यह मुम्किन है कि हज़रत ख़दीजा ने अफ़सोस और रंज के साथ यह फ़रमाया हो। वल्लाहु आलम।

Maktab E Ashraf

इब्ने इस्हाक़ और बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि जब हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम अपनी असली सूरत में ज़ाहिर हुए थे और बहुत ही क़रीब हो गये थे उस वक़्त इसी सूरत की वही नाज़िल फ़रमाई थी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि वही के रुक जाने की बिना पर मुश्रिकों के इस नापाक क़ौल के रद्द में ये आयतें उतरीं। यहाँ अल्लाह तआ़ला ने धूप चढ़ने के वक़्त की, दिन की रोशनी और रात के सुकून और अन्धेरे की क़सम खाई जो अल्लाह के क़ादिर व ख़ालिक़ होने की साफ़ दलील है। जैसे एक और जगह है:

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى.

क़सम है रात की जब वह दिन को छुपा ले, और दिन की जब वह रोशन हो जाये।

एक और जगह इरशाद है:

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا.

वह सुबह का निकालने वाला है, उसने रात को राहत व आराम की चीज़ बनाई है।

(सूरः अन्आ़म आयत 96)

मतलब यह है कि अपनी क़ुदरत का यहाँ भी बयान किया है। फिर फ़रमाता है कि तेरे रब ने न तो तुझे छोड़ा न तुझसे दुश्मनी की, तेरे लिये आख़िरत इस दुनिया से बहुत बेहतर है। इसी लिये रसूलुल्लाह सल्ल. दुनिया में सब से ज़्यादा ज़ाहिद (दुनिया से बेताल्लुक़) थे और सब से ज़्यादा दुनिया से दूर थे। आप सल्ल. की सीरत का मुताला करने वाले पर यह बात हरगिज़ छुपी नहीं रह सकती। मुस्नद अहमद में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. बोरिये पर सोये, जिस्म मुबारक पर बोरिये के निशान पड़ गये, जब बेदार हुए तो मैं आपकी करवट पर हाथ फेरने लगा और कहा हुज़ूर! हमें क्यों इजाज़त नहीं देते कि इस बोरिये पर कुछ बिछा दिया करें। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मुझे दुनिया से क्या वास्ता? मैं कहाँ दुनिया कहाँ? मेरी और दुनिया की मिसाल तो इस गुज़रते हुए मुसाफ़िर और सवार की तरह है जो किसी पेड़ के नीचे ज़रा सी देर ठहर जाये, फिर उसे छोड़कर चल दे। यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और हसन है।

फिर फ़रमाया कि तेरा रब तुझे आख़िरत में तेरी उम्मत के बारे में इस क़द्र नेमतें देगा कि तू ख़ुश हो जाये। उनका बड़ा सम्मान होगा और आपको ख़ास तौर पर हौज़े-कौसर अ़ता फ़रमाया जायेगा जिसके किनारे पर खोखले मोती के ख़ेमे होंगे, जिसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क होगी। ये हदीसें आगे आ रही हैं, इन्शा-अल्लाह तआ़ला। एक रिवायत में है कि जो ख़ज़ाने आप सल्ल. की उम्मत को मिलने वाले थे वो एक एक करके आप पर ज़ाहिर किये गये। आप बहुत ख़ुश हुए, इस पर यह आयत उतरी। जन्नत में एक हज़ार महल आप सल्ल. को दिये गये, हर हर महल में पाक बीवियाँ और बेहतरीन ख़ादिम हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु तक इसकी सनद सही है और बज़ाहिर ऐसी बात बग़ैर हुज़ूर सल्ल. से सुने रिवायत नहीं हो सकती। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. की रज़ामन्दी में से यह भी है कि आपके अहले-बैत में से कोई दोज़ख़ में न जाये। हसन रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद शफ़ाअ़त है।

इब्ने अबी शैबा में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- हम वे लोग हैं जिनके लिये अल्लाह तआ़ला ने आख़िरत दुनिया पर पसन्द कर ली है। फिर आपने आयत "व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़-तरज़ा" की तिलावत फ़रमाई। फिर अल्लाह तआ़ला अपनी नेमतें जताता है। पहली नेमत यह बयान फ़रमाई कि आप सल्ल. की यतीमी की हालत में ख़ुदा तबारक व तआ़ला ने आपका बचाव किया और आपकी हिफ़ाज़त व

परवरिश की और ठिकाना इनायत फ़रमाया। आपके वालिद का इन्तिक़ाल तो आपकी पैदाईश से पहले ही हो चुका था, बाज़ कहते हैं कि विलादत के बाद हुआ। छह साल की उम्र में वालिदा साहिबा का भी इन्तिक़ाल हो गया, अब आप सल्ल. दादा साहिब की किफ़ालत में थे, लेकिन जब आठ साल की आपकी उम्र हुई तो दादा का साया भी सर से उठ गया, अब आप अपने चचा अबू तालिब की परवरिश में आये। अबू तालिब आप सल्ल. की निगरानी और इमदाद में लगे रहे। आपकी पूरी ताज़ीम व इज़्ज़त करते और क़ौम की मुख़ालफ़त के चढ़ते तूफ़ान को रोकते रहते थे और ख़ुद को हुज़ूरे पाक सल्ल. की हिफ़ाज़त के लिये बतौर ढाल के पेश कर दिया करते थे। क्योंकि चालीस साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नुबुव्वत मिल चुकी थी और क़ुरैश बहुत सख़्त मुख़ालिफ़ बल्कि जान के दुश्मन हो गये थे। अबू तालिब बावजूद बुत परस्त मुश्रिक होने के आप सल्ल. का साथ देते थे और मुख़ालिफ़ों से लड़ते रहते थे। यह थी अल्लाह की तरफ़ से एक उम्दा तदबीर, कि आपकी यतीमी के दिन इसी तरह गुज़ारे और मुख़ालिफ़ों से ख़िदमत इस तरह ली, यहाँ तक कि हिजरत से कुछ पहले अबू तालिब भी फ़ौत हो गये। अब क़ुरैश के जाहिल और बेवक़ूफ़ लोग उठ खड़े हुए तो अल्लाह तआ़ला ने आपको मदीना शरीफ़ की तरफ़ हिजरत करने की इजाज़त इनायत फ़रमाई और "औस" व "ख़ज़रज" जैसी क़ौमों को आप सल्ल. का अन्सार (मददगार) बना दिया। उन हज़रात ने आप सल्ल. को और आपके साथियों को ठिकाना दिया और मदद की, हिफ़ाज़त की और मुख़ालिफ़ों से सीना तान कर बहादुरी के साथ लड़ाईयाँ कीं। अल्लाह तआ़ला उन सब से ख़ुश रहे। यह सब का सब ख़ुदा की हिफ़ाज़त, उसकी इनायत, एहसान और इकराम से था।

फिर फ़रमाया कि राह भूला पाकर सही रास्ता दिखाया। जैसे एक और जगह है:

مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ...... الخ.

यानी इसी तरह हमने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रूह (जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम या क़ुरआन) की वही की, तुम यह भी नहीं जानते थे कि ईमान क्या चीज़ होती है? न किताब की ख़बर थी, बल्कि हमने उसे नूर बनाकर जिसे चाहा हिदायत कर दी। बाज़ कहते हैं कि मुराद यह है कि हुज़ूर सल्ल. बचपन में मक्का की गलियों में गुम हो गये थे, उस वक़्त ख़ुदा ने लौटा लिया। बाज़ कहते हैं कि शाम की तरफ़ अपने चचा के साथ जाते हुए रात को शैतान ने आपकी ऊँटनी की नकेल पकड़ कर राह से हटाकर जंगल की तरफ़ कर दिया था, पस जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फूँक मारकर शैतान को तो हब्शा में डाल दिया और सवारी को सही रास्ते पर लगा दिया। अ़ल्लामा बग़वी ने ये दोनों क़ौल नक़ल किये हैं।

फिर फ़रमाता है कि बाल-बच्चों वाला होते हुए तंगदस्त पाकर हमने आपको ग़नी (मालदार) कर दिया। पस फ़क़ीर साबिर (सब्र करने वाला तंगदस्त) और ग़नी शाकिर (शुक्र करने वाला मालदार) होने के दरजात आप सल्ल. को मिल गये। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ये सब हालात नुबुव्वत से पहले के हैं। सहीहैन वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मालदारी माल व असबाब की ज़्यादती से नहीं, बल्कि असली मालदार वह है जिसका दिल बेपरवाह हो (यानी किसी का मोहताज व ज़रूरत मन्द न हो)। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि उसने फ़लाह (कामयाबी) पा ली जिसे इस्लाम नसीब हुआ, और काफ़ी हो जाये इतना रिज़्क़ भी मिला, और ख़ुदा के दिये हुए पर क़नाअ़त (सब्र व शुक्र) की तौफ़ीक़ मिली।

फिर फ़रमाता है कि यतीम को हक़ीर (अपमानित) न कर, न डाँट-डपट कर, बल्कि उसके साथ एहसान

व सुलूक कर और अपनी यतीमी को न भूल। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यतीम के लिये ऐसा हो जाना चाहिये जैसे सगा बाप अपनी औलाद पर मेहरबान होता है। साईल (माँगने वाले) को न झिड़क। एक रिवायत में है कि क़ुरआन मुराद है। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि जो भलाई की बातें आपको मालूम हैं वे अपने भाईयों से भी बयान करो। मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. कहते हैं कि जो नेमत व सम्मान नुबुव्वत का तुम्हें मिला है उसे बयान करो, उसका ज़िक्र करो और उसकी तरफ़ लोगों को दावत दो। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने अपने वालों में से जिन पर आपको इत्मीनान होता चुपके से पहले-पहल दावत देनी शुरू की और आप सल्ल. पर नमाज़ फ़र्ज़ हुई जो आपने अदा की।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः ज़ुहा की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः अलम् नशरह

सूरः अलम् नशरह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

क्या हमने आपकी ख़ातिर आपका सीना (इल्म, नर्मी और बरदाश्त से) कुशादा नहीं कर दिया? (1) और हमने आप से आपका वह बोझ उतार दिया (2) जिसने आपकी कमर तोड़ रखी थी। (3) और हमने आपकी ख़ातिर आपका ज़िक्र बुलन्द किया। (4) सो बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी (होने वाली है)। (5) बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी होने वाली है। (6) तो आप जब (अहकाम की तब्लीग़ से) फ़ारिग़ हो जाया करें तो (अपनी ज़ात से मुताल्लिक़ दूसरी ख़ुसूसी इबादतों में) मेहनत किया कीजिए (7) और (जो कुछ माँगना हो उसमें) अपने रब ही की तरफ़ तवज्जोह रखिये। (8)	اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ○ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ○ الَّذِىْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ○ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ○ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ○ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ○ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ○ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ○ ع ٨ ١٩

अल्लाह तआ़ला के इन एहसानात को देखिये

यानी हमने तेरे सीने को मुनव्वर कर दिया, चौड़ा कुशादा, और रहमत व करम वाला कर दिया। एक

और जगह हैः

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ........ الخ.

यानी जिसे ख़ुदा हिदायत देना चाहता है उसके सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है।

जिस तरह आप सल्ल. का सीना कुशादा कर दिया गया था, इसी तरह आपकी शरीअ़त भी सहल, नर्म और सहूलत वाली बना दी, जिसमें न तो कोई हर्ज है न तंगी न तुर्शी, न तकलीफ़ और सख़्ती। और यह भी कहा गया है कि मुराद मेराज वाली रात सीने का शक़ किया जाना (यानी खोला जाना) है जैसे कि मालिक बिन सअ़सआ़ की रिवायत से पहले गुज़र चुका। इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इस हदीस को यहीं ज़िक्र किया है लेकिन यह याद रहे कि ये दोनों वाक़िए मुराद हो सकते हैं, यानी मेराज की रात सीने का शक़ किया जाना और सीने को राज़े ख़ुदा का ख़ज़ाना बना देना। वल्लाहु आलम।

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. बड़ी जुर्रत से रसूलुल्लाह सल्ल. से वे बातें पूछ लिया करते थे जिसे दूसरे न पूछते थे। एक मर्तबा सवाल किया कि या रसूलल्लाह! नुबुव्वत में सब से पहले आपने क्या देखा? आप संभल कर बैठे और फ़रमाने लगे- अबू हुरैरह! मैं दस साल कुछ महीने का था, जंगल में खड़ा था कि मैंने ऊपर आसमान की तरफ़ से कुछ आवाज़ सुनी कि एक शख़्स दूसरे से कह रहा है- क्या यह वही हैं? वे शख़्स मेरे सामने आये जिनके मुँह ऐसे मुनव्वर (नूर व चमक वाले) थे कि मैंने ऐसे कभी नहीं देखे और ऐसी ख़ुशबूएँ आ रही थीं कि मेरे दिमाग़ ने ऐसी ख़ुशबू कभी नहीं सूँघी और ऐसे कपड़े पहने हुए थे कि मैंने कभी किसी पर ऐसे कपड़े नहीं देखे। उन्होंने आकर मेरे दोनों बाज़ू थाम लिये, लेकिन मुझे यह भी नहीं मालूम होता था कि कोई मेरे बाज़ू थामे हुए है। फिर एक ने दूसरे से कहा कि इन्हें लिटा दो, चुनाँचे उसने लिटा दिया, लेकिन उसमें भी न मुझे तकलीफ़ हुई न महसूस हुआ। फिर एक ने दूसरे से कहा इनका सीना शक़ (चाक) करो। चुनाँचे मेरा सीना चीर दिया, लेकिन न तो मुझे इसमें कुछ दुख हुआ न मैंने ख़ून देखा। फिर कहा इसमें से कीना, हसद, बुग़ज़ और कदूरत वग़ैरह (यानी बुरी ख़स्लतें और बुरे अख़्लाक़) सब निकाल दो, चुनाँचे उसने एक जमे हुए ख़ून जैसी कोई चीज़ निकाली और उसे फेंक दिया। फिर उसने कहा इसमें नर्मी व रहमत, रहम व करम भर दो, फिर एक चाँदी जैसी चीज़ जितनी निकाली थी उतनी डाल दी। फिर मेरे दायें पाँव का अंगूठा हिलाकर कहा जाईये और सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारिये। अब जो मैं चला तो मैंने देखा कि हर छोटे पर मेरे दिल में नर्मी है और हर बड़े पर रहमत है। (मुस्नद अहमद)

फिर फ़रमान है कि हम ने तेरा बोझ उतार दिया। यह इस मायने में है कि ख़ुदा ने आपके अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दिये, जिसने तेरी पीठ से आवाज़ निकलवा दी थी और जिसने तेरी कमर को बोझल कर दिया था। हमने तेरा ज़िक्र बुलन्द किया। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं यानी जहाँ मेरा ज़िक्र किया जायेगा वहाँ तेरा ज़िक्र भी किया जायेगा जैसेः

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ.

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदर् रसूलुल्लाह

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआ़ला ने आपका ज़िक्र बुलन्द कर दिया, कोई ख़तीब कोई वाइ़ज़ कोई कलिमा पढ़ने वाला कोई नमाज़ी ऐसा नहीं जो अल्लाह की वह्दानियत का और आपकी रिसालत का कलिमा न पढ़ता हो। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के पास हज़रत

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाया- मेरा और आपका रब फ़रमाता है कि मैं आपका ज़िक्र कैसे और किस तरह बुलन्द करूँ? आपने फ़रमाया ख़ुदा ही को कामिल इल्म है। फ़रमाया जब मैं ज़िक्र किया जाऊँ तो आपका भी ज़िक्र किया जायेगा। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मैंने अपने रब से एक सवाल किया लेकिन न करता तो अच्छा होता। मैंने कहा ख़ुदाया! मुझसे पहले नबियों में से किसी के लिये तूने हवा को ताबेदार कर दिया था, किसी के हाथों में मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया था, तो ख़ुदा तआ़ला ने मुझसे फ़रमाया- क्या तुझे मैंने यतीम पाकर जगह नहीं दी? मैंने कहा बेशक। फ़रमाया रास्ते से अन्जान और हटा हुआ पाकर मैंने तुझे हिदायत नहीं की? मैंने कहा बेशक। फ़रमाया क्या फ़क़ीर पाकर ग़नी नहीं बना दिया? मैंने कहा बेशक। फ़रमाया क्या मैंने तेरा सीना नहीं खोल दिया? क्या मैंने तेरा ज़िक्र बुलन्द नहीं किया? मैंने कहा बेशक किया है। अबू नुऐम "दलाईलुन्नुबुव्वत" में रिवायत लाये हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जब मैं फ़ारिग़ हुआ उस चीज़ से जिसका हुक्म मुझे मेरे रब तआ़ला ने किया था, आसमान और ज़मीन के काम से तो मैंने कहा ख़ुदाया! मुझसे पहले जितने अम्बिया हुए उन सब की तूने तकरीम की (यानी उनको सम्मानित किया)। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया, मूसा अ़लैहिस्सलाम को कलीम (अपने साथ कलाम करने वाला) बनाया, दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिये पहाड़ों को ताबे किया, सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिये हवाओं को ताबेदार बनाया और शयातीन को भी, ईसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ पर मुर्दे ज़िन्दा कराये हैं, पस मेरे लिये क्या किया है? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- क्या मैंने तुझे इन सब से अफ़ज़ल चीज़ नहीं दी? कि मेरे ज़िक्र के साथ ही तेरा ज़िक्र भी किया जाता है, और मैंने तेरी उम्मत के सीनों को ऐसा कर दिया कि वे क़ुरआन को ज़ाहिरी तौर पर पढ़ते हैं। यह मैंने किसी पहली उम्मत को नहीं दिया। और मैंने तुझे अ़र्श के ख़ज़ानों में से ख़ज़ाना दिया जो "ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम" है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद अज़ान है, यानी अज़ान में आप सल्ल. का ज़िक्र है। जैसा कि हज़रत हस्सान रज़ि. के शे'रों में है:

اَغَرَّ عَلَيْهِ لِلنُّبُوَّةِ خَاتَمٌ ☆ مِنَ اللّٰهِ مِنْ نُّوْرٍ يَّلُوْحُ وَيَشْهَدُ

وَضَمَّ الْاِلٰهُ اِسْمَ النَّبِيِّ اِلَى اِسْمِهٖ ☆ اِذَا قَالَ فِی الْخَمْسِ الْمُؤَذِّنُ اَشْهَدُ

وَشَقَّ لَهٗ مِنْ اِسْمِهٖ لِيُجِلَّهٗ ☆ فَذُوالْعَرْشِ مَحْمُوْدٌ وَّهٰذَا مُحَمَّدُ

यानी अल्लाह तआ़ला ने मुहरे नुबुव्वत को अपने पास का एक नूर बनाकर आप सल्ल. पर चमका दी जो आपकी रिसालत की गवाह है। अपने नाम के साथ अपने नबी सल्ल. का नाम मिला लिया जबकि पाँचों वक़्त मुअज़्ज़िन "अश्हदु......." कहता है। आपकी इज़्ज़त व जलाल के इज़हार के लिये अपने नाम से आपका नाम निकाला, देखो वह अ़र्श वाला महमूद है और आप मुहम्मद हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि अगलों पिछलों में अल्लाह तआ़ला ने आप सल्ल. का ज़िक्र बुलन्द किया और तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से अ़हद के दिन में अ़हद लिया गया कि वे आप सल्ल. पर ईमान लायें और अपनी-अपनी उम्मतों को भी आप सल्ल. पर ईमान लाने का हुक्म करें। फिर आप सल्ल. की उम्मत में आपके ज़िक्र को मशहूर किया कि अल्लाह के ज़िक्र के साथ आपका ज़िक्र किया जाये। सरसरी रह. ने कितनी अच्छी बात बयान फ़रमाई है, फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ों की अज़ान सही नहीं होती मगर आप सल्ल. के प्यारे और मीठे नाम से, जो पसन्दीदा और अच्छे मुँह से अदा हो। और फ़रमाते हैं कि तुम नहीं देखते कि

हमारी अज़ान और हमारा फ़र्ज़ सही नहीं होता, जब तक कि आप सल्ल. का ज़िक्र बार-बार उसमें न आये। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला तकरार व ताकीद के साथ दो-दो दफ़ा फ़रमाता है कि सख़्ती के साथ दुश्वारी के साथ सहूलत है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. बैठे हुए थे और आपके सामने पत्थर था, पस लोगों ने कहा अगर सख़्ती आये और इस पत्थर में घुस जाये तो आसानी भी आयेगी और इसी में जायेगी, और उसे निकाल लायेगी। इस पर यह आयत उतरी। मुस्नद बज़्ज़ार में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अगर दुश्वारी इस पत्थर में दाख़िल हो जाये तो आसानी आकर उसे निकालेगी। फिर आप सल्ल. ने इस आयत की तिलावत की। यह हदीस सिर्फ़ आ़ईज़ बिन शुरैह हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत करते हैं और उनके बारे में अबू हातिम राज़ी रह. का फ़ैसला है कि उनकी हदीस में कमज़ोरी है और इब्ने मसऊद रज़ि. से यह मौक़ूफ़न् मरवी है। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं कि लोग कहते थे कि एक सख़्ती दो आसानियों पर ग़ालिब नहीं आ सकती (यानी बहरहाल आसानियों का पल्ला भारी रहेगा)।

हज़रत हसन रह. से इब्ने जरीर में रिवायत है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. एक दिन ख़ुश व प्रसन्न आये और हंसते हुए फ़रमाने लगे- हरगिज़ एक दुश्वारी दो नर्मियों पर ग़ालिब नहीं आ सकती, फिर इस आयत की आपने तिलावत की। यह हदीस मुर्सल है, हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि हम से ज़िक्र किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सहाबा रज़ि. को ख़ुशख़बरी सुनाई कि दो आसानियों पर एक सख़्ती ग़ालिब नहीं आ सकती। मतलब यह है कि "उस्र" (तंगी) के लफ़्ज़ को तो दोनों जगह मारिफ़ा लाये हैं, तो वह मुफ़रद हुआ और "युस्रा" के लफ़्ज़ को नकिरा लाये हैं तो वह एक से ज़ायद (यानी अनेक के मायने में) हो गया। एक हदीस में है कि इमदाद तकलीफ़ के मुताबिक़ आसमान से नाज़िल होती है और सब्र मुसीबत के एतिबार से नाज़िल होता है। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं:

صَبْرًا جَمِيْلًا مَا اَقْرَبَ الْفَرْجَا ☆ مَنْ رَاقَبَ اللّٰهَ فِي الْاُمُوْرِ نَجَا

مَنْ صَدَّقَ اللّٰهَ لَمْ يَنَلْهُ اَذًى ☆ وَمَنْ رَجَاهُ يَكُوْنُ حَيْثُ رَجَا

यानी अच्छा सब्र कुशादगी (आसानी) से क्या ही क़रीब है? अपने कामों में अल्लाह तआ़ला का लिहाज़ रखने वाला निजात पाने वाला है। अल्लाह तआ़ला की बातों की तस्दीक़ करने वाले को कोई ईज़ा (तकलीफ़) नहीं पहुँचती। उससे भलाई की उम्मीद रखने वाला उसे अपनी उम्मीद के साथ ही पाता है।

हज़रत अबू हातिम सजिस्तानी रह. के अश्आ़र हैं कि जब मायूसी दिल पर क़ब्ज़ा कर लेती है और सीना बावजूद कुशादगी के तंग हो जाता है, तकलीफ़ें घेर लेती हैं और मुसीबतें इनसान पर छा जाती हैं और निजात की कोई तदबीर कारगर नहीं होती, उस वक़्त अचानक ख़ुदा की मदद आ पहुँचती है और वह दुआ़ओं का सुनने वाला, बड़ा रहीम व रहमान, उस सख़्ती को आसानी से और उस तकलीफ़ को राहत से बदल देता है। तंगियाँ जबकि भरपूर आ पड़ती हैं तो साथ ही परवर्दिगार कुशादगियाँ (आसानियाँ और सहूलतें) नाज़िल फ़रमाकर नुक़सान को फ़ायदे से बदल देता है। किसी और शायर ने कहा है:

وَلَرُبَّ نَازِلَةٍ يَّضِيْقُ بِهَا الْفَتٰى ☆ ذَرْعًا وَّعِنْدَ اللّٰهِ مِنْهَا الْمَخْرَجُ

كَمُلَتْ فَلَمَّا اسْتَحْكَمَتْ حَلَقَاتُهَا ☆ فَرَجَتْ وَكَانَ يَظُنُّهَا لَا تَفْرَجُ

यानी बहुत सी ऐसी मुसीबतें इनसान पर नाज़िल होती हैं जिनसे वह तंगदिल (परेशान) हो जाता है

Maktab E Ashraf

हालाँकि ख़ुदा के पास उनसे छुटकारा भी है। जब ये मुसीबतें पूरी हो जाती हैं और ज़न्जीर के हल्के मज़बूत हो जाते हैं और इनसान गुमान करने लगता है कि भला अब यह क्या हटेगी? तो अचानक उस रहीम व करीम ख़ुदा की शफ़क़त भरी नज़रें पड़ती हैं और उस मुसीबत को इस तरह दूर कर देता है कि गोया आई ही न थी।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि जब तू दुनियावी कामों से और यहाँ के धंधों से फ़ुर्सत पाये तो हमारी इबादतों में लग जा और यक्सू होकर दिली तवज्जोह करके हमारे सामने आ़जिज़ी में लग जा, और अपनी नीयत ख़ालिस कर ले, अपनी पूरी दिलचस्पी के साथ हमारी बारगाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जा। इसी के जैसे मायनों वाली वह हदीस है जिसके सही होने पर इत्तिफ़ाक़ है, जिसमें है कि खाना सामने मौजूद होने के वक़्त नमाज़ नहीं और इस हालत में भी कि इनसान को पाख़ाना पेशाब करने की हाजत हो (यानी तक़ाज़ा हो रहा हो)।

एक और हदीस में है कि जब नमाज़ खड़ी की जाये और शाम का खाना सामने मौजूद हो तो पहले खाने से फ़राग़त हासिल कर लो। हज़रत मुजाहिद रह. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि जब दुनिया के कामों से फ़ारिग़ होकर नमाज़ के लिये खड़ा हो तो मेहनत के साथ इबादत कर और ध्यान के साथ तवज्जोह कर। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो तहज्जुद की नमाज़ में खड़ा हो। हज़रत अ़ब्दुलाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि नमाज़ से फ़ारिग़ होकर बैठे हुए अपने रब की तरफ़ तवज्जोह कर। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- यानी दुआ़ कर। ज़ैद बिन असलम और इमाम ज़ह्हाक फ़रमाते हैं कि जिहाद से फ़ारिग़ होकर ख़ुदा की इबादत में लग जा। सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि अपनी नीयत और अपनी तवज्जोह ख़ुदा ही की तरफ़ रख।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः अलम् नश्रह की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः वत्तीन

सूरः वत्तीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. अपने सफ़र में दो रकअ़तों में से किसी एक में यह सूरत पढ़ रहे थे, मैंने आप से ज़्यादा अच्छी आवाज़ और अच्छी क़िराअत किसी की नहीं सुनी।

कसम है इन्जीर (के पेड़) की और ज़ैतून (के पेड़) की। (1) और तूरे सीनीन की। (2) और इस अमन वाले शहर (मक्का शरीफ़) की (3) कि हमने इनसान को बहुत ख़ूबसूरत साँचे	وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ○ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ○ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ○ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ

Maktab E Ashraf

اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝	में ढाला है। (4) फिर (उनमें जो बूढ़ा हो जाता है) हम उसको पस्ती की हालत वालों से भी ज़्यादा पस्त कर देते हैं। (5) लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए इस क़द्र सवाब है जो कभी मौक़ूफ़ न होगा। (6) फिर कौनसी चीज़ तुझको क़ियामत के बारे में मुन्किर बना रही है? (7) क्या अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़कर हाकिम नहीं है? (8)

ع ٨ ٢٠

इस अमन वाले शहर की क़सम

"तीन" से मुराद किसी के नज़दीक तो दमिश्क़ की मस्जिद है, कोई कहता है कि ख़ुद दमिश्क़ मुराद है, किसी के नज़दीक दमिश्क़ का एक पहाड़ मुराद है, बाज़ कहते हैं कि अस्हाबे कहफ़ की मस्जिद मुराद है, कोई कहता है कि जूदी पहाड़ी पर जो मस्जिदे नूह है वह मुराद है, बाज़ कहते हैं कि इन्जीर (एक फल) मुराद है। ज़ैतून से कोई कहता है मस्जिदे बैतुल-मुक़द्दस मुराद है, किसी ने कहा वह ज़ैतून जिसे निचोड़ते हो। "तूरे सीनीन" वह पहाड़ है जिस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से ख़ुदा तआ़ला ने कलाम किया था। "बलदे अमीन" से मुराद मक्का शरीफ़ है, इसमें किसी का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं! बाज़ का क़ौल यह है कि ये तीनों वे जगहें हैं जहाँ तीन बड़े मक़ाम वाले, साहिबे शरीअ़त पैग़म्बर अ़लैहिमुस्सलाम भेजे गये हैं।

"तीन" से मुराद तो बैतुल-मुक़द्दस है, जहाँ पर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा गया था। "तूरे सीनीन" से मुराद तूरे सीना है जहाँ मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम से ख़ुदा तआ़ला ने कलाम किया था, और "बलदे अमीन" से मुराद मक्का मुकर्रमा है जहाँ हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल. भेजे गये। तौरात के आख़िर में भी इन तीनों जगहों का नाम है। उसमें है कि तूरे सीना से अल्लाह तआ़ला आया, यानी वहाँ पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से ख़ुदा तआ़ला ने कलाम किया और साओ़र यानी बैतुल-मुक़द्दस के पहाड़ से उसने नूर चमकाया, यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को वहाँ भेजा। और फ़ारान की चोटियों पर वह बुलन्द हुआ यानी मक्का के पहाड़ों से हज़रत मुहम्मद सल्ल. को भेजा। फिर इन तीनों ज़बरदस्त बड़े मर्तबे वाले पैग़म्बरों की ज़बानी और वजूदी तरतीब बयान कर दी, इसी तरह यहाँ भी पहले जिसका नाम लिया उससे ज़्यादा शरीफ़ (मर्तबे वाली व सम्मानित) चीज़ का नाम उसके बाद लिया, फिर उन दोनों से ज़्यादा रुतबे और मक़ाम वाली चीज़ का नाम आख़िर में लिया।

फिर इन क़समों के बाद बयान फ़रमाया कि इनसान को अच्छी शक्ल व सूरत में सही क़द व क़ामत वाला ठीक-ठाक और सुडौल आज़ा (बदनी अंगों) वाला ख़ूबसूरत और रौनक़दार चेहरे वाला पैदा किया। फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया, यानी जहन्नमी हो गया, अगर ख़ुदा की इताअ़त और रसूल की इत्तिबा न की तो। इसी लिये ईमान वालों को इससे अलग कर लिया। बाज़ कहते हैं कि मुराद बुढ़ापे की तरफ़ लौटा देना है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि जिसने क़ुरआन जमा किया (यानी क़ुरआन को हिफ़्ज़ किया) वह

Maktab-E-Ashraf

रज़ील उम्र (यानी बुढ़ापे की घटिया हालत) को न पहुँचेगा। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी को पसन्द फ़रमाते हैं, लेकिन अगर यही बुढ़ापा मुराद होता तो मोमिनों को क्यों अलग किया जाता। बुढ़ापा तो बाज़ मोमिनों पर भी आता है, पस ठीक बात वही है जो ऊपर हमने ज़िक्र की। जैसे एक और जगह "सूरः वल्-अ़स्रि" में है कि तमाम इनसान नुक़सान में हैं सिवाय ईमान और नेक आमाल वालों के, कि उन्हें ऐसी नेक जज़ा मिलेगी जिसकी इन्तिहा न हो। जैसे पहले बयान हो चुका।

फिर फ़रमाता है- ऐ इनसान! जबकि तू अपनी पहली और अव्वल मर्तबा की पैदाईश को जानता है तो फिर जज़ा व सज़ा के दिन के आने पर और तेरे दोबारा ज़िन्दा होने पर तुझे क्यों यक़ीन नहीं? क्या वजह है कि तू इसे नहीं मानता? हालाँकि ज़ाहिर है कि जिसने पहली दफ़ा पैदा किया उस पर दूसरी दफ़ा का पैदा करना क्या मुश्किल है? हज़रत मुजाहिद रह. एक मर्तबा हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से पूछ बैठे कि क्या इससे मुराद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं? आपने फ़रमाया अल्लाह की पनाह! इससे मुराद मुतलक़ इनसान है (यानी हर इनसान है)। हज़रत इक्रिमा रह. वग़ैरह का भी यही क़ौल है।

फिर फ़रमाता है कि क्या ख़ुदा अह्कमुल-हाकिमीन नहीं है? वह न ज़ुल्म करे न बेइन्साफ़ी करे, इसीलिये वह क़ियामत क़ायम करेगा और हर एक ज़ालिम से मज़लूम का बदला लेगा। हज़रत अबू हुरैरह रह. से मरफ़ूअ़ हदीस में गुज़र चुका है कि जो शख़्स सूरः "वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि...." पढ़े और उसके आख़िर की आयत "अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल् हाकिमीन" तक पहुँचे तो कह दे "बला व अ-न अ़ला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन" यानी हाँ! और मैं इस पर गवाह हूँ।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः वत्तीन की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः अ़लक़्

सूरः अ़लक़् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) आप (पर जो) क़ुरआन (नाज़िल हुआ करेगा) अपने रब का नाम लेकर पढ़ा कीजिए। (यानी जब पढ़िए बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहकर पढ़ा कीजिए) जिसने (मख़्लूक़ात को) पैदा किया। (1) जिसने इनसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया। (2) आप क़ुरआन पढ़ा कीजिए और आपका रब बड़ा करीम है (जो चाहता है अ़ता फ़रमाता है)।	اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ○ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ○ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ○ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ○ عَلَّمَ

(3) (और ऐसा है) जिसने (लिखे- पढ़ों को) क़लम से तालीम दी (4) (और आम तौर पर) इनसान को (दूसरे साधनों से) उन चीज़ों की तालीम दी जिनको वह न जानता था। (5)	الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝

Maktaba E Ashraf

पढ़िये अपने रब के नाम से

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. की 'वही' की शुरूआ़त सच्चे ख़्वाबों से हुई। जो ख़्वाब आप सल्ल. देखते वह सुबह के ज़हूर की तरह ज़ाहिर हो जाता। फिर आपने एकान्त और तन्हाई में रहना शुरू कर दिया। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से तोशा (खाना और ज़रूरत की चीज़) लेकर ग़ारे हिरा में तशरीफ़ ले जाते और कई-कई रातें वहीं इबादत में गुज़ारते। फिर तशरीफ़ लाते और तोशा लेकर चले जाते, यहाँ तक कि एक मर्तबा अचानक वहीं बिल्कुल पहली 'वही' आई। फ़रिश्ता आप सल्ल. के पास आया और कहा "इक़्रअ्" यानी पढ़िये। आपने फ़रमाया मैं तो पढ़ा हुआ नहीं। फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और भींचा यहाँ तक कि मुझे तकलीफ़ हुई, फिर मुझे छोड़ दिया और फ़रमाया पढ़। मैंने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। फ़रिश्ते ने मुझे दोबारा भींचा जिससे मुझे तकलीफ़ भी हुई, फिर मुझे छोड़ दिया और फ़रमाया पढ़ो। मैंने फिर यही कहा कि मैं पढ़ने वाला नहीं। उसने मुझे तीसरी मर्तबा पकड़ कर दबाया और तकलीफ़ पहुँचाई फिर छोड़ दिया। और ये आयतें पढ़ीं:

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ. خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ. اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ. عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ.

(यानी इस सूरत की शुरू की 5 आयतें) आप इन आयतों को लिये हुए काँपते हुए हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास आये और फ़रमाया- मुझे कपड़ा उढ़ा दो, चुनाँचे कपड़ा उढ़ा दिया, यहाँ तक कि डर ख़ौफ़ (घबराहट) जाता रहा तो आप सल्ल. ने हज़रत ख़दीजा से सारा वाक़िआ़ बयान किया और फ़रमाया मुझे अपनी जान जाने का ख़ौफ़ है। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा हुज़ूर! आप ख़ुश हो जायें ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला आपको हरगिज़ रुस्वा न करेगा। आप सिला-रहमी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) करते हैं, सच्ची बातें करते हैं, दूसरों का बोझ ख़ुद उठा लेते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और हक़ पर दूसरों की मदद करते हैं। फिर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आपको लेकर अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल बिन असद बिन अ़ब्दुल-उज़्ज़ा बिन क़ुसई के पास आयीं, जाहिलीयत के ज़माने में यह ईसाई हो गये थे, अ़रबी में किताबें लिखते थे और इबरानी में इन्जील लिखते थे। बहुत बड़ी उम्र के बूढ़े थे, आँखें जा चुकी थीं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उनसे कहा कि अपने भतीजे का वाक़िआ़ सुनिये। वरक़ा ने पूछा भतीजे! आपने क्या देखा? रसूलुल्लाह सल्ल. ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। वरक़ा ने सुनते ही कहा कि यही वह राज़दाँ (अल्लाह का भेदी) फ़रिश्ता है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास भी ख़ुदा का भेजा हुआ आया करता था, काश कि मैं उस वक़्त जवान होता, काश कि मैं उस वक़्त ज़िन्दा होता जबकि आपको आपकी क़ौम यहाँ से निकाल देगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ताज्जुब से सवाल किया कि क्या वे मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा हाँ, एक आप क्या? जितने भी लोग आपकी तरह

नुबुव्वत से सरफ़राज़ (सम्मानित) हुए उन सब से दुश्मनी की गई अगर वह वक़्त मेरी ज़िन्दगी में आ गया तो मैं आपकी पूरी-पूरी मदद करूँगा। लेकिन इस वाक़िए के बाद वरक़ा बहुत कम ज़िन्दा रहे।

इधर वही भी रुक गयी और उसके रुकने का हुज़ूर सल्ल. को बड़ा सदमा था। कई मर्तबा आपने पहाड़ की चोटी पर से अपने आपको गिरा देना चाहा, लेकिन हर वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आ जाते और फ़रमा देते कि ऐ मुहम्मद! आप अल्लाह तआ़ला के सच्चे रसूल हैं। इससे आपका रंज व ग़म जाता रहता, दिल में किसी क़द्र इत्मीनान पैदा हो जाता और आराम से घर वापस आ जाते। (मुस्नद अहमद)

यह हदीस सही बुख़ारी शरीफ़, सही मुस्लिम शरीफ़ में भी इमाम ज़ोहरी रह. की रिवायत से मौजूद है। इसकी सनद में, इसके मतन में, इसके मानी में जो कुछ बयान करना चाहिये था वह हमने अपनी शरह बुख़ारी में पूरे तौर पर बयान कर दिया है, वहाँ देख लिया जाये।

पस क़ुरआने करीम की नाज़िल होने के एतिबार से सब से पहली आयतें यही हैं। यही पहली नेमत है जो ख़ुदा तआ़ला ने अपने बन्दों पर इनाम की, और यही वह पहली रहमत है जो उस अर्रहमुर्राहिमीन ने अपने रहम व करम से हमें दी। इसमें तंबीह है इनसान की पहली पैदाईशी पर, कि वह एक जमे हुए ख़ून की शक्ल में था अल्लाह तआ़ला ने उस पर यह एहसान किया कि उसे अच्छी सूरत में पैदा किया, फिर इल्म जैसी अपनी ख़ास नेमत उसे इनायत फ़रमाई और वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था। इल्म ही की बरकत थी कि तमाम इनसानों के बाप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम फ़रिश्तों में भी मुम्ताज़ (नुमायाँ और विशिष्ठ) नज़र आये। इल्म कभी तो ज़ेहन में ही होता है, कभी ज़बान पर होता है और कभी किताब की सूरत में लिखा हुआ होता है, पस इल्म की तीन क़िस्में हुईं- ज़ेहनी, लफ़्ज़ी और किताबी, और किताबी इल्म ज़ेहनी और लफ़्ज़ी इल्म को शामिल है, लेकिन वे दोनों इसे शामिल व लाज़िम नहीं, इसी लिये फ़रमाया कि पढ़ तेरा रब तो बड़े इकराम वाला है जिसने क़लम के ज़रिये से इल्म सिखाया और आदमी को जो वह नहीं जानता था मालूम करा दिया। एक क़ौल में है कि लिख लिया करो, इसी क़ौल में है कि जो शख़्स अपने इल्म पर अ़मल करे उसे अल्लाह तआ़ला उस इल्म का भी वारिस कर देता है जिसे वह नहीं जानता था।

सचमुच बेशक (काफ़िर) आदमी (आदमियत की) हद से निकल जाता है। (6) इस वजह से कि अपने आपको (अपने ही जिन्स के अफ़राद से) बेपरवाह देखता है। (7) ऐ (आ़म) मुख़ातब! तेरे रब ही की तरफ़ सब को लौटना होगा। (8) ऐ (आ़म) मुख़ातब! भला उस शख़्स का हाल तो बतला जो (हमारे) एक (ख़ास) बन्दे को मना करता है (9) जब वह (बन्दा) नमाज़ पढ़ता है। (10) (और) ऐ मुख़ातब! भला यह तो बतला कि अगर वह बन्दा हिदायत पर हो (जो कि लाज़िमी कमाल है) (11) या वह (दूसरों को भी) परहेज़गारी की तालीम देता हो। (12) ऐ मुख़ातब! भला यह तो बतला कि अगर वह	كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۙ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۗ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۗ اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ۙ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۗ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۙ اَوْ اَمَرَ

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

بِالتَّقْوٰى ۝ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝
اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ
يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ
خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝ سَنَدْعُ
الزَّبَانِيَةَ ۝ كَلَّا ۭ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ
وَاقْتَرِبْ ۝

शख़्स (नाहक़ दीन को) झुठलाता हो और (हक़ से) मुँह फेरता हो, (13) क्या उस शख़्स को यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला (उसकी सरकशी व शरारत वग़ैरह को) देख रहा है। (14) हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए, और) अगर यह शख़्स बाज़ न आएगा तो हम (उसको) पेशानी के बाल पकड़कर (15) जो कि झूठ और ख़ता में लिप्त पेशानी के बाल हैं (जहन्नम की तरफ़) घसीटेंगे। (16) सो यह अपने पास बैठने वाले लोगों को बुला ले। (17) (अगर उसने ऐसा किया तो) हम भी दोज़ख़ के प्यादों को बुला लेंगे। (18) (आगे फिर तंबीह व मलामत की जा रही है कि उसको) हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए मगर) आप उसका कहना न मानिए और (बदस्तूर) नमाज़ पढ़ते रहिए और (ख़ुदा की) नज़दीकी हासिल करते रहिए। (19) ✿ (सज्दा)

✿ सज्दा नम्बर- 14

السجدة ع ۱۹ ۲۱

इनसान की सरकशी और नाफ़रमानी

फ़रमाता है कि इनसान के पास जहाँ दो पैसे हो गये, ज़रा ख़ुशहाली पाई कि उसके दिल में घमण्ड व ग़ुरूर, इतराहट व ख़ुद-पसन्दी आई। उसे डरते रहना चाहिये और ख़्याल रखना चाहिये कि उसे एक दिन ख़ुदा की तरफ़ लौटना है। वहाँ जहाँ और हिसाब होंगे, माल के बारे में भी सवाल होगा कि लाया कहाँ से और ख़र्च कहाँ किया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि दो लालची (ज़्यादा हासिल करने के इच्छुक) ऐसे हैं जिनका पेट ही नहीं भरता। एक तालिबे-इल्म, दूसरा तालिबे-दुनिया। इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। इल्म का तालिब (इच्छुक) तो ख़ुदा की रज़ामन्दी हासिल करने में बढ़ता रहता है और दुनिया का लालची सरकशी और ख़ुद-पसन्दी (अपने को औरों से अच्छा समझने अर्थात तकब्बुर) में बढ़ता रहता है। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई जिसमें दुनिया दारों का ज़िक्र है। फिर तालिब इल्मों की फ़ज़ीलत के बयान की यह आयत तिलावत कीः

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَآءُ.

बेशक अल्लाह से डरने वाले उसके बन्दों में उलेमा ही हैं।

यह हदीस मरफ़ूअ़न यानी नबी सल्ल. के फ़रमान से भी मरवी है कि दो लालची हैं जिनका पेट नहीं भरता, तालिबे-इल्म और तालिबे-दुनिया।

इसके बाद की आयतें अबू जहल मलऊन के बारे में नाज़िल हुई हैं कि यह हुज़ूरे पाक सल्ल. को बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ने से रोकता था। पस पहले तो उसे नर्मी के तरीक़े से समझाया गया कि जिन्हें तू रोकता है यही अगर सीधी राह पर हों, इन्हीं की बातें तक़्वे (अल्लाह से डरने और परहेज़गारी) का हुक्म

करती हों, फिर तू इन्हें अगर डाँट-डपट करे और अल्लाह के घर से रोके तो तेरी बदकि़स्मती की इन्तिहा है या नहीं? क्या यह रोकने वाला जो ऐसे सच्चाई के पैकर को हक़ के रास्ते से रोकने के पीछे पड़ा है, इतना भी नहीं जानता कि ख़ुदा तआ़ला उसे देख रहा है, उसका कलाम सुन रहा है, उसके कलाम और फ़ेल पर उसे सज़ा देगा। इस तरह समझा चुकने के बाद अब डराया जा रहा है कि अगर उसने अपनी मुख़ालफ़त, सरकशी और तकलीफ़ देना न छोड़ा तो हम भी उसकी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे जो अपनी बातों में झूठा और अपने कामों में ख़ताकार है। यह अपने मददगारों, साथियों, रिश्तेदारों और कुनबे-क़बीले वालों को बुला ले, देखें तो कौन इसकी मदद कर सकता है। हम भी अपने अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को बुला लेते हैं, फिर हर एक को मालूम हो जायेगा कि कौन जीता और कौन हारा।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि अबू जहल ने कहा- अगर मैं मुहम्मद को काबे में नमाज़ पढ़ते हुए देखूँगा तो उनकी गर्दन नापूँगा। हुज़ूर सल्ल. को भी यह ख़बर पहुँची तो आपने फ़रमाया अगर यह ऐसा करेगा तो ख़ुदा के फ़रिश्ते इसे पकड़ लेंगे। दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. मक़ामे इब्राहीम के पास बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ रहे थे कि यह मलऊन आया और कहने लगा- मैंने तुझे मना कर दिया फिर भी तू बाज़ नहीं आता? अगर अब मैंने तुझे काबे में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो सख़्त सज़ा दूँगा, वग़ैरह। नबी सल्ल. ने सख़्ती से जवाब दिया, उसकी बात ठुकरा दी और अच्छी तरह डाँट दिया। इस पर वह कहने लगा तू मुझे डाँटता है? अल्लाह की क़सम मेरी एक आवाज़ पर यह सारी वादी आदमियों से भर जायेगी। इस पर यह आयत उतरी कि अच्छा तू अपने हामियों को बुला, हम भी अपने फ़रिश्तों को बुला लेते हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि अबू जहल ने कहा कि अगर मैं मुहम्मद को बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ते देख लूँगा तो उसकी गर्दन तोड़ दूँगा। आप सल्ल. ने फ़रमाया अगर वह ऐसा करता तो उसी वक़्त लोगों की आँखों के सामने अ़ज़ाब के फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते, और इसी तरह जबकि यहूदियों से क़ुरआन ने कहा था कि अगर तुम सच्चे हो तो मौत माँगो, अगर वे इसे क़बूल कर लेते और मौत तलब करते तो सारे के सारे मर जाते और जहन्नम में अपनी जगह देख लेते। और जिन ईसाईयों को मुबाहले की दावत दी गयी थी अगर वे मुबाहले के लिये निकलते तो लौटकर न अपना माल पाते न अपने बाल बच्चों को पाते। इब्ने जरीर में है कि अबू जहल ने कहा- अगर मैं आपको मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ता हुआ देख लूँगा तो जान से मार डालूँगा। इस पर यह सूरत उतरी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गये, अबू जहल मौजूद था, आपने वहीं नमाज़ अदा की तो लोगों ने उस बदबख़्त से कहा कि तू क्यों बैठा रहा? उसने कहा क्या बताऊँ मेरे और उनके बीच फ़रिश्ते रोक (बाधा) हो गये।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर वह ज़रा भी हिलता जुलता तो लोगों के देखते हुए फ़रिश्ते उसे हलाक कर डालते। इब्ने जरीर की एक रिवायत में है कि अबू जहल ने पूछा- क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुम्हारे सामने सज्दा करते हैं? लोगों ने कहा हाँ। कहने लगा ख़ुदा की क़सम अगर मेरे सामने उसने यह किया तो उसकी गर्दन कुचल दूँगा और उसके मुँह में मिट्टी मिला दूँगा। इधर उस मलऊन ने यह कहा उधर रसूलुल्लाह सल्ल. ने नमाज़ शुरू की। जब आप सज्दे में गये तो यह आगे बढ़ा लेकिन साथ ही अपने आपको बचाता हुआ बहुत ही बदहवासी से पीछे हटा। लोगों ने कहा क्या है? कहने लगा- मेरे और मुहम्मद के दरमियान आग की ख़न्दक़ (खाई) है, डरावनी और ख़ौफ़नाक चीज़ें हैं और फ़रिश्तों के पर हैं, वग़ैरह। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया अगर यह और ज़रा क़रीब आ जाता तो

फ़रिश्ते इसका एक-एक अंग (जिस्म के हिस्से) अलग-अलग कर देते। पस ये आयतें उतरीं:

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰى.................وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ.

(यानी इस सूरत की आयत नम्बर 6 से आख़िर तक की आयतें) ख़ुदा ही को इल्म है कि यह कलाम हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. की हदीस में है या नहीं? यह हदीस मुस्नद, नसाई, इब्ने अबी हातिम में भी है।

फिर फ़रमाया कि ऐ नबी! तुम इस मरदूद की बात न मानना, इबादत पर पाबन्दी करना और ख़ूब ज़्यादा इबादत करते रहना और जहाँ जी चाहे नमाज़ पढ़ते रहना और उसकी बिल्कुल परवाह न करना, अल्लाह तआ़ला ख़ुद तेरा हाफ़िज़ व नासिर (हिफ़ाज़त करने वाला और मददगार) है, वह तुझे दुश्मनों से महफ़ूज़ रखेगा। तू सज्दे में और अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी के हासिल करने में मशग़ूल रह। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सज्दे की हालत में बन्दा अपने रब तआ़ला से बहुत ही क़रीब होता है, पस तुम ख़ूब ज़्यादा सज्दों में दुआ़यें करते रहो। पहले यह हदीस भी गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्ल. सूरः "इज़स्समाउन् शक़्क़त...." और इस सूरत में सज्दा किया करते थे।

अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ और उसके करम व एहसान से सूरः अ़लक़् की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

सूरः क़द्र

सूरः क़द्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اِنَّـآ اَنْزَلْنٰـهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ○ وَمَآ اَدْرٰكَ مَـا لَيْـلَةُ الْقَدْرِ ○ لَيْـلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْـرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ○ تَـنَـزَّلُ الْـمَـلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَـا بِـاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ○ سَلٰمٌ ۛ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ○	बेशक हमने क़ुरआन को शबे-क़द्र में उतारा है। (1) और (शौक़ बढ़ाने के लिए फ़रमाते हैं कि) आपको कुछ मालूम है कि शबे-क़द्र कैसी चीज़ है? (2) (आगे जवाब है कि) शबे-क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है। (3) (और वह शबे-क़द्र ऐसी है कि) उस रात में फ़रिश्ते और रूहुल्-क़ुदुस (यानी हज़रत जिब्राईल) अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर ख़ैर के मामले को लेकर (ज़मीन की तरफ़) उतरते हैं। (4) (और वह रात) पूरी-की-पूरी सलाम है। वह रात (इसी सिफ़त व बरकत के साथ) फ़जर के निकलने के वक़्त तक रहती है। (5)

Maktab-E-Ashraf

शबे-क़द्र

मक़सद यह है कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम को लैलतुल-क़द्र (शबे-क़द्र) में नाज़िल फ़रमाया है इसी का नाम लैलतुल्-मुबारका (मुबारक रात) भी है। जैसे एक और जगह इरशाद हैः

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ.

कि हमने उसको मुबारक रात में नाज़िल किया।

और यह भी क़ुरआन से साबित है कि यह रात रमज़ान मुबारक के महीने में है। जैसे फ़रमायाः

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْاٰنُ.

रमज़ान का महीना है जिसमें क़ुरआन को नाज़िल किया गया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह का क़ौल है कि पूरा क़ुरआन पाक लौहे-महफ़ूज़ से पहले आसमान पर बैतुल-इज़्ज़त में इस रात उतरा। फिर वाक़िआ़त के मुताबिक़ धीरे-धीरे तेईस साल में रसूलुल्लाह सल्ल. पर नाज़िल हुआ। फिर अल्लाह तआ़ला शबे-क़द्र की बरकतों का इज़हार फ़रमाता है कि इस रात की एक ज़बरदस्त बरकत तो यह है कि क़ुरआने करीम जैसी आला नेमत इसी रात में उतरी। फ़रमाता है कि तुम्हें क्या ख़बर कि शबे-क़द्र क्या है? फिर ख़ुद बताता है कि यह एक ऐसी रात है जो एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी रह. तिर्मिज़ी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में एक रिवायत लाये हैं कि यूसुफ़ बिन सअ़द ने हज़रत हसन बिन अ़ली रज़ि. से जबकि आपने हज़रत मुआ़विया रज़ि. से सुलह कर ली, कहा कि तुमने ईमान वालों के मुँह काले कर दिये, या यूँ कहा कि ऐ मोमिनों के मुँह सियाह करने वाले, तो आपने फ़रमाया अल्लाह तुझ पर रहम करे, मुझ पर ख़फ़ा न हो, नबी सल्ल. को दिखलाया गया कि गोया आप सल्ल. के मिम्बर पर बनू उमैया हैं, आपको यह बुरा मालूम हुआ तो सूरः कौसर (इन्ना अअ़्तैनाकल् कौसर......) नाज़िल हुई। यानी जन्नत की नहर कौसर आपको अ़ता किये जाने की ख़ुशख़बरी मिली, और सूरः क़द्र उतरी, पस हज़ार महीने वो मुराद हैं जिनमें आपके बाद बनू उमैया की बादशाहत रहेगी। क़ासिम रह. कहते हैं कि हमने हिसाब लगाया तो वे पूरे एक हज़ार महीने हुए, न एक दिन ज़्यादा न एक दिन कम।

इमाम तिर्मिज़ी रह. इस रिवायत को ग़रीब बतलाते हैं और इसकी सनद में यूसुफ़ बिन सअ़द हैं जो मजहूल हैं और सिर्फ़ इसी एक सनद से यह मरवी है। मुस्तद्रक हाकिम में भी यह रिवायत है, इमाम तिर्मिज़ी रह. का यह फ़रमाना कि यूसुफ़ मजहूल हैं, यह विचारनीय है, उनके बहुत से शागिर्द हैं। यहया बिन मईन रह. कहते हैं कि यह मशहूर और मोतबर हैं और इसकी सनद में कुछ इज़्तिराब भी है, वल्लाहु आलम। बहरहाल यह रिवायत बहुत ही मुन्कर है, हमारे शैख़ हाफ़िज़ अबुल-हज्जाज मिज़्ज़ी भी इस रिवायत को मुन्कर बतलाते हैं। क़ासिम बिन फ़ज़्ल हुद्दानी का यह क़ौल कि बनू उमैया की सल्तनत की ठीक मुद्दत एक हज़ार महीने थी, यह भी सही नहीं, इसलिये कि हज़रत मुआ़विया रज़ि. की मुस्तक़िल सल्तनत 40 हिजरी में क़ायम हुई थी, जबकि हज़रत इमाम हसन रज़ि. ने आपके हाथ पर बैअ़त कर ली और ख़िलाफ़त आपको सौंप दी, और सब लोग भी हज़रत मुआ़विया रज़ि. की बैअ़त पर जमा हो गये और उस साल का नाम ही आ़मुल-जमाअ़त मशहूर हुआ। फिर शाम वग़ैरह में बराबर बनू उमैया की सल्तनत क़ायम रही। हाँ तक़रीबन नौ साल तक हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना), अहवाज़ और बाज़ शहरों पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सल्तनत क़ायम हो गयी थी, लेकिन फिर भी उस मुद्दत में भी पूरी तरह

उनके हाथ से हुकूमत नहीं गयी। अलबत्ता बाज़ शहरों पर से हुकूमत ख़त्म हो गयी थी और फिर 132 हिजरी में बनू अ़ब्बास ने उनसे ख़िलाफ़त अपने क़ब्ज़े में कर ली। इस तरह उनकी सल्तनत की मुद्दत बानवे बरस हुई और यह एक हज़ार माह से बहुत ज़्यादा है, एक हज़ार महीने के तिरासी साल चार माह होते हैं। क़ासिम बिन फ़ज़्ल का यह हिसाब इस तरह तो तक़रीबन ठीक हो जाता है कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि. की मुद्दते ख़िलाफ़त इस गिनती में से निकाल दी जाये। वल्लाहु आलम।

इस रिवायत के ज़ईफ़ होने की एक यह वजह भी है कि बनू उमैया की सल्तनत के ज़माने की तो बुराई और मज़म्मत बयान करनी मक़सूद है और शबे-क़द्र की उस ज़माने पर फ़ज़ीलत का साबित होना कुछ उनके ज़माने की मज़म्मत की दलील नहीं। शबे-क़द्र तो हर तरह अ़ज़मत वाली है और यह पूरी सूरत इस मुबारक रात की तारीफ़ व प्रशंसा बयान कर रही है। पस बनू उमैया के ज़माने के दिनों की मज़म्मत (बुराई करने) से शबे-क़द्र की कौनसी फ़ज़ीलत साबित हो जायेगी? यह तो बिल्कुल वही मिसाल हो जायेगी कि कोई शख़्स तलवार की तारीफ़ करते हुए कहे कि लकड़ी से बहुत तेज़ है, किसी बेहतरीन फ़ज़ीलत वाले शख़्स को किसी कम दर्जे के ज़लील शख़्स पर फ़ज़ीलत देना तो उस शरीफ़ बुज़ुर्ग की तौहीन करना है। एक और वजह सुनिये, इस रिवायत की बिना पर यह एक हज़ार महीने वह हुए जिनमें बनू उमैया की सल्तनत रहेगी और यह सूरत उतरी है मक्का शरीफ़ में, तो इसमें उन महीनों का हवाला कैसे दिया जा सकता है जो बनू उमैया के ज़माने के हैं, इस पर न तो कोई लफ़्ज़ दलालत करता है और न मायने के तौर पर यह समझा जा सकता है। मिम्बर तो मदीना में क़ायम होता है और हिजरत की एक मुद्दत के बाद मिम्बर बनाया जाता और रखा जाता है, पस इन तमाम कारणों से मालूम होता है कि यह रिवायत ज़ईफ़ और मुन्कर है। वल्लाहु आलम।

इब्ने अबी हातिम में है, हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल. ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो एक हज़ार माह तक ख़ुदा की राह (यानी जिहाद) में हथियार बन्द रहा। मुसलमानों को यह सुनकर ताज्जुब हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई कि एक शबे-क़द्र की इबादत उस शख़्स की एक हज़ार महीने की इबादत से अफ़ज़ल है। इब्ने जरीर में है कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था जो रात को क़ियाम करता (नमाज़ें पढ़ता) था सुबह तक और दिन में दीन के दुश्मनों से जिहाद करता था शाम तक, एक हज़ार महीने तक यही करता रहा। पस अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई कि इस उम्मत के किसी शख़्स का सिर्फ़ शबे-क़द्र का क़ियाम उस आ़बिद की एक हज़ार महीने की उस इबादत से अफ़ज़ल है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने बनी इस्राईल के चार आ़बिदों का ज़िक्र फ़रमाया, जिन्होंने अस्सी साल तक ख़ुदा तआ़ला की इबादत की थी, एक आँख झपकने के बराबर भी ख़ुदा की नाफ़रमानी नहीं की थी। हज़रत अय्यूब, हज़रत ज़करिया, हज़रत हिज़क़ील बिन अ़जूज़, हज़रत यूशा बिन नून अ़लैहिमुस्सलाम। रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा को सख़्त ताज्जुब हुआ, आपके पास हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और कहा कि ऐ मुहम्मद! आपकी उम्मत ने उस जमाअ़त की इस इबादत पर ताज्जुब किया तो अल्लाह तआ़ला ने उससे भी अफ़ज़ल चीज़ आप पर नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया कि यह अफ़ज़ल है उससे जिस पर आप और आपकी उम्मत ने ताज्जुब किया था। पस हुज़ूरे पाक सल्ल. और आपके सहाबा रज़ि. बेहद ख़ुश हुए।

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि उस रात का नेक अ़मल, उसका रोज़ा, उसकी नमाज़ एक हज़ार महीनों के रोज़े और नमाज़ों से अफ़ज़ल है जिनमें शबे-क़द्र न हो। बाज़ मुफ़स्सिरीन का

Maktab E Ashraf

भी यह कौल है। इमाम इब्ने जरीर रह. ने भी इसी को पसन्द फ़रमाया है कि वे एक हज़ार महीने जिनमें शबे-क़द्र न हो। यही ठीक है, इसके सिवा और कोई कौल ठीक नहीं। जैसे रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि एक रात की जिहाद की तैयारी उसके अ़लावा की एक हज़ार रातों से अफ़ज़ल है। (मुस्नद अहमद) इसी तरह एक और हदीस में है कि जो शख़्स अच्छी नीयत और अच्छी हालत से जुमे की नमाज़ के लिये जाये उसके लिये एक साल के आमाल का सवाब लिखा जाता है, साल भर के रोज़ों का और साल भर की नमाज़ों का, इसी तरह की और भी बहुत सी हदीसें हैं। पस मतलब यह है कि मुराद एक हज़ार महीने से वे महीने हैं जिनमें शबे-क़द्र न आये, जैसे एक हज़ार रातों से मुराद वे रातें हैं जिनमें कोई रात उस इबादत की न हो, और जैसे जुमा की तरफ़ जाने वाले को एक साल की नेकियाँ यानी वह साल जिसमें जुमा न हो।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान मुबारक आ गया तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया लोगो! तुम पर रमज़ान का महीना आ गया, यह बरकत वाला महीना आ गया। इसके रोज़े ख़ुदा ने तुम पर फ़र्ज़ किये हैं, इसमें जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। शैतान क़ैद कर लिये जाते हैं। इसमें एक रात है जो एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है, उसकी भलाई से मेहरूम रहने वाला वास्तविक तौर पर बदकि़स्मत है। नसाई शरीफ़ में भी यह रिवायत है। चूँकि उस रात की इबादत एक हज़ार महीने की इबादत से अफ़ज़ल है इसलिये सहीहैन की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- जो शख़्स शबे-क़द्र का कि़याम ईमानदारी और नेकनीयती से करे उसके तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। फिर फ़रमाता है कि उस रात की बरकत की ज़्यादती की वजह से बहुत ज़्यादा फ़रिश्ते उसमें नाज़िल होते हैं, फ़रिश्ते तो हर बरकत के साथ नाज़िल होते रहते हैं जैसे क़ुरआन की तिलावत के वक़्त उतरते हैं, और ज़िक्र की मज्लिसों को घेर लेते हैं और इल्मे दीन के सीखने वालों के लिये राज़ी ख़ुशी अपने पर (पंख) बिछा दिया करते हैं और उनकी इज़्ज़त व सम्मान करते हैं। रूह से मुराद यहाँ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं। बाज़ कहते हैं कि रूह नाम के एक ख़ास कि़स्म के फ़रिश्ते हैं जैसा कि सूरः "अ़म्-म य-तसा-अलून" (यानी सूरः नबा) की तफ़सीर में तफ़सील से गुज़र चुका। वल्लाहु आलम।

फिर फ़रमाया वह सरासर सलामती वाली रात है, जिसमें शैतान न तो बुराई कर सकता है न तकलीफ़ पहुँचा सकता है। हज़रत क़तादा रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि उसमें तमाम कामों का फ़ैसला किया जाता है। उम्र और रिज़्क़ मुक़द्दर (तय) किया जाता है, जैसे एक और जगह है:

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ.

यानी इसी रात में हर हिक्मत वाले काम का फ़ैसला किया जाता है।

हज़रत शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि इस रात में फ़रिश्ते मस्जिद वालों पर सुबह तक सलाम भेजते रहते हैं। इमाम बैहक़ी रह. ने अपनी किताब "फ़ज़ाईले औक़ात" में हज़रत अ़ली रज़ि. का एक ग़रीब असर (क़ौल) फ़रिश्तों के नाज़िल होने, नमाज़ियों पर उनके गुज़रने और उन्हें बरकत हासिल होने में ज़िक्र किया है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. से एक अ़जीब व ग़रीब बहुत लम्बा क़ौल ज़िक्र किया है जिसमें फ़रिश्तों का सिद्रतुल-मुन्तहा से हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के साथ ज़मीन पर आना और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये दुआयें करना मज़कूर है।

अबू दाऊद तयालिसी रह. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- शबे-क़द्र सत्ताईसवीं है या

Maktab E Ashraf

उन्तीसवीं। उस रात में फ़रिश्ते ज़मीन पर कंकरियों की गिनती से भी ज़्यादा होते हैं। अब्दुर्रहमान बिन अबू यअ्ला रह. फ़रमाते हैं कि उस रात में हर मामले से सलामती है, यानी कोई नई बात पैदा नहीं होती। हज़रत क़तादा और हज़रत इब्ने ज़ैद रह. का क़ौल है कि यह रात सरासर सलामती वाली है। कोई बुराई सुबह होने तक नहीं होती। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि शबे-क़द्र दस बाक़ी की रातों में है, जो इनका क़ियाम सवाब तलब करने की नीयत से करे अल्लाह तआ़ला उसके अगले और पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। यह रात इकाई की है यानी इक्कीसवीं या तेईसवीं या पच्चीसवीं या सत्ताईसवीं या आख़िरी रात। आप फ़रमाते हैं कि यह रात बिल्कुल साफ़ और ऐसी रोशन होती है कि गोया चाँद चढ़ा हुआ है, उसमें सुकून और दिल का जमाव होता है, न सर्दी ज़्यादा होती है न गर्मी, सुबह तक सितारे नहीं झड़ते। एक निशानी उसकी यह भी है कि उसकी सुबह को सूरज तेज़ किरनों से नहीं निकलता, बल्कि वह चौदहवीं रात की तरह साफ़ निकलता है। उस दिन के साथ शैतान भी नहीं निकलता। यह सनद तो सही है लेकिन मतन में ग़राबत है, और बाज़ अलफ़ाज़ में नकारत भी है।

अबू दाऊद तयालिसी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि शबे-क़द्र साफ़, पुर-सुकून, सर्दी गर्मी से ख़ाली रात है। उसकी सुबह को सूरज धीमी रोशनी वाला सुर्ख़ रंग का निकलता है। हज़रत अबू आसिम नबील अपनी सनद से हज़रत जाबिर रज़ि. से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक मर्तबा फ़रमाया- मुझको शबे-क़द्र दिखलाई गयी लेकिन फिर भुला दी गयी। यह आख़िरी दस रातों में है, यह साफ़-शफ़्फ़ाफ़, सुकून व वक़ार वाली रात है, न ज़्यादा सर्दी होती है न ज़्यादा गर्मी। इस क़द्र रोशन रात होती है, यह मालूम होता है कि गोया चाँद चढ़ा हुआ है, सूरज के साथ शैतान नहीं निकलता यहाँ तक कि धूप चढ़ जाये।

फ़स्लः इस बारे में उलेमा का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि शबे-क़द्र पहली उम्मतों में भी थी या सिर्फ़ इसी उम्मत को ख़ुसूसियत के साथ अ़ता की गयी है। पस एक हदीस में तो यह आया है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने जब नज़रें डालीं और यह मालूम किया कि पहले लोगों की उम्रें बहुत ज़्यादा होती थीं तो आपको ख़्याल गुज़रा कि मेरी उम्मत की उम्रें उनके मुक़ाबले में कम हैं तो नेकियाँ भी कम रहेंगी। और फिर दर्जे और सवाब में भी कमी रहेगी तो अल्लाह तआ़ला ने आप सल्ल. को यह रात इनायत फ़रमाई, और इसका सवाब एक हज़ार महीने की इबादत से ज़्यादा देने का वायदा फ़रमाया। इस हदीस से तो यह मालूम होता है कि सिर्फ़ इसी उम्मत को यह रात दी गयी है, बल्कि शाफ़ई हज़रात में के एक इमाम "उद्दत" के लेखक ने तो जमहूर उलेमा का यही क़ौल नक़ल किया है। वल्लाहु आलम। और इमाम ख़त्ताबी ने तो इस पर इजमा (सब का एक राय होना) नक़ल किया है। लेकिन एक हदीस और है जिससे यह मालूम होता है कि यह रात जिस तरह इस उम्मत में है पहली उम्मतों में भी थी, चुनाँचे हज़रत मुरसद रह. फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबूज़र रज़ि. से पूछा कि आपने शबे-क़द्र के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. से क्या सवाल किया था? आपने फ़रमाया सुनो मैं हुज़ूर से अक्सर बातें मालूम करता रहता था। एक मर्तबा मैंने कहा या रसूलल्लाह! यह तो फ़रमाईये कि शबे-क़द्र रमज़ान में है या और महीनों में? आप सल्ल. ने फ़रमाया रमज़ान में। मैंने कहा अच्छा या रसूलल्लाह! यह अम्बिया के साथ ही है कि जब तक वे हैं यह भी है, जब अम्बिया वफ़ात पा जाते हैं तो यह भी उठ जाती है या यह क़ियामत तक बाक़ी रहेगी? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- नहीं! वह क़ियामत तक रहेगी। मैंने कहा अच्छा रमज़ान के किस हिस्से में है? आपने फ़रमाया इसे रमज़ान के शुरू के दस दिन में और आख़िर के दस दिन में ढूँढो। फिर मैं ख़ामोश हो गया, आप भी और बातों में मशग़ूल हो गये। मैंने फिर मौक़ा पाकर सवाल किया कि हुज़ूर! इन दोनों अ़शरों (दशकों) में से किस अ़शरे (दशक) में

इस रात को तलाश करूँ? आपने फ़रमाया आख़िरी अ़शरे (दस दिनों) में। बस अब कुछ न पूछना। मैं फिर चुपका हो गया, लेकिन फिर मौक़ा पाकर मैंने सवाल किया कि हुज़ूर! आपको क़सम है मेरा भी कुछ हक़ आप पर है, फ़रमा दीजिए कि वह कौनसी रात है? आप सख़्त ग़ुस्सा हुए। मैंने तो कभी आपको अपने ऊपर इतना ग़ुस्सा होते हुए देखा ही नहीं, और फ़रमाया आख़िरी हफ़्ते में तलाश करो। अब कुछ न पूछना।

यह रिवायत नसाई में भी है। इससे साबित होता है कि यह रात पहली उम्मतों में भी थी, और इस हदीस से यह भी साबित होता है कि यह रात नबी सल्ल. के बाद भी क़ियामत तक हर साल आती रहेगी। सिर्फ़ शिया लोगों का क़ौल है कि यह रात बिल्कुल उठ गयी। यह क़ौल ग़लत है, उनको ग़लत-फ़हमी उस हदीस से होती है जिसमें है कि वह उठा ली गयी और मुम्किन है कि तुम्हारे लिये इसी में बेहतरी हो। यह हदीस पूरी अभी आयेगी। हालाँकि मतलब हुज़ूर के इस इरशाद का यह है कि उस रात की नेमतें और उसका तक़र्रुर (निर्धारित तौर पर इल्म) उठ गया, न यह कि सिरे से शबे-क़द्र ही उठ गयी।

ऊपर दर्ज हदीस से यह भी मालूम हुआ कि यह रात रमज़ान शरीफ़ में आती है, किसी और महीने में नहीं। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. और कूफ़ा के उलेमा का क़ौल है कि सारे साल में एक रात है और हर महीने में इसका हो जाना मुम्किन है। यह हदीस इसके ख़िलाफ़ है, सुनन अबू दाऊद में बाब है कि उस शख़्स की दलील जो कहता है कि शबे-क़द्र सारे रमज़ान में है फिर हदीस लाये हैं कि हुज़ूर से शबे-क़द्र के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि सारे रमज़ान में है। इस सनद के तमाम रावी मोतबर हैं, यह मौक़ूफ़न् भी मरवी है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. से एक रिवायत में है कि रमज़ान मुबारक के सारे महीने में इस रात का होना मुम्किन है। इमाम ग़ज़ाली ने इसी को नक़ल किया है लेकिन इमाम राफ़अ़ी इसे बिल्कुल ग़रीब बतलाते हैं।

फ़स्लः इमाम अबू रज़ीन तो फ़रमाते हैं कि रमज़ान की पहली रात ही शबे-क़द्र है। इमाम शाफ़ई बिन मुहम्मद इदरीस रह. का फ़रमान है कि यह सत्रहवीं रात है। अबू दाऊद में इस मज़मून की एक हदीस मरफ़ूअ़ मौजूद है और हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और हज़रत उस्मान बिन अबुल-आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मौक़ूफ़न् भी रिवायत है। हज़रत हसन बसरी रह. का मज़हब भी यही नक़ल किया गया है। इसकी एक दलील यह भी बयान की जाती है कि रमज़ान मुबारक की यही सत्रहवीं रात जुमा की रात थी और यही रात बदर की थी और सत्रहवीं तारीख़ को जंगे बदर वाक़े हुई थी, जिसको क़ुरआन ने यौमे-फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाला दिन) कहा है। हज़रत अ़ली और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से मन्क़ूल है कि उन्नीसवीं रात शबे-क़द्र है, और यह भी कहा गया है कि इक्कीसवीं रात है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने रमज़ान शरीफ़ के पहले दस दिन का एतिकाफ़ किया, हम भी आपके साथ ही एतिकाफ़ में बैठे। फिर आपके पास हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाया कि जिसे आप ढूँढते हैं वह तो अभी आगे है, यानी शबे-क़द्र। पस रमज़ान की बीसवीं तारीख़ की सुबह को नबी सल्ल. ने खड़े होकर ख़ुतबा दिया और फ़रमाया कि मेरे साथ एतिकाफ़ करने वालों को चाहिये कि वे फिर एतिकाफ़ में बैठ जायें। मैंने शबे-क़द्र देख ली लेकिन मैं भूल गया, शबे-क़द्र आख़िरी अ़शरे की ताक़ (बेजोड़ यानी 21, 23, 25, 27, 29वीं) रातों में है। मैंने देखा कि गोया मैं कीचड़ में सज्दा कर रहा हूँ। हदीस को बयान करने वाले फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी की छत सिर्फ़ खजूर के पत्तों की थी, आसमान पर उस वक़्त बादल का छोटा सा टुकड़ा भी न था, फिर बादल उठा, बारिश हुई और नबी सल्ल. का ख़्वाब सच्चा हुआ, मैंने ख़ुद देखा कि नमाज़ के बाद आपकी पेशानी पर गीली मिट्टी लगी हुई थी। इसी

रिवायत की एक सनद में है कि ये इक्कीसवीं रात का वाक़िआ है। यह हदीस सही बुख़ारी और सही मुस्लिम दोनों में है। इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि तमाम रिवायतों में सब से ज़्यादा सही यही हदीस है। यह भी कहा गया है कि शबे-क़द्र रमज़ान शरीफ़ की तेईसवीं रात है। इसकी दलील हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस की सही मुस्लिम वाली ऐसी ही एक रिवायत है। वल्लाहु आलम।

एक क़ौल यह भी है कि यह चौबीसवीं रात.है। अबू दाऊद तयालिसी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि शबे-क़द्र चौबीसवीं रात है। इसकी सनद भी सही है। मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत है, लेकिन इसकी सनद में इब्ने लहीआ़ हैं जो ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं। बुख़ारी में हज़रत बिलाल रज़ि. से जो हुज़ूरे पाक सल्ल. के मुअज़्ज़िन हैं, मन्क़ूल है कि यह पहली सातवीं है आख़िरी दस में से। यह रिवायत मौक़ूफ़ होने की हैसियत से ही सही है। वल्लाहु आलम।

हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत जाबिर, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, हज़रत क़तादा, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन वहब रहमतुल्लाहि अ़लैहिम भी फ़रमाते हैं कि चौबीसवीं रात शबे-क़द्र है। सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में हज़रत वासिला बिन अस्क़ा की रिवायत की हुई मरफ़ूअ़ हदीस बयान हो चुकी है कि क़ुरआने करीम रमज़ान शरीफ़ की चौबीसवीं रात को उतरा। बाज़ कहते हैं कि पच्चीसवीं रात शबे-क़द्र है। उनकी दलील बुख़ारी शरीफ़ की यह हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उसे रमज़ान के आख़िरी अ़शरे (दस रातों) में ढूँढो, नौ बाक़ी रहें तब, सात बाक़ी रहें तब, पाँच बाक़ी रहें तब। अक्सर मुहद्दिसीन ने इसका यही मतलब बयान किया है कि इससे मुराद ताक़ (बेजोड़) रातें हैं। यही ज़्यादा ज़ाहिर और ज़्यादा मशहूर है। अगरचे कुछ दूसरे हज़रात ने इसे जुफ़्त रातों (जोड़ वाली रातों यानी 22, 24, 26, 28, 30) पर भी महमूल किया है, जैसा कि सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इसे जुफ़्त पर महमूल किया है। वल्लाहु आलम।

यह भी कहा गया है कि यह सत्ताईसवीं रात है, इसकी दलील सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है जिसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- यह सत्ताईसवीं रात है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ज़ैद रह. ने हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. से कहा कि आपके भाई हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स साल भर रातों को क़ियाम करेगा (यानी नमाज़ पढ़ेगा और रातों को इबादत में जागेगा) वह शबे-क़द्र को पायेगा। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला उन पर रहम करे, वह जानते हैं कि यह रात रमज़ान में ही है, यह रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है। फिर इस बात पर हज़रत उबई रज़ि. ने क़सम खाई। मैंने पूछा आपको यह कैसे मालूम हुआ? जवाब दिया कि उन निशानियों को देखने से जो हम को बताई गयी हैं कि उस दिन सूरज किरनों के बग़ैर निकलता है। एक और रिवायत में है कि हज़रत उबई रज़ि. ने कहा उस ख़ुदा की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, यह रात रमज़ान में ही है। आपने इस पर इन्शा-अल्लाह भी नहीं फ़रमाया, पुख़्ता क़सम खाई और फिर फ़रमाया मुझे ख़ूब मालूम है कि वह कौनसी रात है जिसमें क़ियाम करने का रसूले ख़ुदा सल्ल. का हुक्म है। यह सत्ताईसवीं रात है। उसकी निशानी यह है कि उसकी सुबह को सूरज सफ़ेद रंग का निकलता है और तेज़ी ज़्यादा नहीं होती। हज़रत मुआ़विया, हज़रत इब्ने उमर और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह से भी मन्क़ूल है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया- यह रात सत्ताईसवीं रात है। पहले बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त ने भी यही कहा है। इमाम अहमद बिन हंबल रह. का पसन्दीदा मस्लक भी यही है और इमाम अबू हनीफ़ा रह. से एक रिवायत इसी क़ौल की है। बाज़ बुज़ुर्गों ने क़ुरआने करीम के अलफ़ाज़ से भी इसके सुबूत का हवाला दिया है। इस तरह कि "हि-य" इस सूरत में

सत्ताईसवाँ कलिमा है और इसके मायने हैं "वह"। वल्लाहु आलम।

तबरानी में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा को जमा किया और उनसे शबे-क़द्र के बारे में सवाल किया तो सब का इजमा (सर्वसम्मति) इस बात पर हुई कि यह रमज़ान के आख़िरी अ़शरे (दशक) में है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उस वक़्त फ़रमाया कि मैं तो यह भी जानता हूँ कि वह कौनसी रात है। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया फिर कहो कि वह कौनसी रात है? फ़रमाया उस आख़िरी अ़शरे में सात गुज़रने पर या सात बाक़ी रहने पर। हज़रत उमर रज़ि. ने पूछा यह कैसे मालूम हुआ? जवाब दिया कि देखो अल्लाह तआ़ला ने आसमान भी सात पैदा किये और ज़मीनें भी सात बनाईं, महीना भी हफ़्ते (यानी सात) पर है, इनसान की पैदाईश भी सात पर है, खाना भी सात है, सज्दा भी सात है, तवाफ़े बैतुल्लाह की तायदाद भी सात की है, शैतान को मारने के लिये कंकरियाँ भी सात हैं, और इसी तरह की सात की गिनती की बहुत सी चीज़ें और भी गिनवा दीं। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने फ़रमाया तुम्हारी याद वहाँ पहुँची जहाँ तक हमारे ख़्यालात की रसाई न हो सकी। यह जो फ़रमाया कि सात ही खाना है, इससे क़ुरआने करीम की ये आयतें मुराद हैं:

فَاَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا وَّعِنَبًا...... الخ.

जिनमें सात चीज़ों का ज़िक्र है जो खाई जाती हैं। इसकी सनद भी उम्दा और मज़बूत है, लेकिन मतन में बहुत ग़राबत है। वल्लाहु आलम।

यह क़ौल भी है कि उन्तीसवीं रात है। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. के सवाल के जवाब में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि उसे आख़िरी अ़शरे में ढूँढो ताक़ रातों में- इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताईस और उन्तीस या आख़िरी रात। मुस्नद में है कि शबे-क़द्र सत्ताईसवीं रात है या उन्तीसवीं। उस रात फ़रिश्ते ज़मीन पर कंकरों की गिनती से भी ज़्यादा होते हैं। इसकी सनद भी अच्छी है। एक क़ौल यह भी है कि आख़िरी रात शबे-क़द्र है, क्योंकि अभी जो हदीस गुज़री उसमें है और तिर्मिज़ी और नसाई में भी है कि जब नौ बाक़ी रह जायें या सात, या पाँच या तीन या आख़िरी रात, यानी इन रातों में शबे-क़द्र तलाश करो। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। मुस्नद में है कि यह आख़िरी रात है।

फ़स्लः हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि इन मुख़्तलिफ़ (अनेक और विभिन्न) हदीसों में ततबीक़ (जोड़ और ताल-मेल) यूँ हो सकती है कि यह सवालों का जवाब है। किसी ने कहा हज़रत हम उसे फ़ुलाँ रात में तलाश करें तो आप सल्ल. ने फ़रमा दिया हाँ। हक़ीक़त यह है कि शबे-क़द्र मुक़र्रर (अपनी जगह तय) है और उसमें तब्दीली नहीं होती। इमाम तिर्मिज़ी ने इमाम शाफ़ई रह. का इसी मायने का क़ौल नक़ल किया है। अबू क़िलाबा रह. फ़रमाते हैं कि आख़िरी अ़शरे की रातों में यह अदलती-बदलती रहती है। इमाम मालिक, इमाम सुफ़ियान सौरी, इमाम अहमद बिन हंबल, इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह, इमाम अबू सौर, इमाम मुज़नी और इमाम अबू बक्र ख़ुज़ैमा रह. वग़ैरह ने भी यही फ़रमाया है। इमाम शाफ़ई रह. से भी क़ाज़ी ने यही नक़ल किया है और यही ठीक भी है। वल्लाहु आलम।

इस क़ौल की थोड़ी बहुत ताईद सही की इस हदीस से भी होती है कि रसूलुल्लाह सल्ल. के चन्द सहाबा को ख़्वाब में शबे-क़द्र रमज़ान की सात पिछली रातों में दिखाई गयी। आपने फ़रमाया मैं देखता हूँ कि तुम्हारे ख़्वाब इस बारे में मुवाफ़िक़ हैं। हर तलब करने वाले को चाहिये कि शबे-क़द्र को इन सात आख़िरी रातों में तलाश करे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से भी बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में शबे-क़द्र की जुस्तजू करो। इमाम शाफ़ई रह. के इस फ़रमान पर कि शबे-क़द्र हर रमज़ान में एक निर्धारित रात है और उसमें तब्दीली नहीं होती, यह हदीस दलील बन सकती है जो सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. की रिवायत से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हमें शबे-क़द्र की ख़बर देने के लिये कि फ़ुलाँ रात शबे-क़द्र है, निकले, यहाँ दो मुसलमान आपस में झगड़ रहे थे तो आपने फ़रमाया- मैं तुम्हें शबे-क़द्र की ख़बर देने के लिये आया था लेकिन फ़ुलाँ-फ़ुलाँ की लड़ाई की वजह से वह उठा ली गयी और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेहतरी हो। अब उसे नवीं, सातवीं और पाँचवीं में ढूँढो। दलालत की वजह यह है कि अगर वह एक जगह मुतैयन न होती तो हमेशा के लिये उसको मुतैयन नहीं किया जा सकता था और हर साल की शबे-क़द्र का इल्म हासिल न होता। अगर शबे-क़द्र में फेर-बदल होता रहता तो सिर्फ़ उस साल के लिये तो मालूम हो जाता कि फ़ुलाँ रात है लेकिन और सालों के लिये मुतैयन न होता। हाँ यह एक जवाब इसका हो सकता है कि आप सल्ल. सिर्फ़ उसी साल की इस मुबारक रात की ख़बर देने के लिये तशरीफ़ लाये थे।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि लड़ाई झगड़ा ख़ैर व बरकत को और नफ़ा देने वाले इल्म को तबाह कर देता है। एक और सही हदीस में है कि बन्दा अपने गुनाह के सबब ख़ुदा की रोज़ी से मेहरूम कर दिया जाता है। यह याद रहे कि इस हदीस में जो आप सल्ल. ने फ़रमाया कि वह उठा ली गयी, इससे मुराद उसके सही वक़्त का मुतैयन होने के इल्म का उठा लिया जाना है, न यह कि बिल्कुल शबे-क़द्र ही दुनिया से उठा ली गयी, जैसा कि जाहिल शियाओं का क़ौल है। इस पर बड़ी दलील यह है कि इस लफ़्ज़ के बाद ही यह है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- उसे नवीं, सातवीं और पाँचवीं में ढूँढो। आप सल्ल. का यह फ़रमान कि मुम्किन है इसी में तुम्हारी बेहतरी हो, यानी उसके निर्धारित वक़्त का इल्म न होने में, इसका मतलब यह है कि जब यह मुब्हम (ग़ैर-वाज़ेह) है तो उसका ढूँढने वाला जिन-जिन रातों में उसका होना मुम्किन देखेगा उन तमाम रातों में कोशिश व ख़ुलूस के साथ इबादत में लगा रहेगा (इसी लिये इमाम अबू हनीफ़ा रह. का क़ौल है कि शबे-क़द्र पूरे साल में घूमती रहती है, ताकि बन्दे उसकी तलाश में ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करें और अपने नामा-ए-आमाल को नेकियों से भरें), इसके विपरीत अगर मालूम हो जाये कि फ़ुलाँ रात ही शबे-क़द्र है तो वह सिर्फ़ उसी एक रात की इबादत करेगा, क्योंकि हिम्मतें पस्त हैं, इसलिये अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा यही हुआ कि इस रात के मुतैयन वक़्त की ख़बर न दी जाये ताकि इस रात के पा लेने के शौक़ में इस मुबारक महीने में जी लगाकर और दिल खोलकर बन्दे अपने माबूदे बरहक़ की बन्दगी करें और आख़िरी अ़शरे में तो पूरी कोशिश के साथ इबादतों में मशग़ूल रहें। इसी लिये ख़ुद पैग़म्बरे ख़ुदा हज़रत मुहम्मद सल्ल. भी अपने इन्तिक़ाल तक रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे का एतिकाफ़ करते रहे और आपके बाद आपकी पाक बीवियाँ रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न ने एतिकाफ़ किया। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की रिवायत में है कि आप सल्ल. रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे (दस दिनों) का एतिकाफ़ किया करते थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि आख़िरी दस रातें रमज़ान शरीफ़ की रह जातीं तो अल्लाह के रसूल सल्ल. सारी रात जागते और अपने घर वालों को भी जगाते और कमर कस लेते। (सहीहैन) मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर इन दिनों में जिस मेहनत के साथ इबादत करते उतनी मेहनत से इबादत आपकी और वक़्त नहीं होती थी। यह मायने भी किये गये हैं कि आप बीवियों से न मिलते, और यह भी हो सकता है कि दोनों ही बातें मुराद हों, यानी बीवियों से मिलना भी छोड़ देते थे और इबादत की मशग़ूली में भी कमर कस लिया करते। चुनाँचे मुस्नद अहमद की हदीस में ये लफ़्ज़ हैं कि

Maktab E Ashraf

जब रमज़ान का आख़िरी अ़शरा बाक़ी रह जाता तो आप सल्ल. तहबन्द मज़बूत बाँध लेते और औरतों से अलग रहते। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि रमज़ान की आख़िरी दसों रातों में शबे-क़द्र की बराबर जुस्तजू करे। किसी एक रात को दूसरी रात पर तरजीह न दे। (शरह राफ़ई)

यह भी याद रहे कि यूँ तो हर वक़्त दुआ़ की कसरत (अधिकता) मुस्तहब है लेकिन रमज़ान में और ज़्यादती करे, ख़ास कर आख़िरी अ़शरे में और ख़ुसूसी तौर पर ताक़ (बेजोड़) रातों में। और इस दुआ़ को बहुत ज़्यादा पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ.

अल्लाहुम्-म इन्न-क अफ़ुव्वुन् तुहिब्बुल् अफ़्-व फ़अ़फ़ु अ़न्नी।

तर्जुमाः ख़ुदाया! तू दरगुज़र (माफ़) करने वाला है और दरगुज़र को पसन्द फ़रमाने वाला है। मुझसे भी दरगुज़र फ़रमा।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि अगर मुझे शबे-क़द्र मिल जाये तो मैं क्या दुआ़ पढ़ूँ? आप सल्ल. ने यही दुआ़ बतलाई। यह हदीस तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही कहते हैं। मुस्तदूरक हाकिम में भी है और इमाम हाकिम इसे सहीहैन की शर्त पर सही बतलाते हैं। एक अ़जीब व ग़रीब क़ौल जिसका ताल्लुक़ शबे-क़द्र से है, इमाम अबू मुहम्मद बिन अबू हातिम रह. ने अपनी तफ़सीर में इस सूरत की तफ़सीर में हज़रत कअ़ब रज़ि. से यह नक़ल किया है कि सिद्रतुल-मुन्तहा जो सातवें आसमान की हद पर जन्नत से क़रीब है, जो दुनिया और आख़िरत के फ़ासले पर है, उसकी बुलन्दी जन्नत में है, उसकी शाख़ें और डालियाँ कुर्सी के नीचे हैं, उसमें इस क़द्र फ़रिश्ते हैं जिनकी गिनती अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई नहीं जानता। उसकी हर-हर शाख़ (टहनी) पर बेशुमार फ़रिश्ते हैं, एक बाल बराबर जगह भी ऐसी नहीं जो फ़रिश्तों से ख़ाली हो। उस दरख़्त के दरमियान हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम का मक़ाम (ठिकाना) है, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को आवाज़ दी जाती है कि ऐ जिब्राईल! शबे-क़द्र में इस दरख़्त के तमाम फ़रिश्तों को लेकर ज़मीन पर जाओ, ये तमाम के तमाम फ़रिश्ते मेहरबानी व रहमत वाले हैं, जिनके दिलों में हर-हर मोमिन के लिये रहम के जज़्बात जोश मारते हैं।

सूरज ग़ुरूब होते ही ये तमाम के तमाम फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के साथ शबे-क़द्र में उतरते हैं, पूरी ज़मीन पर फैल जाते हैं। हर-हर जगह सज्दे में, क़ियाम में मशग़ूल हो जाते हैं और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआ़यें माँगते रहते हैं, हाँ गिरजा घर, मन्दिर, बुत ख़ाने और आतिश-कदे में, ग़र्ज़ कि अल्लाह के अ़लावा औरों की जहाँ पूजा होती है वहाँ ये फ़रिश्ते नहीं जाते, और उन जगहों में भी नहीं जाते जहाँ तुम गन्दी चीज़ें डालते हो, और उस घर में भी जहाँ नशे वाला शख़्स हो या नशे वाली चीज़ हो, या जिस घर में कोई बुत गड़ा हुआ हो या जिस घर में बाजे गाजे घन्टियाँ हों, या मुजस्समा हो, या कूड़ा करकट डालने की जगह हो वहाँ तो यह रहमत के फ़रिश्ते जाते नहीं, बाक़ी चप्पे-चप्पे पर घूम जाते हैं और सारी रात मोमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआ़यें माँगने में गुज़ारते हैं। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तमाम मोमिनों से मुसाफ़ा करते हैं, उसकी निशानी यह है कि रोंगटे जिस्म पर खड़े हो जायें, दिल नर्म पड़ जाये, आँखें बह निकलें, उस वक़्त आदमी को समझ लेना चाहिये कि इस वक़्त मेरा हाथ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के हाथ में है। हज़रत कअ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स उस रात में तीन मर्तबा "ला

इला-ह इल्लल्लाहु'' पढ़े उसकी पहली मर्तबा के पढ़ने पर गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है, दूसरी मर्तबा के कहने पर आग से निजात मिल जाती है, तीसरी मर्तबा के कहने पर जन्नत में दाख़िल हो जाता है। हदीस के रावी ने पूछा कि ऐ अबू इस्हाक़! जो इस कलिमे को सच्चाई से कहे उसके लिये? फ़रमाया यह तो निकलेगा ही उसके मुँह से जो सच्चाई से इसका कहने वाला हो, उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि शबे-क़द्र काफ़िर व मुनाफ़िक़ पर तो इतनी भारी पड़ती है कि गोया उसकी पीठ पर पहाड़ आ पड़ा हो। ग़र्ज़ कि फ़जर होने तक फ़रिश्ते इसी तरह रहते हैं, फिर सबसे पहले हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम चढ़ते हैं और बहुत ऊँचे चढ़कर अपने परों को फैला देते हैं, ख़ास तौर पर उन दो सब्ज़ परों को जिन्हें उस रात के सिवा वह कभी नहीं फैलाते। यही वजह है कि सूरज की तेज़ी फीकी पड़ जाती है और किरनें जाती रहती हैं। फिर एक-एक फ़रिश्ते को पुकारते हैं और सब के सब ऊपर चढ़ते हैं। पस फ़रिश्तों का नूर और जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के परों का नूर मिलकर सूरज को फीका और मध्यम कर देता है। उस दिन सूरज हैरान रह जाता है। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम और ये सारे के सारे बेशुमार फ़रिश्ते उस दिन आसमान व ज़मीन के बीच मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये रहमत की दुआ़यें माँगने में और उनके गुनाहों की बख़्शिश तलब करने में गुज़ार देते हैं। नेक नीयती के साथ रोज़ा रखने वालों के लिये और उन लोगों के लिये भी जिनका यह अ़हद हो कि अगले साल भी अगर ख़ुदा ने ज़िन्दगी रखी तो रमज़ान के रोज़े उम्दगी के साथ पूरे करेंगे, यही दुआ़यें माँगते रहते हैं। शाम को दुनिया वाले आसमान पर चढ़ जाते हैं, वहाँ के तमाम फ़रिश्ते हल्क़े बाँध-बाँधकर इनके पास जमा हो जाते हैं और एक-एक मर्द और एक-एक औ़रत के बारे में इनसे सवाल करते हैं। ये जवाब देते हैं यहाँ तक कि वे पूछते हैं कि फ़ुलाँ शख़्स को इस साल तुमने किस हालत में पाया? ये कहते हैं कि पिछले साल तो हमने उसे इबादतों में पाया था लेकिन इस साल तो वह बिद्अ़तों में मुब्तला था और फ़ुलाँ शख़्स पिछले साल बिद्अ़तों में मुब्तला था लेकिन इस साल तो हमने उसे इबादतों में पाया। पस ये फ़रिश्ते पहले शख़्स के लिये बख़्शिश की दुआ़यें माँगनी बन्द कर देते हैं और उस दूसरे शख़्स के लिये दुआ़यें माँगनी शुरू कर देते हैं।

ये फ़रिश्ते उन्हें सुनाते हैं कि हमने फ़ुलाँ-फ़ुलाँ को अल्लाह के ज़िक्र में पाया और फ़ुलाँ को रुकूअ़ में और फ़ुलाँ को सज्दे में, और फ़ुलाँ को अल्लाह की किताब की तिलावत में। ग़र्ज़ कि एक रात दिन यहाँ गुज़ार कर दूसरे आसमान पर जाते हैं, यहाँ भी यही होता है। यहाँ तक कि सिद्रतुल-मुन्तहा में अपनी अपनी जगह पहुँच जाते हैं। उस वक़्त सिद्रतुल-मुन्तहा उनसे पूछता है कि मुझमें बसने वालो! मेरा भी तुम पर हक़ है, मैं भी उनसे मुहब्बत रखता हूँ जो ख़ुदा से मुहब्बत रखें। ज़रा मुझे भी तो लोगों के हालात की ख़बर दो, उनके नाम बताओ।

हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. फ़रमाते हैं कि अब फ़रिश्ते उसके सामने गिनती करके और एक-एक मर्द व औ़रत का मय उसके बाप के नाम बतलाते हैं। फिर जन्नत सिद्रतुल-मुन्तहा की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछती है कि तुझ में रहने वाले फ़रिश्तों ने जो ख़बरें तुझे दी हैं मुझसे भी तो बयान कर। चुनाँचे सिद्रतुल-मुन्तहा उससे ज़िक्र करता है। यह सुनकर वह कहती है कि ख़ुदा की रहमत हो फ़ुलाँ मर्द पर और फ़ुलाँ औ़रत पर। ख़ुदाया उन्हें जल्दी मुझसे मिला।

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम सब से पहले अपनी जगह पहुँच जाते हैं। उन्हें इल्हाम होता है और यह अ़र्ज़ करते हैं ऐ परवर्दिगार! मैंने तेरे फ़ुलाँ-फ़ुलाँ बन्दों को सज्दे में पाया तू उन्हें बख़्श दे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैंने उन्हें बख़्शा। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम इसे अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों को सुनाते हैं,

फिर कहते हैं कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ मर्द व औरत पर अल्लाह तआला की रहमत और मग़फ़िरत हुई। फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ख़बर देते हैं कि बारी तआला! फ़ुलाँ शख़्स को पिछले साल तो सुन्नत पर अमल करने वाला और आबिद छोड़ा था लेकिन इस साल तो बिद्अतों में पड़ गया है, और तेरे अहकाम से मुँह मोड़ लिया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ जिब्राईल! अगर यह मरने से तीन घड़ी पहले भी तौबा कर लेगा तो मैं इसे बख़्श दूँगा। उस वक़्त जिब्राईल अलैहिस्सलाम बेसाख़्ता कह उठते हैं कि ख़ुदाया तेरे ही लिये सब तारीफ़ें लायक़ हैं। इलाही तू अपनी मख़्लूक़ पर सब से ज़्यादा मेहरबान है। बन्दों पर तेरी मेहरबानी ख़ुद उनकी अपनी मेहरबानी से भी बढ़ी हुई है। उस वक़्त अर्श, उसके आस-पास की चीज़ें, पर्दे और तमाम आसमान हरकत में आ जाते हैं और कह उठते हैं:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الرَّحِيْمِ.

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो बेहद रहम करने वाला है। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो बेहद रहम करने वाला है।

हज़रत कअ़ब रज़ि. यह भी फ़रमाते हैं कि जो शख़्स रमज़ान शरीफ़ के रोज़े पूरे करे और उसकी यह नीयत भी हो कि रमज़ान के बाद भी मैं गुनाहों से बचता रहूँगा, वह बग़ैर सवाल जवाब के और बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में दाख़िल होगा।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः क़द्र की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः बय्यिनह्

सूरः बय्यिनह् मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

जब यह सूरत उतरी तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूरे पाक सल्ल. से फ़रमाया- ख़ुदा तआला का आपको हुक्म हुआ है कि यह सूरत हज़रत उबई रज़ियल्लाहु अन्हु को सुनायें। हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत उबई से इसका ज़िक्र किया तो हज़रत उबई रज़ि. ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! क्या वहाँ मेरा ज़िक्र किया गया? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ-हाँ। हज़रत उबई रज़ि. रो पड़े। (मुस्नद अहमद) मुस्नद ही की एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उबई रज़ि. ने पूछा था या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लिया? यह हदीस बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। मुस्नद की एक और रिवायत में है कि जिस वक़्त हज़रत उबई रज़ि. ने यह वाक़िआ़ बयान किया उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अबज़ा रह. ने कहा कि फिर तो ऐ अबू मुन्ज़िर तुम बहुत ही ख़ुश हुए होगे? कहा हाँ ख़ुश क्यों न होता, ख़ुदा ख़ुद फ़रमाता है:

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ.

यानी कह दे कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व रहमत के साथ लोग ख़ुश हुआ करें, यह उनके जमा

Maktab E Ashraf

किये हुए से बहुत ही बेहतर है। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने यह सूरत हज़रत उबई रज़ि. के सामने पढ़ी। उसमें यह रिवायत भी थी:

لَوْاَنَّ ابْنَ اٰدَمَ سَاَلَ وَادِيًا مِّنْ مَّالٍ فَاُعْطِيَهٗ لَسَاَلَ ثَانِيًا وَّلَوْسَاَلَ ثَانِيًا فَاُعْطِيَهٗ لَسَاَلَ ثَالِثًا وَلَا يَمْلَاُ جَوْفَ ابْنِ اٰدَمَ اِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ. وَاِنَّ ذَالِكَ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْحَنِيْفِيَّةُ غَيْرُ الْمُشْرِكَةِ وَلَا الْيَهُوْدِيَّةِ وَلَا النَّصْرَانِيَّةِ وَمَنْ يَّفْعَلْ خَيْرًا فَلَنْ يُّكْفَرَهٗ.

यानी अगर इनसान मुझसे एक जंगल भरकर सोना माँगे और मैं उसे दे दूँ तो फिर दूसरा जंगल सोने का माँगेगा और दूसरा भी दे दूँ तो यक़ीनन तीसरे की तलब करेगा। इनसान के पेट को सिवाय मिट्टी के कोई चीज़ नहीं भर सकती। जो तौबा करे अल्लाह तआ़ला भी उसकी तौबा क़बूल फ़रमाता है। अल्लाह के नज़दीक दीनदार वह है जो एक तरफ़ा होकर सिर्फ़ उसकी इबादत करे, न वह मुश्रिक हो, न यहूदी हो, न ईसाई हो। जो शख़्स भी कोई नेक काम करेगा अल्लाह के यहाँ उसकी नाक़द्री न की जायेगी। (मुस्नद अहमद) तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है इसे इमाम तिर्मिज़ी ने हसन सही कहा है, तबरानी में है कि जब हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे सामने क़ुरआन पढ़ूँ तो हज़रत उबई ने अ़र्ज़ किया कि हज़रत! मैं अल्लाह पर ईमान लाया, आपके हाथ पर इस्लाम लाया, आप ही से इल्मे दीन हासिल किया। आप सल्ल. ने फिर यही फ़रमाया, इस पर हज़रत उबई रज़ि. ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मेरा वहाँ ज़िक्र किया गया? आपने फ़रमाया हाँ! वह भी तेरे नाम और नसब के साथ "मला-ए-आला" में तेरा ज़िक्र हुआ। हज़रत उबई रज़ि. ने अ़र्ज़ किया अच्छा फिर पढ़िये। यह रिवायत इस सनद से ग़रीब है और साबित वह है जो पहले बयान हुआ।

फ़ायदा: यह याद रहे कि हुज़ूर सल्ल. का इस सूरत को हज़रत उबई रज़ि. के सामने पढ़ना यह उनकी दीने इस्लाम पर साबित-क़दमी (जमाव) और उनकी ईमानी मज़बूती की वजह से था। मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, नसाई और मुस्लिम में है कि एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की क़िराअत सुनकर हज़रत उबई रज़ि. बिगड़ बैठे थे, क्योंकि उन्होंने जिस तरह इस सूरत को हुज़ूरे पाक सल्ल. से सीखा था हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने उस तरह नहीं पढ़ा था, तो गुस्से में आकर उन्हें लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल. ने इन दोनों से क़ुरआन सुना। उन्होंने अपने तरीक़े पर और इन्होंने अपने तौर पर पढ़ा, आपने फ़रमाया दोनों ने सही पढ़ा। हज़रत उबई रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं तो इस क़द्र शक व शुब्हे में पड़ गया कि जाहिलीयत के ज़माने का शक सामने आ गया। आप सल्ल. ने यह हालत देखकर मेरे सीने पर अपना हाथ रख दिया जिससे मैं पसीने-पसीने हो गया और इस क़द्र मुझ पर डर ख़ौफ़ तारी हुआ कि गोया मैं अल्लाह तआ़ला को अपने सामने देख रहा हूँ। फिर आपने फ़रमाया- सुन जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मेरे पास आये और फ़रमाया- ख़ुदा का हुक्म है कि क़ुरआन एक ही क़िराअत पर अपनी उम्मत को पढ़ाओ, मैंने कहा मैं अल्लाह तआ़ला से माफ़ी व दरगुज़र और बख़्शिश प मग़फ़िरत चाहता हूँ। फिर मुझे दो तरह की क़िराअतों की इजाज़त हुई। लेकिन मैं इसमें अनेक क़िराअतों की इजाज़त तलब करता रहा यहाँ तक कि सात क़िराअतों की इजाज़त मिली। यह हदीस बहुत सी सनदों और मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ से तफ़सीर के शुरू में पूरी तरह बयान हो चुकी है, अब जबकि यह मुबारक सूरत नाज़िल हुई और इसी में ये आयतें उतरीं:

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً. فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ.

Maktaba E Ashraf

(यानी इसी सूरत की आयत 2 और 3) इसलिये हुज़ूर सल्ल. को हुक्म हुआ कि पहुँचा देने के तौर पर और साबित-क़दमी अ़ता फ़रमाने के और आगाही करने के लिये पढ़कर हज़रत उबई को सुना दें। किसी को यह ख़्याल न रहे कि बतौर सीखने के और याद रहने के आप सल्ल. ने यह सूरत उनके पास तिलावत की थी। वल्लाहु आलम।

पस जिस तरह आप सल्ल. ने हज़रत उबई रज़ि. के उस दिन के शक व शुब्हे को दूर करने के लिये जो उन्हें क़िराअतों के अनेक होने को हुज़ूर सल्ल. के सही क़रार देने पर पैदा हुआ था, उनके सामने यह सूरत तिलावत करके सुनाई, ठीक इसी तरह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. का वाक़िआ़ है कि उन्होंने भी हुदैबिया वाले साल सुलह के मामले पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए बहुत से सवालात हुज़ूर से किये थे, जिनमें एक यह भी था कि क्या आपने हमें यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह शरीफ़ में जायेंगे और तवाफ़ करेंगे? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ यह तो ज़रूर कहा था, लेकिन यह नहीं कहा था कि इस साल यह होगा। यक़ीनन वह वक़्त आ रहा है कि तू वहाँ पहुँचेगा और तवाफ़ करेगा। अब हुदैबिया से लौटते हुए सूरः फ़तह नाज़िल हुई तो हुज़ूरे पाक सल्ल. ने हज़रत उमर रज़ि. को बुलवाया और यह सूरत पढ़कर सुनाई जिसमें यह आयत भी है:

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ....... الخ.

यानी अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल का ख़्वाब सच्चा कर दिखाया। यक़ीनन तुम्हारा दाख़िला मस्जिदे हराम में अमन व अमान के साथ होगा।

जैसे कि पहले इसका बयान भी गुज़र चुका। हाफ़िज़ अबू नुऐम रह. अपनी किताब "अस्माउस्सहाबा" में हदीस लाये हैं कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला जब सूरः बय्यिनह् की क़िराअत (पढ़ना) सुनता है तो फ़रमाता है- मेरे बन्दे ख़ुश हो जा, मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम मैं तुझे जन्नत में ऐसा ठिकाना दूँगा कि तू ख़ुश हो जायेगा। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है। एक और रिवायत में इतनी ज़्यादती भी है कि मैं तुझे दुनिया व आख़िरत के अहवाल में से किसी हाल में न भूलूँगा।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا

जो लोग अहले किताब और मुश्रिकों में से (आपको पैग़म्बर बनाकर भेजे जाने से पहले) काफ़िर थे, वे (अपने कुफ़्र से हरगिज़) बाज़ आने वाले न थे, जब तक कि उनके पास खुली दलील न आती। (1) (यानी) एक अल्लाह का रसूल जो (उनको) पाक सहीफ़े पढ़कर सुना दे (2) जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। (3) और जो लोग अहले किताब थे (और ग़ैर-अहले किताब तो और भी ज़्यादा) वे इस खुली दलील के आने ही के बाद (दीन में) इख़्तिलाफ़ करने वाले हो गए (4) हालाँकि उन लोगों को (पहली आसमानी किताबों में) यही हुक्म हुआ था कि

اللّٰـهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝	(बातिल और शिर्क वाले दीनों से) यक्सू (एक तरफ़ और बेताल्लुक़) होकर अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि इबादत उसी के लिए ख़ास रखें, और नमाज़ की पाबन्दी रखें और ज़कात दिया करें, और यही तरीक़ा है उन (ज़िक्र हुए) दुरुस्त मज़ामीन का (बतलाया हुआ)। (5)

Maktuba Ashraf

पाकीज़ा सहीफ़े

अहले किताब से मुराद यहूदी व ईसाई हैं, और मुश्रिकीन से मुराद अ़रब के बुतों के पुजारी और आग को पूजने वाले अ़जमी (अ़रब से बाहर के लोग) हैं। फ़रमाता है कि ये लोग बग़ैर दलील के बाज़ रहने वाले न थे। फिर बतलाया कि वह दलील ख़ुदा के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. हैं जो पाक सहीफ़े यानी क़ुरआने करीम पढ़कर सुनाते हैं जो आला फ़रिश्तों के पाक पन्नों में लिखा हुआ है। जैसे एक दूसरी जगह है:

فِىْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ...... الخ.

कि वे नामी-ग्रामी बुलन्द व बाला पाक-साफ़ पन्नों में पाकबाज़ नेकोकार बुज़ुर्ग फ़रिश्तों के हाथों लिखे हुए हैं। फिर फ़रमाया कि उन पाक सहीफ़ों में ख़ुदा की लिखी हुई बातें अ़दल व इस्तिक़ामत (इन्साफ़ व जमाव यानी सही रास्ते की तालीम) वाली मौजूद हैं, जिनके ख़ुदा की जानिब से होने में कोई शक व शुब्हा नहीं। न उनमें कोई चूक और ग़लती हुई है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि वह रसूल बेहतरीन अन्दाज़ में क़ुरआनी नसीहत फ़रमाते हैं और उसकी अच्छी तारीफ़ें बयान फ़रमाते हैं। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि उन सहीफ़ों में किताबें हैं इस्तिक़ामत (जमाव) और अ़दल व इन्साफ़ वाली।

फिर फ़रमाया कि ऐसी किताबों वाले ख़ुदा की हुज्जतें (दलीलें) क़ायम हो चुकने और दलीलें आ जाने के बाद ख़ुदा तआ़ला के कलाम की मुराद में इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) करने लगे, और अलग-अलग रास्तों में बंट गये, जैसे कि इस हदीस में है जो अनेक सनदों से रिवायत है कि यहूदियों के 71 फ़िर्क़े हो गये और ईसाईयों के 72 और इस उम्मत के 73 फ़िर्क़े हो जायेंगे, सो सिवाय एक के सब जहन्नम में जायेंगे। लोगों ने पूछा वह एक कौनसा है? फ़रमाया वह जो उस रास्ते पर हो जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं। फिर फ़रमाया कि उन्हें इतना ही हुक्म था कि ख़ुलूस और इख़्लास के साथ सिर्फ़ अपने सच्चे माबूद की इबादत में लगे रहें। जैसे एक और जगह फ़रमाया:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِىْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰـهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ.

यानी तुझसे पहले भी हमने जितने रसूल भेजे सब की तरफ़ यही 'वही' की कि मेरे सिवा कोई माबूदे बरहक़ नहीं, तुम सब सिर्फ़ मेरी ही इबादत करते रहो।

इसी लिये यहाँ भी फ़रमाया कि यक्सू होकर यानी शिर्क से दूर और तौहीद में मश्ग़ूल होकर। जैसे एक दूसरे मक़ाम पर इरशाद है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِىْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ.

यानी हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के सिवा दूसरों की

Maktab E Ashraf

इबादत से बचो। "हनीफ़" की पूरी तफ़सीर सूरः अन्आम में गुज़र चुकी है, दोबारा ज़िक्र की अब ज़रूरत नहीं। फिर फ़रमाया कि नमाज़ों को क़ायम करें जो कि बदन की तमाम इबादतों में सब से आला इबादत है, और ज़कात देते रहें यानी फ़क़ीरों और मोहताजों के साथ सुलूक करते रहें। यही दीन (रास्ता) मज़बूत, सीधा, दुरुस्त, इन्साफ़ वाला और बेहतरीन है।

फ़ायदाः बहुत से इमामों ने जैसे इमाम ज़ोहरी, इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह ने इस आयत से इस बात पर दलील पकड़ी है कि आमाल ईमान में दाख़िल हैं, क्योंकि इन आयतों में ख़ुदा तआ़ला की ख़ुलूस और यक्सूई के साथ इबादत और नमाज़ व ज़कात को दीन फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط
أُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لا أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ
الْبَرِيَّةِ ۝ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ
عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ أَبَدًا ط رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ ط ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝ ع ٨ ٢٣

बेशक जो लोग अहले किताब और मुश्रिकीन में से काफ़िर हुए वे दोज़ख़ की आग में जाएँगे जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) ये लोग मख़्लूक़ में सबसे बदतर हैं। (6) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे लोग मख़्लूक़ में सबसे अच्छे हैं। (7) उनका सिला उनके परवर्दिगार के यहाँ हमेशा रहने की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे (और) अल्लाह उनसे ख़ुश रहेगा और वे अल्लाह से ख़ुश रहेंगे। यह (जन्नत और अल्लाह की रज़ा) उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरता है। (8)

मख़्लूक़ में सब से बुरे

अल्लाह तआ़ला काफ़िरों का अन्जाम बयान फ़रमाता है कि चाहे वे यहूदी व ईसाई हों या अ़रब व ग़ैर-अ़रब के मुश्रिक हों, जो भी अल्लाह के नबियों के मुख़ालिफ़ हों और अल्लाह की किताब के झुठलाने वाले हों, वे क़ियामत के दिन जहन्नम की आग में डाल दिये जायेंगे और उसी में पड़े रहेंगे, न वहाँ से निकलेंगे न छूटेंगे। ये लोग तमाम मख़्लूक़ से बदतर और घटिया दर्जे के हैं।

फिर अपने नेक बन्दों के अन्जाम की ख़बर देता है। जिनके दिलों में ईमान है और जो अपने जिस्मों से सुन्नत (नबी करीम सल्ल. के तरीक़े) की तामील में रहा करते हैं, ये सारी मख़्लूक़ से बेहतर और बुज़ुर्ग (बड़े रुतबे वाले) हैं।

फ़ायदाः इस आयत से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. और उलेमा-ए-किराम की एक जमाअ़त ने इस्तिदलाल किया है कि ईमान वाले इनसान फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल हैं।

फिर इरशाद होता है कि उनका नेक बदला उनके रब के पास उन हमेशगी वाली जन्नतों की सूरत में है जिनके हर-हर गोशे (कोने) पर पाक-साफ़ पानी की नहरें बह रही हैं, जिनमें दवाम और हमेशगी की

Maktaba Ashraf

ज़िन्दगी के साथ रहेंगे, न वहाँ से निकाले जायेंगे न वे नेमतें उनसे अलग होंगी, न कम होंगी। न कोई खटका है न कोई ग़म। फिर उन सब से बढ़-चढ़कर नेमत व रहमत यह है कि अल्लाह तआ़ला की रज़ा उन्हें हासिल हो गयी है, और उन्हें इस क़द्र नेमतें अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाई हैं कि ये भी दिल से राज़ी हो गये हैं।

फिर इरशाद होता है कि यह बेहतरीन बदला, यह उम्दा जज़ा, यह बड़ा अज्र दुनिया में ख़ुदा से डरते रहने का बदला है। हर वह शख़्स जिसके दिल में अल्लाह का डर हो, जिसकी इबादत में इख़्लास हो, जो जानता है कि ख़ुदा तआ़ला उसको देख रहा है, बल्कि इबादत के वक़्त इस मशग़ूली और दिलचस्पी से इबादत कर रहा हो कि गोया वह ख़ुद अपनी आँखों से अपने ख़ालिक़ व मालिक सच्चे रब और हक़ीक़ी ख़ुदा को देख रहा है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मैं तुम्हें बताऊँ कि सब से बेहतर शख़्स कौन है? लोगों ने कहा ज़रूर इरशाद फ़रमायें। फ़रमाया वह शख़्स जो अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है कि कब जिहाद की आवाज़ उठे और कब मैं कूदकर इसकी पीठ पर सवार हो जाऊँ, और कड़कड़ाता हुआ दुश्मन की फ़ौज में घुसूँ और बहादुरी दिखाऊँ। मैं तुम्हें एक और बेहतरीन मख़्लूक़ की ख़बर दूँ? वह शख़्स जो अपनी बकरियों के रेवड़ में है (यानी बुरी तरह अपने काम में फंसा हुआ है) और न नमाज़ को छोड़ता है न ज़कात से जी चुराता है। आओ अब मैं बदतरीन (बुरी) मख़्लूक़ बताऊँ। वह शख़्स कि जिससे ख़ुदा के नाम पर सवाल किया जाये और वह न दे।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः बय्यिनह् की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः ज़िलज़ाल

सूरः ज़िलज़ाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया और कहा हुज़ूर! मुझे पढ़ाईये। आप सल्ल. ने फ़रमाया "अलिफ़ लाम् रा" वाली तीन सूरतें पढ़ो। उसने कहा मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ हाफ़िज़ा कमज़ोर हो गया, ज़बान मोटी हो गयी। आप सल्ल. ने फ़रमाया अच्छा "हा मीम्" वाली सूरतें पढ़ा करो। उसने फिर वही उ़ज़्र बयान किया। आपने फ़रमाया "युसब्बिहु" वाली तीन सूरतें पढ़ लिया करो। उसने फिर वही उ़ज़्र बयान किया और दरख़्वास्त की कि हुज़ूर! मुझे तो किसी जामे सूरत का (यानी जिसके अन्दर ज़रूरत की सब चीज़ें हों, उसका) सबक़ दे दीजिए। तो आप सल्ल. ने उसे यह सूरत पढ़ाई। जब पढ़ा चुके तो वह कहने लगा कि उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है, मैं कभी इस पर ज़्यादती न करूँगा (यानी इसकी इसी तरह तिलावत किया करूँगा, या इसके तक़ाज़ों पर अ़मल करूँगा, उनमें कोई कमी-बेशी न करूँगा)। फिर वह पीठ फेरकर जाने लगा तो आप सल्ल. ने फ़रमाया- इस आदमी ने फ़लाह पा ली, यह निजात को पहुँच गया। फिर फ़रमाया ज़रा इसे बुला लाना। वह हाज़िर हुआ

Maktab E Ashraf

तो आपने फ़रमाया- मुझे बक़र-ईद का हुक्म किया गया है उस दिन को अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत की ईद का दिन बनाया है। उस शख़्स ने कहा कि अगर मेरे पास क़ुरबानी का जानवर न हो और किसी शख़्स ने मुझे दूध पीने के लिये कोई जानवर तोहफ़ा दे रखा हो तो क्या मैं उसे ज़िबह कर डालूँ? फ़रमाया नहीं नहीं! फिर तो तू अपने बाल कतरवा, नाख़ून तराश और मूँछें पस्त (हल्की) करा, नाफ़ के नीचे के बाल साफ़ कर, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तेरी पूरी क़ुरबानी यही है। यह हदीस मुस्नद अहमद, अबू दाऊद और नसाई में भी है। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स इस सूरत को पढ़े तो उसे आधा क़ुरआन पढ़ने का सवाब मिलता है। यह हदीस ग़रीब है। एक और रिवायत में है कि सूरः ज़िलज़ाल आधे क़ुरआन के बराबर है और सूरः इख़्लास (क़ुल हुवल्लाहु अहद.....) तिहाई क़ुरआन के बराबर है, और सूरः काफ़िरून (क़ुल या अय्युहल् काफ़िरून......) चौथाई क़ुरआन के बराबर है। यह हदीस भी ग़रीब है। एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सहाबियों में से एक से फ़रमाया- क्या तुम ने निकाह कर लिया? उसने कहा नहीं! हुज़ूर मेरे पास इतना है ही नहीं जो मैं अपना निकाह कर सकूँ। आपने फ़रमाया "क़ुल् हुवल्लाह........" (यानी सूरः इख़्लास पूरी) तेरे साथ नहीं? उसने कहा हाँ यह तो है। फ़रमाया तिहाई क़ुरआन यह हुआ। फ़रमाया क्या "इज़ा जा-अ" (सूरः नस्र) नहीं? कहा वह भी है। फ़रमाया चौथाई क़ुरआन यह हुआ। फ़रमाया क्या सूरः क़ुल या अय्युहल् काफ़िरून याद नहीं? कहा हाँ। फ़रमाया चौथाई क़ुरआन के बराबर यह है। जा अब निकाह कर ले। यह हदीस हसन है। ये तीनों हदीसें सिर्फ़ तिर्मिज़ी शरीफ़ में हैं।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَ
اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ
الْاِنْسَانُ مَالَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
اَخْبَارَهَا ۝ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ
يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ
يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ ع ٨ ٢٢

जब ज़मीन अपनी सख़्त जुंबिश से हिलाई जाएगी। (1) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी। (2) और (उस हालत को देखकर काफ़िर) आदमी कहेगा कि इसको क्या हुआ? (3) उस दिन (ज़मीन) अपनी सब (अच्छी-बुरी) ख़बरें बयान करने लगेगी। (4) इस सबब से कि आपके रब का उसको यही हुक्म होगा। (5) उस दिन लोग विभिन्न जमाअ़तें होकर (हिसाब के मक़ाम से) वापस होंगे ताकि अपने आमाल (के फल) को देख लें। (6) सो जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहाँ) उसको देख लेगा। (7) और जो शख़्स ज़र्रा बराबर बुराई करेगा वह उसको देख लेगा। (8)

ये ज़लज़ले

ज़मीन नीचे से ऊपर तक कपकपाने लगेगी और जितने मुर्दे उसमें हैं सब निकाल फेंकेगी। जैसे एक और जगह फ़रमाया है:

Maktab E Ashraf

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ ٱلسَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيمٌ.

ऐ लोगो! अपने रब से डरो। यक़ीन मानो कि क़ियामत का ज़लज़ला और उस दिन का भूंचाल बड़ी चीज़ है। एक और मौक़े पर इरशाद है:

وَإِذَا ٱلْأَرْضُ مُدَّتْ. وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ.

जबकि ज़मीन खींच-खाँचकर बराबर हमवार कर दी जायेगी। उसमें जो कुछ है वह उसे बाहर उगल देगी और बिल्कुल ख़ाली हो जायेगी।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- ज़मीन अपने कलेजे के टुकड़ों को उगल देगी। सोना चाँदी सुतूनों की तरह बाहर निकल पड़ेगा। क़ातिल उसे देखकर अफ़सोस करता हुआ कहेगा कि हाय इसी माल के लिये मैंने फ़ुलाँ का क़त्ल किया था? आज यह यूँ इधर-उधर पड़ा हुआ है, कोई आँख भरकर देखता भी नहीं। इसी तरह सिला-रहमी (रिश्ता) तोड़ने वाला भी कहेगा कि इसी की मुहब्बत में आकर रिश्तेदारों से मैं सुलूक नहीं करता था। चोर भी कहेगा कि इसी की मुहब्बत में मैंने हाथ कटवा दिये। ग़र्ज़ कि वह माल यूँ ही रलता फिरेगा, कोई नहीं लेगा। इनसान उस वक़्त हैरान व परेशान रह जायेगा और कहेगा यह तो हिलने-जुलने वाली न थी बिल्कुल ठहरी हुई बोझल और जमी हुई थी, इसे क्या हो गया कि यूँ बेद की तरह थर्राने लगी। साथ ही जब देखेगा कि तमाम अगली पिछली लाशें भी ज़मीन ने उगल दीं तो और हैरान व परेशान हो जायेगा कि आख़िर इसे क्या हो गया है? पस ज़मीन बिल्कुल बदल दी जायेगी और आसमान भी, और सब लोग उस ग़ालिब ख़ुदा के सामने खड़े हो जायेंगे। ज़मीन साफ़-साफ़ गवाही देगी कि फ़ुलाँ शख़्स ने फ़ुलाँ-फ़ुलाँ नाफ़रमानी मुझ पर की है।

हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया जानते भी हो कि ज़मीन की बयान की हुई ख़बरें क्या होंगी? लोगों ने कहा अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ही को ख़ूब इल्म है। आप सल्ल. ने फ़रमाया जो-जो आमाल इनसान ने ज़मीन पर किये हैं वह तमाम ज़ाहिर कर देगी कि फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शख़्स ने फ़ुलाँ नेकी या बदी फ़ुलाँ जगह फ़ुलाँ वक़्त की है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को हसन सही ग़रीब बतलाते हैं। मोजम तबरानी में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- ज़मीन से बचो, यह तुम्हारी माँ है। जो शख़्स जो नेकी बदी इस पर करता है यह सब खोलकर बयान कर देगी।

अल्लाह तआ़ला ज़मीन से फ़रमायेगा कि बता और यह बताती जायेगी। उस दिन लोग हिसाब की जगह से विभिन्न और अनेक क़िस्मों की जमाअ़तें बन-बनकर लौटेंगे। कोई बद होगा, कोई नेक, कोई जन्नती बना होगा कोई जहन्नमी। यह मायने भी हैं कि यहाँ से जो अलग-अलग होंगे तो फिर मिलाप न होगा। यह इसलिये कि वे अपने आमाल को जान लें और भलाई बुराई का बदला पा लें। इसी लिये आख़िर में भी बयान फ़रमा दिया। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि घोड़ों वाले तीन क़िस्म के हैं- एक अज्र पाने वाला, एक पर्दा पोशी वाला, एक बोझ और गुनाह वाला। अज्र वाला तो वह है जो घोड़ा पालता है जिहाद की नीयत से, अगर उसके घोड़े के अगाड़ी पिछाड़ी ढीली हो गयी और यह इधर-उधर से चरता रहा तो यह भी घोड़े वाले के लिये अज्र का सबब है, और अगर यह रस्सी उसकी टूट गयी और यह इधर-उधर चढ़ गया तो उसके पैरों के निशान और उसकी लीद का भी उसे सवाब मिलता है, अगर यह किसी नहर पर जाकर पानी पी ले अगरचे इरादा पिलाने का न हो तो भी सवाब मिल जाता है। यह घोड़ा तो उस शख़्स के लिये सरासर अज्र व सवाब है। दूसरा वह शख़्स जिसने इसलिये पाल रखा है कि दूसरों से बेपरवाह रहे और किसी

से सवाल की ज़रूरत न हो, लेकिन ख़ुदा का हक़ न तो ख़ुद उसमें भूलता है न उसकी सवारी में। पस यह उसके लिये पर्दा है (यानी दूसरे लोग उसे तंगी की निगाह से नहीं देखते)। तीसरा वह शख़्स है जिसने अपनी नाक, दिखावे और ज़ुल्म व सितम के लिये पाल रखा है, पस यह उसके ज़िम्मे बोझ और उसके लिये गुनाह है। फिर हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि गधों के बारे में क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया मुझ पर ख़ुदा तआ़ला की जानिब से सिवाय इस तन्हा और जामे आयत के और कुछ नाज़िल नहीं हुआ, कि ज़र्रा बराबर नेकी और इतनी ही बदी हर शख़्स देख लेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत सअ़सआ़ बिन मालिक रज़ि. ने तो हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी यह आयत सुनकर कह दिया था कि सिर्फ़ यही आयत काफ़ी है और ज़्यादा अगर न भी सुनूँ तो कोई ज़रूरत नहीं। (मुस्नद अहमद व नसाई)

सही बुख़ारी शरीफ़ में यह रिवायत हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ि. से है कि आग से बचो अगरचे आधी खजूर का सदक़ा ही हो। इसी तरह सही हदीस में है कि नेकी के काम को हल्का न समझो चाहे इतना ही काम हो कि तू अपने डोल में से ज़रा सा पानी किसी प्यासे को पिला दे, या अपने किसी मुसलमान भाई से मुस्कुराते चेहरे के साथ मुलाक़ात कर ले। एक दूसरी सही हदीस में है कि ऐ ईमान वाली औ़रतो! तुम अपनी पड़ोसन के भेजे हुए तोहफ़े हदिये को हक़ीर (मामूली और गिरा हुआ) न समझो चाहे एक खुर ही आया हो। एक और हदीस में है कि साईल (माँगने वाले) को कुछ न कुछ दे दो चाहे जला हुआ खुर ही हो। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि ऐ आ़यशा! गुनाहों को हक़ीर (छोटा और मामूली) न समझो, याद रखो कि उनका भी हिसाब लेने वाला है।

इब्ने जरीर रह. में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. जनाब रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ खाना खा रहे थे कि यह आयत उतरी तो हज़रत सिद्दीक़ रज़ि. ने खाने से हाथ उठा लिया और पूछने लगे- या रसूलल्लाह! क्या हमको एक ज़र्रा बराबर बुराई का भी बदला दिया जायेगा? आपने फ़रमाया ऐ अबू बक्र! दुनिया में जो जो तकलीफ़ें तुम्हें पहुँची हैं ये तो इसमें आ गयीं और नेकियाँ तुम्हारे लिये ख़ुदा के यहाँ ज़ख़ीरा बनी हुई हैं और उन सब का पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन दिया जायेगा। इब्ने जरीर की एक और रिवायत में है कि यह सूरत हज़रत अबू बक्र रज़ि. की मौजूदगी में नाज़िल हुई थी, आप इसे सुनकर बहुत रोये। हुज़ूर सल्ल. ने सबब पूछा तो आपने फ़रमाया मुझे यह सूरत रुला रही है। आपने फ़रमाया अगर तुम ख़ता और गुनाह न करते कि तुम्हें बख़्शा जाये और माफ़ किया जाये तो अल्लाह तआ़ला किसी और उम्मत को पैदा करता जो ख़ता और गुनाह करते और ख़ुदा उन्हें बख़्शता। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से यह आयत सुनकर पूछा कि हुज़ूर! क्या मुझे अपने सब आमाल देखने पड़ेंगे? आपने फ़रमाया हाँ। पूछा बड़े-बड़े? फ़रमाया हाँ। पूछा और छोटे-छोटे भी? फ़रमाया हाँ। मैंने कहा हाय अफ़सोस। आप सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ अबू सईद! ख़ुश हो जाओ नेकी तो दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक बल्कि इससे भी ज़्यादा तक ख़ुदा जिसे चाहे देगा, हाँ गुनाह उसी के जैसे होंगे, या अल्लाह तआ़ला उसे भी बख़्श देगा। सुनो! किसी शख़्स को सिर्फ़ उसके आमाल निजात न दे सकेंगे। मैंने कहा हुज़ूर! क्या आपको भी नहीं? फ़रमाया नहीं मुझे भी नहीं! मगर यह कि अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी रहमत से मुझे ढाँप ले। इसके रावियों में एक इब्ने लहीआ़ हैं, यह रिवायत सिर्फ़ उन्हीं से मन्क़ूल है।

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह. फ़रमाते हैं कि जब आयतः

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا.

(यानी सूरः दहर की आयत नम्बर 8) नाज़िल हुई। यानी माल की मुहब्बत के बावजूद मिस्कीन, यतीम और कैदी को खाना खिलाते हैं, तो लोग यह समझ गये कि अगर हम थोड़ी सी चीज़ अल्लाह के लिये देंगे तो कोई सवाब न मिलेगा। मिस्कीन उनके दरवाज़े पर आता लेकिन एक आध खजूर या रोटी का टुकड़ा वग़ैरह देने को मामूली और बेहक़ीक़त ख़्याल करके यूँ ही लौटा देते थे, कि अगर दें तो कोई अच्छी महबूब और पसन्दीदा चीज़ दें। इधर तो इस ख़्याल की यह एक जमाअ़त थी, दूसरी जमाअ़त वह थी जिन्हें यह ख़्याल पैदा हो गया था कि छोटे-छोटे गुनाहों पर हमारी पकड़ न होगी, जैसे कभी कोई झूठ बात कह दी, कभी इधर-उधर नज़रें डाल लीं, कभी ग़ीबत कर ली, वग़ैरह। जहन्नम की वईद (धमकी) तो बड़े गुनाहों पर है। तो यह आयतः

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ. وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ.

(यानी इस सूरत की आख़िरी दो आयतें) नाज़िल हुईं और उन्हें यह बतलाया गया कि छोटी सी नेकी को हक़ीर न समझो, यह बड़ी होकर मिलेगी। और थोड़े से गुनाह को भी बेजान न समझो कहीं थोड़ा-थोड़ा मिलकर बहुत न बन जाये। "ज़र्रा" के मायने छोटी चींवटी के हैं, यानी नेकियों को और बुराईयों को छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी अपने नामा-ए-आमाल में देख लेगा। बदी तो एक ही लिखी जाती है नेकी एक के बदले दस बल्कि जिसके लिये खुदा चाहे इससे भी बहुत ज़्यादा बल्कि उन नेकियों के बदले बुराईयाँ भी माफ़ हो जाती हैं। एक-एक नेकी के बदले दस-दस बुराईयाँ माफ़ हो जाती हैं। फिर यह भी है कि जिसकी नेकी बुराई से एक ज़र्रे के बराबर बढ़ गयी वह जन्नती हो गया। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि गुनाहों को हल्का न समझा करो, ये सब जमा होकर आदमी को हलाक कर डालते हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. ने इन बुराईयों की मिसाल बयान फ़रमाई कि जैसे कुछ लोग किसी जगह उतरे, फिर एक-एक दो दो लकड़ियाँ चुन लाये तो लकड़ियों का ढेर लग जायेगा। फिर अगर उन्हें सुलगाई जायें तो उस आग में जो चाहें पका सकते हैं (इसी तरह) थोड़े-थोड़े गुनाह बहुत ज़्यादा होकर आग का काम करते हैं और इनसान को जला देते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः ज़िलज़ाल की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः आ़दियात

सूरः आ़दियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ○ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ○ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ○ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ○	क़सम है उन घोड़ों की जो हाँपते हुए दौड़ते हैं (1) फिर (पत्थर पर) टाप मारकर आग झाड़ते हैं। (2) फिर सुबह के वक़्त तहस-नहस करते हैं। (3) फिर उस वक़्त ग़ुबार उड़ाते हैं। (4)

फ़वसत्न बिही जमआ... (Arabic) فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۝ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝	फिर उस वक़्त (दुश्मनों की) जमाअ़त में जा घुसते हैं। (5) बेशक (काफ़िर) आदमी अपने परवर्दिगार का बड़ा नाशुक्रा है। (6) और उसको ख़ुद भी उसकी ख़बर है (कभी पहली ही बार में कभी ग़ौर-फ़िक्र के बाद)। (7) और वह माल की मुहब्बत में बड़ा मज़बूत है। (8) क्या उसको वह वक़्त मालूम नहीं जब ज़िन्दा किए जाएँगे जितने मुर्दे क़ब्रों में हैं। (9) और ज़ाहिर हो जायेगा जो कुछ दिलों में है। (10) बेशक उनका परवर्दिगार उनके हाल से उस दिन पूरा आगाह है। (11)

ع ۱۱ ۲۵

मुजाहिदीन के तेज़-रफ़्तार घोड़ों की क़सम

मुजाहिदीन के घोड़े जबकि ख़ुदा की राह के लिये हाँपते और हिनहिनाते हुए दौड़ते हैं उनकी अल्लाह तबारक व तआ़ला क़सम खाता है। फिर इस तेज़ी में दौड़ते हुए पत्थरों के साथ उनकी नाल का टकराना और उस रगड़ से आग की चिंगारियाँ उड़ना, फिर सुबह के वक़्त दुश्मन पर उनका छापा मारना और अल्लाह के दुश्मनों को तहस-नहस करना। हुज़ूरे पाक सल्ल. की भी यही आ़दत मुबारक थी कि दुश्मन की किसी बस्ती पर आप जाते तो वहाँ रात को ठहर कर सुनते, अगर अज़ान की आवाज़ आ गयी तो आप रुक जाते, न आती तो लश्कर को हुक्म देते कि हमला करें। फिर उन घोड़ों का गर्द व ग़ुबार उड़ाना और उन सब का दुश्मनों के दरमियान घुस जाना। इन सब चीज़ों की क़सम खाकर फिर मज़मून शुरू होता है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह से मन्क़ूल है कि "वल्-आ़दियात" से मुराद ऊँट हैं। हज़रत अ़ली रज़ि. भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का यह क़ौल है कि इससे मुराद घोड़े हैं। जब हज़रत अ़ली रज़ि. को मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया घोड़े हमारे पास बदर वाले दिन थे ही कब? यह तो उस छोटे लश्कर में था जो भेजा गया था। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. एक मर्तबा हतीम में बैठे हुए थे कि एक शख़्स ने आकर इस आयत की तफ़सीर पूछी तो आपने फ़रमाया इससे मुराद मुजाहिदीन के घोड़े हैं जो जिहाद के वक़्त दुश्मनों पर धावा बोलते हैं, फिर रात के वक़्त ये घोड़े सवार मुजाहिद अपने कैम्प में आकर खाना पकाने के लिये आग जलाते हैं। वह यह पूछकर हज़रत अ़ली रज़ि. के पास गया, आप उस वक़्त ज़मज़म का पानी लोगों को पिला रहे थे। उसने आप से यही सवाल किया, आपने फ़रमाया मुझसे पहले किसी और से भी तुमने पूछा है? कहा हाँ हज़रत इब्ने अ़ब्बास से पूछा है। उन्होंने फ़रमाया है कि मुजाहिदीन के घोड़े हैं जो ख़ुदा की राह में धावा बोलें। हज़रत अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया जाना ज़रा उन्हें मेरे पास बुला लाना। जब वह आ गये तो हज़रत अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया तुम्हें मालूम नहीं और तुम लोगों को फ़तवा दे रहे हो? ख़ुदा की क़सम पहला ग़ज़्वा (लड़ाई) इस्लाम में बदर का हुआ, उस लड़ाई में हमारे साथ सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक हज़रत ज़ुबैर का, दूसरा हज़रत मिक़्दाद का। तो "आ़दियाति ज़ब्हन" यह कैसे हो सकते हैं? इससे मुराद तो अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ जाने वाले और फिर मुज़्दलिफ़ा से मिना की तरफ़ जाने वाले हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह सुनकर मैंने अपने पहले क़ौल से रुजू कर लिया और हज़रत अ़ली ने जो

Maktab E Ashraf

फ़रमाया था वही कहने लगा। मुज़्दलिफ़ा में पहुँचकर हाजी भी अपनी हण्डिया रोटी के लिये आग सुलगाते हैं। ग़र्ज़ कि हज़रत अ़ली रज़ि. का फ़रमान यह हुआ कि इससे मुराद ऊँट हैं और यही क़ौल एक जमाअ़त का है जिनमें इब्राहीम, उबैद बिन उमैर वग़ैरह हैं। और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से घोड़े मन्क़ूल हैं। मुजाहिद, इक्रिमा, अ़ता, क़तादा, ज़ह्हाक रह. भी यही कहते हैं और इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। बल्कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और हज़रत अ़ता रह. से मरवी है कि "ज़ब्हन" यानी हाँपना किसी जानवर के लिये नहीं होता सिवाय घोड़े और कुत्ते के। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उनके मुँह से हाँपते हुए जाने की आवाज़ 'उख़ उख़' की निकलती है यही "ज़ब्हन" है। दूसरे जुमले के एक तो यह मायने किये गये हैं कि उन घोड़ों की टापों का पत्थर से टकरा कर आग पैदा करना और दूसरे मायने यह भी किये गये हैं कि उनके सवारों का लड़ाई की आग को भड़काना, और यह भी कहा गया है कि लड़ाई में धोखा व फ़रेब (यानी चालाकी और पैंतरे बाज़ी) करना, और यह भी है कि रातों को अपने पड़ाव पर पहुँचकर आग रोशन करना और मुज़्दलिफ़ा में हाजियों का मग़रिब के बाद पहुँचकर आग जलाना।

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा ठीक क़ौल यही है कि घोड़ों की टापों और सुमों का पत्थर से रगड़ खाकर आग पैदा करना। फिर सुबह के वक़्त मुजाहिदीन का दुश्मनों पर अचानक टूट पड़ना। जिन साहिबान ने इससे मुराद ऊँट लिये हैं वे फ़रमाते हैं कि इससे मुराद मुज़्दलिफ़ा से मिना की तरफ़ सुबह को जाना है। फिर यह सब कहते हैं कि फिर उनका जिस मकान में यह उतरे हैं चाहे जिहाद में हों चाहे हज में, ग़ुबार उड़ाना। फिर उन मुजाहिदों का काफ़िरों की फ़ौजों में बहादुरी के साथ घुस जाना और चीरते फाड़ते मारते पछाड़ते उनके बीच लश्कर में पहुँच जाना। और यह भी मुराद हो सकती है कि सब जमा होकर उस जगह दरमियान में आ जाते हैं।

इमाम अबू बक्र बज़्ज़ार में इस जगह एक ग़रीब हदीस है, जिसमें है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. ने एक लश्कर भेजा था। एक महीना गुज़र गया लेकिन उसकी कोई ख़बर न आई। इस पर ये आयतें और उस लश्कर की ख़ुदा तआ़ला ने ख़बर दी कि उनके घोड़े हाँपते हुए तेज़ चाल से गये, उनके सुमों की टक्कर से चिंगारियाँ उड़ रही थीं, उन्होंने सुबह ही सुबह दुश्मनों पर पूरी यलग़ार के साथ हमला कर दिया, उनकी टापों से गर्द उड़ रही थी, फिर ग़ालिब आकर सब जमा होकर बैठ गये।

इन क़समों के बाद अब वह मज़्मून बयान हो रहा है जिस पर क़समें खाई गयी थीं कि इनसान अपने रब की नेमतों का क़द्रदान नहीं। अगर कोई दुख दर्द किसी वक़्त आ गया तो वह अच्छी तरह याद है, लेकिन ख़ुदावन्द तआ़ला की हज़ारों नेमतें जो हैं सब को भुलाये हुए है। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि "कनूद" वह है जो तन्हा खाये, ग़ुलामों को मारे और एहसान व सुलूक न करे। इसकी सनद ज़ईफ़ है। फिर फ़रमाया- ख़ुदा उस पर शाहिद (गवाह) है और यह भी हो सकता है कि यह ख़ुद इस बात पर अपना गवाह आप है। इसकी नाशुक्री उसके अफ़आ़ल व अक़वाल से साफ़ ज़ाहिर है। जैसे एक और जगह है:

شَاهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ.

यानी मुश्रिकों से अल्लाह तआ़ला की मस्जिदों की आबादी नहीं हो सकती जबकि ये अपने कुफ़्र के आप गवाह हैं। फिर फ़रमाया यह माल की चाहत में बड़ा सख़्त है, यानी इसे माल की बेहद मुहब्बत है और यह भी मायने हैं कि उसकी मुहब्बत में फंसकर हमारी राह में देने से जी चुराता और बुख़्ल करता है। फिर परवर्दिगारे आ़लम उसे दुनिया से बेरुख़ी बरतने और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये फ़रमा रहा

Maktab E Ashraf

है कि क्या इनसान को यह मालूम नहीं कि एक वक़्त वह आ रहा है जब तमाम मुर्दे क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो कुछ बातें छुपी-लुकी हुई थीं सो वे ज़ाहिर हो जायेंगी। सुन लो उनका रब उनके तमाम कामों से बाख़बर है, और हर एक अ़मल का बदला पूरा-पूरा देने वाला है। एक ज़र्रे के बराबर वह ज़ुल्म रवा नहीं रखता है, और न रखेगा।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः आ़दियात की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः क़ारिआ़

सूरः क़ारिआ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَلْقَارِعَةُ ○ۙ مَا الْقَارِعَةُ ○ۚ وَمَآ اَدْرٰكَ
مَا الْقَارِعَةُ ○ؕ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ
كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ○ۙ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ
كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ○ؕ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِيْنُهٗ ○ۙ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ○ؕ وَاَمَّا
مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ○ۙ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ○ؕ
وَمَآ اَدْرٰكَ مَاهِيَهْ ○ؕ نَارٌ حَامِيَةٌ ○ ع ١١ ٢٦

वह खड़खड़ाने वाली चीज़। (1) कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़। (2) और आपको मालूम है कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़? (3) जिस दिन आदमी परेशान परवानों की तरह हो जाएँगे (4) और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएँगे (तश्बीह देने की वजह अलग-अलग होकर उड़ जाना है)। (5) फिर (आमाल के वज़न के बाद) जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा (6) वह तो अपनी पसन्दीदा ऐश व आराम में होगा (यानी निजात पाने वाला होगा)। (7) और जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला हल्का होगा (यानी वह काफ़िर होगा) (8) तो उसका ठिकाना हाविया होगा। (9) और आपको कुछ मालूम है कि वह (हाविया) क्या चीज़ है? (10) (वह) एक दहकती हुई आग है। (11)

क़ियामत का दिन बड़ा हौलनाक होगा

"क़ारिआ़" भी क़ियामत का नाम है जैसे "हाक़्क़ा" "ताम्मा" "साख़्ख़ा" "ग़ाशिया" वग़ैरह। उसकी अहमियत और हौलनाकी के बयान के लिये सवाल होता है कि वह क्या चीज़ है? उसका इल्म बग़ैर मेरे बताये किसी को हासिल नहीं हो सकता है। फिर ख़ुद बतलाता है कि उस दिन लोग बिखरे हुए और हैरान

Maktab E Ashraf

व परेशान इधर-उधर घूम रहे होंगे, जिस तरह परवाने होते हैं। एक और जगह इरशाद फ़रमायाः

كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ.

गोया वे टिड्डियाँ हैं फैली हुई।

फिर फ़रमाया- पहाड़ों का यह हाल होगा कि वे धुनी हुई ऊन की तरह इधर-उधर उड़ते नज़र आयेंगे। फिर फ़रमाता है कि उस दिन हर नेक व बद का अन्जाम ज़ाहिर हो जायेगा, नेकों की अ़ज़्मत और बुरों की ज़िल्लत ज़ाहिर हो जायेगी। जिसकी नेकियाँ वज़न में बुराईयों से बढ़ गयीं वह ऐश व आराम की जन्नत में बसर करेगा, और जिसके बुरे आमाल नेकियों पर छा गये, भलाईयों का पलड़ा हल्का हो गया वह जहन्नमी हो जायेगा, वह मुँह के बल औंधा जहन्नम में गिरा दिया जायेगा। "उम्मु" से मुराद दिमाग़ है, यानी सर के बल हाविया में जायेगा, और यह भी मायने हैं कि फ़रिश्ते जहन्नम में उसके सर पर अ़ज़ाब की बारिश बरसायेंगे, और यह भी मतलब है कि उसका असली ठिकाना, वह जगह जहाँ उसके लिये ठहरना मुक़र्रर किया गया है वह जहन्नम है। "हाविया" जहन्नम का नाम है इसी लिये इसकी तफ़सीर बयान करते हुए फ़रमाया कि तुम्हें नहीं मालूम कि हाविया क्या है? अब मैं बताता हूँ कि वह शोले मारती भड़कती हुई आग है। हज़रत अश्अ़स बिन अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मोमिन की मौत के बाद उसकी रूह को ईमान वालों की रूहों की तरफ़ ले जाते हैं और फ़रिश्ते उनसे कहते हैं कि अपने भाई की दिलजोई और तसल्ली करो, यह दुनिया के रंज व ग़म में मुब्तला था। अब वे नेक रूहें उससे पूछती हैं कि फ़ुलाँ का क्या हाल है? वह कहता है कि वह तो मर चुका। क्या तुम्हारे पास नहीं आया? तो ये समझ लेते हैं और कहते हैं कि फूँको उसे वह तो अपनी माँ "हाविया" में पहुँचा। इब्ने मर्दूया की एक मरफ़ूअ़ हदीस में यह बयान ख़ूब तफ़सील से है और हमने भी इसे अपनी किताब "सिफ़तुन्नार" में ज़िक्र किया है। अल्लाह तआ़ला हमें अपने फ़ज़्ल व करम से उस जहन्नम की आग से निजात दे, आमीन।

फिर फ़रमाता है कि वह सख़्त तेज़ हरारत वाली आग है। बड़े शोले मारने वाली, झुलसा देने वाली। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि तुम्हारी यह आग तो उसका सत्तरवाँ हिस्सा है। लोगों ने कहा हुज़ूर! हलाकत को तो यही काफ़ी है। आपने फ़रमाया हाँ लेकिन दोज़ख़ की आग तो इससे उनहत्तर (69) हिस्से तेज़ है। सही बुख़ारी में यह हदीस है और इसमें यह भी है कि हर-हर हिस्सा इस आग जैसा है। मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत मौजूद है। मुस्नद की एक हदीस में इसके साथ यह भी है कि यह आग बावजूद इस आग का सत्तरवाँ हिस्सा होने के फिर भी दो मर्तबा समन्दर के पानी में बुझाकर भेजी गयी है, अगर यह न होता तो इससे भी नफ़ा न उठा सकते। एक और हदीस में है कि यह आग सौवाँ (100वाँ) हिस्सा है। तबरानी में है- जानते हो कि तुम्हारी इस आग और जहन्नम की आग के दरमियान क्या ताल्लुक़ है? तुम्हारी इस आग के धुएँ से भी सत्तर हिस्से ज़्यादा काली ख़ुद वह आग है।

तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में हदीस है कि जहन्नम की आग एक हज़ार साल तक जलाई गयी तो सुर्ख़ हो गयी, फिर एक हज़ार साल तक जलाई गयी तो सफ़ेद हो गयी, फिर एक हज़ार साल तक जलाई गयी तो सियाह हो गयी, पस अब वह सख़्त सियाह और बिल्कुल अन्धेरे वाली है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि सब से हल्के अ़ज़ाब वाला जहन्नमी वह है जिसके पैरों में आग की दो जूतियाँ होंगी जिनसे उसका दिमाग़ पकी हुई हाँडी की तरह जोश मारता होगा। सहीहैन में है कि आग ने अपने रब की तरफ़ शिकायत की कि ख़ुदाया मेरा एक हिस्सा दूसरे को खाये जा रहा है तो परवर्दिगार ने उसे दो साँस लेने की इजाज़त दी, एक

जाड़े में एक गर्मी में। पस सख़्त जाड़ा जो तुम पाते हो यह उसका ठण्डा साँस है और सख़्त गर्मी जो पड़ती है यह उसके गर्म साँस का असर है। एक और हदीस में है कि जब गर्मी शिद्दत की पड़े तो नमाज़ ठण्डी करके पढ़ो (यानी गर्मियों में ज़ोहर की नमाज़ ज़रा देर करके पढ़ें), क्योंकि गर्मी की सख़्ती जहन्नम के जोश की वजह से है।

Maktab E Ashraf

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः क़ारिआ़ की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः तकासुर

सूरः तकासुर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

(दुनियावी साज़ व सामान पर) फ़ख़्र करना (उसके तलब करने और मुहब्बत की निशानी है) तुम को (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखता है। (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं! तुमको बहुत जल्द (क़ब्र में जाते ही, यानी मरते ही) मालूम हो जाएगा। (3) फिर (दोबारा तुमको सचेत किया जाता है कि) हरगिज़ (तुम्हारी यह हालत ठीक) नहीं, बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (4) हरगिज़ नहीं! (और) अगर तुम यक़ीनी तौर पर (ऐसी दलीलों, जो सही हों और जिनकी पैरवी वाजिब हो, से इस बात को) जान लेते। (5) अल्लाह की क़सम! तुम लोग ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। (6) फिर (दोबारा ताकीद के लिए कहा जाता है कि) ख़ुदा की क़सम! तुम लोग उसको ऐसा देखना देखोगे जो कि ख़ुद यक़ीन है। (7) फिर (और बात सुनो कि) उस दिन तुम सब से नेमतों की पूछ होगी। (8)	اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ○ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ○ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ○ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ○ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ○ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ○ ع ٨ ١٤

दुनिया की मुहब्बत आख़िरत से ग़ाफ़िल करने वाली चीज़ है

इरशाद होता है कि जब दुनिया की मुहब्बत और उसके हासिल करने की कोशिश ने तुम्हें आख़िरत की

तलब और नेक कामों से ग़ाफ़िल कर दिया, तुम इसी दुनिया की उधेड़-बुन में रहे कि अचानक मौत आ गयी और तुम कब्रों में पहुँच गये। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह की इताअ़त से तुमने दुनिया की जुस्तजू में फंसकर बेतवज्जोही कर ली और मरते दम तक ग़फ़लत बरती। (इब्ने अबी हातिम) हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि माल और औलाद की ज़्यादती की हवस में मौत का ख़्याल तक न आया। सही बुख़ारी "किताबुर्रिकाक़" में है, हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि हमः

لَوْ كَانَ لِابْنِ اٰدَمَ وَادٍ مِّنْ ذَهَبٍ.

(यानी अगर इनसान के पास एक जंगल भरकर सोना हो.......) इसे हम क़ुरआन की आयत ही समझते रहे यहाँ तक कि सूरः तकासुर नाज़िल हुई। मुस्नद अहमद में है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं जनाब रसूले ख़ुदा सल्ल. की ख़िदमत में जब आया तो आप इस आयत को पढ़ रहे थे। आपने फ़रमाया- आदम का बेटा कहता रहता है कि मेरा माल मेरा माल, हालाँकि तेरा माल सिर्फ़ वह है जिसे तूने खाकर फ़ना कर दिया, या पहनकर फाड़ दिया, या सदक़ा देकर बाक़ी रख लिया। सही मुस्लिम शरीफ़ में इतना और ज़्यादा है कि इसके सिवा जो कुछ है उसे तो तू लोगों के लिये छोड़कर चल देगा। बुख़ारी की हदीस में है कि मय्यित के साथ तीन चीज़ें जाती हैं जिनमें से दो तो पलट आती हैं सिर्फ़ एक साथ रह जाती है। घर वाले, माल और आमाल। घर वाले और माल तो लौट आये, अ़मल साथ रह गये। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि इनसान बूढ़ा हो जाता है लेकिन दो चीज़ें उसके साथ बाक़ी रह जाती हैं, लालच और लम्बी आरज़ूयें। हज़रत ज़ह्हाक रह. ने एक शख़्स के हाथ में एक दिरहम देखकर पूछा कि यह दिरहम किसका है? उसने कहा मेरा, फ़रमाया तेरा तो उस वक़्त होगा कि जब किसी नेक काम में तू ख़र्च कर दे या अल्लाह के शुक्र के तौर पर ख़र्च करे। हज़रत अहनफ़ बिन कैस रह. ने इस वाक़िए को बयान करके फिर यह शे'र पढ़ाः

اَنْتَ لِلْمَالِ اِذَا اَمْسَكْتَهٗ ☆ فَاِذَا اَنْفَقْتَهٗ فَالْمَالُ لَكَ

यानी जब तू माल को लिये बैठा है तो तू माल की मिल्कियत में है, हाँ जब उसे ख़र्च कर देगा उस वक़्त माल तेरी मिल्कियत में हो जायेगा।

इब्ने बुरैदा रह. फ़रमाते हैं कि अन्सार के क़बीले बनू हारिसा और बनू हारिस आपस में फ़ख़्र व गुरूर करने लगे (यानी अपनी बड़ाई जताने लगे) एक कहता देखो हम हैं फ़ुलाँ शख़्स ऐसा बहादुर, ऐसा ताक़तवर या इतना मालदार वग़ैरह। दूसरे क़बीले वाले भी अपने में के ऐसों को पेश करते थे। जब ये ज़िन्दों के साथ फ़ख़्र कर चुके और अपनी शान बघार चुके तो कहने लगे कि आओ क़ब्रिस्तान में चलें, वहाँ जाकर अपने अपने मुर्दों की क़ब्रों की तरफ़ इशारा करके कहने लगे बतलाओ इस जैसा भी तुम में कोई गुज़रा है? वे उन्हें अपने मुर्दों के साथ इल्ज़ाम देने लगे। इस पर ये दोनों शुरू की आयतें उतरीं कि तुम अपनी बड़ाईयाँ जताते हुए और आपस में फ़ख़्र करते हुए क़ब्रिस्तान पहुँच गये और अपने-अपने मुर्दों पर भी फ़ख़्र व गुरूर करने लगे, यहाँ तक कि एक-एक होकर क़ब्रों में ठुंस गये। मतलब यह है कि माल व सामान की अधिकता की तमन्ना ने ग़फ़लत में ही रखा, यहाँ तक कि मर गये और क़ब्रों में दफ़न हो गये। एक सही हदीस में है कि नबी सल्ल. एक देहाती की बीमारी का हाल पूछने को तशरीफ़ ले गये और आ़दत के मुताबिक़ फ़रमाया कि कोई डर ख़ौफ़ नहीं, इन्शा-अल्लाह तआ़ला गुनाहों से पाकीज़गी हासिल होगी। उसने कहा आप इसे ख़ूब पाकी बतला रहे हैं, यह तो वह बुख़ार है जो बड़ों-बूढ़ों पर सवार होता है और क़ब्र तक पहुँचाकर रहता है।

आपने फ़रमाया अच्छा फिर यूँ ही सही। इस हदीस में भी लफ़्ज़ "तज़ीरुहुल-क़ुबूर" है और यहाँ क़ुरआन में भी "ज़ुरतुमुल् मक़ाबिर" है। पस मालूम होता है कि इससे मुराद मरकर क़ब्र में दफ़न होना ही है। तिर्मिज़ी में है, हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि जब तक यह आयत न उतरी हम अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में शक में ही रहे। यह हदीस ग़रीब है, इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने इस आयत की तिलावत की, फिर कुछ देर सोचकर फ़रमाने लगे- मैमून! (यह आपके ग़ुलाम का नाम था) क़ब्रों को देखना तो सिर्फ़ बतौर ज़ियारत है और हर ज़ियारत करने वाला अपनी जगह लौट जाता है। यानी चाहे जन्नत की तरफ़ चाहे दोज़ख़ की तरफ़। एक देहाती ने भी एक शख़्स की ज़बानी इन दोनों आयतों की तिलावत सुनकर यही फ़रमाया था कि असल मक़ाम और ही है।

फिर अल्लाह तआ़ला धमकाते हुए दो-दो मर्तबा फ़रमाता है कि असलियत का इल्म तुम्हें अभी हो जायेगा। यह मतलब भी बयान किया गया है कि पहले से मुराद काफ़िर हैं, दोबारा वाले से मोमिन मुराद हैं। फिर फ़रमाता है कि अगर तुम यक़ीनी इल्म के साथ इसे मालूम कर लेते, यानी अगर ऐसा होता तो तुम ग़फ़लत में न पड़ते, और मरते दम तक अपनी आख़िरी मन्ज़िल से ग़ाफ़िल न रहते। फिर जिस चीज़ से पहले धमकाया था उसी का बयान कर रहा है कि तुम जहन्नम को अपनी आँखों से देख लोगे, कि उसकी एक ही जुंबिश (हरकत) के साथ और तो और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम भी घबराहट व ख़ौफ़ के मारे घुटनों के बल गिर जायेंगे। उसकी विशालता और दहशत हर दिल पर छाई हुई होगी जैसे कि बहुत-सी हदीसों में यह तफ़सील से मौजूद है। फिर फ़रमाया कि उस दिन तुम से नेमतों के मुताल्लिक़ सवाल होगा। सेहत, अमन, रिज़्क़ वग़ैरह तमाम नेमतों के बारे में सवाल होगा कि इनका शुक्र कहाँ तक अदा किया। इब्ने अबी हातिम की एक ग़रीब हदीस में है कि ठीक दोपहर को रसूलुल्लाह सल्ल. अपने घर से चले, देखा कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. भी मस्जिद में आ रहे हैं। पूछा कि इस वक़्त कैसे निकले हो? कहा हुज़ूर! जिस चीज़ ने आपको निकाला है उसी ने मुझे भी निकाला है। इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. भी आ गये, उनसे भी हुज़ूर सल्ल. ने यही फ़रमाया और आपने भी यही जवाब दिया। फिर हुज़ूर सल्ल. ने इन दोनों बुज़ुर्गों से बातें करनी शुरू कीं, फिर फ़रमाया कि अगर हिम्मत हो तो उस बाग़ तक चले चलो खाना पीना मिल ही जायेगा और सायेदार जगह भी। हमने कहा बहुत अच्छा, पस आप हमें लेकर अबुल-हैसम अन्सारी रज़ि. के बाग़ के दरवाज़े पर आये, आपने सलाम किया और इजाज़त चाही। उम्मे हैसम अन्सारिया दरवाज़े के पीछे ही खड़ी थीं, सुन रही थीं लेकिन ऊँची आवाज़ से जवाब नहीं दिया, इस तमन्ना में कि ख़ुदा के रसूल और ज़्यादा सलामती कि दुआ़ करें और कई-कई मर्तबा आपका सलाम सुनें। जब तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल. सलाम कर चुके और कोई जवाब न मिला तो आप वापस चल दिये। अब तो अबुल-हैसम रज़ि. की बीवी साहिबा दौड़ीं और कहा हुज़ूर! मैं आपकी आवाज़ सुन रही थी, लेकिन मेरी तमन्ना थी कि ख़ुदा करे आप कई-कई मर्तबा सलाम करें, इसलिये मैंने अपनी आवाज़ आपको न सुनाई। आप सल्ल. तशरीफ़ ले चले आपने उनके इस फ़ेल को अच्छी नज़रों से देखा (यानी पसन्द किया)। फिर फ़रमाया कि अबुल-हैसम कहाँ हैं? उनकी बीवी ने कहा हुज़ूर! वह यहीं क़रीब ही पानी लेने गये हैं। आप तशरीफ़ लाईये इन्शा-अल्लाह वह आते ही होंगे। हुज़ूरे पाक सल्ल. बाग़ में दाख़िल हुए, उन बीवी ने एक सायेदार पेड़ के नीचे कुछ बिछा दिया जिस पर आप बैठ गये। इतने में अबुल-हैसम भी आ गये, बेहद ख़ुश हुए, आँखों को ठण्डक और दिल को सुख नसीब हुआ। जल्दी-जल्दी एक खजूर के दरख़्त पर चढ़ गये और अच्छे-अच्छे गुच्छे उतार-उतार कर देने लगे यहाँ तक कि ख़ुद आप सल्ल. ने रोक दिया। सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह! गदरी, तर और बिल्कुल पकी

हुई जिस तरह की चाहें खायें। जब खजूरें खा चुके तो मीठा पानी लाये जिसे पिया। फिर हुज़ूर सल्ल. फ़रमाने लगे यही वे नेमतें हैं जिनके बारे में खुदा के यहाँ सवाल होगा।

इब्ने जरीर की इसी हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र व हज़रत उमर रज़ि. बैठे हुए थे कि उनके पास हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- यहाँ कैसे बैठे हो? दोनों ने कहा हुज़ूर! भूख की वजह से घर से निकल खड़े हुए हैं। फ़रमाया उस खुदा की क़सम जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है, मैं भी इसी वजह से इस वक़्त निकला हूँ। अब आप सल्ल. उन्हें लेकर चले और एक अन्सारी सहाबी के घर आये, उनकी बीवी साहिबा मिल गयीं, पूछा कि तुम्हारे मियाँ कहाँ गये हैं? कहा घर के लिये मीठा पानी लाने गये हैं। इतने में वह मश्क उठाये हुए आ ही गये। खुश हो गये और कहने लगे मुझ जैसा खुश-क़िस्मत आज कोई भी नहीं जिसके घर अल्लाह के नबी तशरीफ़ लाये हैं। मश्क तो लटका दी और खुद जाकर खजूरों के ताज़ा-ताज़ा ख़ोशे (गुच्छे) ले आये। आप सल्ल. ने फ़रमाया- चुनकर अलग-अलग करके लाते, उन्होंने जवाब दिया कि हुज़ूर! मैंने चाहा कि आप अपनी तबीयत के मुताबिक़ अपनी पसन्द से चुन लें और खा लें। फिर छुरी हाथ में थामी कि कोई जानवर ज़िबह करके गोश्त पकायें तो आप सल्ल. ने फ़रमाया- दूध देने वाला जानवर ज़िबह न करना। चुनाँचे उन्होंने एक जानवर ज़िबह किया और आप सल्ल. ने वहीं खाना तनावुल फ़रमाया। फ़रमाने लगे देखो घर से भूखे निकले और पेट भरकर जा रहे हो, यही वे नेमतें हैं जिनके बारे में क़ियामत के दिन सवाल होगा।

रसूलुल्लाह सल्ल. के आज़ाद गुलाम हज़रत अबू अ़सीब रज़ि. का बयान है कि रात को रसूलुल्लाह सल्ल. ने मुझे आवाज़ दी, मैं निकला फिर हज़रत अबू बक्र को बुलाया फिर हज़रत उमर को बुलाया, फिर किसी अन्सारी सहाबी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया लाओ भाई खाने को दो। वह अंगूर के ख़ोशे (गुच्छे) उठा लाये और आपके सामने रख दिये। आपने और आपके साथियों ने खाये। फिर फ़रमाया ठण्डा पानी पिलाओ। वह लाये आपने पिया। फिर फ़रमाने लगे क़ियामत के दिन इसके बारे में सवाल होगा। हज़रत उमर रज़ि. ने वह ख़ोशा (गुच्छा) उठाकर ज़मीन पर दे मारा और कहने लगे इसके बारे में भी खुदा के यहाँ सवाल और पूछ होगी? आपने फ़रमाया हाँ सिर्फ़ तीन चीज़ों की तो पूछ नहीं, पर्दापोशी के लायक़ कपड़ा, भूख रोकने के क़ाबिल टुकड़ा और सर्दी गर्मी में सर छुपाने के लिये मकान। (मुस्नद अहमद)

मुस्नद की एक और हदीस में है कि जब यह सूरत नाज़िल हुई और हुज़ूर सल्ल. ने पढ़कर सुनाई तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहने लगे कि हमसे किस नेमत पर सवाल होगा? खजूरें खा रहे हैं और पानी पी रहे हैं, तलवारें गर्दनों में लटक रही हैं और दुश्मन सर पर खड़ा है। आप सल्ल. ने फ़रमाया घबराओ नहीं जल्दी ही नेमतें आ जायेंगी। हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम बैठे हुए थे कि हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाये और नहाये हुए मालूम होते थे। हमने कहा हुज़ूर! इस वक़्त तो आप खुश व प्रसन्न नज़र आते हैं। आपने फ़रमाया हाँ। फिर लोग मालदारी का ज़िक्र करने लगे। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया जिसके दिल में ख़ौफ़े खुदा हो उसके लिये मालदारी कोई बड़ी चीज़ ही नहीं, और याद रखो मुत्तक़ी शख़्स के लिये सेहत मालदारी से भी अच्छी है, और खुशी हासिल रहना भी खुदा की नेमत है। (मुस्नद अहमद)

इब्ने माजा में भी यह हदीस है, तिर्मिज़ी शरीफ़ में नेमतों के सवाल में क़ियामत वाले दिन सबसे पहले यह कहा जायेगा कि क्या हमने तुझे सेहत नहीं दी थी? और ठण्डे पानी से तुझे राहत नहीं पहुँचाया करते थे? इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि इस आयतः

Maktab E Ashraf

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ.

(यानी इस सूरत की आख़िरी आयत जिसमें नेमतों के बारे में सवाल होने का ज़िक्र है) को सुनकर सहाबा रज़ि. कहने लगे कि हुज़ूर! हम तो जौ की रोटी और वह भी आधा पेट खा रहे हैं, तो ख़ुदा की तरफ़ से वही आई कि क्या तुम पैर बचाने के लिये जूतियाँ नहीं पहनते? और क्या तुम ठण्डा पानी नहीं पीते? यही पूछगछ के क़ाबिल नेमतें हैं। एक और रिवायत में है कि अमन और सेहत को लेकर सवाल होगा। पेट भर खाने से, ठण्डे पानी से, सायेदार घरों से, मीठी नींद से भी सवाल होगा। शहद पीने से, लज़्ज़तें हासिल करने से, सुबह व शाम के खाने से, घी शहद और मेदे की रोटी वग़ैरह, ग़र्ज़ कि इन तमाम नेमतों के बारे में ख़ुदा के यहाँ सवाल होगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसकी तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि बदन की सेहत, कानों और आँखों की सेहत के बारे में सवाल होगा कि इन ताक़तों से क्या-क्या काम किये। जैसे क़ुरआने करीम में एक दूसरी जगह है:

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا.

हर शख़्स से उसकी आँख, उसके कान और उसके दिल के बारे में भी पूछ होगी।

सही बुख़ारी वग़ैरह की हदीस में है कि दो नेमतों के बारे में लोग बहुत ही ग़फ़लत बरत रहे हैं- सेहत और फ़राग़त। यानी न तो इनका पूरा शुक्र अदा करते हैं न इनकी अहमियत को जानते हैं, न इन्हें ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करते हैं। बज़्ज़ार में है कि तहबन्द, सायेदार दीवारों और रोटी के टुकड़े के सिवा हर चीज़ का क़ियामत के दिन हिसाब देना पड़ेगा। मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमायेगा ऐ इनसान! मैंने तुझे घोड़ों और ऊँटों पर सवार कराया, औरतें तेरे निकाह में दीं, तुझे मोहलत दी कि तू हंसी-ख़ुशी आराम व राहत से ज़िन्दगी गुज़ारे, अब बता कि इसका शुक्रिया कहाँ है (यानी इन नेमतों के बदले कितने नेक आमाल किये)?

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः तकासुर की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः अ़स्र

सूरः अ़स्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने मुसलमान होने से पहले एक मर्तबा मुसैलमा कज़्ज़ाब से मिले, उसने नुबुव्वत का झूठा दावा कर रखा था। हज़रत अ़मर रज़ि. को देखकर पूछने लगा कहो इस मुद्दत में तुम्हारे नबी पर भी कोई वही नाज़िल हुई है? हज़रत अ़मर रज़ि. ने जवाब दिया एक मुख़्तसर सी निहायत ही उम्दा सूरत उतरी है। पूछा वह क्या है? हज़रत अ़मर रज़ि. ने सूरः "वल्-अ़स्रि" पढ़कर सुनाई। मुसैलमा ज़रा देर तो सोचता रहा फिर कहने लगा- अ़मर! देखो मुझ पर भी इसी जैसी सूरत उतरी है।

Maktab E Ashraf

हज़रत अ़मर रज़ि. ने कहा वह क्या? कहा यहः

يَاوَبَرْيَاوَبَرْ. إِنَّمَا أَنْتَ أُذُنَانِ وَصَدْرٌ. وَسَتْرُكَ حُفَرٌ نَقَرٌ.

फिर कहने लगा अ़मर! कहो तुम्हारा क्या ख़्याल है? हज़रत अ़मर रज़ि. ने कहा मेरा ख़्याल तू ख़ुद ही जानता है कि मुझे तेरे झूठा होने का इल्म है। "वबर" बिल्ली जैसा एक जानवर है उसके दोनों कान ज़रा बड़े होते हैं और सीना भी, बाक़ी जिस्म बिल्कुल मामूली और छोटा होता है। उस कज़्ज़ाब (झूठे) ने ऐसी फ़ुज़ूल गोई और बकवास के साथ अल्लाह के कलाम के साथ मुक़ाबला करना चाहा जिसे सुनकर अ़रब के बुत परस्त लोगों ने भी उसका काज़िब (झूठा) और मुफ़्तरी होना समझ लिया। तबरानी में है कि दो सहाबियों का यह दस्तूर था कि जब मिलते एक इस सूरत को पढ़ता दूसरा सुनता। फिर सलाम करके रुख़्सत हो जाते।

फ़ायदाः हज़रत इमाम शाफ़ई रह. फ़रमाते हैं कि अगर लोग इस सूरत को सोच विचार के साथ पढ़ें और समझें तो यही एक सूरत काफ़ी है।

क़सम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा व नुक़सान वाक़े होता है) (1) कि इनसान (उम्र को ज़ाया करने की वजह से) बड़े घाटे में है, (2) मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद (पर क़ायम रहने) की नसीहत व तंबीह करते रहे, और एक-दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह करते रहे। (3)	وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

ع ۱ ۲۸

क़सम है ज़माने की

"अ़स्र" से मुराद ज़माना है जिसमें इनसान नेकी बदी के काम करता है। हज़रत ज़ैद बिन असलम रह. ने इससे मुराद अ़सर की नमाज़ या अ़सर की नमाज़ का वक़्त बयान किया है, लेकिन मशहूर पहला क़ौल ही है। इस क़सम के बाद बयान फ़रमाता है कि इनसान नुक़सान और टोटे में है, हाँ इस नुक़सान से बचने वाले वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान हो, आमाल में नेकियाँ हों, हक़ की वसीयतें करने वाले हों। यानी नेकी के काम करने और हराम कामों से रुकने की एक दूसरे को ताकीद करते हों, क़िस्मत के लिखे पर, मुसीबतों के बरदाश्त करने पर सब्र करते हों और दूसरों को भी इसी की तलक़ीन करते हों। साथ ही भली बातों का हुक्म करने और बुरी बातों से रोकने में लोगों की तरफ़ से जो बलायें और तकलीफ़ें पहुँचीं उनको बरदाश्त करते हों, और ऐसी ही तलक़ीन (हिदायत) अपने साथियों को भी करते हों, यह हैं जो इस खुले नुक़सान से अलग और बाहर (यानी बचे हुए) हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः अ़स्र की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः हु-मज़ह्

सूरः हु-मज़ह् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 9 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ نِۨO الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗO يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗO كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِO وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الْحُطَمَةُO نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُO الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِO اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌO فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍO	बड़ी ख़राबी है हर ऐसे शख़्स के लिए जो पीठ पीछे ऐब निकालने वाला हो (और) रू-ब-रू ताना देने वाला हो। (1) जो (हिर्स के ज़्यादा होने की वजह से) माल जमा करता हो, और (उसकी मुहब्बत और ख़ुशी से) उसको बार-बार गिनता हो। (2) वह ख़्याल कर रहा है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा। (3) हरगिज़ नहीं (रहेगा। फिर आगे उस ख़राबी की तफ़सीर है कि) अल्लाह की क़सम! वह शख़्स ऐसी आग में डाला जाएगा जिसमें जो कुछ पड़े वह उसको तोड़-फोड़ दे। (4) और आपको कुछ मालूम है कि वह तोड़-फोड़ करने वाली आग कैसी है? (5) वह अल्लाह की आग है जो (अल्लाह के हुक्म से) सुलगाई गई है, (6) जो (कि बदन को लगते ही) दिलों तक जा पहुँचेगी। (7) (और) वह (आग) उन पर बन्द कर दी जाएगी (8) (इस तरह से कि) वे लोग आग के बड़े लम्बे-लम्बे सुतूनों में (घिरे होंगे)। (9)

ع ۱ ۲۹

ये ग़ीबत करने के रोगी

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ज़बान से लोगों के ऐब बयान करने वाला, अपने कामों (हरकतों) से दूसरों की तौहीन करने वाला, ख़राबी वाला शख़्स है। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيْمٍ.

ताने देने वाला और चुग़लियाँ लगाने वाला। (सूरः क़लम आयत 11)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि इससे मुराद ताना देने वाला, ग़ीबत करने वाला है। रबीअ़ बिन अनस रज़ि. कहते हैं कि सामने बुरा कहना तो "हु-मज़" है और पीठ पीछे ऐब बयान करना "लु-मज़"

Maktab_E_Ashraf

है। क़तादा रह. कहते हैं कि ज़बान और आँख के इशारों से अल्लाह के बन्दों को सताना और चिड़ाना मुराद है, कि कभी तो उनका गोश्त खाये यानी ग़ीबत करे और कभी उन पर ताने मारे। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि "हु-मज़" हाथ और आँख से होता है और "लु-मज़" ज़बान से। बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद अख़्नस बिन शुरैक़ काफ़िर है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत आ़म है (यानी जिसके अन्दर भी यह बुरी सिफ़त हो वही मुराद है)।

फिर फ़रमाया कि जो माल जमा करता जाता है और गिन-गिनकर रखता जाता है। जैसे एक और जगह इरशाद है:

وَجَمَعَ فَاَوْعٰى.

और जमा किया होगा फिर उसको उठा-उठाकर रखा होगा।

हज़रत कअ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि दिन भर तो माल कमाने की हाय-वाय में लगा रहा और रात को सड़ी-भुसी लाश की तरह पड़ा रहा। उसका ख़्याल यह है कि उसका माल हमेशा दुनिया में रहेगा, हालाँकि हक़ीक़त यूँ नहीं, बल्कि यह बख़ील और लालची इनसान जहन्नम के उस तबक़े (दर्जे) में गिरेगा जो हर उस चीज़ को जो उसमें गिरे चूर-चूर कर देता है। फिर फ़रमाता है कि यह तोड़-फोड़ करने वाली क्या चीज़ है? ऐ नबी! इसका हाल तुम्हें मालूम नहीं। यह ख़ुदा की सुलगाई हुई आग है जो दिलों पर चढ़ जाती है, जलाकर भस्म कर देती है, लेकिन मरते नहीं। हज़रत साबित बनानी रह. जब इस आयत की तिलावत करके इसके यह मायने बयान करते तो रो देते और कहते- उन्हें अ़ज़ाब ने बड़ा सताया। मुहम्मद बिन कअ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि आग जलाती हुई हलक़ तक पहुँच जाती है फिर वापस लौटती है, यह आग उन पर हर तरफ़ से बन्द कर दी गयी है। जैसे कि सूरः बलद की तफ़सीर में गुज़रा। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह है और दूसरी सनद इसकी मौक़ूफ़ है। लोहा जो आग के जैसा है उसके सुतूनों में ये लम्बे-लम्बे दरवाज़े हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "बि-अ़मदिन्" है। उन जहन्नमियों की गर्दनों में ज़न्जीरें होंगी, ये लम्बे-लम्बे सुतूनों में जकड़े हुए होंगे और ऊपर से दरवाज़े बन्द कर दिये जायेंगे। उन आग के सुतूनों में उन्हें बड़े सख़्त अ़ज़ाब किये जायेंगे। अबू सालेह रह. फ़रमाते हैं- यानी वज़नी बेड़ियाँ और क़ैद व बन्द उनके लिये होंगी। अल्हम्दु लिल्लाह सूरः हु-मज़ह् की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः फ़ील

सूरः फ़ील मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

क्या आपको मालूम नहीं कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया? (1)	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ

Maktab E Ashraf

اَلْفِيلِ ۝ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِى
تَضْلِيلٍ ۝ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيلَ ۝
تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝
فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُولٍ ۝ ع ٥ ٣٠

क्या उनकी तदबीर को (जो कि काबा शरीफ़ को वीरान करने के बारे में थी) पूरी तरह ग़लत नहीं कर दिया? (2) और उन पर गिरोह के गिरोह परिन्दे भेजे (3) जो उन लोगों पर कंकर की पत्थरियाँ फेंकते थे। (4) सो अल्लाह तआ़ला ने उनको खाये हुए भूसे की तरह (पामाल) कर दिया। (5)

हाथी वालों का वाक़िआ़

अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने क़ुरैश पर जो अपना ख़ास इनाम फ़रमाया था उसका ज़िक्र कर रहा है कि जिस लश्कर ने हाथियों को साथ लेकर काबे को ढहाने के लिये चढ़ाई की थी, ख़ुदा तआ़ला ने इससे पहले कि वे काबे को गिरायें उनका नाम व निशान मिटा दिया। उनकी तमाम चालाकियाँ नाकाम कर दीं, उनकी तमाम क़ुव्वतें छीन लीं, उनको बरबाद व ग़ारत कर दिया। ये लोग मज़हब के एतिबार से ईसाई थे लेकिन दीने मसीही को बिगाड़ कर रख दिया था। क़रीब-क़रीब बुत परस्त हो गये थे। उन्हें इस तरह नाकाम करना यह गोया इशारा था हुज़ूरे पाक सल्ल. की बेसत (नबी बनकर तशरीफ़ लाने) का, और इत्तिला थी आपके जल्दी ही आने की। हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम उसी साल पैदा हुए, अक्सर इतिहासकारों का यही क़ौल है। तो गोया ख़ुदा तआ़ला फ़रमा रहा है कि ऐ क़ुरैश वालो! हब्शा के लश्कर पर तुम्हें फ़तह तुम्हारी भलाई की वजह से नहीं दी गयी थी बल्कि इसमें हमारे घर की हिफ़ाज़त थी जिसके शर्फ़ व बुज़ुर्गी, बड़ाई व इज़्ज़त को हम अपने आख़िरुज़्ज़माँ पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. की नुबुव्वत से बढ़ाने वाले थे। ग़र्ज़ कि अस्हाबे फ़ील (हाथी वालों) का मुख़्तसर वाक़िआ़ तो वह है जो बयान हुआ और तफ़सीली वाक़िआ़ "अस्हाबे उख़्दूद" के बयान (यानी सूरः बुरूज की आयत नम्बर 4 की तफ़सीर) में गुज़र चुका है कि क़बीला हिमयर का आख़िरी बादशाह ज़ू नव्वास जो मुश्रिक था, जिसने अपने ज़माने के मुसलमानों को खाईयों में क़त्ल किया था, जो सच्चे ईसाई थे और तायदाद में तक़रीबन बीस हज़ार थे सारे के सारे ही शहीद कर दिये गये थे, सिर्फ़ दौस ज़ू सालबान एक बच गया था। जो मुल्क शाम जा पहुँचा और रोम के बादशाह से फ़रियाद की और मदद चाही। यह बादशाह ईसाई मज़हब पर था, इसने हब्शा के बादशाह नजाशी को लिखा कि इसके साथ अपनी पूरी फ़ौज कर दो, इसलिये कि यहाँ से दुश्मन का मुल्क क़रीब था। उस बादशाह ने अरयात, अबू यक्सूम और अब्रहा बिन सबाह को लश्कर का सरदार बनाकर बहुत बड़ा लश्कर देकर दोनों को उसके दमन के लिये रवाना किया। यह लश्कर लेकर यमन पहुँचा, यमन को और यमन वालों को तहस-नहस कर दिया। ज़ू नव्वास भाग खड़ा हुआ, दरिया में डूबकर मर गया, उन लोगों की सल्तनत का ख़ात्मा हो गया और सारे यमन पर हब्शा के बादशाह का क़ब्ज़ा हो गया और ये दोनों सरदार यहाँ रहने सहने लगे। लेकिन कुछ थोड़ी ही मुद्दत के बाद इनमें मतभेद और विवाद हो गया, नौबत यहाँ तक पहुँची कि दोनों ने एक दूसरे के मुक़ाबिल सफ़ें बाँध लीं और लड़ने के लिये निकल आये। हमला हो इससे पहले ही इन दोनों सरदारों ने आपस में कहा कि फ़ौजों को लड़ाने और लोगों को क़त्ल कराने की क्या ज़रूरत है आओ हम तुम दोनों मैदान में निकलें और एक दूसरे से लड़कर फ़ैसला कर लें, जो ज़िन्दा बच जाये मुल्क व

Maktab E Ashraf

फ़ौज उसी की। चुनाँचे यह बात तय हो गयी और दोनों मैदान में निकल आये।

अरयात ने अब्रहा पर हमला किया और तलवार के एक ही वार से उसका चेहरा ज़ख़्मी कर दिया। नाक, होंठ और मुँह कट गया। अब्रहा के गुलाम अ़तूदा ने इस मौक़े पर अरयात पर एक तगड़ा हमला किया और उसे क़त्ल कर दिया। अब्रहा ज़ख़्मी होकर मैदान से ज़िन्दा वापस गया, इलाज व उपचार से ज़ख़्म अच्छे हो गये और यमन का यह मुस्तक़िल बादशाह बन बैठा। हब्शा के बादशाह नजाशी को जब यह वाक़िआ़ मालूम हुआ तो वह सख़्त गुस्सा हुआ और एक ख़त अब्रहा को लिखा। उसे बड़ी लानत मलामत की और कहा कि क़सम ख़ुदा की तेरे शहरों को मैं पामाल करूँगा और तेरी चोटी काट लाऊँगा। अब्रहा ने इसका जवाब निहायत आ़जिज़ी से लिखा और क़ासिद को बहुत सारे हदिये (तोहफ़े और उपहार) दिये और एक थेली में यमन की मिट्टी भर दी और अपनी पेशानी के बाल काटकर उसमें रख दिये, और अपने ख़त में अपने क़सूर की माफ़ी तलब की और लिखा कि यह यमन की मिट्टी हाज़िर है और मेरी चोटी के बाल भी, आप अपनी क़सम पूरी कीजिए और नाराज़गी माफ़ फ़रमाईये। इससे हब्शा का बादशाह ख़ुश हो गया और यहाँ की सरदारी उसी के नाम कर दी।

अब अब्रहा ने नजाशी को लिखा कि मैं यहाँ यमन में आपके लिये एक ऐसा गिरजा तामीर करा रहा हूँ कि अब तक दुनिया में ऐसा न बना हो। उस गिरजा घर को बनाना शुरू किया। बड़े एहतिमाम और धूम-धाम से बहुत ऊँचा बहुत मज़बूत बेहद ख़ूबसूरत और फूल-बूटे वाला गिरजा बनाया और वह इस क़द्र ऊँचा था कि चोटी तक नज़र डालने वाले की टोपी गिर पड़ती थी। इसी लिये अ़रब के लोग उसे क़ुल्लैस कहते थे, यानी टोपी फेंक देने वाला। अब अब्रहा अशरम को यह सूझी कि लोग बजाय काबतुल्लाह के हज के इसका हज करें। अपनी सारी हुकूमत में इसकी मुनादी करा दी। अ़दनानिया और क़हतानिया अ़रब को यह बहुत बुरा लगा, उधर से क़ुरैश भी भड़क उठे, थोड़े दिन में कोई शख़्स रात के वक़्त उसके अन्दर घुस गया और वहाँ पाख़ाना करके चला आया। चौकीदारों ने जब यह देखा तो बादशाह को ख़बर पहुँचाई और कहा कि यह काम मक्का के क़ुरैशियों का है। चूँकि आपने उनका काबा रोक दिया है लिहाज़ा उन्होंने जोश और आक्रोश में आकर यह हरकत की है। अब्रहा ने उसी वक़्त क़सम खा ली कि मैं मक्का पहुँचूँगा और बैतुल्लाह की ईंट से ईंट बजाऊँगा।

एक रिवायत में यूँ भी है कि क़ुरैश के चन्द नौजवानों ने उस गिरजा में आग लगा दी थी और उस वक़्त हवा भी बहुत तेज़ थी सारा गिरजा जल गया, मुँह के बल ज़मीन पर गिर गया और उस पर अब्रहा ने बहुत बड़ा लश्कर साथ लेकर मक्का पर चढ़ाई की ताकि कोई रोक न सके, और अपने साथ एक बड़ा ऊँचा और मोटा-ताज़ा हाथी लिया जिसे महमूद कहा जाता था कि उस जैसा हाथी और कोई न था। हब्शा के बादशाह ने यह हाथी उसके पास इसी ग़र्ज़ से भेजा था। आठ या बारह हाथी और भी साथ थे। यह काबा को ढहाने की नीयत से चला। यह सोचकर कि काबा की दीवारों में मज़बूत ज़न्जीरें डाल दूँगा और हाथियों की गर्दनों में उन ज़न्जीरों को बाँध दूँगा। हाथी एक ही झटके में चारों दीवारें बैतुल्लाह की जड़ से गिरा देंगे।

जब अ़रब वालों को ये ख़बरें मालूम हुईं तो उन पर बड़ा असर पड़ा और उन्होंने इरादा कर लिया कि चाहे कुछ भी हो हम उसका मुक़ाबला करेंगे और उसको बुरे इरादे से रोकेंगे। एक यमनी शरीफ़ सरदार जो वहाँ के बादशाह की औलाद में से था, जिसे ज़ू नफ़र कहा जाता था, यह खड़ा हो गया, अपनी क़ौम और आस-पास के तमाम अ़रब वालों को जमा किया और बदनीयत बादशाह से मुक़ाबला किया, लेकिन क़ुदरत

को कुछ और ही मन्ज़ूर था, अ़रब वालों को शिकस्त हुई और ज़ू नफ़र उस ख़बीस के हाथ क़ैद हो गया। उसने इसे भी साथ लिया और मक्का शरीफ़ की तरफ़ बढ़ा। क़बीला ख़स्अ़म की ज़मीन पर जब यह पहुँचा तो यहाँ नुफ़ैल बिन हबीब ख़स्अ़मी ने अपने लश्करों से इसका मुक़ाबला किया लेकिन अब्रहा ने उन्हें भी मग़लूब कर लिया और नुफ़ैल भी क़ैद हो गया। पहले तो उस ज़ालिम ने उसे क़त्ल करना चाहा लेकिन फिर क़त्ल न किया और क़ैद करके साथ ले लिया ताकि रास्ता बताये। ताईफ़ के क़रीब पहुँचा तो क़बीला सक़ीफ़ ने इससे सुलह कर ली कि ऐसा न हो उनके बुतख़ानों को जिसमें लात नाम का बुत था, यह तोड़ दे। इसने भी उनकी बड़ी आव-भगत की। उन्होंने अबू रिग़ाल को उसके साथ कर दिया कि यह तुम्हें वहाँ का रास्ता बतायेगा।

अब्रहा जब मक्के के बिल्कुल क़रीब मुग़मस के मक़ाम पर पहुँचा तो उसने यहाँ पड़ाव किया। उसके लश्कर ने आस-पास मक्का वालों को जो जानवर ऊँट वग़ैरह चुग रहे थे सब को अपने क़ब्ज़े में किया। उन जानवरों में दो सौ ऊँट तो सिर्फ़ अ़ब्दुल-मुत्तलिब के थे। अस्वद बिन मफ़सूद जो उसके लश्कर के अगले हिस्से का सरदार था उसने अब्रहा के हुक्म से उन जानवरों को लूटा था। जिस पर अ़रब के शायरों ने उसकी निंदा में अश्आ़र लिखे हैं जो सीरत इब्ने इस्हाक़ में मौजूद हैं। अब अब्रहा ने अपना क़ासिद हुनाता हिमयरी को मक्का वालों के पास भेजा कि मक्का के सब से बड़े सरदार को मेरे पास लाओ और यह भी ऐलान कर दो कि मैं मक्का वालों से लड़ने को नहीं आया, मेरा इरादा सिर्फ़ बैतुल्लाह को गिराने का है। हाँ अगर मक्का वाले उसके बचाने के लिये सामने आए तो मजबूरन मुझे उनसे लड़ाई करनी पड़ेगी। हुनाता जब मक्का में आया और लोगों से मिला-जुला तो मालूम हुआ कि यहाँ बड़ा सरदार अ़ब्दुल-मुत्तलिब बिन हाशिम है। यह अ़ब्दुल-मुत्तलिब से मिला और शाही पैग़ाम पहुँचाया जिसके जवाब में अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने कहा वल्लाह न हमारा इरादा उससे लड़ने का है न हम में इतनी ताक़त है, यह ख़ुदा का इ़ज़्ज़त व हुर्मत वाला घर है, उसके ख़लील हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दा यादगार है, ख़ुदा अगर चाहेगा तो अपने घर की आप हिफ़ाज़त करेगा, वरना हम में तो हिम्मत व क़ुव्वत नहीं। हुनाता ने कहा अच्छा तो आप मेरे साथ बादशाह तक चले चलिये। अ़ब्दुल मुत्तलिब साथ हुए। बादशाह ने जब उन्हें देखा तो हैबत (रौब) में आ गया। अ़ब्दुल-मुत्तलिब गोरे चिट्टे सुडौल और मज़बूत हाथ-पैर वाले हसीन व जमील इनसान थे। देखते ही अब्रहा तख़्त से नीचे उतर आया और फ़र्श पर अ़ब्दुल-मुत्तलिब के साथ बैठ गया और अपने तर्जुमान से कहा- इनसे पूछ कि क्या चाहते हैं? अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने कहा मेरे दो सौ ऊँट जो बादशाह ने ले लिये हैं, उन्हें वापस कर दिया जाये। बादशाह ने कहा इनसे कह दे कि पहली नज़र में तो तेरा रौब मुझ पर पड़ा था और मेरे दिल में तेरी वक़्अ़त बैठ गयी थी, लेकिन पहले कलाम में तूने सब कुछ खो दी। अपने दो सौ ऊँट की तो तुझे फ़िक्र है और अपने और अपनी क़ौम के दीन की तुझे फ़िक्र नहीं? मैं तो तुम लोगों का इबादत ख़ाना तोड़ने और उसे ख़ाक में मिलाने के लिये आया हूँ। अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने जवाब दिया कि सुन बादशाह! ऊँट तो मेरे हैं इसलिये उन्हें बचाने की कोशिश में मैं हूँ और ख़ाना काबा ख़ुदा का है वह ख़ुद उसे बचा लेगा। इस पर यह सरकश कहने लगा कि ख़ुदा भी आज उसे मेरे हाथ से नहीं बचा सकता। अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने कहा बेहतर है, वह जाने और तू जाने।

यह भी मन्क़ूल है कि मक्का वालों ने तमाम हिजाज़ का तिहाई माल अब्रहा को देना चाहा कि वह अपने इस ग़लत इरादे से बाज़ आये लेकिन उसने क़बूल न किया। ख़ैर! अ़ब्दुल-मुत्तलिब तो अपने ऊँट लेकर चल दिये और आकर क़ुरैश को हुक्म दिया कि मक्का बिल्कुल ख़ाली कर दो, पहाड़ों में चले जाओ।

Maktab E Ashraf

अब अ़ब्दुल-मुत्तलिब अपने साथ क़ुरैश के चुनिन्दा लोगों को लेकर बैतुल्लाह में आया और बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुण्डा थामकर रो-रोकर गिड़गिड़ाकर दुआ़यें माँगनी शुरू कीं कि बारी तआ़ला! अब्रहा और उसके ख़ूँख़्वार लश्कर से अपने पाक और इज़्ज़त वाले घर को बचा ले। अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने उस वक़्त यह दुआ़ के अश्आर पढ़ेः

لَاهُمَّ اِنَّ الْمَرْءَ يَمْنَعُ فَامْنَعْ رِحَالَكَ ☆ لَا يَغْلِبَنَّ صَلِيْبُهُمْ وَمَحَالُهُمْ اَبَدًا مِحَالَكَ

यानी हम बेफ़िक्र हैं, हम जानते हैं कि हर घर वाला अपने घर का बचाव आप करता है। ख़ुदाया! तू भी अपने घर को अपने दुश्मनों से बचा। यह तो हरगिज़ नहीं हो सकता कि उनकी सलीब और उनकी डोलें तेरी डोलों पर ग़ालिब आ जायें।

अब अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुण्डा हाथ से छोड़ दिया और अपने तमाम साथियों को लेकर आस-पास के पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ गया। यह भी मज़कूर है कि जाते हुए क़ुरबानी के सौ ऊँट बैतुल्लाह के इर्द-गिर्द निशान लगाकर छोड़ दिये थे, इस नीयत से कि अगर वे बद्दीन आये और उन्होंने ख़ुदा के नाम की क़ुरबानी के इन जानवरों को छेड़ा तो अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर उतरेगा। दूसरी सुबह अब्रहा के लश्कर में मक्का में जाने की तैयारियाँ होने लगीं। अपना ख़ास हाथी जिसका नाम महमूद था, उसे तैयार किया, लश्कर में कमर बन्दी हो चुकी और मक्का शरीफ़ की तरफ़ मुँह उठाकर चलने की तैयारी की। उस वक़्त नुफ़ैल बिन हबीब जो उससे रास्ता में लड़ा था और अब बतौर क़ैदी के उसके साथ था, वह आगे बढ़ा, शाही हाथी का कान पकड़ लिया और कहा महमूद! बैठ जा और जहाँ से आया है वहीं ख़ैरियत के साथ चला जा, तू ख़ुदा तआ़ला के इज़्ज़त वाले शहर में है। यह कहकर कान छोड़ दिया और भागकर क़रीब की पहाड़ी में जा छुपा। महमूद हाथी यह सुनते ही बैठ गया। अब फ़ीलबान हज़ार जतन कर रहे हैं, लश्करी भी कोशिशें करते करते थक गये लेकिन हाथी अपनी जगह से हिला ही नहीं। सर पर आंकस मार रहे हैं, इधर-उधर से भाले और बरछे मार रहे हैं, आँखों में आंकस डाल रहे हैं, ग़र्ज़ तमाम जतन कर लिये लेकिन हाथी हरकत भी नहीं करता। फिर इम्तिहान के लिये उसका मुँह यमन की तरफ़ किया और चलाना चाहा तो झट से खड़ा होकर दौड़ता हुआ चल दिया। शाम की तरफ़ चलाना चाहा तो भी पूरी ताक़त से आगे बढ़ गया। पूरब की तरफ़ ले जाना चाहा तो भी भागा-भागा गया। फिर मक्का शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके आगे बढ़ाना चाहा तो वहीं बैठ गया। उन्होंने फिर उसे मारना पीटना शुरू किया तो देखा कि एक घटा टोप परिन्दों का झुरमुट बादल की तरह समन्दर के किनारे की तरफ़ से उमड़ा चला आ रहा है। अभी पूरी तरह देखने भी न पाये थे कि वे जानवर सर पर आ गये। हर तरफ़ से सारे लश्कर को घेर लिया, उनमें से हर एक की चोंच में एक मसूर या माश के दाने के बराबर कंकरी थी और दोनों पंजों में दो कंकरियाँ थीं। ये उन पर फेंकने लगे, जिस पर कंकरी आ पड़ी वह वहीं हलाक हो गया।

अब तो इस लश्कर में भगदड़ पड़ गयी। हर एक नुफ़ैल नुफ़ैल करने लगा, क्योंकि उसे इन लोगों ने अपना रहबर और रास्ता बताने वाला समझ रखा था। नुफ़ैल तो हाथी को कहकर पहाड़ पर चढ़ गया था और दूसरे मक्का वाले इन लोगों की यह दुर्गती अपनी आँखों से देख रहे थे और नुफ़ैल वहीं खड़ा यह शे'र पढ़ रहा थाः

اَيْنَ الْمَفَرُّ وَالْاِلٰهُ الطَّالِبُ ☆ وَالْاَشْرَمُ الْمَغْلُوْبُ لَيْسَ الْغَالِبُ

अब पनाह की जगह कहाँ है? जबकि खुदा खुद ताक में लग गया है। सुनो! अशरम बदबख़्त मग़लूब हो गया अब यह नहीं पनपेगा।

Maktab E Ashraf

और भी नुफ़ैल ने इस वाक़िए के मुताल्लिक़ बहुत से अश्आर कहे हैं, जिनमें इस क़िस्से को बयान किया और कहा है कि काश तू उस वक़्त मौजूद होता जबकि उन हाथी वालों की शामत आयी है और मिहसब की वादी में उन पर अ़ज़ाब के संगरेज़े (कंकरियाँ) बरसे हैं। तू उस वक़्त तो उस ग़ैबी लश्कर यानी परिन्दों को देखकर निश्चित तौर पर सज्दे में गिर पड़ता, हम तो वहाँ खड़े अल्लाह की तारीफ़ कर रहे थे और उसके गुणगान कर रहे थे, अगरचे कलेजे हमारे भी मुँह को आ गये थे कि कहीं कोई कंकरी हमारा काम भी तमाम न कर दे। ईसाई मुँह मोड़े भाग रहे थे और नुफ़ैल नुफ़ैल पुकार रहे थे, गोया कि नुफ़ैल पर उनके बाप-दादों का कोई क़र्ज़ था।

वाक़दी रह. फ़रमाते हैं कि ये परिन्दे पीले रंग के थे। कबूतर से कुछ छोटे थे। उनके पाँव सुर्ख़ थे। और एक रिवायत में है कि जब महमूद हाथी बैठ गया और पूरी कोशिश के बावजूद भी न उठा तो उन्होंने दूसरे हाथी को आगे किया, उसने क़दम बढ़ाया ही था कि उसके सर पर कंकरी पड़ी और वह बिलबिला कर पीछे हटा और फिर दूसरे हाथी भी भाग खड़े हुए और उधर बराबर कंकरियाँ आने लगीं। अक्सर तो वहीं ढेर हो गये और बाज़े जो इधर-उधर भाग निकले थे उनमें से भी कोई ज़िन्दा न बचा, भागते भागते उनके बदन के हिस्से कट-कटकर गिरते जाते थे और आख़िरकार जान से जाते थे।

अब्रहा बादशाह भी भागा लेकिन बदन का एक-एक अंग झड़ना शुरू हुआ, यहाँ तक ख़स्अ़म के शहरों में से सनआ़ में जब वह पहुँचा तो बिल्कुल गोश्त का लोथड़ा बना हुआ था, वहीं बिलक-बिलक कर दम तोड़ा और कुत्ते की मौत मरा। दिल तक फट गया था। क़ुरैशियों को बड़ा माल हाथ लगा। अ़ब्दुल-मुत्तलिब ने तो सोने से एक कुआँ भर लिया था। अ़रब की ज़मीन में आबला और चेचक इसी साल पैदा होते देखे गये और इसी तरह स्पन्द और हन्ज़ल वग़ैरह के कड़वे दरख़्त भी इसी साल अ़रब की ज़मीन में देखे गये।

पस अल्लाह तआ़ला रसूले करीम सल्ल. की ज़बाने मुबारक से अपनी यह नेमत याद दिलाता है और गोया फ़रमाया जा रहा है कि अगर तुम मेरे घर की इसी तरह इज़्ज़त व हुर्मत करते रहते और मेरे रसूल का कहना मानते तो मैं भी इसी तरह तुम्हारी हिफ़ाज़त करता और दुश्मनों से निजात देता।

"अबाबील" जमा (बहुवचन) का कलिमा है। "सिज्जील" के मायने हैं बहुत सख़्त और बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह दो फ़ारसी लफ़्ज़ों से मिलकर बना है यानी संग और गिल से, यानी पत्थर और मिट्टी। ग़र्ज़ कि "सिज्जील" वह है जिसमें पत्थर मय मिट्टी के हो। "अ़स्फ़" जमा "अ़स्फ़ुतुन" की, खेती के उन पत्तों को कहते हैं अभी पके न हों। "अबाबील" के मायने हैं गिरोह के गिरोह, झुण्ड के झुण्ड, बहुत सारे, लगातार जमा होने वाले, इधर उधर से आने वाले।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उन परिन्दों की चोंच तो थी परिन्दों जैसी और पंजे थे कुत्तों जैसे। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि ये हरे रंग के परिन्दे थे जो समन्दर से निकले थे। उनके सर दरिन्दों जैसे थे। और अक़वाल भी हैं। ये परिन्दे बाक़ायदा उन लश्कर वालों के सरों पर क़तार बाँधकर खड़े हो गये, फिर चीख़ने लगे और फिर पथराव किया। जिसके सर पर गिरा उसके नीचे से निकल गया और दो टुकड़े होकर वह ज़मीन पर गिर पड़ा। जिसके किसी अंग पर गिरा उसका वह अंग कटकर गिर पड़ा। साथ ही तेज़ आँधी आयी जिससे और आस-पास के कंकर भी उनकी आँखों में घुस गये और सब ऊपर-नीचे हो

गये। "अ़स्फ़" कहते हैं चारे कुट्टी को और गेहूँ के पौधे के पत्तों को, और "मअ्कूल" से मुराद टुकड़े टुकड़े किया हुआ है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि अ़स्फ़ कहते हैं भूसी को जो अनाज के दानों के ऊपर होती है। इब्ने ज़ैद रह. फ़रमाते हैं कि मुराद खेतियों के वे पत्ते हैं जिन्हें जानवर चर चुके हों। मतलब यह है कि ख़ुदा तआ़ला ने उनको तहस-नहस कर दिया, फिर कोई भलाई उन्हें नसीब न हुई। ऐसा भी कोई उनमें सही व सालिम न रहा कि उनकी ख़बर पहुँचाये। जो भी बचा वह ज़ख़्मी होकर और उस ज़ख़्म से फिर ज़िन्दा न रह सका। ख़ुद बादशाह भी जो एक गोश्त के लोथड़े की तरह हो गया था, ज्यों का त्यों सनआ़ में पहुँचा लेकिन वहाँ जाते ही उसका कलेजा फट गया और वाक़िआ़ बयान कर ही चुका था कि वह मर गया। उसके बाद उसका लड़का यक्सूम यमन का बादशाह बना। फिर उसके दूसरे भाई मसरूक़ बिन अब्रहा को सल्तनत मिली। अब सैफ़ बिन ज़ी यज़न हिमयरी किसरा के दरबार में पहुँचा और उससे मदद तलब की ताकि वह हब्शा वालों से लड़े और यमन उनसे ख़ाली कराये। किसरा ने उसके साथ एक बड़ा लश्कर कर दिया। उस लश्कर ने हब्शा वालों को शिकस्त दी और अब्रहा के ख़ानदान के हाथ से सल्तनत निकल गयी और फिर क़बीला हिमयर यहाँ का बादशाह बन गया। अ़रब वालों ने इस पर बड़ी ख़ुशी मनाई और हर तरफ़ से मुबारकबादियाँ मिलीं।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि अब्रहा के लश्कर के फ़ीलबान (महावत) और चिरकटे को मैंने मक्का शरीफ़ में देखा, दोनों अन्धे हो गये थे, चल-फिर नहीं सकते थे और भीख माँगा करते थे। हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इसाफ़ और नायला बुतों के पास ये बैठे रहते थे जहाँ मुश्रिक लोग अपनी क़ुरबानियाँ करते थे, और लोगों से भीख माँगते फिरते थे। इस फ़ीलबान (महावत) का नाम अनीसा था। बाज़ तारीख़ों में यह भी है कि अब्रहा ख़ुद उस चढ़ाई में न था बल्कि उसने अपने लश्कर को अस्वद बिन मफ़सूद की सरदारी में भेजा था, यह लश्कर बीस हज़ार का था और ये परिन्दे उनके ऊपर रात के वक़्त आये थे और सुबह तक उन सब का ख़ात्मा हो चुका था। लेकिन यह रिवायत बहुत ग़रीब है और सही बात यह है कि ख़ुद अब्रहा अश्रम हब्शी ही अपने साथ लश्कर लेकर आया था, मुम्किन है कि उसके लश्कर के अगले हिस्से पर यह शख़्स सरदार हो। इस वाक़िए को बहुत से अ़रब शायरों ने अपने-अपने शे'रों में भी तफ़सील के साथ बयान किया है। सूरः फ़तह की तफ़सीर में हम इस वाक़िए को मुफ़स्सल (विस्तार से) बयान कर आये हैं। जिसमें है कि जब हुदैबिया वाले दिन रसूलुल्लाह सल्ल. उस टीले पर चढ़े जहाँ से आप क़ुरैश वालों पर जाने वाले थे तो आपकी ऊँटनी बैठ गयी। लोगों ने उसे डाँटा लेकिन वह न उठी। लोग कहने लगे क़सवा थक गयी, आपने फ़रमाया न यह थकी न इसमें अड़ लगाने की आ़दत, इसे ख़ुदा ने रोक लिया, जिसने हाथियों को रोक लिया था। फिर फ़रमाया- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मक्के वाले जिन शर्तों पर मुझसे सुलह चाहेंगे सब मान लूँगा, बशर्ते कि ख़ुदा की हुर्मतों (सम्मानित चीज़ों और अहकाम) की उसमें तौहीन न हो। फिर आप सल्ल. ने उसे डाँटा तो वह फ़ौरन उठ खड़ी हुई। यह हदीस सही बुख़ारी में है। बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने मक्का पर से हाथियों को रोक लिया और अपने नबी सल्ल. को। सुनो आज उसकी हुर्मत (सम्मान व इज़्ज़त) वैसे ही लौटकर आ गयी है जैसे कल थी। ख़बरदार हाज़िर ग़ायब को पहुँचा दे (यानी जो यहाँ मौजूद है वह उसको पहुँचा दे जो यहाँ मौजूद नहीं)।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः फ़ील की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः क़ुरैश

सूरः क़ुरैश मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सूरः क़ुरैश की फ़ज़ीलतः- एक ग़रीब हदीस बैहक़ी की किताब "ख़िलाफ़ियात" में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने क़ुरैश वालों को सात फ़ज़ीलतें दी हैं, एक तो यह कि मैं उनमें से हूँ। दूसरे यह कि नुबुव्वत उनमें है। तीसरे यह कि बैतुल्लाह के पासबान (निगराँ) ये हैं। चौथे यह कि ज़मज़म के कुएँ साक़ी ये हैं। पाँचवे यह कि ख़ुदा ने उन्हें हाथी वालों पर ग़ालिब किया। छठे यह कि दस साल तक उन्होंने अल्लाह की इबादत की जबकि और कोई अल्लाह की इबादत न करता था। सातवें यह कि उनके बारे में क़ुरआने करीम की यह सूरत नाज़िल हुई। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बिस्मिल्लि-हिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर यह सूरत तिलावत फ़रमाई।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ○ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ○ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ○ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ○	चूँकि क़ुरैश आ़दी हो गए हैं। (1) यानी जाड़े और गर्मी के सफ़र के आ़दी हो गए हैं। (2) तो (इस नेमत के शुक्रिए में) उनको चाहिए कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक की इबादत करें (3) जिसने उनको भूख में खाने को दिया और ख़ौफ़ से उनको अमन दिया। (4)

ع ١

रिज़्क़ की ज़्यादती और अमन-चैन की दौलत

मौजूदा उस्मानी क़ुरआन की तरतीब में यह सूरत सूरः फ़ील से अलग है और दोनों के दरमियान "बिस्मिल्लिाह" की आयत का फ़ासला मौजूद है। मज़मून के एतिबार से यह सूरत पहली सूरत के मुताल्लिक़ ही है जैसे कि मुहम्मद बिन इस्हाक़ और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन असलम वग़ैरह ने वज़ाहत की है। इस बिना पर मायने यह होंगे कि हमने मक्का पर हमलावर हाथियों को रोका और हाथी वालों को हलाक किया। यह क़ुरैशियों को उल्फ़त दिलाने और उन्हें इज्तिमा के साथ अमन के साथ इस शहर में रहने सहने के लिये था। और यह मुराद भी बयान की गयी है कि ये क़ुरैशी लोग जाड़ों में क्या और गर्मियों में क्या, दूर दराज़ के सफ़र अमन व अमान से तय कर सकते थे क्योंकि मक्का जैसे एहतिराम वाले शहर में रहने की वजह से हर जगह इनको इज़्ज़त मिलती थी, बल्कि इनके साथ भी जो होता था वह अमन व अमान से सफ़र तय कर लेता था। इसी तरह वतन में हर तरह का अमन उन्हें हासिल था जैसे कि एक दूसर मौक़े पर क़ुरआने करीम में मौजूद है कि क्या ये नहीं देखते कि हमने हरम को अमन वाली जगह बना

दिया है, उसके आस-पास तो लोग अग़वा कर लिये जाते हैं लेकिन यहाँ के रहने वाले महफ़ूज़ हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि "लि-ईलाफ़ि" में पहला लाम ताज्जुब का लाम है और दोनों सूरतें (सूरः) बिल्कुल अलग-अलग हैं, जैसा कि मुसलमानों का इजमा (सब की एक राय) है। तो गोया यूँ फ़रमाया जा रहा है कि तुम क़ुरैशियों के इस इजमा (मेल-मिलाप) और उल्फ़त (मुहब्बत) पर ताज्जुब करो कि मैंने उन्हें कैसी भारी नेमत अ़ता फ़रमा रखी है। उन्हें चाहिये कि मेरी इस नेमत का शुक्र इस तरह अदा करें कि सिर्फ़ मेरी ही इबादत करते रहें। जैसे एक और जगह है:

قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا..... الخ.

यानी ऐ नबी! तुम कह दो कि मुझे तो सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर के रब की ही इबादत करूँ जिसने इसे हरम (इ़ज़्ज़त वाला) बनाया जो हर चीज़ का मालिक है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसका मुतीअ़ और फ़रमाँबरदार रहूँ।

फिर फ़रमाता है वह काबे का रब जिसने इन्हें भूख में खिलाया और ख़ौफ़ की हालत में महफ़ूज़ रखा। उन्हें चाहिये कि उसकी इबादत में किसी छोटे बड़े को शरीक न ठहरायें, जो ख़ुदा के इस हुक्म का पालन करेगा वह दुनिया के इस अमन के साथ आख़िरत के दिन भी अमन व अमान से रहेगा। और उसकी नाफ़रमानी करने से यह अमन भी बेअमनी, आख़िरत का अमन भी डर ख़ौफ़ और इन्तिहाई मायूसी से बदल जायेगा। जैसे और एक मौक़े पर फ़रमायाः

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً...... الخ.

अल्लाह तआ़ला उन बस्ती वालों की मिसाल बयान फ़रमाता है जो अमन व इत्मीनान के साथ थे, हर जगह से आसानी से और ख़ूब ज़्यादा रोज़ियाँ खिंची चली आती थीं। लेकिन उन्हें ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री करने की सूझी, चुनाँचे ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें भूख और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया। यही उनके बुरे आमाल का बदला था। उनके पास उन ही में से ख़ुदा के भेजे हुए पैग़म्बर आये लेकिन उन्होंने उनको झुठलाया, इस ज़ुल्म पर ख़ुदा के अ़ज़ाब ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ क़ुरैशियो! तुम्हें तो ख़ुदा यूँ राहत व आराम पहुँचाये, घर बैठे खिलाये पिलाये, हर तरफ़ बद्अमनी (अशान्ति) की आग के शोले भड़क रहे हों और तुम्हें अमन व अमान से मीठी नींद सुलाये, फिर तुम पर क्या मुसीबत है जो तुम अपने उस परवर्दिगार की तौहीद (एक मानने) से जी चुराओ और उसकी इबादत में दिल न लगाओ, बल्कि उसके सिवा दूसरों के आगे सर झुकाओ।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः क़ुरैश की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः माऊ़न

सूरः माऊ़न मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِO فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَO وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِO فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَO الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَO الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَO وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَO	क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जो कि़यामत के दिन को झुठलाता है। (1) सो (अगर आप उस शख़्स का हाल सुनना चाहें तो सुनिये कि) वह वह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है। (2) और मोहताज को खाना देने की (दूसरों को भी) तरग़ीब नहीं देता। (3) सो (इससे साबित हुआ कि) ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है (4) जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते (यानी छोड़ देते) हैं (5) जो ऐसे हैं कि (जब नमाज़ पढ़ते हैं तो) दिखावा करते हैं। (6) और ज़कात बिल्कुल नहीं देते। (7)

ع ١
٣٢

ये लोग अपनी करतूत की सज़ा पायेंगे

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद! तुमने उस शख़्स को देखा जो कि़यामत के दिन को जो जज़ा व सज़ा का दिन है, झुठलाता है। यतीम पर ज़ुल्म करता है, उसका हक़ मारता है, उसके साथ सुलूक व एहसान नहीं करता। मिस्कीनों को ख़ुद क्या देता दूसरों को भी ख़ैर के कामों पर आमादा नहीं करता। जैसे एक और जगह है:

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ. وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ.

यानी जो बुराई तुम्हें पहुँची है वह तुम्हारे आमाल का नतीजा है। न तुम यतीमों की इ़ज़्ज़त करते हो न मिस्कीनों को खाना देने की रग़बत दिलाते हो। यानी उस फ़क़ीर को जो इतना नहीं हासिल कर पाता कि उसे काफ़ी हो।

फिर इरशाद होता है कि नमाज़ के साथ ग़फ़लत करने वालों के लिये "वैल" है। यानी उन मुनाफ़िक़ों के लिये जो लोगों के सामने तो नमाज़ अदा करें वरना कुछ भी नहीं। यही मायने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने किये हैं और यह भी मायने हैं कि मुक़र्रर किये गये वक़्त को टाल देते हैं जैसे कि इमाम मसरूक़ और अबुज़्ज़ुहा कहते हैं। हज़रत अ़ता बिन दीनार रह. फ़रमाते हैं- ख़ुदा का शुक्र है कि फ़रमाने बारी में "अ़न् सलातिहिम्" (अपनी नमाज़ों से) है "फ़ी सलातिहम" (अपनी नमाज़ों में) नहीं। यानी नमाज़ों से ग़फ़लत

करते हैं फ़रमाया, नमाज़ों में ग़फ़लत बरतते हैं नहीं फ़रमाया। इसी तरह यह लफ़्ज़ शामिल है ऐसे नमाज़ी को भी जो हमेशा नमाज़ को आख़िरी वक़्त में अदा करे या उमूमन आख़िरी वक़्त में पढ़े या अरकान व शराईत की पूरी रियायत (ख़्याल) न करे, या ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और ध्यान व तवज्जोह से काम न ले। क़ुरआन के अलफ़ाज़ इनमें से हर एक को शामिल हैं। ये सब बातें जिसमें हों वह तो पूरा-पूरा बदनसीब है, और जिसमें जितनी हों उतना ही वह वैल (हलाकत व तबाही) वाला और अ़मली निफ़ाक़ का हिस्सेदार है। सहीहैन की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है कि बैठा हुआ सूरज का इन्तिज़ार करता रहे जब वह ग़ुरूब होने के क़रीब पहुँचे और शैतान अपने सींग उसमें मिला ले तो खड़ा हो और मुर्ग़ की तरह चार ठोंगे मारे (यानी जल्दी-जल्दी बेध्यानी से नमाज़ को सर से उतार ले) जिसमें ख़ुदा का ज़िक्र बहुत ही कम करे। यहाँ मुराद अ़सर की नमाज़ है जो बीच की नमाज़ है जैसा कि हदीस के लफ़्ज़ों से साबित है। यह शख़्स मकरूह वक़्त में खड़ा होता है और कौए की तरह चोंचें मार लेता है जिसमें इत्मीनान से अरकान भी अदा नहीं होते, न ख़ुशूअ़ न ख़ुज़ूअ़ होता है, बल्कि अल्लाह का ज़िक्र भी बहुत ही कम होता है, और क्या अ़जब कि यह नमाज़ सिर्फ़ दिखावे की नमाज़ हो, तो पढ़ी न पढ़ी बराबर है। इन्हीं मुनाफ़िक़ों के बारे में एक दूसरी जगह यह इरशाद है:

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوْٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى. يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ إِلَّا قَلِيْلًا.

यानी मुनाफ़िक़ ख़ुदा को धोखा देते हैं और वह उन्हें। ये जब भी नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो थके हारे, बेदिली से, सिर्फ़ लोगों के दिखावे के लिये नमाज़ अदा करते हैं। ख़ुदा की याद बहुत ही कम करते हैं।

यहाँ भी फ़रमाया कि ये रियाकारी करते हैं। लोगों में नमाज़ी बनते हैं। तबरानी की एक हदीस में है कि "वैल" जहन्नम की एक वादी का नाम है जिसकी आग इस क़द्र तेज़ है कि जहन्नम की दूसरी आग उससे हर दिन चार सौ मर्तबा पनाह माँगती है। यह वैल इस उम्मत के रियाकार (दिखावा करने वाले) उलेमा के लिये है और रियाकारी के तौर पर सदक़ा ख़ैरात करने वालों के लिये है और रियाकारी के तौर पर हज करने वालों के लिये है और रियाकारी के तौर पर जिहाद करने वालों के लिये है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स दूसरों को सुनाने के लिये कोई नेक काम करे अल्लाह तआ़ला भी लोगों को सुनाकर अ़ज़ाब करेगा और उसे ज़लील व हक़ीर करेगा। हाँ इस मौक़े पर यह याद रहे कि अगर किसी शख़्स ने बिल्कुल नेक नीयती से कोई अच्छा काम किया और लोगों को उसकी ख़बर हो गयी, इस पर उसे भी ख़ुशी हुई तो यह रियाकारी नहीं। इसकी दलील मुस्नद अहमद, अबू यअ़ला मूसली की यह हदीस है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने सरकारे नबवी सल्ल. में यह ज़िक्र किया कि हुज़ूर! मैं तो तन्हा नवाफ़िल पढ़ता हूँ लेकिन अचानक कोई न कोई आ जाता है तो ज़रा मुझे भी यह अच्छा मालूम होने लगता है। आप सल्ल. ने फ़रमाया तुझे दो अज्र मिलेंगे, एक अज्र छुपाकर नफ़िल पढ़ने का और दूसरा ज़ाहिर करने का। हज़रत इब्ने मुबारक रह. फ़रमाया करते थे कि यह हदीस रियाकारों के लिये भी अच्छी चीज़ है। यह हदीस सनद के एतिबार से ग़रीब है लेकिन इस मायने की हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है।

इब्ने जरीर की एक बहुत ही ज़ईफ़ सनद वाली हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो हुज़ूर सल्ल.

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

ने फ़रमाया- अल्लाहु अकबर! यह तुम्हारे लिये बेहतर है इससे कि तुम में से हर शख़्स को इस पूरी दुनिया के बराबर दिया जाये। इससे मुराद वह शख़्स है कि नमाज़ पढ़े तो उसकी भलाई से इसे कुछ सरोकार न हो, और न पढ़े तो ख़ुदा का ख़ौफ़ उसे न हो। एक और रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. से इस आयत का मतलब पूछा गया तो आपने फ़रमाया- ये वे लोग हैं जो नमाज़ को उसके वक़्त से लेट करते हैं। इसके एक मायने तो यह हैं कि सिरे से पढ़ते ही नहीं, दूसरे मायने यह हैं कि शरई वक़्त निकाल देते हैं फिर पढ़ते हैं। यह मायने भी हैं कि अव्वल वक़्त में अदा नहीं करते। एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. से मरवी है कि वक़्त तंग कर डालते हैं। ज़्यादा सही मौक़ूफ़ ही है। इमाम बैहक़ी भी फ़रमाते हैं कि मरफ़ूअ़ तो ज़ईफ़ है, हाँ मौक़ूफ़ सही है। इमाम हाकिम का क़ौल भी यही है।

पस जिस तरह ये लोग अल्लाह की इबादत में सुस्त हैं इसी तरह लोगों के हुक़ूक़ भी अदा नहीं करते, यहाँ तक कि बरतने की कम-क़ीमत वाली चीज़ें लोगों को इसलिये भी नहीं देते कि वे अपना काम निकाल लें और फिर वह चीज़ ज्यों की त्यों वापस कर दें। पस इन ख़सीस लोगों से यह कहाँ हो सकता है कि वे ज़कात अदा करें और नेकी के काम करें। हज़रत अ़ली रज़ि. से माऊन का मतलब ज़कात की अदायेगी नक़ल किया गया है, और हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से भी और दूसरे मोतबर हज़राते मुफ़स्सिरीन से भी।

इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उसकी नमाज़ में रियाकारी (दिखावा) है और उसके माल के सदक़े में रुकावट है (यानी ज़कात नहीं देता)। हज़रत ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं कि ये मुनाफ़िक़ लोग हैं। नमाज़ तो चूँकि ज़ाहिर है पढ़नी पड़ती है और ज़कात चूँकि पोशीदा है (हर के सामने नहीं होती) तो अदा नहीं करते। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि माऊन हर वह चीज़ है जो लोग आपस में एक दूसरे से माँग लिया करते हैं, जैसे कुदाल, फावड़ा, देगची, डोल वग़ैरह। एक दूसरी रिवायत में है कि रसूले करीम सल्ल. के सहाबा इसका यही मतलब बयान करते थे। एक और रिवायत में है कि हम नबी सल्ल. के साथ थे और हम इसकी तफ़सीर यही करते थे। नसाई की हदीस में है कि हर नेक चीज़ सदक़ा है। डोल और हाण्डी या पतीली माँगने पर देने को हम हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में माऊन से ताबीर करते थे। ग़र्ज़ कि इसके मायने ज़कात न देने के, इताअ़त न करने के, माँगी चीज़ न देने के हैं। छोटी-छोटी चीज़ें कोई माँगने आये उसका इनकार कर देना जैसे- छलनी, डोल, सूई, सिल बट्टा, कुदाल फावड़ा, पतीली, देगची वग़ैरह।

एक ग़रीब हदीस में है कि क़बीला नमीर के वफ़्द ने हुज़ूर सल्ल. से कहा कि हमें ख़ास हुक्म क्या होता है? आप सल्ल. ने फ़रमाया माऊन से मना न करना। उन्होंने पूछा माऊन क्या है? फ़रमाया पत्थर लोहा, पानी। उन्होंने पूछा लोहे से मुराद कौनसा लोहा है? फ़रमाया यही तुम्हारी ताँबे की पतीलियाँ और कुदाल वग़ैरह। पूछा पत्थर से क्या मुराद है? फ़रमाया यही देगची वग़ैरह। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है बल्कि मरफ़ूअ़ होना मुन्कर है और इसकी सनद में वे रावी हैं जो मशहूर नहीं। अ़ली नमीरी रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मैंने सुना है, आपने फ़रमाया- मुसलमान मुसलमान का भाई है, जब मिले सलाम करे, जब सलाम करे तो बेहतर जवाब दे, और माऊन का इनकार न करे। मैंने पूछा हुज़ूर! "माऊन" क्या है? फ़रमाया पत्थर, लोहा और इसी जैसी और चीज़ें (यानी आ़म इस्तेमाल की मामूली चीज़ें)।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः माऊन की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः कौसर

सूरः कौसर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

اِنَّـآ اَعْـطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ○ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ○ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَالْاَبْتَرُ○	बेशक हमने आपको कौसर (एक हौज़ का नाम है, और हर बड़ी भलाई भी इसमें दाख़िल है) अ़ता फ़रमाई है। (1) सो (इन नेमतों के शुक्रिये में) आप अपने परवर्दिगार की नमाज़ पढ़िए और क़ुरबानी कीजिए। (2) यक़ीनन आपका दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (3)

ع ۲۲

कौसर का अ़ता किया जाना

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कुछ ग़नूदगी (नींद की झपकी) सी तारी हुई और एक दम सर उठाकर मुस्कुराये फिर या तो ख़ुद आप सल्ल. ने फ़रमाया या लोगों के इस सवाल पर कि हुज़ूर! आप क्यों मुस्कुराये? आपने फ़रमाया- मुझ पर इस वक़्त एक सूरत उतरी, फिर आप सल्ल. ने "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़कर इस पूरी सूरत की तिलावत की और फ़रमाया- जानते हो कि कौसर क्या है? लोगों ने कहा ख़ुदा और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़रमाया जन्नत में वह एक नहर है जिस पर बहुत भलाई है जो मेरे रब ने मुझे अ़ता फ़रमाई है, जिस पर मेरी उम्मत क़ियामत वाले दिन आयेगी। उसके बर्तन आसमान के सितारों की गिनती के बराबर हैं। बाज़ लोग उससे हटाये जायेंगे तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब! ये भी मेरे उम्मती हैं। कहा जायेगा कि आपको मालूम नहीं कि इन लोगों ने आपके बाद क्या-क्या बिदअ़तें (दीन में नई बातें) निकाली थीं। एक और हदीस में आया है कि उसमें दो परनाले आसमान से गिरते होंगे। नसाई की हदीस में है कि यह वाक़िआ़ मस्जिद में गुज़रा, इसी से अक्सर क़ारियों का इस्तिदलाल है कि यह सूरत मदनी है।

फ़ायदाः और अक्सर फ़ुक़हा (मसाईल का इल्म रखने वाले उलेमा) ने इस हदीस से इस्तिदलाल किया है कि "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" हर सूरत में उसके साथ ही नाज़िल हुई थी और हर सूरत की एक मुस्तक़िल आयत है।

मुस्नद अहमद की एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस आयत की तिलावत करके फ़रमाया- मुझ ही को कौसर इनायत की गयी है जो एक जारी नहर है लेकिन गड्ढा नहीं है। उसके दोनों किनारे मोती के ख़ेमे हैं, उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है, उसके कंकर भी सच्चे मोती हैं। एक और रिवायत में है कि मेराज वाली रात आप सल्ल. ने आसमान पर जन्नत में उस नहर को देखा और हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि यह कौनसी नहर है? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह कौसर है, जो

Maktab E Ashraf

ख़ुदा ने आपको अ़ता फ़रमाई है। इस क़िस्म की और भी बहुत सी हदीसें हैं और बहुत सी हमने सूरः बनी इस्राईल की तफ़सीर में बयान भी कर दी हैं।

एक और हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने सुनकर फ़रमाया वे परिन्दे तो बहुत ही ख़ूबसूरत होंगे? आप सल्ल. ने फ़रमाया खाने में भी वह बहुत ही लज़ीज़ (मज़ेदार) हैं। (इब्ने जरीर) एक और रिवायत में है कि हज़रत अनस रज़ि. ने हुज़ूर से सवाल किया कि कौसर क्या है? इस पर आप सल्ल. ने यह हदीस बयान की। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि यह नहर जन्नत के वस्त (बीच) में है। एक मुन्क़ता सनद से हज़रत आयशा से मरवी है कि कौसर के पानी के गिरने की आवाज़ जो सुनना चाहे वह अपने दोनों कानों में अपनी दोनों उंगलियाँ डाल ले।

फ़ायदाः अव्वल तो इसकी सनद ठीक नहीं, दूसरे इसके मायने यह हैं कि उस जैसी आवाज़ आती है, न कि ख़ास उसी की आवाज़ हो। वल्लाहु आलम।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि कौसर से मुराद वह भलाई और ख़ैर है जो अल्लाह तआ़ला ने आप सल्ल. को अ़ता फ़रमाई है। अबू बिशर रह. कहते हैं कि मैंने सईद बिन जुबैर रह. से यह सुनकर कहा कि लोग तो कहते हैं कि यह जन्नत की एक नहर है तो हज़रत सईद रज़ि. ने फ़रमाया वह भी उन भलाईयों और ख़ैर में से है जो आप सल्ल. को ख़ुदा की तरफ़ से इनायत हुई हैं। और यह भी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि इससे मुराद बहुत सी ख़ैर है, तो यह तफ़सीर शामिल है हौज़े कौसर वग़ैरह सब को। "कौसर" कसरत से लिया गया है, जिससे मुराद "ख़ैरे कसीर" (बहुत ज़्यादा ख़ैर) है, और इसी ख़ैरे कसीर में जन्नत का हौज़ भी है, जैसे कि बहुत से मुफ़स्सिरीन से यह बात मन्क़ूल है।

फ़ायदाः हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से नहर भी नक़ल की गयी है जैसे कि इब्ने जरीर में सनद के साथ मरवी है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया- कौसर जन्नत की एक नहर है जिसके दोनों किनारे सोना-चाँदी है, जो याक़ूत और मोतियों पर बह रही है, जिसका पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है।

फ़ायदाः हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से भी यह तफ़सीर मरवी है। (इब्ने जरीर) तिर्मिज़ी और इब्ने माजा वग़ैरह में यह रिवायत मरफ़ूअ़न भी आयी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बतलाते हैं।

इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक दिन हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब रज़ि. के घर तशरीफ़ ले गये, आप उस वक़्त घर पर न थे, आपकी बीवी साहिबा जो क़बीला बनू नज्जार से थीं, उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! वह तो अभी-अभी आप ही की तरफ़ गये हैं, शायद बनू नज्जार में रुक गये हों। आप तशरीफ़ लाईये। हुज़ूर सल्ल. घर में तशरीफ़ ले गये तो उनकी बीवी साहिबा ने आपके सामने मलीदा रखा जो आपने खाया। वह ख़ुश होकर फ़रमाने लगीं कि ख़ुदा यह खाना आपके लिये अच्छा साबित करे, अच्छा हुआ कि ख़ुद तशरीफ़ ले आये मैं तो हाज़िरे दरबार होने का इरादा कर चुकी थी कि आपको हौज़े कौसर अ़ता होने की मुबारकबाद दूँ। मुझसे अभी-अभी हज़रत अबू उमारा ने बताया था। आपने फ़रमाया हाँ उस हौज़ की ज़मीन याक़ूत, मरजान, ज़बरजद और मोतियों की है। इसके एक रावी हराम बिन उस्मान ज़ईफ़ हैं लेकिन वाक़िआ़ हसन है, और असल तवातुर से साबित हो चुकी है। बहुत से सहाबा रज़ि. और ताबिईन रह. वग़ैरह से साबित है कि कौसर एक नहर का नाम है।

फिर इरशाद होता है कि जैसे हमने तुम्हें ख़ैरे कसीर (बड़ी भलाई) इनायत फ़रमाई और ऐसी शानदार

नहर दी तो तुम भी सिर्फ़ मेरी ही इबादत करो, ख़ुसूसन नफ़िल फ़र्ज़ नमाज़ और क़ुरबानी उसी वह्दहू ला शरीक लहू (एक अल्लाह की जिसका कोई शरीक नहीं) के नाम की करते रहो। जैसे एक जगह फ़रमायाः

قُلْ اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ. لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ.

यानी आप कह दीजिये कि मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना, मेरा मरना सब अल्लाह तआ़ला के लिये है जो रब है तमाम जहानों का। उसका कोई शरीक नहीं, और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सब से पहले मानने वालों में हूँ।

क़ुरबानी से ऊँटों का क़ुरबान करना मुराद है। मुश्रिक लोग सज्दे और क़ुरबानियाँ अल्लाह के सिवा औरों के नाम की करते थे, तो यहाँ हुक्म हुआ कि तुम सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही के नाम की ख़ुलूस के साथ इबादतें किया करो। एक और जगह इरशाद हैः

لَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ یُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَیْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ..... الخ.

जिस जानवर पर ख़ुदा का नाम न लिया जाये उसे न खाओ, यह तो फ़िस्क़ (बुराई और गुनाह) है।

फ़ायदाः और यह भी कहा गया है कि मुराद "वन्हर" से दायें हाथ का बायें हाथ पर नमाज़ में सीने पर रखना है, यही हज़रत अली रज़ि. से ग़ैर-सही सनद के साथ मरवी है। हज़रत शअ़बी रह. इस लफ़्ज़ की यही तफ़सीर करते हैं। हज़रत अबू जाफ़र बाक़िर रह. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद नमाज़ के शुरू के वक़्त दोनों हाथों का उठाना है। और यह भी कहा गया है कि मतलब यह है कि अपने सीने से क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ। ये तीनों क़ौल इब्ने जरीर में मन्क़ूल हैं।

फ़ायदाः इब्ने अबी हातिम में इस जगह एक बहुत मुन्कर हदीस मरवी है जिसमें है कि जब यह सूरत अल्लाह के नबी सल्ल. पर उतरी तो आपने फ़रमाया- ऐ जिब्राईल! "वन्हर" से क्या मुराद है? जो मुझे मेरे परवर्दिगार का हुक्म हो रहा है, तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया इससे मुराद क़ुरबानी नहीं बल्कि ख़ुदा का तुम्हें हुक्म हो रहा है कि नमाज़ की तकबीरे तहरीमा (शुरू वाली तकबीर) के वक़्त दोनों हाथ उठाओ और रुकूअ़ के वक़्त भी, और जब रुकूअ़ से सर उठाओ तब भी, और जब सज्दा करो, यही हमारी नमाज़ है, और उन फ़रिश्तों की नमाज़ है जो सातों आसमानों में हैं। हर चीज़ की ज़ीनत होती है और नमाज़ की ज़ीनत हर तकबीर के वक़्त दोनों हाथों का उठाना है। यह हदीस इसी तरह मुस्तद्रक हाकिम में भी है। हज़रत अ़ता ख़ुरासानी रह. फ़रमाते हैं कि "वन्हर" से मुराद यह है कि अपनी पीठ रुकूअ़ से उठाओ तो सही तरीक़े से उठाओ और सीने को ज़ाहिर करो, यानी इत्मीनान हासिल करो। (इब्ने अबी हातिम) ये सब अक़वाल ग़रीब हैं और सही पहला क़ौल है कि मुराद "वन्हर" से क़ुरबानियों का ज़िबह करना है। इसी लिये रसूले मक़बूल सल्ल. नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपनी क़ुरबानी ज़िबह करते थे और फ़रमाते थे जो शख़्स हमारी नमाज़ पढ़े और हम जैसी क़ुरबानी करे उसने शरई क़ुरबानी की, और जिसने नमाज़ से पहले ही जानवर ज़िबह कर लिया उसकी क़ुरबानी नहीं हुई। अबू बुरदा बिन नियार रज़ि. ने खड़े होकर कहा या रसूलल्लाह! मैंने नमाज़े ईद से पहले ही क़ुरबानी कर ली, यह समझ कर कि आज के दिन गोश्त की ज़रूरत होगी। आप सल्ल. ने फ़रमाया बस वह तो खाने का गोश्त हो गया, सहाबी ने कहा अच्छा या रसूलल्लाह! अब मेरे पास एक बकरी का बच्चा है जो मुझे दो बकरियों से भी ज़्यादा महबूब है, क्या यह काफ़ी होगा? आपने फ़रमाया हाँ तुझे तो काफ़ी है लेकिन तेरे बाद छह महीने का बकरी का बच्चा

कोई और क़ुरबानी नहीं दे सकता।

इमाम अबू जाफ़र बिन जरीर रह. फ़रमाते हैं कि ठीक क़ौल उसका है जो कहता है कि इसके मायने यह हैं कि अपनी तमाम नमाज़ें ख़ालिस अल्लाह ही के लिये अदा कर, उसके सिवा किसी और के लिये न कर। इसी तरह उसकी राह में ख़ून बहा किसी और के नाम पर क़ुरबानी न कर। उसका शुक्र अदा कर जिसने तुझे यह अ़ज़मत दी और वह नेमत दी जिस जैसी कोई और नेमत नहीं। तुझ ही को उसके साथ ख़ास किया, यही क़ौल बहुत अच्छा है। मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी और अ़ता रह. का भी यही क़ौल है। फिर इरशाद होता है कि ऐ नबी! तुझसे और तेरी तरफ़ उतरी हुई 'वही' (अल्लाह के पैग़ाम) से दुश्मनी रखने वाला ही क़िल्लत व ज़िल्लत वाला, बेबरकता और बेनस्ल है। यह आयत अ़ास बिन वाईल के बारे में उतरी है। यह कमीना जहाँ हुज़ूर सल्ल. का ज़िक्रे ख़ैर सुनता तो कहता- उसे छोड़ दो वह दुम कटा है, उसके पीछे उसकी नरीना औलाद (यानी वारिस लड़का) नहीं। उसके इन्तिक़ाल करते ही उसका नाम दुनिया से उठ जायेगा। इस पर यह मुबारक सूरत नाज़िल हुई है। समर बिन अ़तीया रह. फ़रमाते हैं कि उक़्बा बिन अ़बी मुईत के हक़ में यह आयत उतरी है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि कअ़ब बिन अशरफ़ और क़ुरैश की जमाअ़त के बारे में नाज़िल हुई है।

बज़्ज़ार में है कि जब कअ़ब बिन अशरफ़ मक्के में आया तो क़ुरैशियों ने उससे कहा कि आप तो उनके सरदार हैं, आप उस बच्चे की तरफ़ नहीं देखते जो अपनी सारी क़ौम से अलग थलग है और ख़्याल करता है कि वह अफ़ज़ल है, हालाँकि हम हाजियों के ख़िदमतगार हैं, बैतुल्लाह का सारा इन्तिज़ाम हमारे हाथों में है, ज़मज़म पर हमारा क़ब्ज़ा है, तो यह ख़बीस कहने लगा कि बेशक तुम उससे बेहतर हो, इस पर यह आयत उतरी। इसकी सनद सही है, हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि अबू लहब के बारे में यह आयत उतरी है। जब रसूलुल्लाह सल्ल. के साहिबज़ादे (बेटे) का इन्तिक़ाल हुआ तो यह बदनसीब मुश्रिकों से कहने लगा कि आज की रात मुहम्मद की नस्ल कट गयी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यह मन्क़ूल है। आप यह भी फ़रमाते हैं कि इससे मुराद हुज़ूर सल्ल. के दुश्मन हैं जिन-जिनके नाम लिये गये वे भी और जिनका ज़िक्र नहीं हुआ वे भी। "अब्तर" के मायने तन्हा। अ़रब का यह भी मुहावरा है कि जब किसी की नरीना औलाद (लड़का) मर जाये तो कहते हैं "ब-त-र" हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के साहिबज़ादों के इन्तिक़ाल पर भी उन्होंने दुश्मनी की वजह से यही कहा, जिस पर यह आयत उतरी। तो मतलब यह हुआ कि अबूतर वह है जिसके मरने के बाद उसका ज़िक्र मिट जाये। उन मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्ल. के बारे में भी यही ख़्याल किया था कि इनके लड़के तो इन्तिक़ाल कर गये, वह न रहे जिनकी वजह से आपके इन्तिक़ाल के बाद भी आपका नाम रहता।

हरगिज़ नहीं! उन दुश्मनों की बात कभी सही न होगी। अल्लाह तआ़ला आप सल्ल. का नाम रहती दुनिया तक रखेगा, आपकी शरीअ़त हमेशा बाक़ी रहेगी, आपकी इताअ़त हर शख़्स पर फ़र्ज़ कर दी गयी है, आपका प्यारा और पाक नाम हर एक मुसलमान के दिल व ज़बान पर है और क़ियामत तक आसमानी फ़िज़ा में तरक़्क़ी व बुलन्दी के साथ गूँजता रहेगा। ख़ुश्की व तरी में हर वक़्त इसकी मुनादी होती रहेगी। अल्लाह तआ़ला आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और आपकी आल व औलाद पर और आपकी पाक बीवियों और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर क़ियामत तक बेहद व बेहिसाब दुरूद व सलाम भेजता रहे, आमीन।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः कौसर की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः काफ़िरून

सूरः काफ़िरून मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने इस सूरत को और सूरः "क़ुल् हुवल्लाहु" (यानी सूरः इख़्लास) को तवाफ़ के बाद दो रक्अ़त नमाज़ में तिलावत फ़रमाया। सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मरवी है कि सुबह की दो सुन्नतों में भी हुज़ूरे पाक सल्ल. इन्हीं दो सूरतों की तिलावत किया करते थे। मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने सुबह के फ़र्ज़ों से पहले की दो रक्अ़तों में और मग़रिब की दो रक्अ़तों में बीस ऊपर कुछ दफ़ा या दस ऊपर कुछ मर्तबा सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास पढ़ी (यानी इतनी मर्तबा मैंने आपको ये सूरतें इन नमाज़ों में पढ़ते हुए सुना)। मुस्नद अहमद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से मरवी है कि नबी सल्ल. को मैंने चौबीस या पच्चीस मर्तबा सुबह की दो सुन्नतों में इन दोनों सूरतों को पढ़ते हुए अच्छी तरह देखा।

मुस्नद ही की दूसरी रिवायत में आप से मरवी है कि महीने भर तक मैंने आपको इन दोनों रक्अ़तों में यही दोनों सूरतें पढ़ते हुए पाया (ऊपर जो बीस-पच्चीस बार का ज़िक्र है उसका मतलब यह नहीं कि एक रक्अ़त में इतनी बार, बल्कि यह कि इस नमाज़ में इतनी बार देखने का इत्तिफ़ाक़ हुआ)। यह रिवायत तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन कहते हैं। वह रिवायत पहले बयान हो चुकी है कि यह सूरत चौथाई क़ुरआन के बराबर है और सूरः ज़िलज़ाल भी। मुस्नद अहमद में रिवायत है, हज़रत नोफ़ल बिन मुआ़विया रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनसे फ़रमाया- हमारी रबीबा ज़ैनब की परवरिश तुम अपने यहाँ करो। मेरे ख़्याल से यह हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा थीं। यह एक मर्तबा फिर हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया कहो बच्ची क्या कर रही है? कहा मैं उन्हें उनकी माँ के पास छोड़ आया हूँ। फ़रमाया अच्छा क्यों आये हो? अ़र्ज़ किया इसलिये कि आप से कोई वज़ीफ़ा सीख जाऊँ जो सोते वक़्त पढ़ लूँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया सूरः काफ़िरून पढ़कर सो जाया करो, इसमें शिर्क से बराअत और बेज़ारी है।

नोटः अगर कोई शख़्स किसी औ़रत से निकाह करे और उसके साथ पहले से बच्ची हो तो यह 'रबीबा' कहलायेगी। निकाह हो जाने के बाद यह बच्ची भी अपनी बच्ची के हुक्म में होगी, जिससे निकाह नहीं हो सकता। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

तबरानी की रिवायत में है कि जबला बिन हारिसा रज़ि. को भी आप सल्ल. ने यही फ़रमाया था। तबरानी की एक और रिवायत में है कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल. भी अपने बिस्तर पर लेटकर इस सूरत की तिलावत फ़रमाया करते थे। मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि हज़रत हारिस बिन जबला रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! मुझे कोई ऐसी चीज़ बताईये कि मैं सोने के वक़्त उसे पढ़ लिया करूँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया जब तू रात को अपने बिस्तर पर जाये तो सूरः "क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून" पढ़ लिया कर। यह शिर्क से

बेज़ारी (नफ़रत) है। वल्लाहु आलम

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝	आप (उन काफ़िरों से) कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो! (1) (मेरा और तुम्हारा तरीक़ा एक नहीं हो सकता और) न (तो फ़िलहाल) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करता हूँ (2) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करते हो। (3) और न (आईन्दा भविष्य में) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करूँगा (4) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करोगे। (5) तुमको तुम्हारा बदला मिलेगा और मुझको मेरा बदला मिलेगा। (6)

कान खोलकर सुन लो

इस मुबारक सूरत में मुश्रिकों के अ़मल से बेज़ारी (नफ़रत और लाताल्लुक़ी) का ऐलान है और ख़ुदा तआ़ला की इबादत के इख़्लास (सिर्फ़ उसी के लिये करने) का हुक्म है। अगरचे यहाँ ख़िताब मक्का के काफ़िर क़ुरैश से है लेकिन दर असल रू-ए-ज़मीन के तमाम काफ़िर मुराद हैं। इसका शाने नज़ूल यह है कि उन काफ़िरों ने हुज़ूर सल्ल. से कहा था कि एक साल आप हमारे माबूदों की इबादत करें तो अगले साल हम भी ख़ुदा की इबादत करेंगे, इस पर यह सूरत नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने सच्चे नबी को यह हुक्म दिया कि उनके दीन से अपनी पूरी बेज़ारी का ऐलान फ़रमा दें कि मैं तुम्हारे इन बुतों को और जिन-जिनको तुम ख़ुदा का शरीक मान रहे हो, हरगिज़ न पूजूँगा, चाहे तुम भी मेरे माबूदे बरहक़ एक और लाशरीक ख़ुदा को न पूजो। पस "मा" यहाँ पर मायने में "मन" के है। फिर दोबारा यही फ़रमाया कि मैं तुम जैसी इबादत न करूँगा। तुम्हारे मज़हब पर मैं नहीं चल सकता, न मैं तुम्हारे पीछे लग सकता हूँ, बल्कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करूँगा। और वह भी उस तरीक़े पर जो उसे पसन्द हो, और जिसे वह चाहे। इसी लिये फ़रमाया कि न तुम मेरे रब के अहकाम के आगे सर झुकाओगे न उसकी इबादत उसके फ़रमान के मुताबिक़ बजा लाओगे, बल्कि तुमने तो अपनी तरफ़ से तरीक़े मुक़र्रर कर लिये हैं। जैसा कि एक और मौक़े पर बयान हुआ है:

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ......... الخ.

ये लोग सिर्फ़ अटकल, गुमान और नफ़्सानी इच्छा के पीछे पड़े हुए हैं, हालाँकि इनके पास इनके रब की तरफ़ से हिदायत पहुँच चुकी है।

पस जनाब नबी-ए-ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हर तरह से अपना दामन उनसे छुड़ा लिया और साफ़ तौर पर उनके माबूदों से और उनकी इबादत के तरीक़ों से अ़लैहदगी और नापसन्दीदगी का ऐलान फ़रमा दिया। ज़ाहिर है कि हर आ़बिद (इबादत करने वाले) का माबूद (पूज्य, जिसकी इबादत की जाये) होगा, और इबादत करने का तरीक़ा होगा। पस रसूलुल्लाह सल्ल. और आपके पैरोकार अल्लाह की इबादत करते हैं उस तरीक़े से जो उनको उसकी तरफ़ से तालीम फ़रमाया गया। इसी लिये कलिमा-ए-इख़्लास "ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है यानी अल्लाह के सिवा

कोई माबूद नहीं और उसका रास्ता वही है जिसके बताने वाले मुहम्मद हैं, जो ख़ुदा के पैग़म्बर हैं। और मुश्रिकीन के माबूद भी ख़ुदा तआ़ला के अ़लावा दूसरे हैं और इबादत का तरीक़ा भी ख़ुदा का बतलाया हुआ नहीं, इसी लिये फ़रमाया कि तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये और मेरा दीन मेरे लिये। जैसे एक और जगह है:

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ اَنْتُمْ بَرِيْٓــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ.

यानी अगर ये तुझे झुठलायें तो तू कह दे कि मेरे लिये मेरा अ़मल है और तुम्हारे लिये तुम्हारा अ़मल है। तुमको मेरे आमाल से कोई सरोकार नहीं और मैं तुम्हारे कामों से बेज़ार हूँ। एक और जगह फ़रमायाः

لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ.

हमारे अ़मल हमारे साथ और तुम्हारे अ़मल तुम्हारे साथ। सही बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है यानी कुफ़्र, और मेरे लिये मेरा दीन है यानी इस्लाम।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मतलब ाह है कि मैं अब तो तुम्हारे माबूदों की पूजा करता ही नहीं और आगे लिये भी तुम्हें नाउम्मीद कर देता हूँ कि उम्र भर में कभी भी यह कुफ़्र मुझसे न हो सकेगा। इसी तरह न तुम अब मेरे ख़ुदा को पूजते हो न आईन्दा उसकी इबादत करोगे। इससे मुराद वे काफ़िर हैं जिनका ईमान न लाना ख़ुदा के यहाँ पहले से मुक़द्दर था। जैसे क़ुरआन में एक और जगह है:

وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا.

यानी तेरी तरफ़ जो उतरता (नाज़िल होता) है उससे उनमें अक्सर तो सरकशी और कुफ़्र में बढ़ जाते हैं। इब्ने जरीर रह. ने बाज़ अ़रबी भाषा के विद्वानों से नक़ल किया है कि दो मर्तबा इस जुमले का लाना सिर्फ़ ताकीद (बात को ज़ोर देकर बयान करने) के लिये है जैसे कि क़ुरआन पाक की बाज़ दूसरी जगहों पर भी यह अन्दाज़ इख़्तियार किया गया है।

बहरहाल इन दोनों जुमलों को दो बार लाने की हिक्मत में यह तीन क़ौल हुए- एक तो यह कि पहले जुमले से मुराद माबूद और दूसरे से मुराद इबादत का तरीक़ा है। दूसरे यह कि पहले जुमले से मुराद हाल (मौजूदा हालत) दूसरे से मुराद इस्तिक़बाल (यानी आईन्दा की हालत) है। तीसरे यह कि पहले जुमले की ताकीद दूसरे जुमले से है। एक चौथी तौज़ीह (व्याख्या) इनके अ़लावा भी है जैसे कि हज़रत इमाम इब्ने तैमिया रह. अपनी बाज़ किताबों में फ़रमाते हैं कि मतलब यह है कि न तो मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत करता हूँ न मुझसे कभी भी कोई उम्मीद रख सकता है। यानी वाक़िए (मौजूदा हालत) की भी नफ़ी है और शरई तौर पर इसके मुम्किन होने का भी इनकार है। यह क़ौल भी बहुत बेहतर है। वल्लाहु आलम।

फ़ायदाः हज़रत इमाम शाफ़ई रह. ने इस आयत से इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है कि कुफ़्र एक ही मिल्लत (जमाअ़त और समुदाय) है, इसलिये यहूदी ईसाई का और ईसाई यहूदी का वारिस हो सकता है, जबकि इन दोनों में नसब या विरासत का सबब पाया जाये। इसलिये कि इस्लाम के सिवा कुफ़्र की जितनी राहें हैं वे सब बातिल (ग़ैर-हक़) होने में एक ही हैं। हज़रत इमाम अहमद रह. और उनके मानने वालों का मज़हब यह है कि यहूदी व ईसाई आपस में एक दूसरे का वारिस नहीं हो सकता, न ईसाई यहूदी का न यहूदी ईसाई का, क्योंकि हदीस में है कि दो अलग-अलग मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः काफ़िरून की तफ़सीर पूरी हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः नस्र

सूरः नस्र मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

पहले वह हदीस बयान हो चुकी है कि यह सूरत चौथाई क़ुरआन के बराबर है (यानी इसके पढ़ने से एक चौथाई क़ुरआन के बराबर अज्र मिलता है)। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह से पूछा- जानते हो सबसे आख़िर में कौनसी सूरत उतरी? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ यही सूरत "इज़ा जा-अ" तो आपने फ़रमाया तुम सही कहते हो। (नसाई) हाफ़िज़ अबू बक्र बज़्ज़ार और हाफ़िज़ बैहक़ी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की यह रिवायत ज़िक्र की है कि यह सूरत "अय्यामे तशरीक़" (11-13 ज़िलहिज्जा) के दरमियान के दिन उतरी तो आप सल्ल. समझ गये कि यह रुख़्सत की सूरत है, उसी वक़्त हुक्म दिया और आपकी ऊँटनी क़सवा कसी गयी और आप उस पर सवार हुए और अपना वह ज़ोरदार ख़ुतबा पढ़ा जो मशहूर है। बैहक़ी में है कि जब यह सूरत नाज़िल हुई तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने अपनी लख़्ते जिगर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बुलाया और फ़रमाया- मुझे मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर आ गयी है। हज़रत फ़ातिमा रज़ि. रोने लगीं फिर अचानक हंस पड़ीं। जब और लोगों ने वजह पूछी तो फ़रमाया इन्तिक़ाल की ख़बर ने तो रुला दिया लेकिन रोते हुए हुज़ूर ने तसल्ली दी और फ़रमाया- बेटी सब्र करो, मेरे अपनों में से सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी तो मुझे बेसाख़्ता हंसी आ गयी।

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) जब ख़ुदा की मदद और (मक्का की) फ़तह (अपनी निशानियों के साथ) आ पहुँचे (यानी ज़ाहिर हो जाए) (1) और (उसकी निशानियाँ जो उसपर सामने आने वाली हैं, ये हैं कि) आप लोगों को अल्लाह के दीन (यानी इस्लाम में) गिरोह के गिरोह दाख़िल होता हुआ देख लें। (2) तो अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ कीजिए और (उससे) इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त कीजिए, वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है। (3)	اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝ ع ١ ٣٥

जब अल्लाह की मदद आ जाये

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि बड़ी उम्र वाले बदरी मुजाहिदीन के साथ-साथ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. मुझे भी शामिल कर लिया करते थे, तो शायद किसी के दिल में इससे कुछ नाराज़गी पैदा हुई होगी, उसने कहा कि यह हमारे साथ न आया करें, इन जितने तो हमारे बच्चे हैं।

हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया कि तुम इन्हें ख़ूब जानते हो। एक दिन सब को बुलाया और मुझे भी याद फ़रमाया, मैं समझ गया कि आज उन्हें कुछ दिखाना चाहते हैं। जब हम सब जा पहुँचे तो अमीरुल-मोमिनीन ने हमसे पूछा कि सूरः "इज़ा जा-अ" (यानी यही सूरत जिसकी तफ़सीर बयान हो रही है) के बारे में तुम्हें क्या इल्म है? बाज़ ने कहा इसमें हमें ख़ुदा की तारीफ़ व सना बयान करने और गुनाहों की बख़्शिश चाहने का हुक्म किया गया है, कि जब अल्लाह की मदद आ जाये और हमारी फ़तह हो तो हम यह करें, और बाज़ बिल्कुल ख़ामोश रहे। आपने मेरी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और कहा क्या तुम भी यही कहते हो? मैंने कहा नहीं! फ़रमाया फिर और क्या कहते हो? मैंने कहा यह रसूले ख़ुदा सल्ल. के इन्तिक़ाल का पैग़ाम है। आपको मालूम कराया जा रहा है कि अब आपकी दुनियावी ज़िन्दगी ख़त्म होने को है, आप अल्लाह की तस्बीह व तारीफ़ और इस्तिग़फ़ार में मशग़ूल हो जाईये। हज़रत उमर फ़ारूक़ ने फ़रमाया- यही मैं भी जानता हूँ। (बुख़ारी शरीफ़)

जब यह सूरत उतरी तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि अब इसी साल मेरा इन्तिक़ाल हो जायेगा, मुझे मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर दी गयी है। (मुस्नद अहमद) इमाम मुजाहिद, इमाम अबुल्-आ़लिया और इमाम ज़ह्हाक रह. वग़ैरह भी यही तफ़सीर बयान करते हैं। एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. मदीना शरीफ़ में थे, फ़रमाने लगे- अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर! ख़ुदा तआ़ला की मदद आ गयी और फ़तह भी। यमन वाले आ गये। पूछा गया हुज़ूर यमन वाले कैसे हैं? फ़रमाया वे नर्म-दिल लोग हैं, सुलझी हुई तबीयत वाले हैं, ईमान तो यमन वालों का है, समझ भी यमन वालों की है और हिक्मत भी यमन वालों की है। (इब्ने जरीर) इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि जब यह सूरत उतरी तो चूँकि इसमें आपके इन्तिक़ाल की ख़बर थी तो आपने अपने कामों में और कमर कस ली और तक़रीबन वही फ़रमाया जो ऊपर गुज़रा। (तबरानी) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है कि सूरतों में पूरी सूरत नाज़िल होने के एतिबार से सबसे आख़िरी सूरत यही है। (तबरानी) एक और हदीस में है कि जब यह सूरत उतरी तो आप सल्ल. ने इसकी तिलावत की और फ़रमाया- लोग एक किनारे पर हैं और मैं और मेरे सहाबा एक किनारे पर हैं, सुनो फ़त्हे-मक्का के बाद हिजरत नहीं, अलबत्ता जिहाद और नीयत है।

मरवान को जब यह हदीस हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ने सुनाई तो कहने लगा तू झूठ कहता है। उस वक़्त मरवान के साथ उसके तख़्त पर हज़रत राफ़े बिन ख़ुदैज और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी बैठे हुए थे, तो हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाने लगे- इन दोनों को भी इस हदीस की ख़बर है, यह भी इस हदीस को बयान कर सकते हैं, लेकिन एक को तो अपनी सरदारी छिन जाने का ख़ौफ़ है और दूसरे को ज़कात की वसूली के ओ़हदे से हटाये जाने का डर है। मरवान ने यह सुनकर कोड़ा उठाकर हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मारना चाहा, इन दोनों हज़रात ने जब यह देखा तो कहने लगे मरवान सुन! हज़रत अबू सईद ने सच बयान फ़रमाया है। (मुस्नद अहमद) यह हदीस साबित है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी मरवी है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़त्हे-मक्का के दिन फ़रमाया- हिजरत नहीं रही, हाँ जिहाद और नीयत है। जब तुम्हें चलने को कहा जाये तो उठ खड़े हो जाया करो। सही बुख़ारी और सही मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस मौजूद है, हाँ यह भी याद रहे कि जिन बाज़ सहाबा ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. के सामने इस सूरत का यह मतलब बयान किया कि जब हम पर अल्लाह तआ़ला शहर और क़िले फ़तह कर दे और हमारी मदद फ़रमाये तो हमें हुक्म मिल रहा है कि हम उसकी तारीफ़ें बयान करें और उसका शुक्र अदा करें, उसकी पाकीज़गी बयान करें, नमाज़ अदा करें और अपने गुनाहों की बख़्शिश तलब

Maktab_e_Ashraf

करें। यह मतलब भी बिल्कुल सही और यह तफ़सीर भी निहायत उम्दा है। देखो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़त्हे मक्का वाले दिन चाश्त के वक़्त आठ रक्अ़त नमाज़ अदा की, अगरचे लोग कहते हैं कि चाश्त की नमाज़ थी लेकिन हम कह सकते हैं कि चाश्त की नमाज़ आप हमेशा नहीं पढ़ते थे, फिर उस दिन जबकि और काम बहुत ज़्यादा था, सफ़र की हालत थी, इसे कैसे पढ़ी? फ़त्हे-मक्का के मौक़े पर आप मक्का शरीफ़ में रमज़ान शरीफ़ के आख़िर तक उन्नीस दिन ठहरे रहे, आप फ़र्ज़ नमाज़ को भी क़सर करते रहे, रोज़ा भी नहीं रखा और तमाम लश्कर जो तक़रीबन दस हज़ार था इसी तरह करता रहा। इन चीज़ों से यह बात साफ़ साबित होती है कि यह नमाज़ फ़त्हे-मक्का के शुक्रिये की नमाज़ थी। इसी लिये सरदारे लश्कर इमामे वक़्त पर मुस्तहब है कि जब कोई शहर फ़तह हो तो दाख़िल होते ही आठ रक्अ़त नमाज़ अदा करे। सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मदाईन फ़तह होने के दिन ऐसा ही किया था। बाज़ हज़रात ने कहा है कि इन आठ रक्अ़तों को एक ही सलाम से पढ़े, जबकि सही यह है कि दो-दो रक्अ़तें करके अदा करे जैसा कि अबू दाऊद में इसकी वज़ाहत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़त्हे-मक्का वाले दिन हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरा।

दूसरी तफ़सीर भी सही है जो इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह ने की है कि इसमें आप सल्ल. को आपकी वफ़ात की ख़बर दी गयी, कि आप मक्का फ़तह कर लें, जहाँ से उन काफ़िरों ने आपको निकल जाने पर मजबूर किया था और आप अपनी आँखों अपनी मेहनत का फल देख लें कि फ़ौजें आपके झण्डे तले आ जायें, गिरोह के गिरोह लोग इस्लाम के अन्दर दाख़िल होने लगें तो हमारी तरफ़ आने की और हमसे मुलाक़ात की तैयारी में लग जायें। समझ लो कि जो काम हमें तुमसे लेना था पूरा हो चुका। अब आख़िरत की तरफ़ निगाहें डालो, जहाँ आपके लिये बहुत बेहतरी है और इस दुनिया से बहुत ज़्यादा भलाई आपके लिये वहाँ है। वहीं आपकी मेहमानी तैयार है और मुझ जैसा मेज़बान है। आप इन निशानियों को देखकर ख़ूब ज़्यादा मेरी तारीफ़ व सना करो और तौबा व इस्तिग़फ़ार में लग जाओ।

सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि हुज़ूरे पाक सल्ल. अपने रुकूअ़ व सज्दे में ख़ूब ज़्यादा "सुब्हानकल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क अल्लाहुम्मग़फ़िर ली" पढ़ा करते थे। आप क़ुरआन की इस आयत "फ़-सब्बिह बि-हम्दि रब्बि-क वस्तग़फ़िरहु इन्नहू का-न तव्वाबा" पर अ़मल करते थे। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. अपनी आख़िरी उम्र में इन कलिमात का अक्सर विर्द करते थे "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही अस्तग़फ़िरुल्ला-ह व अतूबु इलैहि" (यानी ख़ुदा की ज़ात पाक है, उसी के लिये सब तारीफ़ें लायक़ हैं, मैं ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करता हूँ और उसी की तरफ़ झुकता हूँ) और फ़रमाया करते थे कि मेरे रब ने मुझे हुक्म दे रखा है कि जब मैं यह निशानी देख लूँ कि मक्का फ़तह हो गया और दीन इस्लाम में फ़ौजों की फ़ौजें दाख़िल होने लगीं तो मैं इन कलिमात को ख़ूब ज़्यादा कहूँ। चुनाँचे अल्लाह का शुक्र है कि मैं इसे देख चुका। लिहाज़ा अब इस वज़ीफ़े में मशग़ूल हूँ। (मुस्नद अहमद)

इब्ने जरीर में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि हुज़ूर सल्ल. अपनी आख़िरी उम्र में उठते-बैठते, चलते-फिरते, आते-जाते "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही" पढ़ा करते। मैंने एक मर्तबा पूछा कि हुज़ूर! इसकी वजह क्या है? तो आपने इस सूरत की तिलावत की और फ़रमाया- मुझे अल्लाह का यही हुक्म है। मुस्नद अहमद में है कि जब यह सूरत उतरी तो हुज़ूर सल्ल. इसे अक्सर अपनी नमाज़ में तिलावत करते और रुकूअ़ में तीन मर्तबा यह पढ़ते "सुब्हानकल्लाहुम्-म रब्बना व बि-हम्दि-क अल्लाहुम्-म इग़फ़िर् ली इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम"।

Maktab E Ashraf

"फ़तह" से मुराद यहाँ मक्का की फ़तह है, इस पर इत्तिफ़ाक़ (सब की एक राय) है। अ़रब के क़बीले आ़म तौर पर इसी के मुन्तज़िर थे कि अगर यह अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ जायें और मक्का इनके क़ब्ज़े में आ जाये तो फिर इनके नबी होने में ज़रा सा भी शुब्हा नहीं। अब जबकि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब के हाथों मक्का फ़तह करा दिया तो ये सब इस्लाम में आ गये। उसके बाद दो साल भी पूरे न हुए थे कि सारा अ़रब मुसलमान हो गया और हर क़बीले में इस्लाम अपना राज करने लगा। अल्हम्दु लिल्लाह।

सही बुख़ारी शरीफ़ में भी हज़रत अ़मर बिन सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का यह मक़ूला मौजूद है कि मक्का फ़तह होते ही हर क़बीले ने इस्लाम की तरफ़ क़दम बढ़ाया। इन सबको इसी बात का इन्तिज़ार था और कहते थे कि उन्हें और उनकी क़ौम को छोड़े रखो और देखते रहो, अगर यह सच्चे नबी हैं तो अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ जायेंगे और मक्का पर इनका झण्डा गड़ जायेगा। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के पड़ोसी जब अपने किसी सफ़र से वापस आये तो हज़रत जाबिर रज़ि. उनसे मुलाक़ात करने के लिये गये, उन्होंने लोगों के आपसी विवादों और मतभेदों का हाल बयान किया और उनकी अफ़सोसनाक बिद्अ़तों का ज़िक्र किया तो हज़रत जाबिर रो पड़े और फ़रमाया मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. से सुना है कि लोगों की फ़ौजों की फ़ौजें ख़ुदा के दीन में दाख़िल हुईं लेकिन जल्द ही जमाअ़तों की जमाअ़तें उसमें से निकलने भी लग जायेंगी।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः नस्र की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः लहब्

सूरः लहब मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ○ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ○ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ○ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ○ فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ○ ع ٥ ٣٦	अबू लहब के हाथ टूट जाएँ और वह बरबाद हो जाए। (1) न उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई। (माल से मुराद सरमाया और कमाई से मुराद उसका नफ़ा है)। (2) (और आख़िरत में) वह जल्द ही (मरने के फ़ौरन बाद) एक भड़कती हुई अंगारों वाली आग में दाख़िल होगा। (3) वह भी और उसकी बीवी भी जो लकड़ियाँ लादकर लाती है। (मुराद काँटेदार लकड़ियाँ हैं, जिनका शाने नुज़ूल में ज़िक्र है)। (4) (और दोज़ख़ में) उसके गले में रस्सी होगी ख़ूब बटी हुई। (5)

Maktab E Ashraf

अबू लहब और उसकी बीवी के लिये तबाही है

सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. बतहा में जाकर एक पहाड़ी पर चढ़ गये और ऊँची ऊँची आवाज़ से "या सबाहाहु या सबाहाहु" कहने लगे। क़ुरैश सब जमा हो गये तो आप सल्ल. ने फ़रमाया- अगर मैं तुम से कहूँ कि सुबह या शाम दुश्मन तुम पर छापा मारने वाला है तो क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे? सब ने जवाब दिया- जी हाँ। आप सल्ल. ने फ़रमाया सुनो मैं तुम्हें ख़ुदा तआ़ला के सख़्त अ़ज़ाब के आने की ख़बर दे रहा हूँ। तो अबू लहब कहने लगा तुझे हलाकत हो क्या इसी लिये तूने हमें जमा किया था? इस पर यह सूरत उतरी। (बुख़ारी) दूसरी रिवायत में है कि यह हाथ झाड़ता हुआ यूँ कहता हुआ उठ खड़ा हुआ। "तब्बत्" बददुआ़ है और "तब्-ब" ख़बर है। यह अबू लहब हुज़ूरे पाक सल्ल. का चचा था, इसका नाम अ़ब्दुल-उ़ज़्ज़ा बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब था, इसकी कुन्नियत (उपनाम) अबू उतबा थी, इसके चेहरे की ख़ूबसूरती और चमक-दमक की वजह से अबू लहब यानी शोले वाला कहा जाता था। यह हुज़ूर सल्ल. का बदतरीन दुश्मन था, यह हर वक़्त ईज़ा व तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचाने के पीछे लगा रहता था। रबीआ़ बिन अ़ब्बाद दैली अपने इस्लाम लाने के बाद अपना जाहिलीयत का वाक़िआ़ बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को ज़ुल-मजाज़ के बाज़ार में देखा, आप फ़रमा रहे थे कि लोगो "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहो तो फ़लाह पाओगे। लोगों का मजमा आप सल्ल. के आस-पास लगा हुआ था, मैंने देखा कि आपके पीछे ही एक गोरे-चिट्टे चमकते चेहरे वाला भैंगी आँखों वाला जिसके सर के बड़े बालों की दो मेंढियाँ थीं, आया और कहने लगा "लोगो! यह बेदीन है झूठा है। ग़र्ज़ कि आप सल्ल. लोगों के मजमे में जाकर ख़ुदा की तौहीद की दावत देते थे और यह शख़्स पीछे पीछे यह कहता हुआ चला जा रहा था। मैंने लोगों से पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा यह आपका चचा अबू लहब है। (उस पर अल्लाह की लानत हो) (मुस्नद अहमद) अबुज़्ज़ियाद ने हदीस के बयान करने वाले हज़रत रबीआ़ रज़ि. से कहा कि आप तो उस वक़्त बच्चे से होंगे, फ़रमाया नहीं मैं उस वक़्त ख़ासी उम्र का था, मश्क लादकर पानी भर लाया करता था। दूसरी रिवायत में है कि मैं अपने बाप के साथ उन दिनों जवान था और मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक एक क़बीले के पास जाते और फ़रमाते- लोगो! मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुम से कहता हूँ कि एक अल्लाह ही की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, मुझे सच्चा जानो, मुझे मेरे दुश्मनों से बचाओ ताकि मैं इस काम को पूरा करूँ जिसका हुक्म मुझे देकर ख़ुदा तआ़ला ने भेजा है। आप सल्ल. जहाँ यह पैग़ाम पहुँचाकर फ़ारिग़ होते कि आपका चचा अबू लहब पीछे से पहुँचता और कहता ऐ फ़ुलाँ क़बीले के लोगो! यह शख़्स तो तुम्हें लात व उ़ज़्ज़ा (बुतों) से हटाना चाहता है और बनू मालिक बिन उक़ैश के तुम्हारे हलीफ़ जिन्नों से तुम्हें दूर कर रहा है और अपनी लाई हुई गुमराही की तरफ़ तुम्हें भी घसीट रहा है, ख़बरदार! न इसकी सुनना न मानना। (अहमद व तबरानी)

अल्लाह तआ़ला इस सूरत में फ़रमाता है कि अबू लहब बरबाद हुआ, उसकी कोशिश ग़ारत हुई, उसके आमाल हलाक हुए। यक़ीनन उसकी बरबादी हो चुकी, उसकी औलाद उसके काम न आयी। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने अपनी क़ौम को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया तो अबू लहब कहने लगा अगर मेरे भतीजे की बातें हक़ भी हैं तो मैं क़ियामत के दिन अपना माल व औलाद ख़ुदा को फ़िदये (बदले) में देकर उसके अ़ज़ाब से छूट जाऊँगा। इस पर यह आयत उतरीः

مَآاَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ.

कि न उसका माल काम आया और न उसकी कमाई।

फिर फ़रमाया यह शोले मारने वाली आग में जो सख़्त जलाने वाली और बहुत तेज़ है, दाख़िल होगा। और उसकी बीवी भी जो क़ुरैशी औरतों की सरदार थी, उसकी कुन्नियत (उपनाम) उम्मे जमील थी, नाम अरवा था। हर्ब बिन उमैया की लड़की थी, अबू सुफ़ियान की बहन थी और अपने शौहर के कुफ़्र व दुश्मनी और सरकशी व नाफ़रमानी में यह भी उसके साथ थी, इसी लिये क़ियामत के दिन अ़ज़ाब में भी उसके साथ होगी। लकड़ियाँ उठा-उठाकर लायेगी और जिस आग में उसका शौहर जल रहा होगा डालती जायेगी। इसके गले में आग की रस्सी होगी और जहन्नम का ईंधन समेटती रहेगी। यह मायने भी किये गये हैं कि "हम्मालतल्-हतब" से मुराद उसका ग़ीबत करने वाली होना है। इमाम इब्ने जरीर रह. इसी को पसन्द करते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह ने यह मतलब बयान किया है कि यह जंगल से काँटोंदार लकड़ियाँ चुन लाती थी और हुज़ूर सल्ल. की राह में बिछा दिया करती थी। यह भी कहा गया है कि चूँकि यह औरत नबी सल्ल. को फ़क़ीरी (यानी ग़रीब होने) का ताना दिया करती थी तो इसे इसका लकड़ियाँ चुनना याद दिलाया गया, लेकिन सही क़ौल पहला ही है। वल्लाहु आलम।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि उसके पास एक नफ़ीस (उम्दा और बेहतरीन) हार था, कहती थी कि मैं इसे बेचकर मुहम्मद की मुख़ालफ़त में ख़र्च करूँगी, तो यहाँ फ़रमाया गया कि उसके बदले उसके गले में आग का तौक़ डाला जायेगा। "मसद" के मायने खजूर की रस्सी के हैं। हज़रत उरवा रह. फ़रमाते हैं यह जहन्नम की ज़न्जीर है जिसकी एक-एक कड़ी सत्तर-सत्तर गज़ की है। इमाम सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाते हैं कि यह जहन्नम का तौक़ है जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है। इमाम जोहरी रह. फ़रमाते हैं कि यह ऊँट की खाल और ऊँट के बालों से बनाई जाती है। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- यानी लोहे का तौक़। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब यह सूरत उतरी तो यह भैंगी औरत उम्मे जमील बिन्ते हर्ब अपने हाथ में नोकदार पत्थर लिये यूँ कहती हुई हुज़ूर सल्ल. के पास आयीः

مُذَمَّمًا اَبَيْنَا. وَدِيْنَهٗ قَلَيْنَا. وَاَمْرَهٗ عَصَيْنَا.

यानी हम मुज़म्मिम् (निंदा करने वाले) के मुन्किर हैं, उसके दीन के दुश्मन हैं और उसके नाफ़रमान हैं।

उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. काबा शरीफ़ में बैठे हुए थे, आप सल्ल. के साथ मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र भी थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने उसे इस हालत में देखकर हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह आ रही है, ऐसा न हो कि आपको देख ले। आपने फ़रमाया ऐ अबू बक्र! निश्चिंत रहो यह मुझे नहीं देख सकती। फिर आप सल्ल. ने क़ुरआन करीम की तिलावत शुरू कर दी ताकि उससे बच जायें। ख़ुद क़ुरआन फ़रमाता हैः

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا.

यानी जब तू क़ुरआन पढ़ता है तो हम तेरे और ईमान न लाने वालों के बीच छुपे (यानी नज़र न आने वाले) पर्दे डाल देते हैं।

यह ख़बीस औरत आकर हज़रत अबू बक्र रज़ि. के पास खड़ी हो गयी, अगरचे हुज़ूर सल्ल. भी हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के पास ही बिल्कुल ज़ाहिर बैठे हुए थे, क़ुदरती पर्दों ने उसकी आँखों पर पर्दा डाल

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

दिया, वह हुज़ूर सल्ल. को न देख सकी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. से कहने लगी- मुझे मालूम हुआ है कि तेरे साथी ने मेरी बुराई बयान की है, यानी शे'रों में मेरी निंदा की है। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने फ़रमाया नहीं नहीं! काबे के रब की क़सम हुज़ूर सल्ल. ने तेरी कोई बुराई बयान नहीं की, तो यह कहती हुई लौट गयी कि क़ुरैश जानते हैं कि मैं उनके सरदार की बेटी हूँ। (इब्ने अबी हातिम)

एक मर्तबा यह अपनी लम्बी चादर ओढ़े तवाफ़ कर रही थी, पैर चद्दर में उलझ गया और फिसल पड़ी तो कहने लगी मेरी बुराई करने वाला ग़ारत हो। उम्मे हकीम अ़ब्दुल-मुत्तलिब की बेटी ने कहा- मैं तो पाकदामन औ़रत हूँ अपनी ज़बान नहीं बिगाड़ूँगी और दुरुस्त करने वाली हूँ पस दाग़ न लगाऊँगी और हम सारे एक ही दादा की औलाद में हैं और क़ुरैश ही फिर तो ज़्यादा जानने वाले हैं। बज़्ज़ार में है कि उसने हज़रत अबू बक्र रज़ि. से कहा कि तेरे साथी ने मेरी बुराई बयान की है, तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने क़सम खाकर जवाब दिया कि न तो आप सल्ल. शे'र कहना जानते हैं न कभी आपने शे'र कहे। उसके जाने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से मालूम किया कि या रसूलल्लाह! क्या उसने आपको नहीं देखा? आपने फ़रमाया फ़रिश्ता आड़ बनकर खड़ा हुआ था, जब तक वह वापस चली न गयी। बाज़ उलेमा ने कहा है कि उसके गले में जहन्नम की आग की रस्सी होगी, जिससे उसे खींचकर जहन्नम के ऊपर लाया जायेगा। फिर ढीली छोड़कर जहन्नम की तह में पहुँचाया जायेगा। यही अ़ज़ाब उसे होता रहेगा। डोल की रस्सी को अ़रब के लोग "मसद" कह दिया करते हैं, अ़रबी शे'रों में भी यह लफ़्ज़ इसी मायने में इस्तेमाल हुआ है। हाँ यह याद रहे कि यह बकरत वाली सूरत हमारे नबी सल्ल. की नुबुव्वत की एक आला दलील है, क्योंकि जिस तरह उनकी बदबख़्ती की ख़बर इस सूरत में दी गयी इसी तरह ज़ाहिर भी हुआ। इन दोनों को ईमान लाना आख़िर तक नसीब ही न हुआ, न तो वे ज़ाहिर में मुसलमान हुए न बातिन में, न छुपे न खुले। पस यह सूरत ज़बरदस्त बहुत साफ़ और रोशन दलील है हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत की। इस सूरत की तफ़सीर भी ख़त्म हुई। अल्लाह ही के लिये सब तारीफ़ें हैं और उसी के फ़ज़्ल व करम और उसी के एहसान व इनाम की यह बरकत है।

सूरः इख़्लास

सूरः इख़्लास मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

इस सूरत के नाज़िल होने का सबब और फ़ज़ीलत का बयान

मुस्नद अहमद में है कि मुश्रिकीन ने हुज़ूर सल्ल. से कहा- अपने रब के औसाफ़ (सिफ़तें और गुण) बयान करो, इस पर यह सूरत नाज़िल हुई। "समद" के मायने हैं जो न तो पैदा हुआ हो न उसकी औलाद हो। इसलिये कि जो पैदा हुआ है वह एक वक़्त मरेगा भी, और दूसरे उसके वारिस होंगे। अल्लाह तआ़ला न मरेगा न उसका कोई वारिस होगा। उस जैसा और उसकी जिन्स का कोई नहीं, न उसके मिस्ल कोई चीज़

Maktab E Ashraf

है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह रिवायत है। अबू यअ्ला मूसली में भी है कि एक देहाती ने यह सवाल किया था। एक और रिवायत में है कि मुश्रिकों के इस सवाल के जवाब में यह सूरत उतरी। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि हर चीज़ की निस्बत है और ख़ुदा की निस्बत यह सूरत है। "समद" उसे कहते हैं जो खोखला न हो। बुख़ारी शरीफ़ किताबुत्तौहीद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक छोटा सा लश्कर कहीं भेजा, जिस वक़्त वे वापस आये तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर ने हम पर जिसे सरदार बनाया था वह हर नमाज़ की क़िराअत के समापन पर सूरः "क़ुल् हुवल्लाहु अहद्........" पढ़ा करते थे। आप सल्ल. ने फ़रमाया उनसे पूछो कि वह ऐसा क्यों करते थे। पूछने पर उन्होंने कहा कि यह सूरत रहमान की सिफ़त है, मुझे इसका पढ़ना बहुत ही पसन्द है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- उन्हें ख़बर दो कि ख़ुदा भी उससे मुहब्बत रखता है। बुख़ारी शरीफ़ की किताबुस्सलात में है कि एक अन्सारी सहाबी क़ुबा की मस्जिद के इमाम थे, उनकी आ़दत थी कि "अल्हम्दु" ख़त्म करके फिर इस सूरत को पढ़ते, फिर जौनसी सूरत पढ़नी होती या जहाँ से चाहते क़ुरआन पढ़ते। एक दिन मुक़्तदियों ने कहा कि आप इस सूरत को पढ़ते हैं फिर दूसरी सूरत मिलाते हैं, यह क्या? या तो आप सिर्फ़ इसी को पढ़िये या छोड़ दीजिये दूसरी सूरत ही पढ़ा कीजिए। उन्होंने जवाब दिया कि मैं तो जिस तरह करता हूँ करता रहूँगा, तुम चाहो तो मुझे इमाम रखो, कहो तो मैं तुम्हारी इमामत छोड़ दूँ। अब उन्हें यह मुश्किल मालूम हुआ क्योंकि उन सब में यह ज़्यादा अफ़ज़ल थे उनकी मौजूदगी में दूसरे का नमाज़ पढ़ाना भी उन्हें गवारा न हो सका। एक दिन जबकि हुज़ूर सल्ल. उनके पास तशरीफ़ लाये तो उन लोगों ने आप से यह वाक़िआ़ बयान किया। आपने इमाम साहिब से फ़रमाया कि तुम अपने साथियों की बात क्यों नहीं मानते? और हर रक्अ़त में इस सूरत को क्यों पढ़ते हो? वह कहने लगे या रसूलल्लाह! मुझे इस सूरत से बड़ी मुहब्बत है। आप सल्ल. ने फ़रमाया इसकी मुहब्बत ने तुझे जन्नत में पहुँचा दिया।

तिर्मिज़ी और मुस्नद अहमद की हदीस में है कि एक शख़्स ने किसी को इस सूरत को पढ़ते हुए रात के वक़्त सुना कि वह बार-बार इसी को दोहरा रहा है, सुबह के वक़्त आकर उसने हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र किया, गोया कि वह इसे हल्के सवाब का काम जानता था, तो नबी सल्ल. ने फ़रमाया- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, यह सूरत (यानी सूरः इख़्लास) तिहाई क़ुरआन है। (बुख़ारी शरीफ़) सही बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि क्या तुमसे यह नहीं हो सकता कि रात में एक तिहाई क़ुरआन पढ़ लो? तो यह सहाबा को दुश्वार मालूम हुआ और अ़र्ज़ किया कि इतनी ताक़त तो हर एक में नहीं। आपने फ़रमाया सुनो सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद........" तिहाई क़ुरआन है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि. सारी रात इसी सूरत को पढ़ते रहे, हुज़ूर सल्ल. से जब ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया यह सूरत आधे क़ुरआन या तिहाई क़ुरआन के बराबर है। एक दूसरी रिवायत में है, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. ने फ़रमाया कि क्या तुम में से किसी को इसकी ताक़त है कि वह हर रात तीसरा हिस्सा क़ुरआन का पढ़ लिया करे? अ़र्ज़ किया गया कि यह किससे हो सकेगा? आपने फ़रमाया सुनो "क़ुल हुवल्लाहु अहद्........(पूरी सूरत) " तिहाई क़ुरआन के बराबर है। इतने में रसूलुल्लाह सल्ल. भी तशरीफ़ लाये, आपने सुन लिया और फ़रमाया कि अबू अय्यूब ठीक कहते हैं।

(मुस्नद अहमद)

तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने सहाबा रज़ि. से फ़रमाया- जमा हो जाओ, मैं तुम्हें आज तिहाई क़ुरआन सुनाऊँगा। लोग जमा होकर बैठ गये, आप सल्ल. घर से तशरीफ़ लाये, सूरः "क़ुल् हुवल्लाहु अहद......." पढ़ी और फिर घर तशरीफ़ ले गये। अब सहाबा में बातें होने लगीं कि वायदा तो हुज़ूर सल्ल.

Maktab E Ashraf

का यह था कि तिहाई क़ुरआन सुनायेंगे, शायद आसमान से कोई वही आ गयी हो। इतने में आप सल्ल. फिर वापस तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- मैंने तुमसे तिहाई क़ुरआन सुनाने का वायदा किया था, सुनो यह सूरत तिहाई क़ुरआन के बराबर है। हज़रत अबूदर्दा रज़ि. की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- क्या तुम से यह नहीं हो सकता कि हर दिन तिहाई क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लिया करो? लोगों ने अ़र्ज़ किया- हुज़ूर! हम से बहुत मुश्किल और दुश्वार है। आप सल्ल. ने फ़रमाया- सुनो! अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन के तीन हिस्से किये हैं "क़ुल् हुवल्लाहु अहद........" तीसरा हिस्सा है। (मुस्लिम, नसाई वग़ैरह) ऐसी ही रिवायतें सहाबा किराम रज़ि. की एक बहुत बड़ी जमाअ़त से मन्क़ूल हैं। हुज़ूरे पाक सल्ल. एक मर्तबा कहीं से तशरीफ़ ला रहे थे, आपके साथ हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. भी थे, तो आपने एक शख़्स को इस सूरत की तिलावत करते हुए सुनकर फ़रमाया- "वाजिब हो गयी"। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने पूछा क्या वाजिब हो गयी? फ़रमाया जन्नत। (तिर्मिज़ी, नसाई) अबू यअ़ला की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि क्या तुममें से कोई यह ताक़त नहीं रखता कि सूरः "क़ुल् हुवल्लाहु अहद........." को रात में तीन मर्तबा पढ़ ले? यह सूरत तिहाई क़ुरआन के बराबर है। मुस्नद अहमद में है, अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम प्यासे थे, रात अन्धेरी थी, हुज़ूर सल्ल. का इन्तिज़ार था कि आप तशरीफ़ लायें और नमाज़ पढ़ायें। आप सल्ल. तशरीफ़ लाये और मेरा हाथ पकड़कर फ़रमाने लगे- पढ़, मैं चुपका रहा, आपने फिर फ़रमाया पढ़, मैंने अ़र्ज़ किया क्या पढ़ूँ? आपने फ़रमाया हर सुबह व शाम तीन-तीन मर्तबा सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद......" और "क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़लक़......." और "क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास......." पढ़ लिया कर। यह काफ़ी हो जायेगी। नसाई की एक रिवायत में है कि हर चीज़ से तुझे यह किफ़ायत करेगी।

मुस्नद की एक और ज़ईफ़ हदीस में है कि जिसने इन कलिमात को दस मर्तबा पढ़ लिया उसे चालीस लाख नेकियाँ मिलेंगी। वे कलिमात ये हैं:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वाहिदन् अ-हदन् स-मदन् लम् यत्तख़िज़ुहु साहिबतंव्-व ला व-लदन् व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद्।

इसके रावी ख़लील बिन मुर्रा हैं जिन्हें हज़रत इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह बहुत ज़ईफ़ बतलाते हैं। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स इस पूरी सूरत को दस मर्तबा पढ़ लेगा अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में एक महल तामीर करेगा। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! फिर तो हम बहुत से महल बनवा लेंगे? आपने फ़रमाया ख़ुदा इससे भी ज़्यादा इससे भी अच्छा देने वाला है। दारमी में है कि दस मर्तबा पर एक महल बीस पर दो तीस पर तीन ....। यह हदीस मुर्सल है। अबू यअ़ला मूसली की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरत को दो मर्तबा पढ़ ले उसके लिये एक हज़ार पाँच सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं, बशर्ते कि उस पर क़र्ज़ न हो (मुराद बन्दों के हुक़ूक़ से बरी होना है)।

तिर्मिज़ी की एक हदीस में है कि उसके पचास साल के गुनाह माफ़ किये जाते हैं, मगर यह कि उस पर क़र्ज़ न हो। तिर्मिज़ी की एक ग़रीब हदीस में है कि जो शख़्स सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाये फिर दाहिनी करवट पर लेटकर सौ दफ़ा इस सूरत को पढ़ ले तो क़ियामत के दिन रब तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दे! अपनी दाहिनी तरफ़ से जन्नत में चला जा। बज़्ज़ार की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरत को दो मर्तबा पढ़े अल्लाह तआ़ला उसके दो सौ साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देता है (यह हदीस भी

कमज़ोर है)। नसाई शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में है कि नबी सल्ल. मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो देखा कि एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है, दुआ माँग रहा है, अपनी दुआ में कहता है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

यानी ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इस बात की गवाही देकर कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है बेनियाज़ है, न उसके माँ-बाप न औलाद न हमसर और साथी न कोई और।

आप सल्ल. यह सुनकर फ़रमाने लगे उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ मे मेरी जान है इसने इस्मे आज़म के साथ दुआ माँगी है, ख़ुदा के उस बड़े नाम के साथ कि जब कभी उस नाम के साथ सवाल किया जाये तो अता हो, और जब कभी उस नाम के साथ दुआ की जाये तो क़बूल हो। अबू यअ़ला में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- तीन काम हैं जो उन्हें ईमान के साथ लेकर आये वह जन्नत के दरवाज़ों में से जिससे चाहे जन्नत में चला जाये और जिस किसी जन्नत की हूर से चाहे निकाह करा दिया जाये। जो अपने क़ातिल को माफ़ कर दे, पोशीदा क़र्ज़ अदा कर दे और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस मर्तबा सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद........" को पढ़ ले। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने पूछा या रसूलल्लाह! जो इन तीनों कामों में से एक कर ले? आपने फ़रमाया एक पर भी यही दर्जा है। तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जो शख़्स इस सूरत को घर में जाते वक़्त पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उस घर वालों से और उसके पड़ोसियों से फ़क़ीरी दूर कर देगा। इसकी सनद ज़ईफ़ है।

फ़ायदाः मुस्नद अबू यअ़ला में है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं- हम रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ मैदाने तबूक में थे, सूरज ऐसी रोशनी, नूर और किरनों के साथ निकला कि हमने उससे पहले ऐसा साफ़-शफ़्फ़ाफ़, रोशन और मुनव्वर नहीं देखा था। हुज़ूर सल्ल. के पास जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये तो हुज़ूर सल्ल. ने मालूम फ़रमाया कि आज सूरज की इस तेज़ रोशनी, ज़्यादा नूर और चमकीली किरनों की क्या वजह है? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- आज मदीना में मुआ़विया बिन मुआ़विया लैसी रज़ि. का इन्तिक़ाल हो गया है जिनके जनाज़े की नमाज़ के लिये अल्लाह तआ़ला ने सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आसमान से भेजे हैं। पूछा उनके किस अ़मल के सबब? फ़रमाया वह सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद........(पूरी सूरत)" को दिन रात चलते फिरते उठते बैठते पढ़ा करते थे। अगर आपका इरादा हो तो मैं ज़मीन समेट लूँ और आप उनके जनाज़े की नमाज़ अदा कर लें? आपने फ़रमाया बहुत अच्छा, पस आप सल्ल. ने उनके जनाज़े की नमाज़ अदा की। इस हदीस को हाफ़िज़ अबू बक्र बैहक़ी रह. ने भी अपनी किताब "दलाईलुन्नुबुव्वत" में यज़ीद बिन हारून की रिवायत से नक़ल किया है। वह अ़ला बिन मुहम्मद से रिवायत करते हैं, उन पर मौज़ूअ़ (गढ़ी हुई और बेबुनियाद) हदीसें बयान करने का इल्ज़ाम है। वल्लाहु आलम।

मुस्नद अबू यअ़ला में इसकी दूसरी सनद भी है, जिसमें यह रावी नहीं। उसमें है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम रसूले मक़बूल सल्ल. के पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया- मुआ़विया बिन मुआ़विया लैसी का इन्तिक़ाल हो गया है, आप उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ना चाहते हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अपना पर ज़मीन पर मारा, तमाम दरख़्त और सब टीले वग़ैरह पस्त हो गये, उनका जनाज़ा हुज़ूर सल्ल. को नज़र आने लगा। आपने नमाज़ शुरू की और आपके पीछे फ़रिश्तों की दो

सफ़ें थीं, हर सफ़ में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थे। आप सल्ल. ने मालूम किया कि आख़िर इस मर्तबे की क्या वजह है? हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- उनकी इस सूरत से मुहब्बत और हर वक़्त आते जाते उठते बैठते इसकी तिलावत। इसे इमाम बैहक़ी ने भी रिवायत किया है, और बैहक़ी की सनद में महबूब बिन हिलाल हैं। अबू हातिम राज़ी फ़रमाते हैं कि यह मशहूर नहीं। अबू यअ़ला में यह रावी नहीं। वहाँ इनकी जगह अबू अ़ब्दुल्लाह बिन महमूद हैं। लेकिन ठीक बात यह है कि महबूब इसमें है, इस रिवायत की और भी बहुत सी सनदें हैं और सब ज़ईफ़ हैं। हमने बात को मुख़्तसर करते हुए उन्हें यहाँ नक़ल नहीं किया। मुस्नद अहमद में है, हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मेरी रसूले ख़ुदा सल्ल. से मुलाक़ात हुई, मैंने जल्दी से आपका हाथ थाम लिया और कहा या रसूलल्लाह! मोमिन की निजात किस अ़मल पर है? आप सल्ल. ने फ़रमाया- ऐ उक़्बा! ज़बान थामे रख (यानी ज़बान की हिफ़ाज़त कर), अपने घर में ही बैठा रहा कर (यानी ताल्लुक़ात को सीमित रख), और अपनी ख़ताओं पर रोता रह। फिर दोबारा जब हुज़ूर सल्ल. से मेरी मुलाक़ात हुई तो आपने ख़ुद मेरा हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया- उक़्बा! क्या मैं तुम्हें तौरात, इन्जील, ज़बूर और क़ुरआन में उतरी हुई तमाम सूरतों से बेहतर तीन सूरतें बताऊँ? मैंने कहा हाँ हुज़ूर ज़रूर इरशाद फ़रमाईये, अल्लाह तआ़ला मुझे आप पर फ़िदा करे। पस आप सल्ल. ने मुझे सूरः "क़ुल हुवल्लाहु अहद......" "क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़लक़......" "क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास......." पढ़ायीं फिर फ़रमाया- देखो उक़्बा! इन्हें न भूलना और हर रात इन्हें पढ़ लिया करना। फ़रमाते हैं कि फिर न मैं इन्हें भूला और न कोई रात इनके पढ़े बग़ैर गुज़ारी। मैंने फिर आप सल्ल. से मुलाक़ात की और जल्दी करके आपके हाथ मुबारक को अपने हाथ में लेकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे बेहतरीन आमाल बता दीजिये। आप सल्ल. ने फ़रमाया- सुन! जो तुझसे तोड़े तू उससे जोड़, जो तुझे मेहरूम रखे तू उसे दे, जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उससे दरगुज़र और माफ़ कर दे। इसका कुछ हिस्सा इमाम तिर्मिज़ी रह. ने भी ज़ोहद के बाब में नक़ल किया है और फ़रमाया है कि यह हदीस हसन है। मुस्नद अहमद में भी इसकी एक और सनद है।

सही बुख़ारी में हज़रत आ़यशा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. रात के वक़्त जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो हर रात इन तीनों सूरतों को पढ़कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिलाकर उन पर दम करके अपने जिस्म मुबारक पर फेर लिया करते, जहाँ तक हाथ पहुँचते पहुँचाते, पहले सर पर, फिर मुँह पर, फिर अपने सामने के जिस्म पर, तीन मर्तबा इसी तरह करते। यह हदीस सुनन में भी है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝	आप (उन लोगों से) कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआ़ला (अपनी ज़ात व सिफ़ात के कमाल में) एक है। (1) अल्लाह (ऐसा) बेनियाज़ है (कि वह किसी का मोहताज नहीं और उसके सब मोहताज हैं)। (2) उसके औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है। (3) और न कोई उसके बराबर का है। (4)

अल्लाह तआ़ला का एक परिचय

इस सूरत के नाज़िल होने की वजह पहले बयान हो चुकी है। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि यहूद

कहते थे- हम हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को पूजते हैं जो ख़ुदा तआ़ला के बेटे हैं, और ईसाई कहते थे कि हम हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम को पूजते हैं जो ख़ुदा के बेटे हैं, और मजूसी कहते थे कि हम सूरज चाँद की पूजा करते हैं, और मुश्रिक कहते थे कि हम बुतों के पुजारी हैं। तो अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत उतारी कि ऐ नबी! तुम कह दो कि हमारा माबूद तो अल्लाह तआ़ला है, जो तन्हा और अकेला है, उस जैसा कोई नहीं। जिसका कोई वज़ीर नहीं, जिसका कोई शरीक नहीं, जिसका कोई हमसर (बराबर का) नहीं, जिसका कोई हम-जिन्स नहीं, जिसके बराबर कोई नहीं, जिसके सिवा किसी में ख़ुदाई की शान व अहलियत नहीं। इस लफ़्ज़ का इतलाक़ सिर्फ़ उसी की पाक ज़ात पर होता है, वह अपनी सिफ़तों में और अपने हिक्मत भरे कामों में यक्ता (बेमिसाल) है। वह बेनियाज़ है, जो अपनी सरदारी में, अपनी शराफ़त में, अपनी बुज़ुर्गी और अपनी अ़ज़मत में, अपने हिल्म व इल्म में, अपनी हिक्मत व इन्तिज़ाम में सबसे बढ़ा हुआ हो। ये सिफ़तें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला में ही पाई जाती हैं, उसका हमसर और उस जैसा कोई और नहीं। वह अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला सब पर ग़ालिब है और अपनी ज़ात व सिफ़ात में यक्ता और बेनज़ीर है।

समद के यह मायने भी किये गये हैं कि जो तमाम मख़्लूक़ के फ़ना हो जाने के बाद भी बाक़ी रहे, जो हमेशा बक़ा वाला सब की हिफ़ाज़त करने वाला हो। जिसकी ज़ात ला-ज़वाल और ग़ैर-फ़ानी हो। हज़रत इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि "समद" वह है जो न कुछ खाये, न उसमें से कुछ निकले न वह किसी में से निकले। यानी न उसकी औलाद हो न माँ-बाप। यह तफ़सीर बहुत उम्दा है और इब्ने जरीर रह. की रिवायत से हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. से स्पष्ट तौर पर मन्क़ूल है, जैसा कि पहले गुज़रा। और बहुत से सहाबा रज़ि. और ताबिईन रह. से मरवी है कि "समद" कहते हैं ठोस चीज़ को, जो खोखली न हो, जिसका पेट न हो। इमाम शअ़बी रह. कहते हैं जो न खाता हो न पीता हो। अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा रह. फ़रमाते हैं "समद" वह नूर है जो रोशन और चमक-दमक वाला हो। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी है कि "समद" वह है जिसका पेट न हो, लेकिन इसका मरफ़ूअ़ होना ठीक नहीं। सही यह है कि मौक़ूफ़ है।

हाफ़िज़ अबुल्-क़ासिम तबरानी रह. अपनी 'किताबुस्सुन्नत" में लफ़्ज़ "समद" की तफ़सीर में इन तमाम अक़वाल वग़ैरह को ज़िक्र करके लिखते हैं कि दर असल ये सब ठीक और सही हैं, ये तमाम सिफ़तें हमारे रब तआ़ला में हैं। उसकी तरफ़ सब मोहताज भी हैं, वह सब से बढ़कर सरदार और सबसे बड़ा है। उसे न पेट है न वह खोखला है, न वह खाये न पिये, सब फ़ानी हैं और वह बाक़ी है, वग़ैरह। फिर फ़रमाया कि उसकी औलाद नहीं, न उसके माँ-बाप हैं, न बीवी। जैसे एक और जगह इरशाद है:

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ وَّخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ.

यानी वह ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है, उसे औलाद कैसे होगी? उसकी बीवी नहीं, हर चीज़ को उसी ने पैदा किया है। यानी वही हर चीज़ का ख़ालिक़ मालिक है, सब उसकी मख़्लूक़ और मिल्कियत में है, उसकी बराबरी और हमसरी करने वाल कौन होगा? वह इन तमाम ऐबों और नुक़सानात से पाक है। जैसे एक और जगह फ़रमायाः

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا....... الخ.

यानी ये काफ़िर कहते हैं कि ख़ुदा की औलाद है, तुम तो एक बड़ी बुरी चीज़ लाये, क़रीब है कि आसमान फट जायें और ज़मीन में दरार हो जाये और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ें। इस बिना पर कि उन्होंने कहा कि ख़ुदा की औलाद है, हालाँकि ख़ुदा की शान के यह लायक़ ही नहीं कि उसकी औलाद हो।

Maktaba E Ashraf

तमाम ज़मीन व आसमान में कुल के कुल ख़ुदा के गुलाम ही बनकर आने वाले हैं। ख़ुदा के पास तमाम का शुमार (गिनती) है और उन्हें एक-एक करके गिन रखा है। और ये सब के सब तन्हा-तन्हा (अकेले-अकेले) उसके पास कियामत के दिन हाज़िर होने वाले हैं। एक और जगह है:

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا. سُبْحَانَهٗ .... الخ.

यानी उन काफ़िरों ने कहा कि रहमान की औलाद है। ख़ुदा इससे पाक है, बल्कि वह तो ख़ुदा के इज़्ज़त वाले बन्दे हैं। बात में भी उससे आगे नहीं बढ़ते, उसी के फ़रमान पर आ़मिल हैं। एक और जगह है:

وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا.......... الخ.

यानी उन्होंने अल्लाह तआ़ला और जिन्नात के दरमियान नसब (नस्ली ताल्लुक़) क़ायम कर रखा है हालाँकि जिन्नात तो ख़ुद उसकी फ़रमाँबरदारी में हाज़िर हैं। अल्लाह तआ़ला उनके बयान किये ऐबों से पाक व बरतर है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि तकलीफ़ देने वाली बातों को सुनते हुए सब्र करने में ख़ुदा से ज़्यादा साबिर कोई नहीं। लोग उसकी औलाद बताते हैं और फिर भी वह उन्हें रोज़ियाँ देता है, आ़फ़ियत व तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमाता है। बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- इनसान मुझे झुठलाता है हालाँकि उसे ऐसा न करना चाहिये। मुझे गालियाँ देता है और उसे यह भी शोभा न था। उसका मुझे झुठलाना तो यह है कि वह कहता है जिस तरह पहली बार में ख़ुदा ने मुझे पैदा किया ऐसे ही फिर नहीं लौटायेगा, हालाँकि पहली मर्तबा की पैदाईश दूसरी मर्तबा की पैदाईश से आसान न थी। जब मैं उस पर क़ादिर हूँ तो इस पर क्यों नहीं? और उसका मुझे गालियाँ देना यह है कि वह कहता है कि अल्लाह की औलाद है, हालाँकि मैं तन्हा (अकेला) हूँ। मैं एक ही हूँ, मैं समद (सब से बेपरवाह) हूँ, न मेरी औलाद न मेरे माँ-बाप, न मुझ जैसा कोई और।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः इख़्लास की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः फ़लक़्

सूरः फ़लक़् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. इस सूरत और इसके बाद की सूरत को क़ुरआन शरीफ़ में नहीं लिखते थे और फ़रमाया करते थे कि मेरी गवाही है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने मुझे ख़बर दी कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आप सल्ल. से फ़रमाया "क़ुल् अऊ़ज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़ि............" तो मैंने भी यही कहा। फिर फ़रमाया "क़ुल् अऊ़ज़ु बि-रब्बिन्नासि........." तो मैंने यही कहा, तो हम भी इसी तरह कहते हैं जिस तरह हुज़ूर सल्ल. ने कहा। हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. से इन दोनों सूरतों के बारे में पूछा गया और कहा गया कि आपके भाई हज़रत इब्ने मसऊद तो इन दोनों को क़ुरआन शरीफ़ में से

अलग कर दिया करते थे? तो फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सवाल किया तो आपने फ़रमाया- मुझसे कहा गया कहो, मैंने कहा। पस हम भी कहते हैं जिस तरह हुज़ूर सल्ल. ने कहा। (अबू बक्र हुमैदी) मुस्नद में भी यह रिवायत अलफ़ाज़ की थोड़ी सी तब्दीली के साथ मौजूद है और बुख़ारी शरीफ़ में भी। मुस्नद अबू यअ़ला वग़ैरह में है कि इब्ने मसऊद इन दोनों सूरतों को क़ुरआन शरीफ़ में नहीं लिखते थे और न क़ुरआन में इन्हें शुमार करते थे, बल्कि क़ारियों और फ़क़ीहों के नज़दीक मशहूर बात यही है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. इन दोनों सूरतों को क़ुरआन शरीफ़ में नहीं लिखते थे। शायद उन्होंने हुज़ूरे पाक सल्ल. से न सुना हो और तवातुर के साथ उन तक न पहुँचा हो।

फ़ायदाः फिर यह (हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु) अपने इस क़ौल से रुजू करके जमाअ़त के क़ौल की तरफ़ पलट आये। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने इन सूरतों को इमामों के क़ुरआन में दाख़िल किया, जिसके नुस्ख़े (प्रतियाँ) हर तरफ़ फैले। वल्हम्दु लिल्लाह।

नोटः इससे क़ुरआन के जमा करने में सहाबा की एहतियात का अन्दाज़ा हो सकता है कि जब तक एक पूरी जमाअ़त से किसी आयत या सूरत के बारे में यक़ीनी इल्म न हो गया उसको किताब में दाख़िल न समझा गया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में जो यह रिवायत नक़ल की गयी है कि वह इन दोनों सूरतों को क़ुरआन से अलग रखते थे इसकी कोई हैसियत नहीं, मुहद्दिसीन हज़रात ने इसे ग़ैर-सही और नाक़ाबिले क़बूल रिवायत क़रार दिया है। इसकी कुछ तफ़सील मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब के "फ़तावा उस्मानी" (जिल्द 1 पेज 234-241) में भी मौजूद है। लिहाज़ा हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की तरफ़ यह बात मन्सूब करना सही नहीं। रहा आपका न लिखना तो इसकी एक वजह यह हो सकती है कि ये सूरतें बहुत अधिकता के साथ नमाज़ में पढ़ी जाती थीं तो भूलने का ख़तरा न था। फिर दूसरे हज़रात के पास लिखी हुई मौजूद थीं। बहरहाल इसमें कोई सच्चाई नहीं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु इनको क़ुरआन में दाख़िल न समझते थे। यह रिवायत बयान करने वाले को ज़रूर कोई ग़लत-फ़हमी हुई है। किसी सहाबी और ख़ासकर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के बारे में ऐसा अ़क़ीदा रखना ईमान के लिये घातक है। ख़ुद उनकी क़िराअत में ये सूरतें मन्क़ूल हैं। उनके पास लिखा न होने से शायद किसी रिवायत बयान करने वाले को वहम हो गया है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

सही मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- क्या तुमने नहीं देखा कि चन्द आयतें मुझ पर इस रात नाज़िल हुई हैं कि उन जैसी कभी नहीं देखी गयीं। फिर आप सल्ल. ने इन दोनों सूरतों की तिलावत फ़रमाई। यह हदीस मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सही कहते हैं। मुस्नद अहमद में है, हज़रत उक़्बा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल. के साथ मदीने की गलियों में आपकी सवारी की नकील थामे चला जा रहा था कि आपने मुझसे फ़रमाया- अब आओ तुम सवार हो जाओ, मैंने इस ख़्याल से कि अगर आपकी बात न मानूँगा तो नाफ़रमानी होगी, सवार होना मन्ज़ूर कर लिया। थोड़ी देर के बाद मैं उतर गया और हुज़ूर सवार हो गये। फिर आपने फ़रमाया उक़्बा! मैं तुझे दो बेहतरीन सूरतें क्या न सिखाऊँ? मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ज़रूर सिखाईये। पस आप सल्ल. ने मुझे सूरः "क़ुल् अऊ़ज़ु बि-रब्बिल् फ़लक़..........." और सूरः "क़ुल् अऊ़ज़ु बि-रब्बिन्नास......." पढ़ाईं। फिर नमाज़ खड़ी हुई, आप सल्ल. ने नमाज़ पढ़ाई और इन ही दोनों सूरतों की तिलावत की। फिर मुझसे फ़रमाया तूने देख लिया? सुन जब तू सोये और जब खड़ा हो इन्हें पढ़

लिया कर। तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और नसाई में भी यह हदीस है। मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि हज़रत उक़्बा बिन आमिर को रसूलुल्लाह सल्ल. ने हर नमाज़ के वक़्त इन सूरतों की तिलावत का हुक्म दिया। यह हदीस भी अबू दाऊद और नसाई में है। इमाम तिर्मिज़ी इसे ग़रीब बतलाते हैं। एक और रिवायत में है कि इन जैसी सूरतें तूने पढ़ी ही नहीं। हज़रत उक़्बा रज़ि. वाली हदीस जिसमें हुज़ूर सल्ल. की सवारी के साथ आपका होना मज़कूर है, इसकी कुछ सनदों में यह भी है कि जब हुज़ूर ने मुझे ये सूरतें बतलाईं तो मुझे कुछ ज़्यादा खुश होते न देखकर फ़रमाया- शायद तू इन्हें छोटी सी सूरतें समझता है? सुन नमाज़ के क़ियाम में इस जैसी सूरतों की क़िराअत और है ही नहीं। नसाई शरीफ़ की हदीस में है कि इन जैसी सूरतें किसी पनाह पकड़ने वाले के लिये और नहीं। एक और रिवायत में है कि हज़रत उक़्बा रज़ि. से ये सूरतें हुज़ूर सल्ल. ने पढ़वाईं फिर फ़रमाया- इन जैसी पनाह माँगने की और सूरतें नहीं। एक रिवायत में है कि सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ हुज़ूर सल्ल. ने इन ही दोनों सूरतों से पढ़ाई।

एक हदीस में है कि हज़रत उक़्बा रज़ि. हुज़ूर सल्ल. की सवारी के पीछे जाते हैं और आप सल्ल. के क़दम पर हाथ रखकर अ़र्ज़ करते हैं- हुज़ूर! मुझे सूरः "हूद" या सूरः "यूसुफ़" पढ़ाईये। आपने फ़रमाया ख़ुदा के पास नफ़ा देने वाली कोई सूरत "क़ुल अऊ़ज़ु बि-रब्बिल् फ़लक़......" से ज़्यादा नहीं। एक और हदीस में है कि आप सल्ल. ने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि. से फ़रमाया- मैं तुम्हें बताऊँ कि पनाह हासिल करने वालों के लिये इन दोनों सूरतों से अफ़ज़ल सूरत और कोई नहीं।

पस बहुत सी हदीसें अपने तवातुर की वजह से अक्सर उलेमा के नज़दीक यक़ीन व निश्चितता का फ़ायदा देती हैं, और वह हदीस भी बयान हो चुकी कि आप सल्ल. ने इन दोनों सूरतों और सूरः इख़्लास के बारे में फ़रमाया कि चारों किताबों में इन जैसी सूरतें नहीं उतरीं। नसाई वग़ैरह में है कि हम हुज़ूर सल्ल. के साथ एक सफ़र में थे, सवारियाँ कम थीं, बारी-बारी सवार होते थे। हुज़ूर सल्ल. ने एक शख़्स के मोंढे पर हाथ रखकर ये दोनों सूरतें पढ़ाईं और फ़रमाया जब नमाज़ पढ़े तो इन्हें पढ़ा कर। बज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह शख़्स हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर होंगे। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन असलम रज़ि. के सीने पर हाथ रखकर आप सल्ल. ने फ़रमाया- कह। वह न समझे कि क्या कहें। फिर फ़रमाया कह, तो उन्होंने सूर "क़ुल हुवल्लाहु अहद......(पूरी सूरत)" पढ़ी। आप सल्ल. ने फ़रमाया कह, फिर सूरः फ़लक़ पढ़ी, आपने फिर भी यही फ़रमाया तो सूरः नास पढ़ी, तो आपने फ़रमाया इसी तरह पनाह माँगा कर, इस जैसी पनाह माँगने की और सूरतें नहीं। (नसाई) नसाई की एक और हदीस में है कि हज़रत जाबिर रज़ि. से ये दोनों सूरतें आप सल्ल. ने पढ़वाईं, फिर फ़रमाया- इन्हें पढ़ता रह, इन जैसी सूरतें तू और न पढ़ेगा। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा वाली वह हदीस पहले गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्ल. इन्हें पढ़कर अपने दोनों हाथों पर फूँक कर अपने सर चेहरे और जिस्म पर फेर लेते थे। मुवत्ता इमाम मालिक में है कि जब नबी सल्ल. बीमार पड़ते तो इन दोनों सूरतों को पढ़कर अपने ऊपर फूँक लिया करते थे। जब आपकी बीमारी सख़्त हुई तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इन दोनों सूरतों (सूरः फ़लक़ और सूरः नास) को पढ़कर ख़ुद आप सल्ल. के हाथों और आपके जिस्म मुबारक पर फेरती थीं। सूरः "नून" (सूरः क़लम) की तफ़सीर के आख़िर में यह हदीस गुज़र चुकी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. जिन्नात और इनसानों की आँखों (यानी नज़र लगने) से पनाह माँगा करते थे, जब ये दोनों

सूरतें उतरीं तो आपने इन्हें ले लिया और बाक़ी सब छोड़ दीं। इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सही फ़रमाते हैं।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا
خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ
حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝ ع ٥ ٢٨

आप (अपने पनाह लेने के लिए) कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूँ (1) तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से (2) और (ख़ास तौर से) अन्धेरी रात की बुराई से, जब वह रात आ जाए। (और रात में बुराईयों और फ़ितनों का अन्देशा ज़ाहिर है)। (3) और (ख़ास तौर से गण्डे की) गिरहों पर पढ़-पढ़कर फूँकने वालियों की बुराई से। (4) और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करने लगे। (5)

Mahtab E Ashraf

सब से ज़्यादा क़ुदरत वाले की पनाह

हज़रत जाबिर रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं- "फ़लक़" कहते हैं सुबह को। ख़ुद क़ुरआन में एक दूसरी जगह है "फ़ालिक़ुल् इस्बाहि" (सुबह का निकालने वाला)। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी है कि "फ़लक़" से मुराद मख़्लूक़ है। हज़रत कअ़बे अहबार रज़ि. फ़रमाते हैं कि फ़लक़ जहन्नम में एक जगह है। जब उसका दरवाज़ा खुलता है तो उसकी आग की गर्मी और सख़्ती की वजह से तमाम जहन्नमी चीख़ने लगते हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी इसी के क़रीब-क़रीब है, लेकिन वह हदीस मुन्कर है। यह भी बाज़ लोग कहते हैं कि यह जहन्नम का नाम है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा ठीक क़ौल पहला ही है। यानी मुराद इससे सुबह है। इमाम बुख़ारी रह. भी यही फ़रमाते हैं, और यही सही है।

तमाम मख़्लूक़ की बुराई से, जिसमें जहन्नम भी दाख़िल है और शैतान और उसकी औलाद भी। 'ग़ासिक़' से मुराद रात है। "इज़ा व-क़-ब" से सूरज का ग़ुरूब हो जाना मुराद है। यानी रात जब अन्धेरा लिये हुए आ जाये। इब्ने ज़ैद कहते हैं कि अ़रब के लोग सुरैया सितारे के छुप जाने को ग़ासिक़ कहते हैं। बीमारियाँ और वबायें उसके वाक़े होने (छुपने) के वक़्त बढ़ जाती थीं और उसके निकलने के वक़्त उठ जाती थीं (यानी यह अ़रब के मुश्रिकों का अ़क़ीदा था)।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि सितारा ग़ासिक़ है, लेकिन इसका मरफ़ूअ़ होना सही नहीं। बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि मुराद इससे चाँद है, उनकी दलील मुस्नद अहमद की यह हदीस है जिसमें है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का हाथ थामे हुए चाँद की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला से इस ग़ासिक़ की बुराई से पनाह माँग। एक और रिवायत में है कि "ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़-ब" से यही मुराद है। दोनों क़ौलों में आसानी से यह ततबीक़ (जोड़) हो सकती है क चाँद का चढ़ना और सितारों का ज़ाहिर होना वग़ैरह। यह सब रात ही के वक़्त होता है, जब रात आ जाये। वल्लाहु आलम। गिरह लगाकर फूँकने वालियों से मुराद जादूगर औरतें हैं। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि शिर्क के बिल्कुल क़रीब वह मन्तर हैं जिन्हें पढ़कर साँप के काटे पर दम किया जाता है, और आसेब से पीड़ित पर। दूसरी हदीस में है कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्ल. के पास तशरीफ़ लाये और

फ़रमाया- ऐ मुहम्मद! क्या आप बीमार हैं? आपने फ़रमाया हाँ, तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह दुआ़ पढ़ीः

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَآءٍ يُّؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ حَاسِدٍ وَّعَيْنٍ. اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ.

यानी अल्लाह तआ़ला के नाम से मैं दम करता हूँ हर उस बीमारी से जो तुझे दुख पहुँचाये, और हर हासिद (जलने वाले) की बुराई और बुरी नज़र से अल्लाह तआ़ला तुझे शिफ़ा दे।

इस बीमारी से मुराद शायद वह बीमारी है जबकि आप पर जादू किया गया था। फिर अल्लाह तआ़ला ने आप सल्ल. को आ़फ़ियत और शिफ़ा बख़्शी और हासिद यहूदियों के जादू के फ़रेब को ख़त्म कर दिया। उनकी तदबीरों को बेअसर कर दिया और उन्हें रुस्वा और ज़लील किया। लेकिन बावजूद इसके रसूले ख़ुदा सल्ल. ने कभी भी अपने ऊपर जादू करने वाले को डाँटा-डपटा तक नहीं। ख़ुदा तआ़ला ने आप सल्ल. की हिफ़ाज़त की और आपको आ़फ़ियत और शिफ़ा अ़ता फ़रमाई।

मुस्नद अहमद में है कि नबी सल्ल. पर एक यहूदी ने जादू किया जिससे कई दिन तक आप बीमार रहे। फिर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर बताया कि फ़ुलाँ यहूदी ने आप पर जादू किया है और फ़ुलाँ-फ़ुलाँ कुएँ में गिरहें लगाकर रखा है। आप किसी को भेजकर उसे निकलवा लीजिए। हुज़ूरे पाक सल्ल. ने आदमी भेजा और उस कुएँ से वह जादू निकलवा लिया। गिरहें खोल दीं, सारा असर जाता रहा। फिर न तो आपने उस यहूदी से कभी इसका ज़िक्र किया और न कभी उसके सामने नाराज़गी का इज़हार किया। सही बुख़ारी शरीफ़ किताबुत्तिब में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल. पर जादू किया गया। आप समझते थे कि आप अपनी बीवियों के पास आये, हालाँकि न आये थे (यानी उस जादू के असर से कुछ भूलने की कैफ़ियत पैदा हुई थी, जैसे ही जादू को निकलवा दिया यह असर भी ख़त्म हो गया)। हज़रत सुफ़ियान रह. फ़रमाते हैं कि यही सबसे बड़ा जादू का असर है।

जब यह हालत आपकी हो गयी, एक दिन आप फ़रमाने लगे कि आ़यशा! मैंने अपने रब से पूछा और मेरे परवर्दिगार ने बतला दिया। दो शख़्स आये, एक मेरे सिरहाने बैठा और एक पाईंती। सिरहाने वाले ने उस दूसरे से पूछा इनका क्या हाल है? दूसरे ने कहा इन पर जादू किया गया है। पूछा किसने जादू किया है? कहा लबीद बिन अअ़सम ने जो बनू ज़ुरैक़ के क़बीले का है, जो यहूदी का हलीफ़ (साथी) है और मुनाफ़िक़ शख़्स है। कहा किस चीज़ में? कहा सर के बालों और कंघी में। पूछा वह कहाँ है? कहा तर खजूर के दरख़्त की छाल में पत्थर की चट्टान के नीचे ज़रवान के कुएँ में। फिर हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम उस कुएँ के पास तशरीफ़ लाये और उसमें से वह निकलवाया। उसका पानी ऐसा था गोया मेहंदी का गदला पानी। उसके पास खजूरों के दरख़्त शैतानों के सर जैसे थे। मैंने कहा भी कि या रसूलल्लाह! उनसे बदला लेना चाहिये, आपने फ़रमाया "अल्हम्दु लिल्लाह" अल्लाह तआ़ला ने मुझे तो शिफ़ा दे दी और मैं लोगों में बुराई फैलाना पसन्द नहीं करता।

एक रिवायत में यह भी है कि एक काम करते न थे और उसके असर से यह मालूम होता था कि गोया मैं कर चुका हूँ। और यह भी है कि उस कुएँ को आप सल्ल. के हुक्म से बन्द कर दिया गया। यह भी मरवी है कि छह महीने तक आप सल्ल. की यह हालत रही। तफ़सीर सालबी में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ि. से मरवी है कि यहूद का एक बच्चा नबी सल्ल. की ख़िदमत किया

करता था, उसे यहूदियों ने बहका-सिखाकर आपके चन्द बाल और आपकी कंघी के चन्द दन्दाने मंगवा लिये और उनमें जादू किया। इस काम में ज़्यादातर कोशिश करने वाला लबीद बिन अअ्सम था। फिर ज़रवान नाम के कुएँ में जो बनू ज़ुरैक़ का था, उसको डाल दिया। फिर हुज़ूर सल्ल. बीमार हो गये, सर के बाल झड़ने लगे, ख़्याल आता था कि मैं औरतों के पास हो आया हालाँकि आते न थे (यानी इससे भूल के साथ-साथ मर्दाना क़ुव्वत पर भी असर पड़ा था) अगरचे आप उसे दूर करने की कोशिश में थे लेकिन वजह मालूम न होती थी। छह माह तक यही हालत रही, फिर वह वाक़िआ हुआ जो ऊपर बयान किया कि फ़रिश्तों के ज़रिये आपको इस तमाम हाल का इल्म हो गया और आपने हज़रत अ़ली, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को भेजकर कुएँ में से वे सब चीज़ें निकलवायीं। उनमें एक ताँत थी जिसमें बारह गिरहें लगी हुई थीं, और हर गिरह पर एक सूई चुभी हुई थी। फिर अल्लाह तआ़ला ने ये दोनों सूरतें उतारीं। हुज़ूर सल्ल. एक-एक आयत इनकी पढ़ते जाते थे और एक गिरह उसकी ख़ुद-बख़ुद खुलती जाती थी। जब ये दोनों सूरतें पूरी हुईं तो वे सब गिरहें खुल गयीं और आप सल्ल. बिल्कुल शिफ़ायाब (स्वस्थ) हो गये। इधर जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने वह दुआ़ पढ़ी जो ऊपर गुज़र चुकी है। लोगों ने कहा हुज़ूर! हमें इजाज़त दीजिए कि हम उस ख़बीस को पकड़कर क़त्ल कर दें। आपने फ़रमाया नहीं। ख़ुदा तआ़ला ने तो मुझे तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमायी और मैं लोगों में शर व फ़साद फैलाना नहीं चाहता। यह रिवायत तफ़सीर सालबी में बिना सनद के मरवी है। इसमें ग़राबत भी है और इसके कुछ हिस्से में सख़्त नकारत है, और बाज़ के शवाहिद (ताईदें) भी हैं जो पहले बयान हो चुके। वल्लाहु आलम।

अल्हम्दु लिल्लाह सूरः फ़लक़् की तफ़सीर पूरी हुई।

सूरः नास

सूरः नास मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

आप कहिए (जिस तरह कि सूरः फ़लक़ में गुज़रा) कि मैं आदमियों के मालिक, (1) आदमियों के बादशाह, (2) आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूँ (3) वस्वसा डालने, पीछे हट जाने वाले (शैतान) की बुराई से। (4) जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है (5) चाहे वह (वस्वसा डालने वाला) जिन्न हो या आदमी (हो)। (6)	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ○ مَلِكِ النَّاسِ○ اِلٰهِ النَّاسِ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ○ الْخَنَّاسِ○ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ○ ع ٢١

Maktab E Ashraf

Mahtab E Ashraf

आदमियों के रब की पनाह

इसमें अल्लाह तआ़ला की तीन सिफ़ात बयान हुई हैं- पहले यह कि वही पालने और परवरिश करने वाले हैं, मालिक और शहनशाह हैं और सिर्फ़ वही माबूद लायके इबादत हैं। तमाम चीज़ें उसी की पैदा की हुई और उसी की मिल्कियत में हैं और उसी की बन्दगी में मशग़ूल हैं। पस वह हुक्म देता है कि इन पाक और बरतर सिफ़ात वाले ख़ुदा की पनाह में आ जाये, जो भी पनाह और हिफ़ाज़त का तालिब हो। शैतान जो इनसान पर मुक़र्रर है उसके वस्वसों (दिल में डाले गये बुरे ख़्यालात) से वही बचाने वाला है। हर इनसान के साथ यह है, बुराईयों और बदकारियों को ख़ूब सजा-संवारकर लोगों के सामने पेश करता रहता है और बहकाने में कोई कमी नहीं करता। इसके शर से वही महफ़ूज़ रह सकता है जिसे ख़ुदा बचा ले। एक सही हदीस में है कि तुम में से हर शख़्स के साथ एक शैतान है। लोगों ने अ़र्ज़ किया- क्या आपके साथ भी? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- हाँ! लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस पर मेरी मदद फ़रमाई है, पस मैं सलामत रहता हूँ। वह मुझे सिर्फ़ नेकी और अच्छाई की बात ही कहता है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस में हज़रत अनस रज़ि. की ज़बानी एक वाक़िआ़ मन्क़ूल है, जिसमें बयान है कि हुज़ूर सल्ल. जब एतिकाफ़ में थे तो उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा आपके पास रात के वक़्त आयीं। जब वापस जाने लगीं तो हुज़ूर सल्ल. भी पहुँचाने के लिये साथ चले। रास्ते में दो अन्सारी सहाबी मिल गये जो आप सल्ल. को बीबी साहिबा के साथ देखकर जल्दी-जल्दी चल दिये। हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें आवाज़ देकर ठहराया और फ़रमाया- सुनो! मेरे साथ मेरी बीवी सफ़िया बिन्ते हुयि हैं। उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह! या रसूलल्लाह! इस इरशाद की ज़रूरत ही क्या थी? आपने फ़रमाया इनसान के ख़ून के जारी होने की जगह में शैतान घूमता फिरता रहता है, मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं तुम्हारें दिलों में वह कोई बदगुमानी न डाल दे।

हाफ़िज़ अबू यअ़ूला मूसली ने एक हदीस ज़िक्र की है, जिसमें है कि नबी सल्ल. फ़रमाते हैं- शैतान अपना हाथ इनसान के दिल पर रखे हुए है, अगर यह अल्लाह का ज़िक्र करता है तब तो उसका हाथ हट जाता है, और अगर यह ज़िक्रुल्लाह भूल जाता है तो वह उसके दिल पर पूरा क़ब्ज़ा कर लेता है। यही "वस्वासिल्-ख़न्नास" है। यह हदीस ग़रीब है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. अपने गधे पर सवार होकर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक सहाबी आपके पीछे बैठे हुए थे, गधे ने ठोकर खाई तो उनके मुँह से निकला "शैतान बरबाद हो" हुज़ूरे पाक सल्ल. ने फ़रमाया यूँ न कहो, इससे शैतान फूल जाता है कि मैंने अपनी क़ुव्वत से गिरा दिया है, और जब तुम "बिस्मिल्लाह" कहो तो वह घट जाता है, यहाँ तक कि मक्खी के बराबर हो जाता है। इससे साबित हुआ कि ज़िक्रुल्लाह से शैतान पस्त और मग़लूब हो जाता है, और उसके छोड़ देने से वह बड़ा हो जाता और ग़ालिब आ जाता है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जब तुम में से कोई मस्जिद में होता है तो उसके पास शैतान आता है और उसे थपकता और बहलाता है, जैसे कोई शख़्स अपने जानवर को बहलाता हो। फिर अगर वह ख़ामोश रहा तो वह नाक में नकेल या मुँह में लगाम चढ़ा देता है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने यह हदीस बयान करने के बाद फ़रमाया कि तुम ख़ुद इसे देखते हो, नकेल वाला तो वह है जो एक तरफ़ झुका खड़ा हो और अल्लाह का ज़िक्र न करता हो, और लगाम वाला वह है जो मुँह खोले हुए हो और अल्लाह का ज़िक्र न करता हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि शैतान इनसान के दिल पर क़ब्ज़ा किये हुए है, जहाँ यह भूला और ग़फ़लत की उसने वस्वसे डालने शुरू किये, और जहाँ इसने ज़िक्रुल्लाह किया और वह पीछे हटा। सुलैमान फ़रमाते हैं- मुझसे यह बयान किया गया है कि शैतान राहत व रंज के वक़्त इनसान के दिल में सुराख़ करना चाहता है, यानी उसे बहकाना चाहता है, अगर यह ख़ुदा का ज़िक्र करे तो वह भाग खड़ा होता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी मन्क़ूल है कि शैतान बुराई सिखाता है, जहाँ इनसान ने उसकी बात मान ली फिर हट जाता है।

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमाया "जो वस्वसे डालता है लोगों के सीने में" लफ़्ज़ "नास" जो इनसान के मायने में है उसका इतलाक़ (हुक्म) जिन्नों पर भी ग़लबे के तौर पर होता है। क़ुरआन शरीफ़ में एक जगह इरशाद है:

بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ.

(यानी जिन्नात में से कुछ लोगों की) तो जिन्नात का लफ़्ज़ नास में दाख़िल कर लेने में कोई क़बाहत नहीं। ग़र्ज़ यह है कि जिनके सीनों में शैतान वस्वसे डालता है वे जिन्न भी हैं और इनसान भी। और दूसरा मतलब यह है कि वह वस्वसा डालने वाला चाहे कोई जिन्न हो या इनसान। जैसे एक दूसरी जगह है:

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا.

यानी इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन इनसानी और जिन्नाती शैतान बनाये हैं। एक दूसरे के कान में धोखे की बातें बना-संवार कर डालते रहते हैं।

मुस्नद अहमद में है, हज़रत अबूज़र रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास मस्जिद में आया और बैठ गया। आपने फ़रमाया नमाज़ भी पढ़ी? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया खड़े हो जाओ और दो रक्अ़तें अदा कर लो। मैं उठा और दो रक्अ़तें पढ़कर बैठ गया। आपने फ़रमाया ऐ अबूज़र! अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगो। इनसानी शैतानों और जिन्नाती शैतानों से। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या इनसानी शैतान भी होते हैं? आपने फ़रमाया हाँ। मैंने कहा या रसूलल्लाह! नमाज़ कैसी चीज़ है? आपने इरशाद फ़रमाया- बेहतरीन चीज़ है, जो चाहे कम करे जो चाहे ज़्यादा करे। मैंने अ़र्ज़ किया रोज़ा? फ़रमाया काफ़ी होने वाला फ़र्ज़ है। मैंने फिर पूछा सदक़ा? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर कई-कई गुना करके बदला दिया जायेगा। मैंने फिर अ़र्ज़ किया- हुज़ूर! कौनसा सदक़ा अफ़ज़ल है? फ़रमाया बावजूद माल की कमी के सदक़ा करना, या चुपके से छुपाकर किसी मिस्कीन फ़क़ीर के साथ सुलूक करना। मैंने सवाल किया हुज़ूर! सबसे पहले नबी कौन थे? आपने फ़रमाया हज़रत आदम। मैंने कहा क्या वह नबी थे? आपने फ़रमाया हाँ! न सिर्फ़ नबी थे बल्कि उन अम्बिया में से थे जिनसे ख़ुदा तआ़ला ने कलाम फ़रमाया है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! रसूल कितने हुए? फ़रमाया तीन सौ दस से कुछ ऊपर, बहुत बड़ी जमाअ़त और कभी फ़रमाया तीन सौ पन्द्रह। मैंने कहा या रसूलल्लाह! जो कुछ आप पर नाज़िल किया गया उसमें सबसे बड़ी अ़ज़मत वाली आयत कौनसी है? हुज़ूर सल्ल. ने इरशाद फ़रमाया आयतुल्-कुर्सी (यह मशहूर आयत है जो तीसरे पारे के दूसरे रुकूअ़ से शुरू होती है यानी सूरः ब-क़रह की आयत नम्बर 255)।

यह हदीस नसाई में भी है, और अबू हातिम बिन हिब्बान की "सही इब्ने हिब्बान" में तो दूसरी सनद

Maktab E Ashraf

से दूसरे अलफ़ाज़ के साथ यह हदीस बहुत बड़ी है। वल्लाहु आलम।

मुस्नद अहमद की एक और हदीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने नबी सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे दिल में तो ऐसे-ऐसे ख़्यालात आते हैं कि उनका ज़बान से निकालना मुझ पर आसमान पर से गिर पड़ने से भी ज़्यादा बुरा है। नबी सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! अल्लाह तआ़ला ही के लिये तारीफ़ व सना है, जिसने शैतान के मक्र व फ़रेब को वस्वसे (ख़्यालात) में ही लौटा दिया (यानी उन पर अ़मल नहीं हुआ, और उनको बुरा समझना यह तो और नेकी कमाने वाली बात हुई)। यह हदीस अबू दाऊद और नसाई में भी है।

अल्लाह तआ़ला का बेहिसाब एहसान व करम है कि सूरः नास की तफ़सीर पूरी हुई।

अल्हम्दु लिल्लाह तफ़सीर इब्ने कसीर मुकम्मल हो गयी। अल्लाह तआ़ला हम सब को क़ुरआन मजीद की सही समझ दे और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन

व आख़िरु दअ़्वाना अनिल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। हस्बुनल्लाहु व नेअ़्मल् वकील।

❁ इमाम इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने 10 जमादियुल-अव्वल सन् 825 हिजरी को इस अ़ज़ीमुश्शान तफ़सीर की तकमील से फ़राग़त की। और इसका हिन्दी अनुवाद नाचीज़ मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी के ज़रिये 28 रमज़ान मुबारक सन् 1431 हिजरी, दिन बुधवार को मुकम्मल हुआ। अल्लाह तआ़ला इसे मुझ गुनाहगार और नेकियों से ख़ाली दामन के लिये मग़फ़िरत का ज़रिया बनाये। मेरे माँ-बाप, मेरे असातिज़ा, मेरे घर वालों, बाल-बच्चों, दोस्तों, मिलने वालों और तमाम मुसलमानों के लिये दोनों जहान की कामयाबी का ज़रिया बनाये। आमीन। इलाही! तेरा लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि तूने मुझ से अपने पाक कलाम की यह ख़िदमत ली। या अल्लाह! इसे क़ुबूल फ़रमा। अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व अ़ला आलिही व सल्लिम् तस्लीमा।

Maktab E Ashraf

इस तफ़सीर में इस्तेमाल किये गये कुछ अलफ़ाज़ के मायने

हदीस की कुछ क़िस्में

सिहाहे-सित्ताः- हदीस शरीफ़ की छह मुस्तनद और विश्वसनीय किताबें- बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिज़ी शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, इब्ने माजा शरीफ़, नसाई शरीफ़।

हदीसः- हुज़रत मुहम्मद सल्ल. की कही हुई बातें, दिये हुए अहकाम और किये हुए काम।

हदीसे क़ुदसीः- वह हदीस है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि यह बात अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई है।

हदीसे मरफ़ूअ़ः- वह हदीस है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक पहुँचती हो।

हदीसे मक़बूलः- वह हदीस है जिसकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ निस्बत का दुरुस्त होना राजेह (वरीयता प्राप्त) हो।

हदीसे सहीः- वह हदीस है जिसको मोतबर और नेक रावियों ने बयान किया हो और उसमें किसी तरह की कमज़ोरी न हो।

हदीसे हसनः- वह हदीस है जिसके रावी मोतबर और नेक हों लेकिन हदीसे सही के मुक़ाबले में हाफ़ज़े (याददाश्त) में कम हों।

हदीसे मौक़ूफ़ः- वह हदीस है जो सहाबी तक पहुँचती हो। इसको असर भी कहते हैं।

हदीसे मक़्तूअ़ः- वह हदीस है जो ताबिई तक पहुँचती हो।

हदीसे मुतवातिरः- वह हदीस है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से लेकर आज तक इतनी बड़ी जमाअ़त नक़ल करती आई हो कि आ़दतन् उनका झूठ पर जमा हो जाने का तसव्वुर न किया जा सके।

हदीसे मशहूरः- वह हदीस है जिसको हर ज़माने में तीन या तीन से ज़्यादा रावियों ने नक़ल किया हो।

हदीसे अ़ज़ीज़ः- वह हदीस है जिसके रिवायत करने वाले किसी ज़माने में दो से कम न हों।

हदीसे मुर्सलः- वह हदीस है जिसको ताबिई ने सहाबी के वास्ते के बग़ैर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़ल किया हो। अगर ताबिई मोतबर और विश्वसनीय हो तो इस हदीस को भी एतिबार का दर्जा हासिल है।

हदीसे ग़रीबः- वह हदीस है जिसकी सनद के सिलसिले में किसी ज़माने में रिवायत करने वाला सिर्फ़ एक रह गया हो।

हदीसे मुअ़ल्लक़ः- वह हदीस है जिसमें रावी (हदीस बयान करने वाले) ने सनद के शुरू में से

एक या चन्द या सहाबी और रसूले पाक से पहले के तमाम रावियों का ज़िक्र न किया हो। ऐसी हदीस मोतबर नहीं।

हदीसे ज़ईफ़:- वह हदीस है जिसकी सनद निरन्तर न हो, या रावी मोतबर न हो, या रावी का हाफ़ज़ा (याददाश्त) अच्छा और विश्वसनीय न हो।

हदीसे मुन्क़ता:- वह हदीस है जिसमें सहाबी के बाद एक या अनेक जगह से रावी का ज़िक्र छोड़ दिया गया हो।

मौज़ूअ़:- वह रिवायत है जिसकी ग़लत तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ निस्बत कर दी गयी हो।

मतरूक:- वह रिवायत है जिसके रावी पर अगरचे हदीस के मामले में झूठ बोलने का इल्ज़ाम न हो मगर दूसरे मामलात में उस पर झूठ बोलने की तोहमत लगी हो।

मुन्कर:- वह रिवायत है जिसका रावी बुरे कामों में मुब्तला हो, या रिवायत के सुनने और बयान करने में अधिक्तर ग़फ़लत व लापरवाही बरतता हो, या खुली ग़लती करता हो, या रावी ख़ुद ज़ईफ़ हो और उसकी रिवायत किसी मोतबर रावी की रिवायत के ख़िलाफ़ भी हो।

शाज़:- वह रिवायत है जिसको मोतबर रावी ने दूसरे मोतबर रावियों के ख़िलाफ़ नक़ल किया हो, यह ख़िलाफ़त हदीस के अलफ़ाज़ में भी हो सकती है और सनद में भी।

मुज़्तरिब:- वह रिवायत है जिसको परस्पर विरोधी तरीक़ों से नक़ल किया जाये, चाहे यह टकराव मतन (असल अलफ़ाज़) में हो या सनद में।

मुअ़ल्लल:- वह रिवायत है जिसकी सनद देखने में तो क़वी और मज़बूत हो लेकिन उसकी सनद या अलफ़ाज़ में कोई ऐसी ख़ामी छुपी हो जिससे अहले-फ़न ही वाक़िफ़ हो सकें।

मुताबअ़त:- किसी रिवायत के मुताबिक़ अलफ़ाज़ होना।

नोट:- हदीस की इन क़िस्मों और इनके दरजात के जान लेने के बाद यह भी जान लेना चाहिये कि जहाँ इबारत में कहीं यह है कि इस हदीस में "इरसाल" है या इस हदीस में "इज़्तिराब" है या इस हदीस में "इल्लत" है या इस हदीस में "इन्क़िताअ़" है या इस हदीस में "ज़ोअ़फ़" है या इस हदीस में "नकारत" है या इस हदीस में "ग़राबत" है या इस हदीस में "तवातुर" साबित नहीं, या इस हदीस की किसी ने "मुताबअ़त" नहीं की, तो इन सब अलफ़ाज़ से हदीस की इन्हीं हैसियतों और दर्जों की तरफ़ इशारा है। (मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

और ज़्यादा **अलफ़ाज़ और मायने** के लिये देखें इसी तफ़सीर की पहली जिल्द के आख़िरी पृष्ठ।

Muftah E Ashraf